मुक्ति बोध

(संत गरीबदास जी महाराज की वाणी के सरलार्थ का कुछ अंश)

लेखक तथा सरलार्थ कर्ता :-

संत रामपाल दास

कबीर, और ज्ञान सब ज्ञानड़ी, कबीर ज्ञान सो ज्ञान। जैसे गोला तोब का, करता चले मैदान।।

जीव हमारी जाति है, मानव धर्म हमारा। हिन्दु मुस्लिम सिक्ख ईसाई, धर्म नहीं कोई न्यारा।।

धर्मार्थ मूल्य - ---------- रूपये

प्रकाशक :-
प्रचार प्रसार समिति तथा सर्व संगत
सतलोक आश्रम, बरवाला, जिला-हिसार (हरियाणा)
सम्पर्क सूत्र :- 8222880541, 8222880542, 8222880543, 8222880544, 8222880545
E-mail : jagatgururampalji@yahoo.com Visit us at : www.jagatgururampalji.org
Follow us onTwitter : twitter.com/satlokashram

मुद्रक :-
कबीर प्रिंटर्स
C-117, सैक्टर-3, बवाना इन्डस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली।

विषय सूची

❑❑❑

निवेदन

इस पवित्र पुस्तक ''मुक्ति बोध'' में संत गरीबदास जी के अमर ग्रन्थ के सरलार्थ से कुछ अंग लिखे हैं जो भिन्न पुस्तक बनाई है। इसमें संत गरीबदास जी के अमर ग्रन्थ के सरलार्थ की एक झलक है। दूसरे शब्दों में सरलार्थ का नमूना (Sample) है। जैसे कुँए से एक बाल्टी जल निकालकर उसे पीकर जाँचा जाता है कि मीठा है या खारा।

अन्य उदाहरण :- व्यापारी लोग बोरी में परखी मारकर कुछ माल निकालकर जाँच कर लेते हैं कि बोरी में कैसा माल है? ''अमर बोध'' संत गरीबदास जी के अमर ग्रन्थ के सरलार्थ से निकाला परखी वाला माल है। इसे पढ़कर जाँचें कि सरलार्थ कैसा है? ''अमर बोध'' के सरलार्थ को समझने के लिए दो शब्द लिखने अनिवार्य हैं। ये दो शब्द ''अमर ग्रन्थ'' संत गरीबदास जी के सरलार्थ में सर्वप्रथम लिखे हैं जो अमर बोध तथा मुक्ति बोध को समझने में सहयोगी हैं। अब पढ़ें दो शब्द :-

''दो शब्द''

संत गरीबदास जी के अमर ग्रन्थ की अमतवाणी का सरलार्थ प्रारम्भ करने से पूर्व कुछ आवश्यक जानकारी कराना अनिवार्य समझता हूँ। श्री सद्ग्रन्थ साहेब में अधिक वाणी सन्त गरीबदास महाराज जी की हैं। सन्त गरीबदास जी का जन्म गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर प्रांत-हरियाणा में सन् 1717 (विक्रमी संवत् 1774) में हुआ। गाँव छुड़ानी में गरीबदास महाराज जी का नानका है। ये गाँव करौंथा (जिला-रोहतक, हरियाणा) के रहने वाले धनखड़ गोत्र के थे। इनके पिता श्री बलराम जी का विवाह गाँव छुड़ानी में श्री शिवलाल सिहाग की बेटी रानी देवी से हुआ था। श्री शिवलाल जी का कोई पुत्र नहीं था। इसलिए श्री बलराम जी को घर-जमाई रख लिया था। गाँव छुड़ानी में रहते 12 वर्ष हो गए थे, तब सन्त गरीबदास महाराज जी का जन्म गाँव छुड़ानी में हुआ था। श्री शिवलाल जी के पास 2500 बीघा (बड़ा बीघा जो वर्तमान के बीघा से 2.75 गुणा बड़ा होता था) जमीन थी। जिसके वर्तमान में 1400 एकड़ जमीन बनती है। (2500 x 2.75/5 = 1375 एकड़) उस सारी जमीन के वारिस श्री बलराम जी हुए तथा उनके पश्चात् उनके इकलौते पुत्र सन्त गरीबदास जी उस सर्व जमीन के वारिस हुए। उस समय पशु अधिक पाले जाते थे। लगभग 150 गऊऐं श्री बलराम जी रखते थे। उनको चराने के लिए अपने पुत्र गरीबदास जी के साथ अन्य कई चरवाहे (पाली = ग्वाले) किराए पर ले रखे थे। वे भी गऊवों को खेतों में चराने के लिए ले जाया करते थे।

जिस समय सन्त गरीबदास जी 10 वर्ष की आयु के हुए, वे गायों को चराने के लिए अन्य ग्वालों के साथ नला नामक खेत में गए हुए थे। फाल्गुन मास की शुद्धि द्वादशी के दिन के लगभग 10 बजे परम अक्षर ब्रह्म एक जिन्दा महात्मा के वेश में मिले। गाँव कबलाना की सीमा से सटा नला खेत है। सर्व ग्वाले एक जांडी के पेड़ के नीचे बैठकर खाना खा रहे थे।

वह पेड़ गाँव कबलाना से छुड़ानी को जाने वाले कच्चे रास्ते पर था। वर्तमान में सरकार ने उस रास्ते पर सड़क का निर्माण करवा दिया है।

परमेश्वर जी सतलोक से पेड़ से कुछ दूरी पर उतरे। रास्ते-रास्ते कबलाना की ओर छुड़ानी को जाने लगे। जब ग्वालों के पास आए तो ग्वालों ने कहा, बाबा जी आदेश! राम-राम! परमेश्वर जी ने कहा, राम-राम! ग्वालों ने कहा कि बाबा जी! खाना खाओ। परमेश्वर जी ने कहा कि खाना तो मैं अपने गाँव से खाकर चला था। ग्वालों ने कहा कि महाराज! खाना नहीं खाते तो दूध तो अवश्य पीना पड़ेगा। हम अतिथि को कुछ खाए-पीए बिना नहीं जाने देते। परमेश्वर ने कहा कि मुझे दूध पिला दो और सुनो! मैं कंवारी गाय का दूध पीता हूँ। जो बड़ी आयु के पाली (ग्वाले) थे, उन्होंने कहा कि आप तो मजाक कर रहे हो। आप जी की दूध पीने की नीयत नहीं है। कंवारी गाय भी कभी दूध देती है? परमेश्वर ने फिर कहा कि मैं कंवारी गाय का दूध पीऊँगा। गरीबदास बालक ने एक बछिया जिसकी आयु 1½ वर्ष की थी, जिन्दा बाबा के पास लाकर खड़ी कर दी। परमात्मा ने बछिया की कमर पर आशीर्वाद भरा हाथ रख दिया। बछिया के स्तन लम्बे-लम्बे हो गए। एक मिट्टी के लगभग 5 कि.ग्रा. की क्षमता के पात्र (बरोले) को बछिया के स्तनों के नीचे रखा। स्तनों से अपने आप दूध निकलने लगा। मिट्टी का पात्र भर जाने पर दूध निकलना बन्द हो गया। पहले जिन्दा बाबा ने पीया, शेष दूध को अन्य पालियों (ग्वालों) को पीने के लिए कहा तो बड़ी आयु के ग्वाले (जो सँख्या में 10-12 थे) कहने लगे कि बाबाजी कंवारी गाय का दूध तो पाप का दूध है, हम नहीं पीऐंगे, दूसरे आप न जाने किस जाति के हो, आपका झूठा दूध हम नहीं पीऐंगे, तीसरे यह दूध आपने जादू-जन्त्र करके निकाला है। हम पर जादू-जन्त्र का कुप्रभाव पड़ेगा। यह कहकर जिस जांडी के वक्ष के नीचे बैठे थे, वहाँ से चले गये। दूर जाकर किसी वक्ष के नीचे बैठ गए।

तब बालक गरीबदास जी ने कहा कि हे बाबा जी! आपका झूठा दूध तो अमत है। मुझे दीजिए। कुछ दूध बालक गरीबदास जी ने पीया। परमेश्वर जिन्दा वेशधारी ने सन्त गरीबदास जी को ज्ञानोपदेश दिया। तत्वज्ञान (सुक्ष्मवेद का ज्ञान) बताया। सन्त गरीबदास जी के अधिक आग्रह करने पर परमेश्वर ने उनकी आत्मा को शरीर से अलग किया और ऊपर के रुहानी मण्डलों की सैर कराई। एक ब्रह्मण्ड में बने सर्व लोकों को दिखाया, श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव जी से मिलाया। उसके पश्चात् ब्रह्म लोक तथा श्री देवी (दुर्गा) का लोक दिखाया। फिर दशवें द्वार (ब्रह्मरन्द्र) को पार करके ब्रह्म काल के 21 ब्रह्मण्डों के अन्तिम छोर पर बने ग्यारहवें द्वार को पार करके अक्षर पुरुष के 7 शंख ब्रह्मण्डों वाले लोक में प्रवेश किया। सन्त गरीबदास जी को सर्व ब्रह्मण्ड दिखाये, अक्षर पुरुष से मिलाया। पहले उसके दो हाथ थे, परंतु परमेश्वर के निकट जाते ही अक्षर पुरुष ने दस हजार (10000) हाथों का विस्तार कर लिया जैसे मयूर (मोर) पक्षी अपने पंख (चन्दों) को फैला लेता है। अक्षर पुरुष को जब संकट का अंदेशा होता है, तब ऐसा करता है। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करता है क्योंकि अक्षर पुरुष अधिक से अधिक 10 हजार हाथ ही दिखा सकता है। इसके 10 हजार हाथ हैं। क्षर पुरुष के एक हजार हाथ हैं। गीता अध्याय 10-11 में अपना एक हजार

हाथों वाला विराट रुप दिखाया। गीता अध्याय 11 श्लोक 46 में अर्जुन ने कहा कि हे सहस्त्र बाहु (एक हजार भुजाओं वाले) अपने चतुर्भुज रुप में आइए। संत गरीबदास जी को अक्षर पुरुष के 7 शंख ब्रह्मण्डों के भेद बता व आँखों दिखाकर परमेश्वर जिन्दा बाबा बारहवें (12वें) द्वार के सामने ले गया जो अक्षर पुरुष के लोक की सीमा पर बना है। जहाँ से भंवर गुफा में प्रवेश किया जाता है। जिन्दा वेशधारी परमेश्वर जी ने संत गरीबदास जी को बताया कि जो दसवां द्वार (ब्रह्म रन्द्र) है, वह मैंने सत्यनाम के जाप से खोला था। जो ग्यारहवां (11वां) द्वार है, वह मैंने तत् तथा सत् (जो सांकेतिक मन्त्र है) से खोला था। अन्य किसी भी मन्त्र से उन द्वारों पर लगे ताले (Locks) नहीं खुलते। अब यह बारहवां (12वां) द्वार है, यह मैं सत् शब्द (सार नाम) से खोलूंगा। इसके अतिरिक्त किसी नाम के जाप से यह नहीं खुल सकता। तब परमात्मा ने मन ही मन में सारनाम का जाप किया, 12वां (बारहवां) द्वार खुल गया और परमेश्वर जिन्दा रुप में तथा संत गरीबदास जी की आत्मा भंवर गुफा में प्रवेश कर गए।

फिर सत्यलोक में प्रवेश करके उस श्वेत गुम्बद के सामने खड़े हो गए जिसके मध्य में सिंहासन (उर्दु में तख्त कहते हैं) के ऊपर तेजोमय श्वेत नर रुप में परम अक्षर ब्रह्म जी विराजमान थे। जिनके एक रोम (शरीर के बाल) से इतना प्रकाश निकल रहा था जो करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चाँदों (चन्द्रमाओं) के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक था। इससे अन्दाजा लग जाता है कि उस परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरुष) जी के सम्पूर्ण शरीर की कितनी रोशनी होगी। सत्यलोक स्वयं भी हीरे की तरह प्रकाशमान है। उस प्रकाश को जो परमेश्वर जी के पवित्र शरीर से तथा उसके अमर लोक से निकल रहा है, केवल आत्मा की आँखों (दिव्य दृष्टि) से ही देखा जा सकता है। चर्म दृष्टि से नहीं देखा जा सकता।

फिर जिन्दा बाबा अपने साथ बालक गरीबदास जी को लेकर उस सिंहासन के निकट गए तथा वहाँ रखे चंवर को उठाकर तख्त पर बैठे परमात्मा के ऊपर डुराने (चलाने) लगे। बालक गरीबदास जी ने विचार किया कि यह है परमात्मा और यह बाबा तो परमात्मा का सेवक है। उसी समय तेजोमय शरीर वाला प्रभु सिंहासन त्यागकर खड़ा हो गया और जिन्दा बाबा के हाथ से चंवर ले लिया और जिन्दा बाबा को सिंहासन पर बैठने का संकेत किया। जिन्दा वेशधारी प्रभु असंख्य ब्रह्मण्डों के मालिक के रुप में सिंहासन पर बैठ गए। पहले वाला प्रभु जिन्दा बाबा पर चंवर करने लगा। सन्त गरीबदास जी विचार कर ही रहे थे कि इनमें परमेश्वर कौन हो सकता है, इतने में तेजोमय शरीर वाला प्रभु जिन्दा बाबा वाले शरीर में समा गए, दोनों मिलकर एक हो गए। जिन्दा बाबा के शरीर का तेज उतना ही हो गया, जितना तेजोमय पूर्व में सिंहासन पर बैठे सत्य पुरुष जी का था। कुछ ही क्षणों में परमेश्वर बोले हे गरीबदास! मैं असंख्य ब्रह्मण्डों का स्वामी हूँ। मैंने ही सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की है। सर्व आत्माओं को वचन से मैंने ही रचा है। पाँच तत्व तथा सर्व पदार्थ भी मैंने ही रचे हैं। क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष व उनके लोकों को भी मैंने उत्पन्न किया है। इनको इनके तप के बदले में सर्व ब्रह्मण्डों का राज्य मैंने ही प्रदान किया है। मैं 120 वर्ष तक पृथ्वी पर कबीर नाम से जुलाहे की भूमिका करके आया था।

भारत देश (जम्बू द्वीप) के काशी नगर (बनारस) में नीरु-नीमा नाम के पति-पत्नी थे। वे मुसलमान जुलाहा थे। वे निःसंतान थे। ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णमासी की सुबह (ब्रह्म मुहूर्त में) लहरतारा नामक सरोवर में काशी के बाहर जंगल में मैं नवजात शिशु का रुप धारण करके कमल के फूल पर लेटा था। मैं अपने इसी स्थान से गति करके गया था। नीरु जुलाहा तथा उसकी पत्नी प्रतिदिन उसी तालाब पर स्नानार्थ जाया करते थे। उस दिन मुझे बालक रुप में प्राप्त करके अत्यन्त खुश हुए। मुझे अपने घर ले गए। मैंने 25 दिन तक कुछ भी आहार नहीं किया था। तब शिवजी एक साधु के वेश में उनके घर गए। वह सब मेरी प्रेरणा ही थी। शिव से मैंने कहा था कि मैं कंवारी गाय का दूध पीता हूँ। तब नीरु एक बछिया लाया। शिव को मैंने शक्ति प्रदान की, उन्होंने बछिया की कमर पर अपना आशीर्वाद भरा हाथ रखा। कंवारी गाय ने दूध दिया। तब मैंने दूध पीया था। मैं प्रत्येक युग में ऐसी लीला करता हूँ। जब मैं शिशु रुप में प्रकट होता हूँ, तब कंवारी गायों से मेरी परवरिश की लीला हुआ करती है। हे गरीब दास! चारों वेद मेरी महिमा का गुणगान करते हैं।

वेद मेरा भेद है, मैं ना वेदन के मांही। जौन वेद से मैं मिलूं, वह वेद जानते नाहीं।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 में लिखा है कि जब परमेश्वर शिशु रुप में पथ्वी पर प्रकट होते हैं तो उनकी परवरिश की लीला कंवारी गायों द्वारा होती है। मैं सत्ययुग में ''सत्यसुकत'' नाम से प्रकट हुआ था। त्रेतायुग में ''मुनीन्द्र'' नाम से तथा द्वापर में ''करुणामय'' नाम से और संवत् 1455 ज्येष्ठ शुद्धि पूर्णमासी को मैं कलयुग में ''कबीर'' नाम से प्रकट व प्रसिद्ध हुआ था।

❖ यह सब प्रसंग सुनकर सन्त गरीब दास जी ने कहा कि परवरदिगार! यह ज्ञान मुझे कैसे याद रहेगा? तब परमेश्वर जी ने बालक गरीबदास जी को आशीर्वाद दिया और कहा कि मैंने तेरा ज्ञानयोग खोल दिया है। आध्यात्म ज्ञान तेरे अन्तःकरण में डाल दिया है। अब आप असँख्य युगों के पहले से लेकर वर्तमान तथा भविष्य का ज्ञान भी याद रखोगे।

❖ दूसरी ओर नीचे पथ्वी पर शाम के 3 बजे के आसपास अन्य ग्वालों (चरवाहों) को याद आया कि गरीब दास नहीं है, लाओ उठाकर। तब एक पाली गया। उसने दूर से आवाज लगाई कि हे गरीब दास! आजा गायों के सामने खड़ा होकर अपनी बारी कर। हम बहुत देर से खड़े हैं। भक्त गरीबदास जी नहीं बोले और न उठे क्योंकि पथ्वी पर तो केवल शरीर था। जीवात्मा तो ऊपर के मण्डलों की सैर कर रही थी। उस पाली ने निकट जाकर हाथ से शरीर को हिलाया तो शरीर जमीन पर गिर गया, पहले सुखासन पर स्थिर था। ग्वाले ने देखा तो बालक गरीबदास को मत पाया। उसने शोर मचाया। अन्य ग्वाले दौड़े आए। उनमें से एक गाँव छुड़ानी की ओर दौड़ा। छुड़ानी गाँव से गाँव कबलाना के रास्ते पर वह जांडी का वक्ष था जिसके नीचे परमेश्वर जी जिन्दा रुप में गरीबदास जी तथा अन्य पालियों के साथ बैठे थे। गाँव कबलाना की सीमा के साथ वह खेत सटा हुआ था जो छुड़ानी गाँव का है जो गरीबदास जी का अपना ही खेत था। वह स्थान गाँव छुड़ानी से 1½ किलोमीटर दूर है।

गाँव छुड़ानी में जाकर उस पाली ने गरीबदास जी के पिता-माता, नाना-नानी को सब

हाल बताया कि एक बाबा ने कंवारी गाय का दूध जादू-जन्त्र करके निकाला, वह दूध हमने तो पीया नहीं बालक गरीबदास ने पी लिया। हमने अभी देखा तो वह मर चुका है। बच्चे के शव को चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार की तैयारी कर दी। उसी समय परमेश्वर जी ने कहा हे गरीबदास! आप नीचे जाओ। आपके शरीर को नष्ट करने जा रहे हैं। सन्त गरीबदास जी ने नीचे को देखा तो यह पृथ्वी लोक सत्य लोक की तुलना में नरक लोक के समान दिखाई दे रहा था। सन्त गरीबदास जी ने कहा हे प्रभु! मुझे नीचे मत भेजो, यहीं पर रख लो। तब सत्यपुरुष कबीर जी ने कहा कि आप पहले भक्ति करोगे, जो साधना मैं तुझे बताऊँगा, उस भक्ति की कमाई (शक्ति) से फिर यहाँ स्थाई स्थान प्राप्त करोगे। सामने देख वह तेरा महल है जो खाली पड़ा है। सर्व खाद्य पदार्थ भरे पड़े हैं। नीचे पृथ्वी पर वर्षा होगी तो अन्न होगा। कितनी मेहनत करनी पड़ती है। यहाँ जैसे पदार्थ पृथ्वी पर हैं ही नहीं। आप नीचे जाओ। प्रथम मन्त्र मैंने तुझे दे दिया है। फिर सत्यनाम भी तुझे प्रदान करने आऊंगा। यह सत्यनाम दो अक्षर का होता है। एक ॐ अक्षर दूसरा तत् (यह सांकेतिक है) अक्षर है। फिर कुछ समय उपरान्त तुझे सारनाम दूँगा। इन सर्व नामों (प्रथम, दूसरा तथा तीसरा) की साधना करके ही तू यहाँ आ सकेगा। मैं हरदम भक्त के साथ रहता हूँ। तू चिन्ता मत करना। अब आप शीघ्र जाइए।

इतना कहकर परम अक्षर पुरुष जी ने सन्त गरीबदास जी के जीव को शरीर में प्रवेश कर दिया। कुल परिवार के लोग चिता में अग्नि लगाने ही वाले थे, उसी समय बच्चे के शरीर में हलचल हुई। शव को रस्से से बाँध कर ले जाते हैं, वह रस्सा भी अपने आप टूट गया। सन्त गरीबदास जी उठकर बैठ गए। चिता से नीचे उतरकर खड़े हो गए। उपस्थित गाँव के व परिवार के व्यक्तियों की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बालक गरीबदास ऊपर को आँखें करके परमात्मा को देख रहा था तथा जो अमृतज्ञान परमेश्वर जी ने उनके अन्तःकरण में डाला था, वह अमृतवाणी दोहों व चौपाइयों तथा शब्दों के रुप में बोलने लगा। गाँव वालों को उस अमृतवाणी का ज्ञान नहीं था। इसलिए उन्होंने सोचा कि बच्चे को बाबा ने फटकार मार दी जिस कारण से बड़बड़ा रहा है। कुछ का कुछ बोल रहा है, परंतु परमात्मा का सौ-सौ शुक्र मना रहे थे कि लड़की का लड़का जीवित हो गया। पागल है तो भी लड़की रानी देवी अपना दिल रोक कर खुश रहेगी। यह समझकर महापुरुष गरीबदास जी को पागल (गाँव की भाषा में बावलिया) कहने लगे।

इस घटना के तीन वर्ष के पश्चात् एक गोपाल दास सन्त गाँव छुड़ानी में आया जो दादू दास जी के पंथ से दीक्षित था। वह सन्तों की वाणी को समझता था। उसके महत्व को जानता था। वह वैश्य जाति से था, सन्त वेशभूषा में रहता था। बनिये के घर जन्म होने के कारण कुछ पढ़ा-लिखा भी था। घर त्यागकर सन्यास ले रखा था। अधिकतर भ्रमण करता रहता था। गाँव-गाँव में जाकर प्रचार करता था। कुछ शिष्य भी बना रखे थे। उसका एक बैरागी जाति का गाँव छुड़ानी का भी शिष्य था। वह उसके घर रुका हुआ था। उस शिष्य ने सन्त गोपाल दास से कहा कि हे गुरुदेव! हमारे गाँव के चौधरी का दोहता (लड़की का लड़का) किसी साधु की फटकार से पागल हो गया। वह तो मर गया था, चिता पर रख दिया

था। लड़की रानी की किस्मत से बच्चा जीवित तो हो गया, परंतु पागल हो गया। सब जगह झाड़-फूंक करने वालों से भी इलाज करा लिया, अन्य दवाई पागलपन दूर करने की भी बहुत खिला ली, लेकिन कोई राहत नहीं मिली। उस शिष्य ने वह सर्व घटना भी बताई जो कंवारी गाय का दूध निकलवाकर बच्चे गरीबदास को पिलाने की घटित हुई थी। फिर उसने कहा कि कहते हैं संत की विद्या को संत ही काट सकता है। कुछ कपा करो गुरुदेव।

सन्त गोपाल दास जी ने कहा कि बुलाओ उस लड़के को। शिष्य ने चौधरी शिवलाल जी से कहा कि मेरे घर पर एक बाबा जी आया है। मैंने उसको आपके दोहते गरीबदास के बारे में बताया है। बाबा जी ने कहा है कि एक बार बुलाओ, ठीक हो जाएगा। एक बार दिखा लो, अब तो गाँव में ही बाबा जी आया है। बहुत पहुँचा हुआ संत है।

शिवलाल जी के साथ गाँव के कई अन्य व्यक्ति भी बाबा के पास गए। साथ में बच्चे गरीबदास जी को भी ले गए। संत गोपाल दास जी ने बालक गरीबदास जी से प्रश्न किया कि बेटा! वह कौन बाबा था जिसने तेरा जीवन बर्बाद कर दिया। प्रिय पाठकों को यहाँ पर यह बताना अनिवार्य है कि संत गोपाल दास जी सन्त दादू दास जी के पंथ से दीक्षित थे। सन्त दादू जी को भी सन्त गरीबदास जी की तरह 7 वर्ष की आयु (एक पुस्तक में ग्यारह वर्ष की आयु में जिंदा बाबा मिला लिखा है। हमने ज्ञान समझना है। व्यर्थ के तर्क-वितर्क में नहीं पड़ना है।) में बाबा जिन्दा के वेश में परमेश्वर कबीर जी मिले थे। सन्त दादू जी को भी परमेश्वर शरीर से निकालकर सत्यलोक लेकर गए थे। सन्त दादू जी तीन दिन-रात अचेत अवस्था में रहे थे। तीसरे दिन वापिस सचेत हुए तो कहा था कि मैं परमेश्वर कबीर जी के साथ अमर लोक गया था। वह आलम बड़ा कबीर है। वह सबको रचने वाला है। सर्व संष्टि का रचनहार है। कहा कि :-

जिन मुझको निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजन हार।।
दादू नाम कबीर की, जै कोई लेवे ओट। उनको कबहु लागे नहीं, काल वज्र की चोट।।
अब ही तेरी सब मिटै, काल कर्म की पीड़ (पीर)। स्वांस–उस्वांस सुमरले, दादू नाम कबीर।।
केहरी नाम कबीर का, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागै सुनत आवाज।।

इस प्रकार दादू जी के ग्रन्थ में वाणी लिखी है। गोपाल दास इस बात को जानता था कि दादू जी को बूढ़ा बाबा के रुप में परमात्मा मिला था। दादू जी मुसलमान तेली था। इसलिए मुसलमान समाज कबीर का अर्थ बड़ा करता है। जिस कारण से काशी वाले जुलाहे कबीर को नहीं मानते। दादू पंथी कहते हैं कि कबीर का अर्थ बड़ा भगवान अल्लाहु कबीर = अल्लाह अकबीर है।

❖ इसी प्रकार श्री नानक देव जी सुल्तानपुर शहर के पास बह रही बेई नदी में स्नान करने गए, परमात्मा जिन्दा बाबा के रुप में उस समय मिले थे। उनको भी तीन दिन तक अपने साथ रखा था। सच्चखण्ड (सत्यलोक) लेकर गए थे। फिर वापिस छोड़ा था।

❖ एक अब्राहिम सुल्तान अधम नाम का बलख बुखारे शहर का राजा था। (इराक देश का रहने वाला था।) उसको भी परमात्मा जिन्दा बाबा के रूप में मिले थे। उसका भी उद्धार कबीर परमेश्वर जी ने किया था।

सन्त गोपाल दास ने बच्चे गरीबदास जी से प्रश्न किया था कि तेरे को कौन बाबा मिला था जिसने तेरा जीवन बर्बाद कर दिया। सन्त गरीबदास जी ने उत्तर दिया था कि हे महात्मा जी! जो बाबा मुझे मिला था, उसने मेरा कल्याण कर दिया, मेरे जीवन को आबाद कर दिया। वह पूर्ण परमात्मा है।

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रती नहीं भार। सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सिरजन हार।।
गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि है तीर। दास गरीब सत्पुरुष भजो, अविगत कला कबीर।।
गरीब, अजब नगर में ले गए, हमको सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।
गरीब, शब्द स्वरुपी उतरे, सतगुरु सत् कबीर। दास गरीब दयाल हैं, डिगे बंधावैं धीर।।
गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन मण्डल रह थीर। दास गरीब उधारिया, सतगुरु मिले कबीर।।
गरीब, प्रपटन वह लोक है, जहाँ अदली सतगुरु सार। भक्ति हेत से उतरे, पाया हम दीदार।।
गरीब, ऐसा सतगुरु हम मिल्या, है जिन्दा जगदीश। सुन्न विदेशी मिल गया, छत्र मुकुट है शीश।।
गरीब, जम जौरा जासे डरें, धर्मराय धरै धीर। ऐसा सतगुरु एक है, अदली असल कबीर।।
गरीब, माया का रस पीय कर, हो गये डामा डोल। ऐसा सतगुरु हम मिल्या, ज्ञान योग दिया खोल।।
गरीब, जम जौरा जासे डरें, मिटें कर्म के लेख। अदली असल कबीर हैं, कुल के सतगुरु एक।।

संत गरीबदास जी को कौन मिला था, बाबा जी को उसका परिचय दिया जो ऊपर लिखी वाणियों में संत गरीबदास जी ने स्पष्ट कर दिया है कि जिस परमेश्वर कबीर जी ने हम सबको संत गरीबदास, संत दादू दास, संत नानक देव तथा राजा अब्राहिम सुलतानी आदि-आदि को पार किया। वह भारत वर्ष के काशी शहर में कबीर जुलाहा नाम से प्रसिद्ध हुआ है। वह अनन्त कोटि ब्रह्मण्डों का सजनहार है। वह मुझे मिला था। यह उपरोक्त वाणी बोलकर संत गरीबदास 13 वर्षीय बच्चे चल पड़े। संत गोपाल दास जी समझ गए कि यह कोई सामान्य बच्चा नहीं है। यह तो परमात्मा से मिला है। ऐसी अमतवाणी बोल रहा है। इस वाणी को लिखना चाहिए।

यह विचार करके बालक गरीबदास के पीछे-पीछे चल पड़ा और कहने लगा हे गाँव वालो! यह बालक पागल नहीं है, तुम पागल हो। यह क्या बोल रहा है, तुम समझ नहीं सके। मुझे पता चला है यह बच्चा तो अवतार है प्रभु का। इसको तो जिन्दा बाबा के रुप में स्वयं भगवान मिले थे। इसी प्रकार हमारे पूज्य दादू साहेब जी को भी मिले थे। दादू जी की सब वाणी लिखी नहीं गई थी। अब इस बच्चे से सर्व वाणी लिखवाऊंगा, मैं खुद लिखूंगा। यह वाणी कलयुग में अनेकों जीवों का कल्याण करेगी। संत गोपाल दास जी के बार-बार आग्रह करने पर सन्त गरीबदास जी ने कहा गोपाल दास जी यदि पूरी वाणी लिखे तो मैं लिखवाऊं, कहीं बीच में छोड़े तो नहीं लिखवाऊंगा। संत गोपाल दास जी ने कहा महाराज जी मैं तो घर से निकल चुका हूँ परमार्थ और कल्याण कराने के लिए, मेरी 62 वर्ष की आयु हो चुकी है। मुझे इससे अच्छा कोई कार्य नहीं है। आप कपा करें।

तब संत गरीबदास जी तथा संत गोपाल दास जी बेरी के बाग में एक जांडी के नीचे बैठकर वाणी को लिखने-लिखवाने लगे। वह बेरी का बाग संत गरीबदास जी का अपना ही

था। उस समय छुड़ानी गाँव के आस-पास रेतिला क्षेत्र था जैसे राजस्थान में है। वहाँ पर जांडी के वक्ष अधिक होते थे। उनकी छाया का ही प्रयोग अधिक किया जाता था। इस प्रकार संत गरीब दास जी ने परमात्मा से प्राप्त तत्वज्ञान आँखों देखा हाल वाणी रुप में बोला तथा संत गोपाल दास जी ने लिखा। लगभग छः महीनों तक यह कार्य किया गया। फिर जब-तब किसी से वार्ता होती तो संत गरीबदास जी वाणी बोला करते थे तो अन्य व्यक्ति भी लिख लिया करते थे। जिन सबको मिलाकर एक ग्रन्थ रुप में हाथ से लिखा गया था।

संत गरीबदास जी के समय से ही इस ग्रन्थ का पाठ करना प्रारम्भ हो गया था। इसको कुछ वर्षों पूर्व टाइप कराया गया था। इसके अतिरिक्त परमेश्वर कबीर जी ने जो सुक्ष्म वेद अपने मुख कमल से बोला था। उस अमत सागर (कबीर सागर) से निकालकर कुछ अमतवाणी ग्रन्थ के अंत में लिखी हैं। इस पवित्र अमतवाणी की पुस्तक को अमर ग्रन्थ नाम दिया है। इस अमतवाणी का अब सरलार्थ प्रारम्भ किया जाता है।

लेखक तथा सरलार्थ कर्ता :-

(संत) रामपाल दास
सतलोक आश्रम
टोहाना रोड़, बरवाला।
जिला - हिसार (हरियाणा)

।।सत साहेब।।

''सुमिरन के अंग का सरलार्थ''

(अथ सुमिरन का अंग)

❖ शब्दार्थ :- अथ = प्रारम्भ, अविगत = जिस परमेश्वर की गति यानि सामर्थ्य कोई नहीं जानता। जिसको गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में परम अक्षर ब्रह्म कहा है तथा अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में परम दिव्य पुरूष तथा श्लोक 20 से 22 में अविनाशी अव्यक्त कहा है। गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62, 66 में गीता ज्ञान दाता ने जिस परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है, उसी को संत गरीबदास जी ने अविगत राम कहा है।

❖ राम की परिभाषा :- राम कहो, प्रभु, स्वामी, अल्लाह, भगवान, ईश, परमात्मा या साहब (साहिब) कहो। ये परमात्मा का बोध कराने वाले नाम हैं।

उदाहरण के लिए :- जैसे तहसीलदार साहब अपने कार्य क्षेत्र का स्वामी है, मालिक है, प्रभु है।

उपायुक्त साहब :- यह अपने जिले में साहब, स्वामी, प्रभु, मालिक है।

आयुक्त साहब :- यह कई जिलों का साहब, स्वामी, प्रभु, मालिक है।

प्रान्त का मंत्री भी साहब है, स्वामी, प्रभु है। मुख्यमंत्री भी साहब (राम, प्रभु, स्वामी) है। केन्द्र सरकार का मंत्री भी साहब (राम, प्रभु, स्वामी) है।

देश के प्रधानमंत्री जी भी साहब (राम, प्रभु, स्वामी) हैं।

देश के राष्ट्रपति जी भी साहब (स्वामी, राम, प्रभु) हैं।

परंतु इन सबकी अपनी-अपनी सीमाऐं हैं। अपने-अपने कार्यक्षेत्र के सब ही प्रभु हैं, परंतु वास्तव में समर्थ शक्ति राष्ट्रपति जी हैं। उनके पश्चात् प्रधानमंत्री जी समर्थ शक्ति हैं। पूर्ण साहब हैं।

इस सुमरण के अंग में वाणी नं. 15-16 में कहा है कि मूल कमल में राम है यानि गणेश जी हैं। यह भी स्वामी हैं। राम हैं यानि देव हैं। (स्वाद कमल में राम) ब्रह्मा-सावित्री भी प्रभु हैं। (नाभि कमल में राम) विष्णु-लक्ष्मी भी प्रभु हैं। (हृदय कमल विश्राम) हृदय कमल में शिव-पार्वती भी प्रभु (राम) हैं।(15)

(कण्ठ कमल में राम है) देवी दुर्गा भी राम है, मालिक-स्वामी है। (त्रिकुटी कमल में राम) सतगुरू रूप में परमेश्वर त्रिकुटी में विराजमान हैं। वे उस स्थान पर सतगुरू रूप में अपने कार्य के स्वामी (राम-प्रभु) हैं। (संहस कमल दल राम है) काल-निरंजन भी अपने 21 ब्रह्मण्डों का राम (स्वामी-प्रभु) है जो संहस्र कमल दल में अव्यक्त रूप में बैठा है। (सुनि बस्ती सब ठाम) सब स्थानों (लोकों) पर जिसकी सत्ता है, वह भी राम (स्वामी, प्रभु) है। वाणी नं. 17 में कहा है कि वास्तव में समर्थ राम है :-

अचल अभंगी राम है, गलताना दम लीन। सुरति निरति के अंतरे बाजै अनहद बीन।।

अचल (स्थाई) अभंगी (अविनाशी) जो कभी भंग यानि नष्ट नहीं होता, वह समर्थ राम है।

सुमरण का अर्थ है परमात्मा के सत मंत्र का जाप करना। जैसे कबीर परमेश्वर जी

ने कहा है कि :-

सारशब्द का सुमरण करहीं, सो हंसा भवसागर तरहीं।
सुमरण का बल ऐसा भाई। कालही जीत लोक ले जाई।।
नाम सुमरले सुकर्म करले कौन जाने कल की, खबर नहीं पल की।

श्वांस–उश्वांस में नाम जपो, बिरथा श्वांस न खोय। ना बेरा इस श्वांस का, आवन हो के ना होय।।
कहता हूँ कही जात हूँ, सुनता है सब कोय। सुमरण से भला होयेगा, नातर भला ना होय।।
सुमरण मार्ग सहज का, सतगुरू दिया बताय। श्वांस–उश्वांस जो सुमरता, एक दिन मिलसी आय।।

❖ **राग आसावरी से शब्द नं. 63,66 तथा 75 :-**

✯नर सुनि रे मूढ गंवारा। राम भजन ततसारा।।टेक।। राम भजन बिन बैल बनैगा, शूकर श्वान शरीरं। कउवा खर की देह धरैगा, मिटै न याह तकसीरं।।1।। कीट पतंग भवंग होत हैं, गीदड़ जंबक जूंनी। बिना भजन जड़ बिरछ कीजिये, पद बिन काया सूंनी।।2।। भक्ति बिना नर खर एकै हैं, जिनि हरि पद नहीं जान्या। पारब्रह्म की परख नहीं रे, पूजि मूये पाषानां।।3।। थावर जंगम में जगदीशं, व्यापक पूरन ब्रह्म बिनांनी। निरालंब न्यारा नहीं दरसै, भुगतैं चार्यौं खांनी।।4।। तोल न मोल उजन नहीं आवै, असथरि आनंद रूपं। घटमठ महतत सेती न्यारा, सोहं सति सरूपं।।5।। बादल छांह ओस का पानी, तेरा यौह उनमाना। हाटि पटण क्रितम सब झूठा, रिंचक सुख लिपटांना।।6।। नराकार निरभै निरबांनी, सुरति निरति निरतावै। आत्मराम अतीत पुरुष कूं, गरीबदास यौं पावै।।7।।63।। ✯भजन करौ उस रब का, जो दाता है कुल सब का।।टेक।। बिनां भजन भै मिटै न जम का, समझि बूझि रे भाई। सतगुरु नाम दान जिनि दीन्हा, याह संतौं ठहराई।।1।। सतकबीर नाम कर्ता का, कलप करै दिल देवा। सुमरन करै सुरति सै लापै, पावै हरि पद भेवा।।2।। आसन बंध पवन पद परचै, नाभी नाम जगावै। त्रिकुटी कमल में पदम झलकै, जा सें ध्यान लगावै।।3।। सब सुख भुक्ता जीवत मुक्ता, दुःख दालिद्र दूरी। ज्ञान ध्यान गलतांन हरी पद, ज्यौं कुरंग कसतूरी।।4।। गज मोती हसती कै मसतगि, उनमन रहै दिवानां। खाय न पीवै मंगल घूमें, आठ बखत गलतानां।।5।। ऐसैं तत पद के अधिकारी, पलक अलख सें जोरैं। तन मन धन सब अरपन रहीं, नेक न माथा मोरैं।।6।। बिनहीं रसना नाम चलत है, निरबांनी सें नेहा। गरीबदास भोडल में दीपक, छांनि नहीं सनेहा।।7।।66।। ✯भक्ति मुक्ति के दाता सतगुरु। भक्ति मुक्ति के दाता।। टेक।। पिण्ड प्रांन जिन्हि दान दिये हैं, जल सें सिरजे गाता। उस दरगह कूं भूलि गया है, कुल कुटंब सें राता।।1।। रिधि सिधि कोटि तुरंगम दीन्हें, ऐसा धनी बिधाता। उस समरथ की रीझ छिपाई, जग से जोर्या नाता।।2।। मुसकल सें आसान किया था, कहां गई वै बाता। सत सुकृत कूं भूलि गया है, ऊंचा किया न हाथा।।3।। सहंस इकीसौं खंड होत हैं, ज्यौं तरुवर कैं पाता। थूंनी डिगी थाह कहा पावै, यौह मंदर ढह जाता।।4।। इस देही कूं देवा लोचैं, तूं नरक्यौं उकलाता। नर देही नारायन येही, सनक सनन्दन साथा।।5।। ब्रह्म महूरति सूरति नगरी, शुन्य सरोवर न्हाता। या परबी का पार नहीं रे, सकल कर्म कटि जाता।।6।। सुरति निरति मन पवन बंद करि, मेरदण्ड चढि जाता। सहंस कमल दल फूलि रहै है, अमी महारस खाता।।7।। जहां अलख निरंजन जोगी बैठ्या, जा सें रह्या न भाता। गरीबदास पारंग प्रान है, संख कमल खिलि जाता।।8।।75।।

❖ **राग बसंत से शब्द नं. 8 :-**

✯कोई है रे परले पार का, जो भेद कहै झनकार का।।टेक।। वारिही गोरख वारिही दत, बारिही ध्रू प्रहलाद अरथ। वारिही सुखदे वारिही ब्यास, वारिही पारासुर प्रकाश।।1।। वारिही दुरबासा दरबेश, वारिही नारद शारद शेष। वारिही भरथर गोपीचंद, वारिही सनक सनंदन बंध।।2।। वारिही ब्रह्मा वारिही इन्द, वारिही सहंस कला गोविंद। वारिही शिबशंकर जो सिंभ, वारिही धर्मराय आरंभ।।3।। वारिही धर्मराय धरधीर, परमधाम पौंहचे कबीर। ऋग यजु साम अथरवन बेद, परमधाम नहीं लह्या भेद।।4।। अलल पंख अगाध भेव, जैसैं कुंजी सुरति सेव। वार पार थेहा न थाह, गरीबदास निरगुन निगाह।।5।।8।।

❖ **राग होरी से शब्द नं. 8 :-**

✯अलल का ध्यान धरौ रे, चीन्हौं पुरुष बिदेही।।टेक।। उलटि पवन रेचक करि राखौ, काया कुंभ भरौ रे। अडिग अमांन अडोल अबोलं, टार्यौ नांहि टरौ रे।।1।। बिन सतगुरु पद दरशत नाहीं, भावै तिहूं लोक फिरौ रे। गुन इन्द्री का ज्ञान परेरो, जीवत क्यौं न मरौ रे।।2।। पलकौं दा भौंरा पुरुष बिनांनी, खोटा करत खरौ रे। कामधेनु दूझे कलवारनि, नीझर अजर जरौ रे।।3।। कलविष कुसमल बंधन टूटैं, सब दुःख ब्याधि हरौ रे। गरीबदास निरभै पद पाया, जम सें नांहि डरौ रे।।4।।8।।

''सुमिरन के अंग का सारांश''

संत गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी रूपी वन में प्रत्येक प्रकार के पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियां, फूल, फलदार वृक्ष, मेवा की लता आदि-आदि उगाए हैं। इसका मुख्य कारण यह रहा है कि जो मूल ज्ञान है, उसको गुप्त रखना था। यह परमात्मा कबीर जी का आदेश था। इसी कारण से संत गरीबदास जी ने अनेकों वाणियाँ कही हैं। मन की आदत है कि यदि कम वाणी हैं तो उनको कण्ठस्थ करके अरूचि करता है। ये ढ़ेर सारी अमृतवाणी लिखवाकर संत गरीबदास जी ने मन को व्यस्त तथा रूचि बनाए रखने का मंत्र बताया है। मन पढ़ता रहता है या सुनता रहता है, आत्मा आनन्द का अनुभव करती है।

वाणी नं. 18 में कहा है कि :-

गरीब, राम कहा तो क्या हुआ, उर में नहीं यकीन। चोर मुसें घर लूटहि, पाँच पचीसों तीन।।18।।

❖ **भावार्थ :- यदि साधक को परमात्मा पर विश्वास ही नहीं है तो नाम-सुमरण का कोई लाभ नहीं। उसके मानव जीवन को काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार रूपी पाँच चोर मुस (चुरा) रहे हैं। इन पाँचों की पाँच-पाँच प्रकृति यानि 25 ये तथा रजगुण के आधीन होकर कोठी-बंगले बनाने में, कभी कार-गाड़ी खरीदने में जीवन नष्ट कर देता है। सतगुण के प्रभाव से पहले तो किसी पर दया करके बिना सोचे-समझे लाखों रूपये खर्च कर देता है। फिर उसमें त्रुटि देखकर तमोगुण के प्रभाव से झगड़ा कर लेता है। इस प्रकार तीन गुणों के प्रभाव से मानव जीवन नष्ट हो जाता है। यदि तत्वदर्शी संत से ज्ञान सुनकर विश्वास के साथ नाम का जाप करे तो जीवन सफल हो जाता है।**

जिन-जिन भक्तों ने मर्यादा में रहकर जिस स्तर की भक्ति, दान आदि-आदि किया

है, उनको लाभ अवश्य मिला है। उदाहरण बताया है कि :-

(वाणी नं. 31 से 39 में) = गोरखनाथ, दत्तात्रे, शुकदेव, पीपा, नामदेव, धन्ना भक्त, रैहदास (रविदास), फरीद, नानक, दादू, हरिदास, गोपीचंद, भरथरी, जंगनाथ (झंगरनाथ), चरपटनाथ, अब्राहिम अधम सुल्तान, नारद ऋषि, प्रहलाद भक्त, ध्रुव, विभीक्षण, जयदेव, कपिल मुनि, स्वामी रामानंद, श्री क'ष्ण, ऋषि दुर्वासा, शंभु यानि शिव, विष्णु, ब्रह्मा आदि सबकी प्रसिद्धि पूर्व जन्म तथा वर्तमान में की गई नाम-सुमरण (स्मरण) की शक्ति से हुई है, अन्यथा ये कहाँ थे यानि इनको कौन जानता था? इसी प्रकार आप भी तन-मन-धन समर्पित करके गुरू धारण करके आजीवन भक्ति मर्यादा में रहकर करोगे तो आप भी भक्ति शक्ति प्राप्त करके अमर हो जाओगे। जिन-जिन साधकों ने जिस-जिस देव की साधना की, उनको उतनी महिमा मिली है।

कबीर जी ने कहा है कि :-

जो जाकि शरणा बसै, ताको ताकी लाज। जल सौंही मछली चढ़ै, बह जाते गजराज।।

❖ भावार्थ :- जो साधक जिस राम (देव-प्रभु) की भक्ति पूरी श्रद्धा से करता है तो वह राम उस साधक की इज्जत रखता है यानि उसको अपने सामर्थ्य अनुसार अपने क्षेत्र में पूर्ण लाभ देता है।

उदाहरण दिया है कि जैसे मछली का जल से अटूट नाता है। वह कुछ समय ही जल से दूर होने पर तड़फ-तड़फकर प्राण त्याग देती है। ऐसी श्रद्धा देखकर जल ने उसको अपने क्षेत्र में पूर्ण स्वतंत्रता दे रखी है। उसको कोई रोक-टोक नहीं है। जैसे ऊँचे स्थान (Fall) से 50 फुट से दरिया का जल गिर रहा होता है। वह जल की धारा बड़े से बड़े हाथी यानि गजराज को भी बहा ले जाती है जो हाथियों का राजा होता है। परंतु अपनी पुजारिन मछली को पूरी स्वतंत्रता दे रखी है। वह उस गिरते पानी में नीचे से ऊपर (50 फुट तक) चढ़ जाती है। इसी प्रकार जो साधक जिस प्रभु की पूरी श्रद्धा से भक्ति करता है तो वह प्रभु अपने भक्त को अपने स्तर का लाभ अपनी क्षमता के अनुसार पूरा देता है।

❖ समझने के लिए सामान्य उदाहरण :-

अपने देश में अभी तक अंग्रेजों वाली परंपरा का प्रभाव भी है। जैसे किसी सामान्य व्यक्ति को पुलिस थाने से बुलावा आता है तो उसके लिए बड़ी आपत्ति होती है। थाने के आस-पास से भी सामान्य व्यक्ति डरकर जाता है। बुलावा आने पर तो उसके साथ क्या बीतेगी? स्पष्ट है। जाते ही लगभग प्रत्येक पुलिसकर्मी तथा थानेदार का दुर्व्यवहार झेलना पड़ता है। मारपीट तो पहला प्रसाद है। गाली देना पुलिस वालों का मूल मंत्र है।

उसी थाने में किसी का मित्र थानेदार लगा है। वह व्यक्ति वहाँ जाता है तो थानेदार उसे कुर्सी पर बैठाता है, चाय-पानी पिलाता है। इस प्रकार जो व्यक्ति जिस अधिकारी का मित्र है, वह अपने स्तर की राहत अवश्य देता है। वह राहत उस सामान्य व्यक्ति के लिए असहज होती है यानि सामान्य नहीं होती, परंतु वह पर्याप्त भी नहीं है। यदि पुलिस अधीक्षक से मित्रता हो जाए तो थानेदार भी नतमस्तक हो जाता है। यदि मंत्री जी से मित्रता हो जाए तो एस.पी. भी नतमस्तक हो जाता है। यदि मुख्यमंत्री-प्रधानमंत्री के साथ मेल हो जाए तो

नीचे के सर्व अधिकारी-कर्मचारी आपके साथ हो जाएंगे। इसी प्रकार यदि कोई किसी देवी-देव, माता-मसानी, सेढ़-शीतला, भैरो-भूत तथा हनुमान जी की भक्ति करता है तो उसको उनका लाभ अवश्य होगा, परंतु गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में तथा अध्याय 7 श्लोक 12-15 तथा 20 से 23 तक में बताए अनुसार व्यर्थ साधना होने से मोक्ष से वंचित रह जाते हैं। कर्म का फल भी अच्छा-बुरा भोगना पड़ता है। इसलिए यह साधना करके भी हानि होती है। इसलिए संत गरीबदास जी ने वाणी नं. 38 में कहा है कि :-

गरीब, ऐसा निर्मल नाम है, निर्मल करे शरीर। और ज्ञान मण्डलीक हैं, चकवै ज्ञान कबीर।।

❖ **भावार्थ :- वेदों, गीता, पुराणों, कुरान, बाईबल आदि का ज्ञान तो मण्डलीक यानि अपनी-अपनी सीमा का है।(Divisional है) परंतु परमेश्वर कबीर जी द्वारा बताया आध्यात्म सत्य ज्ञान यानि तत्वज्ञान (सुक्ष्मवेद) चक्रवर्ती ज्ञान है जिसमें सब ज्ञान का समावेश है। वह कबीर वाणी है।**

❖ **वाणी नं. 41-42 :-**

गरीब, गगन मण्डल में रहत है, अविनाशी आप अलेख। जुगन—जुगन सत्संग है, धर—धर खेलै भेख।।41।।
गरीब, काया माया खण्ड है, खण्ड राज और पाट। अमर नाम निज बंदगी, सतगुरू सें भई साँट।।42।।

❖ **भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा कबीर जी गगन मण्डल यानि आकाश में रहता है जो अविनाशी अलेख है।{अलेख का अर्थ है जो पृथ्वी से देखा नहीं जा सकता। जिसे अविनाशी अव्यक्त गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 23 में कहा है। जैसे कुछ ऋषिजन दिव्य दृष्टि के द्वारा पृथ्वी से स्वर्ग लोक, श्री विष्णु लोक, श्री ब्रह्मा लोक तथा श्री शिव जी के लोक को तथा वहाँ के देवताओं को तथा ब्रह्मा-विष्णु-महेश को देख लेते थे। परंतु ब्रह्म काल को तथा इससे ऊपर अक्षर पुरूष तथा परम अक्षर पुरूष (अविनाशी अलेख) को कोई नहीं देख सकता। जिस कारण से उस परमात्मा का यथार्थ उल्लेख ग्रन्थों में नहीं है। यथार्थ वर्णन सुक्ष्मवेद में है जो स्वयं परमात्मा द्वारा बताया अध्यात्म ज्ञान है। इसलिए उस पूर्ण परमात्मा को अलख तथा अलेख कहकर उपमा की है। उस परमेश्वर को देखने के लिए पूर्ण सतगुरू जी से दीक्षा लेकर तब सतलोक जाकर ही देखा जा सकता है।} वह परमात्मा स्वयं अन्य भेख (वेश) धारण करके पृथ्वी पर प्रत्येक युग में प्रकट होता है। अपना तत्वज्ञान (चक्रवर्ती ज्ञान) स्वयं ही बताता है कि यह सब राज-पाट तथा शरीर खण्ड (नाशवान) है। केवल सतगुरू से मिलन तथा उनके द्वारा दिया निज नाम (सत्य भक्ति मंत्र) ही अमर है।**

यदि सच्चे भक्ति मंत्र प्राप्त नहीं हुए तो अन्य नामों का जाप (सुमरण) तथा यज्ञ करना सब व्यर्थ है।

❖ **सुमरण के अंग की वाणी नं. 20 में कहा है कि :-**

गरीब, राम नाम निज सार है, मूल मंत्र मन मांहि। पिंड ब्रह्मंड सें रहित है, जननी जाया नाहिं।।20।।

❖ **भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि मोक्ष के लिए राम के नाम का जाप ही निज सार है। यानि मोक्ष प्राप्ति का निष्कर्ष है। नाम-स्मरण से ही मुक्ति होती है। नाम भी मूल मंत्र यानि यथार्थ नाम हो। जिस पूर्ण परमात्मा का जो मूल मंत्र यानि सार नाम है, वह परमेश्वर पिण्ड यानि नाड़ी तंत्र से बने पाँच तत्व के शरीर से रहित (उसका पाँच तत्व का**

शरीर नहीं है) है। परमात्मा का जन्म किसी माता से नहीं हुआ।(20)

❖ वाणी नं. 21 :-

गरीब, राम रटत नहिं ढील कर, हरदम नाम उचार। अमी महारस पीजिये, योह तत बारंबार।।21।।

❖ हे साधक! पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर उस राम के नाम की रटना (जाप करने में) में देरी (ढ़ील) ना कर। प्रत्येक श्वांस में उस नाम को उच्चार यानि जाप कर। यह स्मरण का अमंत बार-बार पी यानि कार्य करते-करते तथा कार्य से समय मिलते ही जाप शुरू कर दे। इस अमंत रूपी नाम जाप के अमंत को पीता रहे। यह तत यानि भक्ति का सार है।(21)

❖ यदि यथार्थ नाम प्राप्त नहीं है तो चाहे पुराणों में वर्णित धार्मिक क्रियाऐं करोड़ों गाय दान करो, करोड़ों धर्म यज्ञ, जौनार (जीमनवार = किसी लड़के के जन्म पर भोजन कराना) करो, चाहे करोड़ों कुँए खनों (खुदवाओ), करोड़ों तीर्थों के तालाबों को गहरा कराओ जिससे जम मार (काल की चोट) यानि कर्म का दण्ड समाप्त नहीं होगा।

❖ वाणी नं. 22 :-

गरीब, कोटि गऊ जे दान दे, कोटि जग्य जोनार। कोटि कूप तीरथ खने, मिटे नहीं जम मार।।22।।

जैसे किसी देव या संत के नाम का मेला लगता है। उसका स्थान किसी छोटे-बड़े जलाशय के पास होता है। श्रद्धालुओं को उस तालाब से मिट्टी निकलवाने को कहा जाता है तथा उसको पुण्य का कार्य कहा जाता है। यदि सतनाम का जाप नहीं किया तो मोक्ष नहीं होगा। साधक को अन्य साधना का फल स्वर्ग में समाप्त करके पाप को नरक में भोगना होता है। इसलिए सब व्यर्थ है।(22)

❖ वाणी नं. 23 :-

गरीब, कोटिक तीरथ ब्रत करी, कोटि गज करी दान। कोटि अश्व बिपरौ दिये, मिटै न खैंचातान।।23।।

❖ चाहे करोड़ों तीर्थों का भ्रमण करो, करोड़ों व्रत रखो, करोड़ों गज (हाथी) दान करो, चाहे करोड़ों घोड़े विप्रों (ब्राह्मणों) को दान करो। उससे जन्म-मरण तथा कर्म के दण्ड से होने वाली खेंचातान (दुर्गति) समाप्त नहीं हो सकती।(23)

❖ वाणी नं. 24 :-

गरीब, पारबती कै उर धर्‌या, अमर भई क्षण मांहिं। सुकदेव की चौरासी मिटी, निरालंब निज नाम।।24।।

❖ वाणी नं. 24 का भावार्थ है कि जैसे पार्वती पत्नी शिव शंकर को जितना अमरत्व (वह भगवान शिव जितनी आयु नाम प्राप्ति के बाद जीएगी, फिर दोनों की मंत्यु होगी। इतना मोक्ष) भी देवी जी को शिव जी को गुरू मानकर निज मंत्रों का जाप करने से प्राप्त हुआ है। ऋषि वेद व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी को अपनी पूर्व जन्म की सिद्धि का अहंकार था। जिस कारण से बिना गुरू धारण किए ऊपर के लोकों में सिद्धि से उड़कर चला जाता था। जब श्री विष्णु जी ने उसे समझाया और स्वर्ग में रहने नहीं दिया, तब उनकी बुद्धि ठिकाने आई। राजा जनक से दीक्षा ली। तब शुकदेव जी की उतनी मुक्ति हुई, जितनी मुक्ति उस नाम से हो सकती थी। परमेश्वर कबीर जी अपने विधान अनुसार राजा जनक को भी त्रेतायुग में मिले थे। उनको केवल हरियं नाम जाप करने को दिया था क्योंकि वे श्री विष्णु जी के भक्त थे। वही मंत्र शुकदेव को प्राप्त हुआ था। जिस कारण से वे श्री विष्णु लोक के स्वर्ग

रूपी होटल में आनन्द से निवास कर रहे हैं। वहीं से विमान में बैठकर अर्जुन के पौत्र यानि अभिमन्यु के पुत्र राजा परीक्षित को भागवत (सुधा सागर की) कथा सुनाने आए थे। फिर वहीं लौट गए।

गरीब, ऋषभ देव के आईया, कबि नामें अवतार। नौ योगेश्वर में रमा, जनक विदेही उधार।।

❖ भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी अपने विधान अनुसार {कि परमात्मा ऊपर के लोक में निवास करता है। वहाँ से गति करके आता है, अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको अपनी वाक (वाणी) द्वारा भक्ति करने की प्रेरणा करता है आदि-आदि।} राजा ऋषभ देव (जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर) को मिले थे। अपना नाम कविर्देव बताया था। ऋषभ देव जी ने अपने धर्मगुरूओं-ऋषियों से सुन रखा था कि परमात्मा का वास्तविक नाम वेदों में कविः देव (कविर्देव) है। परमात्मा कवि ऋषि नाम से ऋषभ देव को भक्ति की प्रेरणा देकर अंतर्ध्यान हो गए थे। नौ नाथों (गोरखनाथ, मच्छन्द्रनाथ, जलंदरनाथ, चरपटनाथ आदि) को समझाने के लिए उनको मिले तथा राजा जनक विदेही (विलक्षण शरीर वाले को विदेही कहते हैं) को सत्यज्ञान बताकर उनको सही दिशा दी। परंतु राजा जनक ने विष्णु उपासना को नहीं त्यागा। राजा जनक से दीक्षा लेकर शुकदेव ऋषि को स्वर्ग प्राप्त हुआ। परंतु वह पूर्ण मोक्ष नहीं मिला जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है:-

(तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान समझने के पश्चात्) अध्यात्म अज्ञान को तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से काटकर उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है यानि जिस परमेश्वर ने संसार की रचना की है, केवल उसी की भक्ति करो।

वाणी नं. 24 में यही स्पष्ट किया है कि यदि स्वर्ग जाने की भी तमन्ना है तो वे भी विशेष (निज) मंत्रों के जाप से ही पूर्ण होगी। परंतु यह इच्छा तत्वज्ञान के अभाव से है। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में बहुत सटीक उदाहरण दिया है कि सब ओर से परिपूर्ण जलाश्य (बड़ी झील=Lake) प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय (तालाब) में मनुष्य का जितना प्रयोजन रह जाता है। उसी प्रकार तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् विद्वान पुरूष का वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में प्रयोजन रह जाता है।

❖ भावार्थ :- तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् अन्य देवताओं से होने वाले क्षणिक लाभ (स्वर्ग व राज्य प्राप्ति) से अधिक सुख समय तथा पूर्ण मोक्ष (गीता अध्याय 15 श्लोक 4 वाला मोक्ष) जो परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म=गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10, 20 से 23 वाले परमेश्वर) के जाप से होता है, की जानकारी के पश्चात् साधक की जितनी श्रद्धा अन्य देवताओं में रह जाती है :-

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधें सब जाय। माली सींचे मूल कूँ, फलै फूलै अघाय।।

भावार्थ :- गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 को इस अमृतवाणी में संक्षिप्त कर बताया है कि:-

जो ऊपर को मूल (जड़) वाला तथा नीचे को तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) रूपी शाखा वाला संसार रूपी वृक्ष है :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

जैसे पौधे को मूल की ओर से पृथ्वी में रोपण करके मूल की सिंचाई की जाती है तो उस मूल परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की पूजा से पौधे की परवरिश होती है। सब तना, डार, शाखाओं तथा पत्तों का विकास होकर पेड़ बन जाता है। छाया, फल तथा लकड़ी सर्व प्राप्त होती है जिसके लिए पौधा लगाया जाता है। यदि पौधे की शाखाओं को मिट्टी में रोपकर जड़ों को ऊपर करके सिंचाई करेंगे तो भक्ति रूपी पौधा नष्ट हो जाएगा। इसी प्रकार एक मूल (परम अक्षर ब्रह्म) रूप परमेश्वर की पूजा करने से सर्व देव विकसित होकर साधक को बिना माँगे फल देते रहेंगे।(जिसका वर्णन गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 में भी है) इस प्रकार ज्ञान होने पर साधक का प्रयोजन उसी प्रकार अन्य देवताओं से रह जाता है जैसे झील की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय में रह जाता है। छोटे जलाशय पर आश्रित को ज्ञान होता है कि यदि एक वर्ष बारिश नहीं हुई तो छोटे तालाब का जल समाप्त हो जाएगा। उस पर आश्रित भी संकट में पड़ जाऐंगे। झील के विषय में ज्ञान है कि यदि दस वर्ष भी बारिश न हो तो भी जल समाप्त नहीं होता। वह व्यक्ति छोटे जलाशय को छोड़कर तुरंत बड़े जलाशय पर आश्रित हो जाता है। भले ही छोटे जलाशय का जल पीने में झील के जल जैसा ही लाभदायक है, परंतु पर्याप्त व चिर स्थाई नहीं है। इसी प्रकार अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति से मिलने वाले स्वर्ग का सुख बुरा नहीं है, परंतु क्षणिक है, पर्याप्त नहीं है। इन देवताओं तथा इनके अतिरिक्त किसी भी देवी-देवता, पित्तर व भूत पूजा करना गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा अध्याय 9 श्लोक 25 में मना किया है। इसलिए भी इनकी भक्ति करना शास्त्र विरूद्ध होने से व्यर्थ है जिसका गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है। कहा है कि शास्त्र विधि को त्यागकर मनमाना आचरण करने वालों को न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही परम गति यानि पूर्ण मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् व्यर्थ प्रयत्न है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

इससे तेरे लिए अर्जुन! कर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म करने चाहिए और अकर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म न करने चाहिए, उसके लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं यानि शास्त्रों को आधार मानकर निर्णय लेकर शास्त्रों में वर्णित साधना करना योग्य है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 24)

❖ **सुमरन के अंग की वाणी नं. 38 में कहा है :-**

गरीब, ऐसा निर्मल नाम है, निर्मल करै शरीर। और ज्ञान मंडलीक है, चकवै ज्ञान कबीर।।

❖ **वाणी नं. 47-50 :-**

गरीब, नाम बिना क्या होत है, जप तप संयम ध्यान। बाहरि भरमै मानवी, अब अंतर में जान।।47।।
गरीब, उजल हिरंबर भगति है, उजल हिरंबर सेव। उजल हिरंबर नाम है, उजल हिरंबर देव।।48।।
गरीब, निजनाम बिना निपजै नहीं, जपतप करि हैं कोटि। लख चौरासी त्यार है, मूंड मुंडायां घोटि।।49।।
गरीब, नाम सिरोमनि सार है, सोहं सुरति लगाइ। ज्ञान गलीचे बैठिकरि, सुंनि सरोवर न्हाइ।।50।।

वाणी नं. 47 से 50 में भी यही समझाया है कि निज नाम (विशेष मंत्र) बिना अन्य नामों का जाप तथा मनमाना घोर तप जो करते हैं, उनकी साधना व्यर्थ है।

{गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6 तक में भी यही स्पष्ट किया है :- श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि आपने गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि के विपरित साधना व्यर्थ है। यदि साधक शास्त्रविधि को त्यागकर श्रद्धा से अन्य देवताओं (जिनके विषय में गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23, अध्याय 9 श्लोक 23, 25 में वर्णन है) का पूजन करते हैं। उनकी स्थिति सात्विक है या राजसी है या तामसी है?

अध्याय 17 श्लोक 2 से 6 तक गीता ज्ञान दाता ने उत्तर दिया :- मनुष्यों की स्थिति तीन प्रकार की ही होती है। सात्विक वंति के व्यक्ति (तत्वज्ञान के अभाव से) देवताओं की भक्ति (पूजा) करते हैं। तामसी व्यक्ति प्रेतों, पित्तरों आदि के जन्त्र-मन्त्र में लगे रहते हैं, जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर मन कल्पित घोर तप को तपते हैं, वे शरीर में स्थित मुझे, उस परमेश्वर तथा कमलों में विराजमान मुख्य देवताओं को कष्ट देने वाले अज्ञानी हैं। उनको राक्षस स्वभाव के जान।}

❖ **वाणी नं. 49 :-**

गरीब, निज नाम बिना निपजै नहीं, जप तप करहें कोटि।
लख चौरासी तैयार हैं, क्या मूंड मुंडाया घोटि।।49।।

❖ **भावार्थ :- वास्तविक नाम (सात नाम, सतनाम तथा सारनाम) बिना भक्ति रूपी फसल नहीं उपजती यानि जैसे गेहूँ की फसल प्राप्त करने के लिए गेहूँ का बीज ही बीजना पड़ता है। यदि ग्वार का बीज बोकर गेहूँ की प्राप्ति की इच्छा लिए है तो भूखा मरेगा। इसलिए कहा है कि वास्तविक नाम के जाप बिना अन्य नामों का जाप तथा मनमाना घोर तप करके आप खुश हुए बैठे हो, कोई सिर के सब बाल तथा दाढ़ी-मूँछ कटाकर सफाचट रहता है, गलत साधना करके मोक्ष की आशा लगाए है, उनसे कहा है कि चौरासी लाख योनियों की प्राप्ति तैयार है।**

कबीर, करता था तब क्यों किया, अब करके क्यों पछताए।
बोए पेड़ बबूल का, आम कहाँ से खाय।।

यह सुमरन के अंग का सारांश है।

''सुमिरन के अंग का सरलार्थ''

(राग बिलावल से शब्द नं. 17 भी पढ़ें।)

✯तत कहन कूं राम है, दूजा नहीं देवा। ब्रह्मा बिष्णु महेश से, जाकी करि हैं सेवा।।टेक।। जप तप तीर्थ थोथरे, जाकी क्या आशा। कोटि यज्ञ पुण्य दान से, जम कटै न फांसा।।1।। यहां देन वहां लेन है, योह मिटै न झगरा। वाह बिना पंथ की बाट है, पावै को दगरा।।2।। बिन इच्छा जो देत है, सो दान कहावै। फल बांचै नहीं तास का, अमरापुर जावै।।3।। सकल द्वीप नौ खंड के, क्षत्री जिन जीते। सो तो पद में ना मिले, विद्या गुण चीते।।4। कोटि उनंचा पृथ्वी, जिन दीन्ही दाना। परशुराम अवतार कूं, कीन्ही कुरबाना।।5।। कंचन मेर सुमेर रे, आये सब माही। कामधेनु कल्पबृक्ष रे, सो दान कराहीं।।6।। सुर नर मुनिजन सेवहीं, सनकादिक ध्यावैं। शेष सहंस मुख रटत हैं, जाका पार न पावैं।।7।। ब्रह्मा बिष्णु महेश रे, देवा दरबारी। संख कल्प युग हो गये, जाकी खुल्है न

तारी।।8।। सर्ब कला सम्पूर्णां रे, सब पीरन का पीरा। अनन्त लोक में गाज है, जाका नाम कबीरा।।9।। प्रलय संख्य असंख्य रे, पल मांहि बिहानी। गरीब दास निज नाम की, महिमा हम जानी।।10।।17।।

❖ **वाणी नं. 1-2 :-**

गरीब, ऐसा अबिगत राम है, आदि अंत नहिं कोइ। वार पार कीमत नहीं, अचल हिरंबर सोइ।।1।।
गरीब, ऐसा अबिगत राम है, अगम अगोचर नूर। सुंन सनेही आदि है, सकल लोक भरपूर।।2।।

संत गरीबदास जी ने जिसको अविगत राम (परम दिव्य पुरूष) कहा है। वह कबीर परमेश्वर काशी शहर में जुलाहे की भूमिका किया करता था।

गरीब, सब पदवी के मूल हैं, सकल सिद्धि हैं तीर। दास गरीब सतपुरूष भजो, अविगत कला कबीर।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार। सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने इस अविगत राम का निज नाम पूर्ण सतगुरू से लेकर सुमरन (स्मरण) करने के लिए जोर देकर कहा है। उसकी महिमा बताई है। उसकी भक्ति से लाभ तथा अन्य देव की भक्ति से लाभ तथा फिर दोनों की तुलना करके निर्णय दिया है कि** ''राम कबीर का नाम जप भईया, जे तेरा पार चलने को दिल है जी।''

कबीर परमेश्वर ऐसा अविगत राम है जिसका न आदि (जन्म-शुरूआत) है, न अंत है यानि मत्यु है अर्थात् सनातन अविनाशी परमात्मा है। उसका कोई वार-पार यानि भेद नहीं, वह अनमोल, अचल (स्थाई) हिरंबर (स्वर्ण की तरह सुनहरी रंग यानि तेजोमय) है। जैसे एक ''पारस'' पत्थर है। उसके छोटे से टुकड़े को एक क्विंटल के लोहे के गाटर (स्तम्भ) से छू दिया जाए तो पूरे स्तम्भ को सोना (Gold) बना देता है। यदि सौ क्विंटल के लोहे के स्तम्भ से छू दे तो उसको भी स्वर्ण बना देता है। यदि हजार-लाख क्विंटल के लोहे से घिसा दे तो उसे भी स्वर्ण बना देता है। इसी प्रकार उस पत्थर के टुकड़े का मूल्य क्या बताया जाए? उसे अनमोल कहते हैं।

क्या आकाश फेर (अंत) है, क्या धरती का तोल। क्या परमेश्वर की महिमा कहें, जैसे क्या पारस का मोल।।

इस प्रकार कबीर परमेश्वर अनमोल यानि बेकीमत करतार है।(1)

❖ **वह परमात्मा सुन्न में आकाश में रहता है। वहीं से सब लोकों को अपनी शक्ति से भरपूर (परिपूर्ण) किए हैं। जैसे सूर्य करोड़ों कि.मी. धरती से दूर आकाश में होते हुए भी पूरी पथ्वी को अपने प्रकाश तथा उष्णता से परिपूर्ण कर रहा है। अगोचर नूर का अर्थ है अव्यक्त प्रकाशयुक्त जो सामान्य साधना तथा चर्मदष्टि से दिखाई नहीं देता।(2)**

❖ **वाणी नं. 3 से 7 :-**

गरीब, ऐसा अबिगत राम है, गुन इन्द्रिय सै न्यार। सुंन सनेही रमि रह्या, दिल अंदर दीदार।।3।।
गरीब, ऐसा अबिगत राम है, अपरम पार अल्लाह। कादर कूं कुरबान है, वार पार नहिं थाह।।4।।
गरीब, ऐसा अबिगत राम है, कादर आप करीम। मीरा मालिक मेहरबान, रमता राम रहीम।।5।।
गरीब, अलह अबिगत राम है, बेच गूंन चित्त माहिं। शब्द अतीत अगाध है, निरगुन सरगुन नाहिं।।6।।
गरीब, अलह अबिगत राम है, पूर्णपद निरबान। मौले मालिक है सही, महल मढी सत थान।।7।।

❖ वाणी नं. 3 से 7 का सरलार्थ :-

{शब्दार्थ :- कादर माने समर्थ, दीदार माने दर्शन, करीम माने दयालु, थाह माने अंत, (मीर) मीरा माने लाठ साहब यानि नवाब, बेचगून माने अव्यक्त जिसको तत्वज्ञान के अभाव से निराकार अर्थ कर रहे हैं। सत् भान माने सत्य स्थान यानि सत्य लोक। पूर्ण पद निरबान माने पूर्ण मोक्ष प्राप्त करने की पद्यति। अल्लाह, मौला, मालिक माने प्रभु।}

सरलार्थ :- कबीर जी ऐसे अविगत राम हैं जो तीनों गुणों तथा भौतिक शरीर की इन्द्रियों से न्यारे हैं। उनका शरीर तथा सामर्थ्य सबसे भिन्न और अधिक है। उसका कोई अन्त नहीं है। वह बेचगून यानि अव्यक्त है। जैसे सूर्य के सामने बादल छा जाते हैं, उस समय सूर्य अव्यक्त होता है। उसी प्रकार परमात्मा और आत्मा के मध्य पाप कर्मों के बादल अड़े हैं। जिस कारण से परमेश्वर विद्यमान होते हुए भी अव्यक्त है, दिखाई नहीं देता।

गरीब, जैसे सूरज के आगे बदरा, ऐसे कर्म छया रे। प्रेम की पवन करे चित मंजन, झलकै तेज नया रे।।

❖ भावार्थ :- सत्य साधना शास्त्रोक्त विधि से करने से परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है।

सुमरन (स्मरण-जाप) करते समय या परमेश्वर की महिमा सुनने तथा परमात्मा का विचार आने पर प्रभु प्रेम में आँसू बहने लगते हैं जो पाप कर्म नाश होने का प्रतीक होता है जैसे तेज वायु चलने से बादल तितर-बितर हो जाते हैं, सूर्य का प्रकाश स्पष्ट नया ताजा दिखाई देने लगता है। इसी प्रकार नाम जाप से उत्पन्न प्रेम की आँधी से आत्मा तथा परमात्मा के सामने से पाप कर्म रूपी बादल तितर-बितर हो जाते हैं। फिर परमेश्वर जी दिव्य दृष्टि से दिखाई देते हैं। उनका नूर (प्रकाश) पहले अगोचर था। फिर दिव्य दृष्टिगोचर हुआ। उसी परमेश्वर की भक्ति से पूर्ण निर्बाण (पूर्ण मोक्ष) प्राप्त होता है। वह परमात्मा (मौला) सत्धाम (सत्यलोक) में रहता है।

❖ सुमिरन के अंग की वाणी नं. 8 से 12 :-

गरीब, अलह अबिगत राम है, निराधारों आधार। नाम निरंतर लीजिये, रोम रोम की लार।।8।।
गरीब, अलह अबिगत राम है, निरबानी निरबंध। नाम निरंतर लीजिये, ध्यान चकोरा चंद।।9।।
गरीब, अलह अबिगत राम है, कीमत कही न जाइ। नाम निरंतर लीजिये, मुख से कह न सुनाइ।।10।।
गरीब, अलह अबिगत राम है, निरबानी निरबंध। नाम निरंतर लीजिये, ज्यूं हिल मिल मीन समंद।।11।।
गरीब, दोऊ दीन मधि एक है, अलह अलेख पिछान। नाम निरंतर लीजिये, भगति हेत उर आन।।12।।

❖ वाणी नं. 8 से 12 का सरलार्थ :-

उस अविगत राम कबीर के निज नाम (वास्तविक नाम) का जाप-स्मरण निरंतर करो। जिनका कोई आधार नहीं, उनका आश्रय वही परमात्मा है। वह परमात्मा निरबानि यानि पूर्ण मोक्षदायक है, निरबन्ध यानि स्वतन्त्र है। उनके ऊपर किसी की हुकूमत (सत्ता) नहीं चलती। वह कुल का मालिक है। उसका नाम इस प्रकार सुमरण करो जैसे मीन (मछली) समुद्र में एक पल भी निश्चल नहीं रहती। उसी प्रकार नाम का स्मरण करते रहो। परमेश्वर के नाम से ध्यान ऐसे लगाओ जैसे चकोर पक्षी चाँद से लगाता है। संत धर्मदास जी ने कहा है कि :-

निर्विकार निर्भय तू ही, और सकल भयमान। सब पर तेरी साहेबी (सत्ता), तुझ पर साहब ना।।

दोनों धर्मों (हिन्दु-मुसलमान) का परमात्मा एक ही है। तत्वज्ञान के अभाव से मुसलमान कहते हैं कि जिसने ''कुर्रान शरीफ'' का ज्ञान हजरत मुहम्मद जी से कहा, वह कादर अल्लाह (समर्थ प्रभु) है। हिन्दु कहते हैं कि जिसने ''गीता'' का ज्ञान अर्जुन को दिया, वह श्री कृष्ण ही सर्वशक्तिमान प्रभु है। संत गरीब दास कह रहे हैं कि मुसलमान उसे बेचून अल्लाह कहते हैं, हिन्दु अलख (निराकार अलेख का अर्थ अदृश्य भी होता है जो दिखाई नहीं देता) कहते हो, उसकी पहचान करो। वह कौन है, फिर उसके पश्चात् परमात्मा का विशेष नाम की (भक्ति हेत) भक्ति हृदय में श्रद्धा उत्पन्न करके करो।

❖ **वाणी संख्या 13 से 16 :-**

गरीब, अष्ट कमल दल राम है, बाहिर भीतर राम। पिंड ब्रह्मंड में राम है, सकल ठौर सब ठाम।।13।।
गरीब, सकल व्यापी सुंनि में, मन पवना गहि राख। रोम रोम धुन होत है, सतगुरु बोले साख।।14।।
गरीब, मूल कमल में राम है, स्वाद चक्र में राम। नाभि कमल में राम है, हृदय कमल बिश्राम।।15।।
गरीब, कंठ कमल में राम है, त्रिकुटि कमल में राम। संहस कमलदल राम है, सुंनि बसति सब ठाम।।16।।

❖ **सरलार्थ :-**

मानव शरीर में नौ (9) कमल हैं। जिनका कबीर वाणी (सुक्ष्म वेद) के अतिरिक्त कहीं वर्णन नहीं है। ऋषि-महर्षि केवल सात कमल बताते हैं, परन्तु परमेश्वर कबीर जी ने अपने द्वारा बनाऐ शरीर का यथार्थ ज्ञान कराया है।

वाणी नं. 13 में कहा है कि अष्ट कमल में भी राम है, अष्ट कमल दल में अक्षर पुरूष (परब्रह्म) का प्रसारण केन्द्र है। मानव शरीर एक टैलीविजन (T.V.) की तरह है। इसमें कमल रूपी चैनल लगे हैं। इन कमलों में प्रत्येक प्रभु का प्रसारण केन्द्र है, जैसे मूल कमल गणेश देव का चैनल है, नाभि कमल विष्णु-लक्ष्मी जी का चैनल है, हृदय कमल में शिव-पार्वती जी का चैनल है। कण्ठ कमल में देवी दुर्गा जी का चैनल है। त्रिकुटी कमल सतगुरू रूप में कबीर जी का चैनल है। (काल तो धोखा देने के लिए गुप्त रहता है)

त्रिकुटी कमल से पहले छठा संगम कमल है जो मुख्य रूप में सरस्वती का चैनल है जहाँ पर भक्तों तथा भक्तमतियों की परीक्षा होती है। इस कमल की तीन पंखुड़ियाँ हैं। इसलिए इसको संगम कमल कहा जाता है। जब पंखुड़ी नं. 1 तथा नं. 2 में स्त्री-पुरूष भक्त भिन्न प्रवेश करते हैं, वहाँ पर स्त्री-भक्तमतियों को पुरूष रूप में काल के सुन्दर दूत अपनी अदाओं से लुभाते हैं। जिन स्त्रियों का मन भक्ति के कारण निश्चल हो चुका है, वे उनके जाल को समझ कर अपने गंतव्य की ओर बढ़ जाती हैं। जो कच्ची होती हैं, वे वहीं आड़ पकड़ जाती हैं। उनको दूत वहाँ बने सुन्दर एकान्त स्थान पर ले जाकर उनसे यौन सम्बन्ध बनाकर भ्रष्ट करके काल जाल में फँसाकर सरस्वती रूप में विराजमान दुर्गा देवी के पास ले जाते हैं। वह उस भक्तमति को बहुत प्यार देती है तथा अपने स्थान पर रख लेती है। कुछ दिन उपरांत धर्मराज के दरबार में ले जाकर उसका हिसाब करवाया जाता है। तत्पश्चात् उसके पुण्य तथा भक्ति कर्म अनुसार स्वर्ग में अप्सरा बना दी जाती है। इसी प्रकार पुरूष भक्त पंखुड़ी दो में प्रवेश करते हैं। वहाँ पर 72 करोड़ सुन्दर अप्सराऐं रहती हैं उन पुरूषों को वे अपनी अदाओं से लुभाकर जाल में फंसाती हैं। जो उस जाल को इस

ज्ञान से समझ जाता है, वह उनकी ओर देखता तक नहीं, अपने गंतव्य (गंतव्य का अर्थ है उद्देश्य वाले स्थान यानि त्रिकुटी की ओर जाने वाली तीसरी पंखुड़ी वाले मार्ग) की ओर चलते रहते हैं। जो कच्चे भक्त होते हैं। सतसंग में भी इसी तरह टेढ़े देखते रहते हैं, वे भी उन सुन्दर जालिम अप्सराओं की अदाओं से आकर्षित होकर एकान्त स्थान की ओर पेशाब या पानी पीने के बहाने खिसक जाते हैं। आगे वह अप्सरा संकेत करके आगे-आगे चल पड़ती हैं, पीछे-पीछे मजनु भक्त इधर-उधर देखता हुआ अपने को सुरक्षित जानकर उस काल के कूप में गिर कर नष्ट हो जाता है। उसको भी कुछ दिनों उपरान्त उसी अप्सरा के साथ धर्मराज की कोर्ट भेजकर उसका कर्मों का हिसाब (**Account**) करवाकर स्वर्ग में कर्मानुसार देव पद या पारखद पद देकर उसको ठग लिया जाता है।

जो भक्त या भक्तमति परीक्षा पास करके उस तीसरी पंखुड़ी में यानि सत्य मार्ग पर चलकर त्रिकुटी में प्रवेश कर जाते हैं, वे एक परीक्षा से और गुजरते हैं। इस तीसरी पंखुड़ी के मुख्य द्वार को संगम कहते हैं। जैसे भारत देश के उत्तर प्रदेश के इलाहाबाद शहर के पास गंगा दरिया तथा यमुना दरिया एक हो जाती हैं, तीसरी दरिया सरस्वती नीचे से आकर मिलती बताई गई है। उस स्थान को संगम कहा जाता है। इसी प्रकार यह छठा कमल संगम कमल भी कहा जाता है।

सातवां त्रिकुटी कमल है। इसमें दो पंखुड़ी हैं। एक सफेद तथा दूसरी काली। सफेद स्थान पर परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में विराजमान हैं। जैसे मेरे (रामपाल दास) से दीक्षा प्राप्त भक्तों के लिए मेरा रूप बनाकर परमेश्वर मिलते हैं। काल ब्रह्म भी धोखा करने के लिए सतगुरू का रूप बनाता है। जिन भक्तों ने ज्ञान ठीक से समझा होता है, वे सत्यनाम तथा सारनाम का सुमरन करके जाँच करते हैं। सुमरन के पश्चात् भी यदि सतगुरू रूप है तो वास्तविक परमेश्वर है। यदि नकली सतगुरू काल ब्रह्म होगा तो सुमरन से उसका नकली सतगुरू रूप समाप्त हो जाएगा। काल रूप दिखाई देगा। यह घटना केवल उसी भक्त को दिखाई देगी जिनको यह ज्ञान याद है और जिसको ज्ञान याद नहीं रहता, वे वहाँ असफल (**Fail**) हो जाते हैं। काल के पक्ष में पहुँच जाते हैं। जन्म-मरण के चक्र में फँसकर करा-कराया नष्ट करके जन्म-मरण के चक्र में रह जाते हैं।

जो भक्त परीक्षा में सफल हो जाते हैं। उनको परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में साथ लेकर धर्मदास की कोर्ट में ले जाते हैं। वकालत करके ब्रह्म काल के स्तर के धार्मिक कर्मों का पुण्य वहाँ जमा कराकर भक्तों को अपने साथ ब्रह्मरन्द्र के सामने त्रिवेणी पर लाते हैं। वहाँ सत्यनाम के ओम् (ॐ) से दूसरे मंत्र का जाप करते हैं। ब्रह्मरन्द्र का किवाड़ तुरंत खुल जाता है। आगे चलकर दो रास्ते हो जाते हैं। बांया रास्ता काल के ब्रह्म लोक में संहस्र कमल में चला जाता है। दांया रास्ता मिनी सतलोक की ओर जाता है।

जो काल ब्रह्म के साधक हैं, उनके लिए संहस्र कमल अष्ट कमल है जिसमें ज्योति निरंजन का निवास है। यह ब्रह्म के पुजारियों का आठवां कमल है। परंतु इस स्थान पर केवल वह जा सकता है जिसको काल ब्रह्म किसी उद्देश्य से बुलाता है या परमेश्वर कबीर जी का भक्त सत्यनाम के स्मरण से ब्रह्मरन्द्र को खोलकर जाता है। जहाँ दो रास्ते ब्रह्मरन्द्र

के बाद आते हैं, वहाँ जाते ही ॐ का जाप अपने आप बंद हो जाता है। केवल सत्यनाम के दूसरे मंत्र का जाप चलता रहता है। श्वांस-उश्वांस यानि श्वांस लेते समय और छोड़ते समय यही मंत्र चलेगा। साथ में सारनाम भी दोनों (अंदर-बाहर) श्वांसों में चलेगा।

गरीब, सोहं—सोहं धुन लगे, दर्द बंद दिल मांही। सतगुरू पर्दा खोलही, अगम दीप ले जांही।।

दांई ओर चलने पर यह अष्ट कमल आएगा जो अक्षर पुरूष वाला चैनल है जिसकी दस पंखुड़ियां हैं। इसके आगे मिनी सतलोक है जो नौंवा कमल है। इसकी असँख्य पंखुड़ियाँ हैं। परम अक्षर पुरूष यानि सत्य पुरूष का चैनल है। इस प्रकार प्रत्येक कमल में राम (प्रभु) हैं। परंतु पूर्ण परमात्मा (सत्य पुरूष) कुल का मालिक होने से प्रत्येक कमल में अपनी अदृश्य शक्ति से विद्यमान रहता है। इस नौंवे कमल का संबंध (Connection) हृदय कमल (जो चौथा कमल शिव-पार्वती का है) में भी है। मिनी सतलोक वाला Seen (दृश्य) वहाँ भी टी.वी. की तरह एक कोने में चलता रहता है। वहाँ परमेश्वर अन्य रूप में होने से पहचान में नहीं आता। उसे कोई ऋषि जानकर विशेष महत्व नहीं देते। संत गरीबदास जी ने कहा है कि सकल व्यापि यानि सब कमलों तथा सर्व ब्रह्मण्डों में व्यापक परमात्मा सुन्न यानि आकाश में रहता है। उसकी सत्ता सब पर है। वह सकल व्यापी यानि वासुदेव है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में सर्वगतम् ब्रह्म का अर्थ सर्वव्यापी ब्रह्म यानि वासुदेव परम अक्षर ब्रह्म है।) हे साधक! तू मन तथा श्वांस को नाम मंत्र पर दृढ़ता से लगाए रख।

❖ वाणी नं. 17 से 21 :-

गरीब, अचल अभंगी राम है, गलताना दम लीन। सुरति निरति के अंतरै, बाजे अनहद बीन।।17।।
गरीब, राम कह्या तौ क्या हुआ, उर में नहीं यकीन। चोर मुसैं घर लूटहीं, पांच पचीसौं तीन।।18।।
गरीब, एक राम कहते राम है, जिनके दिल हैं एक। बाहिर भीतर रमि रह्या, पूर्ण ब्रह्म अलेख।।19।।
गरीब, राम नाम निज सार है, मूल मंत्र मन मांहि। पिंड ब्रह्मंड सें रहित है,जननी जाया नाहिं।।20।।
गरीब, राम रटत नहिं ढील कर,हरदम नाम उचार। अमी महा रस पीजिये,योह तत बारं बार।।21।।

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने अपनी आँखों देखकर बताया है कि कबीर परमेश्वर ही अचल (स्थाई) अभंगी (कभी नष्ट न होने वाला Everlasting) है। नाम का जाप सुरति तथा निरति से यानि ध्यान लगाकर करने से सत्यलोक में होने वाली धुन सुनाई देने लगेगी।

यदि पूर्ण विश्वास के साथ राम नाम यानि दीक्षा में प्राप्त मंत्र का जाप नहीं किया तो नाम जपा न जपा के बराबर है। उस साधक पर पाँचों विकार (काम, क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार) तथा प्रत्येक की पाँच-पाँच प्रकृति जो कुल पच्चीस हैं तथा तीनों गुण (रज, सत, तम) मिलकर ये चोर आपके जीवन रूपी श्वांस धन को मुस रहे हैं यानि चुरा रहे हैं। (मुसना=चोरी करना) तेरे शरीर रूपी घर को लूट रहे हैं।

जिन साधकों का दिल परमात्मा में रम (लीन हो) गया, वे एक परमात्मा का नाम जाप करके राम हो जाते हैं यानि आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करके देव के समान पद प्राप्त कर लेते हैं यानि देवताओं जितनी आध्यात्मिक शक्ति वाले हो जाते हैं। परमात्मा शरीर के कमलों में तथा बाहर सब जगह विद्यमान है।

❖ (वाणी नं. 20-21) परमात्मा प्राप्ति के लिए साधना करने में राम नाम यानि गुरू जी

से प्राप्त सत्य मंत्र ही निज सार है यानि विशेष महत्व रखता है। वह मूल मंत्र मन में समाया रहै यानि निरंतर जाप करता रहे। वह परमात्मा जिसका जाप मूल मंत्र (सारनाम) है, वह पिण्ड यानि शरीर तथा ब्रह्मण्ड से भिन्न आकाश में बने अमर धाम में रहता है। उसका जन्म किसी माता से नहीं हुआ है।

❖ **वाणी नं. 21 :- अब उस राम का सुमरन (स्मरण) करने में ढ़ील (देरी) ना कर। प्रत्येक श्वांस (हरदम) से नाम का उच्चारण कर। यह स्मरण रूपी अमंत को पी ले, यह तत्व यानि निष्कर्ष है। बार-बार इस नाम के जाप का आनन्द ले। अमी महारस यानि अमर होने का महान मंत्र के जाप रूपी रस (Juice) को पी ले।**

❖ **वाणी नं. 22 से 24 :-**

गरीब, कोटि गऊ जे दान दे, कोटि जग्य जोनार। कोटि कूप तीरथ खने, मिटे नहीं जम मार।।22।।
गरीब, कोटिक तीरथ ब्रत करी, कोटि गज करी दान। कोटि अश्व बिपरौ दिये, मिटै न खैंचा तान।।23।।
गरीब, पारबती कै उर धर्या, अमर भई क्षण मांहिं। सुकदेव की चौरासी मिटी, निरालंब निज नाम।।24।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्राप्त आध्यात्म ज्ञान को बताया है कि :-**

यदि यथार्थ नाम जाप करने को नहीं मिला तो चाहे पुराणों में वर्णित धार्मिक क्रियाऐं करोड़ों गाय दान करो, करोड़ों (यग्य) धर्म यज्ञ तथा जौनार (जीमनवार = किसी खुशी के अवसर पर भोजन कराना) करो, चाहे करोड़ों कुँए खनों (खुदवाओ), करोड़ों तीर्थों के तालाबों को गहरा कराओ जिससे जम मार (काल की चोट) यानि कर्म का दण्ड समाप्त नहीं होगा।(22)

❖ **चाहे करोड़ों तीर्थों का भ्रमण करो, करोड़ों व्रत रखो, करोड़ों गज (हाथी) दान करो, चाहे करोड़ों घोड़े विप्रों (ब्राह्मणों) को दान करो। उससे जन्म-मरण तथा कर्म के दण्ड से होने वाली खेंचातान (दुर्गति) समाप्त नहीं हो सकती।(23)**

❖ **वाणी नं. 24 का भावार्थ है कि जैसे पार्वती पत्नी शिव शंकर को जितना अमरत्व (वह भगवान शिव जितनी आयु नाम प्राप्ति के बाद जीएगी, फिर दोनों की मत्यु होगी। इतना मोक्ष) भी देवी जी को शिव जी को गुरू मानकर निज मंत्रों का जाप करने से प्राप्त हुआ है। ऋषि वेद व्यास जी के पुत्र शुकदेव जी को अपनी पूर्व जन्म सिद्धि का अहंकार था। जिस कारण से बिना गुरू धारण किए ऊपर के लोकों में सिद्धि से उड़कर चला जाता था। जब श्री विष्णु जी ने उसे समझाया और स्वर्ग में रहने नहीं दिया, तब उनकी बुद्धि ठिकाने आई। राजा जनक से दीक्षा ली। तब शुकदेव जी की उतनी मुक्ति हुई, जितनी मुक्ति उस नाम से हो सकती थी। परमेश्वर कबीर जी अपने विधान अनुसार राजा जनक को भी त्रेतायुग में मिले थे। उनको केवल हरियं नाम जाप करने को दिया था क्योंकि वे श्री विष्णु जी के भक्त थे। वही मंत्र शुकदेव को प्राप्त हुआ था। जिस कारण से वे श्री विष्णु लोक के स्वर्ग रूपी होटल में आनन्द से निवास कर रहे हैं। वहीं से विमान में बैठकर राजा परीक्षित को भागवत कथा सुनाने आए थे। फिर वहीं लौट गए।**

गरीब, ऋषभ देव के आईया, कबि नामें अवतार। नौ योगेश्वर में रमा, जनक विदेही उधार।।

❖ भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी अपने विधान अनुसार {कि परमात्मा ऊपर के लोक में निवास करता है। वहाँ से गति करके आता है, अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको अपनी वाक (वाणी) द्वारा भक्ति करने की प्रेरणा करता है आदि-आदि जो पूर्व में विस्तार से लिख दिया है।} राजा ऋषभ देव (जैन धर्म के प्रथम तीर्थकर) को मिले थे। अपना नाम कविर्देव बताया था। ऋषभ देव जी ने अपने धर्मगुरूओं-ऋषियों से सुन रखा था कि परमात्मा का वास्तविक नाम वेदों में कविः देव (कविर्देव) है। परमात्मा कवि ऋषि नाम से ऋषभ देव को भक्ति की प्रेरणा देकर अंतर्ध्यान हो गए थे। नौ नाथों (गोरखनाथ, मच्छन्द्रनाथ, जलन्दरनाथ, चरपटनाथ आदि-आदि) को समझाने के लिए उनको मिले तथा राजा जनक विदेही (विलक्षण शरीर वाले को विदेही कहते हैं) को सत्यज्ञान बताकर उनको सही दिशा दी। राजा जनक से दीक्षा लेकर शुकदेव ऋषि को स्वर्ग प्राप्त हुआ। परंतु वह पूर्ण मोक्ष नहीं मिला जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है :-

(तत्वदर्शी संत से तत्वज्ञान समझने के पश्चात्) आध्यात्म अज्ञान को तत्वज्ञान रूपी शस्त्र से काटकर उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रूपी वृक्ष की प्रवृति विस्तार को प्राप्त हुई है यानि जिस परमेश्वर ने संसार की रचना की है, केवल उसी की भक्ति करो।

वाणी नं. 24 में यही स्पष्ट किया है कि यदि स्वर्ग जाने की भी तमन्ना है तो वे भी विशेष (निज) मंत्रों के जाप से ही पूर्ण होगी। परंतु यह इच्छा तत्वज्ञान के अभाव से है। जैसे गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में बहुत सटीक उदाहरण दिया है कि :- सब ओर से परिपूर्ण जलाशय (बड़ी झील=Lake) प्राप्त हो जाने पर छोटे जलाशय में मनुष्य का जितना प्रयोजन रह जाता है। उसी प्रकार तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् विद्वान पुरूष का वेदों (ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) में प्रयोजन रह जाता है।

❖ भावार्थ :- तत्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् अन्य देवताओं से होने वाले क्षणिक लाभ (स्वर्ग व राज्य प्राप्ति) से अधिक सुख समय तथा पूर्ण मोक्ष (गीता अध्याय 15 श्लोक 4 वाला मोक्ष) जो परमेश्वर (परम अक्षर ब्रह्म=गीता अध्याय 8 श्लोक 3, 8, 9, 10, 20 से 22 वाले परमेश्वर) के जाप से होता है, की जानकारी के पश्चात् साधक की जितनी श्रद्धा अन्य देवताओं में रह जाती है यानिः-

कबीर, एकै साधै सब सधै, सब साधें सब जाय। माली सींचे मूल कूँ, फलै फूलै अघाय।।

❖ भावार्थ :- गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 को इस अमृतवाणी में संक्षिप्त कर बताया है किः-

जो ऊपर को मूल (जड़) वाला तथा नीचे को तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) रूपी शाखा वाला संसार रूपी वृक्ष है :-

कबीर, अक्षर पुरूष एक पेड़ है, निरंजन वाकी डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रूप संसार।।

जैसे पौधे को मूल की ओर से पृथ्वी में रोपण करके मूल की सिंचाई की जाती है तो उस मूल परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) की पूजा से पौधे की परवरिश होती है। तब तना, डार, शाखाओं तथा पत्तों का विकास होकर पेड़ बन जाता है। छाया, फल तथा लकड़ी सर्व प्राप्त

होती है जिसके लिए पौधा लगाया जाता है। यदि पौधे की शाखाओं को मिट्टी में रोपकर जड़ों को ऊपर करके सिंचाई करेंगे तो भक्ति रूपी पौधा नष्ट हो जाएगा। इसी प्रकार एक मूल (परम अक्षर ब्रह्म) रूप परमेश्वर की पूजा करने से सर्व देव विकसित होकर साधक को बिना माँगे फल देते रहेंगे।(जिसका वर्णन गीता अध्याय 3 श्लोक 10 से 15 में भी है) इस प्रकार ज्ञान होने पर साधक का प्रयोजन उसी प्रकार अन्य देवताओं से रह जाता है जैसे झील की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाश्य में रह जाता है। छोटे जलाश्य पर आश्रित को ज्ञान होता है कि यदि एक वर्ष बारिश नहीं हुई तो छोटे तालाब का जल समाप्त हो जाएगा। उस पर आश्रित भी संकट में पड़ जाऐंगे। झील के विषय में ज्ञान है कि यदि दस वर्ष भी बारिश न हो तो भी जल समाप्त नहीं होता। वह व्यक्ति छोटे जलाश्य को छोड़कर तुरंत बड़े जलाश्य पर आश्रित हो जाता है। भले ही छोटे जलाश्य का जल पीने में झील के जल जैसा ही स्वादिष्ट है, परंतु पर्याप्त व चिर स्थाई नहीं है। इसी प्रकार अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव जी) की भक्ति से मिलने वाले स्वर्ग का सुख बुरा नहीं है, परंतु क्षणिक है, पर्याप्त नहीं है। इन देवताओं तथा इनके अतिरिक्त किसी भी देवी-देवता, पित्तर व भूत पूजा करना गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 में मना किया है। इसलिए भी इनकी भक्ति करना शास्त्र विरूद्ध होने से व्यर्थ है जिसका गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में प्रमाण है। कहा है कि शास्त्र विधि को त्यागकर मनमाना आचरण करने वालों को न तो सुख प्राप्त होता है, न सिद्धि प्राप्त होती है और न ही परम गति यानि पूर्ण मोक्ष की प्राप्ति होती है अर्थात् व्यर्थ प्रयत्न है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 23)

इससे तेरे लिए अर्जुन! कर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म करने चाहिऐ और अकर्तव्य यानि जो भक्ति कर्म न करने चाहिऐ, उसके लिए शास्त्र ही प्रमाण हैं यानि शास्त्रों को आधार मानकर निर्णय लेकर शास्त्रों में वर्णित साधना करना योग्य है।(गीता अध्याय 16 श्लोक 24)

❖ **वाणी नं. 25 :-**

गरीब, अगम अनाहद भूमि है, जहां नाम का दीप। एक पलक बिछुरै नहीं, रहता नयनों बीच।।25।।

❖ **सरलार्थ :- उस परमेश्वर का द्वीप यानि सत्यलोक अगम अनाहद (काल के तथा अक्षर पुरूष के लोकों से आगे वाली) विशाल धरती है। अनहद माने जिसकी हद (सीमा) न हो। सतलोक विसीमित है। वह परमात्मा तत्वज्ञान प्राप्त साधक की आँखों का तारा बनकर रहता है। एक पल (क्षण) भी दूर नहीं होता। भक्त को आँखों के सामने कुछ रेखाऐं दिखाई देती हैं। वे परमात्मा की भक्ति का सांकेतिक तोल-माप हैं।**

❖ **वाणी नं. 26 से 37 :-**

गरीब, साहिब साहिब क्या करै, साहिब है परतीत। भैंस सींग साहिब भया, पांडे गावैं गीत।।26।।
गरीब, राम सरीखे राम हैं, संत सरीखे संत। नाम सरीखा नाम है, नहीं आदि नहिं अंत।।27।।
गरीब, महिमा सुनि निज नाम की, गहे द्रौपदी चीर। दु:शासनसे पचि रहे, अंत न आया बीर।।28।।
गरीब, सेतु बंध्या पाहन तिरे, गज पकड़े थे ग्राह। गनिका चढी बिमान में, निरगुन नाम मल्लाह।।29।।
गरीब, बारद ढारी कबीर जी, भगत हेत कै काज। सेऊ कूं तो सिर दिया, बेचि बंदगी नाज।।30।।
गरीब, कहां गोरख कहां दत्त थे, कहां सुकदेव कहां ब्यास। भगति हेत सें जानियैं, तीन लोक प्रकास।।31।।

गरीब, कहां पीपा कहां नामदेव, कहां धना बाजीद। कहां रैदास कमाल थे, कहां थे फकर फरीद।।32।।
गरीब, कहां नानक दादू हुते, कहां ज्ञानी हरिदास। कहां गोपीचंद भरथरी, ये सब सतगुरु पास।।33।।
गरीब, कहां जंगी चरपट हुते, कहां अधम सुलतान। भगति हेत प्रगट भये, सतगुरु के प्रवान।।34।।
गरीब, कहां नारद प्रह्लाद थे, कहां अंगद कहां सेस। कहां विभीषण ध्रुव हुते, भक्त हिरंबर पेस।।35।।
गरीब, कहां जयदेव थे कपिल मुनि, कहां रामानंद साध। कहां दुर्बासा कृष्ण थे, भगति आदि अनाद।।36।।
गरीब, कहां ब्रह्मा कहां बेद थे, कहां सनकादि चार। कहां शंभु कहां बिष्णु थे, भगति हेत दीदार।।37।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-**

साहिब-साहिब यानि राम-राम क्या करता फिरता है। साहेब तो परतीत (विश्वास) में है। जैसे भैंस का टूटा हुआ सींग जो व्यर्थ कूड़े में पड़ा था, वह भक्त के विश्वास से साहिब (परमात्मा) बन गया। पंडित गुरू को विश्वास नहीं था। वह केवल परमात्मा की महिमा के गुणगान निज स्वार्थ के लिए कर रहा था।

''भैंस का सींग भगवान बना''

एक पाली (भैंसों को खेतों में चराने वाला) अपनी भैंसों को घास चराता-चराता मंदिर के आसपास चला गया। मंदिर में पंडित कथा कर रहा था। भगवान के मिलने के पश्चात् होने वाले सुख बता रहा था कि जिसको भगवान मिल गया तो सब कार्य सुगम हो जाते हैं। परमात्मा भक्त के सब कार्य कर देता है। भगवान भक्त को दुःखी नहीं होने देता। इसलिए भगवान की खोज करनी चाहिए।

पाली भैंसों ने तंग कर रखा था। एक किसी ओर जाकर दूसरे की फसल में घुसकर नुकसान कर देती, दूसरी भैंस किसी ओर। खेत के मालिक आकर पाली को पीटते थे। कहते थे कि हमारी फसल को हानि करा दी। अपनी भैंसों को संभाल कर रखा कर। पाली ने जब पंडित से सुना कि भगवान मिलने के पश्चात् सब कार्य आप करता है, भक्त मौज करता है तो पंडित जी के निकट जाकर चरण पकड़कर कहा कि मुझे भगवान दे दो। मैं भैंसों ने बहुत दुःखी कर रखा हूँ। पंडित जी ने पीछा छुड़ाने के उद्देश्य से कहा कि कल आना। पाली गया तो पंडित ने पहले ही भैंस का टूटा हुआ सींग जो कूड़े में पड़ा था, उठाकर उसके ऊपर लाल कपड़ा लपेटकर लाल धागे (नाले=मौली) से बाँधकर कहा कि ले, यह भगवान है। इसकी पूजा करना, इसको पहले भोजन खिलाकर बाद में स्वयं खाना। कुछ दिनों में तेरी भक्ति से प्रसन्न होकर यह भगवान मनुष्य की तरह बन जाएगा। तब तेरे सब कार्य करेगा। यह तेरी सच्ची श्रद्धा पर निर्भर है कि तू कितनी आस्था से सच्ची लगन से क्रिया करता है। यदि तेरी भक्ति में कमी रही तो भगवान मनुष्य के समान नहीं बनेगा।

पाली उस भैंस के सींग को ले गया। उसके सामने भोजन रखकर कहा कि खाओ भगवान! भैंस का सींग कैसे भोजन खाता? पाली ने भी भोजन नहीं खाया। इस प्रकार तीन-चार दिन बीत गए। पाली ने कहा कि मर जाऊँगा, परंतु आप से पहले भोजन नहीं खाऊँगा। मेरी भक्ति में कमी रह गई तो आप मनुष्य नहीं बनोगे। मैं भैंसों ने बहुत दुःखी कर रखा हूँ।

परमात्मा तो जानीजान हैं। जानते थे कि यह भोला भक्त मत्यु के निकट है। उस पाखण्डी ने तो अपना पीछा छुड़ा लिया। मैं कैसे छुड़ाऊँ? चौथे दिन पाली के सामने उसी भैंस के सींग का जवान मनुष्य बन गया। पाली ने बांहों में भर लिया और कहने लगा कि भोजन खा, फिर मैं खाऊँगा। भगवान ने ऐसा ही किया। फिर अपने हाथों पाली को भोजन डालकर दिया। पाली ने भोजन खाया। भगवान ने कहा कि मेरे को किसलिए लाया है? पाली बोला कि भैंस चराने के लिए चल, भैंसों को खेत में खोल, यह लाठी ले। अब सारा कार्य आपने करना है, मैं मौज करूँगा। परमात्मा ने लाठी थामी और सब भैंसों की अपने आप रस्सी खुल गई और खेतों की ओर चल पड़ी। कोई भैंस किसी ओर जाने लगे तो लाठी वाला उसी ओर खड़ा दिखाई देता। भैंसे घास के मैदान में भी घास चरने लगी। दूसरों की खेती में कोई नुक्सान नहीं हो रहा था। पाली की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। वह अपने गुरू जी पंडित जी का धन्यवाद करने मंदिर में गया। पंडित डर गया कि यह झगड़ा करेगा, कहेगा कि अच्छा मूर्ख बनाया, परंतु बात विपरित हुई। पाली ने गुरू जी के चरण छूए तथा कहा कि गुरू जी चौथे दिन आदमी रूप में भगवान बन गया। मैंने भी भोजन नहीं खाया, प्राण निकलने वाले थे। उसी समय वह लाल वस्त्र में बँधा भगवान जवान लड़का बन गया। मेरी ही आयु के समान। अब सारा कार्य भगवान कर लेता है। मैं मौज करता हूँ। उसके भोले-भाले अंदाज से बताई कथा सत्य लग रही थी, परंतु विश्वास नहीं हो रहा था। पंडित जी ने कहा कि मुझे दिखा सकते हो, कहाँ है वह युवा भगवान। पाली बोला कि चलो मेरे साथ। पंडित जी पाली के साथ भैंसों के पास गया। पूछा कि कहाँ है भगवान? पाली बोला कि क्या दिखाई नहीं देता, देखो! वह खड़ा लाठी ठोडी के नीचे लगाए। पंडित जी को तो केवल लाठी-लाठी ही दिखाई दे रही थी क्योंकि उसके कर्म लाठी खाने के ही थे। पाली से कहा कि मुझे लाठी-लाठी ही दिखाई दे रही है। कभी इधर जा रही है, कभी उधर जा रही है। तब पाली ने कहा कि भगवान इधर आओ। भगवान निकट आकर बोला, क्या आज्ञा है? पंडित जी को आवाज तो सुनी, लाठी भी दिखी, परंतु भगवान नहीं दिखे। पाली बोला, आप मेरे गुरू जी को दिखाई नहीं दे रहे हो, इन्हें भी दर्शन दो। भगवान ने कहा, ये पाखण्डी है। यह केवल कथा-कथा सुनाता है, स्वयं को विश्वास नहीं। इसको दर्शन कैसे हो सकते हैं? पंडित जी यह वाणी सुनकर लाठी के साथ पथ्वी पर गिरकर क्षमा याचना करने लगा। भगवान ने कहा, यह भोला बालक मर जाता तो तेरा क्या हाल होता? मैंने इसकी रक्षा की। पाली के विशेष आग्रह से पंडित जी को भी विष्णु रूप में दर्शन दिए क्योंकि वह श्री विष्णु जी का भक्त था। फिर अंतर्ध्यान हो गया।

प्रिय पाठकों से निवेदन है कि इस कथा का भावार्थ यह न समझना कि पाली की तरह हठ योग करने से परमात्मा मिल जाता है। यदि कुछ देर दर्शन भी दे गए और कुछ जटिल कार्य भी कर दिए। इससे जन्म-मरण का दीर्घ रोग तो समाप्त नहीं हुआ। वह तो पूर्ण गुरू से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर आजीवन साधना करने से ही समाप्त होगा।

पाली तथा पंडित पिछले जन्म में परमात्मा के परम भक्त थे, परंतु अपनी गलती से मुक्त नहीं हो पाए थे। उनको अबकी बार पार करना था। उस कारण से यह सब कारण

बनाए थे। पूर्व जन्म की भक्ति के प्रभाव से मानव परमात्मा की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करता है। मार्ग ठीक न मिलने से शास्त्र विरूद्ध क्रिया करता रहता है। जैसे पंडित जी कर रहा था। जैसे पाली को यह विश्वास होना कि यह लाल कपड़े में लिपटा भगवान मनुष्य बन जाएगा, फिर दृढ़ता से क्रिया करना, यह पूर्व जन्म के भक्ति कर्मों का प्रभाव होता है। मोक्ष तो पूर्ण सतगुरू से सत्य मंत्र लेकर जाप करने से ही संभव है। संत गरीबदास जी ने वाणी रूपी वन में प्रत्येक प्रकार के पेड़-पौधे, जड़ी-बूटियां लगाई हैं। तत्वदर्शी संत रूपी वैद्य ही जन्म-मरण के रोग के नाश की औषधि तैयार करके कल्याण करता है। इस तरह की लीला जो गुरू के भक्त नहीं होते, उनमें युगों पर्यान्त करोड़ों में से किसी एक के साथ होती है। यदि इतने से ही सब कुछ होता हो तो अन्य मंत्र जाप करने, धर्म करने की प्रेरणा की तथा वाणी लिखने की क्या आवश्यकता थी? इस तरह की लीला करके परमात्मा भक्तों में विश्वास बनाए रखता है। भक्ति से मोक्ष होता है। गुरू के भक्तों के लिए तो परमात्मा अनेकों अनहोनी लीलाऐं भी करता रहता है, मोक्ष भी देता है।(26)

❖ प्रभुओं में समर्थ प्रभु ही कल्याणकारक है।(सांई माने मालिक-प्रभु) संतों में तत्वदर्शी संत ही उद्धार करने वाले हैं। नामों में सत्यनाम तथा सारनाम ही मोक्ष के हैं तथा परमात्मा की शक्ति का कोई अंत नहीं। वेद में (कविरमितौजा) यानि कविर्देव (अमित) असीमित (औजा) शक्ति वाले हैं।(27)

❖ द्रोपदी पूर्व जन्म में परमात्मा की भक्ति करती थी। परमात्मा अनेकों वेश बनाकर भक्तों को प्रोत्साहित करते रहते हैं। परमात्मा गुरू-ऋषि रूप में नगरी के पास आश्रम बनाकर रहते थे। कंवारी द्रोपदी को भी अन्य सहेलियों के साथ प्रथम मंत्र पाँच नाम वाला प्राप्त था। विवाह के पश्चात् पाण्डवों के साथ श्री कष्ण जी को गुरू धारण कर लिया था। जो यथार्थ नाम इन देवों के हैं, उनका जाप करती थी। जिस कारण परमेश्वर जी ने अंधे का रूप धारकर साड़ी का टुकड़ा दान लिया। फिर उसकी रक्षा की यानि द्रोपदी का चीर बढ़ाया। दुःशासन जैसे योद्धा चीर उतारते-उतारते थक गए, ढ़ेर लग गया, परंतु चीर का अंत नहीं आया। इस प्रकार दान करने की प्रेरणा किसी जन्म में निज नाम की भक्ति करने का फल है।

श्री रामचन्द्र जी ने श्रीलंका जाने के लिए समुद्र पर पुल बनाना चाहा तो परमेश्वर जी मुनिन्द्र ऋषि के रूप में वहाँ गए। निकट के पहाड़ के चारों ओर अपनी डण्डी (छोटी लाठी) से रेखा खींचकर उसके अंदर के पत्थर हल्के कर दिए, तब पुल बना था। जब गज (हाथी) तथा ग्राह (मगरमच्छ) आपस में लड़ रहे थे तो हाथी का पैर मगरमच्छ ने पकड़कर जल में खींचा तो हाथी ने आधा राम (रा......) कहा था। उसी समय परमात्मा ने सुदर्शन चक्र मगरमच्छ के माथे पर मारा, तब हाथी की जान बची। इस वाणी में यह बताना चाहा है कि परमात्मा का जाप ऐसे भाव से करे जैसे हाथी को अपनी जान की भीख भगवान से माँगने के लिए सुमरन (स्मरण) किया था तो परमात्मा ने उसकी विपत्ति टाली।

वही बात यहाँ भी स्पष्ट है कि ऐसी घटनाऐं युगों पर्यन्त घटती हैं। हाहा-हूहू नाम के दो तपस्वी थे। वे ही हाथी तथा मगरमच्छ बने थे। पिछली भक्ति संस्कारवश उनकी रक्षा हुई थी।

"गज-ग्राह की कथा"

हाहा-हूहू नाम के दो तपस्वी थे। उनको अपनी भक्ति का गर्व था। एक-दूसरे से अधिक सिद्धि-शक्ति वाला कहते थे। अपनी-अपनी शक्ति के विषय में जानने के लिए ब्रह्मा जी के पास गए। ब्रह्मा जी से पूछा कि हमारे में से अधिक सिद्धि-शक्ति वाला कौन है? ब्रह्मा जी ने कहा कि आप श्री विष्णु जी के पास जाओ, वे बता सकते हैं। ब्रह्मा जी को डर था कि एक को कम शक्ति वाला बताया तो दूसरा नाराज होकर श्राप न दे दे।

हाहा-हूहू ने श्री विष्णु जी के पास जाकर यही जानना चाहा तो उत्तर मिला कि आप शिव जी के पास जाऐं। वे तपस्वी हैं, ठीक-ठीक बता सकते हैं। शिव जी ने उन दोनों को पृथ्वी पर मतंग ऋषि के पास जाकर अपना समाधान कराने की राय दी। मतंग ऋषि वर्षों से तपस्या कर रहे थे। अवधूत बनकर रहते थे। अवधूत उसे कहते हैं जिसने शरीर के ऊपर एक कटि वस्त्र (लंगोट) के अतिरिक्त कुछ न पहन रखा हो। मतंग ऋषि शरीर से बहुत मोटे यानि डिल-डोल थे। जब हाहा-हूहू मतंग ऋषि के आश्रम के निकट गए तो उनके मोटे शरीर को देखकर हाहा ने विचार किया कि ऋषि तो हाथी जैसा है। हूहू ने विचार किया कि ऋषि तो मगरमच्छ जैसा है। मतंग ऋषि के निकट जाकर प्रणाम करके अपना उद्देश्य बताया कि कृपा आप बताऐं कि हम दोनों में से किसकी आध्यात्मिक शक्ति अधिक है? ऋषि ने कहा कि आपके मन में जो विचार आया है, आप उसी-उसी की योनि धारण करें और अपना फैसला स्वयं लें। उसी समय उन दोनों का शरीर छूट गया यानि मृत्यु हो गई। हाहा को हाथी का जन्म मिला तथा हूहू को मगरमच्छ का जन्म मिला। जब दोनों जवान हो गए तो एक दिन हाथी दरिया पर पानी पीने गया तो उसका पैर मगरमच्छ ने पकड़ लिया। सारा दिन खैंचातान बनी रही। कभी हाथी मगरमच्छ को पानी से कुछ बाहर ले आए, कभी मगरमच्छ हाथी को पानी में खैंच ले जाए। शाम को मगरमच्छ पैर छोड़ देता। अगले दिन हाथी उसी स्थान पर जाकर अपना पैर मगरमच्छ को पकड़ाकर शक्ति परीक्षण करता।

पुराणों में लिखा है कि यह गज-ग्राह का युद्ध दस हजार वर्ष तक चलता रहा। आसपास के वन में हाथी का आहार समाप्त हो गया। साथी हाथी दूर से आहार लाकर खिलाते थे। कुछ दिन बाद वे हाथी भी साथ छोड़ गए। हाथी बलहीन हो गया। एक दिन मगरमच्छ ने हाथी को जल में गहरा खींच लिया। हाथी की सूंड का केवल नाक पानी से बाहर बचा था। हाथी को अपनी मौत दिखाई दी तो मृत्यु भय से परमात्मा को पुकारा, केवल इतना समय बचा था कि हाथी की आत्मा ने र... यानि आधा राम ही कहा, केवल र... ही बोल पाई। उसी क्षण परमात्मा ने सुदर्शन चक्र मगरमच्छ के सिर में मारा। मगरमच्छ का मुख खुल गया। हाथी बाहर पटरी पर खड़ा हो गया। परमात्मा प्रकट हुए। हाथी से कहा कि तुम स्वर्ग चलो, तुमने मुझे सच्चे मन से याद किया है, मेरा नाम बड़ी तड़फ से लिया है। मगरमच्छ ने कहा कि हे प्रभु! जिस तड़फ से इसने आपका नाम जपा है, मैंने उसको उसी तड़फ से सुना है, परंतु हार-जीत का मामला था। इसलिए मैं छोड़ नहीं पा रहा था। आप तो अंतर्यामी हैं। मन की बात भी जानते हो। मेरा भी कल्याण करो। प्रभु ने दोनों को स्वर्ग

भेजा। फिर से जन्म हुआ। फिर अपनी साधना शुरू की।

''जानने योग्य यानि निष्कर्ष''

1. यदि परमात्मा का उस कसक (तड़फ) के साथ नाम जपा जाए तो विशेष तथा शीघ्र लाभ होता है। जैसे हाथी ने मौत के भय से नाम उच्चारा था। केवल 'र' ही बोल पाया था। फिर डूब जाना था। इसको संतों ने ररंकार धुन (लगन) कहा है। कई संतजन दीक्षा मंत्रों में ररंकार नाम जाप करने को देते हैं। वह उचित नहीं है।

2. जैसे कहीं संत सत्संग करता है तो उसे विशेष तड़फ के साथ परमात्मा की महिमा सुननी चाहिए। उसका श्रोताओं पर गहरा प्रभाव पड़ता है। श्रोताओं को भी उसी तड़फ (ररंकार वाली लगन) से सत्संग सुनना चाहिए। उससे वक्ता तथा श्रोता दोनों को ज्ञान यज्ञ का समान लाभ मिलता है।

3. घोर तप करने वाले मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते क्योंकि तप करना शास्त्र विरूद्ध है। गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6 में कहा है कि जो साधक शास्त्रविधि को त्यागकर मनमाने घोर तप को तपते हैं, वे राक्षस स्वभाव के हैं। उपरोक्त कथा से भी तपस्वियों का चरित्र स्पष्ट है कि हाहा-हूहू के मन में क्या बकवास आई? अपनी आध्यात्म शक्ति की जाँच कराने चले। मतंग ऋषि के डिल-डोल (अत्यंत मोटे) शरीर को देखकर दोष निकालने लगे। भगवान की रचना का मजाक करना परमात्मा का मजाक है। मतंग तपस्वी ने भी विवेक से काम न लेकर स्वभाव ही बरता। दोनों को शॉप दे दिया। जिस कारण से वे पशु तथा जलचर योनि को प्राप्त हुए। दस हजार वर्ष तक संघर्ष करते रहे, कितने कष्ट उठाए। यदि मतंग ऋषि उनको समझाते कि साधको शक्ति तो परमात्मा में है, शेष हम तो उसके मजदूर हैं। जितनी मजदूरी (साधना) करते हैं, उतनी ध्याड़ी यानि भक्ति शक्ति (सिद्धि) दे देते हैं। साधकों को अपनी शक्ति का अभिमान नहीं करना चाहिए। अपनी साधना आजीवन करनी चाहिए। इस प्रकार समझाने से वे भक्त अवश्य अपना मूर्ख उद्देश्य त्यागकर कष्ट से बच जाते। परंतु यह बुद्धि न गुरू में, न चेलों में, फिर तो यही ड्रामा चलेगा।

4. तपस्या से क्या लाभ होता है, आओ जानें :-

गरीब, तप से राज, राज मध्य मानम्। जन्म तीसरे शुकर श्वानम्।।

भावार्थ :- तप से राज्य की प्राप्ति होती है यानि राजा बनता है। राजा में अहंकार अधिक होता है। अहंकार के कारण अनेकों पाप कर डालता है। फिर अगले जन्म में शुकर (सूअर) तथा श्वान (कुत्ता) बनता है। पहला मनुष्य जीवन शास्त्र विरूद्ध साधना (तप) करके नष्ट किया। दूसरा जीवन राज करके खो दिया। शास्त्रों में प्रमाण है :-

''तपेश्वरी सो राजेश्वरी, राजेश्वरी सो नरकेश्वरी''

भावार्थ :- जितना अधिक समय तक तप करेगा, वह ('तपेश्वर' यानि तपस्वियों में श्रेष्ठ माना जाता है) उतना ही अधिक समय तक राज्य करेगा। (राजेश्वरी का अर्थ है राजाओं में श्रेष्ठ है यानि लम्बे समय तक तथा विशाल साम्राज्य पर राज्य करेगा) जो जितने अधिक समय तक तथा विशाल क्षेत्र पर राज्य करेगा, वह उतने अधिक पाप का भागी होगा।

जिससे नरक का समय भी अधिक होगा। उसको नरकेश्वरी कहा है कि वह नरक को अन्य से अधिक समय तक भोगेगा। फिर कभी मानव जन्म मिलेगा, कोई परम संत (तत्वदर्शी संत) मिले या न मिले। यदि तत्वदर्शी संत नहीं मिला तो फिर वही प्रक्रिया। तप करो, राज करके नरक में गिरो।

गरीब, यह हरहट का कुंआ लोई। यो गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी–कुंजर (चींटी–हाथी) और अवतारा। हरहट डोर बंधे कई बारा।।

भावार्थ :- पुराने समय में सिंचाई के लिए एक कुंआ खोदा जाता था। उससे पानी निकालने के लिए एक पहिये जैसा बड़ा चक्र लोहे का बनाया जाता था जो लकड़ी के सहारे कुऐं के ऊपर मध्य में रखा जाता था। उसके ऊपर लंबी चैन की तरह बाल्टियाँ लगाई जाती थी। कुंए से कुछ दूरी पर कोल्हू जैसा यंत्र लगाकर बैलों के द्वारा चलाया जाता था। बाल्टियाँ जो चैन (पटे) पर लगी होती थी, वे बैल द्वारा घुमाने से खाली नीचे कुंए में चली जाती थी, पानी से भरकर ऊपर आती थी। ऊपर एक नाले में खाली होकर फिर नीचे कुंए में भरने के लिए जाती थी। यह क्रम सारा दिन और महीनों चलता रहता था। इसका उदाहरण देकर संत गरीबदास जी ने समझाया है कि जब तक तत्वदर्शी संत (सतगुरू=सच्चा गुरू) नहीं मिलता, तब तक जीव स्वर्ग-नरक, पृथ्वी पर ऐसे चक्र काटता रहता है जैसे रहट की बाल्टियाँ नीचे कुंए से जल भरकर लाती हैं। ऊपर नाले में खाली होकर पुनः कुंए में चली जाती हैं। उसी प्रकार जीव पृथ्वी पर पाप-पुण्य से भरकर ऊपर स्वर्ग-नरक में अपने कर्म सुख-दुःख भोगकर खाली होकर पृथ्वी पर जन्मता-मरता रहता है। इस जन्म-मरण के हरहट (रहट) वाले चक्र में चींटी (कीड़ी), कुंजर (हाथी) और अवतारगण यानि श्री राम, श्री कृष्ण, श्री विष्णु, श्री ब्रह्मा तथा श्री शिव जी आदि-आदि भी चक्कर काट रहे हैं। इसी के गल बंधे हैं यानि कर्मों के रस्से से बँधकर इस चक्र में गिरे हैं।

जो सिद्ध करना था वह यह है कि :-

पाली (चरवाहा) तो मनुष्य था। उसको परमात्मा मिलना और सुख देना पूर्व जन्म के संस्कार से ही था तथा सच्ची लगन का परिणाम भी, परंतु मोक्ष नहीं। इस गज-ग्राह कथा में दोनों ही पशु थे। फिर भी भगवान ने अनहोनी कर दी। परंतु पूर्व जन्म का संस्कार ही प्राप्त हुआ। संत गरीबदास जी ने समझाना चाहा है कि जो गुरू बनकर जनता को भ्रमित करते हैं, वे पूर्व जन्म के पुण्यकर्मी प्राणी हैं और वर्तमान में जीवन व्यर्थ कर रहे हैं। उनसे तो सामान्य व्यक्ति जो पूर्व जन्म का पुण्यकर्मी है और वर्तमान में विशेष पाप नहीं कर रहा है तो यदि उस पर कोई आपत्ति आती है तो परमात्मा उसके बचे हुए पुण्यों के आधार से चमत्कार कर देता है, परंतु नकली गुरू पद पर विराजमान व्यक्ति अपने पुण्यों तथा भक्ति शक्ति को दुआ (आशीर्वाद) तथा बद्दुआ (शॉप) देकर नष्ट कर देता है। इस कारण से :-

पंडित गए नरक में, भक्ति से खाली हाथ। भाग्य से मिले जीव को परम संत का साथ।
बिन सतगुरू पावै नहीं खालक खोज विचार। चौरासी जग जात है, चिन्हत नाहीं सार।।

❖ भावार्थ :- नकली गुरू (ब्राह्मण) नरक में जाते हैं। भक्ति कर्म शास्त्र के विरूद्ध होने से भक्ति की शक्ति प्राप्त न करके खाली हाथ चले गए। पूर्व जन्म में शुभ कर्मों के संयोग

बिना परम संत यानि तत्वदर्शी संत नहीं मिलता और सतगुरू के बिना खालिक (परमात्मा) का विचार यानि यथार्थ ज्ञान नहीं मिलता। जिस कारण से संसार के व्यक्ति चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों को प्राप्त करते हैं क्योंकि वे सार नाम, मूल ज्ञान (तत्वज्ञान) को नहीं पहचानते। वाणी नं. 26 का भावार्थ है कि परमात्मा में पूर्ण विश्वास करके क्रिया करने से लाभ होता है, औपचारिक्ता से नहीं।

❖ इसी प्रकार द्रोपदी पूर्व जन्म में परमात्मा की परम भक्त थी। फिर वर्तमान जन्म में एक अंधे साधु को साड़ी फाड़कर लंगोट (कोपीन) के लिए कपड़ा दिया था। (अंधे साधु के वेश में स्वयं कबीर परमेश्वर ही लीला कर रहे थे।) जिस कारण से जिस समय दुःशासन ने द्रोपदी को सभा में नंगा करने की कोशिश की तो द्रोपदी ने देखा कि न तो मेरे पाँचों पति (पाँचों पाण्डव) जो भीम जैसे महाबली थे, सहायता कर रहे हैं। न भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य तथा दानी कर्ण ही सहायता कर रहे हैं। सब के सब किसी न किसी बँधन के कारण विवश हैं। तब निर्बन्ध परमात्मा को अपनी रक्षार्थ हृदय से हाथी की तरह तड़फकर पुकार की। उसी समय परमेश्वर जी ने द्रोपदी का चीर अनन्त कर दिया। दुःशासन जैसे योद्धा जिसमें दस हजार हाथियों की शक्ति थी, थककर चूर हो गया। चीर का ढ़ेर लग गया, परंतु द्रोपदी निःवस्त्र नहीं हुई। परमात्मा ने द्रोपदी की लाज रखी। पाण्डवों के गुरू श्री कष्ण जी थे। जिस कारण से उनका नाम चीर बढ़ाने की लीला में जुड़ा है। इसलिए वाणी में कहा है कि निज नाम की महिमा सुनो जो किसी जन्म में प्राप्त हुआ था, जब परमेश्वर सतगुरू रूप में उस द्रोपदी वाली आत्मा को मिले थे। उनको वास्तविक मंत्र जाप करने को दिया था। उसकी भक्ति की शक्ति शेष थी। उस कारण द्रोपदी की इज्जत रही थी।

कबीर कमाई आपनी, कबहु ना निष्फल जाय। सात समुद्र आडे पड़ो, मिले अगाऊ आय।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि अपनी भक्ति की मजदूरी (कमाई) कभी व्यर्थ नहीं जाती, चाहे कितनी बाधाऐं आ जायें। वह अवश्य मिलती है। इसी के आधार से द्रोपदी का चीर बढ़ा, महिमा हुई। इसलिए कहा है कि निज नाम (यथार्थ भक्ति मंत्र) की महिमा सुन और उस पर अमल करो।

एक वैश्या (गणिका) थी। उसको जीवन में पहली बार सत्संग सुनने का अवसर मिला। उस दिन अपने कर्म से ग्लानि हो गई और सतगुरू से दीक्षा लेकर सच्ची लगन से भक्ति करके विमान में बैठकर स्वर्ग लोक में गई। सच्चा नाम जिस भी देव का है, वह खेवट (मलहा) का कार्य करता है। जैसे नौका चलाने वाला मलहा व्यक्तियों को दरिया से पार कर देता है। ऐसे वास्तविक नाम भवसागर से भक्तों को पार कर देता है।(28-29)

वाणी नं. 30 :-

गरीब, बारद ढारी कबीर जी, भगत हेत कै काज। सेऊ कूं तो सिर दिया, बेचि बंदगी नाज।।30।।

❖ सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी का उदाहरण देकर हम भक्तों को समझाया है कि जैसे कबीर भक्त के साथ काशी के पंडितों तथा मुल्ला-काजियों ने ईर्ष्या के कारण झूठी चिट्ठियाँ डाली थी कि कबीर जी भोजन-भण्डारा करेंगे। प्रत्येक भोज के पश्चात् एक मोहर तथा एक दोहर दक्षिणा देंगे। इस कारण 18 लाख (अठारह लाख)

साधु-संत-भक्त निश्चित दिन पहुँच गए थे। कबीर जी जुलाहे का कार्य करते थे। जो मेहनताना (Salary) मिलता था, उससे अपने परिवार के खर्च का रखकर शेष को भोजन-भण्डारा करके धर्म में लगा देते थे। जिस कारण से घर में दो व्यक्ति आ जाऐं तो उनका भी आटा नहीं रहता था। उस दिन अठारह लाख मेहमान उपस्थित थे तो परमेश्वर कबीर जी अन्य रूप केशव बणजारे का धारण करके नौ लाख बैलों की पीठ पर बोडी यानि गधों के बोरे जैसा थैला धरकर उनमें पका-पकाया भोजन भरकर सतलोक से लेकर आए और तीन दिन का भोजन-भण्डारा पत्रों में लिखा था तो तीन दिन ही 18 लाख व्यक्तियों को भोजन कराया तथा प्रत्येक खाने के पश्चात् एक स्वर्ण की मोहर तथा एक दोहर दी गई। जो हरिद्वार से गरीबदास वाले पंथियों ने सत्ग्रन्थ छपाया है, उसमें वाणी इस प्रकार है :-

गरीब, बारद ढुरि कबीर कै, भक्ति हेत के काज।

यथार्थ वाणी ऊपर लिखी है, फिर भी हमने भावार्थ समझना है।

जब कबीर जी काशी में लीला से लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में प्रकट होकर लीला करने आए हुए थे। उसी समय एक रामानन्द जी पंडित थे जो प्रसिद्ध आचार्य माने जाते थे। उनको कबीर परमेश्वर जी ने अपने सत्यलोक के दर्शन कराए, अपना परिचय कराया। फिर वापिस शरीर में लाकर छोड़ा। उसके पश्चात् स्वामी रामानन्द जी ने कहा :-

दोहू ठौर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणें, आए हो मग जोय।।
बोलत रामानन्द जी, सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में, तुम ही बोलनहार।।
तुम साहब तुम संत हो, तुम सतगुरू तुम हंस। गरीबदास तव रूप बिन, और न दूजा अंश।।

भावार्थ :- स्वामी रामानन्द जी ने कहा है कि हे कबीर जी! आप ऊपर सतलोक में भी हैं, आप यहाँ हमारे पास भी विद्यमान हैं। आप दोनों स्थानों पर लीला कर रहे हैं। वास्तव में आप ही साहब यानि परमात्मा हैं। वास्तव में आप ही पूर्ण संत के गण हैं और वास्तव में सतगुरू भी आप ही हैं तथा एक वास्तविक हंस यानि जैसा भक्त होना चाहिए, वे लक्षण भी आप में ही हैं।

कबीर जी एक उदाहरण पेश कर रहे थे कि जैसे मैं मेहनत करके धन कमाता हूँ, भक्ति भी करता हूँ तथा निर्धन होकर भी भोजन-भण्डारा (लंगर) करवाता रहता हूँ। यदि अन्य भक्त भी मेरी तरह पूर्ण विश्वास के साथ ऐसा करेगा तो परमात्मा उस भक्त की ऐसे सहायता करता है जैसे मेरी की है। अठारह लाख साधुओं-भक्तों को तीन दिन भण्डारा-भोजन करा दिया। वास्तव में सब लीला स्वयं कबीर जी ही ने की थी भक्तों का मनोबल बढ़ाने के लिए। वास्तविक कथा इस प्रकार हैः-

''काशी में भोजन-भण्डारा करना''

शेखतकी सब मुसलमानों का मुख्य पीर (गुरू) था जो परमात्मा कबीर जी से पहले से ही खार खाए था अर्थात् पहले से ही ईर्ष्या करता था। सर्व ब्राह्मणों तथा मुल्ला-काजियों व शेखतकी ने मजलिस (Meeting) करके षड़यंत्र के तहत योजना बनाई कि कबीर निर्धन

व्यक्ति है। इसके नाम से पत्र भेज दो कि कबीर जी काशी में बहुत बड़े सेठ हैं। उनका पूरा पता है कबीर पुत्र नूरअली अंसारी, जुलाहों वाली कॉलोनी, काशी शहर। कबीर जी तीन दिन का धर्म भोजन-भण्डारा करेंगे। सर्व साधु संत आमंत्रित हैं। प्रतिदिन प्रत्येक भोजन करने वाले को एक दोहर (जो उस समय का सबसे कीमती कम्बल के स्थान पर माना जाता था), एक मोहर (10 ग्राम स्वर्ण से बनी गोलाकार की मोहर) दक्षिणा में देगें। प्रतिदिन जो जितनी बार भी भोजन करेगा, कबीर उसको उतनी बार ही दोहर तथा मोहर दान करेगा। भोजन में लड्डू, जलेबी, हलवा, खीर, दही बड़े, माल पूड़े, रसगुल्ले आदि-2 सब मिष्ठान खाने को मिलेंगे। सुखा सीधा (आटा, चावल, दाल आदि सूखे जो बिना पकाए हुए, घी-बूरा) भी दिया जाएगा। एक पत्र शेखतकी ने अपने नाम तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के नाम भी भिजवाया। निश्चित दिन से पहले वाली रात्रि को ही साधु-संत भक्त एकत्रित होने लगे। अगले दिन भण्डारा (लंगर) प्रारम्भ होना था। परमेश्वर कबीर जी को संत रविदास दास जी ने बताया कि आपके नाम के पत्र लेकर लगभग 18 लाख साधु-संत व भक्त काशी शहर में आए हैं। भण्डारा खाने के लिए आमंत्रित हैं। कबीर जी अब तो अपने को काशी त्यागकर कहीं और जाना पड़ेगा। कबीर जी तो जानीजान थे। फिर भी अभिनय कर रहे थे, बोले रविदास जी झोंपड़ी के अंदर बैठ जा, सांकल लगा ले। अपने आप झख मारकर चले जाएंगे। हम बाहर निकलेंगे ही नहीं। परमेश्वर कबीर जी अन्य वेश में अपनी राजधानी सत्यलोक में पहुँचे। वहाँ से नौ लाख बैलों के ऊपर गधों जैसा बौरा (थैला) रखकर उनमें पका-पकाया सर्व सामान भरकर तथा सूखा सामान (चावल, आटा, खाण्ड, बूरा, दाल, घी आदि) भरकर पथ्वी पर उतरे। सत्यलोक से ही सेवादार आए। परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं बनजारे का रूप बनाया और अपना नाम केशव बताया। दिल्ली के सम्राट सिकंदर तथा उसका धार्मिक पीर शेखतकी भी आया। काशी में भोजन-भण्डारा चल रहा था। सबको प्रत्येक भोजन के पश्चात् एक दोहर तथा एक मोहर {10 ग्राम सोना(Gold)} दक्षिणा दी जा रही थी। कई बेईमान साधक तो दिन में चार-चार बार भोजन करके चारों बार दोहर तथा मोहर ले रहे थे। कुछ सूखा सीधा (चावल, खाण्ड, घी, दाल, आटा) भी ले रहे थे।

यह सब देखकर शेखतकी ने तो रोने जैसी शक्ल बना ली और जाँच (Enquiry) करने लगा। सिकंदर लोधी राजा के साथ उस टैंट में गया जिसमें केशव नाम से स्वयं कबीर जी वेश बदलकर बनजारे (उस समय के व्यापारियों को बनजारे कहते थे) के रूप में बैठे थे। सिकंदर लोधी राजा ने पूछा आप कौन हैं? क्या नाम है? आप जी का कबीर जी से क्या संबंध है? केशव रूप में बैठे परमात्मा जी ने कहा कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे पगड़ी बदल मित्र हैं। मेरे पास उनका पत्र गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा यानि लंगर करना है, कुछ सामान लेते आइएगा। उनके आदेश का पालन करते हुए सेवक हाजिर है। भण्डारा चल रहा है। शेखतकी तो कलेजा पकड़कर जमीन पर बैठ गया जब यह सुना कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है जहाँ पर 18 लाख व्यक्ति भोजन करने आए हैं। प्रत्येक को दोहर तथा मोहर और आटा, दाल, चावल, घी, खाण्ड भी सूखा सीधा रूप में दिए जा रहे हैं। इसको छोटा-सा भण्डारा कह रहे हैं। परंतु ईर्ष्या की अग्नि में जलता हुआ विश्राम

गह में चला गया जहाँ पर राजा ठहरा हुआ था। सिकंदर लोधी ने केशव से पूछा कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव ने उत्तर दिया कि उनका गुलाम जो बैठा है, उनको तकलीफ उठाने की क्या आवश्यकता? जब इच्छा होगी, आ जाएंगे। यह भण्डारा तो तीन दिन चलना है।

सिकंदर लोधी हाथी पर बैठकर अंगरक्षकों के साथ कबीर जी की झोंपड़ी पर गए। वहाँ से उनको तथा रविदास जी को साथ लेकर भण्डारा स्थल पर आए। सबसे कबीर सेठ का परिचय कराया तथा केशव रूप में स्वयं डबल रोल करके उपस्थित संतों-भक्तों को प्रश्न-उत्तर करके सत्संग सुनाया जो 24 घण्टे तक चला। कई लाख सन्तों ने अपनी गलत भक्ति त्यागकर कबीर जी से दीक्षा ली, अपना कल्याण कराया। भण्डारे के समापन के बाद जब बचा हुआ सब सामान तथा टैंट बैलों पर लादकर चलने लगे, उस समय सिकंदर लोधी राजा तथा शेखतकी, केशव तथा कबीर जी एक स्थान पर खड़े थे, सब बैल तथा साथ लाए सेवक जो बनजारों की वेशभूषा में थे, गंगा पार करके चले गए। कुछ ही देर के बाद सिकंदर लोधी राजा ने केशव से कहा आप जाइये आपके बैल तथा साथी जा रहे हैं। जिस ओर बैल तथा बनजारे गए थे, उधर राजा ने देखा तो कोई भी नहीं था। आश्चर्यचकित होकर राजा ने पूछा कबीर जी! वे बैल तथा बनजारे इतनी शीघ्र कहाँ चले गए? उसी समय देखते-देखते केशव भी परमेश्वर कबीर जी के शरीर में समा गए। अकेले कबीर जी खड़े थे। सब माजरा (रहस्य) समझकर सिकंदर लोधी राजा ने कहा कि कबीर जी! यह सब लीला आपकी ही थी। आप स्वयं परमात्मा हो। शेखतकी के तो तन-मन में ईर्ष्या की आग लग गई, कहने लगा ऐसे-ऐसे भण्डारे हम सौ कर दें, यह क्या भण्डारा किया है? महौछा किया है।

महौछा उस अनुष्ठान को कहते हैं जो किसी गुरू द्वारा किसी वद्ध की गति करने के लिए थोपा जाता है। उसके लिए सब घटिया सामान लगाया जाता है। जग जौनार करना उस अनुष्ठान को कहते हैं जो विशेष खुशी के अवसर पर किया जाता है, जिसमें अनुष्ठान करने वाला दिल खोलकर धन खर्च करता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, कोई कह जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा। बड़े बड़ाई किया करें, गाली काढ़े औछा।।

सारांश :- कबीर जी ने भक्तों को उदाहरण दिया है कि यदि आप मेरी तरह सच्चे मन से भक्ति करोगे तथा ईमानदारी से निर्वाह करोगे तो परमात्मा आपकी ऐसे सहायता करता है। भक्त ही वास्तव में सेठ अर्थात् धनवंता हैं। भक्त के पास दोनों धन हैं, संसार में जो चाहिए वह भी धन भक्त के पास होता है तथा सत्य साधना रूपी धन भी भक्त के पास होता है।

एक अन्य करिश्मा जो उस भण्डारे में हुआ

वह जीमनवार (लंगर) तीन दिन तक चला था। दिन में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो बार भोजन खाता था। कुछ तो तीन-चार बार भी खाते थे क्योंकि प्रत्येक भोजन के पश्चात् दक्षिणा में एक मौहर (10 ग्राम सोना) और एक दौहर (कीमती सूती शॉल) दिया जा रहा था। इस लालच में बार-बार भोजन खाते थे। तीन दिन तक 18 लाख व्यक्ति शौच तथा पेशाब करके काशी के चारों ओर ढ़ेर लगा देते। काशी को सड़ा देते। काशी निवासियों तथा उन 18 लाख अतिथियों तथा एक लाख सेवादार जो सतलोक से आए थे। उस गंद का ढ़ेर लग जाता, श्वांस

लेना दूभर हो जाता, परंतु ऐसा महसूस ही नहीं हुआ। सब दिन में दो-तीन बार भोजन खा रहे थे, परंतु शौच एक बार भी नहीं जा रहे थे, न पेशाब कर रहे थे। इतना स्वादिष्ट भोजन था कि पेट भर-भरकर खा रहे थे। पहले से दुगना भोजन खा रहे थे। हजम भी हो रहा था। किसी रोगी तथा वृद्ध को कोई परेशानी नहीं हो रही थी। उन सबको मध्य के दिन चिंता हुई कि न तो पेट भारी है, भूख भी ठीक लग रही है, कहीं रोगी न हो जाऐं। सतलोक से आए सेवकों को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि यह भोजन ऐसी जड़ी-बूटियां डालकर बनाया है जिनसे यह शरीर में ही समा जाएगा। हम तो प्रतिदिन यही भोजन अपने लंगर में बनाते हैं, यही खाते हैं। हम कभी शौच नहीं जाते तथा न पेशाब करते, आप निश्चिंत रहो। फिर भी विचार कर रहे थे कि खाना खाया है, परंतु कुछ तो मल निकलना चाहिए। उनको लैट्रिन जाने का दबाव हुआ। सब शहर से बाहर चल पड़े। टट्टी के लिए एकान्त स्थान खोजकर बैठे तो गुदा से वायु निकली। पेट हल्का हो गया तथा वायु से सुगंध निकली जैसे केवड़े का पानी छिड़का हो। यह सब देखकर सबको सेवादारों की बात पर विश्वास हुआ। तब उनका भय समाप्त हुआ, परंतु फिर भी सबकी आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी थी। परमेश्वर कबीर जी को परमेश्वर नहीं स्वीकारा।

पुराणों में भी प्रकरण आता है कि अयोध्या के राजा ऋषभ देव जी राज त्यागकर जंगलों में साधना करते थे। उनका भोजन स्वर्ग से आता था। उनके मल (पाखाने) से सुगंध निकलती थी। आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति इसको देखकर आश्चर्यचकित होते थे। इसी तरह सतलोक का आहार करने से केवल सुगंध निकलती है, मल नहीं। स्वर्ग तो सतलोक की नकल है जो नकली (**Duplicate**) है।

वाणी नं. 30 में कहा है कि :- सेऊ कूं तो शीश दिया, बेच बन्दगी नाज।

सेऊ (शिव) ने किस कारण शीश दान किया, पढ़ें सत्य कथा :-

''सेऊ-सम्मन की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच गए। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ (शिव)। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे? कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो। तब नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है। सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ। नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-2 कह कर मजाक करने लगे। सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ।

नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पृथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुंह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा। तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए। तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। आपको मेरी कसम। तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है, परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। जिस नगर में निर्वाह किया है, इसकी रक्षा के लिए चोरी करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिड़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) पृथ्वी पर आए हुए हैं। इन्होंने एक मृतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लौधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लौधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री स्वामी रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) को सिंकदर लौधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो? बेटा! ये नादान प्राणी हैं। यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना। तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए चल दिए। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूंगा और ले कर भाग जाना। तब सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा। सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे? सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर गया। तब सम्मन ने कहा पुत्र केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर

आटा अपनी फटी पुरानी चद्दर में बाँध कर चलने लगा तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोर दार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग गया और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़ लिया और रस्से से बाँध दिया। इससे पहले सेऊ ने वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक दिया और कहा पिता जी मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना। आटा ले कर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पा कर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थम्ब से बाँध दिया। तब नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ। क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न दिखा दें। यह कह कर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए। सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें। तब सेऊ उस सेठ (बनिए) से कहता है कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कृप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए। तब सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई। तब सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। मेरे को पहचानकर घर तक सेठ पहुँचेगा। राजा तक इसकी पहुँच है। यह अपने गुरूदेव को मरवा देगा। पिताजी हम क्या मुख दिखाऐंगे? सम्मन ने एकदम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया। सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देख कर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था उस खण्डहर में डाल गया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ, तब सम्मन दुकान पर पहुँचा। उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। फिर सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। फिर सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद पाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद के लिए बैठ गए। तब साहेब कबीर ने कहा -

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

साहेब कबीर ने कहा कि सेऊ आओ भोजन पाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों

(भक्तों) के नहीं। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा।

गरीब, सेऊ धड़ पर शीश चढ़ा, बैठा पंगत मांही। नहीं घरैरा गर्दन पर, औह सेऊ अक नांही।।

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? शंका हुई कि यह वही सेऊ है या कोई और। अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संश्य को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 16 मंत्र 2 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है।

❖ **वाणी नं. 31 से 37 में कहा है कि इन-इन महापुरूषों तथा देवताओं की जो महिमा आप सुनते हैं। इन्होंने भी भक्ति की थी। उसी कारण उनकी प्रसिद्धि संसार में हुई है। परंतु मुक्ति तो यथार्थ भक्ति ज्ञान तथा निज नाम से ही संभव है।**

❖ **वाणी नं. 38 :-**

गरीब, ऐसा निर्मल नाम है, निर्मल करै शरीर। और ज्ञान मण्डलीक है, चकवै ज्ञान कबीर।।

❖ **भावार्थ :- वेदों, गीता, पुराणों तथा कुरान व बाईबल में मण्डलीक (आंशिक) ज्ञान है। कबीर परमेश्वर द्वारा बोली अमरवाणी स्वस्मवेद में संपूर्ण अर्थात् चक्रवर्ती ज्ञान है। इसके लिए पढ़ें सष्टि रचना जो इसी पुस्तक में पष्ठ 518 पर है।**

(राग बिलावल से शब्द 21 भी पढ़ें। उसमें कबीर परमेश्वर की अथाह शक्ति का प्रमाण है।)

✯अबिगत राम कबीर हैं, चकवै अबिनाशी। ब्रह्मा बिष्णु वजीर हैं, शिब करत खवासी।।टेक।। इन्द्र कोटि अनंत हैं, जाकै प्रतिहारा। बरन कुमेरं धर्मराय, ठाढे दरबारा।।1।। तेतीस कोटि देवता, ऋषि सहंस अठासी। वैष्णव कोटि अनंत हैं, गुण गावैं राशी।।2।। नौ जोगेश्वर नाद भरि, सुर पूरै संखा। सनकादिक संगीत हैं, अबिचल गढ बंका।।3।। शेष गणेश रु सरस्वती, और लक्ष्मी राजैं। सावित्री गौरा रटैं, गण संख बिराजैं।।4।। अनंत कोटि मुनि साध हैं, गण गंधर्व ज्ञानी। अरपैं पिंड रु प्राण कूं, जहां संखौं दानी।।5।। सावंत शूर अनंत हैं, कुछ गिणती नाहीं। जती सती और शीलवंत, लीला गुण गाहीं।।6।। चंद्र सूर बिनती करैं, तारा गण गाढे। पांच तत्व हाजिर खड़े, हुकमी दर ठाढे।।7।। तीर्थ कोटि अनंत हैं, और नदी बिहंगा। ठारा भार तो कूं रटै, जल पवन तरंगा।।8।। अष्ट कुली परबत रटैं, धर अंबर ध्याना। महताब अगनि तो कूं जपैं, साहिब रहमाना।।9।। अर्स कुर्स पर सेज है, तन तबक तिराजी। एक पलक में करत हैं, सो राज बिराजी।।10।। अलख बिनानी कबीर कूं, रंग खूब चवाया। एक पानी की बूंद से, संसार बनाया।।11।। अनंत कोटि ब्रह्मण्ड हैं, कछू वार न पारा। लख चौरासी खान का, तूं सिरजनहारा।।12।। सूक्ष्म रूप स्वरूपहै, बौह रंग बिनानी। गरीबदास के मुकट में, हाजिर प्रवानी।।13।।21।।

❖ **वाणी नं. 39 :-**

गरीब, राम नाम सदने पिया, बकरे के उपदेस। अजामेल से ऊधरे, भगति बंदगी पेस।।39।।

❖ भावार्थ :- एक सदन नाम का कसाई था, उसकी कथा इस प्रकार है :-

''सदन कसाई का उद्धार''

एक सदन नाम का व्यक्ति एक कसाई के बुचड़खाने में नौकरी करता था।

गरीब, सो छल छिद्र मैं करूं, अपने जन के काज। हरणाकुश ज्यूं मार हूँ, नरसिंघ धरहूँ साज।।

संत गरीबदास जी ने बताया है कि परमेश्वर कबीर जी कहते हैं कि जो मेरी शरण में किसी जन्म में आया है, मुक्त नहीं हो पाया, मैं उसको मुक्त करने के लिए कुछ भी लीला कर देता हूँ। जैसे प्रहलाद भक्त की रक्षा के लिए नरसिंह रूप {मुख और हाथ शेर (Lion) के, शेष शरीर नर यानि मनुष्य का} धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा था। फिर कहा है कि :-

गरीब, जो जन मेरी शरण है, ताका हूँ मैं दास। गैल–गैल लागा रहूँ, जब तक धरणी आकाश।।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है जो जन (व्यक्ति) किसी जन्म में मेरी शरण में आ गया है। उसके मोक्ष के लिए उसके पीछे-पीछे फिरता रहता हूँ। जब तक धरती-आकाश रहेगा (महाप्रलय तक), तब तक उसको काल जाल से निकालने की कोशिश करता रहूँ। फिर कहा है कि :-

गरीब, ज्यूं बच्छा गऊ की नजर में, यूं सांई कूं संत। भक्तों के पीछे फिरै, भक्त वच्छल भगवन्त।।

जैसे गाय अपने बच्चे (बछड़े-बछड़ी) पर अपनी दृष्टि रखती है। बच्चा भागता है तो उसके पीछे-पीछे भागती है। अन्य पशुओं से उसकी रक्षा करती है। इसी प्रकार परमेश्वर कबीर जी अपने भक्त के साथ रहता है। यदि वर्तमान जन्म में उस पूर्व जन्म के भक्त ने दीक्षा नहीं ले रखी तो भी परमेश्वर जी उसके पूर्व जन्म के भक्ति कर्मों के पुण्य से उनके लिए चमत्कार करके रक्षा करते हैं। उदाहरण = भैंस का सींग परमात्मा बना, द्रोपदी का चीर बढ़ाना, प्रहलाद भक्ती की रक्षार्थ नरसिंह रूप धारण करना और इस कथा में सदन भक्त के लिए लीला करना।

शंका :- नए पाठकों को भ्रम होगा कि परमेश्वर समर्थ होता है। फिर भी लाचार (विवश) कैसे है? एक ही जन्म में पार क्यों नहीं कर देता?

समाधान :- सब जीव अपनी गलती के कारण परमेश्वर की इच्छा के विरूद्ध अपनी इच्छा से काल के साथ आए हैं। जिस समय परमेश्वर कबीर जी प्रथम बार हमारी सुध लेने के लिए काल लोक में आए थे तो काल ने चरण पकड़कर कुछ शर्तें रखी थी जो परमेश्वर कबीर जी ने मान ली थी :-

1. काल ब्रह्म ने कहा था कि हे प्रभु! आप कह रहे हो कि मैं जीवों को तेरे (काल ब्रह्म के) जाल से निकालकर वापिस सतलोक लेकर जाऊँ। हे स्वामी! मेरे को आपने श्राप दे रखा है कि एक लाख मानव शरीरधारी जीव खाने का तथा सवा लाख उत्पन्न करने का। यदि सब जीव वापिस चले गए तो मेरी क्षुधा (भूख) कैसे समाप्त होगी? इसलिए आप जोर-जबरदस्ती करके जीव न ले जाना। आप अपना ज्ञान समझाना। जो जीव आपके ज्ञान को स्वीकार करे, उसको ले जाना। जो न माने, वह मेरे लोक में रहे। परमेश्वर जी को ज्ञान था कि जब तक इनको सत्यलोक के सुख का और काल लोक के दुःख का ज्ञान नहीं होगा

तो ये मेरा साथ देंगे ही नहीं। यदि जबरदस्ती (By Force) ले जाऊँगा तो ये वहाँ रहेंगे ही नहीं क्योंकि इनका मोह परिवार और सम्पत्ति में फँसा है। पहले इनको ज्ञान ही कराना होगा। इसलिए परमेश्वर कबीर जी ने काल की शर्तों को स्वीकार किया था। अब काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने पूरा जोर लगा रखा है कि सब मानव को काल जाल में फँसे रहने का ज्ञान कराने के लिए अनेकों प्रचारक लगा रखे हैं जो केवल राम-कष्ण, ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी तथा इनके अंतर्गत अन्य देवी-देवताओं-भैरो, भूत-पित्तरों, माई-मसानी, सेढ़-शीतला आदि-आदि की महिमा का ज्ञान बताते रहते हैं। सतपुरूष (कबीर परमेश्वर जी) का नामो-निशान मिटा रखा है। अपने पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, शिव) तथा अपनी महिमा का ज्ञान सब स्थानों पर फैला रखा है। चारों वेद, गीता, पुराण, कुरान, बाईबल (जो तीन पुस्तकों जबूर, तौरात, इंजिल का संग्रह है) का ज्ञान पूरी पथ्वी पर प्रचलित कर रखा है। सब मानव इन्हीं तक सीमित हो चुका है। इन पुस्तकों में पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, बेद मेरा भेद है, ना बेदन के मांही। जोन बेद से मैं मिलूँ, बेद जानत नांही।।

प्रमाण :- यजुर्वेद अध्याय 40 श्लोक 10 में कहा है कि परमात्मा का यथार्थ ज्ञान (धीराणाम्) तत्वदर्शी संत बताते हैं, उनसे (श्रुणूं) सुनो।

गीता शास्त्र चारों वेदों का संक्षिप्त रूप है। इसमें भी कहा है कि परमात्मा तत्वज्ञान यानि अपनी जानकारी तथा प्राप्ति का ज्ञान अपने मुख कमल से वाणी बोलकर बताता है। उस ज्ञान से मोक्ष होगा। तथा सत्यलोक प्राप्ति होगी। उस ज्ञान को तत्वदर्शी संतों के पास जाकर समझ।(गीता अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में)

कुरान शरीफ सूरत फुर्कानि 25 आयत नं. 52 से 59 में कहा है कि :-

जिस परमेश्वर ने छः दिन में सष्टि रची। फिर तख्त पर जा विराजा।(जा बैठा) वह अल्लाह कबीर है। उसकी जानकारी किसी बाखबर (तत्वदर्शी संत) से पूछो।

इन प्रमाणों से स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति का ज्ञान इन उपरोक्त पवित्र शास्त्रों में नहीं है। वह ज्ञान स्वयं परमेश्वर कबीर जी प्रकट होकर बताते हैं। भक्ति विधि बताते हैं। शिष्य बनाते हैं। भक्ति के लिए मर्यादा बनाते हैं। कुछ नियम निर्धारित किये जाते हैं। नियम खण्डित होने से नाम (दीक्षा) खण्डित हो जाता है। जिस कारण से भक्त रूपी पतंग की डोर कट जाती है। वह कुछ देर हवा में लहराता फिरता है। फिर किसी वक्ष पर टंगकर या पथ्वी पर गिरकर पशुओं के पैरों तले कुचला जाता है।

इसी प्रकार काल, सर्वप्रथम कबीर जी के भक्त का नाम खण्डित करवाता है। जिस कारण से उस साधक का सम्पर्क (Connection) परमात्मा से कट जाता है। जैसे बिजली का कनैक्शन कट जाने के पश्चात् सब लाभ बंद हो जाते हैं। न पंखा चलता है, न बल्ब-ट्यूब जगती है। सब मशीनें बंद हो जाती हैं। परमात्मा से कनैक्शन कटने का आभास देर से होता है। बिजली से कनैक्शन कटने का आभास शीघ्र हो जाता है। उसी प्रकार नाम खण्डित भक्त को परमात्मा से लगातार मिल रहा लाभ रूक जाता है। परंतु कुछ समय मर्यादा में रहकर किए मंत्र जाप तथा यज्ञ-हवन, धर्म का लाभ संग्रह हो जाता है। जब तक वह पूर्व का भक्ति

धन (पुण्य) संग्रह किया हुआ समाप्त नहीं होता, तब तक ऐसा लगता है कि सब ठीक है। परंतु वह जमा धन समाप्त होने के पश्चात् सब ओर से कठिनाईयाँ (संकट) घेर लेती हैं, तब ज्ञान होता है। भक्त को चाहिए कि वह नाम शुद्ध कराए। जैसे वर्तमान में इन्वर्टर (**Inverter**) को बिजली से चार्जर द्वारा चार्ज किया जाता है। इन्वर्टर की बैटरी चार्ज हो जाती है। यदि चार्जर को हटा दिया जाए या अन्य किसी कारण से चार्जर का सम्पर्क बिजली से कट जाए तो बैटरी चार्ज होना बंद हो जाती है। परंतु पहले जितनी चार्ज हो चुकी है। उसके कारण पंखे भी चल रहे होते हैं। बल्ब-ट्यूब भी जल रही होती हैं। सब ठीक-ठाक लगता है। परंतु चार्जर के काम न करने के कारण अचानक सर्व ट्यूब-पंखे बंद हो जाते। अंधेरा-गर्मी आदि सब प्रकार की परेशानी खड़ी हो जाती है। इसी प्रकार किसी मानव जन्म में नाम-दीक्षा लेकर भक्ति करने वाले भक्त का नाम खण्डित हो तो उनको कुछ दिन सब लाभ मिलता है। परंतु वे काल के जाल में फँस चुके होते हैं। उनको कई जन्म लगातार मानव के भी मिल जाते हैं। उन मानव (स्त्री-पुरूष के) जन्मों में फिर से चार्जर नहीं लगा यानि फिर से सच्चे संत से दीक्षा नहीं मिली तो सब मानव जन्म नष्ट होकर चौरासी लाख योनियों में जन्म-मरण वाले चक्र में गिरकर बर्बाद हो जाता है। इसलिए परमेश्वर स्वयं ऐसे पूर्व जन्म वाले भक्तों को मिलकर उनको फिर से जागत करके सत्य साधना पर लगाते हैं। पाप वाले कर्म छुड़वाते हैं। उस मार्ग से भटके प्राणी को फिर से भक्ति करने की प्रेरणा करते हैं। जैसे सम्मन-सेऊ-नेकी वाली सत्य कथा में आपने पढ़ा। सम्मन वाली आत्मा नौशेरखान बना। फिर वही आत्मा बलख बुखारे का राजा अब्राहिम अधम सुल्तान बना। प्रत्येक जन्म में परमेश्वर मिले। भक्ति की प्रेरणा की, परंतु फिर भी काल जाल में रहे। अब्राहिम सुल्तान वाले जन्म में जाकर सम्मन वाला जीव मुक्त हुआ। परमात्मा कबीर जी ने कहा है जो संत गरीबदास जी ने बताया है :-

अनन्त कोटि बाजी जहाँ, रचे सकल ब्रह्मण्ड। गरीबदास मैं क्या करूं, काल करे जीव खंड।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे गरीबदास! मैं इतना समर्थ हूँ। मैंने अनन्त करोड़ ब्रह्मण्डों की रचना की। उनका संचालन कर रहा हूँ, परंतु मैं क्या करूं? काल ब्रह्म मेरे भक्त को मेरे से खण्ड यानि भिन्न कर देता है। उसका नाम खंडित करवा देता है। जिस कारण से वह प्राणी फिर से काल के जाल में रह जाता है। मैं उसको फिर किसी मानव जन्म में किसी संत-भक्त के रूप में मिलता हूँ। उसकी भक्ति की गाड़ी फिर से पटरी पर लाता हूँ। जो भक्त विश्वास के साथ मर्यादा में रहकर आजीवन भक्ति करते रहते हैं, वे काल के सिर पर पैर रखकर भक्ति की शक्ति से सतलोक चले जाते हैं। वे परम पद प्राप्त करते हैं तथा वह शाश्वत स्थान (सनातन परम धाम) प्राप्त करते हैं जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में है। उसी विधान अनुसार परमेश्वर कबीर जी ने नरक इकठ्ठा कर रहे पूर्व जन्म के सदना कसाई को पुनः शरण में लिया। अब सदना कसाई की उद्धार कथा सुनाता हूँ :-

सदना एक कसाई का नौकर था। प्रतिदिन 2 से 10 तक बकरे-बकरी, गाय-भैंसें काटता था। उसी से निर्वाह चल रहा था। एक दिन परमेश्वर एक मुसलमान फकीर जिन्दा

बाबा के रूप में सदन कसाई को मिले। उसको भक्ति ज्ञान समझाया। जीव हिंसा से होने वाले पाप से परिचित कराया। सर्व ज्ञान समझकर सदन कसाई ने दीक्षा लेने की प्रबल इच्छा व्यक्त की। परमेश्वर जिन्दा ने कहा कि पहले यह कसाई का कार्य त्याग, तब दीक्षा दूँगा। सदना के सामने निर्वाह की समस्या थी। वह जिन्दा बाबा को बताई। जिन्दा वेशधारी प्रभु ने कहा कि भाई सदना! कसाई तो कुल सौ हैं आपके शहर में, अन्य हजारों व्यक्ति भी निर्वाह कर रहे हैं। आप भी कोई अन्य कार्य कर लो। सदना इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुआ। अपनी निर्वाह की समस्या आगे रखी। जिन्दा ने कहा कि आप हिंसा कम कर दो। सदना ने कहा कि मैं मालिक की आज्ञा की अवहेलना नहीं कर सकता। वह जितने पशु काटने को कहेगा, मुझे काटने पड़ेंगे। जिन्दा बाबा ने कहा कि आप निर्धारित कर लो कि इतने पशुओं से अधिक नहीं काटूँगा चाहे नौकरी त्यागनी पड़े, तो मैं आपको दीक्षा दे दूँगा। सदना कसाई की दीक्षा लेने की इच्छा प्रबल थी। नौकरी छूटने का भय भी कम नहीं था। इसलिए इस बात पर सहमत हो गया और हिसाब लगाया कि प्रतिदिन छोटे-बड़े 10 या 12 पशु ही कटते हैं। यदि कोई इद-बकरीद त्यौहार आता है या किसी के विवाह में माँस की पार्टी होती है तो मुश्किल से 50 पशु वध किए जाते हैं। सदना ने कहा कि बाबाजी! मैं पक्का वादा (वचन) करता हूँ कि सौ पशुओं से अधिक नहीं काटूँगा, चाहे नौकरी भी क्यों न त्यागनी पड़े। जिन्दा बाबा बोले, ठीक है। आपको मुझसे मिलने की इच्छा हो तो मैं जगन्नाथ मंदिर में पुरी में रहता हूँ, वहाँ आ जाना।

कुछ समय सब ठीक-ठाक चलता रहा। एक दिन नगर में कई विवाह थे। साथ में नवाब के लड़के का विवाह था। उस दिन पूरे सौ बकरे काटे। सदना ने अल्लाह का धन्यवाद किया। अपना वचन खण्ड होने से बाल-बाल बचा। सब औजार धोकर साफ करके रख दिए। कुछ रात्रि बीतने के पश्चात् मालिक कसाई के पास एक अन्य कसाई आया। उसके शहर में 50 बकरों की आवश्यकता थी। उसके लिए वह सदना के मालिक के पास आया तथा 50 बकरे लेने की बात कही, सौदा तय हो गया। रात्रि में सदना के मालिक के घर ही रूका। उसके खाने के लिए मालिक ने सदना को बुलाया तथा एक बकरा काटकर एक व्यक्ति की सब्जी के लिए माँस रसोई में भेजने के लिए कहा। सदना को पसीना आ गया। अपना वचन खण्ड होने का भय सताने लगा। उसी समय एक विचार आया कि क्यों न बकरे के अण्डकोष काटकर रसोई में भेज दूँ। मेरा वचन भी रह जाएगा और मालिक भी खुश रहेगा। एक बकरा लाकर सदना ने उसके अण्डकोष काटने के लिए छुरा उठाया। उसी समय परमात्मा ने बकरे को मनुष्य बुद्धि प्रदान कर दी तथा तत्वज्ञान की रोशनी कर दी। बकरे ने कहा कि हे सदन भाई! आप मेरी गर्दन काटो, अण्डकोष मत काटो। आप यह नया वैर शुरू ना करो। हे सदना! मैंने कसाई रूप में तेरे कई सिर काटे हैं जब तुम बकरे की योनि में थे। आपने भी मेरे बहुत सिर काटे हैं जब मैं बकरा और तुम कसाई थे। यदि आप मेरे अण्डकोष काटोगे तो मैं सारी रात्रि तड़फ-तड़फकर रो-रोकर मरूँगा। अगले किसी जन्म में जब मैं कसाई बनूँगा, तुम बकरा बनोगे तो अल्लाह के विधान अनुसार मैं तेरे अण्डकोष काटूँगा, तुम भी तड़फ-तड़फकर प्राण त्यागोगे। इसलिए यह नई दुश्मनी शुरू न कर। मेरी

गर्दन काट, अपना बदला ले।

उसी समय सदने के हाथ से करद (लम्बा चाकू) छूट गया। काँपने लगा। अचेत होकर गिर गया। मालिक ने रसोईये को आवाज लगाई कि खाना लाओ। रसोईये ने बताया कि सदना ने माँस नहीं पहुँचाया तो मालिक कुछ नौकरों के साथ आया। सदना जमीन पर बैठा था। वह सचेत हो चुका था। बकरा खड़ा था। वहीं पर चाकू पड़ा था। मालिक ने कहा, नमक हराम! इतनी देर कर दी माँस भेजने में, जल्दी कर। सदना ने हाथ जोड़कर कहा, मालिक! बहुत बकरे काट दिए हैं। सौ बकरे काटे हैं, अब और नहीं कटते। मैं और नहीं काटूँगा। कल काट दूँगा। मालिक जो कसाई ठहरा। क्रोध में भरकर साथ में आए नौकरों से कहा कि इसी छुरे से इसके दोनों हाथ काट दो, चाहे सदना हाथ जोड़े, गिड़गिड़ाता रहे। ये नमक-हराम मेरे लाभ में खुश नहीं है। इस सौदागर ने दुगने मूल्य में बकरों का सौदा किया है। भोजन देरी के कारण नाराज होकर चला गया तो मेरी कितनी हानि हो जाएगी। यह आज आज्ञा का पालन नहीं कर रहा है, पक्का हराम खोर है। इतना सुनकर नौकरों ने सदना के दोनों हाथ काट दिए। नौकरी से निकाल दिया। वैद्य के पास जाकर इलाज कराया। जख्म भरने के पश्चात् सदना भक्त जगन्नाथ पुरी की ओर चला। चलते-चलते रात्रि में एक गाँव में एक नम्बरदार के घर रूका। नम्बरदारनी ने सदना को अपने हाथों भोजन कराया। सदना ने उस देवी की भूरी-भूरी प्रशंसा की। नम्बरदारनी की चाल-चलन (चरित्र) अच्छा नहीं था। वह सदना के यौवन पर दृष्टि लगाए हुए थी। सदना सुंदर जवान था। आयु तीस वर्ष के आसपास थी। रात्रि में नम्बरदारनी सदना के बिस्तर पर आ गई और अपने साथ संभोग करने को कहा। सदना बिस्तर छोड़कर खड़ा हो गया और कहा बहन! आप नम्बरदार की इज्जत हो, आप उसकी धरोहर हो। मैं पहले ही दुःखी हूँ। आप मुझे क्षमा करो। मैं अभी चला जाता हूँ। आप नम्बरदार जी के साथ धोखा कर रही हो, आपको अल्लाह के दरबार में जवाब देना पड़ेगा। डरो उस परवरदिगार से।

सदना का यह उत्तर सुनकर नम्बरदारनी ने विचार किया कि यह मेरे पति को बताएगा, इससे पहले मैं ही बता देती हूँ। रात्रि के दो बजे थे। नम्बरदारनी ने कहा कि वह व्यक्ति जो आज अपना मेहमान बना था, मेरे साथ गलत हरकत करने लगा। यह कहकर बुरी तरह रोने लगी। पृथ्वी पर गिरकर सिर पटकने लगी। नम्बरदार ने तुरंत अपने आदमियों को सदना को पकड़कर लाने को कहा। सदना को पकड़कर पंचायतघर (चौपाल) में बाँधकर बैठा दिया। नवाब के पास शिकायत की गई। नवाब ने सदना को बुलाकर पूछा कि तेरे को अतिथि बनाकर रखा, भोजन दिया। अरे दुष्ट! तूने यह क्या किया? सदना ने अपनी हकीकत बताई, परंतु नवाब तथा पंचायत को झूठी कहानी लगी। नवाब ने सदना भक्त को मीनार में चिनवाने का आदेश दिया। एक छोटा-सा मंदिरनुमा भवन बनाया गया, उसके अंदर भक्त को बाँधकर डाला गया। उद्देश्य था कि सदना दम घुटकर रो-रोकर, तड़फ-तड़फकर मरे। नम्बरदारनी ने आरोप लगाया था कि इसने मेरी छाती पर हाथ डाला। दोनों स्तनों को टुंडे हाथों से छूआ। मेरी नींद खुली तो मैंने विरोध किया तथा पति को बताने की बात कही तो उठकर चला गया। रास्ते से पकड़कर लाए हैं जी! ज्योंही कारीगर मीनार

का द्वार बंद करके हटे, उसी समय मीनार के पत्थर-ईटें आकाश में उड़ गई जैसे बम्ब विस्फोट हुआ हो। कुछ वहीं आसपास गिर गई, कुछ नवाब के आँगन में गिरी। कुछ नम्बरदार के घर की छत पर तथा आँगन में गिरी। नम्बरदारनी के दोनों स्तन कटकर गिर गए। वो दर्द के मारे चिल्लाने लगी। अपनी गलती को बताने लगी। पूरे शहर के व्यक्ति-नवाब तथा उसका परिवार मीनार के पास आया। भक्त सदना आराम से बैठा था। उसके दोनों हाथ स्वस्थ हो गए। कटे हुए थे, पूर्ण हो गए। सब नगर निवासियों ने तथा नम्बरदार-नम्बरदारनी ने अपनी-अपनी गलती की क्षमा याचना की। भक्त सदना वहाँ से चलकर जगन्नाथ पुरी में पहुँचा। वहाँ वही सतगुरू मिले। उनको सदना ने बकरे से प्राप्त उपदेश बताया। दीक्षा ली और कल्याण कराया।

{नोट :- कुछ वक्ता कहते हैं कि सदना के हाथ कसाई ने नहीं कटवाए थे, नवाब ने कटवाए थे क्योंकि नम्बरदारनी ने कहा था कि हाथों से मेरे स्तनों को छूआ था। परंतु विचार करें तो ऐसे निष्कर्ष निकलता है :- मुसलमान राजा या नवाब हाथ काटने की सजा चोरी करने वाले को देते थे। यह चोरी का मामला नहीं था। दूसरा विचार यह आता है कि यदि नम्बरदारनी के स्तन हाथों से छूने के कारण हाथ नवाब ने कटवाए थे तो मौत की सजा नहीं सुनाई जाती। हाथ कटवा देना पर्याप्त दण्ड था। फिर भी हमने कथा के सारांश को समझना है।}

सदना भक्त से क्षमा याचना तथा अपनी गलती सार्वजनिक करने से नम्बरदारनी के स्तनों के जख्म ठीक हो गए। दर्द भी बंद हो गया, परंतु कटे निशान आजीवन बने रहे। कुछ वर्षों के पश्चात् सदना की प्रेरणा से उस नगर के 80 प्रतिशत हिन्दु-मुसलमानों ने परमेश्वर जिन्दा बाबा से दीक्षा ली और अपने जीव का कल्याण कराया। वाणी नं. 39 का अनुवाद चल रहा है।

परमेश्वर कबीर जी ने अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी को तत्वज्ञान दिया जिसको संत गरीबदास जी ने आध्यात्म ज्ञान रूपी सागर को अमृत वाणी रूपी गागर (घड़े) में भरकर रखा है जिसका सरलार्थ कार्य मुझ दास (संत रामपाल दास) द्वारा गागर से सागर का रूप दिया जा रहा है।

वाणी नं. 39 की एक पंक्ति का सरलार्थ हुआ है।

गरीब, राम नाम सदने पीया, बकरे के उपदेश। अजामेल से उधरे, भक्ति बंदगी पेश।।

''अजामेल के उद्धार की कथा''

काशी शहर में एक अजामेल नामक ब्राह्मण शराब पीता था। वैश्या के पास जाता था। वैश्या का नाम मैनका था, बहुत सुंदर थी। परिवार तथा समाज के समझाने पर भी अजामेल नहीं माना तो उन दोनों को नगर से निकाल दिया। वे उसी शहर से एक मील (1.7 कि. मी.) दूर वन में कुटिया बनाकर रहने लगे। दोनों ने विवाह कर लिया। अजामेल स्वयं शराब तैयार करता था। जंगल से जानवर मारकर लाए और मौज-मस्ती करता था।

विशेष :- अजामेल पूर्व जन्म में विष्णु जी का परम भक्त था। ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करता था। साधक समाज में पूरी इज्जत थी। बचपन से ही घर त्यागकर साधुओं में रहता

था। वैश्या भी पूर्व जन्म में विष्णु जी की परम भक्त थी। ब्रह्मचर्य का पूर्ण पालन करती थी। पर पुरूष की ओर कभी दोष दृष्टि से नहीं देखती थी। इस लक्षण से साधक समाज में विशेष सम्मान था।

साधकों में ध्यान समाधि लगाने का विशेष प्रचलन है जो केवल काल प्रेरणा है। हठ योग है जो गीता तथा वेदों में मना किया है। एक दिन श्याम सुंदर (अजामेल का पूर्व जन्म का नाम) लेटकर समाधि लगाए हुए था। शरीर पर केवल एक कोपीन (लंगोट जो एक छः इंच चौड़ा तथा दो फुट लंबा कपड़े का टुकड़ा होता है जो केवल गुप्तांग को ढ़कता है। तागड़ी में लपेटा जाता है। तागड़ी=बैल्ट की तरह एक मोटा धागा बाँधा जाता है, उसे तागड़ी कहते हैं।) पहने हुए था। सर्दी का मौसम था। दिन के समय धूप थी। उस समय श्याम सुंदर वैष्णव ने समाधि लगाई थी। रात्रि तक समाधि नहीं खुली। उस समय एक तीर्थ पर मेला लगा था। राम बाई (मैनका का पूर्व जन्म का नाम) ने देखा, यह साधु इतनी सर्दी में निःवस्त्र सोया है, नींद में ठण्ड न लग जाए। यह मर न जाए। यह विचार करके उसके ऊपर लेट गई और अपने कम्बल से अपने ऊपर से उस साधु को भी ढ़क लिया। अन्य व्यक्तियों को लगा कि कोई अकेला सो रहा है। भोर भऐ (सूर्य उदय होते-होते) श्याम सुंदर की समाधि खुली। उसने उठने की कोशिश की, तब रामबाई उठ खड़ी हुई। उस समय एक कम्बल से स्त्री-पुरूष निकले देखकर अन्य साधक भी उस ओर ध्यान से देखने लगे। श्याम सुंदर ने साधक समाज में अपने मान-सम्मान पर ठेस जानकर अपने को पाक-साफ सिद्ध करने के लिए राम बाई से कहा कि हे रंडी (वैश्या)! तूने मेरा धर्म नष्ट किया है। मैं तो अचेत था, तूने उसका लाभ उठा लिया। तू वैश्या बनेगी। अन्य साधु भी निकट आकर उनकी बातें सुनने लगे।

रामबाई ने कहा कि हे भाई जी! शॉप देने से पहले सच्चाई तो जान लेते। आप निःवस्त्र सर्दी में ठिठुर रहे थे। आप अचेत थे। आपके जीवन की रक्षा के लिए मैंने आपको ताप (गर्मी) देने के लिए मैं आपके ऊपर लेटी थी। कम्बल बहुत पतला है, चद्दर से भी पतला है। इसलिए मुझे इस पर विश्वास नहीं हुआ। एक बहन ने भाई की रक्षा के लिए यह बदनामी मोल ली है। आपने इसके फल में मुझे बद्दुआ (शॉप) दी है। सुन ले! तू अगले जन्म में भड़ुवा बनेगा। वैश्याओं के पास जाया करेगा। दोनों ने एक-दूसरे को शॉप देकर अपनी भक्ति का नाश कर लिया। जब श्याम सुंदर को सच्चाई पता चली और अपना अंग देखा, सुरक्षित था तो रामबाई से बहुत हमदर्दी हो गई। अपनी गलती की क्षमा याचना की। विशेष प्रेम करने लगा। अधिक मोह हो गया। रामबाई भी श्यामसुंदर से विशेष प्यार करने लगी। वह प्यार एक मित्रवत था, परंतु मोह भी एक जंजीर (बंधन) है। मत्यु उपरांत दोनों का जन्म काशी नगर में हुआ। श्याम सुंदर का नाम अजामेल था। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ।

रामबाई का जन्म भी ब्राह्मण कुल में हुआ। उसका नाम मैनका था। शॉप संस्कारवश चरित्रहीन हो गई। वैश्या बन गई। शॉप संस्कारवश अजामेल शराब का आदी हो गया। वैश्या मैनका के पास जाने लगा। दोनों को नगर से निकाल दिया गया। दोनों लगभग 40-45 वर्ष की आयु के हो गए थे। संतान कोई नहीं थी। परमेश्वर कबीर जी कहते हैं, गरीबदास

जी ने बताया है :-

गोता मारूं स्वर्ग में, जा पैठूं पाताल। गरीबदास ढूंढ़त फिरूं, हीरे मानिक लाल।।
कबीर, भक्ति बीज विनशै नहीं, आय पड़ो सो झोल। जे कंचन बिष्टा पड़े, घटै न ताका मोल।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने संत गरीबदास जी को बताया कि मैं अपनी अच्छी आत्माओं को खोजता फिरता हूँ। स्वर्ग, पथ्वी तथा पाताल लोक में कहीं भी मिले, मैं वहीं पहुँच जाता हूँ। उनको पुनः भक्ति की प्रेरणा करता हूँ। मनुष्य जन्म के भूले उद्देश्य की याद दिलाकर भक्ति करने को कहता हूँ। वे अच्छी आत्माऐं पूर्व के किसी जन्म में मेरी शरण में आई होती हैं, परंतु पुनः जन्म में कोई संत न मिलने के कारण वे भक्ति न करके या तो धन संग्रह करने में व्यस्त हो जाती हैं या बुराईयों में फँसकर शराब, माँस खाने-पीने में जीवन नष्ट कर देती हैं या फिर अपराधी बनकर जनता के लिए दुःखदाई बनकर बेमौत मारी जाती हैं। उनको उस दलदल से निकालने के लिए मैं कोई न कोई कारण बनाता हूँ। वे आत्माऐं तत्वज्ञान के अभाव से बुराईयों रूपी कीचड़ में गिर तो जाती हैं, परंतु जैसे कंचन (स्वर्ण यानि Gold) टट्टी में गिर जाए तो उसका मूल्य कम नहीं होता। टट्टी (बिष्टा) से निकालकर साफ कर ले। उसी मोल बिकता है। इसी प्रकार जो जीव मानव शरीर में एक बार मेरी (कबीर परमेश्वर जी की) शरण में किसी जन्म में आ जाता है। प्रथम, द्वितीय या तीनों मंत्रों में से कोई भी प्राप्त कर लेता है। किसी कारण से नाम खंडित हो जाता है, मत्यु हो जाती है तो उसको मैं नहीं छोडूंगा। कलयुग में सब जीव पार होते हैं। यदि कलयुग में भी कोई उपदेशी रह जाता है तो सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में उन्हीं की भक्ति से मैं बिना नाम लिए, बिना धर्म-कर्म किए आपत्ति आने पर अनोखी लीला करके रक्षा करता हूँ। उसको फिर भक्ति पर लगाता हूँ। उनमें परमात्मा में आस्था बनाए रखता हूँ।

कलयुग में सत्ययुग

विशेष :- वर्तमान में (सन् 1997 से) कलयुग की बिचली पीढ़ी चल रही है यानि कलयुग का दूसरा (मध्य वाला) चरण चल रहा है। इस समय कलयुग 5505 वर्ष बीत चुका है। कुछ वर्षों में परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान का डंका सर्व संसार में बजेगा यानि कबीर जी के ज्ञान का बोलबाला होगा, खरबों जीव सतलोक जाएंगे। यह भक्ति युग एक हजार वर्ष तक तो निर्बाध चलेगा, उसके पश्चात् दो लाख वर्ष तक भक्ति में 50 प्रतिशत आस्था व्यक्तियों में रहेगी, भक्ति मंत्र यही रहेंगे। फिर एक लाख तीस हजार (130000) वर्ष तक तीस प्रतिशत व्यक्तियों में भक्ति की लगन रहेगी। यहाँ तक यानि (5500+1000+200000+130000=336500 वर्ष) तीन लाख छत्तीस हजार पाँच सौ वर्ष तक कलयुग का दूसरा चरण चलेगा। इसके पश्चात् कलयुग का अंतिम चरण चलेगा। पाँच सौ (500) वर्षों में भक्ति चाहने वाले व्यक्ति मात्र 5% रह जाएंगे। तीसरे चरण का समय पचानवे हजार पाँच सौ (95500) वर्ष रह जाएगा। फिर भक्ति चाहने वाले तो होगें, परंतु यथार्थ भक्तिविधि समाप्त हो जाएगी। जो व्यक्ति हजार वर्ष वाले समय में तीनों मंत्र लेकर पार नहीं हो पाएंगे। वे ही 50% तथा 30%, 5%, उस समय की जनसँख्या में भक्ति चाहने वाले

रहेंगे। वे पार नहीं हो पाते, परंतु उनकी भक्ति (तीनों मंत्रों) की कमाई अत्यधिक हो जाती है। वे सँख्या में अरबों होते हैं। वे ही सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में ऋषि-महर्षि, प्रसिद्ध सिद्ध तथा देवताओं की पदवी प्राप्त करते हैं। उनका भक्ति कर्मों के अनुसार सत्ययुग में जन्म होता है। वे भक्ति ब्रह्म तक की करते हैं, परंतु सिद्धियाँ गजब की होती हैं। वे पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से होती हैं। कलयुग में वे ही ब्राह्मण-ऋषि उन्हीं वेदों को पढ़ते हैं। ब्रह्म की भक्ति ओउम् (ॐ) नाम जाप करके करते हैं, परंतु कुछ भी चमत्कार नहीं होते। कारण है कि वे तीनों युगों में अपनी पूर्व जन्म की भक्ति शक्ति को शॉप-आशीर्वाद देकर सिद्धियों का प्रदर्शन करके समाप्त करके सामान्य प्राणी रह जाते हैं, परंतु उनमें परमात्मा की भक्ति की चाह विद्यमान रहती है। कलयुग में काल सतर्क हो जाता है। वेदविरूद्ध ज्ञान का प्रचार करवाता है। अन्य देवताओं की भक्ति में आस्था दृढ़ करा देता है। जैसे 1997 से 2505 वर्ष पूर्व (यानि ईशा मसीह से 508 वर्ष पूर्व) आदि शंकराचार्य जी का जन्म हुआ था। उन्होंने 20 वर्ष की आयु में अपना मत दृढ़ कर दिया कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी, माता दुर्गा तथा गणेश आदि-आदि की भक्ति करो। विशेषकर तम् गुण भगवान शिव की भक्ति को अधिक दृढ़ किया क्योंकि वे {आदि शंकराचार्य जी (शिवलोक से आए थे)} शिव जी के गण थे। इसलिए शंकर जी के मार्ग के आचार्य यानि गुरू (शंकराचार्य) कहलाए। वर्तमान तक राम, कृष्ण, विष्णु, शिव तथा अन्य देवी-देवताओं की भक्ति का रंग चढ़ा है। संसार में अरबों मानव भक्ति चाहने वाले हैं। वे किसी न किसी धर्म या पंथ से गुरू से जुड़े हैं। परंतु भक्ति शास्त्रविरूद्ध कर रहे हैं। परमेश्वर वि.संवत् 1575 (सन् 1518) तक 120 वर्ष में गुरू पद पर एक सौ पन्द्रह (115) वर्ष रहकर 64 लाख (चौंसठ लाख) भक्तों में भक्ति की प्रेरणा को फिर जागृत किया। उनमें पुनः भक्ति बीज बोया। फिर सबकी परीक्षा ली। वे असफल रहे, परंतु गुरू द्रोही नहीं हुए। उनका अब जन्म हो रहा है। सर्वप्रथम वे चौंसठ लाख मेरे (संत रामपाल दास) से जुड़ेंगे। उसके पश्चात् वे जन्मेंगे जिन्होंने एक हजार वर्ष के पश्चात् 2 लाख तथा 1 लाख 30 हजार वर्ष तक भक्ति में लगे रहे, परंतु पार नहीं हुए। जो चौंसठ लाख हैं, ये वे प्राणी हैं जो एक हजार वर्ष वाले समय में रह गए थे, परंतु धर्मराज के दरबार में अधिक विलाप किया कि हमने तो सतलोक जाना है। परमात्मा कबीर जी गुरू रूप में प्रकट होकर उनको धर्मराज से छुड़वाकर मीनी सतलोक में ले गए थे। उनका जन्म अपने आने के (कलयुग में वि.संवत् 1455 के) समय के आसपास दिया था जो अभी तक मानव जीवन प्राप्त करते आ रहे हैं।

कैसे होगा कलयुग में सत्ययुग?

वर्तमान में सन् 1997 से 3000 ईशवी तक पुनः सत्ययुग जैसा वातावरण, आपसी प्रेम का माहौल बनेगा। फिर से फलदार वृक्ष तथा छायादार वृक्ष लगाए जाएंगे। फैक्ट्रियां धुँआ रहित होंगी। फिर बंद हो जाऐंगी। लोग हाथ से बने कपड़े पहनेंगे। मिट्टी या स्टील के बर्तन प्रयोग करेंगे जो छोटे कारखानों में मानव चालित यंत्रों से तैयार होंगे जो मानव संचालित अहरण की तरह चलेंगे। पशुधन बढ़ेगा। सब मानव मिलकर पूरी पृथ्वी को उपजाऊ बनाने

में एकजुट होकर कार्य करेंगे। कोई धनी व्यक्ति अहंकारी नहीं होगा। वह अधिक धन दान में देगा। जो अधिक धन संग्रह करेगा, उसे मूर्ख कहा जाएगा। उसको ज्ञान समझाकर सामान्य जीवन जीने की प्रेरणा दी जाएगी जिसको वह स्वीकार करेगा। सामान्य जीवन जीने वाले और भक्ति, दान धर्म करने वालों की प्रशंसा हुआ करेगी। पश्चिमी देशों (अमेरिका, इंग्लैंड आदि-आदि) वाली सभ्यता समाप्त हो जाएगी। स्त्री-पुरूष पूरे वस्त्र पहना करेंगे। सुखमय जीवन जीएंगे। एक-दूसरे की सहायता अपने परिवार की तरह करेंगे। कलयुग में सतयुग एक हजार वर्ष तक चलेगा। इसका 50% प्रभाव 2 लाख वर्ष तक तथा 30% प्रभाव एक लाख तीस हजार वर्ष तक रहेगा।

अंत के 95500 (पचानवे हजार पाँच सौ) वर्षों में 95% व्यक्ति कतघ्नी, मर्यादाहीन, दुष्ट हो जाऐंगे। कच्चा माँस खाने लगेंगे। आयु बहुत कम यानि 20 वर्ष रह जाएगी। मानव की लंबाई 2 से 3 फुट तक रह जाएगी। 5 वर्ष की लड़की को बच्चा पैदा होगा। 80% व्यक्ति 15 वर्ष की आयु में मर जाया करेंगे। फिर एकदम पथ्वी पर बारिश से पानी-पानी हो जाएगा। जो अच्छे व्यक्ति 5% बचेंगे, शेष कुछ तो कल्कि (निःकलंक) अवतार मार देगा, कुछ बाढ़ में मर जाऐंगे। बचे हुए व्यक्ति ऊँचे स्थानों पर निवास करेंगे। पथ्वी पर सौ-सौ फुट तक पानी हो जाएगा। धीरे-धीरे पानी सूखेगा। पथ्वी पर पेड़ (वन) उगेंगे। फिर जमीन उपजाऊ होगी। कलयुग के अंत में धरती का 3 फुट नीचे तक उपजाऊ अंश समाप्त हो जाएगा। पानी के कारण वह विष पथ्वी से बाहर पानी के ऊपर आएगा। पथ्वी फिर से उपजाऊ होगी और पुनः सत्ययुग की शुरूआत होगी।

''अजामेल की शेष कथा''

एक दिन नारद जी काशी में आए तथा किसी से पूछा कि मुझे अच्छे भक्त का घर बताओ। मैंने रात्रि में रूकना है। मेरा भजन बने, उसको सेवा का लाभ मिले। उस व्यक्ति ने मजाक सूझा और कहा कि आप सामने कच्चे रास्ते जंगल की ओर जाओ। वहाँ एक बहुत अच्छा भक्त रहता है। भक्त तो एकान्त में ही रहते हैं ना। आप कपा जाओ। लगभग एक मील (आधा कोस) दूर उसकी कुटी है। गर्मी का मौसम था। सूर्य अस्त होने में 1½ घंटा शेष था। नारद जी को द्वार पर देखकर मैनका अति प्रसन्न हुई क्योंकि प्रथम बार कोई मनुष्य उनके घर आया था, वह भी ऋषि। पूर्व जन्म के भक्ति-संस्कार अंदर जमा थे, उन पर जैसे बारिश का जल गिर गया हो, ऐसे एकदम अंकुरित हो गए। मैनका ने ऋषि जी का अत्यधिक सत्कार किया। कहा कि न जाने कौन-से जन्म के शुभ कर्म आगे आए हैं जो हम पापियों के घर भगवान स्वरूप ऋषि जी आए हैं। ऋषि जी के बैठने के लिए एक वक्ष के नीचे चटाई बिछा दी। उसके ऊपर मगछाला बिछाकर बैठने को कहा। नारद जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि वास्तव में ये पक्के भक्त हैं। बहुत अच्छा समय बीतेगा। कुछ देर में अजामेल आया और जो तीतर-खरगोश मारकर लाया था, वह लाठी में टाँगकर आँगन में प्रवेश हुआ। अपनी पत्नी से कहा कि ले रसोई तैयार कर। सामने ऋषि जी को बैठे देखकर दण्डवत् प्रणाम किया और अपने भाग्य को सराहने लगा। कहा कि ऋषि जी! मैं स्नान करके आता

हूँ, तब आपके चरण चम्पी करूँगा। यह कहकर अजामेल निकट के तालाब पर चला गया। नारद जी ने मैनका से पूछा कि देवी! यह कौन है? उत्तर मिला कि यह मेरा पति अजामेल है। नारद जी को विश्वास नहीं हो रहा था कि यह क्या चक्रव्यूह है? विचार तो भक्तों से भी ऊपर, परंतु कर्म कैसे? नारद जी ने कहा कि देवी! सच-सच बता, माजरा क्या है? शहर में मैंने पूछा था कि किसी अच्छे भक्त का घर बताओ तो आपका एकांत स्थान वाला घर बताया था। आपके व्यवहार से मुझे पूर्ण संतोष हुआ कि सच में भक्तों के घर आ गया हूँ। यह माँसाहारी आपका पति है तो आप भी माँसाहारी हैं। मेरे साथ मजाक हुआ है। ऋषि नारद उठकर चलने लगा। मैनका ने चरण पकड़ लिये। तब तक अजामेल भी आ गया। अजामेल भी समझ गया कि ऋषि जी गलती से आये हैं। अब जा रहे हैं। पूर्व के भक्ति संस्कार के कारण ऋषि जी के दोनों ने चरण पकड़ लिए और कहा कि हमारे घर से ऋषि भूखा जाएगा तो हमारा नरक में वास होगा। ऋषि जी! आपको हमें मारकर हमारे शव के ऊपर पैर रखकर जाना होगा। नारद जी ने कहा कि आप तो अपराधी हैं। तुम्हारा दर्शन भी अशुभ है। अजामेल ने कहा कि हे स्वामी जी! आप तो पतितों का उद्धार करने वाले हो। हम पतितों का उद्धार करें। हमें कुछ ज्ञान सुनाओ। हम आपको कुछ खाए बिना नहीं जाने देंगे। नारद जी ने सोचा कि कहीं ये मलेच्छ यहीं काम-तमाम न कर दें यानि मार न दें, ये तो बेरहम होते हैं, बड़ी संकट में जान आई। कुछ विचार करके नारद जी ने कहा कि यदि कुछ खिलाना चाहते हो तो प्रतिज्ञा लो कि कभी जीव हिंसा नहीं करेंगे। माँस-शराब का सेवन नहीं करेंगे। दोनों ने एक सुर में हाँ कर दी। सौगंद है गुरूदेव! कभी जीव हिंसा नहीं करेंगे, कभी शराब-माँस का सेवन नहीं करेंगे। नारद जी ने कहा कि पहले यह माँस दूर डालकर आओ और शाकाहारी भोजन पकाओ। तुरंत अजामेल ने वह माँस दूर जंगल में डाला। मैनका ने कुटी की सफाई की। फिर पानी छिड़का। चूल्हा लीपा। अजामेल बोला कि मैं शहर से आटा लाता हूँ। मैनका तुम सब्जी बनाओ। नारद जी की जान में जान आई। भोजन खाया। गर्मी का मौसम था। एक वृक्ष के नीचे नारद जी की चटाई बिछा दी। स्वयं दोनों बारी-बारी सारी रात पंखे से हवा चलाते रहे। नारद जी बैठकर भजन करने लगे। फिर कुछ देर निकली, तब देखा कि दोनों अडिग सेवा कर रहे हैं। नारद जी ने कहा कि आप दोनों भक्ति करो। राम का नाम जाप करो। दोनों ने कहा कि ऋषि जी! भक्ति नहीं कर सकते। रूचि ही नहीं बनती। और सेवा बताओ।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, पिछले पाप से, हरि चर्चा ना सुहावै। कै ऊँघै कै उठ चलै, कै औरे बात चलावै।।
तुलसी, पिछले पाप से, हरि चर्चा ना भावै। जैसे ज्वर के वेग से, भूख विदा हो जावै।।

भावार्थ :- जैसे ज्वर यानि बुखार के कारण रोगी को भूख नहीं लगती। वैसे ही पापों के प्रभाव से व्यक्ति को परमात्मा की चर्चा में रूचि नहीं होती। या तो सत्संग में ऊँघने लगेगा या कोई अन्य चर्चा करने लगेगा। उसको श्रोता बोलने से मना करेगा तो उठकर चला जाएगा।

यही दशा अजामेल तथा मैनका की थी। नारद जी ने कहा कि हे अजामेल! एक आज्ञा

का पालन अवश्य करना। आपकी पत्नी को लड़का उत्पन्न होगा। उसका नाम 'नारायण' रखना। ऋषि जी चले गए। अजामेल को पुत्र प्राप्त हुआ। उसका नाम नारायण रखा। इकलौते पुत्र में अत्यधिक मोह हो गया। जरा भी इधर-उधर हो जाए तो अजामेल अरे नारायण आजा बेटा करने लगा। ऋषि जी का उद्देश्य था कि यह कर्महीन दंपति इसी बहाने परमात्मा को याद कर लेगा तो कल्याण हो जाएगा। नारद जी ने कहा था कि अंत समय में यदि यम के दूत जीव को लेने आ जाऐं तो नारायण कहने से छोड़कर चले जाते हैं। भगवान के दूत आकर ले जाते हैं। एक दिन अचानक अजामेल की मत्यु हो गई। यम के दूत आ गए। उनको देखकर कहा कि कहाँ गया नारायण बेटा, आजा।

{पौराणिक लोग कहते हैं कि ऐसा कहते ही भगवान विष्णु के दूत आए और यमदूतों से कहा कि इसकी आत्मा को हम लेकर जाऐंगे। इसने नारायण को पुकारा है। यमदूतों ने कहा कि धर्मराज का हमारे को आदेश है पेश करने का। इसी बात पर दोनों का युद्ध हुआ। भगवान के दूत अजामेल को ले गए।}

वास्तव में यमदूत धर्मराज के पास लेकर गए। धर्मराज ने अजामेल का खाता खोला तो उसकी चार वर्ष की आयु शेष थी। फिर देखा कि इसी काशी शहर में दूसरा अजामेल है। उसके पिता का अन्य नाम है। उसको लाना था। उसे लाओ। इसको तुरंत छोड़कर आओ।

अजामेल की मत्यु के पश्चात् उसकी पत्नी रो-रोकर विलाप कर रही थी। विचार कर रही थी कि अब इस जंगल में कैसे रह पाऊँगी। बच्चे का पालन कैसे करूंगी? यह क्या बनी भगवान? वह रोती-रोती लकड़ियाँ इकट्ठी कर रही थी। कुटी के पास में शव को खींचकर ले गई। इतने में अजामेल उठकर बैठ गया। कुछ देर तो शरीर ने कार्य ही नहीं किया। कुछ समय के बाद अपनी पत्नी से कहा कि यह क्या कर रही हो? पत्नी की खुशी का ठिकाना नहीं था। कहा कि आपकी मत्यु हो गई थी। अजामेल ने बताया कि यम के दूत मुझे धर्मराज के पास लेकर गए। मेरा खाता (**Account**) देखा तो मेरी चार वर्ष आयु शेष थी। मुझे छोड़ दिया और काशी शहर से एक अन्य अजामेल को लेकर जाऐंगे, उसकी मत्यु होगी। अगले दिन अजामेल शहर गया तो अजामेल के शव को शमशान घाट ले जा रहे थे, तुरंत वापिस आया। अपनी पत्नी से बताया कि वह अजामेल मर गया है, उसका अंतिम संस्कार करने जा रहे हैं। अब अजामेल को भय हुआ कि भक्ति नहीं की तो ऊपर बुरी तरह पिटाई हो रही थी, नरक में हाहाकार मचा था। नारद जी आए तो अजामेल ने कहा कि गुरू जी! मेरे साथ ऐसा हुआ। मेरी आयु चार वर्ष की बताई थी। एक वर्ष कम हो चुका है। बच्चा छोटा है, मेरी आयु बढ़ा दो। नारद जी ने कहा कि नारायण-नारायण जपने से किसी की आयु नहीं बढ़ती। जो समय धर्मराज ने लिखा है, उससे एक श्वांस भी घट-बढ़ नहीं सकता।

कथा सुनाई कि :-

''आयु वद्धि होती है या नहीं''

एक ऋषि था। उसको किसी ने हस्तरेखा देखकर बताया कि आपकी तीन दिन आयु शेष है। वह ऋषि चिंतित हुआ और बोला कि कोई उपाय बताओ जिससे मेरी आयु चार वर्ष

बढ़ जाए, मैं भक्ति करना चाहता हूँ। ऋषि को उस ज्योतिष शास्त्री ने बताया कि आप तो अच्छे उद्देश्य के लिए आयु वद्धि चाह रहे हो, चलो प्रजापति ब्रह्मा जी के पास चलते हैं। वे जीवों के उत्पत्तिकर्ता हैं। ब्रह्मा जी के पास गए और उद्देश्य बताया तो ब्रह्मा जी ने कहा कि मैं तो उत्पत्ति तो कर सकता हूँ। आयु की वद्धि का अधिकार मेरे पास नहीं है। फिर सोचा कि विष्णु जी के पास चलते हैं। ऋषि जी का उद्देश्य अच्छा है। तीनों विमान में बैठकर विष्णु जी के पास गए। उद्देश्य बताया तो विष्णु जी ने कहा कि यह काम तो शंकर जी का है। वह संहार करते हैं, उन्हीं से प्रार्थना की जाए। ऋषि जी का जीवन वद्धि का उद्देश्य भक्ति के लिए अच्छा है।

विष्णु जी, ब्रह्मा जी तथा वे दोनों सब शंकर जी के पास गए। उनको उद्देश्य बताया तो शंकर जी ने कहा कि ऋषि जी का उद्देश्य तो बहुत अच्छा है, परंतु मेरे को तो जो आदेश धर्मराज से आता है, उन्हीं की मत्यु का आदेश यमदूतों-भूतों को करता हूँ। चलो! धर्मराज के पास चलते हैं। उस दिन उस ऋषि जी की मत्यु का दिन था। तीनों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव) देवता तथा ऋषि और ज्योतिष शास्त्री मिलकर धर्मराज के कार्यालय में गए तथा ऋषि की आयु वद्धि के लिए कहा तथा उद्देश्य बताया कि यह केवल भक्ति के लिए आयु वद्धि चाहता है। धर्मराज ने उस ऋषि का खाता (Account) खोला तो उसमें उसी दिन उसी समय मत्यु लिखी थी। उस ऋषि की तुरंत मत्यु हो गई। तीनों देवता धर्मराज से नाराज हो गए। कहा कि आपने हमारी इज्जत नहीं रखी। आपने यह अच्छा नहीं किया। धर्मराज ने वह लेख दिखाया जो उस ऋषि की मत्यु के विषय में था। उसमें लिखा था कि ऋषि जी की मत्यु धर्मराज के कार्यालय में ब्रह्मा-विष्णु-शिव तथा ज्योतिष शास्त्री की उपस्थिति में दिन के इतने बीत जाने पर हो। आप जी ने तो मेरा कार्य सुगम कर दिया। यह लेख मैं नहीं लिखता। यह तो विधाता की ओर से अपने आप लिखे जाते हैं। यदि आप आयु बढ़वाना चाहते हैं तो अपनी आयु में से दान कर दो तो मैं इसकी आयु बढ़ा सकता हूँ। यह बात सुनकर सब चले गए। यह कथा सुनाकर नारद जी ने कहा कि इस बचे हुए समय में खूब नारायण-नारायण करले। नारद जी चले गए। अजामेल की चिंता ओर बढ़ गई कि भक्ति का लाभ क्या हुआ?

दो वर्ष जीवन शेष था। परमेश्वर कबीर जी एक ऋषि वेश में अजामेल के घर प्रकट हुए। अजामेल ने श्रद्धा से ऋषि का सम्मान किया। अपनी समस्या बताई। ऋषि रूप में सतपुरूष जी ने कहा कि आप मेरे से दीक्षा लो। आपकी आयु बढ़ा दूँगा। लेकिन अजामेल ने नारद जी से कथा सुनी थी कि जो आयु लिखी है, वह बढ़-घट नहीं सकती। विचार किया कि दीक्षा लेकर देख लेते हैं। दोनों ने दीक्षा ली। नारायण नाम का जाप त्याग दिया। नए गुरू जी द्वारा दिया नाम जाप किया। मत्यु वाले वर्ष का अंतिम महीना आया तो खाना कम हो गया, परंतु मंत्र का जाप निरंतर किया। अंतिम दिन भोजन भी नहीं खाया, मंत्र जाप दढ़ता से करता रहा। वर्ष पूरा हो गया। एक महीना ऊपर हो गया, परंतु भय फिर भी बरकरार था। ऋषि वेश में परमेश्वर आए। दोनों पति-पत्नी देखते ही दौड़े-दौड़े आए। चरणों में गिर गए। गुरूदेव आपकी कपा से जीवन मिला है। आप तो स्वयं परमेश्वर हैं। परमेश्वर जी ने कहा कि :-

मासा घटे ना तिल बढ़े, विधना लिखे जो लेख। साच्चा सतगुरू मेट कर, ऊपर मारे मेख।।

अब आपकी आयु के लेख मिटाकर कील गाड़ दी है। जब मैं चाहूँगा, तब तेरी मत्यु होगी। दोनों मिलकर भक्ति करो। अपने पुत्र को भी उपदेश दिलाओ। पुत्र को उपदेश दिलाया। भक्ति करके मोक्ष के अधिकारी हुए।

वाणी नं. 39 का सारांश यह है कि सदना ने बकरे के मुख से सुने उपदेश (प्रवचन) से गुरू बनाकर राम नाम का अमत पीया, भक्ति की और अजामेल का मोक्ष भी तब हुआ, जब वह पूर्ण परमात्मा के प्रति समर्पित हुआ।(39)

❖ **वाणी नं. 40 :-**

गरीब, नाम जलंधर कूं लिया, पारा ऋषि प्रवान। धन सतगुरु दाता धनी, दई बंदगी दान।।40।।

❖ **भावार्थ :- जलन्धर नाथ तथा ऋषि पारासर ने भी भक्ति की। उनको स्वर्ग स्थान ही मिला। परंतु मुझे पूर्ण सतगुरू मिले हैं जिन्होंने भक्ति-बंदगी दान दी यानि अपनी कपा से स्वयं मेरे पास प्रकट होकर दीक्षा दी।**

❖ **वाणी नं. 41 :-**

गरीब, गगन मंडल में रहत है, अविनाशी आप अलेख। जुगन जुगन सतसंग है, धरि धरि खेले भेख।।41।।

❖ **भावार्थ :- जैसा कि ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27, मण्डल नं. 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मंत्र 3, मण्डल नं. 9 सूक्त 96 मंत्र 16-20, मण्डल नं. 9 सूक्त 94 मंत्र 2, मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मंत्र 1, मण्डल नं. 9 सूक्त 20 मंत्र 1 में कहा है कि परमेश्वर आकाश में सर्व भुवनों (लोकों) के ऊपर के लोक में तीसरे भाग में विराजमान है। वहाँ से चलकर पथ्वी पर आता है। अपने रूप को सरल करके यानि अन्य वेश में हल्के तेजयुक्त शरीर में पथ्वी पर प्रकट होता है। अच्छी आत्माओं को यथार्थ आध्यात्म ज्ञान देने के लिए आता है। अपनी वाक (वाणी) द्वारा ज्ञान बताकर भक्ति करने की प्रेरणा करता है। कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरण करता है। अपनी महिमा के ज्ञान को कवित्व से यानि दोहों, शब्दों, चौपाईयों के माध्यम से बोलता है। जिस कारण से प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी प्राप्त करता है। यही प्रमाण संत गरीबदास जी ने इस अमतवाणी में दिया है कि परमेश्वर गगन मण्डल यानि आकाश खण्ड (सच्चखण्ड) में रहता है। वह अविनाशी है, अलेख जिसको सामान्य दष्टि से नहीं देखा जा सकता। सामान्य व्यक्ति उनकी महिमा का उल्लेख नहीं कर सकता। वह वहाँ से चलकर आता है। प्रत्येक युग में प्रकट होता है। भिन्न-भिन्न वेश बनाकर सत्संग करता है यानि तत्वज्ञान के प्रवचन सुनाता है। कबीर जी ने बताया है कि :-**

सतयुग में सत सुकत कह टेरा, त्रेता नाम मुनीन्द्र मेरा।
द्वापर में करूणामय कहाया, कलयुग नाम कबीर धराया।।

गरीब, सतगुरू पुरूष कबीर हैं, चारों युग प्रवान। झूठे गुरूवा मर गए, हो गए भूत मसान।।

(राग बिलावल का शब्द नं. 25 पढ़ें, भक्ति की अजब प्रेरणा है।)

✯कर साहिब की भक्ति, बैरागर लै रे। समरथ सांई शीश पर, तो कूं क्या भै रै।।टेक।। शील संतोष बिबेक हैं, और ज्ञान दिवाना। दया धर्म चित चौंतरै, बांचो प्रवाना।।1।। धर्म ध्वजा जहां

फरहरैं, होंहि जगि जौंनारा। कथा कीरतन होत हैं, साहिब दरबारा।।2।। समता माता मित्र हैं, रख अकल यकीनं। सत्तर पड़दे खुल्हत हैं, दिल में दुरबीनं।।3।। जा कै पिता बिबेक से, और भाव से भाई। या पटतर नहीं और है, कछु बयाह न सगाई।।4।। दृढ कै डूंगर चढ गये, जहां गुफा अनादं। लागी शब्द समाधि रे, धन्य सतगुरु साधं ।।5।। सहस्त्रमुखी जहां गंग है, तालव त्रिबैनी। जहां ध्यान असनान कर, परवी सुख चैनी।।6।। कोटि कर्म कुसमल कटैं, उस परबी न्हाये। वोह साहिब राजी नहीं, कछु नाचे गाये।।7।। अगर मूल महकंत हैं, जहां गंध सुगंधा। एक पलक के ध्यान सैं, कटि हैं सब फंदा।।8।। दो पुड़ की भाठी चवै, जहां सुष्मण पोता। इडा पिंगुला एक कर, सुख सागर गोता।।9।। अबल बली बरियाम है, निरगुण निरबानी। अनंत कोटि बाजे बजैं, बाजै सहदानी।।10।। तन मन निश्चल हो गया, निज पद सें लागे। एक पलक के ध्यान सैं, दूंदर सब भागे।।11।। प्रपटन के घाट में, एक पिंगुल पंथा। छूटैं फुहारे नूर के, जहां धार अनंता।।12।। झिलमिल झिलमिल होत है, उस पुरि में भाई। घाट बाट पावै नहीं, है द्वारा राई।।13।। तहां वहां संख सुरंग हैं, मघ औघट घाटा। सतगुरु मिलैं कबीर से, तब खुलैं कपाटा।।14।। संख कंवल जहां जगमगे, पीतांबर छाया। सूरज संख सुभान हैं, अबिनाशी राया।।15।। अगर डोर सें चढि गये, धरि अलल धियाना। दास गरीब कबीर का, पाया अस्थाना।।16।।25।।

❖ **वाणी नं. 42 :-**

गरीब, काया माया खंड है, खंड राज और पाठ। अमर नाम निज बंदगी, सतगुरु सें भइ साट।।42।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि काया यानि शरीर तथा माया यानि धन, राजपाट यानि राज्य सब खण्ड (नाश) हो जाता है। केवल निज नाम (वास्तविक भक्ति मंत्र) के नाम की साधना सतगुरू से लेकर की गई कमाई (भक्ति धन) अमर है।**

❖ **वाणी नं. 43 :-**

गरीब, अमर अनाहद नाम है, निरभय अपरंपार। रहता रमता राम है, सतगुरु चरण जुहार।।43।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा रमता यानि विचरण करता हुआ चलता-फिरता है। वह सतगुरू रूप में मिलता है। उसके चरणों में प्रणाम करके भक्ति की भीख प्राप्त करें। उनके द्वारा दिया गया नाम अनाहद (सीमा रहित) अमर (अविनाशी) मोक्ष देने वाला है। वह नाम प्राप्त कर जो निर्भय बनाता है। उसकी महिमा का कोई वार-पार नहीं है अर्थात् वास्तविक मंत्र की महिमा असीम है।**

❖ **वाणी नं. 44 :-**

गरीब, अविनासी निहचल सदा, करता कूं कुरबान। जाप अजपा जपत है, गगन मंडल धरि ध्यान।।44।।

❖ **सरलार्थ :- उस अविनाशी कर्ता (सष्टि रचनहार) पर कुर्बान हो जा जो निश्चल (स्थाई) है। उसके नाम का अजपा यानि मन-मन में श्वांस द्वारा स्मरण कर (जाप कर) और गगन मण्डल में ध्यान रख कि परमेश्वर (सतपुरूष) ऊपर सतलोक में विराजमान है। मैंने भी वहीं जाना है। वह सुखदाई स्थान है। वहाँ जन्म-मरण नहीं है। कोई राग-द्वेष नहीं है। सब प्रेम से रहते हैं। युवा रहते हैं।**

❖ **वाणी नं. 45 :-**

गरीब, बिन रसना है बदंगी, निज चसमों दीदार। निज श्रवण बानी सुनै, निरमल तत्त्व निहार।।45।।

❖ **सरलार्थ :- सतगुरू द्वारा दीक्षा में दिए वास्तविक नामों का जाप विधि अनुसार करने से यानि बिना रसना (जीभ) के बंदगी (नम्र भाव से स्मरण) यानि अजपा जाप करने से बिन चिसमों (बिना चर्म दृष्टि) के यानि दिव्य दृष्टि से परमेश्वर का दीदार (दर्शन) होता है। बिन श्रवण (बिना कानों) के यानि आत्मा के कानों से आए लोक की वाणी सुनाई देती है। उस निर्मल तत्व यानि पवित्र परमेश्वर को निहार यानि एकटक देख।**

❖ **वाणी नं. 46 :-**

गरीब, में सौदागर नाम का, टांडे पड़्या बहीर। लदतें लदतें लादियां, बहुरिन फेरा बीर।।46।।

❖ **सरलार्थ :- साधक कहता है कि परमात्मा मैं भी भक्ति के सौदागरों में से एक हूँ। मेरा भी टांडे यानि व्यापारियों के लश्कर (दल) में कुछ बैलों या गाड़ियों का बहिर (काफिला) पड़्या है यानि शामिल है (पड़या माने वैसे गिरा होता है, परंतु यहाँ उपमा अलंकार होने से शामिल अर्थ करना उचित है।) जैसे बैल पर बोरे (थैले) में या बैलगाड़ी में कुछ सामान जो एक मण्डी से दूसरी मण्डी में व्यापारी ले जाते हैं। चावल, शक्कर, दाल, गेहूँ आदि-आदि) भरने लगते हैं तो भरते-भरते (लादते-लादते) भर लिया। (लाद लिया) अर्थात् इसी प्रकार परमात्मा की भक्ति कर-करके बैलगाड़ी की तरह भक्ति धन लाद लिया जो सतलोक वाली मण्डी में ले जाकर कीमत लेनी है।**

❖ **वाणी नं. 47 :-**

गरीब, नाम बिना क्या होत है, जप तप संयम ध्यान। बाहरि भरमै मानवी, अब अंतर में जान।।47।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि वास्तविक नाम बिना अन्य नामों के जाप से, गीता अध्याय 18 श्लोक 42 में कहे तप यानि अपने धर्म के पालन में कष्ट सहना ही साधक का तप है। वह तप तथा संयम यानि अपनी इन्द्रियों को विषयों से रोकना तथा ध्यान करना। इनसे कुछ भक्ति लाभ नहीं होता। जैसे आम के स्थान पर बबूल (कीकर) आम समझकर बीजने से चाहे उसकी सिंचाई भी करो, रक्षा के लिए बाड़ भी लगाओ। ध्यान यानि विचार भी रखो कि आम लगेंगे तो व्यर्थ प्रयत्न है। भक्ति के अंदर नाम बीज है। हे मानव! बाहरी (तीर्थों पर जाना, मूर्ति पूजा करना आदि) दिखावा करना व्यर्थ है। अब तो सतगुरू जी से दीक्षा लेकर अन्तर्मुख होकर सत्य साधना कर।**

❖ **वाणी नं. 48 :-**

गरीब, उजल हिरंबर भगति है, उजल हिरंबर सेव। उजल हिरंबर नाम है, उजल हिरंबर देव।।48।।

❖ **सरलार्थ :- सतपुरूष सब देवों (प्रभुओं) से उज्जवल यानि शोभामान है। उस परमेश्वर की प्राप्ति की सेव (पूजा) भी निराली है। हिरंबर माने स्वर्ण जैसी भक्ति है। कहते हैं कि हमारे देश की धरती सोना उगलती है यानि अच्छी उपजाऊ है। कणक अधिक पैदा होती है जो अधिक कीमत (मूल्य) दिलाती है। इसी प्रकार उस परमेश्वर की प्राप्ति का सत्यनाम यानि वास्तविक नाम का श्वांस से स्मरण का मूल्य बताया है।**

कबीर, श्वांस–उश्वांस में नाम जप, व्यर्था श्वांस ना खोय। ना बेरा इस श्वांस का, आवन हो के ना होय।।
कबीर, कहता हूँ कही जात हूँ, कहूँ बजा के ढ़ोल। श्वांस जो खाली जात है, तीन लोक का मोल।।

मौखिक जाप एक हजार बार, मानसिक स्मरण एक बार। मानसिक जाप एक हजार

बार, श्वांस से स्मरण एक बार। इस प्रकार सतगुरू श्वांस से स्मरण करने का मंत्र देता है जिससे भक्ति की कमाई अधिक होती है। इसलिए कहा है कि उस परमेश्वर जी की भक्ति हिरंबर यानि स्वर्ण जैसी बहुमूल्य है। उस परमात्मा का वास्तविक नाम भी कीमती है। स्वर्ण जैसा कीमती (बहुमूल्य) है।

❖ **वाणी नं. 49 :-**

गरीब, निजनाम बिना निपजै नहीं,जपतप करि हैं कोटि। लख चौरासी त्यार है, मूंड मुंडायां घोटि।।49।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा की भक्ति के निज नाम (वास्तविक नाम) बिना साधना (भक्ति रूपी फल की उपज नहीं होती) नहीं उपजैगी यानि भक्ति का कोई फल नहीं मिलेगा चाहे करोड़ों गलत नामों का जाप करो, चाहे उस गलत धर्म कर्म के पालन में करोड़ों कष्ट सहन (तप) करो।**

गलत साधना करने वाले साधु का दिखावा करने के लिए क्या दाढ़ी-मूँछ व सिर के बाल साफ कराकर फूला फिरता है। इस शास्त्रविरूद्ध भक्ति से तो लख चौरासी यानि चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर को प्राप्त होगा।

❖ **वाणी नं. 50 :-**

गरीब, नाम सिरोमनि सार है, सोहं सुरति लगाइ। ज्ञान गलीचे बैठिकरि, सुंनि सरोवर न्हाइ।।50।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि :- सोहं नाम विशेष नाम है। यह नामों में शिरोमणि है। इसको अधिकारी गुरू से लेकर साधना सुरति-निरति यानि नाम में ध्यान लगाकर करनी चाहिए। जो तत्वज्ञान तेरे को मिला है, उस पर विश्वास रख। ज्ञान गलीचे पर बैठकर सुन्न सरोवर यानि तत्वज्ञान पर विश्वास करके भक्ति कर तथा आकाश में बने सरोवर में आत्मा को स्नान करा यानि भक्ति के अमृत सरोवर में गोते लगा। गलीचा का अर्थ है एक नर्म कपड़े का मोटा गद्दा।**

❖ **वाणी नं. 51 :-**

गरीब, मान सरोवर न्हाइये, हंस परमहंस का मेल। बिना चुंच मोती चुगै, अगम अगोचर खेल।।51।।

❖ **सरलार्थ :- सतलोक वाले मान सरोवर में स्नान करने के पश्चात् हंस यानि निर्मल भक्त का मिलन परमहंस यानि परमेश्वर जी से होगा। जहाँ जाने के पश्चात् भक्त बिना चौंच मोती खाता है यानि नैष्कर्मय मुक्ति प्राप्त करता है। सतलोक में बिना कर्म किए सर्व सुख तथा भोजन प्राप्त होता है। (जिसको गीता अध्याय 3 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 49 में नैष्कर्मय सिद्धि कहा है।) इसलिए कहा है कि बिना चौंच मोती यानि बिना कर्म किए सतलोक में सर्व सुख प्राप्त होता है।**

यह अगम अगोचर यानि सबसे आगे का गुप्त खेल यानि जो किसी की दृष्टि में भक्ति मार्ग व उसका फल नहीं है, इसका ज्ञान स्वयं परमेश्वर ही पृथ्वी पर आकर कराते हैं।

❖ **वाणी नं. 52 :-**

गरीब, गगन मंडल में रमि रह्या गलताना महबूब। वार पार नहिं छेव है, अबिचल मूरति खूब।।52।।

❖ **सरलार्थ :- गलताना महबूब यानि मस्तमौला आत्मा का सच्चा प्रेमी परमात्मा गगन मंडल यानि आकाश में रमा है यानि स्थाई निवास करता है। उसका कोई वार-पार यानि**

भेद नहीं और ना ही कोई उसका छेव यानि मूल्य है। वह अविचल यानि अविनाशी मूर्ति खूब यानि सही साकार स्वरूप है। वास्तव में ऐसा ही है।

❖ **वाणी नं. 53 :-**

गरीब, ऐसा सतगुरु सेइये, जो नाम दृढ़ावैं। भरमी गुरुवा मति मिलौ, जो मूल गमावै।।53।।

❖ **सरलार्थ :- ऐसे सतगुरू की सेवा करो यानि ऐसा गुरू धारण करो जो नाम की भक्ति दृढ़ करे। जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने वाला भ्रमित करने वाला गुरू न मिले जो मूल गंवावै यानि मानव शरीर में श्वांस रूपी पूँजी जो मूल धन है, उसको गंवा दे यानि नष्ट करा देता है। जैसे सौदागर मूल धन का ठीक से प्रयोग करके दुगना-तिगुना, चार गुणा कर लेता है और जो कुसंगत में गिरकर शराब-जुआ खेलकर मूल धन का नाश कर लेता है, वह फिर पछताता है। इसी प्रकार भ्रमित गुरू का शिष्य अपने जीवन को नष्ट करके ऊपर भगवान के द्वार पर हाथ मलकर पछताता है।**

❖ **वाणी नं. 54 :-**

गरीब, सोहं सुरति लगाईले, गुण इन्द्रिय सें बंच। नाम लिया तब जानिये, मिटै सकल प्रपंच।।54।।

❖ **सरलार्थ :- सोहं नाम का जाप सुरति-निरति से करो और इन्द्रियों को काबू में रखो। नाम आदि दीक्षा लेकर स्मरण करने वाले को उस समय लाभ होगा यानि उस पर नाम के जाप का प्रभाव तब दिखेगा, जब उसके अंदर के सब परपंच समाप्त हो जाऐंगे। जैसे नाचना, गाना, सिनेमा देखना, नशीली वस्तुओं का सेवन करना आदि-आदि बुराईयों से घृणा हो जाएगी। सादा जीवन जीएगा तो परपंच मिट गए।**

❖ **वाणी नं. 55 :-**

गरीब, नाम निहचल निरमला, अनंत लोक में गाज। निरगुण सिरगुण क्या कहै, प्रगटा संतों काज।।55।।

❖ **सरलार्थ :- जो सारनाम है, वह पवित्र तथा अविनाशी है। उसकी सत्ता की धाक (गाज=आवाज की शक्ति) असँख्यों लोकों में है। उस परमात्मा को कोई निर्गुण कहता है, कोई सर्गुण। वह तो भक्तों को यथार्थ भक्ति ज्ञान बताकर मोक्ष करने के लिए प्रकट हुआ था।**

❖ **वाणी नं. 56, 57, 58 :-**

गरीब, अविनासी के नाम में, कौन नाम निजमूल। सुरति निरति सें खोजिलै, बास बडी अक फूल।।56।।
गरीब, फूल सही सिरगुण कह्या, निरगुण गंध सुगंध। मन मालीके बागमें, भँवर रह्या कहां बंध।।57।।
गरीब, भँवर विलंब्या केतकी, सहस कमलदल मांहि। जहां नाम निजनूर है, मन माया तहां नांहि।।58।।

❖ **सरलार्थ :- अविनाशी परमात्मा का मूल नाम यानि वास्तविक मंत्र जाप का नाम कौन-सा है? उत्तर बताया है कि विचार करके (सुरति-निरति से) स्वयं खोजकर कि जैसे फूल से सुगंध निकलती है तो इनमें किसको मूल यानि वास्तविक कारण कहा जाए। मूल का अर्थ है मुख्य कारण। सुगंध फूल बिना नहीं हो सकती। विचार करें कि फूल और सुगंध कौन बड़ा है? तो उत्तर होगा कि फूल बिना सुगंध कहाँ से आएगी। जो व्यक्ति परमात्मा को निर्गुण रूप में मानते हैं, उसकी प्राप्ति का प्रयत्न भी करते हैं तथा यह भी कहते हैं कि परमात्मा मिलता नहीं क्योंकि वह निराकार है। जैसे फूल तो सर्गुण है, साकार है। उससे निकल रही सुगंध निर्गुण (निराकार) है। इसी प्रकार सतपुरूष सगुण है, उसकी शक्ति निर्गुण**

(निराकार) है। जो परमात्मा को निर्गुण यानि गुण रहित (निराकार) कहते हैं। यह ज्ञान काल ब्रह्म रूपी मन ने भ्रम फैलाया है। हे जीव! तू परमेश्वर कबीर जी का यथार्थ आध्यात्म ज्ञान समझ। तू इस मन रूपी काल ब्रह्म माली के इक्कीस ब्रह्मण्ड रूपी बबूल के बाग में हे भंवर यानि जीव! कहाँ बंध गया। इसका ब्रह्म लोक भी नाशवान है। यह स्वयं भी नाशवान है। तूने तो अविनाशी परमेश्वर को प्राप्त करके अमर होना चाहिए। जहाँ पर मन माया यानि काल का जाल नहीं है।

❖ **वाणी नं. 59-60 :-**

गरीब, पंडित कोटि अनंत है, ज्ञानी कोटि अनंत। श्रोता कोटि अनंत है, बिरले साधु संत।।59।।
गरीब, जिन मिलतें सुख ऊपजै, मेटें कोटि उपाध। भवन चतुर दस ढूंढिये, परम सनेही साध।।60।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि करोड़ों तो पंडित यानि ब्राह्मण हैं जो आध्यात्म ज्ञान के विद्वान होने का दावा करते हैं और करोड़ों ज्ञानी भी हैं जो परमात्मा पर समर्पित हैं, परंतु यथार्थ भक्ति विधि का ज्ञान नहीं। उनके प्रचार के प्रवचन सुनने वाले श्रद्धालु श्रोता भी करोड़ों हैं, परंतु तत्वदर्शी संत तो बिरला ही मिलेगा। जैसे आगे झूमकरा के अंग में संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-**

तत्वभेद कोई ना कहे रै झूमकरा। पैसे ऊपर नाच सुनो रै झूमकरा।।
कोट्यों मध्य कोई नहीं रै झूमकरा। अरबों में कोई गरक सुनो रै झूमकरा।।

गीता अध्याय 7 श्लोक 19 में भी यही विवरण है कि बहुत-बहुत जन्मों के अंत के जन्म में कोई ज्ञानवान मेरी भक्ति करता है, अन्यथा अन्य देवताओं (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव आदि-आदि) की भक्ति करते रहते हैं, परंतु यह बताने वाला महात्मा तो सुदुर्लभ है यानि बड़ी मुश्किल से मिलेगा कि वासुदेव यानि जिस परमेश्वर का सर्व लोकों में वास है, वह वासुदेव कहलाता है। उसकी सत्ता सब पर है। उसी की भक्ति करो। वही पापनाशक है। वही पूर्ण मोक्षदायक है। वही वास्तव में अविनाशी है। इसी प्रकार सुमरन के अंग की वाणी नं. 59 में कहा है कि साधु-संत तो कोई बिरला ही मिलेगा। साधु-संत की एक यह पहचान भी है कि उसके सानिध्य में जाने से सुख महसूस होता है। विचार सुनकर मन की करोड़ों उपाध यानि बकवास विचार समाप्त हो जाते हैं। ऐसा संत चाहे चौदह लोकों में कहीं भी मिले, उसकी खोज करनी चाहिए और उसके सत्संग विचार सुनने चाहिए।

❖ **वाणी नं. 61 :-**

गरीब, राम सरीखे साध है, साध सरीखे राम। सतगुरु कूं सिजदा करुं, जिन दीन्हा निजनाम।।61।।

❖ **सरलार्थ :- बहुत से साधु कुछ सिद्धि प्राप्त करके अपने आपको राम मान लेते हैं। जैसे हिरण्यकशिपु तथा कुछ राम जो त्रिलोकी प्रभु श्री रामचन्द्र जैसे। परंतु इनका किसी का भी जन्म-मरण समाप्त नहीं होता। संत गरीबदास जी ने कहा है कि उस सतगुरू को सिजदा यानि विशेष नम्रता से झुककर प्रणाम करो जिसने निजनाम की दीक्षा दी। जिससे वह परमपद तथा शाश्वत स्थान (अमर लोक) तथा परम शांति प्राप्त होगी जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 तथा अध्याय 18 श्लोक 62 में बताई है और अविनाशी परमात्मा मिलेगा।**

❖ **वाणी नं. 62 :-**

गरीब, भगति बंदगी जोग सब, ज्ञान ध्यान प्रतीत। सुंन शिखरगढ में रहें, सतगुरु सबद अतीत।।62।।

❖ **सरलार्थ :- जिस सतगुरू जी ने निज नाम देकर भक्ति की विधि बंदगी यानि प्रणाम की विधि तथा योग यानि साधना करने का तरीका, तत्वज्ञान तथा किस तरह ध्यान (सहज समाधि) प्रदान की और यह विश्वास कराया कि यही मोक्ष का साधन है। वह सतगुरू सुन्न यानि ऊपर खाली स्थान आकाश खण्ड (गगन मण्डल) सत्यलोक में शब्द अतीत रूप में रहता है यानि उस अविनाशी परमेश्वर का जो स्वयं सतगुरू भी है, किसी को ज्ञान नहीं क्योंकि वह (सुन्न शिखर) आकाश की चोटी पर यानि सबसे ऊपर के लोक में रहता है।**

❖ **वाणी नं. 63 :-**

गरीब, ऐसा सतगुरु सेइये, पार ऊतारे हंस। भगति मुकति की दातिसै, मिलि है सोहं बंस।।63।।

❖ **सरलार्थ :- हे हंस यानि निर्मल भक्त! ऐसे सतगुरू से दीक्षा लेना जो भव सागर से पार कर दे। परंतु पूर्व जन्म-जन्मांतर की भक्ति की (दाति से) कमाई से अर्थात् भक्ति संस्कार के प्रतिफल में मुक्ति के लिए सोहं वंश यानि पूर्व जन्म में जिनको सत्यनाम में सोहं मंत्र मिला था, सारनाम नहीं मिला था, वह समूह पुनः मानव जन्म प्राप्त करता है। उनको परमेश्वर अवश्य शरण में लेता है।**

❖ **वाणी नं. 64 :-**

गरीब, सोहं बंस बखानिये, बिन दम देही जाप। सुरति निरतिसें अगम है, ले समाधि गरगाप।।64।।

❖ **सरलार्थ :- सोहं वंश का वर्णन करता हूँ। जो सोहं शब्द सतनाम में प्राप्त कर लेता है, सारनाम की प्राप्ति उसी को होती है जब साधक संसार छोड़कर जाता है तो अंत में सोहं की सीमा यानि अक्षर पुरूष के लोक में उसकी (सोहं की) साधना को उसे देने के पश्चात् आत्मा सतलोक को चलती है, तब श्वांस नहीं रहता। परंतु आत्मा सुरति-निरति यानि ध्यान से सार शब्द का जाप करती हुई चलती है। भंवर गुफा में प्रवेश करने के पश्चात् सारनाम की कमाई वहाँ जमा हो जाती है। फिर जाप तथा अजपा दोनों मर जाते हैं।(समाप्त हो जाते हैं।) सतलोक यानि वांछित अमर स्थान प्राप्त हो जाता है। जैसे नौकरी मिलने के पश्चात् पढ़ाई छूट जाती है।**

ले समाधि गरगाप का तात्पर्य यह है कि यह विचार कर कि सतपुरूष ऊपर के सतलोक में है जो काल के सर्व ब्रह्मण्डों के पार दूर है। अपने ध्यान को वहाँ पहुँचा। ले समाधि गरगाप का अर्थ है अधिक प्रेरणा से ध्यान कर। हरियाणा प्रान्त की भाषा में कहते हैं कि वह पहलवान शक्ति में गरगाप है यानि बहुत शक्तिमान है। यह भी कहते हैं कि वह व्यक्ति धन में गरगाप है यानि बहुत धनवान है। इसी प्रकार गरगाप ध्यान लगा।

❖ **वाणी नं. 65 :-**

गरीब, सुरति निरति मन पवनपरि, सोहं सोहं होइ। शिबमंत्र गौरिज कह्या, अमर भई है सोइ।।65।।

❖ **सरलार्थ :- साधक को चाहिए कि वह सुरति-निरति यानि ध्यानपूर्वक मन तथा पवन (श्वांस) से सोहं मंत्र जाप करे। जिस प्रकार शिव जी से नाम प्राप्त करके पार्वती जी ने सच्ची लगन से नाम जाप किया तो वह उससे होने वाला अमरत्व प्राप्त किया। ऐसे सच्चे नाम की सच्ची लगन से रटना लगा।**

❖ **वाणी नं. 66 :-**

गरीब, रंरकार तो धुनि लगै, सोहं सुरति समाइ। हद बे हद परि वास होइ, बहुरि न आवै जाइ।।66।।

❖ **सरलार्थ :- जैसे हाथी ने मगरमच्छ के साथ युद्ध में मरते समय राम का आधा ही नाम लिया था। वह पूरी कसक के साथ लिया था। उसे ररंकार धुन कहते हैं। ऐसे नाम का जाप करें और नाम सोहं हो तो हद-बेहद यानि सोहं का मंत्र काल के संतों से लेता है तो हद में रह जाऐंगे यानि काल जाल में ही रह जाएगा। यदि सतलोक के अधिकारी गुरू से लेकर उसी लगन से साधना करेगा तो बेहद यानि काल की हद (सीमा) से पार सतलोक में निवास होगा। वहाँ जाने के पश्चात् पुनः जन्म-मरण में नहीं आता।**

❖ **वाणी नं. 67 :-**

गरीब, गुझ गायत्री नाम है, बिन रसना धुनि ध्यान। महिमा सनकादिक लही, सिव संकर बलिजान।।67।।

❖ **सरलार्थ :- जो यथार्थ भक्ति का नाम सतगुरू देते हैं। वह गुझ (गुप्त) गायत्री (महिमा का गुणगान करने का) है यानि जैसे यजुर्वेद अध्याय 36 मंत्र 3 के आगे ओउम् (ॐ) नाम जोड़कर गायत्री मंत्र बताते हैं जो केवल वेद का एक श्लोक है। वेद में 18 हजार श्लोक हैं। सब में परमात्मा की महिमा का वर्णन है। इस एक यजुर्वेद के अध्याय 36 के श्लोक 3 को गायत्री मंत्र बनाकर पढ़ने से परमेश्वर की महिमा का अधूरा गुणगान है, अंश मात्र की महिमा है जो पर्याप्त नहीं है। वेदों के श्लोकों से तो परमेश्वर का ज्ञान होता है कि परमात्मा इतना सुखदाई है। उसकी भक्ति करने से यह लाभ होता है। भक्ति न करने से यह हानि होती है। परंतु एक यजुर्वेद अध्याय 36 के श्लोक 3 में तो वह भी पूर्ण नहीं है। जैसे बिजली की महिमा लिखी है। उसकी एक-दो पंक्ति से तो वह भी पूर्ण ज्ञान नहीं होता। उसमें बिजली के लाभ के ज्ञान के पश्चात् यह भी लिखा होता है कि बिजली का कनैक्शन लो, उसकी यह विधि है। बिजली की महिमा की केवल एक-दो पंक्ति पढ़ने से पूर्ण ज्ञान नहीं होता। जब तक कनैक्शन नहीं लिया जाए तो बिजली के लाभ नहीं मिलेंगे। कनैक्शन लेने के पश्चात् वह लाभ मिलेगा जो उसकी महिमा में बताया गया है। इसी प्रकार परमात्मा की महिमा को पढ़ने से ज्ञान तो हो जाता है, लेकिन लाभ तब मिलेगा जब पूर्ण गुरू से दीक्षा ले ली जाएगी। वह भक्ति का मंत्र गुझ गायत्री यानि गुप्त लाभ प्राप्त कराने वाला है। फिर सत्य भक्ति से प्रतिदिन परमात्मा लाभ देने लगेगा। फिर नाम स्मरण करते-करते परमात्मा की महिमा अपने आप हृदय से होती रहेगी। जैसे एक व्यक्ति का इकलौता पुत्र रोगी था। सब उपचार, जंत्र-मंत्र, नकली गुरूओं-संतों से नाम ले भजन कर लिया, परंतु कोई लाभ नहीं हुआ। जब भगवान कबीर जी की शरण में बच्चे को लाए, दीक्षा ली। वह बच्चा शीघ्र स्वस्थ हो गया। फिर वह परिवार उस गुप्त नाम का जाप भी करता था और हृदय से परमात्मा के गुण भी याद करता था। हे परमात्मा! आपने मेरे बच्चे को जीवन दान दिया। आप समर्थ हैं। जीवन दाता हैं। आपकी महिमा अपरमपार है। यह महिमा हृदय में चलती है। उसे बोलकर तो कभी-कभी करते हैं जब अन्य को समझाना होता है। कहा है कि गुझ गायत्री यथार्थ नाम है जिससे आध्यात्मिक लाभ मिलता है। तब बिन रसना (जीभ) के परमात्मा की महिमा धुनि (लगन) से ध्यान (विशेष विचार) से होती है। परमात्मा की महिमा जो नाम दीक्षा के पश्चात्**

होती है। उसको ब्रह्मा जी के मानस पुत्रों सनकादिक (सनक, सनन्दन, सरत, संत कुमार) तथा शिव जी ने लहि यानि संकेत मात्र से समझ गए। ऐसे विवेकवानों पर मैं बलिहारी जाऊँ यानि ऐसे सब जीव हमारे तत्वज्ञान को शीघ्र समझ लें तो सर्व का काल के जाल से शीघ्र छुटकारा हो जाएगा।

❖ **वाणी नं. 68 :-**

गरीब, अजब महल बारीक है, अजब सुरति बारीक। अजब निरति बारीक है, महल धसे बिन बीक।।68।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा का महल यानि सतलोक अजब (दिव्य) है। बारीक यानि झीना है। बारीक का भावार्थ है कि काल लोक से निकलने वाला द्वार बहुत छोटा है। तिल के समान है। सूई के धागा डालने वाले सुराख (Hole) के समान है। सत्यभक्ति करने वाले साधक का शरीर ऐसा सुक्ष्म हो जाता है। वह उस बारीक द्वार से सरलता से निकल जाता है। साधक की सुरति तथा निरति भी सुक्ष्म हो जाती है। सुरति क्या है? निरति क्या है? जैसे हम कुछ दूरी पर कोई वस्तु देखते हैं। वह देखना सुरति है तथा वह वस्तु क्या है, यह निरीक्षण करना निरति कहलाती है। जब साधक सतलोक को चलता है तो सुरति दूर के स्थान को, द्वार को देखती है, निरति निरीक्षण करती है, आत्मा निर्णय करती है। उन द्वारों से बिन बीक (कदम रखे बिना यानि सिद्धि से अपने आप चलता है) के चलकर महल (सतलोक) में धँसता (प्रवेश करता) है।**

❖ **वाणी नं. 69 :-**

गरीब, रामनाम के पटतरै, देवे कूं नहिं और। सो ऊदम तादिन भये, उभर गई जद गौर।।69।।

❖ **सरलार्थ :- गुरू जी जो मोक्ष करने वाला राम-नाम (सत्य भक्ति मंत्र) देते हैं, उसके पटतर (समान) अन्य तप करना, तीर्थों पर जाना, व्रत करना आदि-आदि नहीं है। वे व्यर्थ हैं। राम-नाम के जाप से परमात्मा मिलता है। गौर (गौरी) यानि पार्वती जी को उस समय नाम की महिमा का पता चला जिस दिन शिव जी ने उनको नाम की दीक्षा दी थी। फिर भक्ति लाभ मिलने लगा। उस स्तर का अमरत्व मिला।**

❖ **वाणी नं. 70 :-**

गरीब, सुकदेव सुखमें ऊपजे, राई सींग समोइ। नवनाथ अरु सिद्ध चौरासी, संगि उपजेथे दोइ।।70।।

''सुखदेव की उत्पत्ति की कथा''

❖ **सरलार्थ :- जिस समय भगवान शिव जी ने पार्वती जी को अमर मंत्र दिया। उस समय एक स्थान पर सूखा वक्ष था। उसके नीचे आसन लगाया। कारण यह था कि इस अमर नाम को कोई अन्य जीव सुन ले और वह भी अमर हो जाए और बुरे स्वभाव का जीव यदि आध्यात्मिक शक्ति सम्पन्न हो जाएगा तो वह उसका दुरूपयोग करके भले व्यक्तियों को सताएगा। इसलिए सब गुरूजन एकान्त स्थान पर केवल उपदेश देने योग्य हुए व्यक्तियों को ही बैठाकर नाम देते हैं। भगवान शंकर जी ने अपने हाथों से ताली बजाई जिसका भयंकर नाद (शोर-आवाज) हुआ। आसपास के पशु तथा पक्षी डरकर दूर चले गए। सूखा वक्ष इसलिए चुना था कि कोई पक्षी आएगा तो तुरंत दिखाई देगा। उस वक्ष की खोखर (वक्ष**

के थोथे तने) में मादा तोते ने अण्डे पैदा कर रखे थे। एक अण्डा अस्वस्थ था, अन्य स्वस्थ थे। वे शंकर जी की ताली (हाथों से की आवाज) से ही पक्षी बनकर उड़ गए। वह खराब (गन्दा हुआ) अण्डा रह गया। जिस जीव को वह अण्डा प्राप्त हुआ था, वह उस अण्डे में बैठा था। उसके परिपक्व होने तथा स्वयं को शरीर प्राप्त करने का इंतजार कर रहा था।

जैसे बच्चा गर्भ में आने से ही माता-पिता उसे अपना मान बैठते हैं। इसी प्रकार जीव जिस शरीर या अण्डे में प्रवेश होता है तो उसे अपना मान लेता है। मत्यु के उपरांत शमशान घाट पर अंतिम संस्कार के पश्चात् बची हुई हड्डियों के टुकड़ों को उठाकर किसी अथाह दरिया में बहा देते हैं जिसको अस्थियाँ उठाना या फूल उठाना कहते हैं। उसका कारण यह कि जो जीव उस मानव शरीर (स्त्री या पुरूष) में रहा है, उसका उस शरीर में अधिक मोह हो जाता है। जैसे मानव को कोई असाध्य रोग हो जाता है तो अपने शरीर की रक्षार्थ सर्व धन लगा देता है। शरीर इतना प्रिय लगता है। मत्यु के उपरांत यदि उस प्राणी को अन्य शरीर नहीं मिला तो वह प्रेत योनि में जाता है। भूत बनकर सुक्ष्म शरीर में रहता है। वह धर्मराज के दरबार (Office) से हिसाब करवाता है। यदि प्रेत योनि प्राप्त करता है तो अपने घर आता है। अपने परिवार के व्यक्तियों से मिलकर बातें करने की कोशिश करता है। कहता है कि क्यों रो रहे हो? मैं आ गया हूँ। परंतु सुक्ष्म शरीर होने के कारण परिवार के व्यक्ति न उसे देख पाते हैं और न उसकी आवाज सुनते हैं। तब उसको अन्य प्रेत बताते हैं कि ये तेरे को देख नहीं पा रहे हैं क्योंकि तेरा स्थूल शरीर नहीं रहा। फिर वह प्रेत अपने शरीर की खोज में शमशान घाट पर जाता है। वहाँ शरीर जला दिया गया होता है। अपने शरीर की शेष बची अस्थियों को अपनी मानता है। उनसे चिपककर रहता है। जब उन अस्थियों को उठाकर दरिया में बहाने जाते हैं तो भी वह जीव उनसे चिपका रहता है। जब दरिया में डाल देते हैं तो वह उनसे अलग हो जाता है। अधिकतर प्रेत वहीं रह जाते हैं, कुछ एक उन परिवार वालों के साथ घर आ जाते हैं। यदि अस्थियाँ न उठाई जाऐं तो वह प्रेत बनकर शमशान घाट पर डेरा डाल लेता है, परंतु जिन्होंने परमेश्वर कबीर जी की शरण ले रखी है, वे प्रेत नहीं बनते। अनुपदेशी जिन्होंने गुरू से नाम लेकर भक्ति नहीं की, वे प्रेत बनकर कभी शमशान पर, कभी घर या खेतों में या जो भी कारोबार होता है, उसके आसपास घूमते रहते हैं। परिवार के सदस्यों को या अन्य को परेशान करते हैं। इसलिए नकली गुरूओं की बताई भक्ति से प्रेत बना। फिर उसको ठिकाने लगाने के लिए अस्थियाँ उठाकर दरिया में डालने की रीति (परम्परा) शुरू कर दी। यदि कोई वापिस आ जाता हरिद्वार हर की पौड़ी से और परिवार को परेशान करता तो उसकी गति कराने की परम्परा प्रारम्भ कर दी। तेरहवीं, सतरहवीं, महीना, छः माही, फिर बरसी मनाने लगे। फिर भी बात नहीं बनी। भूत तंग करता रहता तो उसके श्राद्ध प्रारम्भ किए कि अब यह पित्तर बन गया है। उसकी गति हो गई है। फिर पिण्ड भरवाओ आदि-आदि क्रियाऐं परिवारजनों पर थोंपी गई।

उसी स्वभाव से अण्डे से एक जीव चिपका था। श्री शिव जी ने पार्वती जी को पूर्ण परमात्मा की कथा सुनाई जो परमेश्वर कबीर जी से सुनी थी। फिर प्रथम मंत्र देवी पार्वती जी को सुनाया। कमलों का भेद बताने लगे। पार्वती जी समाधिस्थ हो गई। पहले तो हाँ-हाँ-हूँ

कर रही थी। बाद में वह गंदा (खराब) अण्डा स्वस्थ होकर उसमें तोते का बच्चा बन गया और हाँ-हाँ करने लगा। आवाज में अंतर जानकर शिव जी ने पार्वती की ओर देखा तो वह तो समाधि में थी। अंतर दृष्टि से देखा तो एक तोता सर्व ज्ञान सुन चुका था। शिव जी उस तोते को मारने के लिए उठे तो वह तोता उड़ चला। शिव जी भी आकाश मार्ग से उसका पीछा करने लगे। वेदव्यास ऋषि जी की पत्नी ने जम्भाई ली तो उसके मुख के द्वारा तोते वाला जीव उस ऋषि की पत्नी के शरीर में गर्भ में चला गया। तोते वाला शरीर वहीं त्याग दिया। शिव जी सब देख रहे थे। शिव जी ने वेदव्यास जी की पत्नी से कहा कि आपके गर्भ में मेरे ज्ञान व भक्ति मंत्र का चोर है। उसने अमर कथा सुन ली है। वह भी अमर हो गया है। (जितना अमरत्व उस मंत्र से होता है) व्यास जी भी वहीं आ गए तथा शिव जी को प्रणाम किया। आने का कारण जाना तो कहा कि हे भोलेनाथ! आप कह रहे हो कि वह अमर हो गया है। यदि वह जीव अमर हो गया है तो आप मार नहीं सकते। अब गर्भ में तो आप उसको बिल्कुल भी नहीं मार पाओगे। यह सुनकर शिव जी चले गए। पार्वती जी को समाधि से जगाया और अपने निवास पर चले गए। जिस स्थान पर शिव जी ने पार्वती जी को अमर मंत्र दिया था, उस स्थान को ''अमरनामथ'' के नाम से जाना जाता है। 12 (बारह) वर्ष तक व्यास जी की पत्नी को बच्चा उत्पन्न नहीं हुआ। तीनों देवता (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) व्यास ऋषि की कुटी पर आए और गर्भ में बैठे जीव से कहा कि आप जन्म लो, बाहर आओ। गर्भ में जीव को अपने पूर्व के जन्मों का ज्ञान होता है। जीव ने कहा, स्वामियो! बाहर आते ही आपकी माया (गुणों का प्रभाव) जीव को भूल पैदा कर देती है। जीव अपना उद्देश्य भूल जाता है। आप अपनी माया को कुछ देर रोको तो मैं बाहर आऊँ। व्यास जी की पत्नी ने कहा कि मेरे गर्भ में लड़का है। मुझे किसी प्रकार का कष्ट नहीं है। इस लड़के ने सुख दिया है। इसका नाम मैं सुखदेव रखूँगी। तीनों देवताओं ने उसको शुकदेव नाम दिया क्योंकि वह शुक (तोते) के शरीर में भक्ति-शक्ति युक्त हुआ था। तीनों देवों ने कहा कि हे शुकदेव! हम अपनी गुण शक्ति को केवल इतनी देर तक रोक सकते हैं, जितनी देर गाय या भैंसे के सींग पर राई का दाना टिक सकता है यानि रखते ही गिर जाता है। शुकदेव ने कहा कि ऐसा ही करो।

तीनों देवों ने अपनी गुण शक्ति को एक क्षण (Second) के लिए रोका। शुकदेव गर्भ से बाहर आया। तीनों देव चले गए। उस समय में 93 (तिरानवें) अन्य बच्चों का जन्म हुआ। उन सबको तथा शुकदेव को अपने उद्देश्य का ज्ञान रहा। वे सब महान भक्त-संत, सिद्ध बने। उनमें से 9 (नौ) तो नाथ प्रसिद्ध हुए तथा 84 (चौरासी) सिद्ध बने और एक शुकदेव ऋषि बना। सुखदेव के गर्भ से बाहर आते ही बारह वर्ष का शरीर बन गया। वह उठकर अपनी ओरनाल को (जो नली माता की नाभि से बच्चे की नाभि से जुड़ी होती है। उसके माध्यम से माता के शरीर से बच्चे की परवरिश होती है। उसकी लंबाई लगभग 1½ फुट तक होती है।) अपने कंधे पर डालकर चल पड़ा। यह विचार किया कि कहीं दूर जाकर काट फेंकूंगा। कारण यह था कि सुखदेव जी नहीं चाहते थे कि मेरा परिवार में मोह बढ़े और मैं भक्ति नहीं कर पाऊँगा। दूसरी ओर व्यास ऋषि ने कहा कि बेटा हमने तेरे उत्पन्न होने की

बारह वर्ष प्रतिक्षा की है। आप जाने की तैयारी कर रहे हो। हमने बेटे का क्या सुख देखा? आप घर त्यागकर ना जाओ। सुखदेव ने कहा, ऋषि जी! आप वेद-शास्त्रों के ज्ञाता विद्वान होकर भी मोह के दलदल में फँसे हो। मुझे भी फँसाने का प्रयत्न कर रहे हो। मेरे को अपने पूर्व जन्मों का ज्ञान है। अनेकों बार आप मेरे पिता बने। अनेकों बार मैं आपका पिता बना। अनेकों बाहर हमने चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाए। अबकी बार मुझे मेरे लक्ष्य का ज्ञान है। मैं भक्ति करके अपना जन्म सफल करूँगा। यह वार्ता सुखदेव जी ने अपने माता-पिता की ओर पीठ करके की और आकाश में उड़ गए। पूर्व जन्म की भक्ति से प्राप्त सिद्धि-शक्ति बची थी, उससे उड़ गया। उसी के अभिमान से कोई गुरू नहीं किया। फिर श्री विष्णु जी ने अपने लोक वाले स्वर्ग से निकाल दिया और कहा कि यदि यहाँ स्थान चाहते हो तो राजा जनक मिथिलेश से दीक्षा लो और भक्ति करके आओ। सुखदेव जी ने वैसा ही किया।

❖ **सुमरण के अंग की वाणी नं. 71 से 76 :-**

गरीब, ऐसा राम अगाध है, अविनासी गहिर गंभीर। हदि जीवों सें दूर हैं, बे हदियों के तीर।।71।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, बे कीमत करतार। सेस सहसंफुनि रटत है, अजहुं न पाया पार।।72।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, अपरंपार अथाह। उरमें किरतम ख्याल है, मौले अलख अल्लाह।।73।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, निरभय निहचल थीर। अनहद नाद अखंड धुनि, नाड़ी बिना सरीर।।74।।
गरीब, ऐसा राम अगाध है, बाजीगर भगवंत। निरसंध निरमल देखिया, वार पार नहिं अंत।।75।।
गरीब, पारब्रह्म बिन परख है, कीमत मोल न तोल। बिना उजन अनुराग है, बहुरंगी अनमोल।।76।।

❖ सरलार्थ :- जो पूर्ण परमात्मा है। वह ऐसा अगाध राम है यानि सबसे आगे वाला (अगाध) सर्वोपरी है। अविनाशी तथा गहर गम्भीर (समुद्र की तरह शक्ति से भरा गहरा) है। वह हद जीवों (जो काल की सीमा वाले हैं। उसी काल ब्रह्म पर आश्रित हैं, उन जीवों) से दूर है। उनको उसका ज्ञान नहीं है। इसलिए उनको उस अविनाशी परमेश्वर से कोई लाभ प्राप्त नहीं होता। जो बेहद के हैं यानि जिन्होंने उस असीम शक्तियुक्त परमात्मा को जान लिया है, वह परमात्मा उनके साथ है।(71)

❖ वह परमात्मा पारस पत्थर की तरह अनमोल (बेकीमत) है। उस परमात्मा की प्राप्ति के लिए शास्त्रविधि रहित नाम यानि राम का जाप शेष नाग जी हजार (संहस्र) मुखों से जप रहा है। आज तक उनको भी अविनाशी परमात्मा का पार (अंत) नहीं पाया है।(72)

❖ परमेश्वर अपरमपार अथाह यानि समन्दर की तरह अमित शक्ति संपन्न है। तत्वज्ञान के अभाव से प्रत्येक ऋषि-देव अपने उर (हृदय) में किरतम यानि कत्रिम (मन कल्पित) ख्याल (विचार) से मौला (परमात्मा) अलख अल्लाह (निराकार-दिखाई न देने वाला) मानते हैं।(73)

❖ वह परमेश्वर अचल (निश्चल) यानि अविनाशी है, निर्भय है। थीर का अर्थ भी स्थिर यानि निश्चल होता है। पद्य भाग में पदों की तथा रागों को पूर्ण करने के कारण ऐसे दोहरे शब्दों का प्रयोग किया जाता है। उस परमेश्वर के लोक में अखण्ड धुन बज रही है। उस परमेश्वर का शरीर पाँच तत्व से बने नाड़ी वाला नहीं है।(74)

❖ **वह परमेश्वर बाजीगर की तरह अद्भुत चमत्कार करता है। निरसंध (जिसकी शक्ति की सीमा नहीं) तथा पवित्र है। वह अपरमपार शक्ति वाला है। जिस सतपुरूष को अन्य गुरूजन व ऋषिगण अलख अल्लाह (निराकार प्रभु) कहते हैं। उनको परमात्मा प्राप्ति नहीं हुई है। यह मैंने (संत गरीबदास जी ने) देखा है।(75)**

❖ **पारब्रह्म परमात्मा की परख (पहचान) किसी को नहीं है। उसकी कीमत (मूल्य) तथा तोल (वजन) का क्या वर्णन किया जा सकता है? उसकी महिमा सुनकर उसके प्रति अनुराग (प्रातिका प्रेम) मेरे को है। वह बहुरंगी है। जैसे काशी में जुलाहा (धाणक) बना। मेरे को (संत गरीबदास जी को) जिन्दा बाबा के रूप में सतलोक में सतपुरूष रूप में बैठा देखा, इस प्रकार बहुरूपिया मिला।(76)**

❖ **वाणी नं. 77 से 87 :-**

गरीब, महिमा अबिगत नाम की, जानत बिरले संत। आठ पहर धुनि ध्यान है, मुनि जन रटैं अनंत।।77।।
गरीब, चन्द सूर पानी पवन, धरनी धौल अकास। पांच तत्त हाजरि खड़े, खिजमतिदार खवास।।78।।
गरीब, काल करम करै बदंगी, महाकाल अरदास। मन माया अरु धरमराय, सब सिर नाम उपास।।79।।
गरीब, काल डरै करतार सै, मन माया का नास। चंदन अंग पलटे सबै, एक खाली रह गया बांस।।80।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अबिगत अन्यत न जाइ। बाहिर भीतर एक है, सब घट रह्या समाइ।।81।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी एक। आदि अंत जाके नहीं, ज्यूं का त्यूंही देख।।82।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी ऐंन। महिमा कही न जात है, बोले मधुरै बैन।।83।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी आदि। सतगुरु मरहम तासका, साखि भरत सब साध।।84।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी पीर। चरण कमल हंसा रहे, हम हैं दामनगीर।।85।।
गरीब, सजन सलौना राम है, अचल अभंगी आप। हद बेहद सें अगम है, जपो अजपा जाप।।86।।
गरीब, ऐसा भगली जोगिया, जानत है सब खेल। बीन बजावें मोहिनी, जुग जंत्र सब मेल।।87।।

❖ **सरलार्थ :- उस परमात्मा को प्राप्त करने के लिए अनन्त मुनिजन मनमाने नामों की रटना लगा रहे हैं(जाप कर रहे हैं), परंतु अविगत नामों (दिव्य मंत्रों) को तथा उनकी महिमा को बिरला संत ही जानता है।(77)**

❖ **उस परमात्मा के आदेश से पाँचों तत्व (आकाश, वायु, अग्नि, जल तथा पथ्वी) कार्य करते हैं। वे तो परमेश्वर कबीर जी की खिदमतदार यानि सेवा करने वाले सेवक यानि दास हैं।(78)**

❖ **उस परमेश्वर की बंदगी यानि नम्र प्रणाम करके नम्र भाव से स्तुति ब्रह्म काल (करम) दया की याचना करते हैं तथा महाकाल (अक्षर पुरूष) भी उस परमेश्वर से अरदास यानि प्रार्थना करके अपने-अपने लोक चला रहे हैं। मन (काल ब्रह्म), माया (देवी दुर्गा) और धर्मराय (काल का न्यायधीश) सबके सिर पर नाम उपासना है यानि सबको भक्ति करना अनिवार्य है, तब उनका पद सुरक्षित रहता है।(79)**

(नोट :- अक्षर पुरूष को महाकाल इसलिए कहा है क्योंकि जब इसका एक दिन जो एक हजार युग कहा है, पूरा होता है तो काल ब्रह्म-दुर्गा सहित एक ब्रह्मण्ड का विनाश हो जाता है। सर्व प्राणी अक्षर पुरूष के लोक में रखे जाते हैं।)

❖ ज्योति निरंजन काल भी परमेश्वर कबीर जी से भय मानता है। उस परमेश्वर के दिव्य मंत्रों के जाप से मन में विकार उत्पन्न नहीं होते तथा माया का नाश हो जाता है यानि संसारिक पदार्थों का संग्रह करने वाला स्वभाव समाप्त हो जाता है। परमात्मा के आध्यात्म ज्ञान के प्रवचनों का प्रभाव अच्छी आत्माओं यानि पूर्व जन्म में शुभ संस्कारी प्राणियों पर ही पड़ता है। जो अन्य प्राणियों के शरीरों (कुत्ते-गधे, सूअर के शरीरों) को त्यागकर मानव शरीर प्राप्त करते हैं। उन पर सत्संग वचन का प्रभाव शीघ्र नहीं पड़ता। उदाहरण दिया है कि जैसे वन में चंदन के वक्ष होते हैं। उनके आसपास अन्य नीम, बबूल, आम, शीशम आदि-आदि वक्ष भी होते हैं और बाँस भी उगा होता है। चंदन की महक आसपास के अन्य वक्ष ग्रहण कर लेते हैं और चंदन की तरह खुशबूदार बन जाते हैं, परंतु बाँस के ऊपर चंदन की महक का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।(80)

❖ वाणी नं. 81 से 87 तक एक जैसा ही ज्ञान है। परमेश्वर की महिमा सामान्य रूप में बताई है कि वह परमात्मा सज्जन यानि नेक मानव जैसा है। अविगत यानि दिव्य है। (अन्यत न जाई) उसकी खोज में अनेकों स्थानों पर ना जाऐं, उसकी प्राप्ति सतगुरू द्वारा होगी। उस परमात्मा की शक्ति बाहर यानि शरीर से बाहर तथा भीतर यानि शरीर के अंदर एक समान है। सबके घट (शरीर रूपी घड़े) में रहा समाई यानि व्यापक है।(81)

❖ अचल (स्थिर-स्थाई) अभंगी (जो कभी नहीं टूटे यानि अविनाशी) वह तो एक ही प्रभु (परम अक्षर ब्रह्म) है। उसका आदि (जन्म अर्थात् प्रारम्भ) तथा अंत (मत्यु) नहीं है। वह तो सदा से ज्यों का त्यों ही दिखाई देता है। आप भी साधना करके उसे देखो।(82)

❖ उस अविनाशी सज्जन परमात्मा की महिमा सम्पूर्ण रूप से कोई नहीं कह सकता क्योंकि वह अचल (स्थिर) तथा अभंगी ऐंन यानि वास्तव में अविनाशी स्थाई परमात्मा है। वह जब मुझे (संत गरीबदास जी को) मिला था तो बहुत प्रिय भाषा बोली थी। (मधुरे माने मीठे, बैन माने वचन।)(83)

❖ उस अचल अभंगी राम का महरम यानि गूढ़ ज्ञान केवल सतगुरू यानि तत्वदर्शी संत ही जानता है। इस बात के साक्षी सब साध (संत जन) हैं।(84)

❖ उस सज्जन सलौने (शुभदर्शी यानि जिसके दर्शन से आनन्द हो) अचल अभंगी राम जो पीर यानि गुरू रूप में प्रकट होते हैं, के चरण कमल यानि शरण में हंसा यानि मोक्ष प्राप्त भक्त रहते हैं। हम (संत गरीबदास जी) उस परमात्मा के साथ ऐसे हैं (दामनगीर) जैसे चोली-दामन का साथ होता है यानि हम उस परमेश्वर के अत्यंत निकट हैं।(85)

❖ वह अचल अभंगी सज्जन सलौना (शुभदर्शी) राम (परमेश्वर कबीर) हद (काल की सीमा) बेहद (सत्यलोक की सीमा) के पार अकह लोक में मूल रूप से रहता है। उसकी प्राप्ति के लिए सतगुरू जी से दीक्षा लेकर अजपा (श्वांस-उश्वांस से) जाप जपो यानि नाम का सुमरन (स्मरण) करो।(86)

❖ वह परमेश्वर ऐसा भगली (जादूगर) जोगिया (योगी=साधु रूप में प्रकट होने वाला) है। वह सब खेल जानता है कि कैसे जीव की रचना हुई? कैसे यह काल जाल में फँसा? कैसे काल ब्रह्म ने इसको अज्ञान में अंधा कर रखा है? काल का जीव को अपने जाल में

फँसाए रखने का क्या उद्देश्य है? (उसको एक लाख मानव शरीरधारी प्राणियों को नित खाना पड़ता है) कैसे जीव को काल जाल से छुड़वाया जा सकता है? बीन बजावैं मोहिनी यानि काल प्रेरित सुंदर स्त्रियाँ भक्तों को कैसे मधुर वाणी बोलकर आकर्षित करती हैं। बीन बजाने का भावार्थ यह है कि जैसे सपेरा बीन यंत्र बजाकर सर्प को वश में करता है। ऐसे ही काल के आदेश से सुंदर परियाँ सुरीले गाने गाकर साधकों को अपने जाल में फँसाती हैं। वे सब जोग यानि सब विधि (जुगत से) तथा जंत्र यानि अन्य अदाओं के जंत्र से अपनी ओर खींचती हैं यानि सब आकर्षणों को मिलाकर जीव को फँसाती हैं।(87)

(जोग जुगत का अर्थ है योग युक्त करना यानि अपने साथ जोड़ने की युक्ति लगाती है। जंत्र का अर्थ है आध्यात्मिक क्रिया भी करती हैं, इसे जन्त्र-मन्त्र करना भी कहते हैं।)

❖ वाणी नं. 88 से 101 :-

गरीब, ब्रह्मादिक से मोहिया, मोहे शेष गनेस। संकर की ताड़ी लगी, अडिग समाधि हमेस।।88।।
गरीब, गण गंध्रप ज्ञानी गुनी, अजब नबेला नेह। क्या महिमा कहुं नाम की, मिट गये सकल संदेह।।89।।
गरीब, सुंन विदेसी बसि रह्या, हमरे नयनों मंझ। अलख पलक में खलक है, सतगुरु सबद समंझ।।90।।
गरीब, सुंन विदेसी बसि रह्या, हमरे हिरदै मांहि। चन्द सूर ऊगे नहीं, निसि बासर तहां नाहिं।।91।।
गरीब, सुंन विदेसी बसि रह्या, हमरे त्रिकुटी तीर। शंख पद्म छबि चांदनी, बानी कोकिल कीर।।92।।
गरीब, सुंन विदेसी रमि रह्या, सहंस कमलदल बाग। सोहं ध्यान समाधि धुनि, तरतीजन बैराग।।93।।
गरीब, सुमिरन तब ही जानिये, जब रोम रोम धुन होइ। कुंज कमल में बैठ कर, माला फेरे सोइ।।94।।
गरीब, सुरति सुमरनी हाथ लै, निरति मिले निरबान। ररंकार रमता लखै, असलि बंदगी ध्यान।।95।।
गरीब, अष्ट कमल दल सून्य है, बाहिर भीतर सून्य। रोम रोम में सून्य है, जहां काल की धुंन।।96।।
गरीब, तुमही सोहं सुरति हौ, तुमही मन और पौन। इनमें दूसर कौन है, आवै जाय सो कौन।।97।।
गरीब, इनमें दूसर करम है, बंधी अविद्या गांठ। पांच पचीसौ लै गई, अपने अपने बांट।।98।।
गरीब, नामबिना सूना नगर, पर्या सकल में सोर। लूटन लूटी बंदगी, होगया हंसा भोर।।99।।
गरीब, अगम निगमकूं खोजिलै, बुद्धि बिबेक बिचार। उदय अस्त का राज दै, तो बिना नाम बेगार।।100।।
गरीब, ऐसा कौन अभागिया, करें भजनकूं भंग। लोहे सें कंचन भया, पारस के सतसंग।।101।।

❖ सरलार्थ :- इन्हीं काल प्रेरित आत्माओं (देवियों) ने ब्रह्मादिक (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को भी मोहित कर लिया यानि अपने जाल में फँसा रखा है। शेष यानि अन्य बचे हुए गणेश जी भी स्त्री के संग में रहे। गणेश जी के दो पुत्र थे। एक का नाम शुभम्=शुभ, दूसरे लाभम्=लाभ था। शंकर (शिव जी) की अडिग (विचलित न होने वाली) समाधि (आंतरिक ध्यान) लगी थी जो हमेशा (सदा) ध्यान में रहते हैं। उनको भी मोहिनी अप्सरा (स्वर्ग की देवी) ने मोहित करके डगमग कर दिया था।

कथा :- शंकर जी का मोहिनी स्त्री के रूप पर मोहित होना

जिस समय दक्ष की बेटी यानि उमा (शंकर जी की पत्नी) ने श्री रामचन्द्र जी की बनवास में सीता रूप बनाकर परीक्षा ली थी। श्री शिव जी ऐसा न करने को कहकर घर से बाहर चले गए थे। सीता जी का अपहरण होने के पश्चात् श्रीराम जी अपनी पत्नी के वियोग

में विलाप कर रहे थे तो उनको सामान्य मानव जानकर उमा जी ने शंकर भगवान की उस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि ये विष्णु जी ही पृथ्वी पर लीला कर रहे हैं। जब उमा जी सीता जी का रूप बनाकर श्री राम जी के पास गई तो वे बोले, हे दक्ष पुत्री माया! भगवान शंकर को कहाँ छोड़ आई। इस बात को श्री राम जी के मुख से सुनकर उमा जी लज्जित हुई और अपने निवास पर आई। शंकर जी की आत्मा में प्रेरणा हुई कि उमा ने परीक्षा ली है। शंकर जी ने विश्वास के साथ कहा कि परीक्षा ले आई। उमा जी ने कुछ संकोच करके भय के साथ कहा कि परीक्षा नहीं ली अविनाशी। शंकर जी ने सती जी को हृदय से त्याग दिया था। पत्नी वाला कर्म भी बंद कर दिया। बोलना भी कम कर दिया तो सती जी अपने घर राजा दक्ष के पास चली गई।

राजा दक्ष ने उसका आदर नहीं किया क्योंकि उसने शिव जी के साथ विवाह पिता की इच्छा के विरूद्ध किया था। राजा दक्ष ने हवन कर रखा था। हवन कुण्ड में छलाँग लगाकर सती जी ने प्राणान्त कर दिया था। शंकर जी को पता चला तो अपनी ससुराल आए। राजा दक्ष का सिर काटा, फिर उस पर बकरे का सिर लगाया। अपनी पत्नी के कंकाल को उठाकर दस हजार वर्ष तक उमा-उमा करते हुए पागलों की तरह फिरते रहे। एक दिन भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से उस कंकाल को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। जहाँ पर धड़ गिरा, वहाँ पर वैष्णव देवी मंदिर बना। जहाँ पर आँखें गिरी, वहाँ पर नैना देवी मंदिर बना। जहाँ पर जीभ गिरी, वहाँ पर ज्वाला जी का मंदिर बना तथा पर्वत से अग्नि की लपट निकलने लगी। तब शंकर जी सचेत हुए तथा अपनी दुर्गति का कारण कामदेव (Sex) को माना। कामदेव वश हो जाए तो न स्त्री की आवश्यकता हो और न ऐसी परेशानी हो। यह विचार करके हजारों वर्ष काम (Sex) का दमन करने के उद्देश्य से तप किया। एक दिन कामदेव उनके निकट आया और शंकर जी की दृष्टि से भस्म हो गया। शंकर जी को अपनी सफलता पर असीम प्रसन्नता हुई। जो भी देव उनके पास आता था तो उससे कहते थे कि मैंने कामदेव को भस्म कर दिया है यानि काम विषय पर विजय प्राप्त कर ली है। मैं कभी भी किसी सुंदरी से प्रभावित नहीं हो सकता। अन्य जो विवाह किए हुए हैं, वे ऊपर से सुखी नजर आते हैं, अंदर से महादुःखी रहते हैं। उनको सदा अपनी पत्नी की रखवाली, समय पर घर पर न आने से डाँटें खाना आदि-आदि परेशानियां सदा बनी रहती हैं। मैंने यह दुःख निकट से देखा है। अब न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

काल ब्रह्म को चिंता बनी कि यदि सब इस प्रकार स्त्री से घृणा करेंगे तो संसार का अंत हो जाएगा। मेरे लिए एक लाख मानव का आहार कहाँ से आएगा? इस उद्देश्य से नारद जी को प्रेरित किया। एक दिन नारद मुनि जी आए। उनके सामने भी शिव जी ने अपनी कामदेव पर विजय की कथा सुनाई। नारद जी ने भगवान विष्णु को यथावत सुनाई। श्री विष्णु जी को काल ब्रह्म ने प्रेरणा की। भाई की परीक्षा करनी चाहिए कि ये कितने खरे हैं। काल ब्रह्म की प्रेरणा से एक दिन शिव जी विष्णु जी के घर के आँगन में आकर बैठ गए। सामने बहुत बड़ा फलदार वृक्षों का बाग था। भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल खिले थे। बसंत जैसा मौसम था। श्री विष्णु जी, शिव जी के पास बैठ गए। कुशलमंगल जाना। फिर विष्णु

जी ने पूछा, सुना है कि आपने काम पर विजय प्राप्ति कर ली है। शिव जी बोले, हाँ, मैंने कामदेव का नाश कर दिया है। कुछ देर बाद शिव जी के मन में प्रेरणा हुई कि भगवान मैंने सुना है कि सागर मंथन के समय आप जी ने मोहिनी रूप बनाकर राक्षसों को आकर्षित किया था। आप उस रूप में कैसे लग रहे थे? मैं देखना चाहता हूँ। पहले तो बहुत बार विष्णु जी ने मना किया, परंतु शिव जी के हठ के सामने स्वीकार किया और कहा कि कभी फिर आना। आज मुझे किसी आवश्यक कार्य से कहीं जाना है। यह कहकर विष्णु जी अपने महल में चले गए। शिव जी ने कहा कि जब तक आप वह रूप नहीं दिखाओगे, मैं भी जाने वाला नहीं हूँ। कुछ ही समय के बाद शिव जी की दष्टि बाग के एक दूर वाले कोने में एक अपसरा पर पड़ी जो सुन्दरता का सूर्य थी। इधर-उधर देखकर शिव जी उसकी ओर चले पड़े, ज्यों-ज्यों निकट गए तो वह सुंदरी अधिक सुंदर लगने लगी और वह अर्धनग्न वस्त्र पहने थी। कभी गुप्तांग वस्त्र से ढ़क जाता तो कभी हवा के झोंके से आधा हट जाता। सुंदरी ऐसे भाव दिखा रही थी कि जैसे उसको कोई नहीं देख रहा। जब शिव जी को निकट देखा तो शर्मसार होकर तेज चाल से चल पड़ी। शिव जी ने भी गति बढ़ा दी। बड़े परिश्रम के पश्चात् तथा घने वक्षों के बीच मोहिनी का हाथ पकड़ पाए। तब तक शिव जी का शुक्रपात हो चुका था। उसी समय सुंदरी वाला स्वरूप श्री विष्णु रूप बन गया था। भगवान विष्णु जी शिव जी की दशा देखकर मुस्काए तथा कहा कि ऐसे उन राक्षसों से अमत छीनकर लाया था। वे राक्षस ऐसे मोहित हुए थे जैसे मेरा छोटा भाई कामजीत अब काम पराजित हो गया। शिव जी ने उसके पश्चात् हिमालय राजा की बेटी पार्वती से अंतिम बार विवाह किया। पार्वती वाली आत्मा वही है जो सती जी थी। पार्वती रूप में अमरनाथ स्थान पर अमर मंत्र शिव जी से प्राप्त करके अमर हुई है।

इस प्रकार वाणी में कहा है कि शंकर जी की समाधि तो अडिग (न डिगने वाली) थी जैसा पौराणिक मानते हैं। वह भी मोहे गए। माया के वश हो गए।(88)

❖ गंधर्व (एक मानव जाति जो गंधर्व गोत्र की है) तथा गण (देवों के नौकर जैसे शिव के गण, गणेश तो है ही गणों का ईश) तथा ज्ञानी मुनि यानि विद्वान कहे जाने वाले ऋषि जी भी (अजब नवेला नेहे) सुंदर युवा स्त्रियों से (अजब) गजब का (अनोखा) प्यार करते हैं। संत गरीबदास जी कह रहे हैं कि उस निज नाम की क्या महिमा करूं जिससे सब संदेह यानि शंकाऐं समाप्त हो गई हैं अर्थात् सतलोक में जाने के पश्चात् जन्म-मरण तथा विकारों से पूर्ण रूप से पीछा छुट सकता है। सतलोक प्राप्ति (मोक्ष की प्राप्ति) निज नाम से होती है। वह निज नाम (सार नाम) मेरे गुरूदेव जी ने मुझे दे दिया। उस निज नाम की क्या महिमा करूं जिसने मेरा कल्याण कर दिया।(89)

❖ जो सुन्न विदेश यानि आकाश में सुन्न में निवास करने वाला प्रदेशी हमारी आँखों में बसा है यानि आँखों का तारा है। उस अलख यानि अव्यक्त (जो दिखाई नहीं देता) की पलक (आँखों के ऊपर उगे बालों को पलक कहते हैं जो सेलियों के नीचे होती हैं) में खलक (संसार) है यानि उस परमेश्वर को भी संसार के सब जीव उतने ही प्यारे हैं, वह भी खलक को अपनी पलकों पर रखता है। सतगुरू के शब्द यानि मोक्ष करने वाले नाम को समझ और

अपना कल्याण करा।(90)

❖ परमेश्वर जो सुन्न में रहने वाला परदेशी है। वह हमारे हृदय में बसा है यानि हम अपने परमेश्वर से बहुत प्यार करते हैं। जिस स्थान पर (सतलोक में) परमेश्वर रहते हैं। वह स्वप्रकाशित है। जैसे हीरा स्वप्रकाशित होता है। वहाँ पर प्रकाश करने के लिए सूर्य की आवश्यकता नहीं है। वहाँ पर दिन-रात (निश=रात्रि, वासर=दिन) नहीं होते।(91)

❖ वही प्रदेशी सतपुरूष हमारे शरीर में बने त्रिकुटी कमल में अन्य रूप में रहता है। उस शरीर की शोभा शंख पदमों की रोशनी जितनी है। सतलोक में परमेश्वर के एक रोम (शरीर के बाल) की छवि करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमाओं जितनी है। पदम की रोशनी तो एक चन्द्रमा जैसी ही होती है। यानि त्रिकुटी पर सतपुरूष कम तेज वाले शरीर में विद्यमान है। (त्रिकुटी तीर का अर्थ है त्रिकुटी के किनारे। यहाँ तीर का अर्थ किनारा है जैसे यमुना के तीर कष्ण बंसी बजाई रे) उस परमेश्वर जी ने कोकिल कीर (कोयल पक्षी) जैसी मधुर वाणी बोल-बोलकर ज्ञान बताया था।(92)

❖ उस परमेश्वर की सत्ता यानि अधिपत्य संहस्र कमल (हजार पंखुड़ी वाले कमल) पर भी है क्योंकि वह कुल का मालिक (वासुदेव) है। संहस्र कमल बाग का भावार्थ है कि जहाँ हजार ज्योतियों का बाग-सा लगा है। उस स्थान का मालिक वास्तव में सतपुरूष (अविगत राम) ही है। जैसे चक्रवर्ती सम्राट के आधीन सर्व राजा तथा उनके सुंदर नगर व निवास भी आते हैं। वे उसी के माने जाते हैं। उस परमेश्वर को प्राप्त करने वाले नामों में एक सोहं नाम भी है। अन्य मंत्र (नाम) भी हैं जिनको तरतीजन यानि क्रमवार (बारी-बारी, एक के बाद दूसरा ऐसे तरतीवार) दिया जाता है। सोहं नाम के जाप में ध्यान लगना ही संतों की समाधि है। इसी में धुन (लगन) लगाते हैं। इसको सहज समाधि कहते हैं।(93)

''सुमरण की महिमा''

❖ गुरू जी से दीक्षा में प्राप्त नाम का जाप करो तो उसकी सफलता तब मानना जब रोम-रोम (शरीर के बाल-बाल भगवन प्यार में) खड़े हो जाऐं। जैसे कोई अच्छी या बुरी सूचना मिलने पर रोमांच होता है। धुन (लगन से उमंग उठे) होए। स्मरण से सुरति-निरति (ध्यान) में ऐसी कल्पना हो कि जैसे मैं आकाश में कुंजमल जो सुक्ष्म शरीर में है, उसमें बैठकर नाम जाप की माला फेर रहा हूँ यानि मेरी आध्यात्मिक (रूहानी) चढ़ाई वहाँ तक हो चुकी है।(94)

❖ वास्तव में बंदगी (विशेष नम्रता से बार-बार झुक-झुककर जाप करने को बंदगी कहते हैं) वह है जब सुरति-निरति यानि ध्यान नाम जाप पर लगे। भावार्थ है कि नाम का जाप विशेष कसक (तड़फ) के साथ लिया जाए। जैसे हाथी ने मरते समय ररंकार भाव से परमात्मा को याद किया था। उस भाव से रमता लखै {रमता (सर्वव्यापक) मालिक को (लखै) देखै कि परमात्मा सब जगह है} सुरति की माला (सुमरणी) बनावै (ध्यान का एक भाव नाम पर तथा तुरंत दूसरा भाव निरबान यानि वांछित मोक्ष पर) यानि निरति को मोक्ष की ओर लगावै। जैसे नाम जपते-जपते कुछ क्षण निर्वाण यानि मोक्ष स्थान (सतलोक) की

भी सुध लेवे कि वहाँ पर जाऐंगे, मौज से रहेंगे, जन्म-मरण का कष्ट नहीं, रोग-शोक नहीं, वहाँ जाऐंगे। फिर लौटकर नहीं आऐंगे। इस प्रकार निरति मिलै निरबान का भावार्थ समझो।(95)

❖ संहस्र कमल भी अष्ट कमल (आठवां कमल) है। यहाँ तक सर्व कमलों में काल का राज्य है। शरीर के अंदर तथा बाहर भी उसकी धुनि साज-बाज बजता है यानि काल का डंका बजता है। जो शरीर में धुन (आवाज-शब्द) सुनाई देती है। ये सब काल की धुन (शब्द, आवाज) हैं। सुन्न का भावार्थ है कि प्रत्येक कमल के आसपास सुन्न (खाली स्थान) है जो प्रत्येक की सीमा का प्रतीक है। परंतु यह काल का जाल है। इस काल लोक में परमेश्वर का भी निवास है, परंतु परमेश्वर केवल दीक्षितों का ही साथ देता है। (हद जीवों से दूर है, बेहदियों के तीर) इस प्रकार उस परमात्मा से जो जुड़े हैं, उनका साथ परमेश्वर देते हैं।(96)

❖ साधक कहता है कि हमारे को तो सब स्थानों पर आप ही दिखाई देते हो। आप ही की शक्ति से सब धुनि आती हैं। सुन्न भी आप ही लगते हो क्योंकि आपकी शक्ति से सब बने हैं। इनमें आप से दूसर (दूसरी वस्तु) कौन है? जो आता-जाता है, वह कौन है? यानि जन्म-मरण हमारा किसलिए है?(97)

❖ उत्तर दिया है कि इस जन्म-मरण का मूल कारण अविद्या यानि तत्वज्ञान का अभाव है। जिस कारण से जन्म-मरण के फेर यानि चक्र को नहीं समझ सके जो कर्मों के कारण हो रहा है। सत्य भक्ति के अभाव से पाँच तत्व तथा पच्चीस प्रकृति अपने स्वभाव से कर्म कराकर जीवन नष्ट करा देती है। फिर अपने-अपने भागों में बाँट ले जाती है।(98)

❖ सत्यनाम बिन यह शरीर रूपी नगर सूना (खाली) है। इस शरीर में इच्छाओं तथा इच्छा पूर्ण न होने की चिंता तथा अन्य दुःख-सुख का ढ़ोल बज रहा है, शोर हो रहा है। जैसे लड़का उत्पन्न हुआ तो खुशी का शोर। उस शोर में भगवान भूल गया। फिर लड़का मर गया। फिर दुःख की रोहा-राट (हाहाकार) रूपी शोर। उस शोर में परमात्मा की भूल। इस प्रकार यह जीवन इस चूं-चूं में समाप्त हो जाता है। कभी धन इकट्ठा करने के विचारों का शोर। इस प्रकार मानव शरीर का मूल कार्य छोड़कर जीवन अंत कर दिया। लूट न लूटि बंदगी यानि राम नाम इकट्ठा नहीं किया। हे हंस, हे भोले मानव! भोर हो गया यानि मृत्यु हो गई। जैसे भोर (सुबह) नींद खुलती है, स्वपन समाप्त होता है तो स्वपन में बना राजा अपनी झौंपड़ी में खटिया पर पड़ा होता है। इसी प्रकार मानव शरीर रहते भक्ति नहीं की तो मृत्यु उपरांत पशु-पक्षी वाली योनि रूपी खटिया पर पड़ा होगा यानि पशु-पक्षी बनकर कष्ट पे कष्ट उठाएगा।(99)

गरीब, अगम निगम को खोज ले, बुद्धि विवेक विचार। उदय–अस्त का राज दे, तो बिन नाम बेगार।100।।

❖ भावार्थ :- संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिया यथार्थ आध्यात्म ज्ञान बताया है कि हे मानव! अगम (भविष्य का यानि आगे के जीवन का) निगम (दुःख रहित होने का) का विवेक वाली बुद्धि यानि विशेष विवेचन करके विचार कर। यदि मानव के पास सत्यनाम गुरू से प्राप्त नहीं है और उदय (जहाँ से पृथ्वी पर सवेरा होता है) अस्त (जहाँ सूरज छिपता है, शाम होती है, वहाँ पर) का राज्य यानि पूरी पृथ्वी का राज्य भी दे दिया

जाए तो वह तो बेगार की तरह है।

बेगार की परिभाषा :- सन् 1970 के आसपास पैट्रोल से चलने वाले बड़े तीन पहियों वाले टैम्पो (Three wheelar Tempo) चले थे। एक दिन एक टैम्पो वाला अपने मार्ग (Route) पर नहीं आया। अगले दिन उससे पूछा कि कल क्यों नहीं आए तो उसने बताया कि कल बेगार में चला गया था। उस समय थानों में जीप आदि गाड़ियाँ नहीं होती थी। यदि पुलिस ने कहीं छापा (रैड) मारना होता तो किसी टैम्पो (Three Wheelar या Four Wheelar) को शाम को थाने में पकड़कर लाते। रात्रि में या दिन में जहाँ भी जाना होता, उसको ले जाते। मालिक ही ड्राईवर होता था या मालिक का किराए का ड्राईवर होता था। तेल (पैट्रोल) भी अपने पास से डलवाते थे। सारी रात-सारा दिन उसको चलाते रहते थे। शाम को देर रात उसे छोड़ते थे। अन्य व्यक्ति देखता तो ऐसे लगता कि टैम्पो वाले ने आज तो घनी कमाई करी होगी क्योंकि दिन-रात चला है, परंतु उस टैम्पो वाले ने बताया कि अपने पास से 200 रूपये (वर्तमान के दस हजार रूपये) तेल में और खाने में खर्च हो गए, किराया एक रूपया नहीं मिला। गाड़ी (टैम्पो) की घिसाई यानि चलने से हुई टूट-फूट, वह अलग खर्च हुआ। बेगार का अर्थ है कि आय बिल्कुल नहीं तथा परिश्रम अधिक होता है। खर्च भी अधिक होता है। इसको बेगार कहते हैं।

इसी प्रकार राजा अपने पूर्व जन्म के तप तथा दान-धर्म से बनता है। राजा बनने पर जो सुख-सुविधाऐं उसे प्राप्त होती हैं, उनमें उस राजा के पुण्य खर्च होते हैं। यदि वह राजा पूरे गुरू से भक्ति के वास्तविक नाम लेकर भक्ति नहीं करता तो उसको पुण्य की कमाई नहीं होती। पुण्य का खर्च राज के ठाठ में दिन-रात समाप्त हो रहा है। जो सत्य भक्ति नहीं करता, वह राजा बेगार कर रहा है।(100)

❖ **वाणी नं. 101 :-**

ऐसा कौन अभागिया, करे भजन को भंग। लोहे से कंचन भया, पारस के सत्संग।।

❖ **भावार्थ :-** दीक्षा लेकर ऐसा दुर्भाग्य वाला कौन है जो अपने नाम को खंडित करके भजन (भक्ति) में भंग डालता है। लोहे से कंचन भया यानि नाम लेने से पहले मानव भी पशु-पक्षी जैसा जीवन जी रहा था। गुरू जी से नाम रूपी पारस से छूकर स्वर्ण (Gold) यानि देवता बना दिया।

गरीब, सतगुरू पशु मानुष करि डारै, सिद्धि देकर ब्रह्म विचारै।
कबीर, बलिहारी गुरू आपने, घड़ी–घड़ी सौ–सौ बार।
मानुष से देवता किया, करत न लागी वार।।

❖ **सरलार्थ :-** वह दीक्षा लेकर महामूर्ख होगा जो पूर्ण संत से दूर होगा और नाम त्यागकर भक्ति करना छोड़ देगा।(101)

❖ **वाणी नं. 102 से 112 :-**

गरीब, पारस तुम्हरा नाम है, लोहा हमरी जात। जड़ सेती जड़ पलटियां, तुमकौ केतिक बात।।102।।
गरीब, बिना भगति क्या होत है, ध्रुवकूं पूछौ जाइ। सवा सेर अन्न पावते, अटल राज दिया ताहि।।103।।
गरीब, बिना भगति क्या होत है, भावैं कासी करौंत लेह। मिटे नहीं मन बासना, बहुबिधि भर्म संदेह।।104।।

गरीब, भगति बिना क्या होत है, भर्म रह्या संसार। रति कंचन पाया नहीं, रावन चलती बार।।105।।
गरीब, संगी सुदामा संत थे, दारिद्रका दरियाव। कंचन महल बकस दिये, तंदुल भेंट चढाव।।106।।
गरीब, दौ कौड़ी का जीव था, सैना जाति गुलाम। भगति हेत गृह आइया, धर्या स्वरूप हजाम।।107।।
गरीब, नामा के बीठ्ठल भये, और कलंदर रूप। गउ जिवाई जगतगुरु, पादसाह जहां भूप।।108।।
गरीब, पीपाकूं परचा हुवा, मिले भगत भगवान। सीता सुधि साबित रहै, द्वारामती निधान।।109।।
गरीब, धना भगति की धुनि लगी, बीज दिया जिन दान। सूका खेत हरा हुवा, कांकर बोई जान।।110।।
गरीब, रैदास रंगीला रंग है, दिये जनेऊ तोड़। जगजौनार चौले धरे, एक रैदास एक गौड।।111।।
गरीब, मांझी मरद कबीर है, जगत करें उपहास। केसौ बनजारा भया, भगत बढाया दास।।112।।

❖ **वाणी नं. 102 का सरलार्थ :- हे परमेश्वर! आपका नाम तो पारस है। हम जीव जाति वाले लोहा समान हैं। जब एक जड़ (पारस पत्थर) के छूने मात्र से जड़ (लोहा सोना बन गया) बदल गया (पलट गया) तो आपके लिए हमारे गुण-धर्म बदलकर देवता बनाने की कितनी बात है यानि कोई बात ही नहीं अर्थात् आप तो हम पर अवश्य कंपा करेंगे।(102)**

❖ **वाणी नं. 103 का सरलार्थ :- ध्रुव भक्त और उसकी माता जी को एक दिन का सवा सेर यानि सवा किलोग्राम अन्न मिलता था खाने को। ध्रुव का पिता उतानपात था। ध्रुव भक्त की मौसी यानि उतानपात की छोटी पत्नी ने अपनी बड़ी बहन सुनिती को अलग घर में सजा के रूप में छुड़वा रखा था। दिन में केवल सवा सेर अन्न खाने को दिया जाता था।**

''ध्रुव की कथा''

राजा उतानपात को अपनी पत्नी सुनीति से विवाह के कई वर्षों पश्चात् तक कोई संतान प्राप्त नहीं हुई। एक दिन नारद जी ने रानी सुनीति से बताया कि राजा का दूसरा विवाह होगा तो आपको भी संतान प्राप्त होगी और उस नई पत्नी को भी संतान प्राप्त होगी। राजा का वंद्ध अवस्था में दूसरा विवाह हुआ। छोटी पत्नी ने नगर की सीमा पर आकर राजा से वचनबद्ध होकर अपनी शर्त मानने पर विवश किया कि मैं तेरे घर तब चलूंगी, जब तू मेरी बहन को जो आपकी पत्नी है, जाते ही घर से निकालकर दूसरे मकान में रखेगा। उसको सवा सेर अन्न खाने को प्रतिदिन देगा तथा मेरे गर्भ से उत्पन्न पुत्र को राज्य देगा। सुनिती ही अपने माता-पिता के पास से जिद करके अपनी छोटी बहन सुरिती को माँगकर लाई थी। सुरिती को दुःख था कि इसने मेरे जीवन से खिलवाड़ किया है कि एक वंद्ध से मेरा विवाह कराया है। राजा ने विवश होकर यह शर्त मान ली। कुछ वर्ष पश्चात् बड़ी रानी सुनिती ने एक लड़के को जन्म दिया। उसका नाम ध्रुव रखा। बाद में छोटी रानी सुरिती को लड़का हुआ। उसका नाम उत्तम रखा।

जब ध्रुव की आयु 5 वर्ष तथा उत्तम की 4 वर्ष की हुई तो उत्तम का जन्मदिन भी कुछ महीने पश्चात् ही था। राजा ने छोटी रानी के कहने से उत्तम का जन्मदिन मनाया। ध्रुव का जन्मदिन ईर्ष्यावश नहीं मनाने दिया। नगर में धूमधाम थी। ध्रुव ने भी अपने घर से जो नगरी से दूर एक बाग में था, जन्मदिन को देखने जाने की जिद की। माता सुनिती ने कहा कि बेटा! तेरा उस नगर में कोई स्थान नहीं है। परंतु ध्रुव बच्चा था, जिद करके चला गया।

राजा सिंहासन पर बैठा था। साथ में रानी बैठी थी। उत्तम अपनी माता के साथ गोड़ों (गोद) में बैठा था। ध्रुव जाकर पिता के गोड़ों में सिंहासन पर बैठ गया। सुरिती को ईर्ष्या तो थी ही, उसने उठकर ध्रुव का हाथ पकड़कर सिंहासन से नीचे गिरा दिया, लात मारी और कहा कि यह स्थान सौतन के पुत्र के लिए नहीं है। इस पर उत्तम का अधिकार है। ध्रुव रोने लगा और पिता की ओर देखने लगा, सोचा कि पिता मुझे बुलाऐगा, फिर से अपने पास बैठाएगा। परंतु ऐसा नहीं हुआ। आसपास अन्य मंत्री बैठे थे। नाच-गाना हो रहा था। सब यह घटना देख रहे थे। ध्रुव रोता हुआ अपनी माँ के पास गया। माता को पहले ही पता था कि बेटे के साथ क्या होगा? आते ही ध्रुव को अपने सीने से लगाया और कहा कि बेटा! मैंने तेरे को इसलिए मना किया था कि तू वहाँ न जा। ध्रुव ने माँ से पूछा कि माँ! राजा कौन बनता है? माता ने कहा कि बेटा! राजा भगवान बनाता है। भगवान कहाँ है? कैसे मिलता है? माता ने स्वाभाविक कह दिया कि भगवान जंगल में तपस्या करने से मिलता है। ध्रुव ने कहा कि माँ! मैं वन में जाकर तपस्या करके भगवान को प्राप्त करके राजा बनूंगा। यह कहकर घर छोड़कर वन की ओर जाने लगा। उसी समय रानी ने नौकर के द्वारा राजा को संदेश भेजा कि ध्रुव जंगल में जाने की जिद कर रहा है, उसको संभाल लो। राजा तुरंत वहाँ पर आया और ध्रुव से कहा कि बेटा! ऐसा न कर। मैं तेरे को आधा राज्य दे दूंगा। ध्रुव ने कहा कि नहीं, आप तो छोटी माता से डरते हो, आप नहीं दे पाओगे। मैं तो भगवान से राज्य प्राप्त करूँगा। यह कहकर रोता हुआ घर त्यागकर चला गया। रास्ते में नारद जी मिले। उन्होंने पूछा कि कहाँ चले? ध्रुव ने कहा कि मेरी मौसी ने मेरे को लात मारकर पिता के पास से भगा दिया। कहा कि इस राज्य पर तेरा अधिकार नहीं है, उत्तम का अधिकार है। माँ ने बताया कि राज्य भगवान देता है। मैं तपस्या करके भगवान को प्राप्त करके राज्य मागूंगा ऋषि जी। नारद ऋषि ने कहा कि पहले गुरू बनाओ। गुरू बिन साधना निष्फल होती है। ध्रुव ने कहा कि आप मेरे गुरू बन जाओ। नारद ने स्वीकार कर लिया और ध्रुव को दीक्षा दी। ध्रुव ने एक पैर पर खड़ा होकर साधना की, घोर तप किया। खाना-पीना भी कुछ नहीं किया।

बालक का हठ तथा पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति के कारण छठे महीने परमात्मा प्रकट हुए। ध्रुव से कहा कि माँगो बालक! क्या माँगता है? ध्रुव ने कहा कि मुझे अटल राज्य दे दो। भगवान ने कहा कि तेरे को स्वर्ग में राज्य दूँगा। जीवन भर भक्ति कर, घर पर जा। ध्रुव घर पर आ गया। ध्रुव की भक्ति के कारण छोटी माता भी कुछ नम्र हुई और अपनी बड़ी बहन को सामान्य जीवन जीने की आज्ञा दे दी। उत्तम का विवाह हो गया। राज्य भी उत्तम को दिया गया। ध्रुव का भी विवाह हो गया। एक बार गंधर्वों के साथ उत्तम का युद्ध हुआ। युद्ध में उत्तम की मत्यु हो गई। ध्रुव को पता चला तो गंधर्वो के साथ युद्ध करके विजय प्राप्त की। उत्तम की मत्यु के पश्चात् पथ्वी का राज्य भी ध्रुव को प्राप्त हुआ तथा उत्तम की पत्नी भी ध्रुव को दी गई। इस प्रकार ध्रुव भक्त को भक्ति करके अटल राज्य स्वर्ग का मिला तथा पथ्वी का राज्य भी मिला। सुरिती को कर्म की सजा भी मिली जिसने अपनी छोटी बहन को सताया था। अपने पुत्र को राजा देखना चाहती थी। वह बेटा भी नहीं रहा। जीवन नरक बना लिया।

वाणी का यही भावार्थ है कि भक्ति के बिना क्या जीवन है, ध्रुव भक्त की कथा इसकी गवाह है। कहाँ तो माँ तथा बेटों को कुल सवा किलोग्राम (1250 ग्राम) अन्न मिलता था। लुखी-सूखी रोटी खाते थे। भक्ति करने से पथ्वी तथा स्वर्ग का राज्य प्राप्त हुआ। जीवन रहा तब तक पथ्वी पर राज्य किया, मत्यु के पश्चात् स्वर्ग में एक ध्रुव मण्डल बनाया। उस नगरी पर ध्रुव ने राज्य किया।

स्पष्टीकरण :- ध्रुव ने जो हठयोग किया था। उससे उसको केवल पूर्व जन्म के संस्कार का ही मिलना था जैसे पाली को भैंस के सींग में परमात्मा मिल गया था। ध्रुव जब बड़े हुए, तब उनको शास्त्रों का ज्ञान हुआ तो शास्त्रविधि अनुसार भक्ति की। उसका फल फिर किसी जन्म में मिलेगा। पहले ध्रुव स्वर्ग के राज्य का समय पूरा करेगा। फिर पथ्वी पर मानव जन्म प्राप्त करेगा। फिर कोई सतलोक का मार्गदर्शक संत मिला तो मुक्ति होगी नहीं तो चौरासी लाख प्राणियों के जीवन को प्राप्त होगा।(103)

❖ वाणी नं. 104 का सरलार्थ :- काशी नगर भक्ति का केन्द्र माना जाता था। ब्राह्मणों ने एक भ्रम फैला रखा था कि जो काशी में करौंत से अपना सिर कटा लेगा, वह सीधा स्वर्ग जाएगा।

''काशी में करौंत की स्थापना की कथा''

शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करने यानि शास्त्रों में लिखी भक्ति विधि अनुसार साधना न करने से गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में लिखा है कि उस साधक को न तो सुख की प्राप्ति होती है, न भक्ति की शक्ति (सिद्धि) प्राप्त होती है, न उसकी गति (मुक्ति) होती है अर्थात् व्यर्थ प्रयत्न है। हिन्दु धर्म के धर्मगुरू जो साधना साधक समाज को बताते हैं, वह शास्त्र प्रमाणित नहीं है। जिस कारण से साधकों को परमात्मा की ओर से कोई लाभ नहीं मिला जो भक्ति से अपेक्षित किया। फिर धर्मगुरूओं ने एक योजना बनाई कि भगवान शिव का आदेश हुआ है कि जो काशी नगर में प्राण त्यागेगा, उसके लिए स्वर्ग का द्वार खुल जाएगा। वह बिना रोक-टोक के स्वर्ग चला जाएगा। जो मगहर नगर (गोरखपुर के पास उत्तरप्रदेश में) वर्तमान में जिला-संत कबीर नगर (उत्तर प्रदेश) में है, उसमें मरेगा, वह नरक जाएगा या गधे का शरीर प्राप्त करेगा। गुरूजनों की प्रत्येक आज्ञा का पालन करना अनुयाईयों का परम धर्म माना गया है। इसलिए हिन्दु लोग अपने-अपने माता-पिता को आयु के अंतिम समय में काशी (बनारस) शहर में किराए पर मकान लेकर छोड़ने लगे। यह क्रिया धनी लोग अधिक करते थे। धर्मगुरूओं ने देखा कि जो यजमान काशी में रहने लगे हैं, उनको अन्य गुरूजन भ्रमित करके अनुयाई बनाने लगे हैं। काशी, गया, हरिद्वार आदि-आदि धार्मिक स्थलों पर धर्मगुरूओं (ब्राह्मणों) ने अपना-अपना क्षेत्र बाँट रखा है। यदि कोई गुरू अन्य गुरू के क्षेत्र वाले यजमान का क्रियाकर्म कर देता है तो वे झगड़ा कर देते हैं। मारपीट तक की नौबत आ जाती है। वे कहते हैं कि हमारी तो यही खेती है, हमारा निर्वाह इसी पर निर्भर है। हमारी सीमा है। इसी कारण से काशी के शास्त्रविरूद्ध साधना कराने वाले ब्राह्मणों ने अपने यजमानों से कहा कि आप अपने माता-पिता को हमारे घर रखो। जो खर्च आपका मकान के किराए में तथा खाने-पीने में होता है, वह हमें दक्षिणा रूप

में देते रहना। हम इनकी देखरेख करेंगे। इनको कथा भी सुनाया करेंगे। उनके परिवार वालों को यह सुझाव अति उत्तम लगा और ब्राह्मणों के घर अपने वृद्ध माता-पिता को छोड़ने लगे और ब्राह्मणों को खर्चे से अधिक दक्षिणा देने लगे। इस प्रकार एक ब्राह्मण के घर प्रारम्भ में चार या पाँच वृद्ध रहे। अच्छी व्यवस्था देखकर सबने अपने वृद्धों को काशी में गुरूओं के घर छोड़ दिया। गुरूओं ने लालच में आकर यह आफत अपने गले में डाल तो ली, परंतु संभालना कठिन हो गया। वहाँ तो दस-दस वृद्ध जमा हो गए। कोई वस्त्रों में पेशाब कर देता, कोई शौच आँगन में कर देता। यह समस्या काशी के सर्व ब्राह्मणों को थी। तंग आकर एक षड़यंत्र रचा। गंगा दरिया के किनारे एकान्त स्थान पर एक नया घाट बनाया। उस पर एक डाट (Arch) आकार की गुफा बनाई। उसके बीच के ऊपर वाले भाग में एक लकड़ी चीरने का आरा यानि करौंत दूर से लंबे रस्सों से संचालित लगाया। उस करौंत को पृथ्वी के अंदर (Underground) रस्सों से लगभग सौ फुट दूर से मानव चलाते थे। ब्राह्मणों ने इसी योजना के तहत नया समाचार अपने अनुयाईयों को बताया कि परमात्मा का आदेश आया है। पवित्र गंगा दरिया के किनारे एक करौंत परमात्मा का भेजा आता है। जो शीघ्र स्वर्ग जाना चाहता है, वह करौंत से मुक्ति ले सकता है। उसकी दक्षिणा भी बता दी। वृद्ध व्यक्ति अपनी जिंदगी से तंग आकर अपने पुत्रों से कह देते कि पुत्रो! एक दिन तो भगवान के घर जाना ही है, हमारा उद्धार शीघ्र करवा दो। इस प्रकार यह परंपरा जोर पकड़ गई। बच्चे-बच्चे की जुबान पर यह परमात्मा का चमत्कार चढ़ गया। अपने-अपने वृद्धों को उस करौंत से कटाकर मुक्ति मान ली। यह धारणा बहुत दृढ़ हो गई। कभी-कभी उस करौंत का रस्सा अड़ जाता तो उस मरने वाले से कह दिया जाता था कि तेरे लिए प्रभु का आदेश नहीं आया है। एक सप्ताह बाद फिर से किस्मत आजमाना। इस तरह की घटनाओं से जनता को और अधिक विश्वास होता चला गया। जिसके नम्बर पर करौंत नहीं आता था, वह दुःखी होता था। अपनी किस्मत को कोसता था। मेरा पाप कितना अधिक है। मुझे परमात्मा कब स्वीकार करेगा? वे पाखण्डी उसकी हिम्मत बढ़ाते हुए कहते थे कि चिन्ता न कर, एक-दो दिन में तेरा दो बार नम्बर लगा देंगे। तब तक रस्सा ठीक कर लेते थे और हत्या का काम जारी रखते थे। इसको काशी में करौंत लेना कहते थे और गारण्टिड (Guaranteed=जिम्मेदारी व विश्वास के साथ) मुक्ति होना मानते थे। स्वर्ग प्राप्ति का सरल तथा जिम्मेदारी के साथ होना माना जाता था जबकि यह अत्यंत निन्दनीय अपराधिक कार्य था।

इसीलिए वाणी नं. 104 में कहा है कि शास्त्र अनुकूल भक्ति के बिना कुछ भी लाभ नहीं होगा चाहे काशी में करौंत से गर्दन भी कटवा लो। कुछ बुद्धिजीवी व्यक्ति विचार किया करते थे कि स्वर्ग प्राप्ति के लिए तो राजाओं ने राज्य त्यागा। जंगल में जाकर कठिन तपस्या की। शरीर के नष्ट होने की भी चिंता नहीं की। यदि स्वर्ग प्राप्त करना इतना सरल था तो यह विधि सत्य युग से ही प्रचलित होती। यह तो सबसे सरल है। सारी आयु कुछ भी करो। वृद्ध अवस्था में काशी में निवास करो या करौंत से शीघ्र मरो और स्वर्ग में मौज करो। इसलिए वाणी नं. 104 में कहा है कि इससे भी कई शंकाऐं बनी रहती थी। यह विधि भी संदेह के घेरे में थी। यदि इतना ही मोक्ष मार्ग है तो गीता जैसे ग्रन्थ में लिखा होता। ऐसी शास्त्रविरूद्ध

क्रिया से मन के विकार भी समाप्त नहीं होते। विकारी जीव का मोक्ष होना बताना, संदेह स्पष्ट है।(104)

❖ वाणी नं. 105 का सरलार्थ :- श्रीलंका का राजा रावण भी हठ करके तप करता था। उसने अपना सिर धड़ से काटकर दोनों हाथों से नीचे से काटकर भगवान तमगुण शिव को दस बार चढ़ाया था। फिर भगवान ने उसको दस बार जीवित करके पूछा कि क्या चाहता है भक्त? रावण ने सिद्धि-धन तथा लंका का राज्य माँगा। वह दे दिया। पूर्ण परमात्मा की सत्य भक्ति बिना ऐसे जीवन नष्ट हो जाता है। रावण ने सोने (Gold) के मकान बना रखे थे। ऐसो-आराम के सब साधन प्राप्त कर लिये। तेतीस करोड़ देवताओं को अपनी कैद में डाल रखा था। अहंकार से भरकर अत्याचार करता था। श्री रामचन्द्र की पत्नी सीता का अपहरण किया। राम तथा रावण का युद्ध हुआ। रावण की युद्ध में मत्यु हो गई। सब सोना (कंचन) यहीं छोड़कर चला गया, एक रती (एक ग्राम) स्वर्ण भी साथ लेकर नहीं गया। इसलिए बताया है कि भक्ति के बिना कुछ लाभ नहीं होता। संसार से तत्वज्ञान के अभाव से शास्त्रविरूद्ध भक्ति करके भी निराश जाता है। गलत साधनाओं में भटक रहा है। जैसे रावण ने शास्त्रविरूद्ध तमगुण शिव की भक्ति भी की और शीश भी चढ़ाया, परंतु मोक्ष नहीं मिला और खाली हाथ संसार से गया।(105)

❖ वाणी नं. 106 का सरलार्थ :-

कथा :- ''सुदामा जी को धनी बनाया''

श्री कष्ण जी तथा ब्राह्मण सुदामा जी सहपाठी (Class Fellow) थे। शिक्षा काल में दोनों की घनिष्ठ मित्रता थी। शिक्षा उपरांत श्री कष्ण जी द्वारिका के राजा बने। सुदामा जी अपना पारंपरिक कार्य कर्मकाण्ड करके यजमानी करने लगे। वे वास्तव में ब्राह्मण थे। ग्रन्थों के ज्ञान के अनुसार अपने जीवन को चलाते थे। परंतु ऋषियों को ही ग्रन्थों के गूढ़ रहस्य का ज्ञान नहीं था। इस कारण से साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण जो गुरूजनों ने बताया हुआ था, वही करते थे जिससे वर्तमान में कोई लाभ नहीं हो रहा था। श्री सुदामा जी किसी यजमान को भ्रमित करके रूपये या अन्य पदार्थ नहीं लेते थे। केवल अपना व परिवार का भोजन तथा कपड़े यदि आवश्यकता हुई तो लेते थे। कुछ दिन कोई क्रियाकर्म करवाने वाला नहीं आया। भोजन की समस्या पूरे परिवार को हो गई। सुदामा जी की पत्नी ने कहा कि आपके चार पुत्र छोटे-छोटे हैं। भूख से बेहाल हैं। आप कहते हो कि द्वारिकाधीश श्री कष्ण मेरे मित्र हैं। वे द्वारिका के राजा हैं। आप कुछ धन माँग लाओ। वे आपको मना नहीं करेंगे क्योंकि आप कहते हो कि शिक्षा काल में वे आपके परम मित्र थे। वे आपके साथ घर आते थे और इकट्ठा खाना खाते थे। सुदामा जी ने कहा कि ब्राह्मण माँगता नहीं। अपने कार्य कर्मकाण्ड करके दक्षिणा ले सकता है। श्री कष्ण मेरे यजमान भी नहीं हैं। इसलिए मेरा सिर नीचा हो जाएगा। यदि मित्रता समाप्त करनी हो तो मित्र से कहो, कुछ दो। यह गलती सुदामा विप्र नहीं कर सकता, भूखा मर सकता है।

शास्त्रों में लिखा है कि जिसने पूर्व जन्म में दान-धर्म नहीं किया। वह अगले जन्म में

निर्धन रहता है। मैंने पूर्व जन्म में कोई दान नहीं किया होगा। इसलिए मैं निर्धन हूँ। मुझे धन नहीं मिल सकता। पत्नी ने चारों पुत्रों को उसके सामने खड़ा कर दिया जो एक रोटी को एक-दूसरे से छीनने की कोशिश कर रहे थे जो मिसरानी ने छुपा रखी थी जो रात को बासी बची थी। यह सोचा था कि एक का भी पेट नहीं भरेगा, कौन-से बच्चे को दूँ। इसलिए उसको छुपा रखा था। वह एक लड़के के हाथ लग गई थी। उससे अन्य छीना-झपटी कर रहे थे। मिसरानी ने कहा कि आप इन बच्चों के लिए माँग लाओ। वह दृश्य देखकर सुदामा एकान्त में जाकर परमात्मा से विनय करने लगा तथा आँखों में पानी भर आया। हे प्रभु! ये क्या दिन देख रहा हूँ। मुझे पूर्व जन्म में कोई मार्गदर्शक ठीक नहीं मिला। जिस कारण से मैंने दान नहीं किया है। हे प्रभु! मुझसे ये भूखे बच्चे देखे नहीं जाते। या तो मुझे मार दो या फिर इन चारों को अपने पास बुला लो। इतने में परमेश्वर कबीर जी एक यजमान का रूप धारण करके आए और ढ़ेर सारा सूखा सीधा (आटा, चावल, दाल, खाण्ड, घी नमक-मिर्च, बच्चों के कपड़े) देकर चले गए। ब्राह्मणी ने तुरंत भोजन बनाया। बच्चों को परोसा। इतने में सुदामा जी आँसू पौंछकर रसोई की ओर गया तो बच्चे खाना खा रहे थे। पूछने पर पता चला कि कोई भक्त आया था। यह सामान दान कर गया है। सुदामा जी ने पूछा कि क्या नाम बताया था? पत्नी ने कहा कि दामोदर नाम बताया था। सुदामा जी ने अपने दिमाग पर जोर दिया तो कोई भी दामोदर नाम का यजमान उनका नहीं था। उस नाम का कोई भी व्यक्ति नगरी में भी नहीं था। उस दिन के अतिरिक्त तीन दिन का राशन पूरे परिवार का था। पत्नी ने फिर आग्रह किया कि आप श्री कृष्ण जी से कुछ माँगकर ले आओ तो सुदामा ने हाँ कर दी। परंतु मन में यही था कि जाकर आ जाऊँगा, माँगूगा नहीं। किसी मित्र या रिश्तेदारी में जाते समय उनके लिए घर से कुछ मिठाई बनवाकर ले जाने की परंपरा थी। उसके स्थान पर पत्नी ने तीन मुठ्ठी यानि 250 ग्राम चावल भूनकर भक्त की चद्दर के पल्ले से बाँध दिए। सुदामा जी द्वारिका में तीसरे दिन शाम को पहुँचा। मैले कपड़े, टूटी जूती, एक भिखारी जैसे वेश में श्री कृष्ण जी के राजभवन के सामने द्वार पर खड़ा हो गया और द्वारपाल से अंदर जाने के लिए आज्ञा चाही तो द्वारपाल ने परिचय पूछा। कौन हो? क्या नाम है? कहाँ से आए हो? क्या काम है? यह राजा का राजभवन है। आपको किससे मिलना है? सुदामा जी ने अपना परिचय दिया। फिर द्वारपाल ने कहा कि पहले हम महाराज जी से आज्ञा लेकर आएंगे, यदि आज्ञा हुई तो आपको मिलाऐंगे।

द्वारपाल ने श्री कृष्ण जी को सब पता बताया तो श्री कृष्ण नंगे पैरों सिंहासन छोड़कर दौड़े-दौड़े आए और मैले धूल भरे कपड़ों समेत सुदामा जी को गले से लगा लिया और सिंहासन पर बैठा दिया। फिर अपने हाथों सुदामा जी के पैर धोए। नहाया, नए कपड़े पहनाए। कई प्रकार का भोजन बनवाया। खाने के लिए जो चावल सुदामा जी लाए थे, उनको बड़ी रूचि के साथ श्री कृष्ण जी ने खाया। सुदामा जी के खाने के लिए कई प्लेटों में हलवा-खीर, कई सब्जी-रोटी सामने रख दी। सुदामा जी को अपने घर का दृश्य याद आया कि आज शाम का खाना घर पर नहीं है। बच्चे भूखे बैठे हैं, रो रहे होंगे। माँ रोटी-माँ रोटी कह रहे होंगे। मैं ये पकवान कैसे खाऊँ? यदि नहीं खाऊँगा तो श्री कृष्ण जी को पता

चलेगा कि मैं कुछ माँगने आया हूँ। इसलिए एक ग्रास लेकर धीरे-धीरे खाने लगा। ऊंगलियों को बार-बार मुख में चाटकर समय बिताने लगा। परंतु श्री कृष्ण की दृष्टि तो मित्र के मुख कमल पर थी। सब हाव-भाव देख रहे थे। कहा खाले, खाले यार सुदामा! क्यों उंगली चाटै है? सुदामा जी ने दो रोटी खाई तथा खीर-हलवा नाममात्र खाया और हाथ धोकर बैठ गया। श्री कृष्ण जी ने पूछा कि बच्चे तथा भाभी जी कुशल हैं। निर्वाह ठीक चल रहा है। सुदामा जी ने कहा कि :-

तेरी दया से है भगवन, हमको सुख सारा है। किसी वस्तु की कमी नहीं, मेरा ठीक गुजारा है।।

श्री कृष्ण जी तो समझ चुके थे कि यह मर जाएगा, माँगेगा नहीं। उसी समय सुदामा जी को दूसरे कक्ष में विश्राम के लिए निवेदन किया और राजदरबार में जाकर विश्वकर्मा जी को बुलाया जो मुख्य इन्जीनियर था तथा सुदामा जी का पूरा पता लिखाकर उसका सुंदर महल बनाने का आदेश दिया तथा कहा कि लाखों रूपये का धन ले जा जो भक्त के घर रख आना। यह कार्य एक सप्ताह में होना चाहिए। विश्वकर्मा जी ने छः दिन में कार्य सम्पूर्ण करके रिपोर्ट दे दी। सुदामा जी प्रतिदिन चलने के लिए कहते तो श्री कृष्ण जी विशेष विनय करके रोके रहे। सातवें दिन सुदामा चल पड़ा, नए बहुमूल्य वस्त्र पहने हुए थे। रास्ते में सोचता हुआ आ रहा था कि कृष्ण मेरे से पूछ रहा था कि किसी वस्तु का अभाव तो नहीं है। क्या उसको दिखाई नहीं दे रहा था कि मेरा क्या हाल है? वही बात सही हुई कि मित्रता समान हैसियत वालों की निभती है। इतनी देर में जंगली भीलों ने रास्ता रोक लिया और कहा कि निकाल दे जो कुछ ले रखा है। सुदामा जी ने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है। भीलों ने तलाशी ली तो कुछ नहीं मिला। सुदामा जी के कीमती धोती-कुर्ता छीन ले गए, उनको नंगा छोड़ गए। सुदामा जी को यह सजा अविश्वास की मिली थी।

शाम को सूर्य अस्त के बाद अपनी झोंपड़ी से थोड़ी दूरी पर अंधेरे में एक वृक्ष के नीचे खड़ा होकर देखने लगा तो देखा कि झोंपड़ी उखाड़कर फैंक रखी है। उसके स्थान पर आलीशान महल दो मंजिल का बना है। सुदामा जी दुःखी हुए कि किसी ने झोंपड़ी (कुटिया) भी उखाड़ दी और कब्जा करके अपना मकान बना लिया। बच्चे तथा पत्नी पता नहीं कहाँ भूख के मारे डूबकर मर गए होंगे। अब जीवित रहकर क्या करना है? मैं भी दरिया में समाधि लेकर जीवन अंत करता हूँ। यदि परिवार जीवित भी होगा तो भूख के मारे तड़फ रहा होगा। मेरे से देखा नहीं जाएगा। वहाँ से चलने वाला था। उसकी पत्नी महल पर खड़ी होकर अपने पति जी के आने की बाट देख रही थी। वह विचार कर रही थी कि विप्र जी अपनी झोंपड़ी को न पाकर कुछ बुरी न सोच लें। इसलिए द्वारिका के रास्ते पर टकटकी लगाए खड़ी थी। उसने उसी समय एक व्यक्ति अंधेरे में खड़ा महसूस हुआ। मिसरानी शीघ्रता से दीपक लेकर उस ओर चली। सुदामा जी वृक्ष की ओट में होकर देखने लगा कि यह स्त्री कौन है? दीपक लेकर कहाँ जाएगी? दीपक की रोशनी में सुदामा ने अपनी पत्नी को पहचान लिया। परंतु महल से आई है, यह क्या माजरा है? सुदामा जी ने कहा कि दीपक बुझाओ, मैं नंगा हूँ। रास्ते में भीलों ने मेरे वस्त्र छीन लिए जो श्री कृष्ण जी ने नए बहुत कीमती बनवाए थे। पंडितानी ने दीपक बुझा दिया। सुदामा ने पूछा कि यह महल किसने बना दिया? अपनी

झोंपड़ी किसने उखाड़ दी? आप किसके महल से आई हो? नौकरानी का कार्य करने लगी हो क्या? पंडितानी ने कहा कि हे स्वामी! यह महल आपके मित्र कष्ण ने बनवाया है। आपके जाने के चौथे दिन सैंकड़ों कारीगर आए, साथ में बैलों पर पत्थर-ईटें, चूना तथा अन्न-धन लादकर लाए थे। छः दिन में सम्पूर्ण करके चले गए। आओ! यह आपका महल है। महल में आकर देखा तो अन्न-धन से भरपूर था। जीवनभर का सामान था। पंडितानी ने पूछा कि आपके कपड़े क्यों उतारे? आपके पास कुछ था ही नहीं, पुराने वस्त्र थे। उनका भील क्या करेंगे? तब सुदामा ने सारी घटना बताई तथा अपने उस घटिया विचार की भी जानकारी दी जो मित्र के प्रति आया था कि मेरे से कष्ण पूछ रहा था कि घर में किसी वस्तु की कमी तो नहीं है। गुजारा ठीक चल रहा है क्या? मैंने कह दिया था कि आपकी कपा से सब कुशल है। किसी वस्तु की कमी नहीं है। निर्वाह ठीक चल रहा है। पत्नी ने कहा कि आप कहाँ माँगने वाले हो, वे तो अंतर्यामी हैं। सब जान गए थे। सुदामा जी ने कहा कि सब जान गए थे। इसलिए तो मेरे वस्त्र भी छिनवा दिए। मैं विचार करता जा रहा था कि देखा! मित्र मेरे से पूछ रहा था कि सब ठीक तो है। किसी वस्तु की कमी तो नहीं है। मैं सोच रहा था कि क्या उसको मेरी दशा देखकर यह नहीं पता था कि यह दशा क्या ठीक-ठाक की होती है। ठीक ही कहा है कि मित्रता तो समान हैसियत वालों की निभती है। मैंने तो इतना विचार किया ही था कि उसी समय मेरे वस्त्र भी लूट लिए गए। तब मिसरानी ने कहा कि आपकी परीक्षा ली थी, परंतु आप यहीं पर चूके थे, उसी का झटका आपको दिया। अब देख तेरे मित्र का कमाल। बच्चों के वस्त्र राजाओं जैसे हैं। चार सिपाही चारों कोनों पर रखवाली कर रहे हैं। वाणी नं. 106 में यही कहा है कि संत सुदामा श्री कष्ण के संगी यानि मित्र थे जो दारिद्र (टोटे यानि निर्धनता) की द्ररिया (नदी) यानि अत्यधिक निर्धन व्यक्ति था। उसके चावल खाकर कंचन (स्वर्ण) के महल बख्श दिए यानि निःशुल्क (मुफ्त में) दे दिए।(106)

विचार :- श्री कष्ण जी राजा थे। अपने मित्र की इतनी सहायता करना एक राजा के लिए कोई बड़ी बात नहीं है। इतनी सहायता तो एक प्रान्त का मंत्री अपने मित्र की आसानी से कर सकता है।

परमेश्वर कबीर जी ने एक अति निर्धन मुसलमान लुहार तैमूरलंग की एक रोटी खाकर सात पीढ़ी का राज्य बख्श दिया था। उसी जीवन में तैमूरलंग राजा बना जिसका राज्य विशाल था। दिल्ली की राजधानी पर उसने अपना प्रतिनिधि छोड़ा था। उनकी मत्यु के उपरांत कुछ समय दिल्ली की गद्दी पर अन्य ने कब्जा कर लिया था। फिर तैमूरलंग के पोते बाबर ने दिल्ली पर कब्जा कर लिया। पहले तैमूरलंग का प्रतिनिधि दिल्ली पर बैठा रखा था, उसकी तीसरी पीढ़ी ने अपने आपको स्वतंत्र घोषित कर दिया। तब बाबर ने लड़ाई करके दिल्ली का राज्य प्राप्त किया। बाबर से औरंगजेब तक छः पीढ़ी तथा प्रथम तैमूरलंग, इस प्रकार कुल सात पीढ़ी का राज्य परमेश्वर कबीर जी ने तैमूरलंग को दिया।

1. तैमूरलंग 2. पोता बाबर। 3. हिमायुं पुत्र बाबर 4. अकबर पुत्र हिमायुं 5. जहांगीर पुत्र अकबर 6. शाहजहाँ पुत्र जहांगीर 7. औरंगजेब पुत्र शाहजहाँ।

विशेष भिन्नता :- जन्म-मरण का कष्ट न श्री कष्ण का समाप्त है, न सुदामा का हुआ।

दोनों ही आगे के जन्मों में अन्य प्राणियों के शरीरों में जाऐंगे।

तैमूरलंग को सात पीढ़ी का राज्य भी मिला और मोक्ष भी मिला। सहायता में इतना अंतर समझें। जैसे सहायता एक तो प्रान्त का मंत्री करे, दूसरा देश का प्रधानमंत्री करे। कबीर जी यानि सतपुरूष को प्रधानमंत्री जानो और श्री कष्ण जी (श्री विष्णु जी) को प्रान्त का मंत्री जानो। फिर भी बात भक्ति की चल रही है। कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, जो जाकी शरणा बसै, ताको ताकी लाज। जल सोंही मछली चढ़ै, बह जाते गजराज।।

❖ वाणी नं. 107 का सरलार्थ :-

''भक्त नंदा नाई (सैन) की कथा''

नाई समुदाय में एक महान भक्त नंदा जी हुए हैं। नाई को सैन भी कहते हैं। वे परमात्मा की धुन (लगन) में लगे रहते थे। राजा के निजी नाई थे। प्रतिदिन राजा की हजामत करने (दाढ़ी काटने) जाया करते थे। राजा के सिर की मालिश करने भी जाते थे। भक्त नंदा जी एक दिन भगवान की भक्ति में इतना मग्न हो गया कि उसको ध्यान नहीं रहा कि मैंने राजा की हजामत करने जाना था। राजा की सेव (दाढ़ी बनाने) करने जाने का निर्धारित समय था। वह समय जा चुका था। दो घण्टे देर हो चुकी थी। राजाओं की जुबान पर दण्ड रहता था। जो भी नौकर जरा-सी गलती करता था तो उसको बेरहमी (निर्दयता) से कोड़ों से पीटा जाता था। अचेत होने पर छोड़ा जाता था। शरीर की खाल उतर जाती थी। रो-रोकर बेहोश हो जाता था। यह दश्य (Seen) भक्त नंदा कई नौकरों के साथ देख चुके थे। आज उनको वही भय सता रहा था। काँपते-काँपते राजा के निवास पर पहुँचे। राजा के पैरों में गिरकर देर से आने की क्षमा याचना करने लगा। कहा कि माई-बाप आगे से कभी गलती नहीं करूँगा। भक्त ने देखा कि राजा की दाढ़ी बनाई हुई थी। सिर में मालिश भी कर रखी थी। भक्त सैन को समझते देर नहीं लगी कि किसी अन्य नाई से हजामत तथा मालिश कराई है। राजा ने पूछा कि हे हजाम (हजामत करने वाला यानि नाई)! आप क्या कह रहे हो? आप पागल हो गये हो क्या? भक्त नंदा जी ने कहा, महाराज! आज मुझे ध्यान ही नहीं रहा, मैं भूल गया। मैं आपके दाढ़ी बनाने के समय पर नहीं आया। जीवन में पहली व अंतिम गलती है। कभी नहीं करूँगा। उसका विलाप सुनकर रानी तथा अन्य मंत्री भी आ गए थे। राजा ने कहा कि सैन! आप अभी-अभी दाढ़ी बनाकर सिर में मालिश करके गए हो। आप क्या कह रहे हो? आप देर से आए हो। क्या नींद में बोल रहे हो? भक्त नंदा जी ने कहा कि नहीं महाराज! आपने किसी अन्य नाई से हजामत कराई है। मैं तो अभी-अभी आया हूँ। राजा ने सैन भक्त के घर पर मंत्री भेजकर पता कराया तो उनकी पत्नी भी रो रही थी कि आज पति देर से गए हैं, उनको दण्ड दिया जा रहा होगा। मंत्री ने पूछा कि क्यों रो रही हो बहन? भक्तमति ने बताया कि मेरे से गलती हो गई। मैंने भक्त को याद नहीं दिलाया। भक्ति पर बैठने से पहले भक्त ने कहा था कि कुछ समय पश्चात् मुझे याद दिलाना कि राजा की सेवा करने जाना है। मैं भी भूल गई, भक्त भी भक्ति में व्यस्त थे। दो घण्टे बाद उठे तो याद आया। उनकी नौकरी जाएगी तो हम क्या खाऐंगे? बच्चे भूखे मर जाऐंगे। पति को दण्ड

मिलेगा। मंत्री जी तुरंत वापिस आए और राजा से बताया कि वास्तव में नंदा तो देर से अभी आया है। इनके रूप में कोई और आया था जो आपकी हजामत तथा मालिश करके चला गया। यह बात सुनकर राजा को समझते देर नहीं लगी कि भक्त सैन के रूप में भगवान आए थे। राजा सिंहासन से नीचे आया और भक्त सैन जी को सीने से लगाया और कहा कि भक्त! मैं तेरे को सेवा से मुक्त करता हूँ। तेरे को राजदरबार में दरबारी रखता हूँ। मेरे को दोष लगा है कि भक्त के स्थान पर भगवान ने मेरी दाढ़ी बनाई, सिर की मालिश की। मैं इस पाप को कैसे धो पाऊँगा? नंदा जी भी समझ गए कि मेरे कारण परमात्मा को कष्ट हुआ तो और जोर-जोर से रोने लगे कि हे परवरदिगार! मुझ दो कोड़ी के दास के कारण आप स्वर्ग छोड़कर हजाम (नाई=सैन) बने। मुझे उठा देते भगवान। आपको कष्ट उठाना नहीं पड़ता। मैं समय पर आ जाता। इसलिए वाणी के माध्यम से बताया है कि सच्चे भक्त पर परमात्मा ऐसे कृपा करते हैं।(107)

❖ वाणी नं. 108 का सरलार्थ :- इस वाणी में महाराष्ट्र के भक्त नामदेव जी पर परमात्मा की कृपा का वर्णन है :-

''संत नामदेव जी पर प्रभु कृपा''

कथा :- संत नामदेव जी का जन्म सन् 1270 (विक्रमी संवत् 1327) में छीपा जाति में गाँव-पुण्डरपुर, जिला-सतारा (महाराष्ट्र प्रान्त) में हुआ। स्थानीय गुरूओं के विरोध के कारण नामदेव जी महाराष्ट्र त्यागकर हरिद्वार चले गए। उस समय दिल्ली का सम्राट मोहम्मद बिन तुगलक था। सन् 1325 में किसी ने राजा से कहा कि एक हिन्दु संत नामदेव हिन्दु धर्म का प्रचार कर रहा है। उसके विषय में सुना है कि वह पत्थर की मूर्ति में प्राण स्थापित करके दूध पिला देता है आदि-आदि। राजा ने परीक्षा करने के लिए संत नामदेव जी को दिल्ली बुलाया। राजा के सिपाही संत जी को बाँधकर ले गए। एक गाय को तलवार से गर्दन से काटा गया और संत नामदेव से कहा कि तू जनता को भ्रमित करता फिरता है। इस गाय को जीवित कर नहीं तो तेरे को मृत्यु दंड दिया जाएगा। संत नामदेव जी ने परमेश्वर से रक्षार्थ हृदय से पुकार की। उसी समय गाय जीवित हो गई। नामदेव को गुरू जी के साक्षात दर्शन हुए। गाय जीवित करके अंतर्ध्यान हो गए। मोहम्मद बिन तुगलक ने संत जी से क्षमा याचना की और छोड़ दिया।

इस घटना से पहले गाँव पुण्डरपुर में कुछ चमत्कार हुए :-

''बिठल भगवान की मूर्ति को दूध पिलाना''

भक्त नामदेव जी के माता-पिता जी बिठल {श्री विष्णु जी जो एक ईंट (**Brick**) पर खड़े हुए की पत्थर या पीतल की मूर्ति बनाई जाती है} के परम भक्त थे।

''भगवान श्री विष्णु उर्फ श्री कृष्ण जी का बिठल नाम कैसे पड़ा?

एक छोटे-से गाँव में भक्त पुण्डलिक रहता था। वह भगवान श्री कृष्ण का परम भक्त था। पूर्व जन्म की भक्ति-शक्ति के कारण पुण्यात्माऐं बचपन से ही अनोखे कार्य करते हैं।

एक दिन भक्त पुण्डलिक जी अपने पिता के चरण दबा रहा था। उनके पिता जी सोए ही थे। उसकी माता जी अपने पति पर हाथ से पंखे से हवा कर रही थी। उसी समय भगवान श्री कष्ण जी उनके द्वार पर आ खड़े हुए और कहा कि हे पुण्डलिक! मैं तुम्हारे घर अतिथि बनकर ठहरना चाहता हूँ। भक्त पुण्डलिक ने धीरे से कहा कि ऊँची आवाज में मत बोलो, मेरे पिता जी को अभी-अभी नींद आई है। आप यहीं पर उस ईंट (**Brick**) पर खड़े हो जाओ, आवाज मत करना। प्रतिक्षा करो। भक्त अपने पिता जी के चरणों को दबाता रहा। पैर दबाने में लीन हो गया। भगवान श्री कष्ण उसके भोलेपन तथा सच्चे मन से किए आग्रह से प्रसन्न होकर अपने पैरों को साथ-साथ करके ईंट के ऊपर खड़े हो गए। दोनों हाथ कमर पर रख लिए। कुछ देर बाद भक्त पुण्डलिक ने ईंट पर खड़े श्री कष्ण की ओर देखा और कहा कि आप कुछ देर ओर ऐसे ही खड़े रहें और इंतजार करें। उसके शुद्ध हृदय और भोले भाव से भगवान श्री कष्ण प्रसन्न हुए। जब उसके पिता जगे तो पिता से कहा कि देखो! भगवान खड़े हैं। पहले तो केवल अकेले को दिखाई दे रहे थे, फिर अपने माता-पिता को भी दर्शन कराए। भगवान आशीर्वाद देकर चले गए। उनकी वह ईंट पर खड़ा होने वाली मूर्ति महाराष्ट्र में बहुत पूज्य है। इसको बिठल (ईंट पर खड़ा भगवान) के नाम से जाना जाने लगा। उस गाँव का नाम पुंडलिकपुर पड़ा। बाद में अपभ्रंस होकर पुण्डरपुर प्रसिद्ध हुआ।

''पत्थर को दूध पिलाना''

नामदेव द्वारा बिठल भगवान की पत्थर की मूर्ति को दूध पिलाने का वर्णनः- नामदेव जी के माता-पिता भगवान बिठल की पत्थर की मूर्ति की पूजा करते थे। घर पर एक अलमारी में मूर्ति रखी थी। प्रतिदिन मूर्ति को दूध का भोग लगाया जाता था। एक कटोरे में दूध गर्म करके मीठा मिलाकर पीने योग्य ठण्डा करके कुछ देर मूर्ति के सामने रख देते थे। आगे पर्दा कर देते थे जो अलमारी पर लगा रखा था। कुछ देर पश्चात् उसे उठाकर अन्य दूध में डालकर प्रसाद बनाकर सब पीते थे।

नामदेव जी केवल 12 वर्ष के बच्चे थे। एक दिन माता-पिता को किसी कार्यवश दूर अन्य गाँव जाना पड़ा। अपने पुत्र नामदेव से कहा कि पुत्र! हम एक सप्ताह के लिए अन्य गाँव में जा रहे हैं। आप घर पर रहना। पहले बिठल जी को दूध का भोग लगाना, फिर बाद में भोजन खाना। ऐसा नहीं किया तो भगवान बिठल नाराज हो जाऐंगे और अपने को शॉप दे देंगे। अपना अहित हो जाएगा। यह बात माता-पिता ने नामदेव से जोर देकर और कई बार दोहराई और यात्रा पर चले गए। नामदेव जी ने सुबह उठकर स्नान करके, स्वच्छ वस्त्र पहनकर दूध का कटोरा भरकर भगवान की मूर्ति के सामने रख दिया और दूध पीने की प्रार्थना की, परंतु मूर्ति ने दूध नहीं पीया। भक्त ने भी भोजन तक नहीं खाया। तीन दिन बीत गए। प्रतिदिन इसी प्रकार दूध मूर्ति के आगे रखते और विनय करते कि हे बिठल भगवान! दूध पी लो। आज आपका सेवादार मर जाएगा क्योंकि और अधिक भूख सहन करना मेरे वश में नहीं है। माता-पिता नाराज होंगे। भगवान मेरी गलती क्षमा करो। मुझसे अवश्य कोई गलती हुई है। जिस कारण से आप दूध नहीं पी रहे। माता-पिता जी से तो आप प्रतिदिन

भोग लगाते थे। नामदेव जी को ज्ञान नहीं था कि माता-पिता कुछ देर दूध रखकर भरा कटोरा उठाकर अन्य दूध में डालते थे। वह तो यही मानता था कि बिठल जी प्रतिदिन दूध पीते थे। चौथे दिन बेहाल बालक ने दूध गर्म किया और दूध मूर्ति के सामने रखा और कमजोरी के कारण चक्कर खाकर गिर गया। फिर बैठे-बैठे अर्जी लगाने लगा तो उसी समय मूर्ति के हाथ आगे बढ़े और कटोरा उठाया। सब दूध पी लिया। नामदेव जी की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। फिर स्वयं भी खाना खाया, दूध पीया। फिर तो प्रतिदिन बिठल भगवान जी दूध पीने लगे।

सात-आठ दिन पश्चात् नामदेव के माता-पिता लौटे तो सर्वप्रथम पूछा कि क्या बिठल जी को दूध का भोग लगाया? नामदेव ने कहा कि माता-पिता जी! भगवान ने तीन दिन तो दूध नहीं पीया। मेरे से पता नहीं क्या गलती हुई। मैंने भी खाना नहीं खाया। चौथे दिन भगवान ने मेरी गलती क्षमा की, तब सुबह दूध पीया। तब मैंने भी खाना खाया, दूध पीया। माता-पिता को लगा कि बालक झूठ बोल रहा है। इसीलिए कह रहा है कि चौथे दिन दूध पीया। मूर्ति दूध कैसे पी सकती है? माता-पिता ने कहा सच-सच बता बेटा, नहीं तो तुझे पाप लगेगा। बिठल भगवान जी ने वास्तव में दूध पीया है। नामदेव जी ने कहा, माता-पिता वास्तव में सत्य कह रहा हूँ। पिताजी ने कहा कि कल सुबह हमारे सामने दूध पिलाना। अगले दिन नामदेव जी ने बिठल भगवान की पत्थर की मूर्ति के सामने दूध का कटोरा रखा। उसी समय मूर्ति के हाथ आगे बढ़े, कटोरा उठाया और सारा दूध पी गए। माता-पिता तो पागल से हो गये। गली में जाकर कहने लगे कि नामदेव ने बिठल भगवान की मूर्ति को सचमुच दूध पिला दिया। यह बात सारे गाँव में आग की तरह फैल गई, परंतु किसी को विश्वास नहीं हो रहा था। बात पंचों के पास पहुँच गई कि नामदेव का पिता झूठ कह रहा है कि मेरे पुत्र नामदेव ने पत्थर की मूर्ति को दूध पिला दिया। पंचायत हुई। नामदेव तथा उसके पिता को पंचायत में बुलाया गया और कहा कि क्या यह सच है कि नामदेव ने बिठल भगवान की मूर्ति को दूध पिलाया था। पिता ने कहा कि हाँ! हमारे सामने पिलाया था। पंचों ने कहा कि यह भगवान बिठल जी की मूर्ति रखी है। यह दूध का कटोरा रखा है। हमारे सामने नामदेव दूध पिलाए तो मानेंगे अन्यथा आपको सपरिवार गाँव छोड़कर जाना होगा। नामदेव जी ने कटोरा उठाया और भगवान बिठल जी की मूर्ति के सामने किया। उसी समय कटोरा बिठल जी ने हाथों में पकड़ा और सब दूध पी गया। पंचायत के व्यक्ति तथा दर्शक हैरान रह गए। इस प्रकार नामदेव जी की पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से परमेश्वर ने चमत्कार किए।

''नामदेव जी की छान (झोंपड़ी की घास-फूस से बनी छत) भगवान ने डाली''

अन्य अद्भुत चमत्कार :- नामदेव जी के पिता जी का देहान्त हो गया था। घर के सभी कार्यों का बोझ नामदेव पर आ गया। माता ने कहा कि बेटा! बारिश होने वाली है। अगले महीने से वर्षा प्रारम्भ हो जाएगी। उससे पहले-पहले अपनी झोंपड़ी की छान (घास-फूस की छत) छा ले यानि डाल ले। जंगल से घास ले आ जो विशेष घास होता है। नामदेव घास

लेने गए थे। रास्ते में सत्संग हो रहा था। घास लाना भूल गया। सत्संग सुनने के लिए कुछ देर बैठा, मस्त हो गया। आनन्द आया। फिर भण्डारे में सेवा करने लगा। इस प्रकार शाम हो गई। बिना घास के लौटे तो माँ ने कहा कि बेटा घास नहीं लाया। छान बनानी थी। कहने लगा कि माता जी! सत्संग सुनने लग गया। पता ही नहीं लगा कि कब शाम हो गई। कल अवश्य लाऊँगा। अगले दिन सोचा कि कुछ देर सत्संग सुन लेता हूँ, फिर चलकर घास-फूस लाकर छान (झोंपड़ी की छत) बनाऊँगा। उस दिन भी भूल गया। अगले दिन सत्संग समाप्त होते ही जंगल में गया तो पैर पर गंडासी (लोहे की घास-कांटेदार झाड़ी काटने की कुल्हाड़ी जैसी) लगी। जख्म गहरा हो गया। घास नहीं ला सका। पैर से लंग करता हुआ खाली हाथ चला आ रहा था। परमात्मा ने नामदेव के रूप में आकर घास लाकर झोंपड़ी बना दी और नामदेव जी के आने से पहले चले गए। नामदेव जी को देखकर माता जी ने पूछा कि बेटा! पैर में क्या लग गया? नामदेव जी ने कहा कि माता जी! झोंपड़ी की छान के लिए जंगल में घास काट रहा था। पैर में गंडासी लग गई। माताजी! मैं घास उठाकर चलने में सक्षम नहीं था। इसलिए पैर ठीक होने के पश्चात् घास लाकर छान बनाऊँगा। माता ने कहा कि यह क्या कह रहे हो बेटा? अभी तो आप छान तैयार करके गए हो। तब नामदेव ने नई छान देखी तो कहा कि परमात्मा आए थे और छान छाकर (डालकर) चले गए। माता जी को सब भेद बताया तो आश्चर्य करने लगी कि वह कौन था? नामदेव जी ने कहा कि माता जी! वह परमेश्वर थे।

''रंका-बंका की परीक्षा''

परमेश्वर कबीर जी एक संत के रूप में पुण्डरपुर के पास एक आश्रम बनाकर सत्संग करते थे। नामदेव जी ने वही सत्संग सुना था। परमेश्वर कबीर जी ने ही वह छत बनाई थी। नामदेव जी ने गुरू दीक्षा ले ली।

एक अन्य परिवार ने भी दीक्षा उस संत से ले रखी थी। परिवार में तीन प्राणी थे। रंका तथा उसकी पत्नी बंका तथा बेटी अवंका। रंका बहुत निर्धन था। दोनों पति-पत्नी जंगल से लकड़ी तोड़कर लाते थे और शहर में बेचकर निर्वाह चला रहे थे। परमात्मा के विधान को गहराई से जाना था। रंका जी का पूरा परिवार कबीर जी (अन्य रूप में विद्यमान थे) का शिष्य था। भक्त नामदेव भी उसी संत जी (कबीर जी) के शिष्य थे। एक दिन नामदेव जी ने सतगुरू जी से निवेदन किया कि हे प्रभु! आपके भक्त रंका जी बहुत निर्धन हैं। इनको कुछ धन प्रदान करो ताकि निर्वाह ठीक हो सके। जंगल से लकड़ियां बेचकर कठिनता से निर्वाह कर रहे हैं। दुर्बल शरीर है। दोनों पति-पत्नी लकड़ियां वन से लाकर बेचते हैं। भक्ति का समय भी कम मिलता है। सतगुरू रूप में विराजमान परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि भक्त नामदेव! मैंने बहुत कोशिश की है धन देने की, परंतु ये लेते ही नहीं। नामदेव ने कहा कि हे गुरूदेव! आप फिर से धन दो, अवश्य लेंगे। बड़े दुःखी हैं। जिस समय दोनों रंका तथा उसकी पत्नी बंका जंगल से लकड़ियों का गठ्ठा लिए आ रहे थे तो सतगुरू जी अपने शिष्य नामदेव जी को साथ लेकर उस मार्ग में गए। मार्ग में सोने (Gold) के आभूषण, सोने

की असरफी (10 ग्राम सोने की बनी हुई) तथा चांदी के आभूषण तथा सिक्के डालकर स्वयं दोनों गुरू-शिष्य किसी झाड़ के पीछे छिपकर खड़े हो गए और उनकी गतिविधि देखने लगे। भक्त रंका लकड़ियां सिर पर लिए आगे-आगे चल रहा था। उनसे कुछ दूरी पर उनकी पत्नी आ रही थी। रंका जी ने उस आभूषण तथा अन्य सोने को देखकर विचार किया कि मेरी पत्नी आभूषण को देखकर दिल डगमग न कर ले क्योंकि आभूषण स्त्री को बहुत प्रिय होते हैं। यह विचार करके सर्व धन पर पैरों से मिट्टी डालने लगा। उसकी पत्नी बंका जी की दृष्टि अपने पति की क्रिया पर पड़ी तो समझते देर न लगी और बोली चलो भक्त जी! मिट्टी पर मिट्टी क्यों डाल रहे हो? दोनों पति-पत्नी उस सर्व धन को उलंघकर चले गए। तब परमेश्वर जी ने कहा कि देख लो नामदेव! मैं क्या करूं? नामदेव जी को भी अहसास हुआ कि वास्तव में दोनों परम भक्त हैं।

''नामदेव जी की भक्ति-श्रद्धा से मंदिर घुमाना''

गाँव पुण्डरपुर में बीठल भगवान का मंदिर था। उसमें सुबह तथा शाम को आरती होती थी। उस समय छूआछात अधिक थी। एक दिन नामदेव जी मंदिर के पास से बने रास्ते पर जा रहे थे। मंदिर में आरती चल रही थी। पंडितजन हाथों में घंटियाँ तथा खड़ताल लेकर बजा रहे थे। नामदेव जी को भी धुन चढ़ गई। उसने अपनी जूतियाँ हाथों में ली और उनको एक-दूसरी से मारने लगा और मंदिर में पहुँच गया। पंडितों के बीच से भगवान बिठल जी की मूर्ति के सामने खड़ा हो गया। पंडितों ने देखा कि नामदेव ने अपवित्र जूतियाँ हाथ में ले रखी हैं। मंदिर में प्रवेश कर गया है। मंदिर अपवित्र हो गया है। भगवान बिठल रूष्ट हो गए तो अनर्थ हो जाएगा। नामदेव जी को खैंचकर (घसीटकर) मंदिर के पीछे डाल दिया। भक्त नामदेव जी पृथ्वी पर गिरे-गिरे भी जूतियाँ पीट रहे थे, आरती गा रहे थे। उसी क्षण मंदिर का मुख नामदेव जी की ओर घूम गया। पंडितजन मंदिर के पीछे खड़े-खड़े घंटियाँ बजा रहे थे। करिश्मा देखकर घंटियाँ बजाना बंद करके स्तब्ध रह गए। उस मंदिर का मुख सदा उस ओर रहा। गाँव तथा दूर देश के व्यक्ति भी यह चमत्कार देखने आए थे। भक्त नामदेव जी की भक्ति की प्रसिद्धि आग की तरह सारे क्षेत्र में फैल गई।

''नामदेव जी को अवंका की नसीहत''

एक दिन नामदेव भक्त रंका जी की झोंपड़ी पर गया। उनकी लड़की अवंका घर पर अकेली थी। माता-पिता लकड़ी लाने जंगल में गए हुए थे। लड़की अवंका औषधि घिस रही थी। नामदेव ने पूछा कि बहन जी! यह औषधि किसके लिए बना रहे हो? भक्तमति अवंका ने कहा कि नामदेव! आप गुरूदेव को अधिक कष्ट ना दो। गुरू जी के हाथों को चोट लगी है। भाई उस दिन आपको क्या पड़ी थी मंदिर में जाने की? आपकी भक्ति की रक्षा करने के लिए, आपकी इज्जत रखने के लिए गुरू जी ने उस मंदिर को घुमाया था। जिस कारण से गुरू जी के हाथों को चोट लगी है। उनके लिए यह पट्टी तैयार कर रही हूँ। तीन दिन हो गए हैं। मैं पट्टी बाँधकर आती हूँ। नामदेव! गुरू जी को मत सता। यह कहकर अवंका

जी की आँखें भर आई। नामदेव को विश्वास नहीं हो रहा था क्योंकि किसी ने गुरू जी को वहाँ नहीं देखा था, न नामदेव जी ने गुरू जी को वहाँ देखा। नामदेव जी भी अवंका जी के साथ गुरू जी के आश्रम में गए। देखा तो वास्तव में गुरू जी के दोनों हाथ जख्मी थे। नामदेव जी ने समझ रखा था कि उस दिन उस देवल (देवालय यानि मंदिर) को बिठल (विष्णु) जी ने घुमाया था। अपनी आँखों देखकर भी नामदेव जी की शंका समाप्त नहीं हुई। उसने पूछा कि हे गुरूदेव! आपके हाथों को क्या लगा है? गुरू जी ने कहा कि नामदेव! बेटी अवंका ने बताया था। उस पर विश्वास नहीं हुआ। ले तेरी एक जूती मैं उठाकर लाया था। नामदेव जी की एक जूती वहाँ गुम हो गई थी। बहुत खोजने पर भी नहीं मिली थी। नामदेव जी तुरंत परमेश्वर के चरणों में गिर गए और आगे से कभी किसी मंदिर में न जाने की प्रतिज्ञा की और समर्पित होकर मर्यादा में रहकर भक्ति करने लगे। इससे पहले परमेश्वर कबीर जी ने नामदेव को केवल 'ॐ' नाम का जाप करने को दे रखा था। नामदेव जी भी पहले इसी नाम का जाप किया करते थे। उसका कोई लाभ नहीं होना था। उससे पहले भी नामदेव जी ओम् (ॐ) नाम का जाप बिना गुरू बनाए किया करते थे।

कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान। गुरू बिन दोनों निष्फल है, पूछो वेद पुराण।।

फिर नामदेव जी को 'सोहं' गुप्त मंत्र दिया था जिसका आविष्कार केवल परमेश्वर कबीर जी ही करते थे। अन्य को इस मंत्र का ज्ञान नहीं था। इसकी गवाही ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 95 मंत्र 1 भी देता है। लिखा है कि ''परमेश्वर पृथ्वी पर प्रकट होकर विचरण करके अपनी वाक (वाणी) द्वारा भक्ति की प्रेरणा करता है। भक्ति के गुप्त मंत्रों का आविष्कार करता है।''

संत गरीबदास जी को भी परमेश्वर कबीर जी एक सतगुरू रूप में जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। जो यह अमृतवाणी आज हमें प्राप्त है, यह परमेश्वर जी की ही देन है। संत गरीबदास जी का ज्ञानयोग तथा दिव्य दृष्टि परमेश्वर कबीर जी ने खोल दी थी। जिस कारण से संत गरीबदास जी को भूत तथा भविष्य की घटनाओं का यथार्थ ज्ञान था। उन्होंने कहा था कि :-

गरीब, नामा छीपा ॐ तारी, पीछे सोहं भेद बिचारी। सार शब्द पाया जब लोई, आवागमन बहुर ना होई।।

''रंका-बंका का प्रभु पर अटल विश्वास''

एक दिन रंका तथा बंका दोनों पति-पत्नी गुरू जी के सत्संग में गए हुए थे जो कुछ दूरी पर किसी भक्त के घर पर चल रहा था। बेटी अवंका झोंपड़ी के बाहर एक चारपाई पर बैठी थी। अचानक झोंपड़ी में आग लग गई। सर्व सामान जलकर राख हो गया। अवंका दौड़ी-दौड़ी सत्संग में गई। गुरू जी प्रवचन कर रहे थे। अवंका ने कहा कि माँ! झोंपड़ी में आग लग गई। सब जलकर राख हो गया। सब श्रोताओं का ध्यान अवंका की बातों पर हो गया। माँ बंका जी ने पूछा कि क्या बचा है? अवंका ने बताया कि केवल एक खटिया बची है जो बाहर थी। माँ बंका ने कहा कि बेटी जा, उस खाट को भी उसी आग में डाल दे और आकर सत्संग सुन ले। कुछ जलने को रहेगा ही नहीं तो सत्संग में भंग ही नहीं पड़ेगा। बेटी

सत्संग हमारा धन है। यदि यह जल गया तो अपना सर्वनाश हो जाएगा। लड़की वापिस गई और उस चारपाई को उठाया और उसी झोंपड़ी की आग में डालकर आ गई और सत्संग में बैठ गई। सत्संग के पश्चात् अपने ठिकाने पर गए। वहाँ एक वक्ष था। उसके नीचे वह सामान जो जलने का नहीं था जैसे बर्तन, घड़ा आदि-आदि पड़े थे। उस वक्ष के नीचे बैठकर भजन करने लगे। उनको पता नहीं चला कि कब सो गये? सुबह जागे तो उस स्थान पर नई झोंपड़ी लगी थी। सर्व सामान रखा था। आकाशवाणी हुई कि भक्तो! आप परीक्षा में सफल हुए। यह भेंट मेरी ओर से है, इसे स्वीकार करो। तीनों सदस्य उठकर पहले आश्रम में गए और झोंपड़ी जलने तथा पुनः बनने की घटना बताई तथा कहा कि हे प्रभु! हम तो नामदेव की तरह ही आपको कष्ट दे रहे हैं। हम उसको नसीहत देते थे। आज वही मूर्खता हमने कर दी। सतगुरू जी ने कहा, हे भक्त परिवार! नामदेव उस समय मर्यादा में रहकर भक्ति नहीं कर रहा था। फिर भी उसकी पूर्व जन्म की भक्ति के प्रतिफल में उसके लिए अनहोनी करनी पड़ती थी जो मुझे कष्ट होता था। आप मर्यादा में रहकर भक्ति कर रहे हो। इसलिए आपकी आस्था परमात्मा में बनाए रखने के लिए अनहोनी की है। आग भी मैंने लगाई थी, आपका दढ़ निश्चय देखकर झोंपड़ी भी मैंने बनाई है। आप उसे स्वीकार करें। परमात्मा की महिमा भक्त समाज में बनाए रखने के लिए ये परिचय (चमत्कार देकर परमात्मा की पहचान) देना अनिवार्य है। आपकी झोंपड़ी जीर्ण-शीर्ण थी। आप भक्ति में भंग होने के भय से नई बनाने में समय व्यर्थ करना नहीं चाहते थे। मैं आपके लिए पक्का मकान भी बना सकता हूँ। स्वर्ण का भी बना सकता हूँ क्योंकि आप प्रत्येक परीक्षा में सफल रहे हो। उस दिन रास्ते में धन मैंने ही डाला था। नामदेव मेरे साथ था। आप उस कुटी में रहें और परमात्मा की भक्ति करें। रंका-बंका ने उस मर्यादा का पालन किया :-

कबीर, गुरू गोविंद दोनों खड़े, किसके लागूं पाय। बलिहारी गुरू आपणा, गोविन्द दियो बताय।।

आकाशवाणी को परमात्मा की आज्ञा माना, परंतु गुरू जी के पास आकर गुरू जी की क्या आज्ञा है? यह गुरू पर बलिहारी होना है। गोविन्द (प्रभु) की आज्ञा स्वीकार्य नहीं हुई। गुरू की आज्ञा का पालन करके यहाँ भी परीक्षा में खरे उतरे। उस गाँव के व्यक्तियों ने भक्त रंका की कुटिया जलती तथा जलकर राख हुई देखी थी। सुबह नई और बड़ी जिसमें दो कक्ष थे, बनी देखी तो पूरा गाँव देखने आया। आसपास के क्षेत्र के स्त्री-पुरूष भी देखने आए। रंका-बंका की महिमा हुई तथा उनके गुरू जी की शरण में बहुत सारे गाँव तथा आसपास के व्यक्ति आए और अपना कल्याण करवाया।

''बिठल रूप में प्रकट होकर नामदेव जी की रोटी खाना''

एक दिन नामदेव जी भेड़-बकरियाँ-गाय चरा रहा था। प्रतिदिन साथ में गाँव के अन्य पाली (चरवाहे) भी अपनी-अपनी भेड़-बकरियाँ-गाय चराते थे। वे पाली प्रतिदिन नामदेव पर व्यंग्य करते थे कि हे नामदेव! सुना है तुमने पत्थर की मूर्ति को दूध पिला दिया था। क्या सचमुच भगवान बिठल ने दूध पीया था? नामदेव के बोलने से पहले अन्य कहते थे कि पत्थर कभी दूध पीता है! एक ने कहा कि पंचायत में सबके सामने दूध पिलाया था। अन्य कहने

लगे कि क्या तूने देखा था? तुम इसका पक्ष कर रहे हो। नामदेव ने कहा कि भाईयो! वास्तव में बिठल जी ने दूध पीया था। अपने हाथों में कटोरा पकड़ा था। हाँ! मैं झूठ नहीं कहता। सब पाली हँसते थे। कहते थे कि पत्थर कभी दूध पीते हैं! झूठ बोल रहा है। यह लगभग प्रतिदिन का झंझट नामदेव जी के साथ करते थे। एक दिन प्रतिदिन की तरह सब चरवाहे (पाली) तथा नामदेव एक वक्ष के नीचे बैठे खाना खाने के लिए अपनी-अपनी रोटियाँ अपने-अपने सामने रखे हुए थे। किसी ने कपड़े से निकाल ली थी, किसी ने अभी रूमाल नुमा कपड़े (छालने) में बँधी सामने रखी थी। उसी समय एक ने कहा कि नामदेव! आज ये रोटियाँ जो आपके छालने में बँधी रखी हैं। अभी तक ये झूठी नहीं हुई हैं। भगवान बिठल को खिला दे। हम सत्य मान लेंगे। सबने इस बात का समर्थन किया। नामदेव दुःखी होते थे। बोलते कुछ नहीं थे। ठीक से खाना भी नहीं खा पाते थे। प्रतिदिन का यही दुःख था। उसी समय एक कुत्ता आया। सबके बीच में बैठे नामदेव की रूमाल (छालने) में बँधी सब रोटियाँ उठाकर ले गया। यह देखकर सब पाली हँसने लगे कि बिठल भगवान ने तो स्वीकारी नहीं, कुत्ते ने स्वीकार ली। अन्य कहने लगे कि अरे! उस दिन भी कुत्ता दूध पी गया होगा। नामदेव ने झूठ बोला होगा कि बिठल भगवान ने पीया है। नामदेव जी को बिठल रूप परमात्मा रोटियाँ लेकर जाते दिखाई दिए। सब्जी नामदेव के पास रखी रह गई थी। नामदेव जी सब्जी लेकर पीछे-पीछे चल पड़े। कह रहे थे कि हे भगवान! सब्जी भी ले लो, अकेली रोटी कैसे खाओगे? कुछ दूरी पर एक वक्ष के नीचे भगवान बिठल रूक गए। भगवान ने कहा कि आप मेरे साथ खाना खाओ। दोनों खाना खाने लगे। उन पालियों को आश्चर्य हुआ कि नामदेव कुत्ते के साथ खाना खा रहा है। सब पाली उठकर वह नजारा देखने गए। निकट से देखा तो वास्तव में बिठल भगवान ही नामदेव के साथ खाना खा रहे थे। सब पाली भगवान के चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगे। भगवान ने कहा कि नामदेव से क्षमा माँगो। सबने नामदेव जी से क्षमा याचना की। उसी समय बिठल रूप में प्रभु अंतर्ध्यान हो गए। उसके पश्चात् सब पालीगण नामदेव का सम्मान करने लगे और पूरे गाँव पुण्डरपुर में पालियों नें आँखों देखी लीला की गवाही दी।

संत गरीबदास जी ने वाणी नं. 108 में कहा कि जगत गुरू यानि परमेश्वर कबीर जी जो सर्व को सच्चा ज्ञान देने वाले हैं, उन्होंने यह सब लीलाऐं की थी। कलंदर रूप का अर्थ है कि संत रूप में गुरू बनकर पुण्डरपुर में आश्रम बनाकर रहे। उस अच्छी आत्मा नामदेव जी की महिमा बढ़ाई तथा उनका कल्याण किया।

बिठल होकर रोटी खाई, नामदेव की कला बढ़ाई। पुंण्डरपुर नामा प्रवान, देवल फेर छिवा दई छान।।

कुछ दिनों के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी उस आश्रम को त्यागकर कहीं चले गए। पुनः वहाँ नहीं आए। नामदेव जी की बढ़ती लोकप्रियता को देखकर स्थानीय संत-ब्राह्मण उनका विरोध करने लगे।

नामदेव जी विक्रमी संवत् 1380 (सन् 1323) में 53 वर्ष की आयु में पुण्डरपुर त्यागकर हरिद्वार चले गए थे। वहाँ भी नकली गुरूओं ने विरोध किया। वहीं से किसी हिन्दु गुरू ने मुसलमानों से मिलकर दिल्ली के सम्राट मोहम्मद बिन तुगलक को शिकायत करके

गाय को जीवित करने की शर्त रखी थी तो सन् 1325 में दिल्ली में नामदेव जी को बुलाया था और परमेश्वर कबीर जी ने गाय जीवित की थी। उस समय सतगुरू कबीर जी ने नामदेव जी को गुरू रूप में दर्शन दिए और अंतर्ध्यान हो गए थे। नामदेव जी हरिद्वार में 15 (पन्द्रह) वर्ष रहे। वहाँ से सन् 1338 (विक्रमी सं. 1395) में पंजाब के गाँव-भूतविड़ में रहे। वहाँ से कस्बा-घुमाण जिला-गुरूदासपुर में अंतिम 20 वर्ष रहे जहाँ पर वर्तमान में प्रतिवर्ष निर्वाण दिवस मनाया जाता है।(108)

यह संत नामदेव जी का संक्षिप्त जीवन चरित्र है।

❖ वाणी नं. 109 का सरलार्थ :-

''पीपा राजा का वैराग्य''

कथा :- राजस्थान में गीगनौर नामक शहर में राजपूत राजा पीपा ठाकुर राज्य करता था। (गीगनौर का वर्तमान नाम नागौर है।) उसकी तीन रानियाँ थी। पटरानी (मुख्य पत्नी) का नाम सीता था। काशी नगर (उत्तर प्रदेश) में आचार्य रामानंद जी रहते थे। वे कबीर परमेश्वर जी की लीला तथा यथार्थ ज्ञान जानकर उनसे प्राप्त ज्ञान का प्रचार किया करते थे। मण्डली बनाकर चलते थे।

एक बार स्वामी रामानंद जी गीगनौर शहर में चले गए। राजा को पता चला कि स्वामी रामानंद आचार्य जी आए हैं। उनका नाम बहुत प्रसिद्ध था। राजा पीपा जी देवी दुर्गा के परम भक्त थे। माता को ही सर्वोच्च शक्ति मानते थे। राज्य में सुख माता जी के आशीर्वाद से ही मानते थे। राजा को पता चला कि स्वामी रामानंद जी माता दुर्गा से ऊपर परमात्मा बताते हैं और कहते हैं कि माता दुर्गा की शक्ति से जन्म-मरण तथा चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाना समाप्त नहीं हो सकता। राजा को यह सुनकर अच्छा नहीं लगा। राजा ने स्वामी जी को अपने घर बुलाकर पूछा कि आप कहते हो कि दुर्गा देवी जी से ऊपर अन्य परम प्रभु है। माता की पूजा से जन्म-मरण, चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों में भ्रमण सदा बना रहेगा। जन्म-मरण तथा चौरासी लाख प्रकार की योनियों वाला कष्ट पूर्ण परमात्मा की भक्ति के बिना समाप्त नहीं हो सकता। राजा ने बताया कि मैं प्रत्येक अमावस्या को माता का जागरण करवाता हूँ, भण्डारा करता हूँ। माता मुझे प्रत्यक्ष दर्शन देती है। मुझसे बातें करती है। स्वामी रामानंद जी ने कहा कि आप माता से ही स्पष्ट कर लेना। हम छः महीने के पश्चात् फिर इस ओर आऐंगे, तब आप से भी मिलेंगे। स्वामी जी चले गए। अगली अमावस्या को राजा ने जागरण कराया। माता ने दर्शन दिए। राजा ने प्रश्न किया कि हे माता! आप मेरा जन्म-मरण तथा चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाना समाप्त कर दें। श्री देवी दुर्गा जी ने कहा कि राजन! तेरे राज्य में सुख माँग ले। राज्य विस्तार माँग ले। वह सब कर दूँगी, परंतु जन्म-मरण तथा चौरासी लाख वाला कष्ट समाप्त करना मेरे बस से बाहर है। यह कहकर माता अंतर्ध्यान हो गई। राजा पीपा ठाकुर बेचैन हो गया कि यदि जन्म-मरण समाप्त नहीं हुआ तो भक्ति का क्या लाभ? स्वामी जी कब आऐंगे? छः महीने तो बहुत लंबा समय है।

पीपा हाथी पर सवार होकर स्वामी रामानन्द से मिलने के लिए काशी उनके आश्रम में गया था। द्वारपाल से कहा था कि स्वामी जी से कहो, पीपा राजा मिलने आया है। स्वामी जी ने कहा कि मैं राजाओं से नहीं मिलता, भक्त-दासों से मिलता हूँ। राजा को जवाब मिला तो उसी समय हाथी, सोने का मुकुट आदि बेचकर आश्रम आया और कहा कि एक पापी दास गीगनौर से स्वामी जी से मिलने आया है। स्वामी जी बड़े प्रसन्न हुए। पीपा ने कहा था कि मैं अब आपके पास ही जीवन बिताऊँगा। स्वामी जी ने कहा कि आप अपने घर जाओ, मैं शीघ्र आऊँगा। घर से आपको ठीक से वैरागी बनाकर लाऊँगा। स्वामी जी को पता था कि कुछ दिन बाद रानी आएगी। यहाँ पर हाहाकार मचाएगी। इसलिए उनके सामने ही सन्यास देना उचित समझा था। स्वामी रामानंद जी एक महीने के पश्चात् ही आ गए। राजा पीपा ने स्वामी जी को गुरू धारण किया। राज्य त्यागकर उनके साथ काशी चलने का आग्रह किया। राजा के साथ तीनों रानियों ने भी घर त्यागकर सन्यास लेने को कहा। राजा को चिंता हुई। गुरू जी को बताया कि ये अब तो उमंग में भरी हैं, परंतु रूखा-सूखा खाना, धरती पर सोना, अन्य समस्याओ को झेल न सकेंगी। मेरी भक्ति में भी बाधा करेंगी। स्वामी रामानंद ने कहा कि मैं इस समस्या का समाधान करता हूँ। स्वामी जी ने कहा कि तीनों रानी अपने-अपने गहने घर पर छोड़कर चलें। सीता ने तो अपने आभूषण त्याग दिये। दो ने कहा कि हम आभूषण नहीं त्याग सकती। राजा ने कहा कि सीता भी तो बाधा बनेगी। स्वामी जी ने कहा कि सीता! आपको निःवस्त्र (नंगी) होकर हमारे साथ रहना होगा। सीता ने कहा, स्वामी जी! अभी वस्त्र उतार देती हूँ। यह कहकर कपड़ों के बटन खोलने लगी। स्वामी रामानंद जी ने कहा कि बेटी बस कर। ये तेरी परीक्षा थी, तू सफल हुई। स्वामी जी ने कहा कि पीपा जी! आप सीता को साथ ले लो। यह आपकी साधना में कोई बाधा नहीं करेगी। उपरोक्त विधि से पीपा जी तथा सीता जी को साथ लाए थे। दोनों ने काशी में रहकर भक्ति की। जैसा मिला, खाया। जैसा वस्त्र मिला, पहना और श्रद्धा से भक्ति करने लगे।

''पीपा-सीता सात दिन दरिया में रहे और फिर बाहर आए''

भक्त पीपा और सीता सत्संग में सुना करते कि भगवान श्री कष्ण जी की द्वारिका नगरी समन्दर में समा गई थी। सब महल भी समुद्र में आज भी विद्यमान हैं। बड़ी सुंदर नगरी थी। भगवान श्री कष्ण जी के स्वर्ग जाने के कुछ समय उपरांत समुद्र ने उस पवित्र नगरी को अपने अंदर समा लिया था। एक दिन पीपा तथा सीता जी गंगा दरिया के किनारे काशी से लगभग चार-पाँच किमी. दूर चले गए। वहाँ एक द्वारिका नाम का आश्रम था। आश्रम से कुछ दूर एक वक्ष के नीचे एक पाली बैठा था। उसके पास उसी वक्ष के नीचे बैठकर दोनों चर्चा करने लगे कि भगवान कष्ण जी की द्वारिका जल में है। पानी के अंदर है। पता नहीं कहाँ पर है? कोई सही स्थान बता दे तो हम भगवान के दर्शन कर लें। पाली ने सब बातें सुनी और बोला कौन-सी नगरी की बातें कर रहे हो? उन्होंने कहा कि द्वारिका की। पाली ने कहा वह सामने द्वारिका आश्रम है। पीपा-सीता ने कहा, यह नहीं, जिसमें भगवान कष्ण जी तथा उनकी पत्नी व ग्याल-गोपियाँ रहती थी। पाली ने कहा, अरे! वह

नगरी तो इसी दरिया के जल में है। यहाँ से 100 फुट आगे जाओ। वहाँ नीचे जल में द्वारिका नगरी है। संत भोले तथा विश्वासी होते हैं। स्वामी रामानंद जी प्रचार के लिए 15 दिन के लिए आश्रम से बाहर गए थे। दोनों पीपा तथा सीता ने विचार किया कि जब तक गुरू जी प्रचार से लौटेंगे, तब तक हम भगवान की द्वारिका देख आते हैं। दोनों की एक राय बन गई। उठकर उस स्थान पर जाकर दरिया में छलाँग लगा दी। आसपास खेतों में किसान काम कर रहे थे। उन्होंने देखा कि दो स्त्री-पुरूष दरिया में कूद गए हैं। आत्महत्या कर ली है। सब दौड़कर दरिया के किनारे आए। पाली से पूछा कि क्या कारण हुआ? ये दोनों मर गए, आत्महत्या क्यों कर ली? पाली ने सब बात बताई। कहा कि मैंने तो मजाक किया था कि दरिया के अंदर भगवान की द्वारिका नगरी है। इन्होंने दरिया में द्वारिका देखने के लिए प्रवेश ही कर दिया। छलांग लगा दी। बड़ी आयु के व्यक्तियों ने कहा कि आपने गलत किया, आपको पाप लगेगा। भक्त तो बहुत सीधे-साधे होते हैं। सब अपने-अपने काम में लग गए। यह बात आसपास गाँव तथा काशी में आग की तरह फैल गई। काशी के व्यक्ति जानते थे कि वे राजा-रानी थे, मर गए। परमात्मा ने भक्तों का शुद्ध हृदय देखकर उस दरिया में द्वारिका की रचना कर दी। श्री कष्ण तथा रूकमणि आदि-आदि सब रानियाँ, ग्वाल, बाल गोपियाँ सब उपस्थित थे। भगवान श्री कष्ण रूप में विद्यमान थे। सात दिन तक दोनों द्वारिका में रहे। चलते समय श्री कष्ण रूप में विराजमान परमात्मा ने अपनी ऊँगली से अपनी अंगूठी (छाप) निकालकर भक्त पीपा जी की ऊँगली में डाल दी जिस पर कष्ण लिखा था। सातवें दिन उसी समय दिन के लगभग 11:00 बजे दरिया से उसी स्थान से निकले। कपड़े सूखे थे। दोनों दरिया किनारे खड़े होकर चर्चा करने लगे कि अब कई दिन यहाँ दिल नहीं लगेगा। खेतों में कार्य कर रहे किसानों ने देखा कि ये तो वही भक्त-भक्तनी हैं जिन्होंने दरिया में छलाँग लगाई थी। आसपास के वे ही किसान फिर से उनके पास दौड़े-दौड़े आए और कहने लगे कि आप तो दरिया में डूब गए थे। जिन्दा कैसे बचे हो? सातवें दिन बाहर आए हो, कैसे जीवित रहे? दोनों ने बताया कि हम भगवान श्री कष्ण जी के पास द्वारिका में रहे थे। उनके साथ खाना खाया। रूकमणि जी ने अपने हाथ से खाना बनाकर खिलाया। वे बहुत अच्छी हैं। भगवान श्री कष्ण भी बहुत अच्छे हैं। देखो! भगवान ने छाप (अंगूठी) दी है। इस पर उनका नाम लिखा है। यह सब बातें सुनकर सब आश्चर्य कर रहे थे। यह बात भी आसपास के क्षेत्र तथा काशी में फैल गई। सब उनको देखने तथा भगवान द्वारा दी गई छाप को देखने, उसको मस्तिक से लगाने आने लगे। स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में मेला-सा लग गया। स्वामी जी भी उसी दिन प्रचार से लौटे थे। उन्होंने यह समाचार सुना तो हैरान थे। छाप देखकर तो सब कोई विश्वास करता था। वैसी छाप (अंगूठी) पथ्वी पर नहीं थी। उस अंगूठी को एक पुराने श्री विष्णु के मंदिर में रखा गया। कुछ साधु कहते हैं कि वह अंगूठी वर्तमान में भी उस मंदिर में रखी है। वाणी नं. 109 का यही सरलार्थ है कि पीपा जी को परचा (परिचय अर्थात् चमत्कार) हुआ। भगवान तथा भक्त मिले, आपस में चर्चा हुई। सीता सुधि (सीता सहित) साबुत (सुरक्षित) रहे। द्वारामति (द्वारिका नगरी) निधान यानि वास्तव में अर्थात् यह बात सत्य है।

❖ वाणी नं. 110 का सरलार्थ :-

''धन्ना भक्त के खेत में कंकर से ज्वार पैदा हुई''

राजस्थान प्रान्त में एक जाट जाति में धन्ना नामक भक्त था। गाँव में बारिश हुई। सब गाँव वाले ज्वार का बीज लेकर अपने-अपने खेतों में बोने के लिए चले। भक्त धन्ना जाट भी ज्वार का बीज लेकर खेत में बोने चला। रास्ते में चार साधु आ रहे थे। भक्त ने साधुओं को देखकर बैल रोक लिए। खड़ा हो गया। राम-राम की, साधुओं के चरण छूए। साधुओं ने बताया कि भक्त! दो दिन से कुछ खाने को नहीं मिला है। प्राण जाने वाले हैं। धना भक्त ने कहा कि यह बीज की ज्वार है। आप इसे खाकर अपनी भूख शांत करो। भूखे साधु उस ज्वार के बीज पर ही लिपट गए। सब ज्वार खा गए। भक्त का धन्यवाद किया और चले गए। धन्ना भक्त की पत्नी गर्म स्वभाव की थी। भक्त ने विचार किया कि पत्नी को पता चलेगा तो झगड़ा करेगी। इसलिए कंकर इकट्ठी करके थैले में डाल ली जिसमें ज्वार डाल रखी थी। भक्त ने ज्वार के स्थान पर कंकर बीज दी। लग रहा था कि जैसे ज्वार बीज रहा हो। धन्ना जी भी सब किसानों के साथ घर आ गया। दो महीने के पश्चात् सब किसानों के खेतों में ज्वार उगी और धन्ना जी के खेत में तूम्बे की बेल अत्यधिक मात्रा में उगी और मोटे-मोटे तूम्बे लगे। खेत तूम्बों से भर गया। पड़ोसी खेत वाले ने धन्ना की पत्नी से कहा कि आपने खेत में ज्वार नहीं बोई क्या? आपके खेत में तूम्बों की बेल उगी हैं? अनगिनत मोटे-मोटे तूम्बे लगे हैं। धन्ना जी की पत्नी खेत में गई। जाकर देखा कि सबके खेतों में ज्वार उगी थी, परंतु बारिश न होने के कारण मुरझाई हुई थी। धन्ना जी के खेत में तूम्बों की बेल अत्यधिक मात्रा में उगी थी। तूम्बे भी विशेष मोटे-मोटे थे। धन्ना जी की पत्नी ने एक तूम्बा तोड़ा और सिर पर रखकर घर की ओर चल पड़ी। धन्ना जी के पास कुछ भक्त बैठे थे। धन्ना जी ने देखा कि भक्तमति तूम्बा लिए आ रही है। खेत में गई थी। भक्तों से कहा कि आप शीघ्र चले जाओ। वे चले गए। भक्तमति ने आकर तूम्बा भक्त के सिर पर दे मारा और बोली कि बालक तेरे को खाऐंगे। बीज कहाँ गया? धन्ना जी कुछ नहीं बोले। अपने सिर का बचाव किया। तूम्बा पथ्वी पर लगते ही दो भाग हो गया। उसके अंदर से बीज जैसी स्वच्छ मोटी-मोटी ज्वार निकली। धन्ना जी की धर्मपत्नी को आश्चर्य हुआ। ज्वार देखकर खुशी हुई। विचार किया कि अन्य तूम्बों में भी ज्वार हो सकती है। भक्त को साथ लेकर उस तूम्बे वाली ज्वार को घर में रखकर खेत में पहुँची। चद्दर बिछाकर तूम्बे फोड़ने लगी। धड़ी-धड़ी (पाँच-पाँच किलो) ज्वार एक तूम्बे से निकली। ढ़ेर लग गया।

अन्य किसानों की फसल बारिश न होने से सूख गई। एक दाना भी हाथ नहीं लगा। धन्ना भक्त ने सब गाँव वालों को लगभग दस-दस मन यानि चार-चार क्विंटल ज्वार बाँट दी। उनके बच्चे भी भूखे थे। अपने घर भी शेष ज्वार ले गए। पत्नी भी भक्ति पर लग गई। दोनों का उद्धार हो गया। वाणी नं. 110 का सरलार्थ यही है कि धन्ना भक्त की परमात्मा में तथा धर्म-कर्म में ऐसी धुन (लगन) लगी कि ज्वार का बीज ही दान कर दिया। देते को हर देत है। इसी कारण से परमात्मा जी ने सूखा खेत हरा कर दिया जिसमें कंकर बोई थी।

उस सूखे खेत (क्षेत्र) को तूम्बों की बेलों से हरा-भरा कर दिया।(110)

❖ वाणी नं. 111 का सरलार्थ :-

''रविदास जी ने सात सौ रूप बनाए''

संत रविदास जी का जन्म चमार समुदाय में काशी नगर में हुआ। ये परमेश्वर कबीर जी के समकालीन हुए थे। परम भक्त रविदास जी अपना चर्मकार का कार्य किया करते थे। भक्ति भी करते थे। परमेश्वर कबीर जी ने काशी के प्रसिद्ध आचार्य स्वामी रामानन्द जी को यथार्थ भक्ति मार्ग समझाया था। अपना सतलोक स्थान दिखाकर वापिस छोड़ा था। उससे पहले स्वामी रामानन्द जी केवल ब्राह्मण जाति के व्यक्तियों को ही शिष्य बनाते थे। उसके पश्चात् स्वामी रामानंद जी ने अन्य जाति वालों को शिष्य बनाना प्रारम्भ किया था। संत रविदास जी ने आचार्य रामानन्द जी से दीक्षा ले रखी थी। भक्ति जो परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को प्रथम मंत्र (केवल पाँच नाम वाला) बताया था, उसी को दीक्षा में स्वामी जी देते थे। संत रविदास जी उसी प्रथम मंत्र का जाप किया करते थे। एक दिन एक ब्राह्मण संत रविदास को रास्ते में मिला और बोला, भक्त जी! आप गंगा स्नान के लिए चलोगे, मैं जा रहा हूँ। संत रविदास जी ने कहा कि 'मन चंगा तो कटोती में गंगा', मैं नहीं जा रहा हूँ।

पंडित जी बोले कि आप नास्तिक से हो गए लगते हो। आप उस कबीर जी के साथ क्या रहने लगे हो, धर्म-कर्म ही त्याग दिया है। कुछ दान करना हो तो मुझे दे दो। मैं गंगा मईया को दे आऊँगा। रविदास जी ने जेब से एक कौड़ी निकालकर ब्राह्मण जी को दी तथा कहा कि हे विप्र! गंगा जी से मेरी यह कौड़ी देना। एक बात सुन ले, यदि गंगा जी हाथ में कौड़ी ले तो देना अन्यथा वापिस ले आना। यह कहना कि हे गंगा! यह कौड़ी काशी शहर से भक्त रविदास ने भेजी है, इसे ग्रहण करें। पंडित जी ने गंगा दरिया पर खड़ा होकर ये शब्द कहे तो गंगा ने किनारे के पास से भक्त की कौड़ी हाथ निकालकर ली और दूसरे हाथ से पंडित जी को एक स्वर्ण (Gold) का कंगन दिया जो अति सुंदर व बहुमूल्य था। गंगा ने कहा कि यह कंगन परम भक्त रविदास जी को देना। कहना कि आपने मुझ गंगा को कृतार्थ कर दिया अपने हाथ से प्रसाद देकर। मैं संत को क्या भेंट दे सकती हूँ? यह तुच्छ भेंट स्वीकार करना।

पंडित जी उस कंगन को लेकर चल पड़ा। पंडित जी के मन में लालच हुआ कि यह कंगन राजा को दूँगा। राजा इसके बदले में मुझे बहुत धन देगा। वह कंगन पंडित जी ने राजा को दिया जो अद्भुत कंगन था। पंडित जी को बहुत-सा धन देकर विदा किया और उसका नाम, पता नोट किया। राजा ने वह कंगन रानी को दिया। रानी ने कंगन देखा तो अच्छा लगा। ऐसा कंगन कभी देखा ही नहीं था। रानी ने कहा कि एक कंगन ऐसा ही ओर चाहिए। जोड़ा होना चाहिए। राजा ने उसी पंडित को बुलाया और कहा कि जैसा कंगन पहले लाया था, वैसा ही एक और लाकर दे। जो धन कहेगा, वही दूँगा। यदि नहीं लाया तो सपरिवार मौत के घाट उतारा जाएगा। उस धोखेबाज (420) के सामने पहाड़ जैसी समस्या

खड़ी हो गई। सब सुनारों (शर्राफों) के पास फिरकर अंत में परम भक्त रविदास जी के पास आया। अपनी गलती स्वीकार की। सर्व घटना गंगा को कौड़ी देना, बदले में कंगन लेना, उस कंगन को भक्त रविदास जी को न देकर मुसीबत मोल लेना आदि बताई। पंडित जी ने गिड़गिड़ाकर रविदास जी से अपने परिवार के जीवन की भिक्षा माँगी। रविदास जी ने कहा कि पंडित जी! आप क्षमा के योग्य नहीं हैं, परंतु परिवार पर आपत्ति आई है। इसलिए आपकी सहायता करता हूँ। आप इस पानी की कठौती (मिट्टी का बड़ा टब जिसमें चमड़ा भिगोया जाता था) में हाथ डाल और गंगा से यह कह कि भक्त रविदास जी की प्रार्थना है कि आप कठौती में आऐं और एक कंगन वैसा ही दें। ऐसा कहकर पंडित जी ने जो रविदास के चमार होने के कारण पाँच फुट दूर से बातें करता था, अब उस चाम भिगोने वाले कुंड (टब) में हाथ देकर देखा तो हाथ में चार कंगन वैसे ही आए। भक्त रविदास जी ने कहा कि पंडित जी! एक ले जाना, शेष गंगा जी को लौटा दे, नहीं तो भयंकर आपत्ति और आ जाएगी। ब्राह्मण ने तुरंत तीन कंगन वापिस कुण्ड में डाल दिए और एक कंगन लेकर राजा को दिया। रानी ने पूछा कि यह कंगन कहाँ से लाए हो, मुझे बता। ब्राह्मण ने संत रविदास जी का पता बताया।

रानी ने सोचा कि कोई स्वर्णकार (Goldsmith) होगा और ढ़ेर सारे कंगन लाऊँगी। रानी को एक असाध्य रोग था। पित्तर का साया भी था। बहुत परेशान रहती थी। सब जगह उपचार करवा लिया था। साधु-संतों का आशीर्वाद भी ले चुकी थी। परंतु कोई राहत नहीं मिल रही थी। रानी उस पते पर गई। साथ में नौकरानी तथा अंगरक्षक भी थे। रानी ने संत रविदास जी के दर्शन किए। दर्शन करने से ही रानी के शरीर का कष्ट समाप्त हो गया। रानी को ऐसा अहसास हुआ जैसे सिर से भारी भार उतर गया हो। रानी ने संत जी के तुरंत चरण छूए। रविदास जी ने कहा कि मुझ निर्धन के पास मालकिन का कैसे आना हुआ? रानी ने कहा कि मैं तो सुनार की दुकान समझकर आई थी गुरूजी। मेरा तो जीवन धन्य हो गया। रोग के कारण मेरा जीवन नरक बना था। आपके दर्शन से मैं स्वस्थ हो गई हूँ। मैंने इसके उपचार के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। परंतु कोई लाभ नही हो रहा था। संत रविदास जी ने कहा कि बहन जी! आपके पास भौतिक धन तो पर्याप्त है। यह आपके पूर्व जन्म के पुण्यों का फल है। भविष्य में भी सुख प्राप्ति के लिए आपको वर्तमान में पुण्य करने पड़ेंगे। आध्यात्म धन संग्रह करो। रानी ने कहा कि संत जी! मैं बहुत दान-धर्म करती हूँ। महीने में पूर्णमासी को भण्डारा करती हूँ। काशी तथा आसपास के ब्राह्मणों तथा संतों को भोजन कराती हूँ। संत रविदास जी ने कहा :-

बिन गुरू भजन दान बिरथ हैं, ज्यूं लूटा चोर। न मुक्ति न लाभ संसारी, कह समझाऊँ तोर।।
कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान। गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे पूछो बेद पुरान।।

रानी ने कहा कि हे संत जी! मैंने एक ब्राह्मण गुरू बनाया है। रविदास जी ने कहा कि नकली गुरू से भी कुछ लाभ नहीं होना। आप जी ने गुरू भी बना रखा था और कष्ट यथावत थे। क्या लाभ ऐसे गुरू से? रानी ने कहा कि आप सत्य कहते हैं। आप मुझे शिष्या बना लो। रविदास जी ने रानी को प्रथम मंत्र दिया। रानी ने कहा कि गुरूजी! अबकी पूर्णमासी को

आपके नाम से भोजन-भण्डारा (लंगर) करूंगी। आप जी मेरे घर पर आना। निश्चित तिथि को रविदास जी राजा के घर पहुँचे। पूर्व में आमंत्रित सात सौ ब्राह्मण भी भोजन-भण्डारे में पहुँचे। भण्डारा शुरू हुआ। रानी ने अपने गुरू रविदास जी को अच्छे आसन पर बैठा रखा था। उसके साथ सात सौ ब्राह्मणों को भोजन के लिए पंक्ति में बैठने के लिए निवेदन किया। ब्राह्मण कई पंक्तियों में बैठे थे। भोजन सामने रख दिया गया था। उसी समय ब्राह्मणों ने देखा कि रविदास जी अछूत जाति वाले साथ में बैठे हैं। सब उठ गए और कहने लगे कि हम भोजन नहीं करेंगे। यह अछूत रविदास जो बैठा है, इसे दूर करो। रानी ने कहा कि यह मेरे गुरू जी हैं, ये दूर नहीं होंगे। संत रविदास जी ने रानी से कहा कि बेटी! आप मेरी बात मानो। मैं दूर बैठता हूँ। रविदास जी उठकर ब्राह्मणों ने जहाँ जूती निकाल रखी थी, उनके पीछे बैठ गए। पंडितजन भोजन करने बैठ गए। उसी समय रविदास जी के सात सौ रूप बने और प्रत्येक ब्राह्मण के साथ थाली में खाना खाते दिखाई दिए। एक ब्राह्मण दूसरे को कहता है कि आपके साथ एक शुद्र रविदास भोजन कर रहा है, छोड़ दे इस भोजन को। सामने वाला कहता है कि आपके साथ भी भोजन खा रहा है। इस प्रकार प्रत्येक के साथ रविदास जी भोजन खाते दिखाई दिए। रविदास जी दूर बैठे कहने लगे कि हे ब्राह्मणगण! मुझे क्यों बदनाम करते हो, देखो! मैं तो यहाँ बैठा हूँ। इस लीला को राजा, रानी, मंत्री सब उपस्थित गणमान्य व्यक्ति भी देख रहे थे। तब रविदास जी ने कहा कि ब्राह्मण कर्म से होता है, जाति से नहीं। अपने शरीर के अंदर (खाल के भीतर) स्वर्ण (Gold) का जनेऊ दिखाया। कहा कि मैं वास्तव में ब्राह्मण हूँ। मैं जन्म से ब्राह्मण हूँ। कुछ देर सत्संग सुनाया। उस समय सात सौ ब्राह्मणों ने अपने नकली जनेऊ (कच्चे धागे की डोर जो गले में तथा काख के नीचे से दूसरे कंधे पर बाँधी होती है) तोड़कर फैंक दी तथा संत रविदास जी के शिष्य हुए। सत्य साधना करके अपना कल्याण करवाया। सात सौ ब्राह्मणों द्वारा उतारे गए जनेऊओं का सूत सवा मन (50 किलोग्राम) तोल हुआ था।

उपरोक्त वाणी नं. 111 का यह सरलार्थ है। जग जौनार का अर्थ है धार्मिक भोजन-भण्डारा यानि धर्मयज्ञ। चोले = शरीर, धरे = धारण किए। गौड = ब्राह्मण। एक रविदास, उसके साथ एक गौड भोजन करते समय बैठे दिखाई दिए। रैदास = रविदास, रंगीला रंग = भक्ति रंग में मस्त भक्त। ब्राह्मणों ने (दिए जनेऊ तोड़) अपने-अपने जनेऊ तोड़ डाले और रविदास जी से सत्य साधना लेकर मोक्ष पाया।(111)

❖ वाणी नं. 112 :-

मांझी मर्द कबीर है, जगत करै उपहास। कैसौ बनजारा भया, भक्त बढ़ाया दास।।

''काशी में भण्डारा करना''

❖ सरलार्थ :- मांझी = नौका को चलाने वाला यानि खेवट। संसार सागर से जीव की नौका को पार करने वाला। मर्द = समर्थ पुरूष। (नामर्द = नपुसंक को कहते हैं) जगत यानि संसार। करै उपहास = यह कहकर मजाक करता है कि जुलाहा अशिक्षित है। बात करता है वेदों, गीता और पुराणों की, यह क्या जाने भक्ति के बारे में? अन्य संतों के ज्ञान

को परमेश्वर कबीर जी ने गलत सिद्ध कर दिया था, परंतु आँखों देखकर भी अपनी रोजी-रोटी को बनाए रखने के उद्देश्य से परमेश्वर कबीर जी को रास्ते से हटाने के लिए बदनाम तथा शर्मसार करने के उद्देश्य से भिन्न-भिन्न हथकण्डे अपनाते थे। केसो यानि केशव बनजारा किसलिए बने, पढ़ें :-

''काशी शहर में भण्डारा (लंगर) करना''

शेखतकी सब मुसलमानों का मुख्य पीर (गुरू) था जो परमात्मा कबीर जी से पहले से ही खार खाए था अर्थात् पहले से ही ईर्ष्या करता था। सर्व ब्राह्मणों तथा मुल्ला-काजियों व शेखतकी ने मजलिस (Meeting) करके षड़यंत्र के तहत योजना बनाई कि कबीर निर्धन व्यक्ति है। इसके नाम से पत्र भेज दो कि कबीर जी काशी में बहुत बड़े सेठ हैं। उनका पूरा पता है कबीर पुत्र नूरअली अंसारी, जुलाहों वाली कॉलोनी, काशी शहर। कबीर जी तीन दिन का धर्म भोजन-भण्डारा करेंगे। सर्व साधु-संत आमंत्रित हैं। प्रतिदिन प्रत्येक भोजन करने वाले को एक दोहर (जो उस समय का सबसे कीमती कम्बल के स्थान पर माना जाता था), एक मोहर (10 ग्राम स्वर्ण से बनी गोलाकार की मोहर) दक्षिणा में देगें। प्रतिदिन जो जितनी बार भी भोजन करेगा, कबीर उसको उतनी बार ही दोहर तथा मोहर दान करेगा। भोजन में लड्डू, जलेबी, हलवा, खीर, दही बड़े, माल पूड़े, रसगुल्ले आदि-2 सब मिष्ठान खाने को मिलेंगे। सुखा सीधा (आटा, चावल, दाल आदि सूखे जो बिना पकाए हुए, घी-बूरा) भी दिया जाएगा। एक पत्र शेखतकी ने अपने नाम तथा दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी के नाम भी भिजवाया। निश्चित दिन से पहले वाली रात्रि को ही साधु-संत भक्त एकत्रित होने लगे। अगले दिन भण्डारा (लंगर) प्रारम्भ होना था। परमेश्वर कबीर जी को संत रविदास दास जी ने बताया कि आपके नाम के पत्र लेकर लगभग 18 लाख साधु-संत व भक्त काशी शहर में आए हैं। भण्डारा खाने के लिए आमंत्रित हैं। कबीर जी अब तो अपने को काशी त्यागकर कहीं और जाना पड़ेगा। कबीर जी तो जानीजान थे। फिर भी अभिनय कर रहे थे, बोले रविदास जी झोंपड़ी के अंदर बैठ जा, सांकल लगा ले। अपने आप झख मारकर चले जाएंगे। हम बाहर निकलेंगे ही नहीं। परमेश्वर कबीर जी अन्य वेश में अपनी राजधानी सत्यलोक में पहुँचे। वहाँ से नौ लाख बैलों के ऊपर गधों जैसा बौरा (थैला) रखकर उनमें पका-पकाया सर्व सामान भरकर तथा सूखा सामान (चावल, आटा, खाण्ड, बूरा, दाल, घी आदि) भरकर पथ्वी पर उतरे। सत्यलोक से ही सेवादार आए। परमेश्वर कबीर जी ने स्वयं बनजारे का रूप बनाया और अपना नाम केशव बताया। दिल्ली के सम्राट सिकंदर तथा उसका धार्मिक पीर शेखतकी भी आया। काशी में भोजन-भण्डारा चल रहा था। सबको प्रत्येक भोजन के पश्चात् एक दोहर तथा एक मोहर {10 ग्राम सोना(Gold)} दक्षिणा दी जा रही थी। कई बेईमान साधक तो दिन में चार-चार बार भोजन करके चारों बार दोहर तथा मोहर ले रहे थे। कुछ सूखा सीधा (चावल, खाण्ड, घी, दाल, आटा) भी ले रहे थे।

यह सब देखकर शेखतकी ने तो रोने जैसी शक्ल बना ली और जाँच (Enquiry) करने लगा। सिकंदर लोधी राजा के साथ उस टैंट में गया जिसमें केशव नाम से स्वयं कबीर

जी वेश बदलकर बनजारे (उस समय के व्यापारियों को बनजारे कहते थे) के रूप में बैठे थे। सिकंदर लोधी राजा ने पूछा आप कौन हैं? क्या नाम है? आप जी का कबीर जी से क्या संबंध है? केशव रूप में बैठे परमात्मा जी ने कहा कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे पगड़ी बदल मित्र हैं। मेरे पास उनका पत्र गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा यानि लंगर करना है, कुछ सामान लेते आइएगा। उनके आदेश का पालन करते हुए सेवक हाजिर है। भण्डारा चल रहा है। शेखतकी तो कलेजा पकड़कर जमीन पर बैठ गया जब यह सुना कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है जहाँ पर 18 लाख व्यक्ति भोजन करने आए हैं। प्रत्येक को दोहर तथा मोहर और आटा, दाल, चावल, घी, खाण्ड भी सूखा सीधा रूप में दिए जा रहे हैं। इसको छोटा-सा भण्डारा कह रहे हैं। परंतु ईर्ष्या की अग्नि में जलता हुआ विश्राम गृह में चला गया जहाँ पर राजा ठहरा हुआ था। सिकंदर लोधी ने केशव से पूछा कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव ने उत्तर दिया कि उनका गुलाम जो बैठा है, उनको तकलीफ उठाने की क्या आवश्यकता? जब इच्छा होगी, आ जाएंगे। यह भण्डारा तो तीन दिन चलना है। सिकंदर लोधी हाथी पर बैठकर अंगरक्षकों के साथ कबीर जी की झोंपड़ी पर गए। वहाँ से उनको तथा रविदास जी को साथ लेकर भण्डारा स्थल पर आए। सबसे कबीर सेठ का परिचय कराया। केशव रूप में स्वयं कबीर जी ने डबल रोल करके उपस्थित संतों-भक्तों को प्रश्न-उत्तर करके सत्संग सुनाया जो 24 घण्टे तक चला। कई लाख सन्तों ने अपनी गलत भक्ति त्यागकर कबीर जी से दीक्षा ली, अपना कल्याण कराया। भण्डारे के समापन के बाद जब बचा हुआ सब सामान तथा टैंट बैलों पर लादकर चलने लगे, उस समय सिकंदर लोधी राजा तथा शेखतकी, केशव तथा कबीर जी एक स्थान पर खड़े थे, सब बैल तथा साथ लाए सेवक जो बनजारों की वेशभूषा में थे, गंगा पार करके चले गए। कुछ ही देर के बाद सिकंदर लोधी राजा ने केशव से कहा आप जाइये आपके बैल तथा साथी जा रहे हैं। जिस ओर बैल तथा बनजारे गए थे, उधर राजा ने देखा तो कोई भी नहीं था। आश्चर्यचकित होकर राजा ने पूछा कबीर जी! वे बैल तथा बनजारे इतनी शीघ्र कहाँ चले गए? उसी समय देखते-देखते केशव भी परमेश्वर कबीर जी के शरीर में समा गए। अकेले कबीर जी खड़े थे। सब माजरा (रहस्य) समझकर सिकंदर लोधी राजा ने कहा कि कबीर जी! यह सब लीला आपकी ही थी। आप स्वयं परमात्मा हो। शेखतकी के तो तन-मन में ईर्ष्या की आग लग गई, कहने लगा ऐसे-ऐसे भण्डारे हम सौ कर दें, यह क्या भण्डारा किया है? महौछा किया है।

महौछा उस अनुष्ठान को कहते हैं जो किसी गुरू द्वारा किसी वृद्ध की गति करने के लिए थोपा जाता है। उसके लिए सब घटिया सामान लगाया जाता है। जग जौनार करना उस अनुष्ठान को कहते हैं जो विशेष खुशी के अवसर पर किया जाता है, जिसमें अनुष्ठान करने वाला दिल खोलकर धन खर्च करता है। संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

गरीब, कोई कह जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा। बड़े बड़ाई किया करें, गाली काढ़े औछा।।

सारांश :- कबीर जी ने भक्तों को उदाहरण दिया है कि यदि आप मेरी तरह सच्चे मन से भक्ति करोगे तथा ईमानदारी से निर्वाह करोगे तो परमात्मा आपकी ऐसे सहायता करता है।

भक्त ही वास्तव में सेठ अर्थात् धनवंता हैं। भक्त के पास दोनों धन हैं, संसार में जो चाहिए वह धन भी भक्त के पास होता है तथा सत्य साधना रूपी धन भी भक्त के पास होता है।

एक अन्य करिश्मा जो उस भण्डारे में हुआ

वह जीमनवार (लंगर) तीन दिन तक चला था। दिन में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो बार भोजन खाता था। कुछ तो तीन-चार बार भी खाते थे क्योंकि प्रत्येक भोजन के पश्चात् दक्षिणा में एक मौहर (10 ग्राम सोना) और एक दौहर (कीमती सूती शॉल) दिया जा रहा था। इस लालच में बार-बार भोजन खाते थे। तीन दिन तक 18 लाख व्यक्ति शौच तथा पेशाब करके काशी के चारों ओर ढ़ेर लगा देते। काशी को सड़ा देते। काशी निवासियों तथा उन 18 लाख अतिथियों तथा एक लाख सेवादार जो सतलोक से आए थे, श्वांस लेना दूभर हो जाता, परंतु ऐसा महसूस ही नहीं हुआ। सब दिन में दो-तीन बार भोजन खा रहे थे, परंतु शौच एक बार भी नहीं जा रहे थे, न पेशाब कर रहे थे। इतना स्वादिष्ट भोजन था कि पेट भर-भरकर खा रहे थे। पहले से दुगना भोजन खा रहे थे। हजम भी हो रहा था। किसी रोगी तथा वद्ध को कोई परेशानी नहीं हो रही थी। उन सबको मध्य के दिन चिंता हुई कि न तो पेट भारी है, भूख भी ठीक लग रही है, कहीं रोगी न हो जाऐं। सतलोक से आए सेवकों को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि यह भोजन ऐसी जड़ी-बूटियां डालकर बनाया है जिनसे यह शरीर में ही समा जाएगा। हम तो प्रतिदिन यही भोजन अपने लंगर में बनाते हैं, यही खाते हैं। हम कभी शौच नहीं जाते तथा न पेशाब करते, आप निश्चिंत रहो। फिर भी विचार कर रहे थे कि खाना खाया है, परंतु कुछ तो मल निकलना चाहिए। उनको लैट्रिन जाने का दबाव हुआ। सब शहर से बाहर चल पड़े। टट्टी के लिए एकान्त स्थान खोजकर बैठे तो गुदा से वायु निकली। पेट हल्का हो गया तथा वायु से सुगंध निकली जैसे केवड़े का पानी छिड़का हो। यह सब देखकर सबको सेवादारों की बात पर विश्वास हुआ। तब उनका भय समाप्त हुआ, परंतु फिर भी सबकी आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी थी। परमेश्वर कबीर जी को परमेश्वर नहीं स्वीकारा।

पुराणों में भी प्रकरण आता है कि अयोध्या के राजा ऋषभ देव जी राज त्यागकर जंगलों में साधना करते थे। उनका भोजन स्वर्ग से आता था। उनके मल (पाखाने) से सुगंध निकलती थी। आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति इसको देखकर आश्चर्यचकित होते थे। इसी तरह सतलोक का आहार करने से केवल सुगंध निकलती है, मल नहीं। स्वर्ग तो सतलोक की नकल है जो नकली (Duplicate) है।

उपरोक्त वाणी का सरलार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने भक्ति और भक्त तथा भगवान की महिमा बनाए रखने के लिए यह लीला की। स्वयं ही केशव बने, स्वयं भक्त बने।(112)

स्वामी रामानंद ने परमेश्वर कबीर जी को सतलोक में व पथ्वी पर दोनों स्थानों पर देखकर कहा था :-

दोहूँ ठौर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारने, आए हो मग जोय।।
तुम साहेब तुम संत हो, तुम सतगुरू तुम हंस। गरीबदास तव रूप बिन, और न दूजा अंश।।

बोलत रामानंद जी, सुनो कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में, तुम ही बोलनहार।।

❖ **वाणी नं. 113 से 117 :-**

गरीब, सोहं ऊपरि और है, सत सुकृत एक नाम। सब हंसों का बंस है, सुंन बसती नहिं गाम।।113।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, सुरति निरति का नाह। सोहं अंतर पैठकर, सतसुकृत लौलाह।।114।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, बिना मूल का फूल। ताकी गंध सुगंध है, जाकूं पलक न भूल।।115।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, बिन बेलीका कंद। राम रसाइन पीजियै, अबिचल अति आनंद।।116।।
गरीब, सोहं ऊपरि और है, कोइएक जाने भेव। गोपि गोसांई गैब धुनि, जाकी करि लै सेव।।117।।

❖ **सरलार्थ :- जैसा कि परमेश्वर कबीर जी ने कहा है तथा संत गरीबदास जी ने बोला है :-** सोहं शब्द हम जग में लाए, सार शब्द हम गुप्त छिपाए। **उसी का वर्णन इन अमतवाणियों में है कि कुछ संत व गुरूजन परमेश्वर कबीर जी की वाणी से सोहं शब्द पढ़कर उसको अपने शिष्यों को जाप के लिए देते हैं। वे इस दिव्य मंत्र की दीक्षा देने के अधिकारी नहीं हैं और सोहं का उपदेश यानि प्रचार करके फिर नाम देना सम्पूर्ण दीक्षा पद्यति नहीं है। अधूरा नाम है। मोक्ष नहीं हो सकता। सोहं नाम के ऊपर एक सुकत यानि कल्याणकारक (सम्पूर्ण मोक्ष मंत्र) और है। वह सब हंसों यानि निर्मल भक्तों के वंश (अपना परंपरागत मंत्र) है जिसे भूल जाने के कारण मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते। यदि यह मंत्र प्राप्त नहीं होता है तो उनको (नहीं बस्ती नहीं गाम) कोई ठिकाना नहीं मिलता। वे घर के रहते न घाट के यानि मोक्ष प्राप्त नहीं होता।(113)**

❖ **सोहं से ऊपर जो कल्याणकारक (सत सुकत) नाम है, उसका स्मरण सुरति-निरति से होता है यानि ध्यान से उसका जाप करना होता है। सोहं नाम का जाप करते-करते उस सारशब्द का भी जाप ध्यान से करना है। उसमें (लौ ला) लगन लगा।(114)**

❖ **जो सार शब्द है, वह सत्य पुरूष जी का नाम जाप है। उस परमेश्वर के कोई माता-पिता नहीं हैं यानि उनकी उत्पत्ति नहीं हुई। (बिन बेली) बिना बेल के लगा फूल है अर्थात् स्वयंभू परमात्मा कबीर जी हैं। उसके सुमरण से अच्छा परिणाम मिलेगा यानि सतलोक में उठ रही सुगंध आएगी। उस परमात्मा के सार शब्द को तथा उस मालिक को पलक (क्षण) भी ना भूलना। वही आपका उपकार करेंगे।(115)**

❖ **वाणी नं. 116 का सरलार्थ :- वाणी नं. 115 वाला ही सरलार्थ है। इसमें फूल के स्थान पर कंद (मेवा) कहा है। उस परमेश्वर वाली इस सत्य भक्ति रूपी रसाईन (जड़ी-बूटी की) पीजिए यानि श्रद्धा से सुमरण कीजिए जो अविचल (सदा रहने वाला), आनन्द (सुख) यानि पूर्ण मोक्ष है। वह प्राप्त होगा।(116)**

❖ **जो सारशब्द सोहं से ऊपर है, उसका भेद कोई-कोई ही जानता है। गोपि (गुप्त) यानि अव्यक्त, गोसांई (परमात्मा) गैब (गुप्त) धुनि यानि उस जाप से स्मरण की आवाज बनती है। उसे धुन कहा है। उस मंत्र की सेव यानि पूजा (स्मरण) करो।(117)**

❖ **वाणी नं. 118 :-**

गरीब, सुरति लगै अरु मनलगै, लगै निरति धुनि ध्यान। च्यार जुगन की बंदगी, एक पलक प्रवान।।118।।

❖ **सरलार्थ :- उस सम्पूर्ण दीक्षा मंत्र का सुमरण (स्मरण) ध्यानपूर्वक करना है। उसका**

स्मरण करते समय सुरति-निरति तथा मन नाम के जाप में लगा रहे। ऐसा न हो कि :-

कबीर, माला तो कर में फिरै, जिव्हा फिरै मुख मांही। मनवा तो चहुँ दिश फिरै, यह तो सुमरण नांही।।

सुरति-निरति तथा मन व श्वांस (पवन) के साथ स्मरण करने से एक ही नाम जाप से चार युगों तक की गई शास्त्रविरूद्ध मंत्रों के जाप की भक्ति से भी अधिक फल मिल जाता है।(118)

❖ **वाणी नं. 119 :-**

गरीब, सुरति लगै अरु मनलगै, लगै निरति तिस ठौर। संकर बकस्या मेहर करि, उभर भई जद गौर।।119।।

❖ **सरलार्थ :- उपरोक्त विधि से स्मरण करना उचित है। उदाहरण बताया है कि जैसे शंकर भगवान ने कृपा करके पार्वती जी को गुप्त मंत्र बताया जो प्रथम मंत्र यह दास (रामपाल दास) देता है जो शास्त्रोक्त नाम है और देवी जी ने उस स्मरण को ध्यानपूर्वक किया तो तुरंत लाभ मिला।(119)**

❖ **वाणी नं. 120 :-**

गरीब, सुरति लगै और मन लगै, लगै निरति तिसमांहि। एक पलक तहां संचरै, कोटि पाप अघ जाहिं।।120।।

❖ **सरलार्थ :- उपरोक्त विधि के सुमरण (स्मरण) से एक क्षण में करोड़ों पाप नष्ट हो जाते हैं।(120)**

❖ **वाणी नं. 121 :-**

गरीब, अबिगत की अबिगत कथा, अबिगत है सब ख्याल। अबिगत सूंअबिगत मिलै, कर जोरे तब काल।।121।।

❖ **सरलार्थ :- अविगत की यानि दिव्य परम पुरूष (परमेश्वर) की अविगत कथा (दिव्य कहानी) है। उसका ख्याल (विचार-विमर्श) भी अविगत (अनोखा) है क्योंकि उसका किसी को ज्ञान नहीं होता। कोई प्रथम बार उस परमेश्वर की महिमा सुनता है तो अनोखी लगती है। उस परमेश्वर को (अविगत से) दिव्य मंत्र की साधना से (अविगत मिले) प्राप्त करते हैं तो उस साधक के सामने (कर जौरे तब काल) काल (ज्योति निरंजन) हाथ जोड़ता है और उसको सतलोक जाने में बाधा उत्पन्न नहीं करता।(121)**

❖ **वाणी नं. 122 :-**

गरीब, अमर अनूपम कबीर आप है, और सकल सब खण्ड। सूछम से सूछम सही, पूरन पद प्रचंड।।122।।

❖ **सरलार्थ :- वह अमर अनुपम (अद्भुत) परमात्मा स्वयं कबीर जी हैं। अन्य सब प्रभु खण्ड (नाशवान) हैं यानि खण्डित होने वाले हैं। वह परमेश्वर सुक्ष्म से सुक्ष्म यानि समर्थ है। जैसे अणु से अधिक विस्फोटक परमाणु है। इसी प्रकार परमेश्वर परमाणु से भी अधिक सुक्ष्म होने से अधिक शक्तिमान हैं और (पूर्ण पद) वह परम पद प्राप्त कराने वाले हैं जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। वह परमेश्वर ऐसा प्रचण्ड यानि प्रबल है।(122)**

❖ **राग प्रभाती से शब्द नं. 8 :-**

✯कोई जन जानैगा भेव शाख नहीं वह तो मूल है।।टेक।। ऊपरि मूल तले कूं डार, दिव्य चिसम्यौं तुम देखौ रे निहारि। समाधान शाखा न पात, कौंन लखै सांई की दाति।।1।। राता पीरा है अकाश, दम कूं खोजो महतत बास। महतत में एक मूरति ऐंन, मुरली मधुर बजावैं बैन।।2।। अछै बिरछ

असथांन हमार, खेलौ हंसा अधिर अधार। कोटिक ब्रह्मा धरते ध्यान, कोटिक शंभू है सुरज्ञान।।3।। नारद बिसनु रटते शेष, कोई क जांनैं सतगुरु उपदेश। सनक सनंदन हैं ल्यौलीन, ध्यान धरैं सतगुरु दुरबीन।।4।। जनक बिदेही और सुखदेव, गोरख दत्त करत हैं सेव। कोटि कला त्रिबैंनी तीर, दास गरीब भजि अबिगत कबीर।।5।।8।।

❖ **वाणी नं. 123 :-**

गरीब, अधमउधारन भगति है, अधम उधारन नांव। अधम उधारक संत है, जिनकी मैं बलि जाँव।।123।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने बताया है कि जो शास्त्र अनुकूल भक्ति है, उससे अधम (नीच-अपराधी) व्यक्ति का भी उद्धार हो जाता है। इसलिए वह शास्त्र अनुकूल सत्यनाम (वास्तविक नाम) की साधना अधम उद्धारन (नीचों का भी उद्धार करने वाली) है। जो शास्त्रविधि अनुसार सत्य मंत्रों की भक्ति करने को कहते हैं, वे संत भी अधम उद्धारक यानि पापियों का उद्धार करने वाले हैं जिनकी मैं बलिहारी जाऊँ यानि उनका बार-बार धन्यवाद करूँ।(123)**

❖ **वाणी नं. 124 :-**

गरीब, गज गनिका अरु भीलनी, सबरी प्रेम सहेत। केते पतित उधारिया, सतगुरु गावैं नेत।।124।।

❖ **सरलार्थ :- पूर्व जन्म तथा वर्तमान जन्म में की गई भक्ति की शक्ति से परमात्मा ने अनेकों की सहायता की। जैसे गज (हाथी और मगरमच्छ के युद्ध में हाथी) को बचाया। एक वैश्या (गणिका) को ज्ञान समझाकर शरण में लेकर उसका उद्धार किया। शबरी यानि भीलनी का उद्धार भी पूर्व जन्म के संस्कार से हुआ। ऐसे-ऐसे कितने पतित यानि पापियों का उद्धार किया। सतगुरू जी बताते हैं कि नेति (न इति) कोई अंत नहीं, इतने पापियों को पार किया। तो जो भक्ति करेगा, वह किसी न किसी जन्म में पार हो जाएगा।(124)**

❖ **वाणी नं. 125 :-**

गरीब, राम रसाइन पीजिये, यौह औसरि यौह दाव। फिरि पीछै पछिताइगा, चला चली होइ जाव।।125।।

❖ **सरलार्थ :- हे भक्त! राम रसायन यानि शुभ नाम रूपी औषधि का सेवन कर जिससे तेरी आत्मा की कीमत बने।**

रसायन :- पूर्व समय में एक साधु ने जड़ी-बूटियों का शोध करके रसायन यानि कैमिकल (Chemical) तैयार किया। उसको लोहे पर डालने से लोहा सोना (Gold) बन जाता था। संत गरीबदास जी ने कहा है कि राम नाम वाली रसायन को पी ले ताकि तेरी आत्मा जो पापों के कारण लोहा हो चुकी है, वह सोना यानि शुद्ध आत्मा बनकर भक्ति धन का संग्रह करके सत्यलोक चली जाए। यह मानव जन्म का अवसर मिला है। यह एक दाँव लगा है। अन्यथा जब शरीर छूट जाएगा और कुल के व्यक्ति कहेंगे कि उठाओ-चलो, शमशान घाट ले चलो। कहते हैं कि फिर बाद में पश्चाताप् करेगा। न परिवार साथ चलेगा, न धन साथ चलेगा। इसलिए सच्चे नाम रूपी रसायन का सेवन कर यानि सत्य साधना कर।(125)

❖ **वाणी नं. 126 :-**

गरीब, राम रसाइन पीजिये, चोखा फूल चुवाइ। सुंनि सरोवर हंस मन, पीया प्रेम अघाइ।।126।।

❖ **सरलार्थ :- राम नाम वाली बूटी (औषधि) जो आत्मा को बहुमूल्य बनाती है। उसको पी यानि भक्ति कर। इतनी भक्ति कर कि चोखा (अधिक) फूल चुवाई यानि भक्ति रूपी फूल को खिला अर्थात् अधिक से अधिक भक्ति करके महिमा बना। जिन साधकों ने राम नाम की रसायन अघाई यानि छिक-छिककर पीया है यानि अधिक से अधिक भक्ति की है। उनको सुन्न सरोवर अर्थात् ऊपर आकाश में बने सतलोक रूपी सरोवर में मन रूपी हंस आनन्द से उसमें मोक्ष रूपी मोती सेवन करता है। सुखी रहता है।(126)**

❖ **वाणी नं. 127 :-**

गरीब, कहता दास गरीब है, बांदी जाम गुलाम। तुम हौ तैसी कीजिये, भगति हिरंबर नाम।।127।।

❖ **सरलार्थ :- संत गरीबदास जी ने कहा है कि मैं बांदी जाम गुलाम यानि अति आधीन व नम्रभाव से कह रहा हूँ जैसे गुलाम अपने मालिक से कहता है। ऐसे तुम मालिक के बच्चे हो। उसी भाव से तुमको कह रहा हूँ कि भक्ति करो। अपना कल्याण कराओ। यह मानव जन्म बार-बार नहीं मिलता। तुमसे जितनी भक्ति हो सके, उतनी अवश्य करियो। भक्ति रूपी हिरंबर (स्वर्ण) नाम यानि सत्य मंत्र से ही बनता है यानि मोक्ष प्राप्ति के सच्चे नामों की भक्ति करके अपना जीवन स्वर्ण की तरह चमकाओ। उसकी कीमत (Value) बनाओ। अपना कल्याण कराओ।(127)**

स्वामी रामदेवानंद गुरू महाराज जी की असीम कृपा से ''सुमरण के अंग'' का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

।।सत साहेब।।

❖ ''अथ बिरह चितावनी के अंग'' का सरलार्थ

❖ **सारांश :- संत गरीदास जी ने मानव शरीर प्राप्त प्राणियों को काल ब्रह्म के लोक की भूल-भुलईया बताई है तथा मानव जन्म की सार्थकता किस कार्य में है? यह भी बताया है।**

❖ **वाणी नं. 12 में कहा है कि :-**

दृष्टि पड़े सो फना है, धर अम्बर कैलाश। कृत्रिम बाजी झूठ है, सुरति समोवो श्वांस।।

❖ **भावार्थ है कि जो कुछ आप देख रहे हो यानि खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, पर्वत, झरने, वन, दरिया, गाँव-शहर, जीव-जंतु, राजा, मानव सब फना (नाशवान) है। शिव जी का घर कैलाश पर्वत पर है। वह कैलाश पर्वत भी नष्ट होगा। यह सब कृत्रिम संसार सब झूठ है। एक स्वपन के समान है। इसलिए श्वांस-उश्वांस से स्मरण (नाम जाप) करो। संसार को असार मानो। परमात्मा की भक्ति करो। अपना कल्याण करवाओ।(12)**

❖ **वाणी नं. 21 में कहा है कि :-**

चार पदार्थ एक कर, सुरति निरति मन पौन। असल फकीर जोग यौंह, गगन मंडल कूं गौन।।

❖ **भावार्थ :- स्मरण (नाम जाप) करते समय अपने मन को सुरति-निरति को तथा पवन (श्वांस) को एक करें। वास्तव में (फकीरी) सन्यासी होना तथा जोग (योग) अर्थात् भक्ति यह है। वन में जाने की अपेक्षा गगन मण्डल अर्थात् आकाश खण्ड में ध्यान रखो। सतलोक जाने की आश रखो। शास्त्र विरूद्ध साधना करने से कोई लाभ नहीं होता।(21)**

❖ **वाणी नं. 7 में बताया है कि :-**

गरीब, काशी करौंत लेत हैं, आन कटावें शीश। बन—बन भटका खात हैं, पावत ना जगदीश।।7।।

❖ **भावार्थ :- शास्त्र विरूद्ध साधक नकली-स्वार्थी गुरूओं द्वारा भ्रमित होकर कोई जंगल में जाता है। कोई काशी शहर में करौंत से सिर कटवाने में मुक्ति मानता है। इस प्रकार की व्यर्थ साधना जो शास्त्रोक्त नहीं है, करने से कोई लाभ नहीं होता।(7)**

❖ **वाणी नं. 3 में संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-**

गरीब, असन बसन सब तज गए, तज गए गाम अरू गेह। माहे संसा सूल है, दुर्लभ तजना येह।।

❖ **भावार्थ :- जब तक सतगुरू नहीं मिलता, तब तक भक्तजन भक्ति भी करते रहते हैं और शंका भी रहती है कि वह व्यक्ति यह साधना करता है, कहीं मेरी साधना सत्य न हो। इसलिए अपनी साधना के साथ-साथ दूसरे की साधना भी करने लगता है। जैसे एक साधक शनिदेव को मानता था। शनिवार को व्रत रखता था। दूसरे ने बताया कि मैं मंगलवार का व्रत करता हूँ और बाबा हनुमान की भक्ति करता हूँ। सालासर धाम (राजस्थान) में एक वर्ष में अवश्य जाता हूँ। मेरे को बहुत लाभ हो रहा है। उस शनिवार के पुजारी ने मंगलवार का व्रत भी प्रारम्भ कर दिया और वर्ष में सालासर भी जाने लगा। यह संसा सूल यानि शंका रूपी काँटा मन तब तक खटकता रहता है, जब तक तत्वदर्शी सतगुरू नहीं मिलता। (असन-बसन तज गए) घर-बार, राजपाट सब त्याग गए। जंगल में चले गए, परंतु अज्ञान के कारण शंका भी बनी है। इस शंका का निवारण दुर्लभ है। यदि कोई तत्वज्ञानी संत उनको समझाने की**

चेष्टा करता है तो वे शास्त्रविरूद्ध साधना त्यागते नहीं। इसलिए कहा है कि उसको त्यागना दुर्लभ है। उसके त्यागे बिना भक्ति की उपलब्धि नहीं होती।(3)

❖ **वाणी नं. 8 में कहा है कि :-**

गरीब, संसा तो संसार है, तन पर धारै भेख। मरकब होंही कुम्हार कै, सन्यासी ओर सेख।।

❖ **भावार्थ :- भक्ति मार्ग किसका सही है? किसका गलत है? यह शंका पूरे संसार में है और भक्तजन अपने-अपने पंथों की पहचान बनाए रखने के लिए शरीर के ऊपर भिन्न-भिन्न पोषाक पहने हैं या कान चिराकर, जटा (सिर पर बाल) बढ़ाकर अपने-अपने भेषों (पंथों) की पहचान बनाकर साधना करते हैं। तत्वज्ञान के अभाव से शास्त्र के विपरित साधना करके हिन्दु धर्म के सन्यासी तथा मुसलमान धर्म के शेख कुम्हार के घर गधे बनेंगे यानि मोक्ष तो होगा नहीं, पशु शरीर मिलेगा।(8)**

❖ **वाणी नं. 5 :-**

गरीब, नित ही जामें नित मरैं, सांसे माही शरीर। जिनका सांसा मिट गया, सो पीरन सीर पीर।।5।।

❖ **भावार्थ :- जब तक शंका का समाधान नहीं होता तो जीव कभी कोई साधना करता है तो कभी कोई। जन्म-मरण नित (सदा) बना रहता है। जिनको पूर्ण गुरू मिल गया, उनकी शंका समाप्त हो गई। वे पीरन (गुरूओं) के पीर (गुरू) हैं यानि वे ज्ञानी हैं।(5)**

➢ **संसार में भक्त यह विचार करके रहे और भक्ति करे :-**

❖ **वाणी नं. 22 :-**

गरीब, पंछी घाल्या आलहणा, तरवर छायां देख। गर्भ जुनि के कारण, मन में किया विवेक।।22।।

❖ **भावार्थ :- जैसे पक्षी ने गर्भ धारण किया तो विवेक (विचार) किया। वक्ष की अच्छी छाया देखकर घोंसला बनाया। (शब्दार्थ :- आलहना = घोंसला, घाल्या = बनाया, डाला।)(22)**

❖ **वाणी नं. 23 :-**

गरीब, जैसे पंछी बन रमया, संझा ले विश्राम। प्रातः समै उड़ जात है, सो कहिए निहकाम।।23।।

❖ **भावार्थ :- जैसे पक्षी सारा दिन वन में रमता (घूमता) है। सूर्य अस्त होने के समय (शाम के समय) किसी भी वक्ष पर बैठकर रात्रि व्यतीत करता है। प्रातः काल उड़कर चला जाता है। वह उस वक्ष से लगाव नहीं रखता। इसी प्रकार तत्वज्ञान प्राप्त साधक ने संसार को समझना चाहिए। अपने आवास को सीमित (छोटा) बनाऐ। यह उद्देश्य रखे कि सुबह (मत्यु के समय) सब छोड़कर उठ जाना है। यह तो अस्थाई ठिकाना है। स्थाई ठिकाना सतलोक है, वहाँ जाना है।(23)**

''सरलार्थ''

❖ **वाणी नं. 1 :-**

गरीब, बैराग नाम है त्याग का, पाँच पचीसों मांही। जब लग सांसा सर्प है, तब लग त्यागी नाहीं।।1।।

❖ **भावार्थ :- पाँच तत्व तथा प्रत्येक पाँच-पाँच प्रकति हैं जो कुल पच्चीस हैं जिनसे शरीर बना है तथा जीव प्रभावित रहता है। यानि इस शरीर में रहते-रहते वैराग्य करना है। बैराग**

त्याग का दूसरा नाम है। जिन भक्तों को तत्वज्ञान हो जाता है तो उनको वैराग्य हो जाता है। इसी को बिरह भी कहते हैं। जब तक शंका रूपी सर्प का विष चढ़ा है, वह परमात्मा के प्रति समर्पित नहीं हो सकता। तब तक त्यागी नहीं हो सकता।

भावार्थ है कि यदि घर त्यागकर वन में चले गए और भक्ति विधि संशय रहित नहीं है तो भक्ति व्यर्थ है तथा घर को क्लेश (झंझट) समझकर वन गए तो सत्य साधना के अभाव में पाँचों प्रकृतियों का प्रभाव प्राणी के क्लेश का कारण बना रहेगा। इसलिए सत्य भक्ति मिलने पर घर में रहकर शरीर से भक्ति भी कर। निर्वाह के लिए भी कर्म कर।(1)

❖ **वाणी नं. 2 :-**

गरीब, बैराग नाम है त्याग का, पांच पचीसों संग। ऊपरकी कंचली तजी, अंतर विषै भुवंग।।2।।

❖ **सरलार्थ :-** शरीर की पच्चीस प्रकृति अपना प्रभाव शरीर (पाँच तत्व के पूतले) पर जमाए रखती है। माता-पिता का स्वभाव भी शरीर में प्रभाव दिखाता है क्योंकि उन्हीं के पदार्थ (बीज) से अपना शरीर बना है। अच्छे स्वभाव के माता-पिता से शरीर बना है तो भक्ति में सहयोगी होता है। यदि शराबी-कवाबी, चोर, रिश्वतखोर, डाकू से शरीर मिला है (जन्म हुआ है) तो उसका प्रभाव भक्ति में बाधा करता है। उससे संघर्ष करते हुए तत्वज्ञान को आधार बनाकर बिरह (वैराग्य) को बनाए रखें। इसे कहा कि बैराग नाम है त्याग का, शरीर की प्रकृति से संघर्ष करते हुए इन्हीं पाँच-पच्चीस में रहते हुए भक्ति की भावना बनी रहे। यदि ऐसा नहीं है तो ऊपर की काँचली (सर्प की कैंचुली) की तरह शरीर के वस्त्र बदल लेने मात्र से बैरागी नहीं बन जाता। अंदर सब विकार विद्यमान हैं। जैसे जनताजन अपने क्षेत्र में प्रचलित वस्त्र धारण करते हैं। यदि कोई भक्ति के लिए किसी पंथ से जुड़ता है, साधु बनता है तो उसको संसारिक वस्त्र उतारने पड़ते हैं तथा उस पंथ वाले भगवा वस्त्र धारण करने पड़ते हैं। यदि उसको तत्वज्ञान नहीं है तो वह नकली त्यागी है। उसमें विकार (काम, क्रोध, अहंकार, लोभ, मोह) यथावत बने रहते हैं। उसके विषय में कहा है कि ऊपर की काँचली तजी (वस्त्र बदलकर बाबा बन गया) अंदर विषय (विकार) रूपी भुवंग (भुजंग) यानि सर्प यथावत है। वह त्याग नहीं है।(2)

❖ **वाणी नं. 3 :-**

गरीब, असन बसन सब तज गए, तज गए गाम अरू गेह। माहे संसा सूल है, दुर्लभ तजना येह।।3।।

❖ **सरलार्थ :-** जब तक सतगुरू नहीं मिलता, तब तक भक्तजन भक्ति भी करते रहते हैं और शंका भी रहती है कि वह व्यक्ति यह साधना भी करता है तथा शंका भी करता है कि कहीं मेरी साधना सत्य न हो। इसलिए अपनी साधना के साथ-साथ दूसरे की साधना भी करने लगता है। जैसे एक साधक शनिदेव को मानता था। शनिवार को व्रत रखता था। दूसरे ने बताया कि मैं मंगलवार का व्रत करता हूँ और बाबा हनुमान की भक्ति करता हूँ। सालासर धाम (राजस्थान) में एक वर्ष में अवश्य जाता हूँ। मेरे को बहुत लाभ हो रहा है। उस शनिवार के पुजारी ने मंगलवार का व्रत भी प्रारम्भ कर दिया और वर्ष में सालासर भी जाने लगा। यह संसा सूल यानि शंका रूपी काँटा मन में तब तक खटकता रहता है, जब तक तत्वदर्शी सतगुरू नहीं मिलता। (असन-बसन तज गए) घर-बार, राजपाट सब त्याग गए। जंगल में

चले गए, परंतु अज्ञान के कारण शंका भी बनी है। इस शंका का निवारण दुर्लभ है। यदि कोई तत्वज्ञानी संत उनको समझाने की चेष्टा करता है तो वे शास्त्रविरूद्ध साधना त्यागते नहीं। इसलिए कहा है कि उसको त्यागना दुर्लभ है। उसके त्यागे बिना भक्ति की उपलब्धि नहीं होती।(3)

❖ **वाणी नं. 4 :-**

गरीब, बाज कुही गति ज्ञान की, गगन गिरज गरजंत। छूटें सुंन अकासतैं, सांसा सर्प भछंत।।4।।

❖ **सरलार्थ :- तत्वज्ञान की स्थिति बाज पक्षी जैसी है। जैसे बाज पक्षी अपने शिकार सर्प को आकाश में ऊँचा चढ़कर खोजकर एकदम ऐसे गिरता है जैसे आकाशीय बिजली गर्ज-गर्जकर गिरती है। ऐसे अज्ञान रूपी सर्प को भछंत (भखंत) यानि खा जाता है, समाप्त कर देता है।(4)**

❖ **वाणी नं. 5 का सरलार्थ पहले सारांश में कर दिया है।**

❖ **वाणी नं. 6 :-**

गरीब, ज्ञान ध्यान दो सार हैं, तीजें तत्त अनूप। चौथें मन लाग्या रहैं, सो भूपन सिर भूप।।6।।

❖ **सरलार्थ :- ज्ञान तथा ध्यान भक्ति का सार है अर्थात् तत्वज्ञान से परमात्मा में ध्यान दृढ़ होता है। ज्ञान बिना ध्यान विश्वास के साथ नहीं लगता। इसलिए ये परमात्मा प्राप्ति में दो मुख्य सहयोगी हैं। तीसरा तत् अनूप का अर्थ है कि परमात्मा पूर्ण है। चौथे मन भक्ति में निरंतर लगा रहे तो वह भक्त भक्ति धन का धनी यानि राजाओं का भी भूप (राजा) यानि भक्ति का महाराज है।(6)**

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, सब जग निर्धना, धनवन्ता (धनी) ना कोय। धनवन्ता सो जानियो, जापै राम नाम धन होय।।

❖ **वाणी नं. 7 :-**

गरीब, काशी करोंत लेत हैं, आन कटावें शीश। बन–बन भटका खात हैं, पावत ना जगदीश।।7।।

❖ **सरलार्थ :- शास्त्र विरूद्ध साधक नकली-स्वार्थी गुरूओं द्वारा भ्रमित होकर कोई जंगल में जाता है। कोई काशी शहर में करौंत से सिर कटवाने में मुक्ति मानता है। इस प्रकार की व्यर्थ साधना जो शास्त्रोक्त नहीं है, उसे करने से कोई लाभ नहीं होता यानि परमात्मा नहीं मिलता।(7)**

❖ **वाणी नं. 8 :-**

गरीब, संसा तो संसार है, तन पर धारै भेख। मरकब होंही कुम्हार कै, सन्यासी ओर सेख।।8।।

❖ **सरलार्थ :- भक्ति मार्ग किसका सही है? किसका गलत है? यह शंका पूरे संसार में है और भक्तजन अपने-अपने पंथों की पहचान बनाए रखने के लिए शरीर के ऊपर भिन्न-भिन्न पोषाक पहने हैं या कान चिराकर, जटा (सिर पर बाल) बढ़ाकर अपने-अपने भेखों (पंथों) की पहचान बनाकर साधना करते हैं। तत्वज्ञान के अभाव से शास्त्र के विपरित साधना करके हिन्दु धर्म के सन्यासी तथा मुसलमान धर्म के शेख कुम्हार के घर गधे बनेंगे यानि मोक्ष तो होगा नहीं, पशु शरीर मिलेगा।(8)**

❖ **वाणी नं. 9 :-**

गरीब, मन की झीनि ना तजी, दिलही मांहि दलाल। हरदम सौदा करत है, कर्म कुसंगति काल।।9।।

❖ **सरलार्थ :- तत्वज्ञान न होने के कारण मन का सुक्ष्म दोष समाप्त नहीं हुआ। दिल में मन रूपी दलाल बैठा है जो गलती करवाता है। वह प्राणी हर श्वांस में जो भक्ति करता है। उसके साथ धोखे का सौदा मन करता है। सत्य साधना से मुँह मोड़ता है। व्यर्थ साधना चाहे कितनी ही कठिन हो, उसे करता है। जैसे खड़ा होकर या बैठकर तप करना, विकट पहाड़ियों पर चढ़कर किसी मंदिर में धोक मारने जाना, कावड़ लाने के लिए पैदल चलना आदि-आदि महाकठिन साधना में कोई आलस नहीं करता। यह धोखे का सौदा मन करता है। यह गलत सत्संग का परिणाम है।(9)**

❖ **वाणी नं. 10 :-**

गरीब, मन सेती खोटी घड़े, तन से सुमरन कीन। माला फेरे क्या हुवा, दूर कुटन बेदीन।।10।।

❖ **सरलार्थ :- ऐसे व्यक्ति साधु का स्वांग करके मन से खोटी घड़े (बुरे विचार करते हैं) यानि गंदी सोच रखते हैं। तन (शरीर) से स्मरण करते रहते हैं। ऐसे माला फिराने से कोई लाभ नहीं होता। दूर कुटन बेदीन यानि हे धर्महीन खोटे व्यक्ति! वह वस्तु यानि परमात्मा ऐसे व्यक्ति से दूर है। कभी नहीं मिलेगा।(10)**

❖ **वाणी नं. 11 :-**

गरीब, तन मन एक अजूद करि, सुरति निरति लौ लाइ। बेड़ा पार समंद होइ, जे एक पलक ठहराइ।।11।।

❖ **सरलार्थ :- भक्ति की श्रेष्ठ स्थिति बताई है कि नाम जाप करते समय मन को विकारों से हटाकर स्मरण पर लगाऐं। तन-मन को एक करके सुरति तथा निरति से नाम में लौ (लगन) लगाऐं। एक पल (एक सैकिण्ड) भी ध्यान नाम पर लगेगा तो धीरे-धीरे अभ्यास हो जाएगा और संसार सागर से बेड़ा (जीव रूपी बेड़ा) पार हो जाएगा यानि मोक्ष प्राप्त करेगा।(11)**

❖ **वाणी नं. 12 :-**

दंष्टि पड़े सो फना है, धर अम्बर कैलाश। कंत्रिम बाजी झूठ है, सुरति समोवो श्वांस।।12।।

❖ **सरलार्थ :- जो कुछ आप देख रहे हो यानि खेत-खलिहान, बाग-बगीचे, पर्वत, झरने, वन, दरिया, गाँव-शहर, जीव-जंतु, राजा, मानव सब फना (नाशवान) है। शिव जी का घर कैलाश पर्वत पर है। वह कैलाश पर्वत भी नष्ट होगा। यह सब कंत्रिम संसार सब झूठ है। एक स्वपन के समान है। इसलिए श्वांस-उश्वांस से स्मरण (नाम जाप) करो। संसार को असार मानो। परमात्मा की भक्ति करो। अपना कल्याण करवाओ।(12)**

❖ **वाणी नं. 13 :-**

गरीब, सुरति स्वांस कूं एक कर, कुंजि किनारै लाई। जाका नाम बैराग है, पांच पचीसों खाई।।13।।

❖ **सरलार्थ :- श्वांस से नाम जाप करते समय सुरति (ध्यान) को उसी नाम स्मरण पर लगाना। यह श्वांस-सुरति एक करना है। कुंज कमल (अंतिम नौवें कमल) के निकट ध्यान को पहुँचाऐं। इसका नाम वैराग्य है जिसने शरीर की प्रकंति को अनुकूल कर लिया। ध्यान तब ही लगता है जब मन संसारिक प्रेरणाओं से विचलित नहीं होता।(13)**

❖ **वाणी नं. 14 :-**

गरीब, पांच पचीसों भून करि, बिरह अगनि तन जार। सो अविनासी ब्रह्म है, खेले अधर अधार।।14।।

❖ **सरलार्थ :- शरीर की प्रकतियों को परमात्मा प्राप्ति की तड़फ रूपी अग्नि में जलाकर दढ़ रहे, वह अमरत्व प्राप्त करता है। वह जीव ब्रह्म (पीव) के गुणों युक्त अमर हो जाता है। वह अधर-आधार यानि सर्वोपरि स्थान सतलोक में आनन्द से रहता है (खेलता है) यानि मौज-मस्ती करता है।(14)**

इसी विषय में संत गरीबदास जी की वाणी है :-

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मा आये, अनन्त कोटि भये ईश। साहिब तेरी बंदगी से, जीव होत जगदीश।।

❖ **वाणी नं. 15 :-**

गरीब, त्रिकुटी आगे झूलता, बिनहीं बांस बरत। अजर अमर आनंद पद, परखे सुरति निरत।।15।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा अन्य वेश में त्रिकुटी कमल में रहता है। बिन ही बाँस बरत का भावार्थ बिना छत्र, मुकुट व सिंहासन के त्रिकुटी में परमेश्वर जी सतगुरू रूप में रहते हैं। वह परमेश्वर सुखदाई (आनन्द कन्द) है, अजर-अमर है। उसको सत्यनाम के जाप से सुरति-निरति से भक्त परख (जाँच) करता है। सत्यनाम के जाप से यदि सतगुरू रूप में विराजमान परमात्मा के चेहरे यानि स्वरूप में परिवर्तन नहीं होता है तो समझा जाता है कि वास्तविक सतगुरू कबीर जी ही हैं। यदि काल ब्रह्म ने सतगुरू का रूप बना रखा होता है तो सत्यनाम के जाप से उसका काल रूप प्रकट हो जाता है। सतगुरू का स्वांग नष्ट हो जाता है। झूलने का भावार्थ है कि जिधर देखें, उधर ही सतगुरू खड़ा दिखाई देता है।(15)**

❖ **वाणी नं. 16 :-**

गरीब, यह महिमा कासे कहूँ, नैनों मांही नूर। पल पल में दीदार है, सुरति सिन्धु भरपूर।।16।।

❖ **सरलार्थ :- भक्त की साधना से भक्ति की कमाई की रेखाऐं आँखों के सामने दिखाई देती हैं जो अन्य को दिखाई नहीं देती। प्रत्येक भक्त को अपनी-अपनी रेखाऐं आँखों के सामने दिखाई देती हैं। पलकें बंद कर लेते हैं तो पलकों के अंदर दिखाई देती हैं। सुक्ष्म रूप बन जाती हैं। यदि किसी कार या बस के शीशे के बाहर दष्टि दौड़ाते हैं तो शीशे को पार करके बाहर दिखाई देती हैं। एक भक्त की रेखाऐं (जिसे संत गरीबदास जी ने बंकड़ा साहेब भी कहा है) दूसरे भक्त को दिखाई नहीं देती। इसलिए कहा है कि यह महिमा किसको बताऊँ कि मेरे नैनों (आँखों) में परमेश्वर का नूर (नूरी झलक) दिखाई देता है। उसके मैं पल-पल (क्षण-क्षण में) दीदार (दर्शन) करता हूँ। मेरी सुरति-निरति इस नूरी शक्ति से भरी है। सुरति दूर की वस्तु को देखती है। निरति निर्णय (परख) करती है कि यह गाय है या भैंस। इसको सुरति तथा निरति स्पष्ट करती है।(16)**

❖ **वाणी नं. 17 :-**

गरीब, झीना दरसें दास कूं, पौहप रूप प्रवान। बिनही बेली गहबरै, है सो अकल अमान।।17।।

❖ **शब्दार्थ :- झीना = सुक्ष्म, पतला। दरसें = दिखाई देता है। दास कूँ = भक्त को। पोहप = पुष्प। रूप = के आकार में। प्रवान = पूर्ण रूप से प्रमाणित। वह बंकड़ा साहेब रूपी फूल किसी बेल (लता) के नहीं लगा है। वह तो अकल (अविनाशी) है। अमान = शांत,**

आनंददायक। गहबरै = विकसित होता है।

❖ सरलार्थ :- भक्तों को वह सुक्ष्म रूप बंकड़ा साहेब रूपी फूल दिखाई देता है। वह बिना लता (बेल) के विकसित होता है। जिस भक्त को वह भक्ति की कमाई रूपी रेखाऐं दिखाई देती हैं, वह मोक्ष का अधिकारी हो चुका है। यदि आजीवन मर्यादा में रहकर भक्ति करता रहेगा तो वह अमर होगा। आनन्द व चैन से सतलोक में रहेगा।(17)

❖ वाणी नं. 18 :-

गरीब, अकल अभूमी आदि है, जाका नाहीं अंत। दिलही अंदर देव है, निरमल निरगुन तंत।।18।।

❖ सरलार्थ :- अकल (अविनाशी = जिसका काल न हो), भूमि = ऊपर के चारों लोक जो अमर धरती है, वह सनातन है। उसमें निवास करने वाला निर्मल निर्गुण (अव्यक्त) देव (परमेश्वर) जो तंत यानि सब देवों का सार प्रभु यानि कुल का मालिक है। वह हमारे दिल में बसा है।(18)

❖ वाणी नं. 19 :-

गरीब, तन मन सेती दूर है, मांहे मंझ मिलाप। तरबर छाया विरछ में, है सो आपे आप।।19।।

❖ सरलार्थ :- वह परमेश्वर दूर सतलोक में है जिसे स्थूल शरीर तथा मन की कल्पनाओं से नहीं देख सकते। वैसे उस प्रभु का प्रभाव शरीर में भी है। इस प्रकार जीव से मिला भी है। जैसे तरवर (वंक्ष) की छाया वंक्ष का ही प्रतिबिंब होती है। ऐसे परमेश्वर तो सतलोक आदि-आदि ऊपर के लोकों में है। उसकी शक्ति वंक्ष की छाया की तरह सर्व ब्रह्मण्डों में फैली है।(19)

❖ वाणी नं. 20 :-

गरीब, नौ तत्त के तो पांच हैं, पांच तत्त के आठ। आठ तत्त का एक है, गुरु लखाई बाट।।20।।

❖ सरलार्थ :- आँखों में जो नूरी रेखाऐं हैं, वे सँख्या में 14 हैं जिनमें से नौ तत यानि परमेश्वर की नौ सिद्धियों के प्रतीक तो पाँच हैं। पाँच तत (सिद्धियों) के प्रतीक आठ हैं तथा आठ तत (सिद्धियों) का प्रतीक एक है जो कुल मिलाकर (5+8+1) चौदह हैं जो भिन्न-शक्ति का ग्राफ है। यह बाट यानि मार्ग सतगुरू जी ने दिखाया है।(20)

❖ वाणी नं. 21 :-

गरीब, चार पदारथ एक करि, सुरति निरति मन पौन। असल फकीरी जोग यौंह, गगन मंडल कूं गौन।।21।।

❖ सरलार्थ :- स्मरण (नाम जाप) करते समय अपने मन को, सुरति-निरति को पवन (श्वांस) पर टिकाकर रखें। वास्तव में (फकीरी) सन्यासी होना तथा जोग (योग) यानि भक्ति करना यह है। वन में जाने की अपेक्षा गगन मण्डल अर्थात् आकाश खण्ड में ध्यान रखो। सतलोक जाने की आश रखो। शास्त्र विरूद्ध साधना करने से कोई लाभ नहीं होता।(21)

❖ वाणी नं. 22 :-

गरीब, पंछी घाल्या आलना, तरबर छाया देख। गरभ जूंनि के कारणै, मन में किया बिबेक।।22।।

❖ भावार्थ :- जैसे पक्षी ने गर्भ धारण किया तो विवेक (विचार) किया। वंक्ष की अच्छी छाया देखकर घोंसला बनाया। (शब्दार्थ :- आलहना = घोंसला, घाल्या = बनाया, डाला।)(22)

❖ **वाणी नं. 23 :-**

गरीब, जैसे पंछी बन रमया, संझा लै बिसराम। प्रातः समै उठि जात है, सो कहिये निहकाम।।23।।

❖ **भावार्थ :- जैसे पक्षी सारा दिन वन में रमता (घूमता) है। सूर्य अस्त होने के समय (शाम के समय) किसी भी वृक्ष पर बैठकर रात्रि व्यतीत करता है। प्रातः काल उड़कर चला जाता है। वह उस वृक्ष से लगाव नहीं रखता। इसी प्रकार तत्वज्ञान प्राप्त साधक को संसार समझना चाहिए। अपने आवास को सीमित (छोटा) बनाऐ। यह उद्देश्य रखे कि सुबह (मृत्यु के समय) सब छोड़कर उठ जाना है। यह तो अस्थाई ठिकाना है। स्थाई ठिकाना सतलोक है, वहाँ जाना है।(23)**

❖ **वाणी नं. 24 :-**

गरीब, जाके नाद न बिंद है, घट मठ नहीं मुकाम। गरीबदास सेवन करे, आदि अनादी राम।।24।।

❖ **सरलार्थ :- जिस परमेश्वर का शरीर पाँच तत्व से निर्मित नहीं है, उस परमेश्वर को वही प्राप्त कर सकता है जिसने नाद यानि वचन के शिष्य रूपी परिवार को तथा बिन्द यानि शरीर के परिवार को अपना न मानकर परमेश्वर के बच्चे माने हैं। उन पर अपना दावा नहीं करता। जिसको काल के लोक में अपना कोई ठिकाना दिखाई नहीं देता। संत गरीबदास जी कहते हैं कि आदि-अनादि यानि सर्व प्रथम (आदि सनातन) परमात्मा की सेवा यानि भक्ति वही करेगा, उसी को उसकी प्राप्ति होगी।(24)**

स्वामी रामदेवानंद गुरू महाराज जी की असीम कृपा से ''बिरह चितावनी के अंग'' का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

❖ ''अथ पतिव्रता का अंग'' का सरलार्थ ❖

सारांश :- पतिव्रता उस स्त्री को कहते हैं जो अपने पति के अतिरिक्त अन्य किसी पुरूष को पति भाव से न चाहे। यदि कोई सुंदर-सुडोल, धनी भी क्यों न हो, उसके प्रति मलीन विचार न आऐं। भले ही कोई देवता भी आ खड़ा हो। उसको देव रूप में देखे न कि पति भाव यानि प्रेमी भाव न बनाए। सत्कार सबका करें, परंतु व्याभिचार न करे, वह पतिव्रता स्त्री कही जाती है।

इस पतिव्रता के अंग में आत्मा का पति पारब्रह्म है यानि सब ब्रह्मों (प्रभुओं) से पार जो पूर्ण ब्रह्म है, वह संतों की भाषा में पारब्रह्म है जिसे गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में परम अक्षर ब्रह्म कहा है तथा अध्याय 8 के ही श्लोक 8, 9, 10 में जिसकी भक्ति करने को कहा है। गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 तथा 66 में जिसकी शरण में जाने को कहा है। उस परम अक्षर ब्रह्म में पतिव्रता की तरह भाव रखकर भक्ति करे। अन्य किसी भी प्रभु को ईष्ट रूप में न पूजे। सम्मान सबका करे तो वह भक्त आत्मा पतिव्रता कही जाती है। गीता अध्याय 13 श्लोक 10 में कहा है कि मेरी अव्यभिचारिणी भक्ति कर। इसी प्रकार सुक्ष्म वेद जो परमेश्वर कबीर जी द्वारा अपनी प्रिय आत्मा संत गरीबदास को दिया है, इसी सतग्रन्थ में इस पतिव्रता के अंग में स्पष्ट किया है कि :-

❖ वाणी नं. 18 :-

गरीब, पतिब्रता पीव के चरण की, सिर पर रज लै राख।
पतिब्रता का पति पारब्रह्म है,सतगुरु बोले साख।।18।।

❖ भावार्थ :- पतिव्रता का पति पारब्रह्म है यानि भक्त आत्मा का स्वामी पारब्रह्म है। यह सतगुरू (संत गरीबदास जी के सतगुरू परमेश्वर कबीर जी हैं) ने साखी द्वारा समझाया है यानि सतगुरू साक्षी हैं। पतिव्रता अपने पीव (पति = परमेश्वर) के चरणों की रज (धूल) लेकर सिर पर रखें अर्थात् केवल सतपुरूष को अपना मानें।(18)

❖ वाणी नं. 14 :-

गरीब, पतिब्रता प्रसंग सुनि, जाका जासैं नेह। अपना पति छांड़ै नहीं, कोटि मिले जे देव।।14।।

❖ भावार्थ :- पतिव्रता उसी की महिमा सुनती है जो उसका प्रिय पति है। वह अपने प्रभु को नहीं छोड़ती चाहे कोई देवता आकर खड़ा हो जाए। संत गरीबदास जी ने संसार के बर्ताव के साथ-साथ भक्ति में भक्त के बर्ताव को समझाया है।(14)

❖ वाणी नं. 1 :-

गरीब, पतिब्रता तिन जानिये, नाहीं आन उपाव। एके मन एके दिसा, छांड़ै भगति न भाव।।1।।

❖ भावार्थ :- पतिव्रता उसे मानो जो अपने ईष्ट को छोड़कर किसी अन्य प्रभु की उपाव यानि उपासना ईष्ट रूप में न करे। उसका मन एक अपने ईष्ट की ओर रहे और भक्ति भाव न छोड़े।(1)

❖ वाणी नं. 23 :-

गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, धर अंबर धसकंत। संत न छांड़े संतता, कोटिक मिलैं असंत।।23।।

❖ **भावार्थ :- चाहे धर (धरती) तथा अम्बर (आकाश) धसके यानि नष्ट हो जाऐं। इतनी आपत्ति में भी दंढ़ भक्त (पतिव्रता आत्मा) डगमग नहीं होता। इसी प्रकार संत (सत्य भाव से भगवान पर समर्पित साधक) अपनी सन्तता (साधु वाला स्वभाव) नहीं छोड़ता, चाहे उसको करोड़ों असन्त (नास्तिक व्यक्ति या अन्य देवों के उपासक) मिलो और वे कहें कि आप गलत ईष्ट की पूजा कर रहे हो या कहें कि क्या रखा है भक्ति में? आदि-आदि विचार अभक्तों (असन्तों) के सुनकर भक्त अपनी साधुता नहीं छोड़ता।(23)**

❖ **वाणी नं. 24 :-**

गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, साखी चंदर सूर। खेत चढे सें जानिये, को कायर को सूर।।24।।

❖ **भावार्थ :- यदि वास्तव में दंढ़ भक्त (पतिव्रता आत्मा) है तो वह कभी अपने धर्म-कर्म मर्यादा में चूक (त्रुटि) नहीं आने देगा। इसके साक्षी चंदर (चाँद=Moon) तथा सूर (सूरज=Sun) हैं। भावार्थ है कि जिस तरह सूर्य और चन्द्रमा अपनी गति को बदलते नहीं, दंढ़ भक्त भी ऐसे ही अटल आस्थावान होता है। उसकी परीक्षा उस समय होगी जब कोई आपत्ति आती है। जैसे कायर तथा शूरवीर की परीक्षा युद्ध के मैदान में होती है।(24)**

❖ **वाणी नं. 10 :-**

गरीब, पतिब्रता सो जानिये, जाके दिल नहिं और। अपने पीव के चरण बिन, तीन लोक नहिं ठौर।।10।।

❖ **भावार्थ :- पतिव्रता यानि एक ईष्ट का उपासक उसे जानो जिसके दिल में अन्य के प्रति श्रद्धा न हो। उसकी आत्मा यह माने कि मेरे परमेश्वर पति के चरणों के अतिरिक्त मेरा तीन लोक में ठिकाना नहीं है।(10)**

जो दंढ़ भक्त यानि पतिव्रता आत्मा हुए हैं, उनका वर्णन किया है :-

❖ **वाणी नं. 28 :-**

गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, तन मन जावौं सीस। मोरध्वज अरपन किया, सिर साटे जगदीश।।28।।

❖ **भावार्थ :- राजा मोरध्वज पतिव्रता जैसा भक्त था। उसने अपने लड़के ताम्रध्वज का सिर साधु रूप में उपस्थित श्री कंष्ण जी के कहने पर काट दिया यानि आरे (करौंत) से शरीर चीर दिया। परमात्मा पति के लिए मोरध्वज आत्मा ने अपने पुत्र को भी काटकर समर्पित कर दिया। इस प्रकार पतिव्रता आत्मा का परमेश्वर के लिए यदि तन-मन-शीश भी जाए तो उस अवसर को चूकती नहीं यानि हाथ से जाने नहीं देती। ऐसे भक्त को अपने ईष्ट देव के लिए सर्वश न्यौछावर कर देना होता है। वह सच्चा भक्त है।(28)**

❖ **वाणी नं. 29-30 :-**

गरीब, पतिब्रता प्रहलाद है, ऐसी पतिब्रता होई। चौरासी कठिन तिरासना, सिर पर बीती लोइ।।29।।
गरीब, राम नाम छांड्या नहीं, अबिगत अगम अगाध। दाव न चुक्या चौपटे, पतिब्रता प्रहलाद।।30।।

''भक्त प्रहलाद की कथा''

❖ **भावार्थ :- भक्त प्रहलाद को उनके पिता हिरण्यकशिपु ने राम नाम छुड़वाने के लिए अनेकों कष्ट दिए, परंतु अपना उद्देश्य नहीं बदला। भक्त प्रहलाद दंढ़ रहा तो परमात्मा ने पल-पल (क्षण-क्षण) रक्षा की।**

''बिल्ली के बच्चों की रक्षा करना''

प्रहलाद को अक्षर ज्ञान तथा भक्ति ज्ञान के लिए उनके पिता राजा हिरण्यकशिपु ने शहर से बाहर बनी पाठशाला में भेजा जहाँ पर दो पाधे (उपाध्य यानि आचार्य) एक साना तथा दूसरा मुर्का पढ़ाया करते थे। धर्म की शिक्षा दिया करते थे। हिरण्यकशिपु के आदेश से सबको हिरण्यकशिपु-हिरण्यकशिपु नाम जाप करने का मंत्र बताते थे। कहते थे कि राम-विष्णु नाम नहीं जपना है या अन्य किसी भी देव का नाम नहीं जपना है। हिरण्यकशिपु (हरणाकुश) ही परमात्मा है। प्रहलाद भी अपने पिता का नाम जाप करते थे। यदि कोई हिरण्यकशिपु के स्थान पर राम-राम या अन्य नाम जो प्रभु के हैं, जाप करता मिल जाता तो उसे मौत की सजा सबके सामने दी जाती थी।

पाठशाला के रास्ते में एक कुम्हार ने मटके पकाने के लिए आवे में रखे थे। लकड़ी तथा उपलों से ढ़क रखा था। सुबह अग्नि लगानी थी। रात्रि में एक बिल्ली ने अपने बच्चे उसी आवे (मटके पकाने का स्थान) में एक मटके में रख दिए। प्रातः काल बिल्ली अन्य घर में भोजन के लिए चली गई। कुम्हार ने आवे को अग्नि लगा दी। आग प्रबल होकर जलने लगी। कुछ समय पश्चात् बिल्ली आई और अपने बच्चे को आपत्ति में देखकर म्याऊँ-म्याऊँ करने लगी। कुम्हारी को समझते देर ना लगी। वह भी परमात्मा से अर्ज करने लगी और रोने लगी। हे प्रभु! हे राम! हमारे को महापाप लगेगा। इस बिल्ली के बच्चों की रक्षा करो। बार-बार यह कहकर पुकार कर रही थी। उस समय भक्त प्रहलाद उसी रास्ते से पाठशाला जा रहा था। कुम्हारी को रोते हुए देखा तो उसके निकट गया। वह हे राम! हे विष्णु भगवान! हे परमेश्वर! इन बिल्ली के बच्चों को बचाओ, हमारे को पाप लगेगा, कह रही थी। प्रहलाद ने उस माई से कहा कि हे माता! आप राम ना कहो। मेरे पिता जी का नाम लो, नहीं तो आपको मार डालेगा। कुम्हारी ने बताया कि इस आवे में बिल्ली के बच्चे रह गए हैं। हमारे को पता नहीं चला। भगवान से इन बच्चों की सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रही हूँ। इस भयंकर अग्नि से राजा हिरण्यकशिपु नहीं बचा सकते, परमात्मा ही बचा सकते हैं। प्रहलाद भक्त ने कहा, माई! जब आप घड़े निकालें तो मुझे बुलाना। ऐसी शीतल हवा चली कि अग्नि बुझ गई। कहते हैं कि एक महीने में आवे में रखे घड़े पकते थे। उस समय 2½ (अढ़ाई) दिन में आवा पक गया। प्रहलाद भक्त को बुलाकर आवे से मटके निकाले गए। जिस घड़े में बिल्ली के बच्चे थे, वह घड़ा कच्चा था। बिल्ली के बच्चे सुरक्षित थे। अन्य सब घड़े पके हुए थे। यह दृश्य देखकर प्रहलाद ने मान लिया कि ऐसी विकट परिस्थिति में मानव कुछ नहीं कर सकता। परमात्मा ही समर्थ हैं।

कुम्हारी से भक्त प्रहलाद जी ने कहा था कि माता जी! यदि भगवान ने बिल्ली के बच्चे बचा दिए तो मैं भी परमात्मा का ही नाम जपा करूँगा। अपने पिता का नाम जाप नहीं करूँगा। उस दिन के पश्चात् प्रहलाद भक्त राम का नाम जाप करने लगा। यह घटना सत्ययुग की है। श्री रामचन्द्र पुत्र दशरथ जी का तो जन्म भी नहीं हुआ था। जब साना तथा मुर्का अध्यापकों को पता चला कि प्रहलाद राम का जाप करता है तो उसे बहुत समझाया

कि आप हिरण्यकशिपु राजा का नाम जाप करो।

प्रहलाद ने कहा कि गुरूदेव! मेरे पिता मानव हैं, राजा हैं, परंतु भगवान नहीं हैं। विशेष परिस्थिति में परमात्मा ही रक्षा कर सकता है। जीव कल्याण भी परमात्मा से हो सकता है। राजा जनता को क्या देता है? उल्टा ''कर'' (Tax) जनता से लेता है। परमात्मा सबका पालन करता है। वर्षा करता है तो धन्य-धान्य से मानव परिपूर्ण होता है। राजा होना अनिवार्य है, परंतु अन्यायी नहीं होना चाहिए। राजा कानून व्यवस्था बनाने के लिए बनाया जाता है। प्रजा की बदमाशों से सुरक्षा करना राजा का परम कर्तव्य है। राजा को परमात्मा की भक्ति से ही राज्य प्राप्त होता है। राजा यदि प्रजा को तंग करता है तो परमात्मा उसे दण्ड देता है। नरक में डालता है। फिर पशु-पक्षियों की योनियों में कष्ट उठाता है। इसलिए राजा को भी परमात्मा का नाम लेना चाहिए। परमात्मा से डरकर काम करना चाहिए। साना ने कहा, राजकुमार! आप हमारे शिष्य हैं, गुरू नहीं। आप हमें शिक्षा दे रहे हो। प्रहलाद ने कहा, क्षमा करो गुरूदेव! मैं आपको शिक्षा नहीं दे रहा, राजा का धर्म बता रहा हूँ। मुर्का पाण्डे ने कहा, हे राजकुमार! यह ज्ञान आपको किसने करवाया? प्रहलाद ने कहा, गुरूदेव! मुझे पिछली याद ताजा हो गई है। जब मैं माता के गर्भ में था। नारद जी मेरे पास आए थे (सुक्ष्म रूप बनाकर) उन्होंने मुझे परमात्मा की महिमा तथा मानव कर्तव्य बताया था। मुझे नाम भी जाप करने को दिया था। अब मैं वही जाप किया करूँगा।

साना-मुर्का पंडितों ने राजा को बताया कि आपका पुत्र राम का नाम जाप करता है। हमारी बात नहीं मानता। हम शिक्षा देते हैं तो हमारे को ही ज्ञान सुनाने लगता है। हिरण्यकशिपु ने बुलाकर राम का नाम न जपने को कहा तो प्रहलाद ने स्पष्ट कहा, पिताजी! परमात्मा ही समर्थ है। प्रत्येक कष्ट से परमात्मा ही बचा सकता है। मानव समर्थ नहीं है। यदि कोई भक्त साधना करके कुछ शक्ति परमात्मा से प्राप्त कर लेता है तो वह सामान्य व्यक्तियों में तो उत्तम हो जाता है, परंतु परमात्मा से उत्तम नहीं हो सकता। परमात्मा ही श्रेष्ठ है। वही समर्थ है।

यह बात भक्त प्रहलाद से सुनकर अहंकारी हिरण्यकशिपु क्रोध से लाल हो गया और नौकरों-सिपाहियों से बोला कि इसको ले जाओ मेरी आँखों के सामने से और जंगल में सर्पों में डाल आओ। सर्प के डसने से यह मर जाएगा। ऐसा ही किया गया। परंतु प्रहलाद मरा नहीं, सर्पों ने डसा नहीं। आराम से सो रहा था। सुबह धूप से बचाने के लिए सर्प प्रहलाद भक्त पर अपने फन फैलाकर छाया किए हुए थे। राजा ने कहा कि जाओ, जंगल से शव उठा लाओ। सिपाही गए तो प्रहलाद सुरक्षित था। सर्प इधर-उधर चले गए। सिपाहियों ने सब देख लिया था। प्रहलाद को मरा जान उठाने लगे तो प्रहलाद अपने आप उठ खड़ा हुआ। प्रहलाद की आयु दस वर्ष थी। फिर पर्वत से फैंकवाया। प्रहलाद फूलों के घने पौधों के ऊपर गिरा, मरा नहीं।

फिर प्रहलाद की बूआ होलिका अपने भाई हिरण्यकशिपु की आज्ञा से चिता के ऊपर प्रहलाद जी को गोद में (गोडों में) लेकर बैठ गई। होलिका के पास एक चद्दर थी। उसको ओढ़कर यदि अग्नि में प्रवेश कर जाए तो जलता नहीं था। उस चद्दर को ओढ़कर अपने

को पूरा ढ़ककर प्रहलाद को उससे बाहर गोडों में बैठा लिया। कहा, बेटा! देख मैं भी तो बैठी हूँ। कुछ नहीं होगा तेरे को। अग्नि लगा दी गई। परमात्मा ने शीतल पवन चलाई। तेज आँधी आई। होलिका के शरीर से चद्दर उड़कर प्रहलाद भक्त को पूरा ढ़क लिया। होलिका जलकर राख हो गई। भक्त को आँच नहीं आई। प्रहलाद जी का विश्वास बढ़ता चला गया। ऐसे-ऐसे चौरासी कष्ट भक्त को दिए गए, परंतु परमात्मा ने भक्त के विश्वास को देखकर उसकी दृढ़ता से प्रसन्न होकर उसके पतिव्रत धर्म से प्रभावित होकर प्रत्येक संकट में सहायता की।

हिरण्यकशिपु ने श्री ब्रह्मा जी की भक्ति करके वरदान प्राप्त कर रखा था कि मैं सुबह मरूँ ना शाम मरूँ, दिन में मरूँ न रात्रि में मरूँ, बारह महीने में से किसी में ना मरूँ, न अस्त्र-शस्त्र से मरूँ, पृथ्वी पर मरूँ ना आकाश में मरूँ। न पशु से मरूँ, ना पक्षी, ना कीट से मरूँ, न मानव से मरूँ। न घर में मरूँ, न बाहर मरूँ। हिरण्यकशिपु ने प्रहलाद को मारने के लिए एक लोहे का खम्बा अग्नि से गर्म करके तथा तपाकर लाल कर दिया। प्रहलाद जी को उस खम्बे (Pillar) के पास खड़ा करके हिरण्यकशिपु ने कहा कि क्या तेरा प्रभु इस तपते खम्बे से भी इससे तेरी जलने से रक्षा कर देगा? हजारों दर्शक यह अत्याचार देख रहे थे। प्रहलाद भक्त भयभीत हो गए कि परमात्मा इस जलते खम्बे में कैसे आएगा? उसी समय प्रहलाद ने देखा कि उस खम्बे पर बालु कीड़ी (भूरे रंग की छोटी-छोटी चींटियाँ) पंक्ति बनाकर चल रही थी। ऊपर-नीचे आ-जा रही थी। प्रहलाद ने विचार किया कि जब चीटियाँ नहीं जल रही तो मैं भी नहीं जलूँगा। हिरण्यकशिपु ने कहा, प्रहलाद! इस खम्बे को दोनों हाथों से पकड़कर लिपट, देखूँ तेरा भगवान तेरी कैसे रक्षा करता है? यदि खम्बा नहीं पकड़ा तो देख यह तलवार, इससे तेरी गर्दन काट दूँगा। डर के कारण प्रहलाद जी ने परमात्मा का नाम स्मरण करके खम्बे को पकड़ने के लिए हाथ बढ़ाए।

उसी के अंदर से नरसिंह रूप धारण करके प्रभु प्रकट हुए। हिरण्यकशिपु भयभीत होकर भागने लगा। नरसिंह प्रभु ने उसे पकड़कर अपने गोडों (घुटनों) के पास हवा में लटका दिया। हिरण्यकशिपु चीखने लगा कि मुझे क्षमा कर दो, मैं कभी किसी को नहीं सताऊँगा। तब प्रभु ने कहा, क्या मेरे भक्त ने तेरे से क्षमा याचना नहीं की थी? तूने एक नहीं सुनी। अब तेरी जान पर पड़ी तो डर लग रहा है। हे अपराधी! देख न मैं मानव हूँ, न पशु, न आकाश है, न पृथ्वी पर, न सुबह है न शाम है। न बारह महीने, यह तेरहवां महीना है, (हरियाणा की भाषा में लौंद का महीना कहते हैं) न अस्त्र ले रखा है, न शस्त्र मेरे पास है। घर के दरवाजे (Gate) के मध्यम में खड़े थे। न घर में, न बाहर हूँ। अब तेरा अंत है। यह कहकर नरसिंह भगवान ने उस राक्षस का पेट फाड़कर आँतें निकाल दी और जमीन पर उस राक्षस को फैंक दिया। प्रहलाद को गोदी में उठाया और जीभ से चाटा(प्यार किया)। उस नगरी का राजा प्रहलाद बना। विवाह हुआ। एक पुत्र हुआ जिसका नाम बैलोचन रखा। उस बैलोचन का पुत्र राजा बली हुआ जिसने अश्वमेघ यज्ञ की थी जिसमें परमात्मा बावन (बौना) रूप बनाकर एक ब्राह्मण के रूप में आए और तीन पैड़ (कदम) जमीन दान में माँगी थी। भगवान ने एक कदम (डंग) में पूरी पृथ्वी नापी तथा दूसरे पग में स्वर्ग, तीसरे के लिए

स्थान माँगा तो बली ने कहा कि यह मेरी पीठ पर रखो, यह कहकर पथ्वी पर मुख के बल लेट गया। तब प्रभु ने खुश होकर कहा कि माँग! क्या माँगता है?

बली ने कहा कि मैंने इन्द्र के राज्य के लिए सौवीं (100वीं) यज्ञ की है। भगवान बोले, इस इन्द्र को अपना शासनकाल पूरा करने दो, फिर आपको इन्द्रासन देंगे। आप मेरी शर्त पूरी नहीं कर पाए। इसलिए अभी इन्द्र को पद से नहीं हटा सकते। फिर भी आपने मेरे को सर्वस्व दे दिया। इसलिए इसके पश्चात् तेरे को इन्द्रासन दिया जाएगा। तब तक तेरे को पाताल लोक का राजा बनाता हूँ। वहाँ राज्य करो। मैंने इन्द्र से उसका राज्य बनाए रखने का वचन दिया है। बली ने कहा कि एक मेरी शर्त है, उसके लिए वचन दें। भगवान ने कहा कि बोलो। बली ने कहा कि जब तक मैं पाताल में रहूँ तो आप इसी बावन (बौना-ठिगना) रूप में मेरे द्वार के आगे खड़े रहोगे। भगवान विष्णु ने कहा तथास्तु (ऐसा ही होगा)। भक्त प्रहलाद के पोते राजा बली को पाताल का राज्य प्रदान किया। भक्त प्रहलाद जी अपने धर्म-कर्म पर डटे रहे यानि पतिव्रता धर्म का पालन करके अटल रहे तो परमात्मा ने सहायता की। जब तक सूरज चाँद रहेगा, महापुरूषों का नाम रोशन रहेगा।(29-30)

❖ **वाणी नं. 31 :-**

गरीब, पतिब्रता ध्रुव जानिये, और पतिब्रता कौन। उत्तानपाद का राज सब, छाड्या सकल अलौन।।31।।

❖ **सरलार्थ :- भक्त ध्रुव जी ने पतिव्रता धर्म का पालन किया। अपने पिता के राज्य को त्यागकर ठान ली कि परमात्मा देगा, तब ही राज्य लूँगा। जिस कारण से परमात्मा की भक्ति की। टस से मस नहीं हुआ। बाद में उतानपात जी ने ध्रुव जी को कह दिया था कि बेटा! मैं सर्व राज्य तुझे दे दूँगा, आप घर त्यागकर मत जाओ, परंतु ध्रुव जी ने परमात्मा को महत्व दिया।(31)**

कथा सुमरण के अंग में लिखी है।

❖ **वाणी नं. 32-33 :-**

गरीब, सोला सहंस सुहेलियां, छाड़े मीर दिवान। बलख बुखारा तजि गये, देख अधम सुलतान।।32।।
गरीब, सुलतानी पतिब्रत है, छाड्या बलख बुखार। मन मंजन अबिगत रते, सांई का दीदार।।33।।

❖ **सरलार्थ :- अब्राहिम सुल्तान अधम को जब परमेश्वर का ज्ञान हुआ तो परमात्मा पति के लिए समद्ध राज्य त्याग दिया। सोलह हजार स्त्रियाँ, अठारह लाख घोड़े-घोड़ी, अन्य धन को त्यागकर परमात्मा के लिए बेघर हो गए। फिर कभी राज्य की इच्छा मन में नहीं आई। भूख-प्यास, गर्मी-सर्दी को सहन किया, परंतु परमात्मा पति के मार्ग पर डटे रहे। पतिव्रता धर्म का पालन किया, मोक्ष पाया।**

वाणी नं. 36-37-38 :-

गरीब, गोपीचंद अरु भरथरी, पतिब्रता हैं दोइ। गोरख से सतगुरु मिलें, पत्थर पाहन ढोइ।।36।।
गरीब, बारह बरस बिसंभरी, अलवर किला चिनाई। सतगुरु शब्दों बांधिया, अमर भये हैं ताहिं।।37।।
गरीब, सतगुरु शब्द न उलंघिया, जो धारी सो धार। कंचन के मटके भयै, निसतरि गया कुम्हार।।38।।

❖ **सरलार्थ :- गोपीचंद तथा भरथरी दोनों राजा थे। मामा-भानजा थे। भरथरी जी गोपीचंद के मामा जी थे।**

''गोपीचंद की कथा''

गोपीचंद इकलौते पुत्र थे। पिता का देहांत हो चुका था। कई कन्याऐं (पुत्री) थी। माता जी ने एक दिन अपने पुत्र को स्नान करते देखा। माँ ऊपर की मंजिल पर थी। नीचे गोपीचंद की रानियाँ स्नान की तैयारी कर रही थी। माता ने अपने पुत्र को देखा तथा अपने पति की याद आई। इसी आयु में इसके पिता की मत्यु हो गई थी। वे इतने ही सुंदर व युवा थे। उनको काल खा गया। मेरे बेटे को भी काल खाएगा। क्यों न इसको भगवान की भक्ति पर लगा दूँ ताकि मेरा लाल अमर रहे। आँखों से आँसू निकले और गोपीचंद के शरीर पर गिर गए। गोपीचंद ने देखा कि माँ रो रही है। उसी समय वस्त्र पहनकर माँ के पास गया। रोने का कारण पूछा। कारण बताया तथा स्वयं गोरखनाथ जी के पास लेकर गई और दीक्षा दिला दी। सन्यास दिला दिया। गोपीचंद डेरे में रहने लगा। श्री गोरखनाथ जी ने परीक्षार्थ गोपीचंद जी को उसी के घर भिक्षा लेने भेजा तथा कहा कि अपनी पत्नी पाटम देई से माता कहकर भिक्षा माँगकर ला। गोपीचंद जी महल के द्वार पर गए। 'माई भिक्षा देना', आवाज लगाई। रानी तथा कन्याऐं आवाज पहचानकर दौड़ी-दौड़ी आई। सब रोने लगी। कहा कि आप यहीं रह जाऐं। मत जाओ डेरे में, हमारा क्या होगा? उसी समय वापिस डेरे में आ गया तथा गुरू जी से सब वत्तांत बताया। फिर गोपीचंद की माता श्री गोरखनाथ जी के पास जाकर गोपीचंद को वापिस माँगने गई। परंतु गोपीचंद जी ने कहा कि माता जी! अब मैं गुरू जी का बेटा हूँ। आपका अधिकार समाप्त हो गया है। अब मैं किसी भी कीमत पर घर नहीं जाऊँगा। जो गुरू जी ने साधना बताई थी, वह भक्ति की।

यहाँ प्रश्न यह है कि भले ही वह भक्ति मोक्षदायक नहीं थी, परंतु परमात्मा प्राप्ति के लिए गुरू जी ने जो भी साधना तथा मर्यादा बताई, सिर-धड़ की बाजी लगाकर निभाई। वह भिन्न बात है कि मुक्त नहीं हुए। परंतु जिस स्तर की साधना की, उसमें प्रथम रहकर उभरे। संसार में नाम हुआ। किसी न किसी जन्म में परमेश्वर कबीर जी ऐसी दढ़ आत्माओं को अवश्य शरण में लेते हैं। यदि भक्ति की शुरूआत ही नहीं करते तो नरक में जाना था। राज्य तो रहना ही नहीं था।

''भरथरी की कथा''

भरथरी राजा था। इनके छोटे भाई का नाम विक्रम था। भरथरी की रानी का नाम पींगला था। सुंदरता में परी से कम नहीं थी, परंतु चरित्रहीन थी। राजा भरथरी पींगला से बहुत प्यार करता था तथा अत्यंत विश्वास करता था। एक दिन विक्रम ने अपनी भाभी जी को एक नौकर के साथ आपत्तिजनक स्थिति में देखा। नौकर घोड़ों की देख-रेख करने वाले नौकरों का मुखिया था। उसे दरोगा की उपाधि प्राप्त थी। पींगला ने विक्रम को रास्ते से हटाने के लिए षड़यंत्र रचा। खाना-पीना त्याग दिया। राजा ने पूछा तो बताया कि तेरे भाई ने मेरी इज्जत पर हाथ डाला है। राजा को अपने भाई पर पूर्ण विश्वास था कि विक्रम यह गलती नहीं कर सकता, तू गलत कह रही है। परंतु कहावत है कि ''त्रीया चरित्र जाने ना

कोई। खसम मार कर सती होई।।'' **अंत में राजा ने पत्नी मोह में अपने भाई को दोषी करार दे दिया। पींगला ने कहा कि इसको जंगल में जाकर मारकर डाल आऐं। इसकी आँखें निकालकर लाऐं। मुझे दिखाऐं तो मैं जीवित रहूँगी, नहीं तो मरूँगी।**

राजा भरथरी ने अपने नौकरों को यही आदेश दे दिया। जब नौकर लेकर चले, तब विक्रम ने कहा कि भाई साहब! आपको यह स्त्री मरवाएगी। आपको दुनिया से खो देगी। मैं तो चला। एक कवि ने कहा है :-

आज का बोला याद राखिए विक्रम भाई का। दुनियाँ में से खो देगा, तुझे बहम लुगाई का।।

विक्रम ने बताया कि यह स्त्री चरित्रवान नहीं है। परंतु भरथरी ने कान बंद कर लिये। विक्रम की एक नहीं सुनी और भाई को मारने का आदेश दे दिया। दयावान वद्ध मंत्री ने नौकरों से कहा कि विक्रम निर्दोष है। इसको मारना नहीं है। किसी मग की आँखें निकाल लाना। विक्रम को किसी जिम्मेदार व्यक्ति के पास दूसरे राजा (विक्रम के मामा) के राज्य में छोड़ आओ। ऐसा ही किया गया। पींगला का रास्ते का रोड़ा दूर हो गया। एक दिन राजा भरथरी जंगल में शिकार खेलने गया हुआ था। उसने एक हिरण को तीर से मार दिया। उसी समय श्री गोरखनाथ जी सिद्ध वहाँ से जा रहे थे। उसने राजा से कहा कि निर्दोष को मारने से महापाप लगता है। राज के मद में अँधा न हो प्राणी! संसार छोड़कर भी जाना है। राजा में अहंकार अधिक होता है। वह अपनी क्रिया में बाधा तथा किसी की शिक्षा स्वीकार नहीं करता। यदि श्री गोरखनाथ जी संत वेश में न होते तो इसी बात पर उन्हें भी वहीं तीर से मार देता। फिर भी अपनी दुष्टता व्यक्त करते हुए कहा कि यदि इतना जीवों के प्रति दयावान है तो इस मग को जीवित कर दे, नहीं तो यह संत वेशभूषा उतारकर रख दे। श्री गोरखनाथ जी ने शर्त रखी कि यदि मैं इसी हिरण को जीवित कर दूँ तो आपको मेरा चेला बनना पड़ेगा। राजा भरथरी ने कहा कि ठीक है। श्री गोरखनाथ जी ने उसी समय कान पकड़कर हिरण को खड़ा कर दिया। राजा से कहा कि उतर घोड़े से नीचे। राजा घोड़े से नीचे उतरा और संत के पैर पकड़कर क्षमा याचना की और कहा कि मुझे कुछ समय और राज्य करने दो। फिर आपका शिष्य अवश्य बन जाऊँगा। अभी मेरी पत्नी रो-रोकर मर जाएगी। वह मेरे बिना नहीं रह सकती। श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि :-

बाण आले की बाण ना जावै, चाहे चारों वेद पढ़ा ले। त्रिया अपनी ना होती, चाहे कितने लाड लडाले।।

परंतु भरथरी तो अपनी दुष्ट पत्नी को देवी मानता था। उसने अपनी पत्नी की बहुत वकालत की। श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि आपकी इच्छा हो और संसार से मन दुःखी हो जाए, तब आ जाना। कुछ समय उपरांत श्री गोरखनाथ जी वेश बदलकर अन्य संत के रूप में राजा भरथरी जी के पास गए। उनको एक अमर फल देकर कहा कि जो इस फल को खा लेगा, वह लंबी आयु जीयेगा और युवा बना रहेगा। यह कहकर संत जी कुछ दक्षिणा लेकर चले गए। फल की कीमत नहीं ली। राजा ने विचार किया कि यदि मेरे से पहले मेरी पत्नी की मत्यु हो गई तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा। इसलिए यह फल पींगला रानी को देता हूँ। वह फल अपनी रानी को दे दिया तथा उसके गुण बताए। रानी का प्रेम उस दरोगा से था। रानी ने वह फल अपने प्रेमी दरोगा को दे दिया और उसके गुण बताए और कहा

कि मैं आपकी लम्बी आयु देखना चाहती हूँ। मैं आपके बिना जीवित नहीं रह पाऊँगी। दरोगा उसी शहर की वैश्या के पास जाता था। उससे अत्यधिक प्रेम करता था। दरोगा ने वह अमर फल अपनी प्रेमिका वैश्या को दे दिया तथा उसके गुण बताए। वैश्या ने विचार किया कि इस नगरी का राजा बहुत दयालु तथा न्यायकारी है। अपने भाई का दोष देखा तो उसे भी क्षमा नहीं किया। ऐसा राजा लम्बी आयु जीवित रहे तो जनता सुखी रहेगी। यदि मैंने खा लिया तो और अधिक समय तक यह पाप करूँगी। उस वैश्या ने वह फल राजा भरथरी को दे दिया तथा उसके गुण बताए। राजा ने पूछा कि आपको यह फल किसने दिया है? वैश्या ने बताया कि आपके घोड़ों के मुखिया (दरोगा) ने दिया है। राजा ने दरोगा को बुलाया। पूछा तो उसने बताया कि रानी ने दिया है। रानी से महल में जाकर पूछा कि क्या आपने वह फल खा लिया था? रानी कुछ नाराज अंदाज से बोली कि हाँ! खा लिया था। आप हमेशा शक क्यों करते हो? राजा ने उसी समय मंत्री-महामंत्री, अन्य दरबारियों (कार्यालय के उच्च अधिकारियों) को तथा वैश्या और दरोगा को बुलाया। दरोगा से पूछा कि यह फल आपको किसने दिया था? दरोगा ने काँपते हुए कहा कि रानी ने दिया था। राजा का अंधेरा दूर हुआ। अपने भाई की मौत तथा अंतिम वचन को याद करके दहाड़ मारकर रोया। कहा कि दुष्टा! तूने मेरा भाई भी मरवा दिया। कुछ दिन में मुझे भी मरवा देती। पींगला रानी ने क्षमा याचना की। अपनी सब गलती भी स्वीकार कर ली। भरथरी उस दिन राज्य त्यागकर गोरखनाथ जी के डेरे में चला गया तथा परम भक्त बना। महामंत्री को पता था कि विक्रम जीवित है। विक्रम को राजा बनाया गया। दरोगा को नौकरी से निकाल दिया। पींगला को भिन्न महल में रहने को कहा। उसकी पूरी देखभाल राजा ने रखी। उसे कभी कष्ट नहीं होने दिया।

''अलवर शहर के राजा के किले में पत्थर ढ़ोने की नौकरी करना''

एक समय श्री गोरखनाथ जी से गोपीचंद तथा भरथरी जी ने कहा कि गुरूदेव! हमारा मोक्ष इसी जन्म में हो, ऐसी कपा करें। आप जो भी साधना बताओगे, हम करेंगे। श्री गोरखनाथ जी ने कहा कि राजस्थान प्रान्त में एक अलवर शहर है। वहाँ का राजा अपने किले का निर्माण करवा रहा है। तुम दोनों उस राजा के किले का निर्माण पूरा होने तक उसमें पत्थर ढ़ोने का निःशुल्क कार्य करो। अपने खाने के लिए कोई अन्य मजदूरी सुबह-शाम करो। उसी दिन दोनों भक्त आत्मा गुरू जी का आशीर्वाद लेकर चल पड़े। उस किले का निर्माण बारह वर्ष तक चला। कोई मेहनताना का रूपया-पैसा नहीं लिया। अपने भोजन के लिए उसी नगरी के एक कुम्हार के पास उसकी मिट्टी खोदने तथा उसके मटके बनाने योग्य गारा तैयार करने लगे। उसके बदले में सुबह-शाम केवल रोटी खाते थे। कुम्हार की धर्मपत्नी अच्छे संस्कारों की नहीं थी। कुम्हार ने कहा कि दो व्यक्ति बेघर घूम रहे थे। वे मेरे पास मिट्टी खोदने तथा गारा तैयार करते हैं। केवल रोटी-रोटी की मजदूरी लेंगे। आज तीन व्यक्तियों का भोजन लेकर आना। मटके बनाने तथा पकाने वाला स्थान नगर से कुछ दूरी पर जंगल में था। कुम्हारी दो व्यक्तियों की रोटी लेकर गई और बोली कि इससे अधिक नहीं मिलेगी। भोजन रखकर घर लौट आई। कुम्हार ने कहा कि बेटा! इन्हीं में काम

चलाना पड़ेगा। तीनों ने बाँटकर रोटी खाई। कई वर्ष ऐसा चला। अंत के वर्ष में तो केवल एक व्यक्ति का भोजन भेजने लगी। तीनों उसी में संतोष कर लेते थे। किले का कार्य बारह वर्ष चला। कुम्हार ने अपने घड़े पकाने के लिए आवे में रख दिए। अंत के वर्ष की बात है। गोपीचंद तथा भरथरी ने कुम्हार से आज्ञा ली कि पिता जी! हमारी साधना पूरी हुई। अब हम अपने गुरू श्री गोरखनाथ जी के पास वापिस जा रहे हैं। मेरा नाम गोपीचंद है। इनका नाम भरथरी है। उस समय कुम्हार की पत्नी भी उपस्थित थी। मटकों की ओर एक हाथ से आशीर्वाद देते हुए दोनों ने एक साथ कहा :-

पिता का हेत माता का कुहेत। आधा कंचन आधा रेत।।

यह वचन बोलकर दोनों चले गए। जिस समय मटके निकालने लगे तो कुम्हार तथा कुम्हारी दोनों निकाल रहे थे। देखा तो प्रत्येक मटका आधा सोने (Gold) का था, आधा कच्चा था। हाथ लगते ही रेत बनने लगा। कुम्हार ने कहा, भाग्यवान! वे तो कोई देवता थे। तेरी त्रुटि के कारण आधा मटका रेत रह गया। मिट्टी की मिट्टी रह गई। आधा स्वर्ण का हो गया। कुम्हारी को अपनी कतघ्नता का अहसास हुआ तथा रोने लगी। बोली कि मुझे पता होता तो उनकी बहुत सेवा करती।

कबीर, करता था तब क्यों किया, करके क्यों पछताय। बोवे पेड़ बबूल का, आम कहाँ से होय।।

इस प्रकार गोपीचंद और भरथरी जी अपने गुरू जी के वचन का पालन करके सफल हुए। जो अमरत्व उस साधना से मिलना था, वह भी अटल विश्वास करके साधना करने से हुआ। यदि विवेकहीन तथा विश्वासहीन होते तो विचार करते कि यह कैसी भक्ति? यह कार्य तो सारा संसार कर रहा है। मोक्ष के लिए तो तपस्या करते हैं या अन्य कठिन व्रत करते हैं। परंतु उन्होंने गुरू जी को गुरू मानकर प्रत्येक साधना की। गुरू जी के कार्य या आदेश में दोष नहीं निकाला तो सफल हुए। गोरखनाथ जी ने उनको जो नाम जाप करने का मंत्र दे रखा था, उसका जाप वे दोनों पत्थर उठाकर निर्माण स्थान तक ले जाते तथा लौटकर पत्थरों को तरास (काँट-छाँट करके सीधा कर) रहे थे, वहाँ तक आते समय करते रहते थे। दोनों युवा थे। कार्य के परिश्रम तथा पूरा पेट न भरने के कारण मन में स्त्री के प्रति विकार नहीं आया और सफलता पाई। गुरू एक वैद्य (डॉक्टर) होता है। उसे पता होता है कि किस रोगी को क्या परहेज देना है? क्या खाने को बताना है? यानि पथ्य-अपथ्य डॉक्टर ही जानता है। रोगी यदि उसका पालन करता है तथा औषधि सेवन (भक्त नाम जाप) करता है तो स्वस्थ हो जाता है यानि मोक्ष प्राप्त करता है। इसी प्रकार गोपीचंद तथा भरथरी जी ने अपने गुरू जी के आदेश का पालन करके जीवन सफल किया। इसी प्रकार सत्यलोक प्राप्ति के लिए हमने अपनी साधना करनी है।

कथा :- राजा वाजीद जी को वैराग्य कैसे हुआ?

❖ **वाणी नं. 39 से 41 तथा 'सवैया गेंद उछाल' :-**

गरीब, बाजींदा बैजार में, तरकस तोरि कमान।
सुत्र मुंये कूं देख कर, छांड्या सकल जहान।।39।।

गरीब, बाजींदा बिचर्या सही, सुत्र मुंये कै नालि।
चरण कंवल छांड़ै नहीं, जीवैंगे कै कालि।।40।।
गरीब, बाजींदा बिचर्या सही, सुत्र मुंये कूं देख।
चरण कंवल छांड़े नहीं, मिलि है अलख अलेख।।41।।

''सवैया गेंद उछाल''

बाजींद दुनी सेती बिचरया, कादर कुरबान संभारया है।
फंध टूटि गया तिब ऊंट मुवा, तहां पकरि पलान उतारया है।।
अरवाह चली कहौ कौन गली, धौरा पीरा अक कारा है।
कहीं पैर पियादा पालकियों, कहिं हसती का असवारा है।।
सत खुद खुदाइ अलह लखिया, सब झूठा सकल पसारा है।
कपरे पारे तन से डारे, अब सत प्रणाम हमारा है।।
बीबी रोवै चोली धोवै, तू सुन भरतार हमारा है।
मैं ना मानूं मसतान भया, लाग्या निज निकट निवारा है।।
उरमैं अविनासी आप अलह,सतगुरु कूं पार उतार्या है।
गह गल कंटक दुनिया दूती, यौंह डूबर केसा गारा है।।
हम जान लिया जगदीस गुरु, जिन मंत्र महल समार्या है।
कुछ तोल न मोल नहीं जाका, देख्या नहि हलका भारा है।।
सुन्दर रूप रू बिबेक लख्या,चाख्या नहिं मीठा खारा है।
गलतान समांन समाय रह्या, जा पिंड ब्रह्मंड सै न्यारा है।।
सुरसंख समाधि लगाइ रहे, देख्या एक अजब हजारा है।
कहै दासगरीब अजब दरिया, झिलिमिलि झिल वार न पारा है।।

❖ सरलार्थ :-

कथा :- एक वाजीद नाम का मुसलमान राजा था। एक समय अपनी राजधानी से अन्य शहर में जा रहा था। रेगिस्तानी क्षेत्र था। ऊँटों पर चलते थे। सैंकड़ों अंगरक्षक थे। मंत्री तथा प्रधानमंत्री, धर्मगुरू तथा वैद्य भी साथ चले। सब ऊँटों पर चढ़कर चल रहे थे। आगे पर्वतों के बीच से घाटी से होकर जा रहे थे। ऊँट एक के पीछे एक चल रहा था। वह घाटी इतनी तंग थी कि एक ऊँट ही चल सकता था। उस घाटी में एक ऊँट गिर गया और गिरते ही मत्यु को प्राप्त हो गया। राजा का काफिला रूक गया क्योंकि बराबर से निकलने का स्थान नहीं था। आगे ऊँटों की लंबी पंक्ति थी। घाटी की लंबाई भी तीन-चार किलोमीटर थी। यह घटना बीच में हो गई। राजा ने कहा कि मेरी आज्ञा बिना काफिला किसने रूकवाया है? उसे बुलाओ। मंत्रीगण गए और आकर कारण बताया। राजा वाजीद ने कहा कि मुझे दिखाओ, मेरी आज्ञा के बिना ऊँट कैसे मर गया और लेट गया? राजा ने देखा कि आँख ठीक, नाक ठीक, कान, टाँग, दुम, गर्दन सब ठीक है। फिर कहाँ से मर गया? धर्म पीर (गुरू) ने बताया कि हे राजन! जिस प्राणी का जितना समय परमात्मा ने निर्धारित कर रखा है, वह उतने समय तक ही संसार में रहता है। चाहे मानव है या अन्य प्राणी। वाजीद

बादशाह ने गुरू जी से प्रश्न किया कि क्या मैं भी मरूँगा? गुरू जी ने कहा, जी! आप भी मरोगे। आपके दादा-परदादा भी राजा थे। वे भी मर गए। एक दिन सबको संसार छोड़कर जाना है। राजा वाजीद ने कहा कि पीछे चलो। काफिला पहले आगे गया। मृत ऊँट को उठाकर घसीटकर ले चले। फिर वापिस राजधानी को चले। राजा ने पूछा कि हे पीर (गुरू) जी! फिर मानव जीवन का क्या लाभ है? गुरू जी ने बताया कि भगवान की भक्ति करके अमर हुआ जा सकता है। राजा ने घर आते ही राजशाही वस्त्र त्याग दिये। घर त्यागकर चल पड़ा। उसकी कई स्त्रियाँ (रानियाँ) थी। वे रोने लगी। हमारा क्या होगा? आप हमारे भरतार (पति) हैं। वाजीद ने कहा, यह संसार तो डूबन केसा गारा (दलदल) है। मैंने अमर होना है। मैं चला, मैं मानने वाला नहीं हूँ।

''बुढ़िया और बाजीद की कथा''

एक समय बाजीद राजा राज्य-घर त्यागकर जंगल में साधना कर रहे थे। एक कुतिया ने 8 बच्चों को जन्म दिया। उसको बहुत भूख लगी थी। एक बुढ़िया अपनी 4 रोटी कपड़े में बाँधकर खेत में काम के लिए जा रही थी। बाजीद ने कहा, माई! इस कुतिया को एक रोटी डाल दो। यह भूख से मरने वाली है। साथ में 8 बच्चे और मरेंगे। बुढ़िया चतुर थी। उसने कहा कि मेरे खून-पसीने की कमाई है, यह कैसे दे दूँ? संत ने कहा कैसे रोटी डालोगी? बुढ़िया ने कहा कि आप अपनी भक्ति का चौथा भाग मुझे दे दो, मैं रोटी डाल दूँगी। संत ने अपनी साधना का ¼ भाग संकल्प कर बुढ़िया को दे दिया। वृद्धा ने एक रोटी कुतिया को डाल दी। फिर भी कुत्ती भूखी थी। करते-करते चारों रोटी कुतिया को डाल दी और संत बाजीद जी ने अपनी सर्व भक्ति कमाई वृद्धा को संकल्प कर दी जिससे कुतिया (सुनही) तथा उसके बच्चों का जीवन बचा। रोटी देने से माई को भक्ति की कमाई प्राप्त हुई और बाजीद जी भक्ति पुण्यहीन हो गया, परंतु कुतिया और उसके बच्चों को जीवन दान देने के कारण स्वर्ग प्राप्ति हुई।

''पतिव्रता के अंग का सरलार्थ''

पतिव्रता का भावार्थ पूर्व में सारांश में बता दिया है।

❖ **वाणी नं. 1 से 10 :-**

गरीब, पतिब्रता तिन जानिये, नाहीं आंन उपाव। एके मन एके दिसा, छांड़ै भगति न भाव।।1।।
गरीब, पविव्रता सो जानिये, नाहीं आन उपाव। एकै मन एकै दिसा, दूजा नहीं लगाव।।2।।
गरीब, पतिव्रता सो जानिये, मानें पीव की आन। दूजे सें दावा नहीं, एकै दिसा धियान।।3।।
गरीब, पतिब्रता सो जानिये, मानें पीव की कांन। पीव भावै सोई करें, बिन अग्या नहिं खान।।4।।
गरीब, पतिब्रता सो जानिये, चरण कंवल में ध्यान। एक पलक भूले नहीं, आठौं वखत अमान।।5।।
गरीब, पतिब्रता सो जानिये, जानै अपना पीव। आंन ध्यान सै रहत होइ, चरण कमल में जीव।।6।।
गरीब, पतिब्रता सो जानिये, जानैं अपना कंत। आंन ध्यान सें रहत होइ, जो धार्‌या सो मंत।।7।।
गरीब, पतिब्रता सोई लखो, जानै अपना कंत। आंन ध्यान सै रहत होइ, गाहक मिलै अंनत।।8।।
गरीब, पतिब्रता कै बरत हैं, अपने पीव सूं हेत। आंन उपासी बौह मिलें, जिनसैं रहै संकेत।।9।।

गरीब, पतिब्रता सो जानिये, जाके दिल नहिं और। अपने पीव के चरण बिन, तीन लोक नहिं ठौर।।10।।

❖ **सरलार्थ :- वाणी नं. 10 का सरलार्थ पूर्व में कर दिया है। जैसे पतिव्रता स्त्री अपने पति के अतिरिक्त किसी पुरूष को पति (स्वामी) भाव से नहीं चाहती, चाहे वह कितना सुंदर हो, धनी हो या बड़ा अधिकारी हो, चाहे राजा भी क्यों न हो? उसे पतिव्रता कहते हैं।**

कथा :- एक व्यक्ति राजा का नौकर था। उसको अपनी पत्नी पर पूर्ण विश्वास था कि वह पतिव्रता है जिसकी महिमा वह अपने साथियों में बार-बार करता था। एक दिन बात राज दरबार में पहुँच गई। नौकर हिन्दु था, राजा मुसलमान था। मुसलमान महामंत्री था। राजदरबार में राजा ने उस नौकर से पूछा कि आप यह कहते हैं कि आपकी पत्नी पतिव्रता है। आपको पूर्ण विश्वास है। नौकर ने कहा कि पूर्ण से भी आगे है। उसी समय महामंत्री बोला कि यदि मैं तेरी पत्नी का पतिव्रत धर्म खण्ड कर दूँ तो तुझे क्या सजा मिलनी चाहिए? नौकर ने कहा कि फाँसी दे देना। यदि पतिव्रत धर्म खण्ड नहीं कर पाया तो आपको क्या सजा मिलनी चाहिए? राजा ने कहा कि फाँसी की सजा। महामंत्री ने स्वीकार कर ली तथा नौकर से पूछा कि क्या वस्तु लाऊँ जिससे तू माने कि मैं सफल हुआ हूँ। नौकर ने कहा कि विवाह के समय एक पटका (परणा-तौलिए जैसा वस्त्र) तथा कटार (छोटी तलवार डेढ़ फुट लंबी) दुल्हे को देते थे। वह पत्नी को संभलवा दी जाती थी। वह सुहाग की निशानी मानी जाती थी। नौकर ने कहा कि पटका और कटार ला देना, मैं मान लूँगा कि आपने मेरी पत्नी का धर्म नष्ट कर दिया है।

महामंत्री उस शहर में गया और एक दूती (जो औरतों तथा पुरूषों को भ्रमित करके ठगती थी तथा जो निंदा-चुगली करके आपस में लड़ाई करवाती थी। अपना स्वार्थ सिद्ध कर लेती थी। उसे दूती कहते थे।) को बुलाया। महामंत्री ने उस दूती से कहा कि इस नाम का व्यक्ति है। उससे मेरी शर्त लगी है। मेरा सम्पर्क उस स्त्री से करवा दे। जो धन चाहिए, बता दे। दूती ने कहा कि भाई! भूल जा। वह पतिव्रता स्त्री है, तेरी ओर थूकेगी भी नहीं, तेरी शक्ल भी नहीं देखेगी। उनके परिवार के व्यक्ति भी खुँखार हैं। तेरी खाल उतार देंगे। महामंत्री ने कहा कि उसके घर से पटका तथा कटार चुराकर ला दे तथा उसके गुप्तांग के पास यदि कोई चिन्ह हो तो वह भी देखकर मुझे बताना। उस नौकर के परिवार के लोग उस शहर से थोड़ी दूरी पर एक गाँव में रहते थे। नौकर शहर में रहता था। दूती नौकर के घर गई। उसकी पत्नी से बोली कि बेटी! मैं तेरे पति की बुआ हूँ। मैं कई वर्षों के पश्चात् आई हूँ। उस स्त्री ने कहा कि आओ बुआ जी! वह दूती दो दिन रूकी। जिस समय वह स्त्री स्नान करने लगी तो दूती उठकर कमर मलने लगी। बहुत मना करने पर भी नहीं मानी और कहने लगी कि मुझे तो बेटी से भी प्यारी लगती हो, मना मत कर। यह कहकर मुख पर हाथ फेरा। जांघों की ओर झुककर देखा। आँखों को धोने के बहाने पानी मार दिया और उस स्त्री की आँखें बंद हो गई। इस प्रकार गुप्तांग के पास जांघ में एक तिल था, वह देख लिया। बस काम बन गया। वह स्त्री स्नान करके रसोई में खाना बनाने गई तो दूती पटका तथा कटार लेकर चम्पत हो गई। दूती ने पटका तथा कटार महामंत्री को दे दिए और जांघ पर तिल की निशानी भी बता दी। महामंत्री ने राजा से कहा कि मैंने उसकी पत्नी के पास

दो दिन बिताए हैं और यह पटका तथा कटार उसी के हाथों से लेकर आया हूँ। राजा ने दरबार लगाया। नौकर को बुलाया तथा महामंत्री ने सभा में पटका और कटार नौकर को दिखाई जो उसी की थी तथा उसकी पत्नी की जांघ पर तिल भी बताया तो नौकर मान गया। राजा ने फाँसी का दिन पंद्रह दिन बाद का रख दिया और नौकर से अंतिम इच्छा पूछी। नौकर ने कहा कि मैं अपनी पत्नी से अंतिम बार मिलना चाहता हूँ। राजा ने उसे आज्ञा दे दी। नौकर अपने घर गया और अपनी पत्नी से कहा कि आपने विश्वासघात किया। मैंने आपके विश्वास पर महामंत्री शेरखान से ऐसी शर्त लगाई थी। राजा के दरबार में राजा के सामने मैंने कहा था कि मेरी पत्नी का पतिव्रत धर्म कोई नष्ट कर दे तो मुझे फाँसी लगा देना। अब मुझे उस दिन फाँसी लगाई जाएगी। उसकी पत्नी ने सब बात बताई, परंतु दरबार में फैसला हो चुका था। वह नौकर वापिस राजा के दरबार में गया। उसे कैद में डाल दिया गया।

नौकर की पतिव्रता धर्मपत्नी ने परमात्मा को याद किया और राजा के दरबार में गई और राजा से नाच दिखाने की आज्ञा माँगी। स्त्री अति सुंदर थी। राजा लोग शौकीन होते हैं, आज्ञा दे दी। सभा लगी। सब मंत्री, महामंत्री, राजा उपस्थित थे। राजा को नाच अति सुंदर लगा और नतका से कहा कि माँग! क्या माँगना चाहती है? स्त्री ने कहा कि आपकी सभा में मेरा चोर है जिसने मेरे रूपये लिए थे, वापिस नहीं दिए। उसे फाँसी की सजा दी जाए। राजा ने कहा कि ठीक है, बताओ कौन है चोर? स्त्री ने कहा कि आपका महामंत्री शेरखान है। शेरखान कुर्सी से उठा और कहा कि जहाँपनाह! हे परवरदिगार! खुदा की कसम मैंने इस औरत की शक्ल भी नहीं देखी है। यह सरेआम झूठ बोल रही है। तब स्त्री ने कहा कि राजन! यदि इसने मेरी शक्ल नहीं देखी है। यह मुझे जानता तक नहीं है तो वे पटका और कटार कहाँ से लाया था? मैं उस शूरवीर सैनिक की पत्नी हूँ जिसको तूने दूती भेजकर मेरे जांघ के तिल का पता लगाया और उसी ने ये पटका तथा कटार चोरी करके इसको लाकर दी थी। उसने अपने आपको मेरे पति की बुआ बताया था। मैं नई-नई इस घर में आई थी। मैं उसे जानती नहीं थी। वह दूती बुलाई गई। उसने राजा को सच्चाई बता दी। राजा ने उस नौकर को बरी कर दिया और महामंत्री बना दिया। महामंत्री शेरखान को फाँसी पर लटका दिया।

पतिव्रता स्त्री उसे कहा जाता है जो अपने पति के अतिरिक्त अन्य पुरूष से स्वेच्छा से संभोग (Sex) ना करे चाहे स्वर्ण का बनकर खड़ा हो, चाहे देवता पथ्वी पर उतर आए। यदि कोई बलात्कार करता है तो उस नीच को पाप लगेगा और राजा के द्वारा दंडित किया जाएगा, परंतु इस कुकत्य से उस स्त्री या लड़की का पतिव्रत धर्म नष्ट नहीं होगा। दुष्ट शक्तिशाली व्यक्ति तो पुरूष से बलात धन छीन ले जाता है। एक शक्तिशाली दुष्ट व्यक्ति ने जरा-सी कहासुनी होने पर ही एक व्यक्ति की गुदा में डण्डा घुसो दिया। मरा तो नहीं, परंतु महीनों कष्ट रहा। इस प्रकार भक्त ने पतिव्रता स्त्री की तरह अपने ईष्टदेव पर समर्पित होना चाहिए। तब परमेश्वर प्रसन्न होगा और मोक्ष प्रदान करेगा।

❖ वाणी नं. 1 से 10 का शब्दार्थ :- आंन = अन्य, उपाव = उपासना, पीव = पति, आन

= शर्म यानि आन काण्य, दावा नहीं = अपना हक नहीं समझै, धियान = ध्यान। कांन = काण्य यानि लाज (शर्म), धार्या = पति धारण करना यानि पतिव्रता धर्म धारण कर लिया तो अटल रहती है। यह उसका मत (सिद्धांत) है। गाहक मिलो यानि स्त्रियों को लोभ-लालच देकर दुराचार करने वाले पतिव्रता को असंख्य मिलो, वह अपना सिद्धांत नहीं बदलती। टस से मस नहीं होती। हेत = प्रेम, आंन उपासी = अन्य देवताओं की उपासना करने वाली आत्माऐं बहुत मिलें, परंतु अपने ईष्ट देव को पतिव्रता नहीं त्यागती। सच्चा भक्त अपने मूल मालिक के स्थान पर अन्य देवी-देवताओं की पूजा कभी नहीं करता। संकेत माने सतर्क रहना।

वाणी नं. 10 का सरलार्थ सारांश में कर दिया है।

❖ वाणी नं. 11 से 20 :-

गरीब, पतिब्रता कै बरत में, कदे न परि है भंग। उनका दुनिया क्या करै, जिनके भगति उमंग।।11।।
गरीब, पतिब्रता परहेज है, आंन उपास अनीत। अपने पीव के चरण की, छाड़त ना परतीत।।12।।
गरीब, पतिब्रता कै ब्रत है, दूजा दोजिख दुंद। अपने पीव के नाम से, चरण कमल रहि बंध।।13।।
गरीब, पतिब्रता प्रसंग सुनि, जाका जासैं नेह। अपना पति छांड़ै नहीं, कोटि मिले जे देव।।14।।
गरीब, पतिब्रता प्रसंग सुनि, जाकी जासैं लाग। अपना पति छांड़ै नहीं, पूरबले बड़भाग।।15।।
गरीब, पतिब्रता प्रसंग सुनि, जाकी जासैं लाग। अपना पति छांड़े नहीं, ज्यूं चकमक में आग।।16।।

गरीब, पतिब्रता पीव के चरण की, सिर पर रज लै डार।
अड़सठि तीरथ सब किये, गंगा न्हान किदार।।17।।
गरीब, पतिब्रता पीव के चरण की, सिर पर रज लै राख।
पतिब्रता का पति पारब्रह्म है,सतगुरु बोले साख।।18।।
गरीब, पतिब्रता पति प्रणाम करें, रहे पति कूं पूज।
पतिब्रता पारब्रह्म पाव ही, सतगुरु कूं लै बूझ।।19।।
गरीब, पतिब्रता को प्रणाम करे, पतिब्रता कूं मिल धाय।
पतिब्रता दीदार करि, चौरासी नहिं जाय।।20।।

❖ सरलार्थ :- पतिव्रता स्त्री की तरह भक्त के एक परमात्मा की भक्ति के बरत यानि प्रतिज्ञा यानि परहेज कभी भंग नहीं पड़ता यानि खंडित नहीं होता। जिनको परमात्मा की भक्ति की उमंग लगी है तो उन भक्तों को संसार के व्यक्ति कुछ हानि नहीं कर सकते। उनके भक्ति धर्म-कर्म को खण्डित नहीं करवा सकते।(11)

❖ वह भक्त पतिव्रता की तरह अन्य उपासना से परहेज करता है। अपने पीव यानि पति परमेश्वर के चरणों की परतीत यानि विश्वास नहीं छोड़ता।(12)

❖ दोजिख माने नरक, दुंद माने अंधकार। पतिव्रता के लिए अन्य पुरूष नरक का अंधेरा है यानि भक्त अपने ईष्ट के अतिरिक्त अन्य देव की पूजा नरकदायक मानता है। अपने पूर्ण परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास रखता है। उसी के चरण कमलों में बंध चुका है।(13)

❖ वाणी नं. 14 का सरलार्थ सारांश में कर दिया है।

❖ पतिव्रता अपने पति की प्रशंसा सुनती है, अन्य की नहीं। इसी प्रकार भक्त केवल

अपने ईष्ट पूर्ण परमात्मा की कथा प्रसंग सुनता है। पूर्व जन्म के बड़भाग से यानि पुण्य कर्मों के प्रभाव से भक्त एक ईष्ट पूर्ण परमात्मा पर दृढ़ होता है। अपने पति को यानि ईष्ट को ऐसे अभेद मानती है जैसे पत्थर में अग्नि समाई रहती है।(15-16)

❖ **पूर्ण परमात्मा की भक्ति में सर्व तीर्थों के भ्रमण तथा गंगा स्नान तथा केदारनाथ के दर्शन का फल भी मिल जाता है। यह विचार परम भक्त में सदा बने रहते हैं।(17)**

❖ **वाणी नं. 18 का सरलार्थ सारांश में कर दिया है।**

❖ **ईष्ट देव में भक्त की आस्था पतिव्रता की तरह है तो वह पारब्रह्म यानि परम अक्षर ब्रह्म को यानि सतपुरूष को प्राप्त होता है।(19-20)**

❖ **वाणी नं. 21 से 45 :-**

गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, कोटिक होंहि अचूक। और दुनी किस काम की, जैसा सिंभल रूख।।21।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, कोटिक मिलैं कुटिल। और दुनी किस काम की, जैसी पाहन सिल।।22।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, धर अंबर धसकंत। संत न छांड़े संतता, कोटिक मिलैं असंत।।23।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, साखी चंदर सूर। खेत चढे सें जानिये, को कायर को सूर।।24।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, साखी चंदर सूर। खेत चढे सें जानिये, किसके मुख पर नूर।।25।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, जाका यौंहि सुभाव। भगति हिरंबर उर धरें, भावै सरबस जाव।।26।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, तन मन धन सब जाव। नाम अभयपद उर धरै, छाड़ै भगति न भाव।।27।।
गरीब, पतिब्रता चूके नहीं, तन मन जावौं सीस। मोरध्वज अरपन किया, सिर साटे जगदीश।।28।।
गरीब, पतिब्रता प्रहलाद है, ऐसी पतिब्रता होई। चौरासी कठिन तिरासना, सिर पर बीती लोइ।।29।।
गरीब, राम नाम छांड्या नहीं, अबिगत अगम अगाध। दाव न चुक्या चौपटे, पतिब्रता प्रहलाद।।30।।
गरीब, कौन कंवल अनभै उठें, कौन कंवल घर थीर। कौन कंवल में बोलिये, कौन कंवल जल नीर।।31।।
गरीब, मूल कंवल अनभै उठें, सहंस कमल घर थीर। कंठ कंवल में बोलिये, त्रिकुटि कंवल जल नीर।।32।।
गरीब, कहां बिंद की संधि है, कहां नाड़ी की नीम। कहां बजरी का द्वार है, कहां अमरी की सीम।।33।।
गरीब, त्रिकुटि बिंद की संधि है, नाभी नाड़ी नीम। गुदा कंवल बजरी कही, मूलिही अमरी सीम।।34।।
गरीब, कहां भँवर का बास है, कहा भँवर का बाग। कौन भँवर का रूप है, कौन भँवर का राग।।35।।
गरीब, हिरदे भँवर का बास है, सहंस कंवल दल बाग। उजल हिरंबर रूप है, अनहद अबिगत राग।।36।।
गरीब, निस वासरि कै जागनै, हासिल बड़ा नरेस। नाम बंदगी चित धरौ, हाजरि रहना पेस।।37।।
गरीब, सुरति सिंहासन लाईये, निरभय धूनी अखंड। चित्रगुप्त पूछें नहीं, जम का मिटि है दंड।।38।।
गरीब, ऐसा सुमरन कीजिये, रोम रोम धुनि ध्यान। आठ बखत अधिकार करि, पतिब्रता सो जान।।39।।
गरीब, तारक मंत्र चित्त धरौ, सूख्म मंत्र सार। अजपा जाप अनादि है, हंस उतरि है पार।।40।।
गरीब, अंजन मंजन कीजिये, कुल करनी करि दूर। साहेब सेती हिलमिलौ, रह्या सकल भरपूर।।41।।
गरीब, हरदम मुजरा कीजिये, यौंह तत्त बारंबार। कुबुधि कटे कांजी मिटे, घण नामी घनसार।।42।।
गरीब, अजब हजारा पुहुप है, निहगंधी गलतान। पांच तत्त नाहीं जहां, निरभय पद प्रवान।।43।।
गरीब, सत पुरूष साहेब धनी, है सो अकल अमान, पूर्ण ब्रह्म कबीर का पाया हम अस्थान।।44।।
गरीब, नेस निरंतर रमि रह्या, प्रगट क्या दिखलाइ। दास गरीब गलतान पद, सहजै रह्या समाइ।।45।।

❖ **सरलार्थ :- पतिव्रता चुकै नहीं, कोटिक होहिं अचूक यानि जैसे पतिव्रता के साथ**

जबरदस्ती हो जाती है तो भी वह अपने पति को हृदय से चाहती है। इसी प्रकार सत्य साधक एक परमेश्वर के उपासक को जबरदस्ती किसी अन्य देव स्थान पर कुल के लोग ले जाते हैं तो वह हृदय से अपने ईष्ट को याद करता रहता है। उस अन्य देव में कभी ईष्ट वाली श्रद्धा नहीं होती। अन्य देव तो ऐसा है जैसे सिम्भल का वृक्ष होता है जिसको डोडे लगते हैं। वे फल जैसे लगते हैं, परंतु उनमें खाद्य पदार्थ नहीं होता। रूई निकलती है। इसी प्रकार तत्वज्ञान प्राप्त भक्त को पूर्ण परमात्मा के अतिरिक्त अन्य प्रभु ऐसे व्यर्थ लगते हैं जैसे आम के वृक्ष की तुलना में सिम्भल का वृक्ष व्यर्थ लगता है। धर = धरती, अंबर = आकाश, धसकंत = नष्ट हो जाऐं, असन्त = नास्तिक। भक्त के लिए तो अन्य देव पाहन (पत्थर) की सिल (शिला) हैं अर्थात् व्यर्थ हैं।(21-22)

❖ वाणी नं. 23-24 का सरलार्थ सारांश में पूर्व में कर दिया है।

❖ वाणी सँख्या 25-26-27 का सरलार्थ ऊपर किया है, वही भावार्थ है। दृढ़ भक्त पतिव्रता की तरह एक ईष्ट की भक्ति का भाव नहीं त्यागता चाहे सर्वस नष्ट हो जाए। नूर = लाली यानि विजयी रहना, खेत चढ़ना = युद्ध के मैदान में डटकर खड़ा होना। भक्ति हिरंबर उर धरना = बहुमूल्य भक्ति हृदय में रखना, नाम उभय पद = सच्चे नाम को निर्भय होकर जपते हैं जो तत्वज्ञान को जान चुके हैं।

❖ वाणी नं. 28 से 30 का सारांश में सरलार्थ कर दिया है।

❖ वाणी नं. 31 से 49 का सरलार्थ पूर्व सारांश में कर दिया है।

राजा जनक स्वयं तो स्वर्ग गए ही, साथ में बारह (12) करोड़ जीवों को नरक से छुड़वाकर स्वर्ग ले गए। इसी प्रकार श्री गोरखनाथ जी दृढ़ता से भक्ति करके सफल हुए।(34-35)

{सुत्र = ऊँट, मूये = मरे हुए, कूँ = को।}

''साखी पतिव्रता के अंग की''

❖ **वाणी नं. 9 से 20 :-**

गरीब, पतिब्रता के संग है, पारब्रह्म जगदीस। नरआकार निज निरमला, है सो बिसवे बीस।।9।।
गरीब, सकल समाना एक में, एक समाना एक। निहचै होइ तौ पाईये, कहा धरत है भेख।।10।।
गरीब, पारब्रह्म की परख के, नैंन निरंतरि नाल। उर अंतर प्रकासिया, देख्या अबिगत ख्याल।।11।।
गरीब, पारब्रह्म की जाति में, मिलती है सब जात। सुंन सरोवर बिमल जल, अरस अनूपम रात।।12।।
गरीब, आदि अनाहद अगम है, पतिब्रता के पास। सहस इकीसौं अष्टदल, थीर करों दम स्वास।।13।।
गरीब, कित पंछी का खोज है, कहां मीन का पैर। दिल दरिया में पैठि कर, देखो अबिगत लहर।।14।।
गरीब, अलल पंख के लोक कूं, जानत है नहिं कोइ। अललपंख का चीकला, घर पावैगा सोइ।।15।।
गरीब, सिकल बिकल संसार है, पतिब्रता दिल थीर। अचल अनाहद अरस धुनि, डोलै नहीं सरीर।।16।।
गरीब, लोहा कंचन हो गया, मिलि पारस सतसंग। यौह मन पलटत है नहीं, साधौ के प्रसंग।।17।।
गरीब, जुगन जुगन का कुटल है, जुगन जुगन का जिंद। पतिब्रता सो जानिये, रहै मनोरथ बंध।।18।।
गरीब, बारह बानी ब्रह्म है, सहस कला कल धूत। पतिब्रता सो जानिये, राखै मन संजूत।।19।।
गरीब, ज्यूं मंहदी के पान में, लाली रही समाय। यों साहब तन बीच है, खोज करो सत भाय।।20।।

❖ **सरलार्थ :- सरलार्थ पूर्व में किया गया है, वैसा ही है। भावार्थ है कि जो भक्त पूर्ण परमात्मा को सच्चे भाव से याद करता है यानि भक्ति करता है तो जगदीश उसके साथ रहता है। उसकी सहायता करता है। वास्तव में परमात्मा नराकार यानि मानव स्वरूप है। बिसवे बीस का अर्थ है पूर्ण रूप से। (बीस बिसवे का एक पक्का बीघा होता है। वह पूर्ण माना जाता है। यहाँ पर उसी उपमा से परमात्मा को समर्थ कहा है।)(9)**

भेख धरना = दाढ़ी-जटा (सिर पर बाल केश) बढ़ाना, निहचै = विश्वास।

❖ **भावार्थ :- यदि मेरी बातों पर विश्वास है तो परमात्मा मिलेगा। यदि नहीं है तो साधु वेश बनाने का कोई लाभ नहीं है।(10)**

❖ **निज = खास, निरमला = निर्मल, परमात्मा वास्तव में पाक साफ है। सुन्न सरोवर यानि आकाश में सतलोक रूपी सरोवर है। उसमें सुख रूपी जल है। उस अनुपम यानि अद्भुत अरस यानि आसमान में बने सतलोक में रात-दिन लगन लगा।(11-12)**

❖ **एक पारब्रह्म यानि पूर्ण परमात्मा की जाति यानि लक्षण सब देवों से मिलते हैं, परंतु पूर्ण परमात्मा समर्थ हैं। जैसे नमक और बूरा के लक्षण मिलते-जुलते होते हैं, परंतु खाने पर पता चलता है।**

आदि = सनातन, अगम = सर्वोपरि, अनाहद = शाश्वत यानि अविनाशी है। परमात्मा दृढ़ भक्त के साथ है।

संहस इक्कीसों यानि दिन-रात में मानव सामान्य विधि से इक्कीस हजार छः सौ श्वांस-उश्वांस (दम-श्वांस) लेता है। उन सबको परमात्मा के स्मरण में लगाऐं। थीर करो का अर्थ है श्ंवास-उश्वांस से नाम पर दृढ़ता से मन लगाओ।(13)

❖ **कित = कहाँ, पंछी = पक्षी, मीन = मछली।**

जैसे पक्षी उड़कर चलता है तो उसकी खोज किसी चिन्ह से नहीं हो सकती अर्थात् पक्षी अपने पीछे कोई निशान नहीं छोड़ता। जैसे मछली जल में कोई निशान बनाती हुई नहीं तैरती, इसी प्रकार प्रत्येक साधक भक्ति की शक्ति से उड़कर या जल की तरह चलकर सतलोक चला जाता है। अन्य व्यक्ति उसके मार्ग की खोज करके नहीं जा सकता। उसे भी भक्ति करके शक्ति रूपी पंख लगवाने पड़ेंगे। मन रूपी मछली को दिल रूपी दरिया में यानि हृदय से लगन लगा। भक्ति करके उस अविगत (अव्यक्त) परमात्मा की लहर यानि अनन्त सुख को देखो।(14)

❖ अलल पंख की जानकारी गुरूदेव के अंग के सरलार्थ में वाणी नं. 1 के सरलार्थ में विस्तार से बताई है। चीकला माने पक्षी का नवजात बच्चा जिसको पंख नहीं लगी हों। भावार्थ है कि जो भक्त अंश है, वह भक्ति उस भाव से करता है जैसे अलल पक्षी का बच्चा अपना ध्यान आसपास मन में लगाए रहता है। उसकी आत्मा में यह समाया होता है कि तेरा परिवार ऊपर है। जब तक वह उड़ने योग्य नहीं होता तो अन्य पक्षियों के साथ रल-मिलकर रहता है, परंतु युवा होते ही उड़कर ऊपर अपने माता-पिता के पास चला जाता है। इसी प्रकार तत्वज्ञान प्राप्त भक्त को शत प्रतिशत विश्वास होता है कि अपना ठिकाना सतलोक में है। वही चीकला यानि भक्ति प्रारम्भ करने वाला भक्त भक्ति पूरी करके निर्बाध सतलोक वाले घर को प्राप्त करेगा।(15)

❖ संसार सिकल-बिकल यानि चंचल है, कभी भक्ति करने लगता है, कभी छोड़ देता है, परंतु पूर्ण विश्वासी भक्त थीर यानि भक्ति पर दृढ़ रहता है। वह आकाश में परमात्मा में (निरंतर) धुनि-लगन, थीर टिकाकर लगाता है।(16)

❖ लोहा पारस पत्थर के साथ मिलकर स्वर्ण (Gold) हो जाता है परन्तु यह मन संतों के साथ रहकर भी गुण ग्रहण नहीं करता यानि साधु नहीं बनता।(17)

❖ मन तो युगों-युगों का कुटिल दुष्ट है। जिन्द माने किसी गलत आदत से चिपक गया तो त्यागता नहीं। जिन्द एक प्रेत होता है जो किसी को चिपक जाता है तो पीछा नहीं छोड़ता, केवल पूर्ण संत से डरता है। यह मन तो उस जिन्द भूत से भी बुरा है। दृढ़ भक्त तो अपने मनोरथ यानि उद्देश्य पर बंधा यानि दृढ़ रहता है।(18)

❖ बारहबानी = पूर्ण रूपेण, ब्रह्म = प्रभु है यानि वास्तव परमात्मा तो पूर्ण ब्रह्म है। सहस = संहस्र यानि एक हजार, कला = कला (शक्ति) वाला, कल धूत यानि प्रभु तो काल है। दृढ़ भक्त हर समय अपने मन को संजूत यानि संयम करके पूर्ण परमात्मा में रखता है।(19)

❖ जैसे मेंहदी का पत्ता हरे रंग का होता है, परन्तु जब उसे रगड़ कर हाथों पर लगाया जाता है तो लाल रंग कर देता है। इसी प्रकार यह शरीर हड्डियों और माँस का ढ़ांचा दिखाई देता है। जब इसको भक्ति में रगड़ोगे तो सत भाय यानि वास्तव में परमात्मा मिलेगा। उसकी सच में खोज करो यानि सही कह रहा हूँ कि भक्ति करके इस मानव शरीर में परमात्मा को खोजो।(20)

❖ **वाणी नं. 21 से 30 :-**

गरीब, बिन दरिया दादुर जहां, बिनही परबत मोर। बिना स्वाति मोती जहां, बिनही चन्द चकोर।।21।।

गरीब, बिन बादल बिजली जहां, बिन घन हर गरजंत। बिन बागों कोइल जहां, बिनही फाग बसंत।।22।।
गरीब, बिनही बेली पुहुप है, बिना केतकी भौंर। बिन चिसम्यौं दीदार है, बिना दस्त जहां चौंर।।23।।
गरीब, बिनही आसन बैठना, बिन पग का जहां पंथ। बिनही द्वारे बोलना, समुझे बिरला संत।।24।।
गरीब, बिन जिभ्या बानी पढे, बिनही अंग अनूप। बिन मंदिर जहां पौढना, अबिगत सत्त सरुप।।25।।
गरीब, बिन ही धरती देहरा, जामें अबिगत देव। दृष्टि मुष्टि सें रहत है, जाकी करि लै सेव।।26।।
गरीब, ज्यूं सुवा पिंजर बसै, खिड़की बंध लगाइ। दुरमति दिल अंदर रहै, मंजारी नहिं खाइ।।27।।
गरीब, मारंग बंक पिछान ले, उड़न गड़न दे छाड़। सुरति सबद के संग है, दुरमति दिल सै काड।।28।।
गरीब, कौन कंवल में काल है, कौन कंवल में राम। कौन कंवल में जीव है, कौन कंवल बिसराम।।29।।
गरीब, कंठ अरू संहस कंवल में काल है, संख कवंल दल राम। हिरदै कंवल में जीव है, अष्ट कंवल बिसराम।।30।।

❖ **सरलार्थ :- (बिन) बिना (दरिया) नदी के जहाँ पर (दादुर) मेंढ़क हैं तथा पर्वत के बिना मोर रहते हैं। मोती का निर्माण समुद्र में रहने वाले जीव सीप के अंदर स्वांति नक्षत्र की वर्षा की बूँद से होता है, परन्तु सतलोक में सतपुरूष की शक्ति से स्वतः मोती बन जाते हैं। चकोर पक्षी भी बिना चन्द्रमा के रहता है। भावार्थ है कि सतलोक में सर्व व्यवस्था परमेश्वर जी की कपा से ही होती है जो आश्चर्य की बात है, परन्तु सतलोक में सामान्य बात है।(21)**

❖ **सतलोक में बिन बाग के कोयल है यानि कोयल की आवाज अपने आप होती है। ऐसा नहीं है कि सतलोक में बाग नहीं हैं। परन्तु जहाँ बाग नहीं हैं, वहाँ भी कोयल जैसी सुरीली आवाज सुनने को मिलती है। बिजली जैसी चमक यानि आकाशीय बिजली चमकती है तो वह बादलों के टकराने से गरज के साथ चमकती है। सतलोक मे ऐसी झिलमिल-झिलमिल तथा बादल वाली गर्जना कुछ स्थानों पर सदैव होती रहती है। वह बिना बादलों के होती है। सतलोक में बसंत के सुहावने मौसम के लिए फाल्गुन महीने की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती। वहाँ सदैव बसंत जैसा सुहावना मौसम रहता है। यह परमेश्वरीय शक्ति का कमाल है।(22)**

❖ **दस्त = हाथ, भौंर = भँवरा, जो काला भूंड जैसा होता है। फूलों पर बैठकर सुगंध लेता है। बेली = बेल यानि लता, पुहुप = पुष्प, फूल, पग = पैर, पंथ = मार्ग, चोंर = चंवर जो गाय की दुम जैसे बालों वाला होता है जो संतों तथा सद्ग्रंथों के ऊपर हाथ से चलाया जाता है। वह सतलोक में बिना हाथ के अपने आप चलता रहता है। आसन = बैठने के लिए कपड़ा, गद्दा या कुर्सी को आसन कहते हैं। सतलोक में बिना जीभ के भी बोल सकते हैं जैसे आकाशवाणी होती है। मंदिर = महल, देहरा = देवालय जिसमें परमेश्वर रहते हैं। इन वाणियों में सतलोक में अनहोनी लीलाओं का ज्ञान है। वैसे वहाँ पर स्थाई मकान हैं, बाग हैं, झरने बहते हैं। अंग = शरीर जो पाँच तत्व का है, वह नहीं है। वहाँ पर अनूप यानि विचित्र शरीर है। दष्टि = नजर, मुष्टि = विशेष ध्यान से देखने की कोशिश, दष्टि तो सामान्य नजर होती है। जो नजर गड़ाकर ध्यान से देखें, वह मुष्टि कही जाती है।**

रहत = बिना, सेव = पूजा। भावार्थ है कि उस परमात्मा को आत्मा की आँखों से देखा जाता है, चर्म दष्टि से नहीं। दुरमति = बुरी नियत से किया गया विचार, मंजारी = बिल्ली, सुवा = तोता = शुक, पिंजर = पिंजरा। भावार्थ है कि तोता अपने पिंजरे में रहता है तो

उसको बिल्ली नहीं खा सकती। दुरमति तो बिल्ली है, आत्मा तोता कहा है। यदि मर्यादा में रहकर भक्त चलता है तो उस पर किसी के दुर्विचारों का प्रभाव नहीं पड़ता।(23 से 27)

❖ उड़न-गड़न यानि चंचलता को छोड़कर यथार्थ भक्ति मार्ग को पहचानकर उसी अनुसार साधना कर। अपने दिल से पूर्व के कुविचार निकाल कर सत्य भाव से सत्य साधना कर। अपने ध्यान (सुरति) को शब्द यानि नाम जाप पर लगाए रख।(28) काड = निकाल।

❖ संत गरीब दास जी ने प्रश्न-उत्तर से ज्ञान समझाया है। प्रश्न किया है कि काल कौन से कमल चक्र मे है तथा जीव कौन से कमल में विश्राम करता है?(29)

❖ उत्तर दिया है कि कण्ठ कमल तथा संहस्र कमल में दुर्गा जो काल की पत्नी है तथा काल ब्रह्म रहते हैं। दोनों का एक ही उद्देश्य है। इसलिए ये दोनों काल स्वरूप हैं जो जीव को फँसाए हुए हैं। हृदय कमल में यानि शिव के लोक का कार्यक्रम जिस कमल (चैनल) में दिखाई देता है, वह हृदय कमल है। उसी में परमेश्वर जी का मिनी सतलोक वाला कार्यक्रम एक कोने में दिखाई देता है, शंख कमल वहाँ दष्टिगोचर होता है। उसी हृदय कमल में जीव रहता है। अष्ट कमल में विश्राम जीव करता है। अष्ट कमल का यहाँ भावार्थ है कि नाभि कमल जिसकी आठ पंखुड़ियाँ हैं, इसे भी अष्ट कमल दल कहते हैं। सोते समय जीव अष्ट कमल में रहता है। इस प्रकार प्रश्न-उत्तर में ज्ञान स्पष्ट किया है।(30)

❖ **वाणी नं. 31 से 45 :-**

गरीब, कौन कंवल अनभै उठें, कौन कंवल घर थीर। कौन कंवल में बोलिये, कौन कंवल जल नीर।।31।।
गरीब, मूल कंवल अनभै उठें, सहंस कमल घर थीर। कंठ कंवल में बोलिये, त्रिकुटि कंवल जल नीर।।32।।
गरीब, कहां बिंद की संधि है, कहां नाड़ी की नीम। कहां बजरी का द्वार है, कहां अमरी की सीम।।33।।
गरीब, त्रिकुटि बिंद की संधि है, नाभी नाड़ी नीम। गुदा कंवल बजरी कही, मूलिही अमरी सीम।।34।।
गरीब, कहां भँवर का बास है, कहा भँवर का बाग। कौन भँवर का रूप है, कौन भँवर का राग।।35।।
गरीब, हिरदे भँवर का बास है, सहंस कंवल दल बाग। उजल हिरंबर रूप है, अनहद अबिगत राग।।36।।
गरीब, निस वासरि कै जागनै, हासिल बड़ा नरेस। नाम बंदगी चित धरौ, हाजरि रहना पेस।।37।।
गरीब, सुरति सिंहासन लाईये, निरभय धूनी अखंड। चित्रगुप्त पूछें नहीं, जम का मिटि है दंड।।38।।
गरीब, ऐसा सुमरन कीजिये, रोम रोम धुनि ध्यान। आठ बखत अधिकार करि, पतिब्रता सो जान।।39।।
गरीब, तारक मंत्र चित्त धरौ, सूख्म मंत्र सार। अजपा जाप अनादि है, हंस उतरि है पार।।40।।
गरीब, अंजन मंजन कीजिये, कुल करनी करि दूर। साहेब सेती हिलमिलौ, रह्या सकल भरपूर।।41।।
गरीब, हरदम मुजरा कीजिये, यौंह तत्त बारंबार। कुबुधि कटे कांजी मिटे, घण नामी घनसार।।42।।
गरीब, अजब हजारा पुहुप है, निहगंधी गलतान। पांच तत्त नाहीं जहां, निरभय पद प्रवान।।43।।
गरीब, सत पुरूष साहेब धनी, है सो अकल अमान। पूर्ण ब्रह्म कबीर का पाया हम अस्थान।।44।।
गरीब, नेस निरंतर रमि रह्या, प्रगट क्या दिखलाइ। दास गरीब गलतान पद, सहजै रह्या समाइ।।45।।

❖ **सरलार्थ :-** संत गरीब दास जी ने प्रश्न-उत्तर करके शरीर के अन्दर का भेद बताया है। मूल कमल से अनभै यानि अनुभव की वाणी निकल कर जीह्वा पर आती है। जब तक जीव परमेश्वर कबीर जी की शरण में नहीं आता, तब तक उसका अंतिम ठिकाना संहस्र कमल है यानि काल जाल में ही रहता है। वह उसी को थीर यानि स्थाई मानता है। कंठ

कमल जीव को बोलने में सहयोग देता है। त्रिकुटी कमल से दुःख तथा प्रेम के आँसू निकलते हैं। बिन्द यानि बीज शक्ति (शुक्राणु) त्रिकुटी से नीचे स्वाद चक्र में आते हैं। फिर स्त्री के गर्भ में पुरूष द्वारा जाते हैं। उस शुक्राणु को स्वाद कमल में भेजने में नाड़ी सहयोगी है। वह नाभि कमल में जुड़ी है। गुदा कमल (स्वाद कमल) में बजरी यानि वीर्य है और मूल कमल में अमरी यानि सिद्धि शक्ति है।(31-34)

❖ भंवर का यहाँ भाव जीव से है। वैसे भवंर = भवंरा होता है जो फूलों की सुगंध लेता फिरता है, (काले रंग का भूण्ड) परन्तु इस वाणी में उपमा अलंकार है। भंवर का भावार्थ जीव से ही है। बताया है कि जब तक जीव मुक्त नहीं होता, तब तक शरीर में हृदय कमल में जीव रहता है। जागत अवस्था में तथा उसका अंतिम ठिकाना काल ब्रह्म का सहस्र कमल ही है। वही उसका बाग है, उसी की वासना में अंधा होकर विषयों में डूबा रहता है। जीव जो भक्ति करता है, उसका रूप उज्जवल स्वर्ण की तरह होता है वह परमात्मा की भक्ति अनहद (निरंतर) करता है। यही उसका राग यानि विलाप रूप गाता है।(35-36)

❖ निस (निशा = रात्रि) तथा वासर (दिन) जागते रहना चाहिए यानि भक्ति भजन में गफलत नहीं करना चाहिए। इससे भक्ति का नरेश यानि भक्त राजा कहलाएगा। उसे यह हासिल यानि उपलब्धि होगी। ''गरीब रूम–रूम धुन लेत है छत्रपती है सोय'' जो भक्त साधना करता है और रूम (शरीर के बाल) भी खड़े हो जाते हैं तो वह भक्त राज है। परमात्मा के नाम की बंदगी नम्रभाव से भक्ति हृदय में रखो। सदा मालिक के लिए समर्पित रहना। परमात्मा के दरबार में पेस (हाजिर) रहना। भावार्थ है कि परमात्मा के अतिरिक्त अन्य सब आसार लगे।(37)

❖ संत गरीब दास जी ने कहा है कि हे भक्त! नाम जाप में ध्यान (सुरति) ऐसे लगा जैसे सिंहासन पर बैठकर शोभित होते हैं यानि राजा लोग सिंहासन पर बैठकर अपने को सर्वोपरि तथा निर्भय समझते हैं। ऐसे भक्त परमात्मा के नाम का जाप ध्यान यानि सुरति रूपी सिंहासन पर बैठकर करे। वह सर्वश्रेष्ठ भक्ति विधि है और निर्भय हो जा कि मैं सत्य भक्ति कर रहा हूँ, मुझे परमात्मा अवश्य मिलेगा। उस साधक का लेखा-जोखा चित्र तथा गुप्त फरिश्ते नहीं करते। उस भक्त का जम यानि यमदूतों द्वारा पाप कर्म का दिया जाने वाला दण्ड भी समाप्त हो जाता है।(38)

❖ भक्त को कहा है कि ऐसा सुमरन (स्मरण) कर जिससे रोम-रोम में धुन हो यानि शरीर के बाल ऐसे खड़े हो जाऐं जैसे कि खुशी या भय के समय खड़े होते हैं। कहते हैं कि ऐसी दुर्घटना थी कि देखने वाले के रोंगटे (शरीर के बाल) खड़े हो जाते थे। अपने भजन पर आठ पहर (24 घण्टे) अधिकार रखे यानि स्मरण में लगा रहे। वह वास्तव में पतिव्रता यानि सच्चा भक्त है।(39)

❖ जो तारक मंत्र है यानि सत्य साधना के मंत्र को चित्त धरो यानि ध्यान से स्मरण करो जो सुक्ष्म मंत्र यानि ''सोहं'' नाम सार है यानि मोक्ष मंत्रों में विशेष है। अजपा जाप जो स्वांस-उस्वांस से जाप किया जाता है, वह अनादि अर्थात् सनातन है। उसके जाप से हंस (निर्मल भक्त) पार उतर जाता है यानि मोक्ष प्राप्त करता है।(40)

❖ अंजन (माया) को मंजन (साफ) करो यानि नेक कमाई करो। कुल करनी यानि परम्परागत साधना जो शास्त्र विरूद्ध है, उसे दूर करो यानि त्याग दो। भावार्थ है कि संसारिक सम्पत्ति से मन हटाकर परम्परागत साधना त्याग दो। साहेब (परमेश्वर) के साथ हिल मिलो यानि भक्ति में लगे रहो। उसकी निराकार शक्ति सब जगह परिपूर्ण (भरपूर) है।(41)

❖ परमेश्वर का मुजरा (यहाँ स्तुति को मुजरा कहा है) हृदय से करो। यह तत यानि सार है, इसे बार-बार करते रहो। इस प्रकार परमात्मा की स्तुति व भक्ति से कुबुद्धि यानि दुर्मति नष्ट हो जाती है। घण नामी घनसार का अर्थ है कि सुप्रसिद्ध भक्त हो जाएगा तथा भक्ति का धनी (घनसार) होकर सत्यलोक को चला जाएगा।(42)

❖ अजब = अनोखा, हजारा = हजारों पत्तियों वाला, पुहुप = फूल, निहगंधी = विशेष महक वाला है, गलतान = उसकी महक के प्रभाव से साधक गलतान यानि मस्त हो जाता है। उस सतलोक में पाँच तत्व से निर्मित कोई वस्तु नहीं है। वह निर्भय पद है, प्रवान है यानि पूर्ण मोक्ष पद है जहाँ भक्त जन्म-मरण-जरा तथा कर्मदण्ड से मुक्त होकर निर्भय हो जाता है।(43)

❖ पूर्ण परमात्मा सर्व का धनी यानि मालिक है, उसको सतपुरूष कहते हैं वह अकल यानि निर्बन्ध है तथा अमान यानि शांत है। उस पूर्ण परमेश्वर कबीर जी का सतलोक स्थान हम को प्राप्त हुआ है।(44)

❖ नेस का अर्थ इस वाणी में अदृश्य शक्ति है। नेस का अर्थ नष्ट करना भी होता है। यह वाणी के बोलने के भाव पर निर्भर करता है। नेस यानि परमात्मा की निराकार शक्ति निरंतर कण-कण में समाई है। उसको प्रकट कैसे दिखाऐं? संत गरीब दास जी ने कहा है कि यह गलतान पद यानि सुख दायक स्थान है जहाँ साधक जाकर मस्त हो जाता है। वह सुख भक्त में सामान्य रूप से प्रवेश हो जाता है। उसको सिद्धियाँ आदि दिखाने की आवश्यकता नहीं है।(45)

स्वामी रामदेवानंद गुरू महाराज जी की असीम कृपा से ''पतिव्रता के अंग''
का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।

।।सत साहेब।।

''पारख के अंग का सरलार्थ''

➢ सारांश :- पारख का अर्थ परख यानि जाँच-पहचान। परमात्मा का पारख (पहचान) इस पारख के अंग में है। इस पारख के अंग में परमात्मा कबीर जी की समर्थता बताई है। परमात्मा की परख उसकी शक्ति-समर्थता से होती है।

जैसे परमात्मा कबीर जी के विषय में इस अंग में लिखा है कि कबीर परमात्मा प्रत्येक युग में सशरीर आते हैं। कभी बालक रूप धारण करके अपना ज्ञान समझाते हैं। कभी किसी साधु-संत जिंदा बाबा का वेश बनाकर अच्छी आत्माओं को तत्वज्ञान समझाते हैं। उनको मिलते हैं। संत धर्मदास जी को मिले। उनको तत्वज्ञान समझाया। वे श्री राम तथा श्री कृष्ण यानि विष्णु जी से ऊपर कोई प्रभु नहीं मानते थे। तत्वज्ञान समझाया। सतलोक में अपना वास्तविक स्थान व सिंहासन दिखाया। तब धनी धर्मदास जी को पारख हुआ कि पूर्ण परमात्मा कबीर बंदी छोड़ जी ही हैं।

सशरीर प्रकट होने के विषय में संत गरीबदास जी ने यथार्थ वर्णन किया है जो कबीर सागर से भी मेल करता है कि परमात्मा कबीर जी चारों युगों में सशरीर भिन्न-भिन्न नामों से प्रकट होकर अपनी जानकारी स्वयं ही देते हैं।

सतयुग में सत सुकृत नाम रहता है। त्रेता में मुनीन्द्र, द्वापर में करूणामय कहलाते हैं। कलयुग में कबीर नाम धराते हैं। कलयुग में सन् 1398 (विक्रमी संवत् 1455) में ज्येष्ठ महीने की पूर्णमासी को सुबह ब्रह्म मुहूर्त (सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले के समय को ब्रह्म मुहूर्त कहते हैं) में नवजात शिशु का रूप धारण करके काशी नगर के बाहर लहरतारा नामक तालाब में कमल के फूल पर सतलोक से आकर विराजमान हुए। इस घटना के प्रत्यक्ष दृष्टा ऋषि अष्टानंद जी थे जो स्वामी रामानंद जी के शिष्य थे। प्रतिदिन उस लहरतारा सरोवर पर स्नान-ध्यान करने जाया करते थे। नीरू नामक जुलाहा भी प्रतिदिन अपनी पत्नी नीमा के साथ उसी लहरतारा तालाब पर स्नान करने जाया करता था। आयु लगभग साठ वर्ष हो चुकी थी। संतान नहीं थी। उनको कबीर परमात्मा कमल के फूल पर मिले। अपने घर ले गए। परमात्मा ने कबीर नाम रखवाया। सुन्नत नहीं करवाया। पाँच वर्ष की आयु में महर्षि रामानन्द को अध्यात्म ज्ञान में हराया। सतलोक दिखाया। स्वामी रामानन्द जी श्री विष्णु सतगुण के उपासक थे। कर्मकाण्ड करते थे। मानसिक पूजा शालगराम (विष्णु जी की काल्पनिक मूर्ति) की करते थे। एकादशी का व्रत रखते थे। गीता, पुराण, वेदों का पाठ तथा प्रचार किया करते थे। बाल ब्रह्मचारी थे। आयु एक सौ चार (104) वर्ष हो चुकी थी। जब कबीर परमात्मा की लीलामय आयु पाँच वर्ष थी। हठयोग करके समाधि लगाते थे। त्रिवेणी से आगे नहीं जा पा रहे थे। तब परमात्मा कबीर जी उनकी आत्मा का ब्रह्मरंद्र खोलकर ब्रह्मलोक में ले गए। फिर सतलोक में अपने निज अमर स्थान पर ले गए। तब रामानन्द जी को पारख हुआ कि विष्णु तो परमात्मा कबीर जी के सामने कोई मायने नहीं रखते। कबीर जी समर्थ परमेश्वर हैं। परमात्मा कबीर जी की आँखों देखी महिमा कही जो इस पारख के अंग में पढ़ने को मिलेगी।

सिकंदर लोधी राजा का असाध्य रोग केवल आशीर्वाद से समाप्त किया। सिकंदर राजा ने स्वामी रामानन्द जी का सिर तलवार से काट दिया था। स्वामी जी की मत्यु हो गई थी। कबीर जी ने उसके सामने स्वामी रामानन्द जी को जीवित कर दिया।

एक मत बालक कमाल को सिकंदर लोधी दिल्ली के सम्राट के सामने जीवित किया।

एक कमाली नाम की मत लड़की शेखतकी की बेटी को कब्र से निकलवाकर लाखों व्यक्तियों तथा सिकंदर लोधी राजा के सामने जीवित किया। अनेकों अनहोनी की जो केवल समर्थ परमात्मा ही कर सकता है। जिनसे पारख होता है कि कबीर जुलाहा पूर्ण परमेश्वर है जो इस पारख के अंग में विस्तारपूर्वक बताया गया है।

❖ **वाणी नं. 1-12 :-**

गरीब, न्यौलि नाद सुभांन गति, लरै भवंग हमेश। जड़ी जानि जगदीश हैं, बिष नहीं व्यापै शेष।।1।।

❖ **भावार्थ :- परम आदरणीय संत गरीबदास जी साधकों को बता रहे हैं कि जिसको सारनाम मिल गया है और मर्यादा में रहकर साधना कर रहा है। उस भक्त को नेवला (न्यौल) बताया है और काल ब्रह्म को शेषनाग जो भयंकर विषयुक्त प्राणी है। जैसे नेवला जंगल में उत्पन्न एक नाग दमन जड़ी को नाकों द्वारा सूँघता है यानि उसकी गंध को श्वासों में भर लेता है। तब अपने से कई गुणा शक्तिशाली सर्प से लड़ाई करता है। सर्प के मुख के निकट जाकर उस जड़ी की गंध (Smell) को श्वासों द्वारा छोड़ देता है। उस जड़ी के प्रभाव से सर्प को चक्कर आने लगते हैं। नेवला पुनः शीघ्रता से उस जड़ी को सूंघकर आता है। उस समय तक सर्प भागने की कोशिश करता है। सर्प का दिल घबराने लगता है। नेवला सर्प के ऊपर मुंडी पर बैठकर उसकी नाक के पास जड़ी की गंध छोड़ता है। सर्प विवश होकर शांत हो जाता है। तब नेवला सर्प की मुंडी (फन) को काटकर मार देता है। यहाँ पर बताया है कि जीव (भक्त) तो नेवला है जो सारनाम का स्मरण श्वासों से करता है तथा काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) को शेषनाग जैसा खुंखार सर्प कहा है। सारनाम प्राप्त भक्त रूपी नेवला काल ब्रह्म रूपी अजगर को सारनाम के स्मरण रूपी गंध छोड़कर पराजित करके सतलोक चला जाता है। कबीर परमेश्वर जी ने भी यही कहा है कि :-**

कबीर, जैसे फन पति (सर्प) मंत्र सुन, राखै फन सकोड़। ऐसे बीरा मेरे नाम से, काल चलै मुंह मोड़।।

❖ **सरलार्थ :- कबीर जी ने कहा है कि जैसे सर्प ने फन उठा रखा होता है तो गारडू (सर्प को वश में करने वाला) एक मंत्र बोलता है। उस मंत्र के प्रभाव से सर्प अपने फन (डोहरे) को सकोड़ (इकट्ठा) करके भागने का विचार करता है। पहले डसने के उद्देश्य से फन फैला रखा था। इसी प्रकार सारनाम से काल ब्रह्म भक्त को हानि न करके अपनी जान बचाने की चिंता करके चल पड़ता है। रास्ता छोड़ देता है।**

❖ **वाणी नं. 2-5 :-**

गरीब, हंस गवन करते नहीं, मानसरोवर छाड़ि। कउवा उड़ि उड़ि जात हैं, खाते मांसा हाड।।2।।
गरीब, मानसरोवर मुक्ति फल, मुक्ता हल के ढेर। कउवा आसन नां बंधै, जै भूमि दीन सुमेर।।3।।
गरीब, कउवा रूपी भेष है, ना परतीत यकीन। अठसठि का फल मेटि करि, भये दीन बे दीन।।4।।
गरीब, हंस दशा तौ साध हैं, सरोवर है सतसंग। मुक्ताहल बानी चुगैं, चढत नबेला रंग।।5।।

❖ भावार्थ :- उपरोक्त वाणियों में संत गरीबदास जी ने समझाया है कि जिस सरोवर में मोती होते हैं। उस सरोवर पर हंस पक्षी ही रहते हैं यानि हंस ही स्थाई निवास करते हैं क्योंकि उनका आहार मोती ही होता है। हंस मछली या अन्य जीव-जंतुओं का माँस नहीं खाता। कौआ पक्षी उस सरोवर पर नहीं टिकता। वह कुछ देर आता है। वहाँ माँस नहीं मिलता। फिर माँस खाने के लिए कहीं ओर उड़ जाता है। सत्संग सरोवर कहा है और साध संगत हंस कहे हैं तथा विकारी व्यक्ति कौए रूपी बताए हैं। भक्त तो सत्संग प्रवचन रूपी मोती खाते हैं जो उनका आहार है तथा शराबी-कवाबी कौए रूपी हैं जो सत्संग में अधिक देर नहीं टिकते, परंतु भक्त सत्संग छोड़कर अन्य स्थान पर नहीं जाते जैसे सिनेमा देखना, नाचना, शराब का ठेका आदि स्थानों पर भक्त नहीं जाते तथा अन्य उपासना जो शास्त्रविरूद्ध है, वह करने किसी देवी-धाम, तीर्थ आदि पर नहीं जाते। जो शास्त्रविरूद्ध साधना करने वाले भेष (पंथ) हैं, उनके अनुयाई हमारे ज्ञान पर विश्वास न करके अड़सठ तीर्थों पर भटकते हैं। उनको यह ज्ञान नहीं है कि जिन महापुरूषों ने जिस स्थान पर साधना की है, उनके नाम से वे स्थान प्रसिद्ध हैं। आप भी वैसी साधना करो। उन तीर्थ स्थानों पर जाकर उन अड़सठ तीर्थों का गुण यानि लाभ प्राप्त नहीं कर सकते। उनका लाभ तो उसी प्रकार डटकर साधना करने से मिलेगा जिसको तीर्थ भ्रमण करने वाले मिटा रहे हैं यानि खो रहे हैं।

❖ **वाणी नं. 7, 9, 12 :-**

गरीब, दरस परस नहीं अंतरा, रूमी बस्त्र बीच। पारस लोहा एक ढिग, पलटै नहीं अभीच।।7।।
गरीब, च्यार मुक्ति बैकुंठ बट, सप्तपुरी सैलान। आगै धाम कबीरका, हंस न पावैं जान।।9।।
गरीब, पल सेती पल ना मिलै, भौंहि लगै नहीं भौंहि। बिच तकिया महबूब का, परमेश्वर की सौंहि।।12।।

❖ भावार्थ :- पुराने समय में रोम देश का बना बहुत पतला वस्त्र आता था जिसे सेठ लोग पहनते थे। बताया है कि पारस पत्थर को लोहे से छू दिया जाए तो वह स्वर्ण बन जाता है। यदि पारस पत्थर और लोहा साथ-साथ रखे हैं और उनके बीच में रूपी वस्त्र की मोटाई जितना भी फांसला (Distance) रह जाए तो चाहे लाख वर्ष रखे रहो, स्वर्ण नहीं बनेगा। इसी प्रकार संत के पास कपट रखने वाला व्यक्ति भक्त बना दिखाई देता है, परंतु उस पर संत के पारस रूपी सत्संग वचनों का प्रभाव नहीं पड़ता। सात नगरियाँ जो श्री ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी तथा दुर्गा, ध्रुव, प्रहलाद आदि के लोक हैं, इनमें तो चार मुक्ति वाले निवास करते हैं। फिर जन्म-मरण में आते हैं। इनसे कबीर जी का स्थान दोनों सैलियों के मध्य में यानि त्रिकुटी में है। वहाँ से आगे सतलोक जाते हैं। सत्य साधना न होने के कारण कोई भी साधक सतलोक नहीं जा पाता। काल जाल में ही रह जाता है। त्रिकुटी स्थान पर कबीर जी का तकिया यानि सिंहासन है। गरीबदास जी ने परमात्मा की सौगंध खाकर बताया है कि मैं सत्य कह रहा हूँ।

➢ {नोट :- कुछ अज्ञानी व्यक्ति स्वयंभू बनकर बैठे हैं। वे वाणी नं. 12 का अर्थ गलत करते हैं। कहते हैं कि इस वाणी में कहा है कि आँखों की पलकों को इतना बंद करो कि वे आपस में मिलें नहीं यानि आँखों को थोड़ा खोलकर सामने एकटक देखो, कुछ दिखाई देगा।

वह परमात्मा है। कुछेक को अपनी आँखों के सामने वाली काली-2 टिक्की या स्प्रिंग-सा दिखाई देता है। उसी को परमात्मा का स्वरूप बताया जाता है। कुछेक को कुछ नहीं दिखता। वे शर्म के मारे कह देते हैं, हाँ! कुछ दिखा। परंतु बाद में स्पष्ट बताते हैं कि कुछ नहीं दिखा। गुरू जी ने बार-बार कहा तो हाँ भर ली थी। ऐसे दोनों प्रकार के भ्रमित व्यक्ति हमारा ज्ञान समझकर मेरे (संत रामपाल के) पास आए और दीक्षा ली, तब बताया। उनको मैंने समझाया कि भक्ति की प्रेरणा पूर्व जन्म के शुभ संस्कारों के कारण होती है। उनमें पूर्व जन्म में की भक्ति की शक्ति यानि भक्ति की कमाई शेष रहती है। विशेष ध्यान देने से आँखों के सामने काली टिकारी (बिन्दु) रूप में या बाल जैसे स्प्रिंग के छल्ले रूप में दिखते हैं। यदि फिर से शास्त्र विधि अनुसार सत्य साधना करने को नहीं मिलती तो इसी जन्म में कुछ समय उपरांत दिखाई देनी बंद हो जाती हैं क्योंकि वह खर्च हो जाती हैं। मेरे को (रामपाल दास को) बचपन से ही ऐसी वस्तुऐं आँखों के सामने दिखाई देती थी। सोचता था कि मेरी दृष्टि कमजोर है। जिस कारण से ये काली-2 टिकारियाँ दिखाई दे रही हैं। सन् 1988 में गुरू जी से दीक्षा लेने के पश्चात् वे और अधिक हो गई तो चिंता बढ़ गई कि शायद आँखों की दृष्टि और कम हो गई है। चैक करवाया तो आँखें ठीक मिली। एक दिन गुरू जी को बताया तो उन्होंने कहा कि यह तेरी भक्ति का धन है जो बढ़ने लगा है। पहले यह पूर्व जन्म की बची भक्ति दिखाई देती थी। यह धीरे-धीरे समाप्त हो जाती। उसके पश्चात् शांति हुई तथा अब अत्यधिक बढ़ गई है, ढ़ेर लगा है।}

❖ वाणी नं. 6 :-

गरीब, नर नाड़ि कूं पकड़ि हैं, कर सें गहै सुचेत। निशां नफस में होत है, तब हंसा दरशै श्वेत।।6।।

❖ सरलार्थ :- जैसे नाड़िया वैद्य हाथ की नाड़ी को हाथ से सावधानी से पकड़ता है। उसकी गति से रोग को जान लेता है। इसी प्रकार सत्य साधना सावधानी से सुरति-निरति (ध्यान) लगाकर की जाती है। तब साधक सफेद रंग का दिखाई देता है यानि सतलोक में जीवात्मा सफेद नूरी शरीर धारण करती है। (निशां) चिन्ह (नफस) साधना करने से मोक्ष के लक्षण दिखाई देते हैं।(6)

❖ वाणी नं. 10-11 :-

गरीब, कलि बिष कोयला कर्म हैं, चिनघी अगनि पतंग। अजामेल सदना तिरे, जरि बरि गये कुसंग।।10।।
गरीब, मौनि रहैं मघ नां लहैं, मारग बंकी बाट। शून्य शिखर गढ सुरंग है, करि सतगुरु सें सांट।।11।।

❖ सरलार्थ :-(कल बिस) पाप कर्म तो कोयले के समान हैं। सत्यनाम की अग्नि की (चिनघी) चिंगारी का (पतंगा) जलता हुआ लकड़ी या कोयले का टुकड़ा यदि उड़कर किसी सूखे घास या कोयले के ढ़ेर में गिर जाता है। उसे जलाकर राख कर देता है। ऐसे सत्य साधना का पतंगा पापों को जलाकर राख कर देता है। इसी तरह पापी अजामेल तथा सदना कसाई तर गए थे। भवसागर से पार हो गए थे। उनके पाप जल गए। उनका कुसंग यानि बुरी संगत छूट गई थी।(10-11)

❖ वाणी नं. 13-33 :-

गरीब, भौंहो ऊपरि भंवर है, भौंरौं ऊपरि हंस। एकै जाति जिहानकी, वही कन्हैया कंस।।13।।

गरीब, तूंबा जल में बहि चल्या, बाहर भीतर नीर। पानी सें पाला भया, एक सिन्ध है नीर।।14।।
गरीब, तन तूंबा शुन्य सिन्ध है, बाहर भीतर शून्य। ज्ञान ध्यान की गमि करै, लगै धुनि में धुनि।।15।।
गरीब, श्रवन चिशमैं नाक मुख, तालू परि त्रिबैनि। सुरति सहंस मुख गंग है, मध्य महोदधि ऐंन।।16।।
गरीब, श्रवन चिशमैं नाक मुख, तालू नहीं तलाव। मन महोदधि है नहीं, अलख अलह दरियाव।।17।।
गरीब, जैसें तार तंबूर का, घोर करै घर मांहि। ऐसें घट में नाद है, बोलत पावै नाहिं।।18।।
गरीब, पिंड परे पक्षी उड्या, मन सूवा सति भाय। तन त्रिगुण तीनौं तजे, कहौ कहां रहे समाय।।19।।
गरीब, कुंडलनी में कुलफ है, तहां वहां मन का बास। पिंड परैं पावै नहीं, ज्यौ। फूलन में बास।।20।।
गरीब, नाभी नाद गुंजार है, हिरदे कंवल में बास। कंठ कंवल बाणी कहै, त्रिकुटी कंवल प्रकास।।21।।
गरीब, रिंचक नांव निनांव है, सुरति निरति कै मध्य। हद्दी भूले हद्दि में, बेहद्दी बेहद्दि।।22।।
गरीब, सुरति सुई नाका निरख, तिल में तालिब तीर। चौंसट सिंध बहै जहां, पट्टण घाट हमीर।।23।।
गरीब, नयनौं में जल कित बसै, आतम ताल समोय। बिन बादल बरषै सदा, दिल दरिया कूं धोय।।24।।
गरीब, हिरदै हरि दरियाव है, नयन घटा बरषंत। कारे धौरे बदरा, कोई साधु निरषंत।।25।।
गरीब, लोर लहर ऊठैं सदा, कारी घटा सुपेद। ब्रह्मा अक्षर क्या लिखै, भीगे च्यारौं वेद।।26।।
गरीब, कर कलम कागज नहीं, नहीं स्याही नहीं दवात। बांझ पालणा भूलि बुधि, पंडित खाली हाथ।।27।।
गरीब, काया काशी मन मघर, दुहूं कै मध्य कबीर। काशी तजि मगहर गया, पाया नहीं शरीर।।28।।
गरीब, काया काशी मन मघर, अर्स–कुर्स बीच मुकाम। जहां जुलहदी घर किया, आदि अंत विश्राम।।29।।
गरीब, श्वेत बरण शुभ रंग है, नगरी अकल अमान। तन मन की तो गमि नहीं, निज मन का अस्थान।।30।।
गरीब, निज मन ऊपरि परम पद, राग रूप रघुबीर। दूजे की तो गमि नहीं, तहां वहां महल कबीर।।31।।
गरीब, निज मन सेती मन हुवा, मन सेती तन देह। देही में कुछ ना हुवा, नाहक लाई खेह।।32।।
गरीब, शुभ रंग सें सब रंग हैं, जेते रंग जिहांन। काया माया कलप सब, सिरजी च्यारौं खानि।।33।।

❖ **सरलार्थ :- शरीर में आँखों के ऊपर (भौंह) सेली के ऊपर (भवंर) एक बहते जल के चक्र समान मार्ग है। उससे आगे (हंस) जीवात्मा पहुँचकर एक समान हो जाती है। सत्य साधक ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के समान शक्तिमान हो जाते हैं। इसलिए कहा है कि परमात्मा की भक्ति से एक जाति यानि भक्त हो जाते हैं। जो पाप करते हैं, वे कंस की श्रेणी में होते हैं। जो अच्छे कर्म करते हैं, वे श्री कष्ण जी की तरह आदरणीय हो जाते हैं।(13)**

❖ **सब जीव परमात्मा की शक्ति के अंदर ऐसे ओत-प्रोत हैं जैसे सूखे तुम्बे को सुराख करके जल में डाल दिया जाता है तो उसके अंदर भी जल तथा बाहर भी जल तथा उसको गति जल से मिलती है। इसी प्रकार जीव परमात्मा की शक्ति से भ्रमण करता है। अच्छे-बुरे जन्मों को कर्मों के अनुसार प्राप्त करता है।**

श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में कहा है कि :-

ईश्वरः, सर्वभूतानाम, हृद्देशे, अर्जुन, तिष्ठति, भ्रामयन् सर्वभूतानि, यन्त्रारूढानि, मायया।।61।।

अर्थात् (अर्जुन) हे अर्जुन! (यन्त्रारूढानि) शरीर रूप यंत्र में आरूढ़ हुए (सर्वभूतानि) सम्पूर्ण प्राणियों को (ईश्वरः) अन्तर्यामी परमेश्वर (मायया) अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार (भ्रामयन्) भ्रमण करता हुआ (सर्वभूतानाम्) सब प्राणियों के (हृद्देशे) हृदय में (तिष्ठति) स्थित है यानि विराजमान है।

गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में कहा है कि :-

तम् एव शरणम् गच्छ सर्वभावेन भारत, तत्प्रसादात् पराम् शान्तिम् स्थानम् प्राप्स्यसि शाश्वतम्।।62।।

अर्थात् गीता ज्ञान देने वाला प्रभु कह रहा है कि (भारत) हे भारत! तू (सर्व भावेन) सब प्रकार से (तम्) उस परमेश्वर की (एव) ही (शरणम्) शरण में (गच्छ) जा। (तत् प्रसादात्) उस परमात्मा की कृपा प्रसाद से ही तू (पराम्) परम (शान्तिम्) शान्ति को तथा (शाश्वतम्) सनातन यानि अमर (स्थानम्) धाम यानि सत्यलोक को (प्राप्स्यसि) प्राप्त होगा।

वाणी नं. 14 में फिर कहा है कि अन्य उदाहरण यह समझें जैसे जल से (पाला) सर्दी के मौसम में ओस जम जाती है। धूप लगने से फिर जल बन जाता है। दोनों में जल ही है। इसी प्रकार परमात्मा की शक्ति अच्छे-बुरे प्राणियों तथा पदार्थों में विद्यमान है।(14)

❖ (तन) शरीर को तुम्बा जानो। शुन्य यानि खाली स्थान में परमात्मा की निराकार शक्ति जानो। वह शक्ति जीव के अंदर भी है, बाहर भी है। उसी से जीव गतिमान रहता है। सत्य साधना तथा तत्वज्ञान का मनन करें तो परमात्मा के प्रति गहरी लगन लगेगी।(15)

❖ शरीर के अंदर की जानकारी बताई। बाहर का भी ज्ञान करवाया। नाक, मुख, (श्रवण) कान आदि तो स्पष्ट दिखाई देते हैं। जो मुख के अंदर तालुवा यानि तालु लटकता है, इसके ठीक ऊपर त्रिवेणी है। (सुरति) ध्यान संहस मुख गंग यानि हजारों धारा वाली गंगा के समान पवित्र व लाभदायक है। सुरति से परमात्मा का मार्ग देखा जाता है। तत्वज्ञान से निरति निरीक्षण करती है। उसे (महोदधि) समुद्र जानो। नाम को नौका, उसमें बैठकर जीव पार होता है।(16-17)

❖ जैसे (तंबूर) इकतारे का तार (Wire) आवाज करता (ध्वनि करता) है, ऐसे परमात्मा की अनहद ध्वनि शरीर में दसवें द्वार पर सुनाई देती है जो बोलते रहने से सुनी नहीं जा सकती। ध्यान लगाने से साधना करने से सुनी जाती है।(18)

❖ शरीर का समय समाप्त होने पर जीवात्मा पक्षी की तरह उड़ जाता है। मन रूपी (सूवा) तोता शरीर से निकलकर चला जाता है। फिर कहाँ जाता है? भक्त सतलोक चला जाता है। पामर प्राणी नरक चला जाता है। फिर कर्मों के अनुसार भ्रमता-भटकता है।(19)

❖ कुंडलनी में (कुलफ) ताला लगा है। उसमें मन निवास करता है। (पिंड) शरीर नष्ट होने पर यह दिखाई नहीं देता। जैसे फूलों में गंध दिखाई नहीं देती।(20)

❖ नाभि कमल में (नाद) शब्द की गुंजार होती है। जीव का हृदय कमल में निवास है। कंठ कमल से वाणी बोली जाती है। त्रिकुटी कमल में परमात्मा सतगुरू रूप में विद्यमान रहता है। वहाँ का विशेष प्रकाश है।(21)

❖ सत्य (नांव) नाम वास्तव शक्ति देने वाला (निनांव) विशेष नाम है जिसका रिंचक स्मरण ही अत्यधिक लाभ देता है। परंतु नाम का जाप सुरति-निरति यानि पूर्ण ध्यान के साथ करना चाहिए। (हद्दी) काल लोक की सीमा में रहने वाले हद में भूले हैं। (बेहदी) जो अपने को काल की हद से परे मानते हैं, वे भी भूल में हैं। वे ब्रह्मलोक तक जा सकते हैं।(22)

❖ सुरति से ब्रह्मरंद्र रूपी सूई का नाका जानकर उसके अंदर से धागा रूपी मन डालकर ध्यान लगाए (तिल) ब्रह्मरंद्र में परमात्मा दिखाई देगा। उसी ब्रह्मरंद्र के पास चौंसठ

(सिंधु) समुद्र बह रहे हैं।(23)

❖ (नयनों) आँखों में जल दिखाई नहीं देता। आत्मा में आँसू जल का (ताल) सरोवर समाया है। सत्य साधना करने से परमात्मा के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है। आँखों में आँसुओं की धारा बह चलती है। इसे बिन बादल की बारिश कहते हैं। सत्य साधना पाप नाश करती है। दिल रूपी दरिया स्वच्छ होती है यानि साधक नेक दिल का व्यक्ति हो जाता है। हृदय में परमात्मा का प्रेम रूपी दरिया है। उस दरिया का जल (नयन) आँखों द्वारा बरसता है। उस बारिश के उद्‌गम स्थल त्रिकुटी को जिसके कमल की दो सफेद (धौले=धौरे) तथा काले (कारे) बादल यानि पंखुड़ी है, उस कमल तक कोई-कोई साधु पहुँचता है जो उस स्थान को (निरषंत=निरखंत) देखता है।

❖ परमात्मा के प्रति प्रेम होने पर साधक की आत्मा में परमात्मा के प्रति सदा प्रेम की (लोर) उमंग काली-सफेद यानि घनघोर घटा की तरह उठती है। प्रेम की भाषा चारों वेद में नहीं है। चारों वेदों का सार परमात्मा में प्रेम उत्पन्न होना ही है। कबीर परमात्मा ने कहा है कि :-

कबीर पोथी पढ़—पढ़ जग मुआ, पंडित भया ना कोय। ढ़ाई अखर प्रेम के, पढ़े सो पंडित होय।।

❖ अर्थात् ब्रह्मा जी को चारों वेदों का ज्ञाता माना जाता है। वे सदा वेदों को पढ़ते हैं तथा अन्य को समझाते हैं। उन चारों वेदों के पढ़ने से विद्वान नहीं बनता क्योंकि वेद या अन्य शास्त्र पढ़ने का उद्देश्य परमात्मा प्राप्ति है। परमात्मा उसी को मिलता है जिसमें परमात्मा के प्रति प्रेम उमड़े। आँखों से आँसू चलने लगें। शास्त्रों को पढ़ने का उद्देश्य है कि पंडित यानि विद्वान बने। धार्मिक विद्वान का उद्देश्य है परमात्मा प्राप्ति, परंतु परमात्मा मिलेगा सुक्ष्म वेद में बताई सत्य साधना से जो सतगुरू से दीक्षा लेकर करनी होती है। वह साधना चारों वेदों या अन्य शास्त्रों में नहीं है। इसलिए जिस भक्तात्मा में परमात्मा का प्रेम जागा है, वह पंडित है। वह सत्य साधना कर रहा है।(24-26)

❖ पंडित जन जो चारों वेदों को पढ़ते हैं, कागज पर लिखते हैं या ताड़ वृक्ष के पत्तों पर लिखते हैं। ताड़ के पत्तों पर स्याही-कलम की आवश्यकता नहीं होती है। उसमें परमात्मा प्राप्ति का मार्ग नहीं है। उन पंडितों की तो ऐसी दशा है जैसी बांझ स्त्री बच्चे का पालना (छोटा झूला) लिए हो। उसे भूल लगी है। उसके पालने में उसकी पुत्र-पुत्री नहीं लेट पाऐंगी। फिर उस पालने का औचित्य क्या रह जाता है? जैसे बांझ स्त्री संतान बिना खाली हाथ है। ऐसे वेदों वाले विद्वान खाली हाथ हैं। उन्हें परमात्मा नहीं मिल सकता।(27)

❖ परमेश्वर कबीर जी भारत देश के काशी (बनारस) शहर में 120 वर्ष (एक सौ बीस) वर्ष लीला करके मगहर नगर में पैदल चलकर मरने गए थे। काशी नगर के पंडितों ने भर्म फैला रखा था कि जो काशी शहर की सीमा में मरता है, वह सीधा स्वर्ग में जाता है। जो मगहर नगर में मरता है, वह गधे का जीवन पाता है तथा नरक में जाता है। परमेश्वर कबीर जी कहा करते थे कि सत्य साधना शास्त्रोक्त करने से तथा पाप त्यागकर धर्म-कर्म करने से परमात्मा मिलता है। शास्त्रविधि अनुसार साधना करने वाला चाहे काशी मरो, चाहे मगहर, वह अपनी साधना अनुसार ऊपर के लोकों में स्वर्ग सुख प्राप्त करेगा तथा इसके

विपरित साधना करने वाला व पाप करने वाला सीधा नरक जाएगा या गधा बनेगा, चाहे मगहर मरे, चाहे काशी। अपने वचनों को सत्य प्रमाणित करने के लिए कबीर परमात्मा कबीर जी ने पंडितों तथा काजियों-मुल्लाओं से कहा कि मैं मगहर स्थान पर मरूँगा और स्वर्ग, महास्वर्ग (ब्रह्मलोक) से भी उत्तम स्वर्ग सत्यलोक में जाऊँगा। आप (पंडितजन) अपना-अपना पतरा-पोथी ज्योतिष वाले साथ ले चलना तथा देखना कि कबीर कहाँ गया है?(28)

❖ कबीर परमेश्वर जी काशी को त्यागकर मगहर गए। वहाँ एक चद्दर नीचे बिछाई। उसके ऊपर श्रद्धा से श्रद्धालुओं ने कुछ फूल बिछाए। उन चद्दर पर बिछे फूलों के ऊपर परमात्मा कबीर जी लेट गए। ऊपर एक चद्दर ओढ़ ली। कुछ समय पश्चात् आकाशवाणी हुई कि पर्दा उठाकर देखो! उसमें मुर्दा नहीं है। देखो! मैं (कबीर) सशरीर सतलोक जा रहा हूँ। पंडितजन पतरा पढ़ रहे थे और ज्योतिष लगा रहे थे। कह रह थे कि इस घड़ी-मुहूर्त में मरने वाला नरक जाता है। उसकी गुदा द्वार से प्राण निकलता है। चद्दर उठाकर देखो ऊपर कबीर नहीं गया है। कोई यमदूत छल कर रहा है। चद्दर उठाकर देखा तो वहाँ परमात्मा कबीर जी का शरीर नहीं था। पंडितों को फिर भी विश्वास नहीं हो रहा था। काशी को काया जानो मगहर जानो मन, परमात्मा कबीर जी का तो सब स्थानों पर अधिकार है। उनका वास्तविक निवास स्थान है। जहाँ पर (जुलहदी) कबीर जुलाहे का आदि तथा अंत यानि सदा का ठिकाना है यानि संष्टि रचने से पहले भी वही ऊपर के स्थान में थे। उस स्थान का अंत है ही नहीं।(29)

❖ वह सत्यलोक नगरी (श्वेत) सफेद रंग की शुभ नगरी है। वह स्थान (अकल) अविनाशी तथा (अमान) शांत है। तन-मन वहाँ नहीं जा सकते। (निजमन) परमात्मा कबीर जी का स्थान है। निजमन यानि परमात्मा कबीर जी अन्य रूप में (साधु या जुलाहा रूप में) तो निजमन कहे गए हैं तथा अपने वास्तविक सतपुरूष रूप में परम पद में रहते हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में इसी परम पद का उल्लेख है। सतगुरू राग रूप रघुवीर है यानि साधक का इच्छित परमात्मा है। वहाँ अन्य कोई नहीं जा सकता। उस स्थान पर परमात्मा कबीर जी का महल (सिंहासन) है।(30-31)

❖ निजमन यानि सत्य पुरूष से मन यानि काल निरंजन की उत्पत्ति हुई। मन के द्वारा किए कर्मों के परिणामस्वरूप जीव को स्थूल शरीर यानि देह मिली। यदि मानव शरीर से सत्य साधना नहीं हुई तो स्थूल शरीर रूपी (खेह) राख किसलिए लगा रखी है यानि (नाहक) व्यर्थ में लगाई। मानव जन्म नष्ट कर दिया।(32)

❖ शुभ कर्म करने से सर्व भक्ति कर्म भी होते हैं। मोक्ष के लिए मानव शरीर (काया) तथा (माया) धन-संपत्ति, पंथ्वी आदि-आदि तथा चार खानी के प्राणी (जो चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर कर्मों के अनुसार प्राप्त करते हैं।) उत्पन्न किए।(33)

➢ विशेष :- पारख के अंग का सरलार्थ किया जा रहा है। उद्देश्य संत गरीबदास जी द्वारा दिए सत्य अद्वितीय अध्यात्म ज्ञान को सरल करके परमेश्वर की प्रिय आत्माओं को समझाना है। पारख के अंग की वाणी नं. 34-36, 50 में अब्राहिम अधम सुल्तान का आंशिक

वर्णन है। कई अंगों में थोड़ा-थोड़ा प्रकरण है। यहाँ पर सब अंगों से वाणी लेकर पूर्ण रूप से समझाया जाएगा।

सम्मन तथा नेकी व उनके पुत्र सेऊ (शिव) की कथा पहले बताना अनिवार्य है। इसका संबंध अब्राहिम अधम सुल्तान से है। सम्मन वाली आत्मा नौशेरवां शहर का राजा नौशेरखां हुआ। वही सम्मन वाली आत्मा (अब्राहिम अधम सुल्तान) बलख शहर का राजा हुआ। पहले सम्मन-सेऊ की कथा अचला के अंग से बताते हैं।

सेऊ (शिव) तथा सम्मन की कथा

{अचला के अंग की वाणी नं. 148-190 में है।}

❖ **अचला के अंग से वाणी नं. 148-190 :-**

गरीब, समन कै सतगुरु गये, संग फरीद कमाल। सत टोहन कौं ऊतरे, हो सतगुरु अबदाल।।148।।
गरीब, समन नेकी पूछिया, अन्न का कहौ बिचार। सतगुरु आये पाहुने, क्या दीजे जौंनार।।149।।
गरीब, नेकी समन सें कहै, अन्न नांहि घर मोरि। सतगुरु के प्रसाद कूं, घर ल्यावौं कोई फोरि।।150।।
गरीब, मांग्या मिलै न करज दे, आंनि बनी बहु भीर। कहि नेकी क्या कीजिये, ल्या धरैं तुम्हारा चीर।।151।।
गरीब, धरने लायक चीर कित, पाट्या पटल मोहि। समन सें नेकी कहै, चोरी जावौ तोहि।।152।।
गरीब, सेऊ माता सें कहै, चोरि खाट्या खांहि। माल बिराना मुसहरैं, जिन के सरबस जांहि।।153।।
गरीब, माता पुत्र सें कहै, सुनि सेऊ सुर ज्ञान। या में नहीं अकाज है, चोरि करि दे दान।।154।।
गरीब, सतगुरु दीन्हा बैठना, आसन दिये बिछाय। शेख फरीद कमाल कूं, लिये सुतार चढाय।।155।।
गरीब, शब्द उचारैं धुंनि करैं, सतगुरु आये आज। समन सें नेकी कहैं, घर में नाहीं नाज।।156।।
गरीब, सुनौं शब्द चित्त लाय करि, हौनी होय सो होय। सब बिधि काज समारही, चरण कमल चित्त पोय।।157।।
गरीब, सतगुरु आये पाहुनें, मिहमानी करि स्यांह। सेऊ माता सै कहै, शीश बेचि धरि स्यांह।।158।।
गरीब, सुनि रे पुत्र सरोमनी, नेकी कहै निराठि। सतगुरु आये पाहुनें, करौ शीश की सांटि।।159।।
गरीब, शेख फरीद कमाल कूं, बोले बचन सुशील। समन सें सतगुरु कहै, भोजन की क्या ढील।।160।।
गरीब, सतगुरु सें समन कहै, करौ ध्यान असनान। भोजन पाख षिलायस्यां, ऊगमतैंही भान।।161।।
गरीब, अर्ध रात चोरी चले, सेऊ समन साथ। कुंभिल दीना जाय करि, नाज लग्या जहां हाथ।।162।।
गरीब, कुंभिल में सेऊ बड़े, लाई बड़ी जु बेर। हम तौ फाकैही रहैं, तुम ल्याईयौ तीनै सेर।।163।।
गरीब, तीन सेर अन्न बांधि करि, पहली दिया चलाय। पीछै बनियां, जागिया, सेऊ पकर्या आय।।164।।
गरीब, चोर चोर बनियां करै, सेऊ पकरी मौंन। ठाड्यौ काहै बोलिये, तीन सेर लिया चौंन।।165।।
गरीब, बनिये रस्सा घालि करि, दिया खंभ सें बांधि। समन डेरै ले गया, नेकी रोटी छांदि।।166।।
गरीब, करद लिया एक हाथ में, उलटे चले समन। सेऊ टुक बतलाय ले, सूना पर्या भवन।।167।।
गरीब, बनियां सें सेऊ कहै, बाहर हमरा बाप। झूंठी शाख न बोलि हूं, शीश चढत मोहि पाप।।168।।
गरीब, खंभा सें पग बांधि दे, बाहर काढौं शीश। दोय बात बतलाय लौ, शाखी हैं जगदीश।।169।।
गरीब, पिता शीश शिर काटिले, सनमुख करद चलाय। ताक बीच धरि दीजियौं, बनियें पकरे पाय।।170।।
गरीब, समन करद चलाइया, सनमुख काट्या शीश। काटतही कसक्या नहीं, दृढ है बिसवे बीस।।171।।
गरीब, शीश काटि घर ले गया, ताक बीच धरि दीन। नेकी करै रसोईयां, ज्ञान ध्यान प्रबीन।।172।।

गरीब, समन तैं नेकी करी, सेऊ का शिर काटि। तन देही कित डारिया, फेरा करियो हाटि।।173।।
गरीब, छह दौने परोसिया, सतगुरु पुरुष कबीर। सेऊ बोलै ताक में, में हूं दामनगीर।।174।।
गरीब, समन सें सतगुरु कहै, सेऊ आया नांहिं। देही तौ सूनि धरी, शीश ताक कै मांहि।।175।।
गरीब, आवो सेऊ जीमि ल्यौ, योह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों कै, साधौं कै नित क्षेम।।176।।
गरीब, सेऊ धड़ परि शिर चढ़या, बैठे पंगत मांहि। नहीं घरहरा नाड़ि कै, वह सेऊ अक नांहि।।177।।
गरीब, समन सें सतगुरु कहैं, नेकी मन आनन्द। शीश काटि घर में धर्या, मात पिता धन्य धन्य।।178।।
गरीब, सतगुरु सें समन कहैं, सुनौं फरीदा गल। इब के सतगुरु आयसी, देसी शीश पहल।।179।।
गरी, सतगुरु सें नेकी कहै, सुनौं फरीदा बात। आधी भक्ति कमाईया, रहे पिता पुत्र नहीं साथ।।180।।
गरीब, भौंहौं करि हूं आरता, पलकौं चौंर ढुराय। समन सें नेकी कहै, द्यौंह अपना शीश चढाय।।181।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल सैं, सुनौं फरीदा फेर। समन कै घर साच है, इत मत लावो बेर।।182।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल स्यौं, सुनौं फरीदा यार। समन कै घर साच है, ये धरि हैं शीश उतार।।183।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल सै, सुनौं फरीदा बात। समन कै घर साच है, शीश चढै स्यौं गात।।184।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल सैं, सुनौं फरीदा सैंन। समन कै घर साच है, ये बोलै आदू बैंन।।185।।
गरीब, कहैं कबीर कमाल सैं, सुनौं फरीदा ख्याल। समन कै घर साच है, ये कीजै नजर निहाल।।186।।
गरीब, जेते अंबर तारियां, ते ते अवगुण मोहि। धड़ सूली शिर ताकमें, सतगुरु तौ नहीं बिसरौं तोहि।।187।।
गरीब, छप्पन भोग करे धनी, भये समन कै ठाठ। कहै कबीर कमाल सैं, चलौ फरीदा बाट।।188।।
गरीब, अष्टसिद्धि नौनिद्धि आगनैं, अन्न धनदिये अनन्त। सेऊ समन अमर कछ, नेकी पद बे अन्त।।189।।
गरीब, नेकी सेऊ पारिंग हुए, सतगुरु के प्रताप। समन भए नौशेरखांन, जुग–जुग संगी साथ।।190।।

''सेऊ-सम्मन की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच गए। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ (शिव)। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे? कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो। तब नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है। सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ। नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-2 कह कर मजाक करने लगे। सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ। नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए

और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुंह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा। तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व भक्तों के लिए। तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। आपको मेरी कसम। तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है, परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। जिस नगर में निर्वाह किया है, इसकी रक्षा के लिए चोरी करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिड़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) पथ्वी पर आए हुए हैं। इन्होंने एक मतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लौधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लौधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री स्वामी रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) को सिंकदर लौधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा! ये नादान प्राणी हैं। यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना। तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए चल दिए। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूंगा और ले कर भाग जाना। तब सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा। सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे? सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर गया। तब सम्मन ने कहा पुत्र केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी पुरानी चद्दर में बाँध कर चलने लगा तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा

गया। जोर दार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग गया और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़ लिया और रस्से से बाँध दिया। इससे पहले सेऊ ने वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक दिया और कहा पिता जी मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना। आटा ले कर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पा कर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थम्ब से बाँध दिया। तब नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ। क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न दिखा दें। यह कह कर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए। सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें। तब सेऊ उस सेठ (बनिए) से कहता है कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए। तब सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई। तब सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। मेरे को पहचानकर घर तक सेठ पहुँचेगा। राजा तक इसकी पहुँच है। यह अपने गुरूदेव को मरवा देगा। पिताजी हम क्या मुख दिखाऐंगे? सम्मन ने एकदम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया। सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देख कर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था उस खण्डहर में डाल गया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ, तब सम्मन दुकान पर पहुँचा। उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। फिर सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। फिर सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद पाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद के लिए बैठ गए। तब साहेब कबीर ने कहा -

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

साहेब कबीर ने कहा कि सेऊ आओ भोजन पाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के

धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा।

गरीब, सेऊ धड़ पर शीश चढ़ा, बैठा पंगत मांही। नहीं घरैरा गर्दन पर, औह सेऊ अक नांही।।

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? शंका हुई कि यह वही सेऊ है या कोई और। अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संश्य को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 तथा ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 16 मंत्र 2 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है।

''सम्मन का नौशेर खान के रूप में जन्म''

{अचला के अंग की वाणी नं. 191-195 में है।}

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 191-195 :-**

गरीब, पातशाह नौसेरखां, अन्न धन नांही फेर। असी गंजले पीरके, दिये खजानैं गेर।।191।।
गरीब, असी गंज कोले भये, गरके जिन्द जमाल। पातशाह नौशेरवें कूं, दिखलाया है ख्याल।।192।।
गरीब, असी गंज सतगुरु दिये, खैरायत नहीं एक। पातशाह नौशेरवें कूं, बांटै बहुत अनेक।।193।।
गरीब, बुगदाद बिलायत बलख लग, दिल्ली अकबराबाद। पातशाह नौशेरवें की, इत लग सरू मुराद।।194।।
गरीब, जिन्द जमाल खलील परि, कुफर पर्‌या सब आंनि। पातशाह नौशेरवें कूं, सतगुरु भेटे जांनि।।195।।

''सम्मन का तीसरा जन्म अब्राहिम सुल्तान अधम के रूप में हुआ''

{अचला के अंग की वाणी नं. 196-208 में है।}

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 196-208 :-**

गरीब, पंजा दस्त कबीर का, शिर पर अरस अमान। पातशाह नौशेरवें सैं, आंनि भये सुलतान।।196।।
गरीब, ठारा लाख तुरा दिया, सोला सहंस हुरंभ। सतगुरु मिले शिकार में, मार्‌या बांन असंभ।।197।।
गरीब, अजब नवेली पदमनी, अजब नबेला भोग। देख अधम सुलतान कूं, कैसैं लीन्हा जोग।।198।।
गरीब, अजब नवेले महल में, अजब नवेली सेज। अजब नवेली कामनी, कैसैं टूट्या हेज।।199।।
गरीब, अजब नबेला तखत है, अजब नवेली फौज। बंधन टूटे मोह के, भई सतगुरु की मौज।।200।।
गरीब, माल खजाने सब तजे, तजे राज अरु पाट। सतगुरु सें सौदा भया, करी कबीरा साटि।।201।।
गरीब, गगन मंडल सैं, ऊतरे साहिब पुरुष कबीर। चौला धर्‌या खवास का, तोरे जम जंजीर।।202।।
गरीब, काटे बंधन मोह के, निर्भय भये निशंक। अन हौनी हौनी करी, मिटे कर्म के अंक।।203।।
गरीब, कफनी ताखी पहरि करि, चले अधम सुलतान। खलक बलक रोवत रह्या, छाडे मीर दिवान।।204।।
गरीब, क्षुध्या लगी सुलतान कूं, मालनि बेचै बेर। सवा लाख की पावडी, दई पलक में गेर।।205।।
गरीब, सेर बेर मालनि दिये, एक बेर की आश। एक बेर कै कारणैं, बीती बहुत तिरास।।206।।
गरीब, दीन दुनी सबही तजी, छाड़्या बलख बुखार। एक बेर कै कारणैं, घाल्या हाथ गंवार।।207।।

गरीब, या सुख सें सुख संख गुन, ब्रह्म शब्द कै मांहि। सतगुरु मिलैं कबीर से, तौ सतलोक लै जांहि।।208।।

❖ **अब्राहिम अधम सुल्तान का वर्णन पारख के अंग की वाणी नं. 34-36, 50 में भी हैः-**

गरीब, बेरा साटै बेचियां, बैरागर सुलतान। मालनि कूं जान्या नहीं, बे बुधि खैंचा तानि।।34।।
गरीब, सेर बेर पलडै चढे, एक पड़्या भौं मांहि। मालनि और सुलतान कूं, हिलकारे ले जांहि।।35।।
गरीब, ढाई लाख की पाँवडी, एक पैसे के बेर। देखि अधम सुलतान कूं, कैसी डारी मेर।।36।।
गरीब, बाशिष्ट बिश्वामित्र से, आवैं जाहिं अनेक। कागभुसंड की पलक में, जो चाहे सो देख।।50।।

❖ **उपरोक्त अचला के अंग तथा पारख के अंग की वाणियों का सरलार्थ कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' में है। उसका सारांश निम्न है। इसमें अब्राहिम अधम सुल्तान का सम्पूर्ण परिचय है।**

पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 16वां अध्याय ''सुल्तान बोध'' पष्ठ 37(757) पर है।

''सुल्तान'' फारसी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है ''राजा''। एक अब्राहिम अधम नाम का राजा था। उसको ''इब्राहिम अधम सुल्तान'' कहा जाता था। उसके राज्य के व्यक्ति उसको ''सुल्तान'' कहा करते थे। उनका पूरा नाम नहीं लेते थे। जैसे उपायुक्त यानि डिप्टी कमीश्नर कार्यालय के अधिकारी व कर्मचारी आपस में एक-दूसरे को कोई कार्य करने को कहते हैं तो कहते हैं कि साहब ने कहा है। वे बार-बार उपायुक्त साहब या डी.सी. साहब नहीं कहते। उनके लिए साहब शब्द से स्पष्ट हो जाता है, किसका आदेश है? इसी प्रकार अब्राहिम अधम सुल्तान को सुल्तान शब्द से जाना जाने लगा था। पूर्व जन्म के भक्त ही राजपद, अधिकारी पद तथा धनपति बनते हैं। यह जीव जबसे सत्यपुरूष से बिछुड़कर काल ब्रह्म के जाल में फँसा है। उसके कुछ समय उपरांत इसको उस सुख की खोज है जो यह सत्यलोक में छोड़कर आया है। जैसे गाय या भैंस के बच्चे को उसकी माता के स्तनों का दूध पी रहे को हटाकर व्यक्ति अपने हाथ की ऊँगलियों को उसके मुख में डाल देता है। वह बच्चा माता का थन समझकर थनों को छोड़कर कुछ देर ऊँगलियों को चूसता है। दूध वाला स्वाद न आने के कारण कुछ देर में छोड़ देता है। फिर कभी रस्से के सिरे को, कभी माता के कान को मुख में देकर चूसता है, परंतु दूध वाला स्वाद तो दूध से ही मिलता है। यही दशा उन सब प्राणियों की है जो काल जाल में इक्कीस ब्रह्माडों में रह रहे हैं। उस सत्यलोक को प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे हैं, परंतु सत्य साधना न मिलने के कारण जन्म-मरण के चक्र में रह जाते हैं। परमेश्वर कबीर जी स्वयं सत्यपुरूष हैं। सत्यज्ञान सत्यभक्ति परमेश्वर स्वयं ही प्रकट होकर बताते हैं। सत्यपुरूष कबीर जी प्रत्येक युग में भिन्न नामों से प्रकट होते हैं। सत्ययुग में ''सत्य सुकत'' नाम से, त्रेतायुग में ''मुनीन्द्र'' नाम से, द्वापर युग में ''करूणामय नाम से'', कलयुग में ''कबीर नाम से'' संसार में प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान तथा सत्य साधना मंत्रों का ज्ञान कराते हैं। कुछ भक्त परमेश्वर के ज्ञान को सुन-समझकर सत्य साधना करने लगते हैं, परंतु अज्ञानी संत तथा गुरू उनको भ्रमित कर सत्य साधना छुड़ाकर काल साधना पर पुनः दढ़ कर देते हैं।

संत गरीबदास जी ने बताया कि मुझे परमेश्वर कबीर जी ने बताया कि :-

अनन्त कोटि बाजी तहाँ, रचे सकल ब्रह्मण्ड। गरीबदास मैं क्या करूँ, काल करै जीव खण्ड।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने बताया कि हे गरीबदास! मैं इतना समर्थ हूँ कि अनन्त जीवों की रचना तथा सब ब्रह्मण्डों की रचना मैंने की है। भोले जीव मुझे ठीक से न पहचानकर मुझे छोड़कर मेरे नाम को खण्ड करके काल के जाल में फँस जाते हैं। अब तुम ही बताओ, मैं क्या करूँ? फिर कहा है :-

जो जन मेरी शरण है, ताका हूँ मैं दास। गेल–गेल लाग्या फिरूँ, जब तक धरती आकाश।।
गोता मारूँ स्वर्ग में, जा पैठूँ पाताल। गरीबदास खोजत फिरूँ, अपने हीरे मोती लाल।।

भावार्थ :- परमात्मा कबीर जी ने बताया है कि यदि कोई जीव किसी युग में मेरी दीक्षा ले लेता है। यदि वह पार नहीं हो पाता है तो उसको किसी मानुष जन्म में ज्ञान सुनाकर शरण में लूँगा। उसके साथ-साथ रहूँगा। मेरी कोशिश रहती है कि किसी प्रकार यह काल जाल से छूटकर सुखसागर सत्यलोक में जाकर सुखी हो जाए। मेरा प्रयत्न तब तक रहता है जब तक धरती और आकाश नष्ट नहीं होते यानि प्रलय नहीं होती। इसी प्रक्रिया के चलते अब्राहिम अधम सुल्तान की आत्मा पूर्व के कई जन्मों से परमेश्वर कबीर जी की शरण में रही थी। फिर काल ने खण्ड कर दिया। इसके पूर्व के कुछ जन्मों का विवरण इस प्रकार है जो पुराने कबीर सागर में है, वर्तमान वाले कबीर सागर से वह विवरण अज्ञानवश निकाल दिया गया है। कारण यह रहा है कि काल प्रेरणा से 12 पंथों के कबीर पंथी समझ नहीं सके। इसलिए उसको व्यर्थ जानकर ग्रन्थ से निकाल दिया।

''सम्मन वाली आत्मा ही सुल्तान इब्राहिम था''

जिस समय परमेश्वर कबीर जी काशी में प्रकट थे। उस समय दिल्ली के निवासी सम्मन मनियार, उसकी पत्नी नेकी तथा पुत्र शिव (सेऊ) ने परमेश्वर से दीक्षा ली थी। आर्थिक स्थिति कमजोर थी। परमात्मा के उपदेश का दृढ़ता से पालन करते थे। परमेश्वर पर पूर्ण विश्वास था। दोनों पति-पत्नी स्त्रियों को चूड़ियाँ पहनाने का कार्य घर-घर जाकर करते थे। साथ में अपने गुरूदेव कबीर जी की महिमा भी किया करते थे। बताया करते थे कि हमारे सतगुरू देव जी ने राजा सिकंदर लोधी का असाध्य रोग आशीर्वाद मात्र से ठीक कर दिया। बादशाह सिकंदर ने स्वामी रामानन्द जी की गर्दन काट दी थी। उसको सतगुरू कबीर जी ने धड़ पर गर्दन जोड़कर जीवित कर दिया। एक कमाल नाम का लड़का मर गया था। उसके कबीले वालों ने अंतिम संस्कार रूप में दरिया में प्रवाह कर दिया था। शेखतकी जो राजा सिकंदर जी का धर्मगुरू है, उसको विश्वास नहीं था कि रामानंद जी की गर्दन काटने के पश्चात् भी कबीर जी ने जीवित कर दिया। वह राजा से कहता था कि कबीर जन्त्र-मन्त्र जानता है और कुछ नहीं है, मुर्दे कभी जिन्दे होते हैं। मेरे सामने कोई मुर्दा जिन्दा करे तो मानूँ। राजा सिकंदर को कबीर जी पर पूर्ण विश्वास था क्योंकि वह तो रोग से महादुःखी था तथा रामानन्द स्वामी जी को अपने हाथों से कत्ल किया था। उसके सामने कबीर जी ने जीवित किया था। उस दिन शेखतकी भी दरिया पर उपस्थित था। मुर्दे को

देखकर कहा कि यदि मेरे सामने इस मुर्दे को जीवित कर दे तो मैं कबीर को अल्लाह का नबी मान लूँगा। कबीर जी ने कहा कि हे शेख जी! आप भी बड़े पहुँचे हुए पीर हो, आप कोशिश करो, बाद में कहोगे कि मैं भी कर देता। उपस्थित सर्व मन्त्रियों और बादशाह ने भी यही कहा कि आप कौन-से छोटी हस्ती हो? कर दो काम। शेखतकी ने शर्म के मारे जन्त्र-मन्त्र किए, परंतु व्यर्थ। कहा कि मुर्दे जिन्दा नहीं हुआ करते। कबीर तो चाहता है कि मुर्दा बहकर दूर चला जाए और इज्जत रह जाए। वह चला गया मुर्दा। कबीर जी ने अपने हाथ का संकेत किया और कहा मुर्दा वापिस आओ। ईंजन वाली नौका के समान बालक का शव वापिस आ गया। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी है, कबीर हुक्म से शव में प्रवेश कर और बाहर आओ। उसी समय वह 12 वर्षीय बालक जीवित होकर दरिया से बाहर आ गया। उपस्थित दर्शकों ने कहा, कबीर जी! कमाल कर दिया। बालक का नाम कमाल रख दिया। परमात्मा कबीर जी ने उस कमाल बालक को अपने घर बच्चे की तरह पाला। शेखतकी शर्म से पानी-पानी हो गया, परंतु माना नहीं। कहने लगा कि बालक को सदमा हुआ था। गलती से मत मानकर जल प्रवाह कर दिया था। जब जानूँ, मेरी बेटी कई दिनों से कब्र में दबा रखी है। वह मत्यु को प्राप्त हो चुकी है। उसको कबीर जीवित कर दे। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि दो दिन बाद तेरी बेटी को जीवित कर दूँगा। आसपास के गाँव तथा दिल्ली में मुनादी करा दो कि सब आकर देखें। ऐसा ही किया गया। कब्र तोड़ दी गई। कबीर परमेश्वर जी ने कहा, शेख जी! प्रयत्न करो, कहीं बाद में कहे कि लड़की सदमे में थी। उपस्थित जनता ने कहा कि कबीर जी! यदि शेख में शक्ति होती तो अपनी बेटी को कैसे मरने देता? आप कोशिश करो। कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! जीवित हो जा। लड़की जीवित नहीं हुई। ऐसा दो बार कहा। लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी को अपनी बेटी के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर जी की हार की खुशी मनाने लगा और ताली बजाते हुए नाचने लगा। कबीर जी ने कहा, हे जीवात्मा! जहाँ भी हो, कबीर हुक्म से अपने शरीर में प्रवेश कर और कब्र से बाहर आओ। कहने की देरी थी, उसी समय 12 वर्षीय कन्या के शरीर में हलचल हुई और लड़की उठकर बाहर आई और कबीर जी को दण्डवत् प्रणाम किया। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे शेखतकी की बेटी! अपने पिता के साथ घर जाओ। शेखतकी ने भी बेटी का हाथ पकड़ा और घर चलने को कहा। कन्या का नाम कमाली रखा क्योंकि उपस्थित जनता ने कहा, कमाल है, कमाल है। इसलिए कमाली नाम रखा।

कमाली ने कहा कि शेखतकी की ओर से तो मैं यमराज के पास जा चुकी थी। अब तो मैं अल्लाह अकबर की बेटी हूँ। यह कबीर स्वयं अल्लाह है। इस प्रकार लड़की ने कबीर परमेश्वर जी के आशीर्वाद से 1½ घण्टे तक प्रवचन किए। अपने पूर्व के जन्मों की जानकारी दी कि एक बार मैं राबिया थी। उस समय 12 वर्ष की आयु में कबीर जी मिले थे। मैंने 4 वर्ष इनकी बताई साधना की थी। फिर अपने मुसलमान धर्म वाली साधना करने लगी थी जो व्यर्थ थी। फिर मैं बांसुरी लड़की बनी। मक्के में अपना शरीर भी काटकर अर्पित कर दिया था। अगले जन्म में मैंने वैश्या का जीवन जीया। उन चार वर्ष की सत्यभक्ति से मुझे

2½ जन्म मनुष्य के मिले थे। अब मेरा कोई मानव जीवन शेष नहीं था। पशु की योनि में जाना था। उसी समय परमेश्वर कबीर जी धर्मराज के पास गए और मुझे छुड़ाकर लाए और शरीर में प्रवेश कर दिया। इनकी कृपा से मुझे मानव जीवन मिला है। अब मैं अपने वास्तविक पिता अल्लाह कबीर जी के साथ रहूँगी। कबीर जी ने कमाली को बेटी की तरह पाला और अपने घर पर रखा। उपस्थित लाखों की सँख्या में दर्शकों ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली। सबको प्रथम 5 मन्त्र का उपदेश दिया। इस प्रकार कबीर जी के उस समय 64 लाख शिष्य हो गए थे। वे चमत्कार देखकर ही शरण में आए थे। दिल्ली नगर की स्त्रियाँ उनसे ये अनोखी बातें सुनकर बाद में चर्चा करती थी कि क्या ये बातें सम्भव हो सकती हैं? कुछ तो कहती थी कि हमारे घर वाला भी उस समय वहीं उपस्थित था। जब शेख की लड़की कब्र से निकालकर जीवित की गई थी, परंतु मेरा पति इस बात से नाराज हुआ कि कबीर क्यों ले गया लड़की को? जिसकी बेटी थी, उसको सौंप देनी थी। भावार्थ है कि कुल मिलाकर वे स्त्रियां अंदर से मजाक रूप में मानती थी, परंतु उनके सम्मुख चुप रह जाती थी।

''नेकी-सेऊ(शिव)-सम्मन के बलिदान की कथा''

एक समय साहेब कबीर अपने भक्त सम्मन के यहाँ अचानक दो सेवकों (कमाल व शेखफरीद) के साथ पहुँच गए। सम्मन के घर कुल तीन प्राणी थे। सम्मन, सम्मन की पत्नी नेकी और सम्मन का पुत्र सेऊ। भक्त सम्मन इतना गरीब था कि कई बार अन्न भी घर पर नहीं होता था। सारा परिवार भूखा सो जाता था। आज वही दिन था। भक्त सम्मन ने अपने गुरुदेव कबीर साहेब से पूछा कि साहेब खाने का विचार बताएँ, खाना कब खाओगे? कबीर साहेब ने कहा कि भाई भूख लगी है। भोजन बनाओ। सम्मन अन्दर घर में जा कर अपनी पत्नी नेकी से बोला कि अपने घर अपने गुरुदेव भगवान आए हैं। जल्दी से भोजन तैयार करो। तब नेकी ने कहा कि घर पर अन्न का एक दाना भी नहीं है। सम्मन ने कहा पड़ोस वालों से उधार मांग लाओ। नेकी ने कहा कि मैं मांगने गई थी लेकिन किसी ने भी उधार आटा नहीं दिया। उन्होंने आटा होते हुए भी जान बूझ कर नहीं दिया और कह रहे हैं कि आज तुम्हारे घर तुम्हारे गुरु जी आए हैं। तुम कहा करते थे कि हमारे गुरु जी भगवान हैं। आपके गुरु जी भगवान हैं तो तुम्हें माँगने की आवश्यकता क्यों पड़ी? ये ही भर देगें तुम्हारे घर को आदि-2 कह कर मजाक करने लगे। सम्मन ने कहा लाओ आपका चीर गिरवी रख कर तीन सेर आटा ले आता हूँ। नेकी ने कहा यह चीर फटा हुआ है। इसे कोई गिरवी नहीं रखता। सम्मन सोच में पड़ जाता है और अपने दुर्भाग्य को कोसते हुए कहता है कि मैं कितना अभागा हूँ। आज घर भगवान आए और मैं उनको भोजन भी नहीं करवा सकता। हे परमात्मा! ऐसे पापी प्राणी को पृथ्वी पर क्यों भेजा। मैं इतना नीच रहा हूँगा कि पिछले जन्म में कोई पुण्य नहीं किया। अब सतगुरु को क्या मुँह दिखाऊँ? यह कह कर अन्दर कोठे में जा कर फूट-2 कर रोने लगा। तब उसकी पत्नी नेकी कहने लगी कि हिम्मत करो। रोवो मत। परमात्मा आए हैं। इन्हें ठेस पहुँचेगी। सोचेंगे हमारे आने से तंग आ कर रो रहा है। सम्मन चुप हुआ। फिर नेकी ने कहा आज रात्रि में दोनों पिता पुत्र जा कर तीन सेर (पुराना बाट किलो ग्राम के लगभग) आटा चुरा कर लाना। केवल संतों व

भक्तों के लिए। तब लड़का सेऊ बोला माँ - गुरु जी कहते हैं चोरी करना पाप है। फिर आप भी मुझे शिक्षा दिया करती कि बेटा कभी चोरी नहीं करनी चाहिए। जो चोरी करते हैं उनका सर्वनाश होता है। आज आप यह क्या कह रही हो माँ? क्या हम पाप करेंगे माँ? अपना भजन नष्ट हो जाएगा। माँ हम चौरासी लाख योनियों में कष्ट पाएंगे। ऐसा मत कहो माँ। माँ आपको मेरी कसम। तब नेकी ने कहा पुत्र तुम ठीक कह रहे हो। चोरी करना पाप है परंतु पुत्र हम अपने लिए नहीं बल्कि संतों के लिए करेंगे। नेकी ने कहा बेटा - ये नगर के लोग अपने से बहुत चिढ़ते हैं। हमने इनको कहा था कि हमारे गुरुदेव कबीर साहेब (पूर्ण परमात्मा) आए हुए हैं। इन्होंने एक मतक गऊ तथा उसके बच्चे को जीवित कर दिया था जिसके टुकड़े सिंकदर लोधी ने करवाए थे। एक लड़के तथा एक लड़की को जीवित कर दिया। सिंकदर लोधी राजा का जलन का रोग समाप्त कर दिया तथा श्री रामानन्द जी (कबीर साहेब के गुरुदेव) जो सिंकदर लोधी ने तलवार से कत्ल कर दिया था वे भी कबीर साहेब ने जीवित कर दिए थे। इस बात का ये नगर वाले मजाक कर रहे हैं और कहते हैं कि आपके गुरु कबीर तो भगवान हैं तुम्हारे घर को भी अन्न से भर देंगे। फिर क्यों अन्न (आटे) के लिए घर घर डोलती फिरती हो?

बेटा ये भोले प्राणी हैं यदि आज साहेब कबीर इस नगरी का अन्न खाए बिना चले गए तो काल भगवान भी इतना नाराज हो जाएगा कि कहीं इस नगरी को समाप्त न कर दे। हे पुत्र! इस अनर्थ को बचाने के लिए अन्न की चोरी करनी है। हम नहीं खाएंगे। केवल अपने सतगुरु तथा आए भक्तों को प्रसाद बना कर खिलाएगें। यह कह कर नेकी की आँखों में आँसू भर आए और कहा पुत्र नाटियो मत अर्थात् मना नहीं करना। तब अपनी माँ की आँखों के आँसू पौंछता हुआ लड़का सेऊ कहने लगा - माँ रो मत, आपका पुत्र आपके आदेश का पालन करेगा। माँ आप तो बहुत अच्छी हो न।

अर्ध रात्रि के समय दोनों पिता (सम्मन) पुत्र (सेऊ) चोरी करने के लिए चल दिए। एक सेठ की दुकान की दीवार में छिद्र किया। सम्मन ने कहा कि पुत्र मैं अन्दर जाता हूँ। यदि कोई व्यक्ति आए तो धीरे से कह देना मैं आपको आटा पकड़ा दूँगा और लेकर भाग जाना। तब सेऊ ने कहा नहीं पिता जी, मैं अन्दर जाऊँगा। यदि मैं पकड़ा भी गया तो बच्चा समझ कर माफ कर दिया जाऊँगा। सम्मन ने कहा पुत्र यदि आपको पकड़ कर मार दिया तो मैं और तेरी माँ कैसे जीवित रहेंगे? सेऊ प्रार्थना करता हुआ छिद्र द्वार से अन्दर दुकान में प्रवेश कर गया। तब सम्मन ने कहा पुत्र केवल तीन सेर आटा लाना, अधिक नहीं। लड़का सेऊ लगभग तीन सेर आटा अपनी फटी पुरानी चद्दर में बाँध कर चलने लगा तो अंधेरे में तराजू के पलड़े पर पैर रखा गया। जोर दार आवाज हुई जिससे दुकानदार जाग गया और सेऊ को चोर-चोर करके पकड़ लिया और रस्से से बाँध दिया। इससे पहले सेऊ ने वह चद्दर में बँधा हुआ आटा उस छिद्र से बाहर फैंक दिया और कहा पिता जी मुझे सेठ ने पकड़ लिया है। आप आटा ले जाओ और सतगुरु व भक्तों को भोजन करवाना। मेरी चिंता मत करना। आटा ले कर सम्मन घर पर गया तो सेऊ को न पा कर नेकी ने पूछा लड़का कहाँ है? सम्मन ने कहा उसे सेठ जी ने पकड़ कर थाम्ब (Pillar) से बाँध दिया। तब नेकी ने कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के सेऊ का सिर काट लाओ। क्योंकि लड़के को पहचान कर अपने घर पर लाएंगे। फिर सतगुरु को देख कर

नगर वाले कहेंगे कि ये हैं जो चोरी करवाते हैं। हो सकता है सतगुरु देव को परेशान करें। हम पापी प्राणी अपने दाता को भोजन के स्थान पर कैद न दिखा दें। यह कह कर माँ अपने बेटे का सिर काटने के लिए अपने पति से कह रही है वह भी गुरुदेव जी के लिए। सम्मन ने हाथ में कर्द (लम्बा छुरा) लिया तथा दुकान पर जा कर कहा सेऊ बेटा, एक बार गर्दन बाहर निकाल। कुछ जरूरी बातें करनी हैं। कल तो हम नहीं मिल पाएंगे। हो सकता है ये आपको मरवा दें। तब सेऊ ने उस सेठ (बनिए) से कहा कि सेठ जी बाहर मेरा बाप खड़ा है। कोई जरूरी बात करना चाहता है। कृप्या करके मेरे रस्से को इतना ढीला कर दो कि मेरी गर्दन छिद्र से बाहर निकल जाए। तब सेठ ने उसकी बात को स्वीकार करके रस्सा इतना ढीला कर दिया कि गर्दन आसानी से बाहर निकल गई। तब सेऊ ने कहा पिता जी मेरी गर्दन काट दो। यदि आप मेरी गर्दन नहीं काटोगे तो आप मेरे पिता नहीं हो। सम्मन ने एक दम करद मारी और सिर काट कर घर ले गया। सेठ ने लड़के का कत्ल हुआ देख कर उसके शव को घसीट कर साथ ही एक पजावा (ईटें पकाने का भट्ठा) था उस खण्डहर में डाल आया।

जब नेकी ने सम्मन से कहा कि आप वापिस जाओ और लड़के का धड़ भी बाहर मिलेगा उठा लाओ। जब सम्मन दुकान पर पहुँचा उस समय तक सेठ ने उस दुकान की दीवार के छिद्र को बंद कर लिया था। सम्मन ने शव की घसीट (चिन्हों) को देखते हुए शव के पास पहुँच कर उसे उठा लाया। ला कर अन्दर कोठे में रख कर ऊपर पुराने कपड़े (गुदड़) डाल दिए और सिर को अलमारी के ताख (एक हिस्से) में रख कर खिड़की बंद कर दी।

कुछ समय के बाद सूर्य उदय हुआ। नेकी ने स्नान किया। सतगुरु व भक्तों का खाना बनाया। सतगुरु कबीर साहेब जी से भोजन करने की प्रार्थना की। नेकी ने साहेब कबीर व दोनों भक्त (कमाल तथा शेख फरीद), तीनों के सामने आदर के साथ भोजन परोस दिया। साहेब कबीर ने कहा इसे छः दौनों (मिट्टी का बर्तन) में डाल कर आप तीनों भी साथ बैठो। यह प्रेम प्रसाद खाओ। बहुत प्रार्थना करने पर भी साहेब कबीर नहीं माने तो छः दौनों में प्रसाद परोसा गया। पाँचों प्रसाद खाने के लिए बैठ गए। तब साहेब कबीर ने कहा --

आओ सेऊ जीम लो, यह प्रसाद प्रेम। शीश कटत हैं चोरों के, साधों के नित्य क्षेम।।

सेऊ धड़ पर शीश चढ़ा, बैठा पंगत मांही। नहीं घरैरा गर्दन पर, वही सेऊ अक नाहीं।।

साहेब कबीर ने कहा कि हे सेऊ! आओ भोजन खाओ। सिर तो चोरों के कटते हैं। संतों (भक्तों) के नहीं। उनको तो क्षमा होती है। साहेब कबीर ने इतना कहा था उसी समय सेऊ के धड़ पर सिर लग गया। कटे हुए का कोई निशान भी गर्दन पर नहीं था तथा पंगत (पंक्ति) में बैठ कर भोजन करने लगा। बोलो कबीर साहेब (कविरमितौजा) की जय।

सम्मन तथा नेकी ने देखा कि गर्दन पर कोई चिन्ह भी नहीं है। लड़का जीवित कैसे हुआ? अन्दर जा कर देखा तो वहाँ शव तथा शीश नहीं था। केवल रक्त के छीटें लगे थे जो इस पापी मन के संशय को समाप्त करने के लिए प्रमाण बकाया था। सत साहिब।।

ऐसी-2 बहुत लीलाएँ साहेब कबीर (कविरग्नि) ने की हैं जिनसे यह स्वसिद्ध है कि ये ही पूर्ण परमात्मा हैं। सामवेद संख्या नं. 822 में कहा है कि कविर्देव अपने विधिवत् साधक साथी की आयु बढ़ा देता है।

।।जय हो परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी की।।

सम्मन वाली आत्मा नौशेर खान बना

नेकी और सेऊ तो उसी जन्म में मोक्ष प्राप्त कर गए, परंतु सम्मन के दिल पर ठेस लग गई कि यदि मेरे पास धन होता तो मुझे बेटा काटना ना पड़ता। परमात्मा ने उसी जन्म में सम्मन-नेकी-सेऊ को धन-धान्य से परिपूर्ण कर दिया था। वे निर्धन नहीं रहे थे। सम्मन दिल्ली का महान धनी व्यक्ति हो गया था, परंतु फिर भी मोक्ष की इच्छा नहीं बनी। जिस कारण से बेटे की कुर्बानी परमेश्वर रूप सतगुरू के लिए करने के कारण अगले जन्म में नौशेरखाँ शहर के राजा के घर जन्म लिया। राजा बना। 80 खजाने हीरे-मोतियों के भरे थे, परंतु दान नहीं करता था, न परमात्मा को याद करता था। परमेश्वर कबीर जी जिन्दा बाबा का वेश बनाकर नौशेरखान के बादशाह नौशेरखान के पास गए और दान करने का उपदेश दिया। राजा ने कहा, मैं निर्धन राजा हूँ। जिन्दा ने कहा कि आपके 80 खजानों को झंडे लगे हैं। यह राजा की पहचान होती थी कि जिसके पास जितने खजाने होते, उतने झण्डे खड़े किया करते।

राजा ने कहा, ये तो कोयले हैं। जिन्दा ने कहा कि जैसी तेरी नीयत है, कोयले हो जाएंगे। राजा ने खोलकर खजाने देखे तो सच में कोयले हो गए थे। राजा ने परमेश्वर के चरण पकड़कर क्षमा याचना की। परमेश्वर ने कहा कि यदि अधिक धन को दान करे तो ये फिर से हीरे-मोती बन जाएंगे। राजा ने कहा, जैसे आपकी आज्ञा, वही करूँगा। खजाने फिर से हीरों से भर गए। राजा नौशेरखान ने अधिक धन को दान किया। जिसके फलस्वरूप तथा पूर्व जन्म की भक्ति व संत सेवा के फलस्वरूप ईराक देश में बलख नामक शहर का राजा बना।

विस्तृत कथा आगे है :-

''अब्राहिम सुल्तान की जन्म कथा''

एक अधम शाह नाम का फकीर था। उसने बलख शहर से कुछ दूर एक कुटिया बना रखी थी। शहर में घूमने-फिरने आता था। एक दिन उसने बलख के बादशाह की इकलौती बेटी को देखा। वह युवा तथा सुंदर थी। अधम शाह के मन में दोष उत्पन्न हो गया और राजा के पास जाकर कहा कि इस लड़की का विवाह मेरे से कर दो। राजा हैरान रह गया। फकीर कहीं शॉप न दे दे, इसलिए डर भी गया। अचानक हाँ या ना नहीं कह सका, कल आने को कहा। मंत्रियों को पता चला। एक राय बनी कि कल उसे कह देंगे कि राजा की लड़की से विवाह करने के लिए मोतियों का एक हार लाना पड़ता है या सौ मोती लाने होते हैं। अन्यथा विवाह नहीं होता। अगले दिन फकीर को यह शर्त बता दी गई। फकीर मोती लेने चला। किसी ने बताया कि मोती तो समुद्र में मिलते हैं। समुद्र के किनारे जाकर अपने करमण्डल (लोटे) से समुद्र का जल भरकर कुछ दूरी पर रेत में डालने लगा। कई दिन तक भूखा-प्यासा इसी प्रयत्न में लगा रहा। शरीर भी समाप्त होने को आया। जो भी देखता,

वही कहता कि अल्लाह के लिए घर त्यागा था। अब नरक की तैयारी कर रहा है। समुद्र कभी खाली नहीं हो सकता। भक्ति कर। परमात्मा जिंदा बाबा के वेश में वहाँ प्रकट हुए तथा अधम शाह से पूछा कि क्या कर रहे हो? उसने बताया कि राजा की लड़की से विवाह करना है। उसके लिए मोतियों की शर्त रखी है। मोती समुद्र में बताए हैं। समुद्र खाली करके मोती लेकर जाऊँगा। जिन्दा ने कहा कि समुद्र खाली नहीं हो सकता। आप भूखे-प्यासे मर जाओगे। आप जिस मोक्ष के उद्देश्य के लिए घर से निकले हो। मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयत्न करो तो कुछ बात बने। आपने जीवन को नष्ट करने की योजना बना ली है। अधम शाह ने कहा कि आपकी शिक्षा की मुझे कोई आवश्यकता नहीं है। मैं अपना कार्य कर रहा हूँ, तुम अपना करो। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि:-

विकार मरे मत जानिया, ज्यों भूभल (राख) में आग। जब करेल्लै धधकहीं, कोई बचै सतगुरू शरण लाग।।

चुटकुला :- एक 70-75 वर्ष का वंद्ध शराब पीकर मार्ग में खड़ा-खड़ा झूझ रहा था। उसके हाथ का डोगा (सहारे के लिए डण्डा) जमीन पर गिर गया। वह डोगा उठाने में असमर्थ था क्योंकि वह गिर जाता। फिर उठना मुश्किल हो जाता। एक भद्र पुरूष उसी रास्ते से आया। वंद्ध ने उसे लड़खड़ाती आवाज में कहा कि मेरा डोगा उठाकर मुझे दे दो। यात्री को समझते देर नहीं लगी। कहा, हे दादा जी! आप अपनी आयु की ओर देखो। इस आयु में शराब पीना शोभा नहीं देता। पोते-पोतियों वाले हो। उन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यह बात सुनकर वंद्ध ने कहा कि शिक्षा बिना बात ना रह ही, क्या आज तक कोई मेरे को यह शिक्षा देने वाला नहीं मिला होगा? यदि डोगा उठाना है तो उठा नहीं तो जा। यही दशा अधम शाह फकीर की थी। परमात्मा ने देखा कि भक्त तो मरेगा। समुद्र की झाल मारी, हजारों मोती रेत में पड़े थे। या अल्लाह कहकर अधम शाह ने हजारों मोती चद्दर में बाँध लिए और राजा के दरबार में जाकर रख दिए और कहा कि आप अपने वायदे अनुसार शहजादी का विवाह मेरे से कर दो। मंत्रियों ने सिपाहियों को आज्ञा दी कि इसको डण्डे मारो और मारकर जंगल में डाल आओ। ऐसा ही किया गया। परमात्मा की कंपा से वह मरा नहीं। कुछ दिन में चलने-फिरने लगा। कुछ दिन के पश्चात् राजा की लड़की मर गई। उसको कब्र में दबाकर चार पहरेदार छोड़ दिए कि कोई जंगली जानवर शव को खराब न कर दे। अधम शाह को पता चला। वह रात्रि को कब्र के पास गया। पहरेदार गहरी नींद में सोए थे। अधम शाह कब्र को खोदकर शव को निकालकर, कब्र को उसी तरह ठीक करके लड़की के शव को अपनी कुटिया में उठा ले गया। उसी रात्रि में बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर उसी जंगल में चला गया। कुटिया में दीपक जल रहा था। लड़की का शव कफन में लिपटा दीवार के सहारे रखा जैसे लड़की पलाथी लगाकर बैठी हो। सर्दी का मौसम था। अग्नि लेने के लिए काफिले के दो व्यक्ति कुटिया पर गए। आवाज सुनकर अधम शाह डर गया कि राजा के आदमी आ गए। वह कुटिया के पीछे जाकर एक गुफा में छिप गया जिसमें वह साधना किया करता था। काफिले के व्यक्तियों ने मंत जवान लड़की को दीवार के सहारे बैठा देखा तो डर के मारे उलटे पैरों काफिले में जाकर बताया। एक वैद्य भी काफिले में रहता था। कई व्यक्ति तथा वैद्य वहाँ गये तो लड़की को देखते ही वैद्य ने कहा कि यह लड़की

मरी नहीं है, इसको सदमा लगा है। उपचार कर सकता हूँ। काफिले के मालिक ने कहा कि आप उपचार करो। यदि लड़की स्वस्थ हो गई तो इसी से पूछेंगे कि कौन है तेरा पिता या पति कहाँ है? पहले लड़की के नग्न शरीर के ऊपर चद्दर डाली। फिर वैद्य ने हाथ की नस में चीरा देकर अशुद्ध रक्त निकाला। लड़की कुछ ही मिनटों में सचेत हो गई। बोली कि मैं यहाँ कैसे आयी हूँ। अधम शाह फकीर ने दीपक की रोशनी में देखा कि ये राजा के आदमी नहीं हैं। शहजादी भी जीवित हो गई है। वह काफिले के व्यक्तियों के पास आया और सारी दास्तां बताई जो लड़की ने भी सुनी। लड़की को काफिले के व्यक्तियों ने समझाया कि यदि आपको यह फकीर कब्र से निकालकर नहीं लाता तो आप तो संसार से चली गई होती। अब आपको चाहिए कि इस फकीर के साथ अल्लाह की रजा मानकर रहें। लड़की ने हाँ कर दी। उन व्यक्तियों ने दोनों का विवाह कर दिया, निकाह पढ़ दिया। काफिले के मालिक ने कहा कि यदि आप हमारे साथ चलना चाहें तो हम आपकी सेवा करेंगे, कोई कष्ट नहीं होने देंगे। गहस्थी बना फकीर बोला कि हमारे को यहीं रहना है। मैं आपका अहसान कभी नहीं भूल सकूँगा। आप मेरे लिए अल्लाह का स्वरूप बनकर आए हो। हम दोनों की मौत होनी थी। आपने हमारे जीवन की रक्षा की है। उनको वहीं छोड़कर काफिले के व्यक्ति चले गए। कुछ दिन पश्चात् लड़की ने एक सुंदर पुत्र को जन्म दिया। उसका नाम ''इब्राहिम'' रखा। चार वर्ष का बच्चा होने के पश्चात् बलख शहर के मौलवी के पास पढ़ने के लिए प्रवेश दिलाया। प्रतिदिन अधम बेटे को मौलवी के पास सुबह छोड़ आता, शाम को ले आता। एक दिन बलख का राजा उस मौलवी के पास गया। वह विधार्थियों को इनाम देता था। गरीब बच्चों को कपड़े बाँटता था। अधम शाह फकीर के लड़के को देखकर राजा हैरान रह गया। उसकी सूरत राजा की मत लड़की से मिलती थी। राजा ने मौलवी से पूछा कि यह बच्चा किसका है? मौलवी ने बताया कि एक फकीर जंगल से आता है, उसका बालक है। सुबह छोड़कर जाता है, शाम को ले जाता है। हमने अधिक पूछताछ नहीं की। लड़का भी उठकर राजा से लिपट गया। राजा ने उसे गोद में उठा लिया और चल पड़ा। मौलवी से कहा कि इसका पिता आए तो महल में भेज देना, वहाँ से ले जाएगा। राजा ने रानी को वह बालक दिखाया, वह तो देखते ही अपनी बेटी को याद करके मूर्छित होकर पथ्वी के ऊपर गिर गई। सचेत होने पर बालक को सीने से लगाया। खाना खीर-हलवा स्वयं बनाकर खिलाया। रानी ने कहा कि यह तो अपनी लड़की से मिलती शक्ल का है। इतने में फकीर मौलवी के पास जाकर राजा के महल में चला गया। राजा ने नौकरों को बोल रखा था कि इस लड़के का पिता आए तो उसे रोकना नहीं, महल में आदर के साथ लेकर आना है। उसी फकीर को देखकर राजा ने कहा कि यह बालक किसका है? फकीर ने बताया कि यह मेरा लड़का है। आपकी लड़की से उत्पन्न हुआ है। राजा ने कहा कि फकीर होकर झूठ बोलना ठीक नहीं होता। फकीर ने सर्व कथा बताई। राजा को विश्वास नहीं हुआ। फकीर को साथ लेकर नौकरों के साथ पहले लड़की की कब्र को खोदा, वहाँ शव नहीं था। फकीर की कुटिया पर गए। उनकी लड़की कई स्थानों से फटे और पैबन्द लगे वस्त्र पहने बैठी थी। अपने माता-पिता को देखते ही दौड़कर पिता-माता से बारी-बारी सीने से लगी। लड़की तथा फकीर को उनकी आज्ञा

से तथा बच्चे को लेकर महल में आए। अधम को अपना उतराधिकारी नियुक्त कर दिया। जिस कारण से शाह कहा जाने लगा। उसका नाम 'अधम' था। कुछ दिन रहकर अधम शाह को राज-ठाठ अच्छे नहीं लगे। वह उनसे प्रेम से विदाई लेकर कुटिया में चला गया और कभी-कभी लड़के तथा पत्नी से मिल जाता था। कुछ वर्षों के पश्चात् अधम शाह फकीर की मुत्यु हो गई। उसकी समाधि कुटिया में बना दी। आसपास सुंदर बगीची बनाई गई। वहाँ मेले लगने लगे। बालक इब्राहिम नाना जी के राज्य का उतराधिकारी बनाया गया।

विचारणीय विषय :- भक्ति के लिए भक्त का शरीर स्वभाव बहुत सहयोगी होता है। अच्छे माता-पिता से मिले जन्म से बच्चे के शरीर में माता-पिता का स्वभाव भी साथ रहता है। इब्राहिम जिस जन्म में सम्मन मनियार था। उसने अपने लड़के की कुर्बानी सतगुरू की सेवा के लिए दी थी। कुछ कारण ऐसा बना था जो आप जी ने सुल्तान बोध के प्रारम्भ में पढ़ा। परमेश्वर जी यानि सतगुरू कबीर जी ने वह लड़का जीवित कर दिया था। वही सम्मन फिर राजा बना। भक्ति नहीं की। अबकी बार उस आत्मा को ऐसे पिता से शरीर दिया जो जन्म से परमात्मा पर समर्पित थे। सम्मन की आत्मा को मोक्ष दिलाने के लिए परमेश्वर जी ने अधम शाह में विवाह की प्रेरणा प्रबल की। लड़की को सदमा, समुद्र से मोती, बंजारों का काफिला रास्ता भूलकर कुटिया पर आना, लड़की को जीवित करना। इब्राहिम का जन्म अधम शाह से पाक आत्मा लड़की से होना जो एक फकीर के साथ रहकर साध्वी जीवन जी रही थी। उच्च विचार बने थे। संसार की कोई बुराई लड़की को नहीं लगी थी। सतगुरू के लिए अपने पुत्र सेऊ (शिव) का बलिदान तथा नौशेरखान रूप में दान किए खजाने यानि अरबों रूपये। उस दान का फल भी उस जीव को देना था। उसके लिए परमेश्वर कबीर जी ने यह लीला की थी। आदम शाह फकीर का दादा उसी बलख शहर का राजा था जिसका राज्य अब्राहिम के नाना जी के पिता ने लड़ाई करके छीन लिया था। फिर वही राज्य उसी वंश के अब्राहिम को मिला। आदम शाह भी भक्ति से भटकने के कारण पशु की योनि में जन्मा। कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि :-

ये सब खेल हमारे किए। हम से मिले जो निश्चय जीये।।
जोजन मेरी शरण है, उसका हूँ मैं दास। गेल गेल लाग्या फिरूँ, जब तक धरती आकाश।।

सुल्तान को शरण में लेना

अगले जन्म में नौशेरखान फिर राजा बना। इराक के अंदर एक बलख नाम का शहर था। उस शहर में उसकी राजधानी थी। राजा का नाम अब्राहिम अधम सुल्तान था। उस आत्मा ने सम्मन के जीवन में जो श्रद्धा से भक्ति की थी। उसके कारण मानव जीवन मिलते आ रहे थे तथा जो दान किया था, उसके प्रतिफल में राजा बनता रहा। उसका सबसे बड़ा दान तीन सेर आटा था जो बेटे की कुर्बानी देकर किया था। उसी कारण से वह धनी राजा बनता रहा। कुछ नौशेरखान के जीवन में कबीर परमेश्वर जी ने कारण बनाकर दान करवाया। जिस कारण से भी बलख का धनी राजा बना। अठारह लाख घोड़े थे। अन्य हीरे-मोतियों की कमी नहीं थी। एक जोड़ी जूतियों के ऊपर अढ़ाई लाख के हीरे लगे होते

थे। कहते हैं 16 हजार स्त्रियां रखता था। ऐश (मौज) करता था। शिकार करने जाता, बहुत जीव हिंसा करता था। एक दिन राजा के महल के पास किसी भक्त के घर कुछ संत आए थे। उन्होंने सत्संग किया। राजा ने रात्रि में अपने घर की छत के ऊपर बैठकर पूरा सत्संग सुना। परमात्मा की भक्ति की प्रबल प्रेरणा हुई। सुबह अपने मंत्रियों से कहा कि किसी अच्छे संत का पता करो। मुझे मिलाओ। एक ढ़ोंगी बाबा बड़ा प्रसिद्ध था। राजा को उसके पास ले जाया गया। राजा उसके बताए मार्ग से भक्ति करने लगा। राजा की ऊँगली में एक बहुमूल्य छाप (अंगूठी) थी। ढ़ोंगी बाबा दिखावा तो करता था कि वह धन को हाथ नहीं लगाता। लगता था कि बड़ा त्यागी और बैरागी है, परंतु था धूर्त। सुल्तान भी उससे प्रभावित था। उस बाबा ने अपने निजी सेवक से कहा कि जिस सुनार ने राजा अब्राहिम की अँगूठी बनाई है, उस सुनार से वैसी ही अँगूठी नकली हीरों तथा मोतीयुक्त नकली सोने की बनवा ला। नकली अँगूठी बिल्कुल वैसी ही बन गई। एक दिन राजा संत के पास गया। संत ने नौका विहार की इच्छा की। अब्राहिम अधम सुल्तान ने नौका विहार का प्रबन्ध करवाया। सरोवर के मध्य में जाकर बाबा ने कहा, राजन्! आपकी अँगूठी अति सुन्दर है, दिखाना जरा। राजा ने अँगूठी निकालकर संत जी को दे दी, वह बाबा देखने लगा। नजर बचाकर अँगूठी बदल दी। राजा ने कहा कि आप चाहें तो अँगूठी ले लें या और बनवा दूँ। बाबा ने कहा, अरे! साधु-संतों के लिए तो यह मिट्टी है मिट्टी। यह कहकर नकली अँगूठी सरोवर में फैंक दी। राजा को पूरा भरोसा हो गया कि वास्तव में साधु त्यागी और बैरागी है। कुछ दिन बाद उस ढ़ोंगी बाबा की पोल खुल गई। उसके राजदार शिष्य ने राजा को बताया कि आपकी अँगूठी ऐसे-ऐसे बाबा ने ठगी है। वह उसके पास है। जब राजा ने वह अँगूठी उसी बाबा की कुटिया में जमीन में दबी पाई तो बहुत दुःख हुआ और साधु-संतों से विश्वास उठ गया। उस ढ़ोंगी को जेल में डाल दिया। फिर तो राजा ने अपने राज्य के सब संत-महात्माओं को बुला-बुलकार उनसे प्रश्न किया कि यदि आपने खुदा को पाया है तो मुझे भी मिला दो। इसका उत्तर किसी के पास नहीं था। एक संत ने कहा कि आप एक गिलास दूध का मंगवाऐं दूध का गिलास नौकर ने लाकर दे दिया। संत ने दूध में उंगली डाली और राजा से कहा, राजन्! आपके दूध में घी नहीं है। राजा ने कहा, दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। पहले दूध को गर्म करके ठण्डा किया जाता है। फिर जमाया जाता है, दही बनती है। फिर बिलोया जाता है। तब घी निकलता है। उस संत जी ने कहा, सुल्तान जी! जिस प्रकार दूध से घी प्राप्त करने की विधि है। वैसे ही मानव शरीर से परमात्मा प्राप्ति की विधि है। उस विधि से परमात्मा प्राप्त होता है। गुरू बनाओ, साधना करो। राजा के मन में घृणा थी गुरू के प्रति। वह सबको उसी दृष्टिकोण से देख रहा था। सब महात्माओं को जेल में डाल दिया। सबसे चक्की चलवाई जा रही थी। सब साधु परमात्मा के लिए ही तो घर-परिवार त्यागकर निकले होते हैं। भक्ति मार्ग सही नहीं मिलने के कारण महिमा की चाह स्वतः हो जाती है। अधिक शिष्य बनाना। अच्छा-बड़ा आश्रम बनाना, यह धुन लग जाती है, परंतु परमेश्वर की अच्छी आत्माऐं होती हैं। वे परमेश्वर के लिए प्रयत्नशील होने से परमात्मा की उन पर रजा रहती है। उनको सत्यज्ञान देने के लिए वेश बदलकर परमात्मा उनको

समझाते हैं, परंतु काल के जाल में अँधे होकर नहीं मानते। परमात्मा सबका पिता है। वह बालक जानकर क्षमा करता रहता है। फिर भी उनकी सहायता करता रहता है।

लीला नं. 1 :- जेल में दुःखी भक्तों की पुकार सुनकर उनको छुड़ाने के लिए तथा अपने परम भक्त सम्मन को काल के जाल से निकालने के लिए परमेश्वर कबीर जी एक भैंसे के ऊपर बैठकर सुल्तान अधम के राज दरबार (कार्यालय) में पहुँच गए। साधु वेश में परमेश्वर को देखकर अब्राहिम सुल्तान ने पूछा, आप किसलिए आए हो? परमेश्वर जी ने कहा कि आपके प्रश्न का उत्तर देने आया हूँ। अब्राहिम ने प्रश्न किया कि मुझे बताओ खुदा कैसा है? खुदा से आप मिले हैं तो मुझे भी मिलाओ। कबीर जी ने भैंसे से कहा कि बता दे भैंसा! अल्लाह कैसा है? कहाँ है? खुदा की कसम सच कहना। भैंसा मनुष्य की तरह बोला, कहा कि अब्राहिम मेरे ऊपर बैठा यह अल्लाहु अकबर है। सुल्तान को भैंसे को बोलते देखकर आश्चर्य हुआ और प्रभावित भी हुआ। सोचने लगा कि यह कोई सेवड़ा हो सकता है। परमेश्वर भैंसे सहित अन्तर्ध्यान हो गये। अब्राहिम को चक्कर आ गया। परमात्मा जेल के सामने खड़े हो गए। सिपाहियों को आदेश था कि कोई भी साधु मिले, उसको जेल में डाल दे। उन्होंने परमात्मा को जेल में बंद कर दिया। सिपाहियों ने कहा कि चक्की चलाओ। अन्य सब साधु भी चक्की चलाकर आटा पीस रहे थे, रो रहे थे। कबीर जी ने सिपाहियों से कहा कि हम बन्दी एक काम करेंगे, एक सिपाही करेंगे। हम चक्की चलाएंगे तो चक्की में कनक (गेहूँ, चना, बाजरा) सिपाही डालेंगे। या हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। सिपाहियों ने क्रोधित होकर कहा कि हम कनक डालेंगे, तुम चक्की चलाओ। कबीर जी ने कहा कि सब संत खड़े हो जाओ। यह कहकर अपनी चक्की को डण्डा लगाया। उसी समय सब (360) चक्की अपने आप चलने लगी। परमात्मा ने कहा, सिपाही भाई डालो कनक, पीसो जितना चाहिए। साधुओं से कहा कि आँखें बंद करो। सबने आँखें बंद कर ली। फिर परमेश्वर जी ने कहा कि आँखें खोलो। आँखें खोली तो सब जेल से बाहर बलख शहर से दूर जंगल में खड़े थे। कबीर जी ने कहा कि आप इस राजा के राज्य को त्यागकर दूर चले जाओ। सर्व भक्त जन परमेश्वर को प्रणाम तथा धन्यवाद करके भाग चले। दूर चले गए। राजा को पता चला कि एक सिद्ध फकीर आया था। सब कैदियों को छुड़ाकर ले गया। जाते दिखाई नहीं दिए। एक चक्की को डण्डा लगाया, सब (360) चक्कियाँ चलने लगी हैं। राजा जेल में गया। चलती चक्कियों को देखकर हैरान रह गया। फिर चक्कियाँ बंद हो गई। राजा विचारों में खो गया।

लीला नं. 2 :- कुछ दिनों के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी एक ऊँट चराने वाले ग्रामीण जैसे वेश बनाकर हाथ में लंबी लाठी लेकर राजा के निवास के ऊपर छत पर प्रकट हो गए। रात्रि का समय था। राजा सो रहा था। परमेश्वर ने छत के ऊपर लाठी को जोर-जोर से मारना शुरू किया। सुल्तान अब्राहिम नींद से जागा। नौकरों को डाँटा, यह कौन शोर कर रहा है? लाओ पकड़कर। नौकर ऊपर गए। एक ऊँटों को चराने वाले को छत पर से पकड़कर सुल्तान के समक्ष लाए। राजा ने पूछा, तू कौन है? मेरे महल की छत पर क्या कर रहा है? परमेश्वर जी ने कहा कि मैं ऊँटवाल हूँ। मेरा एक ऊँट गुम हो गया है। उसको

छत पर खोज रहा था। मैं एक कारवांन हूँ। सुल्तान अधम ने कहा कि हे भोले बन्दे! छत के ऊपर ऊँट कैसे चढ़ सकता है? यह तो कभी हुआ न होगा। कहीं जंगल में ऊँट को खोज। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे अब्राहिम! जैसे ऊँट छत के ऊपर नहीं होता, न छत के ऊपर कभी मिलता है, ऊँट को जंगल में खोजना चाहिए। इसी प्रकार परमात्मा राजगद्दी पर बैठकर ऐशो-आराम (मौज-मस्ती) करने से नहीं, वह संतों में मिलता है। इतना कहकर कबीर परमेश्वर जी अंतर्ध्यान हो गए। सुल्तान अधम मूर्छित होकर जमीन पर गिर गए। मन्त्रियों तथा रानियों ने एक झाड़-फूँक करने वाला बुलाया। उसने राजा की दांई बाजू पर ताबीज बाँध दिया और कहा कि इसके ऊपर भूत-प्रेत का साया है, ठीक हो जाएगा। राजा का मन राज-काज में नहीं लग रहा था। उदास रहने लगा। राजा ने कुछ संतों को फिर से कैद कर रखा था। परमेश्वर फिर से जेल में गए। उसी तरह उनको भी जेल से निकाला। अबकी बार सब कैदियों से कहा कि तुम सब खड़े होकर आँखें बंद करो। कुछ देर अल्लाह का चिंतन करो। उसके पश्चात् चक्की चलाएंगे। चक्की आसानी से चलेंगी। सब बंदी खड़े होकर अल्लाह का चिंतन आँखें बंद करके करने लगे। परमेश्वर ने एक चक्की को डण्डा (सोटी) लगाया। सर्व चक्कियां चलने लगी। परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आँखें खोलो। सबने आँखें खोली तो अपने को बलख नगर से दूर जेल से बाहर जंगल में खड़े पाया। परमेश्वर ने कहा कि फिर से इस सुल्तान के राज्य की सीमा में मत आना। उसके पश्चात् राजा ने साधु-संतों को कैद में डालना बंद कर दिया था, परंतु डर के मारे कोई भी साधु-महात्मा उसके राज्य में नहीं आते थे। कबीर परमेश्वर जी भी यही चाहते थे कि ये नकली गुरु यहाँ न आऐं। कहीं राजा को भ्रमित करके मेरे से दूर न कर दें। इसलिए उनको इस विधि से दूर रखना था। कुछ समय उपरांत राजा सामान्य हो गया और ऐसो-आराम में खो गया।

लीला नं. 3 :- परमात्मा कबीर जी अपने गुण अनुसार फिर एक लीला करने आए। एक यात्री (मुसाफिर) का रूप बनाकर काख में कपड़ों की पोटली, ग्रामीण वेशभूषा में शाम के समय सुल्तान के निवास में आए। सुल्तान घर के द्वार पर आँगन में कुर्सी पर बैठा था। राजा ने पूछा कि आप यहाँ किसलिए आए हो? परमात्मा कबीर जी ने कहा कि मैं एक यात्री हूँ। रात्रि में आपकी धर्मशाला (सराय) में रूकना है। एक रात का भाड़ा (किरवाया) बता, कितना लेगा। अब्राहिम अधम सुल्तान हँसा और कहा कि हे भोले मुसाफिर, यह सराय नहीं है। यह तो मेरा महल है। मैं नगरी का राजा हूँ। परमात्मा बन्दी छोड़ दया के सागर ने प्रश्न किया आपसे पहले इस महल में कौन रहता था? सुल्तान अब्राहिम अधम ने उत्तर दिया कि मेरे बाप-दादा आदि रहते थे। प्रश्न प्रभु का:- वे कहाँ हैं? मैं उन्हें देखना चाहता हूँ। उत्तर सुल्तान का:- वे तो अल्लाह को प्यारे हुए। परमात्मा ने प्रश्न किया कि आप कितने दिन इस महल में रहोगे। उत्तर के स्थान पर सुल्तान ने चिंतन किया और कहा कि मुझे भी मरना है। परमेश्वर ने कहा कि हे भोले प्राणी! यह सराय (धर्मशाला) नहीं तो क्या है?

तेरे बाप–दादा पड़ पीढ़ी। वे बसे इसी सराय में गीद्यी।।
ऐसे ही तू चल जाई। तातें हम महल सराय बताई।।

अब तू तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढ़ने को सूली।।

इतना कहकर परमात्मा गुप्त हो गए। सुल्तानी को मूर्छा आ गई। बहुत देर में होश में आया। अन्य मौलवी बुलाया। उसने बांयी बाजु पर ताबीज बाँधकर झाड़फूँक की, कहा कि अब कुछ नहीं होगा। चला गया।

लीला नं. 4 :- कुछ दिन बाद राजा सामान्य होकर फिर मौज-मस्ती करने लगा। दिन के समय राजा अब्राहिम अपने नौलखा (जिसमें नौ लाख फलदार पेड़ भिन्न-भिन्न प्रकार के लगाए जाते थे, उसको नौलखा बाग कहते थे।) बाग में सोया करता था। उसके बिस्तर को नौकरानियाँ बिछाया करती थी। फूलों के गुलदस्ते चारों ओर रखा करती थी। नौकरानियों की पोषाक रानियों से भिन्न होती थी। सब बांदियों की पोषाक एक जैसी होती थी। दीन दयाल कबीर जी ने उस अपनी प्यारी आत्मा सम्मन के जीव को काल जाल से निकालने के लिए क्या-क्या उपाय करने पड़ रहे हैं। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने नौकरानी का वेश बनाया। स्त्री रूप धारण किया। बाग में राजा का बिस्तर (सेज) बिछाया। फूलों के गुलदस्ते अत्यंत सुन्दर तरीके से लगाए और स्वयं उस सेज पर लेट गए। राजा अब्राहिम आया तो देखा, एक बांदी (खवासी) मेरी सेज पर सो रही है। इसको मेरा जरा-सा भी भय नहीं है। सुल्तान ने उसी समय कोड़ा उठाकर लेटे हुए परमेश्वर की कमर पर तीन बार मारा। तीन निशान कमर पर बन गए, खाल उतर गई। बांदी वेश में परमेश्वर ने पलंग से नीचे उतरकर एक बार रोने का अभिनय किया और फिर जोर-जोर से हँसने लगे। दासी को इतनी चोट लगने के पश्चात् भी हँसते देखकर अब्राहिम आश्चर्य में पड़ गया। वह विचार कर रहा था कि बांदी को तो बेहोश हो जाना चाहिए था या मर जाना चाहिए था। राजा ने दासी वेश धारी परमात्मा का हाथ पकड़ा और पूछा कि हँस किसलिए रही है? परमात्मा ने कहा कि मैं इस बिस्तर पर एक घड़ी (22 मिनट) लेटी हूँ, विश्राम किया है। एक घड़ी के विश्राम का दण्ड मुझे तीन कोड़े मिला है। मेरे शरीर का चाम भी उतर गया है। मैं इसलिए हँस रही हूँ कि जो इस गंदी सेज पर दिन-रात सोता है, उसका क्या हाल होगा? मुझे तेरे ऊपर तरस आ रहा है भोले प्राणी!

मैं एक घड़ी सेज पर सोई। ताते मेरा यह हाल होई।। जो सोवै दिवस और राता। उनका क्या हाल विधाता।।
गैब भये ख्वासा। सुल्तानी भये उदासा।। यह कौन छलावा भाई। याका भेद समझ ना आई।।

यह दृश्य देखकर सुल्तान अधम अचेत हो गया। उठा तब सोचा कि यह क्या हो रहा है? मैं समझ नहीं पा रहा हूँ।

लीला नं. 5 :- कुछ समय के पश्चात् मन्त्रियों-रानियों ने कहा कि राजा को शिकार करने ले जाओ। कई दिनों तक जंगल में रहो। इनके मन की चिंता कम हो जाएगी। ऐसा ही किया गया। पहले दिन ही दोपहर तक कोई जानवर नहीं मिला। राजा को यह सब अच्छा नहीं लगा। जंगल में तो मृगों के झुण्ड के झुण्ड चलते हैं। आज एक हिरण भी नहीं आया है। अचानक एक हिरण दिखाई दिया। राजा ने कहा कि यह हिरण बचकर नहीं जाना चाहिए। जिसके पास से निकल गया, उसकी खैर नहीं। देखते-देखते हिरण राजा के घोड़े के नीचे से निकलकर जंगल की ओर दौड़ लिया। राजा ने शर्म के मारे घोड़ा पीछे-पीछे

दौड़ाया। दूर जाकर हिरण जंगल में छिप गया। राजा तथा घोड़े को बहुत प्यास लगी थी। जान जाने वाली थी। अल्लाह से जीवन रक्षार्थ जल की याचना की। वापिस अपने पड़ाव की ओर चला। पड़ाव एक घण्टा दूर था। वहाँ तक जीवित बचना कठिन था। कुछ दूर चलकर दाऐं-बायें देखा तो एक जिन्दा फकीर बैठा दिखाई दिया। पास में स्वच्छ जल का छोटा जलाशय था। उसके चारों ओर फलदार वृक्ष थे। मधुर फल लगे थे। राजा को जीवन की किरण दिखाई दी। जल पीया, कुछ फल खाए। घोड़े को पानी पिलाया। वृक्ष से बाँध दिया। जिन्दा बाबा की ओर देखा तो उनके पास तीन सुंदर कुत्ते बँधे थे। एक कुत्ते बाँधने की सांकल (चैन=लोहे की बेल) साथ में रखी थी। सुल्तान ने फकीर को सलाम वालेकम किया। फकीर ने भी उत्तर में वालेकम सलाम बोला। राजा ने कहा, हे फकीर जी! आप तीन कुत्तों का क्या करोगे? इनमें से दो मुझे दे दो। फकीर जी ने कहा, ये कुत्ते मैं किसी को नहीं दे सकता। इनको मैंने पाठ पढ़ाना है। ये तीनों बलख शहर के राजा रहे हैं। मैं इनको समझाता था कि तुम अल्लाह को याद किया करो। इस संसार में सदा नहीं रहोगे। मरकर कुत्ते का जीवन प्राप्त करोगे। अब तुम नान पुलाव-काजू-किशमिश, मनुखा दाख, खीर, हलवा, फल खा रहे हो। यह आपके पूर्व जन्मों के पुण्यों तथा भक्ति का फल मिला है। यदि इस मानव जीवन में भक्ति नहीं करोगे तो कुत्ते आदि के प्राणियों के जीवन में कष्ट उठाओगे। खाने को यह अच्छा भोजन नहीं मिलेगा। झूठे टुकड़े खाया करोगे। टट्टी खाया करोगे, गंदा पानी नाली का पीया करोगे। जब राजा थे, तब इन्होंने मेरी बातों पर बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। ये सोचते थे कि यह फकीर मूर्ख है। राज्य को कौन संभालेगा? रानियों का क्या होगा? अब ये तीनों कुत्ते बने हैं। देखो! मैंने काजू-बादाम, किशमिश मिलाकर बनाया हलवा-खीर इनके सामने रखा है। इनको खाने नहीं देता हूँ। दिखाता हूँ। जब ये खाने की कोशिश करते हैं तो मैं इनको पीटता हूँ। यह कहकर परमेश्वर जी ने जो एक लोहे की बेल खाली रखी थी। उठाकर कुत्तों को मारना शुरू किया। कुत्ते चिल्लाने लगे। परमेश्वर बोले कि खालो न हलवा खिलाऊँ तुमको। झूठा-सूखा टुकड़ा डालूंगा। ऐ घोड़े वाले भाई! यह जो खाली बेल रखी है, यह बताऊँ किसलिए है? जो बलख शहर का राजा अब्राहिम अधम है। वह भी संसार तथा राज्य की चकाचौंध में अँधा होकर अल्लाह को भूल गया है। अब उसको याद नहीं कि मरकर कुत्ता भी बनूंगा। उसको बहुत बार समझाया है कि भक्ति करले, इन महल रूपी सराय में सदा नहीं रहेगा, परंतु उसको खुदा का कोई खौफ नहीं है। वह तो खुद खुदा बनकर निर्दोष फकीरों को दण्डित कर रहा है। मैं तो यहाँ दूर बैठा हूँ। इसलिए बचा हूँ। वह राजा मरेगा, भक्ति बिना कुत्ता बनेगा। उसको लाकर इस सांकल से बाँधूंगा। जिन्दा फकीर के मुख से ये वचन सुनकर कुत्तों के रूप में अपने पूर्वजों की दुर्दशा देखकर अब्राहिम काँपने लगा और बोला कि हे फकीर जी! बलख शहर का राजा मैं ही हूँ। मुझे क्षमा करो। यह कहकर फकीर के चरणों में गिर गया। कुछ देर पश्चात् उठा तो देखा, वहाँ पर न जिन्दा बाबा था, न जलाशय, न बाग था, न कुत्ते थे। सुल्तानी इसको स्वपन भी नहीं मान सकता था क्योंकि घोड़े के पैर अभी भी भीगे थे। कुछ फल तोड़कर रखे थे, वे भी सुरक्षित थे। सुल्तान को समझते देर नहीं लगी। घोड़े पर चढ़ा और पड़ाव पर आया। मुख से नहीं बोल पाया। हाथ

से संकेत किया कि सामान बाँधो और लौट चलो शहर को। कुछ मिनटों में काफिला बलख शहर को चल पड़ा।

लीला नं. 6 :- घर में एक कमरे में बैठकर रोने लगा। रानियों ने, मंत्रियों ने समझाना चाहा कि यह तो वैसे ही होता रहता है। मुख्य रानियाँ कह रही थी कि ऐसी बात तो स्त्रियों के साथ होती हैं, आप तो मर्द हैं। हिम्मत रखो। आप तो प्रजा के पालक हो। इतने में एक कुत्ता आया। उसके सिर में जख्म था। उसमें कीट (कीड़े) नोच रहे थे। कुत्ता बोला, हे अब्राहिम! मैं भी राजा था। जितने प्राणी शिकार में मारे तथा एक राजा के साथ युद्ध में जीव मारे, वे आज अपना बदला ले रहे हैं। मेरे सिर में कीड़े बनकर मुझे नोंच रहे हैं। मैं कुछ करने योग्य नहीं हूँ। यही दशा तेरी होगी। अपना भविष्य देख लो। तेरे पीछे-पीछे खुदा भटक रहा है। तू परिवार-राज्य मोह में अपना जीवन नष्ट कर रहा है। यह लीला भी स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने की थी। यह अंतिम झटका था अब्राहिम को दलदल से निकालने का। उसी रात्रि में मुख पर काली स्याही लेपकर एक अलफी के स्थान पर एक शॉल, फिर एक तकिया, एक लोटा, एक पतला गद्दा यानि बिछौना लेकर घर से कमद के रास्ते पीछे से उतरकर चल पड़ा। (कमद=एक मोटा रस्सा जिसको दो-दो फुट पर गाँठें लगा रखी होती थी जिसके द्वारा छत से आपत्ति के समय उतरते थे।)

लीला नं. 7 :- रास्ते में एक मालिन बाग के बाहर बेर बेच रही थी। सुल्तान को भूख लगी थी। सारी रात पैदल चला था। मालन से बेरों का भाव पूछा तो मालिन ने बताया कि एक आने के सेर। (एक रूपये में 16 आने होते थे। एक सेर यानि एक किलोग्राम) राजा के पास आना नहीं था। उसने जो जूती पहन रखी थी, उन दोनों की कीमत उस समय 2½ लाख रूपये थी। उनके ऊपर हीरे-पन्ने जड़े थे। राजा ने कहा कि मेरे पास एक आना या रूपया नहीं है। ये जूती हैं, इनकी कीमत अढ़ाई लाख रूपये है। ये दोनों ले लो, मुझे भूख लगी है, एक सेर बेर तोल दो। मालिन एक सेर बेर तोलकर अब्राहिम के शॉल के पल्ले में डालने लगी तो एक बेर नीचे गिर गया। उस बेर को उठाने के लिए मालिन ने भी हाथ बढ़ाया और अब्राहिम ने भी मालिन के हाथ से बेर छीनना चाहा। दोनों अपना बेर होने का दावा करने लगे। उसी समय परमेश्वर कबीर जी प्रकट हुए और कहने लगे, हे गंवार! यह तो मूर्ख है जिसको इतना भी विवेक नहीं कि एक बेर के पीछे उस व्यक्ति से उलझ रही है जिसने अढ़ाई लाख की जूती छोड़ दी। हे मूर्ख! ढ़ाई लाख की जूती छोड़ रहा है और एक पैसे के बेर के ऊपर झगड़ा कर रहा है। ये कैसा त्याग है तेरा? विवेक से काम ले। यह कहकर परमात्मा ने सुल्तान अधम के मुख पर थप्पड़ मारा और अंतर्ध्यान हो गए।

जीवन की यात्रा ऐसे भी हो सकती है :- सुल्तान आगे चला तो देखा कि एक निर्धन व्यक्ति एक डले के ऊपर सिर रखकर जमीन पर सो रहा है। उसी समय तकिया तथा बिछौना फैंक दिया। आगे देखा कि एक व्यक्ति नदी से हाथों से जल पी रहा था। लोटा भी फैंक दिया।

''रांडी-ढ़ांडी की कथा''

काल की भूल-भुलईया में फँसे व्यक्ति को समझाना :- रास्ते में वर्षा होने लगी। शीतल वायु बहने लगी। अब्राहिम ने एक झौंपड़ी देखी जो एक किसान की थी। उसके पास दो बीघा जमीन बिना सिंचाई की थी। एक बूढ़ी गाय जो चार-पाँच बार प्रसव कर चुकी थी। एक काणी स्त्री थी। शीतल वायु के कारण उत्पन्न ठण्ड से बचने के लिए अब्राहिम अधम सुल्तान उस झौंपड़ी के पीछे लेट गया। रात्रि में दोनों पति-पत्नी बातें कर रहे थे कि वर्षा अच्छी हो गई है। गाय का चारा पर्याप्त हो जाएगा। अपने खाने के लिए भी अच्छी फसल पकेगी। अपने ऐसे ठाठ हो जाएंगे, ऐसे तो बलख बुखारे के बादशाह के भी नहीं हैं। अब्राहिम अधम सुल्तान यह सब वार्ता सुनकर उनकी बुद्धि पर पत्थर गिरे जानकर उनको भविष्य के दुःखों से अवगत कराने के उद्देश्य से सूर्योदय तक वहीं पर ठहरा रहा। सुबह उठकर उनकी झौंपड़ी के द्वार पर खड़ा होकर प्रणाम किया। दोनों पति-पत्नी झौंपड़ी से बाहर आए। अब्राहिम उनको भक्ति करने तथा माया से मुख मोड़ने का ज्ञान देने लगा। कहा कि आपके पास तो एक गाय है, एक स्त्री है। दो बीघा जमीन है। आप इसी से चिपके बैठे हो। इसे बलख के बादशाह से भी अधिक ठाठ मान रहे हो। यह तो कुछ दिनों का मेला है। तुमको गुरू जी से उपदेश दिला देता हूँ, तुम्हारा जीवन धन्य हो जाएगा। मैं ही अब्राहिम अधम हूँ। मैं उस राज्य को छोड़कर परमात्मा की प्राप्ति के लिए चला हूँ। उन्होंने कहा कि हमें तो लगता नहीं कि आप बलख शहर के राजा हो। यदि ऐसा है तो तेरे जैसा मूर्ख व्यक्ति इस पृथ्वी पर नहीं है। आपकी शिक्षा की हमें आवश्यकता नहीं है। सुल्तान ने कहा कि :-

गरीब, रांडी (स्त्री) ढांडी (गाय) ना तजैं, ये नर कहिये काग।
बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।

इसके पश्चात् अब्राहिम अधम पृथ्वी का सुल्तान तो नहीं रहा, परंतु भक्ति का सुल्तान बन गया। भक्त राज बन गया। इसलिए उसको सुल्तान या प्यार में सुल्तानी नाम से प्रसिद्धि मिली। आगे की कथा में इसको केवल सुल्तान नाम से ही लिखा-कहा जाएगा। जैसे धर्मदास जी को धनी धर्मदास कहा जाने लगा था। वे भक्ति के धनी थे। वैसे संसारिक धन की भी कोई कमी नहीं थी। सुल्तान को परमेश्वर मिले और प्रथम मंत्र दिया और कहा कि बाद में तेरे को सतनाम, फिर सार शब्द दूंगा।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' में पृष्ठ 62 पर प्रमाण है :-

प्रथम पान प्रवाना लेई। पीछे सार शब्द तोई देई।।
तब सतगुरू ने अलख लखाया। करी परतीत परम पद पाया।।
सहज चौका कर दीन्हा पाना (नाम)। काल का बंधन तोड़ बगाना।।

विचार करें :- उस समय अब्राहिम के पास न तो आरती चौंका करने को धन था, न अन्य सुविधा थी। यह वास्तविक कबीर जी की दीक्षा की विधि है। जो आरती चौका, उसमें लाखों या हजारों का सामान, नारियल आदि का कोई प्रावधान नहीं है। वह तो बाद में कोई पाठ कराना चाहे तो कराए अन्यथा दीक्षा विधि केवल मंत्रित जल तथा मीठे पदार्थ

(मीश्री-चीनी, गुड़, बूरा, शक्कर) से दी जा सकती है। सत्य नाम तथा सार शब्द में पान (पेय पदार्थ) नहीं दिया जाता। केवल दीक्षा मंत्र बताए-समझाए जाते हैं। संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा प्रान्त) को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। उनको दिव्य दष्टि प्रदान की थी। उसी के आधार से संत गरीबदास जी ने बताया है कि :-

गरीब, हम सुल्तानी नानक तारे, दादू कूं उपदेश दिया। जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी माहें कबीर हुआ।।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार। सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

''अब्राहिम अधम सुल्तान के विषय में संत गरीबदास जी के विचार''

❖ **कबीर परमेश्वर जी ने अपने शिष्य गरीबदास जी को बताया कि :-**

अमर लोक से सतगुरू आए, रूप धरा करवांना।
ढूँढ़त ऊँट महल पर डोलैं, बूझत शाह ब्याना।।(टेक)
हम कारवान होय आये। महलौं पर ऊंट बताये।।(1)
बोलैं पादशाह सुलताना। तूं रहता कहां दिवाना।।(2)
दूजैं कासिद गवन किया रे। डेरा महल सराय लिया रे।।(3)
जब हम महल सराय बताई। सुलतानी कूं तांवर आई।।(4)
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। ये बसे सराय में गीदी।।(5)
ऐसैं ही तूं चलि जाई। यौं हम महल सराय बताई।।(6)
अरे कोई कासिद कूं गहि ल्यावै। इस पंडित खांनें द्यावै।।(7)
ऊठे पादशाह सुलताना। वहां कासिद गैब छिपाना।।(8)
तीजै बांदी होय सेज बिछाई। तन तीन कोरड़े खाई।।(9)
तब आया अनहद हांसा। सुलतानी गहे खवासा।।(10)
मैं एक घड़ी सेजां सोई। तातैं मेरा योह हवाल होई।।(11)
जो सोवैं दिवस रू राता। तिन का क्या हाल बिधाता।।(12)
तब गैबी भये खवासा। सुलतानी हुये उदासा।।(13)
यौह कौन छलावा भाई। याका कछु भेद न पाई।।(14)
चौथे जोगी भये हम जिन्दा। लीन्हें तीन कुत्ते गलि फंदा।।(15)
दीन्ही हम सांकल डारी। सुलतानी चले बाग बाड़ी।।(16)
बोले पातशाह सुलताना। कहां सैं आये जिन्द दिवाना।।(17)
ये तीन कुत्ते क्या कीजे। इनमें सैं दोय हम कूं दीजे।।(18)
अरे तेरे बाप दादा है भाई। इन बड़ बदफैल कमाई।।(19)
यहां लोह लंगर शीश लगाई। तब कुत्यौं धूम मचाई।।(20)
अरे तेरे बाप दादा पड़ पीढी। तूं समझै क्यूं नहीं गीदी।।(21)
अब तुम तख्त बैठकर भूली। तेरा मन चढने कूं शूली।।(22)
जोगी जिन्दा गैब भया रे। हम ना कछु भेद लह्या रे।।(23)
बोले पादशाह सुलताना। जहां खड़े अमीर दिवाना।।(24)

येह च्यार चरित्र बीते। हम ना कछु भेद न लीते।।(25)
वहां हम मार्‌या ज्ञान गिलोला। सुलतानी मुख नहीं बोला।।(26)
तब लगे ज्ञान के बानां। छाड़ी बेगम माल खजाना।।(27)
सुलतानी जोग लिया रे। सतगुरु उपदेश दिया रे।।(28)
छाड़्या ठारा लाख तुरा रे। जिसे लाग्या माल बुरा रे।।(29)
छाड़े गज गैंवर जल हौडा। अब भये बाट के रोड़ा।।(30)
संग सोलह सहंस सुहेली। एक सें एक अधिक नवेली।।(31)
गरीब, अठारह लाख तुरा जिन छोड़े, पद्यमनी सोलह सहंस।
एक पलक में त्याग गए, सो सतगुरू के हैं हंस।।(32)
रांडी–ढ़ांडी ना तजैं, ये नर कहिए काग।
बलख बुखारा त्याग दिया, थी कोई पिछली लाग।।(33)
छाड़े मीर खान दीवाना, अरबों खरब खजाना।।(34)
छाड़े हीरे हिरंबर लाला। सुलतानी मोटे ताला।।(35)
जिन लोक पर्गणा त्यागा। सुनि शब्द अनाहद लाग्या।।(36)
पगड़ी की कौपीन बनाई। शालौं की अलफी लाई।।(37)
शीश किया मुंह कारा। सुलतानी तज्या बुखारा।।(38)
गण गंधर्व इन्द्र लरजे। धन्य मात पिता जिन सिरजे।।(39)
भया सप्तपुरी पर शांका। सुलतानी मारग बांका।।(40)
जिन पांचौं पकड़ि पछाड़्या। इनका तो दे दिया बाड़ा।।(41)
सुनि शब्द अनाहद राता। जहां काल कर्म नहीं जाता।।(42)
नहीं कच्छ मच्छ कुरंभा। जहां धौल धरणि नहीं थंभा।।(43)
नहीं चंद्र सूर जहां तारा। नहीं धौल धरणि गैंनारा।।(44)
नहीं शेष महेश गणेशा। नहीं गौरा शारद भेषा।।(45)
जहां ब्रह्मा बिष्णु न बानी। नहीं नारद शारद जानी।।(46)
जहां नहीं रावण नहीं रामा। नहीं माया का बिश्रामा।।(47)
जहां परसुराम नहीं पर्चा। नहीं बलि बावन की चर्चा।।(48)
नहीं कंस कान्ह कर्तारा। नहीं गोपी ग्वाल पसारा।।(49)
यौंह आँवन जान बखेड़ा। यहाँ कौंन बसावै खेड़ा।।(50)
जहाँ नौ दशमा नहीं भाई। दूजे कूं ठाहर नाँही।।(51)
जहां नहीं आचार बिचारा। ना कोई शालिग पूजनहारा।।(52)
बेद कुराँन न पंडित काजी। जहाँ काल कर्म नहीं बाजी।।(53)
नहीं हिन्दू मुसलमाना। कुछ राम न दुवा सलामा।।(54)
जहाँ पाती पान न पूजा। कोई देव नहीं है दूजा।।(55)
जहाँ देवल धाम न देही। चीन्ह्यो क्यूं ना शब्द सनेही।।(56)
नहीं पिण्ड प्राण जहां श्वासा। नहीं मेर कुमेर कैलासा।।(57)

नहीं सत्ययुग द्वापर त्रेता। कहूं कलियुग कारण केता।।(58)
यौह तो अंजन ज्ञान सफा रे। देखो दीदार नफा रे।।(59)
निःबीज सत निरंजन लोई। जल थल में रमता सोई।।(60)
निर्भय निरगुण बीना। सोई शब्दअतीतं चीन्हा।।(61)
अडोल अबोल अनाथा। नहीं देख्या आवत जाता।।(62)
हैं अगम अनाहद सिंधा। जोगी निरगुण निरबंधा।।(63)
कछु वार पार नहीं थाहं। सतगुरु सब शाहनपति शाहं।।(64)
उलटि पंथ खोज है मीना। सतगुरु कबीर भेद कहैं बीना।।(65)
यौह सिंधु अथाह अनूपं। कछु ना छाया ना धूपं।।(66)
जहां गगन धूनि दरबानी। जहां बाजैं सत्य सहिदानी।।(67)
सुलतान अधम जहां राता। तहां नहीं पांच तत का गाता।।(68)
जहां निरगुण नूर दिवाला। कछु न घर है खाला।।(69)
शीश चढाय पग धरिया। यौह सुलतानी सौदा करिया।।(70)
सतगुरु जिन्दा जोग दिया रे। सुलतानी अपन किया रे।।(71)
कहैं दास गरीब गुरु पूरा। सतगुरु मिले कबीरा।।(72)

''अब्राहिम अधम सुल्तान की परीक्षा''

सुल्तान अधम ने एक साधु की कुटिया देखी जो कई वर्षों से उस स्थान पर साधना कर रहा था। अब्राहिम उसके पास गया। वह साधक बोला कि यहाँ पर मत रहना, यहाँ कोई खाना-पानी नहीं है। आप कहीं और जाइये। सुल्तान अब्राहिम बोला कि मैं तेरा मेहमान बनकर नहीं आया। मैं जिसका मेहमान (परमात्मा का मेहमान) हूँ, वह मेरे रिजक (खाने) की व्यवस्था करेगा। इन्सान अपनी किस्मत साथ लेकर आता है। कोई किसी का नहीं खाता है। हे बेइमान! तू तो अच्छा नागरिक भी नहीं है। तू चाहता है परमात्मा से मिलना। नीयत ठीक नहीं है तो इंसान परमार्थ नहीं कर सकता। बिन परमार्थ परमात्मा नहीं मिलता। जिसने जीवन दिया है, वह रोटी भी देगा। अब्राहिम थोड़ी दूरी पर जाकर बैठ गया। शाम को आसमान से एक थाल उतरा जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की सब्जी, हलवा, खीर, रोटी तथा जल का लोटा था। थाली के ऊपर थाल परोस (कपड़े का रूमाल) ढ़का था। अब्राहिम ने थाली से कपड़ा उठाया और पुराने साधक को दिखाया। उस पुराने साधक के पास आसमान से दो रोटी वे भी जौ के आटे की और एक लोटा पानी आए। यह देखकर पुराना साधक नाराज हो गया कि हे प्रभु! मैं तेरा भेजा हुआ भोजन नहीं खाऊँगा। आप तो भेदभाव करते हो। मुझे तो सूखी जौ की रोटी, अब्राहिम को अच्छा खाना पुलाव वाला भेजा है।

परमात्मा ने आकाशवाणी की कि हे भक्त! यह अब्राहिम एक धनी राजा था। इसके पास अरब-खरब खजाना था। इसकी 16 हजार रानियां थी, बच्चे थे। अमीर मंत्री तथा दीवान थे। नौकर-नौकरानियां थी। यह मेरे लिए ऐसे ठाठ छोड़कर आया है। इसको तो क्या न दे दूँ। तू अपनी औकात देख, तू एक घसियारा था। सारा दिन घास खोदता था। तब एक टका

मिलता था। सिर पर गट्ठे लेकर नित बोझ मरता था। न बीबी (स्त्री) थी, न माता थी, न कोई पिता तेरा सेठ था। तुझको मैं पकी-पकाई रोटियां भेजता हूँ। तू फिर भी नखरे करता है। यदि तू मेरी रजा में राजी नहीं है तो कहीं और जा बैठ। यदि भक्ति से विमुख हो गया तो तेरा घास खोदने का खुरपा और बाँधने की जाली, ये रखी जा खोद घास और खा। यदि (परमात्मा से) कुछ हासिल करना है तो मेरी रजा से बाहर कदम मत रखना। भक्त में यदि कुब्र (अभिमान) है तो वह परमात्मा से दूर है। यदि बंदगान (भगवान के भक्त) में इज्जत (आदर, सम्मान आधीनी) है तो वह हक्क (परमेश्वर) के करीब है।

सुल्तान अधम ने परमेश्वर से अर्ज की कि हे दाता! मैं मेहनत करके निर्वाह करूँगा। आपकी भक्ति भी करूँगा। आप यह भोजन न भेजो। रूखी-सूखी खाकर मैं आपके चरणों में बना रहना चाहता हूँ। यह भोजन आप भेज रहे हो। यह खाकर तो मन में दोष आएंगे, कोई गलती कर बैठूंगा। यह अर्ज वह पुराना भक्त भी सुन रहा था। उसकी गर्दन नीची हो गई। परमात्मा से अर्ज की, प्रभु! मेरी गलती को क्षमा करो। मैं आपकी रजा में प्रसन्न रहूँगा। उस दिन से अब्राहिम जंगल से लकड़ियां तोड़कर लाता, बाजार में बेचकर खाना ले जाता। आठ दिन तक उसी को खाता और भक्ति करता था।

''भक्त हो नीयत का पूरा''

कुछ वर्ष पश्चात् अब्राहिम भ्रमण पर निकला। एक सेठ का बाग था। उसको नौकर की आवश्यकता थी। सुल्तान को पकड़कर बाग की रखवाली के लिए रख दिया। एक वर्ष पश्चात् सेठ बाग में आया। उसने अब्राहिम से अनार लाने को कहा। अनार लाकर सेठ को दे दिए। अनार खट्टे थे। सेठ ने कहा कि तेरे को एक वर्ष में यह भी पता नहीं चला कि मीठे अनार कैसे होते हैं? सुल्तान ने कहा कि सेठ जी! आपने मेरे को बाग की सुरक्षा के लिए रखा है, बाग उजाड़ने के लिए नहीं। यदि रक्षक ही भक्षक हो जाएगा तो बात कैसे बनेगी? मैंने कभी कोई फल खाया ही नहीं तो खट्टे-मीठे का ज्ञान कैसे हो सकता है? सेठ ने अन्य नौकरों से पूछा तो नौकरों ने बताया कि यह नौकर तो जो रोटी मिलती है, बस वही खाकर बाग के चारों ओर कुछ बड़बड़ करता घूमता रहता है। हमने गुप्त रूप से भी देखा है। इसने कभी कोई फल नहीं तोड़कर खाया है, न नीचे पड़ा उठाया है। किसी नौकर ने बताया कि यह बलख शहर का राजा है। मैंने 10 वर्ष पहले इसको जंगल में शिकार के समय देखा था। जब मैंने इससे पूछा कि लगता है आप बलख शहर के सुल्तान अब्राहिम अधम हो। पहले तो मना किया, फिर मैंने बताया कि आपको शिकार के समय जंगल में देखा था। आपकी सेना में मेरा साला याकूब बड़ा अधिकारी है। उसने बताया कि राजा ने सन्यास ले लिया है। उसका बेटा गद्दी पर बैठा है। तब इसने कहा कि किसी को मत बताना। सेठ ने चरणों में गिरकर क्षमा याचना की और ढ़ेर सारा धन देकर कहा कि आप यह धन लेकर अपना निर्वाह करो, भक्ति भी करो। मेरे घर रहो या बाग में महल बनवा दूँ, यहाँ रहकर भक्ति करो। सुल्तान धन्यवाद कहकर चल पड़ा।

''दास की परिभाषा''

एक समय सुल्तान एक संत के आश्रम में गया। वहाँ कुछ दिन संत जी के विशेष आग्रह से रूका । संत का नाम हुकम दास था। बारह शिष्य उनके साथ आश्रम में रहते थे। सबके नाम के पीछे दास लगा था। फकीर दास, आनन्द दास, कर्म दास, धर्मदास। उनका व्यवहार दास वाला नहीं था। उनके गुरू एक को सेवा के लिए कहते तो वह कहता कि धर्मदास की बारी है, उसको कहो, धर्मदास कहता कि आनन्द दास का नम्बर है। उनका व्यवहार देखकर सुल्तानी ने कहा किः-

दासा भाव नेड़े नहीं, नाम धराया दास। पानी के पीए बिन, कैसे मिट है प्यास।।

सुल्तानी ने उन शिष्यों को समझाया कि मैं जब राजा था, तब एक दास मोल लाया था। मैंने उससे पूछा कि तू क्या खाना पसंद करता है। दास ने उत्तर दिया कि दास को जो खाना मालिक देता है, वही उसकी पसंद होती है। आपकी क्या इच्छा होती है? आप क्या कार्य करना पसंद करते हो? जिस कार्य की मालिक आज्ञा देता है, वही मेरी पसंद है। आप क्या पहनते हो? मालिक के दिए फटे-पुराने कपड़े ठीक करके पहनता हूँ। उसको मैंने मुक्त कर दिया। धन भी दिया। उसी की बातों को याद करके मैं अपनी गुरू की आज्ञा का पालन करता हूँ। अपनी मर्जी कभी नहीं चलाता। जो प्रभु देता है, उसकी आज्ञा जानकर खाता हूँ। मैं अपने को दास मानकर सेवा करता हूँ। परमात्मा को प्रसन्न करने के लिए गुरूदेव को प्रसन्न करना अनिवार्य होता है। उसके पश्चात् वे सर्व शिष्य दास भाव से रहकर अपने गुरू जी की आज्ञा का पालन करने लगे तथा आपस में अच्छा व्यवहार करने लगे। अपना जीवन सफल किया।

''सुल्तानी को सार शब्द कैसे प्राप्त हुआ?''

परमेश्वर कबीर जी एक आश्रम बनाकर रहने लगे। नाम जिन्दा बाबा से प्रसिद्ध थे। सुल्तानी को प्रथम मंत्र दीक्षा के कुछ महीनों के पश्चात् सतनाम की (दो अक्षर के मंत्र की) दीक्षा दी जिसमें एक ''ओम्'' मंत्र है तथा दूसरा उपदेश के समय बताया जाता है। दर्शन के लिए सुल्तान अनेकों बार आता रहा। सत्यनाम के पश्चात् योग्य होने पर सार शब्द साधक को दीक्षा में दिया जाता है। एक वर्ष के पश्चात् सुल्तान अधम ने अपने गुरू की कुटिया में जाकर सारनाम की दीक्षा के लिए विनम्र प्रार्थना की तो परमेश्वर जी ने कहा कि एक वर्ष के पश्चात् ठीक इसी दिन आना, सारनाम दूंगा। दर्शनार्थ कभी-भी आ सकते हो। सुल्तान अब्राहिम अधम ठीक उसी दिन सारनाम लेने के लिए गुरू जी की कुटिया में गया तो गुरू जी ने कहा कि ठीक एक वर्ष पश्चात् इसी दिन आना, सारनाम दूँगा। ऐसे करते-करते ग्यारह (11) वर्ष निकाल दिए। बीच-बीच में भी सतगुरू के दर्शन करने आता था, परंतु सारनाम के लिए निश्चित दिन ही आना होता था। जब ग्यारहवें वर्ष सुल्तानी सारशब्द के दीक्षार्थ आ रहा था तो एक मकान के साथ से रास्ता था। उस मकान की मालकिन ने छत से कूड़ा बुहारकर गली में डाला तो गलती से भक्त के ऊपर गिर गया। सुल्तान इब्राहिम के ऊपर कूड़ा गिरा तो वह ऊँची आवाज में बोला, क्या तुझे दिखाई नहीं

देता? गली में इंसान भी आते-जाते हैं? यदि मैं आज राज्य त्यागकर न आया होता तो तेरी देही का चॉम उधेड़ देता । उस बहन ने क्षमा याचना की और कहा, हे भाई! मेरी गलती है, मुझे पहले गली में देखना चाहिए था। आगे से ध्यान रखूँगी। वह मकान वाली बहन भी जिन्दा बाबा की भक्तमति थी। उसने जब इब्राहिम को आश्रम में देखा तो गुरू जी से पूछा, हे गुरूदेव! वह जो भक्त बैठा है एकान्त में, क्या वह कभी राजा था? जिन्दा बाबा ने पूछा, क्या बात है बेटी? यहाँ तो राजा और रंक में कोई भेद नहीं है। आपने यह प्रश्न किस कारण से किया? यह पहले बलख शहर का राजा था। इसको मैंने ज्ञान समझाया तो इसने राज्य त्याग दिया और मेहनत करके लकड़ियां बेचकर निर्वाह करता है, भक्ति भी करता है। उस बहन ने बताया कि मेरे से गलती से सूखा कूड़ा छत से फैंकते समय इसके ऊपर गिर गया तो यह बहुत क्रोधित हुआ और बोला कि यदि मैंने राज्य न त्यागा होता तो तेरी खाल उतार देता। सत्संग के पश्चात् सार शब्द लेने वालों को बुलाया गया। जब सुल्तान अब्राहिम की बारी आई तो गुरू जी ने कहा कि अभी तो आप राजा हो, सार शब्द तो बच्चा! दास को मिलता है जिसने शरीर को मिट्टी मान लिया है। सुल्तानी ने कहा, गुरूदेव! राज्य को त्यागे तो वर्षों हो चुके हैं। गुरू महाराज जी ने कहा, मुझसे कुछ नहीं छुपा है। तूने जैसा राज्य त्यागा है। राज भाव नहीं त्यागा है। आप एक वर्ष के पश्चात् इसी दिन सारनाम के लिए आना। एक वर्ष के पश्चात् फिर सुल्तानी आ रहा था। उसी मकान के साथ से आना था। गुरू जी ने उसी शिष्या से कहा कि कल वह राजा सारशब्द लेने आएगा। तेरे मकान के पास से रास्ता है, और कोई रास्ता कुटिया में आने का नहीं है। अबकी बार उसके ऊपर पानी में गोबर-राख घोलकर बाल्टी भरकर उसके ऊपर डालना। फिर उसकी क्या प्रतिक्रिया रहे, वह मुझे बताना। उस बहन ने ऐसा ही किया। बहन ने साथ-साथ यह भी कहा कि हे भाई! धोखे से गिर गया। मैं धोकर साफ कर दूँगी। आप यहाँ तालाब में स्नान कर लो। सुल्तान ने कहा कि बहन मिट्टी के ऊपर मिट्टी ही तो गिरी है, कोई बात नहीं, मैं स्नान कर लेता हूँ, कपड़े धो लेता हूँ। उस शिष्या ने गुरूदेव को सुल्तानी की प्रक्रिया बताई, तब उसको सारशब्द दिया और कहा, बेटा! आज तू दास बना है। अब तेरा मोक्ष निश्चित है।

इसलिए भक्तजनों को इस कथा से शिक्षा लेनी चाहिए। सारशब्द प्राप्ति के लिए शीघ्रता न करें। अपने अंदर सब विकारों को सामान्य करें। विवेक से काम लें, मोक्ष निश्चित है।

''राजा बड़ा है या भक्त राज''

एक बार सुल्तान अधम अपने बलख शहर के बाहर एक तालाब पर जाकर बैठ गया। उसका पुत्र राजा था। पता चला तो हाथी पर चढ़कर बैंड-बाजे के साथ तालाब पर पहुँचा। पिता जी से घर चलने को कहा। सुल्तान ने साफ शब्दों में मना कर दिया। लड़के ने कहा कि आपने यह क्या हुलिया बना रखा है? आप यहाँ ठाठ से रहो। आप भिखारी बनकर कष्ट उठा रहे हो। मेरी आज्ञा से आज सब कुछ हो जाता है। सुल्तान ने कहा कि जो परमात्मा कर सकता है, वह राजा नहीं कर सकता। लड़के ने कहा कि आप आज्ञा दो, वही कर दूँगा। आपको हमारे पास रहना होगा। सुल्तानी ने कहा कि ठीक है, स्वीकार है। मैं हाथ से कपड़े

सीने की एक सूई इस तालाब में डालता हूँ। यह सूई जल से निकालकर मेरे को लौटा दे। राजा ने सिपाहियों, गोताखोरों तथा जाल डालने वालों को बुलाया। सब प्रयत्न किया, परंतु व्यर्थ। लड़के ने कहा, पिताजी! एक सूई के बदले हजार सूईयाँ ला देता हूँ। क्या आपका अल्लाह यह सूई निकाल देगा? तब सुल्तान ने कहा कि हे पुत्र! यदि मेरा अल्लाह यही सूई निकाल देगा तो क्या तुम भक्ति करोगे? क्या सन्यास ले लोगे? लड़के ने कहा कि आप पहले यह सूई अपने प्रभु से निकलवाओ, फिर सोचूँगा। इब्राहिम ने कहा कि परमात्मा की बेटी मछलियों! मुझ दास की एक सूई आपके तालाब में गिर गई है। मेरी सूई निकालकर मुझे देने की कृपा करें। कुछ ही क्षणों के उपरांत एक मछली मुख में सूई लिए इब्राहिम के पास किनारे पर आई। इब्राहिम ने सूई पकड़ ली और मछलियों का हाथ जोड़कर धन्यवाद किया। तब सुल्तानी ने कहा, बेटा! देख परमात्मा जो कर सकता है, वह मानव चाहे राजा भी क्यों न हो, नहीं कर सकता। अब क्या भक्ति करेगा? पुत्र ने कहा कि भगवान ने आपको सूई ही तो दी है, मैं तो आपको हीरे-मोती दे सकता हूँ। भक्ति तो वृद्धावस्था में करूँगा। भक्त इब्राहिम उठकर चल पड़ा। अपनी गुफा में चला गया।

''विकार जैसे काम, मोह, क्रोध, वासना नष्ट नहीं होते, शांत हो जाते हैं''

विकार मरे ना जानियो, ज्यों भूभल में आग। जब करेल्लै धधकही, सतगुरू शरणा लाग।।

एक समय इब्राहिम सुल्तान मक्का में गया हुआ था। उनका उद्देश्य था कि भ्रमित मुसलमान श्रद्धालु मक्का में हज के लिए या वैसे भी आते रहते हैं। उनको समझाना था। उनको समझाने के लिए वहाँ कुछ दिन रहे। कुछ शिष्य भी बने। किसी हज यात्री ने बलख शहर में जाकर बताया कि इब्राहिम मक्का में रहता है। छोटे लड़के ने पिता जी के दर्शन की जिद की तो उसकी माता-लड़का तथा नगर के कुछ स्त्री-पुरूष भी साथ चले और मक्का में जाकर इब्राहिम से मिले। इब्राहिम अपने शिष्यों को शिक्षा देता था कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले लड़के तथा परस्त्री की ओर अधिक देर नहीं देखना चाहिए। ऐसा करने से उनके प्रति मोह बन जााता है। अपने लड़के को देखकर इब्राहिम से रहा नहीं गया, एकटक बच्चे को देखता रहा। लड़के की आयु लगभग 13 वर्ष थी। शिष्यों ने कहा कि गुरूदेव आप हमें तो शिक्षा देते हो कि बिना दाढ़ी-मूछ वाले बच्चे की ओर ज्यादा देर नहीं देखना चाहिए, स्वयं देख रहे हो। इब्राहिम ने कहा, पता नहीं मेरा आकर्षण इसकी ओर क्यों हो रहा है? उसी समय एक वृद्ध ने कहा, राजा जी! यह आपकी रानी है और यह आपका पुत्र है। आप राज्य त्यागकर आए, उस समय यह गर्भ में था। आपसे मिलने आए हैं। उसी समय लड़का पिता के चरणों को छूकर गोदी में बैठ गया। इब्राहिम की आँखों में ममता के आँसूं छलक आए। परमेश्वर की ओर से आकाशवाणी हुई कि हे सुल्तानी! तेरे को मेरे से प्रेम नहीं रहा। अपने परिवार से प्रेम है। अपने घर चला जा। उसी समय इब्राहिम को झटका लगा तथा आँखें बंद करके प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मेरे वश से बाहर की बात है, या तो मेरी मृत्यु कर दो या इस लड़के की। उसी समय लड़के की मृत्यु हो गई। इब्राहिम उठकर चल पड़ा।

बलख से आए व्यक्ति लड़के के अंतिम संस्कार करने की तैयारी करने लगे। परमात्मा

पाने के लिए भक्त को प्रत्येक कसौटी पर खरा उतरना पड़ता है। तब सफलता मिलती है। उस लड़के के जीव को परमात्मा ने तुरंत मानव जीवन दिया और अपने भक्त के घर में लड़के को उत्पन्न किया। बचपन से ही उस आत्मा को परमात्मा का मार्ग मिला। एक बार सब भक्त बाबा जिन्दा के आश्रम में सत्संग में इकट्ठे हुए। वह लड़का उस समय 4 वर्ष की आयु का था। परमेश्वर की कृपा से उसका बिस्तर तथा इब्राहिम का बिस्तर साथ-साथ लगा था। इब्राहिम को देखकर लड़का बोला, पिताजी! आप मुझे मक्का में क्यों छोड़ आए थे? मैं अब भक्त के घर जन्मा हूँ। देख न अल्लाह ने मुझे आप से फिर मिला दिया। यह बात गुरू जी जिन्दा बाबा (परमेश्वर कबीर जी) के पास गई तो जिन्दा बाबा ने बताया कि यह इब्राहिम का लड़का है जो मक्का में मर गया था। अब परमात्मा ने इस जीव को भक्त के घर जन्म दिया है। इब्राहिम को लड़के के मरने का दुःख बहुत था, परंतु किसी को साझा नहीं करता था। उस दिन उसने कहा, कृपासागर! तू अन्तर्यामी है। आज मेरा कलेजा (दिल) हल्का हो गया। मेरे मन में रह-रहकर आ रहा था कि परमात्मा ने यह क्या किया? इसकी माँ घर पर किस मुँह से जाएगी? आज मेरी आत्मा पूर्ण रूप से शांत है। जिन्दा बाबा ने उस लड़की पूर्व वाली माता यानि इब्राहिम की पत्नी को संदेश भिजवाया कि वह आश्रम आए। लड़के तथा उसके नए माता-पिता तथा इब्राहिम को भी बुलाया। उस लड़के को पहले वाली माता से मिलाया। लड़का देखते ही बोला, अम्मा जान! आप मेरे को मक्का छोड़कर चली गई। वहाँ पर अल्लाह आए, देखो ये बैठे (जिन्दा बाबा की ओर हाथ करके बोला) और मेरे को साथ लेकर इनके घर छोड़ गए। मैं इस माई के पेट में चला गया। फिर मेरा जन्म हुआ। अब मैं दीक्षा ले चुका हूँ। प्रथम मंत्र का जाप करता हूँ। हे माता जी! आप भी गुरू जी से दीक्षा ले लो, कल्याण हो जाएगा। इब्राहिम की पत्नी ने दीक्षा ली और कहा कि इस लड़के को मेरे साथ भेज दो। परमेश्वर कबीर जी (जिन्दा बाबा) ने कहा कि यदि उस नरक में (राज की चकाचौंध में) रखना होता तो इसकी मृत्यु क्यों होती? अब तो आप आश्रम आया करो और महीने में सत्संग में बच्चे के दर्शन कर जाया करो। इब्राहिम को उस लड़के में अपनापन नहीं लगा क्योंकि वह किसी अन्य के शरीर से जन्मा था। परंतु उसके भ्रम, मन की मूर्खता का नाश हो गया। जो वह मन-मन में कहा करता कि अल्लाह ने यह नहीं करना चाहिए था। अब उसे पता चला कि परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। भले ही उस समय अपने को अच्छा न लगे। अल्लाह के सब जीव हैं, वह सबके हित की सोचता है। हम अपने-अपने हित की सोचते हैं। रानी को भी उस लड़के में वह भाव नहीं था, परंतु आत्मा वही थी। इसलिए माता वाली ममता दिल में जागृत थी। इसलिए उसको देखकर शांति मिलती थी। यह कारण बनाकर परमेश्वर जी ने उस रानी का भी उद्धार किया और बालक का भी।

''भक्त तरवर (वृक्ष) जैसे स्वभाव का होता है''

एक बार एक समुद्री जहाज में एक सेठ व्यापार के लिए जा रहा था। उसके साथ रास्ते का खाना बनाने वाले तथा मजाक-मस्करा करके दिल बहलाने वालों की पार्टी भी थी। लम्बा सफर था। महीना भर लगना था। मजाकिया व्यक्तियों को एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता

थी जिसके ऊपर सब मजाक की नकल झाड़ सकें। खोज करने पर इब्राहिम को पाया और पकड़कर ले गए। सोचा कि इस भिखारी को रोटियाँ चाहिए, मिल जाएंगी। समुद्र में दूर जाने के पश्चात् सेठ के लिए मनोरंजन का प्रोग्राम शुरू हुआ। इब्राहिम के ऊपर मजाक झाड़ रहे थे। कह रहे थे कि एक इस (इब्राहिम) जैसा मूर्ख था। वह वंक्ष की उसी डाली पर बैठा था जिसे काट रहा था। गिरकर मर गया। हा-हा करके हँसते थे। इस प्रकार बहुत देर तक ऐसी अभद्र टिप्पणियाँ करते रहे।

इब्राहिम बहुत दुःखी हुआ। सोचा कि महीनों का दुःख हो गया। न भक्ति कर पाऊँगा, न चैन से रह पाऊँगा। उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे भक्त इब्राहिम! यदि तू कहे तो इन मूर्खों को मार दूँ। जहाज को डुबो दूँ, तुझे बचा लूँ। ये तेरे को तंग करते हैं। यह आकाशवाणी सुनकर जहाज के सब व्यक्ति भयभीत हो गए। इब्राहिम ने कहा, हे अल्लाह! यह कलंक मेरे माथे पर न लगा। ये बेखबर हैं। इतने व्यक्तियों के मारने के स्थान पर मुझे ही मार दे या इनको सद्बुद्धि दे दो, ये आपकी भक्ति करके अपने जीव का कल्याण कराऐं। जहाज मालिक सहित सब यात्रियों ने इब्राहिम से क्षमा याचना की तथा परमात्मा का ज्ञान सुना। आदर के साथ अपने साथ रखा। भक्ति करने के लिए जहाज में भिन्न स्थान दे दिया। इब्राहिम ने उन सबको सत्यज्ञान समझाकर आश्रम में लाकर गुरू जी से दीक्षा दिलाई।

इब्राहिम स्वयं दीक्षा दिया करता था। जब जिन्दा बाबा यानि परमेश्वर कबीर जी को किसी ने इब्राहिम की उपस्थिति में बताया कि हे गुरूदेव! इब्राहिम दीक्षा देता है। तब परमेश्वर जी ने बताया कि हे भक्त! आप गलती कर रहे हो। आप अधिकारी नहीं हो। उस दिन के पश्चात् इब्राहिम ने दीक्षा देनी बंद की तथा अपने सब शिष्यों को पुनः गुरू जी से उपदेश दिलाया। क्षमा याचना की, स्वयं भी अपना नाम शुद्ध करवाया। भविष्य में एसी गलती नहीं की।

कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।

{पारख के अंग का सरलार्थ चल रहा है।}

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 37-41 :

गरीब, नौ लख नानक नाद में, दस लख गोरख तीर। लाख दत्त संगी सदा, चरणौं चरचि कबीर।।37।।
गरीब, नौलख नानक नाद में, दस लख गोरख पास। अनंत संत पद में मिले, कोटि तिरे रैदास।।38।।
गरीब, रामानंदसे लक्षि गुरु, त्यारे शिष्य कै भाय। चेलौं की गिनती नहीं, पद में रहे समाय।।39।।
गरीब, खोजी खालिक सें मिले, ज्ञानी कै उपदेश। सतगुरु पीर कबीर हैं, सब काहू उपदेश।।40।।
गरीब, दुर्बासा और गरुड़ स्यौं, कीन्हा ज्ञान समोध। अरब रमायण मुख कही, बाल्मीक कूं सोध।।41।।

❖ सरलार्थ :- परमात्मा कबीर जी की शरण में आकर (नाद) वचन के शिष्य बनकर श्री नानक देव (सिख धर्म के प्रवर्तक) जैसे भक्त नौ लाख पार हो गए तथा श्री गोरखनाथ जैसे सिद्ध पुरूष दस लाख पार हो गए। श्री दत्तात्रे जैसे ऋषि एक लाख उनकी शरण में सदा उनकी महिमा की चर्चा करते रहते हैं। संत रविदास (रैदास) जैसी करोड़ों भक्त आत्मा पार हो गई कबीर जी के ज्ञान व साधना का आश्रय लेकर।(37-38)

❖ स्वामी रामानन्द काशी वाले जैसी लाखों आत्माऐं पार की। रामानन्द जी को गुरू

बनाकर पार किया और जो शिष्य बनाकर भवसागर से पार किए, उनकी तो गिनती ही नहीं की जा सकती।(39)

❖ परमात्मा कबीर जी ज्ञानी के नाम से प्रकट थे। तब एक खोजी यानि ज्योतिष करने वाला तथा गुम हुए पशु तथा अन्य चोरी हुए सामान को बताता था कि ऐसे गुम हुआ है। वहाँ रखा है। ऐसे व्यक्ति पूर्व जन्म की भक्ति की शक्ति से कुछ सत्य बता देते हैं। परंतु अपनी पूर्व जन्म की भक्ति नष्ट करके नरक में गिरते हैं। खोजी को सतगुरू कबीर जी ने पार किया। संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि विश्व में एकमात्र कबीर जी ही सतगुरू हैं या उनके ज्ञान को ठीक से समझा हुआ ही उनका कृपा पात्र सतगुरू है। यह सबको बता रहा हूँ। यह सबको उपदेश है।(40)

❖ परमात्मा कबीर जी त्रेतायुग में ऋषि मुनीन्द्र के नाम से प्रकट हुए थे। उस समय ऋषि दुर्वासा तथा श्री विष्णु जी का वाहन गरूड़ उनकी शरण में आए थे। दुर्वासा जी सिद्धियाँ युक्त था। अपने को पूर्ण ऋषि मानता था। परमात्मा कबीर जी के ज्ञान को सुना, परंतु विश्वास नहीं किया। शिष्य भी बना, परंतु अपना अहंकार नहीं त्यागा। गरूड़ ने ज्ञान समझा। शिष्य हुआ, भक्ति भी कर रहा है। किसी जन्म में फिर शरण में आएगा। उस समय बताया था कि रामचन्द्र तो अरबों बार रामलीला कर-करके मर लिए।(41)

''पाण्डवों द्वारा की गई धर्मयज्ञ पूर्ण करना''

❖ परमात्मा कबीर जी द्वापरयुग में सशरीर बालक रूप में पृथ्वी पर आए थे। एक तालाब में कमल के फूल पर नवजात शिशु रूप में विराजमान हुए थे। एक निःसंतान बाल्मीकि वहाँ से उठा ले गया। अपनी पत्नी को दिया। घर में बालक की कमी पूरी होने से बाल्मीकि दंपत्ति की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। बालक जब पाँच-सात वर्ष का हुआ तो अध्यात्म ज्ञान बताने लगा। किसी ने उनके ज्ञान को स्वीकार नहीं किया। एक बाल्मीकि सुदर्शन उनका शिष्य हुआ। उसे सतलोक के दर्शन करवाए। तब वह पूर्ण रूप से समझ गया कि करूणामय (कबीर जी का नाम करूणामय रखा गया था) स्वयं पूर्ण परमात्मा हैं। सुदर्शन भक्त उस क्षेत्र में प्रसिद्ध थे क्योंकि पांखड रहित साधना करते थे। दिन-रात भक्ति में लीन रहते थे। महाभारत के युद्ध के बाद पांडवों ने श्री कृष्ण जी के सानिध्य में एक धर्म यज्ञ की थी जो परमात्मा कबीर जी ने सुदर्शन का रूप बनाकर सम्पूर्ण की थी। सम्पूर्ण कथा इस प्रकार है :-

❖ संत गरीबदास जी की वाणी में कई अंगों में थोड़ा लिखा है। उन सब अंगों की वाणियों को इकट्ठी लिखकर सरलार्थ किया जा रहा है।

❖ पारख के अंग में वाणी नं. 42-47, 63-66, 1197-1202 में पाण्डव यज्ञ का वर्णन है:-

गरीब, फिर पंडौं की यज्ञ में संख पचायन टेर। द्वादश कोटि पंडित जिहां, पड़ी सभन की मेर।।42।।
गरीब, करी कृष्ण भगवान कूं चरणामृत स्यौं प्रीत। संख पचायन जब बज्या, लिया द्रोपदी सीत।।43।।
गरीब, द्वादश कोटि पंडित जिहां, और ब्रह्मा बिष्णु महेश। चरण लिये जगदीश कूं जिस कूं रटता शेष।।44।।
गरीब, बाल्मीक के बाल समि, नाहीं तीनौं लोक। सुर नर मुनि जन कृष्ण सुधि पंडौं पाई पोष।।45।।

गरीब, सौ करोरि बानी कही, पहिले चोलै चाव। दूजै चौलै कृष्ण कूं, लिये साध के पाव।।46।।
गरीब, कथा रमायण रस भरी, आगम अगम अगाध। बाल्मीक के चरण कूं, सबही चरचैं साध।।47।।
गरीब, बाल्मीक बैकुंठ परि, स्वर्ग लगाई लात। संख पचायन घुरत हैं, गन गंधर्व ऋषि मात।।63।।
गरीब, स्वर्ग लोक के देवता, किन्हैं न पूर्या नाद। सुपच सिंहासन बैठतैं, बाज्या अगम अगाध।।64।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि थे, सहिदे से सुर बीन। सहंस अठासी देव में, कोई न पद में लीन।।65।।
गरीब, बाज्या संख स्वर्ग सुन्या, चौदह भवन उचार। तेतीसौं तत्त ना लह्या, किन्हैं न पाया पार।।66।।
गरीब, इंद्र भये हैं धर्म सैं, यज्ञ हैं आदि जुगादि। शंख पचायन जदि बजे, पंचगिरासी साध।।1197।।
गरीब, सुपच शंक सब करत हैं, नीच जाति बिश चूक। पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले जा पर्बत रूंख।।1198।।
गरीब, कंनि कंनि बाजा सब सुन्या, पंच टेर क्यौं दीन। द्रौपदी कै दुर्भाव हैं, तास भये मुसकीन।।1199।।
गरीब, करि द्रौपदी दिलमंजना, सुपच चरण पी धोय। बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।।1200।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन। बाज्या शंख असंख धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।।1201।।
गरीब, सुनी शंखकी टेर जिन, हृदय भाव बिश्बास। जोनी संकट ना परै, होसी गर्भ न त्रास।।1202।।

❖ **साच के अंग की वाणी नं. 27 :-**

गरीब भक्त सिरोमणी बाल्मीकी पूरी पंचायन नाद, पांडव यज्ञ अश्वमेघ में एकै पाया साध।

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 97-116 में भी पाण्डव यज्ञ का वर्णन है :-**

गरीब, पांचौं पंडौं संग हैं, छठ्ठे कृष्ण मुरारि। चलिये हमरी यज्ञ में, समर्थ सिरजनहार।।97।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, सतगुरु किया पियान। पांचौं पंडौं संग चलैं, और छठा भगवान।।98।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेध में, बालमीक की देह। संख पंचायन बाजिया, राख्या नहीं संदेह।।99।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सतगुरु पुरुष कबीर। तीन लोक की मेदनी, सुर नर मुनिजन भीर।।100।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सब देवन का देव। कृष्णचन्द्र पग धोईया, करी तास की सेव।।101।।
गरीब, सहंस अठासी ऋषि जहां, देवा तेतीस कोटि। शंख न बाज्या तास तैं, रहे चरण में लोटि।।102।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि हैं, और चौरासी सिद्ध। शंख न बाज्या तास तैं, पिये मान का मध।।103।।
गरीब, सुपच रूप को देखि करि, द्रौपदी मानी शंक। जानि गये जगदीश गुरु, बाजत नाहीं शंख।।104।।
गरीब, छप्पन भोग संजोग करि, कीनें पांच गिरास। द्रौपदी के दिल दुई हैं, नाहीं दृढ़ बिश्बास।।105।।
गरीब, पांचौं पंडौं यज्ञ करी, कल्पवृक्ष की छांहिं। द्रौपदी दिल बंक हैं, कण कण बाज्या नांहि।।106।।
गरीब, सुर नर मुनि जन यज्ञ में, त्रिलोकी के भूप। सुपच यज्ञ में आईया, नित बेचत है सूप।।107।।
गरीब, छप्पन भोग न भोगिया, कीन्हें पंच गिरास। खड़ी द्रौपदी उनमुनी, हरदम घालत श्वास।।108।।
गरीब, बोलै कृष्ण महाबली, क्यूं बाज्या नहीं शंख। जानराय जगदीश गुरु, काढत है मन बंक।।109।।
गरीब, द्रौपदी दिल कूं साफ करि, चरण कमल ल्यौ लाय। बालमीक के बाल सम, त्रिलोकी नहीं पाय।।110।।
गरीब, चरण कमल कूं धोय करि, ले द्रौपदी प्रसाद। अंतर सीना साफ होय, जरैं सकल अपराध।।111।।
गरीब, बाज्या शंख सुभान गति, कण कण भई अवाज। स्वर्ग लोक बानी सुनी, त्रिलोकी में गाज।।112।।
गरीब, शरण कबीर जो गहे, टुटै जम की बंध। बंदी छोड़ अनादि है, सतगुरु कृपा सिन्धु।।113।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, आये नजर निहाल। जम राजा की बंधि में, खल हल पर्या कमाल।।114।।
गरीब, ब्रह्म परायण परम पद, सुपच रूप धरि आय। बालमीक का नाम धरि, बंधि छुटाई जाय।।115।।
गरीब, ये ब्रिदबानें साजहीं, जुगन जुगन कबीर जगदीश। तेतीस कोटि छुटाईया, जदि तोरे भुज बीस।।116।।

❖ **माया के ग्रन्थ की वाणी नं. 37-42 में भी पाण्डव यज्ञ का वर्णन है :-**

उलटा बिन्दु चलाऊं पारा, हम को मिले पूर्ण करतारा।
यज्ञ रची जदि पंडौं राजा, नौ नाथौं नहीं नादू बाज्या।।37।।
चौरासी सिद्ध रिद्धि सब मोहे, पूरण ब्रह्म ध्यान नहीं जोहे।
कोटि तेतीस यज्ञ कै मांही, सुरनर मुनिजन गिनती नांहीं।।38।।
छप्पन कोटि जहां थे जादौं। जिनसैं नांही बाजे नादौं।
कोटिक बकता बेद उचारी, ना भई यज्ञ संपूरण सारी।।39।।
षट् दर्शन की गिनती नांही, अनाथ जीव जीमें बहु मांही।
सुरनर मुनिजन तपा सन्यासी, दण्डी बिरक्त बहुत उदासी।।40।।
कामधेनु कल्प वृक्ष ही ल्याये, तीन लोक के सुरनर आये।
पांचौं पांडव कृष्ण शरीरा, जिनसैं यज्ञ भई नहीं थीरा।।41।।
एक बालमीक नीचे कुल साधू, जिन शंख पंचायन पूरे नादू।
ये और गिनौ माया के पूता, ब्रह्म जोगनी सबही धूता।।42।।

❖ **{राग अरील शब्द नं. 35 वाणी नं. 5-15, राग बिलावल शब्द नं. 22 वाणी नं. 2-8, राग आसावरी शब्द नं. 13 वाणी नं. 10, राग बिनोद शब्द नं. 9 वाणी नं. 4-7 में पाण्डव यज्ञ के विषय में वर्णन है।}**

❖ **राग अरील शब्द नं. 35 वाणी नं. 5-15 :-**

सहंस अठासी देव कोटि तेतीस रे। ब्रह्मा बिष्णु महेश सुधां जगदीश रे।।5।।
इन्द्र बरुण कुबेर जहां धर्मराय है। अनंत कोटि सुर संत सु जगि उपाय है।।6।।
पण्डित द्वादश कोटि बिप्र सहदेव से। खेबट बिना जिहाज कहौ कौंन खेबसे।।7।।
जहां पुंडरीक पारासुर नारद ब्यास रे। गोरख दत्त दिगंबर और दुर्बास रे।।8।।
जहां मारकंडे पिपलादिक रूंमी ऋषि रे। कपिल मुनि जगि मांहि न बाज्या शंख रे।।9।।
नौ जोगेश्वर निर्भय कागभुसंड रे। जहां बावन गादी जनक भक्ति प्रचंड रे।।10।।
जहां शुकदेव ध्रु प्रहलाद भक्ति के खंभ रे। जगि रची कृष्ण देव किया आरंभ रे।।11।।
बज्या सुपच का शंख स्वर्ग में धुंनि सुनी। गण गंधर्व गलतान सकल ज्ञानी गुनी।।12।।
बालमीक के शंख कूं किये सुरमांत रे। द्रोपद सुता कै दिल में आई भ्रांति रे।।13।।
कणि कणि बाज्या संख स्वर्ग भई सैल रे। पंडौं ताप बिधंस भये सब बद फैल रे।।14।।
ऐसा अचरज कीन्ह दीन कै शिर धरी। हरिहां महबूब कहता दास गरीब धनी नर कबीर हरी।।15।।35।।

❖ **राग बिलावल शब्द नं. 22 वाणी नं. 2-8 :-**

बिंजन छतीसौं परोसिया, वहां द्रोपदि रानी।बिन आदर सतकार रे, कहीं संख न बानी।।2।।
पंच गिरासी बाल्मीक, पंचै बर बोले। आगे संख पंचायना, कपाट न खोल्हे।।3।।
बोलत कृष्ण महाबली, त्रिभुवन के साजा। बाल्मीक प्रसाद सें, कण कण क्यों न बाजा।।4।।
प्रेम पंचायन भूख है, अन जग का खाजा। ऊंच नीच द्रोपदि कहा, कण कण यौं न बाजा।।5।।
द्रोपदि सेती कृष्ण देव, जद ऐसैं भाख्या। बाल्मीक के चरण की, तेरै नहीं अभिलाषा।।6।।
बाल्मीक के चरण की, लई द्रोपदि धारा। संख पंचायन बाजिया, कण कण झणकारा।।7।।

सुनत पंचायन संख रे, यज्ञ सम्पूर्ण सारी। पंड राजा प्रसन्न हुए यह लीला न्यारी।।8।।

❖ **राग आसावरी शब्द नं. 13 वाणी नं. 10 :-**

उस पुर सेती महरम नांहीं, अनहद नाद घुरांनैं। दास गरीब दुनी गई दोजिख, देवें गारि गुरांनैं।।10।।

❖ **राग बिनोद शब्द नं. 9 वाणी नं. 4-7 :-**

कोटि बैषनों गये रे, पण्डित द्वादश कोड़ि। बालमीक के चरण की रे, रही जगि में लोड़ि।।4।।
कृष्णचंद परमात्मा रे, चरनाबरत लिया ताहि। पांच पण्ड और द्रौपदी रे, लगे सुपच कै पाय।।5।।
ऐसे महंगे संत हैं रे, साहिब सौंहगा जांनि। पंडौं जगि असमेद में रे, चरण लिये भगवांन।।6।।
पांच गिरस उपास था रे, कण कण बाज्या संख। गरीबदास तिहूं लोक में, सुन्या राव और रंक।।7।।9।।

❖ **उपरोक्त वाणियों का सरलार्थ :-**

।। पाण्डवों की यज्ञ में सुपच सुदर्शन द्वारा शंख बजाना।।

जैसा कि सर्व विदित है कि महाभारत के युद्ध में अर्जुन ने युद्ध करने से मना कर दिया था तथा शस्त्र त्याग कर युद्ध के मैदान में दोनों सेनाओं के बीच में खड़े रथ के पिछले हिस्से में आंखों से आँसू बहाता हुआ बैठ गया था। तब भगवान कृष्ण के अन्दर प्रवेश काल शक्ति (ब्रह्म) अर्जुन को युद्ध करने की राय देने लगा था। तब अर्जुन ने कहा था कि भगवान यह घोर पाप मैं नहीं करूँगा। इससे अच्छा तो भिक्षा का अन्न भी खा कर गुजारा कर लेंगे। तब भगवान काल श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोला था कि अर्जुन युद्ध कर। तुझे कोई पाप नहीं लगेगा। देखें गीता जी के अध्याय 11 के श्लोक 33, अध्याय 2 के श्लोक 37, 38 में।

महाभारत में लेख (प्रकरण) आता है कि कृष्ण जी के कहने से अर्जुन ने युद्ध करना स्वीकार कर लिया। घमासान युद्ध हुआ। करोड़ों व्यक्ति व सर्व कौरव युद्ध में मारे गए और पाण्डव विजयी हुए। तब पाण्डव प्रमुख युधिष्ठिर को राज्य सिंहासन पर बैठाने के लिए स्वयं भगवान कृष्ण ने कहा तो युधिष्ठिर ने यह कहते हुए गद्दी पर बैठने से मना कर दिया कि मैं ऐसे पाप युक्त राज्य को नहीं करूँगा। जिसमें करोड़ों व्यक्ति मारे गए थे। उनकी पत्नियाँ विधवा हो गई, करोड़ों बच्चे अनाथ हो गए, अभी तक उनके आँसू भी नहीं सूखे हैं। किसी प्रकार भी बात बनती न देख कर श्री कृष्ण जी ने कहा कि आप भीष्म जी से राय लो। क्योंकि जब व्यक्ति स्वयं फैसला लेने में असफल रहे तब किसी स्वजन से विचार कर लेना चाहिए। युधिष्ठिर ने यह बात स्वीकार कर ली। तब श्री कृष्ण जी युधिष्ठिर को साथ ले कर वहाँ पहुँचे जहाँ पर श्री भीष्म शर (तीरों की) शैय्या (चारपाई) पर अंतिम स्वांस गिन रहे थे, वहाँ जा कर श्री कृष्ण जी ने भीष्म से कहा कि युधिष्ठिर राज्य गद्दी पर बैठने से मना कर रहे हैं। कृपा आप इन्हें राजनीति की शिक्षा दें।

भीष्म जी ने बहुत समझाया परंतु युधिष्ठिर अपने उद्देश्य से विचलित नहीं हुआ। यही कहता रहा कि इस पाप से युक्त रूधिर से सने राज्य को भोग कर मैं नरक प्राप्ति नहीं चाहूँगा। श्री कृष्ण जी ने कहा कि आप एक धर्म यज्ञ करो। जिससे आपको युद्ध में हुई हत्याओं का पाप नहीं लगेगा। इस बात पर युधिष्ठिर सहमत हो गया और एक धर्म यज्ञ की। फिर राज गद्दी पर बैठ गया। हस्तिनापुर का राजा बन गया।

प्रमाण सुखसागर के पहले स्कन्ध के आठवें तथा नौवें अध्याय से सहाभार पृष्ठ नं. 48 से 53)

कुछ वर्षो पर्यन्त युधिष्ठिर को भयानक स्वपन आने शुरु हो गए। जैसे बहुत सी औरतें रोती-बिलखती हुई अपनी चूड़ियाँ तोड़ रहीं हैं तथा उनके मासूम बच्चे अपनी माँ के पास खड़े कुछ बैठे पिता-पिता कह कर रो रहे हैं मानों कह रहे हो हे राजन्! हमें भी मरवा दे, भेज दे हमारे पिता के पास। कई बार बिना शीश के धड़ दिखाई देते है। किसी की गर्दन कहीं पड़ी है, धड़ कहीं पड़ा है, हा-हा कार मची हुई है। युधिष्ठिर की नींद उचट जाती, घबरा कर बिस्तर पर बैठ कर हाँफने लग जाता। सारी-2 रात बैठ कर या महल में घूम कर व्यतीत करता है। एक दिन द्रौपदी ने बड़े पति की यह दशा देखी परेशानी का कारण पूछा तो युधिष्ठिर कुछ नहीं- कुछ नहीं कह कर टाल गए। जब द्रौपदी ने कई रात्रियों में युधिष्ठिर की यह दुर्दशा देखी तो एक दिन चारों (अर्जुन, भीम, नकुल, सहदेव) को बताया कि आपका बड़ा भाई बहुत परेशान है। कारण पूछो। तब चारों भाईयों ने बड़े भईया से प्रार्थना करके पूछा कि क्या परेशानी का कारण बताओ। ज्यादा आग्रह करने पर अपनी सर्व कहानी सुनाई। पाँचों भाई इस परेशानी का कारण जानने के लिए भगवान श्रीकृष्णजी के पास गए तथा बताया कि बड़े भईया युधिष्ठिर जी को भयानक स्वपन आ रहे हैं। जिनके कारण उनकी रात्रि की नींद व दिन का चैन व भूख समाप्त हो गई। क्या कारण व समाधान बताएँ। सारी बात सुनकर श्री कृष्ण जी बोले युद्ध में किए हुए पाप परेशान कर रहे हैं। इन पापों का निवारण यज्ञ से होता है।

गीता जी के अध्याय 3 के श्लोक 13 का हिन्दी अनुवाद : यज्ञ में प्रतिष्ठित ईष्ट (पूर्ण परमात्मा) को भोग लगाने के बाद बने प्रसाद को खाने वाले श्रेष्ठ पुरुष सब पापों से मुक्त हो जाते हैं जो पापी लोग अपना शरीर पोषण करने के लिये ही अन्न पकाते हैं वे तो पाप को ही खाते हैं अर्थात् यज्ञ करके सर्व पापों से मुक्त हो जाते हैं। और कोई चारा न देख कर पाण्डवों ने श्री कृष्ण जी की सलाह स्वीकार कर ली। यज्ञ की तैयारी की गई। सर्व पृथ्वी के मानव, ऋषि, सिद्ध, साधु व स्वर्ग लोक के देव भी आमन्त्रित करने को, श्री कृष्ण जी ने कहा कि जितने अधिक व्यक्ति भोजन पाएंगें उतना ही अधिक पुण्य होगा। परंतु संतों व भक्तों से विशेष लाभ होता है उनमें भी कोई परम शक्ति युक्त संत होगा वह पूर्ण लाभ दे सकता है तथा यज्ञ पूर्ण होने का साक्षी एक पांच मुख वाला (पंचजन्य) शंख एक सुसज्जित ऊँचे आसन पर रख दिया जाएगा तथा जब इस यज्ञ में कोई परम शक्ति युक्त संत भोजन खाएगा तो यह शंख स्वयं आवाज करेगा। इतनी गूँज होगी की पूरी पृथ्वी पर तथा स्वर्ग लोक तक आवाज सुनाई देगी।

यज्ञ की तैयारी हुई। निश्चित दिन को सर्व आदरणीय आमन्त्रित भक्तगण, अठासी हजार ऋषि, तेतीस करोड़ देवता, नौ नाथ, चौरासी सिद्ध, ब्रह्मा, विष्णु, शिव आदि पहुँच गए। यज्ञ कार्य शुरु हुआ। बाद में सब ने यज्ञ का बचा प्रसाद (भण्डारा) सर्व उपस्थित महानुभावों व भक्तों तथा जनसाधारण को बरताया (खिलाया)। स्वयं भगवान कृष्ण जी ने भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। शंख नहीं बजा तो यज्ञ सम्पूर्ण नहीं हुई। उस समय युधिष्ठिर ने श्री कृष्ण जी से पूछा - हे मधुसूदन! शंख नहीं बजा। सर्व महापुरुषों व आगन्तुकों ने भोजन पा लिया। कारण क्या है? श्री कृष्ण जी ने कहा कि इनमें कोई पूर्ण सन्त (सतनाम व सारनाम उपासक) नहीं है। तब युधिष्ठिर को बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतने महा मण्डलेश्वर जिसमें वशिष्ठ मुनि, मार्कण्डेय, लोमष ऋषि, नौ नाथ (गोरखनाथ जैसे), चौरासी सिद्ध आदि-2 व स्वयं भगवान श्री कृष्ण जी ने

भी भोजन खा लिया। परंतु शंख नहीं बजा। इस पर कष्ण जी ने कहा ये सर्व मान बड़ाई के भूखे हैं। परमात्मा चाहने वाला कोई नहीं तथा अपनी मनमुखी साधना करके सिद्धि दिखा कर दुनियाँ को आकर्षित करते हैं। भोले लोग इनकी वाह-2 करते हैं तथा इनके इर्द-गिर्द मण्डराते हैं। ये स्वयं भी पशु जूनी में जाएंगे तथा अपने अनुयाईयों को नरक ले जाएंगे।

गरीब, साहिब के दरबार में, गाहक कोटि अनन्त। चार चीज चाहै हैं, रिद्धि सिद्धि मान महंत।।
गरीब, ब्रह्म रन्द्र के घाट को, खोलत है कोई एक। द्वारे से फिर जाते हैं, ऐसे बहुत अनेक।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं हाथ। पृथ्वी डोबन उतरे, कह–कह मीठी बात।।
गरीब, बीजक की बातां कहैं, बीजक नाहीं पास। ओरों को प्रमोदही, अपन चले निरास।।

।।प्रमाण के लिए गीता जी के कुछ श्लोक।।

अध्याय 9 का श्लोक 20

त्रैविद्याः, माम्, सोमपाः, पूतपापाः, पूतपापाः, यज्ञैः, इष्टवा, स्वर्गतिम्, प्रार्थयन्ते,
ते, पुण्यम्, आसाद्य, सुरेन्द्रलोकम्, अश्नन्ति, दिव्यान्, दिवि, देवभोगान्।।20।।

अनुवाद : (त्रैविद्याः) तीनों वेदोंमें विधान (सोमपाः) सोमरसको पीनेवाले (पूतपापाः) पापरहित पुरुष (माम्) मुझको (यज्ञैः) यज्ञोंके द्वारा (इष्टवा) पूज्य देव के रूप में पूज कर (स्वर्गतिम्) स्वर्गकी प्राप्ति (प्रार्थयन्ते) चाहते हैं (ते) वे पुरुष (पुण्यम्) अपने पुण्योंके फलरूप (सुरेन्द्रलोकम्) स्वर्गलोकको (आसाद्य) प्राप्त होकर (दिवि) स्वर्गमें (दिव्यान्) दिव्य (देवभोगान्) देवताओंके भोगोंको (अश्नन्ति) भोगते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : तीनों वेदों में विधान सोमरस को पीने वाले पापरहित पुरुष मुझको यज्ञों के द्वारा पूज्य देव के रूप में पूज कर स्वर्ग की प्राप्ति चाहते हैं। वे पुरुष अपने पुण्यों के फलरूप स्वर्गलोक को प्राप्त होकर स्वर्ग में दिव्य देवताओं के भोगों को भोगते हैं।

अध्याय 9 का श्लोक 21

ते, तम्, भुक्त्वा, स्वर्गलोकम्, विशालम्, क्षीणे, पुण्ये, मर्त्यलोकम्, विशन्ति,
एवम्, त्रयीधर्मम्, अनुप्रपन्नाः, गतागतम्, कामकामाः, लभन्ते।।21।।

अनुवाद : (ते) वे (तम्) उस (विशालम्) विशाल (स्वर्गलोकम्) स्वर्गलोकको (भुक्त्वा) भोगकर (पुण्ये) पुण्य (क्षीणे) क्षीण होनेपर (मर्त्यलोकम्) मृत्युलोकको (विशन्ति) प्राप्त होते हैं। (एवम्) इस प्रकार (त्रयीधर्मम्) तीनों वेदोंमें कहे हुए पूजा कर्मों का (अनुप्रपन्नाः) आश्रय लेनेवाले और (कामकामाः) भोगोंकी कामनावस (गतागतम्) बार–बार आवागमनको (लभन्ते) प्राप्त होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे उस विशाल स्वर्गलोक को भोगकर पुण्य क्षीण होने पर मत्यु लोक को प्राप्त होते हैं। इस प्रकार तीनों वेदों में कहे हुए पूजा कर्मों का आश्रय लेने वाले और भोगों की कामनावश बार-बार आवागमन को प्राप्त होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 17

आत्सम्भाविताः, स्तब्धाः, धनमानमदान्विताः, यजन्ते, नामयज्ञैः, ते, दम्भेन, अविधिपूर्वकम्।।17।।

अनुवाद : (ते) वे (आत्मसम्भाविताः) अपनेआपको ही श्रेष्ठ माननेवाले (स्तब्धाः) घमण्डी पुरुष (धनमानमदान्विताः) धन और मानके मदसे युक्त होकर (नामयज्ञैः) केवल नाममात्रके यज्ञोंद्वारा

(दम्भेन) पाखण्डसे (अविधिपूर्वकम्) शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : वे अपने आपको ही श्रेष्ठ मानने वाले घमण्डी पुरुष धन और मान के मद से युक्त होकर केवल नाममात्र के यज्ञों द्वारा पाखण्ड से शास्त्रविधि रहित पूजन करते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 18

अहंकारम्, बलम्, दर्पम्, कामम्, क्रोधम्, च, संश्रिताः,
माम्, आत्मपरदेहेषु, प्रद्विषन्तः, अभ्यसूयकाः ।।18।।

अनुवाद : (अहंकारम्) अहंकार (बलम्) बल (दर्पम्) घमण्ड (कामम्) कामना और (क्रोधम्) क्रोधादिके (संश्रिताः) परायण (च) और (अभ्यसूयकाः) दूसरोंकी निन्दा करनेवाले पुरुष (आत्मपरदेहेषु) प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा (माम्) मुझसे (प्रद्विषन्तः) द्वेष करनेवाले होते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : अहंकार बल घमण्ड कामना और क्रोधादि के परायण और दूसरों की निन्दा करने वाले पुरुष प्रत्येक शरीर में परमात्मा आत्मा सहित तथा मुझसे द्वेष करने वाले होते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 19

तान् अहम्, द्विषतः, क्रूरान्, संसारेषु, नराधमान्,
क्षिपामि, अजस्त्रम्, अशुभान्, आसुरीषु, एव, योनिषु ।।19।।

अनुवाद : (तान्) उन (द्विषतः) द्वेष करनेवाले (अशुभान्) पापाचारी और (क्रूरान्) क्रूरकर्मी (नराधमान्) नराधमोंको (अहम्) मैं (संसारेषु) संसारमें (अजस्त्रम्) बार–बार (आसुरीषु) आसुरी (योनिषु) योनियोंमें (एव) ही (क्षिपामि) डालता हूँ।

केवल हिन्दी अनुवाद : उन द्वेष करने वाले पापाचारी और क्रूरकर्मी नराधमों को मैं संसार में बार-बार आसुरी योनियों में ही डालता हूँ।

अध्याय 16 का श्लोक 20

आसुरीम्, योनिम्, आपन्नाः, मूढाः, जन्मनि, जन्मनि,
माम् अप्राप्य, एव, कौन्तेय, ततः, यान्ति, अधमाम्, गतिम् ।।20।।

अनुवाद : (कौन्तेय) हे अर्जुन! (मूढाः) वे मूर्ख (माम्) मुझको (अप्राप्य) न प्राप्त होकर (एव) ही (जन्मनि) जन्म (जन्मनि) जन्ममें (आसुरीम्) आसुरी (योनिम्) योनिको (आपन्नाः) प्राप्त होते हैं फिर (ततः) उससे भी (अधमाम्) अति नीच (गतिम्) गतिको (यान्ति) प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकोंमें पड़ते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद : हे अर्जुन! वे मूर्ख मुझको न प्राप्त होकर ही जन्म जन्ममें आसुरी योनि को प्राप्त होते हैं। फिर उससे भी अति नीच गति को प्राप्त होते हैं अर्थात् घोर नरकों में पड़ते हैं।

अध्याय 16 का श्लोक 23

यः, शास्त्रविधिम्, उत्सृज्य, वर्तते, कामकारतः,
न, सः, सिद्धिम्, अवाप्नोति, न, सुखम्, न, पराम्, गतिम् ।।23।।

अनुवाद : (यः) जो पुरुष (शास्त्रविधिम्) शास्त्रविधिको (उत्सृज्य) त्यागकर (कामकारतः) अपनी इच्छासे मनमाना (वर्तते) आचरण करता है (सः) वह (न) न (सिद्धिम्) सिद्धिको (अवाप्नोति)

प्राप्त होता है (न)न (पराम्)परम (गतिम्)गतिको और(न) न (सुखम्) सुखको ही।

केवल हिन्दी अनुवाद : जो पुरुष शास्त्रविधि को त्यागकर अपनी इच्छा से मनमाना आचरण करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त होता है, न परम गति को और न सुख को ही।

''शेष कथा''

श्री कृष्ण भगवान ने अपनी शक्ति से युधिष्ठिर को उन सर्व महा मण्डलेश्वरों के आगे होने वाले जन्म दिखाए जिसमें किसी ने कैंचवे का, किसी ने भेड़-बकरी, भैंस व शेर आदि के रूप धारण किए थे।

यह सब देख कर युधिष्ठिर ने कहा - हे भगवन! फिर तो पृथ्वी संत रहित हो गई है।। भगवान कृष्ण जी ने कहा जब पृथ्वी संत रहित हो जाएगी तो यहाँ आग लग जाएगी। सर्व जीव-जन्तु आपस में लड़ मरेंगे। यह तो पूरे संत की शक्ति से सन्तुलन बना रहता है। समय-समय पर मैं (भगवान विष्णु) पृथ्वी पर आ कर राक्षस वृत्ति के लोगों को समाप्त करता हूँ जिससे संत सुखी हो जाते है। जिस प्रकार जमींदार अपनी फसल से हानि पहुँचने वाले अन्य पौधों को जो झाड़-खरपतवार आदि को काट-काट कर बाहर डाल देता है तब वह फसल स्वतन्त्रता पूर्वक फलती-फूलती है। यानी ये संत उस फसल में सिचांई का सुख प्रदान करते हैं। पूर्ण संत सबको समान सुख देते हैं। जिस प्रकार वर्षा व सिंचाई का जल दोनों प्रकार के पौधों (फसल व खरपतवार) का पोषण करते हैं। उनमें सर्व जीव के प्रति दया भाव होता है। अब मैं आपको पूर्ण संत के दर्शन करवाता हूँ। एक महात्मा काशी में रहते हैं। उसको बुलवाना है। तब युधिष्ठिर ने कहा कि उस ओर संतों को आमन्त्रित करने का कार्य भीमसेन को सौंपा था। पूछते हैं कि वह उन महात्मा तक पहुँचा या नहीं। भीमसेन को बुलाकर पूछा तो उसने बताया कि मैं उस से मिला था। उनका नाम स्वपच सुदर्शन है। बाल्मीकि जाति में गृहस्थी संत हैं। एक झौंपड़ी में रहता है। उन्होंने यज्ञ में आने से मना कर दिया। इस पर श्री कृष्ण जी ने कहा कि संत मना नहीं किया करते। सर्व वार्ता जो उनके साथ हुई है वह बताओ।

तब भीम सेन ने आगे बताया कि मैंने उनको आमन्त्रित करते हुए कहा कि हे संत परवर ! हमारी यज्ञ में आने का कष्ट करना। उनको पूरा पता बताया। उसी समय वे (सुदर्शन संत जी) कहने लगे भीम सैन आप के पाप के अन्न को खाने से संतों को दोष लगेगा। करोड़ों सैनिकों की हत्या करके आपने तो घोर पाप कर रखा है। आज आप राज्य का आनन्द ले रहे हो। युद्ध में वीरगति को प्राप्त सैनिकों की विधवा पत्नी व अनाथ बच्चे रह-रह कर अपने पति व पिता को याद करके फूट-फूट कर घंटों रोते हैं। बच्चे अपनी माँ से लिपट कर पूछ रहे हैं - माँ, पापा छुट्टी नहीं आए? कब आएंगे? हमारे लिए नए वस्त्र लाएंगे। दूसरी लड़की कहती है कि मेरे लिए नई साड़ी लाएंगे। बड़ी होने पर जब मेरी शादी होगी तब मैं उसे बाँधकर ससुराल जाऊँगी। वह लड़का (जो दस वर्ष की आयु का है) कहता है कि मैं अब की बार पापा (पिता जी) से कहूँगा कि आप नौकरी पर मत जाना। मेरी माँ तथा भाई-बहन आपके बिना बहुत दुःख पाते हैं। माँ तो सारा दिन-रात आपकी याद करके जब देखो एकांत स्थान पर रो रही होती है। या तो हम सबको अपने पास बुला लो या आप हमारे पास रहो। छोड़ दो नौकरी को। मैं जवान हो गया हूँ।

आपकी जगह मैं फौज में जा कर देश सेवा करूँगा। आप अपने परिवार में रहो। आने दो पिता जी को, बिल्कुल नहीं जाने दूँगा। (उन बच्चों को दुःखी होने से बचाने के लिए उनकी माँ ने उन्हें यह नहीं बताया कि आपके पिता जी युद्ध में मर चुके हैं क्योंकि उस समय वे बच्चे अपने मामा के घर गए हुए थे। केवल छोटा बच्चा जो डेढ़ वर्ष की आयु का था वही घर पर था। अन्य बच्चों को जान बूझ कर नहीं बुलाया था।)

इस प्रकार उन मासूम बच्चों की आपसी वार्ता से दुःखी होकर उनकी माता का हृदय पति की याद के दुःख से भर आया। उसे हल्का करने के लिए (रोने के लिए) दूसरे कमरे में जा कर फूट-फूट कर रोने लगी। तब सारे बच्चे माँ के ऊपर गिरकर रोने लगे। सम्बन्धियों ने आकर शांत करवाया। कहा कि बच्चों को स्पष्ट बताओ कि आपके पिता जी युद्ध में वीरगति को प्राप्त हो गए। जब बच्चों को पता चला कि हमारे पापा (पिता जी) अब कभी नहीं आएंगे तब उस स्वार्थी राजा को कोसने लगे जिसने अपने भाई बटवारे के लिए दुनियाँ के लालों का खून पी लिया। यह कोई देश रक्षा की लड़ाई भी नहीं थी जिसमें हम संतोष कर लेते कि देश के हित में प्राण त्याग दिए हैं। इस खूनी राजा ने अपने ऐशो-आराम के लिए खून की नदी बहा दी। अब उस पर मौज कर रहा है। आगे संत सुदर्शन (सुपच) बता रहे हैं कि भीम ऐसे-2 करोड़ों प्राणी युद्ध की पीड़ा से पीड़ित हैं। उनकी हाय आपको चैन नहीं लेने देगी चाहे करोड़ यज्ञ करो। ऐसे दुष्ट अन्न को कौन खाए ? यदि मुझे बुलाना चाहते हो तो मुझे पहले किए हुए सौ (100) यज्ञों का फल देने का संकल्प करो अर्थात् एक सौ यज्ञों का फल मुझे दो तब मैं आपके भोजन पाऊँ।

सुदर्शन जी के मुख से इस बात को सुन कर भीम ने बताया कि मैं बोला आप तो कमाल के व्यक्ति हो, सौ यज्ञों का फल मांग रहे हो। यह हमारी दूसरी यज्ञ है। आपको सौ का फल कैसे दें? इससे अच्छा तो आप मत आना। आपके बिना कौन सी यज्ञ सम्पूर्ण नहीं होगी। जब स्वयं भगवान कष्ण जी हमारे साथ हैं। तो तेरे न आने से क्या यज्ञ पूर्ण नहीं होगा। सर्व वार्ता सुन कर श्री कष्ण जी ने कहा भीम संतों के साथ ऐसा आपत्तिजनक व्यवहार नहीं करना चाहिए। सात समुद्रों का अंत पाया जा सकता है परंतु सतगुरु (कबीर साहेब) के संत का पार नहीं पा सकते। उस महात्मा सुदर्शन वाल्मीकि के एक बाल के समान तीन लोक भी नहीं हैं। मेरे साथ चलो, उस परमपिता परमात्मा के प्यारे हंस को लाने के लिए। तब पाँचों पाण्डव व श्री कष्ण भगवान स्वपच सुदर्शन की झोंपड़ी की ओर रथ में बैठकर चले। एक योजन अर्थात् 12 किलोमीटर पहले रथ से उतरकर नंगे पैरों चले तथा रथ को खाली लेकर रथवान पीछे-पीछे चला।

उस समय स्वयं कबीर साहेब सुदर्शन सुपच का रूप बना कर झोपड़ी में बैठ गए व सुदर्शन को अपनी गुप्त प्रेरणा से मन में संकल्प उठा कर कहीं दूर के संत या भक्त से मिलने भेज दिया जिसमें आने व जाने में कई रोज लगने थे। तब सुदर्शन के रूप में सतगुरु की चमक व शक्ति देख कर सर्व पाण्डव बहुत प्रभावित हुए। स्वयं श्रीकष्णजी ने लम्बी दण्डवत् प्रणाम की। तब देखा देखी सर्व पाण्डवों ने भी ऐसा ही किया। कष्ण जी की तरफ नजर करके सुपच सुदर्शन ने आदर पूर्वक कहा कि - हे त्रिभुवननाथ! आज इस दीन के द्वार पर कैसे? मेरा अहोभाग्य है कि आज दीनानाथ विश्वम्भरनाथ मुझ तुच्छ को दर्शन देने स्वयं चल कर आए हैं। सबको आदर पूर्वक बैठा दिया तथा आने का कारण पूछा। उस समय श्री कष्ण जी ने कहा कि हे जानी-जान!

आप सर्व गति (स्थिति) से परिचित हैं। पाण्डवों ने यज्ञ की है। वह आपके बिना सम्पूर्ण नहीं हो रही है। कृपा इन्हें कृतार्थ करें। उसी समय वहां उपस्थित भीम की ओर संकेत करते हुए सुदर्शन रूप धारी परमेश्वर जी ने कहा कि यह वीर मेरे पास आया था तथा अपनी मजबूरी से इसे अवगत करवाया था। उस समय श्री कृष्ण जी ने कहा कि - हे पूर्णब्रह्म! आपने स्वयं अपनी वाणी में कहा है कि -

''संत मिलन को चालिए, तज माया अभिमान। जो—जो पग आगे धरै, सो—सो यज्ञ समान।।''

आज पांचों पाण्डव राजा हैं तथा मैं स्वयं द्वारिकाधीश आपके दरबार में राजा होते हुए भी नंगे पैरों उपस्थित हूँ। अभिमान का नामों निशान भी नहीं है तथा स्वयं भीम ने भी खड़ा हो कर उस दिन कहे हुए अपशब्दों की चरणों में पड़ कर क्षमा याचना की। श्री कृष्ण जी ने कहा हे नाथ! आज यहाँ आपके दर्शनार्थ आए आपके छः सेवकों के कदमों के यज्ञ समान फल को स्वीकार करते हुए सौ आप रखो तथा शेष हम भिक्षुकों को दान दीजिए ताकि हमारा भी कल्याण हो। इतना आधीन भाव सर्व उपस्थित जनों में देख कर जगतगुरु साहेब करूणामय सुदर्शन रूप में अति प्रसन्न हुए।

कबीर, साधू भूखा भाव का, धन का भूखा नाहिं।जो कोई धन का भूखा, वो तो साधू नाहिं।।

उठ कर उनके साथ चल पड़े। जब सुदर्शन जी यज्ञशाला में पहुँचे तो चारों ओर एक से एक ऊँचे सुसज्जित आसनों पर विराजमान महा मण्डलेश्वर सुदर्शन जी के रूप व वेश (दोहरी धोती घुटनों से थोड़ी नीचे तक, छोटी-2 दाड़ी, सिर के बिखरे केश न बड़े न छोटे, टूटी-फूटी जूती। मैले से कपड़े, तेजोमय शरीर) को देखकर अपने मन में सोच रहे हैं कि ऐसे अपवित्र व्यक्ति से शंख सात जन्म भी नहीं बज सकता है। यह तो हमारे सामने ऐसे है जैसे सूर्य के सामने दीपक। श्रीकृष्ण जी ने स्वयं उस महात्मा का आसन अपने हाथों लगाया (बिछाया) क्योंकि श्री कृष्ण जी श्रेष्ठ आत्मा हैं। फिर द्रोपदी से कहा कि हे बहन! सुदर्शन महात्मा जी आए हैं, भोजन तैयार करो। बहुत पहुँचे हुए संत हैं। द्रोपदी देख रही है कि संत लक्षण तो एक भी नहीं दिखाई देते हैं। यह तो एक दरिद्र गृहस्थी व्यक्ति है। न तो वस्त्र भगवां, न गले में माला, न तिलक, न सिर पर बड़ी जटा, न मुण्ड ही मुण्डवा रखा और न ही कोई चिमटा, झोली, कमण्डल लिए हुए था। श्री कृष्ण जी के कहते ही स्वादिष्ट भोजन कई प्रकार का बनाकर एक सुन्दर थाल (चांदी का) में परोस कर सुदर्शन जी के सामने रख कर द्रोपदी ने मन में विचार किया कि आज तो यह भक्त भोजन को खाएगा तो ऊँगली चाटता रह जाएगा। जिन्दगी में ऐसा भोजन कभी नहीं खाया होगा।

सुदर्शन जी ने नाना प्रकार के भोजन को थाली में इक्ट्ठा किया तथा खिचड़ी सी बनाई। उस समय द्रौपदी ने देखा कि इसने तो सारा भोजन (खीर, खांड, हलुवा, सब्जी, दही, दही-बड़े आदि) घोल कर एक कर लिया। तब मन में दुर्भावना पूर्वक विचार किया कि इस मूर्ख हब्शी ने तो खाना खाने का भी ज्ञान नहीं। यह काहे का संत? कैसा शंख बजाएगा। (क्योंकि खाना बनाने वाली स्त्री की यह भावना होती है कि मैं ऐसा स्वादिष्ट भोजन बनाऊँ कि खाने वाला मेरे भोजन की प्रशंसा कई जगह करे)। प्रत्येक बहन की यही आशा होती है।

{वह बेचारी एक घंटे तक धुएँ से आँखें खराब करे और मेरे जैसा कह दे कि नमक तो है ही नहीं, तब उसका मन बहुत दुःखी होता है। इसलिए संत जैसा मिल जाए उसे खा कर सराहना ही

करते हैं। यदि कोई न खा सके तो नमक कह कर 'संत' नहीं मांगता। संतों ने नमक का नाम राम–रस रखा हुआ है। कोई ज्यादा नमक खाने का अभ्यस्त हो तो कहेगा कि भईया– रामरस लाना। घर वालों को पता ही न चले कि क्या मांग रहा है? क्योंकि सतसंग में सेवा में अन्य सेवक ही होते हैं। न ही भोजन बनाने वालों को दुःख हो। एक समय एक नया भक्त किसी सतसंग में पहली बार गया। उसमें किसी ने कहा कि भक्त जी रामरस लाना। दूसरे ने भी कहा कि रामरस लाना तथा थोड़ा रामरस अपनी हथेली पर रखवा लिया। उस नए भक्त ने खाना खा लिया था। परंतु पंक्ति में बैठा अन्य भक्तों के भोजन पाने का इंतजार कर रहा था कि इकट्ठे ही उठेंगे। यह भी एक औपचारिकता सतसंग में होती है। उसने सोचा रामरस कोई खास मीठा खाद्य पदार्थ होगा। यह सोच कर कहा मुझे भी रामरस देना। तब सेवक ने थोड़ा सा रामरस (नमक) उसके हाथ पर रख दिया। तब वह नया भक्त बोला – ये के कान कै लाना है, चौखा सा (ज्यादा) रखदे। तब उस सेवक ने दो तीन चमच्च रख दिया। उस नए भक्त ने उस बारीक नमक को कोई खास मीठा खाद्य प्रसाद समझ कर फांका मारा। तब चुपचाप उठा तथा बाहर जा कर कुल्ला किया। फिर किसी भक्त से पूछा रामरस किसे कहते हैं? तब उस भक्त ने बताया कि नमक को रामरस कहते हैं। तब वह नया भक्त कहने लगा कि मैं भी सोच रहा था कि कहें तो रामरस परंतु है बहुत खारा। फिर विचार आया कि हो सकता है नए भक्तों पर परमात्मा प्रसन्न नहीं हुए हों। इसलिए खारा लगता हो। मैं एक बार फिर कोशिश करता, अच्छा हुआ जो मैंने आपसे स्पष्ट कर लिया। फिर उसे बताया गया कि नमक को रामरस किस लिए कहते हैं ?}

सुपच सुदर्शन जी ने थाली वाले मिले हुए उस सारे भोजन को पाँच ग्रास बना कर खा लिया। पाँच बार शंख ने आवाज की। उसके पश्चात् शंख ने आवाज नहीं की।

व्यंजन छतीसों परोसिया जहाँ द्रौपदी रानी। बिन आदर सतकार के, कही शंख न बानी।।
पंच गिरासी वाल्मीकि, पंचै बर बोले। आगे शंख पंचायन, कपाट न खोले।।
बोले कृष्ण महाबली, त्रिभुवन के साजा। बाल्मिक प्रसाद से, कण कण क्यों न बाजा।।
द्रोपदी सेती कृष्ण देव, जब ऐसे भाखा। बाल्मिक के चरणों की, तेरे न अभिलाषा।।
प्रेम पंचायन भूख है, अन्न जग का खाजा। ऊँच नीच द्रोपदी कहा, शंख कण कण यूँ नहीं बाजा।।
बाल्मिक के चरणों की, लई द्रोपदी धारा। शंख पंचायन बाजीया, कण–कण झनकारा।।

युधिष्ठर जी श्री कष्ण जी के पास आए तथा कहा हे भगवन्! आप की कपा से शंख ने आवाज की है हमारा कार्य पूर्ण हुआ। श्री कष्ण जी ने सोचा कि इन महात्मा सुदर्शन के भोजन खा लेने से भी शंख अखण्ड क्यों नहीं बजा? फिर अपनी दिव्य दष्टि से देखा ? तो पाया कि द्रोपदी के मन में दोष है जिस कारण से शंख ने अखण्ड आवाज नहीं की केवल पांच बार आवाज करके मौन हो गया है। श्री कष्ण जी ने कहा युधिष्ठर यह शंख बहुत देर तक बजना चाहिए तब यज्ञ पूर्ण होगी। युधिष्ठर ने कहा भगवन्! अब कौन संत शेष है जिसे लाना होगा। श्री कष्ण जी ने कहा युधिष्ठर इस सुदर्शन संत से बढ़कर कोई भी सत्यभक्ति युक्त संत नहीं है। इसके एक बाल समान तीनों लोक भी नहीं हैं। अपने घर में ही दोष है उसे शुद्ध करते हैं। श्री कष्ण जी ने द्रौपदी से कहा - द्रौपदी, भोजन सब प्राणी अपने-2 घर पर रूखा-सूखा खा कर ही सोते हैं। आपने बढ़िया भोजन बना कर अपने मन में अभिमान पैदा कर लिया। बिना आदर सत्कार के किया

हुआ धार्मिक अनुष्ठान (यज्ञ, हवन, पाठ) सफल नहीं होता। आपने इस साधारण से व्यक्ति को क्या समझ रखा है? यह पूर्णब्रह्म हैं। इसके एक बाल के समान तीनों लोक भी नहीं हैं। आपने अपने मन में इस महापुरुष के बारे में गलत विचार किए हैं उनसे आपका अन्तःकरण मैला (मलिन) हो गया है। इनके भोजन ग्रहण कर लेने से तो यह शंख की स्वर्ग तक आवाज जाती तथा सारा ब्रह्मण्ड गूंज उठता। यह केवल पांच बार बोला है। इसलिए कि आपका भ्रम दूर हो जाए क्योंकि और किसी ऋषि के भोजन पाने से तो यह टस से मस भी नहीं हुआ। आप अपना मन साफ करके इन्हें पूर्ण परमात्मा समझकर इनके चरणों को धो कर पीओ, ताकी तेरे हृदय का मैल (पाप) साफ हो जाए।

उसी समय द्रौपदी ने अपनी गलती को स्वीकार करते हुए संत से क्षमा याचना की और सुपच सुदर्शन के चरण अपने हाथों धो कर चरणामत बनाया। रज भरे (धूलि युक्त) जल को पीने लगी। जब आधा पी लिया तब भगवान कष्ण जी ने कहा द्रौपदी कुछ अमत मुझे भी दे दो ताकि मेरा भी कल्याण हो। यह कह कर कष्ण जी ने द्रौपदी से आधा बचा हुआ चरणामत पीया। उसी समय वही पंचायन शंख इतने जोरदार आवाज से बजा कि स्वर्ग तक ध्वनि सुनि। तब पाण्डवों की वह यज्ञ सफल हुई।

प्रमाण के लिए अमत वाणी(पारख का अंग)

गरीब, सुपच शंक सब करत हैं, नीच जाति बिश चूक। पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले जो पर्वत रूंख।।
गरीब, करि द्रौपदी दिलमंजना, सुपच चरण पी धोय। बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन। बाज्या शंख अखंड धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।।
गरीब, फिर पंडौं की यज्ञ में, शंख पचायन टेर। द्वादश कोटि पंडित जहां, पड़ी सभन की मेर।।
गरीब, करी कृष्ण भगवान कूं, चरणामृत स्यौं प्रीत। शंख पंचायन जब बज्या, लिया द्रोपदी सीत।।
गरीब, द्वादश कोटि पंडित जहां, और ब्रह्मा विष्णु महेश। चरण लिये जगदीश कूं, जिस कूं रटता शेष।।
गरीब, वाल्मीकि के बाल समि, नाहीं तीनौं लोक। सुर नर मुनि जन कृष्ण सुधि, पंडौं पाई पोष।।
गरीब, वाल्मीकि बैंकुठ परि, स्वर्ग लगाई लात। शंख पचायन घुरत हैं, गण गंर्धव ऋषि मात।।
गरीब, स्वर्ग लोक के देवता, किन्हैं न पूर्या नाद। सुपच सिंहासन बैठतैं, बाज्या अगम अगाध।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि थे, सहिदे से सुर बीन। संहस अठासी देव में, कोई न पद में लीन।
गरीब, बाज्या शंख स्वर्ग सुन्या, चौदह भवन उचार। तेतीसौं तत्त न लह्या, किन्हैं न पाया पार।।

।। अचला का अंग।।

गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सतगुरु पुरुष कबीर। तीन लोक की मेदनी, सुर नर मुनिजन भीर।।97।।
गरीब, सुपच रूप धरि आईया, सब देवन का देव। कृष्णचन्द्र पग धोईया, करी तास की सेव।।98।।
गरीब, पांचौं पंडौं संग हैं, छठ्ठे कृष्ण मुरारि। चलिये हमरी यज्ञ में, समर्थ सिरजनहार।।99।।
गरीब, सहंस अठासी ऋषि जहां, देवा तेतीस कोटि। शंख न बाज्या तास तैं, रहे चरण में लोटि।।100।।
गरीब, पंडित द्वादश कोटि हैं, और चौरासी सिद्ध। शंख न बाज्या तास तैं, पिये मान का मध।।101।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, सतगुरु किया पियान। पांचौं पंडौं संग चलैं, और छठा भगवान।।102।।
गरीब, सुपच रूप को देखि करि, द्रौपदी मानी शंक। जानि गये जगदीश गुरु, बाजत नाहीं शंख।।103।।

गरीब, छप्पन भोग संजोग करि, कीनें पांच गिरास। द्रौपदी के दिल दुई हैं, नाहीं दृढ़ विश्वास।।104।।
गरीब, पांचौं पंडौं यज्ञ करी, कल्पवृक्ष की छांहिं। द्रौपदी दिल बंक हैं, कण कण बाज्या नांहि।।105।।
गरीब, छप्पन भोग न भोगिया, कीन्हें पंच गिरास। खड़ी द्रौपदी उनमुनी, हरदम घालत श्वास।।107।।
गरीब, बोलै कृष्ण महाबली, क्यूं बाज्या नहीं शंख। जानराय जगदीश गुरु, काढत है मन बंक।।108।।
गरीब, द्रौपदी दिल कूं साफ करि, चरण कमल ल्यौ लाय। वाल्मीकि के बाल सम, त्रिलोकी नहीं पाय।।109।।
गरीब, चरण कमल कूं धोय करि, ले द्रौपदी प्रसाद। अंतर सीना साफ होय, जरैं सकल अपराध।।110।।
गरीब, बाज्या शंख सुभान गति, कण कण भई अवाज। स्वर्ग लोक बानी सुनी, त्रिलोकी में गाज।।111।।
गरीब, पंडौं यज्ञ अश्वमेघ में, आये नजर निहाल। जम राजा की बंधि में, खल हल पर्या कमाल।।113।।

''अन्य वाणी सतग्रन्थ से''

तेतीस कोटि यज्ञ में आए सहंस अठासी सारे, द्वादश कोटि वेद के वक्ता, सुपच का शंख बज्या रे।।

''अर्जुन सहित पाण्डवों को युद्ध में की गई हिंसा के पाप लगे''

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि पाण्डवों को युद्ध की हत्याओं का पाप लगा। आगे सुन और सुनाता हूँ :-

दुर्वासा ऋषि के शाप वश यादव कुल आपस में लड़कर प्रभास क्षेत्र में यमुना नदी के किनारे नष्ट हो गया। श्री कष्ण जी भगवान को एक शिकारी ने पैर में विषाक्त तीर मार कर घायल कर दिया था। उस समय श्री कष्ण जी ने उस शिकारी को बताया कि आप त्रेता युग में सुग्रीव के बड़े भाई बाली थे तथा मैं रामचन्द्र था। आप को मैंने धोखा करके वक्ष की ओट लेकर मारा था। आज आपने वह बदला (प्रतिशोध) चुकाया है। पाँचों पाण्डवों को पता चला कि यादव आपस में लड़ मरे हैं वे द्वारिका पहुँचे। वहाँ गए जहाँ पर श्री कष्ण जी तीर से घायल तड़फ रहे थे। पाँचों पाण्डवों के धार्मिक गुरू श्री कष्ण जी थे। श्री कष्ण जी ने पाण्डवों से कहा! आप मेरे अतिप्रिय हो। मेरा अन्त समय आ चुका है। मैं कुछ ही समय का मेहमान हूँ। मैं आपको अन्तिम उपदेश देना चाहता हूँ कप्या ध्यान पूर्वक सुनों। यह कह कर श्री कष्ण जी ने कहा (1) आप द्वारिका की स्त्रियों को इन्द्रप्रस्थ ले जाना। यहाँ कोई नर यादव शेष नहीं बचा है (2) आप अति शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय चले जाओ वहाँ अपने शरीर के नष्ट होने तक तपस्या करते रहो। इस प्रकार हिमालय की बर्फ में गल कर नष्ट हो जाओ। युधिष्ठर ने पूछा हे भगवन्! हे गुरूदेव श्री कष्ण! क्या हम हिमालय में गल कर मरने का कारण जान सकते हैं? यदि आप उचित समझें तो बताने की कपा करें। श्री कष्ण ने कहा युधिष्ठर! आप ने युद्ध में जो प्राणियों की हिंसा करके पाप किया है। उस पाप का प्रायश्चित् करने के लिए ऐसा करना अनिवार्य है। इस प्रकार तपस्या करके प्राण त्यागने से आप के महाभारत युद्ध में किए पाप नष्ट हो जाऐंगे।

कबीर जी बोले हे धर्मदास! श्री कष्ण जी के श्री मुख से उपरोक्त वचन सुन कर अर्जुन आश्चर्य में पड़ गया। सोचने लगा श्री कष्ण जी आज फिर कह रहे हैं कि युद्ध में किए पाप नष्ट इस विधि से होगें। अर्जुन अपने आपको नहीं रोक सका। उसने श्री कष्ण जी से कहा हे भगवन्! क्या मैं आप से अपनी शंका का समाधान करा सकता हूँ। वैसे तो गुरूदेव! यह मेरी गुस्ताखी है, क्षमा करना क्योंकि आप ऐसी स्थिति में हैं कि आप से ऐसी-वैसी बातें करना उचित नहीं जान

पड़ता। यदि प्रभु! मेरी शंका का समाधान नहीं हुआ तो यह शंका रूपी कांटा आयु पर्यन्त खटकता रहेगा। मैं चैन से जी नहीं सकूंगा। श्री कृष्ण ने कहा हे अर्जून! तू जो पूछना चाहता है निःसंकोच होकर पूछ। मैं अन्तिम स्वांस गिन रहा हूँ जो कहूंगा सत्य कहूंगा। अर्जुन बोला हे श्री कष्ण! आपने श्री मद्भगवत् गीता का ज्ञान देते समय कहा था कि अर्जुन! तू युद्ध कर तुझे युद्ध में मारे जाने वालों का पाप नहीं लगेगा तू केवल निमित्त मात्र बन जा ये सर्व योद्धा मेरे द्वारा पहले ही मारे जा चुके हैं (प्रमाण गीता अध्याय 11 श्लोक 32-33) आपने यह भी कहा कि अर्जुन युद्ध में मारा गया तो स्वर्ग को चला जाएगा, यदि युद्ध जीत गया तो पथ्वी के राज्य का सुख भोगेगा। तेरे दोनों हाथों में लड्डू हैं। (प्रमाण श्री मदभगवत् गीता अध्याय 2 श्लोक 37) तू युद्ध के लिए खड़ा हो जो जय-पराजय की चिन्ता छोड़कर युद्ध कर इस प्रकार तू पाप को प्राप्त नहीं होगा (गीता अध्याय 2 श्लोक 38)

जिस समय बड़े भईया को बुरे-2 स्वपन आने लगे हम आप के पास कष्ट निवारण के लिए विधि जानने गए तो आपने बताया कि जो युद्ध में बन्धुघात अर्थात् अपने नातियों (राजाओं, सैनिकों, चाचा, भतीजा आदि) की हत्या का पाप दुःखी कर रहा है। मैं (अर्जुन) उस समय भी आश्चर्य में पड़ गया था कि भगवन् गीता ज्ञान में कह रहे थे कि तुम्हें कोई पाप नहीं लगेगा युद्ध करो। आज कह रहे है कि युद्ध में की गई हिंसा का पाप दुःखी कर रहा है। आपने पाप नाश होने का समाधान बताया ''अश्वमेघ यज्ञ'' करना जिसमें करोड़ों रूपये का खर्च हुआ। उस समय मैं अपने मन को मार कर यह सोच कर चुप रहा कि यदि मैं आप (श्री कष्ण जी) से वाद-विवाद करूँगा कि आप तो कह रहे थे तुम्हें युद्ध में होने वाली हत्याओं का कोई पाप नहीं लगेगा। आज कह रहे हो तुम्हें महाभारत युद्ध में की हत्याओं का पाप दुःख दे रहा है। कहाँ गया आप का वह गीता वाला ज्ञान। किसलिए हमारे साथ धोखा किया, गुरू होकर विश्वासघात किया। तो बड़े भईया (युधिष्ठर जी) यह न सोच लें कि मेरी चिकित्सा में धन लगना है। इस कारण अर्जुन वाद-विवाद कर रहा है। यह (अर्जुन) मेरे कष्ट निवारण में होने वाले खर्च के कारण विवाद कर रहा है यह नहीं चाहता कि मैं (युधिष्ठर) कष्ट मुक्त हो जाऊँ। अर्जुन को भाई के जीवन से धन अधिक प्रिय है। उपरोक्त विचारों को ध्यान में रखकर मैंने सोचा था कि यदि युधिष्ठर भईया को थोड़ा सा भी यह आभास हो गया कि अर्जुन! इस दष्टि कोण से विवाद कर रहा है तो भईया! अपना समाधान नहीं कराएगा। आजीवन कष्ट को गले लगाए रहेगा। हे कष्ण! आप के कहे अनुसार हमने यज्ञ किया। आज फिर आप कह रहे हो कि तुम्हें युद्ध की हत्याओं का पाप लगा है उसे नष्ट करने के लिए शीघ्र राज्य त्याग कर हिमालय में तपस्या करके गल मरो। आपने हमारे साथ यह विश्वास घात किसलिए किया? यदि आप जैसे सम्बन्धी व गुरू हों तो शत्रुओं की आवश्यकता ही नहीं। हे कष्ण हमारे हाथ में तो एक भी लड्डू नहीं रहा न तो युद्ध में मर कर स्वर्ग गए न पथ्वी के राज्य का सुख भोग सके। क्योंकि आप कह रहे हो कि राज्य त्याग कर हिमालय में गल मरो।

आँसू टपकाते हुए अर्जुन के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर युधिष्ठर बोला, अर्जुन! जिस परिस्थिति में भगवान है। इस समय ये शब्द बोलना शोभा नहीं देता। श्री कष्ण जी बोले हे अर्जुन! सुन मैं आप को सत्य-2 बताता हूँ। गीता के ज्ञान में मैंने क्या कहा था मुझे कुछ भी ज्ञान

नहीं। यह जो कुछ भी हुआ है यह होना था इसे टालना मेरे वश नहीं था। कोई अन्य शक्ति है जो आप और हम को कठपुतली की तरह नचा रही है। वह तेरे वश न मेरे वश। परन्तु जो मैं आपको हिमालय में तपस्या करके शरीर अन्त करने की राय दे रहा हूँ। यह आप को लाभदायक है। आप मेरे इस वचन का पालन अवश्य करना। यह कह कर श्री कृष्ण जी शरीर त्याग गए। जहाँ पर उनका अन्तिम संस्कार किया गया। उस स्थान पर यादगार रूप में श्री कृष्ण जी के नाम पर द्वारिका में द्वारिकाधीश मन्दिर बना है।

श्री कृष्ण ने पाण्डवों से कहा था कि मेरे शरीर का संस्कार करके राख तथा अधजली अस्थियों को एक काष्ठ के संदूक (Box) में डालकर उसको पूरी तरह से बंद करके यमुना में प्रवाह कर देना। पाण्डवों ने वैसा ही किया। वह संदूक बहता हुआ समुद्र में उस स्थान पर चला गया जिस स्थान पर उड़ीसा प्रान्त में जगन्नाथ का मंदिर बना है। एक समय उड़ीसा का राजा इन्द्रदमन था जो श्री कृष्ण जी का परम भक्त था। स्वपन में श्री कृष्ण जी ने बताया कि एक काष्ठ के संदूक में मेरे कृष्ण वाले शरीर की अस्थियाँ हैं। उस स्थान पर वह संदूक बहकर आ चुका है। उसी स्थान पर उनको जमीन में दबाकर एक मंदिर बनवा दें। राजा ने स्वपन अपनी धार्मिक पत्नी तथा मंत्रियों के साथ साझा किया और उस स्थान पर गए तो वास्तव में एक लकड़ी का संदूक मिला। उसको जमीन में दबाकर जगन्नाथ नाम से मंदिर बनवाया।

धर्मदास जी को परमेश्वर कबीर जी ने बताया। हे धर्मदास! सर्व (छप्पन करोड़) यादव का जो आपस में लड़कर मर गए थे, अन्तिम संस्कार करके अर्जुन को द्वारिका में छोड़ कर चारों भाई इन्द्रप्रस्थ चले गए। अकेला अर्जुन द्वारिका की स्त्रियों तथा श्री कृष्ण जी की गोपियों को लेकर आ रहे थे। रास्ते में जंगली लोगों ने अर्जुन को पकड़ कर पीटा। अर्जुन के पास अपना गांडीव धनुष भी था जिस से महाभारत का युद्ध जीता था। परन्तु उस समय अर्जुन से वही धनुष नहीं चला। अपने आप को शक्तिहीन जानकर अर्जुन कायरों की तरह सब देखता रहा। वे जंगली व्यक्ति स्त्रियों के गहने लूट ले गए तथा कुछ स्त्रियों को भी अपने साथ ले गए। शेष स्त्रियों को साथ लेकर अर्जुन ने इन्द्रप्रस्थ को प्रस्थान किया तथा मन में विचार किया कि श्री कृष्ण जी महाधोखेबाज (विश्वासघाती) था। जिस समय मेरे से युद्ध कराना था तो शक्ति प्रदान कर दी। उसी धनुष से मैंने लाखों व्यक्तियों को मौत के घाट उतार दिया। आज मेरा बल छीन लिया, मैं कायरों की तरह पिटता रहा मेरे से वही धनुष नहीं चला। कबीर परमेश्वर जी ने बताया धर्मदास! श्री कृष्ण जी छलिया नहीं था। वह सर्व कपट काल ब्रह्म ने किया है जो ब्रह्मा-विष्णु व शिव का पिता है। जिसके समक्ष श्री विष्णु (कृष्ण) तथा श्री शिव आदि की कुछ पेश नहीं चलती।

उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी ने प्रश्न किया :- धर्मदास ने कहा हे परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी! आप ने तो मेरी आँखे खोल दी हे प्रभु! हिमालय में तपस्या कर युधिष्ठर का तो केवल एक पैर का पंजा ही बर्फ से नष्ट हुआ तथा अन्य के शरीर गल गए थे। सुना है वे सर्व पापमुक्त होकर स्वर्ग चले गए?

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! हिमालय में जो तप पाण्डवों ने किया वह शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण (पूजा) होने के कारण व्यर्थ प्रयत्न था। (प्रमाण-गीता अध्याय 16 श्लोक 23 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से

रहित केवल कल्पित घोर तप को तपते हैं वे शरीरस्थ परमात्मा को कश करने वाले हैं उन अज्ञानियों को नष्ट हुए जान।) क्योंकि जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह गीता जी व वेदों में वर्णित नहीं है अपितु ऐसे शरीर को पीड़ा देकर साधना करना व्यर्थ बताया है। यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 15 में कहा है ओम् (ॐ) नाम का जाप कार्य करते-2 कर, विशेष कसक के साथ कर मनुष्य जन्म का मुख्य कर्त्तव्य जान के कर। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 श्लोक 7 व 13 में कहा है कि मेरा तो केवल ॐ नाम है इस का जाप अन्तिम सांस तक करने से लाभ होता है इसलिए अर्जुन! तू युद्ध भी कर तथा स्मरण (भक्ति जाप) भी कर अतः हे धर्मदास ! जैसी तपस्या पाण्डवों ने की वह व्यर्थ सिद्ध हुई।

गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 में कहा है कि जो मूढ़ बुद्धि मनुष्य समस्त कर्म इन्द्रयों को रोककर अर्थात् हठ योग द्वारा एक स्थान पर बैठ कर या खड़ा होकर साधना करता है। वह मन से इन्द्रियों का चिन्तन करता रहता है। जैसे सर्दी लगी तो शरीर की चिन्ता, सर्दी का चिन्तन, भूख लगी तो भूख का चिन्तन आदि होता रहता है। वह हठ से तप करने वाला मिथ्याचारी अर्थात् दम्भी कहा जाता है। कार्य न करने अर्थात् एक स्थान पर बैठ या खड़ा होकर साधना करने की अपेक्षा कर्म करना तथा भक्ति भी करना श्रेष्ठ है। यदि कर्म नहीं करेगा तो तेरा शरीर निर्वाह भी नहीं सिद्ध होगा।

विशेष विचार :- श्री मद्भगवत गीता में ज्ञान दो प्रकार का है। एक तो वेदों वाला तथा दूसरा काल ब्रह्म द्वारा सुनाया लोक वेद वाला। यह ज्ञान (गीता अध्याय 3 श्लोक 6 से 8 वाला ज्ञान) वेदों वाला ज्ञान ब्रह्म काल ने बताया है। श्री कष्ण जी द्वारा भी काल ब्रह्म ने पाण्डवों को लोक वेद सुनाया जिस से तप हो जाता है। तप से फिर कभी राजा बन जाता है कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। मोक्ष नहीं होता तथा न पाप ही नष्ट होते हैं।

हे धर्मदास! पाँचों पाण्डवों ने विचार करके अभिमन्यु पुत्र परीक्षित को राज तिलक कर दिया। द्रोपदी, कुन्ती (अर्जुन, भीम व युधिष्ठर की माता) तथा पाँचों पाण्डव श्री कष्ण जी के आदेशानुसार हिमालय पर्वत पर जाकर तप करने लगे कुछ ही दिनों में आहार अभाव से उनके शरीर समाप्त हो गए। केवल युधिष्ठर का शरीर शेष रहा। उसके पैर का एक पंजा बर्फ में गल पाया था। युधिष्ठर ने देखा कि उस के परिजन मर चुके है। उनके शरीर की आत्माऐं निकल चुकी हैं सुक्ष्म शरीर युक्त आकाश को जाने लगी। तब युधिष्ठर ने भी अपना शरीर त्याग दिया तथा सुक्ष्म शरीर युक्त युधिष्ठर कर्मों के संस्कार वश अपने पिता धर्मराज के लोक में गया। धर्मराज ने अपने पुत्र को बहुत प्यार किया तथा उसको रहने का मकान बताया। कुछ समय पश्चात् काल ब्रह्म ने युधिष्ठर में प्रेरणा की। उसे अपने भाईयों व पत्नी द्रोपदी तथा माता कुन्ती की याद सताने लगी। युधिष्ठर ने अपने पिता धर्मराज से कहा हे धर्मराज! मुझे मेरे परिजनों से मिलाईए मुझे उनकी बहुत याद सता रही है। धर्मराज ने कहा युधिष्ठर! वह तेरा परिवार नहीं था। तेरा परिवार तो यह है। तू मेरा पुत्र है। अर्जुन-स्वर्ग के राजा इन्द्र का पुत्र है, भीम-पवन देव का पुत्र है, नकुल-नासत्य का पुत्र है तथा सहदेव-दस्र का पुत्र है। {नासत्य तथा दस्र ये दोनों अश्वनी कुमार हैं जो अश्व रूप धारी सूर्य देव तथा अश्वी (घोड़ी) रूप धारी सूर्य की पत्नी संज्ञा के सम्भोग से उत्पन्न हुए थे। सूर्य को घोड़े रूप में न पहचान कर सूर्य पत्नी जो घोड़ी रूप धार कर

जंगल में तप कर रही थी अपने धर्म की रक्षा के लिए घोड़ा रूपधारी सूर्य को पृष्ठ भाग (पीछे) की ओर नहीं जाने दिया वह उस घोड़े से अभिमुख रही। कामवासना वश घोड़ा रूपधारी सूर्य घोड़ी रूपधारी अपनी पत्नी (विश्वकर्मा की पुत्री) के मुख की ओर चढ़कर सम्भोग करने के कारण वीर्य का कुछ अंश घोड़ी रूपधारी सूर्य की पत्नी के पेट में मुख द्वारा प्रवेश कर गया जिससे दो लड़कों (नासत्य तथा दस्र) का जन्म घोड़ी रूपी सूर्य पत्नी के मुख से हुआ जिस कारण ये दोनों बच्चे अश्विनी कुमार कहलाए। यह पुराण कथा है।}

धर्मराज ने अपने पुत्र युधिष्ठर को बताया कि आप सब का वहाँ पथ्वी लोक में इतना ही संयोग था। वह समाप्त हो चुका है। वे सर्व युद्ध में किए पाप कर्मों तथा अन्य जीवन में किए पाप कर्मों का फल भोगने के लिए नरक में डाल रखे हैं। आप के पुण्य अधिक है इसलिए आप नरक में नहीं डाल रखे हैं। अतः आप उन से नहीं मिल सकते काल ब्रह्म कि प्रबल प्रेरणा वश होकर युधिष्ठर ने उन सर्व (भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) को मिलने का हठ किया। धर्मराज ने एक यमदूत से कहा आप युधिष्ठर को इसके परिवार से मिला कर शीघ्र लौटा लाना। यमदूत युधिष्ठर को लेकर नरक में प्रवेश हुआ। वहाँ पर आत्माऐं हा-हाकार मचा रहे थे, कह रहे थे, हे युधिष्ठर हमें नरक से निकलवा दो। मैं अर्जुन हूँ ,कोई कह रहा था, मैं भीम हूँ, मैं नकुल, मैं सहदेव हूँ, मैं कुन्ती, मैं द्रोपदी हूँ। इतने में यमदूत ने कहा हे युधिष्ठर अब आप लौट चलिए। युधिष्ठर ने कहा मैं भी अपने परिवार जनों के साथ यहीं नरक में ही रहूँगा। तब धर्मराज ने आवाज लगाई युधिष्ठर यहाँ आओ मैं तेरे को एक युक्ति बताता हूँ। यह आवाज सुन कर युधिष्ठर अपने पिता धर्मराज के पास लौट आया।

धर्मराज ने युधिष्ठर को समझाया कि बेटा आपने एक झूठ बोला था कि अश्वथामा मर गया फिर दबी आवाज में कहा था पता नहीं मनुष्य था या हाथी। जबकि आप को पता था कि हाथी मरा है। उस झूठ बोलने के पाप का कर्मदण्ड देने के लिए आप को कुछ समय इसी बहाने नरक में रखना पड़ा नहीं तो वह युक्ति मैं पहले ही आप को बता देता। युधिष्ठर ने कहा कप्या आप वह विधि बताईए जिस से मेरे परिजन नरक से निकल सकें। धर्मराज ने कहा उनको एक शर्त पर नरक से निकाला जा सकता है कि आप अपने कुछ पुण्य उनको संकल्प कर दो। युधिष्ठर ने कहा मुझे स्वीकार है। यह कह कर युधिष्ठर अपने आधे पुण्य उन छः के निमित्त संकल्प कर दिए। वे छःओं नरक से बाहर आकर धर्मराज के पास जहाँ युधिष्ठर खड़ा था उपस्थित हो गए। उसी समय इन्द्र देव आया अपने पुत्र अर्जुन को साथ लेकर चला गया, पवन देवता आया अपने पुत्र भीम को साथ लेकर चला गया। इसी प्रकार अश्विनी कुमार (नासत्य, दस्र) आए नकुल व सहदेव को लेकर चले गए। कुन्ती स्वर्ग में चली गई तथा देखते-2 द्रोपदी ने दुर्गा रूप धारण किया तथा आकाश को उड़ चली कुछ ही समय में सर्व की आँखों से ओझल हो गई। वहाँ अकेला युधिष्ठर अपने पिता धर्मराज के पास रह गया। परमेश्वर कबीर जी ने अपने शिष्य धर्मदास जी को उपरोक्त कथा सुनाई तत्पश्चात् इस सर्व काल के जाल को समझाया।

कबीर परमेश्वर जी ने बताया हे धर्मदास! काल ब्रह्मकी प्रेरणा से इक्कीस ब्रह्मण्डों के प्राणी कर्म करते हैं। जैसा आपने सुना युधिष्ठर पुत्र धर्मराज, अर्जुन पुत्र इन्द्र, भीम पुत्र पवन देव, नकुल पुत्र नासत्य तथा सहदेव पुत्र दस्र थे। द्रोपदी शापवश दुर्गा की अवतार थी जो अपना कर्म

भोगने आई थी तथा कुन्ती भी दुर्गा लोक की पुण्यात्मा थी। ये सर्व काल प्रेरणा से पथ्वी पर एक फिल्म (चलचित्र) बनाने गए थे। जैसे एक करोड़पति का पुत्र किसी फिल्म में रिक्शा चालक का अभिनय करता है। फिल्म निर्माण के पश्चात् अपनी 20 लाख की कार गाड़ी में बैठ कर आनन्द करता है। भोले-भाले सिनेमा दर्शक उसे रिक्शा चालक मान कर उस पर दया करते हैं। उसके बनावटी अभिनय को देखने के लिए अपना बहुमूल्य समय तथा धन नष्ट करते हैं। ठीक इसी प्रकार उपरोक्त पात्रों (युधिष्ठर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रोपदी तथा कुन्ती) द्वारा बनाई फिल्म महाभारत के इतिहास को पढ़-2 कर पथ्वी लोक के प्राणी अपना समय व्यर्थ करते हैं। तत्त्वज्ञान को न सुनकर मानव शरीर को व्यर्थ कर जाते हैं। काल ब्रह्म यही चाहता है कि मेरे अन्तर्गत जितने भी जीव हैं। वे तत्त्वज्ञान से अपरिचित रहे तथा मेरी प्रेरणा से मेरे द्वारा भेजे गुरूओं द्वारा शास्त्रविधि विरूद्ध साधना प्राप्त करके जन्म-मत्यु के चक्र में पड़े रहे। काल ब्रह्म की प्रेरणा से तत्त्वज्ञान हीन सन्तजन व ऋषिजन कुछ वेद ज्ञान अधिक लोक वेद के आधार से ही सत्संग वचन श्रद्धालुओं को सुनाते हैं। जिस कारण से साधक पूर्ण मोक्ष प्राप्त न करके काल के जाल में ही रह जाते हैं।

हे धर्मदास! मैं पूर्ण परमात्मा की आज्ञा लेकर तत्त्वज्ञान बताने काल लोक में कलयुग में आया हूँ।

''क्या पाण्डव सदा स्वर्ग में ही रहेंगे?''

धर्मदास जी ने बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी के चरण पकड़ कर कहा हे परमेश्वर! आप स्वयं सत्यपुरूष हो धर्मदास जी ने अति विनम्र होकर आधीन भाव से प्रश्न किया।

प्रश्नः- हे बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी! क्या पाण्डव अब सदा स्वर्ग में ही रहेगें?

उत्तरः- नहीं धर्मदास! जो पुण्य युधिष्ठर ने उनको प्रदान किए हैं। उन पुण्यों का तथा स्वयं किए यज्ञ आदि धार्मिक अनुष्ठानों का पुण्य जब स्वर्ग में समाप्त हो जाएगा तब सर्व पुनः नरक में डाले जाऐंगे। युद्ध में किए पाप कर्म तथा उस जीवन में किए पाप कर्म तथा संचित पाप कर्मों के फल को भोगने के लिए नरक में अवश्य गिरना होगा। युधिष्ठर भी अपने आधे पुण्य दान करके पुण्यहीन हो गया है। वह भी शेष पुण्यों को स्वर्ग में समाप्त करके संचित पाप कर्मों के आधार से अवश्य नरक में डाला जाएगा भले ही पाप कर्म कम होने के कारण नरक समय थोड़ा ही भोगना पड़े परन्तु नरक में अवश्य जाना पड़ेगा। जैसे युधिष्ठर ने अश्वथामा मरने की झूठ बोली थी उसका भी पाप कर्मदण्ड भोगने के लिए नरक में कुछ समय के लिए उसी समय ही जाना पड़ा।

इसी प्रकार पूर्व जन्मों के संचित पाप कर्मों का दण्ड नरक में भोगना पड़ेगा। पश्चात् पथ्वी पर सर्व को अन्य प्राणियों की योनियों में भी जाना होगा। यह काल ब्रह्म का अटल विद्यान है। परन्तु हे धर्मदास! जो साधक पूर्ण परमात्मा की भक्ति पूर्ण गुरू से उपदेश प्राप्त करके आजीवन मर्यादा में रह कर करता है उसके सर्व पाप कर्म ऐसे नष्ट हो जाते है जैसे सुखे घास के बहुत बड़े ढेर को अग्नि की छोटी सी चिंगारी जला कर भस्म कर देती है। उसकी राख को हवा उड़ा कर इधर-उधर कर देती है ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भक्ति का सत्यनाम मन्त्र रूपी अग्नि घास के ढेर रूपी पाप कर्मों को भस्म कर देता है।

कबीर, जब ही सत्यनाम हृदय धरा, भयो पाप का नाश। मानो चिंगारी अग्नि की, पड़ी पुराने घास।।

''क्या द्रोपदी भी नरक जाएगी तथा अन्य प्राणियों के शरीर धारण करेगी?''

प्रश्न :- हे सद्‌गुरू! क्या द्रोपदी भी पुनः नरक व अन्य योनियों में जाएगी (धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रश्न किया)?

उत्तर :- हाँ धर्मदास! द्रोपदी, दुर्गा का अंश है। अंश का अर्थ है कि दुर्गा के शब्द से शरीर धारण करने वाली आत्मा, द्रोपदी, दुर्गा से अन्य आत्मा है परन्तु जो कष्ट द्रोपदी को होता है उसका प्रभाव दुर्गा को भी होता है। जैसे किसी की बेटी दुःखी होती है तो माता अत्यधिक दुःखी होती है। इस प्रकार द्रोपदी अब दुर्गा लोक में विशेष स्थान पर है। पुण्य समाप्त होने पर फिर नरक तथा अन्य प्राणियों के शरीर अवश्य धारण करेगी। यही दशा कुन्ती वाली आत्मा की होगी।

{पारख के अंग का सरलार्थ किया जा रहा है।}

पारख के अंग की वाणी नं. 48 :-

गरीब, गरुड़ बोध बेदी रची, राम कृष्ण हैरान। लंका परि धावा हुवा, जदि का कहूं बयान।।48।।

अध्याय ''गरूड़ बोध'' का सारांश

कबीर सागर में 11वां अध्याय ''गरूड़ बोध'' पष्ठ 65(625) पर है :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने विष्णु जी के वाहन पक्षीराज गरूड़ जी को उपदेश दिया, उसको सष्टि रचना सुनाई। अमरलोक की कथा सत्यपुरूष की महिमा सुनकर गरूड़ देव अचम्भित हुआ। अपने कानों पर विश्वास नहीं कर रहे थे। मन-मन में विचार कर रहे थे कि मैं आज यह क्या सुन रहा हूँ? मैं कोई स्वपन तो नहीं देख रहा हूँ। मैं किसी अन्य देश में तो नहीं चला गया हूँ। जो देश और परमात्मा मैंने सुना है, वह जैसे मेरे सामने चलचित्र रूप में चल रहा है। जब गरूड़ देव इन ख्यालों में खोए थे, तब मैंने कहा, हे पक्षीराज! क्या मेरी बातों को झूठ माना है। चुप हो गये हो। प्रश्न करो, यदि कोई शंका है तो समाधान कराओ। यदि आपको मेरी वाणी से दुःख हुआ है तो क्षमा करो। मेरे इन वचनों को सुनकर खगेश की आँखें भर आई और बोले कि हे देव! आप कौन हैं? आपका उद्देश्य क्या है? इतनी कड़वी सच्चाई बताई है जो हजम नहीं हो पा रही है। जो आपने अमरलोक में अमर परमेश्वर बताया है, यदि यह सत्य है तो हमें धोखे में रखा गया है। यदि यह बात असत्य है तो आप निंदा के पात्र हैं, अपराधी हैं। यदि सत्य है तो गरूड़ आपका दास खास है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बताया कि मैंने कहा, हे गरूड़देव! जो शंका आपको हुई है, यह स्वाभाविक है, परंतु आपने संयम से काम लिया है। यह आपकी महानता है। परंतु मैं जो आपको अमरपुरूष तथा सत्यलोक की जानकारी दे रहा हूँ, वह परम सत्य है। मेरा नाम कबीर है। मैं उसी अमर लोक का निवासी हूँ। आपको काल ब्रह्म ने भ्रमित कर रखा है। यह ज्ञान ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को भी नहीं है। आप विचार करो गरूड़ जी! जीव का जन्म होता है। आनन्द से रहने लगता है। परिवार विस्तार होता है। उसके पालन-पोषण में संसारिक परंपराओं का निर्वाह करते-करते वद्ध हो जाता है।

जिस परिवार को देख-देखकर अपने को धन्य मानता है। उसी परिवार को त्यागकर संसार छोड़कर मजबूरन जाना पड़ता है। स्वयं भी रो रहा है, अंतिम श्वांस गिन रहा है। परिवार भी दुःखी है। यह क्या रीति है? क्या यह उचित है? गरूड़ देव बोले, हे कबीर देव! यह तो संसार का विधान है। जन्मा है तो मरना भी है। परमेश्वर जी ने कहा कि क्या कोई मरना चाहता है? क्या कोई वद्धावस्था पसंद करता है? गरूड़ देव का उत्तर=नहीं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि यदि ऐसा हो कि न वद्ध अवस्था हो, न मत्यु तो कैसा लगे? गरूड़ देव जी ने कहा कि कहना ही क्या, ऐसा हो जाए तो आनन्द हो जाए परंतु यह तो ख्वाबी ख्याल (स्वपन विचार) जैसा है। हे धर्मदास! मैंने कहा कि वेदों तथा पुराणों को आप क्या मानते हो, सत्य या असत्य? गरूड़ देव जी ने कहा, परम सत्य।

देवी पुराण के तीसरे स्कंद में स्वयं विष्णु जी ने कहा कि हे माता! तुम शुद्ध स्वरूपा हो। यह सारा संसार तुमसे ही उद्भाषित हो रहा है। मैं ब्रह्मा तथा शंकर आपकी कपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) हुआ करता है।

परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से ऐसे पुख्ता प्रमाण (सटीक प्रमाण) सुनकर गरूड़ देव चरणों में गिर गए। अपने भाग्य को सराहा और कहा कि जो देव सष्टि की रचना, ब्रह्मा-विष्णु-महेश तथा दुर्गा देव तथा निरंजन तक की उत्पत्ति जानता है, वह ही रचनहार परमेश्वर है। आज तक किसी ने ऐसा ज्ञान नहीं बताया। यदि किसी जीव को पता होता, चाहे वह ऋषि-महर्षि भी है तो अवश्य कथा करता। मैंने बड़े-बड़े मण्डलेश्वरों के प्रवचन सुने हैं। किसी के पास यह ज्ञान नहीं है। इनको वेदों तथा गीता का भी ज्ञान नहीं है। आप स्वयं को छुपाए हुए हो। मैंने आपको पहचान लिया है। कपा करके मुझे शरण में ले लो परमेश्वर।

परमेश्वर कबीर जी ने गरूड़ से कहा कि आप पहले अपने स्वामी श्री विष्णु जी से आज्ञा ले लो कि मैं अपना कल्याण कराना चाहता हूँ। एक महान संत मुझे मिले हैं। मैंने उनका ज्ञान सुना है। यदि आज्ञा हो तो मैं अपना कल्याण करा लूँ। मैं आपका दास नौकर हूँ, आप मालिक हैं। हमें सब समय इकट्ठा रहना है। यदि मैं छिपकर दीक्षा ले लूँगा तो आपको दुःख होगा। गरूड़ ने ऐसा ही किया। विष्णु जी से सब बात बताई। श्री विष्णु जी ने कहा मैं आपको मना नहीं करता, आप स्वतंत्र हैं। आपने अच्छा किया, सत्य बता दिया। मुझे कोई एतराज नहीं है।

हे धर्मदास! मैंने गरूड़ को प्रथम मंत्र दीक्षा पाँच नाम (कमलों को खोलने वाले प्रत्येक देव की साधना के नाम) की दी। गरूड़ देव ने कहा कि हे गुरूदेव! यह मंत्र तो इन्हीं देवताओं के हैं। अमर पुरूष का मंत्र तो नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि ये इनकी पूजा के मंत्र नहीं हैं। ये इन देवताओं को अपने अनुकूल करके इनके जाल से छूटने की कूँजी (Key) है। इनके वशीकरण मंत्र हैं। जैसे भैंसे को आकर्षित करने के लिए यदि उसको भैंसा-भैंसा करते हैं तो वह आवाज करने वाले की ओर देखता तक नहीं। जब उसका वशीकरण नाम पुकारा जाता है, हुर्र-हुर्र तो वह तुरंत प्रभाव से सक्रिय हो जाता है। आवाज करने वाले की ओर दौड़ा आता है। आवाज करने वाला व्यक्ति उससे अपनी भैंस को गर्भ धारण करवाता है। इसी प्रकार आप यदि श्री विष्णु जी के अन्य किसी नाम का जाप करते

रहें, वे ध्यान नहीं देते। जब आप इस मंत्र का जाप करोगे तो विष्णु देव जी तुरंत प्रभावित होकर साधक की सहायता करते हैं। ये देवता तीनों लोकों (पृथ्वी, स्वर्ग तथा पाताल) के प्रधान देवता हैं। ये केवल संस्कार कर्म लिखा ही दे सकते हैं। इस मंत्र के जाप से हमारे पुण्य अधिक तथा भक्ति धन अधिक संग्रहित हो जाता है। उसके प्रतिफल में ये देवता साधक की सहायता करते हैं। इस प्रकार इनकी साधना तथा पूजा का अंतर समझना है। जैसे अपने को आम खाने हैं तो पहले मेहनत, मजदूरी, नौकरी करेंगे, धन मिलेगा तो आम खाने को मिलेगा। नौकरी पूजा नहीं होती। उस समय हमारा पूज्य आम होता है। पूज्य की प्राप्ति के लिए किया गया प्रयत्न नौकरी है। इसी प्रकार अपने पूज्य परमेश्वर कबीर जी हैं तथा अमर लोक है। उसके लिए हम श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु, श्री शिव, श्री गणेश तथा श्री दुर्गा जी की मजदूरी करते हैं, साधना करते हैं। पूजा परमेश्वर की करते हैं। गरूड़ जी बड़े प्रसन्न हुए और इस अमृत ज्ञान की चर्चा हेतु श्री ब्रह्मा जी से मिले। उनको बताया कि मैंने एक महर्षि से अद्भुत ज्ञान सुना है। मुझे उनका ज्ञान सत्य लगा है। उन्होंने बताया कि आप (ब्रह्मा), विष्णु तथा शिव नाशवान हो, पूर्ण करतार नहीं हो। आप केवल भाग्य में लिखा ही दे सकते हो। आप किसी की आयु वृद्धि नहीं कर सकते हो। आप किसी के कर्म कम-अधिक नहीं कर सकते। पूर्ण परमात्मा अन्य है, अमर लोक में रहता है। वह पाप कर्म काट देता है। वह मृत्यु को टाल देता है। आयु वृद्धि कर देता है। प्रमाण भी वेदों में बताया है। ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 2 में कहा है कि रोगी का रोग बढ़ गया है। वह मृत्यु को प्राप्त हो गया है। तो भी मैं उस भक्त को मृत्यु देवता से छुड़वा लाऊँ, उसको नवजीवन प्रदान कर देता हूँ। उसको पूर्ण आयु जीने के लिए देता हूँ।

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 161 मंत्र 5 में कहा है कि हे पुनर्जन्म प्राप्त प्राणी! तू मेरी भक्ति करते रहना। यदि तेरी आँखें भी समाप्त हो जाएंगी तो तेरी आँखें स्वस्थ कर दूँगा, तेरे को मिलूँगा भी यानि मैं तेरे को प्राप्त भी होऊँगा।

ब्रह्मा जी को वेद मंत्र कंठस्थ हैं। तुरंत समझ गए, परंतु संसार में लोकवेद के आधार से ब्रह्मा जी अपने आपको प्रजापिता यानि सबकी उत्पत्तिकर्ता मान रहे थे। वेदों को कठंस्थ (याद) कर लेना भिन्न बात है। वेद मंत्रों को समझना विशेष ज्ञान है। मान-बड़ाई वश होकर ब्रह्मा जी ने कहा कि वेदों का ज्ञान मेरे अतिरिक्त विश्व में किसी को नहीं है। इन मंत्रों का अर्थ गलत लगाया है। कबीर परमेश्वर ने ऐसे व्यक्तियों के विषय में कहा है कि :-

कबीर, जान बूझ साच्ची तजैं, करै झूठ से नेह। ताकि संगत हे प्रभु, स्वपन में भी ना देय।।

ब्रह्मा जी गरूड़ के वचन सुनकर अति क्रोधित हुए और कहा कि तेरी पक्षी वाली बुद्धि है। तेरे को कोई कुछ कह दे। उसी की बातों पर विश्वास कर लेता है। तेरे को अपनी अक्ल नहीं है। ब्रह्मा जी ने उसी समय विष्णु, महेश, इन्द्र तथा सब देवताओं व ऋषियों को बुला लिया। सभा लग गई। ब्रह्मा जी ने उनको बुलाने का कारण बताया कि गरूड़ आज नई बात कर रहा है कि ब्रह्मा-विष्णु-महेश नाशवान हैं। पूर्ण परमात्मा कोई अन्य है। वह अमर लोक में रहता है। तुम कर्ता नहीं हो। यह बात सुनकर श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी बहुत क्रोधित हुए और गरूड़ को ब्रह्मा वाले उलाहणें (दोष निकालकर बुरा-भला कहना) कहे। फिर सबने

मिलकर निर्णय लिया कि माता (दुर्गा) जी से सत्य जानते हैं। सब मिलकर माता के पास गए। यही प्रश्न पूछा कि क्या हमारे (ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव) से अन्य कोई पूर्ण प्रभु है। क्या हम नाशवान हैं? माता ने दो टूक जवाब दिया कि तुमको यह गलतफहमी (भ्रम) कब से हो गया कि तुम अविनाशी तथा जगत के कर्ता हो। यदि ऐसा है तो तुम मेरे भी कर्ता (बाप) हुए जबकि तुम्हारा जन्म मेरी कोख से हुआ है। वास्तव में परमेश्वर अन्य है, वही अविनाशी है। वही सबका कर्ता है। यह बात सुनकर सभा भंग हो गई, सब चले गए। परंतु ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी के गले में यह सत्य नहीं उतर पा रहा था। उन्होंने गरूड़ को बुलाया। गरूड़ ने आकर प्रणाम किया। आदेश पाकर बैठ गया। तीनों देवताओं ने कहा, हे पक्षीराज! आपको कैसे विश्वास हो कि हम जगत के कर्ता नहीं हैं? आप जो चाहो, परीक्षा करो। गरूड़ जी उठकर उड़कर मेरे पास (कबीर जी के पास) आए तथा सब वतांत बताया। तब मैंने कहा कि बंग देश (वर्तमान में बांग्लादेश) में एक ब्राह्मण का बारह वर्षीय बालक है। उसकी आयु समाप्त होने वाली है। वह कुछ दिन का मेहमान है। मैंने उस बालक को शरण में लेने के लिए ब्रह्मा, विष्णु, शिव की स्थिति बताई जो गरूड़ तेरे को बताई है। उस बालक ने बहुत विवाद किया और मेरे ज्ञान को नहीं माना। तब मैंने उस बालक से कहा कि तेरी आयु तीन दिन शेष है। यदि तेरे ब्रह्मा-विष्णु-शिव समर्थ हैं तो अपनी रक्षा कराओ। मैं इतना कहकर अंतर्ध्यान हो गया। बालक बेचैन है। उस बालक को लेकर देवताओं के पास जाओ। उनसे कुछ बनना नहीं है। फिर आप मेरे से ध्यान से बातें करना। मैं तेरे को आगे क्या करना है, वह बताऊँगा। गरूड़ जी उस बालक को लेकर ब्रह्मा-विष्णु-शिव के पास गए। गरूड़ ने बालक को समझाया कि आप उन देवताओं से कहना कि हम आपके भक्त हैं। मेरे दादा-परदादा, पिता और मैंने सदा आपकी पूजा की है। मेरे जीवन के दो दिन शेष हैं। मेरी आयु भी क्या है? कपा मेरी आयु वद्धि कर दें। बच्चे ने यही विनय की तो तीनों ने कोशिश की परंतु व्यर्थ। फिर विचार किया कि धर्मराज (न्यायधीश) के पास चलते हैं। सबका हिसाब (account) उसी के पास है। उससे वद्धि करा देते हैं। यह विचार करके सबके सब धर्मराज के पास गए। उनसे तीनों देवताओं ने कहा कि पहले तो यह बताओ कि इस ब्राह्मण बच्चे की कितनी आयु है? धर्मराज ने डॉयरी (रजिस्टर) देखकर बताया कि कल इसकी मत्यु हो जाएगी। तीनों देवताओं ने कहा कि आप इस बच्चे की आयु वद्धि कर दो। धर्मराज ने कहा, यह असंभव है। तीनों ने कहा कि हम आपके पास बार-बार नहीं आते, आज इज्जत-बेइज्जती का प्रश्न है। हमारे आये हुओं की इज्जत तो रख लो। धर्मराज ने कहा कि एक पल भी न बढ़ाई जा सकती है, न घटाई जा सकती है। यदि आप अपनी आयु इसको दे दो तो वद्धि कर सकता हूँ। यह सुनते ही सबकी हवा निकल गई। उस समय कहने लगे कि यह तो परमेश्वर ही कर सकता है। वहाँ से तुरंत चल पड़े और गरूड़ से कहा कि कोई और समर्थ शक्ति है तो तुम इसकी आयु बढ़वाकर दिखा दो। गरूड़ ने कबीर जी से ध्यान द्वारा (टेलीफोन से) सम्पर्क किया। परमेश्वर कबीर जी ने ध्यान द्वारा बताया कि आप इसके लिए मानसरोवर से जल ले आओ। वहाँ एक श्रवण नाम का भक्त मिलेगा। उसको मैंने सब समझा दिया है, आप अमत ले आओ। गरूड़ जी ने जैसी आज्ञा हुई, वैसा ही किया। अमत

लाकर उस बच्चे को पिला दिया। उस बालक के पास मैं गया। गरूड़ ने उसे सब समझा दिया कि अमत तो बहाना है। ये स्वयं परमेश्वर हैं। इन्होंने जल मन्त्रित करके दिया था। बालक तुम दीक्षा ले लो। इस अमत से तो दस दिन जीवित रहोगे। बालक ने मेरे से दीक्षा ली। जब बालक 15 दिन तक नहीं मरा तो गरूड़ ने तीनों ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी को बताया कि वह बालक जीवित है। मेरे गुरू जी से दीक्षा ले ली है। उन्होंने उस बच्चे को पूर्ण आयु जीने का आशीर्वाद दे दिया है। ब्रह्मा-विष्णु-महेश तीनों फिर धर्मराज के पास गए, साथ में गरूड़ भी गया। तीनों देवताओं ने धर्मराज से पूछा कि वह बालक कैसे जीवित है, उसको मर जाना चाहिए था। धर्मराज ने उसका खाता देखा तो उसकी आयु लम्बी लिखी थी। धर्मराज ने कहा कि यह ऊपर से ही होता है। यह तो कभी-कभी होता है। उस परमेश्वर की लीला को कौन जान सकता है? तीनों देवताओं को आश्चर्य हुआ, परंतु मान-बड़ाई के कारण प्रत्यक्ष देखकर भी सत्य को माना नहीं। अपना अहम भाव नहीं त्यागा। गरूड़ को विश्वास अटल हो गया।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

इस गरूड़ बोध के अंत में वासुकी नाग कन्या वाला प्रकरण गलत तरीके से लिखा है। इसमें गरूड़ को गुरू पद पर चित्रार्थ कर रखा है। वह ऐसा नहीं है। जो भी किया, परमेश्वर कबीर जी ने किया है।

''अब पढ़ें कुछ अमतवाणी गरूड़ बोध से''

धर्मदास वचन

धर्मदास बीनती करै, सुनहु जगत आधार। गरूड़ बोध भेद सब, अब कहो तत्त्व विचार।।

सतगुरू वचन (कबीर वचन)

प्रथम गरूड़ सों भैंट जब भयऊ। सत साहब मैं बोल सुनाऊ।
धर्मदास सुनो कहु बुझाई। जेही विधि गरूड़ को समझाई।।

गरूड़ वचन

सुना बचन सत साहब जबही। गरूड़ प्रणाम किया तबही।।
शीश नीवाय तिन पूछा चाहये। हो तुम कौन कहाँ से आये।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

कहा कबीर है नाम हमारा। तत्त्वज्ञान देने आए संसारा।।
सत्यलोक से हम चलि आए। जीव छुड़ावन जग में प्रकटाए।।

गरूड़ वचन

सुनत बचन अचम्भो माना। सत्य पुरूष है कौन भगवाना।।
प्रत्यक्षदेव श्री विष्णु कहावै। दश औतार धरि धरि जावै।।

ज्ञानी (कबीर) बचन

तब हम कहया सुनो गरूड़ सुजाना। परम पुरूष है पुरूष पुराना।।(आदि का)
वह कबहु ना मरता भाई। वह गर्भ से देह धरता नाहीं।।

कोटि मरे विष्णु भगवाना। क्या गरूड़ तुम नहीं जाना।।
जाका ज्ञान बेद बतलावैं। वेद ज्ञान कोई समझ न पावैं।।
जिसने कीन्हा सकल बिस्तारा। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव का सिरजनहारा।।
जुनी संकट वह नहीं आवे। वह तो साहेब अक्षय कहावे।।

गरूड़ वचन

राम रूप धरि विष्णु आया। जिन लंका का मारा राया।।
पूर्ण ब्रह्म है विष्णु अविनाशी। है बन्दी छोड़ सब सुख राशी।।
तेतीस कोटि देवतन की बन्द छुड़ाई। पूर्ण प्रभु हैं राम राई।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तुम गरूड़ कैसे कहो अविनाशी। सत्य पुरूष बिन कटै ना काल की फांसी।।
जा दिन लंक में करी चढ़ाई। नाग फांस में बंधे रघुराई।।
सेना सहित राम बंधाई। तब तुम नाग जा मारे भाई।।
तब तेरे विष्णु बन्दन से छूटे। याकु पूजे भाग जाके फूटे।।
कबीर ऐसी माया अटपटी, सब घट आन अड़ी।
किस–किस कूं समझाऊँ, कूऐ भांग पड़ी।।

गरूड़ वचन

ज्ञानी गरूड़ है दास तुम्हारा। तुम बिन नहीं जीव निस्तारा।।
इतना कह गरूड़ चरण लिपटाया। शरण लेवों अविगत राया।।
कबहु ना छोडूँ तुम्हारा शरणा। तुम साहब हो तारण तरणा।।
पत्थर बुद्धि पर पड़े है ज्ञानी। हो तुम पूर्ण ब्रह्म लिया हम जानी।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

तब हम गरूड़ कुं पाँच नाम सुनाया। तब वाकुं संशय आया।।
यह तो पूजा देवतन की दाता। या से कैसे मोक्ष विधाता।।
तुमतो कहो दूसरा अविनाशी। वा से कटे काल की फांसी।।
नायब से कैसे साहेब डरही। कैसे मैं भवसागर तिरही।।

ज्ञानी (कबीर) वचन

साधना को पूजा मत जानो। साधना कूं मजदूरी मानो।।
जो कोऊ आम्र फल खानो चाहै। पहले बहुते मेहनत करावै।।
धन होवै फल आम्र खावै। आम्र फल इष्ट कहावै।।
पूजा इष्ट पूज्य की कहिए। ऐसे मेहनत साधना लहिए।।
यह सुन गरूड़ भयो आनन्दा। संशय सूल कियो निकन्दा।।

❖ **भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी से गरूड़ देव ने कहा कि हे परमेश्वर! आपने तो इन्हीं देवताओं के नाम मंत्र दे दिये। यह इनकी पूजा है। आपने बताया कि ये तो केवल 16 कला युक्त प्रभु हैं। काल एक हजार कला युक्त प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म असँख्य कला का परमेश्वर है। आपने संष्टि रचना में यह भी बताया है कि काल ने आपको रोक रखा है। काल ब्रह्म के**

आधीन तीनों देवता ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी हैं। हे परमेश्वर! नायब (उप यानि छोटा) से साहब (स्वामी-मालिक) कैसे डरेगा? यानि ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी तो केवल काल ब्रह्म के नायब हैं। जैसे नायब तहसीलदार यानि छोटा तहसीलदार होता है। तो छोटे से बड़ा कैसे डर मानेगा? भावार्थ है कि ये काल ब्रह्म के नायब हैं। आपने इनकी भक्ति बताई है, इनके मंत्र जाप दिए हैं। ये नायब अपने साहब (काल ब्रह्म) से हमें कैसे छुड़वा सकेंगे? तब परमेश्वर कबीर जी ने पूजा तथा साधना में भेद बताया कि यदि किसी को आम्र फल यानि आम का फल खाने की इच्छा हुई है तो आम फल उसका पूज्य है। उस पूज्य वस्तु को प्राप्त करने के लिए किया गया प्रयत्न साधना कही जाती है। जैसे धन कमाने के लिए मेहनत करनी पड़ती है। उस धन से आम मोल लेकर खाया जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा हमारा ईष्ट देव यानि पूज्य देव है। जो देवताओं के मंत्र का जाप मेहनत (मजदूरी) है। जो नाम जाप की कमाई रूपी भक्ति धन मिलेगा, उसको काल ब्रह्म में छोड़कर कर्जमुक्त होकर अपने ईष्ट यानि पूज्य देव कबीर देव (कविर्देव) को प्राप्त करेंगे। यह बात सुनकर गरूड़ जी अति प्रसन्न हुए तथा गुरू के पूर्ण गुरू होने का भी साक्ष्य मिला कि पूर्ण गुरु ही शंका का समाधान कर सकता है और दीक्षा प्राप्ति की। गरूड़ को त्रेतायुग में शरण में लिया था। श्री विष्णु जी का वाहन होने के कारण तथा बार-बार उनकी महिमा सुनने के कारण तथा कुछ चमत्कार श्री विष्णु जी के देखकर गरूड़ जी की आस्था गुरू जी में कम हो गई, परंतु गुरू द्रोही नहीं हुआ। फिर किसी जन्म में मानव शरीर प्राप्त करेगा, तब परमेश्वर कबीर जी गरूड़ जी की आत्मा को शरण में लेकर मुक्त करेंगे। दीक्षा के पश्चात् गरूड़ जी ने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी से ज्ञान चर्चा करने का विचार किया। गरूड़ जी चलकर ब्रह्मा जी के पास गए। उनसे ज्ञान चर्चा की।

'''गरूड़ वचन ब्रह्मा के प्रति''

ब्रह्मा कहा तुम कैसे आये। कहो गरूड़ मोहे अर्थाय।।
तब हम कहा सुनों निरंजन पूता। आया तुम्हें जगावन सूता।।
जन्म–मरण एक झंझट भारी। पूर्ण मोक्ष कराओ त्रिपुरारी।।

''ब्रह्मा वचन''

हमरा कोई नहीं जन्म दाता। केवल एक हमारी माता।।
पिता हमारा निराकर जानी। हम हैं पूर्ण सारंगपाणी।।
हमरा मरण कबहु नहीं होवै। कौन अज्ञान में पक्षि सोवै।।
तबही ब्रह्मा विमान मंगावा। विष्णु, ब्रह्मा को तुरंत बुलावा।।
गए विमान दोनों पासा। पल में आन विराजे पासा।।
इन्द्र कुबेर वरूण बुलाए। तेतिस करोड़ देवता आए।।
आए ऋषि मुनी और नाथा। सिद्ध साधक सब आ जाता।।
ब्रह्मा कहा गरूड़ नीन्द मैं बोलै। कोरी झूठ कुफर बहु तोलै।।
कह कोई और है सिरजनहारा। जन्म–मरण बतावै हमारा।।
ताते मैं यह मजलिस जोड़ी। गरूड़ के मन क्या बातां दौड़ी।।

ऋषि मुनि अनुभव बताता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव विधाता।।
निर्गुण सरगुण येही बन जावै। कबहु नहीं मरण मैं आवै।।

''विष्णु वचन''

पक्षीराज यह क्या मन में आई। पाप लगै बना आलोचक भाई।।
हमसे और कौन बडेरा दाता। हमहै कर्ता और चौथी माता।।
तुमरी मति अज्ञान हरलीनि। हम हैं पूर्ण करतार तीनी।।

''महादेव वचन''

कह महादेव पक्षी है भोला। हृदय ज्ञान इन नहीं तोला।।
ब्रह्मा बनावै विष्णु पालै। हम सबका का करते कालै।।
और बता गरूड़ अज्ञानी। ऋषि बतावै तुम नहीं मानी।।
चलो माता से पूछै बाता। निर्णय करो कौन है विधाता।।
सबने कहा सही है बानी। निर्णय करेगी माता रानी।।
सब उठ गए माता पासा। आपन समस्या करी प्रकाशा।।

''माता वचन''

कहा माता गरूड़ बताओ। और कर्ता है कौन समझाओ।।

''गरूड़ वचन''

मात तुम जानत हो सारी। सच्च बता कहे न्याकारी।।
सभा में झूठी बात बनावै। वाका वंश समूला जावै।।
मैं सुना और आँखों देखा। करता अविगत अलग विशेषा।।
जहाँ से जन्म हुआ तुम्हारा। वह है सबका सरजनहारा।।
वेद जाका नित गुण गावैं। केवल वही एक अमर बतावै।।
मरहें ब्रह्मा विष्णु नरेशा। मर हैं सब शंकर शेषा।।
अमरपुरूष सत पुर रहता। अपने मुख सत्य ज्ञान वह कहता।।
वेद कहे वह पंथ्वी पर आवै। भूले जीवन को ज्ञान बतलावै।।
क्या ये झूठे शास्त्र सारे। तुम व्यर्थ बन बैठे सिरजनहारे।।
मान बड़ाई छोड़ो भाई। ताकि भक्ति करे अमरापुर जाई।।
माता कहना साची बाता। बताओ देवी है कौन विधाता।।

''माता (दुर्गा) वचन''

माता कह सुनो रे पूता। तुम जोगी तीनों अवधूता।।
भक्ति करी ना मालिक पाए। अपने को तुम अमर बताए।।
वह कर्ता है सबसे न्यारा। हम तुम सबका सिरजनहारा।।
गरूड़ कहत है सच्ची बानी। ऐसे बचन कहा माता रानी।।
सब उठ गए अपने अस्थाना। साच बचन काहु नहीं माना।।

''गरूड़ वचन''

ब्रह्मा विष्णु मोहे बुलाया। महादेव भी वहाँ बैठ पाया।।

तीनों कहे कोई दो प्रमाणा। तब हम तोहे साचा जाना।।
मैं कहा गुंगा गुड़ खावै। दुजे को स्वाद क्या बतलावै।।
मैं जात हूँ सतगुरू पासा। ला प्रमाण करू भ्रम विनाशा।।
त्रिदेव कहें लो परीक्षा हमारी। पूर्ण करें तेरी आशा सारी।।
हमही मारें हमही बचावैं। हम रहत सदा निर्दावैं।।
गरूड़ कहा हम करें परीक्षा। तुम पूर्ण तो लूं तुम्हारी दीक्षा।।
उड़ा वहाँ से गुरू पासे आया। सब वंन्तात कह सुनाया।।

''सतगुरू (कबीर) वचन''

गरूड़ सुनो बंग देश को जाओ। बालक मरेगा कहो उसे बचाओ।।
दिन तीन की आयु शेषा। करो जीवित ब्रह्मा विष्णु महेशा।।
फिर हम पास आना भाई। हम बालक को देवैं जिवाई।।
बंग देश में गरूड़ गयो, बालक लिया साथ।
त्रिदेवा से अर्ज करी, जीवन दे बालक करो सुनाथ।।

''त्रिदेव वचन''

धर्मराज पर है लेखा सारा। बासे जाने सब विचारा।।
गरूड़ और बालक सारे। गए धर्मराज दरबारे।।
धर्मराज से आयु जानी। दिन तीन शेष बखानी।।
याकी आयु बढ़ै नाहीं। मंत्यु अति नियड़े आयी।।
त्रिदेव कहँ आए राखो लाजा। हम क्या मुख दिखावैं धर्मराजा।।
धर्म कह आपन आयु दे भाई। तो बालक की आयु बढ़ जाई।।
चले तीनों न नहीं पार बसाई। बने बैठे थे समर्थ राई।।
सुन गरूड़ यह सत्य है भाई। आई मंत्यु न टाली जाई।।

गरूड़ वचन

समर्थ में गुण ऐसा बताया। आयु बढ़ावै और अमर करवाया।।
अब मैं जाऊँ समर्थ पासा। बालक बचने की पूरी आशा।।
गया गरूड़ कबीर की शरणा। दया करो हो साहब जरणा(विश्वास)।।

''कबीर साहब वचन''

सुनो गरूड़ एक अमर बानी। यह अमंत ले बालक पिलानी।।
जीवै बालक उमर बढ़ जावै। जग बिचरे बालक निर्दावै।।
बालक लाना मेरे पासा। नाम दान कर काल विनाशा।।
जैसा कहा गरूड़ ने कीन्हा। बालक कूं जा अमंत दीना।।
ले बालक तुरंत ही आए। सतगुरू से दीक्षा पाए।।
आशीर्वाद दिया सतगुरू स्वामी। दया करि प्रभु अंतर्यामी।।
बदला धर्मराज का लेखा। ब्रह्मा विष्णु शिव आँखों देखा।।
गए फिर धर्मराज दरबारा। लेखा फिर दिखाऊ तुम्हारा।।

धर्मराज जब खाता खोला। अचर्ज देख मुख से बोला।।
परमेश्वर का यह खेल निराला। उसका क्या करत है काला।।
वो समर्थ राखनहारा। वाने लेख बदल दिया सारा।।
सौ वर्ष यह बालक जीवै। भक्ति ज्ञान सुधा रस पीवै।।
यह भी लेख इसी के माहीं। आँखों देखो झूठी नाहीं।।
देखा लेखा तीनों देवा। अचर्ज हुआ कहूँ क्या भेवा।।
बोले ब्रह्मा विष्णु महेशा। परम पुरूष है कोई विशेषा।।
जो चाहे वह मालिक करसी। वाकी शरण फिर कैसे मरसी।।
पक्षीराज तुम साचे पाये। नाहक हम मगज पचाऐ।।
करो तुम जो मान मन तेरा। तुम्हरा गरूड़ भाग बड़ेरा।।
पूर्ण ब्रह्म अविनाशी दाता। सच्च में है कोई और विधाता।।
इतना कह गए अपने धामा। गरूड़ और बालक करि प्रणामा।।
भक्ति करी बालक चित लाई। गरूड़ अरू बालक भये गुरू भाई।।
धर्मदास यह गरूड़ को बोधा। एक–एक वचन कहा मैं सोधा।।

''कबीर सागर के अध्याय ''गरूड़ बोध'' का सारांश सम्पूर्ण हुआ।''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 49-51 :-**

गरीब, उतपति परलौ जात हैं, अनंत कोटि ब्रह्मंड। जोगजीत समझाईया, जिब उधरे कागभुसंड।।49।।
गरीब, बाशिष्ट बिश्वामित्र से, आवैं जाहिं अनेक। कागभुसंड की पलक में, जो चाहे सो देख।।50।।
गरीब, ऐसे कागभुसंड हैं, जौगजीत के दास। चरचा ज्ञान सुनाय करि, दीन्हा पद में बास।।51।।

❖ **इन वाणियों का सरलार्थ आदि पुराण के सरलार्थ में किया जाएगा। काग भुसंड की कथा है।**

❖ **वाणी नं. 52 :-**

गरीब, दुर्बासा और मुनिंद्रका, हुवा ज्ञान संवाद। दत्त तत्त्व में मिल गये, जा घर विद्या न बाद।।52।।

सरलार्थ :- त्रेतायुग में परमात्मा कबीर जी मुनीन्द्र ऋषि के नाम से प्रकट हुए। परमात्मा के गुण वेदों में लिखे हैं कि परमेश्वर ऊपर के लोक में रहता है। वहाँ से गति करके सशरीर पथ्वी पर आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उन्हें तत्वज्ञान का उपदेश करता है। इसी सिद्धांत के अनुसार परमेश्वर कबीर जी त्रेतायुग में ऋषि दुर्वासा जी को मिले। उनसे अध्यात्म ज्ञान पर संवाद किया। ऋषि दुर्वासा सिद्धि युक्त था। काल ने अपना परमाणु बम तैयार कर रखा था। अहंकार से भरा था। काल का विशेष प्रभाव था। सब सत्य ज्ञान सुनकर आत्मा तो मान रही थी कि वास्तविक अध्यात्म ज्ञान तो यही है, परंतु खाखी मन मान-बड़ाई त्यागने को तैयार नहीं था। दीक्षा भी ली, परंतु अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं किया। परमात्मा ने सतनाम, सारनाम नहीं दिया।

ऋषि दत्तात्रे जी ने परमात्मा कबीर जी (ऋषि मुनीन्द्र रूप से) तत्वज्ञान समझा, दीक्षा ली। सतनाम तक मिला। सारनाम उस समय किसी को नहीं देना था क्योंकि सारनाम

पर उस समय ऋषियों को विश्वास नहीं होना था। कलयुग के पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीतने तक सार नाम, सार ज्ञान (तत्वज्ञान) गुप्त रखना था। ये दोनों कारण मुख्य रहे। जिस कारण से सारनाम नहीं दिया गया।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 53-54 :-**

गरीब, बहौरि शमशतबरेजकूं, समझाये मनसूर। शिमली पर साका हुआ, पौंहचे तखत हजूर।।53।।
गरीब, शिख बंधी सतगुरु सही, चकवैं ज्ञान अमान। शीश कट्या मनसूर का, फेरि दिया जदि दान।।54।।

{इन वाणियों में भक्त मशूंर अली का वर्णन अधूरा है। इसका कुछ ज्ञान अचला के अंग की वाणी नं. 369-371 में भी है।}

❖ **अचला के अंग की वाणी नं. 369-371 :-**

❖ **अचला के अंग की वाणी मंशूर अली व बहन शिमली के विषय में :-**

गरीब, सिमली कूं सतगुरू मिले, संग भाई मंशूर। प्याला उतरया अरस तें, काटे कौन कसूर।।369।।
गरीब शीश कट्या मंशूर का, दोनों भुजा समेत। शूली चढ़या पुकारता, कदे न छाड़ों खेत।।370।।
गरीब फूक—फाक कोयले किये, जल में दिया बहाय। अनल हक कहता चल्या, छाड़्या नहीं स्वभाव।।371।।

''मंशूर अली की अपनी वाणी''

अगर है शौक अल्लाह से मिलने का, तो हरदम नाम लौ लगाता जा।।(टेक)।।
न रख रोजा, न मर भूखा, न मस्जिद जा, न कर सिजदा।
वजू का तोड़ दे कूजा, शराबे नाम जाम पीता जा।।1।।
पकड़ कर ईश्क की झाड़ू, साफ कर दिल के हूजरे को।
दूई की धूल रख सिर पर, मूसल्ले पर उड़ाता जा।।2।।
धागा तोड़ दे तसबी, किताबें डाल पानी में।
मसाइक बनकर क्या करना, मजीखत को जलाता जा।।3।।
कहै मन्सूर काजी से, निवाला कूफर का मत खा।
अनल हक्क नाम बर हक है, यही कलमा सुनाता जा।।4।।

❖ **उपरोक्त वाणियों का सरलार्थ :-**

परमात्मा कबीर जी अपने सिद्धांत अनुसार एक अच्छी आत्मा समशतरबेज मुसलमान को जिंदा बाबा के रूप में मिले थे। उन्हें अल्लाहू अकबर (कबीर परमात्मा) यानि अपने विषय में समझाया, सतलोक दिखाया, वापिस छोड़ा। उसके पश्चात् कबीर परमात्मा यानि जिंदा बाबा नहीं मिले। उसे केवल एक मंत्र दिया ''अनल हक'' जिसका अर्थ मुसलमान गलत करते थे कि मैं वही हूँ यानि मैं अल्लाह हूँ अर्थात् जीव ही ब्रह्म है। वह यथार्थ मंत्र ''सोहं'' है। इसका कोई अर्थ करके स्मरण नहीं करना होता। इसको परब्रह्म (अक्षर पुरूष) का वशीकरण मंत्र मानकर जाप करना होता है। समशतरबेज परमात्मा के दिए मंत्र का नाम जाप करता था। उसका आश्रम एक शहर के बाहर बणी में था। उस नगरी के राजा की एक लड़की जिसका नाम शिमली था, समशतरबेज के ज्ञान व सिद्धि से प्रभावित होकर उनकी परम भक्त हो गई। उसने दिन-रात नाम जाप किया। सतगुरू की सेवा करने प्रतिदिन

आश्रम में जाने लगी। पिता जी से आज्ञा लेकर जाती थी। बेटी के साधु भाव को देखकर पिता भी उसे नहीं रोक पाया। वह प्रतिदिन सुबह तथा शाम सतगुरू जी का भोजन स्वयं बनाकर ले जाया करती थी। किसी चुगलखोर व्यक्ति ने मंशूर अली से कहा कि आपकी बहन शिमली शाम के समय आश्रम में अकेली जाती है। यह शोभा नहीं देता। नगर में आलोचना हो रही है। एक शाम को जब शिमली बहन संत जी का खाना लेकर आश्रम में गई तो भाई मंशूर गुप्त रूप से पीछे-पीछे आश्रम तक गया। दीवार के सुराख से अंदर की गतिविधि देखने लगा। लड़की ने संत को भोजन खिलाया। फिर संत जी ने ज्ञान सुनाया। मंशूर भी ज्ञान सुन रहा था। वह जानना चाहता था कि ये दोनों क्या बातें करते हैं? क्या गतिविधि करेंगे? प्रत्येक क्रिया जो शिमली तथा संत समशतरबेज कर रहे थे तथा जो बातें कर रहे थे, ध्यानपूर्वक सुन रहा था। अन्य दिन तो आधा घंटा सत्संग करता था, उस दिन दो घण्टे सत्संग किया। मंशूर ने भी प्रत्येक वचन ध्यानपूर्वक सुना। वह तो दोष देखना चाहता था, परंतु उस तत्वज्ञान को सुनकर कतार्थ हो गया।

परमात्मा की भक्ति अनिवार्य है। अल्लाह साकार है, कबीर है। ऊपर के आसमान में विराजमान है। पथ्वी के ऊपर भी मानव शरीर में प्रकट होता है। सत्संग के बाद संत समशतरबेज तथा बहन शिमली ने दोनों हाथ सामने करके परमात्मा से प्रसाद माँगा। आसमान से दो कटोरे आए। दोनों के हाथों में आकर टिक गए। समशतबेज ने उस दिन आधा अमत पीया। शिमली बहन सब पी गई। समतरबेज ने कहा कि बेटी! यह शेष मेरा अमत प्रसाद आश्रम से बाहर खड़े कुत्ते को पिला दे। उसका अंतःकरण पाप से भरा है। उसका दिल (सीना) साफ हो जाएगा। शिमली गुरूजी वाले शेष बचे प्रसाद को लेकर दीवार की ओर गई। गुरूजी ने कहा कि इस सुराख से फैंक दे। बाहर जाएगी तो कुत्ता भाग जाएगा। लड़की ने तो गुरूजी के प्रत्येक वचन का पालन करना था। शिमली ने उस सुराख से अमत फैंक दिया जिसमें से मंशूर जासूसी कर रहा था। मंशूर का मुख कुछ स्वभाविक खुला था। उसमें सारा अमत चला गया। मंशूर का अंतःकरण साफ हो गया। उसकी लगन सतगुरू से मिलने की प्रबल हो गई। वह आश्रम के द्वार पर आया। शिमली ने पहचान लिया। वह डर गई, बोली नहीं। मंशूर सीधा गुरू समशतरबेज के चरणों में गिर गया। अपने मन के पाप को बताया। अपने उद्धार की भीख माँगी। समशतरबेज ने दीक्षा दे दी।

मंशूर प्रतिदिन आश्रम में जाने लगा। ''अनल हक'' मंत्र को बोल-बोलकर जाप करने लगा। मुसलमान समाज ने विरोध किया। कहा कि मंशूर काफिर हो गया। परमात्मा को मानुष जैसा बताता है। पथ्वी पर आता है परमात्मा, ऐसा कहता है। अनल हक का अर्थ गलत करके कहते थे कि मंशूर अपने को अल्लाह कहता है। इसे जिंदा जलाया जाए या अनल हक कहना बंद कराया जाए। मंशूर राजा का लड़का था। इसलिए किसी की हिम्मत नहीं हो रही थी कि मंशूर को मार दे। यदि कोई सामान्य व्यक्ति होता तो कब का राम नाम सत कर देते। नगर के हजारों व्यक्ति राजा के पास गए। राजा को मंशूर की गलती बताई। राजा ने सबके सामने मंशूर को समझाया। परंतु वह अनल हक-अनल हक का जाप करता रहा। उपस्थित व्यक्तियों से राजा ने कहा कि जनता बताए कि मंशूर को क्या दण्ड दिया

जाए? जनता ने कहा कि मंशूर को चौराहे पर बाँधकर रखा जाए। नगर का प्रत्येक व्यक्ति एक-एक पत्थर जो लगभग आधा किलोग्राम का हो, मंशूर को मारे तथा कहे कि छोड़ दे काफर भाषा। यदि मंशूर अनल हक कहे तो पत्थर मारे, आगे चला जाए। दूसरा भी यही कहे। तंग आकर मंशूर अनल हक कहना त्याग देगा। नगर के सारे नागरिक एक-एक पत्थर लेकर पंक्ति बनाकर खड़े हो गए। उन नागरिकों में भक्तिमति शिमली भी पंक्ति में खड़ी थी। उसने पत्थर एक हाथ में उठा रखा था तथा दूसरे हाथ में फूल ले रखा था। शिमली ने सोचा था कि भक्त-भाई है। पत्थर के स्थान पर फूल मार दूँगी। जनता में निंदा भी नहीं होगी तथा भाई को भी कष्ट नहीं होगा। प्रत्येक व्यक्ति (स्त्री-पुरूष) मंशूर से कहते कि छोड़ दे अनल हक कहना, नहीं तो पत्थर लगेगा। मंशूर बोले अनल हक, अनल हक, अनल हक, अनल हक। पत्थर भी साथ-साथ लग रहे थे। मतवाले मंशूर अनल हक बोलते जा रहे थे। शरीर लहू-लुहान यानि बुरी तरह जख्मी हो गया था। रक्त बह रहा था। परमात्मा का आशिक अनल हक कह रहा था। हँस रहा था। जब शिमली बहन की बारी आई। वह कुछ नहीं बोली। मंशूर ने पहचान लिया और कहने लगा, बहन! बोल अनल हक। शिमली ने अनल हक नहीं बोला। हाथ में ले रखा फूल भाई मंशूर को मार दिया। मंशूर बुरी तरह रोने लगा। शिमली ने कहा, भाई! अन्य व्यक्ति पत्थर मार रहे थे। घाव बन गए, आप रोये नहीं। मैंने तो फूल मारा है जिसका कोई दर्द नहीं होता। आप बुरी तरह रोने लगे। क्या कारण है?

मंशूर बोला कि बहन! जनता तो अनजान है कि मैं किसलिए कुर्बान हूँ। आपको तो ज्ञान है कि परमात्मा के लिए तन-मन-धन भी सस्ता है। मेरे को भोली जनता के द्वारा पत्थर मारने का कोई दुःख नहीं था क्योंकि इनको ज्ञान नहीं है। हे बहन! आपको तो सब पता है। मेरे को इस मार्ग पर लाने वाली तू है। तेरा हाथ मेरी ओर कैसे उठ गया? बेईमान तेरे फूल का पत्थर से कई गुना दर्द मुझे लगा हैं। तेरे को (मुरसद) गुरूजी क्षमा नहीं करेगा। नगर के सब व्यक्ति पत्थर मार-मारकर घर चले गए। कुछ धर्म के ठेकेदार मंशूर को जख्मी हालत में राजा के पास लेकर गए तथा कहा कि राजा! धर्म ऊपर राज नहीं। परिवार नहीं है। मंशूर अनल हक कहना नहीं छोड़ रहा है। इससे कहा जाए कि या तो अनल हक कहना त्याग दे, नहीं तो तेरे हाथ, गर्दन, पैर सब टुकड़े-टुकड़े कर दिए जाऐंगे। यदि यह अनल हक कहना नहीं त्यागे तो इस काफिर को टुकड़े-टुकड़े करके जलाकर इसकी राख दरिया में बहा दी जाए। मंशूर को सामने खड़ा करके कहा गया कि या तो अनल हक कहना त्याग दे नहीं तो तेरा एक हाथ काट दिया जाएगा। मंशूर ने हाथ उस काटने वाले की ओर कर दिया (जो तलवार लिए काटने के लिए खड़ा था) और कहा कि अनल हक। उस जल्लाद ने एक हाथ काट दिया। फिर कहा कि अनल हक कहना छोड़ दे नहीं तो दूसरा हाथ भी काट दिया जाएगा। मंसूर ने दूसरा हाथ उसकी ओर कर दिया और बोला ''अनल हक''। दूसरा हाथ भी काट दिया। फिर कहा गया कि अबकी बार अनल हक कहा तो तेरी गर्दन काट दी जाएगी। मंशूर बोला अनल हक, अनल हक, अनल हक। मंशूर की गर्दन काट दी गई और फूँककर राख को दरिया में बहा दिया। उस राख से भी अनल हक, अनल हक शब्द निकल रहा था। कुछ देर बाद एक हजार मंशूर नगरी की गली-गली में अनल हक कहते हुए घूमने

लगे। सब डरकर अपने-अपने घरों में बंद हो गए। परमात्मा ने वह लीला समेट ली। एक मंशूर गली-गली में घूमकर अनल हक कहने लगा। फिर अंतर्ध्यान हो गया।

❖ **मंसूर अली के शब्द का सरलार्थ :-**

अगर है शोक अल्लाह से मिलने का तो हरदम लौ लगाता जा।

❖ **हे साधक! यदि परमात्मा से मिलने का शौक रखता है तो प्रत्येक श्वांस (दम) के द्वारा नाम का स्मरण करता रह।**

न रख रोजा, न मर भूखा, न मस्जिद जा, न कर सिजदा।
वजू का तोड़ दे कूजा, शराबे नाम जाम पीता जा।।1।।

❖ **अर्थात् न तो (रोजा) व्रत रखकर भूखा मर, न मस्जिद में जाकर पत्थर के महल में (सिजदा) प्रणाम कर। (वजू) केवल जल से स्नान करने से मोक्ष नहीं है। सच्चे नाम के जाप से मोक्ष होगा। (कूजा तोड़ दे) घड़ा फोड़ दे यानि भर्म का मार्ग छोड़ दे। सच्चे नाम के जाप रूपी शराब पीता जा यानि राम के नाम का नशा कर।**

पकड़ कर ईश्क की झाड़ू, साफ कर दिल के हूजरे को।
दूई की धूल रख सिर पर, मूसल्ले पर उड़ाता जा।।2।।

❖ **अर्थात् परमात्मा से प्रेम कर। उस प्रेम की झाड़ू से दिल को साफ कर। (दूई) ईर्ष्या को फूँककर धूल उड़ा दे यानि ईर्ष्या न कर, भक्ति कर।**

धागा तोड़ दे तसबी, किताबें डाल पानी में।
मसाइक बनकर क्या करना, मजीखत को जलाता जा।।3।।

❖ **अर्थात् जो धागे में (तसबी) माला डाल रखी है। इसे तोड़ दे यानि मन की माला जपो। किताबें (कुरान, इंजिल, तौरत, जूबर ये चार कतेब कहे गए हैं) पानी में बहा दे। इनमें परमात्मा प्राप्ति का मार्ग नहीं है। (मसाईक) विद्वान बनकर कर क्या करना है? (मजीखत) अहंकार का नाश कर।**

कहै मन्सूर काजी से, निवाला कूफर का मत खा।
अनल हक्क नाम बर हक है, यही कलमा सुनाता जा।।4।।

❖ **अर्थात् भक्त मंशूर जी ने काजी से कहा कि माँस का (निवाला) ग्रास मत खा। यह (कूफर) पाप का है। अनल हक नाम वास्तव में (हक) सत्य है। यही (कलमा) मंत्र बोलता रह।**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 55 का सरलार्थ अब्राहिम अधम सुल्तान के प्रकरण में पहले कर दिया है।**

''राबी की कथा''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 56-59 :-**

गरीब, सुलतानी मक्कै गये, मक्का नहीं मुकाम। गया रांड के लेन कूं, कहै अधम सुलतान।।56।।
गरीब, राबिया परसी रबस्यूं, मक्कै की असवारि। तीन मजिल मक्का गया, बीबी कै दीदार।।57।।
गरीब, फिर राबिया बंसरी बनी, मक्कै चढाया शीश। पूर्बले संस्कार कुछ, धनि सतगुरु जगदीश।।58।।
गरीब, बंसरीसैं बेश्वा बनी, शब्द सुनाया राग। बहुरि कमाली पुत्री, जुग जुग त्याग बैराग।।59।।

❖ **राबी की कथा का आंशिक वर्णन इन वाणियों में है। कुछ वर्णन अचला के अंग की वाणी नं. 363-368 तक है :-**

गरीब, राबीकूं सतगुरु मिले, दीना अपना तेज। ब्याही एक सहाबसैं, बीबी चढ़ी न सेज।।363।।
गरीब, राबी मक्केकूं चली, धर्या अल्हका ध्यान। कुत्ती एक प्यासी खड़ी, छुटे जात हैं प्राण।।364।।
गरीब, केश उपारे शीशके, बाटी रस्सी बीन। जाकै बस्त्र बांधि कर, जल काढ्या प्रबीन।।365।।
गरीब, सुनही कूं पानी पिया, उतरी अरस अवाज। तीन मजल मक्का गया, बीबी तुह्मरे काज।।366।।
गरीब, बीबी मक्के पर चढ़ी, राबी रंग अपार। एक लाख असी जहां, देखै सब संसार।।367।।
गरीब, राबी पटरा घालि कर, किया जहां स्नान। एक लाख असी बहे, मंगर मल्या सुलतान।।368।।

❖ **उपरोक्त वाणियों का सरलार्थ :-**

❖ **प्रत्येक जीवात्मा सत्यलोक से काल लोक में अपनी गलती से आया है। सत्यलोक में (जरा) वृद्ध अवस्था तथा मरण नहीं था। सब सुख था। बिना कर्म किए सर्व सुविधाऐं जो काल लोक के स्वर्ग-महास्वर्ग में भी नहीं हैं, वे सत्यलोक में प्रत्येक हंस आत्मा को मुफ्त में प्राप्त थी। काल लोक के स्वर्ग तथा महास्वर्ग (ब्रह्म लोक) में सुख-सुविधा मोल मिलती हैं। साधक की कमाई के बदले मिलती हैं। मूल्य (Rate) भी काल का मनमाना है। कमीशन 25% अलग से है। सत्यलोक में मृत्यु नहीं है। काल लोक में मृत्यु अवश्य है जो बुरी बात है। मृत्यु से भी बुरी बात वृद्धावस्था जो सतलोक में नहीं है। राबी वाली आत्मा कलयुग में ऋषि गंगाधर की पत्नी दीपिका थी जिसने सतयुग में लीला करने आए बालक रूप कबीर जी के पालन-पोषण की सेवा करके शुभकर्म बनाए थे। त्रेतायुग में ऋषि गंगाधर वाली आत्मा ऋषि वेदविज्ञ रूप में जन्में तथा दीपिका वाली आत्मा सूर्या रूप में जन्मी। ऋषि वेदविज्ञ से विवाह संस्कार हुआ। त्रेतायुग में कबीर परमेश्वर जी ऋषि मुनीन्द्र नाम से प्रकट रहे। त्रेतायुग में लीला करने आए कबीर परमात्मा सत्ययुग की तरह कमल के फूल पर नवजात शिशु के रूप में प्रकट हुए थे। वहाँ से ऋषि वेदविज्ञ निःसंतान थे। वे अपने घर लाए थे। उसकी पत्नी सूर्या ने कबीर परमात्मा बालक के पालन-पोषण की सेवा करके फिर शुभकर्म बनाए थे। दीपिका वाली आत्मा कलयुग में राबी नाम की लड़की मुसलमान धर्म में उत्पन्न हुई। परमात्मा की भक्ति में दृढ़ हो गई थी। विवाह करवाने से भी मना कर दिया था क्योंकि उस पुण्यात्मा को सतगुरू कबीर जी जिंदा बाबा के वेश में मिले थे जिस समय जंगल में पशुओं का चारा लेने अन्य महिलाओं के साथ गई थी। परमात्मा कबीर जी ने उसी जंगल में अपनी शक्ति से एक छोटी-सी तलाई (जोहड़ी) बनाई। उसके चारों ओर छोटी बगीची बनाई। एक झोंपड़ी बनाई। वहाँ एक जिंदा बाबा के वेश में विराजमान हुए। लड़की घास काटती हुई अकेली उस ओर चली गई। साधु को देख प्रभावित हुई। उसको सलाम वालेकम कहा। ज्ञान सुनाने का आग्रह किया। परमात्मा ने एक घंटा ज्ञान सुनाया। लड़की को विशेष प्रेरणा हुई। दीक्षा लेने की प्रार्थना की। सतगुरू ने कहा कि बेटी दो दिन और सत्संग सुन, फिर दीक्षा दूँगा। परंतु किसी को मेरे विषय में मत बताना कि वहाँ कोई बाबा रहता है। लड़की राबी ने दो दिन और अकेली जाकर सत्संग सुना, दीक्षा ली। लड़की घर गई। परमात्मा ने कहा था कि अब मैं यहाँ से चला जाऊँगा। तू भक्ति ना छोड़ना। लड़की ने चार**

वर्ष तक परमात्मा द्वारा बताई साधना की। बाद में सत्संग के अभाव के कारण सत्य साधना त्यागकर अपने धर्म वाली साधना करने लगी। जब तक उसकी आयु सोलह वर्ष हो गई थी। माता-पिता ने विवाह करने का पक्का इरादा कर लिया। लड़की भी अपनी जिद पर डटी थी। माता-पिता ने कहा कि जवान बेटी को घर पर नहीं रखा जा सकता। यदि तू हमारी बात नहीं मानेगी तो हम दोनों आत्महत्या कर लेंगे। तेरे को चार दिन का समय देते हैं। विचार करके बता देना। लड़की राबी ने विचार किया कि विवाह कर लेती हूँ। पति से निवेदन करूँगी कि मैं संतान उत्पत्ति क्रिया नहीं करूँगी। मैं भक्ति करके उद्धार करवाना चाहती हूँ। आप अपना और विवाह कर लो। यदि नहीं मानेगा तो जीवन लीला का अंत कर लूँगी। लड़की ने माता-पिता से विवाह करने के लिए हाँ कर दी। एक अधिकारी से राबी देवी का विवाह हुआ। वह मुसलमान अधिकारी परमात्मा से डरने वाला था। परंतु भक्ति विशेष नहीं करता था। विवाह के पश्चात् रात्रि के समय पति ने मिलन करने को कहा तो लड़की ने स्पष्ट शब्दों में मना कर दिया कि मैं मिलन (Sex) नहीं करूँगी। मैं भक्ति करना चाहती हूँ। आप चाहे तो अपना अन्य विवाह कर लो। मेरे को एक झोंपड़ी आपके आँगन में बनवा देना। मैं गुजारा कर लूँगी। पति ने बड़ी सभ्यता से परमात्मा से डरकर कहा कि राबी! यदि आपने पुरूष मिलन नहीं करना था यानि संतान उत्पन्न नहीं करनी थी तो निकाह कबूल किसलिए किया था? राबी ने कहा कि मेरे माता-पिता की इज्जत की ओर देखकर। उन्होंने मरने की ठान ली थी। समाज के डर से वे अपने प्राण देने को तैयार थे तो मैंने यह फैसला लेना पड़ा। अब यदि आप पति का अधिकार जानकर बलपूर्वक मिलन (Sex) करोगे तो मैं आत्महत्या कर लूँगी। यह मेरा अंतिम निर्णय है। पति ने कहा राबी! अच्छी बात है कि आप परमात्मा के लिए कुर्बान हैं। परंतु मेरे माता-पिता की भी इज्जत, हमारा भी समाज में सम्मान है। मेरा भी निर्णय सुन ले। घर से बाहर बिना आज्ञा के नहीं जाएगी। भक्ति कर। समाज की दष्टि में मेरी पत्नी रहेगी। मेरे लिए मेरी बहन रहेगी। किसी वस्तु का अभाव नहीं रहने दूँगा। आप भक्ति करो। मेरे को भी पुण्य लाभ आपकी सेवा करने से मिलेगा। मैं अन्य विवाह कर लूँगा। राबी के सामाजिक पति ने अन्य विवाह कर लिया। राबी साध्वी को बहन के समान रखा। उसकी प्रत्येक सुख-सुविधा का ध्यान रखा। जब राबी की पचपन-साठ वर्ष के आस-पास आयु हुई तो मुसलमान धर्म के अनुसार हज करने का मन बनाया। अपने पति उर्फ मुँह बोले भाई से अपनी इच्छा बताई जो उसने सहर्ष स्वीकार कर ली। गाँव के अन्य व्यक्तियों के साथ राबी साध्वी को भी भेज दिया। सब चले जा रहे थे। रास्ते में एक कुँआ आया। उसके पास जल निकालने का साधन रस्सा तथा बाल्टी नहीं थी। लग रहा था कि बाल्टी किसी यात्री की गलती से कुँए में गिर गई थी। वहाँ एक कुतिया प्यासी खड़ी थी। देवी राबी समझ गई कि कुतिया बहुत प्यासी है। लगता है आस-पास इसके बच्चे भी हैं जो छोटे हैं। चलने भी नहीं लगे हैं। साथ वाले हज यात्रियों ने पानी पीना चाहा, परंतु रस्सा-बाल्टी न होने के कारण आगे को चल दिए। उन्हें मालूम था कि आगे भी कुँआ है जो एक कोस (तीन किलोमीटर) की दूरी पर था। हज यात्रियों के लिए स्थान-स्थान पर कुँए बनवा रखे थे। साथी यात्री आगे बढ़ गए। उन्होंने राबी का ध्यान नहीं किया क्योंकि वह

रस्सा-बाल्टी खोजने एक ओर गई थी। राबी को कोई साधन जल निकालने का नहीं मिला। दिल में दया थी। परमात्मा से डरने वाली थी। पिछले संस्कार प्रबल थे। राबी ने अपने सिर के केश उखाड़े, एक लम्बी रस्सी बनाई। शरीर के कपड़े उतारे। रस्सी से बाँधा औ कुँए के जल में डुबोया और तुरंत बाहर निकाला। उन्हें निचोड़कर जल घड़े के टुकड़े में डाला जो पहले ही कुँए के साथ रखा था। शायद जब रस्सी बाल्टी थी तो यात्री उस ठीकरे में जल डालते थे। कुतिया तथा अन्य छोटे जानवर उसमें जल पीते थे। इसी आशा में कुतिया कुँए के पास राबिया के पैरों को छू रही थी। कभी कुँए पर झाँक रही थी। कुतिया ने पेट भरकर जल पीया। राबी ने कपड़े निचोड़कर निकाले। जल से अपना खून धोया जो शरीर पर केश उखाड़ने से लगा था। कपड़े पहने। यात्रा का प्रस्थान करने लगी तो तीन मंजिल की दूरी पर मक्का की मस्जिद थी। {एक मंजिल बीस मील की होती थी। एक मील तीन किलोमीटर का होता था।} मक्का यानि मस्जिद अपने स्थान से उठकर उड़कर कुँए के साथ लग गया। मक्का को देख राबी आश्चर्यचकित हो गई जैसे स्वपन होता है। राबी उस मक्का में प्रवेश कर गई। वह तो इसी उद्देश्य से आई थी। अब्राहिम अधम सुल्तान वाला जीव किसी अन्य मानव जीवन में मुसलमान धर्म में जन्मा था। वह भी मक्का में गया हुआ था। उसे सतगुरू कबीर जी मिले थे। तत्वज्ञान समझाया था। दीक्षा दे रखी थी। अब्राहिम अन्य भोले-भटके मानव को यथार्थ अध्यात्म ज्ञान समझाने के लिए प्रतिवर्ष मक्का में जाता था। जब मक्का मस्जिद अपने स्थान से उड़ गया तो अन्य व्यक्तियों को अनहोनी की आशंका हुई। एक-दूसरे से बातें करने लगे कि मक्का कहाँ गया। अल्लाह का कमाल है। अब्राहिम ने कहा कि "एक रांड को लेने गया है।" यह मक्का एक मुकाम है। यह तो मकान है। इसमें अल्लाह नहीं है। अल्लाह तो ऊपर आकाश में है। मुसलमान होने के कारण अब्राहिम का अन्य ने कोई विरोध नहीं किया। इतने में मक्का उड़कर आया। अपने यथास्थान पर स्थिर हो गया। पता चला कि एक पुण्यात्मा देवी राबी को लेने मक्का गया था। उसे बैठाकर ले आया। सब उस पुण्यात्मा को देखने लगे। उसकी भक्ति की सराहना करने लगे। अब्राहिम से प्रश्न किया आपने ऐसी पुण्यात्मा को अपशब्द किसलिए कहे? आपको पाप लगेगा। तब अब्राहिम ने बताया कि इस पुण्यात्मा को स्वयं अल्लाहु अकबर जिंदा बाबा के वेश में मिले थे। इसने दीक्षा लेकर केवल चार वर्ष साधना की। फिर गलत साधना करने लगी है। उस साधना की शक्ति से इसमें ऐसा साहसिक कार्य करने की हिम्मत हुई। इसने एक कुतिया को कुँए से जल निकालकर पिलाने के लिए अपने सिर के बाल उखाड़कर रस्सी बनाई। कपड़े उतारकर उस रस्सी से बाँधकर जल निकालकर प्यासी कुतिया के जीवन की रक्षा की है। इसलिए अल्लाह अकबर ने यह करिश्मा किया है। जब राबी से पूछा गया तो यही बात बताई। जब राबी ने स्नान किया तो अब्राहिम सुल्तान अधम ने उस देवी की (मंगर) कमर को मसला यानि कमर पर लगा रक्त धोया। एक लाख अस्सी हजार पैगंबर हो चुके हैं। परमात्मा ने किसी के लिए चमत्कार नहीं किया। वे सब राबी के सामने बौने लगने लगे।

❖ राबी का जीवन पूरा करके अगला जन्म बंसुरी नाम की लड़की गायिका हुई जो धार्मिक भजन गाती थी। मक्का में हज के समय अपना शीश काटकर अर्पित कर दिया। प्राण

त्याग दिए। मुसलमान धर्म के व्यक्ति मानते हैं कि यदि किसी का शरीर मक्का में पूरा हो जाता है तो वह सीधा स्वर्ग जाता है।

❖ राबी वाला जीव ने बसुंरी वाला शरीर मक्का में त्यागकर अगले (तीसरे) जन्म में वैश्या का पापमय जीवन जीया।

❖ अगले जन्म (चौथे जन्म) में कमाली का जीवन पाया जो शेखतकी की बेटी के रूप में जन्मी।

❖ जब शेखतकी की लड़की तेरह वर्ष की आयु की थी, तब मत्यु हो गई थी। उसका मानव जीवन का संस्कार शेष नहीं रहा था। पशु-पक्षी का जीवन मिलना था।

❖ परमात्मा कबीर जी ने उसको कब्र से निकलवाकर जीवित किया। आयु वद्धि की। अपनी बेटी बनाकर परवरिश की। सत्य साधना की दीक्षा देकर मुक्त किया।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 60 :-**

गरीब, मीरां बाई पद मिली, सतगुरु पीर कबीर। देह छतां ल्यौ लीन है, पाया नहीं शरीर।।60।।

❖ मीरा बाई पहले श्री कष्ण जी की पूजा करती थी। एक दिन संत रविदास जी तथा परमात्मा कबीर जी का सत्संग सुना तो पता चला कि श्री कष्ण जी नाशवान हैं। समर्थ अविनाशी परमात्मा अन्य है। संत रविदास जी को गुरू बनाया। फिर अंत में कबीर जी को गुरू बनाया। तब मीरा बाई जी का सत्य भक्ति बीज का बोया गया।

''मीरा बाई की कथा''

मीरा बाई का जन्म राजपूत जाति में हुआ था। महिलाओं को घर से बाहर जाने पर प्रतिबंध था, परंतु मीराबाई ने किसी की प्रवाह नहीं की। फिर उसका विवाह राजा से हो गया। राणा जी धार्मिक विचार के थे। उसने मीरा को मंदिरों में जाने से नहीं रोका, अपितु लोक चर्चा से बचने के लिए मीरा जी के साथ तीन-चार महिला नौकरानी भेजने लगा। जिस कारण से सब ठीक चलता रहा। कुछ वर्ष पश्चात् मीरा जी के पति की मत्यु हो गई। देवर राजगद्दी पर बैठ गया। उसने कुल के लोगों के कहने से मीरा को मंदिर में जाने से मना किया, परंतु मीराबाई जी नहीं मानी। जिस कारण से राजा ने मीरा को मारने का षड़यंत्र रचा। विचार किया कि ऐसी युक्ति बनाई जाए कि यह भी मर जाए और बदनामी भी न हो। राजा ने विचार किया कि इसे कैसे मारें? राजा ने कहा कि सपेरे एक ऐसा सर्प ला दे कि डिब्बे को खोलते ही खोलने वाले को डंक मारे और व्यक्ति मर जाए। ऐसा ही किया गया। राणा जी ने अपने लड़के का जन्मदिन मनाया। उसमें रिश्तेदार तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति आमंत्रित किये। राजा ने मीरा जी की बांदी (नौकरानी) से कहा कि ले यह बेशकीमती हार है। मेरे बेटे का जन्मदिन है। दूर-दूर से रिश्तेदार आये हैं। मीरा को कह दे कि सुंदर कपड़े पहनकर इस हार को गले में पहन ले, नहीं तो रिश्तेदार कहेंगे कि अपनी भाभी जी को अच्छी तरह नहीं रखता। मेरी इज्जत-बेइज्जती का सवाल है। बांदी ने उस आभूषण के डिब्बे को मीराबाई को दे दिया और राजा का आदेश सुना दिया। उस आभूषण के डिब्बे में विषैला काले-सफेद रंग का सर्प था। मीरा ने बांदी के सामने ही उस डिब्बे को खोला। उसमें

हीरे-मोतियों से बना हार था। मीराबाई ने विचार किया कि यदि मैं हार नहीं पहनूंगी तो व्यर्थ का झगड़ा होगा। मेरे लिए तो यह मिट्टी है। यह विचार करके मीरा जी ने वह हार गले में डाल लिया। राजा का उद्देश्य था कि आज सर्प डंक से मीरा की मत्यु हो जाएगी तो सबको विश्वास हो जाएगा कि राजा का कोई हाथ नहीं है। हमारे सामने सर्प डसने से मीरा की मत्यु हुई है। कुछ समय उपरांत राजा मंत्रियों सहित तथा कुछ रिश्तेदारों सहित मीरा के महल में गया तो मीरा बाई जी के गले में सुंदर मंहगा हार देखकर राणा बौखला गया और बोला, बदचलन! यह हार किस यार से लाई है? मीरा बाई जी के आँखों में आँसू थे। बोली कि आपने ही तो बांदी के द्वारा भिजवाया था, वही तो है। बांदी को बुलाया तथा पूछा कि वह डिब्बा कहाँ है? बांदी ने पलंग के नीचे से निकालकर दिखाया। यह रहा राजा जी जो आपने भेजा था। राजा वापिस आ गया। राजा ने सोचा कि अब की बार इसको विष मैं अपने सामने पिलाऊँगा, नहीं पीएगी तो सिर काट दूँगा।

मीराबाई को विष से मारने की व्यर्थ कोशिश

एक सपेरे से कहा कि भयंकर विष ला दे जिसे जीभ पर रखते ही व्यक्ति मर जाए। ऐसा विष लाया गया। राजा ने मीरा से कहा कि यह विष पी ले अन्यथा तेरी गर्दन काट दी जाएगी। मीरा ने सोचा कि गर्दन काटने में तो पीड़ा होगी, विष पी लेती हूँ। मीरा ने विष का प्याला परमात्मा को याद करके पी लिया। लेकिन उन्हें कुछ नहीं हुआ। सपेरा बुलाया और उससे कहा कि यह नकली विष लाया है। सपेरे ने कहा कि वह प्याला कहाँ है? उसे प्याला दिया गया। सपेरे ने उस प्याले में दूध डालकर एक कुत्ते को वहीं पिला दिया। कुत्ता दूसरी बार जीभ भी नहीं लगा पाया था, मर गया।

❖ राजा ने देख लिया कि यह किसी तरह मरने वाली नहीं है। तब उसको मंदिर में जाने से नहीं रोका। उसके साथ कई नौकरानी तथा पुरूष रक्षक भी भेजने लगा कि लोग यह नहीं कहेंगे कि आवारागर्दी में जाती है।

''मीरा को सतगुरू शरण मिली''

जिस श्री कष्ण जी के मंदिर में मीराबाई पूजा करने जाती थी, उसके मार्ग में एक छोटा बगीचा था। उसमें कुछ घनी छाया वाले वक्ष भी थे। उस बगीचे में परमेश्वर कबीर जी तथा संत रविदास जी सत्संग कर रहे थे। सुबह के लगभग 10 बजे का समय था। मीरा जी ने देखा कि यहाँ परमात्मा की चर्चा या कथा चल रही है। कुछ देर सुनकर चलते हैं।

परमेश्वर कबीर जी ने सत्संग में संक्षिप्त सष्टि रचना का ज्ञान सुनाया। कहा कि श्री कष्ण जी यानि श्री विष्णु जी से ऊपर अन्य सर्वशक्तिमान परमात्मा है। जन्म-मरण समाप्त नहीं हुआ तो भक्ति करना न करना समान है। जन्म-मरण तो श्री कष्ण जी (श्री विष्णु) का भी समाप्त नहीं है। उसके पुजारियों का कैसे होगा। जैसे हिन्दु संतजन कहते हैं कि गीता का ज्ञान श्री कष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी ने अर्जुन को बताया। गीता ज्ञानदाता गीता अध्याय 2 श्लोक 12, अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 10 श्लोक 2 में स्पष्ट कर रहा है कि हे अर्जुन!

तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। इससे स्वसिद्ध है कि श्री कष्ण जी का भी जन्म-मरण समाप्त नहीं है। यह अविनाशी नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता बोलने वाले ने कहा है कि हे भारत! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कपा से ही तू सनातन परम धाम को तथा परम शांति को प्राप्त होगा।

परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से ये वचन सुनकर परमात्मा के लिए भटक रही आत्मा को नई रोशनी मिली। सत्संग के उपरांत मीराबाई जी ने प्रश्न किया कि हे महात्मा जी! आपकी आज्ञा हो तो शंका का समाधान करवाऊँ। कबीर जी ने कहा कि प्रश्न करो बहन जी!

प्रश्न :- हे महात्मा जी! आज तक मैंने किसी से नहीं सुना कि श्री कष्ण जी से ऊपर भी कोई परमात्मा है। आज आपके मुख से सुनकर मैं दोराहे पर खड़ी हो गई हूँ। मैं मानती हूँ कि संत झूठ नहीं बोलते। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आपके धार्मिक अज्ञानी गुरूओं का दोष है जिन्हें स्वयं ज्ञान नहीं कि आपके सद्ग्रन्थ क्या ज्ञान बताते हैं? देवी पुराण के तीसरे स्कंद में श्री विष्णु जी स्वयं स्वीकारते हैं कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर नाशवान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मत्यु) होता रहता है। (लेख समाप्त)

मीराबाई बोली कि हे महाराज जी! भगवान श्री कष्ण मुझे साक्षात दर्शन देते हैं। मैं उनसे संवाद करती हूँ। कबीर जी ने कहा कि हे मीराबाई जी! आप एक काम करो। भगवान श्री कष्ण जी से ही पूछ लेना कि आपसे ऊपर भी कोई मालिक है। वे देवता हैं, कभी झूठ नहीं बोलेंगे। मीराबाई को लगा कि वह पागल हो जाएगी यदि कष्ण जी से भी ऊपर कोई परमात्मा है तो। रात्रि में मीरा जी ने भगवान श्री कष्ण जी का आह्वान किया। त्रिलोकी नाथ प्रकट हुए। मीरा ने अपनी शंका-समाधान के लिए निवेदन किया कि हे प्रभु! क्या आपसे ऊपर भी कोई परमात्मा है? एक संत ने सत्संग में बताया है। श्री कष्ण जी ने कहा कि मीरा! परमात्मा तो है, परंतु वह किसी को दर्शन नहीं देता। हमने बहुत समाधि व साधना करके देख ली है। मीराबाई जी ने सत्संग में परमात्मा कबीर जी से यह भी सुना था कि उस पूर्ण परमात्मा को मैं प्रत्यक्ष दिखाऊँगा। सत्य साधना करके उसके पास सतलोक में भेज दूँगा। मीराबाई ने श्री कष्ण जी से फिर प्रश्न किया कि क्या आप जीव का जन्म-मरण समाप्त कर सकते हो? श्री कष्ण जी ने कहा कि असंभव। कबीर जी ने कहा था कि मेरे पास ऐसा भक्ति मंत्र है जिससे जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। वह परमधाम प्राप्त होता है जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वज्ञान तथा तत्वदर्शी संत की प्राप्ति के पश्चात् परमात्मा के उस परमधाम की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उसी एक परमात्मा की भक्ति करो। मीराबाई ने कहा कि हे भगवान कष्ण जी! संत जी कह रहे थे कि मैं जन्म-मरण समाप्त कर देता हूँ। अब मैं क्या करूँ। मुझे तो पूर्ण मोक्ष की चाह है। श्री कष्ण जी बोले कि मीरा! आप उस संत की शरण ग्रहण करके अपना कल्याण कराओ। मुझे जितना ज्ञान था, वह बता दिया। मीरा अगले दिन मंदिर नहीं गई। सीधी संत जी के पास अपनी नौकरानियों के साथ जाकर दीक्षा लेने की इच्छा व्यक्त की तथा श्री कष्ण जी से हुई वार्ता भी संत कबीर जी से साझा की।

उस समय छूआछात चरम पर थी। ठाकुर लोग अपने को सर्वोत्तम मानते थे। परमात्मा मान-बड़ाई वाले प्राणी को कभी नहीं मिलता। मीराबाई की परीक्षा के लिए कबीर जी ने संत रविदास जी से कहा कि आप मीरा राठौर को प्रथम मंत्र दे दो। यह मेरा आपको आदेश है। संत रविदास जी ने आज्ञा का पालन किया। संत कबीर परमात्मा जी ने मीरा से कहा कि बहन जी! वो बैठे संत जी, उनके पास जाकर दीक्षा ले लें। बहन मीरा जी तुरंत रविदास जी के पास गई और बोली, संत जी! दीक्षा देकर कल्याण करो। संत रविदास जी ने बताया कि बहन जी! मैं चमार जाति से हूँ। आप ठाकुरों की बेटी हो। आपके समाज के लोग आपको बुरा-भला कहेंगे। जाति से बाहर कर देंगे। आप विचार कर लें। मीराबाई अधिकारी आत्मा थी। परमात्मा के लिए मर-मिटने के लिए सदा तत्पर रहती थी। बोली, संत जी! आप मेरे पिता, मैं आपकी बेटी। मुझे दीक्षा दो। भाड़ में पड़ो समाज। कल को कुतिया बनूंगी, तब यह ठाकुर समाज मेरा क्या बचाव करेगा? सत्संग में बड़े गुरू जी (कबीर जी) ने बताया है कि :-

कबीर, कुल करनी के कारणे, हंसा गया बिगोय। तब कुल क्या कर लेगा, जब चार पाओं का होय।।

शब्दार्थ :- कबीर परमेश्वर जी सतर्क कर रहे हैं कि हे भक्त (स्त्री/पुरूष)! जो कुल परिवार व संसार की शर्म के कारण भक्ति नहीं करते, कहते हैं कि घर-परिवार वाले व संसार के व्यक्ति मजाक करेंगे कि नाम दीक्षा लेकर दण्डवत् प्रणाम करते हो। अन्य देवी-देवताओं की पूजा नहीं करते हो। श्राद्ध-पिण्डदान नहीं करते हो। तुम्हें शर्म आनी चाहिए। उन्होंने अपना मानव जीवन नष्ट कर लिया। भक्ति न करने से जब चार पैर के पशु यानि गधे, कुत्ते, सूअर, बैल आदि बनोगे, तब ये कुल व संसार के व्यक्ति क्या बचाव करेंगे। भक्ति ने बचाव करना था, वह की नहीं। इसलिए भक्ति करो।

संत रविदास जी उठकर संत कबीर जी के पास गए और सब बात बताई। परमात्मा बोले कि देर ना कर, ले आत्मा को अपने पाले में। उसी समय संत रविदास जी ने बहन मीरा को प्रथम मंत्र केवल पाँच नाम दिए। {ये पाँच नाम शरीर में बने कमलों को खोलने वाले हैं। राधास्वामी पंथ वाले नहीं हैं तथा न दामाखेड़ा वाले गद्दी से दिए जाने वाले हैं। उनसे भिन्न मोक्ष में सहयोगी मंत्र हैं।} मीराबाई को बताया कि यह इनकी पूजा नहीं है, इनकी साधना है। इनके लोक में रहने के लिए, खाने-पीने के लिए जो भक्ति धन चाहिए है, वह इन मंत्रों से ही मिलता है। यहाँ का ऋण उतर जाता है। फिर मोक्ष के अधिकारी होते हैं। परमात्मा कबीर जी तथा संत रविदास जी वहाँ एक महीना रूके। मीराबाई पहले तो दिन में घर से बाहर जाती थी, फिर रात्रि में भी सत्संग में जाने लगी क्योंकि सत्संग दिन में कम तथा रात्रि में अधिक होता था। कोई दिन में समय निकाल लेता, कोई रात्रि में। मीरा के देवर राणा जी मीरा को रात्रि में घर से बाहर जाता देखकर जल-भुन गए, परंतु मीरा को रोकना तूफान को रोकने के समान था। इसलिए राणा जी ने अपनी मौसी जी यानि मीरा की माता जी को बुलाया और मीरा को समझाने के लिए कहा। कहा कि इसने हमारी इज्जत का नाश कर दिया। बेटी माता की बात मान लेती है। मीरा की माता ने मीरा को समझाया। मीरा ने उसका तुरंत उत्तर दिया :-

''शब्द''

सतसंग में जाना मीरां छोड़ दे ए, आए म्हारी लोग करैं तकरार।
सतसंग में जाना मेरा ना छूटै री, चाहे जलकै मरो संसार।।टेक।।
थारे सतसंग के राहे मैं ऐ, आहे वहाँ पै रहते हैं काले नाग, कोए—कोए नाग तनै डस लेवै।
जब गुरु म्हारे मेहर करैं री, आरी वै तो सर्प गंडेवे बन जावैं।।1।।
थारे सतसंग के राहे में ऐ, आहे वहाँ पै रहते हैं बबरी शेर, कोए—कोए शेर तनै खा लेवै।
जब गुरुआं की मेहर फिरै री, आरी व तो शेरां के गीदड़ बन जावैं।।2।।
थारे सतसंग के बीच में ऐ, आहे वहां पै रहते हैं साधु संत, कोए—कोए संत तनै ले रमै ए।
तेरे री मन मैं माता पाप है री, संत मेरे मां बाप हैं री, आ री ये तो कर देगें बेड़ा पार।।3।।
वो तो जात चमार है ए, इसमैं म्हारी हार है ए।
तेरे री लेखै माता चमार है री, मेरा सिरजनहार है री, आरी वै तो मीरां के गुरु रविदास।।4।।

❖ **शब्दार्थ :- मीरा बाई की माता ने कहा कि हे मीरा! तू सत्संग में जाना बंद कर दे। संसार के व्यक्ति हमारे विषय में गलत बातें करते हैं। मीरा ने कहा कि हे माता! मैं सत्संग में जाना बंद नहीं करूँगी, संसार भले ही ईर्ष्या की आग में जलकर मर जाए। माता ने मीरा को भय कराने के लिए बताया कि जिस रास्ते से तू रात्रि में सत्संग सुनने के लिए जाती है, उस रास्ते में सर्प तथा सिंह रहते हैं। वे तुझे मार देंगे। मीरा ने उत्तर दिया कि मेरे गुरू जी इतने समर्थ हैं, वे कपा करेंगे तो सिंह तो गीदड़ की तरह व्यवहार करेंगे और सर्प ऐसे निष्क्रिय हो जाऐंगे जैसे गंडेवे प्राणी होते हैं जो सर्प जैसे आकार के होते हैं, परंतु छः या आठ इंच के लंबे और आधा इंच गोलाई के मोटे होते हैं, वे डसते नहीं। मीरा की माता ने फिर कहा कि सत्संग सुनने वाले स्थान पर कुछ युवा भक्त पुरूष भी रहते हैं। कोई तेरे को कहीं ले जाएगा और गलत कार्य करेगा। मीरा ने उत्तर दिया कि हे माता! आपके मन में दोष है। इसीलिए आपके मन में ऐसे विचार आए हैं। हे माता! वे संत व भक्त तो मेरे माता-पिता के समान हैं। वे ऐसा गलत कार्य नहीं करते। मीरा की माता ने छूआछात के कारण मीरा को रोकना चाहा, कहा कि हे मीरा! तेरा गुरू रविदास तो अनुसूचित जाति का चमार है। इससे हम राजपूतों की बेइज्जती हो रही है। सत्संग में जाना बंद कर दे। मीरा ने कहा कि हे माता! आपके विचार से मेरे गुरू जी अनुसूचित जाति के चमार हैं। मेरे लिए तो मेरे परमात्मा हैं। मैं उनकी बेटी, वे मेरे पिता हैं। सत्संग में जाना बंद नहीं होगा।**

कुछ वर्ष के बाद अपने देवर के अत्याचारों से परेशान होकर घर त्यागकर वंदावन में चली गई। वहाँ कबीर परमात्मा जी एक साधु के वेश में गए। ज्ञान चर्चा हुई। तब मीरा को ज्ञान हुआ कि अभी आगे की पढ़ाई शेष है यानि केवल प्रथम मंत्र का जाप संत रविदास जी ने दे रखा था। परमात्मा कबीर जी ने सतनाम की दीक्षा दी। मीरा जी को वही रूप दिखाया जिस रूप में संत रविदास जी के साथ सत्संग में मिले थे। मीरा जी का फिर मानव जन्म अब वर्तमान के भक्ति युग में होगा। तीनों नाम की दीक्षा मिलेगी। मोक्ष उसकी मर्यादा पर निर्भर करेगा। यदि आजीवन विश्वास के साथ मर्यादा में रहकर तीनों नामों का जाप करती रही तो मोक्ष निश्चित है। वंदावन में भी मीरा की आस्था श्री कष्ण में कुछ-कुछ थी।

इसलिए उसने वंदावन में जाने का विचार किया था।

जब मीरा बाई राणा के अत्याचारों से तंग आकर घर त्याग गई थी तो उस क्षेत्र में अकाल मंत्यु, महामारी, अकाल (दुर्भिक्ष) की मार शुरू हो गई थी। ज्योतिषियों ने बताया कि आपके नगर से संत रूष्ट होकर चला गया है। जिस कारण से यह उपद्रव हो रहा है। समाधान बताया कि यदि वह संत जीवित मिल जाए और वापिस मनाकर प्रसन्न करके लाया जाए तो वह आशीर्वाद देकर सब ठीक कर सकता है। राणा ने अपने सभापतियों से प्रश्न किया कि ऐसा कौन संत था जो रूष्ट होकर चला गया? राणा का चाचा (मीरा का पितसरा यानि चाचा सुसर) भवन सिंह राणा का महामंत्री था तथा परमात्मा का भक्त था। मीरा बाई के साथ भौम ने भी संत रविदास जी से नाम लिया था। भौम को एक नौकर राजा ने दे रखा था। उस नौकर ने भी उस समय संत रविदास जी से नाम लिया था। वे पहले मीरा के साथ बैठकर परमात्मा की चर्चा घंटों किया करते थे। भवन मीरा को बेटी की तरह तथा साध्वी की तरह सम्मान देता था। परंतु अत्याचारी भतीजे राजा से डरता था। मीरा को सांत्वना देता था कि भक्तों का भगवान रक्षक है। मीरा के चले जाने के पश्चात् भवन तथा नौकर बहुत रोते थे। याद करते थे। भौम ने राजा को बताया कि ''मीरा'' संत थी। वह चली गई। इस कारण से यह सब अनिष्ट हो रहा है। राणा ने कहा कि उसे कौन ला सकता है? मैं कभी उसे कष्ट नहीं दूँगा। प्रतिज्ञा करता हूँ। दो सिपाही जो मीरा की निगरानी के लिए छोड़ रखे थे। मीरा के साथ छाया की तरह साथ रहने का आदेश राणा ने दे रखा था। मीरा की प्रत्येक गतिविधि पर नजर रखने को कहा था। दोनों मीरा बाई से ज्ञान चर्चा सुना करते। उसके कष्ट में रोया करते थे। कहते थे कि बहन विश्वास रखो। परमात्मा सब देख रहा है। मीरा के अचानक चले जाने से उनकी दशा भी खराब थी। घंटों रोते थे।

उन दोनों ने खड़ा होकर सभा में कहा कि हम मीरा को लौटा ला सकते हैं, यदि जिंदा मिल गई तो। राजा ने कहा कि यदि नहीं आई तो क्या करोगे? वे बोले कि हम भी लौटकर नहीं आऐंगे। दोनों मीरा बाई की खोज में निकले। पता लगा कि बहुत सारे संत (स्त्री-पुरूष) वंदावन में रहते हैं। वहाँ मीरा बाई मिल गई। लौट चलने की प्रार्थना की। बताया कि राजा के राज में उपद्रव हो रहे हैं। ब्राह्मणों ने बताया है कि मीरा वापिस आएगी तो सब ठीक होगा। राणा ने कहा है कि आगे से मीरा को कोई कष्ट नहीं दूँगा। आप चलो। मीरा ने कहा कि भाई अब नहीं जाऊँगी। उन्होंने कहा कि यदि आप नहीं चलोगी तो हम प्रतिज्ञा करके आए हैं कि यदि मीरा जीवित मिल गई तो हमारी बात को मान लेगी। राणा ने कहा था कि यदि नहीं आई तो क्या करोगे। हमने कहा है कि हम भी नहीं आऐंगे। बहन जी हमारे परिवार की ओर देखकर चलो। मीरा बाई बोली कि यदि मैं संसार छोड़ गई होती तो भी तो लौट जाते। सिपहियों ने कहा कि फिर लौटना ही था। उसी समय मीरा जी ने एकतार वाला यंत्र (एक तारा) उठाया। परमात्मा की स्तुति करने लगी। आँखों से प्रेम के आँसू बहने लगे। उसी समय श्री कंष्ण जी की मूर्ति में समा गई। दोनों नौकरों ने लौटकर राणा को सभा में बताया। उस समय राजा अपने महामंत्री भवन के साथ शिकार खेलने जाने वाले थे। भौम तलवार-तीर लेकर तैयार था। उसके घोड़े को भक्त नौकर पकड़कर खड़ा

था। भवन मंत्री सभा में बैठा था। नौकरों से राजा ने प्रश्न किया कि मिली मीरा? नौकरों ने कहा कि मिली थी। मना कर दिया। भगवान की मूर्ति में समा गई। राजा अहंकारी था। उसने कहा कि बाहर जाकर चरित्रहीन हो गई होगी। मुसलमान खसम कर लिया होगा। इसलिए धरती में गढ़ गई। जब जानता वह संत थी, ऊपर आकाश में स्वर्ग में जाती। उस समय भवन भक्त खड़ा हुआ और बोला हे अपराधी! उस देवी के लिए ऐसे कटे-जले शब्द ना बोलं यदि वह ऊपर चली जाती तो भी तूने नहीं मानना था। तेरा पाप नहीं मानने देता। मैं जा रहा हूँ। स्वर्ग में देख ले। भौम सबके सामने घोड़े पर सवार हो गया। तलवार भी हाथ में थी। घोड़ा ऊपर को उठने लगा तो नौकर रोने लगा कि मालिक मैं कैसे अकेला इस अन्याई के राज्य में रह सकूँगा। मुझे भी साथ ले चलो। यूँ कहते-कहते नौकर भक्त ने घोड़े की पूँछ पकड़ ली। वह भी घोड़े से लटका ऊपर चल दिया। घोड़े, (जोड़े) जूतों व गुलाम (नौकर) सहित भवन स्वर्ग गया।

विशेष :- एक नितानंद जी महाराज गाँव-माजरा जिला-रोहतक में जटेला तालाब पर साधना किया करते थे। जटेला तालाब चार गाँव की सीमा पर माजरा की सीमा में है। गाँव हैं माजरा बिगावा, बास अचीना आदि-आदि। ये दादरी जिले के हैं।}

उनके विषय में कहा जाता है कि वे सशरीर ऊपर गए हैं। वे श्री विष्णु जी के पुजारी थे। उनको ऊपर जाते किसी ने आँखों तो नहीं देखा, परंतु पूर्ण विश्वास यही है। संत गरीबदास जी स्पष्ट करना चाहते हैं कि श्री रामचन्द्र के साथ सब अयोध्यावासी स्वर्ग गए थे।

राजा हरिशचन्द्र के साथ काशी वासी सब स्वर्ग गए थे। परंतु जन्म-मरण न तो श्री रामचन्द्र का समाप्त हुआ। वे श्री कष्ण रूप में जन्मे। फिर मरे। न राजा हरिशचन्द्र का जन्म-मरण समाप्त हुआ। वे दसवें अवतार के रूप में आगे जन्म लेंगे। करोड़ों व्यक्तियों को मारकर कोरे पाप इकट्ठे करके नरक में गिरेंगे। नित्यानंद जी तथा भौम जैसों की गिनती क्या की जाए?

केवल कबीर परमात्मा की सत्य साधना तीन बार दीक्षा वाली अधिकारी से लेकर करने से जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। (वर्तमान में मेरे यानि संत रामपाल के अतिरिक्त विश्व में किसी को तीनों बार की दीक्षा देने का अधिकार नहीं है। यह विडियो के माध्यम से मेरा इलेक्ट्रोनिक शरीर हजारों वर्ष कलयुग में दीक्षा देगा। अरब-खरब मानव (स्त्री-पुरूष) जो दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर आजीवन भक्ति करेंगे तो मोक्ष में कोई शंका नहीं है।

भवन मंत्री भक्त की रक्षा परमात्मा ने की :- भक्त भवन महामंत्री था। राजा का चाचा था तथा बहुत वफादार था। राणा अपना चाचा होने के नाते तथा निष्कपट से सेवा करने के कारण भवन पर बहुत विश्वास करता था। भवन को परमात्मा पर पूर्ण विश्वास था। एक अन्य मंत्री चाहता था कि मैं महामंत्री बनूँ तो सब कमांड मेरे हाथ में आ जाए। अब महामंत्री भवन के आधीन रहना पड़ता है। वह जो कहता है, वही करना पड़ता है। मेरी नहीं चलती। राजा के सामने महामंत्री भवन की निंदा करता रहता था। परंतु राजा को विश्वास नहीं हो रहा था कि मेरे चाचा मेरे विरूद्ध चल सकता है या मेरे राज्य को हड़पना चाहता है। परंतु

दुष्ट मंत्री को चैन नहीं था। राजा महामंत्री भवन को शिकार करने के समय या किसी अन्य शहर में जाना होता था तो सदा साथ रखता था। शिकार करने जाते थे। भवन जीव नहीं मारना चाहता था। परंतु राजा को नाराज भी नहीं करना चाहता था। इसलिए काष्ठ (लकड़ी) की तलवार बनाकर लोहे की म्यान (Cover) में डाल रखी थी। बाहर से तो तलवार तेज धार वाली लगती थी। अंदर लकड़ी का टुकड़ा था। भवन शिकार के समय राजा से दूसरी ओर घोड़ा दौड़ा ले जाते थे। कोई जीव हिंसा नहीं करते थे। भवन का परमात्मा पर अटूट विश्वास था। जो भी कार्य गलत होता, तभी कहते थे कि परमात्मा जो करता है, अच्छा करता है। अच्छा हुआ, अच्छा हुआ। किसी ने मंत्री को बताया कि भवन महामंत्री ने काष्ठ की तलवार ले रखी है। कहता है कि जीव हिंसा नहीं करनी चाहिए। चापलूस मंत्री ने भवन के पीछे से उसकी तलवार देखी। वास्तव में काष्ठ की थी। एक-दो को और दिखाई। तीन-चार ने आँखों देखी। चापलूस मंत्री ने सबसे कहा कि भवन अपने भतीजे को मरवाना चाहता है। स्वयं राज्य चाहता है। भाईयो! मेरे साथ राजा के पास चलो। मंत्री अपनी मंडली को लेकर राजा के पेश हुआ। सबने एक सुर में कहा कि राजन्! हम आँखों देखकर आए हैं। भवन आपका रक्षक नहीं है। आपको धोखा दे रहा है। काष्ठ की तलवार ले रखी है। आप स्वयं मँगाकर देखें। हम पर विश्वास ना करो।

राजा ने कहा कि यदि भवन की तलवार काष्ट की मिली तो सबके सामने उसकी गर्दन काट दूँगा। राजा ने सब मंत्री तथा महामंत्रियों को आदेश दिया कि दूसरे शहर में जाना है। सब अपने अस्त्र-शस्त्र लगाकर आधे घंटे में तैयार होकर ड्योडी द्वार पर हाजिर हों। सब अपनी-अपनी तलवार व अन्य शस्त्र लेकर ड्योडी द्वार पर खड़े हो गए। राजा आए और बोले सब मंत्री-महामंत्री तथा अन्य अंगरक्षक अपनी-अपनी तलवार लेकर एक पंक्ति में खड़े हो जाऐं। ऐसे ही हो गया। राजा प्रत्येक के पास जाकर कहे कि अपनी तलवार की धार चैक कराओ। तुमने धार ठीक से बनवा रखी है कि नहीं। सबकी तलवार लोहे की थी। जब भवन का नंबर आया तो भवन को लग रहा था कि चंद मिनटों का जीवन शेष है। परमात्मा को याद कर लूँ। भवन परमात्मा का नाम जो गुरूजी से ले रखा था, जाप करने लगा। राजा ने कहा कि महामंत्री! तलवार म्यान से निकाल। भवन को नहीं पता लगा कि कब तलवार म्यान से बाहर निकली। वह तो अंतिम श्वांस ले रहा था। ज्यों ही भवन ने पूरे बेग के साथ तलवार म्यान से बाहर निकाली तो तलवार लोहे की थी। उसकी चमक आँखों को ऐसे लग रही थी जैसे आकाशीय बिजली का चमका लगा हो। देखने वाले जो आँखों देख चुके थे कि भवन की तलवार काष्ठ की थी। उनको अपनी आँखों पर भरोसा नहीं हो रहा था। इस घटना के पश्चात् भवन की आस्था परमात्मा में पूर्ण रूप से दृढ़ हो गई। परंतु दुष्ट मंत्री बाज नहीं आया।

''परमात्मा जो करता है, अच्छा करता है'' :- एक दिन राजा व महामंत्री-मंत्री कहीं जाने को तैयारी में खड़े थे। राजा मंत्रियों से बातें भी कर रहा था तथा तलवार को निकालकर उसकी धार देखने लगा। बातों में व्यस्त होने के कारण राजा को ध्यान नहीं रहा। उसकी दांये हाथ की ऊँगली कटकर दूर गिर गई। राजा को जोर की पीड़ा हुई। महामंत्री

बोला कि अच्छा हुआ। जो होता है, अच्छा ही होता है। परमात्मा जो करता है, अच्छा ही करता है। उस दिन राजा को लगा कि वास्तव में महामंत्री के मन में दोष है। यह मेरा अहित चाहता है। चापलूस मंत्री को मौका मिल गया। राजा के लिए वैद्य बुलाकर लाया। कहने लगा हे राजन्! देख लिया आपने सुन लिया अपने कानों से। राजा ने आदेश दिया कि महामंत्री को जेल में डाल दो। चापलूस मंत्री को महामंत्री बना दिया। छः महीने में राजा की ऊँगली का जख्म भर गया। राजा के दांये हाथ में केवल तीन अंगुलियाँ थी। नए महामंत्री को साथ लेकर राजा शिकार करने गया। जंगल में शिकार के पीछे घोड़े दौड़ा रखे थे। राजा तथा महामंत्री दोनों सेना से दूर गहरे जंगल में चले गए। आगे कुछ जंगली व्यक्ति मिले। उन्होंने दोनों को घेर लिया तथा पकड़कर रस्सों से बाँधकर घर पर ले गए। जंगली व्यक्तियों ने देवी को नरबली चढ़ाने का संकल्प कर रखा था। पुरोहित को बताया कि दो व्यक्ति पकड़कर लाए हैं। पुरोहित ने कहा कि अच्छी बात है। दोनों की बली चढ़ा देंगे। देवी अधिक प्रसन्न होगी। परंतु जाँच करो कि इनका कोई अंग-भंग ना हो। जाँच करने पर पाया कि एक व्यक्ति की एक अंगुली नहीं है। कटी हुई है। पुरोहित बोला कि जिसकी अंगुली कटी है, उसे जाने दो। वह बली के योग्य नहीं हैं। दूसरे को तैयार करो। देखते-देखते चापलूस मंत्री का सिर काटकर पत्थर की मूर्ति पर चढ़ाकर फिर पकाकर खाने के लिए ले जाने लगे। राजा तेजी से भागा। सीधा कारागार में गया जहाँ महामंत्री बंद था। उसे कैद मुक्त किया तथा आप बीती बताई और कहा कि आप ठीक कह रहे थे कि जो होता है, अच्छा ही होता है। यदि उस दिन मेरी अंगुली न कटी होती तो आज मेरी मौत होती। राजा ने महामंत्री से प्रश्न किया कि मेरी अंगुली कटी तो मेरी जान बची। मेरे लिए तो अच्छा हुआ। परंतु आपको छः महीने की कैद का कष्ट भोगना पड़ा। आपके लिए क्या अच्छा हुआ? महामंत्री ने कहा कि छः महीने की कैद से मेरी जान बच गई। यदि मैं कैद में ना होता तो आपके साथ जंगल में जाता। उस मंत्री की जगह मेरी बली चढ़ती। राजा ने अपनी गलती की क्षमा याचना की। उसे अपना पुनः महामंत्री बनाया।

''आत्म ज्ञान बिना नर भटकै'' :- जब बहन मीरा जी घर त्यागकर जा रही थी तो रास्ते में कुछ व्यक्ति एक गुफा के द्वार के सामने बैठे थे। मीरा बाई ने उनसे वहाँ इकट्ठे होने के कारण जाना तो बताया कि इस गुफा के अंदर एक महात्मा रहता है। वह कभी-कभी बाहर आता है। जिसको दर्शन हो जाते हैं, उसका कल्याण हो जाता है। परंतु महिलाओं को दर्शन नहीं देते। मीरा बाई ने कहा कि मैंने तो सुना है कि पुरूष तो एक परमात्मा ही है। अन्य तो शरीर बदलकर स्त्री-पुरूष बनते रहते हैं। यदि कोई दूसरा पुरूष पथ्वी पर है तो मैं उसके दर्शन करके ही जाऊँगी। महात्मा का विशेष सेवक था। केवल वह गुफा में जा सकता था। सेवक से महात्मा पता कर लेता था कि कोई स्त्री तो बाहर नहीं बैठी है? सेवक ने बताया कि एक साध्वी आई है। वह कहती है कि मैं तो दर्शन करके ही जाऊँगी। महात्मा बाहर आया। मीरा बाई ने कहा कि महाराज! मैं जानना चाहती हूँ कि इस पाँच तत्व के बने मानव शरीर में स्त्री तथा पुरूष के तत्व में अंतर है क्या? केवल एक पुरूष है परमात्मा। आप अन्य पुरूष कैसे हो? आत्मा शरीर धारण करती है। नर-मादा का अभिनय करती है।

महात्मा को अपनी गलती का अहसास हुआ। गुफा छोड़कर मीरा बाई के साथ जाकर संत रविदास जी से दीक्षा ली। आत्म ज्ञान = ''आत्मा'' स्त्री-पुरूष की एक है। जैसे स्वांगी-स्वांग करते हैं। स्त्री-पुरूष बनकर अभिनय करते हैं। ऐसे आत्मा कर्मों के अनुसार नर-मादा का अभिनय करती है।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 61-62 :-**

गरीब, पीपा धनां रैदास थे, सदन कसाई कौनि। अबिगत पूरण ब्रह्म कूं, कहा करी अनहौनि।।61।।
गरीब, रंका बंका तिरगये, नामा छींपा नेह। ऊंचे कुल कूं कोसना, जहाँ भक्ति नहीं प्रवेह।।62।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा की भक्ति किसी भी जाति व धर्म का स्त्री-पुरूष कर सकता है। जो ब्राह्मण लोग यह कहते थे कि शुद्र जाति वाले मंदिर में प्रवेश नहीं कर सकते। ग्रन्थ को हाथ नहीं लगा सकते। उनके द्वारा फैलाए भर्म का निवारण करते हुए कहा है कि नागौर शहर (राजस्थान) का राजा पीपा सिंह ठाकुर था जो भक्त बना। राजस्थान प्रदेश में भक्त धना था जो जाट जाति से था, भक्त बना। भक्त रविदास चमार जाति से था जो भक्त बना। सदना कसाई का कार्य करता था। ज्ञान हुआ, भक्त बना। पाप करना त्याग दिया। भक्त रंका तथा उसकी धर्मपत्नी बंका दोनों भक्त बने जो अति निर्धन थे। कथा सुमरण के अंग की वाणी नं. 108 के सरलार्थ में है। जो ऊँचे कुल में जन्में हैं और परमात्मा की भक्ति नहीं करते, उस ऊँचे कुल को धिक्कार है।**

❖ **वाणी नं. 63-66 का सरलार्थ पहले पाण्डव यज्ञ के प्रकरण में कर दिया है।**

❖ **वाणी नं. 67-76 :-**

गरीब, च्यार बर्ण षट आश्रम, बिडरे दोनौं दीन। मुक्ति खेत कूं छाड़ि करि, मघर भये ल्यौलीन।।67।।
गरीब, नौलख बोडी बिसतरी, बटक बीज बिस्तार। केशो कल्प कबीर की, दूजा नहीं गंवार।।68।।
गरीब, मगहर मोती बरषहीं, बनारस कुछ भ्रान्त। कांसी पीतल क्या करै, जहां बरसै पारस स्वांति।।69।।
गरीब, मगहर मेला पूर्ण ब्रह्मस्यौं, बनारस बन भील। ज्ञानी ध्यानी संग चले, निंद्या करैं कुचील।।70।।
गरीब, मुक्ति खेत कूं तजि गये, मघहर में दीदार। जुलहा कबीर मुक्ति हुआ, ऊंचा कुल धिक्कार।।71।।
गरीब, च्यार बर्ण षट आश्रम, कल्प करी दिल मांहि। काशी तजि मघहर गये, ते नर मुक्ति न पांहि।।72।।
गरीब, भूमि भरोसै बूड़ि है, कलपत हैं दहूं दीन। सब का सतगुरु कुल धनी, मघहर भये ल्यौलीन।।73।।
गरीब, काशी मरै सौ भूत होय, मघहर मरै सो प्रेत। ऊंची भूमि कबीरकी, पौढें आसन श्वेत।।74।।
गरीब, काशी पुरी कसूर क्या, मघहर मुक्ति क्यौं होय। जुलहा शब्द अतीत थे, जाति बर्ण नहीं कोय।।75।।
गरीब, काशी पुरी कसूर योह, मुक्ति होत सब जाति। काशी तजि मघहर गये, लगी मुक्ति शिर लात।।76।।

❖ **इन वाणियों का संक्षिप्त वर्णन इसी पारख के अंग की वाणी नं. 28 के सरलार्थ में कर दिया है।**

❖ **सरलार्थ :- जो कहते हैं कि काशी में मरने वाले मुक्ति प्राप्त करते हैं और मगहर में मरने वाले नरक जाते हैं, यह गलत है। सबका मालिक कुल धनी यानि पूर्ण परमात्मा कबीर जी मगहर से सतलोक गए। भूमि के कारण मुक्ति की इच्छा के (भरोसे) विश्वास पर जीवन नष्ट कर जाते हैं।**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 77-84 :-**

गरीब, मुक्ति खेत मथुरा पुरी, कीन्हां कृष्ण किलोल। कंश केशि चानौरसे, वहां फिरते डामांडोल।।77।।
गरीब, जगन्नाथ जगदीश कै, उर्ध्व मुखी है ग्यास। मसक बंधी मन्दिर पड़ी, झूठी सकल उपास।78।।
गरीब, एकादशी अजोग है, एकादश दर है सार। द्वादश दर मध्य मिलाप है, साहिब का दीदार।।79।।
गरीब, माह महातम न्हात हैं, ब्रह्म महूरत मांहि। काशी गया प्रयाग मध्य, सतगुरु शरणा नांहि।।80।।
गरीब, कोटि जतन जीव करत हैं, दुबिध्या द्वी न जाय। साहिब का शरणा नहीं, चालैं अपनै भाय।।81।।
गरीब, जीव जिवांसे ज्यौं जल्या, जलकै मांही सूक। सतगुरु पुरुष कबीर से, रहे अनंत जुग कूक।।82।।
गरीब, जीव जिवांसे ज्यौं जल्या, जलसैं मान्या दोष। सकल अविद्या विष भर्‌या, अगनि परै तब पोष।।83।।
गरीब, राम रमे सो राम हैं, देवत रमे स देव। भूतौं रमे सो भूत हैं, सुनौं संत सुर भेव।।84।।

❖ **सरलार्थ :- जो कहते हैं कि मथुरा-वंदावन में जाने से मुक्ति होती है। वे सुनो! उसी मथुरा में जहाँ श्री कष्ण लीला किया करते थे। आप उस स्थान पर जाने मात्र से मोक्ष मानते हो। उसी मथुरा में कंस, केसी (राक्षस) तथा चाणूर (पहलवान) भी रहते थे जो श्री कष्ण ने ही मारे थे। इसलिए सत्य साधना करो और जीव कल्याण कराओ जो यथार्थ मार्ग है। कोई जगन्नाथ के दर्शन करके और एकादशी का व्रत करके मोक्ष मानता है, यह गलत है। शास्त्र विरूद्ध है। कोई काशी नगर में, कोई गया नगर में जाने से मोक्ष कहते हैं। वे भूल में हैं। यदि पूर्ण सतगुरू की शरण नहीं मिली है तो मोक्ष बिल्कुल नहीं होगा। जब तक तत्वदर्शी सतगुरू नहीं मिलेगा, शंका समाप्त नहीं होगी। सब अपने स्वभाववश भक्ति मार्ग पर चल रहे हैं जो व्यर्थ है।(77-81)**

❖ **एक जंवासे का पौधा है। वह बारिश के दिनों में यानि जल से सूख जाता है। सब पौधे जल से हरे-भरे होते हैं, परंतु जंवासा का पौधा जल से नष्ट हो जाता है। इसी प्रकार कर्महीन व्यक्ति सत्यज्ञान सुनकर जल मरते हैं। झगड़ा करते हैं। बिल्कुल नहीं मानते। अन्य पुण्यात्माऐं सत्य ज्ञान सुनकर गदगद होते हैं। कल्याण करवा लेते हैं।(82-83)**

❖ **गीता अध्याय 9 श्लोक 25 वाला प्रकरण है। जिसमें कहा है कि :-**

यान्ति देवव्रताः देवान् पितन् यान्ति पितव्रताः। भूतानि यान्ति भूतेज्याः यान्ति मद्याजिनः अपि माम्।।

❖ **अर्थात् (देवव्रताः) देवताओं को पूजने वाले (देवान्) देवताओं को (यान्ति) प्राप्त होते हैं। (पितव्रताः) पितरों को पूजने वाले (पितन्) पितरों को (यान्ति) प्राप्त होते हैं। (भूतेज्याः) भूतों को पूजने वाले (भूतानि) भूतों को (यान्ति) प्राप्त होते हैं। (मत्) मेरा (याजिन्) पूजन करने वाले (अपि) भी (माम्) मुझे (यान्ति) प्राप्त करते हैं।**

गरीब, राम रमे सो राम हैं, देवत रमे स देव। भूतौं रमे सो भूत हैं, सुनौं संत सुर भेव।।84।।

❖ **अर्थात् जो परमात्मा की भक्ति करते हैं। वे परमात्मा जैसे गुणों वाला अमर पद प्राप्त करते हैं अर्थात् परमात्मा कबीर जी को प्राप्त होते हैं। जो देवताओं की भक्ति करते हैं, वे देवताओं जैसे गुण वाले हो जाते हैं। जन्म-मरण सदा रहता है। स्वर्ग जाते हैं। पुण्यों को खर्च कर पुनः जन्म-मरण के चक्र में गिरते हैं। जो भूतों की पूजा करते हैं, श्राद्ध निकालते हैं, पिंडदान करते हैं, अस्थि उठाकर गंगा पर मुक्ति हेतु ले जाते हैं। तेरहवीं, महीना आदि क्रियाकर्म करते हैं, पितर बनते हैं और महाकष्ट उठाते हैं। फिर नरक में जाते हैं। चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट भोगते हैं।(84)**

❖ **वाणी नं. 85-95 :-**

गरीब, कली कलीका रसलिया, भंवर कंवल कूं सोधि। ज्ञान गदहरे परि चढे, पढे अठारह बोध।।85।।
गरीब, जैसी याह मकरंद है, कंवल केतगी बास। प्रान तजे हरि ना भजे, यौ जग गया निराश।।86।।
गरीब, मलागीर में गुण कहा, भवंग लिपटे आय। शीतल पून्यौं चन्द्र ज्यौं, तपति बुझावै ताहि।।87।।
गरीब, सलिल सलौने संत हैं, आठौं कंवल समाधि। दिल दरपन मन मुसकला, रिंचक नहीं उपाधि।।88।।
गरीब, श्वेत वर्ण शुभ रंग हैं, जहां लगाये नैंन। दूजे की आशा नहीं, चढे रहत हैं गैंन।।89।।
गरीब, गैंन गगन में चढि रहे, श्वेत भूमि का भीर। सीप नहीं सायर नहीं, मोती बिनही नीर।।90।।
गरीब, सुरति निशाना नैंन में, मन मंजन करि घोटि। निरति निरंतन लगि रही, करै लाख में चोट।।91।।
गरीब, मुकर खुल्या मालिक मिल्या, नैंन बैंन बिलास। धरनि चलैं सेवन भलैं, चढे रहैं आकाश।।92।।
गरीब, जै कोई रमै सो गगनि में, धरणी धरै न पांव। सबही भूले भर्म में, कहा रंक कहा राव।।93।।
गरीब, कंवल कली दर चोज हैं, रिमझिम रिमझिम होय। गगनि फुहारे छुटि रहे, तहां संत मुख धोय।।94।।
गरीब, योह है पंथ कबीर का, सतलोक कूं सैल। अनंत कोटि कुल पंथ है, कोई न पावै गैल।।95।।

❖ **सरलार्थ :- जो विकार करते रहते हैं। तरह-तरह के गाने-बजाने, खाने, शराब आदि का नशा करते हैं। स्त्री भोग पुरूष करते हैं। पुरूष भोग स्त्री करती हैं। भक्ति करते नहीं। वे उस तरह विकारों के वश होकर फँसकर मर जाते हैं जैसे भंवरा भिन्न-भिन्न फूलों का आनंद लेता रहता है। शाम के समय फूल बंद हो जाता है। भंवरा उसमें फँसकर मर जाता है।**

❖ **संतों की संगत करने से जीव को शान्ति मिलती है। मोक्ष मिलता है। जैसे चंदन के वृक्ष के तने में शीतलता होती है। सर्प को विष के कारण गर्मी लगती है। गर्मी के मौसम में चंदन के वृक्ष के तने के चारों ओर सर्प लिपटे रहते हैं। (मलागीर) चंदन में शीतल करने का गुण है। चाँद में भी रात्रि में शीतलता का आभास होता है। ऐसे (सलिल) शांत संत हैं जो शरणागत की तपत बुझाते हैं।**

❖ **साधक का ध्यान सदा ऊपर परमात्मा के सुख सागर सतलोक में रहता है। वे पृथ्वी पर इधर-उधर भ्रमण नहीं करते। तीर्थों-धामों पर नहीं जाते। सत्य साधना करते हैं।**

❖ **परमात्मा कबीर जी का यह (पंथ) भक्ति मार्ग है। जीव सत्यलोक की सैल करता है। इसके अतिरिक्त अनेकों पंथ तथा उनके कुल यानि गद्दी परंपरा हैं। किसी को सतलोक वाली (गैल) गली अर्थात् मार्ग का ज्ञान नहीं।**

❖ **वाणी नं. 96 :-**

गरीब, त्रिलोकी का राज सब, जै जी कूं कोई देय। लाख बधाई क्या करै, नहीं सतनाम सें नेह।।96।।

❖ **सरलार्थ :- यदि कोई सत्य साधना परम पिता परमेश्वर कबीर जी की नहीं करता है। यदि उस जीव को तीन लोक का राज्य में मिल जाए तो उसे चाहे लाख बार बधाई दी जाए, नरक में जाएगा। उसका भविष्य अंधकारमय है।(96)**

❖ **वाणी नं. 97 :-**

गरीब, रतन जडाऊ मन्दिर है, लख जोजन अस्थान। साकट सगा न भेटिये, जै होय इन्द्र समान।।97।।

❖ **सरलार्थ :- जो रिश्तेदार साकट हैं यानि नास्तिक हैं। उसका एक लाख योजन में स्थान यानि पृथ्वी का मालिक हो। उसके (मंदिर) महलों में रत्न जड़े हों। चाहे वह स्वर्ग के**

राजा इन्द्र जैसा ऐश्वर्यवान हो। वह (सगा) रिश्तेदार कभी ना मिले जो परमात्मा से दूर है। उसके प्रभाव में आकर कच्चा भक्त भक्ति त्यागकर नरक का भागी बन जाता है।(97)

❖ **वाणी नं. 98-99 :-**

गरीब, संख कल्प जुग जीवना, तत्त न दरस्या रिंच। आन उपासा करते हैं, ज्ञान ध्यान परपंच।।98।।
गरीब, मारकंड की उम्र है, रब सें जुर्या न तार। पीव्रत सें खाली गये, साहिब कै दरबार।।99।।

❖ **सरलार्थ :- यदि कोई संख कल्प तक जीवित रहे। ज्ञान जरा-सा भी नहीं है। तत्वज्ञान हीन है। सत्य भक्ति से वंचित है तो वह लंबा जीवन भी व्यर्थ है।(एक कल्प में एक हजार आठ चतुर्युग होते हैं यानि ब्रह्मा का एक दिन)(98)**

❖ **मार्कण्डेय ऋषि की लंबी आयु थी। यदि मार्कण्डेय ऋषि जितनी लंबी आयु है। परमात्मा से सम्पर्क हुआ नहीं यानि सत्य साधना की नहीं तो व्यर्थ है। प्रियवत नाम का राजा था। उसने ग्यारह अरब वर्ष तक तप किया यानि शास्त्र विधि त्यागकर मनमाना आचरण किया। तप के बदले ग्यारह अरब वर्ष का राज्य सुख भोगकर परमात्मा के दरबार (कार्यालय) में खाली होकर गया। नरक में डाला।(99) {एक योजन बारह किलोमीटर का होता है।}**

❖ **वाणी नं. 100-107 :-**

गरीब, कल्प करी करुणामई, सुपच दिया उपदेश। सतगुरु गोरख नाथ गति, काल कर्म भये नेस।।100।।
गरीब, सबरी भी भक्ति करी, गौरि के दिल मांहि। उभय महूरत षट दलीप, तिहूवां शांशां नांहि।।101।।
गरीब, परिक्षत को शुकदे मिले, सात बार प्रचार। दुरवासा भगवान गुरु, लगे कुचौं की लार।।102।।
गरीब, पूर्ण पुरूष कबीर कूं तारे गीध ब्याध कुल हीन। गणिका चढी बिवान में, महिमा विष्णु लीन।।103।।
गरीब, संख स्वर्ग सें है परै, संख पतालो सैल। एता बड़ा इलाम है, अलफ सींग रज बैल।।104।।
गरीब, बावन बढ्या सो देख ले, गज ग्राह उबरंत। सुक्ष्म रूप कबीर धरै, द्रोपदि चीर बढंत।।105।।
गरीब, कबीर पुरूष झिलमिला, उधरे गज अरु ग्राह। गगनि मंडल सें ऊतरे, कीन्हां आनि सहाय।।106।।
गरीब, ररंकार मुख ऊचरैं, टूटी गज की धीर। सर्ब लोक सब ठौर हैं, अबिगत अलख कबीर।।107।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा कबीर जी द्वापर युग में करूणामय नाम से प्रकट थे। तब सुपच सुदर्शन बाल्मीकि को उपदेश देकर पार किया। गोरख नाथ को भी समझाया।**

❖ **जिन-जिन साधकों ने जिस स्तर की साधना तन-मन से की तो उनको उस-उस स्तर का लाभ मिला। जैसे भिलनी, गौरी (पार्वती) तथा षट् दलीप जो दशरथ राजा का पिता था, रामचन्द्र का दादा था। उसको पता चला कि मेरी केवल दो मुहूर्त आयु शेष है। उसने (उभय) दो मुहूर्त (घड़ी) सच्ची लगन से सच्ची तड़फ से साधना की तो स्वर्ग गया। इस प्रकार शबरी भीलनी, पार्वती तथा षट्दलीप ने जैसी भक्ति की, वैसा फल मिला। तीनों को कोई शंका नहीं।**

❖ **राजा परीक्षित को सात दिन शुकदेव ऋषि ने भागवत सुधा सागर सुनाई थी। स्वर्ग तक गए। दुर्वासा ऋषि भगवान श्री कष्ण के गुरू थे। वे स्वर्ग में तो चले गए। वहाँ उर्वशी की दूधी (स्तन) को भंवरा बनकर काट लिया। अपना धर्म नष्ट कर लिया। चोरी और सीना जोरी। उस नतका को भंवरे के काटने का दर्द हुआ। हाथ से भूंड को दूर फैंका तो स्वर्ग**

की धरती पर पटाक से गिरा तो अपनी बेइज्जती मानकर उर्वशी (स्वर्ग की अप्सरा) को श्राप दे दिया कि तू पृथ्वी पर गधी बनेगी। इतना दुष्ट था दुर्वासा और ऋषि की पदवी प्राप्त था। श्राप देने का उद्देश्य यह था कि तूने मेरे से तो मिलन नहीं किया, अब गधी बनेगी और गधों से मिलन किया करेगी। तब तेरी इज्जत कहाँ जाएगी जो तूने मुझे नकार दिया। सभा में अपनी बेइज्जती मानकर ऐसा किया। पृथ्वी पर दुर्वासा ऋषि ब्रह्मचारी बना फिरता था। स्वर्ग जाकर पकड़ा गया। जो उस उर्वशी को श्राप दिया, उसका दण्ड भी दुर्वासा को मिलेगा।

❖ पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने गिद्ध तथा ब्याध को उनकी भक्ति अनुसार लाभ दिया। गणिका (वैश्या) का उद्धार किया।

❖ बली राजा की यज्ञ में बावना बने। फिर विशाल रूप किया। गज तथा मगरमच्छ युद्ध कर रहे थे तो उनकी भी गति भक्ति अनुसार की। द्रोपदी का चीर भी परमात्मा कबीर जी ने बढ़ाया। द्रोपदी श्री कृष्ण की भक्त थी। इसलिए बड़ाई कृष्ण को मिली।

❖ परमात्मा कबीर जी सर्व लोकों में सब स्थानों में विद्यमान हैं।

❖ **वाणी नं. 108-111 :-**

गरीब, सहंस अठासी छिक गये, साग पत्र किया भेट। सब साहन पति साह है, कबीर जगतं सेठ।।108।।
गरीब, देही मांहि बिदेह है, साहिब नर स्वरूप। अनंत लोक में रम रह्यी, शक्ति कै रंग न रूप।।109।।
गरीब, लघु दीर्घ देवा पुरुष, नर जैसा उनमान। सतगुरु सोई जानिये, मुक्ति करत हैं प्राण।।110।।
गरीब, सत भक्ति परम पुरूष की, जे कर जाने कोय। सतनाम तारी लगै, दिल दर्पण को धोय।।111।।

❖ सरलार्थ :- जिस समय ऋषि दुर्वासा राजा दुर्योधन की बात मानकर 12 वर्ष का बनवास काट रहे थे। पांडवों को श्राप देने के लिए अठासी हजार साथी ऋषियों को लेकर वन में गए। तब परमात्मा कबीर जी श्री विष्णु रूप बनाकर पांडवों के डेरे में गए थे। साक पत्र (बथुए के साग का पत्ता) भोजन के पात्र में शेष बचा था। उसको पानी में डालकर घोलकर वह पानी पीया। अठासी हजार ऋषि, दुर्वासा ऋषि समेत इतने छके कि पेट में अफारा आ गया। जैसे गधे लेट लगाते हैं ऐसे सब ऋषिजन व दुर्वासा ऋषि भोजन हजम करने के लिए लेट लगा रहे थे। भोजन का स्वाद बता रहा था कि खीर, हलवा, मांडे (पतली रोटी), फल, मेवे सब छिक-छिककर खाए हैं। कबीर परमेश्वर जगत सेठ हैं यानि संसार में सबसे धनी हैं। सब शाह यानि शाहूकारों का शाहूकार है।(108)

❖ परमात्मा की शक्ति सर्वव्यापक है। वह निराकार है। परमात्मा नराकार है। परमात्मा की शक्ति कण-कण में समाई है।(109)

❖ परमात्मा (लूथ) घोट तथा दीर्घ (बड़ा) जिस भी रूप में है, वह नर जैसे आकार का है। सतगुरू वही है जिसकी बताई साधना से साधक का मोक्ष होता है।(110)

❖ यदि कोई मोक्ष चाहता है तो सतपुरूष (परम दिव्य पुरुष) की सत्य भक्ति शास्त्रों में वर्णित करे। यदि जो कोई सत्य साधना का ज्ञान रखता है तो परम पुरूष की भक्ति करो। सत्य नाम के स्मरण में लगन लगाकर स्मरण करके दिल के दर्पण यानि अंतःकरण को साफ करे।(111)

❖ **वाणी नं. 112-113 :-**

गरीब, शिब का गण सेवन करैं, मुर्गलील तिस नाम। बहु उतपात करत है, पल पल आठौं जाम।।112।।
गरीब, सिद्धी शक्ति दिखाय कर, कोटि नगर नष्ट कर देत। किरंच नाम एक संत की, लगी तास कै फेट।।113।।

❖ **सरलार्थ :- काल द्वारा भ्रमित साधक शास्त्र विरूद्ध साधना करते हैं जिससे सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं। उनसे चमत्कार दिखाकर जनता में प्रशंसा के पात्र बन जाते हैं। सिद्धियों द्वारा हानि करके पूज्य बन जाते हैं। एक साधक शिवजी की साधना करके शिवजी के लोक में गण की उपाधि प्राप्त था। उसने सिद्धि-शक्ति से बहुत उत्पात मचा रखा था। उसका मुर्गलील नाम था। उसने अनेकों (पटण) नगर सिद्धि से नष्ट कर दिये थे। एक किरंच नाम के संत ने उसकी सिद्धि विद्या काटकर उसे अचेत कर दिया। सचेत होकर क्षमा याचना की।**

''सहज समाधि कैसे लगती है?''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 114-116 :-**

गरीब, जैसे हाली बीज धुनि, पंथी सें बतलाय। जामैं खंड परै नहीं, मुख सें बात सुनाय।।114।।
गरीब, नटवा की लै सुरति सैं, ढोल बोल बौह गाज। कमंद चढै करुणामई, कबहुं न बिगरै काज।।115।।
गरीब, ज्यौं धम घृती धात को, देवै तुरंत बताय। जाकौं हीरा दर्श है, जहां वहां टांकी लाय।।116।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा कबीर जी जी ने अपनी प्रिय आत्मा संत गरीबदास जी को तत्वज्ञान पूर्ण रूप में बताया था। संत गरीबदास जी ने उसे बताया है।(114)**

❖ **परमात्मा कबीर जी का भक्त नाम का जाप करे तथा नाम के स्मरण में ध्यान लगाए। सतलोक के सुख को याद करके रह-रहकर उसकी प्राप्ति के बाद के आनंद की कल्पना करे। सतलोक के ऊपर ध्यान रहे। स्मरण करे, तब नाम पर ध्यान रहे। इसे सहज समाधि कहते हैं। उदाहरण बताए हैं।(115)**

❖ **किसान हल चलाता हुआ बीज बो रहा होता है। कई किसानों के खेत एक गाँव के दूसरे गाँव को जाने वाले रास्ते पर होते हैं। किसान बीज भी बो रहा होता है। रास्ते पर चलते (पंथी) पैदल यात्री से बातें भी कर रहा होता है। बीज के दाने उसी प्रकार जमीन में बो रहा होता है। उसके बीज बोने के ध्यान में कमी नहीं आती। बिना बात करे जिस औसत से दाने छोड़ रहा होता है, यात्री से बातें करते समय भी वह उसी औसत से बीज के दाने छोड़ता रहता है। उसमें अंतर नहीं आता। इसे सहज समाधि कहा जाता है।**

अन्य उदाहरण ''नट'' यानि बाजीगर का बताया है। कबीर परमात्मा की वाणी है कि:-

कबीर जैसे नटनी चढ़ै बांस पर, नटवा ढ़ोल बजावै जी। इधर–उधर से निगाह बचाकर, ध्यान बांस में लावै जी।।

अर्थात् नट की पत्नी खेल करते समय लगभग 12-15 फुट लम्बे बाँस पर बिना जमीन में गाढ़े केवल जमीन के ऊपर रखकर उसके ऊपर चढ़ती है जो महासंतुलन का अनोखा खतरा भरा करतब होता है। पृथ्वी में गाड़कर भी बाँस पर चढ़ना कठिन है। वह तो बिना पृथ्वी में गाढ़े उसके ऊपर चढ़कर अंतिम सिरे पर पेट रखकर हाथ से भी बाँस को छोड़कर पैर भी सीधे कर लेती है। उसका पति ढ़ोल बजाकर उसके ध्यान को डिगाना चाहता है। दर्शक भी ताली पीट-पीटकर प्रसन्नता प्रकट करते हैं। परंतु नटनी सब ओर से

ध्यान हटाकर अपनी सुरति बाँस पर रखती है। इसलिए अपना (कर्तब) चमत्कारी अनोखा कार्य करने में सफलता प्राप्त करती है। कहीं-कहीं नट यही कर्तब दिखाता है। अन्य ढ़ोल जोर-जोर से बजाता है। वह भी अपने ध्यान को बाँस में एकाग्र करके सफल हो जाता है। इसी प्रकार साधक को नाम के स्मरण में ध्यान एकाग्र करके जाप करना चाहिए। भले ही कोई गाना गा रहा है या गाने किसी यंत्र में चलाकर ऊँची आवाज से सुन रहा है। साधक का ध्यान उस ओर न जाए, यह सहज समाधि है।

अन्य उदाहरण दिया है :- (धम घंति) पत्थर में हीरे को बताने वाला ध्यान से उस पहाड़ के पास खड़ा हो जाता है जिसमें हीरा है। हीरा पत्थर को चीरकर किसी दिशा की ओर चल पड़ता है। धमघंती ध्यान से उसकी गति (Movment) को जानता है। साथ में खड़े व्यक्ति अपनी बातें कर रहे होते हैं, परंतु धमघंती का ध्यान हीरे की चाल पर होता है। धमघंती बता देता है कि इतनी देर में हीरा इतने फुट फांसला (Distance) तय करेगा। उसी अनुसार पहाड़ को काटा जाता है। उसकी गहराई (Depth) भी धमघंती बता देता है। हीरा चलता-चलता उस पहाड़ के कटे हुए स्थान यानि खाई में गिर जाता है। हीरे का व्यापारी उसे प्राप्त कर लेता है। साधक को परमात्मा के नाम रूपी हीरे पर निंरतर ध्यान रखकर परमात्मा रूपी लाल को प्राप्त करना चाहिए।(116)

''सतगुरू की भूमिका''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 117-122 :-**

गरीब, कदली बीच कपूर है, ताहि लखै नहीं कोय। पत्र घूंघची बर्ण है, तहां वहां लीजै जोय।।117।।
गरीब, गज मोती मस्तक रहै, घूमै फील हमेश। खान पान चारा नहीं, सुनि सतगुरु उपदेश।।118।।
गरीब, जिनकी अजपा ध्वनि लगी, तिनका योही हवाल। सो रापति पुरूष कबीर के, मस्तक जाकै लाल।।119।।
गरीब, सीप समंदर में रहै, बूठै स्वांति समोय। वहां गज मोती जदि भवै, तब चुंबक चिडिया होय।।120।।
गरीब, चुंबक चिडिया चंच भरि, डारै नीर बिरोल। जदि गज मोती नीपजै, रतन भरे चहंडोल।।121।।
गरीब, चुंबक तो सतगुरु कह्या, स्वांति शिष्य का रूप। बिन सतगुरु निपजै नहीं, राव रंक और भूप।।122।।

❖ सरलार्थ :- इन वाणियों में सतगुरू की भूमिका प्रमाण सहित समझाई है। कहा है कि (कदली) केले के पेड़ के कोइए (केले का पूरा पेड़ पत्तों ही से निर्मित है। सबसे ऊपर वाला पत्ता गोलाकार में कीप की तरह ऊपर से चौड़ा गोलाकार नीचे कम परिधि का होता है। बीच में (थोथा) खाली होता है। उस गोल पत्ते के खाली भाग को कोइया कहते हैं।) में स्वाति नक्षत्र की वर्षा की बूँद गिर जाती है तो उस केले के पत्ते में कपूर बन जाता है। केला शिष्य है। स्वांति सतगुरू का मंत्र नाम है। नाम यदि योग्य शिष्य को दिया जाता है तो उसमें भक्ति रूपी कपूर तैयार होता है। मोक्ष मिलता है।

❖ अन्य उदाहरण (गज) हाथी का दिया है। कहा है कि हाथी के मस्तिक में एक स्थान परमात्मा ने बनाया है। श्वांति नक्षत्र की बारिश की बूँद ''चुंबक'' नाम की चिड़िया पंथ्वी पर गिरने से पहले अपने मुख में ग्रहण कर लेती है। वह कभी-कभी हाथी के मस्तक पर बैठी होती है। उसका स्वभाव है कि बारिश की बूँद को मुख में डालूँ। फिर उसका कुछ अंश मुख

से नीचे गिर जाता है। वह उस हाथी के मस्तक में बने सुराख में गिर जाता है। उससे हाथी के माथे में बने सुराख में अंदर-अंदर मोती बनने लग जाते हैं। जैसे माता का गर्भ का बच्चा बढ़ता है तो माता का पेट भी बढ़ता रहता है। फिर समय आने पर बच्चा सुरक्षित जन्म लेता है। इसी प्रकार हाथी के उस मोती उद्गम सुराख में कई चुंबक चिड़िया श्वांति की बूँदें डाल देती हैं। हाथी के मस्तक वाले मोती उद्गम स्थान में सैंकड़ों मोती तैयार हो जाते हैं। समय पूरा होने पर अपने आप निकलने लगते हैं। ढ़ेर लग जाता है। यह स्थान सब हाथियों में नहीं होता।

❖ इसमें हाथी शिष्य है। चुंबक चिड़िया सतगुरू है। श्वांति बूंद नाम है। जैसे ऐसे सतगुरू रूप चुंबक चिड़िया सच्चे नाम रूपी श्वांति शिष्य के हृदय में डालते हैं। भक्ति तथा मोक्ष रूपी मोती बनते हैं।

❖ जिस हाथी के मस्तक के अंदर मोती होते हैं। उसे अंदर ही अंदर नशा हो जाता है। वह मस्ती में मतवाला होकर घूमता रहता है। चारा खाना भी छोड़ देता है। जिन साधकों ने सतगुरू जी से उपदेश सुनकर दीक्षा लेकर सच्चे मन से अजपा जाप जपा तो उनकी ऐसी ही दशा हो जाती है। वे कबीर परमात्मा के (रापति) हाथी हैं जिनके हृदय में भक्ति रूपी लाल बन रहा है।

❖ अन्य उदाहरण सीप का दिया है। सीप (सीपि) एक जल की जीव है। समुद्र में रहती है। समुद्र का जल खारा होता है। जिस समय बारिश होने को होती है, तब समुद्र का जल अंदर से कुछ गर्म होता है। उस उष्णता से सीप को बेचैनी होती है। वह जल के ऊपर आकर मुख खोल लेती है। यदि उस समय बारिश की बूँदें गिर जाती हैं तो सीप को शांति हो जाती है। अपना मुख बंद कर लेती है। उस जल को जो सीप के मुख में गिरा, श्वांति कहते हैं। जिस सीप में श्वांति गिरी, उसमें मोती बन जाता है। कुछ समय उपरांत परिपक्व होकर मोती जल में गिर जाता है। इस उदाहरण में सीप शिष्य है। श्वांति दीक्षा मंत्र हैं। बादल सतगुरू है। सीप से मोती अपने आप नहीं निकलता। एक सुकच मीन है। वह मोती के ऊपर के माँस को खाने के लिए उसको टक्कर मारती है कि इस माँस के अंदर घुसकर खाऊँगी। परंतु वह माँस मात्र प्याज के जाले जैसा रक्त वर्ण का होता है। सुकच मछली की टक्कर से मोती सीप से निकलकर समुद्र में गिर जाती है। सुकच मीन सार शब्द है। श्वांती सतनाम है। यदि सुकच मीन टक्कर नहीं मारती है तो वह मोती सीप में ही गलकर नष्ट हो जाता है।

गरीब सुकच मीन मिलता ना भाई, तो श्वांति सीप अहले जाई।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने बताया है कि यदि सुकच मछली नहीं मिलती तो सीप तथा उसमें गिरी श्वांति (अहले) व्यर्थ जाती। सुकच मछली सारशब्द जानो। सारशब्द सतनाम के जाप को सफल करता है। सतगुरू सारशब्द देता है।

❖ इसी प्रकार भक्त को प्रथम नाम, द्वितीय नाम (सतनाम) मिल गए। सारनाम नहीं मिला तो मोक्ष नहीं होगा। वह जीवन व्यर्थ गया। परंतु अगला मनुष्य जन्म (स्त्री-पुरूष का) मिलेगा। उस जन्म में सतगुरू मिले और सब तीनों नाम मिल गए तो मोक्ष हो जाएगा। सतगुरू के बिना जीव का कल्याण संभव नहीं।

❖ **वाणी नं. 123-125 :-**

गरीब, अधरि सिंहासन गगनि में, बौहरंगी बरियाम। जाका नाम कबीर है, सारे सब के काम।।123।।
गरीब, पड़ा धनी से काम है, प्रहलाद भगति कूं बूझि। नरसिंह उतर्‌या अर्श सैं, किन्हैं न समझी गूझि।।124।।
गरीब, नर मृगेश आकार होय, कीन्ही संत सहाय। बालक वेदन जगतगुरु, जानत है सब माय।।125।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा कबीर जी का (अधर) ऊपर सतलोक में सिंहासन है। वह सब भक्तों के कार्य सिद्ध करता है।**

❖ **प्रहलाद भक्त को धणी (परमात्मा) से काम पड़ा तो परमात्मा ने उसका कार्य सिद्ध किया। प्रहलाद भक्त से पता करो कि कैसी अनहोनी परमात्मा ने की थी। परमात्मा समर्थ कबीर (अर्श) आकाश से उतरा था। हिरण्यकशिपु को मारा था।**

❖ **(नर) मानव (मगेश) सिंह रूप बनाकर संत प्रहलाद की सहायता की थी। जैसे बच्चा भूखा-प्यासा होता है तो उसकी (बेदन) पीड़ा (कष्ट) को माता जानती है। दूध-जल पिलाती है। ऐसे जगतगुरू अपने शिष्य के कष्ट को जानता है। अपने आप कष्ट निवारण कर देता है।**

❖ **वाणी नं. 126-133 :-**

गरीब, इस मौले के मुल्क में, दोनौं दीन हमार। एक बामे एक दाहिनै, बीच बसै करतार।।126।।
गरीब, करता आप कबीर है, अबिनाशी बड़ अल्लाह। राम रहीम करीम है, कीजो सुरति निगाह।।127।।
गरीब, नर रूप साहिब धनी, बसै सकल कै मांहि। अनंत कोटि ब्रह्मंड में, देखौ सबहीं ठांहि।।128।।
गरीब, घट मठ महतत्त्व में बसै, अचरा चर ल्यौलीन। च्यारि खानि में खेलता, औह अलह बेदीन।।129।।
गरीब, कौन गडै कौन फूकिये, च्यार्‌यौं दाग दगंत। औह इन में आया नहीं, पूरण ब्रह्म बसंत।।130।।
गरीब, मात पिता जाकै नहीं, नहीं जन्म प्रमाण। योह तो पूरण ब्रह्म है, करता हंस अमान।।131।।
गरीब, आतम और प्रमात्मा, एकै नूर जहूर। बिच कर इयांई कर्म की, तातैं कहिये दूर।।132।।
गरीब, परमात्म पूरण ब्रह्म है, आत्म जीव धर्म। कल्प रूप कलि में पड़्या, जासैं लागे कर्म।।133।।

❖ **सरलार्थ :- परमात्मा के सब जीव हैं। दोनों धर्म (हिन्दु तथा मुसलमान) हमारे है। एक परमात्मा के दांई ओर जानो, दूसरा बांई ओर। दोनों के मध्य में परमात्मा निवास करता है।(126)**

❖ **कबीर जी स्वयं ही सष्टि के रचयिता हैं। अविनाशी (अल्लाह) परमात्मा हैं। राम कहो, रहीम कहो। (करीम) दयालु हैं। (किजो सुरति निगाह) ध्यान से देखो यानि विचार करो।(127)**

❖ **परमात्मा (नर) मानव रूप में हैं। सबका (धनी) मालिक सर्वव्यापक है।(128-129)**

❖ **कोई तो मुर्दे को पथ्वी में गाड़ देता है। कब्र बनाता है। कोई अग्नि में जला देता है। यह सब मुझे (कबीर परमेश्वर जी को) अच्छा नहीं लगता। पूर्ण मुक्ति प्राप्त करो। वह तो (परमात्मा) चारों दागों में नहीं आता। एक जमीन में गाड़ते हैं। एक धर्म अग्नि में जला देता है। एक जल प्रवाह कर देता है। एक जंगल में पक्षियों के खाने के लिए डाल देता है। ये चार दाग कहे जाते हैं। परंतु परमात्मा कबीर जी किसी दाग में नहीं आया अर्थात् अजर-अमर है कबीर जी।(130)**

❖ **परमात्मा के कोई माता-पिता नहीं हैं। उनके जन्म का कहीं पर प्रमाण नहीं है।**

कबीर परमात्मा पूर्ण ब्रह्म भक्तों को (अमान) शांति प्रदान करता है।(131)

❖ **आत्मा तथा परमात्मा की एक जैसी छवि है। बीच में पाप कर्मों का (झांई) मैल है। इसलिए परमात्मा जीव से दूर कहा जाता है।(132)**

❖ **परमात्मा तो पूर्ण ब्रह्म बताया है। आत्मा जीव धर्म से जन्मती-मरती है। इसलिए जीव धर्म में है।(133)**

❖ **वाणी नं. 134-141 :-**

गरीब, कर्म लगे शिब बिष्णु कै, भरमें तीनौं देव। ब्रह्मा जुग छतीस लग, कछू न पाया भेव।।134।।
गरीब, शिब कूं ऐसा बर दिया, अपनेही परि आय। भागि फिरे तिहूं लोक में, भस्मागिर लिये ताय।।135।।
गरीब, बिष्णु रूप धरि छल किया, मारे भसमां भूत। रूप मोहिनी धरि लिया, बेगि सिंहारे दूत।।136।।
गरीब, शिब कूं बिंदु जराईयां, कंदर्प कीया नांस। फेरि बौहरि प्रकाशियां, ऐसी मनकी बांस।।137।।
गरीब, लाख लाख जुग तप किया, शिब कंदर्प कै हेत। काया माया छाड़ि करि, ध्यान कंवल शिब श्वेत।।138।।
गरीब, फूक्या बिंदु बिधान सैं, बौहर न ऊगै बीज। कला बिश्वंभर नाथ की, कहां छिपाऊं रीझ।।139।।
गरीब, पारबती पत्नी पलक परि, त्रिलोकी का रूप। ऐसी पत्नी छाड़ि करि, कहां चले शिब भूप।।140।।
गरीब, रूप मोहनी मोहिया, शिब से सुमरथ देव। नारद मुनि से को गिनै, मरकट रूप धरेव।।141।।

❖ **वाणी नं. 134-136 का सरलार्थ :- सुक्ष्म मन की मार सर्व जीवों पर गिरती है। सब एक समान सुक्ष्म मन के सामने विवश हैं। जब तक पूर्ण सतगुरू नहीं मिलता, तब तक सुक्ष्म मन के सामने विवेक कार्य नहीं करता। हिन्दु धर्म के श्रद्धालु श्री शिव जी को तो सक्षम मानते हैं। सब देवों का देव यानि महादेव कहते हैं। सुक्ष्म मन के कारण वे भी मार खा गए।**

➢ **प्रमाण :- जिस समय भस्मासुर ने तप करके भस्मकण्डा श्री शिव जी से वचनबद्ध करके ले लिया था। तब भस्मासुर ने शिव से कहा कि मैं तेरे को भस्म करूँगा। तेरे को मारकर तेरी पत्नी पार्वती को अपनी पत्नी बनाऊँगा। तब भय के कारण श्री शिव जी भाग लिए। भस्मासुर में भी सिद्धियां थी। वह भी साथ दौड़ा। शिवजी भय के कारण अधिक गति से दौड़ा तथा एक मोड़ पर मुड़ गया। उसी मोड़ पर एक सुंदर स्त्री खड़ी थी। उसने भस्मासुर की ओर अश्लील दष्टि से देखा और बोली कि शिव तो आसपास रूकेगा नहीं, जाने दे। आजा मेरे साथ मौज-मस्ती कर ले। मैं तेरा ही इंतजार कर रही हूँ। तुम पूर्ण मर्द हो, शक्तिशाली हो। भस्मासुर पर काम वासना का भूत सवार था ही, उसे और क्या चाहिए था? उसी समय रूक गया। युवती ने उसका हाथ पकड़कर नचाया। गंडहथ नत्य करते समय हाथ सिर पर करना होता है। भस्मासुर का भस्मकण्डे वाला हाथ भस्मासुर के सिर पर करने को युवती ने कहा कि इस नत्य में दांया हाथ सिर पर करते हैं। यह नत्य पूरा करके मिलन करेंगे। ज्यों ही भस्मासुर ने भस्मकण्डे वाला हाथ सिर पर किया तो युवती ने बोला भस्म। उसी समय भस्मासुर जलकर नष्ट हो गया। वह युवती भगवान स्वयं ही शिव शंकर की जान की रक्षा के लिए बने थे।, परंतु महिमा विष्णु को दी। विष्णु रूप में प्रकट होकर परमात्मा उस भस्मकण्डे को लेकर श्री शिव के सामने खड़े हो गए तथा शिव से कहा हे शिव! इतने तेज क्यों दौड़ रहे हो? शिव ने सब बात बताई कि आप भी दौड़ जाओ। भस्मासुर मुझे मारने को मेरे पीछे लगा है। तब विष्णु रूपधारी परमात्मा ने कहा कि देख! आपका**

भस्मकण्डा मेरे पास है। शिव ने तुरंत पहचान लिया और रूककर पूछा कि यह आपको कैसे मिला? विश्वास नहीं हो रहा है। भगवान ने कहा यह न पूछ। अपना कण्डा लो और घर को जाओ। परंतु शिव को विश्वास नहीं हो रहा था कि उग्र रूप धारण किए भस्मासुर से कैसे ये भस्मकण्डा लिया। जिद कर ली। तब परमात्मा ने कहा कि फिर बताऊँगा। इतना कहकर अंतर्ध्यान (अदृश्य) हो गए। शिव कुछ आगे गया तो देखा कि एक अति सुंदर युवती अर्धनग्न शरीर में मस्ती से एक बाग में टहल रही थी। दूर तक कोई व्यक्ति दिखाई नहीं दे रहा था। शिवजी ने इधर-उधर देखा और लड़की की ओर मिलन के उद्देश्य से चले। लड़की शिव को देखकर मुस्कुराकर आगे को कुछ तेज चाल से चटक-मटककर चल पड़ी। शिव ने मुस्कट के बाद लड़की का हाथ पकड़ा। तब तक शिव का वीर्यपतन हो चुका था। उसी समय विष्णु रूप में परमात्मा खड़े थे और कहा कि मैंने भस्मासुर को इस प्रकार वश में करके गंडहथ नाच नचाकर भस्म किया है।

संत गरीबदास जी ने सुक्ष्म मन की शक्ति बताई है कि शिवजी की पत्नी पार्वती तीन लोक में अति सुंदर स्त्रियों में से एक थी। अपनी पत्नी को छोड़कर शिवजी ने चंचल माया यानि बद नारी से मिलन (Sex) करने के लिए उसे पकड़ लिया। यह सुक्ष्म मन की उत्पत्ति का उत्पात है।

❖ वाणी नं. 137-141 का सरलार्थ :-

❖ इन्हीं काल प्रेरित आत्माओं (देवियों) ने ब्रह्मादिक (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को भी मोहित कर लिया यानि अपने जाल में फँसा रखा है। शेष यानि अन्य बचे हुए गणेश जी भी स्त्री से संग में रहे। गणेश जी के दो पुत्र थे। एक का नाम शुभम्=शुभ, दूसरे लाभम्=लाभ था। शंकर (शिव जी) की अडिग (विचलित न होने वाली) समाधि (आंतरिक ध्यान) लगी थी जो हमेशा (सदा) ध्यान में रहते हैं। उनको भी मोहिनी अप्सरा (स्वर्ग की देवी) ने मोहित करके डगमग कर दिया था।

कथा :- शंकर जी का मोहिनी स्त्री के रूप पर मोहित होना

जिसमें दक्ष की बेटी यानि उमा (शंकर जी की पत्नी) ने श्री रामचन्द्र जी की बनवास में सीता रूप बनाकर परीक्षा ली थी। श्री शिव जी ऐसा न करने को कहकर घर से बाहर चले गए थे। सीता जी का अपहरण होने के पश्चात् श्रीराम जी अपनी पत्नी के वियोग में विलाप कर रहे थे तो उनको सामान्य मानव जानकर उमा जी ने शंकर भगवान की उस बात पर विश्वास नहीं हुआ कि ये विष्णु जी ही पृथ्वी पर लीला कर रहे हैं। जब उमा जी सीता जी का रूप बनाकर श्री राम जी के पास गई तो वे बोले, हे दक्ष पुत्री माया! भगवान शंकर को कहाँ छोड़ आई। इस बात को श्री राम जी के मुख से सुनकर उमा जी लज्जित हुई और अपने निवास पर आई। शंकर जी की आत्मा में प्रेरणा हुई कि उमा ने परीक्षा ली है। शंकर जी ने विश्वास के साथ कहा कि परीक्षा ले आई। उमा जी ने कुछ संकोच करके भय के साथ कहा कि परीक्षा नहीं ली अविनाशी। शंकर जी ने सती जी को हृदय से त्याग दिया था। पत्नी वाला कर्म भी बंद कर दिया। बोलना भी कम कर दिया तो सती जी अपने

घर राजा दक्ष के पास चली गई।

राजा दक्ष ने उसका आदर नहीं किया क्योंकि उसने शिव जी के साथ विवाह पिता की इच्छा के विरूद्ध किया था। राजा दक्ष ने हवन कर रखा था। हवन कुण्ड में छलाँग लगाकर सती जी ने प्राणान्त कर दिया था। शंकर जी को पता चला तो अपनी ससुराल आए। राजा दक्ष का सिर काटा, फिर उस पर बकरे का सिर लगाया। अपनी पत्नी के कंकाल को उठाकर दस हजार वर्ष तक उमा-उमा करते हुए पागलों की तरह फिरते रहे। एक दिन भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से उस कंकाल को टुकड़े-टुकड़े कर दिया। जहाँ पर धड़ गिरा, वहाँ पर वैष्णव देवी मंदिर बना। जहाँ पर आँखें गिरी, वहाँ पर नैना देवी मंदिर बना। जहाँ पर जीभ गिरी, वहाँ पर ज्वाला जी का मंदिर बना तथा पर्वत से अग्नि की लपट निकलने लगी। तब शंकर जी सचेत हुए तथा अपनी दुर्गति का कारण कामदेव (Sex) को माना। कामदेव वश हो जाए तो न स्त्री की आवश्यकता हो और न ऐसी परेशानी हो। यह विचार करके हजारों वर्ष काम (Sex) का दमन करने के उद्देश्य से तप किया। एक दिन कामदेव उनके निकट आया और शंकर जी की दृष्टि से भस्म हो गया। शंकर जी को अपनी सफलता पर असीम प्रसन्नता हुई। जो भी देव उनके पास आता था तो उससे कहते थे कि मैंने कामदेव को भस्म कर दिया है यानि काम विषय पर विजय प्राप्त कर ली है। मैं कभी भी किसी सुंदरी से प्रभावित नहीं हो सकता। अन्य जो विवाह किए हुए हैं, वे ऊपर से सुखी नजर आते हैं, अंदर से महादुःखी रहते हैं। उनको सदा अपनी पत्नी की रखवाली, समय पर घर पर न आने से डाँटें खाना आदि-आदि परेशानियां सदा बनी रहती हैं। मैंने यह दुःख निकट से देखा है। अब न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी।

काल ब्रह्म को चिंता बनी कि यदि सब इस प्रकार स्त्री से घृणा करेंगे तो संसार का अंत हो जाएगा। मेरे लिए एक लाख मानव का आहार कहाँ से आएगा? इस उद्देश्य से नारद जी को प्रेरित किया। एक दिन नारद मुनि जी आए। उनके सामने भी अपनी कामदेव पर विजय की कथा सुनाई। नारद जी ने भगवान विष्णु को यथावत सुनाई। श्री विष्णु जी को काल ब्रह्म ने प्रेरणा की। भाई की परीक्षा करनी चाहिए कि ये कितने खरे हैं। काल ब्रह्म की प्रेरणा से एक दिन शिव जी विष्णु जी के घर के आँगन में आकर बैठ गए। सामने बहुत बड़ा फलदार वृक्षों का बाग था। भिन्न-भिन्न प्रकार के फूल खिले थे। बसंत जैसा मौसम था। श्री विष्णु जी, शिव जी के पास बैठ गए। कुशलमंगल जाना। फिर विष्णु जी ने पूछा, सुना है कि आपने काम पर विजय प्राप्ति कर ली है। शिव जी बोले, हाँ, मैंने कामदेव का नाश कर दिया है। कुछ देर बाद शिव जी के मन में प्रेरणा हुई कि भगवान मैंने सुना है कि सागर मंथन के समय आप जी ने मोहिनी रूप बनाकर राक्षसों को आकर्षित किया था। आप उस रूप में कैसे लग रहे थे? मैं देखना चाहता हूँ। पहले तो बहुत बार विष्णु जी ने मना किया, परंतु शिव जी के हठ के सामने स्वीकार किया और कहा कि कभी फिर आना। आज मुझे किसी आवश्यक कार्य से कहीं जाना है। यह कहकर विष्णु जी अपने महल में चले गए। शिव जी ने कहा कि जब तक आप वह रूप नहीं दिखाओगे, मैं भी जाने वाला नहीं हूँ। कुछ ही समय के बाद शिव जी की दृष्टि बाग के एक दूर वाले कोने में एक अपसरा पर पड़ी जो

सुन्दरता का सूर्य थी। इधर-उधर देखकर शिव जी उसकी ओर चले पड़े, ज्यों-ज्यों निकट गए तो वह सुंदरी अधिक सुंदर लगने लगी और वह अर्धनग्न वस्त्र पहने थी। कभी गुप्तांग वस्त्र से ढ़क जाता तो कभी हवा के झोंके से आधा हट जाता। सुंदरी ऐसे भाव दिखा रही थी कि जैसे उसको कोई नहीं देख रहा। जब शिव जी को निकट देखा तो शर्मशार होकर तेज चाल से चल पड़ी। शिव जी ने भी गति बढ़ा दी। बड़े परिश्रम के पश्चात् तथा घने वक्षों के बीच मोहिनी का हाथ पकड़ पाए। तब तक शिव जी का शुक्रपात हो चुका था। उसी समय सुंदरी वाला स्वरूप श्री विष्णु रूप था। भगवान विष्णु जी शिव जी की दशा देखकर मुस्काए तथा कहा कि ऐसे उन राक्षसों से अमत छीनकर लाया था। वे राक्षस ऐसे मोहित हुए थे जैसे मेरा छोटा भाई कामजीत अब काम पराजित हो गया। शिव जी ने उसके पश्चात् हिमालय राजा की बेटी पार्वती से अंतिम बार विवाह किया। पार्वती वाली आत्मा वही है जो सती जी थी। पार्वती रूप में अमरनाथ स्थान पर अमर मंत्र शिव जी से प्राप्त करके अमर हुई है।

इस प्रकार वाणी में कहा है कि शंकर जी की समाधि तो अडिग (न डिगने वाली) थी जैसा पौराणिक मानते हैं। वह भी मोहे गए। माया के वश हो गए।

❖ वाणी नं. 140 में बताया है कि भगवान शिव की पत्नी पार्वती तीनों लोकों में सबसे सुंदर स्त्रियों में से एक है। शिव राजा ऐसी सुंदर पत्नी को छोड़ मोहिनी स्त्री के पीछे चल पड़े। पहले अठासी हजार वर्ष तप किया। फिर लाख वर्ष तप किया काम (Sex) पर विजय पाने के लिए और भर्म भी था कि मैनें काम जीत लिया। फिर हार गया।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 145 :-

गरीब, कृष्ण गोपिका भोगि करि, फेरि जती कहलाय। याकी गति पाई नहीं, ऐसे त्रिभुवनराय।।145।।

❖ सरलार्थ :- श्री कष्ण के विषय में श्रीमद् भागवत (सुधा सागर) में प्रमाण है कि श्री कष्ण मथुरा वंदावन की गोपियों (गोपों की स्त्रियों) के साथ संभोग (Sex) किया करते थे। वे फिर भी जती कहलाए। (अपनी स्त्री के अतिरिक्त अन्य की स्त्री से कभी संभोग न करने वाला या पूर्ण रूप से ब्रह्मचारी को जती कहते हैं।) उसका भेद ही नहीं पाया। ऐसे ये तीन लोक के मालिक {श्री कष्ण के अंदर प्रवेश करके काल ब्रह्म गोपियों से सैक्स करता था। स्त्रियों को तो श्री कष्ण नजर आता था। काल ब्रह्म सब कार्य गुप्त करता है।} हैं।

❖ वाणी नं. 142-144 :-

गरीब, योह बीजक बिस्तार है, मन की झाल किलोल। पुत्री ब्रह्मा देखि करि, हो गये डामांडोल।।142।।
गरीब, देह तजी दुनियां तजी, शिब शिर मारी थाप। ऐसे ब्रह्मा पिता कै, काम लगाया पाप।।143।।
गरीब, फेरि कल्प करुणा करी, ब्रह्मा पिता सुभान। स्वर्ग समूल जिहांन में, योह मन है शैतान।।144।।

❖ सरलार्थ :- एक समय ब्रह्मा जी देवताओं तथा ऋषियों को वेद ज्ञान समझा रहे थे। मन तथा इंद्रियों पर संयम रखने पर जोर दे रहे थे। ब्रह्मा जी की बेटी सरस्वती पति चुनने के लिए अपने पिता की सभा में गई जिसमें युवा देवता तथा ऋषि विराजमान थे। उनको आकर्षित करने के लिए सब श्रंगार करके सज-धजकर गई थी। अपनी पुत्री की सुंदरता देखकर काम (Sex) के वश होकर संयम खोकर विवेक का नाश करके अपनी बेटी से संभोग (Sex) करने को उतारू हो गया था। ब्रह्मा पाप के भागी बने। मन तो कबीर परमात्मा की

भक्ति तथा तत्वज्ञान से काबू आता है।

❖ **वाणी नं. 146 :-**

गरीब, बाण लगाया बालिया, प्रभास क्षेत्र कै मांहि। सुक्ष्म देही स्वर्गहिं गये, यहां कुछ बिछर्या नाहिं।।146।।

❖ **सरलार्थ :- श्री कृष्ण जी के पैर में बालिया नामक शिकारी ने तीर मारा। श्री कृष्ण जी की मृत्यु हो गई, परंतु सुक्ष्म शरीर स्वर्ग चला गया।(146)**

❖ **वाणी नं. 147-149 :-**

गरीब, दुर्बासा कोपे तहां, समझ न आई नीच। छप्पन कोटि जादौं कटे, मची रुधिर की कीच।।147।।
गरीब, गूदड़ गर्भ बनाय करि, कीन्हीं बहुत मजाक। डरिये सांई संत सैं, सुखदे बोलै साख।।148।।
गरीब, दश हजार पुत्र कटे, गोपी काब्यौं लूटि। गनिका चढी बिवान में, भाव भक्ति सें छूटि।।149।।

❖ **सरलार्थ :- एक समय दुर्वासा ऋषि द्वारिका नगरी के पास वन में आकर ठहरा। धूना अग्नि लगाकर तपस्या करने लगा। दुर्वासा ऋषि श्री कृष्ण जी के आध्यात्मिक गुरू थे। {ऋषि संदीपनी श्री कृष्ण के अक्षर ज्ञान करवाने वाले शिक्षक (गुरू) थे।} दुर्वासा जी की ख्याति चारों ओर द्वारका नगरी में फैल गई कि ऐसे पहुँचे हुए ऋषि हैं। भूत, भविष्य तथा वर्तमान की सब जानते हैं। द्वारिका के निवासी श्री कृष्ण से अधिक किसी भी ऋषि व देव को नहीं मानते थे। उनको अभिमान था कि हमारे साथ श्री कृष्ण हैं। कोई भी देव, ऋषि व साधु हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। श्री कृष्ण को सर्वशक्तिमान मान रखा था।**

द्वारिका के नौजवानों को शरारत सूझी। आपस में विचार किया कि साधु लोग ढोंगी होते हैं। इनकी पोल खोलनी चाहिए। चलो दुर्वासा ऋषि की परीक्षा लेते हैं। श्री कृष्ण के पुत्र प्रधूमन ने गर्भवती स्त्री का स्वांग धारण किया। पेट के ऊपर छोटा कड़ाहा बाँधा। उसके ऊपर रूई-लोगड़ रखकर वस्त्र बाँधकर स्त्री के कपड़े पहना दिए। उसका एक पति बना लिया। सात-आठ नौजवान यादव उनके साथ दुर्वासा के डेरे में गए और प्रणाम करके निवेदन किया कि ऋषि जी आपका बहुत नाम सुना है कि आप भूत-भविष्य तथा वर्तमान की जानते हैं। ये पति-पत्नी हैं। इनके विवाह के बारह वर्ष बाद परमात्मा ने संतान की आश पूरी की है। ये यह जानना चाहते हैं कि गर्भ में लड़का होगा या लड़की। ये यह जानने के लिए उतावले हो रहे हैं। कृपया बताने का कष्ट करें। दुर्वासा ऋषि ने ध्यान लगाकर देखा तो सब समझ में आ गया। क्रोध में भरकर बोला, बताऊँ क्या होगा? सबने एक स्वर में कहा कि हाँ! ऋषि जी बताओ। दुर्वासा बोला कि इस गर्भ से यादव कुल का नाश होगा। चले जाओ यहाँ से। सब भाग लिए। गाँव में बुद्धिमान बुजुर्गों को पता चला कि बच्चों ने ऋषि दुर्वासा के साथ मजाक कर दिया। ऋषि ने यादव कुल का नाश होने का शॉप दे दिया है। जुल्म हो गया। सब मरेंगे। अब क्या उपाय किया जाए? सब मिलकर अपने गुरू तथा राजा श्री कृष्ण जी के पास गए तथा सब हाल कह सुनाया। श्री कृष्ण जी से कहा कि इस कहर से आप ही बचा सकते हो। श्री कृष्ण जी ने कहा कि उन सब बच्चों को साथ लेकर ऋषि दुर्वासा के पास जाओ। इनसे क्षमा मँगवाओ। तुम भी बच्चों की ओर से क्षमा माँगो। सब मिलकर ऋषि दुर्वासा के पास गए तथा बच्चों से गलती की क्षमा याचना करवाई। स्वयं भी क्षमा याचना की। ऋषि दुर्वासा बोले कि वचन वापिस नहीं हो सकता। सब वापिस श्री कृष्ण के

पास आए तथा कहा कि दुर्वासा के शॉप से बचने का उपाय बताऐं। श्री कष्ण ने कहा कि जो-जो वस्तु गर्भ स्वांग में प्रयोग की थी। उनका नामों-निशान मिटा दो। उन्हीं से अपने कुल का नाश होना कहा है। कपड़े-रूई-लोगड़ को जलाकर उनकी राख को प्रभास क्षेत्र में नदी में डाल दो। जो लोहे की कड़ाही है, उसे पत्थर पर घिसा-घिसाकर चूरा बनाकर प्रभास क्षेत्र में दरिया में डाल दो। न रहेगा बाँस, न बजेगी बाँसुरी। द्वारिकावासियों ने अपने गुरू श्री कष्ण जी के आदेश का पालन किया। लोहे की कड़ाही का एक कड़ा एक व्यक्ति को घिसाने के लिए दिया था। उसने कुछ घिसाया, पूरा नहीं घिसा। वैसे ही जमना दरिया में फैंक दिया। घिसने से उस कड़े में चमक आ गई थी। एक मछली ने उसे खाने की वस्तु समझकर खा लिया। उस मछली को एक बालिया नाम के भील ने पकड़कर काटा तो कड़ा निकला। उसका लोहा पक्का था। बालिया ने उससे अपने तीर का आगे वाला हिस्सा विषाक्त बनवा लिया। कड़ाहे का जो लोहे का चूर्ण दरिया में डाला था, उसका तेज-तीखे पत्तों वाला घास उग गया। पत्ते तलवार की तरह पैने थे। कपड़ों तथा रूई-लोगड़ (पुरानी रूई) की राख का भी घास उग गया।

कुछ वर्षों के बाद दुर्वासा के शॉप के कारण द्वारिका में अनहोनी घटनाऐं होने लगी। आपसी झगड़े होने लगे। एक-दूसरे को छोटी-सी बात पर मारने लगे। सारी द्वारिका में उपद्रव होने लगे। द्वारिका नगरी के बड़े-सयाने लोग मिलकर श्री कष्ण जी के पास गए तथा दुःख बताया कि नगरी में किसी को किसी का बोल अच्छा नहीं लग रहा है। बिना बात के मरने-मारने को तैयार हो जाते हैं। छोटे-बड़े की शर्म नहीं रही है। क्या कारण है तथा यह कैसे शान्त होगा? श्री कष्ण जी ने बताया कि ऋषि दुर्वासा के शॉप के कारण यह हो रहा है। इसका समाधान सुनो! नगरी के सर्व नर (छोटे नवजात लड़के साहित) यादव प्रभास क्षेत्र में उसी स्थान पर यमुना नदी में स्नान करो जिस स्थान पर कड़ाही का चूर्ण डाला था। शॉप से बचने के लिए द्वारिका नगरी के सब बालक, नौजवान तथा वद्ध स्नान करने गए। स्नान करके बाहर निकलकर एक-दूसरे से गाली-गलौच करने लगे और उस कड़ाही के चूरे से उत्पन्न घास को उखाड़कर एक-दूसरे को मारने लगे। तलवार की तरह घास से सिर कटकर दूर गिरने लगे। कुछ व्यक्ति बचे थे। अन्य सब के सब लड़कर मर गए। उन बचे हुओं को ज्योति निरंजन काल ने स्वयं श्री कष्ण में प्रवेश करके उस घास से मार डाला। अकेला श्री कष्ण बचा था। एक वक्ष के नीचे जाकर लेट गया। एक पैर को दूसरे पैर के घुटने पर रखकर लेट गया। दांये पैर के तलुए (पँजे) में पदम जन्म से लगा था जो चमक रहा था। जिस बालिया नाम के भील शिकारी ने मछली से निकले कड़ाही के कड़े का विष लगाकर तीर बनवाया था। वह शिकारी उसी तीर को लेकर उस स्थान पर शिकार की तलाश में आया जिस वक्ष के नीचे श्री कष्ण लेटे थे। वक्ष की छोटी-छोटी टहनियाँ चारों और नीचे पथ्वी को छू रही थी। लटक रही थी। उन झुरमुटों में से श्री कष्ण के पैर का पदम ऐसा लग रहा था जैसे किसी मग की आँख चमक रही हो। शिकारी बालिया ने आव-देखा न ताव, उस चमक पर तीर दे मारा। तीर निशाने पर लगा। पैर के तलवे में विषाक्त तीर लगने से श्री कष्ण की चीख निकली। बालिया समझ गया कि किसी व्यक्ति को तीर लगा

है। निकट जाकर देखा तो कोई राजा है। पूछने पर पता चला कि श्री कष्ण है। अपनी गलती की क्षमा याचना करने लगा कहा कि भगवान! धोखे से तीर लग गया। मैंने आपके पैर के पदम की चमक मग की आँख जैसी लगी। क्षमा करो। श्री कष्ण ने कहा कि बालिया तेरा कोई दोष नहीं है, होनी प्रबल होती है। मैंने तेरा बदला चुकाया है। त्रेतायुग में तू कसकंदा का राजा सुग्रीव का भाई बाली था। मैं अयोध्या में रामचन्द्र नाम से राजा दशरथ के घर जन्मा था। उस समय मैंने तेरे को वक्ष की ओट लेकर धोखा करके लड़ाई में मारा था। अब तू मेरा एक काम कर। द्वारिका में जाकर बता दे कि सर्व यादव दुर्वासा के शॉपवश आपस में लड़कर मर गए हैं। कुछ समय उपरांत द्वारिका की स्त्रियों की भीड़ लग गई। हाहाकार मच गया। पाण्डव श्री कष्ण के रिश्तेदार थे। वे भी आ गए। श्री कष्ण ने अर्जुन से कहा कि आप सर्व गोपियों यानि यादवों की स्त्रियों को अपने पास ले जाना। यहाँ कोई नर यादव नहीं बचा है। आसपास के भील इनकी इज्जत खराब करेंगे। पाण्डवों से कहा कि तुम राज्य अपने पौत्र को देकर हिमालय में जाकर घोर तप करो और अपने युद्ध में किए पापों का नाश करो। अर्जुन ने पूछा भगवान! एक प्रश्न आज मैं आपसे करूँगा। आप सत्य उत्तर देना। आप अंतिम श्वांस गिन रहे हो, झूठ मत बोलना। श्री कष्ण ने कहा कि प्रश्न कर। अर्जुन बोला! आपने गीता का ज्ञान कुरूक्षेत्र के मैदान में महाभारत युद्ध से पहले सुनाया था। उसमें कहा था कि अर्जुन! युद्ध कर ले। तुम्हें कोई पाप नहीं लगेंगे। तू निमित मात्र बन जा। सब सैनिक मैंने मार रखे हैं। तू युद्ध नहीं करेगा तो भी मैं इन्हें मार दूँगा। जब युद्धिष्ठिर को भयंकर स्वपन आने लगे। आपसे कारण जाना तो आपने बताया था कि युद्ध में किए बंधुघात के पाप के परिणामस्वरूप कष्ट आया। समाधान यज्ञ करना बताया। उस समय मैं आपसे विवाद नहीं कर सका क्योंकि भाई की जिंदगी का सवाल था। आज फिर आपने वही जख्म हरा कर दिया। इतनी झूठ बोलकर हमारा नाश किसलिए करवाया? कौन-से जन्म का बदला लिया? श्री कष्ण ने कहा अर्जुन! तुम मेरे अजीज हो! होनहार बलवान होती है। गीता में क्या कहा, उसका मुझे कोई ज्ञान नहीं। आप मेरी आज्ञा का पालन करो। यह कहकर श्री कष्ण मर गए। पाँचों पाण्डवों व साथ गए नौकरों ने मिलकर सब यादवों का अंतिम संस्कार किया। कुछ के शव दरिया में प्रवाह कर दिए। श्री कष्ण ने कहा था कि मेरे शरीर को जलाकर बची हुई अस्थियाँ व राख को एक लकड़ी के संदूक (Box) में डालकर दरिया में बहा देना। पाण्डवों ने वैसा ही किया। {वह संदूक समुद्र में चला गया। फिर उड़ीसा प्रांत के अंदर जगन्नाथ पुरी के पास बहता हुआ चला गया। उड़ीसा के राजा इन्द्रदमन को स्वपन में श्री कष्ण ने दर्शन देकर कहा कि एक संदूक समुद्र में इस स्थान पर है। उसमें मेरे शरीर की अस्थियाँ तथा राख हैं। उसको निकालकर उसी किनारे पर उन अस्थियों (हडिड्यों) को जमीन में दबाकर ऊपर एक सुंदर मंदिर बनवा दे। ऐसा किया गया। जो जगन्नाथ नाम से मंदिर प्रसिद्ध है।}

❖ चार पाण्डव पहले चले गए। अर्जुन को गोपियों को लेकर आने को छोड़ गए। अर्जुन के पास वही गांडीव धनुष था जिससे लड़ाई करके महाभारत में जीत प्राप्त की थी। अर्जुन द्वारिका की सर्व स्त्रियों को बैलगाड़ियों में बैठाकर इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) के लिए चल पड़ा।

रास्ते में भीलों ने अर्जुन को घेर लिया। अर्जुन को पीटा। गोपियों को लूटा। कुछ स्त्रियों को भील उठा ले गए। अर्जुन कुछ नहीं कर सका। धनुष उठा भी नहीं सका। तब अर्जुन ने कहा था कि कष्ण नाश करना था। युद्ध में पाप करवाने के लिए तो बल दे दिया। लाखों योद्धा इसी गांडीव धनुष से मार गिराए। कोई मेरे सामने टिकने वाला नहीं था। आज वही अर्जुन है, वही धनुष है। मैं खड़ा-खड़ा काँप रहा हूँ। कष्ण जालिम था। धोखेबाज था। कबीर परमेश्वर जी हमें समझाते हैं कि यह जुल्म कष्ण ने नहीं किया, ज्योति निरंजन (काल ब्रह्म) ने किया है। श्री कष्ण का जीवन देख लो। श्री कष्ण अपने कुल को मथुरा से लेकर जान बचाकर द्वारिका आया। द्वारिका में उनकी आँखों के सामने सब यादव कुल नष्ट हो गया। श्री कष्ण का बेटा मर गया। पोता मर गया। सर्व कुल नष्ट हो गया। स्वयं बेमौत मरा। उसके कुल की स्त्रियों की दुर्गति भीलों ने की। जबरदस्ती उठा ले गए। उनकी इज्जत खराब की। नरक का जीवन जीने के लिए मजबूर हुई। उसी श्री कष्ण की पूजा करके जो सुख-शान्ति की आशा करता है। उसमें कितनी बुद्धि है, इस घटना से पता चलता है।

❖ **वाणी नं. 150-184 :-**

गरीब, दुर्बासा काली शिला, बज्र बली तिहूं लोक। अम्बरीष दरबार में, तिन्ह भी खाया धोख।।150।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश परि, अम्बरीष कूं घालि। तीन लोक भागे फिरे, ऐसी अबिगत चाल।।151।।
गरीब, कल्प किसी नहीं कीजिये, जो चाहे सो होय। दुर्बासा के छिपन कूं, कहीं न पाई खोहि।।152।।
गरीब, स्वर्ग मृत पाताल में, चक्र सुदर्शन डीक। दुर्बासा के चक्र सैं, जरे नहीं अम्बरीष।।153।।
गरीब, चक्र अपूठा फिर गया, चरण कंवल कूं छूहि। भक्ति बिश्वंभर नाथ की, देखि दूह बर दूह।।154।।
गरीब, कोटि बज्र कूं फूक दे, चक्र सुदर्शन चूर। भक्ति बछल भगवान सैं, रहै पैंड दस दूर।।155।।
गरीब, दुर्बासा के दहन कूं, रती न जग में भेट। छप्पन कोटि जादौं गये, देखि हेठ दर हेठ।।156।।
गरीब, साग पत्र सें छिक गये, देखि भक्ति की रीति। जरै मरै नहीं तास तैं, सतगुरु शब्द अतीत।।157।।
गरीब, अम्बरीष असलां असल, भक्ति मुक्ति का रूप। निश बासर पद में रहै, जहां छाया नहीं धूप।।158।।
गरीब, राजा कै जोगी गये, दुर्बासा ऋषि देव। चक्र चलाया घूरि करि, नहीं लई ऋषि सेव।।159।।
गरीब, दुर्बासा के शीश कूं, चाल्या चक्र अचान। त्रिलोकी में तास गमि, कहीं न देऊं जान।।160।।
गरीब, सेत लोक बिष्णु पुरी, दुर्बासा चलि जाय। तहां बिश्बंभर नाथ को, कीन्हीं देखि सहाय।।161।।
गरीब, कृष्ण गुरू कसनी हुई, और बचैगा कौन। तीन लोक भागे फिरे, भरमें चौदह भौन।।162।।
गरीब, भक्ति द्रोह न कीजिये, भक्ति द्रोह मम दोष। शिब ब्रह्मा नारद मुनी, जिन्है जरावैं ठोक।।163।।
गरीब, भक्ति द्रोह रावण किया, हिरनाकुश हिरनाछ। नारायण नरसिंह भये, मम भगता है साच।।164।।
गरीब, मम भगता मम रूप है, मम भगता मम प्राण। पंड सताये कौरवां, दुर्योधन छ्यो मान।।165।।
गरीब, मम भगता मम प्राण है, मम भगता मम देह। हिरनाकुश के उदर कूं, पारत नहीं संदेह।।166।।
गरीब, मम भगता मम प्रिय है, नहीं दुनी सें काम। राजा परजा रीति सब, यह नहीं जानैं राम।।167।।
गरीब, मम भगता कै कारनै, रचे सकल भंडार। बाल्मीक ब्रह्म लोक में, संख कला उदगार।।168।।
गरीब, रावण बाली बिहंडिया, मम द्रोही मम जार। सीता सती कलंक क्या, पदम अठारा भार।।169।।
गरीब, मम द्रोही सें ना बचूं, छलि बल हनूं प्राण। बावन हो बलि कै गये, रह्या दोहूं का मान।।170।।
गरीब, मम द्रोही मम साल है, मेरे जन का दूत। कोटि जुगन काटौं तिसैं, करूं जंगल का भूत।।171।।

गरीब, खान पान पावै नहीं, जल तिरषा बोह अंत। बस्ती में बिचरैं नहीं, शूल फील गज दंत।।172।।
गरीब, मम द्रोही मम साल है, मारौं रज रज बीन। भवन सकल अरु लोक सब, करौं प्राण तिस क्षीण।।173।।
गरीब, अर्ध मुखी गर्भ बास में, हरदम बारमबार। जुनि पिशाची तास कूं तब लग सृष्टि संघार।।174।।
गरीब, गर्भ जुनि में त्रास द्यौं, जब लग धरणि अकाश। मारौं तुस तुस बीन करि, नहीं मिटै गर्भबास।।175।।
गरीब, प्राण निकंदू तास कै, छ्यासी सृष्टि सिंजोग। संत संतावन कल्प युग, ता शिर दीर्घ रोग।।176।।
गरीब, बिष्णु ब्रह्मा शिब सुनौं, और सनकादिक च्यारि। अठासी सहंस जलेब में, याह मति मूढ गंवार।।177।।
गरीब, चक्र चले दुर्बासा परि, में बखशौं नहीं तोहि। मम द्रोही तूं दूसरा, चरण कंवल ऋषि जोहि।।178।।
गरीब, दुर्बासा बोले तहां, सुनौ भक्ति के ईश। स्वर्ग रिसातल लोक सब, तूं पूरण जगदीश।।179।।
गरीब, तुह्मरे दर छूटे नहीं, चक्र सुदर्शन चोट। कहां खंदाओ ईश जी, बचौं कौन की ओट।।180।।
गरीब, अम्बरीष दरबार में, जाओ निर संदेह। काल घटा पूठी पडै, मम द्रोही मुख खेह।।181।।
गरीब, दुर्बासा मृतलोक कूं, तुम जाओ ततकाल। ज्ञान ध्यान शास्त्रार्थ तजो, बाद बिद्या जंजाल।।182।।
गरीब, जप तप करनी काल है, बिना भक्ति बंधान। एक ही केवल नाम है, सो देवैंगे दान।।183।।
गरीब, मान बड़ाई कूकरी, डिंभ डफान करंत। जिन कै उर में ना बसौं, जम छाती तोरंत।।184।।

❖ **सारांश :- सत्ययुग में अंबरीष नाम के एक धार्मिक राजा हुए हैं। वही आत्मा त्रेतायुग में राजा जनक हुए जो सीता जी के पिता थे। वही राजा अंबरीष व राजा जनक वाली आत्मा कलयुग में श्री नानक देव (सिख धर्म प्रर्वतक) हुए। राजा अंबरीष के ईष्ट देव श्री विष्णु जी थे। किसी गुरू जी से दीक्षा लेकर साधना करते थे। राजा अंबरीष भक्ति को प्राथमिकता देते थे। उसके लिए अन्न-जल का संयम रखते थे कि मन भक्ति में लगे। भक्त अंबरीष ने महीने के आहार का नियम बना रखा था। वे प्रतिदिन एक रोटी कम खाते थे। उस समय मानव शरीर लंबा-चौड़ा होता था। मानव की लंबाई सौ फुट के आसपास होती थी। इसके अनुसार मोटाई भी अधिक होती थी। भोजन की खुराक (Diet) भी अधिक होती थी। गुरू जी ने एकादशी (ग्यारस) का व्रत रखना भी भक्ति कर्म बता रखा था। अंबरीस को वेद ज्ञान भी था। उनकी आत्मा मानती थी कि व्रत रखना वेद में नहीं लिखा है। गुरू को भी नाराज नहीं करना चाहा। इसलिए अपने आहार को इस प्रकार नियमित किया कि एकादशी को भोजन न करना पड़े। जैसे एक दिन में पेट भरने के लिए सामान्य तौर पर ग्यारह रोटी भोजन करते थे तो उसको प्रतिदिन इस तरह कम करते थे कि एकादशी को बिल्कुल न खाना पड़े। जैसे कष्ण पक्ष की अमावस्या को रोटी व अन्य सब्जी खाते थे तो प्रतिदिन एक रोटी व उसी अनुसार सब्जी भी कम कर देते थे।**

❖ **तो एकादशी को कुछ नहीं खाते थे। फिर इसी तरह प्रतिदिन एक-एक रोटी बढ़ाते थे। यह प्रति महीने का क्रम था।**

❖ **एक बार एकादशी को ऋषि दुर्वासा जी, राजा अंबरीष जी के दरबार में आए। राजा ने ऋषि जी का आदर-सत्कार किया। भोजन के लिए निवेदन किया। ऋषि दुर्वासा ने कहा कि भोजन तैयार करवाओ। तब तक मैं दरिया पर स्नान करके आता हूँ। ऋषि जी को लौटने में देरी हो गई। राजा अंबरीष के गुरूजी ने राजा को व्रत समापन करने को कहा। अंबरीष ने विचार किया कि ऋषि दुर्वासा के आने पर ही जल आचमन करूँगा। परंतु ऋषि**

नहीं आए। गुरू जी ने एकादशी समाप्त होने से पहले जल का आचमन अंबरीष को करवा दिया। ऋषि दुर्वासा लौटे तो अंबरीष से कहा कि आप भी हमारे साथ बैठकर खाना खाओ। अंबरीष ने सब बात बताई कि आज मेरा एकादशी का व्रत था। एकादशी आज के दिन ग्यारह बजे समाप्त हो गई है। इससे पहले एकादशी के व्रत को समापन करना अनिवार्य था। मैंने जो खाना था, खा लिया। अब आज कुछ नहीं खाना है। ऋषि दुर्वासा तो क्रोध से भरे रहते थे। अंबरीष से कहा कि तेरे घर पर ऋषि आए हैं। तूने ऋषियों से पहले भोजन करके हमारा अपमान किया है। यह कहकर ऋषि ने राजा को उपदेश दिया कि यह कर्म-काण्ड वेद विरूद्ध है। इसे नहीं करना चाहिए, व्यर्थ है। राजा ने कहा जो आपकी आज्ञा। ऋषि दुर्वासा बिना आहार किए ही चला गया। अगली बार भी दुर्वासा जान-बूझकर एकादशी को आया। राजा ने उसी तरह एकादशी का व्रत समापन किया। ऋषि जान-बूझकर उस दिन और देर से स्नान करके आए। खाने के समय राजा के साथ बैठकर भोजन करने का आदेश दिया। राजा ने वही विवशता बताई कि मैंने एकादशी के व्रत का समय पर उद्यापन करना पड़ा। आज भोजन नहीं खा सकता, क्षमा करो। आप भोग लगाओ और हमें कृतार्थ करो। यह उत्तर राजा का सुनकर ऋषि दुर्वासा आग-बबूला होकर बोला, मैंने तुझे एकादशी का व्रत न रखने को कहा था। आपने मेरा अपमान किया है। राजा ने कहा कि ऋषि जी! मैं व्रत नहीं रखता। यह तो अन्न-जल का संयम बनाकर साधना करता हूँ। परंतु ऋषि दुर्वासा ने सुदर्शन चक्र को आदेश दिया कि राजा का सिर काट दे। सुदर्शन चक्र तुरंत सक्रिय हुआ। आग की लपटें निकलने लगी। सुदर्शन चक्र ने भयंकर रूप धारण किया और राजा अंबरीष की ओर चला जो वहाँ से दस कदम (लगभग **50-60** फुट) दूरी पर जमीन पर आसन लगाए बैठा था। राजा के चरण छूकर सुदर्शन चक्र वापिस दुर्वासा ऋषि की ओर मुड़ा और ऋषि के शांत करने पर भी शांत नहीं हुआ तो ऋषि को समझते देर न लगी कि चक्र तेरे को भस्म करेगा। अपने प्राणों की रक्षा के लिए पहले अपने ईष्ट देव श्री शिव जी के पास गए। सब बात बताई तथा रक्षा की प्रार्थना की। श्री शिव जी से भी सुदर्शन चक्र शांत नहीं हुआ तो ऋषि से कहा कि भाग! भाग! हमें भी मरवाएगा। ऋषि दुर्वासा श्री ब्रह्मा जी के पास गया। वहाँ से भी भगा दिया और बताया कि विष्णु के पास जा। अंबरीष विष्णु का भक्त है। दुर्वासा को भी पता था। इसलिए वहाँ नहीं जाना चाहता था। परंतु मरता क्या न करता वाली बात सामने थी। ऋषि दुर्वासा सिद्धि से उड़ा जा रहा था। श्री विष्णु के रूप में परमात्मा पूर्ण ब्रह्म तेतीस करोड़ देवाताओं की सभा लगाए हुए थे। परमात्मा को सब पता था कि दुर्वासा विष्णु के पास जाएगा। इसलिए विष्णु के सभा स्थल से दस योजन (एक योजन **4** कोस का, एक कोस **3** किलोमीटर का यानि एक सौ बीस किलोमीटर) दूर लीला करने के लिए सभा लगाए हुए थे। परमात्मा भक्त की महिमा बनाते हैं। ऋषि दुर्वासा कभी पीछे मुड़कर सुदर्शन चक्र की ओर देख रहा था कि कितना दूर पीछे है तो कभी आगे को देखकर उड़ा जा रहा था। परमात्मा के दरबार में पृथ्वी पर चलकर दौड़कर गया। तब परमात्मा ने पूछा कि ऋषि जी! कैसे स्पीड खींच रखी है। यह सुदर्शन चक्र तेरे पीछे-पीछे किस कारण से लगा हैं?

(सुकर्मी पतिब्रता के अंग की वाणी से)

❖ **वाणी नं. 95 :-**

गरीब बूझे विसंभर नाथ चक्र क्यों चोट चलाई। क्या गुस्ताकी कीन्हीं कथा मोहे बेग सुनाई।।

❖ **अर्थात् परमात्मा ने विष्णु रूप में ऋषि दुर्वासा से पूछा कि सुदर्शन चक्र ने आप के ऊपर आक्रमण किस कारण से किया? शीघ्र बताओ। क्या गुस्ताखी (शरारत) की है?**

❖ **दुर्वासा ने बताया :- वाणी नं. 96-100 :-**

गरीब, अंबरीस मृत लोक, बसे एक राजा सूचा। करै एकादस ब्रत, ज्ञान कछु अधिका ऊंचा।।96।।
गरीब, हम कीन्हा ब्रह्मज्ञान, ऊन्हैं सिरगुण उपदेसा। छांड एकादस बरत, कह्या हम लग्या अंदेसा।।97।।
गरीब, हम दीना चक्र चलाई, काटि सिर इसका लीजै। औह चक्र पग छूहि, उलट करि दिगबिजै किजै।।98।।
गरीब, हम भागे भय खाइ, चक्र छूटे गैंनारा। तीन लोक में गवन किये, राखे नहिं किन्हैं अधारा।।99।।
गरीब, अब आये तुम पास, जानराइ जानत सोई। हम कूं ल्यौ छिपाइ, चक्र मारे नहिं मोहि।।100।।

❖ **सारांश :- मत लोक (पथ्वी) के ऊपर अंबरीष नाम का एक सच्चा-सुच्चा राजा निवास करता है। वह एकादशी का व्रत करता है, परंतु उसका ज्ञान उत्तम है।(96)**

❖ **मैंने उनको ज्ञान समझाया और कहा कि आप एकादशी का व्रत त्याग दो। परंतु राजा अपनी बात को ऊपर रखते हुए अपना ज्ञान बोलने लगा। इससे मुझे क्रोध आ गया।(97)**

❖ **मैंने सुदर्शन चक्र को आज्ञा दी कि राजा अंबरीष का सिर काट दे। सुदर्शन चक्र चला और राजा के चरण छूकर उल्टा मेरे को मारने के लिए चल पड़ा।(98)**

❖ **मैं डरकर भागा। तीनों लोकों में रक्षा के लिए गया, परंतु किसी ने शरण नहीं दी।(99)**

❖ **हे जानी जान! अब मैं आपकी शरण में आया हूँ। मेरे को छुपा लो। सुदर्शन चक्र मुझे मारे ना, मेरी रक्षा करो।(100)**

❖ **वाणी नं. 101-103, 107, 111-115 :-**

गरीब, हंसे विसंभर नाथ, ऋषिन तूं ज्ञानहि हीना। अंबरीस दरबार तुम्हों, क्यूं दिगबिजै कीना।।101।।
गरीब, अंबरीस रनधीर, सती सूरा सतबादी। तुम दुर्बासा देव, फिरौ ज्ञानन के बादी।।102।।
गरीब, निरगुण सिरगुण भगति, सबै उनके हैं देवा। उर में रहै छिपाइ, कहै कौनन सें भेवा।।103।।
गरीब, तुम ऋषि जावो बेगि, अंबरीस दरबारा। दुंदबाद मिटि जांहि, होत तुम्हरा निस्तारा।।107।।
गरीब, चरन कमल चित्त लाइ, पड़ौ उनके दरबारा। वे कल्पवृक्ष सरूप, कष्ट के मोचन हारा।।111।।
गरीब, जब ऋषि चलै बिचारि, चूक हमरी ही निकसी। चक्र सुदर्शन गैल, जान अंबरीषहि बकसी।।112।।
गरीब, बोले राजा बैंन, सुनो दुर्बासा देवा। ना कछु हमरे दोष, तुम्हारा तुमको लेवा।।113।।
गरीब, राजा द्यौह आसीस, पीठ पर हाथ लगावौ। चक्र सुदर्शन पकड़ि, धरो मेरे मस्तक लावौ।।114।।
गरीब, अंबरीष कूं चक्र, पकड़ि सीतल चक्र कीना। जब ऋषि दई असीस, सही राजा प्रबीना।।115।।

❖ **पारख के अंग से वाणी :-**

❖ **वाणी नं. 150-155 तथा 161, तथा 179-184, 188-192 :-**

गरीब, दुर्बासा काली शिला, बज्र बली तिहूं लोक। अम्बरीष दरबार में, तिन्ह भी खाया धोख।।150।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश परि, अम्बरीष कूं घालि। तीन लोक भागे फिरे, ऐसी अबिगत चाल।।151।।
गरीब, कल्प किसी नहीं कीजिये, जो चाहे सो होय। दुर्बासा के छिपन कूं, कहीं न पाई खोहि।।152।।

गरीब, स्वर्ग मृत पाताल में, चक्र सुदर्शन डीक। दुर्बासा के चक्र सैं, जरे नहीं अम्बरीष।।153।।
गरीब, चक्र अपूठा फिर गया, चरण कंवल कूं छूहि। भक्ति बिश्वंभर नाथ की, देखि दूह बर दूह।।154।।
गरीब, कोटि बज्र कूं फूक दे, चक्र सुदर्शन चूर। भक्ति बछल भगवान सैं, रहै पैंड दस दूर।।155।।
गरीब, श्वेत लोक बिष्णु पुरी, दुर्बासा चलि जाय। तहां बिश्वंभर नाथ को, कीन्हीं देखि सहाय।।161।।
गरीब, दुर्बासा बोले तहां, सुनौ भक्ति के ईश। स्वर्ग रिसातल लोक सब, तूं पूरण जगदीश।।179।।
गरीब, तुह्मरे दर छूटे नहीं, चक्र सुदर्शन चोट। कहां खंदाओ ईश जी, बचौं कौन की ओट।।180।।
गरीब, अम्बरीष दरबार में, जाओ निर संदेह। काल घटा पूठी पडै, मम द्रोही मुख खेह।।181।।
गरीब, दुर्बासा मृतलोक कूं, तुम जाओ ततकाल। ज्ञान ध्यान शास्त्रार्थ तजो, बाद बिद्या जंजाल।।182।।
गरीब, जप तप करनी काल है, बिना भक्ति बंधान। एक ही केवल नाम है, सो देवैंगे दान।।183।।
गरीब, मान बड़ाई कूकरी, डिंभ डफान करंत। जिन कै उर में ना बसौं, जम छाती तोरंत।।184।।
गरीब, दुर्बासा अम्बरीष कै, गये ज्ञान गुण डार। चरण कंवल शिक्षा लई, तुम ईश्वर प्राण उधार।।188।।
गरीब, बखशो प्राण दया करो, पीठ लगाओ हाथ। उर मेरे में ठंडि होय, शीतल कीजै गात।।189।।
गरीब, अम्बरीष महके तहां, बिहंसे बदन खुलास। तुम रिषि मेरे प्राण हो, मैं हूं तुमरा दास।।190।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश धरि, दिजो भगति की आन। मैं चेरा चरणां रहूं, बखशो मेरे प्राण।।191।।
गरीब, चक्र सुदर्शन पकरि करि, अम्बरीष बैठाय। दुर्बासा पर मेहर करि, चलो भक्ति कै भाय।।192।।

❖ **अचला के अंग से वाणी :-**

❖ **वाणी नं. 130-134 :-**

गरीब, दुर्बासा कैसैं बचैं, अंबरीष के चोर। परमेश्वर बिच कर परे, चक्र सुदर्शन जोर।।130।।
गरीब, जोरा देख्या चक्रका, जब ऊठे जगदीश। खंड खंड करि नाखि है, तोर बगावैं शीश।।131।।
गरीब, भक्ति द्रोह काहे किया, रे शठ मूढ गंवार। चरण कमल तुम धो पीवौ, अंबरीष दरबार।।132।।
गरीब, दुर्बासा पूठे फिरे, जाय किया प्रणाम। अंबरीष स्थिर किये, चरण कमल का ध्यान।।133।।
गरीब, जय जय जय अंबरीष तूं, जय जय भक्ति विशेष। तीन लोक की मांड में, रखी हमारी टेक।।134।।

➢ **सुकर्मी पतिव्रता के अंग का सारांश :-**

❖ **दुर्वासा के ये वचन सुनकर परमात्मा जी हँसने लगे और बोले कि ऋषि! तू ज्ञानहीन है। अंबरीष के दरबार में झगड़ा क्यों किया? अंबरीष राजा तो पूर्ण रूप से मेरे में समर्पित है। सत्य वक्ता है। हे दुर्वासा! तुम तो ज्ञान के वाद-विवाद करने वाले महिमा के भूखे फिर रहे हो।(101-102)**

❖ **अंबरीष को निरगुण तथा सरगुण दोनों प्रकार की साधना का ज्ञान है। हे ऋषि देव! वे उस सर्व ज्ञान को अपने (उर) हृदय में छिपाऐ हुए है। कोई जानना चाहता नहीं तो किसको भेद बताऐं?(103)**

❖ **हे ऋषि! तुम शीघ्र अंबरीष के दरबार में जाओ। तुम्हारा सब अज्ञान अंधेरा समाप्त हो जाएगा। तुम्हारा कल्याण हो जाएगा।(107)**

❖ **हे ऋषि दुर्वासा! तुम अंबरीष के दरबार में जाकर उनके चरणों में गिरो। वे संकट के मोचन करने वाले हैं।(111)**

➢ अचला के अंग की वाणी का सारांश :-

❖ संत गरीबदास जी बता रहे हैं कि दुर्वासा कैसे बच सकता था? वह तो एक महान आत्मा अंबरीष का चोर था यानि अंबरीष के यथार्थ ज्ञान को सुनकर भी अपने अहंकार का प्रदर्शन किया। वह तो परमेश्वर जी बीच में आ गए, अन्यथा सुदर्शन चक्र तो बहुत शक्तिशाली है।(130)

❖ परमेश्वर जी ने सुदर्शन चक्र की उग्रता देखी। तब अपना आसन छोड़कर दुर्वासा की रक्षा के लिए उठे। विचार किया कि यदि बचाव नहीं किया तो ऋषि के टुकड़े-टुकड़े करके मार डालेगा।(131)

❖ हे मूर्ख गंवार ऋषि दुर्वासा! तुमने भक्त अंबरीष के साथ द्रोह क्यों किया? तुम अंबरीष के दरबार में जाओ और चरण धोकर पीओ।(132)

➢ पारख के अंग की वाणी का सारांश :-

❖ दुर्वासा ऋषि ने भगवान से कहा कि आप तीनों लोकों के स्वामी हो, आप पूर्ण जगदीश हो। आप भक्तों के भगवान हो।(179)

❖ आपके (दर) द्वार पर मेरी रक्षा नहीं हुई तो कहाँ होगी? आप अपने से दूर कहाँ (खंदाओ) भेज रहे हो? प्रभु जी! सुदर्शन की मार से आपके बिना किसकी (ओट) शरण में बचाव होगा?(180)

❖ परमात्मा ने ऋषि दुर्वासा से कहा कि तुम अंबरीष के दरबार में निःसंकोच जाओ, डरो मत। मेरे भक्त के द्रोही का (मुख खेह) मुख तो काला होता ही है। उस भक्त द्रोही के मुख में (खेह) राख यानि कालिख पड़ती है यानि उसकी तो दुर्गति होती ही है।(181)

❖ परमेश्वर जी ने कहा हे दुर्वासा! तुम मंत लोक यानि पथ्वी लोक को शीघ्र जाओ। इस शास्त्रार्थ के चक्र को त्याग दे। वाद-विवाद तो जी का जंजाल (झंझट) होता है।(182)

❖ बिना मर्यादा (बंधान) की भक्ति के तो जप-तप अन्य (करनी) क्रियाऐं काल हैं यानि जीवननाशक हैं। सच्चा तो केवल नाम जाप की दीक्षा देता है।(183)

❖ मैं उनके साथ नहीं रहता जो (डिंभ) पाखण्ड करते हैं। मान-बड़ाई की चाह रखते हैं। मान-बड़ाई तो (कुकरी) कुतिया के समान है यानि बिना इज्जत का कार्य है। परमात्मा के दरबार में इज्जत ना रही तो वह आत्मा गली की कुतिया के समान है। जो पांखड करते हैं, अन्य को नीचा दिखाते हैं, उनकी यम के दूत छाती तोड़ते हैं यानि बुरी मार मारते हैं।(184)

❖ दुर्वासा ऋषि लौटकर राजा अंबरीष के दरबार (राज भवन) में गया। मरता क्या न करता? अपने ज्ञान को त्यागकर अपनी गलती मानकर कहा कि आप तो मेरे ईश्वर हो। मेरे प्राण आधार हो। दया करो। मेरे प्राणों की रक्षा करो। मेरी पीठ पर कपा भरा हाथ रखो ताकि मेरा दिल शांत हो, (कलेजे को ठंड पड़े) मेरा भय समाप्त हो। सुदर्शन चक्र को मेरे सिर पर शांत करके रखो। मैं आपका (चेरा) नौकर बनकर आपके चरणों में सदा रहूँगा। मेरे जीवन की रक्षा करो। मेरे प्राण (स्वांस) बख्शो तथा भक्ति का दान दो।(188-189)

❖ ऋषि दुर्वासा की दशा देखकर अंबरीष हँसने लगे और प्रसन्नचित से ऋषि दुर्वासा से

बोले कि हे ऋषि जी! आप तो मुझे प्राणों से भी प्रिय हो। मैं आपका दास हूँ। अंबरीष ने सुदर्शन चक्र जो आग की लपटें छोड़ रहा था, हाथ से पकड़कर शांत करके दुर्वासा को अपने पास बैठाया। दुर्वासा के ऊपर मेहर की। कहा कि भक्ति भाव से रहा करो। मान-बड़ाई में जीवन नष्ट न करो।(190-192)

➢ सुकर्मी पतिब्रता के अंग की वाणी नं. 112-115 का सारांश :-

❖ जब परमेश्वर जी ने ऋषि दुर्वासा जी से स्पष्ट कह दिया कि आप अंबरीष के दरबार में जाओ। वे क्षमा करेंगे तो आपकी जान बचेगी, अन्यथा काल सिर पर नाच ही रहा है। तब ऋषि दुर्वासा को भीड़ी धरती हो गई यानि संकट में घिर गया और विचार किया कि मेरी ही (चूक) गलती पाई। सुदर्शन चक्र पीछा नहीं छोड़ रहा है। अब तो राजा अंबरीष ही पीछा छुड़ाएगा। वही जीवन दान देगा। राजा अंबरीष बोले कि हे दुर्वासा देव जी! मैंने कुछ नहीं किया। आपने जैसा किया, उसका फल ही मिला है। इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

❖ ऋषि दुर्वासा ने निवेदन किया कि मेरी रक्षा करो। सुदर्शन चक्र को शांत करो। राजा अंबरीष ने सुदर्शन चक्र को शांत करके ऋषि को पकड़ा दिया। बोले कि ले तेरी मिसाईल, फिर गलती न करना। तब ऋषि दुर्वासा के जान में जान आई और अंबरीष को आशीस दी कि धन्यवाद! आप (प्रविन) विद्वान हो, महापुरूष हो।

❖ अचला के अंग की वाणी नं. 133-134 का भी यह अर्थ है :-

''दुर्वासा तथा अंबरीष की कथा का सारांश''

❖ संत गरीबदास जी ने वाणी में बताया है कि :-

गरीब, डेरै डांडै खुस रहो खुसरे लहै ना मोक्ष। ध्रुव प्रहलाद उद्धर गए डेरे में क्या दोष।।

❖ अर्थात् जो साधक घर त्यागकर कर्म सन्यासी होकर साधना करते हैं, ब्रह्मचारी रहते हैं तथा वन में ही निवास करते हैं। वे मानते हैं कि परमात्मा ऐसे ही प्राप्त होता है। सामान्य व्यक्ति की धारणा भी यही होती है कि परमात्मा की प्राप्ति तो उन्हीं को होती है जो घर त्यागकर मोह-माया को छोड़कर जंगल में चला जाता है। इसका समाधान इस वाणी में संत गरीबदास जी ने किया है। कहा है कि अपने (डेरै) घर (डांडै) घेर {घेर वह स्थान होता था जिसमें किसान लोग पशु बाँधते थे तथा उसमें केवल पुरूष निवास करते थे। घर में केवल स्त्रियाँ निवास करती थी। Male-Female का भिन्न स्थान बनाया जाता था। जो कुंवारे पुरूष होते थे। वे अपने घेर में ही रहा करते थे। जो विवाहित होते थे, वे ही रात्रि में अपनी पत्नियों के पास जा सकते थे।} इसलिए कहा है कि अपने घर या घेर में खुशी के साथ रहो। यदि ब्रह्मचारी जीवन बिताने मात्र से मुक्ति मिले तो खुसरे (हिजड़े) मुक्त क्यों नहीं होते जो जन्मजात ब्रह्मचारी हैं। आप यह भी मानते हो कि ध्रुव तथा प्रहलाद दोनों भक्तों का उद्धार हो गया। वे पार हो गए। उनकी मुक्ति हो गई। ये दोनों भक्त घर में रहे। विवाह कराया। बच्चे उत्पन्न किये और मुक्ति भी पाई। प्रहलाद का पुत्र बैलोचन था। बैलोचन का पुत्र राजा बली था जिसने अश्वमेघ यज्ञ की थी। परमात्मा बावना (ठिगना) रूप बनाकर भिक्षा लेने गए थे।

❖ परमात्मा कबीर जी द्वारा बताई सत्य साधना बिना मोक्ष नहीं होता। ब्रह्मा, विष्णु, शिव

तथा काल ब्रह्म व अक्षर पुरूष को ईष्ट मानकर साधना करने से जीव का जन्म-मरण समाप्त नहीं होता। इसलिए उसे परम शान्ति नहीं मिलती। न सनातम परमधाम (शाश्वतम् स्थानाम्) प्राप्त होता जिसके विषय में गीता अध्याय 18 श्लोक 61-62 में कहा है कि गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने अपने से अन्य परमेश्वर की महिमा बताई। उसी परमेश्वर की शरण में जाने से परम शान्ति होती है तथा अमर लोक यानि सत्यलोक प्राप्त होता है।

❖ उदाहरण :- राजा अंबरीष श्री विष्णु जी के अच्छे भक्त थे। घर में रहते थे। बाल-बच्चेदार थे। उनकी भक्ति की शक्ति के सामने कर्म-सन्यासी दुर्वासा ऋषि भी हार गया था। चरण पकड़कर अपनी जीवन रक्षा की भीख माँगी थी। वही अंबरीष वाली आत्मा त्रेतायुग में राजा जनक हुए जो घर में रहते थे तथा विवाहित थे। सीता जी के पिता थे। उनकी भक्ति के सामने कर्म-सन्यासी वनवासी ऋषि सुखदेव (शुकदेव) पुत्र ऋषि कष्ण द्वैपायन यानि बेद ब्यास ने हार मानी और दीक्षा लेकर राजा को गुरू बनाकर स्वर्ग तक जाने की व्यवस्था की।

❖ कलयुग में वही राजा अंबरीष व राजा जनक वाली आत्मा स्वर्ग में अपने पुण्यों को खर्च कर भारत देश में (वर्तमान में पाकिस्तान में) श्री कालूराम महता खत्री के घर जन्मा। श्री नानक नाम रखा। उस जीवन में भी श्री विष्णु जी की भक्ति करते थे। परमेश्वर कबीर जी उनको बेई नदी के किनारे मिले। यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताया। सच्चखण्ड (सत्यलोक) लेकर गए। अपनी यथार्थ स्थिति तथा शक्ति से परिचित करवाया। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव व ब्रह्म का अस्तित्व दिखाया। फिर वापिस छोड़ा। तब श्री नानक जी ने काशी (बनारस) शहर में जाकर कबीर सतगुरू से सतनाम की दीक्षा लेकर जन्म-मरण से छुटकारा पाया। परम शांति प्राप्त की। सनातन परम धाम यानि सच्चखण्ड प्राप्त किया।

❖ काल ने ऋषि दुर्वासा को प्रेरित किया था ताकि अंबरीष सत्य साधना त्याग दे और इसका इसी जन्म में पतन हो जाए। परमात्मा कबीर जी ने राजा अंबरीष की सत्य साधना की रक्षा की। काल नहीं चाहता कि जीव सत्य साधना करे।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 185-192 :-

गरीब, बनजारे के बैल ज्यौं, फिरैं देश परदेश। जिन कै संग न साथ हूं, जगत दिखावैं भेष।।185।।
गरीब, आजिज मेरे आशरै, मैं आजिज के पास। गैल गैल लाग्या फिरौं, जब लगि धरणि आकास।।186।।
गरीब, नारद से साधू सती, अति ज्ञाता प्रबीन। एक पलक में बह गये, मन में बांकि मलीन।।187।।
गरीब, दुर्बासा अम्बरीष कै, गये ज्ञान गुण डार। चरण कंवल शिक्षा लई, तुम ईश्वर प्राण उधार।।188।।
गरीब, बखशो प्राण दया करो, पीठ लगाओ हाथ। उर मेरे में ठंडि होय, शीतल कीजै गात।।189।।
गरीब, अम्बरीष महके तहां, बिहंसे बदन खुलास। तुम रिषि मेरे प्राण हो, मैं हूं तुमरा दास।।190।।
गरीब, चक्र सुदर्शन शीश धरि, दिजो भगति की आन। मैं चेरा चरणां रहूं, बखशो मेरे प्राण।।191।।
गरीब, चक्र सुदर्शन पकरि करि, अम्बरीष बैठाय। दुर्बासा पर मेहर करि, चलो भक्ति कै भाय।।192।।

❖ सरलार्थ :- परमात्मा ने कहा है कि मेरा सिद्धांत है कि जो हरयाई गाय की तरह इधर-उधर दुनिया को ठगते फिरते हैं। मैं उनके साथ नहीं हूँ। वे जगत में साधु वेश बनाकर प्रभावित करके काल जाल में डालते हैं।

❖ जो मेरा (अजीज) प्रिय भक्त है, मैं उसके सदा साथ रहता हूँ। (गेल-गेल) पीछे-पीछे लगा रहता हूँ। जब तक धरती तथा आकाश है।

❖ नारद जी साधना करने वन में गए थे। बारह वर्ष साधना करके लौटे तो अपने पिता ब्रह्मा से कहा कि मैंने अपनी इंद्रियों पर काबू पा लिया है। ब्रह्मा जी ने कहा कि अच्छी बात है। परंतु अपनी उपलब्धि को बताना नहीं चाहिए। आप श्री विष्णु जी से तो ये बात बिल्कुल ना कहना। नारद जी तो उमंग से भरा था। श्री विष्णु जी के पास गए। उनको अपनी साधना की सफलता बताई कि मैंने अपनी इन्द्रियों पर काबू पा लिया है। यह कहकर कुछ देर बाद चल पड़े। श्री विष्णु जी ने एक मायावी शहर बसाया। उसमें राजा की लड़की का विवाह का स्वयंवर रचा। मनमोहक माहौल था। नारद ने सुने विवाह के गीत। नारद विवाह कराने के लिए अत्यधिक प्रेरित हुआ। रूप के लिए भगवान विष्णु से उसका रूप माँगा। भगवान ने बंदर का मुख नारद को लगा दिया। लड़की ने श्री विष्णु जी को वरमाला डाल दी जो स्वयंवर में आया था। नारद को पता चला कि मेरे साथ विष्णु ने धोखा किया है तो श्राप दे दिया कि आप भी मेरे की तरह एक जीवन स्त्री के लिए तड़फ-तड़फ कर मरोगे। श्री रामचन्द्र के रूप में विष्णु जी का जन्म अयोध्या के राजा दशरथ के घर हुआ। फिर वनवास हुआ। सीता पत्नी श्रीराम भी साथ में वन में गई। सीता का अपहरण हुआ। श्री राम ने सारा जीवन पत्नी के वियोग में बिताया।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 193-194 :-**

गरीब, गण गंधर्व और मुनीजन, तेतीसौं तत्त्व सार। अपने जन कै कारणै, उतरे बारमबार।।193।।
गरीब, अनंत कोटि औतार है, नौ चितवै बुधि नाश। खालिक खेलै खलक में, छै ऋतु बारहमास।।194।।

❖ सरलार्थ :- जितने भी देव, गण, मुनिजन, तेतीस करोड़ देवता हैं। ये परमात्मा की भक्ति करके इस पद को पाए हुए हैं। यदि इनके साथ भी कोई शरारत करके हानि पहुँचाता है तो उसकी रक्षा के लिए भी परमात्मा कबीर जी ही सहायता करने ऊपर से आते हैं। अवतरित होते हैं। (अवतार धारण करते हैं।) वे परमात्मा अपने जन (भक्त जन) के कारण बार-बार अवतार लेते हैं। जैसे प्रहलाद भक्त की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण करके अचानक आए और अपना कार्य करके चले गए। तत्वज्ञानहीन प्रचारक जिनकी बुद्धि का नाश हो चुका है, वे केवल नौ अवतार मानते हैं। (खालिक) मालिक तो (खलक) संसार में (छःऋतु-बारह मास) सदा (खेलै) लीला करता रहता है। जैसे श्री नानक जी ने भी कहा है कि ''अंधुला नीच जाति प्रदेशी मेरा छिन आवै तिल जावै। जाकी संगत नानक रहंदा क्योंकर मोंहडा पावै।।'' अर्थात् जुलाहा जाति में प्रकट मेरा प्रदेशी परमात्मा कबीर एक पल में पथ्वी पर दिखाई देता है। दूसरे क्षण में ऊपर सचखण्ड में होता है। उस समर्थ परमात्मा कबीर जी की शरण में मैं (नानक जी) रहता हूँ। उसकी थाह उसका (मोहंड़ा) अंत कैसे पाया जा सकता है?

❖ भावार्थ है कि परमात्मा के तो अनंत अवतार हो चुके हैं। वह तो एक पल में पथ्वी पर, दूसरे पल (क्षण) में सतलोक में आता-जाता रहता है यानि कभी भी प्रकट हो जाता है।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 195-199 :-**

गरीब, पीछै पीछै हरि फिरैं, आगै संत सुजान। संत करैं सोई साच है, च्यारि जुग प्रवान।।195।।
गरीब, सांई सरीखे साधू हैं, इन समतुल नहीं और। संत करैं सो होत है, साहिब अपनी ठौर।।196।।
गरीब, संतौं कारण सब रच्या, सकल जमी असमान। चंद सूर पानी पवन, यज्ञ तीर्थ और दान।।197।।
गरीब, ज्यौं बच्छा गऊ की नजर में, यौं सांई अरु संत। हरिजन के पीछै फिरैं, भक्ति बच्छल भगवंत।।198।।
गरीब, धारी मेरे संत की, मुझ सें मिटै न अंश। बुरी भली बांचै नहीं, सोई हमरा बंश।।199।।

❖ **सरलार्थ :- अपने सच्चे भक्त के साथ-साथ पीछे-पीछे परमात्मा रहता है। संत जो करते हैं, सच्चा कार्य करते हैं यानि सही करते हैं। कभी किसी का अहित नहीं करते। चारों युगों में प्रमाण रहा है कि संत सही क्रिया करते हैं। भलाई के शुभ कर्म करते हैं।(195)**

❖ **सच्चे साधक परमात्मा के समान आदरणीय हैं। इनके समान अन्य की तुलना नहीं की जा सकती। परमात्मा अपने सच्चे भक्त को अपनी शक्ति प्रदान कर देते हैं। परमात्मा कबीर जी कहते हैं कि मेरी बजाय इन संतों से माँगो। संत परमात्मा से प्राप्त शक्ति से अपने अनुयाईयों की मनोकामना पूर्ण करते हैं। उनकी रक्षा करते हैं। परमात्मा कबीर जी उनके बीच में कोई दखल नहीं देते।(196) इसलिए कहा है कि :-**

संत करें सो होत है, साहिब अपनी ठौर।

परमात्मा ने भक्तों के लिए पृथ्वी तथा इसके सहयोगी सूर्य, आकाश, हवा, व जल अन्य ग्रह बनाए हैं ताकि वे भक्ति करके अपना कल्याण करवा सकें। तीर्थ स्थान भी भक्तों का साधना स्थल है। दान की परंपरा भी भक्ति में अति सहयोगी है। परंतु दान संत (गुरू) को दिया जाए। कुपात्र को दिया दान तो रण-रेह (अन उपजाऊ) भूमि में बीज डालकर खराब करने के समान है।(197)

❖ **परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि :-**

कबीर, गुरू बिना माला फेरते, गुरू बिना देते दान। गुरू बिन दोनों निष्फल है, भावें देखो वेद पुराण।।

अर्थात् साधक को चाहिए कि पहले पूर्ण गुरू से दीक्षा ले। फिर उनको दान करे। उनके बताए मंत्रों का जाप (स्मरण) करे। गुरूजी से दीक्षा लिए बिना भक्ति के मंत्रों के जाप की माला फेरना तथा दान करना व्यर्थ है। गुरू बनाना अति आवश्यक है। प्रमाण :-

कबीर राम–कृष्ण से कौन बड़ा, उन्हों भी गुरू कीन्ह। तीन लोक के वे धनी, गुरू आगे आधीन।।

अर्थात् पृथ्वी के मानव (स्त्री-पुरूष) श्री राम तथा श्री कृष्ण से बड़ा देवता किसी को नहीं मानते। उन दोनों ने भी गुरू जी से दीक्षा ली। तीन लोक के (धनी) मालिक होते हुए भी उन्होंने गुरू बनाए। श्री कृष्ण जी ने ऋषि दुर्वासा जी को अध्यात्म गुरू बनाया। (ऋषि संदीपनी उनके शिक्षक गुरु थे।) श्री रामचन्द्र जी ने ऋषि वशिष्ठ जी को गुरू बनाया। वे दोनों त्रिलोक नाथ होते हुए भी अपने-अपने गुरूजी के आगे आधीन भाव से पेश होते थे।

परमात्मा अपने भक्त पर निरंतर दृष्टि रखते हैं कि कहीं कोई देव, भूत, पितर, प्रेत, गण, गंधर्व, राक्षस, यक्ष, यमदूत मेरे भक्त को हानि न कर दे। जैसे गाय अपने बच्चे (बछड़ी-बछड़े) पर निरंतर दृष्टि रखती है। चारा चरते समय भी एक आँख बच्चे पर ही लगी रहती है। यदि कोई अन्य पशु उसके बच्चे के निकट आता है तो वह यदि खुली होती है तो

दौड़कर उस गैर पशु को टक्कर मारने दौड़ती है। यदि रस्से से बँधी होती है तो भी अपनी प्रतिक्रिया दिखाती है। जहाँ तक उसका रस्सा जाने देता है, वहाँ तक उस अन्य पशु को टक्कर मारने दौड़ती है। परमात्मा भक्त वच्छल हैं। भक्तों के रक्षक व प्रिय हैं। वे (हरिजनों) भक्तों के पीछे-पीछे फिरते रहते हैं।(198)

❖ मेरे संत (सतगुरू पद पर संत) की (धारी) धारणा यानि जो वह अपने सेवक (अनुयाई) को आशीर्वाद देकर लाभ देना चाहता है, उसकी वह (धारी) धारणा मेरे से टाली नहीं जा सकती यानि मैं उसमें दखल नहीं दे सकता। परंतु मेरे भक्त यानि संत को मर्यादा का ध्यान रखना अनिवार्य है। संत भली-बुरी यानि राग-द्वेष के आधार पर लाभ-हानि नहीं करते। यदि संत किसी को द्वेष के कारण श्राप देते हैं या सिद्धि से हानि करते हैं तो उसके जिम्मेदार वे स्वयं होंगे। जैसे ऋषि दुर्वासा भी परमात्मा के भक्त थे। उस समय संत को ऋषि कहा जाता था। ऋषि दुर्वासा ने द्वेषवश राजा अंबरीष भक्त के ऊपर सिद्धि से सुदर्शन चक्र छोड़ा। राजा अंबरीष निर्दोष थे। सुदर्शन चक्र ने भक्त अंबरीष के चरण छूए तथा उल्टा फिरकर दुर्वासा को मारने के लिए चला। दुर्वासा भय मानकर सिद्धि से उड़कर भागा। इन्द्र के लोक में गया। शिव जी व ब्रह्मा जी के लोकों में गया, परंतु किसी ने शरण नहीं दी। भक्त अंबरीष विष्णु जी का उपासक था। जिस कारण शर्म के मारे दुर्वासा ऋषि श्री विष्णु जी के पास जाना नहीं चाहते थे। उस समय श्री विष्णु जी से शेष शय्या (शेष नाग के ऊपर लगे बिस्तर) पर अपनी पत्नी लक्ष्मी जी के साथ विश्राम कर रहे थे। परमात्मा कबीर जी ने श्री विष्णु का रूप धारण किया और अठासी हजार ऋषियों तथा तेतीस करोड़ देवताओं की सभा बुलाई। स्वर्ग में यह कार्य सिद्धि शक्ति से मानसिक प्रेरणा से होता है। जैसे वर्तमान में मोबाईल फोन से सैकिण्डों में सूचित किया जाता है। विडियो कॉन्फ्रैंस से भी सब वार्ता की जाती है। देवताओं की टैक्नीक पथ्वी लोक से लाख गुणा अधिक कारगर है। सबके सामने परमात्मा ने ऋषि दुर्वासा को धमकाया कि भक्ति की मर्यादा में रहो। अंबरीष भक्त से क्षमा माँगो। वे ही आपकी जान बचा सकते हैं। दुर्वासा मरता क्या न करता। भक्त अंबरीष के दरबार में गए। चरण पकड़कर जीवन की रक्षा माँगी। तब जान बची। संत गरीबदास जी ने बताया है कि कबीर परमात्मा के भक्त परमात्मा का (बंस) कबीर कुल हैं। परमात्मा कबीर जी ने कहा है कि मेरा वंश (कबीर कुल) कभी किसी को स्वार्थ व ईर्ष्यावश कष्ट नहीं देता।(199)

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 200-202 :-**

गरीब, संख जीव परलौ करै, संखौं उतपति ख्याल। ऐसे सुमरथ संत हैं, एक खिसैं नहीं बाल।।200।।
गरीब, गरजै इन्द्र अनन्त दल, बौह बिधि बरसा होय। संख जीव परलौ करैं, संखौं उतपत्ति जोय।।201।।
गरीब, इच्छा करि मारै नहीं, बिन इच्छा मरि जाय। निःकामी निज संत हैं, जहां नहीं पाप लगाय।।202।।

❖ सरलार्थ :- इन्द्र की पदवी दो विधि से मिलती है। एक तो तप करने से, दूसरी धर्म यज्ञ करने से। ये तप तथा धर्मयज्ञ संत स्वभाव के जीव करते हैं। जैसे इन्द्र संत हैं। वह पथ्वी के ऊपर वर्षा करते हैं। उसमें शंखों जीव बह जाते हैं। मर जाते हैं। शंखों की उत्पत्ति होती है। इसमें इन्द्र का दोष नहीं है। परंतु विधान अनुसार बिना संत उपदेशी को पाप तथा

पुण्य दोनों मिलते हैं। जिस कारण से इन्द्र मत्यु के उपरांत गधा बनता है। पुण्य स्वर्ग का राजा बनकर नष्ट कर देता है। जो सतगुरू कबीर जी के उपासक हैं, उनके लिए वाणी 202 में कहा है कि इच्छा कर मारै नहीं, बिना मर इच्छा जाय। वे (निःकामी) निष्काम कर्म करने वाले संत होते हैं। उनको पाप नहीं लगता।(200-202)

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 203-206 :-

गरीब, हद्दी तो छूटैं नहीं, कीड़ी बदला दीन। मुहंमद की बेगम गुसे, काट लिए अंस तीन।।203।।
गरीब, बरषैं तरकैं डोबि दे, त्यारैं तीनूं लोक। ऐसे हरिजन संत हैं, सौदा रोकमरोक।।204।।
गरीब, बहतरि खूहनि क्षय करी, चूणक ऋषीश्वर देख। कपिल सिंघारे सघड़के, लागे पाप अनेक।।205।।
गरीब, द्वादस कोटि निनानवैं, गोरख जनक बिदेह। यौं त्यारै यौं डोबिदे, यामें नहीं संदेह।।206।।

❖ सरलार्थ :- इस वाणी में हजरत मुहम्मद जी के विषय में वर्णन है जो ''माया के ग्रंथ'' की वाणी नं. 3 के सरलार्थ में लिखा है जो इस प्रकार है :-

❖ हजरत मुहम्मद (मुसलमान धर्म का प्रवर्तक) एक स्त्री के साथ अवैध संबंध बनाकर पाप के भागी बन गए थे। उनकी पत्नी बड़े घराने से थी जो बहुत पैसे वाली धनवान थी। उसकी उस क्षेत्र में बहुत चलती थी। धन के प्रभाव से लोग उसकी आज्ञा का पालन करते थे। नौकर भी रखती थी। जब हजरत मुहम्मद दूर क्षेत्र में प्रचार करने जाने लगा तो उसकी पत्नी खदीजा ने कहा था कि किसी अन्य स्त्री के चक्कर न पड़ना। यदि ये गलती की तो तेरे को सजा दी जाएगी। मुहम्मद ने शर्त स्वीकार कर ली। दूर स्थान पर मुसलमान धर्म का प्रचार करते समय आदि माया की प्रेरित सुंदर स्त्री जो विधवा थी, मुहम्मद के सम्पर्क में आई, मुसलमान बन गई। दोनों का अवैध संबंध भी हो गया। खदीजा को उसके नौकरों ने बताया तो खदीजा ने मुहम्मद को बुलाकर सजा दिलाई। मुहम्मद का लिंग, आगे से मूँछें तथा सिर की चोटी कटवाने का आदेश नौकरों को दिया। नौकरों ने मूँछें तथा चोटी काट दी, परंतु लिंग नहीं काटा। लिंग की कुछ खाल (चमड़ी) जो आगे के भाग पर होती है, वह काट दी और खदीजा को बता दिया कि आपके आदेशानुसार सजा दे दी है। मूँछें व चोटी तो स्पष्ट कटी दिखाई दे रही थी। सभा में लिंग की खाल दिखाई गई और मुहम्मद फिर से प्रचार के लिए चला गया। मुहम्मद की पत्नी खदीजा अब निश्चिंत थी कि कहीं जाए, लिंग कट चुका है। जब दूर देश में अपने मुसलमान अनुयाईयों में गया तो यह हुलिया देखकर कारण जानना चाहा तो मुहम्मद ने बताया कि हमने अपने धर्म की अलग पहचान बनानी है। जो सच्चा मुसलमान होगा, वह तो अल्लाह के लिए ये तीन वस्तु तो क्या सिर कटा लेगा। जो नकली होगा, वह ऐसा नहीं कर सकेगा। अब आपने देखना है कि अल्लाह का आदेश मानना है या नहीं। श्रद्धालु कुर्बान होते हैं। सब आदमियों ने आगे से मूँछें, सिर की चोटी कटवा ली तथा लिंग की आगे से खाल भी कटवा दी जिससे सुन्नत कहते हैं। फिर तो यह धर्मचिन्ह ही बन गया। छोटी आयु के लड़कों की सुन्नत की परंपरा पड़ गई।(203)

❖ जो (हदी) काल की हद तक की साधना करते हैं। उनको तो सब पाप-पुण्य भोगने पड़ते हैं। कीड़ी भी मार देते हैं तो उनका भी बदला देना पड़ता है। जैसे बारिश से असँख्यों जीव डोब दिए, नष्ट कर दिए। बारिश से असँख्यों उत्पन्न हो गए। असँख्यों को भोजन

मिला। यों तारे यानि कल्याण कर देते हैं। ऐसे (हरिजन) परमात्मा भक्तजन संत हैं। सौदा (रोकम रोक) नगदा-नगदी है अर्थात् जैसा कर्म करते हैं, वैसा फल हाथों-हाथ मिलता है।(204)

❖ ऋषि चुणक ने मानधाता चक्रवर्ती राजा की बहत्तर क्षौणी सेना को सिद्धि शक्ति से निर्मित चार पुतलियों (परमाणु बम जैसी घातक शक्ति) से (क्षय) नष्ट कर दिया था तथा कपिल मुनि ने राजा सघड़ के साठ हजार पुत्रों को सिद्धि के अग्नि बाणों से मार डाला। उनको अनेकों पाप लगे।(205)

❖ राजा जनक विदेही (द्वादश) बारह करोड़ जीवात्माओं को नरक से छुड़वाकर स्वर्ग ले गए। राजा जनक के पुण्य क्षीण (कम) हुए। पुनर्जन्म श्री नानक जी के रूप में हुआ। गोरखनाथ ने निनानवे (99) करोड़ राजाओं को ज्ञान सुनाकर राज छुड़वाकर भक्ति पर लगाया था। परंतु मुक्ति दोनों की नहीं हुई, न गोरखनाथ की, न राजाओं की। परमात्मा कबीर जी की शरण में श्री नानक जी आए। तब मोक्ष हुआ तथा गोरखनाथ को भी सतगुरू कबीर जी मिले। उनको सतनाम दिया। वह भी मुक्त नहीं हुए हैं क्योंकि उनसे सिद्धि से हुई प्रसिद्धि का आनंद छूटा नहीं। सारनाम मिला नहीं। गोरखनाथ का फिर जन्म होगा। ब्रह्मचारी रहेगा। सतयुग एक लाख वर्ष तक दिल्ली का राज करेगा। फिर सन्यास लेगा। परंतु भक्ति कलयुग के इस समय में ही होगी यदि पूर्ण सतगुरू मिल गया तो। अन्यथा फिर किसी अन्य जन्म में परमात्मा कबीर जी की विशेष कपा से ही मोक्ष मिलेगा। ऐसे तारने के उद्देश्य से भक्ति पर लगा देते हैं। समाधान पूर्ण न मिलने से सब काल जाल में ही रह जाते हैं या डोब देते हैं यानि नष्ट कर देते हैं।(206)

''दुर्भिक्ष (अकाल) का प्रकरण''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 207-227 :-**

गरीब, बीसे में बिसरे नहीं, लागी जोर कसीस। खंड बिहंडा हो गये, देखौं कौंम छतीस।।207।।
गरीब, सहजादे मांगत फिरे, दिल्ली के उमराव। एक रोटी पाई नहीं, खाते नांन पुलाव।।208।।
गरीब, गंगा जमना पारकूं, चली दुनी सब डोल। रोटी साटै बिकि गये, लड़के बालक मोल।।209।।
गरीब, इसतैं आगै क्या कहूं, बीती बौहोत बिताड़। बासमती भोजन करैं, जिन पाया नहीं पवाड़।।210।।
गरीब, खर पवाड़ नहीं खात हैं, मनुष्यौं खाया तोड़। सांगर टीट अर भाखड़ी, लीन्हे वृक्ष झरोड़।।211।।
गरीब, कड़ा कुंहिंदरा खागये, झड़ा झोझरू झाड़। इसतैं आगै क्या कहूं, रही न बोदी बाड़।।212।।
गरीब, फजल किया यौंह दुख सुन्या, बरषे दीनदयाल। आये इंद्र गर्ज करि, सूभर सरबर ताल।।213।।
गरीब, सातौं धात अरु सात अन्न, बरषाही कै मांही। मेहर मौज मौला करी, बदल पछांहें जांहि।।214।।
गरीब, बरषें इंद्र घनघोर करि, उतर्या हुकम हिजूर। खलक मुलक सब अवादान, ना नहीं होत कसूर।।215।।
गरीब, ये बीसेकी बात हैं, लग्या ईकीसा ऐंन। साढ महीना सुभ घडी, सातौं आठौं चैंन।।216।।
गरीब, साढ बदी बैठे गदी, इंद्र मुहला लीन। लोकपाल लहरी कला, परसन देवा तीन।।217।।
गरीब, हुकम अरस तैं उतर्या, बरषे हरिजन संत। रांडीकै हांडी चढी, बुढिया जामें दंत।।218।।
गरीब, तीन चार और पांच मन, हुवा अंन उजाल। भीग्या गल्या सौ दशमना, यौह खावो कंगाल।।219।।
गरीब, लांडी बूची लाड करि, संतौंकै प्रताप। सांगर टीट न पावते, इब खावै मूंगरु भात।।220।।

गरीब, लांडी बूची लटकती, रूंखौं ऊपर रूह। केस वहांही खुसि रहे, इब ओढत है सूह।।221।।
गरीब, आने का दश सेर अन्न, मिहनतीयाकूं देह। पिछले दिन नहीं याद हैं, तोबा करि कै लेहि।।222।।
गरीब, एक आनेका सेर अन्न, लेते सबै मजूर। देखि दशगुणा बधि गया, समझि गदहरे सूर।।223।।
गरीब, जुलहौं ऊपर जुलम था, मरि गये डूंम डहाल। कातनकूं पाया नहीं, पर्‌या ज बीसाकाल।।224।।
गरीब, सासू साली माय क्या, बाप पूत बिछोह। सकल कबीला तजि गए, ऐसा व्याप्या द्रोह।।225।।
गरीब, ऐसी बीती जगतमें, जानैं नहीं जिहांन। कत्थरु चूंना लाय करि, अब चाबन लग गये पान।।226।।
गरीब, पंडौं भारत में बचे, यौं राखे जनदास। काल कुचालौं में रहे, नहीं खाये खड़ घास।।227।।

❖ **सरलार्थ :- इन वाणियों में दुर्भिक्ष का वर्णन है। विक्रमी संवत् सतरह सौ बीस में अकाल पड़ा था। बारिश नहीं हुई। उस समय नहरें नहीं थी। सिंचाई का एकमात्र साधन वर्षा थी जो हुई नहीं। जिस कारण से अकाल गिरा। जनता भूखी-प्यासी मरने लगी। संत गरीबदास जी ने बताया है कि उस दुर्भिक्ष के कारण छत्तीस जाति के व्यक्ति बर्बाद (नष्ट) हो गए। जो जाति विशेष में जन्में थे, अपने को सर्वोच्च जाति का मानकर घमंड करते थे, वे जाति बताना भूल गए। भूख से बेहाल थे। सर्व प्राणी त्राहि-त्राहि कर रहे थे।**

❖ **जो दिल्ली में रहने वाले (शहजादे) राज-घराने के व्यक्ति भूख के कारण दर-दर भटककर माँग-माँगकर रोटी खा रहे थे। जो दिल्ली (उमराव) राजवंश नान-पुलाव खाते थे, उस समय रोटी को तरस रहे थे।**

❖ **गंगा दरिया तथा यमुना दरिया की दूसरी ओर लोग भोजन के लिए चले गए। रोटियों के लिए अपने बच्चे भी बेच दिए। और क्या बताऊँ? बहुत त्रास भोगी। जो बासमती चावल पकाकर मजे से खाते थे, उनको पवाड़ घास भी खाने को नहीं मिला क्योंकि व्यक्तियों ने वह भी खा लिया। पवाड़ घास को गधे भी नहीं खाते। आदमियों ने तोड़-तोड़कर खाया। इसके अतिरिक्त जांड़ी के पेड़ के फल सांगर (सिंगरे), कैर झाड़ से टींट (टींड) और कांटेदार भांखड़ी कूटकर खाई। वृक्ष के पत्ते (झरेड़) खींच-खींच तोड़कर खा गए। अन्य घास जैसे कुंदिरा (कुंदरा) झोझरू झाड़ को खा गए। इससे आगे और क्या बताऊँ? उस दुर्भिक्ष में काँटेदार झाड़ियों की बाड़ जो खेत की रक्षा के लिए लगाई हुई थी। जो बोदी (कमजोर पुरानी गली हुई थी) बाड़ भी कूट-कूटकर खानी पड़ी। ऐसी दुर्गति आदमियों की हुई थी।**

❖ **हाहाकार मचा। परमात्मा ने पुकार-प्रार्थना सुनी। इन्द्र को आदेश दिया बारिश करने का। बारिश हुई, बादल गर्ज-गर्जकर बरसने लगे। तालाब-खेत पानी से (सूभर भर गए) पूर्ण रूप से भर गए। अच्छी फसल हुई। दुर्भिक्ष का संकट टल गया। दुर्भिक्ष में सासू-साली, माता-पिता, पुत्र सब परिवार भूखे मरते भोजन की तलाश में पागलों की तरह इधर-उधर भाग गए। एक-दूसरे से बिछुड़ गए। जगत में ऐसी भयंकर स्थिति हुई थी। अब दुनिया उन दुर्दिनों को भूल गई। बकवाद करने लगे। कत्था तथा चूना लगाकर पान चबाने लगे यानि फंड करने लगे हैं। परमात्मा को याद नहीं करते।**

❖ **उस दुर्भिक्ष में परमात्मा ने अपने भक्तों की ऐसे रक्षा की थी जैसे महाभारत के युद्ध में पाँचों पाण्डवों की रक्षा की थी। भक्तों को उस अकाल में भी भोजन का अभाव नहीं रहा था।**

❖ **वाणी नं. 228-317 में श्री रामचन्द्र पुत्र राजा दशरथ की महिमा का वर्णन है तथा**

राम व रावण के युद्ध का वर्णन है। कागभुसंड ने बालक रामचन्द्र की परीक्षा ली थी। उस समय पूर्णब्रह्म परमात्मा ने बालक रामचन्द्र का रूप बनाकर उसकी महिमा बनाई थी। फिर जीवन भर उसकी पूर्व जन्मों की भक्ति के कारण रक्षा की थी।

❖ नारद के अभिमान को भंग किया था। उसका भी वर्णन है। इसका वर्णन पहले कर दिया है।

❖ रावण के अभिमान के कारण उसका कुल नाश हुआ। सत्य साधना न करके तमगुण शंकर की भक्ति करके (रिद्धि) धन-दौलत तथा (सिद्धि) चमत्कारी शक्ति प्राप्त करके जीवन नष्ट कर दिया।

❖ वाणी नं. 239 :-

गरीब, बैरागर की खानिकूं, जो कोई लेवै चाहि। बिना धनीकी बंदगी, नगर लगौ तिस भाहि।।239।।

❖ सरलार्थ :- यदि कोई (बरागर) हीरे की खान की इच्छा रखता है। भक्ति पूर्ण परमात्मा की नहीं करता है। उस नगर को (भाहि) आग लगे।(239)

❖ जो माँस खाते हैं। शराब पीते हैं। वे तो मनुष्य दिखाई देते हैं। वे तो पशु हैं। पर्वत पर रहने वाले भीलों जैसे दुष्ट हैं।

❖ वाणी नं. 244-245 में बताया है कि रावण एक समय में सौ (100) झोटों (भैंसों = नर भैंस) का माँस खाता था। उसके घर पर नौजवान स्त्री मंदोद्री थी। फिर भी सीता की इच्छा रखता था जो उसके विनाश का कारण बना।

❖ रावण का भाई कुंभकरण, पुत्र मेघनाद आदि-आदि अनेकों झोटों का माँस खाते थे।

❖ रावण ने तेतीस करोड़ देवताओं को अपनी कैद में बाँधकर डाल रखा था।

❖ वाणी नं. 246-256 तक रावण राजा की सेना का वर्णन है। वाणी नं. 25 में रावण के अंगरक्षकों की सँख्या बताई है कि सौ करोड़ (एक अरब) सेना तो रावण की गद्दी तथा घर के चारों ओर रखवाली करती थी।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 258-259 :-

गरीब, जोजन चार अकाश में, जहां रावण की सेज। तहां राणी नौ जोबनी, हरदम रहैं उमेज।।258।।
गरीब, एक सवामन कंद्रप, रज बीरज ढलकंत। नौ जोबनि से जब, रावण भोग करंत।।259।।

❖ सरलार्थ :- लंका के राजा रावण के महल की सबसे ऊपर की मंजिल चार योजन (एक योजन बारह किलोमीटर का होता है) ऊँची थी। उसमें रावण नौजवान स्त्री के साथ संभोग करता था। संभोग (Sex) करते समय दोनों (स्त्री-पुरूष) के वीर्यपात होने की मात्रा सवा मन (एक मन = चालीस किलोग्राम) होती थी यानि पचास किलोग्राम (आधा क्विंटल) होती थी।

❖ वाणी नं. 260-317 तक राम तथा रावण के बीच हुए युद्ध का वर्णन है। हनुमान जी जैसे महाबलियों ने क्या-क्या उपकार व उपद्रव करके युद्ध जीता। लक्ष्मण की जीवन रक्षा सरजीवन जड़ी (औषधि का पौधा) लाकर की। यह रामायण का अंश है। यह अमृत वाणी संत गरीबदास जी के श्री मुख से बोली गई है। इसलिए इसके पढ़ने से आत्मा का पाप धुलता है। ज्ञान विशेष नहीं है।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 318-329 :-**

गरीब, एक लाख असी असलि, और सकल जिनांति। महंमद का कलमा सरू, तबक चौदहूं दांति।।318।।
गरीब,कलम सकल बनराय की, जै कोई लिखवा होय। अलह बैत बानी अलख, अंत न पावै कोय।।319।।
गरीब, पौहमीकी पटी करै, ऊपर लिखै हरफ। सकल समुद्र की मसी करै, लख्या न जाय अलफ।।320।।
गरीब, अली अलह में भेद क्या, एकै नूर जहूर। महंमदकी तो मदति परि, हो रहे चकनाचूर।।321।।
गरीब, हस्ती घोड़ा मरद क्या, बली बजर क्यूं न होय। अरस कुरस बिचि ना बचै, अली तेग तत लोय।।322।।
गरीब, सतरि कदम कटैं कटक, जै अली फिरावै तेग। खड़ी करै असमानकूं, तौ सप्त सुरग पर बेग।।323।।
गरीब, अली अलहका शेर है, सीना स्वाफ शरीर। कृष्ण अली एकै कली, न्यारी कला कबीर।।324।।
गरीब, अलह वृक्ष अलीपान है, झरिझरि परै अनंत। कृष्ण कली दर कली हैं, अगम कबीरा पंथ।।325।।
गरीब, अली अलीलौं हो गये, महंमद पदम पचाव। कबीर एक का एक है, दूजा नहीं मिलाव।।326।।
गरीब, जबराइल जुबांनपरि, महकाईल मुकुट। असराफील कबलि दरै, अजाजील औघट।।327।।
गरीब, च्यारि मुवक्कल रब्ब दे, हैं घट घट अस्थान। जा परि रबदा तख्त है, ज्यां आप अलह रहमान।।328।।
गरीब, नबी नाक महंमद मुख, मन मक्का महबूब। चिसम इसम दरगाह दिल, देखि खूब खुदि खूब।।329।।

❖ **सरलार्थ :- वाणियों में मुसलमान धर्म का आंशिक वर्णन है।**

❖ **अलि नाम का मुसलमान पूर्व जन्म की भक्ति के कारण सिद्धि शक्ति युक्त था। उसने हजरत मुहम्मद जी की विशेष सहायता की थी। अलि की शक्ति का वर्णन किया है कि अलि (अलह) परमात्मा का शेर (सिंह) था। जब वह (तेग) तलवार से वार करता था तो (सत्तर कदम कटें कटक) सत्तर कदम तक दुश्मन की सेना कट जाती थी। तेग (तलवार) को आसमान की ओर खड़ी करता था तो सात आसमान तक जाती थी।**

❖ **अलि भी श्री कष्ण की श्रेणी का शक्तिशाली देवता था। ऐसे-ऐसे अलि तो असँख्यों हो चुके हैं। कष्ण तीन करोड़ हो चुके हैं। सत्य भक्ति सत्य पुरूष की किए बिना यह संसार में बनी महिमा व्यर्थ है।**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 330-351 :-**

गरीब, चिसम इसमसैं जोरि करि, खैंचैं दम दुरबीन। कूरंभ नाद उदगार गति, परसै देवा तीन।।330।।
गरीब, तिहूं देवा दिल में बसें, ब्रह्मा विष्णु महेश। प्रथम इनकी बंदना, सुन सतगुरु उपदेश।।331।।
गरीब, सुन सतगुरु उपदेशकूं कहि समझाऊं तोहि। त्रिकुटी कमल में पैठि कै, उलटी पवन समोय।।332।।
गरीब, उलटी पवन समोयकरि, नाभ कमल में आन। नाभ कमलमें पैठि कै, जहां वहां करौ बयांन।।333।।
गरीब, वायु धनंजय बसि करि, जीतै पान अपान। किरकलक्षुधा मिटाय करि, सहंस कमलमुखध्यान।।334।।
गरीब, सहंस कमल दल जगमगै, झिलमिल रंग अपार। जहां शक्ति माया कला, धरमराय दरबार।।335।।
गरीब, नौदर तो प्रगट हैं, दसवां सुषमण जान। एकादशं अरू द्वादशं का, बिरले ही को ग्यान।।336।।
गरीब, कैसैं पावौं बिधि कहौ, दीजे मोहि बताय। कल कूंची मोसौं कहौ, कौन पंथ को राह।।337।।
गरीब, तिल जेहै उनमान हैं, बटक बीज बिस्तार। त्रिवेणीके घाट चढि, देखौ मुक्ति द्वार।।338।।
गरीब, दो दलका जहां कमल है, जहां वहां औघट घाट। तिल प्रवान खिरकी लगी, सहजे खुलैं कपाट।।339।।
गरीब, दो दलका जहां कमल है, अगम द्वार बैराट। मक्रतार डोरी गहौ, चलि सतगुरुकी बाट।।340।।
गरीब, स्थूल देह का भेद कहा, अब सूक्ष्म कहूँ बिस्तार। या में भी दर द्वादश है, कोई ना पाया पार।।341।।

❖ **सरलार्थ :- इन वाणियों में भक्ति मार्ग बताया है। कमलों का वर्णन है। संत गरीबदास जी ने पाठ करने यानि ग्रन्थ को पढ़ते समय पाठी के लिए रह-रहकर प्रत्येक विषय को दोहराया है ताकि याद बनी रहे।(330)**

❖ **अर्थात् श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शंकर जी प्रत्येक मानव (स्त्री-पुरूष) के शरीर के बने कमल दलों में निवास करते हैं। इसलिए प्रथम नाम में इनकी साधना करने को दी जाती है। फिर आगे का भक्ति मार्ग सतगुरू जी बताते हैं। वह भी सुनो।(331)**

❖ **वाणी नं. 332-351 में कमलों का वर्णन है जो पहले कई बार बता दिया है। आगे ब्रह्म बेदी तथा ब्रह्म कला अंगों में विस्तार से किया गया है, वहाँ पढ़ें।**

❖ **वाणी नं. 349 का सरलार्थ :- इस वाणी में स्पष्ट किया है कि कुछ साधक व संत सुरति कमल को अंतिम मंजिल मानते हैं। यह तो काल का (बंधान) बंधन यानि जाल है। इससे आगे निरति कमल है जो मोक्ष का मूल है। मुख्य कारण है। परंतु सतलोक वाला मोक्ष तो निरति कमल से भी आगे है। उसको स्थूल शरीर त्यागकर ऊपर जाकर ही देख पाओगे। सत्य साधना करते रहो।(349)**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 352-369 :-**

गरीब, कंगरै कंगरै कलश हैं, कलश कलश लखि सूर। सूर सूर लखि चंद हैं, अवादांन भरपूर।।352।।
गरीब, कंगरै कंगरै केवड़ा, लख लख फूल फलंत। लख लख मोती मुक्ति फल, बूझैं बिरले संत।।353।।
गरीब, नहीं कंगूरे हेमके, नहीं ये सूरज चंद। पारस कंनी पहार हैं, अबिगत परमानंद।।354।।
गरीब, जगर मगर जोती करैं, तहां राय बेलि चंबेल। कमल केतकी खिलि रहे, भंवर गुंजना खेल।।355।।
गरीब, अबिगत नगर निधान पुर, बंगले लाल किवार। संख मुनि सिजदे करैं, शिब ब्रह्मा सिकदार।।356।।
गरीब, बिन मुख सारंग राग सुनि, बिनहीं तंती तार। बिन सुर अलगोजे बजैं, नगर नाच धूमार।।357।।
गरीब, संख असंखौं जोजनं, चौपड़ि के बैजार। कसक नहीं कसनी नहीं, गली गली सिकदार।।358।।
गरीब, तरक नहीं तोरा नहीं, नहीं कसीस कबाब। अमृत प्याले मध पीवै, भाठी चवै शराब।।359।।
गरीब, मतवाले मस्तानपुर, गली गली गुलजार। संख शराबी फिरत हैं, चलौ तास बैजार।।360।।
गरीब, संख संख पदमनी नचैं, गावैं शब्द सुभांन। चंद्र बदन सूरजमुखी, नहीं वहां मान गुमान।।361।।
गरीब, संख हिंडोले नूर नघ, झूलैं संत हिजूर। तखत धनी के पास करि, ऐसा मुलक जहूर।।362।।
गरीब, नदी नाव नाले बगैं, छुटैं फुहारे सुंनि। भरे हौद सरबर सदा, नहीं पाप नहीं पुंनि।।363।।
गरीब, नहीं कोई भिक्षुक दान दे, नहीं हार व्यौहार। नहीं कोई जामैं मरै, ऐसा देश हमार।।364।।
गरीब, बाजैं घंटा ताल घन, मंजीरे डफ झांझ। मुरली मधुर सुहावनी, निश बासर अरु सांझ।।365।।
गरीब, दरवन दमामें बाजहीं, सहनाई अरु भेरि। संख तूर तुतकार हैं, हरदम सुनिये टेर।।366।।
गरीब, बीन बिहंगम झमकहीं, तनक तंबूरे तीर। राग खंड नहीं होत हैं, बंध्या रहत समीर।।367।।
गरीब ताल ख्याल सुर एक गति, राग छतीसौं बैंन। सुनै तो सनमुख शीश दे, बिना राग सब फैंन।।368।।
गरीब, संख किरनि जहां झिलकहीं, संख पदम प्रकाश। संख कला कलधूत हैं, जहां हमारा बास।।369।।

❖ **सरलार्थ :- इन वाणियों में सत्यलोक का वर्णन है। कहा है कि सत्यलोक में सब प्रकार का नत्य होता है। सब प्रकार के राग होते हैं। सतलोक का संगीत मनभावना है। वहाँ पर अनेकों सुंदर स्त्रियाँ नत्य करती हैं। वहाँ कोई दुराचार नहीं करता।**

❖ सतलोक में कोई निर्धन नहीं है। न कोई (भिक्षू) भीख माँगने वाला है, न कोई दान देने वाला। वहाँ न कोई संसार की तरह व्यवहार करने वाला है। वहाँ पर परमात्मा के भण्डार से सबको खाने को मिलता है। वहाँ कोई जन्मता-मरता नहीं। हमारा सतलोक ऐसा स्वच्छ देश है।(364)

❖ वाणी नं. 370-375 में बताया है कि जैसे श्री रामचन्द्र जी अपनी भक्ति की शक्ति से अयोध्या नगरी के सब व्यक्तियों को स्वर्ग ले गए जो सँख्या में दस लाख थे।

❖ राजा जनक जी नरक में पड़े बारह करोड़ जीवों को स्वर्ग ले गए।

❖ इनमें स्पष्ट किया है कि काल के लोक में दुःख-सुख, कहर-मेहर सब कर्मों के अनुसार चलता है। जन्म-मत्यु भी सदा रहती है। स्वर्ग-नरक का चक्र भी सदा रहता है। परंतु कबीर परमेश्वर की भक्ति से जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाता है। राजा जनक वाला जीव स्वर्ग समय भोगकर पुण्य समाप्त करके श्री नानक रूप में जन्मा। परमात्मा कबीर जी ने उसका जन्म-मरण समाप्त किया। श्री दादू दास जी का जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त किया।(370)

❖ श्रीराम जी अयोध्या को स्वर्ग ले गए। स्वयं श्री कष्ण जी रूप पुर्नजन्म में आए। राजा जनक बारह करोड़ को स्वर्ग ले गए। स्वयं श्री नानक जी के रूप में जन्म लिया। इसलिए परमात्मा कबीर जी की भक्ति से परमशान्ति यानि जन्म-मरण से सदा के लिए मुक्ति मिलती है तथा परमधाम यानि सत्यलोक मिलता है जो सुख सागर है।(371)

''परमात्मा कबीर जी का कलयुग में प्रकट होने का प्रकरण''

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 376-380 :-

गरीब, चौरासी बंधन कटे, कीनी कलप कबीर। भवर चतुरदश लोक सब, टूटे जम जंजीर।।376।।
गरीब, अनंत कोटि ब्रह्मांड में, बंदी छोड कहाय। सो तौ एक कबीर हैं, जननी जन्या न माय।।377।।
गरीब, शब्द स्वरूप साहिब धनी, शब्द सिंध सब मांहि। बाहर भीतर रमि रह्या, जहाँ तहां सब ठांहि।।378।।
गरीब, जल थल पृथ्वी गगन में, बाहर भीतर एक। पूरणब्रह्म कबीर हैं, अबिगत पुरूष अलेख।।379।।
गरीब, सेवक होय करि ऊतरे, इस पृथ्वी के मांहि। जीव उधारन जगतगुरू, बार बार बलि जांहि।।380।।

❖ सरलार्थ :- वाणियों में परमात्मा कबीर जी के कलयुग में प्राकाट्य का प्यारा वर्णन है जो इस प्रकार है:-

❖ वाणी नं. 376-380 में परमात्मा कबीर जी की महिमा का वर्णन है। कहा है कि कबीर परमेश्वर बंदी छोड़ हैं। अनंत करोड़ ब्रह्मण्डों में बन्दी छोड़ के नाम से प्रसिद्ध हैं। बन्दी छोड़ का अर्थ है कैदी को कारागार से छुड़ाने वाला। हम सब जीव काल निरंजन की कारागार में बंदी (कैद) हैं। इस बंदीगह से केवल कबीर परमात्मा की छुड़ा सकते हैं। इसलिए सब ब्रह्मण्डों में परमात्मा कबीर जी एकमात्र बन्दी छोड़ हैं। केवल कबीर परमेश्वर जी ही एकमात्र हैं जिनका जन्म माता के गर्भ से नहीं हुआ।(376)

❖ जो परमात्मा कबीर जी की शरण में आ जाते हैं, कबीर परमेश्वर जी की कपा से चौरासी लाख योनियों में जाने वाले बंधन कट जाते हैं। (कर्मों के कारण बंधन होता है। वे

पाप कर्म परमात्मा कबीर जी की कृपा से नष्ट हो जाते हैं। सतनाम के जाप से पाप नाश होते हैं।)(377)

❖ परमात्मा कबीर जी (शब्द स्वरूपी) अविनाशी रूप हैं। उनकी (शब्द सिंधु) वचन शक्ति समुद्र की तरह अथाह है। जीव एक तुम्बे की तरह है जो समुद्र में पड़ा है। उसके अंदर भी जल बाहर भी जल होता है। ऐसे परमात्मा कबीर जी की शक्ति के अंदर सब ब्रह्मण्डों के जीव हैं। परमात्मा इस प्रकार सर्वव्यापक कहा जाता है। कबीर जी पूर्णब्रह्म हैं। (अविगत पुरूष अलेख) दिव्य अवर्णनीय परमेश्वर है।(378-379)

❖ परमात्मा कबीर जी वेदों में बताए उनकी महिमा के अनुरूप कार्य करते हैं। ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 82 मंत्र 1-2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मंत्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त 54 मंत्र 3, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मंत्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मंत्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 16-20 आदि-आदि अनेकों मंत्रों में कहा है कि परमात्मा (कविर्देव) कबीर परमेश्वर है जो आकाश में सबसे ऊपर वाले स्थान पर बैठा है। वहाँ से गति करके आता है। अच्छी आत्माओं को मिलता है। उनको उपदेश देता है। तत्वज्ञान का प्रचार अपनी (कविर्गिर्भिः) कबीर वाणी द्वारा (काव्येन) कवित्व से यानि कवियों की तरह साखी, शब्द, चौपाईयों द्वारा बोल-बोलकर करता है। जिस कारण से (कविनाम पदवी) कवियों में से प्रसिद्ध कवि की उपाधि प्राप्त करता है। जैसे परमात्मा कबीर जी को ''कवि'' भी कहा जाता है। परमात्मा कबीर जी पृथ्वी पर कवियों की तरह आचरण करता हुआ विचरण करता है। परमात्मा कबीर जी अपनी वाणी बोलकर भक्ति करने की प्रेरणा करता है। भक्ति के गुप्त नाम का आविष्कार करता है।(380)

❖ कृपया पढ़ें वेद मंत्रों की फोटोकॉपी जो प्रत्यक्ष प्रमाण देती है :-

''वेदों में कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर का प्रमाण''

(पवित्र वेदों में प्रवेश से पहले)

प्रभु जानकारी के लिए पवित्र चारों वेद प्रमाणित शास्त्र हैं। पवित्र वेदों की रचना उस समय हुई थी जब कोई अन्य धर्म नहीं था। इसलिए पवित्र वेदवाणी किसी धर्म से सम्बन्धित नहीं है, केवल आत्म कल्याण के लिए है। इनको जानने के लिए निम्न व्याख्या बहुत ध्यान तथा विवेक के साथ पढ़नी तथा विचारनी होगी।

प्रभु की विस्तृत तथा सत्य महिमा वेद बताते हैं। (अन्य शास्त्र''श्री गीता जी व चारों वेदों तथा पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त महान संतों तथा स्वयं कबीर साहेब(कविर्देव) जी की अपनी पूर्ण परमात्मा की अमृत वाणी के अतिरिक्त'' अन्य किसी ऋषि साधक की अपनी उपलब्धि है। जैसे छः शास्त्र ग्यारह उपनिषद् तथा सत्यार्थ प्रकाश आदि। यदि ये वेदों की कसौटी में खरे नहीं उतरते हैं तो यह सम्पूर्ण ज्ञान नहीं है।)

पवित्र वेद तथा गीता जी स्वयं काल प्रभु(ब्रह्म) दत्त हैं। जिन में भक्ति विधि तथा उपलब्धि दोनों सही तौर पर वर्णित हैं। इनके अतिरिक्त जो पूजा विधि तथा अनुभव हैं वह अधूरा समझें। यदि इन्हीं के अनुसार कोई साधक अनुभव बताए तो सत्य जानें। क्योंकि कोई

भी प्राणी प्रभु से अधिक नहीं जान सकता।

वेदों के ज्ञान से पूर्वोक्त महात्माओं का विवरण सही मिलता है। इससे सिद्ध हुआ कि वे सर्व महात्मा पूर्ण थे। पूर्ण परमात्मा का साक्षात्कार हुआ है तथा बताया है वह परमात्मा कबीर साहेब(कविर् देव) है।

वही ज्ञान चारों पवित्र वेद तथा पवित्र गीता जी भी बताते हैं।

कलियुगी ऋषियों ने वेदों का टीका (भाषा भाष्य) ऐसे कर दिया जैसे कहीं दूध की महिमा कही गई हो और जिसने कभी जीवन में दूध देखा ही न हो और वह अनुवाद कर रहा हो, वह ऐसे करता है :-

पोष्टिकाहार असि। पेय पदार्थ असि। श्वेदसि। अमंत उपमा सर्वा मनुषानाम पेय्याम् सः दूग्धः असिः।

(पौष्टिकाहार असि)=कोई शरीर पुष्ट कर ने वाला आहार है (पेय पदार्थ) पीने का तरल पदार्थ (असि) है। (श्वेत्) सफेद (असि) है। (अमंत उपमा) अमंत सदंश है (सर्व) सब (मनुषानाम्) मनुष्यों के (पेय्याम्) पीने योग्य (सः) वह (दूग्धः) पौष्टिक तरल (असि) है।

भावार्थ किया :- कोई सफेद पीने का तरल पदार्थ है जो अमंत समान है, बहुत पौष्टिक है, सब मनुष्यों के पीने योग्य है, वह स्वयं तरल है। फिर कोई पूछे कि वह तरल पदार्थ कहाँ है? उत्तर मिले वह तो निराकार है। प्राप्त नहीं हो सकता। यहाँ पर दूग्धः को तरल पदार्थ लिख दिया जाए तो उस वस्तु ''दूध'' को कैसे पाया व जाना जाए जिसकी उपमा ऊपर की है? यहाँ पर (दूग्धः) को दूध लिखना था जिससे पता चले कि वह पौष्टिक आहार दूध है। फिर व्यक्ति दूध नाम से उसे प्राप्त कर सकता है।

विचार :- यदि कोई कहे दुग्धः को दूध कैसे लिख दिया? यह तो वाद-विवाद का प्रत्यक्ष प्रमाण ही हो सकता है। जैसे दुग्ध का दूध अर्थ गलत नहीं है। भाषा भिन्न होने से हिन्दी में दूध तथा क्षेत्रीय भाषा में दूधू लिखना भी संस्कंत भाषा में लिखे दुग्ध का ही बोध है। जैसे पलवल शहर के आसपास के ग्रामीण परवर कहते हैं। यदि कोई कहे कि परवर को पलवल कैसे सिद्ध कर दिया, मैं नहीं मानता। यह तो व्यर्थ का वाद विवाद है। ठीक इसी प्रकार कोई कहे कि कविर्देव को कबीर परमेश्वर कैसे सिद्ध कर दिया यह तो व्यर्थ का वाद-विवाद ही है। जैसे ''यजुर्वेद'' है यह एक धार्मिक पवित्र पुस्तक है जिसमें प्रभु की यज्ञिय स्तुतियों की ऋचाऐं लिखी हैं तथा प्रभु कैसा है? कैसे पाया जाता है? सब विस्तंत वर्णन है।

अब पवित्र यजुर्वेद की महिमा कहें कि प्रभु की यज्ञीय स्तुतियों की ऋचाओं का भण्डार है। बहुत अच्छी विधि वर्णित है। एक अनमोल जानकारी है और यह लिखें नहीं कि वह ''यजुर्वेद'' है अपितु यजुर्वेद का अर्थ लिख दें कि यज्ञीय स्तुतियों का ज्ञान है। तो उस वस्तु(पवित्र पुस्तक) को कैसे पाया जा सके? उसके लिए लिखना होगा कि वह पवित्र पुस्तक ''यजुर्वेद'' है जिसमें यज्ञीय ऋचाऐं हैं।

अब यजुर्वेद की सन्धिच्छेद करके लिखें। यजुर्+वेद, भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। यजुः+वेद भी वही पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध है। जिसमें यज्ञीय स्तुति की ऋचाऐं हैं। उस धार्मिक पुस्तक को यजुर्वेद कहते हैं। ठीक इसी प्रकार चारों पवित्र वेदों में लिखा है कि वह कविर्देव(कबीर परमेश्वर) है। जो सर्व शक्तिमान, जगत्पिता, सर्व संष्टि

रचनहार, कुल मालिक तथा पाप विनाशक व काल की कारागार से छुटवाने वाला अर्थात् बंदी छोड़ है।

इसको कविर्+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर का बोध है। कविः+देव लिखें तो भी कबीर परमेश्वर अर्थात् कविर् प्रभु का ही बोध है।

इसलिए कविर्देव उसी कबीर साहेब का ही बोध करवाता है :- सर्व शक्तिमान, अजर-अमर, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार कुल मालिक है क्योंकि पूर्वोक्त प्रभु प्राप्त सन्तों ने अपनी-अपनी मातभाषा में 'कविर्' को 'कबीर' बोला है तथा 'वेद' को 'बेद' बोला है। इसलिए 'व' और 'ब' के अंतर हो जाने पर भी पवित्र शास्त्र वेद का ही बोध है।

विचार :- जैसे कोई अंग्रेजी भाषा में लिखें कि **God (Kavir) Kaveer is all mighty** इसका हिन्दी अनुवाद करके लिखें कविर या कवीर परमेश्वर सर्व शक्तिमान है।

अब अंग्रेजी भाषा में तो हलन्त (्) की व्यवस्था ही नहीं है। फिर मात्र भाषा में इसी को कबीर कहने तथा लिखने लगे।

यही परमात्मा कविर्देव(कबीर परमेश्वर) तीन युगों में नामान्तर करके आते हैं जिनमें इनके नाम रहते हैं - सतयुग में सत सुकत, त्रेतायुग में मुनिन्द्र, द्वापरयुग में करुणामय तथा कलयुग में कबीर देव (कविर्देव)। वास्तविक नाम उस पूर्ण ब्रह्म का कविर् देव ही है। जो सष्टि रचना से पहले भी अनामी लोक में विद्यमान थे। इन्हीं के उपमात्मक नाम सतपुरुष, अकाल मूर्त, पूर्ण ब्रह्म, अलख पुरुष, अगम पुरुष, परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। उसी परमात्मा को चारों पवित्र वेदों में ''कविरमितौजा'', ''कविरघांरि'', ''कविरग्नि'' तथा ''कविर्देव'', कहा है तथा सर्वशक्तिमान, सर्व सष्टि रचनहार बताया है। पवित्र कुरान शरीफ में सुरत फुर्कानी नं. 25 आयत नं. 19,21,52,58,59 में भी प्रमाण है।

कई एक का विरोध है कि जो शब्द कविर्देव' है इसको सन्धिच्छेद करने से कविः+देवः बन जाता है यह कबिर् परमेश्वर या कबीर साहेब कैसे सिद्ध किया? व को ब तथा छोटी इ (ि) की मात्रा को बड़ी ई (ी) की मात्रा करना बेसमझी है।

विचार :- एक ग्रामीण लड़के की सरकारी नौकरी लगी। जिसका नाम कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर सरकारी कागजों में तथा करमबिर पुत्र श्री धरमबिर पुत्र परताप गाँव के चौकीदार की डायरी में जन्म के समय का लिखा था। सरकार की तरफ से नौकरी लगने के बाद जाँच पड़ताल कराई जाती है। एक सरकारी कर्मचारी जाँच के लिए आया। उसने पूछा कर्मवीर पुत्र श्री धर्मवीर का मकान कौन-सा है, उसकी अमूक विभाग में नौकरी लगी है। गाँव में कर्मवीर को कर्मा तथा उसके पिता जी को धर्मा तथा दादा जी को प्रता आदि उर्फ नामों से जानते थे। व्यक्तियों ने कहा इस नाम का लड़का इस गाँव में नहीं है। काफी पूछताछ के बाद एक लड़का जो कर्मवीर का सहपाठी था, उसने बताया यह कर्मा की नौकरी के बारे में है। तब उस बच्चे ने बताया यही कर्मबीर उर्फ कर्मा तथा धर्मबीर उर्फ धर्मा ही है। फिर उस कर्मचारी को शंका उत्पन्न हुई कि कर्मबीर नहीं कर्मवीर है। उसने कहा चौकीदार की डायरी लाओ, उसमें भी लिखा था - ''करमबिर पुत्र धरमबिर पुत्र परताप'' पूरा ''र'' ''व'' के स्थान पर ''ब'' तथा छोटी ''ि'' की मात्रा लगी थी। तो भी वही बच्चा

कर्मवीर ही सिद्ध हुआ, क्योंकि गाँव के नम्बरदारों तथा प्रधानों ने भी गवाही दी कि बेशक मात्रा छोटी बड़ी या ''र'' आधा या पूरा है, लड़का सही इसी गाँव का है। सरकारी कर्मचारी ने कहा नम्बरदार अपने हाथ से लिख दे। नम्बरदार ने लिख दिया मैं करमविर पूतर धरमविर को जानता हूँ जो इस गाम का बासी है और हस्ताक्षर कर दिए। बेशक नम्बरदार ने विर में छोटी ई(ि) की मात्रा का तथा करम में बड़े ''र'' का प्रयोग किया है, परन्तु हस्ताक्षर करने वाला गाँव का गणमान्य व्यक्ति है। किसी को कोई आपत्ति नहीं हो सकती, क्योंकि नाम की स्पेलिंग गलत नहीं होती।

ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का नाम सरकारी दस्तावेज(वेदों) में कविर्देव है, परन्तु गाँव(पथ्वी) पर अपनी-2 मात भाषा में कबीर, कबिर, कबीरा, कबीरन् आदि नामों से जाना जाता है। इसी को नम्बरदारों(आँखों देखा विवरण अपनी पवित्र वाणी में ठोक कर गवाही देते हुए आदरणीय पूर्वोक्त सन्तों) ने कविर्देव को हक्का कबीर, सत् कबीर, कबीरा, कबीरन्, खबीरा, खबीरन् आदि लिख कर हस्ताक्षर कर रखे हैं।

वर्तमान (सन् 2006)से लगभग 600 वर्ष पूर्व जब परमात्मा कबीर जी (कविर्देव जी) स्वयं प्रकट हुए थे उस समय सर्व सद्ग्रन्थों का वास्तविक ज्ञान लोकोक्तियों (दोहों, चोपाईयों, शब्दों अर्थात् कविताओं) के माध्यम से साधारण भाषा में जन साधारण को बताया था। उस तत्त्व ज्ञान को उस समय के संस्कत भाषा व हिन्दी भाषा के ज्ञाताओं ने यह कह कर ठुकरा दिया कि कबीर जी तो अशिक्षित है। इस के द्वारा कहा गया ज्ञान व उस में उपयोग की गई भाषा व्याकरण दष्टिकोण से ठीक नहीं है। जैसे कबीर जी ने कहा है :-

कबीर बेद मेरा भेद है, मैं ना बेदों माहीं। जौण बेद से मैं मिलु ये बेद जानते नाहीं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी ने कहा है कि जो चार वेद है ये मेरे विषय में ही ज्ञान बता रहे हैं परन्तु इन चारों वेदों में वर्णित विधि द्वारा मैं (पूर्ण ब्रह्म) प्राप्त नहीं हो सकता। जिस वेद (स्वसम अर्थात् सुक्ष्म वेद) में मेरी प्राप्ति का ज्ञान है। उस को चारों वेदों के ज्ञाता नहीं जानते। इस वचन को सुनकर। उस समय के आचार्यजन कहते थे कि कबीर जी को भाषा का ज्ञान नहीं है। देखो वेद का बेद कहा है। नहीं का नाहीं कहा है। ऐसे व्यक्ति को शास्त्रों का क्या ज्ञान हो सकता है? इसलिए कबीर जी मिथ्या भाषण करते हैं। इस की बातों पर विश्वास नहीं करना। स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश समुल्लास ग्यारह पष्ठ 306 पर कबीर जी के विषय में यही कहा है। वर्तमान में मुझ दास (संत रामपाल दास) के विषय में विज्ञापनों में लिखे लेख पर आर्य समाज के आचार्यों ने यही आपत्ति व्यक्त की थी कि रामपाल को हिन्दी भाषा भी सही नहीं लिखनी आती व को ब लिखता है छोटी-बड़ी मात्राओं को गलत लिखता है। कोमा व हलन्त भी नहीं लगाता। इसका ज्ञान कैसे सही माना जाए।

विचार :- किसी लड़के का विवाह एक सुन्दर सुशील युवती से हो गया। उसने साधारण वस्त्र पहने थे। मेकअप (हार, सिंगार) नहीं कर रखा था। उस के विषय में कोई कहे कि ''यह भी कोई विवाह है। वधु ने मेकअप (हार, सिंगार-आभूषण आदि नहीं पहने) नहीं किया है। विचार करें विवाह का अर्थ है पुरूष को पत्नी प्राप्ति। यदि मेकअप (श्रंगार) नहीं

कर रखा तो वांच्छित वस्तु प्राप्त है। यदि श्रंगार कर रखा है लड़की ने तो भी बुरा नहीं किया, परन्तु एक श्रंगार के अभाव से विवाह को ही नकार देना कौन सी बुद्धिमता है। ठीक इसी प्रकार परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ तथा संत रामपाल दास जी महाराज द्वारा दिया तत्त्व ज्ञान है। वास्तविक ज्ञान प्राप्त है। यदि भाषा में श्रंगार का अभाव अर्थात् मात्राओं व हलन्तों की कमी है तो विद्वान पुरूष कृप्या ठीक करके पढ़ें।

इस तरह इस उलझी हुई ज्ञानगुत्थी को सुलझाया जाएगा। इसमें भाषा तथा व्याकरण की भूमिका क्या है?

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने अपने द्वारा रचे उपनिषद् ''सत्यार्थ प्रकाश'' के सातवें समुलास में (पृष्ठ नं. 217, 212 अजमेर से प्रकाशित तथा पृष्ठ संख्या 173 दीनानगर दयानन्द मठ पंजाब से प्रकाशित) लिखा है, उसका भावार्थ है कि ब्रह्म ने वेद वाणी चार ऋषियों में जीवस्थ रूप से बोले। जैसे लग रहा था कि ऋषि वेद बोल रहे थे, परन्तु ब्रह्म बोल रहा था तथा ऋषियों का मुख प्रयोग कर रहा था। (''जीवस्थ रूप'' का भावार्थ है जैसे ऋषियों के अन्दर कोई और जीव स्थापित होकर बोल रहा हो) बाद में उन ऋषियों को कुछ मालूम नहीं कि क्या बोला, क्या लिखा?

(जैसे कोई प्रेतात्मा किसी के शरीर में प्रवेश करके बोलती है। उस समय लग रहा होता है कि शरीर वाला जीव ही बोल रहा है, परन्तु प्रेत के निकल जाने के बाद उस शरीर वाले जीव को कुछ मालूम नहीं होता, मैंने क्या बोला था)।

इसी प्रकार बाद में ऋषियों ने वेद भाषा को जानने के लिए व्याकरण निघटु आदि की रचना की। जो स्वामी दयानन्द जी के शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश तीसरे समुल्लास (पृष्ठ नं. 80, अजमेर से प्रकाशित तथा पृष्ठ संख्या 64 दीनानगर पंजाब से प्रकाशित) में पवित्र चारों वेद ईश्वर कृत होने से निभ्रात हैं, वेदों का प्रमाण वेद ही हैं। चारों ब्राह्मण, व्याकरण, निघटु आदि ऋषियों कृत होने से त्रुटि युक्त हो सकते हैं। उपरोक्त विचार स्वामी दयानन्द जी के हैं।

विचार करें वेद पढ़ने वाले ऋषियों के अपने विचारों से रचे उपनिषद् एक दूसरे के विपरीत व्याख्या कर रहे हैं। इसलिए वेद ज्ञान को तत्त्वज्ञान से ही समझा जा सकता है। तत्त्वज्ञान (स्वसम वेद) पूर्ण ब्रह्म कविर्देव ने स्वयं आकर बताया है तथा चारों वेदों का ज्ञान ब्रह्म द्वारा बताया गया है और वेदों को बोलने वाला ब्रह्म स्वयं पवित्र यजुर्वेद अध्याय नं. 40 मन्त्र नं. 10 में कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म को कोई तो (सम्भवात्) जन्म लेकर प्रकट होने वाला अर्थात् आकार में(आहुः) कहता है तथा कोई (असम्भवात्) जन्म न लेने वाला अर्थात् व निराकार(आहुः) कहते हैं। परन्तु इसका वास्तविक ज्ञान तो(धीराणाम्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्त्वदर्शी संतजन (विचचक्षिरे) पूर्ण निर्णायक भिन्न भिन्न बताते हैं (शुश्रुम्) उसको ध्यानपूर्वक सुनो। इससे स्वसिद्ध है कि वेद बोलने वाला ब्रह्म भी स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण ब्रह्म के बारे में मैं भी पूर्ण ज्ञान नहीं रखता। उसको तो कोई तत्त्वदर्शी संत ही बता सकता है। इसी प्रकार इसी अध्याय के मन्त्र नं. 13 में कहा है कि कोई तो (विद्याया) अक्षर ज्ञानी एक भाषा के जानने वाले को ही विद्वान कहते हैं, दूसरे (अविद्याया) निरक्षर को अज्ञानी

कहते हैं, यह जानकारी भी (धीराणाम्) तत्त्वदर्शी संतजन ही (विचचक्षिरे) विस्तृत व्याख्या ब्यान करते हैं (तत्) उस तत्त्वज्ञान को उन्हीं से (शुश्रुम्) ध्यानपूर्वक सुनो अर्थात् वही तत्त्वदर्शी संत ही बताएगा कि विद्वान अर्थात् ज्ञानी कौन है तथा अज्ञानी अर्थात् अविद्वान कौन है?

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों को विवेचन करके सद्भावना पूर्वक पुनर्विचार करें तथा व को ब तथा छोटी बड़ी मात्राओं की शुद्धि-अशुद्धि से ही ज्ञानी व अज्ञानी की पहचान नहीं होती, वह तो तत्त्वज्ञान से ही होती है।

(कविर् देव) = कबीर परमेश्वर के विषय में 'व' को 'ब' कैसे सिद्ध किया है? छोटी इ (ि) की मात्रा बड़ी ई(ी) की मात्रा कैसे सिद्ध हो सकती है? इस वाद-विवाद में न पड़कर तत्त्वज्ञान को समझना है।

जैसे यजुर्वेद है, यह एक पवित्र पुस्तक है। इसके विषय में कहीं संस्कृत भाषा में विवरण किया हो जहां यजुः या यजुम् आदि शब्द लिखें हो तो भी पवित्र पुस्तक यजुर्वेद का ही बोध समझा जाता है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव है। इसी को भिन्न-भिन्न भाषा में कबीर साहेब, कबीर परमेश्वर कहने लगे। कई श्रद्धालु शंका व्यक्त करते हैं कि कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया। व्याकरण दृष्टिकोण से कविः का अर्थ सर्वज्ञ होता है। दास की प्रार्थना है कि प्रत्येक शब्द का कोई न कोई अर्थ तो बनता ही है। रही बात व्याकरण की। भाषा प्रथम बनी क्योंकि वेद वाणी प्रभु द्वारा कही है, तथा व्याकरण बाद में ऋषियों द्वारा बनाई है। यह त्रुटियुक्त हो सकती है। वेद के अनुवाद (भाषा-भाष्य) में व्याकरण व्यतय है अर्थात् असंगत तथा विरोध भाव है। क्योंकि वेद वाणी मंत्रों द्वारा पदों में है। जैसे पलवल शहर के आस-पास के व्यक्ति पलवल को परवर बोलते हैं। यदि कोई कहे कि पलवल को कैसे परवर सिद्ध कर दिया। यही कविर् को कबीर कैसे सिद्ध कर दिया कहना मात्र है। जैसे क्षेत्रीय भाषा में पलवल शहर को परवर कहते हैं। इसी प्रकार कविर् को कबीर बोलते हैं, प्रभु वही है। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' समुल्लास 4 पृष्ठ 100 पर (दयानन्द मठ दीनानगर पंजाब से प्रकाशित पर) ''देवकामा''का अर्थ देवर की कामना करने किया है देव को पूरा '' र '' लिख कर देवर किया है। कविर् को कविर फिर भाषा भिन्न कबीर लिखने व बोलने में कोई आपत्ति या व्याकरण की त्रुटि नहीं है। पूर्ण परमात्मा कविर्देव है, यह प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 29 मंत्र 25 तथा सामवेद संख्या 1400 में भी है जो निम्न है :-

यजुर्वेद के अध्याय नं. 29 के श्लोक नं. 25 **(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य)** :-

समिद्धो•अद्य मनुषो दुरोणे देवो देवान्यजसि जातवेदः।
आ च वह मित्रमहश्चिकित्वान्त्वं दूतः कविरसि प्रचेताः।।25।।

समिद्धः—अद्य—मनुषः—दुरोणे—देवः—देवान्—यज्—असि—जातवेदः— आ— च—वह— मित्रमहः—चिकित्वान्—त्वम्—दूतः—कविर्—असि—प्रचेताः

अनुवाद :— (अद्य) आज अर्थात् वर्तमान में (दुरोणे) शरीर रूप महल में दुराचार पूर्वक (मनुषः) झूठी पूजा में लीन मननशील व्यक्तियों को (समिद्धः) लगाई हुई आग अर्थात् शास्त्र विधि रहित वर्तमान पूजा जो हानिकारक होती है, उसके स्थान पर (देवान्) देवताओं के (देवः)

देवता (जातवेदः) पूर्ण परमात्मा सतपुरूष की वास्तविक (यज्) पूजा (असि) है। (आ) दयालु (मित्रमहः) जीव का वास्तविक साथी पूर्ण परमात्मा ही अपने (चिकित्वान्) स्वस्थ ज्ञान अर्थात यथार्थ भक्ति को (दूतः) संदेशवाहक रूप में (वह) लेकर आने वाला (च) तथा (प्रचेताः) बोध कराने वाला (त्वम्) आप (कविरसि) कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर हैं।

भावार्थ - जिस समय पूर्ण परमात्मा प्रकट होता है उस समय सर्व ऋषि व सन्त जन शास्त्र विधि त्याग कर मनमाना आचरण अर्थात् पूजा द्वारा सर्व भक्त समाज को मार्ग दर्शन कर रहे होते हैं। तब अपने तत्त्वज्ञान अर्थात् स्वस्थ ज्ञान का संदेशवाहक बन कर स्वयं ही कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु ही आता है।

संख्या नं. 1400 सामवेद उतार्चिक अध्याय नं. 12 खण्ड नं. 3 श्लोक नं. 5

(संत रामपाल दास द्वारा भाषा-भाष्य):-

भद्रा वस्त्रा समन्या३वसानो महान् कविर्निवचनानि शंसन्।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागविर्देववीतौ।।5।।

भद्रा—वस्त्रा—समन्या—वसानः—महान्—कविर्—निवचनानि—शंसन्— आवच्यस्व—चम्वोः— पूयमानः—विचक्षणः— जागविः—देव—वीतौ

अनुवाद :— (सम् अन्या) अपने शरीर जैसा अन्य (भद्रा वस्त्रा) सुन्दर चोला यानि शरीर (वसानः) धारण करके (महान् कविर्) समर्थ कविर्देव यानि कबीर परमेश्वर (निवचनानि शंसन्) अपने मुख कमल से वाणी बोलकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान बताता है, यथार्थ वर्णन करता है। जिस कारण से (देव) परमेश्वर की (वितौ) भक्ति के लाभ को (जागविः) जागत यानि प्रकाशित करता है। (विचक्षणः) कथित विद्वान सत्य साधना के स्थान पर (आ वच्यस्व) अपने वचनों से (पूयमानः) आन—उपासना रूपी मवाद (चम्वोः) आचमन करा रखा होता है यानि गलत ज्ञान बता रखा होता है।

भावार्थ :- जैसे यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र एक में कहा है कि 'अग्नेः तनुः असि = परमेश्वर सशरीर है। विष्णवे त्वा सोमस्य तनुः असि = उस अमर प्रभु का पालन पोषण करने के लिए अन्य शरीर है जो अतिथि रूप में कुछ दिन संसार में आता है। तत्त्व ज्ञान से अज्ञान निंद्रा में सोए प्रभु प्रेमियों को जगाता है। वही प्रमाण इस मंत्र में है कि कुछ समय के लिए पूर्ण परमात्मा कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु अपना रूप बदलकर सामान्य व्यक्ति जैसा रूप बनाकर पथ्वी मण्डल पर प्रकट होता है तथा कविर्निवचनानि शंसन् अर्थात् कविर्वाणी बोलता है। जिसके माध्यम से तत्त्वज्ञान को जगाता है तथा उस समय महर्षि कहलाने वाले चतुर प्राणी मिथ्याज्ञान के आधार पर शास्त्र विधि अनुसार सत्य साधना रूपी अमत के स्थान पर शास्त्र विधि रहित पूजा रूपी मवाद को श्रद्धा के साथ आचमन अर्थात् पूजा करा रहे होते हैं। उस समय पूर्ण परमात्मा स्वयं प्रकट होकर तत्त्वज्ञान द्वारा शास्त्र विधि अनुसार साधना का ज्ञान प्रदान करता है।

पवित्र ऋग्वेद के निम्न मंत्रों में भी पहचान बताई है कि जब वह पूर्ण परमात्मा कुछ समय संसार में लीला करने आता है तो शिशु रूप धारण करता है। उस पूर्ण परमात्मा की परवरिश (अध्न्य धेनवः) कंवारी गाय द्वारा होती है। फिर लीलावत् बड़ा होता है तो अपने पाने व सतलोक जाने अर्थात् पूर्ण मोक्ष मार्ग का तत्त्वज्ञान (कविर्गिभिः) कबीर बाणी द्वारा कविताओं

द्वारा बोलता है, जिस कारण से प्रसिद्ध कवि कहलाता है, परन्तु वह स्वयं कविर्देव पूर्ण परमात्मा ही होता है जो तीसरे मुक्ति धाम सतलोक में रहता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 तथा सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 :-

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

अनुवाद : –(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुख सुविधाओं द्वारा अर्थात् खाने–पीने द्वारा जो शरीर वंद्धि को प्राप्त होता है उसे (पातवे) वंद्धि के लिए (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हो अर्थात् कंवारी गाय द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है उस समय कंवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

देखें फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9 की जिसका अनुवाद आर्य समाजियों ने किया है :-

अभी इ॒ममध्न्यां उत श्रीणन्तिं धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ।।९।।

पदार्थः—(इमं) उस (सोमं) सौम्यस्वभाव वाले श्रद्धालु पुरुष को (शिशुं) कुमारावस्था में ही (अभि) सब प्रकार से (अघ्न्याः) अहिंसनीय (धेनवः) गौवें (श्रीणन्ति) तृप्त करती हैं (इन्द्राय) ऐश्वर्य्यं की (पातवे) वृद्धि के लिये। (उत) अथवा उक्त श्रद्धालु पुरुष को अहिंसनीय वाणियें ऐश्वर्य्य की प्राप्ति के लिये संस्कृत करती हैं ।।९।।

विवेचन :- यह फोटो कापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 की है इसमें स्पष्ट है कि (सोम) अमर परमात्मा जब शिशु रूप में प्रकट होता है तो उसकी परवरिश की लीला कुंवारी गायों (अभि अध्न्या धेनुवः) द्वारा होती है। यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' में है कि जिस परमेश्वर कबीर जी को नीरू-नीमा अपने घर ले गए। तब शिशु रूपधारी परमात्मा ने न अन्न खाया, न दूध पीया। फिर स्वामी रामानन्द जी के बताने पर एक कुंवारी गाय अर्थात् एक बछिया नीरू लाया, उसने तत्काल दूध दिया। उस कुंवारी गाय के दूध से परमेश्वर की परवरिश की लीला हुई थी। कबीर सागर लगभग 600 (छः सौ) वर्ष पहले का लिखा हुआ है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मन्त्र 9 के अनुवाद में कुछ गलती की है। जैसे (अभिअध्न्या) का अर्थ अहिंसनीय कर दिया जो गलत है। हरियाणा प्रान्त के जिला रोहतक में गाँव धनाना

में लेखक का जन्म हुआ जो वर्तमान में जिला सोनीपत में है। इस क्षेत्र में जिस गाय ने गर्भ धारण न किया हो तो कहते हैं कि यह धनाई नहीं है, यह बिना धनाई है। यह अपभ्रंस शब्द है। एक गाय के लिए ''अध्नि'' शब्द है। बहुवचन के लिए ''अध्न्या'' शब्द है। ''अध्न्या'' का अर्थ है बिना धनाई गौवें तथा अभिध्न्या का अर्थ है पूर्ण रूप से बिना धनायी अर्थात् कुंवारी गायें अर्थात् बछियाँ।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17

शिशुम् जज्ञानम् हर्य तम् मंजन्ति शुम्भन्ति वह्निमरूतः गणेन।
कविर्गीर्भि काव्येना कविर् सन्त् सोमः पवित्रम् अत्येति रेभन्।।17।।

अनुवाद – पूर्ण परमात्मा (हर्य शिशुम्) मनुष्य के बच्चे के रूप में (जज्ञानम्) जान बूझ कर प्रकट होता है तथा अपने तत्त्वज्ञान को (तम्) उस समय (मंजन्ति) निर्मलता के साथ (शुम्भन्ति) शुभ वाणी उच्चारण करता है। (वह्नि) प्रभु प्राप्ति की लगी विरह अग्नि वाले (मरुतः) वायु की तरह शीतल भक्त (गणेन) समूह के लिए (काव्येना) कविताओं द्वारा कवित्व से (पवित्रम् अत्येति) अत्यधिक निर्मलता के साथ (कविर गीर्भि) कविर वाणी अर्थात् कबीर वाणी द्वारा (रेभन्) ऊंचे स्वर से सम्बोधन करके बोलता है, (कविर् सन्त् सोमः) वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही संत अर्थात् ऋषि रूप में स्वयं कविर्देव ही होता है। परन्तु उस परमात्मा को न पहचान कर कवि कहने लग जाते हैं।

भावार्थ - वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि विलक्षण मनुष्य के बच्चे के रूप में प्रकट होकर पूर्ण परमात्मा कविर्देव अपने वास्तविक ज्ञानको अपनी कविर्गिभिः अर्थात् कबीर बाणी द्वारा निर्मल ज्ञान अपने हंसात्माओं अर्थात् पुण्यात्मा अनुयाइयों को कवि रूप में कविताओं, लोकोक्तियों के द्वारा सम्बोधन करके अर्थात् उच्चारण करके वर्णन करता है। वह स्वयं सतपुरुष कबीर ही होता है।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 18

ऋषिमना य ऋषिकंत् स्वर्षाः सहस्राणीथः पदवीः कवीनाम्।
तंतीयम् धाम महिषः सिषा सन्त् सोमः विराजमानु राजति स्टुप्।।18।।

अनुवाद – वेद बोलने वाला ब्रह्म कह रहा है कि (य) जो पूर्ण परमात्मा विलक्षण बच्चे के रूप में आकर (कवीनाम्) प्रसिद्ध कवियों की (पदवीः) उपाधी प्राप्त करके अर्थात् एक संत या ऋषि की भूमिका करता है उस (ऋषिकंत्) संत रूप में प्रकट हुए प्रभु द्वारा रची (सहस्राणीथः) हजारों वाणी (ऋषिमना) संत स्वभाव वाले व्यक्तियों अर्थात् भक्तों के लिए (स्वर्षाः) स्वर्ग तुल्य आनन्द दायक होती हैं। (सन्त् सोमः) ऋषि/संत रूप से प्रकट वह अमर पुरुष अर्थात् सतपुरुष ही होता है, वह पूर्ण प्रभु (तंतीया) तीसरे (धाम) मुक्ति लोक अर्थात् सतलोक की (महिषः) सुदंढ़ पंथ्वी को (सिषा) स्थापित करके (अनु) पश्चात् मानव सदंश संत रूप में (स्टुप्) गुबंद अर्थात् गुम्बज में ऊँचे टिले रूपी सिंहासन पर (विराजमनु राजति) उज्जवल स्थूल आकार में अर्थात् मानव सदंश शरीर में विराजमान है।

भावार्थ - मंत्र 17 में कहा है कि कविर्देव शिशु रूप धारण कर लेता है। लीला करता हुआ बड़ा होता है। कविताओं द्वारा तत्त्वज्ञान वर्णन करने के कारण कवि की पदवी प्राप्त करता

है अर्थात् उसे कवि कहने लग जाते हैं, वास्तव में वह पूर्ण परमात्मा कविर् (कबीर प्रभु) ही है। उसके द्वारा रची अमतवाणी कबीर वाणी (कविर्गीर्भिः अर्थात् कविर्वाणी) कही जाती है, जो भक्तों के लिए स्वर्ग तुल्य सुखदाई होती है। वही परमात्मा तीसरे मुक्ति धाम अर्थात् सतलोक की स्थापना करके एक गुबंद अर्थात् गुम्बज में सिंहासन पर तेजोमय मानव सदश शरीर में आकार में विराजमान है।

इस मंत्र में तीसरा धाम सतलोक को कहा है। जैसे एक ब्रह्म का लोक जो इक्कीस ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, दूसरा परब्रह्म का लोक जो सात शंख ब्रह्मण्ड का क्षेत्र है, तीसरा परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म का ऋतधाम अर्थात् सतलोक है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मन्त्र 19)

चमृषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत्। अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१९॥

पदार्थः—(**अपामूर्मिम्**) प्रकृति की सूक्ष्म मे सू म शक्तियों के साथ (**सचमानः**) जो संगत है और (**समुद्रम्**) "सम्यक् द्रवन्ति भूतानि यस्मात् स समुद्रः" जिससे सब भूतों की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय होता है। वह (**तुरीयम्**) चौथा (**धाम**) परमपद परमात्मा है। उसको (**महिषः**) मह्यते इति महिषः महिष इति महन्नामसु पठितम् नि० ३—१३। महापुरुष उक्त तुरीय परमात्मा का (**विवक्ति**) वर्णन करता है। वह परमात्मा (**चमूसत्**) जो प्रत्येक बल में स्थित है (**श्येनः**) सर्वोपरि प्रशंसनीय है और (**शकुनः**) सर्वशक्तिमान् है। (**गोविन्दुः**) यजमानों को तृप्त करके जो (**द्रप्सः**) शीघ्रगति वाला है (**आयुधानि, बिभ्रत्**) अनन्त शक्तियों को धारण करता हुआ इस सम्पूर्ण संसार का उत्पादक है ॥१९॥

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 19 का भी आर्य समाज के विद्वानों ने अनुवाद किया है। इसमें भी बहुत सारी गलतियाँ है। पुस्तक विस्तार के कारण केवल अपने मतलब की जानकारी प्राप्त करते हैं।

इस मन्त्र में चौथे धाम का वर्णन है जो आप जी संष्टि रचना में पढ़ेंगे, उससे पूर्ण जानकारी होगी पढ़ें इसी पुस्तक के पष्ठ 518 पर।

परमात्मा ने ऊपर के चार लोक अजर-अमर रचे हैं। 1. अनामी लोक जो सबसे ऊपर है। 2. अगम लोक 3. अलख लोक 4. सत्यलोक।

हम पथ्वी लोक पर हैं, यहाँ से ऊपर के लोकों की गिनती करेंगे तो 1. सत्यलोक 2. अलख लोक 3. अगम लोक तथा 4. अनामी लोक गिना जाता है। उस चौथे धाम में बैठकर परमात्मा ने सर्व ब्रह्माण्डों व लोकों की रचना की। शेष रचना सत्यलोक में बैठकर की थी। आर्य समाज के अनुवादकों ने तुरिया परमात्मा अर्थात् चौथे परमात्मा का वर्णन किया है। यह चौथा धाम है। उसमें मूल पाठ मन्त्र 19 का भावार्थ है कि तत्त्वदर्शी सन्त चौथे धाम तथा चौथे परमात्मा का (विवक्ति) भिन्न-भिन्न वर्णन करता है। पाठक जन कपया पढ़ें

सष्टि रचना इसी पुस्तक के पष्ठ 518 पर जिससे आप जी को ज्ञान होगा कि लेखक (संत रामपाल दास) ही वह तत्त्वदर्शी संत है जो तत्त्वज्ञान से परिचित है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 96 मन्त्र 20)

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश ।।२०।।

पदार्थः—वह परमात्मा (यूथा, वृषेव) जिस प्रकार एक संघ को उसका सेनापति प्राप्त होता है, इसी प्रकार (कोशम्) इस ब्रह्माण्डरूपी कोश को (अर्षन्) प्राप्त होकर (कनिक्रदत्) उच्च स्वर से गर्जता हुआ (चम्वोः) इस ब्रह्माण्ड रूपी विस्तृत प्रकृति-खण्ड में (पर्याविवेश) भली-भांति प्रविष्ट होता है और (न) जैसे कि (मर्यः) मनुष्य (शुभ्रस्तन्वं, मृजानः) शुभ्र शरीर को धारण करता हुआ (अत्योन) अत्यन्त गतिशील पदार्थों के समान (सनये) प्राप्ति के लिए (सृत्वा) गतिशील होता हुआ (धनानाम्) धनों के लिए कटिबद्ध होता है; इसी प्रकार प्रकृति-रूपी ऐश्वर्य को धारण करने के लिए परमात्मा सदैव उद्यत है ।।२०।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 का यथार्थ ज्ञान जानते हैं:-

इस मन्त्र का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा किया गया है, इनका दष्टिकोण यह रहा है कि परमात्मा निराकार है क्योंकि महर्षि दयानन्द जी ने यह बात दढ़ की है कि परमात्मा निराकार है। इसलिए अनुवादक ने सीधे मन्त्र का अनुवाद घुमा-फिराकर किया है। जैसे मूल पाठ में लिखा है :-

मर्य न शभ्रः तन्वा मजानः अत्यः न सत्वा सनये धनानाम्।
वर्षेव यूथा परि कोशम अर्षन् कनिक्रदत् चम्वोः आविवेश।।

अनुवाद :- (न) जैसे (मर्यः) मनुष्य सुन्दर वस्त्र धारण करता है, ऐसे परमात्मा (शुभ्रः तन्व) सुन्दर शरीर (मजानः) धारण करके (अत्यः) अत्यन्त गति से चलता हुआ (सनये धनानाम्) भक्ति धन के धनियों अर्थात् पुण्यात्माओं को (सनये) प्राप्ति के लिए आता है। (यूथा वषेव) जैसे एक समुदाय को उसका सेनापति प्राप्त होता है, ऐसे वह परमात्मा संत व ऋषि रूप में प्रकट होता है तो उसके बहुत सँख्या में अनुयाई बन जाते हैं और परमात्मा उनका गुरू रूप में मुखिया होता है। वह परमात्मा (कोशम्) अर्थात् (परि कोशम्) प्रथम ब्रह्माण्ड में (अर्षन्) प्राप्त होकर अर्थात् आकर (कनिक्रदत्) ऊँचे स्वर में सत्यज्ञान उच्चारण करता हुआ (चम्वोः) पथ्वी खण्ड में (अविवेश) प्रविष्ट होता है।

भावार्थ :- जैसे पूर्व में वेद मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा ऊपर के लोक में रहता है, वहाँ से गति करके पथ्वी पर आता है, अपने रूप को अर्थात् शरीर के तेज को सरल करके आता है। इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 20 में उसी की पुष्टि की है। कहा है कि परमात्मा ऐसे अन्य शरीर धारण करके पथ्वी पर आता है जैसे मनुष्य वस्त्र धारण करता है और (धनानाम्) दढ़ भक्तों (अच्छी पुण्यात्माओं) को प्राप्त होता है, उनको वाणी उच्चारण करके तत्त्वज्ञान सुनाता है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2)

असांवि सोमों अरुषो वृषा हरी राजेंव दस्मो अभि गा अंचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवंन्तमासदंम् ॥१॥

पदार्थः—(**सोमः**) जो सर्वोत्पादक प्रभु(**अरुषः**) प्रकाशस्वरूप (**वृषा**) सद्गुणों की वृष्टि करने वाला (**हरिः**) पापों के हरण करने वाला है, वह (**राजेव**) राजा के समान (**दस्मः**) दर्शनीय है। और वह (**गाः**) पृथिव्यादि लोक-लोकान्तरों के चारों ओर (**अभि अचिक्रदत्**) शब्दायमान हो रहा है। वह (**वारं**) वर्णीय पुरुष को जो (**अव्ययं**) दृढ़भक्त है उसको (**पुनानः**) पवित्र करता हुआ (**पर्य्येति**) प्राप्त होता है। (**न**) जिस प्रकार (**श्येनः**) विद्युत् (**घृतवन्तं**) स्नेहवाले (**आसदं**) स्थानों को (**योनिं**) आधार बनाकर प्राप्त होता है। इसी प्रकार उक्त गुण वाले परमात्मा ने (**असावि**) इस ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया ॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभिं वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोंम मृळय घृतं वसानः परिं यासि निर्णिजंम् ॥२॥

पदार्थः—हे परमात्मन् ! (**वेधस्या**) उपदेश करने की इच्छा से आप (**माहिनं**) महापुरुषों को (**पर्येषि**) प्राप्त होते हो। और आप (**अत्यः**) अत्यन्त गतिशील पदार्थ के (**न**) समान (**अभिवाजं**) हमारे आध्यात्मिक यज्ञ को (**अभ्यर्षसि**) प्राप्त होते हैं। आप (**कविः**) सर्वज्ञ हैं (**मृष्टः**) शुद्ध स्वरूप हैं (**दुरिता**) हमारे पापों को (**अपसेधन्**) दूर करके (**सोम**) हे सोम ! (**मृळय**) आप हमको सुख दें। और (**घृतं वसानः**) प्रेम-भाव को उत्पन्न करते हुए (**निर्निजं**) पवित्रता को (**परियासि**) उत्पन्न करें ॥२॥

विवेचन :- ऊपर ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 1-2 की फोटोकापी हैं, यह अनुवाद महर्षि दयानन्द जी के दिशा-निर्देश से उन्हीं के चेलों ने किया है और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से प्रकाशित है।

इनमें स्पष्ट है कि :- मन्त्र 1 में कहा है ''सर्व की उत्पत्ति करने वाला परमात्मा तेजोमय शरीर युक्त है, पापों को नाश करने वाला और सुखों की वर्षा करने वाला अर्थात् सुखों की झड़ी लगाने वाला है, वह ऊपर सत्यलोक में सिंहासन पर बैठा है जो देखने में राजा के समान है।

यही प्रमाण सुक्ष्मवेद में है कि :-

अर्श कुर्श पर सफेद गुमट है, जहाँ परमेश्वर का डेरा। श्वेत छत्र सिर मुकुट विराजे, देखत न उस चेहरे नूं।।

यही प्रमाण बाईबल ग्रन्थ तथा कुर्आन् शरीफ में है कि परमात्मा ने छः दिन में सष्टि रची और सातवें दिन ऊपर आकाश में तख्त अर्थात् सिंहासन पर जा विराजा। (बाईबल के उत्पत्ति ग्रन्थ 2/26-30 तथा कुर्आन् शरीफ की सुर्त ''फुर्कानि 25 आयत 52 से 59 में है।)

वह परमात्मा अपने अमर धाम से चलकर पंथ्वी पर शब्द वाणी से ज्ञान सुनाता है।

वह वर्णीय अर्थात् आदरणीय श्रेष्ठ व्यक्तियों को प्राप्त होता है, उनको मिलता है। {जैसे 1. सन्त धर्मदास जी बांधवगढ(मध्य प्रदेश वाले को मिले) 2. सन्त मलूक दास जी को मिले, 3. सन्त दादू दास जी को आमेर (राजस्थान) में मिले 4. सन्त नानक देव जी को मिले 5. सन्त गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर हरियाणा वाले को मिले 6. सन्त घीसा दास जी गाँव खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) वाले को मिले 7. सन्त जम्भेश्वर जी (बिश्नोई धर्म के प्रवर्तक) को गाँव समराथल राजस्थान वाले को मिले।}

वह परमात्मा अच्छी आत्माओं को मिलते हैं। जो परमात्मा के दढ़ भक्त होते हैं, उन पर परमात्मा का विशेष आकर्षण होता है। उदाहरण भी बताया है कि जैसे विद्युत अर्थात् आकाशीय बिजली स्नेह वाले स्थानों को आधार बनाकर गिरती है। जैसे कांशी धातु पर बिजली गिरती है, पहले कांशी धातु के कटोरे, गिलास-थाली, बेले आदि-आदि होते थे। वर्षा के समय तुरन्त उठाकर घर के अन्दर रखा करते थे। वद्ध कहते थे कि कांशी के बर्तन पर बिजली अमूमन गिरती है, इसी प्रकार परमात्मा अपने प्रिय भक्तों पर आकर्षित होकर मिलते हैं।

मन्त्र नं. 2 में तो यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा उन अच्छी आत्माओं को उपदेश करने की इच्छा से स्वयं महापुरूषों को मिलते हैं। उपदेश का भावार्थ है कि परमात्मा तत्त्वज्ञान बताकर उनको दीक्षा भी देते हैं। उनके सतगुरू भी स्वयं परमात्मा होते हैं। यह भी स्पष्ट किया है कि परमात्मा अत्यन्त गतिशील पदार्थ अर्थात् बिजली के समान तीव्रगामी होकर हमारे धार्मिक अनुष्ठानों में आप पहुँचते हैं। आप जी ने पीछे पढ़ा कि सन्त धर्मदास को परमात्मा ने यही कहा था कि मैं वहाँ पर अवश्य जाता हूँ जहाँ धार्मिक अनुष्ठान होते हैं क्योंकि मेरी अनुस्थिति में काल कुछ भी उपद्रव कर देता है। जिससे साधनों की आस्था परमात्मा से छूट जाती है। मेरे रहते वह ऐसी गड़बड़ नहीं कर सकता। इसीलिए गीता अध्याय 3 श्लोक 15 में कहा है कि वह अविनाशी परमात्मा जिसने ब्रह्म को भी उत्पन्न किया, सदा ही यज्ञों में प्रतिष्ठित है अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में उसी को ईष्ट रूप में मानकर आरती स्तुति करनी चाहिए।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 82 मन्त्र 2 में यह भी स्पष्ट किया है कि आप (कविर्वेधस्य) कविर्देव है जो सर्व को उपदेश देने की इच्छा से आते हो, आप पवित्र परमात्मा हैं। हमारे पापों को छुड़वाकर अर्थात् नाश करके हे अमर परमात्मा! आप हम को सुख दें और (द्युतम् वसानः निर्निजम् परियसि) हम आप की सन्तान हैं। हमारे प्रति वह वात्सल्य वाला प्रेम भाव उत्पन्न करते हुए उसी (निर्निजम्) सुन्दर रूप को (परियासि) उत्पन्न करें अर्थात् हमारे को अपने बच्चे जानकर जैसे पहले और जब चाहें तब आप अपनी प्यारी आत्माओं को प्रकट होकर मिलते हैं, उसी तरह हमें भी दर्शन दें।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27)

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।
गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

पदार्थः—(यज्यवे) यज्ञ करने वाले यजमानों के लिये परमात्मा (विश्वानि सुपथानि) सब रास्तों को (कृण्वन्) सुगम करता हुआ (मृधः) उनके विघ्नों को (अतिगाहते) मर्द्दन करता है। और (पुनानः) उनको पवित्र करता हुआ और (निर्निजं) अपने रूप को (गाः कृण्वानः) सरल करता हुआ (हर्य्यतः) वह कान्तिमय परमात्मा (कविः) सर्वज्ञ (अत्यो न) विद्युत् के समान (क्रीळन्) क्रीड़ा करता हुआ (वारं)वरणीय पुरुष को (पर्य्यर्षति) प्राप्त होता है ॥२६॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 की है जो आर्यसमाज के आचार्यों व महर्षि दयानन्द के चेलों द्वारा अनुवादित है जिसमें स्पष्ट है कि यज्ञ करने वाले अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करने वाले यजमानों अर्थात् भक्तों के लिए परमात्मा, सब रास्तों को सुगम करता हुआ अर्थात् जीवन रूपी सफर के मार्ग को दुःखों रहित करके सुगम बनाता हुआ। उनके विघ्नों अर्थात् संकटों का मर्दन करता है अर्थात् संकटों को समाप्त करता है। भक्तों को पवित्र अर्थात् पाप रहित, विकार रहित करता है। जैसा की अगले मन्त्र 27 में कहा है कि ''जो परमात्मा द्यूलोक अर्थात् सत्यलोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है, वहाँ पर परमात्मा के शरीर का प्रकाश बहुत अधिक है।'' उदाहरण के लिए परमात्मा के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्य तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिले-जुले प्रकाश से भी अधिक है। यदि वह परमात्मा उसी प्रकाश युक्त शरीर से पृथ्वी पर प्रकट हो जाए तो हमारी चर्म दृष्टि उन्हें देख नहीं सकती। जैसे उल्लु पक्षी दिन में सूर्य के प्रकाश के कारण कुछ भी नहीं देख पाता है। यही दशा मनुष्यों की हो जाए। इसलिए वह परमात्मा अपने रूप अर्थात् शरीर के प्रकाश को सरल करता हुआ उस स्थान से जहाँ परमात्मा ऊपर रहता है, वहाँ से गति करके बिजली के समान क्रीड़ा अर्थात् लीला करता हुआ चलकर आता है, श्रेष्ठ पुरूषों को मिलता है। यह भी स्पष्ट है कि आप कविः अर्थात् कविर्देव हैं। हम उन्हें कबीर साहेब कहते हैं।

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

पदार्थः—(उदन्युवः) प्रेम की (ताः) वे (शतधाराः) सैंकड़ों धाराए (असश्चतः) जो नानारूपों में (अभिश्रियः) स्थिति को लाभ कर रही हैं। वे (हरिं) परमात्मा को (अवनवन्ते) प्राप्त होती हैं। (गोभिरावृतं) प्रकाशपुञ्ज परमात्मा को (क्षिपः) बुद्धिवृत्तियां (मृजन्ति) विषय करती हैं। जो परमात्मा (दिवस्तृतीये पृष्ठे) द्यु लोक के तीसरे पृष्ठ पर विराजमान है और (रोचने) प्रकाशस्वरूप है उसको बुद्धिवृत्तियाँ प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

विवेचन :- यह फोटोकापी ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 के मन्त्र 27 की है। इसमें

स्पष्ट है कि ''परमात्मा द्यूलोक अर्थात् अमर लोक के तीसरे पृष्ठ अर्थात् भाग पर विराजमान है। सत्यलोक अर्थात् शाश्वत् स्थान (गीता अध्याय 18 श्लोक 62) में तीन भाग है। एक भाग में वन-पहाड़-झरने, बाग-बगीचे आदि हैं। यह बाह्य भाग है अर्थात् बाहरी भाग है। (जैसे भारत की राजधानी दिल्ली भी तीन भागों में बँटी है। बाहरी दिल्ली जिसमें गाँव खेत-खलिहान और नहरें हैं, दूसरा बाजार बना है। तीसरा संसद भवन तथा कार्यालय हैं।)

इसके पश्चात् द्यूलोक में बस्तियाँ हैं। सपरिवार मोक्ष प्राप्त हंसात्माऐं रहती हैं। (पृथ्वी पर जैसे भक्त को भक्तात्मा कहते हैं, इसी प्रकार सत्यलोक में हंसात्मा कहलाते हैं।) (3) तीसरे भाग में सर्वोपरि परमात्मा का सिंहासन है। उसके आस-पास केवल नर आत्माऐं रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरूष का जोड़ा नहीं है। वे यदि अपना परिवार चाहते हैं तो शब्द (वचन) से केवल पुत्र उत्पन्न कर लेते हैं। इस प्रकार शाश्वत् स्थान अर्थात् सत्यलोक तीन भागों में परमात्मा ने बाँट रखा है। वहाँ यानि सत्यलोक में प्रत्येक स्थान पर रहने वालों में वृद्धावस्था नहीं है, वहाँ मृत्यु नहीं है। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 29 में कहा है कि जो जरा अर्थात् वृद्ध अवस्था तथा मरण अर्थात् मृत्यु से छूटने का प्रयत्न करते हैं, वे तत् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को जानते हैं। सत्यलोक में सत्यपुरूष रहता है, वहाँ पर जरा-मरण नहीं है, बच्चे युवा होकर सदा युवा रहते हैं।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 54 मन्त्र 3)

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पदार्थः—(सूर्यः, न) सूर्य के समान जगत्प्रेरक (अयम्) यह परमात्मा (सोमः, देवः) सौम्य स्वभाव वाला और जगत्प्रकाशक है और (विश्वानि, पुनानः) सब लोकों को पवित्र करता हुआ (भुवनोपरि, तिष्ठति) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्वं भाग में भी वर्तमान है ॥३॥

विवेचनः- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 की फोटोकापी में आप देखें, इसका अनुवाद आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। उनके अनुवाद में भी स्पष्ट है कि वह परमात्मा (भूवनोपरि) सम्पूर्ण ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) विराजमान है, ऊपर बैठा हैः-

इसका यथार्थ अनुवाद इस प्रकार है :-

(अयं) यह (सोमः देव) अमर परमेश्वर (सूर्यः) सूर्य के (न) समान (विश्वानि) सर्व को (पुनानः) पवित्र करता हुआ (भूवनोपरि) सर्व ब्रह्माण्डों के ऊर्ध्व अर्थात् ऊपर (तिष्ठति) बैठा है।

भावार्थ :- जैसे सूर्य ऊपर है और अपना प्रकाश तथा उष्णता से सर्व को लाभ दे रहा है। इसी प्रकार यह अमर परमेश्वर जिसका ऊपर के मन्त्रों में वर्णन किया है। सर्व ब्रह्माण्डों के ऊपर बैठकर अपनी निराकार शक्ति से सर्व प्राणियों को लाभ दे रहा है तथा सर्व ब्रह्माण्डों का संचालन कर रहा है।

(फोटोकॉपी ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 20 मन्त्र 1)

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ।।१।।

पदार्थः—वह परमात्मा (**कविः**) मेधावी है और (**अव्यः**) सबका रक्षक है (**देववीतये**) विद्वानों की तृप्ति के लिये (**अर्षति**) ज्ञान देता है (**साह्वान्**) सहनशील है (**विश्वाः, स्पृधः**) सम्पूर्ण दुष्टों को संग्रामों में (**अभि**) तिरस्कृत करता है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों ने किया है। इसका अनुवाद ठीक कम गलत अधिक है। इसमें मूल पाठ में लिखा हैः-

'प्र कविर्देव वीतये अव्यः वारेभिः अर्षति साह्वान् बिश्वाः अभि स्पंधः

सरलार्थ :- (प्र) वेद ज्ञान दाता से जो दूसरा (कविर्देव) कविर्देव कबीर परमेश्वर है, वह विद्वानों अर्थात् जिज्ञासुओं को, (वीतये) ज्ञान धन की तप्ति के लिए (वारेभिः) श्रेष्ठ आत्माओं को (अर्षति) ज्ञान देता है। वह (अव्यः) अविनाशी है, रक्षक है, (साह्वान्) सहनशील (विश्वाः) तत्त्वज्ञान हीन सर्व दुष्टों को (स्पधः) अध्यात्म ज्ञान की कपा स्पर्धा अर्थात् ज्ञान गोष्टी रूपी वाक् युद्ध में (अभि) पूर्ण रूप से तिरस्कत करता है, उनको फिट्टे मुँह कर देता है।

विशेष :- (क) इस मन्त्र के अनुवाद में आप फोटोकॉपी में देखेंगे तो पता चलेगा कि कई शब्दों के अर्थ आर्य विद्वानों ने छोड़ रखे हैं जैसे = ''प्र'' ''वारेभिः'' जिस कारण से वेदों का यथार्थ भाव सामने नहीं आ सका।

(ख) मेरे अनुवाद से स्पष्ट है कि वह परमात्मा अच्छी आत्माओं (दढ़ भक्तों) को ज्ञान देता है, उसका नाम भी लिखा है :- ''कविर्देव''। हम कबीर परमेश्वर कहते हैं।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 95 मन्त्र 2)

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ।।२।।

पदार्थः—(**हरिः**) वह पूर्वोक्त परमात्मा (**सृजानः**) साक्षात्कार को प्राप्त हुआ (**ऋतस्य पथ्यां**) वाक् द्वारा मुक्ति मार्ग की (**इर्यति**) प्रेरणा करता है। (**अरितेव नावम्**) जैसा कि नौका के पार लगाने के समय में नाविक प्रेरणा करता है और (**देवानां देवः**) सब देवों का देव (**गुह्यानि**) गुप्त (**नामाविष्कृणोति**) संज्ञाओं को प्रकट करता है (**बर्हिषि प्रवाचे**) वाणीरूप यज्ञ के लिए ।।२।।

ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 95 मन्त्र 2 का अनुवाद महर्षि दयानन्द के चेलों ने किया है जो बहुत ठीक किया है।

इसका भावार्थ है कि पूर्वोक्त परमात्मा अर्थात् जिस परमात्मा के विषय में पहले वाले मन्त्रों में ऊपर कहा गया है, वह (संजानः) अपना शरीर धारण करके (ऋतस्य पथ्यां)

सत्यभक्ति का मार्ग अर्थात् यथार्थ आध्यात्मिक ज्ञान अपनी अमतमयी वाक् अर्थात् वाणी द्वारा मुक्ति मार्ग की प्रेरणा करता है।

वह मन्त्र ऐसा है जैसे (अरितेव नावम्) नाविक नौका में बैठाकर पार कर देता है, ऐसे ही परमात्मा सत्यभक्ति मार्ग रूपी नौका के द्वारा साधक को संसार रूपी दरिया के पार करता है। वह (देवानाम् देवः) सब देवों का देव अर्थात् सब प्रभुओं का प्रभु परमेश्वर (बर्हिषि प्रवाचे) वाणी रूपी ज्ञान यज्ञ के लिए (गुह्यानि) गुप्त (नामा आविष्कणोति) नामों का आविष्कार करता है अर्थात् जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ऊँ तत् सत्'' में तत् तथा सत् ये गुप्त मन्त्र हैं जो उसी परमेश्वर ने मुझे (संत रामपाल दास को) बताऐ हैं। उनसे ही पूर्ण मोक्ष सम्भव है।

सुक्ष्म वेद में परमेश्वर ने कहा है कि :-

''सोहं'' शब्द हम जग में लाए, सारशब्द हम गुप्त छिपाए।

भावार्थ :- परमेश्वर ने स्वयं ''सोहं'' शब्द भक्ति के लिए बताया है। यह सोहं मन्त्र किसी भी प्राचीन ग्रन्थ (वेद, गीता, कुर्आन, पुराण तथा बाईबल) में नहीं है। फिर सुक्ष्म वेद में कहा है किः-

सोहं ऊपर और है, सत्य सुकत एक नाम। सब हंसो का जहाँ बास है, बस्ती है बिन ठाम।।

भावार्थ :- ''सोहं'' नाम तो परमात्मा ने प्रकट कर दिया, आविष्कार कर दिया परन्तु सार शब्द को गुप्त रखा था। अब मुझे (लेखक संत रामपाल को) बताया है जो साधकों को दीक्षा के समय बताया जाता है। इसका गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहे ''ऊँ तत् सत्'' से सम्बन्ध है।

(प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 94 मन्त्र 1)

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ।।१।।

पदार्थः—(सूर्य्ये) सूर्य के विषय में (न) जैसे (विशः) रश्मियां प्रकाशित करती हैं। उसी प्रकार (धियः) मनुष्यों की बुद्धियां (स्पर्धन्ते) अपनी-अपनी उत्कट शक्ति से विषय करती हैं। (अस्मिन् अधि) जिस परमात्मा में (वाजिनीव) सर्वोपरि बलों के समान (शुभः) शुभ बल है वह परमात्मा (अपोवृणानः) कर्मों का अध्यक्ष होता हुआ (पवते) सबको पवित्र करता हैं। (कवीयन्) कवियों की तरह आचरण करता हुआ (पशुवर्धनाय) सर्वद्रष्टृत्व पद के लिए (व्रजं, न) इन्द्रियों के अधिकरण मन के समान 'व्रजन्ति इन्द्रियाणि यस्मिन् तद्व्रजम्' (मन्म) जो अधिकरणरूप है वही श्रेय का धाम है ।।१।।

विवेचन :- ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 का अनुवाद भी आर्यसमाज के विद्वानों द्वारा किया गया है।

विवेचन :- पुस्तक विस्तार को ध्यान में रखते हुए उन्हीं के अनुवाद से अपना मत सिद्ध करते हैं। जैसे पूर्व में लिखे वेदमन्त्रों में बताया गया है कि परमात्मा अपने मुख कमल से वाणी उच्चारण करके तत्त्वज्ञान बोलता है, लोकोक्तियों के माध्यम से, कवित्व से दोहों,

शब्दों, साखियों, चौपाईयों के द्वारा वाणी बोलने से प्रसिद्ध कवियों में से भी एक कवि की उपाधि प्राप्त करता है। उसका नाम कविर्देव अर्थात् कबीर साहेब है।

इस ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 में भी यही कहा है कि जो सर्वशक्तिमान परमेश्वर है, वह (कवियन् व्रजम् न) कवियों की तरह आचरण करता हुआ पृथ्वी पर विचरण करता है।

पारख के अंग की वाणी नं. 380 में कहा है कि :-

गरीब, सेवक होय करि ऊतरे, इस पृथ्वी के मांहि। जीव उधारन जगतगुरू, बार बार बलि जांहि।।380।।

परमात्मा कबीर से (सेबक) दास बनकर (ऊतरे) ऊपर आकाश में अपने निवास स्थान सतलोक से गति करके उतरकर नीचे पृथ्वी के ऊपर आए। उद्देश्य बताया है कि जीवों का काल जाल से उद्धार करने के लिए जगत गुरू बनकर आए। मैं (संत गरीबदास जी) अपने सतगुरू कबीर जी पर बार-बार बलिहारी जाऊँ।

''परमेश्वर कबीर जी का लहरतारा तालाब काशी नगर के जंगल में कमल के फूल पर प्रकट होने का वर्णन''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 381-384 :-**

गरीब, काशीपुरी कस्त किया, उतरे अधर उधार। मोमन कूं मुजरा हुवा, जंगल में दीदार।।381।।
गरीब, कोटि किरण शशि भान सुधि, आसन अधर बिमान। परसत पूरणब्रह्म कूं, शीतल पिंडरू प्राण।।382।।
गरीब, गोद लिया मुख चूंबि करि, हेम रूप झलकंत। जगर मगर काया करै, दमकैं पदम अनंत।।383।।
गरीब, काशी उमटी गुल भया, मोमन का घर घेर। कोई कहै ब्रह्मा बिष्णु हैं, कोई कहै इन्द्र कुबेर।।384।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 381-384 का सरलार्थ :-**

''कबीर परमेश्वर जी का कलयुग में अवतरण''

लेखक के शब्दों में :- बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी ने द्वापर युग में अपने प्रिय शिष्य सुदर्शन वाल्मीकि जी को शरण में लिया था। भक्त सुदर्शन जी के माता-पिता ने परमेश्वर कबीर जी के ज्ञान को स्वीकार नहीं किया था जिनके नाम थे पिता जी का नाम ''भीखू राम'' तथा माता जी का नाम ''सुखवन्ती''। जिस समय दोनों (माता तथा पिता) शरीर त्याग गए तो भक्त सुदर्शन जी अत्यन्त व्याकुल रहने लगे। भक्ति भी कम करते थे। अन्तर्यामी करूणामय जी (द्वापर युग में कबीर परमेश्वर करूणामय नाम से लीला कर रहे थे) ने अपने भक्त के मन की बात जान कर पूछा हे भक्त सुदर्शन! आप को कौन सी चिन्ता सता रही है। क्या माता-पिता का वियोग सता रहा है? या कोई अन्य पारिवारिक परेशानी है? मुझे बताईए।

भक्त सुदर्शन जी ने कहा हे बन्दी छोड़! हे अन्तर्यामी! आप सर्वज्ञ हैं आप बाहर-भीतर की सर्व स्थिति से परिचित है। हे प्रभु! मुझे मेरे माता-पिता के निधन का दुःख नहीं है क्योंकि वे बहुत वृद्ध हो चुके थे। आप ने बताया है कि यह पाँच तत्त्व का पुतला एक दिन नष्ट होना है। मुझे चिन्ता सता रही है कि मेरे माता-पिता अत्यन्त पुण्यात्मा, दयालु तथा धर्मात्मा थे। उन्होंने अपनी भक्ति लोकवेद अनुसार की थी। जो शास्त्रविधि के विरूद्ध थी। जिस कारण से उनका मानव

जीवन व्यर्थ गया। अब पता नहीं किस प्राणी की योनी में कष्ट उठा रहे होंगे? आप से नम्र निवेदन आप का दास करता है कि कभी मेरे माता-पिता मानव शरीर प्राप्त करें तो उन्हें अपनी शरण में लेना परमेश्वर तथा उन्हें भी भवसागर से (काल ब्रह्म के लोक से) पार करना मेरे दाता! मुझे यही चिन्ता सता रही है। परमेश्वर कबीर जी ने सोचा कि यह भोला भक्त सुदर्शन माता-पिता के मोह में फंस कर काल जाल में ही रहेगा। काल ब्रह्म ने मोह रूपी पाश बहुत दृढ़ बना रखा है। यह विचार कर परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे भक्त सुदर्शन ! आप चिन्ता मत करो मैं आप के माता-पिता को अवश्य शरण में लूंगा तथा पार करके ही दम लूंगा। आप सत्य लोक जाओ। यह चिन्ता छोड़ो। परमेश्वर कबीर जी के आश्वासन के पश्चात् भक्त सुदर्शन जी सत्य साधना करके सत्यलोक को गया। पूर्ण मोक्ष प्राप्त किया।

"भक्त सुदर्शन के माता-पिता वाले जीवों के कलयुग के अन्य मानव जन्मों की जानकारी"

प्रथम बार कुलपति ब्राह्मण (पिता) तथा महेश्वरी (माता) रूप में जन्में। दोनों का विवाह हुआ। संतान नहीं हुई। एक दिन महेश्वरी जी सूर्य की उपासना करते हुए हाथ फैलाकर पुत्र माँग रही थी। उसी समय कबीर परमेश्वर जी उसके हाथों में बालक रूप बनाकर प्रकट हो गए। सूर्य का पारितोष (तोहफा) जानकर बालक को घर ले गई। वे बहुत निर्धन थे। उनको प्रतिदिन एक तोला सोना परमात्मा के बिछौने के नीचे मिलने लगा। यह भी उन्होंने सूर्यदेव की कृपा माना। पाँच वर्ष की आयु का होने पर उनको भक्ति बताई, परंतु बालक जानकर उनको परमात्मा की एक बात पर भी विश्वास नहीं हुआ। उस जन्म में उन्होंने परमात्मा को नहीं पहचाना। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी बालक रूप अंतर्ध्यान हो गए। दोनों पति-पत्नी पुत्र मोह में व्याकुल हुए। परमात्मा की सेवा के फलस्वरूप उनको अगला जन्म भी मानव का मिला। चन्दवारा शहर में पुरूष का नाम चंदन तथा स्त्री का नाम उद्धा था। ब्राह्मण कुल में जन्म हुआ। दोनों निःसंतान थे। एक दिन उद्धा सरोवर पर स्नान करने गई। वहाँ कबीर परमेश्वर जी कमल के फूल पर शिशु रूप धारण करके विराजमान हुए। उद्धा बालक कबीर जी को उठाकर घर ले गई। लोकलाज के कारण चन्दन ने पत्नी से कहा कि इस बालक को जहाँ से लाई थी, वहीं छोड़कर आ। कुल के लोग मजाक करेंगे। दोनों पति-पत्नी परमात्मा को लेकर जल में डालने चले तो परमात्मा उनके हाथों से गायब हो गए। दोनों बहुत व्याकुल हुए। परमात्मा का पारितोष न लेने के भय से सारी आयु रोते रहे। अगला जन्म भी मानव का हुआ। कथा इस प्रकार है :-

भक्त सुदर्शन वाल्मीकि के माता-पिता वाले जीवों को कलयुग में तीसरा भी मानव शरीर प्राप्त हुआ। भारत वर्ष के काशी शहर में सुदर्शन के पिता वाले जीव ने एक ब्राह्मण के घर जन्म लिया तथा गौरीशंकर नाम रखा गया तथा सुदर्शन जी की माता वाले जीव ने भी एक ब्राह्मण के घर कन्या रूप में जन्म लिया तथा सरस्वती नाम रखा। युवा होने पर दोनों का विवाह हुआ। गौरी शंकर ब्राह्मण भगवान शिव का उपासक था तथा शिव पुराण की कथा करके भगवान शिव की महिमा का गुणगान किया करता। गौरीशंकर निर्लोभी था। कथा करने से जो धन प्राप्त होता था उसे धर्म में ही लगाया करता था। जो व्यक्ति कथा कराते थे तथा सुनते थे सर्व गौरी शंकर

ब्राह्मण के त्याग की प्रशंसा करते थे।

जिस कारण से पूरी काशी में गौरी शंकर की प्रसिद्धि हो रही थी। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों का कथा करके धन इकत्रित करने का धंधा बन्द हो गया। इस कारण से वे ब्राह्मण उस गौरीशंकर ब्राह्मण से ईर्ष्या रखते थे। इस बात का पता मुसलमानों को लगा कि एक गौरीशंकर ब्राह्मण काशी में हिन्दु धर्म के प्रचार को जोर-शोर से कर रहा है। इसको किस तरह बन्द करें। मुसलमानों को पता चला कि काशी के सर्व ब्राह्मण गौरीशंकर से ईर्ष्या रखते हैं। इस बात का लाभ मुसलमानों ने उठाया। गौरीशंकर व सरस्वती के घर के अन्दर अपना पानी छिड़क दिया। अपना झूठा पानी उनके मुख पर लगा दिया। कपड़ों पर भी छिड़क दिया तथा आवाज लगा दी कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं। पुरूष का नाम नूरअली उर्फ नीरू तथा स्त्री का नाम नियामत उर्फ नीमा रखा। अन्य स्वार्थी ब्राह्मणों को पता चला तो उनका दाव लग गया। उन्होंने तुरन्त ही ब्राह्मणों की पंचायत बुलाई तथा फैसला कर दिया कि गौरीशंकर तथा सरस्वती मुसलमान बन गए हैं अब इनका ब्राह्मण समाज से कोई नाता नहीं रहा है। इनका गंगा में स्नान करने, मन्दिर में जाने तथा हिन्दु ग्रन्थों को पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया है।

गौरीशंकर (नीरू) जी कुछ दिन तो बहुत परेशान रहे। जो कथा करके धन आता था उसी से घर का निर्वाह चलता था। उसके बन्द होने से रोटी के भी लाले पड़ गए। नीरू ने विचार करके अपने निर्वाह के लिए कपड़ा बुनने का कार्य प्रारम्भ किया। जिस कारण से जुलाहा कहलाया। कपड़ा बुनने से जो मजदूरी मिलती थी उसे अपना तथा अपनी पत्नी का पेट पालता था। जिस समय धन अधिक आ जाता तो उसको धर्म में लगा देता था। विवाह को कई वर्ष बीत गए थे। उनको कोई सन्तान नहीं हुई। दोनों पति-पत्नी ने बच्चे होने के लिए बहुत अनुष्ठान किए। साधु सन्तों का आशीर्वाद भी लिया परन्तु कोई सन्तान नहीं हुई। हिन्दुओं द्वारा उन दोनों का गंगा नदी में स्नान करना बन्द कर दिया गया था। उनके निवास स्थान से लगभग चार कि. मी. दूर एक लहर तारा नामक सरोवर था जिस में गंगा नदी का ही जल लहरों के द्वारा नीची पटरी के ऊपर से उछल कर आता था। इसलिए उस सरोवर का नाम लहरतारा पड़ा। उस तालाब में बड़े-2 कमल के फूल उगे हुए थे। मुसलमानों ने गौरीशंकर का नाम नूर अल्ली रखा जो उर्फ नाम से नीरू कहलाया तथा पत्नी का नाम नियामत रखा जो उर्फ नाम से नीमा कहलाई। नीरू-नीमा भले ही मुसलमान बन गए थे परन्तु अपने हृदय से साधना भगवान शंकर जी की ही करते थे तथा प्रतिदिन सवेरे सूर्योदय से पूर्व लहरतारा तालाब में स्नान करने जाते थे।

ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) सोमवार को भी ब्रह्म मुहूर्त (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पहले होता है) में स्नान करने के लिए जा रहे थे। नीमा रास्ते में भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही थी कि हे दीनानाथ! आप अपने दासों को भी एक बच्चा-बालक दे दो आप के घर में क्या कमी है प्रभु ! हमारा भी जीवन सफल हो जाएगा। दुनिया के व्यंग्य सुन-2 कर आत्मा दुःखी हो जाती है। मुझ पापिन से ऐसी कौन सी गलती किस जन्म में हुई है जिस कारण मुझे बच्चे का मुख देखने को तरसना पड़ रहा है। हमारे पापों को क्षमा करो प्रभु! हमें भी एक बालक दे दो।

यह कह कर नीमा फूट-2 कर रोने लगी तब नीरू ने धैर्य दिलाते हुए कहा हे नीमा! हमारे

भाग्य में सन्तान नहीं है यदि भाग्य में सन्तान होती तो प्रभु शिव अवश्य प्रदान कर देते। आप रो-2 कर आँखे खराब कर लोगी। बालक भाग्य में है नहीं जो वृद्ध अवस्था में ऊंगली पकड़ लेता। आप मत रोओ आप का बार-2 रोना मेरे से देखा नहीं जाता। यह कह कर नीरू की आँखे भी भर आई। इसी तरह प्रभु की चर्चा व बालक प्राप्ति की याचना करते हुए उसी लहरतारा तालाब पर पहुँच गए। प्रथम नीमा ने प्रवेश किया, पश्चात् नीरू ने स्नान करने को तालाब में प्रवेश किया। सुबह का अंधेरा शीघ्र ही उजाले में बदल जाता है। जिस समय नीमा ने स्नान किया था उस समय तक तो अंधेरा था। जब कपड़े बदल कर पुनः तालाब पर उस कपड़े को धोने के लिए गई, जिसे पहन कर स्नान किया था, उस समय नीरू तालाब में प्रवेश करके गोते लगा-2 कर मल मल कर स्नान कर रहा था।

नीमा की दृष्टि एक कमल के फूल पर पड़ी जिस पर कोई वस्तु हिल रही थी। प्रथम नीमा ने जाना कोई सर्प है जो कमल के फूल पर बैठा अपने फन को उठा कर हिला रहा है। उसने सोचा कहीं यह सर्प मेरे पति को न डस ले नीमा ने उसको ध्यानपूर्वक देखा वह सर्प नहीं है कोई बालक था। जिसने एक पैर अपने मुख में ले रखा था तथा दूसरे को हिला रहा था। नीमा ने अपने पति से ऊँची आवाज में कहा देखियो जी! एक छोटा बच्चा कमल के फूल पर लेटा है। वह जल में डूब न जाए। नीरू स्नान करते-2 उस की ओर न देख कर बोला नीमा! बच्चों की चाह ने तुझे पागल बना दिया है। अब तुझे जल में भी बच्चे दिखाई देने लगे हैं। नीमा ने अधिक तेज आवाज में कहा मैं सच कह रही हूँ, देखो सचमुच एक बच्चा कमल के फूल पर, वह रहा, देखो! देखो--- नीमा की आवाज में परिवर्तन व अधिक कसक देखकर नीरू ने उस ओर देखा जिस ओर नीमा हाथ से संकेत कर रही थी। कमल के फूल पर नवजात शिशु को देखकर नीरू ने आव देखा न ताव झपट कर कमल के फूल सहित बच्चा उठाकर अपनी पत्नी को दे दिया।

नीमा ने परमेश्वर कबीर जी को सीने से लगाया, मुख चूमा, पुत्रवत् प्यार किया जिस परमेश्वर की खोज में ऋषि-मुनियों ने जीवन भर शास्त्रविधि विरूद्ध साधना की उन्हें नहीं मिला। वही परमेश्वर भक्तमति नीमा की गोद में खेल रहा था। जिस शान्तिदायक परमेश्वर को आन्नद की प्राप्ति के लिए प्राप्त करने की इच्छा से साधना की जाती है वही परमेश्वर नीमा के हाथों में सीने से लगा हुआ था। उस समय जो शीतलता व आनन्द का अनुभव भक्तमति नीमा को हो रहा होगा उस की कल्पना ही की जा सकती है। नीरू स्नान करके जल से बाहर आया। नीरू ने सोचा यदि हम इस बच्चे को नगर में ले जाऐंगे तो शहर वासी हम पर शक करेंगे सोचेंगे कि ये किसी के बच्चे को चुरा कर लाए हैं। कहीं हमें नगर से निकाल दें। इस डर से नीरू ने अपनी पत्नी से कहा नीमा! इस बच्चे को यहीं छोड़ दे इसी में अपना हित है। नीमा बोली हे पति देव ! यह भगवान शंकर का दिया खिलौना है। इस बच्चे ने पता नहीं मुझ पर क्या जादू कर दिया है कि मेरा मन इस बच्चे के वश हो गया है। मैं इस बच्चे को नहीं त्याग सकती। नीरू ने नीमा को अपने मन की बात से अवगत करवाया। बताया कि यह बच्चा नगर वासी हम से छीन लेगें, पूछेंगे कहाँ से लाए हो? हम कहेंगे लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर मिला है। हमारी बात पर कोई भी विश्वास नहीं करेगा। हो सकता है वे हमें नगर से भी निकाल दें। तब नीमा ने कहा मैं इस बालक के साथ देश निकाला भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे को नहीं त्याग

सकती। मैं अपनी मत्यु को भी स्वीकार कर लूँगी। परन्तु इस बच्चे से भिन्न नहीं रह सकूँगी।

नीमा का हठ देख कर नीरू को क्रोध आ गया तथा अपने हाथ को थप्पड़ मारने की स्थिति में उठा कर आँखों में आँसू भरकर करूणाभरी आवाज में बोला नीमा मैंने आज तक तेरी किसी भी बात को नहीं ठुकरवाया। यह जान कर कि हमारे कोई बच्चा नहीं है मैंने तुझे पति तथा पिता दोनों का प्यार दिया है। तू मेरे नम्र स्वभाव का अनुचित लाभ उठा रही है। आज मेरी स्थिति को न समझ कर अपने हठी स्वभाव से मुझे कष्ट दे रही है। विवाहित जीवन में नीरू ने प्रथम बार अपनी पत्नी की ओर थप्पड़ मारने के लिए हाथ उठाया था तथा कहा कि या तो इस बच्चे को यहीं रख दे वरना आज मैं तेरी बहुत पिटाई करूँगा।

उसी समय नीमा के सीने से चिपके बालक रूपधारी परमेश्वर बोले हे नीरू! आप मुझे अपने घर ले चलो आप पर कोई आपत्ति नहीं आएगी। मैं सतलोक से चलकर तुम्हारे हित के लिए यहाँ आया हूँ। नवजात शिशु के मुख से उपरोक्त वचन सुनकर नीरू (नूर अल्ली) डर गया कहीं यह कोई देव या पितर या कोई सिद्ध पुरूष न हो और मुझे शाप न दे दे। इस डर से नीरू कुछ नहीं बोला घर की ओर चल पड़ा। पीछे-2 उसकी पत्नी परमेश्वर को प्यार करती हुई चल पड़ी।

प्रतिदिन की तरह ज्येष्ठ मास की पूर्णमासी विक्रमी संवत् 1455 (1398 ई.) सोमवार को भी एक अष्टानन्द नामक ऋषि, जो स्वामी रामानन्द ऋषि जी के शिष्य थे काशी शहर से बाहर बने लहरतारा तालाब के स्वच्छ जल में स्नान करने के लिए प्रतिदिन की तरह गए। ब्रह्म मुहूर्त का समय था (ब्रह्म मुहूर्त का समय सूर्योदय से लगभग डेढ़ घण्टा पूर्व का होता है) ऋषि अष्टानन्द जी ने लहरतारा तालाब में स्नान किया। वे प्रतिदिन वहीं बैठ कर कुछ समय अपनी पाठ पूजा किया करते थे। ऋषि अष्टानन्द जी ध्यान मग्न होने की चेष्टा कर ही रहे थे उसी समय उन्होंने देखा कि आकाश से एक प्रकाश पुंज नीचे की ओर आता दिखाई दिया। वह इतना तेज प्रकाश था उसे ऋषि जी की चर्म दष्टि सहन नहीं कर सकी। जिस प्रकार आँखे सूर्य की रोशनी को सहन नहीं कर पाती। सूर्य के प्रकाश को देखने के पश्चात् आँखे बन्द करने पर सूर्य का आकार दिखाई देता है उसमें प्रकाश अधिक नहीं होता।

इसी प्रकार प्रथम बार परमेश्वर के प्रकाश को देखने से ऋषि जी की आँखे बन्द हो गई बन्द आँखों में शिशु को देख कर फिर से आँखे खोली। ऋषि अष्टानन्द जी ने देखा कि वह प्रकाश लहरतारा तालाब पर उतर गया। जिससे पूरा सरोवर प्रकाश मान हो गया तथा देखते ही देखते वह प्रकाश जलाशय के एक कोने में सिमट गया। ऋषि अष्टानन्द जी ने सोचा यह कैसा दश्य मैंने देखा? यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरा दष्टिदोष है? इस के विषय में गुरूदेव, स्वामी रामानन्द जी से पूछूँगा। यह विचार करके ऋषि अष्टानन्द जी अपनी शेष साधना को छोड़ कर अपने पूज्य गुरूदेव के पास गए। स्वामी रामानन्द जी को सर्व घटनाक्रम बताकर पूछा हे गुरूदेव! यह मेरी भक्ति की उपलब्धि है या मेरी भ्रमणा है? मैंने प्रकाश आकाश से नीचे की ओर आते देखा जिसे मेरी आँखे सहन नहीं कर सकी। आँखे बन्द हुई तो नवजात शिशु दिखाई दिया। पुनः आँखें खोली तो उस प्रकाश से पूरा जलाशय ही जगमगा गया, पश्चात् वह प्रकाश उस तालाब के एक कोने में सिमट गया। मैं आप से कारण जानने की इच्छा से अपनी साधना बीच में ही छोड़ कर आया हूँ। कप्या मेरी शंका का समाधान कीजिए।

ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द से कहा हे ब्राह्मण! यह न तो तेरी भक्ति की उपलब्धि है न आप का दष्टिदोष ही है। इस प्रकार की घटनाऐं उस समय होती हैं। जिस समय ऊपर के लोकों से कोई देव पथ्वी पर अवतार धारण करने के लिए आते हैं। वह किसी स्त्री के गर्भ में निवास करता है। फिर बालक रूप धारण करके नर लीला करके अपना अपेक्षित कार्य पूर्ण करता है। कोई देव ऊपर के लोकों से आया है। वह काशी नगर में किसी के घर जन्म लेकर अपना प्रारब्ध पूरा करेगा। उपरोक्त वचनों द्वारा ऋषि रामानन्द स्वामी जी ने अपने शिष्य अष्टानन्द की शंका का समाधान किया। उन ऋषियों की यही धारणा थी की सर्व अवतार गण माता के गर्भ से ही जन्म लेते हैं।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 385-391 :-**

गरीब, कोई कहै बरूण धर्मराय है, कोई कोई कहते ईश। सोलह कला सुभांन गति, कोई कहै जगदीश।।385।।
गरीब, भक्ति मुक्ति ले ऊतरे, मेटन तीनूं ताप। मोमन के डेरा लिया, कहै कबीरा बाप।।386।।
गरीब, दूध न पीवै न अन्न भखै, नहीं पलने झूलंत। अधर अमान धियान में, कमल कला फूलंत।।387।।
गरीब, कोई कहै छल ईश्वर नहीं, कोई किंनर कहलाय। कोई कहै गण ईश का, ज्यूं ज्यूं मात रिसाय।।388।।
गरीब, काशी में अचरज भया, गई जगत की नींद। ऐसे दुल्हे ऊतरे, ज्यूं कन्या वर बींद।।389।।
गरीब, खलक मुलक देखन गया, राजा परजा रीत। जंबूदीप जिहाँन में, उतरे शब्द अतीत।।390।।
गरीब, दुनी कहै योह देव है, देव कहत हैं ईश। ईश कहै परब्रह्म है, पूरण बीसवे बीस।।391।।

❖ **सरलार्थ :- बालक को लेकर नीरू तथा नीमा अपने घर जुलाहा मोहल्ला (कॉलोनी) में आए। जिस भी नर व नारी ने नवजात शिशु रूप में परमेश्वर कबीर जी को देखा वह देखता ही रह गया। परमेश्वर का शरीर अति सुन्दर था। आँख जैसे कमल का फूल हो, घुँघराले बाल, लम्बे हाथ। लम्बी-2 अँगुलियाँ शरीर से मानो नूर झलक रहा हो। पूरी काशी नगरी में ऐसा अद्भुत बालक नहीं था। जो भी देखता वहीं अन्य को बताता कि नूर अली को एक बालक तालाब पर मिला है आज ही उत्पन्न हुआ शिशु है। डर के मारे लोक लाज के कारण किसी विधवा ने डाला होगा। बालक को देखने के पश्चात् उसके चेहरे से दष्टि हटाने को दिल नहीं करता, आत्मा अपने आप खिंची जाती है। पता नहीं बालक के मुख पर कैसा जादू है? पूरी काशी परमेश्वर के बालक रूप को देखने को उमड़ पड़ी। स्त्री-पुरूष झुण्ड के झुण्ड बना कर मंगल गान गाते हुए, नीरू के घर बच्चे को देखने को आए।**

बच्चे (कबीर परमेश्वर) को देखकर कोई कह रहा था, यह बालक तो कोई देवता का अवतार है, कोई कह रहा था। यह तो साक्षात् विष्णु जी ही आए लगते हैं। कोई कह रहा था यह भगवान शिव ही अपनी काशी नगरी को कत्तार्थ करने को उत्पन्न हुए हैं। कोई कह रहा था। यह तो किन्नर का अवतार है, कोई कह रहा था। यह पितर नगरी से आया है। यह सर्व वार्ता सुनकर नीमा अप्रसन्न हो कर कहती थी कि मेरे बच्चे के विषय में कुछ मत कहो। हे अल्लाह! मेरे बच्चे की इनकी नजर से रक्षा करना। तुमने कभी बच्चा देखा भी है कि नहीं। ऐसे समूह के समूह मेरे बालक को देखने आ रहे हो। आने वाले स्त्री-पुरूष बोले हे नीमा। हमने बालक तो बहुत देखे हैं परन्तु आप के बालक जैसा नहीं देखा। इसीलिए हम इसे देखने आए हैं। ऊपर अपने-2 लोकों से श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी भी झांक कर देखने लगे। काशी के वासियों के

मुख से अपने में से (श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा शिव में से) एक यह बालक होने की बात सुनकर बोले कि यह बालक तो किसी अन्य लोक से आया है। इस के मूल स्थान से हम भी अपरिचित हैं परन्तु है बहुत शक्ति युक्त कोई सिद्ध पुरूष है।

''शिशु कबीर परमेश्वर का नामांकन''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 392-393 :-**

गरीब, काजी गये कुरान ले, धरि लरके का नाम। अक्षर अक्षर मैं फुर्या, धन कबीर बलि जांव।।392।।
गरीब, सकल कुरान कबीर हैं, हरफ लिखे जो लेख। काशी के काजी कहैं, गई दीन की टेक।।393।।

❖ **सरलार्थ :- नीरू (नूर अल्ली) तथा नीमा पहले हिन्दु ब्राह्मण-ब्राह्मणी थे। इस कारण लालच वश ब्राह्मण लड़के का नाम रखने आए। उसी समय काजी मुसलमान अपनी पुस्तक कुर्आन शरीफ को लेकर लड़के का नाम रखने के लिए आ गए। उस समय दिल्ली में मुगल बादशाहों का शासन था जो पूरे भारतवर्ष पर शासन करते थे। जिस कारण हिन्दु समाज मुसलमानों से दबता था। काजियों ने कहा लड़के का नाम करण हम मुसलमान विधि से करेंगे अब ये मुसलमान हो चुके हैं। यह कहकर काजियों में मुख्य काजी ने कुर्आन शरीफ पुस्तक को कहीं से खोला। उस पष्ठ पर प्रथम पंक्ति में प्रथम नाम ''कबीरन्'' लिखा था। काजियों ने सोचा ''कबीर'' नाम का अर्थ बड़ा होता है। इस छोटे जाति (जुलाहे अर्थात् धाणक) के बालक का नाम कबीर रखना शोभा नहीं देगा। यह तो उच्च घरानों के बच्चों के नाम रखने योग्य है। शिशु रूपधारी परमेश्वर काजियों के मन के दोष को जानते थे। काजियों ने पुनः पवित्र कुरान शरीफ को नाम रखने के उद्देश्य से खोला। उन दोनों पष्ठों पर कबीर-कबीर-कबीर अखर लिखे थे अन्य लेख नहीं था। काजियोंने फिर कुर्आन शरीफ को खोला उन पष्ठों पर भी कबीर-कबीर-कबीर अक्षर ही लिखा था। काजियों ने पूरी कुर्आन का निरीक्षण किया तो उनके द्वारा लाई गई कुर्आन शरीफ में सर्व अक्षर कबीर-कबीर-कबीर-कबीर हो गए काजी बोले इस बालक ने कोई जादू मन्त्र करके हमारी कुर्आन शरीफ को ही बदल डाला। तब कबीर परमेश्वर शिशु रूप में बोले हे काशी के काजियों। मैं कबीर अल्ला अर्थात् अल्लाहुअकबर, हूँ। मेरा नाम ''कबीर'' ही रखो। काजियों ने अपने साथ लाई कुरान को वहीं पटक दिया तथा चले गए। बोले इस बच्चे में कोई प्रेत आत्मा बोलती है।**

''शिशु कबीर देव द्वारा कुँवारी गाय का दूध पीना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 394-397 :-**

गरीब, शिब उतरे शिबपुरी सैं, अबिगत बदन बिनोद। महके कमल खुसी भये, लिया ईश कूं गोद।।394।।
गरीब, नजर नजर सें मिल गई, किया ईश प्रणाम। धनि मोमन धनि पूरना, धनि काशी निःकाम।।395।।
गरीब, सात बार चर्चा करी, बोले बालक बैंन। शिब कूं कर मस्तक धर्या, ल्या मोमन एक धैंन।।396।।
गरीब, अन ब्यावर कूं दूहत है, दूध दिया ततकाल। पीवै बालक ब्रह्मगति, तहां शिब भये दयाल।।397।।

सरलार्थ :- बालक कबीर को दूध पिलाने की कोशिश नीमा ने की तो परमेश्वर ने मुख बन्द कर लिया। सर्व प्रयत्न करने पर भी नीमा तथा नीरू बालक को दूध पिलाने में असफल रहे। 25 दिन जब बालक को निराहार बीत गए तो माता-पिता अति चिन्तित हो गए। 24 दिन से

नीमा तो रो-2 कर विलाप कर रही थी। सोच रही थी यह बच्चा कुछ भी नहीं खा रहा है। यह मरेगा, मेरे बेटे को किसी की नजर लगी है। 24 दिन से लगातार नजर उतारने की विधि भिन्न भिन्न-2 स्त्री-पुरूषों द्वारा बताई प्रयोग करके थक गई। कोई लाभ नहीं हुआ। आज पच्चीसवाँ दिन उदय हुआ। माता नीमा रात्रि भर जागती रही तथा रोती रही कि पता नहीं यह बच्चा कब मर जाएगा। मैं भी साथ ही फाँसी पर लटक जाऊँगी। मैं इस बच्चे के बिना जीवित नहीं रह सकती बालक कबीर का शरीर पूर्ण रूप से स्वस्थ था तथा ऐसे लग रहा था जैसे बच्चा प्रतिदिन एक किलो ग्राम (एक सेर) दूध पीता हो। परन्तु नीमा को डर था कि बिना कुछ खाए पीए यह बालक जीवित रह ही नहीं सकता। यह कभी भी मत्यु को प्राप्त हो सकता है। यह सोच कर फूट-2 कर रो रही थी। भगवान शंकर के साथ-साथ निराकार प्रभु की भी उपासना तथा उससे की गई प्रार्थना जब व्यर्थ रही तो अति व्याकुल होकर रोने लगी।

भगवान शिव, एक ब्राह्मण (ऋषि) का रूप बना कर नीरू की झोंपड़ी के सामने खड़े हुए तथा नीमा से रोने का कारण जानना चाहा। नीमा रोती रही हिचकियाँ लेती रही। सन्त रूप में खड़े भगवान शिव जी के अति आग्रह करने पर नीमा रोती-2 कहने लगी हे ब्राह्मण ! मेरे दुःख से परिचित होकर आप भी दुःखी हो जाओगे। फकीर वेशधारी शिव भगवान बोले हे माई! कहते है अपने मन का दुःख दूसरे के समक्ष कहने से मन हल्का हो जाता है। हो सकता है आप के कष्ट को निवारण करने की विधि भी प्राप्त हो जाए। आँखों में आँसू जिव्हा लड़खड़ाते हुए गहरे साँस लेते हुए नीमा ने बताया हे महात्मा जी! हम निःसन्तान थे। पच्चीस दिन पूर्व हम दोनों प्रतिदिन की तरह काशी में लहरतारा तालाब पर स्नान करने जा रहे थे। उस दिन ज्येष्ठ मास की शुक्ल पूर्णमासी की सुबह थी। रास्ते में मैंने अपने ईष्ट भगवान शंकर से पुत्र प्राप्ति की ह्रदय से प्रार्थना की थी मेरी पुकार सुनकर दीनदयाल भगवान शंकर जी ने उसी दिन एक बालक लहरतारा तालाब में कमल के फूल पर हमें दिया। बच्चे को प्राप्त करके हमारे हर्ष का कोई ठिकाना नहीं रहा। यह हर्ष अधिक समय तक नहीं रहा। इस बच्चे ने दूध नहीं पीया। सर्व प्रयत्न करके हम थक चुके हैं। आज इस बच्चे को पच्चीसवां दिन है कुछ भी आहार नहीं किया है। यह बालक मरेगा। इसके साथ ही मैं आत्महत्या करूँगी। मैं इसकी मत्यु की प्रतिक्षा कर रही हूँ। सर्व रात्रि बैठ कर तथा रो-2 व्यतीत की है। मैं भगवान शंकर से प्रार्थना कर रही हूँ कि हे भगवन्! इससे अच्छा तो यह बालक न देते। अब इस बच्चे में इतनी ममता हो गई है कि मैं इसके बिना जीवित नहीं रह सकूंगी।

नीमा के मुख से सर्वकथा सुनकर साधु रूपधारी भगवान शंकर ने कहा। आप का बालक मुझे दिखाईए। नीमा ने बालक को पालने से उठाकर ऋषि के समक्ष प्रस्तुत किया। दोनों प्रभुओं की आपस में दष्टि मिली। भगवान शंकर जी ने शिशु कबीर जी को अपने हाथों में ग्रहण किया तथा मस्तिष्क की रेखाऐं व हस्त रेखाऐं देख कर बोले नीमा! आप के बेटे की लम्बी आयु है यह मरने वाला नहीं है। देख कितना स्वस्थ है। कमल जैसा चेहरा खिला है। नीमा ने कहा हे विप्रवर! बनावटी सांत्वना से मुझे सन्तोष होने वाला नहीं है। बच्चा दूध पीएगा तो मुझे सुख की साँस आएगी। पच्चीस दिन के बालक का रूप धारण किए परमेश्वर कबीर जी ने भगवान शिव जी से कहा हे भगवन्! आप इन्हें कहो एक कुँवारी गाय लाऐं। आप उस कंवारी गाय पर अपना

आशीर्वाद भरा हस्त रखना, वह दूध देना प्रारम्भ कर देगी। मैं उस कुँवारी गाय का दूध पीऊँगा। वह गाय आजीवन बिना ब्याए (अर्थात् कुँवारी रह कर ही) दूध दिया करेगी उस दूध से मेरी परवरिश होगी। परमेश्वर कबीर जी तथा भगवान शंकर (शिव) जी की सात बार चर्चा हुई।

शिवजी ने नीमा से कहा आप का पति कहाँ है? नीमा ने अपने पति को पुकारा वह भीगी आँखों से उपस्थित हुआ तथा ब्राह्मण को प्रणाम किया। ब्राह्मण ने कहा नीरू! आप एक कुँवारी गाय लाओ। वह दूध देवेगी। उस दूध को यह बालक पीएगा। नीरू कुँवारी गाय ले आया तथा साथ में कुम्हार के घर से एक ताजा छोटा घड़ा (चार कि.ग्रा. क्षमता का मिट्टी का पात्र) भी ले आया। परमेश्वर कबीर जी के आदेशानुसार विप्ररूपधारी शिव जी ने उस कंवारी गाय की पीठ पर हाथ मारा जैसे थपकी लगाते हैं। गऊ माता के थन लम्बे-2 हो गए तथा थनों से दूध की धार बह चली। नीरू को पहले ही वह पात्र थनों के नीचे रखने का आदेश दे रखा था। दूध का पात्र भरते ही थनों से दूध निकलना बन्द हो गया। वह दूध शिशु रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने पीया। नीरू नीमा ने ब्राह्मण रूपधारी भगवान शिव के चरण लिए तथा कहा आप तो साक्षात् भगवान शिव के रूप हो। आपको भगवान शिव ने ही हमारी पुकार सुनकर भेजा है। हम निर्धन व्यक्ति आपको क्या दक्षिणा दे सकते हैं? हे विप्र! 24 दिनों से हमने कोई कपड़ा भी नहीं बुना है। विप्र रूपधारी भगवान शंकर बोले! साधु भूखा भाव का, धन का भूखा नाहीं। जो है भूखा धन का, वह तो साधु नाहीं। यह कहकर विप्र रूपधारी शिवजी ने वहाँ से प्रस्थान किया।

यही प्रमाण वेदों में है कि परमात्मा शिशु रूप में प्रकट होकर लीला करता है। तब उनकी परवरिश कंवारी गायों के दूध से होती है। प्रमाण :-

1.ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 1 मंत्र 9

अभी इमं अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम्। सोममिन्द्राय पातवे।।9।।

अभी इमम्–अध्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् सोमम् इन्द्राय पातवे।

(उत) विशेष कर (इमम्) इस (शिशुम्) बालक रूप में प्रकट (सोमम्) पूर्ण परमात्मा अमर प्रभु की (इन्द्राय) सुखदायक सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर की (पातवे) वृद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति (अभी) पूर्ण तरह (अध्न्या धेनवः) जो गाय, सांड द्वारा कभी भी परेशान न की गई हों अर्थात् कुँवारी गायों द्वारा (श्रीणन्ति) परवरिश की जाती है।

भावार्थ - पूर्ण परमात्मा अमर पुरुष जब लीला करता हुआ बालक रूप धारण करके स्वयं प्रकट होता है सुख-सुविधा के लिए जो आवश्यक पदार्थ शरीर वंद्धि के लिए चाहिए वह पूर्ति कुँवारी गायों द्वारा की जाती है अर्थात् उस समय (अध्नि धेनु) कुँवारी गाय अपने आप दूध देती है जिससे उस पूर्ण प्रभु की परवरिश होती है।

''नीरू को धन की प्राप्ति''

बालक की प्राप्ति से पूर्व दोनों जने (पति-पत्नी) मिलकर कपड़ा बुनते थे। 25 दिन बच्चे की चिन्ता में कपड़ा बुनने का कोई कार्य न कर सके। जिस कारण से कुछ कर्ज नीरू को हो गया। कर्ज मांगने वाले भी उसी पच्चीसवें दिन आ गए तथा बुरी भली कह कर चले गए। कुछ दिन तक कर्ज न चुकाने पर यातना देने की धमकी सेठ ने दे डाली। दोनों पति -पत्नी अति

चिन्तित हो गए। अपने बुरे कर्मों को कोसने लगे। एक चिन्ता का समाधान होता है, दूसरी तैयार हो जाती है। माता-पिता को चिन्तित देख बालक बोला हे माता-पिता! आप चिन्ता न करो। आपको प्रतिदिन एक सोने की मोहर (दस ग्राम स्वर्ण) पालने के बिछौने के नीचे मिलेगी। आप अपना कर्ज उतार कर अपना तथा गऊ का खर्च निकाल कर शेष बचे धन को धर्म कर्म में लगाना। उस दिन के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण प्रतिदिन नीरू के घर परमेश्वर कबीर जी की कपा से मिलने लगा। यह क्रिया एक वर्ष तक चलती रही।

परमेश्वर कबीर जी ने मुहर (सोने का सिक्का) मिलने वाली लीला को गुप्त रखने को कहा था एक दिन नीमा की प्रिय सखी उसी समय नीरू के घर पर आई जिस समय वह कबीर जी को जगाने का प्रयत्न कर रही थी। नीमा की सखी ने वह स्वर्ण मुहर देख ली तथा बोली इतना सोना आपके पास कैसे आया। नीमा ने अपनी प्रिय सखी से सर्व गुप्त भेद कह सुनाया कि हमें तो एक वर्ष से यह मुहर प्रतिदिन प्राप्त हो रही है। हमारे घर पर भाग्यशाली लड़का कबीर जब से आया है। हम तो आनन्द से रहते हैं। अगले दिन ही सोना मिलना बंद हो गया। नीरू तथा नीमा दोनों मिलकर कपड़ा बुनकर अपने परिवार का पालन पोषण करने लगे। बड़ा होकर बालक कबीर भी पिता के काम में हाथ बटाने लगा। थोड़े ही समय में अधिक बुनाई करने लगा।

''शिशु कबीर की सुन्नत करने का असफल प्रयत्न''

शिशु रूपधारी कबीर देव की सुन्नत करने का समय आया तो पूरा जन समूह सम्बन्धियों का इकट्ठा हो गया। नाई जब शिशु कबीर जी के लिंग को सुन्नत करने के लिए कैंची लेकर गया तो परमेश्वर ने अपने लिंग के साथ एक लिंग और बना लिया। फिर उस सुन्नत करने को तैयार व्यक्ति की आँखों के सामने तीन लिंग और बढ़ते दिखाए कुल पाँच लिंग एक बालक के देखकर वह सुन्नत करने वाला आश्चर्य में पड़ गया। तब कबीर जी शिशु रूप में बोले भईया एक ही लिंग की सुन्नत करने का विधान है ना मुसलमान धर्म में। बोल शेष चार की सुन्नत कहाँ करानी है? जल्दी बोल! शिशु को ऐसे बोलते सुनकर तथा पाँच लिंग बालक के देख कर नाई ने अन्य उपस्थित व्यक्तियों को बुलाकर वह अद्भुत दृश्य दिखाया।

सर्व उपस्थित जन समूह यह देखकर अचम्भित हो गया। आपस में चर्चा करने लगे यह अल्लाह का कैसा कमाल है एक बच्चे को पाँच पुरूष लिंग। यह देखकर बिना सुन्नत किए ही चला गया। बच्चे के पाँच लिंग होने की बात जब नीरू व नीमा को पता चला तो कहने लगे आप क्या कह रहे हो। यह नहीं हो सकता। दोनों बालक के पास गए तो शिशु को केवल एक ही पुरूष लिंग था पाँच नहीं थे। तब उन दोनों ने उन उपस्थित व्यक्तियों से कहा आप क्या कह रहे थे देखो कहाँ हैं बच्चे के पाँच लिंग केवल एक ही है। उपस्थित सर्व व्यक्तियों ने पहले आँखों देखे थे पांच पुरूष लिंग तथा उस समय केवल एक ही लिंग (पेशाब इन्द्री) को देखकर आश्चर्य चकित हो गए। तब शिशु रूप धारी परमेश्वर बोले है भोले लोगो! आप लड़के का लिंग किसलिए काटते हो? क्या लड़के को बनाने में अल्लाह (परमेश्वर) से चूक रह गई जिसे आप ठीक करते हो। क्या आप परमेश्वर से भी बढ़कर हो? यदि आप लड़के के लिंग की चमड़ी आगे से काट कर (सुन्नत करके) उसे मुसलमान बनाते हो तो लड़की को मुसलमान कैसे बनाओगे। यदि मुसलमान धर्म

के व्यक्ति अन्य धर्मों के व्यक्तियों से भिन्न होते तो परमात्मा ही सुन्नत करके लड़के को जन्म देता। हे भोले इन्सानों! परमेश्वर के सर्व प्राणी हैं। कोई वर्तमान में मुसलमान समुदाय में जन्मा है तो वह मत्यु उपरान्त हिन्दु या ईसाई धर्म में भी जन्म ले सकता है। इसी प्रकार अन्य धर्मों में जन्में व्यक्ति भी मुसलमान धर्म व अन्य धर्म में जन्म लेते हैं। ये धर्म की दिवारे खड़ी करके आपसी भाई चारा नष्ट मत करो। यह सर्व काल ब्रह्म की चाल है। कलयुग से पहले अन्य धर्म नहीं थे। केवल एक मानव धर्म (मानवता धर्म) ही था। अब कलयुग में काल ब्रह्म ने भिन्न-2 धर्मों में बांट कर मानव की शान्ति समाप्त कर दी है। सुन्नत के समय उपस्थित व्यक्ति बालक मुख से सद्उपदेश सुनकर सर्व दंग रह गए। माता-नीमा ने बालक के मुख पर कपड़ा ढक दिया तथा बोली घना मत बोल। काजी सुन लेंगे तो तुझे मार डालेंगे वो बेरहम हैं बेटा। परमेश्वर कबीर जी माता के हृदय के कष्ट से परिचित होकर सोने का बहाना बना कर खराटे भरने लगे। तब नीमा ने सुख की सांस ली तथा अपने सर्व सम्बन्धियों से प्रार्थना की आप किसी को मत बताना कि कबीर ने कुछ बोला है। कहीं मुझे बेटे से हाथ धोने पड़ें। छः महीने की आयु में परमेश्वर पैरों चलने लगे।

''ऋषि रामानन्द, सेऊ, सम्मन तथा नेकी व कमाली के पूर्व जन्मों का ज्ञान''

ऋषि रामानन्द जी का जीव सत्ययुग में विद्याधर ब्राह्मण था जिसे परमेश्वर सत्य सुकत नाम से मिले थे। त्रेता युग में वह वेदविज्ञ नामक ऋषि था जिसको परमेश्वर मुनिन्द्र नाम से शिशु रूप में प्राप्त हुए थे तथा कमाली वाली आत्मा सत्य युग में विद्याधर की पत्नी दीपिका थी। त्रेता युग में सूर्या नाम की वेदविज्ञ ऋषि की पत्नी थी। उस समय इन्होनें परमेश्वर को पुत्रवत् पाला तथा प्यार किया था। उसी पुण्य के कारण ये आत्माऐं परमात्मा को चाहने वाली थी। कलयुग में भी इनका परमेश्वर के प्रति अटूट विश्वास था। ऋषि रामानन्द व कमाली वाली आत्माऐं ही सत्ययुग में ब्राह्मण विद्याधर तथा ब्राह्मणी दीपीका वाली आत्माऐं थी जिन्हें ससुराल से आते समय कबीर परमेश्वर एक तालाब में कमल के फूल पर शिशु रूप में मिले थे। यही आत्माऐं त्रेता युग में (वेदविज्ञ तथा सूर्या) ऋषि दम्पति थे। जिन्हें परमेश्वर शिशु रूप में प्राप्त हुए थे। सम्मन तथा नेकी वाली आत्माऐं द्वापर युग में कालू वाल्मीकि तथा उसकी पत्नी गोदावरी थी। जिन्होंने द्वापर युग में परमेश्वर कबीर जी का शिशु रूप में लालन-पालन किया था। उसी पुण्य के फल स्वरूप परमेश्वर ने उन्हें अपनी शरण में लिया था। सेऊ (शिव) वाली आत्मा द्वापर में ही एक गंगेश्वर नामक ब्राह्मण का पुत्र गणेश था। जिसने अपने पिता के घोर विरोध के पश्चात् भी मेरे उपदेश को नहीं त्यागा था तथा गंगेश्वर ब्राह्मण वाली आत्मा कलयुग में शेख तकी बना। वह द्वापर युग से ही परमेश्वर का विरोधी था। गंगेश्वर वाली आत्मा शेख तकी को काल ब्रह्म ने फिर से प्रेरित किया। जिस कारण से शेख तकी (गंगेश्वर) परमेश्वर कबीर जी का शत्रु बना। भक्त श्री कालू तथा गोदावरी का गणेश माता-पिता तुल्य सम्मान करता था। रो-2 कर कहता था काश आज मेरा जन्म आप (वाल्मीकि) के घर होता। मेरे (पालक) माता-पिता (कालू तथा गोदावरी) भी गणेश से पुत्रवत् प्यार करते थे। उनका मोह भी उस बालक में अत्यधिक हो गया था। इसी कारण से वे फिर से उसी गणेश वाली आत्मा अर्थात् सेऊ

के माता-पिता (नेकी तथा सम्मन) बने। सम्मन की आत्मा ही नौशेरवाँ शहर में नौशेरखाँ राजा बना। फिर बलख बुखारे का बादशाह अब्राहिम अधम सुलतान हुआ तब उसको पुनः भक्ति पर लगाया।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 428-455, 461-464, 473-477 :-**

महके बदन खुलास कर, सुनि स्वामी प्रबीन। दास गरीब मनी मरै, मैं आजिज आधीन।।428।।
मैं अबिगत गति सें परै, च्यारि बेद सें दूर। दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।429।।
सकल सिंध भरपूर हूं, खालिक हमरा नाम। दासगरीब अजाति हूं, तैं जूं कह्या बलि जांव।।430।।
जाति पाति मेरै नहीं, बस्ती है बिन थाम। दासगरीब अनिन गति, तन मेरा बिन चाम।।431।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गुदा नहीं गात। दासगरीब शब्द सजा, नहीं किसी का साथ।।432।।
सब संगी बिछरू नहीं, आदि अंत बहु जांहि। दासगरीब सकल बसूं, बाहर भीतर मांहि।।433।।
ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टि हमारै तीर। दास गरीब अधर बसूं, अबिगत सत्य कबीर।।434।।
अनंत कोटि सलिता बहैं, अनंत कोटि गिरि ऊंच। दास गरीब सदा रहूं, नहीं हमारै कूंच।।435।।
पौहमी धरणि आकाश में, मैं व्यापक सब ठौर। दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।436।।
मैं सतगुरु मैं दास हूँ, मैं हंसा मैं बंस। दास गरीब दयाल मैं, मैं ही करूं पाप बिध्वंस।।437।।
ममता माया हम रची, काल जाल सब जीव। दास गरीब प्राणपद, हम दासातन पीव।।438।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम। दासगरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।439।।
सुनि रामानंद राम मैं, मैं बावन नरसिंह। दास गरीब सर्व कला, मैं ही व्यापक सरबंग।।440।।
हमसे लक्ष्मण हनुमंत हैं, हमसे रावण राम। दास गरीब सती कला, सबै हमारे काम।।441।।
हम मौला सब मुलक में, मुलक हमारै मांहि। दास गरीब दयाल हम, हम दूसर कछु नांहि।।442।।
ताना बाना बीनहूं, पूरण पेटै सूत। दास गरीब नली फिरै, दम खोजैं अनभूत।।443।।
दम खोजैं देही तजैं, श्वास उश्वास गुंजार। दास गरीब समोयले, उलटि अपूठा तार।।444।।
हम चरखा हम कातनी, हमहीं कातनहार। दास गरीब तीजंन पर्या, हम ताकू ततसार।।445।।
हमहीं बाड़ी बंनि बंनैं, हमैं बिनौला जाति। दास गरीब चंद सूर हम, हमहीं दिबस अरु रात।।446।।
हम से हीं इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश। दास गरीब धरम ध्वजा, धरणि रसातल शेष।।447।।
हम से हीं बरन बिनांन हैं, हम से हीं जम कुबेर। दास गरीब हरि होत हम, हम कंचन सुमेर।।448।।
हम मोती मुक्ताहलं, हम दरिया दरबेश। दास गरीब हम नित रहैं, हम उठि जात हमेश।।449।।
हमहीं लाल गुलाल हैं, हम पारस पद सार। दास गरीब अदालतं, हम राजा संसार।।450।।
हम से ही पानी हम पवन हैं, हम से हीं धरणि अकाश। दास गरीब तत्त्व पंच में, हमहीं शब्द निबास।।451।।
हम पारिंग हम सुरति हैं, हम नलकी हम नाद। दास गरीब नगन मगन, हम बिरक्त हम साध।।452।।
सुनि स्वामी सति भाखहूं, झूठ न हमरै रिंच। दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।453।।
हम मुक्ता हम नहीं बंध में, हम ख्याली खुसाल। दास गरीब सब सृष्टि में, टोहत हैं हंस लाल।।454।।
हम रोवत हैं सृष्टि कूं, सृष्टि रोवती मोहि। दासगरीब बिजोग कूं, बूझै और न कोय।।455।।
सतगुण रजगुण तमगुणं, रज बीरज हम कीन। गरीबदास सब सकल शिर, हमैं दुनी हम दीन।।461।।
हम भिक्षुक कंगाल कुल, हम दाता अबदाल। गरीब दास मैं मागिहूं, मैं देऊं नघ माल।।462।।
माल ताल सरबर भरे, संख असंखौं गंज।गरीब दास एक रती बिन, लेन न देऊं अंज।।463।।

जेता अंजन आंजिये, चिसम्यौं में चमकंत। गरीब दास हरि भक्ति बिन, माल बाल ज्यूं जंत।।464।।
गगन सुंन गुप्त रहूं, हम प्रगट प्रवाह। गरीबदास घट घट बसूं, बिकट हमारी राह।।473।।
आवत जात न दीखहूं, रहता सकल समीप। गरीबदास जल तरंग हूं, हमही सायर सीप।।474।।
मैं मुरजीवा आदि का, नघ माणिक ल्यावंत। गरीबदास सर समंद में, गोता गैब लगंत।।475।।
गोता लाऊं स्वर्ग सैं, फिरि पैठूं पाताल। गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।476।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव। गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नांव।।477।।

सरलार्थ :-

''ऋषि रामानन्द का उद्धार करना''

''ऋषि रामानन्द स्वामी को गुरु बना कर शरण में लेना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 399-404 :-**

गरीब, भक्ति द्राविड देश थी, इहां नहीं एक रंच। ऊत भूत की ध्यावना, पाखंड और प्रपंच।।399।।
गरीब, रामानंद आनंद में, काशी नगर मंझार। देश द्राविड छाड़ि करि, आये पुरी बिचार।।400।।
गरीब, जोग जुगति प्राणायाम करि, जीत्या सकल शरीर। त्रिवेणी के घाट में, अटक रहे बलबीर।।401।।
गरीब, तीरथ ब्रत एकादशी, गंगोदक असनान। पूजा बिधि विधानसैं, सर्ब कला सुर ज्ञान।।402।।
गरीब, करैं मानसी सेव नित, आत्म तत्त्व का ध्यान। षटपूजा आरंभ गति, धूप दीप बंधान।।403।।
गरीब, चौदा सै चेले किये, काशी नगर मंझार। च्यारि संप्रदा चलत हैं, और बावन दरबार।।404।।

सरलार्थ :- स्वामी रामानन्द जी अपने समय के सुप्रसिद्ध विद्वान कहे जाते थे। वे द्राविड़ से काशी नगर में वेद व गीता ज्ञान के प्रचार हेतु आए थे। उस समय काशी में अधिकतर ब्राह्मण शास्त्रविरूद्ध भक्तिविधि के आधार से जनता को दिशा भ्रष्ट कर रहे थे। भूत-प्रेतों के झाड़े जन्त्र करके वे काशी शहर के ब्राह्मण अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे थे। स्वामी रामानन्द जी ने काशी शहर में वेद ज्ञान व गीता जी तथा पुराणों के ज्ञान को अधिक महत्त्व दिया तथा वह भूत-प्रेत उतारने वाली पूजा का अन्त किया अपने ज्ञान के प्रचार के लिए चौदह सौ ऋषि बना रखे थे। {स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की शरण में आने के पश्चात् चौरासी शिष्य और बनाए थे जिनमें रविदास जी नीरू-नीमा, गीगनौर (राजस्थान) के राजा पीपा ठाकुर आदि थे कुल शिष्यों की संख्या चौदह सौ चौरासी कही जाती है } वे चौदह सौ ऋषि विष्णु पुराण, शिव पुराण तथा देवी पुराण आदि मुख्य-2 पुराणों की कथा करते थे। प्रतिदिन बावन (52) सभाऐं ऋषि जन किया करते थे। काशी के क्षेत्र विभाजित करके मुख्य वक्ताओं को प्रवचन करने को स्वामी रामानन्द जी ने कह रखा था। स्वयं भी उन सभाओं में प्रवचन करने जाते थे। स्वामी रामानन्द जी का बोल बाला आस-पास के क्षेत्र में भी था। सर्व जनता कहती थी कि वर्तमान में महर्षि रामानन्द स्वामी तुल्य विद्वान वेदों व गीता जी तथा पुराणों का सार ज्ञाता पथ्वी पर नहीं है। परमेश्वर कबीर जी ने अपने स्वभाव अनुसार अर्थात् नियमानुसार रामानन्द स्वामी को शरण में लेना था। कबीर जी ने सन्त गरीबदास जी को अपना सिद्धान्त बताया है जो सन्त गरीबदास जी (बारहवें पंथ प्रवर्तक, छुड़ानी धाम, हरियाणा वाले) ने अपनी वाणी में लिखा है :-

गरीब जो हमरी शरण है, उसका हूँ मैं दास। गेल–गेल लाग्या फिरूं जब तक धरती आकाश।।

गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठू पाताल। गरीबदास ढूढत फिरूं अपने हीरे माणिक लाल।
हरदम संगी बिछुड़त नाहीं है महबूब सल्लौना वो। एक पलक में साहेब मेरा फिरता चौदह भवना वो।
ज्यों बच्छा गऊ की नजर में यूं साई कूँ सन्त। भक्तों के पीछे फिरै भक्त वच्छल भगवन्त।
कबीर कमाई आपनी कबहूँ न निष्फल जायें। सात समुन्दर आढे पड़ैं मिले अगाऊ आय।।

सतयुग में विद्याधर नामक ब्राह्मण के रूप में तथा त्रेतायुग में वेदविज्ञ ऋषि के रूप में जन्में स्वामी रामानन्द जी वाले जीव ने परमेश्वर कबीर जी को बालक रूप में प्राप्त किया था। भक्तमति कमाली वाला जीव उस समय दीपिका नाम की विद्याधर ब्राह्मण की पत्नी थी। वही दीपिका वाली आत्मा वेदविज्ञ ब्राह्मण की पत्नी सूर्या थी। जो कलयुग में कमाली बनी। यही दोनों आत्माऐं त्रेता युग में ऋषि दम्पति (वेदविज्ञ तथा सूर्या) था। उस समय भी परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी शिशु रूप में इन्हें मिले थे। इस के पश्चात् भी इन दोनों जीवों को अनेकों जन्म व स्वर्ग प्राप्ति भी हुई थी। वही आत्माऐं कलयुग में परमेश्वर कबीर जी के समकालीन हुई थी। पूर्व जन्म के सन्त सेवा के पुण्य अनुसार परमेश्वर कबीर जी ने उन पुण्यात्माओं को शरण में लेने के लिए लीला की।

स्वामी रामानन्द जी की आयु 104 वर्ष थी उस समय कबीर देव जी के लीलामय शरीर की आयु 5 (पाँच) वर्ष थी। स्वामी रामानन्द जी महाराज का आश्रम गंगा दरिया के आधा किलो मीटर दूर स्थित था। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन सूर्योदय से पूर्व गंगा नदी के तट पर बने पंचगंगा घाट पर स्नान करने जाते थे। पाँच वर्षीय कबीर देव ने अढ़ाई (दो वर्ष छः महीने) वर्ष के बच्चे का रूप धारण किया तथा पंच गंगा घाट की पौड़ियों (सीढ़ियों) में लेट गए। स्वामी रामानन्द जी प्रतिदिन की भांति स्नान करने गंगा दरिया के घाट पर गए। अंधेरा होने के कारण स्वामी रामानन्द जी बालक कबीर देव को नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी के पैर की खड़ाऊ (लकड़ी का जूता) सीढ़ियों में लेटे बालक कबीर देव के सिर में लगी। बालक कबीर देव लीला करते हुए रोने लगे जैसे बच्चा रोता है। स्वामी रामानन्द जी को ज्ञान हुआ कि उनका पैर किसी बच्चे को लगा है जिस कारण से बच्चा पीड़ा से रोने लगा है। स्वामी जी बालक को उठाने तथा चुप करने के लिए शीघ्रता से झुके तो उनके गले की माला (एक रूद्राक्ष की कण्ठी माला) बालक कबीर देव के गले में डल गई। जिसे स्वामी रामानन्द जी नहीं देख सके। स्वामी रामानन्द जी ने बच्चे को प्यार से कहा बेटा राम-राम बोल राम नाम से सर्व कष्ट दूर हो जाता है। ऐसा कह कर बच्चे के सिर को सहलाया। आशीर्वाद देते हुए सिर पर हाथ रखा। बालक कबीर परमेश्वर अपना उद्देश्य पूरा होने पर चुप होकर पौड़ियों पर बैठ गए तथा एक शब्द गाया और चल पड़े :-

(यह शब्द कबीर सागर में अगम निगम बोध के पष्ठ 34 पर लिखा है।)

गुरू रामानंद जी समझ पकड़ियो मोरी बाहीं।। जो बालक रून झुनियां खेलत सो बालक हम नाहीं।।
हम तो लेना सत का सौद हम ना पाखण्ड पूजा चाहीं।। बांह पकड़ो तो दढ़ का पकड़ बहुर छुट न जाई।।
जो माता से जन्मा वह नहीं इष्ट हमारा।। राम मरै कष्ण मरै विष्णु मरै साथै जामण हारा।।
तीन गुण हैं तीनों देवता, निरंजन चौथा कहिए। अविनाशी प्रभु इस सब से न्यारा, मोकूं वह चाहिए।।
पांच तत्त्व की देह ना मेरी, ना कोई माता जाया। जीव उदारन तुम को तारन, सीधा जग में आया।।

राम–राम और ओम् नाम यह सब काल कमाई। सतनाम दो मोरे सतगुरू तब काल जाल छुटाई।।
सतनाम बिन जन्में–मरें परम शान्ति नाहीं। सनातन धाम मिले न कबहु, भावें कोटि समाधि लाई।।
सार शब्द सरजीवन कहिए, सब मन्त्रन का सरदारा। कह कबीर सुनो गुरू जी या विधि उतरें पारा।।

स्वामी रामानन्द जी ने विचार किया कि वह बच्चा रात्रि में रास्ता भूल जाने के कारण यहाँ आकर सो गया होगा। इसे अपने आश्रम में ले जाऊँगा। वहाँ से इसे इनके घर भिजवा दूँगा। ऐसा विचार करके स्नान करने लगे। परमेश्वर कबीर जी वहाँ से अन्तर्ध्यान हुए तथा अपनी झोंपड़ी में सो गए। कबीर परमेश्वर ने इस प्रकार स्वामी रामानन्द जी को गुरु धारण किया।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 405-427 :-**

पंच बर्ष के जदि भये, काशी मंझ कबीर। दास गरीब अजब कला, ज्ञान ध्यान गुण थीर।।405।।
गुल भया कांशी पुरी, अटपटे बैन विहंग। दास गरीब गुनी थके, सुनि जुल्हा प्रसंग।।406।।
रामानंद अधिकार सुनि, जुलहा अक जगदीश। दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।407।।
रामानंद कूं गुरू कहै, तनसैं नहीं मिलात। दास गरीब दर्शन भये, पैडे लगी जुं लात।।408।।
पंथ चलत ठोकर लगी, रामनाम कहि दीन। दास गरीब कसर नहीं, शिख लई प्रबीन।।409।।
आडा पड़दा लाय करि, रामानंद बूझंत। दास गरीब कुलंग छबि, अधर डाक कूदंत।।410।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम। दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।411।।
जाति हमारी जगतगुरू, परमेश्वर पद पंथ। दास गरीब लिखति परै, नाम निंरजन कंत।।412।।
रे बालक सुन दुर्बद्धि, घट मठ तन आकार। दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।413।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहै के घर बास। दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ बिश्बास।।414।।
मान बड़ाई छांड़ि करि, बोलौ बालक बैंन। दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।415।।
कलजुग क्षेत्रपाल हैं, क्या भैरौं कोई भूत। दास गरीब दतब बिना, गया जगत सब ऊत।।416।।
मनी मगज माया तजौ, तजौ मान गुमान। दास गरीब सुबात कहि, नहीं पावौगे जान।।417।।
ऐ बालक बुद्धि तोर गति कूड़ि साखि न भांडी। दासगरीब हदीस करि, नहीं लेवैंगें डांडी।।418।।
शाह सिकंदर सैं कहूँ बाधै, पग ऊपर तर शीश। दास गरीब अज्ञान गति, तोर कह्या जगदीश।।419।।
कान काटि बूचा करौं, नली भरतरे नीच। दास गरीब जिहांन में, तुम शिर जौंरा मीच।।420।।
मरत–मरत बौह जुग गए, लखी न अस्थिर ठौर। दासगरीब जिहांन में, तुम सा नीच न और।।421।।
नाद बिंद की देह में, ऐता गर्ब न कीन। दासगरीब पलक फना, जैसे बुदबुदा लीन।।422।।
तर्क तलूसैं बोलतै, रामानंद सुर ज्ञान। दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।।423।।
नीच मीचसैं ना डरै, काल कुहाड़ा शीश। दास गरीब अदत हैं, तैं ज कह्या जगदीश।।424।।
जड़ेंगे हाथ हथौकड़ी, गल में तौंक जंजीर। दास गरीब परख बिना, यह बानी गुन कीर।।425।।
परख निरख नहीं तोरकूं, नीच कुलीन कुजाति। दास गरीब अकल बिना, तैं ज कहीं क्या बात।।426।।
रे बालक नीची कला, तुम है बोले ऊंच। दास गरीब पलक घरी, खबर नहीं दम कूंच।।427।।

❖ **सरलार्थ :-**

''ऋषि विवेकानन्द जी से ज्ञान चर्चा''

स्वामी रामानन्द जी का एक शिष्य ऋषि विवेकानन्द जी बहुत ही अच्छे प्रवचन कर्त्ता रूप

में प्रसिद्ध था। ऋषि विवेकानन्द जी को काशी शहर के एक क्षेत्र का उपदेशक नियुक्त किया हुआ था। उस क्षेत्र के व्यक्ति ऋषि विवेकानन्द जी के धारा प्रवाह प्रवचनों को सुनकर उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहते थे। उसकी कालोनी में बहुत प्रतिष्ठा बनी थी। प्रतिदिन की तरह ऋषि विवेकानन्द जी विष्णु पुराण से कथा सुना रहे थे। कह रहे थे, भगवान विष्णु सर्वेश्वर हैं, अविनाशी, अजन्मा हैं। सर्व सष्टि रचनहार तथा पालन हार हैं। इनके कोई जन्मदाता माता-पिता नहीं है। ये स्वयंभू हैं। ये ही त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ जी के घर माता कौशल्या देवी की पवित्र कोख से उत्पन्न हुए थे तथा श्री रामचन्द्र नाम से प्रसिद्ध हुए। समुद्र पर सेतु बनाया, जल पर पत्थर तैराए। लंकापति रावण का वध किया। श्री विष्णु भगवान ही ने द्वापर युग में श्री कष्णचन्द्र भगवान का अवतार धार कर वासुदेव जी के रूप में माता देवकी के गर्भ से जन्म लिया तथा कंस, केशि,शिशुपाल, जरासंध आदि दुष्टों का संहार किया। पाँच वर्षीय बालक कबीर देव जी भी उस ऋषि विवेकानन्द जी का प्रवचन सुन रहे थे तथा सैंकड़ों की संख्या में अन्य श्रोता गण भी उपस्थित थे। ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रवचनों को विराम दिया तथा उपस्थित श्रोताओं से कहा यदि किसी को कोई प्रश्न करना है तो वह निःसंकोच अपनी शंका का समाधान करा सकता है।

बालक कबीर परमेश्वर खड़े हुए तथा ऋषि विवेकानन्द जी से करबद्ध होकर प्रार्थना कि हे ऋषि जी! आपने भगवान विष्णु जी के विषय में बताया कि ये अजन्मा हैं, अविनाशी है। इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। एक दिन एक ब्राह्मण श्री शिव पुराण के रूद्र संहिता अध्याय 6,7 को पढ़ कर श्रोताओं को सुना रहे थे, यह दास भी उस सत्संग में उपस्थित था। शिव पुराण में लिखा है कि निराकार परमात्मा आकार में आया वह सदाशिव, काल रूपी ब्रह्म कहलाया। उसने अपने अन्दर से एक स्त्री प्रकट की जो प्रकति देवी, अष्टांगी, त्रिदेव जननी, शिवा आदि नामों से जानी जाती है। काल रूपी ब्रह्म ने एक काशी नामक सुन्दर स्थान बनाया वहाँ दोनों शिव तथा शिवा अर्थात् काल रूपी ब्रह्म तथा दुर्गा पति-पत्नी रूप में निवास करने लगे। कुछ समय पश्चात् दोनों के सम्भोग से एक लड़का उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा। इसी प्रकार दोनों के रमण करने से एक पुत्र उत्पन्न हुआ उसका नाम ब्रह्मा रखा तथा कमल के फूल पर डाल कर अचेत कर दिया। फिर अध्याय 9 के अन्त में लिखा है कि ''ब्रह्मा रजगुण है, विष्णु सतगुण है तथा शंकर तमगुण है परन्तु सदा शिव इनसे भिन्न है वह गुणातीत है। यहाँ पर सदाशिव के अतिरिक्त तीन देव श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी भी है। इससे सिद्ध हुआ कि इन त्रिदेवों की जननी दुर्गा अर्थात् प्रकति देवी है तथा पिता काल ब्रह्म है। इन तीनों प्रभुओं विष्णु आदि का जन्म हुआ है इनके माता-पिता भी है।

एक दिन मैंने एक ब्राह्मण द्वारा श्री देवी पुराण के तीसरे स्कंद में अध्याय 4-5 में सुना था कि जिसमें भगवान विष्णु ने कहा है ''इन प्रकति देवी अर्थात् दुर्गा को मैंने पहले भी देखा था मुझे अपने बचपन की याद आई है। मैं एक वट वक्ष के नीचे पालने में लेटा हुआ था। यह मुझे पालने में झूला रही थी। उस समय में बालक रूप में था। प्रकति देवी के निकट जाकर तीनों देव (त्रिदेव) श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिवजी करबद्ध होकर खड़े हो गए। भगवान विष्णु ने देवी की स्तुति की ''तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह संसार तुम ही से उद्भाषित हो रहा है। हमारा अविर्भाव

अर्थात् जन्म तथा तिरोभाव अर्थात् मत्यु होती है। हम अविनाशी नहीं है। तुम अविनाशी हो। प्रकति देवी हो। भगवान शंकर बोले, हे माता! यदि आप ही के गर्भ से भगवान विष्णु तथा भगवान ब्रह्मा का जन्म हुआ है तो क्या मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर आपका पुत्र नहीं हुआ? अर्थात् मुझे भी जन्म देने वाली तुम ही हो।

हे ऋषि विवेकानन्द जी! आप कह रहे हो कि पुराणों में लिखा है कि भगवान विष्णु के तो कोई माता-पिता नहीं। ये अविनाशी हैं। इन पुराणों का ज्ञान दाता एक श्री ब्रह्मा जी हैं तथा लेखक भी एक ही श्री व्यास जी हैं। जबकि पुराणों में तो भगवान विष्णु नाशवान लिखे हैं। इनके माता-पिता का नाम भी लिखा है। क्यों जनता को भ्रमित कर रहे हो।

कबीर, बेद पढे पर भेद ना जाने, बाचें पुराण अठारा। जड़ को अंधा पान खिलावें, भूले सिर्जन हारा।।

कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से उपरोक्त पुराणों में लिखा उल्लेख सुनकर ऋषि विवेकानन्द अति क्रोधित हो गया तथा उपस्थित श्रोताओं से बोले यह बालक झूठ बोल रहा है। पुराणों में ऐसा नहीं लिखा है। उपस्थित श्रोताओं ने भी सहमति व्यक्त की कि हे ऋषि जी आप सत्य कह रहे हो यह बालक क्या जाने पुराणों के गूढ़ रहस्य को? आप विद्वान पुरूष परम विवेकशील हो। आप इस बच्चे की बातों पर ध्यान न दो। ऋषि विवेकानन्द जी ने पुराणों को उसी समय देखा जिसमें सर्व विवरण विद्यमान था। परन्तु मान हानि के भय से अपने झूठे व्यक्तव्य पर ही दढ़ रहते हुए कहा हे बालक तेरा क्या नाम है? तू किस जाति में जन्मा है। तूने तिलक लगाया है। क्या तूने कोई गुरु धारण किया है? शीघ्र बताइए।

कबीर परमेश्वर जी ने बोलने से पहले ही श्रोता बोले हे ऋषि जी! इसका नाम कबीर है, यह नीरू जुलाहे का पुत्र है। कबीर जी बोले ऋषि जी मेरा यही परिचय है जो श्रोताओं ने आपको बताया। मैंने गुरु धारण कर रखा है। ऋषि विवेकानन्द जी ने पूछा क्या नाम है तेरे गुरुदेव का? परमेश्वर कबीर जी ने कहा मेरे पूज्य गुरुदेव वही हैं जो आपके गुरुदेव हैं। उनका नाम है पंडित रामानन्द स्वामी। जुलाहे के बालक कबीर परमेश्वर जी के मुख कमल से स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरु जी बताने से ऋषि विवेकानन्द जी ने ज्ञान चर्चा का विषय बदल कर परमेश्वर कबीर जी को बहुत बुरा-भला कहा तथा श्रोताओं को भड़काने व वास्तविक विषय भूलाने के उद्देश्य से कहा देखो रे भाईयो! यह कितना झूठा बालक है। यह मेरे पूज्य गुरुदेव श्री 1008 स्वामी रामानन्द जी को अपना गुरु जी कह रहा है। मेरे गुरु जी तो इन अछूतों के दर्शन भी नहीं करते। शुद्रों का अंग भी नहीं छूते। अभी जाता हूँ गुरु जी को बताता हूँ। भाई श्रोताओ! आप सर्व कल स्वामी जी के आश्रम पर आना सुबह-2। इस झूठे की कितनी पिटाई स्वामी रामानन्द जी करेगें? इसने हमारे गुरुदेव का नाम मिट्टी में मिलाया है। सर्व श्रोता बोले यह बालक मूर्ख, झूठा, गंवार है आप विद्वान हो। कबीर जी ने कहा:-

निरंजन धन तेरा दरबार–निरंजन धन तेरा दरबार। जहां पर तनिक ना न्याय विचार। (टेक)
वैश्या ओढे मल–मल खासा गल मोतियों का हार। पतिव्रता को मिले न खादी सूखा निरस आहार।।
पाखण्डी की पूजा जग में सन्त को कहे लबार। अज्ञानी को परम विवेकी, ज्ञानी को मूढ गंवार।।
कह कबीर सुनो भाई साधो सब उल्टा व्यवहार। सच्चों को तो झूठ बतावें, इन झूठों का एतबार।।

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी अपने घर चले गए। वह ऋषि विवेकानन्द अपने गुरु

रामानन्द स्वामी जी के आश्रम में गया तथा सर्व घटना की जानकारी बताई। हे स्वामी जी! एक छोटी जाति का जुलाहे का लड़का कबीर अपने आप को बड़ा विद्वान् सिद्ध करने के लिए भगवान् विष्णु जी को नाशवान बताता है। हे ऋषि जी! उसने तो हम ब्रह्मणों का घर से निकलना भी दूभर कर दिया है। हमारी नाक काट डाली अर्थात् हमें महा शर्मिन्दा (लज्जित) होना पड़ रहा है। उसने कल भरी सभा में कहा है कि पंड़ित रामानन्द स्वामी मेरे गुरु जी हैं। मैंने उनसे दिक्षा ले रखी है। उस कबीर ने तिलक भी लगा रखा था जैसा हम वैष्णव सन्त लगाते है। अपने शिष्य विवेकानन्द की बात सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्रोधित होकर बोले हे विवेकानन्द कल सुबह उसे मेरे सामने उपस्थित करो। देखना सर्व के समक्ष उसकी झूठ का पर्दाफाश करूँगा।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 478-484 :-**

मन सोचत रामानन्द, यह बालक नहीं कोई देव। प्रथम नित नेम करूं, फिर पुँछू सब भेव।।478।।
बोलत रामानंदजी, हम घर बड़ा सुकाल। गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।479।।
सेवा करौं संभाल करि, सुनि स्वामी सुर ज्ञान। गरीबदास शिर मुकुट धरि, माला अटकी जान।।480।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिरि माला गल डार। गरीबदास इस भजन कूं, जानत है करतार।।481।।
ड्यौढी पड़दा दूरि करि, लीया कंठ लगाय। गरीबदास गुजरी बौहत, बदनैं बदन मिलाय।।482।।
मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल परबेश। गरीबदास गति को लखै, कौन वरण क्या भेष।।483।।
यह तौ तुम शिक्षा दई, मानि लई मनमोर। गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।484।।

❖ **सरलार्थ :-**

''कबीर जी द्वारा स्वामी रामानन्द के मन की बात बताना''

दूसरे दिन विवेकानन्द ऋषि अपने साथ नौ व्यक्तियों को लेकर जुलाहा कॉलोनी में नीरू के मकान के विषय में पूछने लगा कि नीरू का मकान कौन सा है? कालोनी के एक व्यक्ति को उनके आव-भाव से लगा कि ये कोई अप्रिय घटना करने के उद्देश्य से आए हैं। उसने शीघ्रता से नीरू को जाकर बताया कि कुछ ब्राह्मण आपके घर आ रहे हैं। उनकी नीयत झगड़ा करने की है। नीमा भी वहीं खड़ी उस व्यक्ति की बातें सुन रही थी उसी समय वे ब्राह्मण गली में नीरू के मकान की ओर आते दिखाई दिए। नीमा समझ गई कि अवश्य कबीर ने इन ब्राह्मणों से ज्ञान चर्चा की है। वे ईर्ष्यालु व्यक्ति मेरे बेटे को मार डालेगें। इतना विचार करके सोए हुए बालक कबीर को जगाया तथा अपनी झोंपड़ी के पीछे ले गई वहाँ लेटा कर रजाई डाल दी तथा कहा बेटा बोलना नहीं है। कुछ व्यक्ति झगड़ा करने के उद्देश्य से अपने घर आ रहे हैं। नीमा अपने घर के द्वार पर गली में खड़ी हो गई। तब तक वे ब्राह्मण घर के निकट आ चुके थे। उन्होंने पूछा क्या नीरू का घर यही है ? नीमा ने उत्तर दिया हाँ ऋषि जी! यही है कहो कैसे आना हुआ। ऋषि विवेकानन्द बोला कहाँ है तुम्हारा शरारती बच्चा कबीर? कल उसने भरी सभा में मेरे गुरुदेव का अपमान किया है। आज उस की पिटाई गुरु जी सर्व के समक्ष करेंगे। इसको सबक सिखाऐंगे। नीमा बोली मेरा बेटा निर्दोष है वह किसी का अपमान नहीं कर सकता। आप मेरे बेटे से ईर्ष्या रखते हो। कभी कोई ब्राह्मण उलहाने (शिकायत) लेकर आता है कभी कोई तो कभी कोई आता है। आप मेरे बेटे की जान के शत्रु क्यों बने हो? लौट जाइए।

सर्व ब्राह्मण बलपूर्वक नीरू की झोंपड़ी में प्रवेश करके कपड़ों को उठा-2 कर बालक को खोजने लगे। चारपाइयों को भी उल्ट कर पटक दिया। जोर-2 से ऊंची आवाज में बोलने लगे। मात-पिता को दुःखी जानकर बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी रजाई से निकल कर खड़े हो गए तथा कहा ऋषि जी मैं झोपड़ी के पीछे छुपा हूँ। बच्चे की आवाज सुनकर सर्व ब्राह्मण पीछे गए। वहाँ खड़े कबीर जी को पकड़ कर अपने साथ ले जाने लगे। नीमा तथा नीरू ने विरोध किया। नीमा ने बालक कबीर जी को सीने से लगाकर कहा मेरे बच्चे को मत ले जाओ। मत ले जाओ----- ऐसे कह कर रोने लगी। निर्दयों ने नीमा को धक्का मार कर जमीन पर गिरा दिया। नीमा फिर उठ कर पीछे दौड़ी तथा बालक कबीर जी का हाथ उनसे छुटवाने का प्रयत्न किया। एक व्यक्ति ने ऐसा थप्पड़ मारा नीमा के मुख व नाक से रक्त टपकने लगा। नीमा रोती हुई गली में अचेत हो गई। नीरू ने भी बच्चे को छुड़वाने की कोशिश की तो उसे भी पीट-2 कर मत सम कर दिया। कॉलोनी वाले उठाकर उनके घर ले गए। बहुत समय पश्चात् दोनों सचेत हुए। बच्चे के वियोग में रो-2 कर दोनों का बुरा हाल था। नीरू चोट के कारण चल-फिरने में असमर्थ जमीन पर गिर कर विलाप कर रहा था। कभी चुप होकर भयभीत हुआ गली की ओर देख रहा था। मन में सोच रहा था कि कहीं वे लौट कर ना आ जाऐं तथा मुझे जान से न मार डालें। फिर बच्चे को याद करके विलाप करने लगता। मेरे बेटे को मत मारो-मत मारो इसने क्या बिगाड़ा है तुम्हारा। ऐसे पागल जैसी स्थिति नीरू की हो गई थी। नीमा होश में आती थी फिर अपने बच्चे के साथ हो रहे अत्याचार की कल्पना कर बेहोश (अचेत) हो जाती थी। मोहल्ले (कॉलोनी) के स्त्री पुरूष उनकी दशा देखकर अति दुःखी थे।

प्रातःकाल का समय था। स्वामी रामानन्द जी गंगा नदी पर स्नान करके लौटे ही थे। अपनी कुटिया (Hut) में बैठे थे। जब उन्हें पता चला कि उस बालक कबीर को पकड़ कर ऋषि विवेकानन्द जी की टीम ला रही है तो स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर कपड़े का पर्दा लगा लिया। यह दिखाने के लिए कि मैं पवित्र जाति का ब्राह्मण हूँ तथा शुद्रों को दीक्षा देना तो दूर की बात है, सुबह-2 तो दर्शन भी नहीं करता।

ऋषि विवेकानन्द जी ने बालक कबीर देव जी को कुटिया के समक्ष खड़ा करके कहा हे गुरुदेव। यह रहा वह झूठा बच्चा कबीर जुलाहा। उस समय ऋषि विवेकानन्द जी ने अपने प्रचार क्षेत्र के व्यक्तियों को विशेष कर बुला रखा था। यह दिखाने के लिए कि यह कबीर झूठ बोलता है। स्वामी रामानन्द जी कहेंगे मैंने इसको कभी दीक्षा नहीं दी। जिससे सर्व उपस्थित व्यक्तियों को यह बात जचेगी कि कबीर पुराणों के विषय में भी झूठ बोल रहा था जिन के बारे में कबीर जी ने लिखा बताया था कि श्री विष्णु जी, श्री शिव जी तथा ब्रह्मा जी नाशवान हैं। इनका जन्म होता है तथा मत्यु भी होती है तथा इनकी माता का नाम प्रकति देवी (दुर्गा) है तथा पिता का नाम सदाशिव अर्थात् काल ब्रह्म है। जिन हाथों से कबीर परमेश्वर को पकड़ कर लाए थे। उन सर्व व्यक्तियों ने अपने हाथ मिट्टी से रगड़-रगड़ कर धोए तथा सर्व उपस्थित व्यक्तियों के समक्ष बाल्टी में जल भर कर स्नान किया सर्व वस्त्र जो शरीर पर पहन रखे थे वे भी कूट-2 कर धोए।

स्वामी रामानन्द जी ने अपनी कुटिया के द्वार पर खड़े पाँच वर्षीय बालक कबीर से ऊँची आवाज में प्रश्न किया। हे बालक ! आपका क्या नाम है? कौन जाति में जन्म है? आपका भक्ति

पंथ (मार्ग) कौन है? उस समय लगभग हजार की संख्या में दर्शक उपस्थित थे। बालक कबीर जी ने भी आधीनता से ऊँची आवाज में उत्तर दिया :-

जाति मेरी जगत्गुरु, परमेश्वर है पंथ। गरीबदास लिखित पढे, मेरा नाम निरंजन कंत।।
हे स्वामी सष्टा मैं सष्टि मेरे तीर। दास गरीब अधर बसूँ अविगत सत् कबीर।
गोता मारूं स्वर्ग में जा पैठूं पाताल। गरीब दास ढूंढत फिरू हीरे माणिक लाल।

भावार्थ :- कबीर जी ने कहा हे स्वामी रामानन्द जी! परमेश्वर के घर कोई जाति नहीं है। आप विद्वान पुरूष होते हुए वर्ण भेद को महत्त्व दे रहे हो। मेरी जाति व नाम तथा भक्ति पंथ जानना चाहते हो तो सुनों। मेरा नाम वही कविर्देव है जो वेदों में लिखा है जिसे आप जी पढ़ते हो। मैं वह निरंजन (माया रहित) कंत (सर्व का पति) अर्थात् सबका स्वामी हूँ। मैं ही सर्व सष्टि रचनहार (सष्टा) हूँ। यह सष्टि मेरे ही आश्रित (तीर यानि किनारे) है। मैं ऊपर सतलोक में निवास करता हूँ। मैं वह अमर अव्यक्त (अविगत सत्) कबीर हूँ। जिसका वर्णन गीता अध्याय 8 श्लोक सं.20 से 22 में है। हे स्वामी जी गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में गीता ज्ञान दाता अर्थात् काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) अपने विषय में बताता है कि! यह मूर्ख मनुष्य समुदाय मुझ अव्यक्त को कष्ण रूप में व्यक्ति मान रहे हैं। मैं सबके समक्ष प्रकट नहीं होता। यह मनुष्य समुदाय मेरे इस अश्रेष्ठ अटल नियम से अपरिचित हैं (24) गीता अ. 7 श्लोक 25 में कहा है कि मैं (गीता ज्ञान दाता) अपनी योगमाया (सिद्धिशक्ति) से छिपा हुआ अपने वास्तविक रूप में सबके समक्ष प्रत्यक्ष नहीं होता। यह अज्ञानी जन समुदाय मुझ कष्ण व राम आदि की तरह माता से जन्म न लेने वाले प्रभु को तथा अविनाशी (जो अन्य अव्यक्त परमेश्वर है) को नहीं जानते।

हे स्वामी रामानन्द जी गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म (क्षर पुरूष) ने अपने को अव्यक्त कहा है यह प्रथम अव्यक्त प्रभु हुआ। अब सुनो दूसरे तथा तीसरे अव्यक्त प्रभुओं के विषय में। गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य अव्यक्त परमात्मा का वर्णन किया है कहा है :- यह सर्व चराचर प्राणी दिन के समय अव्यक्त परमात्मा से उत्पन्न होते है रात्रि के समय उसी में लीन हो जाते हैं। यह जानकारी काल ब्रह्म ने अपने से अन्य अव्यक्त प्रभु (परब्रह्म) अर्थात् अक्षर ब्रह्म के विषय में दी है। यह दूसरा अव्यक्त (अविगत) प्रभु हुआ तीसरे अव्यक्त (अविगत) परमात्मा अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म के विषय में गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में कहा है कि जिस अव्यक्त प्रभु का गीता अध्याय 8 श्लोक 18-19 में वर्णन किया है वह पूर्ण प्रभु नहीं है। वह भी वास्तव में अविनाशी प्रभु नहीं है। परन्तु उस अव्यक्त (जिसका विवरण उपरोक्त श्लोक 18-19 में है) से भी अति परे दूसरा जो सनातन अव्यक्त भाव है वह परम दिव्य परमेश्वर सब भूतों (प्राणियों) के नष्ट होने पर भी नष्ट नहीं होता। वह अक्षर अव्यक्त अविनाशी अविगत अर्थात् वास्तव में अविनाशी अव्यक्त प्रभु इस नाम से कहा गया है। उसी अक्षर अव्यक्त की प्राप्ति को परमगति कहते हैं। जिस दिव्य परम परमात्मा को प्राप्त होकर साधक वापस लौट कर इस संसार में नहीं आते (इसी का विवरण गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा श्लोक 16-17 में भी है) वह धाम अर्थात् जिस लोक (धाम) में वह अविनाशी (अव्यक्त) परमात्मा रहता है वह धाम (स्थान) मेरे वाले लोक (ब्रह्मलोक) से श्रेष्ठ है। हे पार्थ! जिस अविनाशी परमात्मा के अन्तर्गत सर्व प्राणी हैं। जिस सच्चिदानन्द घन परमात्मा से यह

समस्त जगत परिपूर्ण है, वह सनातन अव्यक्त परमेश्वर तो अनन्य भक्ति से प्राप्त होने योग्य है (गीता अ. 8/मं.20,21,22) हे स्वामी रामानन्द जी मैं वही तीसरी श्रेणी वाला अविगत (अव्यक्त) सत् (सनातन अविनाशी भाव वाला परमेश्वर) कबीर हूँ। जिसे वेदों में कविर्देव कहा है वही कबीर देव मैं कहलाता हूँ।

हे स्वामी रामानन्द जी! सर्व संष्टि को रचने वाला (संष्टा) मैं ही हूँ। मैं ही आत्मा का आधार जगतगुरु जगत् पिता, बन्धु तथा जो सत्य साधना करके सत्यलोक जा चुके हैं उनको सत्यलोक पहुँचाने वाला मैं ही हूँ। काल ब्रह्म की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव वाला कबीर देव (कर्विदेव) मैं ही हूँ। जिसका प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 मन्त्र 7 में लिखा है।

काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बंहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः अथर्वाणम् पित्तरम् देवबन्धुम् बंहस्पतिम् नमसा अव च गच्छात् त्वम् विश्वेषाम् जनिता यथा सः कविर्देवः न दभायत् स्वधावान्

अनुवाद :– (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बंहस्पतिम्) बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु (च) तथा (नमसाव) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्मण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

केवल हिन्दी अनुवाद :- जो अचल अर्थात् अविनाशी जगत पिता भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार बड़ा स्वामी अर्थात् परमेश्वर व जगत्गुरु तथा विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को सुरक्षा के साथ सतलोक गए हुओं को यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला सर्व ब्रह्मण्डों की रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त काल की तरह धोखा न देने वाले स्वभाव अर्थात् गुणों वाला ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही वह आप कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, परमेश्वर आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं यानि जो मोक्ष प्राप्त कर चुके हैं, उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्मण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्मण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव)

परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।

पाँच वर्षीय बालक के मुख से वेदो व गीता जी के गूढ़ रहस्य को सुनकर ऋषि रामानन्द जी आश्चर्य चकित रह गए तथा क्रोधित होकर अपशब्द कहने लगे। वाणीः-

रामानंद अधिकार सुनि, जुलहा अक जगदीश। दास गरीब बिलंब ना, ताहि नवावत शीश।।407।।
रामानंद कूं गुरु कहै, तनसैं नहीं मिलात। दास गरीब दर्शन भये, पैडे लगी जुं लात।।408।।
पंथ चलत ठोकर लगी, रामनाम कहि दीन। दास गरीब कसर नहीं, सीख लई प्रबीन।।409।।
आडा पड़दा लाय करि, रामानंद बूझंत। दास गरीब कुलंग छबि, अधर डांक कूदंत।।410।।
कौन जाति कुल पंथ है, कौन तुम्हारा नाम। दास गरीब अधीन गति, बोलत है बलि जांव।।411।।
जाति हमारी जगतगुरु, परमेश्वर पद पंथ। दास गरीब लिखति परै, नाम निंरजन कंत।।412।।
रे बालक सुन दुर्बद्धि, घट मठ तन आकार। दास गरीब दरद लग्या, हो बोले सिरजनहार।।413।।
तुम मोमन के पालवा, जुलहै के घर बास। दास गरीब अज्ञान गति, एता दृढ़ विश्वास।।414।।
मान बड़ाई छाड़ि करि, बोलौ बालक बैंन। दास गरीब अधम मुखी, एता तुम घट फैंन।।415।।
तर्क तलूसैं बोलतै, रामानंद सुर ज्ञान। दास गरीब कुजाति है, आखर नीच निदान।।423।।

परमेश्वर कबीर जी (कविर्देव) ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया -

महके बदन खुलास कर, सुनि स्वामी प्रबीन। दास गरीब मनी मरै, मैं आजिज आधीन।।428।।
मैं अविगत गति सैं परै, च्यारि बेद सैं दूर। दास गरीब दशौं दिशा, सकल सिंध भरपूर।।429।।
सकल सिंध भरपूर हूँ, खालिक हमरा नाम। दासगरीब अजाति हूँ, तैं जो कह्या बलि जांव।।430।।
जाति पाति मेरे नहीं, नहीं बस्ती नहीं गाम। दासगरीब अनिन गति, नहीं हमारै चाम।।431।।
नाद बिंद मेरे नहीं, नहीं गुदा नहीं गात। दासगरीब शब्द सजा, नहीं किसी का साथ।।432।।
सब संगी बिछरू नहीं, आदि अंत बहु जांहि। दासगरीब सकल वंसु, बाहर भीतर माँहि।।433।।
ए स्वामी सृष्टा मैं, सृष्टि हमारै तीर। दास गरीब अधर बसूं, अविगत सत्य कबीर।।434।।
पौहमी धरणि आकाश में, मैं व्यापक सब ठौर। दास गरीब न दूसरा, हम समतुल नहीं और।।436।।
हम दासन के दास हैं, करता पुरुष करीम। दासगरीब अवधूत हम, हम ब्रह्मचारी सीम।।439।।
सुनि रामानंद राम हम, मैं बावन नरसिंह। दास गरीब कली कली, हमहीं से कृष्ण अभंग।।440।।
हमहीं से इंद्र कुबेर हैं, ब्रह्मा बिष्णु महेश। दास गरीब धर्म ध्वजा, धरणि रसातल शेष।।447।।
सुनि स्वामी सती भाखहूँ, झूठ न हमरै रिंच। दास गरीब हम रूप बिन, और सकल प्रपंच।।453।।
गोता लाऊं स्वर्ग सैं, फिरि पैठूं पाताल। गरीबदास ढूंढत फिरूं, हीरे माणिक लाल।।476।।
इस दरिया कंकर बहुत, लाल कहीं कहीं ठाव। गरीबदास माणिक चुगैं, हम मुरजीवा नांव।।477।।
मुरजीवा माणिक चुगैं, कंकर पत्थर डारि। दास गरीब डोरी अगम, उतरो शब्द अधार।।478।।

स्वामी रामानन्द जी ने कहाः- अरे कुजात! अर्थात् शुद्र! छोटा मुंह बड़ी बात, तू अपने आपको परमात्मा कहता है। तेरा शरीर हाड़-मांस व रक्त निर्मित है। तू अपने आपको अविनाशी

परमात्मा कहता है। तेरा जुलाहे के घर जन्म है फिर भी अपने आपको अजन्मा अविनाशी कहता है तू कपटी बालक है। परमेश्वर कबीर जी ने कहाः-

ना मैं जन्मु ना मरूँ, ज्यों मैं आऊँ त्यों जाऊँ। गरीबदास सतगुरु भेद से लखो हमारा ढांव।।
सुन रामानन्द राम मैं, मुझसे ही बावन नसिंह। दास गरीब युग–2 हम से ही हुए कष्ण अभंग।।

भावार्थः- कबीर जी ने उत्तर दिया हे रामानन्द जी, मैं न तो जन्म लेता हूँ ? न मत्यु को प्राप्त होता हूँ। मैं चौरासी लाख प्राणियों के शरीरों में आने (जन्म लेने) व जाने (मत्यु होने) के चक्र से भी रहित हूँ। मेरी विशेष जानकारी किसी तत्त्वदर्शी सन्त (सतगुरु) के ज्ञान को सुनकर प्राप्त करो। गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10-13 में वेद ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि उस पूर्ण परमात्मा के तत्व (वास्तविक) ज्ञान से मैं अपरिचित हूँ। उस तत्त्वज्ञान को तत्त्वदर्शी सन्तों से सुनों उन्हें दण्डवत् प्रणाम करो, अति विनम्र भाव से परमात्मा के पूर्ण मोक्ष मार्ग के विषय में ज्ञान प्राप्त करो, जैसी भक्ति विधि से तत्त्वदष्टा सन्त बताऐं वैसे साधना करो। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में लिखा है कि श्लोक 16 में जिन दो पुरूषों (भगवानों) 1. क्षर पुरूष अर्थात् काल ब्रह्म तथा 2. अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म का उल्लेख है, वास्तव में अविनाशी परमेश्वर तथा सर्व का पालन पोषण व धारण करने वाला परमात्मा तो उन उपरोक्त दोनों से अन्य ही है। हे स्वामी रामानन्द जी! वह उत्तम पुरूष अर्थात् सर्व श्रेष्ठ प्रभु मैं ही हूँ।

इस बात को सुनकर स्वामी रामानन्द जी बहुत क्षुब्ध हो गए तथा कहा कि रे बालक! तू निम्न जाति का और छोटा मुँह बड़ी बात कर रहा है। तू अपने आप भगवान बन बैठा। बुरी गालियाँ भी दी। कबीर साहेब बोले कि गुरुदेव! आप मेरे गुरुजी हैं। आप मुझे गाली दे रहे हो तो भी मुझे आनन्द आ रहा है। लेकिन मैं जो आपको कह रहा हूँ, मैं ज्यों का त्यों पूर्णब्रह्म ही हूँ, इसमें कोई संशय नहीं है। इस बात को सुनकर रामानन्द जी ने कहा कि ठहर जा तेरी तो लम्बी कहानी बनेगी, तू ऐसे नहीं मानेगा। मैं पहले अपनी पूजा कर लेता हूँ। रामानन्द जी ने कहा कि इसको बैठाओ। मैं पहले अपनी कुछ क्रिया रहती है वह कर लेता हूँ, बाद में इससे निपटूंगा।

स्वामी रामानन्द जी क्या क्रिया करते थे?

भगवान विष्णु जी की एक काल्पनिक मूर्ति बनाते थे। सामने मूर्ति दिखाई देने लग जाती थी (जैसे कर्मकाण्ड करते हैं, भगवान की मूर्ति के पहले वाले सारे कपड़े उतार कर, उनको जल से स्नान करवा कर, फिर स्वच्छ कपड़े भगवान ठाकुर को पहना कर गले में माला डालकर, तिलक लगा कर मुकुट रख देते हैं।) रामानन्द जी कल्पना कर रहे थे। कल्पना करके भगवान की काल्पनिक मूर्ति बनाई। श्रद्धा से जैसे नंगे पैरों जाकर आप ही गंगा जल लाए हों, ऐसी अपनी भावना बना कर ठाकुर जी की मूर्ति के कपड़े उतारे, फिर स्नान करवाया तथा नए वस्त्र पहना दिए। तिलक लगा दिया, मुकुट रख दिया और माला (कण्ठी) डालनी भूल गए। कण्ठी न डाले तो पूजा अधूरी और मुकुट रख दिया तो उस दिन मुकुट उतारा नहीं जा सकता। उस दिन मुकुट उतार दे तो पूजा खण्डित। स्वामी रामानन्द जी अपने आपको कोस रहे हैं कि इतना जीवन हो गया मेरा कभी, भी ऐसी गलती जिन्दगी में नहीं हुई थी। प्रभु आज मुझ पापी से क्या गलती हुई है? यदि मुकुट उतारूँ तो पूजा खण्डित। उसने सोचा कि मुकुट के ऊपर से कण्ठी

(माला) डाल कर देखता हूँ (कल्पना से कर रहे हैं कोई सामने मूर्ति नहीं है और पर्दा लगा है कबीर साहेब दूसरी ओर बैठे हैं)। मुकुट में माला फँस गई है आगे नहीं जा रही थी। जैसे स्वपन देख रहे हों। रामानन्द जी ने सोचा अब क्या करूं? हे भगवन्! आज तो मेरा सारा दिन ही व्यर्थ गया। आज की मेरी भक्ति कमाई व्यर्थ गई (क्योंकि जिसको परमात्मा की कसक होती है उसका एक नित्य नियम भी रह जाए तो उसको पश्चाताप बहुत होता है। जैसे इंसान की जेब कट जाए और फिर बहुत पश्चाताप करता है। प्रभु के सच्चे भक्तों को इतनी लगन होती है।) इतने में बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि स्वामी जी माला की घुण्डी खोलो और माला गले में डाल दो। फिर गाँठ लगा दो, मुकुट उतारना नहीं पड़ेगा। रामानन्द जी काहे का मुकुट उतारे था, काहे की गाँठ खोले था। कुटिया के सामने लगा पर्दा भी स्वामी रामानन्द जी ने अपने हाथ से फैंक दिया और ब्राह्मण समाज के सामने उस कबीर परमेश्वर को सीने से लगा लिया। रामानन्द जी ने कहा कि हे भगवन् ! आपका तो इतना कोमल शरीर है जैसे रूई हो। आपके शरीर की तुलना में मेरा तो पत्थर जैसा शरीर है। एक तरफ तो प्रभु खड़े हैं और एक तरफ जाति व धर्म की दीवार है। प्रभु चाहने वाली पुण्यात्माऐं धर्म की बनावटी दीवार को तोड़ना श्रेयकर समझते हैं। वैसा ही स्वामी रामानन्द जी ने किया। सामने पूर्ण परमात्मा को पा कर न जाति देखी न धर्म देखा, न छूआ-छात, केवल आत्म कल्याण देखा। इसे ब्राह्मण कहते हैं।

बोलत रामानंदजी, हम घर बड़ा सुकाल। गरीबदास पूजा करैं, मुकुट फही जदि माल।।
सेवा करौं संभाल करि, सुनि स्वामी सुर ज्ञान। गरीबदास शिर मुकुट धरि,माला अटकी जान।।
स्वामी घुंडी खोलि करि, फिरि माला गल डार। गरीबदास इस भजन कूं, जानत है करतार।।
ड्यौढी पड़दा दूरि करि, लीया कंठ लगाय। गरीबदास गुजरी बौहत, बदनैं बदन मिलाय।।
मनकी पूजा तुम लखी, मुकुट माल परबेश। गरीबदास गति को लखै, कौन वरण क्या भेष।।
यह तौ तुम शिक्षा दई, मानि लई मनमोर। गरीबदास कोमल पुरूष, हमरा बदन कठोर।।

''कबीर देव द्वारा ऋषि रामानन्द के आश्रम में दो रूप धारण करना''

स्वामी रामानन्द जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि ''आपने झूठ क्यों बोला?'' कबीर परमेश्वर जी बोले! कैसा झूठ स्वामी जी? स्वामी रामानन्द जी ने कहा कि आप कह रहे थे कि आपने मेरे से नाम ले रखा है। आपने मेरे से उपदेश कब लिया? बालक रूपधारी कबीर परमेश्वर जी बोले एक समय आप स्नान करने के लिए पँचगंगा घाट पर गए थे। मैं वहाँ लेटा हुआ था। आपके पैरों की खड़ाऊँ मेरे सिर में लगी थी! आपने कहा था कि बेटा राम नाम बोलो। रामानन्द जी बोले-हाँ, अब कुछ याद आया। परन्तु वह तो बहुत छोटा बच्चा था (क्योंकि उस समय पाँच वर्ष की आयु के बच्चे बहुत बड़े हो जाया करते थे तथा पाँच वर्ष के बच्चे के शरीर तथा ढ़ाई वर्ष के बच्चे के शरीर में दुगुना अन्तर हो जाता है)। **कबीर परमेश्वर जी ने कहा स्वामी जी देखो, मैं ऐसा था। स्वामी रामानन्द जी के सामने भी खड़े हैं और एक ढाई वर्षीय बच्चे का दूसरा रूप बना कर किसी सेवक की वहाँ पर चारपाई बिछी थी उसके ऊपर विराजमान हो गए।**

रामानन्द जी ने छः बार तो इधर देखा और छः बार उधर देखा। फिर आँखें मलमल कर देखा कि कहीं तेरी आँखें धोखा तो नहीं खा रही हैं। इस प्रकार देख ही रहे थे कि इतने में कबीर

परमेश्वर जी का छोटे वाला रूप हवा में उड़ा और कबीर परमेश्वर जी के बड़े पाँच वर्ष वाले स्वरूप में समा गया। पाँच वर्ष वाले स्वरूप में कबीर परमेश्वर जी रह गए।

रामानन्द जी बोले कि मेरा संशय मिट गया कि आप ही पूर्ण ब्रह्म हो। हे परमेश्वर! आपको कैसे पहचान सकते हैं। आप किस जाति में उत्पन्न तथा कैसी वेश भूषा में खड़े हो। हम अज्ञानी प्राणी आप के साथ वाद-विवाद करके दोषी हो गए, क्षमा करना परमेश्वर कविर्देव, मैं आपका अनजान बच्चा हूँ। रामानन्द जी ने फिर अपनी अन्य शंकाओं का निवारण करवाया।

शंका :- हे कविर्देव! मैं राम-राम कोई मन्त्र शिष्यों को जाप करने को नहीं देता। यदि आपने मुझसे दीक्षा ली है तो वह मन्त्र बताईए जो मैं शिष्य को जाप करने को देता हूँ।

उत्तर कबीर देव का :- हे स्वामी जी! आप ओम् नाम जाप करने को देते हो तथा ओ३म् भगवते वासुदेवाय नमः का जाप तथा विष्णु स्त्रोत की आवर्ती की भी आज्ञा देते हो।

शंका :- आपने जो मन्त्र बताया यह तो सही है। एक शंका और है उसका भी निवारण कीजिए। मैं जिसे शिष्य बनाता हूँ उसे एक चिन्ह देता हूँ। वह आपके पास नहीं है।

उत्तर :- बन्दी छोड़ कबीर देव बोले हे गुरुदेव! आप तुलसी की लकड़ी के एक मणके की कण्ठी (माला) गले में पहनने के लिए देते हो। यह देखो गुरु जी उसी दिन आपने अपनी कण्ठी गले से निकाल कर मेरे गले में पहनाई थी। यह कहते हुए कविर्देव ने अपने कुर्ते के नीचे गले में पहनी वही कण्ठी (माला) सार्वजनिक कर दी तथा कहा कि आप स्वर्ग में जाने की इच्छा का त्याग करो। मेरा ज्ञान सुनो। सनातन परम धाम में जाने की साधना करो।

❖ **वाणी नं. 485 :-**

ए स्वामी तुम स्वर्ग की, छांडौ आशा रीति। गरीबदास तुम कारणैं, उतरे शब्दातीत।।485।।

❖ **स्वामी रामानंद जी ने कहा :- (पारख के अंग की वाणी नं. 486-499)**

सुनि बच्चा में स्वर्ग की कैसैं छांडौं रीति। गरीबदास गुदरी लगी, जनम जात है बीत।।486।।
च्यारि मुक्ति बैकुंठ में, जिन की मोरै चाह। गरीबदास घर अगम की, कैसैं पाऊं थाह।।487।।
हेम रूप जहाँ धरणि है, रतन जड़े बौह शोभ। गरीबदास बैकुंठ कूं, तन मन हमरा लोभ।।488।।
शंख चक्र गदा पदम हैं, मोहन मदन मुरारि। गरीबदास मुरली बजै, सुरगलोक दरबारि।।489।।
दूधौं की नदियां बगैं, सेत वृक्ष सुभांन। गरीबदास मंदल मुक्ति, सुरगापुर अस्थान।।490।।
रतन जड़ाऊ मनुष्य हैं, गण गंधर्व सब देव। गरीबदास उस धाम की, कैसे छाडूं सेव।।491।।
ऋग युज साम अथर्वणं, गावैं चारौं बेद। गरीबदास घर अगम का, कैसे जानो भेद।।492।।
च्यारि मुक्ति चितवन लगी, कैसैं बंचूं ताहि। गरीबदास गुप्तारगति, हमकूं द्यौ समझाय।।493।।
सुरग लोक बैकुंठ है, यासैं परै न और। गरीबदास षट्शास्त्र, च्यारि बेदकी दौर।।494।।
च्यारि बेद गावैं तिसैं, सुरनर मुनि मिलाप। गरीबदास ध्रुव पोर जिस, मिटि गये तीनूं ताप।।495।।
प्रहलाद गये तिस लोककूं, सुरगा पुरी समूल। गरीबदास हरि भक्ति की, मैं बंचत हूं धूल।।496।।
बिंद्रावन खेले सही, रज केसर समतूल। गरीबदास उस मुक्ति कूं, कैसैं जाऊं भूल।।497।।
नारद ब्रह्मा जिस रटैं, गावैं शेष गणेश। गरीबदास बैकुंठ सैं, और परै को देश।।498।।
सहंस अठासी जिस जपैं, और तेतीसौं सेव। गरीबदास जासैं परै, और कौन है देव।।499।।

❖ **वाणी नं. 486-499 का सरलार्थ :- स्वामी रामानंद जी ने कहा कि हे बच्चा! मैं 104 वर्ष का**

वंद्ध हो चुका हूँ। सारा जीवन स्वर्ग प्राप्ति की साधना करके व्यतीत कर दिया। अब स्वर्ग जाने की आशा कैसे त्यागूँ? बताते हैं कि स्वर्ग में चार मुक्ति प्राप्त होती हैं। मुझे उनकी प्राप्ति की इच्छा है। जो इससे आगे वाले स्थान (अगम घर) सतलोक का (थाह) अंत कैसे प्राप्त करूँ? मेरा तो जीवन अंत होने वाला है। विष्णु जी के लोक की धरती सफेद (White) है। (हेम) हिम यानि बर्फ जैसे सफेद है। रत्न स्थान-स्थान पर लगे हैं जो स्वर्ग की शोभा बढ़ा रहे हैं। श्री कंष्ण मनमोहन यानि श्री विष्णु जी चारों हाथों में शंख, चक्र, गदा तथा पदम लिए हैं। उस स्वर्ग लोक में श्री कंष्ण जी मुरली बजाते हैं। स्वर्ग लोक में दूधों की नदियां बहती हैं। सब वंक्ष (सेत) सफेद हैं, (सुभान) उत्तम हैं। सब मनुष्यों के शरीर में स्थान-स्थान पर तिल के स्थान पर रत्न लगे हैं। गण, गंधर्व तथा सब देवताओं के शरीरों पर भी लाल लगे हैं। उस सुंदर स्वर्ग धाम की (सेव) भक्ति कैसे छोड़ूँ? ऋग, यजु, साम, अथर्वण, ये चारों वेद स्वर्ग तक का ज्ञान देते हैं। उस (अगम घर) सतलोक का भेद मैं कैसे जानूँ? स्वर्ग लोक यानि बैकुण्ठ से परे और कौन-सा देश (लोक) है? मुझे अच्छी तरह समझा। मुझे चार मुक्तियों की (चितवन) लगन लगी है। उसे कैसे छोड़ूँ? चार वेद और (षट्) छः शास्त्रों की दौड़ तो स्वर्ग तक ही है यानि इनमें तो स्वर्ग तक का ज्ञान है। ध्रुव भी स्वर्ग में गया। प्रहलाद भी स्वर्ग में गया। मैं भी उसी भगवान विष्णु की भक्ति करके स्वर्ग जाने की इच्छा कर रहा हूँ। वंदावन (मथुरा) में श्री कंष्ण रूप में (खेले) रास किया। हमारे लिए उस स्थान की (रज) धूल तो केसर के समान है। हे कबीर जी! उस स्वर्ग जाने वाली मुक्ति को कैसे भूल जाऊँ? नारद मुनि जी, अठासी हजार ऋषि, ब्रह्मा जी, शेष, गणेश आदि स्वर्ग का गुणगान करते हैं। इससे (परे) अन्य कौन-सा देश हो सकता है? तेतीस करोड़ देवता, अठासी हजार ऋषि भी श्री विष्णु की पूजा करते हैं। इससे (परै) अन्य कौन प्रभु हो सकता है?

बालक रूप परमात्मा कबीर जी ने कहा :- (पारख के अंग की वाणी नं. 500-567)

सुनि स्वामी निज मूल गति, कहि समझाऊं तोहि। गरीबदास भगवान कूं, राख्या जगत समोहि।।500।।
तीनि लोक के जीव सब, विषय वास भरमाय। गरीबदास हमकूं जपैं, तिसकूं धाम दिखाय।।501।।
जो देखैगा धाम कूं, सो जानत है मुझ। गरीबदास तोसैं कहूं, सुनि गायत्री गुझ।।502।।
कृष्ण बिष्णु भगवान कूं, जहडायें हैं जीव। गरीबदास त्रिलोक में, काल कर्म शिर शीव।।503।।
सुनि स्वामी तोसैं कहूं, अगम दीप की सैल। गरीबदास पूठे परें, पुस्तक लादें बैल।।504।।
पौहमी धरणि अकाश थंभ, चलसी चंदर सूर। गरीबदास रज बिरजकी, कहाँ रहैगी धूर।।505।।
तारायण त्रिलोक सब, चलसी इन्द्र कुबेर। गरीबदास सब जात हैं, सुरग पाताल सुमेर।।506।।
च्यारि मुक्ति बैकुंठ बट, फना हुआ कई बार। गरीबदास सतलोक को, नहीं जानैं संसार।।507।।
कहौ स्वामी कित रहौगे, चौदा भुवन बिहंड। गरीबदास बीजक कह्या, चलत प्राण और पिंड।।508।।
सुन स्वामी एक शक्ति है, अरधंगी ॐकार। गरीबदास बीजक तहां, अनेक लोक सिंघार।।509।।
जैसेका तैसा रहै, परलो फना प्रान। गरीबदास उसकी शक्तिकूं, बार बार कुरबांन।।510।।
कोटि इन्द्र ब्रह्मा जहाँ, कोटि कृष्ण कैलास। गरीबदास शिब कोटि हैं, करौ कौंन की आश।।511।।
कोटि बिष्णु जहाँ बसत हैं, उस शक्ति के धाम। गरीबदास गुल बौहत हैं, अलफ बस्त निहकाम।।512।।
शिब शक्ति जासै हुए, अनंत कोटि अवतार। गरीबदास उस अलफकूं, लखै सो होय करतार।।513।।
सतपुरूष हम स्वरूप है, तेज पुंज का कंत। गरीबदास गुलसैं परै, चलना है बिन पंथ।।514।।

बिना पंथ उस कंतकै, धाम चलन है मोर। गरीबदास गति ना किसी, संख सुरग पर डोर। ।515। ।
संख सुरगपर हम बसैं, सुनि स्वामी यह सैंन। गरीबदास हम सतपुरूष हैं, यौह गुल फोकट फैंन। ।516। ।
जो तैं कहया सौ मैं लह्या बिन देखैं नहीं धीज। गरीबदास स्वामी कहै, कहाँ अलफ वह बीज। ।517। ।
अनंत कोटि ब्रह्मांड फणा, अनंत कोटि उदगार। गरीबदास स्वामी कहै, कहां अलफ दीदार। ।518। ।
हद बेहद कहीं ना कहीं, ना कहीं थरपी ठौर। गरीबदास निज ब्रह्मकी, कौंन धाम वह पौर। ।519। ।
चल स्वामी सर पर चलैं, गंग तीर सुन ज्ञान। गरीबदास बैकुंठ बट, कोटि कोटि घट ध्यान। ।520। ।
तहां कोटि वैकुंठ हैं, नक सरबर संगीत। गरीबदास स्वामी सुनों, जात अनन्त जुग बीत ।521। ।
प्राण पिंड पुरमें धसौ, गये रामानंद कोटि। गरीबदास सर सुरग में, रहौ शब्दकी ओट। ।522। ।
तहां वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार। ।523। ।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि, भर्म कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ़ बिश्बास। ।524। ।
सुन्न–बेसुन्न सें तुम परै, उरैं स हमरै तीर। गरीबदास सरबंग में, अबिगत पुरूष कबीर। ।525। ।
कोटि कोटि सिजदे करैं, कोटि कोटि प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसैं तुम धाम। ।526। ।
सुनि स्वामी एक गल गुझ, तिल तारी पल जोरि। गरीबदास सर गगन में, सूरज अनंत करोरि। ।527। ।
सहर अमान अनन्तपुर, रिमझिम रिमझिम होय। गरीबदास उस नगर का, मरम न जानैं कोय। ।528। ।
सुनि स्वामी कैसैं लखौ, कहि समझाऊं तोहि। गरीबदास बिन पर उड़ैं, तन मन शीश न होय। ।529। ।
रवनपुरी एक चक्र है, तहाँ धनंजय बाय। गरीबदास जीते जन्म, याकूँ लेत समाय। ।530। ।
आसन पदम लगायकरि, भिरंग नादकौं खैंचि। गरीबदास अचवन करै, देवदत्त को ऐंचि। ।531। ।
काली ऊन कुलीन रंग, जाकै दो फुन धार। गरीबदास कुरंभ शिर, तास करे उद्गार। ।532। ।
चिस्में लाल गुलाल रंग, तीनि गिरह नभ पेच। गरीबदास वह नागनी, हौंन न देवैं रेच। ।533। ।
कुंभक रेचक सब करैं, ऊन करत उदगार। गरीबदास उस नागनी कूँ, जीतै कोई खिलार। ।534। ।
कुंभ भरै रेचक करै, फिर टूटत हैं पौंन। गरीबदास मण्डल गगन, नहीं होत है रौंन।। 535। ।
आगे घाटी बंद है, इंगला–पिंगला दोय। गरीबदास सुषमन खुले, तास मिलावा होय। ।536। ।
चंदा कै घर सूर रखि, सूरज कै घर चंद। गरीबदास मधि महल है, तहाँ वहाँ अजब आनन्द। ।537। ।
त्रिवेणी का घाट है, गंग जमन गुपतार। गरीबदास परबी परखि, तहाँ सहंस मुख धार। ।538। ।
मध्य किवारी ब्रह्मदर, वाह खोलत नहीं कोय। गरीबदास सब जोग की, पैज पीछौड़ी होय। ।539। ।
आसन संपट सुधि करि, गुफा गिरद गति ढोल। गरीबदास पल पालड़ै, हीरे मानिक तोल। ।540। ।
पान अपान समान सुध, मंदा चल महकंत। गरीबदास ठाढी बगै, तो दीपक बाति बुंझत। ।541। ।
ज्यूंका त्यूंही बैठि रहो, तजि आसन सब जोग। गरीबदास पल बीच पद, सर्व सैल सब भोग। ।542। ।
घंटा टुटै ताल भंग, संख न सुनिए टेर। गरीबदास मुरली मुक्ति, सुनि चढ़ी हंस सुमेर। ।543। ।
खुल्है खिरकी सहज धुनि, दम नहीं खैंचि अतीत। गरीबदास एक सैंन है, तजि अनभय छंद गीत। ।544। ।
धीरैं धीरैं दाटी हैं, सुरग चढैंगे सोय। गरीबदास पग पंथ बिन, ले राखौं जहां तोय। ।545। ।
सुन स्वामी सीढी बिना, चढौं गगन कैलास। गरीबदास प्राणायाम तजि, नाहक तोरत श्वास। ।546। ।
गली गली गलतान है, सहर सलेमाबाद। गरीबदास पल बीचमैं, पूरण करौं मुराद। ।547। ।
पनग पलक नीचै करौ, ता मुख सहंस शरीर। गरीबदास सूक्ष्म अधरि, सूरति लाय सर तीर। ।548। ।
सुनि स्वामी यह गति अगम, मनुष्य देवसैं दूर। गरीबदास ब्रह्मा विष्णु थके, किन्हैं न पाया मूर। ।549। ।

मूल डार जाकै नहीं, है सो अनिन अरंग। गरीबदास मजीठ चलि, ये सब लोक पतंग।।550।।
सुतह सिधि परकाशिया, कहा अरघ असनान। गरीबदास तप कोटि जुग, पचि हारे सुर ज्ञान।।551।।
कोटि कोटि बैकुंठ हैं, कोटि कोटि शिब शेष। गरीबदास उस धाम में, ब्रह्मा कोटि नरेश।।552।।
अवादान अमानपुर, चलि स्वामी तहां चाल। गरीबदास परलो अनंत, बौहरि न झंपै काल।।553।।
अमर चीर तहां पहरि है, अमर हंस सुख धाम। गरीबदास भोजन अजर, चल स्वामी निजधाम।।554।।
सतलोक को देखकर, जाना परम प्रभु का भेव। गरीबदास यह धाणका है, सब देवन का देव।।555।।
बोलत रामानंदजी, सुन कबीर करतार। गरीबदास सब रूप में, तुमहीं बोलन हार।।556।।
तुम साहिब तुम संत हौ, तुम सतगुरू तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।557।।
मैं भगता मुक्ता भया, किया कर्म कुन्द नाश। गरीबदास अबिगत मिले, मेटी मन की बास।।558।।
दोहूं ठौर है एक तूं, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणैं, उतरे हो मघ जोय।।559।।
बोलै रामानंद जी, सुनौं कबीर सुभांन। गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिंड अरु प्राण।।560।।
मैं नगदी बानी कहूं, जिनसी राखी झांपि। गरीबदास इस महलमें, नाभ नासिका मापि।।561।।
नाकी परि झांखी लगी, झांखी बीच द्वार। गरीबदास उस महल चढि, उतरे पेलैं पार।।562।।
गोष्टी रामानंद सैं, काशी नगर मंझार। गरीबदास जिंद पीरके, हम पाये दीदार।।563।।
सुन स्वामी तोसौं कहूं, पूरब जन्मकी बात। गरीबदास बीतै तुझै, चेला आत्म घात।।564।।
मुसलमान के दीनमें, कुल पठान आवंत। गरीबदास तो परि सजै, तनहि तेग धावंत।।565।।
नबै बरस निदानि है, सिख सैदक शर घालि। गरीबदास या साच है, लगै पदममें भालि।।566।।
भालि लगै मिसरी बगै, सुन स्वामी यह साच। गरीबदास पद में मिलैं, मेटै तन का नांच।।567।।

सरलार्थ :- कबीर परमात्मा ने बताया है कि हे स्वामी जी! आपको (मूल गति) मुख्य स्थिति बताता हूँ। इस श्री विष्णु उर्फ श्री कष्ण ने सब जीवों को (समोहि) सम्मोहित कर रखा है। तीन लोक के सब जीवों को विषय-वासनाओं में भटका रखा है। जो मेरे को (कबीर जी को) जपेगा, उसे सतलोक धाम दिखाऊँगा। जो मेरे सतलोक धाम को देखेगा, वही मुझे परमात्मा मानेगा। मैं आप से यह (गुझ) गुप्त गहरी यानि निज बात बता रहा हूँ। श्री कष्ण उर्फ विष्णु भगवान ने जीवों को (जहड़ाया) मोह फांस में फंसा रखा है। तीन लोक (स्वर्ग, पाताल तथा पथ्वी) में कर्मों के भोग भोगने पड़ते हैं। काल ब्रह्म द्वारा कर्म लगाए गए हैं। काल कर्म यानि काल के कर्मों का जीव के सिर पर (शीव) दंड है। हे स्वामी रामानंद जी, सुनो! आपको (अगम दीप) सतलोक को जाने का मार्ग बताता हूँ। जो शास्त्रार्थ करने के उद्देश्य से बैलों के ऊपर शास्त्र लादकर लिए फिरते हैं, उनको शास्त्रों का ही ठीक से ज्ञान नहीं है। वे भी (पूठे परें) वापिस जन्म-मरण के चक्र में गिरते हैं। धरती, आकाश, चांद, सूर्य, तारे, तीनों लोक (स्वर्ग, पथ्वी तथा पाताल लोक) चलेंगे यानि नष्ट होंगे। आप स्वर्ग जाना चाहते हो। आपके (रज-बिरज) माता-पिता से बने शरीर की (धूर) धूल (यानि जलकर राख बन जाएगी) कहाँ बचेगी? ये चार मुक्ति जो स्वर्ग में प्राप्त होती हैं, वह स्वर्ग ही कई बार (फना) नष्ट हो चुका है। सतलोक को यह संसार नहीं जानता। हे स्वामी जी! जब चौदह लोक नष्ट होंगे, तब आप कहाँ रहोगे? शरीर भी नष्ट होगा। कहाँ आपका मोहन मुरारी रहेगा?

हे स्वामी जी! सुनो, एक काल ब्रह्म की शक्ति है जो उसकी (अरधंगी) पत्नी प्रकति देवी

है। वह अनेकों लोकों को नष्ट कर देती है।

एक परम शक्ति सतपुरूष है। उसकी शरण में जो सतलोक में है, वह प्रलय में कभी नष्ट नहीं होता। उस शक्ति पर बार-बार कुर्बान। सतलोक में करोड़ों कष्ण यानि विष्णु, करोड़ों शंकर, करोड़ों ब्रह्मा, करोड़ों इन्द्र हैं यानि इन देवताओं जैसी शक्ति वाले सतलोक में सब हंस हैं। शिव, विष्णु तथा ब्रह्मा की आत्मा उसी सतपुरूष ने उत्पन्न की है। सतपुरूष मेरे स्वरूप जैसा है। उसका शरीर तेजपुंज का है। हे स्वामी जी! मैं सतपुरूष हूँ, बाकी झूठा शोर है। मैं शंख स्वर्गों से उत्तम धाम सतलोक में निवास करता हूँ।

हे कबीर जी! उस स्थान (परम धाम) को यदि एक बार दिखा दे तो मन शान्त हो जाएगा। मैं वर्षों से ध्यान योग अर्थात् हठयोग करता हूँ। मैं समाधिस्थ होकर आकाश में बहुत ऊपर तक सैर कर आता हूँ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है स्वामी जी! आप समाधिस्थ होइए।

वाणी नं. 529-541 में कमलों को हठयोग से खोलने की विधि बताई है। कहीं रामानंद को भ्रम न रह जाए कि कबीर जी को योगियों वाली क्रियाओं का ज्ञान नहीं है। सारा कुछ बताकर वाणी नं. 542 में कह दिया कि इस हठयोग से सतलोक नहीं जाया जा सकता। ज्यों का त्यों ही बैठे रहो। सामान्य तरीके से बैठे रहो। सब योग आसन त्याग दो। सच्चे नामों का जाप करो। सर्व सुख तथा मोक्ष मिलेगा।

स्वामी रामानन्द जी का हठयोग ध्यान (मैडिटेशन) करना नित्य का अभ्यास था तुरन्त ही समाधिस्थ हो गए। समाधि दशा में स्वामी जी की सूरति (ध्यान) त्रिवेणी तक जाती थी। त्रिवेणी पर तीन रास्ते हो जाते हैं। बाँया रास्ता धर्मराज के लोक तथा ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जी के लोकों तथा स्वर्ग लोक आदि को जाता है। दायाँ रास्ता अठासी हजार खेड़ों (नगरियों) की ओर जाता है। सामने वाला रास्ता ब्रह्म लोक को जाता है। वह ब्रह्मरंद्र भी कहा जाता है। स्वामी रामानन्द जी कई जन्मों से साधना करते हुए आ रहे थे। इस कारण से इनका ध्यान तुरन्त लग जाता था। बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी को ध्यान में आगे मिले तथा वहाँ का सर्व भेद रामानन्द जी को बताया। हे स्वामी जी! आप की भक्ति साधना कई जन्मों की संचित है। जिस समय आप शरीर त्याग कर जाओगे इस बाऐं रास्ते से जाओगे इस रास्ते में स्वचालित द्वार (एटोमैटिक खुलने वाले गेट) लगे है। जिस साधक की जिस भी लोक की साधना होती है। वह धर्मराय के पास जाकर अपना लेखा (Account) करवाकर इसी रास्ते से आगे चलता है। उसी लोक का द्वार अपने आप खुल जाता है। वह द्वार तुरन्त बन्द हो जाता है। वह प्राणी पुनः उस रास्ते से लौट नहीं सकता। उस लोक में समय पूरा होने के पश्चात् पुनः उसी मार्ग से धर्मराज के पास आकर अन्य जीवन प्राप्त करता है।

धर्मराय का लोक भी उसी बाई और जाने वाले रास्ते में सर्व प्रथम है। उस धर्मराज के लोक में प्रत्येक की भक्ति अनुसार स्थान तय होता है। आप (स्वामी रामानन्द) जी की भक्ति का आधार विष्णु जी का लोक है। आप अपने पुण्यों को इस लोक में समाप्त करके पुनः पथ्वी लोक पर शरीर धारण करोगे। यह हरहट के कूएं जैसा चक्र आपकी साधना से कभी समाप्त नहीं होगा। यह जन्म मत्यु का चक्र तो केवल मेरे द्वारा बताए तत्त्वज्ञान द्वारा ही समाप्त होना सम्भव है। परमेश्वर कबीर जी ने फिर कहा हे स्वामी जी! जो सामने वाला द्वार है यह ब्रह्मरन्द्र है। यह वेदों

में लिखे किसी भी मन्त्र जाप से नहीं खुलता यह तो मेरे द्वारा बताए सत्यनाम (जो दो मन्त्र का होता है एक ॐ मन्त्र तथा दूसरा तत् यह तत् सांकेतिक है वास्तविक नाम मन्त्र तो उपदेश लेने वाले को बताया जाएगा) के जाप से खुलता है। ऐसा कह कर परमेश्वर कबीर जी ने सत्यनाम (दो मन्त्रों के नाम) का जाप किया। तुरन्त ही सामने वाला द्वार (ब्रह्मरन्द्र) खुल गया। परमेश्वर कबीर जी अपने साथ स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को लेकर उस ब्रह्मरन्द्र में प्रवेश कर गए। पश्चात् वह द्वार तुरन्त बन्द हो गया। उस द्वार से निकल कर लम्बा रास्ता तय किया ब्रह्मलोक में गए आगे फिर तीन रास्ते हैं। बाई ओर एक रास्ता महास्वर्ग में जाता है। उस महास्वर्ग में नकली (Duplicate) सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोकों की रचना काल ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा से करा रखी है। प्राणियों को धोखा देने के लिए। उन सर्व नकली लोकों को दिखा कर वापस आए। दाई और सप्तपुरी, ध्रुव लोक आदि हैं। सामने वाला द्वार वहाँ जाता है जहाँ पर गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म अपनी योग माया से छुपा रहता है। वहाँ तीन स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान क्षेत्र है। जिसमें काल ब्रह्म तथा दुर्गा (प्रकति) देवी पति-पत्नी रूप में साकार रूप में रहते हैं। उस समय जिस पुत्र का जन्म होता है वह रजोगुण युक्त होता है। उसका नाम ब्रह्मा रख देता है उस बालक को युवा होने तक अचेत रखकर परवरिश करते हैं। युवा होने पर काल ब्रह्म स्वयं विष्णु रूप धारण करके अपनी नाभी से कमल का फूल प्रकट करता है। उस कमल के फूल पर युवा अवस्था प्राप्त होने पर ब्रह्मा जी को रख कर सचेत कर देता है। इसी प्रकार एक सतोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें दोनों (दुर्गा व काल ब्रह्म) पति-पत्नी रूप में रह कर अन्य पुत्र सतोगुण प्रधान उत्पन्न करते हैं। उसका नाम विष्णु रखते हैं। उसे भी युवा होने तक अचेत रखते हैं। शेष शय्या पर सचेत करते हैं। अन्य शेषनाग ब्रह्म ही अपनी शक्ति से उत्पन्न करता है। इसी प्रकार एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उस में वे दोनों (दुर्गा तथा काल ब्रह्म) पति-पत्नी व्यवहार से तमोगुण प्रधान पुत्र उत्पन्न करते हैं। उसका नाम शिव रखते हैं। उसे भी युवा अवस्था प्राप्त होने तक अचेत रखते हैं। युवा होने पर तीनों को सचेत करके इनका विवाह, प्रकति (दुर्गा) द्वारा उत्पन्न तीनों लड़कियों से करते हैं। इस प्रकार यह काल ब्रह्म अपना संष्टि चक्र चलाता है।

परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को वह रास्ता दिखाया तथा इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में फिर तीन रास्ते है बाई ओर फिर नकली सतलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी लोक की रचना की हुई है। दाई ओर बारह भक्तों का निवास स्थान बनाया है, जिनको अपना ज्ञान प्रचारक बनाकर जनता को शास्त्रविरूद्ध ज्ञान पर आधारित करवाता है। सामने वाला द्वार तप्त शिला की ओर जाता है। जहाँ पर यह काल ब्रह्म एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सुक्ष्म शरीरों को तपाकर उनसे मैल निकाल कर खाता है। उस काल ब्रह्म के उस लोक के ऊपर एक द्वार है जो परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सात शंख ब्रह्मण्डों में खुलता है। परब्रह्म के ब्रह्मण्डों के अन्तिम सिरे पर एक द्वार है जो सत्यपुरूष (परम अक्षर ब्रह्म) के लोक सत्यलोक की भंवर गुफा में खुलता है। फिर आगे सत्यलोक है जो वास्तविक सत्यलोक है। सत्यलोक में पूर्ण परमात्मा कबीर जी अन्य तेजोमय मानव सदश शरीर में एक गुबन्द (गुम्मज) में एक ऊँचे सिंहासन पर विराजमान हैं। वहाँ सत्यलोक की सर्व वस्तुऐं तथा सत्यलोक वासी सफेद प्रकाश युक्त हैं।

सत्यपुरूष के शरीर का प्रकाश अत्यधिक सफेद है। सत्यपुरूष के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश एक लाख सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के मिलेजुले प्रकाश से भी अधिक है।

परमेश्वर कबीर जी स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को साथ लेकर सत्यलोक में गए। वहाँ सर्व आत्माओं का भी मानव सदृश शरीर है। उनके शरीर का भी सफेद प्रकाश है। परन्तु सत्यलोक निवासियों के शरीर का प्रकाश सोलह सूर्यों के प्रकाश के समान है। बालक रूपधारी कविर्देव ने अपने ही अन्य स्वरूप पर चंवर किया। जो स्वरूप अत्यधिक तेजोमय था तथा सिंहासन पर एक सफेद गुबन्द में विराज मान था। स्वामी रामानन्द जी ने सोचा कि पूर्ण परमात्मा तो यह है जो तेजोमय शरीर युक्त है। यह बाल रूपधारी आत्मा कबीर यहाँ का अनुचर अर्थात् सेवक होगा। स्वामी रामानन्द जी ने इतना विचार ही किया था। उसी समय सिंहासन पर विराजमान तेजोमय शरीर युक्त परमात्मा सिंहासन त्यागकर खड़ा हो गया तथा बालक कबीर जी को सिंहासन पर बैठने के लिए प्रार्थना की नीचे से रामानन्द जी के साथ गया बालक कबीर जी उस सिंहासन पर विराजमान हो गए तथा वह तेजोमय शरीर धारी प्रभु बालक के सिर पर श्रद्धा से चंवर करने लगा। रामानन्द जी ने सोचा यह परमात्मा इस बच्चे पर चंवर करने लगा। यह बालक यहां का नौकर (सेवक) नहीं हो सकता। इतने में तेजोमय शरीर वाला परमात्मा उस बालक कबीर जी के शरीर में समा गया। बालक कबीर जी का शरीर उसी प्रकार उतने ही प्रकाश युक्त हो गया जितना पहले सिंहासन पर बैठे पुरूष (परमेश्वर) का था।

❖ वाणी नं. 555-567 का सरलार्थ :- इतनी लीला करके स्वामी रामानन्द जी की आत्मा को वापस शरीर में भेज दिया। महर्षि रामानन्द जी ने आँखे खोल कर देखा तो बालक रूपधारी परमेश्वर कबीर जी को सामने भी बैठा पाया। महर्षि रामानन्द जी को पूर्ण विश्वास हो गया कि यह बालक कबीर जी ही परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् वासुदेव (कुल का मालिक) है। दोनों स्थानों (ऊपर सत्यलोक में तथा नीचे पृथ्वी लोक में) पर स्वयं ही लीला कर रहा है। यही परम दिव्य पुरुष अर्थात् आदि पुरूष है। सत्यलोक में जहाँ पर यह परमात्मा मूल रूप में निवास करता है वह सनातन परमधाम है। परमेश्वर कबीर जी ने इसी प्रकार सन्त गरीबदास जी महाराज छुड़ानी (हरयाणा) वाले को सर्व ब्रह्मण्डों को प्रत्यक्ष दिखाया था। उनका ज्ञान योग खोल दिया था तथा परमेश्वर ने गरीबदास जी महाराज को स्वामी रामानन्द जी के विषय में बताया था कि किस प्रकार मैंने स्वामी जी को शरण में लिया था। महाराज गरीबदास जी ने अपनी अमृतवाणी में उल्लेख किया है।

तहाँ वहाँ चित चक्रित भया, देखि फजल दरबार। गरीबदास सिजदा किया, हम पाये दीदार।।
बोलत रामानन्द जी सुन कबिर करतार। गरीबदास सब रूप में तुमही बोलनहार।।
दोहु ठोर है एक तू, भया एक से दोय। गरीबदास हम कारणें उतरे हो मग जोय।।
तुम साहेब तुम सन्त हो तुम सतगुरु तुम हंस। गरीबदास तुम रूप बिन और न दूजा अंस।।
तुम स्वामी मैं बाल बुद्धि भर्म कर्म किये नाश। गरीबदास निज ब्रह्म तुम, हमरै दृढ विश्वास।।
सुन बे सुन से तुम परे, ऊरै से हमरे तीर। गरीबदास सरबंग में, अविगत पुरूष कबीर।।
कोटि–2 सिजदा किए, कोटि–2 प्रणाम। गरीबदास अनहद अधर, हम परसे तुम धाम।।
बोले रामानन्द जी, सुनों कबीर सुभान। गरीबदास मुक्ता भये, उधरे पिण्ड अरू प्राण।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ :- सत्यलोक में तथा काशी नगर में पृथ्वी पर दोनों स्थानों पर परमात्मा कबीर जी को देख कर स्वामी रामानन्द जी ने कहा है कबीर परमात्मा आप दोनों स्थानों पर लीला कर रहे हो। आप ही निज ब्रह्म अर्थात् गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरूष अर्थात् वास्तविक परमेश्वर तो क्षर पुरूष (काल ब्रह्म) तथा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) से अन्य ही है। वही परमात्मा कहा जाता है। जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण पोषण करता है वह परम अक्षर ब्रह्म आप ही हैं। आप ही की शक्ति से सर्व प्राणी गति कर रहे हैं। मैंने आप का वह सनातन परम धाम आँखों देखा है तथा वास्तविक अनहद धुन तो ऊपर सत्यलोक में है। ऐसा कह कर स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर के चरणों में कोटि-2 प्रणाम किया तथा कहा आप परमेश्वर हो, आप ही सतगुरु तथा आप ही तत्त्वदर्शी सन्त हो आप ही हंस अर्थात् नीर-क्षीर को भिन्न-2 करने वाले सच्चे भक्त के गुणों युक्त हो। कबीर भक्त नाम से यहाँ पर प्रसिद्ध हो वास्तव में आप परमात्मा हो। मैं आपका भक्त आप मेरे गुरु जी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे स्वामी जी ! गुरु जी तो आप ही रहो। मैं आपका शिष्य हूँ। यह गुरु परम्परा बनाए रखने के लिए अति आवश्यक है। यदि आप मेरे गुरु जी रूप में नहीं रहोगे तो भविष्य में सन्त व भक्त कहा करेंगे कि गुरु बनाने की कोई अवश्यकता नहीं है। सीधा ही परमात्मा से ही सम्पर्क करो। ''कबीर'' ने भी गुरु नहीं बनाया था।

हे स्वामी जी! काल प्रेरित व्यक्ति ऐसी-2 बातें बना कर श्रद्धालुओं को भक्ति की दिशा से भ्रष्ट किया करेंगे तथा काल के जाल में फाँसे रखेंगे। इसलिए संसार की दृष्टि में आप मेरे गुरु जी की भूमिका कीजिये तथा वास्तव में जो साधना की विधि मैं बताऊँ आप वैसे भक्ति कीजिए। स्वामी रामानन्द जी ने कबीर परमेश्वर जी की बात को स्वीकार किया। कबीर परमेश्वर जी एक रूप में स्वामी रामानन्द जी को तत्त्वज्ञान सुना रहे थे तथा अन्य रूप धारण करके कुछ ही समय उपरान्त अपने घर पर आ गए। क्योंकि वहाँ नीरू तथा नीमा अति चिन्तित थे। बच्चे को सकुशल घर लौट आने पर नीरू तथा नीमा ने परमेश्वर का शुक्रिया किया। अपने बच्चे कबीर को सीने से लगा कर नीमा रोने लगी तथा बच्चे को अपने पति नीरू के पास ले गई। नीरू ने भी बच्चे कबीर से प्यार किया। नीरू ने पूछा बेटा! आपको उन ब्राह्मणों ने मारा तो नहीं? कबीर जी बोले नहीं पिता जी! स्वामी रामानन्द जी बहुत अच्छे हैं। मैंने उनको गुरु बना लिया है। उन्होंने मुझको सर्व ब्राह्मण समाज के समक्ष सीने से लगा कर कहा यह मेरा शिष्य है। आज से मैं सर्व हिन्दु समाज के सर्व जातियों के व्यक्तियों को शिष्य बनाया करूँगा। माता-पिता (नीरू तथा नीमा) अति प्रसन्न हुए तथा घर के कार्य में व्यस्त हो गए।

स्वामी रामानन्द जी ने कहा हे कबीर जी! हम सर्व की बुद्धि पर पत्थर पड़े थे आपने ही अज्ञान रूपी पत्थरों को हटाया है। बड़े पुण्यकर्मों से आपका दर्शन सुलभ हुआ है।

(यह शब्द कबीर सागर में अध्याय अगम निगम बोध के पृष्ठ 38 पर लिखा है।)

मेरा नाम कबीरा हूँ जगत गुरू जाहिरा।(टेक)

तीन लोक में यश है मेरा, त्रिकुटी है अस्थाना। पाँच–तीन हम ही ने किन्हें, जातें रचा जिहाना।।
गगन मण्डल में बासा मेरा, नौवें कमल प्रमाना। ब्रह्म बीज हम ही से आया, बनी जो मूर्ति नाना।।
संखो लहर मेहर की उपजैं, बाजै अनहद बाजा। गुप्त भेद वाही को देंगे, शरण हमरी आजा।।

भव बंधन से लेऊँ छुड़ाई, निर्मल करूं शरीरा। सुर नर मुनि कोई भेद न पावै, पावै संत गंभीरा।।
बेद–कतेब में भेद ना पूरा, काल जाल जंजाला। कह कबीर सुनो गुरू रामानन्द, अमर ज्ञान उजाला।।

''मृत गाय को जीवित करना, काजी-मुल्ला को उपदेश देना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 568-619 :-**

काशी जोरा दीन का, काजी षिलस करंत। गरीबदास उस सरे में, झगरे आंनि परंत।।568।।
सुन काजी राजी नहीं, आपै अलह खुदाय। गरीबदास किस हुकम सैं, पकरि पछारी गाय।।569।।
गऊ हमारी मात है, पीवत जिसका दूध। गरीबदास काजी कुटिल, कतल किया औजूद।।570।।
गऊ आपनी अमां है, ता पर छुरी न बाहि। गरीबदास घृत दूध कूं, सबही आत्म खांहि।।571।।
ऐसा खाना खाईये, माता कै नहीं पीर। गरीबदास दरगह सरैं, गल में पड़ै जंजीर।।572।।
काजी पटकि कुरांन कूं, ऊठि गये शिर पीट। गरीबदास जुलहै कही, बानी अकल अदीठ।।573।।
जुलहे दीन बिगारिया, काजी आये फेर। गरीबदास मुल्ला मुरग, अपनी अपनी बेर।।574।।
मुरगे से मुल्लां भये, मुल्लां फेरि मुरग। गरीबदास दोजख धसैं, पाया नहीं सुरग।।575।।
काजी कलमा पढत है, बांचै फेरि कुरांन। गरीबदास इस जुल्म सैं, बूडैं दहूँ जिहांन।।576।।
दोनूं दीन दया करौ, मानौं बचन हमार। गरीबदास गऊ सूर में, एकै बोलन हार।।577।।
सूर गऊ में एक हैं, गाय खावौ न सूर। गरीबदास सूर गऊ, दोऊ का एकै नूर।।578।।
मुल्लां से पंडित भये, पंडित से भये मुल्ल। गरीबदास तजि बैर भाव, कीजै सुल्लम सुल्ल।।579।।
हिंदू झटकै मारहीं, मुस्लम करै हलाल। गरीबदास दोऊ दीन का, होसी हाल बिहाल।।580।।
बकरी कुकडी खा गये, गऊ गदहरा सूर। गरीबदास उस भिस्त में, तुम सें अलहा दूर।।581।।
घोड़े ऊंट अटक नहीं, तीतर क्या खरगोश। गरीबदास ऐसे कुकर्मी सैं, अलहा है सौ कोस।।582।।
भिस्त भिस्त तुम क्या करौ, दोजख जरिहौ अंच। गरीबदास इस खून सैं, अलह नाहीं बंच।।583।।
रब की रूह मारते, खाते मोरै मोर। गरीबदास उस नरक में, नहीं खूनी कूं ठौर।।584।।
सुनि काजी बाजी लगी, जो जीतै सो जाय।गरीबदास उस नरक कूं, बिन खूनी को खाय।।585।।
सुनि काजी बाजी लगी, पासा सनमुख डारि। गरीबदास जुग बांधि ले, नहीं मरत हैं सारि।।586।।
सुनि काजी गदह गति, पान लदै खर पीठ। गरीबदास उस वस्तु बिन, खाय गदहरा बीठ।।587।।
मुल्लां कूकै बंग दे, सुनि काफर मुसकंड। गरीबदास मुरगे सरै, खात गोल गिर्द अंड।।588।।
सुनि मुल्ला उपदेश तूं, कुफर करै दिन रात। गरीबदास हक बोलता, मारै जीव अनाथ।।589।।
मुरगे शिर कलंगी हुती, चिसमें लाल चिलूल। गरीबदास उस कलंगी का, कहा गया वह फूल।।590।।
सुनि मुल्ला माली अलह, फूल रूप संसार। गरीबदास गति एक सब, पान फूल फल डार।।591।।
करौ नसीहत दूर लग, दरगह पड़िसी न्याव। गरीबदास काजी कहै, करबे नांन पुलाव।।592।।
काजी काढि कतेब कूं, जोरा बड़ा हजूम। गरीबदास गल काटहीं, फिर खाते देदे गूम।।593।।
मांस कटै घर घर बटै, रूह गई किस ठौर। गरीबदास उस दरबार में, होय काजी बड़ गौर।।594।।
सुनि काजी कलिया किया, जाड़ स्वादरे जिंद। गरीबदास दरगाह में, पड़ै गले बिच फंद।।595।।
बासमती चावल पकै, घृत खांड टुक डारि। गरीबदास कर बंदगी, कूड़े काम निवारि।।596।।
फुलके धोवा डाल करि, हलवा रोटी खाय। गरीबदास काजी सुन, मिटि मांस न पकाय।।597।।

रोजे रखै और खूनि करे, फिर तसबी ले हाथ। गरीबदास दरगह सरै, बौहत करी तैं घात।।598।।
शाह सिकंदर के गये, काजी पटकि कुरांन। गरीबदास जुलहदी पर, हो हैं खैंचातान।।599।।
तोरा सरा उठा दिया, काजी बोले यौं। गरीबदास पगड़ी पटकि, अलख अलाह मैं हौं।।600।।
दश अहदी तलबां हुई, पकरि जुलहदी ल्याव। गरीबदास उस कुटिन कौ, मारत नांही संकाव।।601।।
अहदी ले गये बांधि करि, शाह सिकंदर पास। गरीबदास काजी मुल्लां, पगरी बहैं आकाश।।602।।
काजी पंच हजार हैं, मुल्लां पीटैं शीश। गरीबदास योह जुलहदी, काफर बिसवे बीस।।603।।
मिहर दया इस कै नहीं, मट्टी मांस न खाय। गरीबदास मांस पकाओ, मोमन ल्योह बुलाय।।604।।
मोमन बी पकरे गये, संग कबीरा माय। गरीबदास उस सरे में, पकरि पछारी गाय।।605।।
शाह सिकंदर बोलता, कहि कबीर तूं कौंन। गरीबदास गुजरै नहीं, कैसैं बैठ्या मौंन।।606।।
हमहीं अलख अल्लाह हैं, कुतब गोस अरू पीर। गरीबदास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।607।।
मैं कबीर सरबंग हूँ, सकल हमारी जाति। गरीबदास पिंड प्राण में, जुगन जुगन संग साथ।।608।।
गऊ पकरि बिसमिल करी, दरगह खंड अजूद। गरीबदास उस गऊ का, पीवै जुलहा दूध।।609।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिवाई बेगि। गरीबदास दूझन लगी, दूध भरी है देग।।610।।
योह परचा प्रथम भया, शाह सिकंदर पास। गरीबदास काजी मुलां, हो गये बौहत उदास।।611।।
काशी उमटी सब खड़ी, मोमन करी सलाम। गरीबदास मुजरा करै, माता सिहर अलांम।।612।।
तांना बांना ना बुनैं, अधरि चिसम जोडंत। गरीबदास बौहुरूप धरि, मोर्‌या नहीं मुरंत।।613।।
शाह सिकंदर देखि करि, बौहत भये मुसकीन। गरीबदास गत शेरकी, थरकैं दोनूं दीन।।614।।
काजी मुल्लां उठि गये, शाह कदम जदि लीन। गरीबदास उस जुलहदी की, ना कोई शरबरि कीन।।615।।
खड़े रहे ज्यूं खंभ गति, शाह सिकंदर लोटि। गरीबदास जुलहा कहै, ल्याहौ कित है गोठि।।616।।
अगरम मगरम छाड़ि दे, मान हमारी सीख। गरीबदास कहै शाह सैं, बंक डगर है लीक।।617।।
काजी मुल्लां भगि गये, घातन पोतन लादि। गरीबदास गति को लखै, जुलहा अगम अगाध।।618।।
चले कबीर अस्थान कूं, पालकीयों में बैठि। गरीबदास काशी तजी, काजी मुल्लां ऐंठि।।619।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 568-619 का सरलार्थ :-**

सरलार्थ :- विश्व के सब प्राणी परमात्मा कबीर जी की आत्मा हैं। जिनको मानव (स्त्री-पुरूष) का जन्म मिला हुआ है, वे भक्ति के अधिकारी हैं। काल ब्रह्म यानि ज्योति निरंजन ने सब मानव को काल जाल में रहने वाले कर्मों पर दृढ़ कर रखा है। गलत व अधूरा अध्यात्म ज्ञान अपने दूतों (काल ज्ञान संदेशवाहकों) द्वारा जनता में प्रचार करवा रखा है। पाप कर्म बढ़ें, धर्म के नाम पर ऐसे कर्म प्रारंभ करवा रखे हैं। जैसे हिन्दु श्रद्धालु भैरव, भूत, माता आदि की पूजा के नाम पर बकरे-मुर्गे, झोटे (भैंसे) आदि-आदि की बलि देते हैं जो पाप के अतिरिक्त कुछ नहीं है। इसी प्रकार मुसलमान अल्लाह के नाम पर बकरे, गाय, मुर्गे आदि-आदि की कुर्बानी देते हैं जो कोरा पाप है। हिन्दु तथा मुसलमान, सिख तथा इसाई व अन्य धर्म व पंथों के व्यक्ति कबीर परमात्मा (सत पुरूष) के बच्चे हैं जो काल द्वारा भ्रमित होकर पाप इकट्ठे कर रहे हैं। इन वाणियों में कबीर जी ने विशेषकर अपने मुसलमान बच्चों को काल का जाल समझाया है तथा यह पाप न करने की राय दी है। परंतु काल ब्रह्म द्वारा झूठे ज्ञान में रंगे होने के कारण मुसलमान अपने खालिक कबीर जी के शत्रु बन गए। काल

ब्रह्म प्रेरित करके झगड़ा करवाता है। कबीर परमात्मा मुसलमान धर्म के मुख्य कार्यकर्ता काजियों तथा मुल्लाओं को पाप से बचाने के लिए समझाया करते थे। कहा करते थे कि काजी व मुल्ला! आप गाय को मारकर पाप के भागी बन रहे हो। आप बकरा, मुर्गा मारते हो, यह भी महापाप है। गाय के मारने से (अल्लाह) परमात्मा खुश नहीं होता, उल्टा नाराज होता है। आपने किसके आदेश से गाय को मारा है?

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 569-572 :-**

सुन काजी राजी नहीं, आपै अलह खुदाय। गरीबदास किस हुकम सैं, पकरि पछारी गाय।।569।।
गऊ हमारी मात है, पीवत जिसका दूध। गरीबदास काजी कुटिल, कतल किया औजूद।।570।।
गऊ आपनी अमां है, ता पर छुरी न बाहि। गरीबदास घृत दूध कूं, सबही आत्म खांहि।।571।।
ऐसा खाना खाईये, माता कै नहीं पीर। गरीबदास दरगह सरैं, गल में पड़ै जंजीर।।572।।

❖ **सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने काजियों व मुल्लाओं से कहा कि गऊ हमारी माता है जिसका सब दूध पीते हैं। हे (कुटिल) दुष्ट काजी! तूने गाय को काट डाला।**

❖ **गाय आपकी तथा अन्य सबकी (अमां) माता है क्योंकि जिसका दूध पीया, वह माता के समान आदरणीय है। इसको मत मार। इसके घी तथा दूध को सब धर्मों के व्यक्ति खाते-पीते हैं।**

❖ **ऐसे खाना खाइए जिससे माता को (गाय को) दर्द न हो। ऐसा पाप करने वाले को परमात्मा के (दरगह) दरबार में जंजीरों से बाँधकर यातनाऐं दी जाऐंगी।**

❖ **परमात्मा कबीर जी के हितकारी वचन सुनकर काजी तथा मुल्ला कहते हैं कि हाय! हाय! कैसा अपराधी है? माँस खाने वालों को पापी बताता है। सिर पीटकर यानि नाराज होकर चले गए। फिर वाद-विवाद करने के लिए आए तो परमात्मा कबीर जी ने कहा कि हे काजी तथा मुल्ला! सुनो, आप मुर्गे को मारते हो तो पाप है। आगे किसी जन्म में मुर्गा तो काजी बनेगा, काजी मुर्गा बनेगा, तब वह मुर्गे वाली आत्मा मारेगी। स्वर्ग नहीं मिलेगा, नरक में जाओगे।**

❖ **काजी कलमा पढ़त है यानि पशु-पक्षी को मारता है। फिर पवित्र पुस्तक कुरान को पढ़ता है। संत गरीबदास जी बता रहे हैं कि कबीर परमात्मा ने कहा कि इस (जुल्म) अपराध से दोनों जिहांन बूड़ेंगे यानि पथ्वी लोक पर भी कर्म का कष्ट आएगा। ऊपर नरक में डाले जाओगे।(576)**

❖ **कबीर परमात्मा ने कहा कि दोनों (हिन्दु तथा मुसलमान) धर्म, दया भाव रखो। मेरा वचन मानो कि सूअर तथा गाय में एक ही बोलनहार है यानि एक ही जीव है। न गाय खाओ, न सूअर खाओ।**

❖ **आज कोई पंडित के घर जन्मा है तो अगले जन्म में मुल्ला के घर जन्म ले सकता है। इसलिए आपस में प्रेम से रहो। हिन्दु झटके से जीव हिंसा करते हैं। मुसलमान धीरे-धीरे जीव मारते हैं। उसे हलाल किया कहते हैं। यह पाप है। दोनों का बुरा हाल होगा।**

❖ **बकरी, मुर्गी (कुकड़ी), गाय, गधा, सूअर को खाते हैं। भक्ति की (रीस) नकल भी करते हैं। ऐसे पाप करने वालों से परमात्मा (अल्लाह) दूर है यानि कभी परमात्मा नहीं**

मिलेगा। नरक के भागी हो जाओगे। पाप ना करो।

घोड़े, ऊँट, तीतर, खरगोश तक खा जाते हैं और भक्ति बंदगी भी करते हैं। ऐसे (कुकर्मी) पापी से (अल्लाह) परमात्मा सौ कोस (एक कोस तीन किलोमीटर का होता है) दूर है।

❖ (भिस्त-भिस्त) स्वर्ग-स्वर्ग क्या कह रहे हो? (दोजख) नरक की आग में जलोगे।

❖ माँस खाते हो, जीव हिंसा करते हो, फिर भक्ति भी करते हो। यह गलत कर रहे हो। परमात्मा के दरबार में गले में फंद पड़ेगा यानि दण्डित किए जाओगे।(586-595)

❖ अच्छा शाकाहार करो। बासमती चावल पकाओ। उसमें घी तथा खांड (मीठा) डालकर खाओ और भक्ति करो। (कूड़े काम) बुरे (पाप) कर्म त्याग दो। (फुलके) पतली-पतली छोटी-छोटी रोटियों को फुल्के कहते हैं। ऐसे फुल्के बनाओ। धोई हुई दाल पकाओ। हलवा, रोटी आदि-आदि अच्छा निर्दोष भोजन खाओ। हे काजी! सुनो, माँस ना खाओ। परमात्मा की साधना करने के उद्देश्य से (रोजे) व्रत रखते हो, (तसबी) माला से जाप भी करते हो। फिर खून करते हो यानि गाय, मुर्गी-मुर्गा, बकरा-बकरी मारते हो। यह परमात्मा के साथ धोखा कर रहे हो। परमात्मा कबीर जी ने सद् उपदेश दिया। परंतु काजी तथा मुल्लाओं ने उसका दुःख माना। {कहते हैं कि कहैं भली माने बुरी, यही परिक्षा नीच। जितना धोवे कच्ची भींत को उतनी मांचे कीच। अर्थात् दुष्ट इंसान को अच्छी शिक्षा देने से भी वह उसे बुरी मानता है। जैसे कच्ची ईंटों से बनी दिवार को जितना धोया जाए, उसमें कीचड़ ही बनता जाता है।}(596-598)

❖ उस दिन दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी (बहलोल लोधी का पुत्र) काशी नगर में आया हुआ था। पाँच-दस हजार मुसलमान मिलकर सिकंदर लोधी के पास विश्रामगृह में गए। काजियों ने कहा कि हे जहांपनाह (जगत के आश्रय)! हमारे धर्म की तो बेइज्जती कर दी। हम तो कहीं के नहीं छोड़े। एक कबीर नाम का जुलाहा काफिर हमारे धर्म के धार्मिक कर्मों को नीच कर्म बताता है। अपने को (अलख अल्लाह) सातवें आसमान वाला अदृश्य परमात्मा कहता है।

❖ परमात्मा कबीर जी के साथ खैंचातान (परेशानी) शुरू हुई।

❖ सिकंदर राजा के आदेश से दस सिपाही परमात्मा कबीर जी को बाँधकर हथकड़ी लगाकर लाए। काजी-मुल्ला की खुशी का ठिकाना नहीं रहा। गर्व से पगड़ी ऊँची कर ली। बोले कि हे राजन! यह जुलाहा पूर्ण रूप से काफिर (दुष्ट) है। यह माँस भी नहीं खाता। इसके हृदय में दया नाम की कोई वस्तु नहीं है। इसकी माता को तथा इसके पिता को भी पकड़कर लाया जाए।(604)

❖ मोमिन (मुसलमान) नीरू को भी पकड़ लिया। माता नीमा को भी पकड़ लिया। उन दोनों को भी वहीं राजा के पास ले आए। एक गाय को काट दिया।(605)

❖ राजा सिकंदर बोला कि हे काफिर! तू अपने को (अल्लाह) परमात्मा कहता है। यदि परमात्मा है तो इस दो टुकड़े हुई गाय को जीवित कर दे। हमारे नबी मुहम्मद ने मृत गाय को जीवित किया था। जीवित कर, नहीं तो तेरे टुकड़े कर दिए जाऐंगे। अब चुपचाप क्यों बैठा है? दिखा अपनी शक्ति।(606)

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 607-610 :-**

हमहीं अलख अल्लाह हैं, कुतब गोस अरू पीर। गरीबदास खालिक धनी, हमरा नाम कबीर।।607।।
मैं कबीर सरबंग हूँ, सकल हमारी जाति। गरीबदास पिंड प्राण में, जुगन जुगन संग साथ।।608।।
गऊ पकरि बिसमिल करी, दरगह खंड अजूद। गरीबदास उस गऊ का, पीवै जुलहा दूध।।609।।
चुटकी तारी थाप दे, गऊ जिवाई बेगि। गरीबदास दूझन लगी, दूध भरी है देग।।610।।

❖ **सरलार्थ :- कबीर परमात्मा बोले कि मैं अदंश परमात्मा हूँ। मैं ही संत तथा सतगुरू हूँ। मेरा नाम कबीर (अल्लाह अकबर) है। मैं (खालिक) संसार का मालिक (धनी) हूँ। मैं कबीर सर्वव्यापक हूँ।**

❖ **जो गाय मार रखी थी, उसके गर्भ का बच्चा व गाय के दो-दो टुकड़े हुए पड़े थे। परमात्मा कबीर जी ने हाथ से थपकी मारकर दोनों माँ-बच्चे को जीवित कर दिया। दूध की बाल्टी भर दी। कबीर जी ने वह दूध पीया तथा कहा :-**

❖ **पढ़ें राग बिलावल का शब्द नं. 12 :-**

★दरदबंद दरबेश है,बे दरद कसाई। संत समागम किजिये तज लोक बड़ाई।।टेक।। डिंभी डिंभ न छाड़हीं, मरहट के भूता। घर घर द्वारै फिरत हैं, कलियुग के कूता।।1।। डिंभ करैं डूंगर चढैं, तप होम अंगीठी। पंच अग्नि पाखंड है, याह मुक्ति बसीठी।।2।। पाती तोरे क्या हुवा, बहु पान झरोरे। तुलसी बकरा खा गया, ठाकुर क्या बौरे।।3।। पीतल ही का थाल है, पीतल का लोटा। जड़ मूरत कूं पूजते, आवैगा टोटा।।4।। पीतल चमचा पूजिये, जो खान परोसै। जड़ मूरत किस काम की, मत रहा भरोसै।।5।काशी गया प्रयाग रे, हरि पैडी न्हाये। द्वारामती दर्शन किये, बौह दाग दगाये।।6।।इन्द्र दौंन अस्नान रे, कर पुष्कर परसे। द्वादस तिलक बनाय कर, बहु चंदन चरचे।।7।। अठसठ तीरथ सब किये, बिंद्राबन फेरी। नाम बिना खुल्हे नहीं, दिव्य दृष्टि अंधेरी।।8।। सतगुरु भेद लखाइया, निज नूर निशानी। कहता दास गरीब है, छूटै सो प्रानी।।9।।12।।

❖ **सिकंदर राजा को यह प्रथम (परिचय) चमत्कार दिखाया था यानि अपनी शक्ति का परिचय दिया था। काजी तथा मुल्ला उदास हो गए। उनकी नानी-सी मर गई। हजारों दर्शक शहर निवासी यह खड़े देख रहे थे। माता तथा पिता को धन्य-धन्य कहने लगे कि धन्य है तुम्हारा पुत्र कबीर।**

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 613-619 का सरलार्थ :-

❖ **कबीर परमात्मा जुलाहे का कार्य करता था। परंतु उस दिन जनता को पता चला कि यह बहुत सिद्धि वाला है। परमात्मा कबीर जी विशेष मुद्रा बनाए खड़े थे। उनका चेहरा सिंह (शेर) की तरह दिखाई दे रहा था। यह देखकर राजा सिकंदर बहुत आधीन हो गया। कबीर परमात्मा के चरणों में गिर गया। कबीर परमात्मा बोले कि लाओ कहाँ है गाय का माँस? परमात्मा कबीर खम्बे की तरह अडिग खड़े रहे। सिकंदर बादशाह चरणों में लेट गया।**

❖ **कबीर परमात्मा जी ने कहा कि हे राजन! अगर-मगर त्यागकर सीधे मार्ग चलो। अपना कल्याण करवाओ। पाप न करो। जब राजा सिकंदर ने परमात्मा कबीर जी के चरणों में लेटकर प्रणाम किया तो काजी-मुल्ला भाग गए। अहंकार में सड़ रहे थे। परमात्मा सामने था। उससे द्वेष कर रहे थे। राजा सिकंदर ने परमात्मा कबीर जी तथा उसके मुँहबोले**

माता-पिता (नीरू-नीमा) को पालकियों में बैठाकर सम्मान के साथ उनके घर भेजा। काजी-मुल्ला (ऐंठ) अकड़कर यानि नाराज होकर चले गए। फिर मौके की तलाश करने लगे कि किसी तरह सिकंदर राजा के समक्ष कबीर को नीचा दिखाया जाए।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 620-648 :-**

तोरा सरा उठा दिया, सूने मंदर तास। गरीबदास उस शाह के, काजी आनें पास।।620।।
काजी मुल्लां यौं कहैं, कबले जहांपनाह। गरीबदास उस जुलहदी कूं, मारे मूंठि चलाय।।621।।
शहातकी एलम करै, मारै मूंठि अचांन। गरीबदास उस जुलहदीकै, आगै मरि गया श्वान।।622।।
श्वान मुवा करुणा करी, पाकरि कान उठाय। गरीबदास सुनि मूंठि तूं, शाहतकी कै जाय।।623।।
जो धारै सोई लहै, मूंठि लगी तिस शीश। गरीबदास शाहतकी तो, मरि गये बिसवेबीस।।624।।
काजी मुल्लां फिर गये,शाह सिकंदर पास। गरीबदास उस पीरकी, मजल धरौ नैं ल्हाश।।625।।
किन मार्या कैसैं मुवा, कहि समझावो मोहि। गरीबदास उस जुलहदी की, गरदन बाहौ लोह।।626।।
फिरि दूज अहदी गये, पकरि मंगाया बेग। गरीबदास माँ यौं कहैं, दूध भरी क्यौं देग।।627।।
काजी मुल्लां सब कहैं, मारि मारि तूं मारि। गरीबदास उस जुलहदी की, गरदन परि तरवार।।628।।
शाह सिकंदर कोपियां, नयन भये बिकराल। गरीबदास शाहतकी का, योहि जुलहदी काल।।629।।
घोर खुदै पातिशाह जिदै, तैं मारी है मूंठि। गरीबदास कुछ कसर करि, चले जुलहदी ऊठ।।630।।
काजी मुल्लां बांह घति, लगी गर्दनी पांच। गरीबदास काजी पर्या, निकलि गई जहां कांच।।631।।
मार्या तुक्का मुगलकौं, लग्या जुलहदी हीक। गरीबदास वह मुगल उत, पर्या उलटि दो बीक।।632।।
शाह सिकंदर उठि खड़े, कदम पोस कुरबांन। गरीबदास मंजन महल, भृकुटि में शशि भान।।633।।
बकसौ मोरे प्रान कौ, तुम अलह की जाति। गरीबदास शाहतकी कूं, उठते केतीक बात।।634।।
शाहतकी चूतड़ पग लग्या, बैठ्या हो गया बेग। गरीबदास उस मुगल कै, तुकेही का नेग।।635।।
काजी खिलस उठाय दे, तजि रोजे की रीत। गरीबदास अल्लह भजौ, समय जायगा बीत।।636।।
काजी राजी क्यौं हुवा, हती अलह की रूह। गरीबदास छूटै नहीं, लेखा दूहबर दूह।।637।।
सुनि मुल्लां तूं मिलहगा, उस दोजखकै मांहि। गरीबदास लख अरज करि, मुल्लां, छुटै नांहि।।638।।
लाख अरज मुल्लां करै, काजी करि है कोटि। गरीबदास कैसै बचै, जो खाते हैं गोठि।।639।।
लाख अरज मुल्लां करै, काजी करि है कोटि। गरीबदास दरम्यांन को, निकले सारे खोटि।।640।।
लाख अरज मुल्लां करै, काजी करि है कोड़ि। गरीबदास वहाँ कोसंगी, नहीं झोटे बकरे तोड़ि।।641।।
कोटि अरज मुल्लां करै, काजी करै अरब। गरीबदास ग्याभन कटी, निकलि परे गरब।।642।।
एक ममड़ी का खून है, एक बच्चे का ब्यांत। गरीबदास कैसै बचै, खाय गये स्यौं आंत।।643।।
काजी पढै कुरान क्या, मुझै अंदेशा और। गरीबदास उस भिस्त में, नहीं खूनी को ठौर।।644।।
भिस्त भिस्त तूं क्या करै, दोजख डुबोया दीन। गरीबदास काजी मुल्लां, और ब्राह्मण, दोषी हैं ये तीन।।645।।
ब्राह्मण हिन्दू देव है, मुल्लां मुसलका पीर। गरीबदास उस भिस्त में, दोयौं की तकसीर।।646।।
एक काजी एक पण्डिता, डोबि दिये दहूं दीन। गरीबदास बिधि भेद सुनि, खाते हिन्दू सीन।।647।।
मुसलमानकूं गाय भखी, हिन्दू खाया सूर। गरीबदास दहूं दीनसैं, राम रहीमा दूर।।648।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 620-635 का सरलार्थ :- इस घटना से अपनी अधिक बेइज्जती (Insult) मानकर काजी-पंडित राजा से रूष्ट होकर शहर त्यागने की धमकी देकर**

चलने लगे और कहा कि यह जंत्र-मंत्र जानता है। अगले दिन जब राजा सिकंदर के गुरू शेखतकी को पता चला तो अपनी करामात दिखाने के लिए कबीर जी को आते देखकर शेखतकी ने जंत्र-मंत्र करके मूठ छोड़ी। (मूठ एक आध्यात्मिक शक्ति होती है जो तांत्रिक लोग प्रयोग करते हैं जो जान तक ले लेती है।) उस मूठ (जंत्र-मंत्र) ने कबीर जी पर तो कार्य किया नहीं क्योंकि वे तो परमात्मा हैं, सामने एक कुत्ते पर लगी। वह कुत्ता मर गया। परमेश्वर कबीर जी ने उस कुत्ते का कान पकड़ा और कहा कि चल उठ। कुत्ता उठकर दौड़ गया और उस मूठ से कहा कि तू जिसने छोड़ी थी, उसके पास जा। परमेश्वर कबीर जी के कहते ही वह शक्ति उल्टी शेखतकी को लगी। शेखतकी की मत्यु हो गई। काजियों ने जाकर राजा सिकंदर लोधी को बताया कि आपके पीर शेखतकी को कबीर जी ने मार दिया है। उसका अंतिम संस्कार कराओ। यह बात सुनकर सिकंदर क्रोधित होकर बोला, ''लाओ कबीर को पकड़कर।'' कबीर जी को लाया गया। आँखें लाल करके सिकंदर लोधी ने राजा ने कहा कि तूने शेखतकी को मारा है। उपस्थित काजी व मुसलमान जनता ने कहा कि कबीर जुलाहे की तलवार से गर्दन काट दो। परमेश्वर कबीर जी उठकर चल पड़े तो काजी तथा मुल्ला ने परमेश्वर की बांह (बाजुओं) को पकड़ लिया। परमेश्वर कबीर जी ने काजी को पाँच गर्दनी (सिर से टक्कर) मारी। पाँच टक्कर लगने से काजी गिर गया तथा उसकी गुदा बाहर को निकल गई। (काँच्य निकल गयी) मुल्ला ने कबीर जी को तुक्का (लात से ठोकर = पैर से ठोकर) मारा तो वह स्वयं ही दो बीक (कदम = दस फुट) दूर जा गिरा। सिकंदर राजा को परमेश्वर कबीर जी के मस्तिक में दोनों सेलियों के बीच (भकुटी) में सूर्य तथा चन्द्रमा चमकते दिखाई दिए। राजा ने उठकर परमात्मा कबीर जी के कदम छूए तथा कहा कि आप परमात्मा का स्वरूप (अल्लाह की जात) हो। कबीर जी ने मत शेखतकी के चुतड़ों पर तुक्का (लात) मारा। उसी समय शेखतकी पीर जीवित हो गया। परमेश्वर कबीर जी ने उपस्थित मुसलमान तथा हिन्दु जनता को पुनः सत्य उपदेश दिया। बहुतों ने कबीर जी से दीक्षा ली, परंतु जो गुरू पद पर थे तथा जो अपनी रोजी-रोटी (निर्वाह) जनता को भ्रमित करके चला रहे थे, वे नहीं माने। कबीर जी की मुँह बोली माता श्रीमति नीमा ने कहा, हे बेटा कबीर! तूने गाय तो जीवित कर दी थी, परंतु दूध निकालने की क्या आवश्यकता थी। उसी समय उठकर क्यों नहीं चल पड़ा? माता समझा रही थी कि ऐसे राक्षस स्वभाव के व्यक्ति के पास अधिक समय नहीं लगाना चाहिए।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 636-648 का सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी का उद्देश्य था कि हिन्दु तथा मुसलमान सब मेरे बच्चे हैं। इनको काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) भ्रमित कर रहा है। मेरी ही आत्माओं को मेरे से भिड़ा रहा है। मेरा उद्देश्य इनको पाप से बचाना है। इसलिए बार-बार यही कहा है कि हे काजी! गलत साधना त्याग दो। रोजा ना रखो। परमात्मा की सच्ची साधना करो। मानव जन्म का समय हाथ से छूट जाएगा। फिर नरक में डाला जाएगा। हे काजी! आपने परमात्मा की (रूह) आत्मा (गाय या अन्य जीव) मार दी। वह आपसे (राजी) प्रसन्न कैसे होगा? परमात्मा के दरबार में लेखा होगा। वहाँ आपका पाप सामने आएगा। पाप ना कर। परमात्मा के दरबार में जब पाप करने वाले का हिसाब होगा,

उस समय चाहे करोड़, अरब-खरब अर्ज क्षमा करने के लिए करना, क्षमा नहीं होगे। काजी तथा मुल्ला व जो अन्य पाप करते हैं, जीव हिंसा करते हैं, नरक में डाले जाऐंगे। सब (खोट) कसूर सामने रखे जाऐंगे। काजी, मुल्ला तथा पंडित जो दोनों धर्मों के प्रचारक हैं, ये तीनों महादोषी ठहराए जाऐंगे। काजी-मुल्ला ने गर्भ वाली गाय मार दी। उसमें गर्भ मरा, वह गाय मरी। गाय बच्चा उत्पन्न करती है, उसे ब्यांत कहते हैं। एक ब्यांत में आठ-नौ महीने दूध देती है। एक बच्चा देती है। घी-दूध खाते। माँस खाकर पाप के भागी बन गए। कुछ तो विचार करो। पवित्र पुस्तक कुरान को पढ़ते हो। पाप साथ-साथ करते हो। यह भक्ति नहीं है। धोखा हो रहा है। (बहीसत) स्वर्ग-स्वर्ग क्या करते हो? नरक में जाओगे। स्वर्ग में खूनी को जगह नहीं है। ब्राह्मण तो हिन्दुओं का (देव) देवता है, मुल्ला मुसलमानों का (पीर) मार्गदर्शक है। परमात्मा के दरबार में दोनों का दोष साबित होगा। ब्राह्मण शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करते व करवाते हैं जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23 में मना किया है। इसलिए दोषी हैं। देवी को बलि के लिए बकरा, झोटा काटकर चढ़ाते हैं। इसलिए भी ब्राह्मण यानि गुरू दोषी है। एक काजी ने तथा एक पंडित (गुरू) ने दोनों धर्मों को डुबो दिया। हिन्दु सूअर का माँस खाते हैं, मुसलमान गाय का। दोनों से राम कहो चाहे रहीम, बहुत दूर है यानि परमात्मा तो ऐसे व्यक्तियों से सौ कोस (तीन सौ किलोमीटर) दूर है।

''सब पंथों के हिन्दुओं को भक्ति-शक्ति में कबीर जी द्वारा पराजित करना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 649-702 :-**

पंडित सिमटे पुरीके, काजी करी फिलादी। गरीबदास दहूँ दीन की, जुलहै खोई दादि।।649।।
च्यारि बेद षटशास्त्र, काढे अठारा पुराण। गरीबदास चर्चा करैं, आ जुलहे सैतान।।650।।
तूं जुलहा सैतान है, मोमन ल्याया सीत। गरीबदास इस पुरी में, कौन तुम्हारा मीत।।651।।
तूं एकलखोर एकला रहै, दूजा नहीं सुहाय। गरीबदास काजी पंडित, मारैं तुझै हराय।652।।
सुनि ब्रह्मा के बेद, तूं नीच जाति कुल हीन। गरीबदास काजी पंडित, सिमटैं दोनौं दीन।।653।।
च्यारि बेद षटशास्त्र, अठारा पुराण की प्रीति। गरीबदास पंडित कहैं, सुन जुलहे मेरे मीत।।654।।
ज्ञान ध्यान असनान करि, सेवौ सालिग्राम। गरीबदास पंडित कहैं, सुनि जुलहे बरियाम।।655।।
बोलै जुलहा अगम गति, सुन पंडित प्रबीन। गरीबदास पत्थर पटकि, हौंना पद ल्यौ लीन।।656।।
अनंत कोटि ब्रह्मा गये, अनंत कोटि गये बेद। गरीबदास गति अगम है, कोई न जानैं भेद।।657।।
अनंत कोटि सालिग गये, साथै सेवनहार। गरीबदास वह अगम पंथ, जुलहे कूं दीदार।।658।।
काजी पंडित सब गये, शाह सिकंदर पास। गरीबदास उस सरे में, सबकी बुद्धि का नाश।।659।।
कबीर और रैदास ने, भक्ति बिगारी समूल। गरीबदास द्वै नीच हैं, करते भक्ति अदूल।।660।।
हिंदूसैं नहीं राम राम, मुसलमान सलाम। गरीबदास दहूँ दीन बिच, ये दोनों बे काम।।661।।
उमटी काशी सब गई, षट दर्शन खलील। गरीबदास द्वै नीच हैं, इन मारत क्या ढील।।662।।
दंडी सन्यासी तहां, सिमटे हैं बैराग। गरीबदास तहां कनफटा, भई सबन सें लाग।।663।।
एक उदासी बनखंडी, फूल पान फल भोग। गरीबदास मारन चले, सब काशी के लोग।।664।।
बीतराग बहरूपीया, जटा मुकुट महिमंत। गरीबदास दश दश पुरुष, भेडौं के से जन्त।।665।।

भस्म रमायें भुस भरैं, भद्र मुंड कचकोल। गरीबदास ऐसे सजे, हाथौं मुगदर गोल।।666।।
छोटी गर्दन पेट बड़े, नाक मुख शिर ढाल। गरीबदास ऐसे सजे, काशी उमटी काल।।667।।
काले मुहडे जिनौं के, पग सांकल संकेत। गरीबदास गलरी बौहत, कूदैं जांनि प्रेत।।668।।
गाल बजावैं बंब बंब, मस्तक तिलक सिंदूर। गरीबदास कोई भंग भख, कोई उडावैं धूर।।669।।
रत्नाले माथे करैं, जैसैं रापति फील। गरीबदास अंधे बहुत, फेरैं चिसम्यौं लील।।670।।
लीले चिसम्यौं अंधले, मुख बांवे खंजूस। गरीबदास मारन चले, हाथौं कूंचैं फूस।।671।।
जुलहे और चमार परि, हुई चढाई जोर। गरीबदास पत्थर लिये, मारैं जुलहे तोर।।672।।
तिलक तिलंगी बैल जूं, सौ सौ सालिगराम। गरीबदास चौकी बौहत, उस काशी के धाम।।673।।
घर घर चौकी पथरपट, काली शिला सुपेद। गरीबदास उस सौंज पर, धरि दिये चारौं बेद।।674।।
ताल मंजीरे बजत हैं, कूदै दागड़ दुम। गरीबदास खर पीठ हैं, नाक जिन्हौं के सुम।।675।।
पंडित और बैराग सब, हुवा इकठा आंनि। गरीबदास एक गुल भया, चौकी धरी पषांन।।676।।
एक पत्थर भूरी शिला, एक काली कुलीन। गरीबदास एक गोल गिरद, एक लाम्बी लम्बीन।।677।।
एक पीतल की मूरती, एक चांदी का चौक। गरीबदास एक नाम बिन, सूना है त्रिलोक।।678।।
एक सौने का सालिगं, जरीबाब पहिरांन। गरीबदास इस मनुष्य सैं, अकल बडी अक श्वान।।679।।
काशीपुरी के सालिगं, सबै समटे आय। गरीबदास कुत्ता तहां, मूतैं टांग उठाय।।680।।
कुत्ता मुख में मूति है, कैसै सालिगराम। गरीबदास जुलहा कहै, गई अकल किस गाम।।681।।
धोय धाय नीके किये, फिरि आय मारी धार। गरीबदास उस पुरी में, हंसें जुलाहा और चमार।।682।।
तीन बार मुख मूतिया, सालिग भये अशुद्ध। गरीबदास चहूँ बेद में, ना मूर्ति की बुद्धि।।683।।
भृष्ट हुई काशी सबै, ठाकुर कुत्ता मूंति। गरीबदास पतथर चलैं, नागा मिसरी सूंति।।684।।
किलकारैं दुदकारहीं, कूदैं कुतक फिराय। गरीबदास दरगह तमाम, काशी उमटी आय।।685।।
होम धूप और दीप करि, भेख रह्या शिर पीटि। गरीबदास बिधि साधि करि, फूकैं बौहत अंगीठ।।686।।
काशीके पंडित लगे, कीना होम हजूंम। गरीबदास उस पुरी में, परी अधिकसी धूम।।687।।
चौकी सालिगराम की, मसकी एक न तिल। गरीबदास कहै पातशाह, षटदर्शन कि गल।।688।।
धूप दीप मंदे परे, होम सिराये भेख। दास गरीब कबीर ने, राखी भक्ति की टेक।।689।।
सत कबीर रैदासतूं, कहै सिकंदर शाह। गरीबदास तो भक्ति सच, लीजै सौंज बुलाय।।690।।
कहै कबीर सुनि पातशाह, सुनि हमरी अरदास। गरीबदास कुल नीचकै, क्यौं आवैं हरि पास।।691।।
दीन बचन आधीनवन्त, बोलत मधुरे बैन। गरीबदास कुण्डल हिरद, चढे गगन गिरद गैंन।।692।।
लीला की पुरूष कबीर ने, सत्यनाम उचार। गरीबदास गावन लगे, जुलहा और चमार।।693।।
दहनैं तौ रैदास है, बामी भुजा कबीर। गरीबदास सुर बांधि करि, मिल्या राग तसमीर।।694।।
रागरंग साहिब गाया लीला कीन्ही ततकाल। गरीबदास काशीपुरी, सौंज पगौं बिन चाल।।695।।
सौंज चली बिन पगौंसैं, जुलहे लीन्ही गोद। गरीबदास पंडित पटकि, चले अठारा बोध।।696।।
जुलहे और चमारकै, भक्ति गई किस हेत। गरीबदास इन पंडितौंका, रहि गया खाली खेत।।697।।
खाली खेत कुहेतसैं, बीज बिना क्या होय। गरीबदास एक नाम बिन, पैज पिछौड़ी तोय।।698।।
तत्वज्ञान हीन श्वान ज्यों, ह्ला ह्ला करै हमेश। दासगरीब कबीर हरि का दुर्लभ है वह देश।।699।।
दुर्लभ देश कबीर का, राई ना ठहराय। गरीबदास पत्थर शिला, ब्राह्मण रहे उठाय।।700।।

पत्थर शिलासैं ना भला, मिसर कसर तुझ मांहि। गरीबदास निज नाम बिन, सब नरक कूं जांहि।।701।।
जटाजूट और भद्र भेख, पैज पिछौड़ी हीन। गरीबदास जुलहा सिरै, और रैदास कुलीन।।702।।

❖ **राग निहपाल से शब्द नं. 1 :-**

✯जालिम जुलहै जारति लाई, ऐसा नाद बजाया है।।टेक।। काजी पंडित पकरि पछारे, तिन कूं ज्वाब न आया है। षट्दर्शन सब खारज कीन्हें, दोन्यौं दीन चिताया है।।1।। सुर नर मुनिजन भेद पावैं, दहूं का पीर कहाया है। शेष महेश गणेश रु थाके, जिन कूं पार न पाया है।।2।। नौ औतार हेरि सब हारे, जुलहा नहीं हराया है। चरचा आंनि परी ब्रह्मा सैं, चार्यों बेद हराया है।।3।। मघर देश कूं किया पयांना, दोन्यौं दीन डुराया है। घोर कफन हम काठी दीजौ, चदरि फूल बिछाया है।।4।। गैबी मजलि मारफति औंड़ी, चादरि बीचि न पाया है। काशी बासी है अबिनाशी, नाद बिंद नहीं आया है।।5।। नां गाड़्या ना जार्या जुलहा, शब्द अतीत समाया है।च्यारि दाग सें रहित सतगुरु, सौ हमरै मन भाया है।।6।। मुक्ति लोक के मिले प्रगनें, अटलि पटा लिखवाया है। फिरि तागीर करै ना कोई, धुर का चाकर लाया है।।7।। तखत हिजूरी चाकर लागे, सति का दाग दगाया है। सतलोक में सेज हमारी, अबिगत नगर बसाया है।।8।। चंपा नूर तूर बहु भांती, आंनि पदम झलकाया है। धन्य बंदी छोड़ कबीर गोसांई, दास गरीब बधाया है।।9।। 1।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 649-702 का सरलार्थ :- काजी तथा पंडितों ने विचार-विमर्श किया कि राजा सिकंदर को तो सिद्धि दिखाकर प्रभावित कर लिया। यह कुछ करने वाला नहीं है। तब उन्होंने कबीर परमेश्वर जी को शास्त्रार्थ की चुनौती दी।**

❖ **शास्त्रार्थ में भी काजी-पंडितों की किरकिरी हो गई तो सिकंदर राजा के पास फिर गए और कहा कि आप अपने सामने हमारी तथा कबीर जी की सिद्धि-शक्ति का परीक्षण करो। हमारा मुकाबला (Competition) कराओ। उस समय भिन्न-भिन्न प्रकार के साधक, कोई कनफटा नाथ परंपरा से, दण्डी स्वामी, सन्यासी, षटदर्शनी वाले बाबा सब इकट्ठे हुए थे जो संत कबीर जी से ईर्ष्या करते थे। हाथों में पत्थर लेकर कबीर जी से कहने लगे कि तू हमारे देवताओं का अपमान करता है। हे जुलाहे! तुझे पत्थर मारेंगे। सिकंदर लोधी के पास जाकर पंडितों तथा मुल्ला-काजियों ने कहा कि कबीर जुलाहा पापी है। उसके दिल में दया नहीं है। वह सबके धर्मों में दोष देखता है। हिन्दुओं से राम-राम नहीं करता तथा मुसलमानों से सलाम भी नहीं करता। कुछ और ही बोलता है। सत साहेब।**

❖ **संत गरीबदास जी ने तर्क दिया है कि उस काशी नगरी के सब ही नागरिकों की बुद्धि का नाश हो चुका था जो परमात्मा को तो नीच कह रहे थे तथा अपनी गलत साधना को उत्तम बता रहे थे और दयावान कबीर परमेश्वर जी को निर्दयी बता रहे थे। स्वयं जो सर्व व्यसन करते थे, लोगों को ठगते थे, अपने को श्रेष्ठ कह रहे थे।**

❖ **राजा सिकंदर ने कहा कि आप तथा कबीर एक स्थान पर इकट्ठे होकर अपना एक ही बार फैसला कर लो। बार-बार के झगड़े अच्छे नहीं होते। पंडित तथा अन्य हिन्दु संत एक ओर तथा कबीर जी तथा रविदास जी एक ओर।**

❖ **एक निश्चित स्थान पर आमने-सामने बैठ गए। मध्य में 20 फुट की दूरी रखी गई जहाँ पर पत्थर की सुंदर टुकड़ियों पर देवताओं की मूर्तियाँ रखी थी तथा शर्त रखी गई कि पत्थर**

की एक शिला (सुंदर चकोर टुकड़ी) पर चारों वेद रखे जाएंगे तथा अन्य शिलाओं पर चाँदी, सोने तथा पत्थर के सालिग्राम (विष्णु तथा लक्ष्मी व गणेश आदि देवताओं की मूर्तियाँ) रखी जाएंगी। जिनकी सत्य भक्ति होगी, उनकी ओर शिला ही चलकर जाएगी।

❖ ऐसा ही किया गया। जब पत्थर की शिला पर देवताओं की मूर्ति रखी और पंडितजन वेद वाणी पढ़ने लगे। उसी समय कुत्ता आया और उन पत्थर के देवताओं पर टाँग उठाकर मूतकर भाग गया। धो-मांजकर साफ करके फिर सजाए। फिर कुत्ता आया, मूत की धार मारकर दौड़ गया। परमेश्वर कबीर जी तथा संत रविदास जी बहुत हँसे। ऐसा तीन बार किया। फिर विशेष सुरक्षा में मूर्ति रखकर पहले पंडितों ने अपनी भक्ति प्रारम्भ की। हवन किए, वेदों के मंत्रों का उच्चारण किया, परंतु जिस चौकी (सुसज्जित पत्थर की शिला जिस पर देव मूर्तियाँ रखी थी) टस से मस नहीं हुई। राजा सिकंदर ने कहा कि हे कबीर जी! आप अपनी भक्ति-शक्ति से इन देवताओं को अपनी ओर बुलाओ। कबीर जी ने कहा कि राजन! जब उच्च जाति के स्वच्छ वस्त्र धारण किए हुए स्नान किए हुए पंडितों से देवता अपनी ओर नहीं बुलाए गए तो मुझ शुद्र के पास इनके देवता कैसे आऐंगे? सिकंदर लोधी बादशाह ने कहा कि हे कबीर जी! आपकी सच्ची भक्ति है। आप इन देवताओं को बुलाओ। कबीर जी ने सत्यनाम का श्वांस से जाप किया तथा रविदास के साथ अपनी महिमा के शब्द गाने लगे। उसी समय पत्थर की शिला तथा उन पर रखे पत्थर, पीतल के देवता अपने आप सरक कर (धीरे-धीरे चलकर) सब कबीर जी की गोद में बैठ गए। यह देखकर पंडित जी उन अठारह बोध वाली पुस्तकों (चारों वेद, पुरण, छः शास्त्र, उपनिषद आदि कुल अठारह बोध यानि ज्ञान की पुस्तकें मानी गई हैं, को) वहीं पटककर चले पड़े क्योंकि उनको कुत्ते के मूत की बूँदें (छींटें) लग गई थी।

❖ सब उपस्थित नकली विद्वान विचार करने लगे कि कबीर जुलाहे यानि शुद्र जाति वाले के पास भक्ति कैसे गई? परंतु वे अभिमानी-बेईमान अज्ञानी पंडित तथा काजी-मुल्ला व अन्य संत फिर भी परमात्मा के चरणों में नहीं गिरे।

''संत रविदास जी द्वारा सात सौ पंडितों को शरण में लेना''

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 703-709 :-

तुम पण्डित किस भांतिके, बोलत है रैदास। गरीबदास हरि हेतसैं, कीन्हा यज्ञ उपास।।703।।
यज्ञ दई रैदासकूं, षटदर्शन बैठाय। गरीबदास बिंजन बहुत, नाना भांति कराय।।704।।
चमरा पंडित जीमहीं, एक पत्तल कै मांहि। गरीबदास दीखै नहीं, कूदि कूदि पछतांहि।।705।।
रैदास भये है सात सै, मूढ पंडित गलखोड़ि। गरीबदास उस यज्ञ में, बौहरि रही नहीं लोड़ि।।706।।
परे जनेऊ सात सै, काटी गल की फांस। गरीबदास जहां सोने का, दिखलाया रैदास।।707।।
सूत सवामण टूटिया, काशी नगर मंझार। गरीबदास रैदासकै, कनक जनेऊ सार।।708।।
पंडित शिष्य भये सात सै, उस काशी कै मांहि। गरीबदास चमार कै, भेष लगे सब पाय।।709।।

❖ सरलार्थ :- संत रविदास जी का जन्म चमार समुदाय में काशी नगर में हुआ। ये परमेश्वर कबीर जी के समकालीन हुए थे। परम भक्त रविदास जी अपना चर्मकार का कार्य

किया करते थे। भक्ति भी करते थे। परमेश्वर कबीर जी ने काशी के प्रसिद्ध आचार्य स्वामी रामानन्द जी को यथार्थ भक्ति मार्ग समझाया था। अपना सतलोक स्थान दिखाकर वापिस छोड़ा था। उससे पहले स्वामी रामानन्द जी केवल ब्राह्मण जाति के व्यक्तियों को ही शिष्य बनाते थे। उसके पश्चात् स्वामी रामानंद जी ने अन्य जाति वालों को शिष्य बनाना प्रारम्भ किया था। संत रविदास जी ने भी आचार्य रामानन्द जी से दीक्षा ले रखी थी। भक्ति जो परमेश्वर कबीर जी ने स्वामी रामानन्द जी को प्रथम मंत्र बताया था, उसी को दीक्षा में स्वामी जी देते थे। संत रविदास जी उसी प्रथम मंत्र का जाप किया करते थे। एक दिन संत रविदास को एक ब्राह्मण रास्ते में मिला और बोला, भक्त जी! आप गंगा स्नान के लिए चलोगे, मैं जा रहा हूँ। संत रविदास जी ने कहा कि 'मन चंगा तो कटोती में गंगा', मैं नहीं जा रहा हूँ।

पंडित जी बोले कि आप नास्तिक से हो गए लगते हो। आप उस कबीर जी के साथ क्या रहने लगे हो, धर्म-कर्म ही त्याग दिया है। कुछ दान करना हो तो मुझे दे दो। मैं गंगा मईया को दे आऊँगा। रविदास जी ने जेब से एक कौड़ी निकालकर ब्राह्मण जी को दी तथा कहा कि हे विप्र! गंगा जी से मेरी यह कौड़ी देना। एक बात सुन ले, यदि गंगा जी हाथ में कौड़ी ले तो देना अन्यथा वापिस ले आना। यह कहना कि हे गंगा! यह कौड़ी काशी शहर से भक्त रविदास ने भेजी है, इसे ग्रहण करें। पंडित जी ने गंगा दरिया पर खड़ा होकर ये शब्द कहे तो गंगा ने किनारे के पास हाथ निकालकर कौड़ी ली और दूसरे हाथ से पंडित जी को एक स्वर्ण (Gold) का कंगन दिया जो अति सुंदर व बहुमूल्य था। गंगा ने कहा कि ये कंगन परम भक्त रविदास जी को देना। कहना कि आपने मुझ गंगा को कतार्थ कर दिया अपने हाथ से प्रसाद देकर। मैं संत को क्या भेंट दे सकती हूँ? यह तुच्छ भेंट स्वीकार करना।

पंडित जी उस कंगन को लेकर चल पड़ा। पंडित जी के मन में लालच हुआ कि यह कंगन राजा को दूँगा। राजा इसके बदले में मुझे बहुत धन देगा। वह कंगन पंडित जी ने राजा को दिया जो अद्भुत कंगन था। पंडित जी को बहुत-सा धन देकर विदा किया और उसका नाम, पता नोट किया। राजा ने वह कंगन रानी को दिया। रानी ने कंगन देखा तो अच्छा लगा। ऐसा कंगन कभी देखा ही नहीं था। रानी ने कहा कि एक कंगन ऐसा ही ओर चाहिए। जोड़ा होना चाहिए। राजा ने उसी पंडित को बुलाया और कहा कि जैसा कंगन पहले लाया था, वैसा ही एक और लाकर दे। जो धन कहेगा, वही दूँगा। यदि नहीं लाया तो सपरिवार मौत के घाट उतारा जाएगा। उस धोखेबाज (420) के सामने पहाड़ जैसी समस्या खड़ी हो गई। सब सुनारों (श्राफों) के पास फिरकर अंत में परम भक्त रविदास जी के पास आया। अपनी गलती स्वीकार की। सर्व घटना गंगा को कौड़ी देना, बदले में कंगन लेना। उस कंगन को भक्त रविदास जी को न देकर मुसीबत मोल लेना। पंडित जी ने गिड़गिड़ाकर रविदास जी से अपने परिवार के जीवन की भिक्षा माँगी। रविदास जी ने कहा कि पंडित जी! आप क्षमा के योग्य नहीं हैं, परंतु परिवार पर आपत्ति आई है। इसलिए आपकी सहायता करता हूँ। आप इस पानी कठोती (मिट्टी का बड़ा टब जिसमें चमड़ा भिगोया जाता था) में हाथ डाल और गंगा से यह कह कि भक्त रविदास जी की प्रार्थना है कि आप कठोती में आएें और एक कंगन वैसा ही दें। ऐसा कहकर पंडित जी ने जो रविदास

के चमार होने के कारण पाँच फुट दूर से बातें करता था, अब उस चाम भिगोने वाले कुंड (टब) में हाथ देकर देखा तो हाथ में चार कंगन वैसे ही आए। भक्त रविदास जी ने कहा कि पंडित जी! एक ले जाना, शेष गंगा जी को लौटा दे, नहीं तो भयंकर आपत्ति ओर आ जाएगी। ब्राह्मण ने तुरंत तीन कंगन वापिस कुण्ड में डाल दिए और एक कंगन लेकर राजा को दिया। रानी ने पूछा कि यह कंगन कहाँ से लाए हो, मुझे बता। ब्राह्मण ने संत रविदास जी का पता बताया।

रानी ने सोचा कि कोई स्वर्णकार (Goldsmith) होगा और ढ़ेर सारे कंगन लाऊँगी। रानी को एक असाध्य रोग था। पितर का साया भी था। बहुत परेशान रहती थी। सब जगह उपचार करा लिया था। साधु-संतों का आशीर्वाद भी ले चुकी थी। परंतु कोई राहत नहीं मिल रही थी। रानी उस पते पर गई। साथ में नौकरानी तथा अंगरक्षक भी थे। रानी ने संत रविदास जी के दर्शन किए। दर्शन करने से ही रानी के शरीर का कष्ट समाप्त हो गया। रानी को ऐसा अहसास हुआ जैसे सिर से भारी भार उतर गया हो। रानी ने संत जी के तुरंत चरण छूए। रविदास जी ने कहा कि मुझ निर्धन के पास मालकिन का कैसे आना हुआ? रानी ने कहा कि मैं तो सुनार की दुकान समझकर आई थी गुरूजी। मेरा तो जीवन धन्य हो गया। मेरा जीवन नरक बना था रोग के कारण। आपके दर्शन से वह स्वस्थ हो गया। मैंने इसके उपचार के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी थी। परंतु कोई लाभ नही हो रहा था। संत रविदास जी ने कहा कि बहन जी! आपके पास भौतिक धन तो पर्याप्त है। यह आपके पूर्व जन्म के पुण्यों का फल है। भविष्य में भी सुख प्राप्ति के लिए आपको वर्तमान में पुण्य करने पड़ेंगे। आध्यात्म धन संग्रह करो। रानी ने कहा कि संत जी! मैं बहुत दान-धर्म करती हूँ। महीने में पूर्णमासी को भण्डारा करती हूँ। आसपास के ब्राह्मणों तथा संतों को भोजन कराती हूँ। संत रविदास जी ने कहा :-

बिन गुरू भजन दान बिरथ हैं, ज्यूं लूटा चोर। न मुक्ति न लाभ संसारी, कह समझाऊँ तोर।।
कबीर, गुरू बिन माला फेरते, गुरू बिन देते दान। गुरू बिन दोनों निष्फल हैं, चाहे पूछो बेद पुरान।।

रानी ने कहा कि हे संत जी! मैंने एक ब्राह्मण गुरू बनाया है। रविदास जी ने कहा कि नकली गुरू से भी कुछ लाभ नहीं होने का। आप जी ने गुरू भी बना रखा था और कष्ट यथावत थे। क्या लाभ ऐसे गुरू से? रानी ने कहा कि आप सत्य कहते हैं। आप मुझे शिष्या बना लो। रविदास जी ने रानी को प्रथम मंत्र दिया। रानी ने कहा कि गुरूजी! अबकी पूर्णमासी को आपके नाम से भोजन-भण्डारा (लंगर) करूंगी। आप जी मेरे घर पर आना। निश्चित तिथि को रविदास जी राजा के घर पहुँचे। पूर्व में आमंत्रित सात सौ ब्राह्मण भी भोजन-भण्डारे में पहुँचे। भण्डारा शुरू हुआ। रानी ने अपने गुरू रविदास जी को अच्छे आसन पर बैठा रखा था। उसके साथ सात सौ ब्राह्मणों को भोजन के लिए पंक्ति में बैठने के लिए निवेदन किया। ब्राह्मण कई पंक्तियों में बैठे थे। भोजन सामने रख दिया गया था। उसी समय ब्राह्मणों ने देखा कि रविदास जी अछूत जाति वाले साथ में बैठे हैं। सब अपने-अपने स्थान पर खड़े हो गए और कहने लगे कि हम भोजन नहीं करेंगे। यह अछूत रविदास जो बैठा है, इसे दूर करो। रानी ने कहा कि यह मेरे गुरू जी हैं, ये दूर नहीं होंगे। संत रविदास

जी ने रानी से कहा कि बेटी! आप मेरी बात मानो। मैं दूर बैठता हूँ। रविदास जी उठकर ब्राह्मणों ने जहाँ जूती निकाल रखी थी, उनके पीछे बैठ गए। पंडितजन भोजन करने बैठ गए। उसी समय रविदास जी के सात सौ रूप बने और प्रत्येक ब्राह्मण के साथ थाली में खाना खाते दिखाई दिए। एक ब्राह्मण दूसरे को कहता है कि आपके साथ एक शुद्र रविदास भोजन कर रहा है, छोड़ दे इस भोजन को। सामने वाला कहता है कि आपके साथ भी भोजन खा रहा है। इस प्रकार प्रत्येक के साथ रविदास जी भोजन खाते दिखाई दिए। रविदास जी दूर बैठे कहने लगे कि हे ब्राह्मणगण! मुझे क्यों बदनाम करते हो, देखो! मैं तो यहाँ बैठा हूँ। इस लीला को राजा, रानी, मंत्री सब उपस्थित गणमान्य व्यक्ति भी देख रहे थे। तब रविदास जी ने कहा कि ब्राह्मण कर्म से होता है, जाति से नहीं। अपने शरीर के अंदर (खाल के भीतर) स्वर्ण (Gold) का जनेऊ दिखाया। कहा कि मैं वास्तव में ब्राह्मण हूँ। मैं जन्म से ब्राह्मण हूँ। कुछ देर सत्संग सुनाया। उस समय सात सौ ब्राह्मणों ने अपने नकली जनेऊ (कच्चे धागे की डोर जो गले में तथा कॉख के नीचे से दूसरे कंधे पर बाँधी होती है) तोड़कर संत रविदास जी के शिष्य हुए। सत्य साधना करके अपना कल्याण कराया। सात सौ ब्राह्मणों के जनेऊओं के सूत का सवा मन (50 कि.ग्राम) भार तोला गया था।

''पुरी के जगन्नाथ मंदिर में राम सहाय पाण्डेय के पैर को गर्म प्रसाद से जलने से काशी में बैठे कबीर जी ने बचाया''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 710-725 :-**

मनसा वाचा कर्मणा, षटदर्शन खटकंत। गरीबदास समझे नहीं, भरमे भेष फिरंत।।710।।
सहज मते सतगुरु गये, शाह सिकंदर पास। गरीबदास आसन दिया, संग तहां रैदास।।711।।
पग ऊपरि जल डारि करि, हो गये खडे कबीर। गरीबदास पंडा जर्या, तहां पर्या योह नीर।।712।।
जगन्नाथ जगदीश का, जरत बुझाया पंड। गरीबदास हर हर करत, मिट्या कलप सब दंड।।713।।
शाह सिकंदरकूं कह्या, कहा किया येह ख्याल। गरीबदास गति को लखै, पंड बचाया ततकाल।।714।।
तुरतही पती लिखाय करि, भेज्या सूत्र सवार। गरीबदास पौंहचे तबै, पंथ लगे दशबार।।715।।
जगन्नाथके दर्श करि, दूत पूछि हैं पंड। गरीबदास कैसैं जर्या, कहौ बिथा पग हंड।।716।।
पंडा कहै सु दूतसैं, या बिधि दाझ्या पांय। गरीबदास अटका फुट्या, बेगही दिया सिराय।।717।।
किन बुझाया मुझि कहौ, सुनि पंडा योह पांव। गरीबदास साची कहौ, ना कछु और मिलाव।।718।।
पंड कहै सोई साच मानि, सुनौं हो दूत मम बीर। गरीबदास यहां खड़े थे, डार्या नीर कबीर।।719।।
कहौ कबीर कहां बसत है, कौंन जिन्हौंकी जाति। गरीबदास पंडा कहै, ज्यूंकी त्यूंही बात।।720।।
वै कबीर काशी बसैं, जाति जुलहदी तास। गरीबदास दर्शन करैं, जगन्नाथकै दास।।721।।
नितही आवत जात है, जगन्नाथ दरबार। गरीबदास उस जुलहदीकूं, पंडा लिया उबार।।722।।
पंडेकूं पतीया लिखी, जो कछु हुई निदान। गरीबदास बीती कही, लिखि भेज्या फुरमान।।723।।
आये काशी नगर में, दूत कही सत गल। गरीबदास इस जुलहदीकी, बड़ी मजल जाजुल।।724।।
शाह सिकंदर सुनि थके, याह अचरज अधिकार। गरीबदास उस जुलहदीका, नित करि हैं दीदार।।725।।

❖ **सरलार्थ :- एक दिन शाम के समय परमेश्वर कबीर जी अपने साथ संत रविदास जी**

को लेकर राजा बीरदेव सिंह बघेल के दरबार में गए। उस दिन दिल्ली के सम्राट सिकंदर लोधी भी वहाँ आए हुए थे। सिकंदर लोधी पूरे भारत का शासक था, वह महाराजा था। काशी नरेश बीरदेव सिंह बघेल छोटे राजा थे जो दिल्ली के बादशाह के आधीन होते थे। दोनों संतों को बैठने के लिए आसन दिया गया। कुछ देर दोनों राजाओं के साथ परमात्मा की चर्चा की। फिर अचानक शीघ्रता से कबीर परमेश्वर जी ने खड़ा होकर अपने लोटे का जल अपने पैर के ऊपर डालना प्रारम्भ कर दिया। सिकंदर ने पूछा प्रभु! यह क्या किया अपने पैर के ऊपर पानी डाला, इसका कारण बताईये। कबीर जी ने कहा कि पुरी में जगन्नाथ के मन्दिर में एक रामसहाय नाम का पाण्डा पुजारी है। वह भगवान का खिचड़ी प्रसाद बना रहा था। उसको उतारने लगा तो अति गर्म खिचड़ी उसके पैर के ऊपर गिर गई। वह चिल्लाकर अचेत हो गया था। यह बर्फ जैसा जल उसके जले हुए पैर पर डाला है, उसके जीवन की रक्षा की है अन्यथा वह मर जाता। जगन्नाथ जी का मंदिर उड़ीसा प्रान्त में पुरी शहर में है जो बनारस से लगभग एक हजार किलोमीटर दूर है। यह बात राजा सिकंदर तथा बीरदेव सिंह बघेल के गले नहीं उतरी। कबीर जी को बताए बिना उसकी जाँच करने के आदेश दे दिए। दो सैनिक ऊँटों (Camels) पर सवार होकर पुरी में गए। 10 दिन जाने में लगे। पुरी में जाकर पूछा कि रामसहाय पाण्डा कौन है? उसको बुलाया गया। सिपाहियों ने पूछा कि क्या आपका पैर खिचड़ी से जला था? उत्तर मिला-हाँ। प्रश्न किया कि किसने ठीक किया? उत्तर मिला कि कबीर जी यहाँ पास ही खड़े थे, उन्होंने करमण्डल से हिमजल डाला था। उससे मेरी जलन बंद हो गई। यदि वे जल नहीं डालते तो मेरी छुट्टी हो गई थी, मैं अचेत हो गया था। प्रश्न-क्या समय था? शाम के समय सूर्य अस्त से लगभग एक घण्टा पहले। अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने भी साक्ष्य दिया। सिपाहियों ने कहा सब लिखकर दस्तखत-अंगूठे लगाओ। रामसहाय पाण्डे ने तथा वहाँ के अन्य पुजारियों ने बताया कि कबीर जी तो नित्य-प्रतिदिन मन्दिर में आते हैं। सर्व प्रमाण लेकर-सुनकर दोनों सिपाही वापिस आए और सच्चाई बताई। दोनों राजा कबीर जी की कुटिया पर गए। दण्डवत प्रणाम किया तथा अपने अविश्वास रूपी अपराध की क्षमा माँगी। बताया कि आप सत्य कह रहे थे। आप जी ने ही जगन्नाथ मंदिर के रामसहाय पाण्डे के पैर को जलने से बचाया था। हमने अपनी तसल्ली के लिए दो सैनिक भेजकर पता कराया है। आप स्वयं वह खुदा हो जो सातवें आसमान पर बैठा है। आप नर रूप धारण करके पथ्वी पर लीला करने आए हो। परमेश्वर कबीर जी ने कहा महाराज! आपको यहाँ भी गलती लगी है। मैं तो अल्लाहु अकबर हूँ। मैं करोड़ों आसमानों के पार सत्यलोक (सतलोक) में तख्त पर विराजमान हूँ। यहाँ मैं आपके सामने खड़ा हूँ। मैं पैगम्बर मुहम्मद को भी मिला था। उन्होंने भी मुझे पहचानने में भूल की थी। (**ब्रह्मबेदी अंग में लिखा है :-** ''पाण्डा पाँव बुझाया सतगुरू, जगन्नाथ की बात है।'')

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 726-792 :-

फिर गणिका कै संग चले, शीशी भरी शराब। गरीबदास उस पुरी में, जुलहा भया खराब।।726।।
तारी बाजी पुरी में, भिष्ट जुलहदी नीच। गरीबदास गनिका सजी, दहूं संतौं कै बीच।।727।।
गावत बैंन बिलासपद, गंगाजल पीवंत। गरीबदास विह्वल भये, मतवाले घूमंत।।728।।

भड़ुवा भड़ुवा सब कहैं, कोई न जानैं खोज। दास गरीब कबीर करम, बांटत शिरका बोझ।।729।।
देखो गनिका संगि लई, कहते कौंम छतीस। गरीबदास इस जुलहदी का, दर्शन आन हदीस।।730।।
शाह सिकंदर कूं सुनी, भिष्ट हुये दो संत। गरीबदास च्यारों वरण, उठि लागे सब पंथ।।731।।
च्यारि वरण षट आश्रम, दोनौं दीन खुशाल। गरीबदास हिंदू तुरक, पड़्या शहर गलि जाल।।732।।
शाह सिकंदरकै गये, सुनि कबले अरदास। गरीबदास तलबां हुई, पकरे दोनौं दास।।733।।
कहौ कबीर यौह क्या किया, गनिका लिन्हीं संग। गरीबदास भूले भक्ति, पर्‌या भजन में भंग।।734।।
सुनौं सिकंदर बादशाह, हमरी अरज अवाज। गरीबदास वह राखिसी, जिन यौह साज्या साज।।735।।
जड़ियां तौंक जंजीर गल, शाह सिकंदर आप। गरीबदास पद लीन है, तारी अजपा जाप।।736।।
हाथौं जड़ी हथकड़ी, पग बेड़ी पहिराय। गरीबदास बीच गंग में, तहां दीन्हा छिटकाय।।737।।
झड़ि गये तौंक जंजीर सब, लगै किनारै आय। गरीबदास देखै खलक, स्यौं काजी बादशाह।।738।।
नीचै नीचै गंगाजल, ऊपर आसन थीर। गरीबदास बूड़ै नहीं, बैठे अधर कबीर।।739।।
योह अचरज कैसा भया, देखैं दोनौं दीन। गरीबदास काजी कहैं, बांधि दिया जल सीन।।740।।
गल में फांसी डारि करि, बांधौ शिला सुधारि। गरीबदास यौह जुलहदी, जब बूड़ै गंगधार।।741।।
शिला धरी जब नाव में, बांधी गलै कबीर। गरीबदास फंद टूटि कै, ना डूबै जलनीर।।742।।
शिला चली शाह और कौं, देखत काशी ख्याल। गरीबदास कबीर का आसन अधर हमाल।।743।।
तीर बाण गोली चलैं, तोप रहकल्यौं शोर। गरीबदास उस जुलहदीकै, गई एक नहीं ओर।।744।।
अधर धार गोले बहैं, जलकै बीच गभाक। गरीबदास उस जुलहदी पर, शस्त्र छूटैं लाख।।745।।
तोप रहकले सब चलैं, तीर बाण कमान। गरीबदास वह जुलहदी, जल पर रहै अमान।।746।।
अधरि धार अपार गति, जल परि लगी समाधि। गरीबदास निज ब्रह्मपद, खेलैं आदि अनादि।।747।।
जुलम हुआ बूड़ै नहीं, शस्त्र लगै न बाण। गरीबदास इब कौंन गति, कैसैं लीजै प्राण।।748।।
लगी समाधी अगाध में, बिचरै काशी गंग। गरीबदास किलोल सर, छूहैं चरण तरंग।।749।।
च्यारि पहर गोले बगे, धमी मुलक मैदान। गरीबदास पोखर सुखैं, रहे कबीर अमान।।750।।
अपनी करनी सब करी, थाके दोनौं दीन। गरीबदास अब जुलहदी, पैठि गये जलमीन।।751।।
डूब्या डूब्या सब कहैं, हो गये गारत गोर। गरीबदास कबले धनी, तुम आगै क्या जोर।।752।।
आनंद मंगल होत है, बटैं बधाई बेग। गरीबदास उस जुलहदी पर फिर गई रेती रेघ।।753।।
हस्ती घोड़े चढत हैं, पान मिठाई चीर। गरीबदास काशी खुसी, बूड़े गंग कबीर।।754।।
जावो घरि रैदासकै, हिलकारे हजूर। गरीबदास खुसिया कहौ, कहियो नहीं कसूर।।755।।
झालरि ढोलक बजत हैं, गावैं शब्द कबीर। गरीबदास रैदास संगि, दोनौं एकही तीर।।756।।
काजी पंडित सब गये, शाह सिकंदर उठ। गरीबदास रैदासकै, भेष गये जटजूट।।757।।
कोठी कुठले सब झके, बासन टींडर गोलि। गरीबदास रहदास सुनौं, कहां गये वह बोल।।758।।
वे प्रगट पूरण पुरूष हैं, अबिनाशी अलख अल्लाह। गरीबदास रैहदास कहैं, सुनौं सिकंदर शाह।।759।।
सूरजमुखी सुभांन सर, खिले फूल गुलजार। गरीबदास काजी पंडित करता शाह पुकार।।760।।
शाह सिकंदर फिर गये, उस गंगा कै तीर। दास गरीब कबीर हरी, बैठे ऊपर नीर।।761।।
बैठि मलाह जिहाज में, गये धार कै बीच। गरीबदास हरि हरि करैं, प्रेम फुहारे सीच।।762।।
करी अरज मलाह तहां, दीन दुनी बादशाह। गरीबदास आसन उधर, लगी समाधि जुलाह।।763।।

भंवर फिरत हैं गंग जल, फूल उगानें कोटि। गरीबदास तहां बंदगी, हरिजन हरि की ओट।।764।।
संकल सीढी लाय करि, उतरे तहां मलाह। गरीबदास हम बंदगी, याद किये बादशाह।।765।।
बैठ कबीर जहाज में, आये गंगा घाट। गरीबदास काशी थकी, हांडे बौह बिधि बाट।।766।।
खूनी हाथी मस्त है, पग बंधे जंजीर। गरीबदास जहां डारिया, मसक बांधि कबीर।।767।।
सिंह रूप साहिब धर्या, भागे उलटे फील। गरीबदास नहीं समझती, याह दुनिया खलील।।768।।
बने केहरी सिंह जित, चौंर शिखर असमांन। गरीबदास हस्ती लख्या, दीखै नहीं जिहांन।।769।।
कूटै शीश महावतं, अंकुश शीर गरगाप। गरीबदास उलटा भगै, तारी दीजैं थाप।।770।।
भाले कोखौं मारिये, चरखी छूटैं पाख। गरीबदास नहीं निकट जाय, किलकी देवैं लाख।।771।।
जैसी भक्ति कबीर की, ऐसी करै न कोय। गरीबदास कुंजर थके, उलटे भागे रोय।।772।।
दुंम गोवैं मूंडी धुनैं, सैंन न समझै एक। गरीबदास दीखै नहीं, आगै खड़ा अलेख।।773।।
पीलवान देख्या तबै, खड़ा केहरी सिंघ। गरीबदास आये तहां, धरि मौला बहु रंग।।774।।
उतरे मौला अरस तैं, भाव भक्ति कै हेत। गरीबदास तब शाह लखे, कबीर पुरूष सहेत।।775।।
लीला की कबीर ने, दो रूप में रहे दीस। दासगरीब कबीर कै, पास खड़े जगदीश।।776।।
जंभाई अंगडाईयां, लंबे भये दयाल। गरीबदास उस शाह कूं, मानौं दर्श्या काल।।777।।
कोटि चन्द्र शशि भान मुख, गिरद कुंड दुम लील। गरीबदास तहां ना टिके, भागि गये रनफील।।778।।
नयन लाल भौंह पीत हैं, डूंगर नक पहार। गरीबदास उस शाह कूं, सिंह रूप दीदार।।779।।
मस्तक शिखर स्वर्ग लग, दीरघ देह बिलंद। गरीबदास हरि ऊतरे, काटन जम के फंद।।780।
गिरद नाभि निरभै कला, दुदकारै नहीं कोय। गरीबदास त्रिलोकि में, गाज तास की होय।।781।।
ज्यूं नरसिंह प्रहलादकै, यूं वह नरसिंह एक। गरीबदास हरि आईया, राखन जनकी टेक।।782।।
बार–बार सताय कर, मस्तक लीना भार। गरीबदास शाह यौं कहै, बकसौ इबकी बार।।783।।
तहां सिंह ल्यौलीन हुआ, परचा इबकी बार। गरीबदास शाह यौं कहै, अल्लह दिया दीदार।।784।।
सुन काशी के पण्डितौ, काजी मुल्लां पीर। गरीबदास इसके चरण ल्यौह, अलह अलेख कबीर।।785।।
यौह कबीर अल्लाह है, उतरे काशी धाम। गरीबदास शाह यौं कहैं, झगर मूंये बे काम।।786।।
काजी पंडित रूठिया, हम त्याग्या योह देश। गरीबदास षटदल कहैं, जादू सिहर हमेश।।787।।
इन जादू जंतर किया, हस्ती दिया भगाय। गरीबदास इत ना रहैं, काशी बिडरी जाय।।788।।
काशी बिडरी चहौं दिशा, थांभन हारा एक। गरीबदास कैसे थंभै, बिडरे बौहत अनेक।।789।।
क्यूं बिडरी गडरी दुनीं, कथा कबीर समूल। गरीबदास उस वृक्षकै, अनंत कोटि रंग फूल।।790।।
बिडरे भेष बिवेक तजि, छाड़ि चले सब सौंज। गरीबदास दिली आगरै, कोई दगरै सीरौंज।।791।।
कोई अजुध्याकूं चले, कोई वृन्दावन सेव। गरीबदास सुरति तकी, कोई रामेश्वर देव।।792।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 726-792 का सरलार्थ :-**

''शिष्यों की परीक्षा लेना''

बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर जी द्वारा अनेकों अनहोनी लीलाऐं करने से प्रभावित होकर चौंसठ लाख शिष्य बने थे। परमेश्वर तो भूत-भविष्य तथा वर्तमान की जानते हैं। उनको पता था कि ये सब चमत्कार देखकर तथा इनको मेरे आशीर्वाद से हुए भौतिक लाभों के कारण

मेरी जय-जयकार कर रहे हैं। इनको मुझ पर विश्वास नहीं है कि मैं परमात्मा हूँ। परंतु देखा-देखी कहते अवश्य हैं कि कबीर जी हमारे सद्गुरू जी तो स्वयं परमात्मा आए हैं। अपने लाभ भी बताते थे। एक दिन परमेश्वर कबीर जी ने शिष्यों की परीक्षा लेनी चाही कि देखूं तो कितने ज्ञान को समझे हैं। यदि इनको विश्वास ही नहीं है तो ये मोक्ष के अधिकारी नहीं हैं। ये तो मेरे सिर पर व्यर्थ का भार हैं। यह विचार करके एक योजना बनाई। अपने परम शिष्य रविदास से कहा कि एक हाथी किराए पर लाओ।

काशी नगर में एक सुंदर वैश्या थी। उसके मकान से थोड़ी दूरी पर किसी कबीर जी के भक्त का मकान था। कबीर जी उसके आँगन में रात्रि के समय सत्संग कर रहे थे। उस दिन उस वैश्या के पास भी ग्राहक नहीं थे। सत्संग के वचन सुनने के लिए वह अपने मकान की छत पर कुर्सी लेकर बैठ गई। पूर्ण रात्रि सत्संग सुना और उठकर सत्संग स्थल पर गई तथा परमात्मा कबीर जी को अपना परिचय दिया तथा कहा कि गुरू जी! क्या मेरे जैसी पापिनी का भी उद्धार हो सकता है। मैंने अपने जीवन में प्रथम बार आत्म कल्याण की बातें सुनी हैं। अब मेरे पास दो ही विकल्प हैं कि या तो मेरा कल्याण हो, या मैं आत्महत्या करके पापों का प्रायश्चित करूँ। परमात्मा कबीर जी ने कहा, बेटी! आत्महत्या करना महापाप है। भक्ति करने से सर्व पाप परमात्मा नष्ट कर देता है। आप मेरे से उपदेश लेकर साधना करो और भविष्य में पापों से बचकर रहना। उस बहन ने प्रतिज्ञा की और परमात्मा कबीर जी से दीक्षा लेकर भक्ति करने लगी तथा जहाँ भी प्रभु कबीर जी सत्संग करते, वहीं सत्संग सुनने जाने लगी। जिस कारण से कबीर जी के भक्तों को उसका सत्संग में आना अच्छा नहीं लगता था। वे उस लड़की को कहते थे कि तेरे कारण गुरू जी की बदनामी होती है। तू सत्संग में मत आया कर। तू सबसे आगे गुरू जी के पास बैठती है, वहाँ ना बैठा कर। लड़की ने ये बातें गुरु कबीर जी को बताई और फूट-फूटकर रोने लगी। परमेश्वर जी ने कहा कि बेटी! आप सत्संग में आया करो। कबीर जी ने सत्संग वचनों द्वारा स्पष्ट किया कि मैला कपड़ा साबुन और पानी से दूर रहकर निर्मल कैसे हो सकता है? इसी प्रकार पापी व्यक्ति सत्संग से तथा गुरू से दूर रहकर आत्म कल्याण कैसे करा सकता है? भक्त वैश्या तथा रोगी से नफरत नहीं करते, सम्मान करते हैं। उसको ज्ञान चर्चा द्वारा मोक्ष प्राप्ति की प्रेरणा करते हैं। परमात्मा कबीर जी के बार-बार समझाने पर भी भक्तजन उस लड़की को सत्संग से मना करते रहे तथा बहाना करते थे कि तेरे कारण गुरू जी काशी में बदनाम हो गए हैं। काशी के व्यक्ति हमें बार-बार कहते हैं कि तुम्हारे गुरू जी के पास वैश्या भी जाती है। वह काहे का गुरू है।

एक दिन कबीर परमेश्वर जी ने उस लड़की से कहा कि बेटी! आप मेरे साथ हाथी पर बैठकर चलोगी। लड़की ने कहा, जो आज्ञा गुरूदेव! अगले दिन सुबह लगभग 10:00 बजे हाथी के ऊपर तीनों सवार होकर काशी नगर के मुख्य बाजार में से गुजरने लगे। संत रविदास जी हाथी को चला रहे थे। लड़की रविदास जी के पीछे कबीर जी के आगे यानि दोनों के बीच में बैठी थी। कबीर जी ने एक बोतल में गंगा का पानी भर लिया। उस बोतल को मुख से लगाकर घूंट-घूंटकर पी रहे थे। लोगों को लगा कि कबीर जी शराब पी रहे हैं।

शराब के नशे में वैश्या को सरेआम बाजार में लिये घूम रहे हैं। काशी के व्यक्ति एक-दूसरे को बता रहे हैं कि देखो! बड़े-बड़े उपदेश दिया करता कबीर जुलाहा, आज इसकी पोल-पट्टी खुल गई है। ये लोग सत्संग के बहाने ऐसे कर्म करते हैं। काशी के व्यक्ति कबीर जी के शिष्यों को पकड़-पकड़ लाकर दिखा रहे थे कि देख तुम्हारे परमात्मा की करतूत। शराब पी रहे हैं, वैश्या को लिए सरेआम घूम रहा है। यह लीला देखकर वे चौंसठ लाख नकली शिष्य कबीर जी को त्यागकर चले गए। पहले वाली साधना करने लगे। लोक-लाज में फँसकर गुरू विमुख हो गए।

परमात्मा कबीर जी विशेषकर ऐसी लीला उस समय किया करते जिस समय दिल्ली का सम्राट सिकंदर लोधी काशी नगरी में आया हो। उस समय सिकंदर लोधी राजा काशी में उपस्थित था। काजी-पंडितों ने राजा को शिकायत कर दी कि कबीर जुलाहे ने जुल्म कर दिया। शर्म-लाज समाप्त करके सरेआम वैश्या के साथ हाथी के ऊपर गलत कार्य कर रहा था। शराब पी रहा है। राजा ने तुरंत पकड़कर गंगा में डुबोकर मारने का आदेश दिया। अपने हाथों से राजा सिकंदर ने कबीर परमेश्वर जी के हाथों में हथकड़ी तथा पैरों में बेड़ी तथा गले में तोक लगाई। नौका में बैठाकर गंगा दरिया के मध्य में ले जाकर दरिया में सिपाहियों ने पटक दिया। हथकड़ी, बेड़ी तथा तोक अपने आप टूटकर जल में गिर गई। परमात्मा जल पर पद्म आसन लगाकर बैठ गए। नीचे से गंगा जल चक्कर काटता हुआ बह रहा था। परमात्मा जल के ऊपर आराम से बैठे थे। कुछ समय उपरांत परमात्मा कबीर जी गंगा के किनारे आ गए। सिपाहियों ने शेखतकी के आदेश से कबीर जी को पकड़कर नौका में बैठाकर कबीर परमात्मा के पैरों तथा कमर पर भारी पत्थर बाँधकर हाथ पीछे को रस्सी से बाँधकर गंगा दरिया के मध्य में फेंक दिया। रस्से टूट गए। पत्थर जल में डूब गए। परमेश्वर कबीर जी जल के ऊपर बैठे रह गए। जब देखा कि कबीर गंगा दरिया में डूबा नहीं तो क्रोधित होकर शेखतकी के कहने से राजा ने तोब के गोले मारने का आदेश दे दिया। पहले कबीर जी को पत्थर मारे, गोली मारी, तीर मारे। अंत में तोब के गोले चार पहर यानि बारह घण्टे तक कबीर जी के ऊपर मारे। कोई तो वहीं किनारे पर गिर जाता, कोई दूसरे किनारे पर जाकर गिरता, कोई दूर तालाब में जाकर गिरता। एक भी गोला, पत्थर, बंदूक की गोली या तीर परमेश्वर कबीर जी के आसपास भी नहीं गया। इतना कुछ देखकर भी काशी के व्यक्ति परमेश्वर को नहीं पहचान पाए। तब परमेश्वर कबीर जी ने देखा कि ये तो अक्ल के अँधे हैं। उसी समय गंगा के जल में समा गए और अपने भक्त रविदास जी के घर प्रकट हो गए। दर्शकों को विश्वास हो गया कि कबीर जुलाहा गंगा जल में डूबकर मर गया है। उसके ऊपर रेत व रेग (गारा) जम गई होगी। सब खुशी मनाते हुए नाचते-कूदते हुए नगर को चल पड़े। शेखतकी अपनी मण्डली के साथ संत रविदास जी के घर यह बताने के लिए गया कि जिस कबीर जी को तुम परमात्मा कहते थे, वह डूब गया है, मर गया है। संत रविदास जी के घर पर जाकर देखा तो कबीर जी इकतारा (वाद्य यंत्र) बजा-बजाकर शब्द गा रहे थे। शेखतकी की तो माँ सी मर गई। राजा सिकंदर के पास जाकर बताया कि वह आँखें बचाकर भाग गया है। रविदास के घर बैठा है। यह सुनकर

बादशाह सिंकदर लोधी संत रविदास जी की कुटी पर गया। परमात्मा कबीर जी वहाँ से अंतर्ध्यान होकर गंगा दरिया के मध्य में जल के ऊपर समाधि लगाकर जैसे जमीन पर बैठते हैं, ऐसे बैठ गए। रविदास से पूछा कि कबीर जी कहाँ पर हैं? संत रविदास जी ने कहा कि हे बादशाह जी! वे पूर्ण परमात्मा हैं, वे ही अलख अल्लाह हैं। आप इन्हें पहचानो। वे तो मर्जी के मालिक हैं। जहाँ चाहें चले जाऐं। मुझे कुछ नहीं पता, कहाँ चले गए? वे तो सबके साथ रहते हैं। उसी समय किसी ने बताया कि कबीर जी तो गंगा के बीच में बैठे भक्ति कर रहे हैं। सब व्यक्ति तथा राजा व सिपाही गंगा दरिया के किनारे फिर से गए। राजा ने नौका भेजकर मल्लाहों के द्वारा संदेश भेजा कि बाहर आऐं। मल्लाहों ने नौका कबीर जी के पास ले जाकर राजा का आदेश सुनाया कि आपको सिकंदर बादशाह याद कर रहे हैं। आप चलिए। परमेश्वर कबीर जी उस जहाज (बड़ी नौका) में बैठकर किनारे आए।

राजा सिकंदर ने फिर गिरफ्तार करवाकर हाथ-पैर बाँधकर खूनी हाथी से मरवाने की आज्ञा कर दी। चारों और जनता खड़ी थी। सिकंदर ऊँचे स्थान पर बैठे थे। परमात्मा को बाँध-जूड़कर पथ्वी पर डाल रखा था। महावत (हाथी के ड्राइवर) ने हाथी को शराब पिलाई और कबीर जी को कुचलकर मरवाने के लिए कबीर जी की ओर बढ़ाया। कबीर जी ने अपने पास एक बब्बर सिंह खड़ा दिखा दिया। वह केवल हाथी को दिखा। हाथी चिंघाड़कर डर के मारे वापिस भाग गया। महावत को नौकरी का भय सताने लगा। हाथी को भाले मार-मारकर कबीर जी की ओर ले जाने लगा, परंतु हाथी उल्टा भागे। तब पीलवान (महावत) को भी शेर खड़ा दिखाई दिया तो डर के मारे उसके हाथ से अंकुश गिर गया। हाथी भाग गया। परमेश्वर कबीर जी के बंधन टूट गए। कबीर जी खड़े हुए तथा अंगड़ाई ली तो लंबे बढ़ गए। सिर आसमान को छूआ दिखाई देने लगा। प्रकाशमान शरीर दिखाई देने लगा। सिकंदर राजा भय से काँपता हुआ परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिर गया। क्षमा याचना की तथा कहा कि आप परमेश्वर हैं। मेरी जान बख्शो। मेरे से भारी भूल हुई है। मैं अब आपको पहचान गया हूँ। आप स्वयं अल्लाह पथ्वी पर आए हो।

परमात्मा कबीर जी सीधे उसी गणिका के घर गए। आंगन में चारपाई पर बैठ गए। लड़की परमात्मा के चरण दबाने लगी। सतगुरू का पैर अपनी सांथल (टांग) पर रखा था। उसी समय अर्जुन तथा सर्जुन नाम के दो शिष्य कबीर जी के आए। उनको अन्य मूर्ख शिष्यों ने बताया कि सतगुरू कबीर जी ने तो बेशर्म काम कर दिया। शराब पीने लगे हैं। वैश्या को लेकर सरेआम हाथी पर बैठाकर नगर में उत्पात मचाया है। हम तो मुँह दिखाने योग्य नहीं छोड़े हैं।

अर्जुन तथा सर्जुन के गले उनकी यह बकवाद नहीं उतर रही थी। परंतु अनेकों गुरू भाई-बहनों द्वारा सुनकर उनके मन में भी दोष आ गया। संत गरीबदास जी के सद्ग्रन्थ के ''सरबंगी साक्षी'' के अंग में अर्जुन-सर्जुन के विषय में वाणी लिखी हैं जो इस प्रकार हैं :-

❖ **सरबंगी साक्षी के अंग की वाणी नं. 112-115 :-**

गरीब, सुरजन कूं सतगुरू मले, मक्के मदीने मांहि। चौसठ लाख का मेल था, दो बिन सबही जाहिं।।112।।

गरीब, चिंडालीके चौक में, सतगुरू बैठे जाय। चौंसठ लाख गारत गये, दो रहे सतगुरू पाय।।113।।

गरीब, सुरजन अरजन ठाहरे, सतगुरू की प्रतीत। सतगुरू इहां न बैठिये, यौह द्वारा है नीच।।114।।
गरीब, ऊंच नीच में हम रहैं, हाड चाम की देह। सुरजन अरजन समझियो, रखियो शब्द सनेह।।115।।

❖ **सरलार्थ :- अर्जुन तथा सर्जुन दो मुसलमान धर्म के मानने वाले थे। अपने धर्म की परंपरा का निर्वाह करने मक्का-मदीना की मस्जिद में गए हुए थे। वहाँ परमात्मा कबीर जी उनको जिंदा बाबा के वेश में मिले थे। ज्ञान चर्चा करके सत्य मार्ग बताया था। वे कबीर परमात्मा के शिष्य बन गए थे। सतगुरू के आदेशानुसार वे फिर भी मक्का-मदीना या अन्य मुसलमान धर्म के धार्मिक कार्यक्रमों में जाकर भूलों को राह बताकर कबीर परमेश्वर से दीक्षा दिलाया करते थे। उस दिन वे बाहर से आए थे। जब सतगुरू कबीर जी को बदनाम वैश्या के घर देखा तथा लड़की की साथलों पर पैर रखे आँखों देखा तथा गलती कर गए। बोले कि हे सतगुरू! आप यहाँ न बैठो, यह तो नीच बदनाम औरत का घर है। कबीर परमात्मा ने कहा कि हे अर्जुन तथा सर्जुन! मैं ऊँच-नीच में सब स्थानों पर रहता हूँ। यह तो हाड-चाम का शरीर इस लड़की का है। मेरे लिए तो मिट्टी है। हे अर्जुन तथा सर्जुन! समझो। आपको जो दीक्षा नाम जाप की दे रखी है, उसका जाप करो। पहले तो तुम परमात्मा कहते थे। आज मुझे शिक्षा दे रहे हो। तुम तो मेरे गुरू बन गए। मोक्ष तो शिष्य बने रहने से होता है। अब आपके मन में कबीर के प्रति दोष आ गया है। कल्याण असंभव है। दोनों परमात्मा के लिए घर त्यागकर बचपन से लगे थे। उनको अहसास हुआ कि बड़ी गलती बन गई। तुरंत चरणों में गिर गए। इस जन्म में मोक्ष की याचना की। परमात्मा ने कहा कि अब आपका कल्याण मेरे इस रूप से नहीं होगा। आपके मन में दोष आया है। उन्होंने चरण नहीं छोड़े। रो-रोकर याचना करते रहे। तब आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा सतगुरू दिल्ली से 30 मील पश्चिम में एक छोटे-से गाँव में मेरा भक्त जन्मेगा। तब तक तुम इसी शरीर में जीवित रहोगे। मैं तुम्हें स्वपन में सब मार्गदर्शन करता रहूँगा। उस मेरे भक्त को मैं मिलूँगा। उसे दीक्षा अधिकार दूँगा। तुम उससे दीक्षा लेकर भक्ति करना। संत गरीबदास जी जब दस वर्ष के हुए, तब कबीर जी उनको मिले थे। सतलोक दिखाया, वापिस छोड़ा। तब स्वपन में अर्जुन-सर्जुन को बताया। गाँव व नाम, पिता का नाम सब बताया। उस समय अर्जुन-सर्जुन हरियाणा प्रान्त के गाँव-हमायुंपुर में एक किसान के घर रहते थे। आयु लगभग 225 वर्ष की थी। दोनों को एक जैसा स्वपन आया। सुबह एक-दूसरे को बताया। किसान सेवक से पूछा कि यहाँ कोई छुड़ानी गाँव है। किसान ने बताया कि है। उन्होंने कहा कि आपने इतनी सेवा की है, आपका अहसान कभी नहीं भूल पाऐंगे। कपा करके हमें छुड़ानी गाँव तक पहुँचा दो। किसान ने रेहडू (छोटी बैलगाड़ी) में बैठाए तथा छुड़ानी ले गया। संत गरीबदास दास जी ने कहा कि आओ अर्जुन-सर्जुन! मेरे को परमात्मा कबीर जी ने सब बता दिया है। दीक्षा लो। यहीं रहो। भक्ति करो। उन दोनों ने दीक्षा ली और भक्ति की। वहाँ शरीर छोड़ दिया। दोनों के शरीर जमीन में दबाकर मंढ़ी बनाई गई जो सन् 1940 में भूरी वाले संत ने फुड़वा दी। कहा कि यहाँ पर केवल एक यादगार सतगुरू गरीबदास की ही रहेगी। यदि ये दोनों भी रहेंगी तो भक्त इनकी भी पूजा प्रारम्भ कर देंगे जो गलत हो जाएगा। शिष्य की पूजा नहीं की जाती।**

''काशी नगर में भोजन-भण्डारा (लंगर) देना''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 793-939 :-**

सिमटि भेष इकठा हुवा, काजी पंडित मांहि। गरीबदास चिठा फिर्या, जंबुदीप सब ठांहि।।793।।
मसलति करी मिलापसैं, जीवन जन्म कछु नांहि। गरीबदास मेला सही, भेष समेटे तांहि।।794।।
सेतबंध रामेश्वरं, द्वारका गढ गिरनार। गरीबदास मुलतान मग, आये भेष अपार।।795।।
हरिद्वार बदरी बिनोद, गंगा और किदार। गरीबदास पूरब सजे, ना कछु किया बिचार।।796।।
अठारा लाख दफतर चढे, अस्तल बंध मुकाम। गरीबदास अनाथ जीव, और केते उस धाम।।797।।
बजैं नगारे नौबतां, तुरही और रनसींग। गरीबदास झूलन लगे, उरधमुखी बौह पींघ।।798।।
एक आक धतूरा चबत है, एक खावै खड़घास। गरीबदास एक अरध मुखी, एक जीमैं पंच गिरास।।799।
एक बिरक्त कंगाल हैं, एक ताजे तन देह। गरीबदास मुहमुंदियां, एक तन लावै खेह।।800।।
एक पंच अग्नि तपत हैं, एक झरनैं बैठंत। गरीबदास एक उरधमुख, नाना बिधि के पंथ।।801।।
एक नगन कोपीनियां, इंद्री खैंचि बधाव। गरीबदास ऐसे बहुत, गरदन पर धरि पांव।।802।।
एक कपाली करत हैं, ऊपर चरण अकाश। गरीबदास एक जल सिज्या, नाना भांति उपास।।803।।
एक बैठे एक ठाडेसरी, एक मौनी महमंत। गरीबदास बड़बड़ करैं, ऐसैं बहुत अनंत।।804।।
एक जिकरी जंजालिया, एक ज्ञानी धुनि वेद। गरीबदास ऐसे बहुत, वृक्ष काटि घर खेद।।805।।
एक उंचै सुर गावहीं, राग बंध रस रीत। गरीबदास ऐसे बहुत, आदर बिना अतीत।।806।।
एक भरड़े सिरड़े फिरै, एक ज्ञानी घनसार। गरीबदास उस पुरी में, पड़ी है किलकार।।807।।
एक कमरि जंजीर कसि, लोहे की कोपीन। गरीबदास दिन रैंन सुध, पड़े रहैं बे दीन।।808।।
एक मूंजौं की मुदरा, केलौं के लंगोट। गरीबदास लंबी जटा, एक मुंडावैं घोट।।809।।
एक रंगीले नाचहीं, करैं अचार बिचार। गरीबदास एक नगन हैं, एकौं खरका भार।।810।।
एक धूंनी तापैं दहूँ, सिंझ्या देह बुझाय। गरीबदास ऐसे बहुत, अन्न जल कछु न खाय।।811।।
एक मूंधे सूंधे पड़े, आसन मोर अधार। गरीबदास ऐसे बहुत, करते हैं जलधार।।812।।
एक पलक मूंदैं नहीं, एक मूंदे रहैं हमेश। गरीबदास न्यौली कर्म, एक त्राटिक ध्यान हमेश।।813।।
एक बजर आसन करैं, एक पदम प्रबीन। गरीबदास एक कनफट्टा, एक बजावैं बीन।।814।।
शंख तूर झालरि, बजैं रणसींगे घनघोर। गरीबदास काशीपुरी, दल आये बड जोर।।815।।
एक मकरी फिकरी बहुत, गलरी गाल बजंत। गरीबदास तिन को गिनै, ऐसे बहुत से पंथ।।816।।
एक हर हर हका करैं, एक मदारी सेख। गरीबदास गुदरी लगी, आये भेष अलेख।।817।।
एक चढे घोड्यौं फिरैं, एक लड़ावैं फील। गरीबदास कामी बहुत, एक राखत हैं शील।।818।।
एक तनकौं धोवैं नहीं, एक त्रिकाली न्हाहि। गरीबदास एक सुचितं, एक ऊपर को बांहि।।819।।
एक नखी निरबांनीया, एक खाखी हैं खुश। गरीबदास पद ना लख्या, सब कूटत हैं तुश।।820।।
तुश कूटैं और भुस भरैं, आये भेष अटंब। गरीबदास नहीं बंदगी, तपी बहुत आरंभ।।821।।
ठोडी कंठ लगावहीं, आठ बखत नक ध्यान। गरीबदास ऐसे बहुत, कथा छंद सुर ज्ञान।।822।।
एक सौदागर भेष में, कस्तूरी ब्यौपार। गरीबदास केसर कनी, सिमट्या भेष अपार।।823।।
एक तिलक धोती करैं, दर्पन ध्यान गियान। गरीबदास एक अग्नि में, होमत है अन्नपान।।824।।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 793-824 का सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी को काशी शहर से भगाने के उद्देश्य से हिन्दु तथा मुसलमानों के धर्मगुरूओं तथा धर्म के प्रचारकों ने षड़यंत्र के तहत झूठी चिट्ठी में निमंत्रण भेजा कि कबीर जुलाहा तीन दिन का भोजन-भंडारा (लंगर) करेगा। प्रत्येक बार भोजन खाने के पश्चात् दस ग्राम स्वर्ण की मोहर (सोने का सिक्का) तथा एक दोहर (खद्दर की दोहरी सिली चद्दर जो कंबल के स्थान पर सर्दियों में ओढ़ी जाती थी) दक्षिणा में देगा। भोजन में सात प्रकार की मिठाई, हलवा, खीर, पूरी, मांडे, रायता, दही बड़े आदि मिलेंगे। सूखा-सीधा (एक व्यक्ति का आहार, जो भंडारे में नहीं आ सका, उसके लिए) दिया जाएगा। यह सूचना पाकर दूर-दूर के संत अपने शिष्यों समेत निश्चित तिथि को पहुँच गए। काजी तथा पंडित भी उनके बीच में पहुँच गए। चिट्ठी जंबूदीप (पुराने भारत) में सब जगह पहुँची। {ईराक, ईरान, गजनवी, तुर्की, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बिलोचिस्तान, पश्चिमी पाकिस्तान आदि-आदि सब पुराना भारत देश था।} संतजन कहाँ-कहाँ से आए? सेतुबंध, रामेश्वरम्, द्वारका, गढ़ गिरनार, मुलतान, हरिद्वार, बद्रीनाथ, केदारनाथ, गंगा घाट। अठारह लाख तो साधु-संत व उनके शिष्य आए थे। अन्य अनाथ (बिना बुलाए) अनेकों व्यक्ति भोजन खाने व दक्षिणा लेने आए थे। जो साधु जिस पंथ से संबंध रखते थे, उसी परंपरागत वेशभूषा को पहने थे ताकि पहचान रहे। अपने पंथ की प्रचलित साधना कर रहे थे। कोई (बाजे) वाद्य यंत्र बजाकर नाच-नाचकर परमात्मा की स्तुति कर रहे थे।

❖ कोई आक तथा धतूरे को खा रहे थे जो बहुत कड़ूवा तथा नशीला होता है। कोई खड़घास खा रहे थे। कोई उल्टा लटककर वंक्ष के नीचे साधना कर रहा था। कोई सिर नीचे पैर ऊपर को करके साधना यानि तप कर रहा था। कोई केवल पाँच ग्रास भोजन खाता था। उसका यह नियम था। कोई (मुँहमुंदिया) मुख पर पट्टी बांधकर रखने वाले थे। कोई शरीर के ऊपर (खेह) राख लगाए हुए थे। कोई पाँच धूने लगाकर तपस्या कर रहा था। कोई तिपाई के ऊपर मटके को रखकर उसमें सुराख करके पानी डालकर नीचे बैठकर जल धारा यानि झरना साधना कर रहे थे। कई नंगे थे। कई केवल कोपीन बांधे हुए थे। कोई अपनी गर्दन के ऊपर दोनों पैर रखकर आसन कर रहे थे। कोई (ठाडेसरी) खड़े होकर तपस्या कर रहे थे। किसी ने मौन धारण कर रखा था। जो बड़बड़ कर थे, वे भी अनेकों आए थे। कुछ ऊँचे स्वर से भगवान के शब्द गा रहे थे। अनेकों ऐसे थे जिनके साथ कोई चेला नहीं था। उनका कोई सम्मान नहीं कर रहा था। कोई सिरड़े-भिरड़े (बिना स्नान किए मैले-कुचैले वस्त्र पहने) रेत-मिट्टी में पड़े थे। संत गरीबदास जी दिव्य दंष्टि से देखकर कह रहे हैं कि काशी पुरी में किलकारी पड़ रही थी। कोई सिर के ऊपर बड़े-बड़े बालों की जटा रखे हुए थे। कोई-कोई मूंड-मुंडाए हुए थे। कोई अपने पैरों में लोहे की जंजीर बांधे हुए था। कोई लोहे की कोपीन (पर्दे पर लोहे की पतली पत्ती लगाए हुए था) बांधे हुए था। कोई केले के पत्तों का लंगोट बांधे हुए था। कोई त्राटक ध्यान लगा रहा था। कोई आँख खोल ही नहीं रहा था। कोई कान चिराए हुए था। इस प्रकार के अनेकों पंथों के शास्त्र विरूद्ध साधना करने वाले परमात्मा को चाहने वाले (भेष) पंथ काशी में परमेश्वर कबीर जी द्वारा दिए गए भंडारे के

निमंत्रण से इकट्ठे हुए थे। अठारह लाख तो साधु-शिष्य वेश वाले थे। अन्य सामान्य नागरिक भी अनेकों आए थे।

भेष देखि रैदास जी, गये कबीरा पास। गरीबदास रैदास कहै, छूट्या काशीबास।।825।।
बिहंसे बदन कबीर तब, सुन रैदास बिचार। गरीबदास जुलहा कहै, लाय धनी सें तार।।826।।
लाय तार ल्यौ लीन होय, रूप बिहंगम मांहि। गरीबदास जुलहा गया, अगमपुरी निज ठांहि।।827।।
जहां बोडी संख असंख सुर, बनजारे और बैल। गरीबदास अबिगतपुरी, हुई काशी कूं सैल।।828।।
जरद सेत और हीरे नघ, बोड़ी भरी अनंत। गरीबदास ऐसैं कह्या, ल्यौह कबीर भगवंत।।829।।
औह खाकी खंजूस पुर, अन्नजल ना अधिकार। गरीबदास ऐसैं कह्या, सुन तूं कबीर सिरजनहार।।830।।
अनंत कोटि बालदि सजी, तास लई नौ लाख। दासगरीब कबीर केशव कला, एक पलकपुर झांकि।।831।।
जहां कलप ऐसी करी, चौपड़ि के बैजार। गरीबदास तंबू तने, पचरंग झंडे सार।।832।।
खुल्या भंडारा गैबका, बिन चिटठी बिन नाम। गरीबदास मुक्ता तुलैं, धन्य केशौ बलि जांव।।833।।
झीनैं झनवा तुलत हैं, बूरा घृत और दाल। गरीबदास ना आटै अटक, लेवैं मुक्ता माल।।834।।
कस्तूरी पान मिठाइयां, लड्डू जलेबी चंगेर। गरीबदास नुकति निरखि, जैसे भण्डारी कुबेर।।835।।
बिना पकाया पकि रह्या, उतरे अरस खमीर। गरीबदास मेला सरू, जय जय होत कबीर।।836।।
सकल संप्रदा त्रिपती, तीन दिन जौंनार। गरीबदास षट दर्शनं, सीधे गंज अपार।।837।।

केशो आया है बनजारा, काशी ल्याया माल अपारा।।टेक।।

नौलख बोडी भरी विश्म्भर, दिया कबीर भण्डारा। धरती उपर तम्बू ताने, चौपड़ के बैजारा।।1।।
कौन देश तैं बालद आई, ना कहीं बंध्या निवारा। अपरम्पार पार गति तेरी, कित उतरी जल धारा।।2।।
शाहुकार नहीं कोई जाकै, काशी नगर मंझारा। दास गरीब कल्प से उतरे, आप अलख करतारा।।3।।

❖ राग छन्द बंगाली से शब्द नं. 2 तथा 3 का कुछ अंश :-

✯ऐसे अगम अगाध सतगुरु, ऐसे अगम अगाध।।टेक।। अजामेल गनिका से त्यारे, ऐसे पापी अधम उधारे, छाड़ो बाद बिबाद।।1।। ध्रू प्रहलाद स्वर्ग सिधारा एक कल्प, न आवैं इस संसारा, गुरु द्रोही कूं खादि।।2।। सदनां सेऊ समन त्यारे, गुरु द्रोही तौ चुणि चुणि मारै, निंदत कूं नहीं दादि।।3।। धना भगत का खेत निपाया, नामदेव की छांनि छिवाया, सतगुरु लीन्हें अराध।।4।। षट्दर्शन कूं हांसी करिया, भगति हेत केसो तन धरिया, ल्याये बालदि लादि।।5।। जा कूं कहैं कबीर जुलाहा, सब गति पूरन अगम अगाहा, अबिगत आदि अनादि।।6।। ऐसी सतगुरु थापनि थापी, कोटि अकर्मी त्यारे पापी, मेरी क्या बुनियादि।।7।। बाहर भीतरि की सब जानैं, नौका लगी जिहाज निदांनैं, उतरि गये कई साध।।8।। दास गरीब कबीर समर्थ नाथा, हम कूं भेटे सतगुरु दाता। मिटि गई कोटि उपाधि।।9।।2।। ✯ऐसे हैं निज नेक सतगुरु, ऐसे हैं निज नेक।।टेक।। चौरासी सें बेगि उधारैं, जम किंकर की तिरास निवारैं। मेटै कर्म के रेख।।1।। सत कबीर सरबंगी सोई, आदि अनाहद अबिगत जोही, कहा धरत हो भेष।।2।।

❖ राग आसावरी से शब्द नं. 61 :-

✯षट्दर्शन चढि आया देखौ, ऐसी तेरी माया।।टेक।। चिठ्ठा फिर्या समुंदरौं ताई, भेषौ तोत बनाया। ठारा लाख चढे दफतर में, कलम बंधि लखि धाया।।1।। करनामई कलप जदि कीन्हीं, दिल में ऐसी धारी। नौ लख बोड़ी भरि करि आई, केशो नाम मुरारी।।2।। चावल चूंन और घिरत

मिठाई, लागि गये अटनाले। छप्पन भोग सिंजोग सलौनें, भेष भये मतवाले।।3।।कबीर गोसांई, रसोई दीन्हीं, आपै केशो बनि करि आये।परानंदनी जा कै द्वारै, बहु बिधि भेष छिकाये।।4।। हिंदू मुसलमांन कहत हैं, ब्राह्मन और बैरागी। सन्यासी काशी कै गांवै, नाचै दुनिया नागी।।5।। कोई कहै भंडारा दीन्हा, कोई कोई कहै महौछा। बड़े बड़ाई देत हैं भाई, गारी काढैं ओछा।।6।। अमर शरीर कबीर पुरुष का, जल रूप जगदीशं। गरीबदास सतलोक है असतल साहिब बिसवे बीसं।।7।।61।।

❖ राग नट से शब्द नं. 4 का कुछ अंश :-

नामदेव ने निरगुन चीन्ह्या, देवल बेग फिरी रे। अजामेल से पापी होते, गनिका संगि उधरी रे।।4।। नाम कबीरा जाति जुलाहा, षटदल हांसि करी रे। हे हरि हे हरि होती आई, बालदि आंनि ढुरी रे।।5।।

❖ राग निहपाल से शब्द नं. 1 :-

★जालिम जुलहै जारति लाई, ऐसा नाद बजाया है।।टेक।। काजी पंडित पकरि पछारे, तिन कूं ज्वाब न आया है। षट्दर्शन सब खारज कीन्हें, दोन्यौं दीन चिताया है।।1।। सुर नर मुनिजन भेद पावैं, दहूं का पीर कहाया है। शेष महेश गणेश रु थाके, जिन कूं पार न पाया है।।2।। नौ औतार हेरि सब हारे, जुलहा नहीं हराया है। चरचा आंनि परी ब्रह्मा सैं, चार्‌यों बेद हराया है।।3।। मघर देश कूं किया पयांना, दोन्यौं दीन डुराया है। घोर कफन हम काठी दीजौ, चदरि फूल बिछाया है।।4।। गैबी मजलि मारफति औंड़ी, चादरि बीचि न पाया है। काशी बासी है अबिनाशी, नाद बिंद नहीं आया है।।5।। नां गाड्या ना जार्‌या जुलहा, शब्द अतीत समाया है।च्यारि दाग सें रहित सतगुरु, सौ हमरै मन भाया है।।6।। मुक्ति लोक के मिले प्रगनें, अटलि पटा लिखवाया है। फिरि तागीर करै ना कोई, धुर का चाकर लाया है।।7।। तखत हिजूरी चाकर लागे, सति का दाग दगाया है। सतलोक में सेज हमारी, अबिगत नगर बसाया है।।8।। चंपा नूर तूर बहु भांती, आंनि पदम झलकाया है। धन्य बंदी छोड़ कबीर गोसांई, दास गरीब बधाया है।।9।। 1।।

❖ राग होरी से शब्द नं. 10 का कुछ अंश :-

केशो नाम धर कबीरा आए, बालदि आनि ढही रे। दास गरीब कबीर पुरुष कै, उतरी सौंज नई रे।।6।।

❖ अरील से शब्द नं. 22-25 :-

एक चदरी एक गुदरी सतगुरु पास रे। हम नहीं निकसैं बाहरि होय है हांसि रे।।1।। शाह सिकंदर सुनि करि डेरै जात है। बोलै माय कबीर यहाँ कुछि घात है।।2।। इनि कपटी कुलहीन लगाया काट रे। बनि केशव बनजारा करि हैं साँटि रे।।3।। जहाँ शाह सिकंदर सतगुरु गोसटि कीन्हियाँ। तुम कर्ता पुरुष कबीर तिबै उहाँ चीन्हियाँ।।4।। हम रेजा कपरा बुनि हैं आत्म कारनैं। ठारा लाख दल भेष पर्‌या है बारनैं।।5।। खाँन पाँन घर माँहि नहीं है मोर रे। षट् दल कीन्ही हांसि कीया बहु जोर रे।।6।। मुसकल की आसांन करैंगा जांनि करि। एक केशव बनजारा उतर्‌या आंनि करि।।7।। कह शाह सिकंदर साची भाषि हैं। काशी कै बेजार द्रव्य बहु लाख हैं।।8।। गुदरी गहनै धरि करि सीधा देत हैं। गौंड़ी टोड़ी और बिलावल लेत हैं।।9।। रासा निरगुण नाम हमारे एक है। हरिहां महबूब कहता दास गरीब मुझे कोई देखि है।।10।।22।। कुटल भेष कुलहीन कुबुद्धि कूर हैं। भाव भक्ति नहीं जानैं श्वाना सूर हैं।।1।। चलि मेले का भाव देखि फिर आवहीं। उहां केशव

बनजारा भूल भूलावही ।।2।। एक हिलकारा आंनि तंबु में ले गया। केशव और कबीर सु मेला दे गया।।3।। तीनि दिबस दरबेश महात्म मालवै। गैबी फिरै नकीब कूंच करि चालवै।।4।। गंग उतरि करि गैब हुये दल भिन्न रे। कहां गये बनजारे बोड़ी अन्न रे।।5।। केशव और कबीर मिलत एकै भये। हरिहां महबूब कहता दास गरीब तकी रौवे दहे।।6।।23।। शाह तकी नहीं लखी निरंजन चाल रे। या परचैं सें आगै मांगै ज्वाल रे।।1।। साला कर्म सुभांन सरीकति देखिया। शाहतकी निरभाग न कागज छेकिया।।2।। शाह सिकंदर चरण जुहाँरे जानि करि। तुम अबिगत पुरुष कबीर बसौ उर आँनि करि।।3।। तुम खालिक सरबंग सरूप कबीर है। हरिहाँ महबूब कहता दास गरीब पीरन शिर पीर है।।4।।24।। यौह सौदा सति भाय करौ प्रभाति रे। तनमन रतन अमोल बटाऊ साथ रे।।1।। बिछरि जांहिगे मीत मता सुनि लीजिये। बौहरि न मेला होय कहौ क्या कीजिये।।2।। सील संतोष बिबेक दया के धाम है। ज्ञान रतन गुलजार संगाती राम है।।3।। धर्म धजा फरकंत फरहरैं लोक रे। ता मध्य अजपा नाम सु सौदा रोक रे।।4।। चले बनजुवा उठि हूंठ गढ छाड़ि रे। हरिहां महबूब कहता दास गरीब लगै जम डांढ रे।।5।।25।।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 825-837 का सरलार्थ :- संत रविदास जी सुबह जंगल फिरने के लिए गए तो इतने सारे साधु-संतों को देखकर आश्चर्य किया तथा प्रश्न किया कि किस उपलक्ष्य में आए हो? उन्होंने बताया कि इस शहर के सेठ कबीर जुलाहा यज्ञ कर रहे हैं। हमारे पास पत्र गया था, हम आ गए हैं। तीन दिन का भोजन-भंडारा है। देखो पत्र साथ लाए हैं। रविदास जी को समझते देर नहीं लगी। परमेश्वर कबीर जी के पास घर पर गए। बताया कि हे प्रभु! अबकी बार तो काशी त्यागकर कहीं अन्य शहर में चलना होगा। सब बात बताई। परमात्मा कबीर जी संत रविदास जी की बात सुनकर चिंतित नहीं हुए। हँसे तथा बोले कि हे रविदास! बात सुन! बैठ जा भक्ति कर। परमात्मा आप संभालेगा। कबीर परमात्मा एक रूप में तो वहाँ कुटी में बैठे भजन करने का अभिनय कर रहे थे। अन्य रूप में सतलोक में गए। उनको पहले ही सतर्क कर रखा था। सतलोकवासियों ने असँख्यों बनजारे तथा बौड़ी (बैलों के ऊपर बोरे रखकर भोजन सामग्री भर रखी थी। एक बैल को बोरे समेत बंजारे लोग बोडी कहते थे) तैयार कर रखी थी।

जब कबीर जी सतलोक में बोडी लेने गए तो सतलोक वाले सेवक बोले कि हे कबीर भगवान! ले जाओ जितनी आवश्यकता है। हे कबीर संजनहार! वह तो (खंजूस) भूखा निर्धन लोक है। कबीर जी ने उनमें से नौ लाख बौडी तथा कुछ बनजारे वाले वेश में भक्त सेवादार साथ लिए तथा स्वयं केशव बंजारे का रूप धारण किया। एक पलक (क्षण) में पथ्वी के ऊपर आ गए। काशी शहर में तंबू (Tent) लगाए। पाँच रंग के झंडे सतलोक वाले लगाए। भंडारे में कोई खाना खाओ, कोई रोक-टोक नहीं थी। यह नहीं था कि जिनके नाम निमंत्रण पत्र गया है, वे अपनी चिट्ठी तथा नाम-पता दिखाओ और खाना खाओ जैसा कि काल लोक वाले साधु किया करते थे। सूखा सीधा के लिए आटा, खांड, चावल, घी, दाल सब दी जा रही थी। मिठाई, लड्डू, जलेबी, चंगेर (बर्फी) सब खिलाई जा रही थी। जैसे कुबेर भंडारी ही पथ्वी पर आया हो। बिना पकाया पक रहा था। टैंटों-तंबुओं में ढ़ेर के ढ़ेर मिठाईयों के लगे थे। कड़ाहे चावल, खीर, हलवा के भरे थे। सब खा रहे थे। दक्षिणा दी जा रही थी।

कबीर परमेश्वर की जय-जयकार हो रही थी। बैल बिना सींगों वाले थे। बैल पृथ्वी से छः इंच ऊपर-ऊपर चल रहे थे। पृथ्वी के ऊपर पैर नहीं रख रहे थे क्योंकि यह पृथ्वी किटाणुओं से भरी है। पैरों के नीचे जीव मारने से पाप लगता है। तीन दिन तक सब सम्प्रदायों के व्यक्ति भोजन से तृप्त किए। षटदर्शन पंथों वाले साधुओं ने असँख्यों सीधे (एक व्यक्ति का एक समय की सूखी सामग्री, चावल, खांड, दाल, आटा, घी आदि-आदि) ले लिये। एक वर्ष का भोजन संग्रह कर ले गए। तीन दिन यहाँ छककर खा गए।

शाह सिकंदरकूं सुनी, धन कबीर बलिजांव। गरीबदास मेलै चलौ, मम हिरदे धरि पांव।।838।।
कहै कबीर सुन शाह तूं, भेष बीगाड़ा काम। गरीबदास कैसैं चलौं, मो गठरी नहीं दांम।।839।।
नहीं काशी में शाह कोई, मोहि उधारा देत। गरीबदास ताना तनूं, जिब कुंनबै सुधि लेत।।840।।
मैं अधीन अनकीट हूं, उदर भरै नहीं मोहि। गरीबदास माता दुखी, अरू मोमिन है छोहि।।841।।
ऐ कबीर तुम अलह हो, पलक बीच प्रवाह। गरीबदास कर जोरि करि, ऐसैं कहता शाह।।842।।
तुम दयाल दरबेश हौ, धरि आये नर रूप। गरीबदास ऐसैं कहैं, शाह सिकन्दर जहां भूप।।843।।
उठे कबीर करम किया, बरसे फूल अकाश। गरीबदास मेलै चले, चौंर करत रैदास।।844।।
तीनि एक चंहडोल में, रैदास शाह कबीर। गरीबदास चौंरा करैं, बादशाह बलबीर।।845।।
मुकुट मनोहर बांधि करि चढे फील कबीर। गरीबदास उस पुरी में, कोई न धरिहै धीर।।846।।
केशव चले कबीर पै, कबीर कष्ट क्यौं कीन। गरीबदास हस्ती चढे, मेला देखन तीन।।847।।
चौपड़ि के बैजार फिरि, आये केशव पास। गरीबदास कुरबांन गति, क्या क्या कहूं बिलास।।848।।
पाट पिटंबर बिछि गये, ऊपरि हीरे लाल। गरीबदास साहिब धनी, ल्याये मुक्ता माल।।849।।
केशव और कबीर का, तंबू मांहि मिलाप। गरीबदास आठ पहर लग, गोष्टी निज गरगाप।।850।।

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 838-850 का सरलार्थ :- उन षड़यंत्रकारियों ने सुनियोजित सोची-समझी चाल के तहत दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी को भी भंडारे का निमंत्रण भेजा था। सोचा था कि सिकंदर राजा आएगा। यहाँ कोई भंडारा नहीं मिलेगा। जनता कबीर को गालियाँ दे रही होगी। अराजकता का माहौल होगा। कबीर भाग जाएगा। राजा के मन से उसकी महिमा समाप्त हो जाएगी। शेखतकी जो राजा सिकंदर का धार्मिक पीर (गुरू) था तथा मंत्री भी था, वह इस षड़यंत्र का मुखिया था। जब राजा व शेखतकी भंडारा स्थल पर आए तो देखा लंगर लग रहा है। मोहन भोजन परोसे जा रहे हैं। दक्षिणा भी दी जा रही है। कबीर जी सेठ की जय बुलाई जा रही है। राजा ने उपस्थित व्यक्तियों से पूछा कि भंडारा कौन कर रहा है? उत्तर मिला कि कबीर सेठ जुलाहा कर रहा है। वह तो अभी आए नहीं हैं। उनका नौकर सामने तंबू में बैठा है। वह सब व्यवस्था कर रहा है। राजा सिंकदर तथा शेखतकी तंबू के पास गए। उस व्यक्ति का परिचय पूछा तो बताया कि मेरा नाम केशव बनजारा है। कबीर मेरा पगड़ी-बदल मित्र है। उनका पत्र मेरे पास गया था कि आप कुछ सामान भंडारे का लेते आना। छोटा-सा भंडारा करना है। मैं हाजिर हो गया। कबीर जी कहाँ है? राजा ने पूछा। वे किस कारण से नहीं आए? केशव ने कहा कि वे मालिक हैं। मर्जी है कभी आऐं। उनका नौकर जो बैठा है। यह व्यवस्था वे स्वयं ही कुटी में बैठे संभाल रहे हैं। वे परमात्मा हैं। राजा सिकंदर हाथी पर सवार होकर कबीर जी की

कुटी पर पहुँचा। दरवाजा बंद था। निवेदन करके खुलवाया तथा कहा कि आप मेरा दिल का निवेदन स्वीकार करके मेरे साथ मेले में भंडारे पर चलो तो परमात्मा ने कहा कि हे राजन! मेरे साथ अभद्र मजाक किया गया है। मैं निर्धन व्यक्ति कपड़ा बुनकर परिवार का पोषण कर रहा हूँ। अठारह लाख साधु भोजन-भंडारा छकने आए हैं। तीन दिन का भंडारा पत्र में लिखा है। मैं कहाँ से खिलाऊँगा? मैं तो घर से बाहर नहीं निकल सकता। रात्रि में परिवार सहित भाग जाऊँगा। हे राजा! इन भेषों वालों ने काम बिगाड़ा है। झूठी चिट्ठी मेरे नाम से भेज रखी है। मेरा उदर भी नहीं भरता। मेरी माता तथा पिता (मुँह बोले माता-पिता) मेरे पर क्रोध करेंगे। कोई काशी नगर में सेठ (शाह) भी मुझे उधार नहीं देता क्योंकि मेरी आमदनी कम है, निर्धन हूँ। मैं कैसे आपके साथ मेले में भंडारे के स्थान पर चलूँ। राजा सिकंदर जो दिल्ली का सम्राट था, उसने हाथ जोड़कर कहा कि हे कबीर! आप परमात्मा (अल्लाह) हो। नर रूप बनाकर आए हो। तुम दयाल (दरवेश) संत हो।

कबीर ने (करम) रहम किया। चलने के लिए उठे तो आकाश से फूल बरसने लगे। सिकंदर राजा ने परमात्मा कबीर को हाथी पर बैठाया। साथ में रविदास जी कबीर जी के सिर के ऊपर चंवर करते हुए कबीर जी के आदेश अनुसार उनके साथ हाथी पर बैठ गए। राजा भी हाथी पर उनके साथ बैठा। फिर रविदास जी से निवेदन करके राजा सिकंदर ने चंवर ले लिया और कबीर जी के ऊपर चंवर करने लगे। कबीर परमात्मा के सिर के ऊपर अपने आप मनोहर मुकुट आकर सुशोभित हो गया। काशी पुरी के व्यक्ति बेचैनी से कबीर परमेश्वर के दर्शन करने का इंतजार कर रहे थे। भंडारा स्थल पर आए तो केशव रूप उनके हाथी के पास आया तथा कहा कि हे कबीर प्रभु! आपने यहाँ आने का कष्ट क्यों किया? आपका दास जो सेवा में हाजिर है। उसकी बात को अनसुना करके तीनों हाथी को आगे मेले में ले गए जहाँ अठारह लाख व्यक्ति ठहरे थे। वह तो बहुत बड़ा मेला था। चौपड़ के बाजार में घूम-फिरकर केशव के पास आ गए। जब कबीर जी हाथी से उत्तरे तथा केशव वाले तंबू में गए तो अपने आप सुंदर तख्त आ गया तथा उसके ऊपर सुंदर बिछौनी बिछ गई। बिछौनी के चारों ओर हीरे, लाल लग गए। महाराजा जैसा आसन लग गया। दूसरी ओर ऐसा ही केशव के लिए लगा था। कबीर जी को देखने के लिए सब साधु-संत आकर चारों ओर कुछ बैठ गए, पीछे वाले खड़े रहे। परमात्मा कबीर जी ने केशव के साथ (आठ पहर) चौबीस घंटे लगातार आध्यात्मिक गोष्ठी की, तत्वज्ञान सुनाया। लगभग दस लाख उन भ्रमित साधुओं के शिष्यों ने कबीर जी से दीक्षा ली और जीवन सफल किया।

केशव कहत कबीर सैं, पूछत बातां बीन। गरीबदास क्यूं ऊतरे, ऐसै मुलक मलीन।।851।।
खांनपान की इंछि जित, नाहीं अधरि बिमान। गरीबदास यौह लोक जीव, छाड़्या मुलक अमांन।।852।।
झूठ–कपट इस लोक में, पाप पुण्य ब्यौहार। गरीबदास केशव कहै, कैसैं रहन तुम्हार।।853।।
नहीं अधरि सरबर तहां, नहीं अधरि कोई बाग। गरीबदास केशव कहैं, क्यौं नहीं देते त्याग।।854।।
नहीं फुहारे गगन में, नहीं मानसी गंग। गरीबदास जग देखि करि, हमरा चित मन भंग।।855।।
नहीं नगर हैं नूर के, नहीं बगर तिस हीर। गरीबदास केशव कहै, तुम क्यौं रहै कबीर।।856।।
कलंगी कला न मनुष्य कै, देवंगना नहीं दीप। गरीबदास केशव कहै, जहां सायर तहां सीप।।857।।

नहीं तुरंगम अधर भूमि, नहीं रापति कोई सेत। गरीबदास केशव कहै, खाली राखत खेत।।858।।
धन्य कबीर कुरबांनजां, ऐसी रहनि तुम्हार। गरीबदास केशव कहै, छाड़ि गीद संसार।।859।।
धन्य कबीर कुरबांनजां, पल पल चरण जुहार। गरीबदास तैं क्यौं तजे, हीरे लाल के पहार।।860।।
याह पौहमी है छार की, मुरदफरोशी पिंड। गरीबदास केशव कहै, चरण धरे शिर डंड।।861।।
मुरद कफन सब बिछि रह्या, तापरि मुरदे आव। गरीबदास केशव कहै, यहां नहीं धरिये पांव।।862।।
मुरद जिमी असमान है, मुरद चंद और सूर। गरीबदास केशव कहै, मुरद बजावै तूर।।863।।
मुरद नदी कुल वृक्ष हैं, मुरद पिण्ड अरु प्राण। गरीबदास वह क्यौं तजे, शंख पद्म शशि भांन।।864।।
सुनि कबीर इस धरणि परि, तुम नहीं धरियो पांव। गरीबदास बोडी बहुत, यहां रहत सत भाव।।865।।
गांडि भडू.का खेलही, या जग में सब लोग। गरीबदास रूचि मानहीं, इस कूं थापैं भोग।।866।।
नरक भरे तिस उदर हैं, रूधिर भरी सब देह। गरीबदास केशव कहै, या मनुष्यौं मुख खेह।।867।।
राम नाम कैसैं फुरैं, नरक नगीन शरीर। गरीबदास केशव कहै, बिलंबे कहां कबीर।।868।।
जूंनी संकट में परे, फिरि जूंनी सें संग। गरीबदास केशव कहै, भाव भक्ति सब भंग।।869।।
जूंनी संकट भुगतहीं, फिरि जुंनी सें भोग। गरीबदास केशव कहै, मुरद भूत सब लोग।।870।।
सौ जोजन पर लगत है, या दुनियां की गंध। गरीबदास केशव कहै, हाड चाम का फंद।।871।।
हाड चाम के गाम सब, हाड चाम सब खांन। गरीबदास केशव कहै, हाड चाम का दान।।872।।
हाड चाम की गूदरी, हाड चाम का चोल। गरीबदास केशव कहै, हाड चाम शिर खोल।।873।।
हाड चाम की नाक है, हाड चाम का मुख। गरीबदास केशव कहै, तज कबीर योह रुख।।874।।
हाथ इकीसौ आंत है, भरी नरक सब ठेल। गरीबदास केशव कहै, खाटी करवी बेल।।875।।
करवी करवा फल लगैं, करवी करवा खाय। गरीबदास केशव कहै, मीठा नाम निपाय।।876।।
सुनि कबीर सुर भेद हूं, केशव कसत करंत। गरीबदास गंदे मनुष्य, झगड़ा आनि करंत।।877।।
बिष्टा जिनकी देह में, मगन फिरैं दिन रात। गरीबदास केशव कहै, जिन शिर जमकी घात।।878।।
अजब अहंकारी मनुष्य हैं, सुन कबीर मम ज्ञान। गरीबदास केशव कहै, इन्हें कैसा ज्ञान अरू ध्यान।।879।।
सुन कबीर मन भावने, तुमरी बात अगाध। गरीबदास केशव कहै, तुमसे तुमही साध।।880।।
नाद बिंदमै बोय है, चलि है पान अपान। गरीबदास केशव कहै, बिन ही दम सैलान।।881।।
दम नहीं देही नहीं, नहीं जिमीं असमान। गरीबदास केशव कहै, जहां रहन अस्थान।।882।।
हरे पीत मोती जहां, हीरे बदन सपेद। गरीबदास केशव कहै, सुनौं देशका भेद।।883।।
लाल श्याम जहां रत्न हैं, नहीं भौतिक आकार। गरीबदास केशव कहै, चलि कबीर परिवार।।884।।
उर अमोघ जहां भजन है, केशव जहां रहंत। गरीबदास केशव कहै, कोई कोई जन समझंत।।885।।
उर अमोघ आसन अरस, उर अमोघ सरसंध। गरीबदास केशव कहै, सोई साध निर्बंध।।886।।

''कबीर जी तथा केशव जी की ज्ञान चर्चा''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 851-886 का सरलार्थ :- केशव ने कबीर परमेश्वर से कहा कि हे कबीर! आप इस मलीन देश में किसलिए आए हो? आप तो सतलोक के सुख सागर के मालिक हो। वहाँ तो सर्व सुख है। यहाँ कष्ट के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यह तो जीव लोक है। ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तक जीव हैं। जन्म-मत्यु के चक्कर में हैं। आपने वह**

सतलोक (अमान) सुख-चैन वाला यानि परम शांति वाला लोक क्यों छोड़ दिया? इस काल लोक के व्यक्ति झूठ-कपट की बातें करते हैं। पाप तथा पुण्य के भोग में जन्म-मत्यु के चक्कर में पड़े हैं। महान कष्ट उठा रहे हैं। हे कबीर जी! आप कैसे रह रहे हो? छोड़ क्यों ना देते? जहाँ से आप आए हो, वहाँ तो जगह-जगह बाग हैं। गंगा जल जैसे जल के सरोवर हैं। स्थान-स्थान पर फव्वारे चल रहे हैं। सदा बसंत जैसा मौसम रहता है। इस लोक को देखकर मेरा चितभंग हो गया है। मैं आश्चर्य कर रहा हूँ कि ये कैसे लोग हैं? वहाँ तो सब निवासी मानवों के सिर पर कलंगी शोभा करती है। सुंदर देवांगनाऐं (देवों की स्त्रियाँ) हैं। यहाँ तो कोई भी व्यवस्था अच्छी नहीं है। न अच्छे (तुरंगम) घोड़े हैं, न सफेद हाथी हैं। धन्य हैं हे कबीर जी! आप पर मैं कुर्बान जाऊँ, आपकी ऐसी सामान्य जिंदगी। केशव ने कहा कि इस गंदे लोक को छोड़ दे। चल अपने देश सतलोक में। ऊपर सतलोक में हीरों व लालों के पहाड़ हैं। यहाँ पत्थर के पहाड़ हैं। यह धरती (पोहमी) तो मिट्टी की है। इसके ऊपर कदम रखने से भी पाप लगता है। यहाँ पर पाँव भी ना रखना। इन सबका (मुरद परोसी पिंड) नाशवान शरीर है। सतलोक में अमर शरीर है। यहाँ के स्त्री-पुरूष आपस में (गांडि-भडुका खेलहीं) मिलन करते हैं। इसी को सबसे अच्छा भोग मानते हैं। सतलोक का भोग असँख्य गुणा आनंददायक है।

सब मानव (स्त्री-पुरूष) के शरीरों में नरक भरा है। नसों में रूधिर भरा है, थूक भरा है। बिस्टा (टट्टी) भरा है। ये दिन-रात इसी नरक भरे शरीर में मस्त रहते हैं। फिर कुत्ते-गधे बनते हैं। यमदूत इनके ऊपर (घात) मारने के लिए छुपकर दांव लगाए रहता है। इस काल लोक की पथ्वी की सौ योजन (एक योजन बारह किलोमीटर के समान होता है) यानि बारह सौ किमी. ऊपर तक दुर्गंध जाती है।

हे कबीर जी! ये सब अहंकारी जीव हैं। इनको कैसा ज्ञान और ध्यान बताया जा सकता है? ये कैसे भक्ति करेंगे? हे कबीर जी! आप इनमें कहाँ फँसे बैठे हो? हे कबीर मन भावने यानि मेरे प्रिय सुन! आपकी बात उत्तम है। आप जैसा साधु हो ही नहीं सकता। आप इनका कल्याण चाहते हो। ये आपको कष्ट देते हैं। उस लोक में जहाँ आपका निवास है, पाँच तत्व की देही (शरीर) नहीं है। (दम) श्वांस से भी उस शरीर का कोई संबंध नहीं है। बिना श्वांस का अविनाशी शरीर है।

सुनि केशव अब बंदना, कहै कबीर संदेश। गरीबदास सर्व लोक में, है हमरा प्रवेश।।887।।
हम अमान अबिगत पुरुष, चुंबक ज्यूं चमकार। गरीबदास लोहा फिरै, हमरै अधर अधार।।888।।
लोहे रूपी देह है, चुंबक रूपी प्राण। गरीबदास दोऊसैं बगल, शब्दातीत अमान।।889।।
जब हम खैंचैं प्राणकौं, दम मिलैं दरियाव। गरीबदास पिण्डा परै, सुनि श्वास मिलि जाय।।890।।
सुंन हमारा रूप है, हम हैं सुंनसैं न्यार। गरीबदास उस प्राणकूं, हमहीं जोवनहार।।891।।
हम जोवैं हम ऐंचिहैं, योह सब ख्याल हमार। गरीबदास अबिगत अदल, फजल फूल दीदार।।892।।
फूल रूप सब प्रान हैं, फूल फूल में गंध। गरीबदास मम महल की, मैंही जानत सिंध।।893।।
पिण्ड पेड़ जीव बीज हैं, पिण्ड बीजसैं होत। गरीबदास जानैं नहीं, माता दूझत सोत।।894।।
बालक पीवै अति अघाय, माता दूधी धैंन। गरीबदास उस नरक में, कहां रतन सुरसैंन।।895।।

हाड चामकी देहिमें, दूध रतन सरबंत। गरीबदास घट पिण्ड में, ऐसै है भगवंत।।896।।
थन दूधिकौं पारिकरि, जै कोई देखै दूध। गरीबदास उस पिण्ड में, हाड चाम और गूद।।897।।
हमरैही उनिहारि है, हमरा सिरजनहार। गरीबदास बिधि भेद सुन, उघरै मुक्ति द्वार।।898।।
तनकै अंदर मन बसै, मनमें दिल दरियाव। गरीबदास उस लहरसैं, न्यारा है प्रभाव।।899।।
चितकै बीच चबूतरा, तहां वहां रहनि हमार। गरीबदास उस महल में, दूजा नहीं लगार।।900।।
हिरदे की खिरकी खुल्है, ऐंनक मध्य अनूप। गरीबदास घट घट बसैं, रहै गगन जल कूप।।901।।
जलसैं गगन न भीजि है, नहीं सुकावै धूप। गरीबदास मम देश यौह, सुन सें न्यारा रूप।।902।।
हम हैं सुंन सनेहीयां, सुन केशव करतार। गरीबदास हम चरण सैं, उतरे जीव अपार।।903।।
जुग सतरि हम ज्ञान दे, जीव न समझया एक। गरीबदास घर घर फिरैं, धरैं कबीरा भेष।।904।।
सतरि जुग सेवन किये, किन्हे न बूझी बात। गरीबदास मैं समझात हूँ, मोहे लगावें लात।।905।।
कलप कोटि जुग बीतिया, हम आये हर बेर। गरीबदास केशव सुनौं, देन भक्ति की टेर।।906।।
स्वर्ग मृत्यु पाताल में, हम पैठे कई बार। गरीबदास घरि घरि सिज्या, मारि मारि कहै मारि।।907।।
हमरी जाति अपूरबी, पूरब रहनि हमार। गरीबदास कैसैं जुड़ै, पश्चिम के का तार।।908।।
हम हैं पूरब ठेट के, उतरे औघट घाट। गरीबदास जीव दक्षिण के, यौ नहीं मिलती साटि।।909।।
हम पूरब के पूरबी, उतर देश उतरंत। गरीबदास जीव दक्षिण के, यौ नहीं संगि चलंत।।910।।
जीन्ह हमरी सीख लई, काटों जम जंजीर। गरीबदास केशव सुनै, ऐसैं कहैं कबीर।।911।।
फिरि बाजी बिधना रचै, वै नहीं जीव आवंत। गरीबदास सत्यलोक में, अमरपटा पावंत।।912।।
अनंत कोटि बाजी तहां, रचे सकल ब्रह्मंड। गरीबदास मैं क्या करूं, काल करत जीव खंड।।913।।
कीलौं काल निकंदिहूँ, जीव विध्वंस नहीं होय। गरीबदास जुलहा कहै, शब्द न बूझै कोय।।914।।
मनुष्य जीव क्या बात है, पशु पक्षी प्रवान। गरीबदास जुलहा कहै, करिहूँ हंस अमान।।915।।
मैं बनजारा आदि का, याही हमरि साटि। गरीबदास जीव अभय करि, बौहरि न आवै बाट।।916।।
एक गाडै एक जारिये, यह नहीं मोहि सुहाय। गरीबदास सतलोक में, देऊं जीव मिलाय।।917।।
सुन केशव साहिब धनी, मैं हूं तुमरा दास। गरीबदास तुम हुक्म सैं, काटत जीव की फांस।।918।।
मुझ आजिज की कलप सुनि, तुम उतरें ततकाल। गरीबदास जुलहा कहै, मग झीना पंथ बाल।।919।।
नौलख बोडी ऊतरी, केशव कसत करंत। गरीबदास मम कारणैं, भक्ति सरू भगवंत।।920।।
सुनि स्वामी साहिब धनी, करिहूं अरज अनेक। गरीबदास जुलहा कहै, पूरण कीन्हे भेष।।921।।
कामधेनु कल्पवृक्ष तूं, मैं एक तुमरा फूल। गरीबदास केशव धनी, सदा संग मखमूल।।922।।
तुमसे संगी संग हैं, हमरे कछू न चाह। गरीबदास सतगुरु धनी, उतरे माल भराय।।923।।
पूरण ब्रह्म कृपानिधान, सुन केशव करतार। गरीबदास मुझ दीन की, राखियौं बहुत संभार।।924।।

''कबीर जी वचन''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 887-924 का सरलार्थ :- कबीर जी ने कहा कि हे केशव! मेरा निवेदन सुन। मैं सब स्थानों पर विद्यमान हूँ। मैं सर्वव्यापक हूँ। जैसे गऊ बच्चे को जन्म देती है। गाय के शरीर में रूधिर भी है। गोबर-पेशाब भी है। माँस भी है, हड्डियाँ भी हैं। उसी शरीर में बच्चे के लिए दूध भी बन गया है। इसी प्रकार सत्य साधना करने से इसी रूधिर व मल भरे मानव शरीर में परमात्मा भी प्रकट हो जाता है। भक्ति की शक्ति बन जाती है।**

जीव का मोक्ष हो जाता है। बच्चे के जन्म से पहले यदि गाय या भैंस के थन (दूधी) को चीर-फाड़कर देखें तो दूध नहीं मिलेगा। माँस व रक्त मिलेगा। बच्चा उत्पन्न होने के पश्चात् दूध की बाल्टी भर देती है। हे केशव! अपना सजनहार अपने (हुनियार) जैसा है यानि मानव स्वरूप है।

जो काल से अधिक प्रभावित हैं, कर्महीन हैं, उनको सत्तर युग तक तत्वज्ञान समझाया। एक भी जीव नहीं समझा। मैं घर-घर भिन्न-भिन्न वेश धारण करके जाता हूँ, समझाना चाहता हूँ। मेरे को लात मारते हैं। हे केशव! सुन। मैं करोड़ों कल्पों तक बार-बार सच्ची भक्ति करने की प्रेरणा करने स्वर्ग लोक, पाताल लोक तथा पथ्वी लोक पर मैं कई बार गया-आया हूँ। मेरे पीछे पड़ जाते हैं। कहते हैं कि यह झूठा ज्ञान कहता है। इसको मारो-मारो। हम पूर्व के यानि ऊपर सतलोक के रहने वाले हैं। जीव पश्चिम के हैं। इसलिए बोली मिलती नहीं। पश्चिम यानि काल लोक के निवासी हैं यानि हमारे ज्ञान को समझ नहीं पाते। इनको काल लोक का लोक वेद पढ़ा रखा है। मेरी कोशिश है कि इनको नरक से निकालूँ।

जिन्होंने हमारी शिक्षा (उपदेश) मान ली, दीक्षा ले ली, उनके (जम जंजीर) काल के लोक के पाप कर्मों के बंधन को समाप्त कर देता हूँ। इस बात को केशव भी सुन रहा था तथा प्रभावित हो रहा था। वे मेरी शरण वाले सत्य भक्ति करके सतलोक में चले जाते हैं। वहाँ पर (अमर पट्टा) अमर पद प्राप्त करते हैं। वे कभी जन्म-मत्यु के चक्र में नहीं गिरते। मैंने (कबीर जी ने) अनंत करोड़ दुनिया बनाई हैं। अनंत करोड़ ब्रह्मंड बनाए हैं। मैं इतना सक्षम हूँ। परंतु काल जीव का नाम खण्ड करवाकर मेरे से दूर कर देता है। बताओ मैं क्या करूँ? मैं काल को (कील दूं) बाँध दूँ। किसी भी जीव को कष्ट नहीं होगा। सब सत्यलोक में चले जाऐंगे। परंतु मेरे ज्ञान को कोई नहीं मानता है, न सुनता है। कबीर जुलाहा यह कह रहा है कि मानव की तो बात ही क्या है, पशु-पक्षियों को भी (अमान) सतलोक भेज दूँ यानि अमन-चैन कर दूँ। मैं तो सदा का (आदि का) बनजारा (व्यापारी) हूँ। मेरी यही (साट) सौदागरी है कि जीवों को सच्चा ज्ञान, सच्चा नाम बताकर भक्ति करवाकर काल ब्रह्म का हिसाब करवाकर जीव को मुक्त करवाकर सत्यलोक ले जाऊँ। वे जीव पुनः काल के जाल में नहीं आते। उन जीवों को अमर कर देता हूँ। जो भिन्न-भिन्न धर्म बनाकर काल ने आपस में लड़ा रखे हैं, भिन्न-भिन्न रीति-रिवाज बना रखे हैं। हिन्दु मुर्दे को जलाता है। मुसलमान इसे बुरा मानते हैं। वे जमीन में गाड़ते हैं। मुझे ये अच्छा नहीं लगता। मैं चाहता हूँ कि ये तत्वज्ञान समझें। एक हो जाऐं। सत्य साधना करें, सतलोक जाऐं। सदा सुखी रहें। कबीर जी ने कहा कि हे केशव! (धनी) मालिक मैं तो आपका दास हूँ। आपकी आज्ञा से जीवों के कर्म बंधन काटता हूँ। मुझ आजिज की पुकार सुनकर आप तत्काल सहयोग के लिए उतरे हो। नौ लाख बौडी लेकर आए हो। मेरी लाज रखी है। आपके कारण भगवान की सच्ची भक्ति प्रारंभ होती है। हे केशव साहिब धनी! मैं आपका धन्यवाद करता हूँ कि आपने सब (भेषों) पंथों के साधुओं को पूर्ण रूप से तप्त किया है। आप तो कामधेनु (मनोकामना व सब प्रकार के खाद्य पदार्थ देने वाली देवताओं की गाय) के

समान हो। मैं आपका छोटा-सा फूल यानि बच्चा हूँ। आप सदा साथ रहना। आप जैसे साथी मेरे साथ हैं, फिर मुझे क्या चाहिए? मेरे सतगुरू धनी आप माल भरकर उतरे हो। हे पूर्ण ब्रह्म केशव करतार! मेरी अर्ज सुनो। मुझ दीन का बहुत ध्यान रखना। काल लोक में मेरी सुध लेते रहना।

सुनि कबीर केशव कहै, जो कुछ करौ सो कीन। गरीबदास मुख्त्यार तुम, तुमैं दीन बेदीन।।925।।
सुनि सतगुरु तोसैं कहूं, तुमहो दीनदयाल। गरीबदास आधीन मैं, तुम साहिब अबदाल।।926।।
अनंत कोटि ब्रह्मांडकौं, त्यारत लगैं न बार। गरीबदास केशव कहै, तुमही दारमदार।।927।।
तुमही दारमदार हौ, यहां कलप नहीं इंछ। गरीबदास केशव कहै, तुमरे ही प्रपंच।।928।।
तूं प्रपंची आदिका, अनंत जीव तुम त्यार। गरीबदास केशव कहै, तुम कोली घनसार।।929।।
अनंत लोक ताना तन्या, गूढी गांठी तूं बीनि। गरीबदास केशव कहै, तुम कोली परवीन।।930।।

''केशव जी के वचन तथा भंडारा सम्पन्न की वाणी''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 925-930 का सरलार्थ :- केशव ने कहा कि हे कबीर जी! आप समर्थ परमेश्वर हैं। आप जो चाहो, सो कर सकते हो। हे सतगुरू! सुनो आप तो दीनदयाल हो, मैं आपके आधीन हूँ। आप समर्थ (साहिब) परमेश्वर हो। आपको अनंत कोटि ब्रह्मंड को पार करने में कोई देर नहीं लगेगी। आप ही (दारमदार) सर्वेस्वा हैं। सबके मालिक हो। आप ऐसे प्रपंच सदा से करते आए हो। अपना भेद नहीं देते। आप सबके उत्पत्तिकर्ता हो, मोक्ष दाता हो। सुख के सागर हो। जीव के सच्चे साथी हो। आप सर्व संष्टि का ताना बुनने वाले (कोली) जुलाहा हो यानि सर्व ब्रह्मंडों के रचनहार हो।**

केशव चले स्व धाम को, नौलख बोडी लीन। गरीबदास बंधन किया, बाजत हैं सुर बीन।।931।।
केशव और कबीर जित, मिलत भये तहां एक। दासगरीब कबीर हरी, धरते नाना भेख।।932।।
बनजारे और बैल सब, लाए थे भर माल। गरीबदास सत्यलोक कूं, चले गये ततकाल।।933।।
आवत जाते ना लखै, कौन धाम प्रकाश। गरीबदास शाह बूझि है, कहां गये हरिदास।।934।।
हरि में हरिके दास हैं, दासनकै हरि पास। गरीबदास पद अगमगति, शाहतकी उदास।।935।।
चलौ सिकंदर पातशाह, क्यों बिरथा बखत गमाय। गरीबदास उस पीरकै, तन मन लागी भाय।।936।।
जेता शहर कबीर का, हमरै बौहत अनेक। गरीबदास शाहतकीकै, लगी जुबांनं मेख।।937।।
गुंग भये बोलैं नहीं, नहीं जुबाब जुबान। गरीबदास मार्या पर्या, बिन शर करौं कमान।।938।।
एता दोष धरै कहां, दग्ध जिमीं असमान। गरीबदास सुनिये नहीं, गुंग द्वार मुख कान।।939।।

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 931-939 का सरलार्थ :- केशव रूपधारी परमेश्वर कबीर जी ने सब बैलों तथा बनजारों को आज्ञा दी कि तुम स्वधाम को चलो। इतना कहते ही सब चल पड़े। गंगा दरिया पार कर गए। कुछ देर बाद सिकंदर राजा ने देखा तो नौ लाख बैल, एक लाख सेवादार कोई भी दिखाई नहीं दिया। तब सिकंदर लोधी राजा ने केशव से पूछा कि हे केशव! वे सब कहाँ गए? केशव बोला कि सतलोक से आए थे, सतलोक चले गए। मैं भी चलता हूँ। यूं कहकर केशव कबीर जी में समा गए। संत गरीबदास जी ने कहा है कि कबीर परमेश्वर स्वयं ही भिन्न-भिन्न रूप बनाकर लीला करते हैं। बनजारे तथा**

बैल माल भरकर लाए थे। सतलोक में तत्काल चले गए। शेखतकी जो सिकंदर राजा का मंत्री व पीर था। उसके तो तन-मन में आग लग गई और राजा से कहने लगा कि चलो! क्यों यहाँ समय व्यर्थ कर रहे हो? जैसा कबीर का शहर है, ऐसे हमारे अनेक हैं। इसने क्या भण्डारा किया है, महोछा-सा किया है। हम ऐसे-ऐसे सौ भंडारे कर देंगे। उसी समय शेखतकी गूंगा हो गया। आजीवन गूंगा रहा। भुगतकर मरा।

गरीब, कोई कहे जग जौनार करी है, कोई कहे महोच्छा। बड़े बड़ाई करत हैं, गारी काढ़े ओच्छा।।

अर्थात् कोई तो कह रहा था कि दिल खोलकर रूपया खर्चा है। (जग जौनार) धर्म यज्ञ जीमनवार की है। कोई कह रहा था कि महोछा किया है। महोछा उसे कहते हैं जो किसी वंद्ध के लिए पंडित के द्वारा थोपा हुआ धर्म किया जाता है। उसमें घटिया कपड़ा, घटिया घी (डालडा) लगाता है, कंजूसी करता है। सौ के स्थान पर दस खर्च करने की कोशिश करता है। उसे महोछा कहते हैं। बड़े लोग यानि अच्छी आत्मा तो यज्ञकर्ता की बड़ाई करते हैं। ओच्छा यानि दुष्ट आत्मा गाली देता है। उसे बिसराता है (घटिया बताता है)।

''उपरोक्त वाणियों का कथा रूप''

❖ सरलार्थ :- जब सब षड़यंत्र फैल हो गए तो सब काशी के पंडित, काजी-मुल्लाओं ने सभा करके निर्णय लिया कि कबीर एक निर्धन जुलाहा है। हम इसके नाम से पूरे हिन्दुस्तान में चिट्ठी भिजवा देते हैं कि कबीर सेठ पुत्र नीरू जुलाहा कॉलोनी बनारस वाला तीन दिन का भोजन-भण्डारा (धर्म यज्ञ) करने जा रहा है। सब अखाड़े वाले बाबा, साधु-संत आमंत्रित हैं। साथ में अपने सर्व शिष्यों को अवश्य लाऐं। तीनों दिन प्रत्येक भोजन के पश्चात् प्रत्येक साधु-संत, ब्राह्मण, काजी-मुल्ला, पीर-पैगम्बर, औलिया को एक दोहर, एक मोहर तथा जो कोई सुखा-सीधा (आटा, मिठाई, घी, दाल, चावल) भी लेना चाहे तो वह भी दिया जाएगा। 'दोहर' एक लोई होती थी जो उस समय की सबसे मँहगी तथा उपयोगी कम्बल मानी जाती थी जिसको अमीर लोग ही ओढ़ते थे। 'मोहर' लगभग 10 ग्राम सोने (Gold) से बना वर्तमान कीमत लगभग 30 हजार रूपये है। उस लोई की कीमत वर्तमान में 10 हजार से कम नहीं है।

सर्व सम्मति से यह निर्णय लेकर पत्र भिजवा दिए, दिन निश्चित कर दिए। निश्चित दिन को 18 लाख साधु-संत, ब्राह्मण, मण्डलेश्वर अपने-अपने सर्व शिष्यों सहित पहुँच गए। सबको लालच था कि प्रत्येक भोजन के पश्चात् उपरोक्त दक्षिणा मिलेगी। इसलिए अपने-अपने सर्व शिष्यों को मण्डलेश्वर ले आए कि अच्छा माल मिलेगा, सूखा-सीधा भी लेंगे। महीनों का खाने का तथा कई-कई हजार का सोना तथा लोई मिलेगी। बेचकर काम चलाऐंगे।

कबीर परमेश्वर ने दो रूप में अभिनय किया। एक रूप तो अपनी कुटिया में बैठे रहे। दूसरे रूप में अपने सतलोक से 9 लाख बैलों पर थैले रखकर पका-पकाया सामान तथा सूखा सामान तथा दोहर-मोहर भरकर ले आए। (बोरे जो वर्तमान में गधों पर रखते हैं। उस समय बनजारे अर्थात् व्यापारी बैलों पर रखकर माल एक मण्डी से दूसरी मण्डी में ट्रान्सपोर्ट करते थे।) काशी के बाजार में टैंट लगाकर सारा सामान टैंटों में रख दिया और कुछ सेवादार भी सतलोक से

साथ आए थे जो सर्व व्यवस्था संभाल रहे थे। भण्डारा शुरू कर दिया, तीन दिन तक चिट्ठी में लिखे अनुसार सर्व दक्षिणा दी गई। उस समय भोजन-भण्डारे में दिल्ली का राजा सिकन्दर लोधी भी आया था तथा उसका निजी पीर शेखतकी भी आया था। शेखतकी उपरोक्त षड़यंत्र का मुख्य सदस्य था। उसने सिकंदर लोधी को भी पत्र भिजवाया। वह चाहता था कि किसी तरह सिकंदर लोधी के दिल से कबीर जी उतरें और मेरी पूर्ण महिमा बने। उस शेख का अनुमान था कि अबकी बार कबीर काशी से भाग जाएगा और भण्डारे में पहुँचे साधु कबीर को गालियाँ दे रहे होंगे। राजा भी कबीर जी का फैन (प्रसंशक) नहीं रहेगा। परंतु जब भण्डारे के स्थान पर पहुँचे तो देखा, लंगर चल रहा है, सर्व दक्षिणा दी जा रही है। सब साधु तथा अन्य व्यक्ति भोजन खाकर दक्षिणा लेकर कबीर सेठ की जय-जयकार कर रहे हैं। बादशाह सिकंदर लोधी ने पता किया कि भण्डारा करने वाला कहाँ है? बताया गया कि उस सामने वाले बड़े टैंट (तम्बू) में है। राजा तथा शेखतकी उस तम्बू में गए और पहले अपना परिचय दिया, फिर उसका परिचय पूछा। तम्बू में बैठे सेठ ने परिचय बताया कि मेरा नाम केशव है, मैं बनजारा हूँ। कबीर जी मेरे मित्र हैं। उनका मेरे पास संदेश गया था कि एक छोटा-सा भण्डारा करना है, कुछ सामान लेकर आना। मेरा भी निमंत्रण भेजा था। राजा सिकंदर लोधी ने पूछा कि कबीर जी क्यों नहीं आए? केशव रूपधारी परमेश्वर ने कहा मैं जो बैठा हूँ उनका नौकर, वे मालिक हैं, इच्छा होगी, तब चले आएंगे। उनकी कपा तथा आदेश से सब ठीक चल रहा है। आप जी भी भोजन करें। राजा ने कहा पहले उस शुभान अल्लाह के दर्शन करूँगा, बाद में भोजन करूँगा। यह कहकर हाथी पर बैठकर राजा सिकंदर कबीर जी की कुटिया पर पहुँचे। साथ में कई अंगरक्षक भी थे।

कबीर परमेश्वर जी को संत रविदास जी ने सुबह ही बता दिया था कि हे कबीर जी! आज तो विरोधियों ने बनारस छोड़कर भगाने का कार्य कर दिया। आपके नाम से पत्र भेज रखे हैं और ऐसा-ऐसा लिखा है। लगभग 18 लाख व्यक्ति साधु-संत लंगर खाने पहुँच चुके हैं। कबीर जी ने कहा कि मित्र आजा बैठ जा! दरवाजा बंद करके सांगल लगा ले। आज-आज का दिन बिताकर रात्रि में अपने परिवार को लेकर भाग जाऊँगा। कहीं अन्य शहर-गाँव में निर्वाह कर लूंगा। जब उनको कुछ खाने को मिलेगा ही नहीं तो झल्लाकर गाली-गलौच करके चले जाएंगे। हम सांकल खोलेंगे ही नहीं, यदि किवाड़ तोड़ेंगे तो हाथ जोड़ लूंगा कि मेरा सामर्थ्य आप जी को भण्डारा कराने का नहीं है। गलती से पत्र डाले गए, मारो भावें छोड़ो। दोनों संत माला लेकर भक्ति करने लगे। मुँह बोले माता-पिता तथा मतक जीवित किए हुए लड़का तथा लड़की सुबह सैर को गए थे। इतने में दिल्ली के बादशाह सिकंदर लोधी ने दरवाजा खटखटाया। संत रविदास जी ने कहा प्रभु! लगता है कि अतिथि यहाँ पर भी पहुँच गए हैं। कबीर जी ने कहा कि देख सुराख से बच्चे तो नहीं आ गए हैं। रविदास जी ने देखकर बताया कि नहीं, कोई और ही है। दो-तीन बार दरवाजा खटखटाकर राजा सिकंदर ने अपना परिचय देकर बताया कि आपका दास सिकंदर आया है, आपके दर्शन करना चाहता है। परमेश्वर कबीर जी ने कहा राजन! आज दरवाजा नहीं खोलूंगा। मेरे नाम से झूठी चिट्ठियाँ भेज रखी हैं, लाखों संत-भक्त पहुँच चुके हैं। रात्रि होते ही मैं अपने परिवार को लेकर कहीं दूर चला जाऊँगा। सिकंदर लोधी ने कहा परवरदिगार! आप मुझे नहीं बहका सकते, मैं आपको निकट

से जान चुका हूँ। आप एक बार दरवाजा खोलो, मैं आपके दर्शन करके ही जलपान करूँगा। परमेश्वर की आज्ञा से रविदास जी ने दरवाजा खोला तो सिकंदर लोधी मुकट पहने-पहने ही चरणों में लोट गया और बताया कि आप अपने आपको छिपाकर बैठे हो, आपने कितना सुंदर भण्डारा लगा रखा है। आपका मित्र केशव आपके संदेश को पाकर सर्व सामान लेकर आया है। आपके नाम का अखण्ड भण्डारा चल रहा है। सर्व अतिथि आपके दर्शनाभिलाषी हैं। कह रहे हैं कि देखें तो कौन है कबीर सेठ जिसने ऐसे खुले हाथ से लंगर कराया है। मेरी भी प्रार्थना है कि आप एक बार भण्डारे में घूमकर सबको दर्शन देकर कतार्थ करें। तब परमेश्वर कबीर जी उठे और कुटिया से बाहर आए तो आकाश से कबीर जी पर फूलों की वर्षा होने लगी तथा आकाश से आकर सिर पर सुन्दर मुकुट अपने आप पहना गया। तब हाथी पर बैठकर कबीर जी तथा रविदास जी व राजा चले तो सिकंदर लोधी परमेश्वर कबीर जी पर चंवर करने लगे और पीलवान से कहा कि हाथी को भण्डारे के साथ से लेकर चल। जो भी देखे और पूछे काशी वालों से कि कबीर सेठ कौन-सा है, उत्तर मिले कि जिसके सिर पर मोरपंख वाला मुकुट है, वह है कबीर सेठ जिस पर सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह चंवर कर रहे हैं। सब एक स्वर में जय बोल रहे थे। जय हो कबीर सेठ की, जैसा लिखा था, वैसा ही भण्डारा कराया है। ऐसी व्यवस्था कहीं देखी न सुनी। भोजन खाने का स्थान बहुत लम्बा-चौड़ा था। उसमें घूमकर फिर वहाँ पर आए जहाँ पर केशव टैंट में बैठा था। हाथी से उतरकर कबीर जी तम्बू में पहुँचे तो अपने आप एक सुंदर पलंग आ गया, उसके ऊपर एक गद्दा बिछ गया, ऊपर गलीचे बिछ गए जिनकी झालरों में हीरे, पन्ने, लाल लगे थे। टैंट को ऊपर कर दिया गया जो दो तरफ से बंद था। खाना खाने के पश्चात् सब दर्शनार्थ वहाँ आने लगे, तब परमेश्वर कबीर जी ने उन परमात्मा के लिए घर त्यागकर आश्रमों में रहने वालों तथा अन्य गहस्थी व्यक्ति व ब्राह्मणों को आपस में (केशव तथा कबीर जी ने) आध्यात्मिक प्रश्न-उत्तर करके सत्यज्ञान समझाया। 8 पहर (24 घण्टे) तक सत्संग करके उनका अज्ञान दूर किया। कई लाख साधुओं ने दीक्षा ली और अपना कल्याण कराया। विरोधियों ने तो परमेश्वर का बुरा करना चाहा था, परंतु परमात्मा को इकट्ठे करे-कराए भक्त मिल गए अपना ज्ञान सुनाने के लिए। उन भक्तों को सतलोक से आया हुआ उत्तम भोजन कराया जिसके खाने से अच्छे विचार उत्पन्न हुए। उन्होंने परमेश्वर का तत्वज्ञान समझा, दीक्षा ली तथा कबीर जी ने उनको वर्षों का खर्चा भी दक्षिणा रूप में दे दिया। सब भण्डारा पूरा करके सर्व सामान समेटकर बैलों पर रखकर जो सेवादार आए थे, वे चल पड़े। तब सिकंदर लोधी, शेखतकी, कबीर जी, केशव जी तथा राजा के कई अंगरक्षक भी खड़े थे। अंगरक्षक ने आवाज लगाई कि बैल धरती से छः इन्च ऊपर चल रहे हैं। पथ्वी पर पैर नहीं रख रहे। यह लीला देखकर सब हैरान थे। फिर कुछ देर बाद देखा तो आसपास तथा दूर तक न बैल दिखाई दिए और न बनजारे सेवक। सिकंदर लोधी ने पूछा हे कबीर जी! बनजारे और बैल कहाँ गए? परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि जिस परमात्मा के लोक से आए थे, उसी में चले गए। उसी समय केशव वाला स्वरूप देखते-देखते कबीर जी के शरीर में समा गया। सिकंदर राजा ने कहा हे अल्लाहु अकबर! मैं तो पहले ही कह रहा था कि यह सब आप कर रहे हो, अपने आपको छिपाए हुए हो। शेखतकी तो जल-भुन रहा था। कहने लगा कि ऐसे भण्डारे

तो हम अनेकों कर दें। यह तो महौछा-सा किया है। हम तो जग जौनार कर देते।

महौछा कहते हैं वह धर्म अनुष्ठान जो किसी पुरोहित द्वारा पितर दोष मिटाने के लिए थोपा गया हो। उसमें व्यक्ति बताए गए नग (Items) मन मारकर सस्ती कीमत के लाकर पूरे करता है, हाथ सिकोड़कर लंगर लगाता है।

जग जौनार कहते हैं जिसके घर कई वर्षों उपरांत संतान उत्पन्न होती है तो दिल खोलकर खर्च करता है, भण्डारा करता है तो खुले हाथों से।

संत गरीबदास जी ने उस भण्डारे के विषय में जिसकी जैसी विचारधारा थी, वह बताई :-

गरीब, कोई कहे जग जौनार करी है, कोई कहे महौछा। बड़े बड़ाई कर्या करें, गाली काढ़ै औछा।।

❖ भावार्थ है कि जो भले पुरूष थे, वे तो बड़ाई कर रहे थे कि जग जौनार करी है। जो विरोधी थे, ईर्ष्यावश कह रहे थे कि क्या खाक भण्डारा किया है, यह तो महौछा-सा किया है। जब शेखतकी ने ये वचन कहे तो गूंगा तथा बहरा हो गया, शेष जीवन पशु की तरह जीया। अन्य के लिए उदाहरण बना कि अपनी ताकत का दुरूपयोग करना अपराध होता है, उसका भयंकर फल भोगना पड़ता है।

केशव आन भया बनजारा षट्दल किन्ही हाँस है।

परमेश्वर कबीर जी स्वयं आकर (आन) केशव बनजारा बने। षट्दल कहते हैं गिरी-पुरी, नागा-नाथ, वैष्णों, सन्यासी, शैव आदि छः पंथों के व्यक्तियों को जिन्होंने हँसी-मजाक करके चिट्ठी डाली थी। परमात्मा ने यह सिद्ध किया है कि भक्त सच्चे दिल से मेरे पर विश्वास करके चलता है तो मैं उसकी ऐसे सहायता करता हूँ।

''एक अन्य करिश्मा जो उस भण्डारे में हुआ''

वह जीमनवार (लंगर) तीन दिन तक चला था। दिन में प्रत्येक व्यक्ति कम से कम दो बार भोजन खाता था। कुछ तो तीन-चार बार भी खाते थे क्योंकि प्रत्येक भोजन के पश्चात् दक्षिणा में एक मौहर (10 ग्राम सोना) और एक दौहर (कीमती सूती शॉल) दिया जा रहा था। इस लालच में बार-बार भोजन खाते थे। तीन दिन तक 18 लाख व्यक्ति शौच तथा पेशाब करके काशी के चारों ओर ढ़ेर लगा देते। काशी को सड़ा देते। काशी निवासियों तथा उन 18 लाख अतिथियों तथा एक लाख सेवादार जो सतलोक से आए थे। उस गंद का ढ़ेर लग जाता, श्वांस लेना दूभर हो जाता, परंतु ऐसा महसूस ही नहीं हुआ। सब दिन में दो-तीन बार भोजन खा रहे थे, परंतु शौच एक बार भी नहीं जा रहे थे, न पेशाब कर रहे थे। इतना स्वादिष्ट भोजन था कि पेट भर-भरकर खा रहे थे। पहले से दुगना भोजन खा रहे थे। उन सबको मध्य के दिन टैंशन (चिंता) हुई कि न तो पेट भारी है, भूख भी ठीक लग रही है, कहीं रोगी न हो जाऐं। सतलोक से आए सेवकों को समस्या बताई तो उन्होंने कहा कि यह भोजन ऐसी जड़ी-बूटियां डालकर बनाया है जिनसे यह शरीर में ही समा जाएगा। हम तो प्रतिदिन यही भोजन अपने लंगर में बनाते हैं, यही खाते हैं। हम कभी शौच नहीं जाते तथा न पेशाब करते हैं। आप निश्चिंत रहो। फिर भी विचार कर रहे थे कि खाना खाया है, कुछ तो मल निकलना चाहिए। उनको लैट्रिन जाने का दबाव हुआ। सब शहर से बाहर चल पड़े। टट्टी के लिए एकान्त स्थान खोजकर बैठे

तो गुदा से वायु निकली। पेट हल्का हो गया तथा वायु से सुगंध निकली जैसे केवड़े का पानी छिड़का हो। यह सब देखकर सबको सेवादारों की बात पर विश्वास हुआ। तब उनका भय समाप्त हुआ, परंतु फिर भी सबकी आँखों पर अज्ञान की पट्टी बँधी थी। परमेश्वर कबीर जी को परमेश्वर नहीं स्वीकारा।

पुराणों में भी प्रकरण आता है कि अयोध्या के राजा ऋषभ देव जी राज त्यागकर जंगलों में साधना करते थे। उनका भोजन स्वर्ग से आता था। उनके मल (पाखाने) से सुगंध निकलती थी। आसपास के क्षेत्र के व्यक्ति इसको देखकर आश्चर्यचकित होते थे। इसी तरह सतलोक का भोजन आहार करने से केवल सुगंध निकलती है, मल नहीं। स्वर्ग तो सतलोक की नकल है जो नकली (**Duplicate**) है।

''धर्मदास जी को शरण में लेना''

{पाठकों से निवेदन है कि अमृतवाणी को भी पढ़ें। इसके पढ़ने से आत्मा का आकर्षण परमात्मा की ओर अधिक होता है। यह वाणी परमात्मा से मिले महात्मा के मुख कमल से उच्चारण की गई है। यह सिद्ध वाणी है। आत्मा को धो देती है। फिर परमात्मा की भक्ति में रूचि बढ़ती है।}

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 940-1024 तथा चौपाई नं. 1025-1124 :-**

धर जिंदे का रूप, सैल बृन्दाबन कीनी। तहां मिले धर्मदास करत हैं बहुत आधीनी।।940।।
बौहरंगी बरियाम, काम निहकामी सोई। धरि सतगुरू का रूप, धनी उतरे हैं लोई।।941।।
परम उजागर ज्ञान, ध्यान बौहरंगी बानां। तहां मिले धर्मदास, अचार बिचार दिवानां।।942।।
कौन तुम्हारी जाति, कहां सें आये स्वामी। पूछैं पुरूष कबीर, धनी साहिब निहकामी।।943।।

पारख के अंग की वाणी नं. 940-943 का सरलार्थ :- भक्त धर्मदास जी नगर बांधवगढ़ प्रांत-मध्यप्रदेश के रहने वाले धनी सेठ थे। परमात्मा में अधिक श्रद्धा थी। एक रूपदास नाम के वैष्णव पंथी साधु से दीक्षा ले रखी थी। उनके बताए अनुसार मूर्तियों की पूजा करना, श्राद्ध करना, एकादशी का व्रत, राम, कृष्ण यानि विष्णु तथा लक्ष्मी देवी तथा शिव-पार्वती की पूजा, तीर्थों व धामों पर जाकर स्नान करना आदि शास्त्रविरूद्ध साधना किया करता था। गीता का नित्य पाठ किया करता। गायत्री मंत्र का जाप, राम, कृष्ण हरे कृष्ण, हरे राम, ॐ नमो शिवायः, ॐ भागवते वासुदेवाय नमः आदि-आदि जाप किया करता। एक समय तीर्थों पर भ्रमण करते-करते धर्मदास जी मथुरा वृंदावन में गए हुए थे। धर्मदास जी को सतपुरूष कबीर जी ने पृथ्वी पर जन्म दिया था। एक धनवान बनिये के घर इनका जन्म हुआ था। धन अत्यधिक था। कबीर परमेश्वर जी ने इसे भेजा तो इसलिए था कि पृथ्वी पर मेरा ज्ञान प्रचार कर, सच्चाई जनता को बता तथा सबको काल ब्रह्म का जाल समझा। सतलोक व सतपुरूष का ज्ञान करवा। सब जीव सतलोक से काल ब्रह्म के लोक में कष्ट उठा रहे हैं। सबको धर्मराय (काल ब्रह्म) ने धोखा देकर रखा है। सच्चा अध्यात्म ज्ञान खत्म कर दिया। अपने को पूर्ण परमात्मा सिद्ध किए हुए है। एक लाख मानव जीवों को प्रतिदिन खाता है। सवा लाख प्रतिदिन उत्पन्न करता है। कष्ट देने के लिए चौरासी लाख

प्रकार के प्राणियों के शरीरों में जन्म देता है। कर्म भोग प्रधान नियम है। धर्मदास जी को ज्योति निरंजन काल ने अपने जाल में दृढ़ फंसा लिया तथा उसके पुत्र के रूप में अपना महादुष्ट दूत मृत्यु-अंधा को भेज दिया। धर्मदास जी ने उसका नामकरण अपने गुरू रूपदास जी से करवाया था। उन्होंने धर्मदास जी के उस पुत्र का नाम नारायण दास रखा। धर्मदास जी का जन्म विक्रमी संवत् 1452 (सन् 1395) में हुआ। परमेश्वर जी का प्राकाट्य तीन वर्ष पश्चात् विक्रमी संवत् 1455 (सन् 1398) को ज्येष्ठ महीने की पूर्णमासी को हुआ। {कबीर परमात्मा जी, धर्मदास को मथुरा में मिले। उस समय धर्मदास की आयु के विषय में कबीरपंथियों की पुस्तक में साठ (60) वर्ष लिखा है। दामाखेड़ा वालों (धर्मदास जी की गद्दी वालों) की पुस्तक में 89 वर्ष लिखा है। हमने इस चक्कर में नहीं पड़ना है। उस समय आयु क्या थी? हमने ज्ञान समझना है। धर्मदास जी आए तो थे जीवों को काल के जाल से निकालने, स्वयं ही काल के जाल में बुरी तरह फंस गए। धर्मदास को निकालना परमात्मा कबीर जी के लिए कठिन हो गया था। धर्मदास जी ने वृंदावन के तालाब में तीर्थ स्नान किया। सुबह का समय था। फिर एक स्थान को गाय के गोबर व गारा से लीपकर उसके ऊपर चद्दर बिछाकर सब भगवानों की मूर्ति आदर से रखी। कुछ छोटी थी, कुछ बड़ी थी। विष्णु-लक्ष्मी, शिव-पार्वती, गणेश, शिवलिंग, नादियाँ आदि-आदि की मूर्ति थी। विष्णु की पूजा ईष्ट रूप में करता था। उनकी मूर्ति बड़ी थी। धर्मदास अपना कर्मकाण्ड करने लगा। उसी समय परमेश्वर कबीर जी जिंदा बाबा का वेश बनाकर धर्मदास जी से थोड़ी दूरी पर बैठ गए। धर्मदास जी ने सब मूर्तियों को तिलक किया। धूप जगाई, दीप (ज्योति) जगाई। घंटी बजा-बजाकर आरती गाई। गीता का पाठ करने लगा। कबीर जी और निकट आकर बैठकर ध्यान से गीता का पाठ सुनने लगे। जब धर्मदास जी ने सब पूजा कर ली, तब कबीर जी ने प्रश्न किया कि हे स्वामी जी! आप किस जाति से संबंध रखते हो तथा कहाँ से आए हो? आप तो पहुँचे हुए संत दिखाई देते हैं।

हम वैष्णव बैरागी, धर्म में सदा रहाई। सुद्र न बैठें संग, कलप ऐसी मन मांही।।944।।
दोहा—सुन जिंदा मम ज्ञान कूं अधिक अचार बिचार। हमरी करनी जो करै, उतरे भवजल पार।।945।।

''धर्मदास वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 944-945 का सरलार्थ :- धर्मदास जी ने उत्तर दिया कि मैं वैष्णव पंथ से दीक्षित हूँ। मेरे को अपने परमात्मा विष्णु के प्रति पूर्ण वैराग्य है। सदा अपने हिन्दु धर्म में पुण्य के कार्य करता हूँ। हम शुद्र को निकट नहीं बैठने देते, यह हमारे मन की कल्पना है। हम शुद्ध, स्वच्छ रहते हैं। हे जिन्दा! हमारा ज्ञान सुन। हम अधिक आचार-विचार यानि कर्मकाण्ड करते हैं। हमारी क्रिया जो करेगा, वह भवजल (संसार सागर) से पार हो जाएगा।

बोलैं धनी कबीर, सुनौं वैष्णव बैरागी। कौन तुम्हारा नाम, गाम कहिये बड़भागी।।946।।
कौन कौंम कुल जाति, कहां को गवन किया है। कौन तुम्हारी रहसि, किन्हें तुम नाम दिया है।।947।।
कौन तुम्हारा ज्ञान ध्यान, सुमरण है भाई। कौन पुरूषकी सेव, कहां समाधि लगाई।।948।।
को आसन को गुफा, के भ्रमत रहौ सदाई। शालिग सेवन कीन, बहुत अति भार उठाई।।949।।

झोली झंडा धूप दीप, तुम अधिक आचारी। बोलै धनी कबीर, भेद कहियौं ब्रह्मचारी।।950।।
दोहा—हम कूं पार लंघावही, पर उजागर रूप। जिंद कहै धर्मदास सैं, तुम हो मुक्ति स्वरूप।।951।।

''कबीर साहिब वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 946-951 का सरलार्थ :- (धनी कबीर) कुल के मालिक कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को एक महात्मा, स्वामी जी कहकर संबोधित किया ताकि यह मेरी बात पूर्ण सुन सके। परमात्मा ने प्रश्न किया कि हे वैष्णव बैरागी! हे (बड़ भागी) भाग्यवान! आप अपना नाम तथा गाँव का नाम बताने की कपा करें। आप किस वर्ण (जाति) में जन्में हैं? अब आपको कहाँ जाना है? आपका (रिहिस) निवास यानि संत डेरा कहाँ है? आपको किस गुरू ने नाम दिया है? आप किस नाम का स्मरण करते हैं? आप किस (पुरूष) प्रभु के पुजारी हैं? कहाँ पर समाधि लगाते हो? आप किसी गुफा में रहते हो या कोई (आसन) स्थाई स्थान यानि डेरा बनाया है या सदा भ्रमण करते रहतो हो? आपने शालिगराम (मूर्तियाँ जो पत्थर तथा पीतल की ढ़ेर सारी ले रखी थी जो एक पेटी में डाल रखी थी। उनको उस समय देखा था जब धर्मदास जी उनकी पूजा कर रहा था) यानि मूर्तियों की पूजा की है। यह बहुत भार उठाया हुआ है। हे ब्रह्मचारी (ब्रह्म = परमात्मा के आचारी = भक्ति के आचार यानि कर्मकाण्ड आचरण करने वाले)! मुझे इस साधना का ज्ञान बताऐं। मैं भक्ति करने का इच्छुक हूँ। मुझे सच्ची साधना का ज्ञान बताने वाला कोई मिला नहीं है। आप धूप, दीप (ज्योति के लिए दीपक जैसा पीतल का पात्र), झोली, झंडा आदि लिए हो। आप तो अधिक (आचारी) कर्मकांडी हो। आप बहुत भक्ति करने वाले लगते हो। (धनी कबीर) सबके मालिक कुल धनी कबीर जी ने यह प्रश्न किया। जिंदा बाबा के वेश में उपस्थित कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी से निवेदन किया कि आप तो मुक्ति के दाता हैं। मेरे को भी पार करो। आपका चेहरा बताता है कि आप महान आत्मा (उजागर स्वरूप) हैं।

बांदौगढ़ है गाम, नाम धर्मदास कहीजै। वैश्य कुली कुल जाति, शुद्र की नहीं बात सुनीजै।।952।।
सिर्गुण ज्ञान स्वरूप, ध्यान शालिग की सेवा। मलागीर छिरकंत, संत सब पुजै देवा।।953।।
अठसठि तीरथ न्हांन, ध्यान करि करि हम आये। पुजै शालिगराम, तिलक गलि माल चढाये।।954।।
धूप दीप अधिकार, आरती करैं हमेशा। राम कृष्ण का जाप, रटत हैं शंकर शेषा।।955।।
नेम धर्म सें नेह, सनेह दुनियां से नांहीं। आरूढं बैराग, औरकी मानौं नांहीं।956।।
दोहा—सुनि जिंदे मम धर्म कूं वैष्णव रूप हमार। अठसठि तीरथ हम किये, चीन्हा सिरजनहार।।957।।

''धर्मदास वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 952-957 का सरलार्थ :- धर्मदास जी अपनी प्रशंसा सुनकर मन-मन में हर्षित हुआ तथा अपना परिचय बताया। मेरा गाँव-बांधवगढ़ (मध्यप्रदेश प्रान्त में) है। मेरे को धर्मदास कहते हैं। मेरी कुल जाति वैश्य है। हम शुद्र से बात नहीं करते। मैं सर्गुण परमात्मा के स्वरूप शालिग (मूर्तियों) की पूजा करता हूँ। (मलया गीर) चंदन छिड़कता हूँ। सब संत इसी प्रकार देवताओं की पूजा करते हैं। मैं अड़सठ तीर्थों के स्नान के लिए निकला हूँ। कुछ पर स्नान कर आया हूँ। वहाँ ध्यान व पूजा करके आया हूँ। हम शालिगराम की पूजा करते हैं, तिलक लगाते हैं। गले में माला डालते हैं। इस तरह

सर्गुण परमात्मा रूप में मूर्ति की पूजा करते हैं। धूप लगाते हैं, (दीप) देशी घी की ज्योति जलाते हैं। आरती प्रतिदिन सदा करते हैं। राम-कष्ण का जाप जपते हैं। शंकर भगवान तथा शेष नाग की पूजा करते हैं। मैं तो सदा अपने नित्य नियम यानि भक्ति कर्म में लगा रहता हूँ। मुझे संसार से कोई प्रेम (लगाव) नहीं है। मैं अपने वैष्णव धर्म पर पूर्ण रूप से आरूढ़ हूँ। अन्य किसी के धर्म के ज्ञान को नहीं मानता। हे जिन्दा! मेरे धर्म के विषय में सुन! मेरा वैष्णव धर्म है। मेरी वैष्णव वेशभूषा है। मैंने अड़सठ तीर्थों पर भ्रमण करके (सजनहार) सबके उत्पत्तिकर्ता परमात्मा को चिन्हा है यानि प्राप्त किया है।

बौलै जिन्दा बैंन, कहां सें शालिंग आये। को अठसठिका धाम, मुझैं ततकाल बताये।।958।।
राम कृष्ण कहां रहै, नगर और कौन कहावै। ये जड़वत हैं देव, तास क्यौं घंट बजावै।।959।।
सुनहि गुनहि नहीं बात, धात पत्थर के स्वामी। कहां भरमें धर्मदास, चीन्ह निजपद निहकामी।।960।।
आवत जात न कोय, हम ही अलख अबिनाशी सांई। रहत सकल सरबंग, बोलि है जहाँ तहाँ सब मांही।।961।।
बोलत घट घट पूर्ण ब्रह्म, धर्म आदू नहीं जाना। चिदानंदकौं चीन्ह, डारि पत्थर पाषाणा।।962।।
दोहा—राम कृष्ण कोट्यौं गये, धनी एक का एक। जिंद कहै धर्मदाससैं, बूझौं ज्ञान बिबेक।।963।।
बूझौं ज्ञान बिबेक, एक निज निश्चय आनं। दूजा दोजिख जात, कहा पूजो पाषानं।।964।।
शिला न शालिगराम, प्रतिमा पत्थर कहावै। पत्थर पीतल घात बूड़ जल दरीया जावै।965।।
कूटि घड़्या घनसार, लगी है टांकी ज्याकै। चितर्या बदन बनाय, ऐसी पूजा को राखै।।966।।
जलकी बूंद जिहान, गर्भ में साज बनाया। दश द्वार की देह, नेहसैं मनुष्य कहाया।।967।।
जठर अग्नि में राखि, साखि सुनियौं धर्मदासा। तजि पत्थर पाषान, छाड़ि यह बोदी आशा।।968।।
दोहा—अनंत कोटि ब्रह्मांड रचि, सब तजि रहै नियार। जिंद कहैं धर्मदाससूं, जाका करो बिचार।।969।।
जाका करौ बिचार, सकल जिन सृष्टि रचाई। वार पार नहीं कोय, बोलता सब घट माहीं।।970।।
अजर आदि अनादि, समाधि स्वरूप बखाना। दम देही नहीं तास, अभय पद निरगुण जान्या।।971।।
सकल सुनि प्रवान, समानि रहै अनुरागी। तुम्हरी चीन्ह न परैं, सुनौं वैष्णव बैरागी।।972।।
अलख अछेद अभेद, सकल ज्यूनीसैं न्यारा। बाहरि भीतरि पूर्णब्रह्म, आश्रम अधरि अधारा।।973।।
अलख अबोल अडोल, संगि साथी नहीं कोई। परलो कोटि अनंत, पलक में अनगिन होई।।974।।
दोहा—अजर अमर पद अभय है, अबिगत आदि अनादि। जिंद कहै धर्मदाससैं, जा घर विद्या न बाद।।975।।

''कबीर परमेश्वर वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 958-975 का सरलार्थ :- जिंदा रूप में परमेश्वर कबीर जी ने तर्क-वितर्क करके यथार्थ अध्यात्म ज्ञान समझाया। प्रश्न किया कि जो शालिगराम (मूर्तियाँ) लिए हुए हो, ये किस लोक से आए हैं? अड़सठ तीर्थ के स्नान व भ्रमण से किस लोक में साधक जाएगा? यह तत्काल बता। राम तथा कष्ण कौन-से लोक में रहते हैं? जिनको आप शालिगराम कहते हो, ये तो जड़ (निर्जीव) हैं। इनके सामने घंटा बजाने का कोई लाभ नहीं। ये न सुन सकते हैं, न बोल सकते हैं। ये तो पत्थर या अन्य धातु से बने हैं। हे धर्मदास! कहाँ भटक रहे हो? (निजपद निहकामी) सतलोक को (चीन्ह) पहचान। जिस परमेश्वर की शक्ति से प्रत्येक जीव बोलता है, हे धर्मदास! उसको नहीं जाना। चिदानंद परमेश्वर को पहचान। इन पत्थर व धातु को पटक दे। परमेश्वर कबीर जी जिंदा बाबा ने

कहा कि हे धर्मदास! राम-कष्ण तो करोड़ों जन्म लेकर मर लिए। (धनी) मालिक सदा से एक ही है। वह कभी नहीं मरता। आप विवेक से काम लो। ये आपके पत्थर व पीतल धातु के भगवानों को दरिया में छोड़कर देखो, डूब जाऐंगे तो ये आपकी क्या मदद करेंगे? इनको मूर्तिकार ने काट-पीट, कूटकर इनकी छाती पर पैर रखकर (तरासा) काटकर रूप दिया। इनका रचनहार तो कारीगर है। ये जगत के उत्पत्तिकर्ता व दुःख हरता कैसे हैं? ऐसी पूजा कौन करे? जिस परमेश्वर ने माता के गर्भ में रक्षा की, खान-पान दिया, सुरक्षित जन्म दिया, उसकी भक्ति कर। यह पत्थर-पीतल तथा तीर्थ के जल की पूजा की (बोदी) कमजोर आशा त्याग दे। जिंदा बाबा ने कहा कि जो पूर्ण परमात्मा सब सष्टि की रचना करके इससे भिन्न रहता है। अपनी शक्ति से सब ब्रह्मंडों को चला व संभाल रहा है, उसका विचार कर। उसका शरीर श्वांस से नहीं चलता। वह सबसे ऊपर के लोक में रहता है। आपकी समझ में नहीं आता है। उसकी शक्ति सर्वव्यापक है। उसका आश्रम (स्थाई स्थान) अधर-अधार यानि सबसे ऊपर है। वह अजर-अमर अविनाशी है।

बोलत है धर्मदास, सुनौं जिंदे मम बाणी। कौन तुम्हारी जाति, कहांसैं आये प्राणी।।976।।
ये अचरज की बात, कही तैं मोसैं लीला। नामा के पीया दूध, पत्थरसैं करी करीला।।977।।
नरसीला नित नाच, पत्थर के आगै रहते। जाकी हूंडी झालि, सांवल जो शाह कहंते।।978।।
पत्थर सेयै रैंदास, दूध जिन बेगि पिलाया। सुनौ जिंद जगदीश, कहां तुम ज्ञान सुनाया।।979।।
परमेश्वर प्रवानि, पत्थर नहीं कहिये जिंदा। नामा की छांनि छिवाई, दइ देखो सर संधा।।980।।
दोहा–सिरगुण सेवा सार है, निरगुण सें नहीं नेह। सुन जिंदे जगदीश तूं, हम शिक्षा क्या देह।।981।।

''धर्मदास वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 976-981 का सरलार्थ :- धर्मदास जी कुछ नाराज होकर परमेश्वर से बोले कि हे (प्राणी) जीव! तेरी जाति क्या है? कहाँ से आया है? आपने मेरे से बड़ी (अचरज) हैरान कर देने वाली बातें कही हैं, सुनो! नामदेव ने पत्थर के देव को दूध पिलाया। नरसी भक्त नित्य पत्थर के सामने नत्य किया करता यानि पत्थर की मूर्ति की पूजा करता था। उसकी (हूंडी झाली) ड्रॉफ्ट कैश किया। वहाँ पर सांवल शाह कहलाया। रविदास ने पत्थर की मूर्ति को दूध पिलाया। हे जिन्दा! तू यह क्या शिक्षा दे रहा है कि पत्थर की पूजा त्याग दो। ये मूर्ति परमेश्वर समान हैं। इनको पत्थर न कहो। नामदेव की छान (झोंपड़ी की छत) छवाई (डाली)। देख ले परमेश्वर की लीला। हम तो सर्गुण (पत्थर की मूर्ति जो साक्षात आकार है) की पूजा सही मानते हैं। निर्गुण से हमारा लगाव नहीं है। हे जिन्दा! मुझे क्या शिक्षा दे रहा है?

बौलै जिंद कबीर, सुनौ बाणी धर्मदासा। हम खालिक हम खलक, सकल हमरा प्रकाशा।।982।।
हमहीं से चंद्र अरू सूर, हमही से पानी और पवना। हमही से धरणि आकाश, रहैं हम चौदह भवना।।983।।
हम रचे सब पाषान नदी यह सब खेल हमारा। अचराचर चहुं खानि, बनी बिधि अठारा भारा।।984।।
हमही सृष्टि संजोग, बिजोग किया बोह भांती। हमही आदि अनादि, हमैं अबिगत कै नाती।।985।।
हमही माया मूल, हमही हैं ब्रह्म उजागर। हमही अधरि बसंत, हमहि हैं सुखकै सागर।।986।।
हमही से ब्रह्मा बिष्णु, ईश है कला हमारी। हमही पद प्रवानि, कलप कोटि जुग तारी।।987।।

दोहा—हम साहिब सत्यपुरूष हैं, यह सब रूप हमार। जिंद कहै धर्मदाससैं, शब्द सत्य घनसार।।988।।

''परमेश्वर कबीर वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 982-988 का सरलार्थ :- हे धर्मदास! आपने जो भक्त बताए हैं, वे पूर्व जन्म के परमेश्वर के परम भक्त थे। सत्य साधना किया करते थे जिससे उनमें भक्ति-शक्ति जमा थी। किसी कारण से वे पार नहीं हो सके। उनको तुरंत मानव जन्म मिला। जहाँ उनका जन्म हुआ, उस क्षेत्र में जो लोकवेद प्रचलित था, वे उसी के आधार से साधना करने लगे। जब उनके ऊपर कोई आपत्ति आई तो उनकी इज्जत रखने व भक्ति तथा भगवान में आस्था मानव की बनाए रखने के लिए मैंने वह लीला की थी। मैं समर्थ परमेश्वर हूँ। यह सब संष्टि मेरी रचना है। हम (खालिक) संसार के मालिक हैं। (खलक) संसार हमसे ही उत्पन्न है। हमने यानि मैंने अपनी शक्ति से चाँद, सूर्य, तारे, सब ग्रह तथा ब्रह्मंड उत्पन्न किए हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की आत्मा की उत्पत्ति मैंने की है। हे धर्मदास! मैं सतपुरूष हूँ। यह सब मेरी आत्माऐं हैं जो जीव रूप में रह रहे हैं। यह सत्य वचन है।

बोलत हैं धर्मदास, सुनौं सरबंगी देवा। देखत पिण्ड अरू प्राण, कहौ तुम अलख अभेवा।।989।।
नाद बिंद की देह, शरीर है प्राण तुम्हारै। तुम बोलत बड़ बात, नहीं आवत दिल म्हारै।।990।।
खान पान अस्थान, देह में बोलत दीशं। कैसे अलख स्वरूप, भेद कहियो जगदीशं।।991।।
कैसैं रचे चंद अरू सूर, नदी गिरिबर पाषानां। कैसैं पानी पवन, धरनि पृथ्वी असमानां।।992।।
कैसैं सृष्टि संजोग, बिजोग करैं किस भांती। कौन कला करतार, कौन बिधि अबिगत नांती।।993।।
दोहा—कैसैं घटि घटि रम रहे, किस बिधि रहौ नियार। कैसैं धरती पर चलौ, कैसैं अधर अधार।।994।।

''धर्मदास वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 989-994 का सरलार्थ :- धर्मदास जी श्री विष्णु जी के भक्त थे। शिव जी की भी भक्ति करते थे। परमात्मा इन्हीं को मानते थे। फिर लोकवेद के आधार से परमात्मा को निराकार भी कहते थे। इसी आधार पर धर्मदास जी ने परमात्मा से प्रश्न किया कि आपका नाद-बिन्द यानि माता-पिता से उत्पन्न शरीर प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है। आप खीते-पीते हो, बोलते, चलते हो। आप अपने को परमेश्वर भी कह रहे हो। परमात्मा तो निराकार है। वह दिखाई नहीं देता। हे जगदीश! मुझे यह (भेद) रहस्य समझाईए। आपने संष्टि की रचना कैसे की? कैसे चाँद व सूर्य उत्पन्न किए? कैसे नदी, पहाड़, पानी, पवन, पंथ्वी, आकाश की रचना की? आप कितनी कला के प्रभु हैं? जैसे श्री विष्णु जी सोलह कला के प्रभु हैं। आप कैसे सर्वव्यापक हैं? कैसे सबसे (न्यारे) भिन्न हो? धरती पर चलते हो। परंतु आकाश में कैसे चलते हो? यह सब ज्ञान मुझे बताऐं।

बोलत जिंद अबंध, सकल घट साहिब सोई। निर्वानी निजरूप, सकल सें न्यारा होई।।995।।
हमही राम रहीम, करीम पूर्ण कर्तारा। हमही बांधे सेतु, चढे संग पदम अठारा।।996।।
हमही रावण मारा, लंक पर करी चढाई। हमही दशशिर मारि, देवता बंधि छुटाई।।997।।
हमरी शक्ति से सीता सती, जती लक्ष्मण हनुमाना। हमही कलप उठाय, करत हम ही क्षैमानां।।998।।
बलि कै हम बावन रूप, इन्द्र और बरूण कुबेरं। हमही से हैं धर्मराय, अदलि करि सृष्टि सुमेरं।।999।।
दोहा—छिन में धरती पग धरौं, नादैं सृष्टि संजोग। पद अमान न्यारा रहूं, इस बिधि दुनी बिजोग।।1000।।

"परमेश्वर कबीर वचन"

पारख के अंग की वाणी नं. 995-1000 का सरलार्थ :- जिन्दा वेशधारी परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मैं असँख्य कला का करतार हूँ। मेरा शरीर पाँच तत्व से नहीं बना है। मैंने अपनी वचन शक्ति से सब चाँद-सूर्य, तारे, ग्रह, ब्रह्मंड, नदी-पानी, पवन, धरती, आकाश व पहाड़ तथा वनस्पति की रचना की है। जैसे वैज्ञानिक वायुयान को बनाकर उसके ऊपर सवार होकर आकाश में घूमता है। जैसे रॉकेट वैज्ञानिकों ने बनाया। उसे आकाश में छोड़ा। वह कई वर्षों तक आकाश में उड़ता रहता है। वैज्ञानिक इन दोनों (विमान तथा रॉकेट) से भिन्न भी रिमोट शक्ति से रॉकेट को कंट्रोल भी करता है। मैं पूर्ण परमेश्वर हूँ। मेरे द्वारा बनाए नियम के आधार से रावण व रामचन्द्र की उत्पत्ति हुई। उनका युद्ध पूर्व निर्धारित संस्कार से हुआ था। मैंने रामचन्द्र के पूर्व जन्म के संस्कार के कारण उसकी गुप्त सहायता की थी। समुद्र पर पुल मैंने अपनी शक्ति से पत्थर हल्के करके बनवाया था। रावण को गुप्त रूप से मैंने मारा था। रामचन्द्र अंदर से थक चुका था। मेरी शक्ति से सीता सती धर्म पर कायम रही। हनुमान में मेरी शक्ति ने काम किया जिसके कारण द्रोणागिरी को उठाकर उड़कर लाया था। हनुमान जी महाबली तो थे। बलवान व्यक्ति अधिक भार उठाकर पथ्वी पर तो शारीरिक बल से चल सकता है, उड़ नहीं सकता। लक्ष्मण की रक्षा करनी थी। इसलिए हनुमान जी में आध्यात्मिक शक्ति (उड़ने की सिद्धि) मैंने प्रवेश की थी। सीता की खोज के समय समुद्र पार उड़कर गया था। यह भी शक्ति मैंने गुप्त रूप में दी थी। इन दो घटनाओं के अतिरिक्त हनुमान जी कभी आकाश में नहीं उड़े। राजा बली की अश्वमेघ यज्ञ में हम ही बावना रूप बनाकर गए थे। मेरे विधान से भक्ति के कारण वरूण (जल का देवता) तथा कुबेर (धन का देव) की पदवी प्राप्त हैं। हमारे से ही धर्मराय (काल का न्यायधीश) विद्यमान है। मैं एक (छिन) क्षण में सतलोक से आकर पथ्वी के ऊपर (पग) पैर रख देता हूँ तथा दूसरे (छिन) क्षण में (न्यारा) पथ्वी से भिन्न होकर सतलोक (जो सोलह शंख कोस की दूरी पर है, वहाँ) चला जाता हूँ। इस प्रकार मैं सष्टि से न्यारा हूँ। (नादै) वचन से सष्टि की उत्पत्ति कर देता हूँ।

बोलत है धर्मदास, जिंद जननी को थारी। कौंन पिता परवेश, कौन गति रहनि अधारी।।1001।।
क्यौं उतरे कलि मांहि, कहौ सभ भेद बिचारा। तुम निज पूरण ब्रह्म, कहां अन्न पान अहारा।।1002।।
कौन कुली कर्तार, कौन है बंश बिनांनी। शब्द रूप सर्बंग, कहांसैं बोलत बानी।।1003।।
कौन देह सनेह, नयन मुख नासा नेहा। तुम दीखत हौ मनुष्य, कौन बिधि जिंद बिदेहा।।1004।।
कौन तुम्हारा धाम, नाम सुमरन क्या कहिये। तुम व्यापक कलिमांहि, कहौ कहां साहिब रहिये।।1005।।

"धर्मदास वचन"

पारख के अंग की वाणी नं. 1001-1005 का सरलार्थ :- धर्मदास ने पुनः प्रश्न किया कि हे जिन्दा! ऊपर जहाँ आप रहते हो, वहाँ आपकी जननी का क्या नाम है? पिता का क्या नाम है? आप यदि ऊपर को रहते हो तो पथ्वी के ऊपर किसलिए आए हो? यदि आप (निज) वास्तव में पूर्ण ब्रह्म हैं तो आप ऊपर आकाश में अन्न-पानी का आहार कहाँ से करते हो? आप कौन से कुल के प्रभु हो? जैसे विष्णु के अवतार हो या शिव के गण हो? यदि आपके

सब अंग शब्द रूप हैं तो बोल कैसे रहे हो? आप तो मनुष्य दिखाई देते हो। आप परमात्मा कैसे हो सकते हो? आपका (धाम) लोक कौन-सा है? स्मरण का नाम क्या है? आप अपने को सर्वव्यापक कह रहे हो और एक स्थान पर भी रहते हो। कृपया समझाईए।

दोहा—गगन शून्य में हम रहें, व्यापक सबही ठौर। हृदय रहनि हमार है, फूल पान फल मौर।।1006।।
जिंद कहै धर्मदास, सुनौं सतगुरू की बानी। हमही संत सुजान, हमही हैं शारंगपानी।।1007।।
ॐकार अरू माया, सब तास के पुत्र कहावै। हम परमात्म पद पिता, दहूं कै मधि रहावै।।1008।।
हम उतरे तुम काज, शुन्य सें किया पयाना। शब्द रूप धरि देह, समझि बानी सुर ज्ञाना।।1009।।
नहीं नाद नहीं बिंद, नहीं पांच तत्व अकारं। घुड़िला ज्ञान अमान, हंस उतारूं पारं।।1010।।
निरखि परखि करि देख, नहीं भौतिक हमरैं काया। हम उतरे तुम काज, नहीं कछु मोह न माया।।1011।।
दोहा—गगन शून्य में धाम है, अबिगत नगर नरेश। अगम पंथ कोई ना लखै, खोजत शंकर शेष।।1012।।

''परमेश्वर कबीर वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 1006-1012 का सरलार्थ :- हे धर्मदास! मैं ऊपर आकाश में सुंनसान स्थान पर यानि काल ब्रह्म व अक्षर पुरूष के लोकों से दूर एकान्त में बने सतलोक में रहता हूँ। मेरी शक्ति सर्वव्यापक है। वह मेरे शरीर से जुड़ी है यानि शरीर से ऊर्जा प्राप्त करके विश्व में व्यापक है। मैं सब प्राणियों के हृदय में निवास करता हूँ। जैसे सूर्य दूर रहकर भी घड़े के जल में विद्यमान रहता है। {गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में भी यही प्रमाण है कि हे अर्जुन! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया से उनके कर्मों के अनुसार भ्रमण करता हुआ, सब प्राणियों के हृदय में स्थित है।} हे धर्मदास! सुनो, मैं ही पूर्ण संत हूँ। मैं ही (सारंगपाणी) हाथ में शक्ति रूपी (सारंग) बाण रखता हूँ। {पाणी माने हाथ, सारंग माने बाण, यह उपमा श्री रामचन्द्र पर लगा रखी है कि श्री रामचन्द्र इसलिए परमेश्वर हैं। वे हाथ में बाण रखते थे। वे सारंगपाणी हैं। यदि इस बाण से परमेश्वर की पहचान है तो श्री कृष्ण जी तो बाण हाथ में नहीं रखते थे। वे तो परमात्मा नहीं हुए। वास्तविक्ता है जो ऊपर बता दी है।} ओंकार (ज्योति निरंजन) तथा माया (अष्टंगी) इनके सब पुत्र कहे जाते हैं जो काल ब्रह्म के लोक में हैं। मैं (परमात्मा पद पिता) सबका परम पिता परमात्मा हूँ। मैंने सब आत्माओं को वचन से उत्पन्न किया है। हे धर्मदास! मैं तेरे काम से पृथ्वी पर उतरा हूँ। शुन्य यानि सतलोक से प्रस्थान (गति) करके आया हूँ। शब्द रूप देह (हल्के तेज का अविनाशी शरीर) धारण करके आया हूँ। हे बुद्धिमान देव पुरूष! यह मेरी वाणी समझ ले। मेरा शरीर पाँच तत्व का नहीं है। हाथ लगाकर (परख-निरख) अच्छी तरह जाँचकर देख। मेरा भौतिक शरीर नहीं है। मैं आपके काम के लिए आपको काल के जाल से छुड़वाने के लिए ऊपर से उतरा हूँ। मेरे को इस लोक से कोई मोह नहीं है। मेरा सतलोक बहुत दूर ऊपर है जिसको शंकर जी व शेषनाग जी भी खोज रहे हैं। कोई उसे मेरी कृपया के बिना न ही प्राप्त कर सकता और न ही देख सकता।

बोलत है धर्मदास, सुनौं सतगुरू सैलानी। निरखि परखि सें न्यार, भेद कछु अकल अमानी।।1013।।
सुन जिंदे जगदीश, शीश पग चरण तुम्हारे। पौहमी आसन साज, कहौ तुम अधरि अधारै।।1014।।
जूंनी जीव दम श्वास, उश्वास कहौ क्यौं स्वामी। नहीं जो माया मोह, तौ क्यौं उतरे घननामी।।1015।।

तुम सुखसागर रूप, अनूप जो अधर रहाई। नहीं पिंड नहीं प्राण, तौ कित सें बोलैं गुसांई।।1016।।
अन्नजल करौं अहार, ब्यौहार ब्रह्म की बातां। निराकार निर्मूल, तुम्हरै दीखै तन गाता।।1017।।

"धर्मदास वचन"

पारख के अंग की वाणी नं. 1013-1017 का सरलार्थ :- धर्मदास जी ने वितर्क किया कि हे सतगुरू! आपका ज्ञान मेरे विवेक से भिन्न है। आप मेरे सामने पथ्वी पर बैठे हो। कह रहे हो कि मैं ऊपर रहता हूँ। आपका शीश है, पैर हैं, आप श्वांस-उश्वांस ले रहे हो। परमात्मा तो निराकार है, आप अन्न-जल खाते-पीते हो। आप मानव सदश हो। मेरे सामने हो। आप बता रहे हो कि (ब्रह्म) परमात्मा हो। यदि आपको कोई मोह-माया नहीं है तो किसलिए उतरे हो? यह मेरी समझ में नहीं आ रहा।

दोहा—सुंन गगन में हम बसैं, पृथ्वी आसन थीर। धर्मदास धोखा दिलां, छानौं नीर अरू पीर।।1018।।
हम हैं शब्द स्वरूप, अनूप अनंत अजूंनी। हमरै न पिण्ड अरू प्राण, हमें काया मधि मौनी।।1019।।
हमरै नाद और बिंद, सिन्ध सरबर सैलाना। हम से गृहचारी पुरुष, हमही से हैं सृष्टि अमाना।।1020।।
हमही से सकल सरूप, हमही से पुरुषा और नारी। हमही से स्वर्ग पताल, ख्याल साहिब संसारी।।1021।।
फजल अदल अधिकार, भार हलके कूं हलका। छिन में छार उडंत, संत सूभर सर पलका।।1022।।
जो धारै सो होय, गुप्त मंत्र मुसकानी। कहैं जिंद जगदीश, सुनौं तुम धर्म निशानी।।1023।।
दोहा—ना मैं जन्मूं ना मरूं, नहीं आबूं नहीं जांहि। शब्द विहंगम शून्य में, ना मेरै धूप न छांहि।।1024।।

त.र.—बोलै जिंद सुनो धर्मदासा, हमरै पिण्ड प्राण नहीं श्वासा।
गर्भ योनि में हम नहीं आये, मादर—पिदर न जननी जाए।।1025।।

"परमेश्वर कबीर वचन"

पारख के अंग की वाणी नं. 1018-1025 का सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मैं आसमान के ऊपर सतलोक में रहता हूँ। पथ्वी पर भी बैठा हूँ। आपके दिल में अज्ञान छाया है। आपने धोखा खाया है। आप मुझे पहचानने में धोखा खा रहे हो। मेरा तेरे जैसा शरीर नहीं है। मैं गहस्थी हूँ क्योंकि अनंत ब्रह्मंड मेरा परिवार है। मेरे कारण ही सष्टि में (अमाना) अमन-चैन यानि शांति है। मेरे पास मोक्ष का गुप्त मंत्र है। हे धर्मदास! यह मेरी निशानी जान ले कि मैं भक्ति का गुप्त नाम प्रकट करता हूँ। परमात्मा के बिना यह गुप्त नाम कोई नहीं जानता। {ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सूक्त नं. 95 मंत्र नं. 2 में कहा है कि परमात्मा अपने मुख से वाणी बोलकर भक्ति की प्रेरणा करता है। परमात्मा भक्ति के गुप्त नाम का आविष्कार करता है। कबीर परमात्मा ने कहा है कि सोहं शब्द हम जग में लाए। सारशब्द हम गुप्त छुपाए।।} **न तो मेरा जन्म होता है, न मेरी मत्यु होती है। सतलोक में गर्मी व सर्दी नहीं है। सदा बसंत रहती है। शब्द की शक्ति से विहंगम मार्ग से सतलोक जाया जाता है।**

जिंदा बाबा वेशधारी परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! मेरा शरीर श्वांस-उश्वांस वाला नहीं है। मेरा (पिंड) पाँच तत्व का शरीर नहीं है। मैं कभी माता के गर्भ में नहीं आता। माता-पिता के संयोग से मेरा जन्म कभी नहीं हुआ। हे धर्मदास! आप विष्णु जी की भक्ति करते हो, यह तो नाशवान है। इसकी मत्यु होती है। आप जो गीता पढ़ रहे

थे। इसमें देखो! आपका कष्ण उर्फ विष्णु स्वयं कह रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। अविनाशी तो उसे जान जिसे कोई मार नहीं सकता जिससे सर्व संसार व्याप्त है। (गीता अध्याय 2 श्लोक 12 तथा 17, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में।)

फिर कहा है कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा जिसकी कपया से तू परम शांति को तथा सनातन परम धाम को प्राप्त होगा।(गीता अध्याय 18 श्लोक 62) फिर कहा है कि तत्वज्ञानी संत मिल जाए तो उससे तत्वज्ञान समझने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक कभी लौटकर संसार में नहीं आता। जिस परमेश्वर से संसार वक्ष की प्रवति विस्तार को प्राप्त हुई है यानि जिस परमात्मा ने सष्टि की उत्पत्ति की है, उसकी भक्ति कर।(गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

फिर कहा है कि हे अर्जुन! इस संसार में दो पुरूष हैं। एक क्षर पुरूष, दूसरा अक्षर पुरूष। इन दोनों प्रभुओं के अंतर्गत जितने प्राणी हैं, सब नाशवान हैं। ये दोनों (पुरूष) प्रभु भी नाशवान हैं। आत्मा किसी की नहीं मरती।(गीता अध्याय 15 श्लोक 16)

फिर कहा है कि (उत्तम पुरूष) श्रेष्ठ पुरूष यानि पुरूषोत्तम तो इन दोनों से अन्य ही है जो परमात्मा कहा जाता है जो तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता रहता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है।(गीता अध्याय 15 श्लोक 17)

कबीर साहेब ने कहा कि धर्मदास! कष्ण उर्फ विष्णु तो अन्य परमेश्वर को अविनाशी कह रहा है। उसी की शरण में जाने का निर्देश दे रहा है। क्या आप जानते हैं, वह परमेश्वर कौन है? मैं जानता हूँ। परमेश्वर के मुख कमल से गीता का गूढ़ रहस्य सुनकर धर्मदास स्तब्ध रह गया। उसको सब श्लोक याद थे, परंतु अभिमानवश हार मानने को तैयार नहीं था। कहा कि तुम मुसलमान हो। जीव हिंसा करते हो। हम कोई जीव हिंसा नहीं करते। सदा धर्म करते हैं। तुम पाप करते हो। कभी मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। मैं आपकी कोई बात सुनने को तैयार नहीं हूँ।

धर्मदास जी : हे जिन्दा! तू अपनी जुबान बन्द कर ले, मुझसे और नहीं सुना जाता। जिन्दा रुप में प्रकट परमेश्वर ने कहा, हे वैष्णव महात्मा धर्मदास जी! सत्य इतनी कड़वी होती है जितना नीम, परन्तु रोगी को कड़वी औषधि न चाहते हुए भी सेवन करनी चाहिए। उसी में उसका हित है। यदि आप नाराज होते हो तो मैं चला। इतना कहकर परमात्मा (जिन्दा रुप धारी) अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास को बहुत आश्चर्य हुआ तथा सोचने लगा कि यह कोई सामान्य सन्त नहीं था। यह पूर्ण विद्वान लगता है। मुसलमान होकर हिन्दु शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान है। यह कोई देव हो सकता है। धर्मदास जी अन्दर से मान रहे थे कि मैं गीता शास्त्र के विरुद्ध साधना कर रहा हूँ। परन्तु अभिमानवश स्वीकार नहीं कर रहे थे। जब परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गए तो पूर्ण रुप से टूट गए कि मेरी भक्ति गीता के विरुद्ध है। मैं भगवान की आज्ञा की अवहेलना कर रहा हूँ। मेरे गुरु श्री रुपदास जी को भी वास्तविक भक्ति विधि का ज्ञान नहीं है। अब तो इस भक्ति को करना, न करना बराबर है, व्यर्थ है।

बहुत दुखी मन से इधर-उधर देखने लगा तथा अन्दर से हृदय से पुकार करने लगा कि मैं कैसा नासमझ हूँ। सर्व सत्य देखकर भी एक परमात्मा तुल्य महात्मा को अपनी नासमझी तथा हठ के कारण खो दिया। हे परमात्मा! एक बार वही सन्त फिर से मिले तो मैं अपना हठ छोड़कर नम्र भाव से सर्वज्ञान समझूंगा। दिन में कई बार हृदय से पुकार करके रात्रि में सो गया। सारी रात्रि करवट लेता रहा। सोचता रहा हे परमात्मा! यह क्या हुआ। सर्व साधना शास्त्रविरुद्ध कर रहा हूँ। मेरी आँखें खोल दी उस फरिस्ते ने। मेरी आयु 60 वर्ष हो चुकी है। अब पता नहीं वह देव (जिन्दा रुपी) पुनः मिलेगा कि नहीं।

प्रातः काल वक्त से उठा। पहले खाना बनाने लगा। उस दिन भक्ति की कोई क्रिया नहीं की। पहले दिन जंगल से कुछ लकड़ियाँ तोड़कर रखी थी। उनको चूल्हे में जलाकर भोजन बनाने लगा। एक लकड़ी मोटी थी। वह बीचो-बीच थोथी थी। उसमें अनेकों चीटियाँ थीं। जब वह लकड़ी जलते-जलते छोटी रह गई तब उसका पिछला हिस्सा धर्मदास जी को दिखाई दिया तो देखा उस लकड़ी के अन्तिम भाग में कुछ तरल पानी-सा जल रहा है। चीटियाँ निकलने की कोशिश कर रही थी, वे उस तरल पदार्थ में गिरकर जलकर मर रही थी। कुछ अगले हिस्से में अग्नि से जलकर मर रही थी। धर्मदास जी ने विचार किया। यह लकड़ी बहुत जल चुकी है, इसमें अनेकों चीटियाँ जलकर भस्म हो गई है। उसी समय अग्नि बुझा दी। विचार करने लगा कि इस पापयुक्त भोजन को मैं नहीं खाऊँगा। किसी साधु सन्त को खिलाकर मैं उपवास रखूँगा। इससे मेरे पाप कम हो जाएंगे। यह विचार करके सर्व भोजन एक थाल में रखकर साधु की खोज में चल पड़ा। परमेश्वर कबीर जी ने अन्य वेशभूषा बनाई जो हिन्दु सन्त की होती है। एक वक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास जी ने साधु को देखा। उनके सामने भोजन का थाल रखकर कहा कि हे महात्मा जी! भोजन खाओ। साधु रुप में परमात्मा ने कहा कि लाओ धर्मदास! भूख लगी है। अपने नाम से सम्बोधन सुनकर धर्मदास को आश्चर्य तो हुआ परंतु अधिक ध्यान नहीं दिया। साधु रुप में विराजमान परमात्मा ने अपने लोटे से कुछ जल हाथ में लिया तथा कुछ वाणी अपने मुख से उच्चारण करके भोजन पर जल छिड़क दिया। सर्वभोजन की चींटियाँ बन गई। चींटियों से थाली काली हो गई। चींटियाँ अपने अण्डों को मुख में लेकर थाली से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी। परमात्मा भी उसी जिन्दा महात्मा के रुप में हो गए। तब कहा कि हे धर्मदास वैष्णव संत! आप बता रहे थे कि हम कोई जीव हिंसा नहीं करते, आपसे तो कसाई भी कम हिंसक है। आपने तो करोड़ों जीवों की हिंसा कर दी। धर्मदास जी उसी समय साधु के चरणों में गिर गया तथा पूर्व दिन हुई गलती की क्षमा माँगी तथा प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझ अज्ञानी को क्षमा करो। मैं कहीं का नहीं रहा क्योंकि पहले वाली साधना पूर्ण रुप से शास्त्र विरुद्ध है। उसे करने का कोई लाभ नहीं, यह आप जी ने गीता से ही प्रमाणित कर दिया। शास्त्र अनुकूल साधना किस से मिले, यह आप ही बता सकते हैं। मैं आपसे पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान सुनने का इच्छुक हूँ। कपया मुझ किंकर पर दया करके मुझे वह ज्ञान सुनाऐं जिससे मेरा मोक्ष हो सके।

कबीर परमेश्वर ने कहा कि और सुन। तुम कितनी जीव हिंसा करते हो?

शब्द स्वरूपी रूप हमारा, क्या दिखलावै अचार बिचारा।
सतरि ब्राह्मण की है हत्या, जो चौका तुम देहौ नित्या।।1026।।
ब्राह्मण सहंस हत्या जो होई, जल स्नान करत हो सोई।
चौके करम कीट मर जांही, सूक्ष्म जीव सो दरसैं नाहीं।।1027।।
हरी भांति पृथ्वी के रंगा, अंनत कोटि जीव उड़ैं पतंगा।
तारक मंत्र कोटि जपाहीं, वाह जीव हत्या उतरै नाहीं।।1028।।
पृथ्वी ऊपर पग जो धारै, कोटि जीव एक दिन में मारै।
करै आरती संजम सेवा, या अपराध न उतरै देवा।।1029।।
ठाकुर घंटा पौंन झकोरैं, कोटि जीव सूक्ष्म शिर तोरैं।
ताल मृदंग अरू झालर बाजैं, कोटि जीव सूक्ष्म तहां साजैं।।1030।।
धूप, दीप और अर्पण अंगा, अनंत कोटि जीव जरैं बिहंगा।
एती हिंसा करत हो सारे कैसे दीदार करो करतारे।।1031।।
स्वामी सेवक बूडत बेरा, मार परै दरगह जम जेरा।
ऐसा ज्ञान अचंभ सुनाऊं, पूजा अर्पण सबै छुडाऊं।।1032।।
झाड़ी लंघी करत हमेशा, सूक्ष्म जीव होत हैं नेशा।
खान पान में दमन पिरानी, कैसें पावैं मुक्ति निशानी।।1033।।
कोटि जीव जल अचमन प्रानी, यामैं शंकि सुबह नहीं जानी।
कहौ कैसें बिधि करौ अचारं, त्रिलोकी का तुम शिर भारं।।1034।।
रापति सूक्ष्म एकही अंगा, अल्प जीव जूंनी जत संगा।
योह जतसंग अभंगा होई, कहौ अचार सधै कहां लोई।।1035।।
आत्म जीव हतै जो प्राणी, जो कहां पावै मुक्ति निशानी।
उरध पींघ जो झूलै भेषा, जिनका कदे न सुलझै लेखा।।1036।।

पारख के अंग की वाणी नं. 1026-1036 का सरलार्थ :- कबीर जी ने बताया कि हे धर्मदास! जो खाना बनाने के स्थान पर यानि चूल्हे तथा आसपास के क्षेत्र को प्रतिदिन लीपते हो तथा पोंचा लगाते हो। पूजा के स्थान पर लीपते हो (Mud Plaster करते हो)। उसमें सत्तर ब्राह्मणों की हत्या के समान पाप लगता है। इतनी जीव हिंसा होती है।

जो आप तीर्थ वाले तालाब में स्नान करते हो, उसके जल में असँख्यों जीव होते हैं। जो आप मल-मलकर स्नान करते हो, असँख्यों जीवों की मत्यु हो जाती है। वह पाप एक हजार ब्राह्मणों की हत्या के समान लगता है। पथ्वी के ऊपर घास के अंदर भी जीव हैं। कुछ तो पथ्वी के रंग जैसे हैं, कुछ घास के रंग जैसे हैं। कुछ सुक्ष्म हैं जो दिखाई भी नहीं देते। एक दिन में करोड़ों जीव पथ्वी के ऊपर चलने से मर जाते हैं। जो आप आरती करते हो, उस समय ज्योति जलाते हो। उसमें जीव मरते हैं। घंटी बजाते हो, झालर बजाते हो, ताल मदंग बजाते हो, उनमें करोड़ों जीव मर जाते हैं। (धूप) अगरबत्ती के धुँऐ में करोड़ों जीव वायु वाले मरते हैं। इतने पाप करते हो तो आपको परमात्मा के दर्शन कैसे होंगे? और सुन! (झाड़ी लंघी) टट्टी-पेशाब करते हो, उसमें जीव मरते हैं। खाना खाते हो, पानी पीते हो,

उसमें भी जीव हिंसा होती है। कैसे मुक्ति पाओगे? आप बताओ कि इतना पाप करते हो तो आपका आचार-विचार यानि क्रियाकर्म भक्ति की शुद्धता कैसे रहेगी? आपने कहा था कि जो जीव हिंसा करते हैं, उनका मोक्ष कभी नहीं हो सकता। आपका मोक्ष भी कभी नहीं हो सकता। मैं ऐसा अद्भुत ज्ञान सुनाऊँगा जिससे सब शास्त्रविरूद्ध साधना बंद हो जाएगी तथा ऐसा नाम जाप करने की दीक्षा दूँगा कि सब पाप कट जाऐंगे। प्रतिदिन होने वाला उपरोक्त पाप नाम के जाप से नाश हो जाएगा।

दोहा – ऐसा ज्ञान सुनाय हूं, ना कहीं भ्रमण जावै।
गरीबदास जिंदा कहैं, धर्मदास उर भाव।।1037।।
झरणै बैठि जलाबिंब धारा, संखौं जीव करत प्रतिहारा।
पंच अग्नि जो धूप धियाना, जन्म तीसरै शूकर स्वाना।।1038।।
बजर दंड करि दमकूं तोड़ै, वहां तो जीव मरत हैं करोड़ैं।
निसबासर जो धूनी फूकैं, तामैं जीव असंखौ सूकैं।।1039।।
तीरथ बाट चले जो प्राणी, सो तो जन्म जन्म उरझानी।
जाय तीरथ करि हैं दानं, आवत जात जीव मरै अरबानं।।1040।।
परबी लेन जात है दुनियां, हमारा ज्ञान किनौं नहीं सुनियां।
गोते गोते परि है भारं, गंगा जमना गया किदारं।।1041।।
लोहागिर पौहकरकी आशा, अनंत कोटि जीव होत बिनाशा।
पाती तोरि चढावैं अंधें, जिन के कदे न कटि हैं फंदे।।1042।।
गंगा काशी गया प्रियागु, बहुरि जाय द्वारा लै दागु।
हरि पैड़ी हरिद्वार हमेशा, ऐसा ज्ञान देत उपदेशा।।1043।।
जा गरूवाकी गरदन मारं, जो जीव भरमैं अचार बिचारं।
पिण्ड पिहोवै बहुतक जाहीं, बदरी बोध सुनौं चितलाहीं।।1044।।
सरजू करि अस्नान हजूमं, अनंत कोटि जीव घाली धूमं।
पिण्ड प्रदान मुक्ति नहीं होई, भूत जूनि छूटत है लोई।।1045।।
दोहा – भूत योनि जहां छूटि है, पिण्ड प्रधान करंत।
गरीबदास जिंदा कहै, नहीं मिलैं भगवंत।।1046।।
जगन्नाथ जो दर्शन जांहीं, काली प्रतिमा भवन कै मांहीं।
वह जगदीश न पावै किसही, जगन्नाथ जो घट घट बसही।।1047।।
गोमति और गोदावरी न्हांहीं, अठसठ तीरथ का फल पांही।
नहीं पूजै जिन संत सुजाना, जाके मिथ्या सब अस्नाना।।1048।।
कोटि यज्ञ अश्वमेघ करांही, संत चरण रज नांहितुलांही।
कोटि गऊ नित दान जुदेहीं, एक पलक संतन परबीलेही।।1049।।
धूप दीप और जुगंता, कोटि ज्ञान क्यों कथहीं मिथ्या।
जिन जान्या नहीं पदका भेऊ, जाके संत न रहे बटेंऊ।।1050।।
तीरथ व्रत करै जो प्राणी, तिनकी छूटत है नहीं खानी।

चौदस नौमी द्वादश बरतं, जिनसै जम जौरा नहीं डरतं।।1051।।
करैं एकादशी संजम सोई, करवा चौथ गदहरी होई।
आठैं सातैं करैं कंदूरी, नीच चूहरे कै घर सूरी।।1052।।
दोहा – आन धर्म जो मन बसै, कोइ करो नर नार।
गरीबदास जिंदा कहै, सो जासी जमद्वार।।1053।।
कहे जो करूवा चौथि कहांनी, तास गदहरी निश्चय जानी।
दुर्गा देबी भैरव भूता, राति जगावै होय जो पूता।।1054।।
करै कढाही लपसी नारी, बूढैबंश ताहि घरबारी।
दुर्गाध्यान परै तिस बगरं, ता संगति बूडै सब नगरं।।1055।।
ये सब हमरे ख्याल मुरारी, हम नहीं नाचे देदे तारी।
हम से ही भैरव खित्र खलीला, आदिअंत सब हमरी लीला।।1056।।
हम नहीं वैष्णवधर्म चलाया, हमनहीं तीरथ व्रत बनाया।
हम से ही जपतप संजमशाखा, हमही चारि बेद सबभाखा।।1057।।
हम नहीं देवल धाम बनाये, हम नही पुजारी पूजन आये।
हम हैं नरसिंह हम हैं पीरं, हम ही तोरे जम जंजीरं।।1058।।
हमही राजा भूप कहावैं, हमही माल भरनकौं जावैं।
हम नहीं कौम छतीस बनाये, हम नहीं चार वरण सरसाये।।1059।।
दोहा–सकल सृष्टि में रमि रहा, सकल जाति अजाति।
गरीबदास जिंदा कहै, ना मेरै दिवस न राति।।1060।।
ना मेरै आदि अंत नहीं मूलं, ना मेरै पिण्ड प्राण अस्थूलं।
ना मेरै गगन शून्य सैलाना, ना मेरै रचना आवन जाना।।1061।।
ना हम जोगी ना हम भोगी, ना बीतरागी सृष्टि संजोगी।
नहिं मेरै पवन नहीं मेरै पानी, नहीं मेरै चंद्र सूर रजधानी।।1062।।

पारख के अंग की वाणी नं. 1037-1062 का सरलार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास को समझाया कि हे धर्मदास! अब ऐसा ज्ञान सुनाता हूँ जिसको सुनकर कहीं भी भटकना नहीं पड़ेगा। ध्यानपूर्वक दिल लगाकर सुन। जो सर्दी के मौसम में जलधारा (झरने) के नीचे बैठकर सिर के ऊपर शीतल जल बरसाते हैं तथा गर्मी के मौसम में पाँच धूंने अग्नि के लगाकर उनके मध्य में बैठकर तप करते हैं। जो श्वांस को रोकते हैं। जो दिन-रात धूनि (अग्नि) जलाकर रखते हैं। चिलम में तम्बाकू पीते हैं, उसमें करोड़ों जीव मर जाते हैं। जो तीर्थ यात्रा करते हैं, वे जन्म-जन्म यानि असँख्यों जन्म काल जाल में उलझकर रह जाते हैं। जो तीर्थ पर जाकर दान करते हो। पहले उस तीर्थ में स्नान करते हो। उसमें करोड़ों जीवों की हिंसा का पाप लग जाता है। पुण्य एक, पाप अनेक लगे।

दुनिया वाले प्रबी लेने सैंकड़ों-हजारों किलोमीटर दूर जाते हैं। हमारा ज्ञान किसी ने नहीं सुना कि इससे पाप मिलते हैं, पुण्य नहीं मिलता। तीर्थ के जल में जितने गोते (डुबकी) लगाते हैं, प्रत्येक में जीव हिंसा होती है। पाती तोड़कर पत्थर की मूर्ति पर चढ़ाते हैं, वे ज्ञान

नेत्रहीन (अंधे) हैं। उनके फंदे यानि काल का जाल कभी नहीं छूट सकता। तीर्थों के नाम बताए हैं :- लोहागिर, पुष्कर पर जाकर स्नान करते हैं। उनको महापाप लगता है। काशी, गया, प्रयाग, द्वारका, हर की पैड़ी हरिद्वार में जाने व तीर्थ में स्नान-दान करने से मोक्ष बताते हैं। उन गुरूओं की गर्दन पर जूते मारने चाहिए। जो जीवों को (आचार-विचार) कर्मकांड में भ्रमित करते हैं। शास्त्रविधि विरूद्ध साधना का ज्ञान देते हैं। जो पिहोवा (हरियाणा) में पिंड भरवाने की कहते हैं, बद्रीनाथ पर जाने की कहते हैं। (सरजू) सूर्य नदी में स्नान से मोक्ष बताते हैं। यह साधना व्यर्थ है। पिंडदान करने से भूत की योनि छूट जाती है, मोक्ष नहीं मिलता। भूत की जूनि छूटकर गधे की मिल गई तो क्या लाभ हुआ पिंडदान करने का?

जगन्नाथ के दर्शन करने जाते हैं। एक भवन (महल) में काली मूर्ति रखी है उस जगन्नाथ की। जो जगन्नाथ सर्वव्यापक है, उसको कोई नहीं खोजता। वह किसी को गलत भक्ति से नहीं मिलता।

गोदावरी नदी तथा गोमती नदी में स्नान करते हैं। कहते हैं कि हम अड़सठ तीर्थों का फल प्राप्त करेंगे यानि अड़सठ तीर्थ स्नान करके मोक्ष प्राप्त करेंगे। यह गलत धारणा है। जिन्होंने पूर्ण संत की (पूजा) सेवा नहीं की तो उसके सब स्नान व्यर्थ हैं। करोड़ अश्वमेघ यज्ञ करो, संत के चरण की रज (धूल) के समान भी नहीं है। करोड़ गऊ दान दो, कोई लाभ नहीं। एक पल संतों के साथ ज्ञान चर्चा रूपी प्रबी लेने से जीवन बदल जाता है। जिनके मेहमान संत नहीं हुए यानि जिन्होंने पूरे संत का सत्संग नहीं सुना, उनको यथार्थ भक्ति (पद) पद्धति का ज्ञान नहीं हो सकता। उसके बिना मोक्ष नहीं होगा।

जो तीर्थ तथा व्रत करते हैं, उनकी चारों खानि यानि चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में जाना नहीं बचेगा। चौदस, नौमी, द्वादशी आदि किसी भी व्रत से जम का दूत नहीं डरता। जो एकादशी का व्रत करते हो। करवा चौथ की कहानी कहती हैं, व्रत रखती हैं, वे गधी की योनि प्राप्त करती हैं। (आन धर्म) आन-उपासना नर या नारी कोई करो, वह नरक में जाएगा। जो दुर्गा देवी की पूजा करते हैं, भैरव, भूत की पूजा करते हैं। पुत्र होने पर रात जगाते हैं। ये सब नरक के भागी बनेंगे, नरक में गिरेंगे। जो करवाचौथ का व्रत रखने वाली को कहानी सुनाती हैं, दोनों गधी का जीवन प्राप्त करेंगी। जिस बगड़ (कालौनी) में दुर्गा देवी का जागरण होता है, उसके कारण सारा नगर डूब जाता है क्योंकि वह साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण है जो व्यर्थ है। परंतु उसका अनुष्ठान करने वाले सुरीली आवाज वाले होते हैं, नाचते हैं, बाजा बजाते हैं। मन को मोहने वाला जागरण करते हैं। देखा-देखी सारा नगर उस अनुष्ठान को करवाने लगता है। जिस कारण से वह नगर ही नरक में जाता है।

उदाहरण :- एक रात्रि में एक घर के आंगन में टैंट लगा था जिसमें जागरण करने वाली मंडली रूकी थी। मौसम न गर्मी थी, न सर्दी। अक्तूबर का महीना था। आंगन में टैंट से बाहर जागरण चल रहा था। जो मुख्य गायक था, वह कह रहा था कि सारे बोलो जय माता दी। अगले बोलो जय माता दी, पिछले बोलो जय माता दी। यूं कहता-कहता टैंट में गया और शराब की बोतल से एक कप शराब पीकर तुरंत बाहर आ गया। आते ही बोला

मैं नहीं सुनियां जय माता दी, ओए! मैं नहीं सुनिया। श्रोता बोल रहे थे जय माता दी। उसने पी रखी शराब, उसको कैसे सुनेगा? बोलने वालों का गला सूख गया। वह कह रहा था मैं नहीं सुनिया। इस कारण से दुर्गा का अनुष्ठान (जागरण) जहाँ भी होगा, उसका प्रभाव पड़ेगा। आध्यात्मिक लाभ कुछ नहीं मिलता। केवल मन खुश करके नरक में जाना है।

परमात्मा कबीर जी ने कहा कि हम (देवल) मंदिर व धामों की पूजा न तो करते हैं, न करने की राय देते हैं। हमने तीर्थ, व्रत आदि की क्रिया शुरू नहीं की।

योह रंग रास बिलास हमारा, हमरी योनि सकल संसारा।
हम ज्ञानी हम चातुरा चोरा, हमही दशशिर का शिर फोर्‌या।।1063।।
व्रता सुर जब बेद चुराये, हम बराह रूप धरि आय।
हम हिरणाकुश उदर विहंडा, नृसिंहरूप गाज नौ खंडा।।1064।।
जब प्रहलाद अग्नि में डारे, हम हिरणाकुश उदरबिदारे।
जब प्रहलाद बांधियां खंभा, हम नृसिंह रूप धर्‌या प्रचण्डा।।1065।।
हम सुरपति का राज डिगाये, हमही बलि के द्वारे आये।
हम ही त्रिलोकी सब मापी, तास डरे बलि तन मन कांपी।।1066।।
दोहा—विष्णु को दीन बढाई, हम पूर्ण करतार।
गरीबदास जिंदा कहै, सकल सृष्टि हमार।।1067।।
हम बाहरि हम भीतर बोलै, हमही अनन्त लोक में डोलै।
हम नहीं गृहचारी हम नहीं उदासी, न हम बैरागी नहीं सन्यासी।।1068।।
हम नहीं मुग्ध ज्ञान घनसारा, हम नहीं करत अचार बिचारा।
हमरी पूजा हमरी सेवा हम नहीं पाती तोरत देवा।।1069।।
हम नहीं घंटा ताल बजावै, दोखा दोष और किस लावै।
हम नहीं जड़ जूंनी जहड़ाये, हमही चेतन हो करि आये।।1070।।
हम ज्ञानी हमनहीं मुग्ध मुवासी, हमही ख्याल रच्या चौरासी।
हमसे ही काल कर्म करतारा, हम नहीं मारै हम रहै नियारा।।1071।।
हम नहीं दोष अदोष लगावैं, हम नहीं अनंत लोक भरमावै।
हम नहीं गाडन फूकन जांही, हम नहीं च्यारि दाग में आंही।।1072।।
हम न रोवैं हम ना शोक संतापं, हम न मुये जपि अजपा जापं।
हम नहीं कर्मकांड व्यवहारा, हम नहीं पाहन पूज बिचारा।।1073।।
दोहा—जलथल जूंनि जीव में, सब घट मोहि मुकाम।
च्यारि बेद वर्णन करैं, हमरा नाम और गाम।।1074।।
हम नहीं नाश काल में आवै, हम नहीं चौदह भवन रचावै।
कलप करै एक माया मेरी, सो तो सत्यपुरूष की चेरी।।1075।।
ताकी कलप शरू जो होई, अनंत लोक रचि ताना गोई।
अनंत लोक ब्रह्मांड कटाचं, ऐसी कलप करै मन सांचं।।1076।।
अनंत कोटि विष्णु शंकर और ब्रह्मा, नारद शारद और विश्वकर्मा।

कामधेनु कल्पवृक्ष कलावर, एकनाद जहां पंच मुजांबर।।1077।।
छटा मन भैरव भरमाया, पांचौं गैल पचीस लगाया।
तास भारिजा अनंतं, कैसें भेटैं सतगुरू संतं।।1078।।
औह निजरूप निरंतर न्यारा, वस्तु अलप और बहुत पसारा।
बस्त अलप नहीं पावैं भाई, कोटिक ब्रह्मा गए बिलाई।।1079।।
कोटिक शंकर गऐ समूलं, कैसें पावैं बिन अस्थूलं।
अधर विदेही अचल अभंगी, सबसैं न्यारा सब सत्संगी।।1080।।
दोहा – बेचगून चिंतामनं, है निमूंन निर्बांन।
गरीबदास जिंदा कहै, अविगत पद प्रवान।।1081।।
बेद कितेब न जाकौं पावैं, अठारा पुराण कथा नित गावैं।
जिन सिरजे पुरूष और नारी, जाकौ खोज रहे त्रिपुरारी।।1082।।
शब्द स्वरूपी सब घट बोलै, प्रगट देखि नहीं वह ओलै।
सनक सनंदन ब्रह्मा थाके, अनंत कोटि शंकर पढि भाखे।।1083।।
निर्णय किन्हें न कीन्हा भाई, कोटि विष्णु गये दुनी रचाई।
कितसैं बीज पान फल मौरा, अनंत कोटि जहां बीज बिजौरा।।1084।।
वह निर्गुण निह बीज निशांनी, अलफ रूप नित रहै अमानी।
कुंडलनाद मुकुट नहीं माला, पद बहुरंगी बर्ण विशाला।।1085।।
चतुर्भुजी नहीं अष्ट अनादं, सहंस भुजा कोई जानै साधं।
शंख भुजा परि शंख समूलं, जाका उर्ध बिमानं झूलं।।1086।।
नारद शारद महिमा गावैं, अलफ रूपकूं सो नहीं पावैं।
अलफ रूप है हमरा अंगा, जहां अनंत कोटि त्रिवेणी गंगा।।1087।।
दोहा–सुरग नरक नहीं मृत्यु है, नहीं लोक बंधान।
गरीबदास जिंदा कहैं, शब्द सत्य प्रमाण।।1088।।
शब्दै शब्द रहैगा भाई, दुनी सृष्टि सब परलो जाई।
चलसी कच्छ मच्छ कूरंभा, चलसी धौल धरणि अठखंभा।।1089।।
चलसी सुरग पाताल समूलं, चलसी चंद सूर दो फूलं।
जे आरंभ चलै धर्मदासा, पिण्ड प्राण चलसी घटश्वासा।।1090।।
चलै भिस्त बैकुंठ विशालं, चलसी धर्मराय जमशालं।
पानी पवन पृथ्वी नासा, शब्द रहैगा सुनि धर्मदासा।।1091।।
चलै इंद्र कुबेर बरूण धर्मराजा, ब्रह्मा विष्णु ईश चलि साजा।
चलै आदि माया ब्रह्मज्ञानी, हम नहीं चलै पद प्रवानी।।1092।।
शब्द स्वरूपी पिण्ड हमारा, हम न चलै चलि है संसारा।
जलतरंग जल में मिल जाई, अविगति लहरि लीन पद झांई।।1093।।
जिंद कहै सुनियौं धर्मनिनागर, लहरि मिलत है सुख के सागर।
लहरि बीनिवौं बान विजोगं, पल पल रूप माया रस भोगं।।1094।।

वह उदगार नेश होय जाई, सुखसागर सो अमर रहाई।
हम हैं अमर लोक के वासी, सदा रहें जहाँ पुरूष अविनाशी।।1095।।
दोहा–अगम अनाहद अधर में, नराकार निज नरेश।
गरीबदास जिंदा कहै, सुनौं धर्म उपदेश।।1096।।

पारख के अंग की वाणी नं. 1063-1096 का सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैंने ही गुप्त रूप में दस सिर वाले रावण को मारा। हम ही ज्ञानी हैं। चतुर भी हम ही हैं। चोर भी हम हैं क्योंकि काल के जाल से निकालने वाला स्वयं सतपुरूष होता है। अपने को छुपाकर चोरी-छुपे सच्चा ज्ञान बताता है। यह रंग रास यानि आनंददायक वस्तुऐं भी मैंने बनाई हैं। सब आत्माओं की उत्पत्ति मैंने की है जिससे काल ब्रह्म ने भिन्न-भिन्न योनियां (जीव) बनाई हैं। जब-जब भक्तों पर आपत्ति आती है, मैं ही सहायता करता हूँ। व्रतासुर ने जब वेद चुराए थे तो मैंने ही बरहा रूप धरकर व्रतासुर को मारकर वेदों की रक्षा की थी। हिरण्यकशिपु का उदर मैंने ही नरसिंह रूप धारण करके फाड़कर मारा था। मैंने ही बली राजा की यज्ञ में बावन रूप बनाकर तीन कदम (डंग) स्थान माँगा था। सुरपति के राज की रक्षा की थी। महिमा विष्णु की बनाई थी। इन्द्र ने विष्णु को पुकारा। विष्णु ने मुझे पुकारा। तब मैं गया था।

मैं जन्मता-मरता नहीं हूँ। इसलिए चार प्रकार से जो अंतिम संस्कार किया जाता है, वह मेरा नहीं होता। हम किसी को भ्रमित नहीं करते।

काल का रूप मन सबको भ्रमित करता है। करोड़ों शंकर मरकर समूल (जड़ा मूल से) चले गए। ब्रह्मा, विष्णु की गिनती नहीं कि कितने मरकर जा चुके हैं। मैं वह परमेश्वर हूँ जिसका गुणगान वेद तथा कतेब (कुरान व बाईबल) करते हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर, सनकादिक भी जिसे प्राप्त नहीं कर सके, वे प्रयत्न करके थक चुके हैं। अल्फ रूप यानि मीनी सतलोक भी हमारा अंग (भाग) है। उसको भी ये प्राप्त नहीं कर सके जहाँ पर अनंत करोड़ त्रिवेणी तथा गंगा बह रही हैं। हमारे लोक में स्वर्ग-नरक नहीं, मत्यु नहीं होती। कोई बंधन नहीं है। सब स्वतंत्र हैं। सत्य शब्द उस स्थान को प्राप्त करवाने का मंत्र है। केवल हमारे वचन (शब्द) से उत्पन्न ऊपर के लोक तथा उनमें रहने वाले भक्त/भक्तमति (हंस, हंसनी) अमर रहेंगे, और सब ब्रह्मांड एक दिन नष्ट हो जाऐंगे। कच्छ, मच्छ, कूरंभ, धौल, धरती सब नष्ट हो जाऐंगे। स्वर्ग, पाताल सब नष्ट हो जाऐंगे। इन्द्र, कुबेर, वरूण, धर्मराय, ब्रह्मा, विष्णु, तथा शिव भी मर जाऐंगे। आदि माया (दुर्गा) काल ब्रह्म (ज्योति निरंजन) भी मरेंगे। हम नहीं मरेंगे। सब संसार मरेगा। जो हमारी शरण में हैं, वो नहीं मरेंगे। सतलोक में मौज करेंगे।

धर्मदास बोलत है बानी, कौंन रूप पद कहां निशानी।
तुम जो अकथ कहांनी भाषी, तुमरै आगै तुमही साषी।।1097।।
योह अचरज है लीला स्वामी, मैं नहीं जानत हूं निजधामी।
कौन रूप पदका प्रवानं, दया करौं मुझ दीजै दानं।।1098।।
हम तो तीरथ ब्रत करांही, अगम धामकी कछु सुध नांही।

गर्भ जोनि में रहैं भुलाई, पद प्रतीति नहीं मोहि आई।।1099।।
हम तुम दोय एकम एका, सुन जिंदा मोहि कहौ बिबेका।
गुण इन्द्री और प्राण समूलं, इनका कहो कहां अस्थूलं।।1100।।
तुम जो बटकबीज कहिदीन्या, तुमरा ज्ञान हमौं नहीं चीन्या।
हमकौं चीन्ह न परही जिंदा, कैसे मिटै प्राण दुख दुन्दा।।1101।।
त्रिदेवनकी की महिमा अपारं, ये हैं सर्व लोक करतारं।
सुन जिन्दा क्यूं बात बनाव, झूठी कहानी मोहे सुनावैं।।1102।।
मैं ना मानुं, बात तुम्हारी। मैं सेवत हूँ, विष्णु नाथ मुरारी।
शंकर–गौरी गणेश पुजाऊँ, इनकी सेवा सदा चित लाऊँ।।1103।।
तहां वहां लीन भये निरबांनी, मगन रूप साहिब सैलानी।
तहां वहां रोवत धर्मनीनागर, कहां गये तुम सुख के सागर।।1104।।
अधिक बियोग हुआ हम सेती, जैसैं निर्धन की लुटी गई खेती।
कलप करै और मन में रोवै, दशौं दिशा कौं वह मग जोवै।।1105।।
हम जानैं तुम देह स्वरूपा, हमरी बुद्धि अंध गृह कूपा।
हमतो मानुषरूप तुम जान्या, सुन सतगुरू कहां कीन पियाना।।1106।।
बेग मिलौ करि हूं अपघाता, मैं नाहीं जीवूं सुनौं विधाता।
अगम ज्ञान कुछि मोहि सुनाया, मैं जीवूं नहीं अविगत राया।।1107।।
तुम सतगुरू अबिगत अधिकारी, मैं नहीं जानी लीला थारी।
तुम अविगत अविनाशी सांई, फिरि मोकूं कहां मिलौ गोसांई।।1108।।

दोहा – कमर कसी धर्मदास कूं, पूरब पंथ पयान।
गरीब दास रोवत चले, बांदौगढ अस्थान।।1109।।

जा पौंहचैं काशी अस्थाना, मौमन के घरि बुनि है ताना।
षटमास बीतै जदि भाई, तहां धर्मदास यग उपराई।।1110।।
बांदौगढ में यग आरंभा, तहां षटदर्शन अधि अचंभा।
यज्ञमांहि जगदीश न आये, धर्मदास ढूंढत कलपाये।।1111।।
अनंत भेष टुकड़े के आहारी, भेटै नहीं जिंद व्यौपारी।
तहां धर्मदास कलप जब कीनं, पलक बीच बैठै प्रबीनं।।1112।।
औही जिंदे का बदन शरीरं, बैठे कदंब वृक्ष के तीरं।
चरण लिये चिंतामणि पाई, अधिक हेत सें कंठ लगाई।।1113।।
अजब कुलाहल बोलत बानी, तुम धर्मदास करूं प्रवानी।
तुम आए बांदौगढ स्थाना, तुम कारण हम कीन पयाना।।1114।।
अललपंख ज्यूं मारग मोरा, तामधि सुरति निरति का डोरा।
ऐसा अगम ज्ञान गोहराऊँ, धर्मदास पद पदहिं समाऊं।।1115।।
गुप्त कलप तुम राखौं मोरी, देऊँ मक्रतार की डोरी।
पद प्रवानि करूं धर्मदासा, गुप्त नाम हृदय प्रकाशा।।1116।।

हम काशी में रहैं हमेशं, मोमिन घर ताना प्रवेशं।
भक्ति भाव लोकन कौ देही, जो कोई हमारी सिष बुद्धि लेही।।1117।।
ऐसी कलप करौ गुरूराया, जैसे अंधरें लोचन पाया।
ज्यूं भूखेकौ भोजन भासै, क्षुध्या मिटि है कलप तिरासै।।1118।।
जैसे जल पीवत तिस जाई, प्राण सुखी होय तृप्ती पाई।
जैसे निर्धनकूं धन पावैं, ऐसैं सतगुरू कलप मिटावैं।।1119।।
कैसैं पिण्ड प्राण निसतरहीं, यह गुण ख्याल परख नहीं परहीं।
तुम जो कहौ हम पद प्रवानी, हम कैसैं जानैं सहनानी।।1120।।
दोहा – धर्म कहैं सुन जिंद तुम, हम पाये दीदार।
गरीबदास नहीं कसर कुछ, उधरे मोक्षद्वार।।1121।।
अजर करूं अनभै प्रकाशा, खोलि कपाट दिये धर्मदासा।
पद बिहंग निज मूल लखाया, सर्व लोक एकै दरशाया।।1122।।
खुलै कपाट घाटघट माहीं, शंखकिरण ज्योति झिलकांहीं।
सकल सृष्टि में देख्या जिंदा, जामन मरण कटे सब फंदा।।1123।।
दोहा – जिंद कहैं धर्मदास सैं, अभय दान तुझ दीन।
गरीबदास नहीं जूंनि जग, हुय अभय पद लीन।।1124।।

''धर्मदास वचन''

पारख के अंग की वाणी नं. 1097-1124 का सरलार्थ :- धर्मदास ने कहा कि हे जिन्दा! जो यह (अकथ) अवर्णनीय अद्भुत कथा आपने सुनाई है, यह किसी से नहीं सुनी। इसके तो आप ही वक्ता, आप ही साक्षी हैं। कपया करके मुझे विश्वास दिलाओ। हम तो तीर्थ, व्रत करते हैं। (अगम धाम) स्वर्ग से आगे के धाम (सतलोक) का हमें ज्ञान नहीं है। हम तो जन्म-मरण में पड़े हैं। निजधाम को भूल गए हैं। आप द्वारा बताए स्थान पर विश्वास (प्रतित) नहीं हो रहा। (त्रिदेवन) ब्रह्मा, विष्णु तथा महेश की अपार महिमा हमने सुनी है। ये सब लोकों के सजनहार हैं। हे जिन्दा! सुन! क्यों झूठी कहानी बनाता है? मैं आपकी बात को नहीं मानता। मैं तो विष्णु जी को मानता (पूजता) हूँ। गौरी, शंकर तथा गणेश को भी पूजता हूँ। इनकी पूजा सदा करूँगा। धर्मदास की अरूचि देखकर परमेश्वर कबीर जी अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास रोने लगा। बोला कि हे सुखसागर! कहाँ चले गए? मेरा तो सब कुछ लुट गया। जैसे निर्धन किसान की खेती लुट जाती है। इस तरह की कल्पना करे और मन-मन में रोवे। मुख से बात कह नहीं पावे। मैंने तो आपको शरीरधारी मानव समझा था। मेरी बुद्धि अंधे कुँए के समान है यानि मैं मूर्ख हूँ। हे सतगुरू! आप कहाँ चले गए? (बेग) शीघ्र दर्शन दो, अन्यथा मैं (अपघात) आत्महत्या करूँगा। हे विधाता! मैं जीवित नहीं रहूँगा। आपने (अगम ज्ञान) आगे का ऊँचा ज्ञान समझाया है। हे (अविगत राया) दिव्य स्वामी! मैं आपके दर्शन बिना जीवित नहीं रहूँगा। संत गरीबदास जी ने अपनी दिव्य दष्टि से पिछले चलचित्र देखकर सब वर्णन आँखों देखा बताया है कि इस प्रकार विलाप करके रोता हुआ धर्मदास अपने गाँव बांधवगढ़ की ओर चल पड़ा। अन्य तीर्थों पर जाने का ईरादा भी बदल

दिया क्योंकि ज्ञान ही ऐसा है। धर्मदास जी अपने घर बांधवगढ़ चला गया। परमेश्वर कबीर जी काशी में मोमिन नूर अली (नीरू) के घर पर चले गए। वहाँ कपड़ा बुनने का कार्य करते थे। वह करने लगे। छः महीनों के पश्चात् धर्मदास को अपनी पत्नी आमनी देवी के कहने से प्रेरणा हुई कि सतगुरू परमेश्वर ने क्या कहा था कि वे कैसे मिलते हैं? धर्मदास जी को याद आया कि उन्होंने कहा था कि जहाँ धर्म-भंडारे (लंगर) चलते हैं या सत्संग में संत इकट्ठे होते हैं तो वहाँ मैं अवश्य आता हूँ। आमनी ने कहा कि आप धर्म यज्ञ प्रारंभ कर दो। धर्मदास जी ने तीन दिन के भंडारे का आयोजन किया। दो दिन तक परमात्मा नहीं आए। तीसरे दिन भी दोपहर बाद आए। धर्मदास बहुत दुःखी हो रहा था। इधर-उधर खोज रहा था। अंतिम दिन परमेश्वर कबीर जी उसी जिन्दे के वेश में भंडारे के स्थान के समीप कदंब के वक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास की दष्टि उसी खोज में बार-बार इधर-उधर व भोजन खा रहे संतों की ओर लगी थी। धर्मदास दौड़कर गया। ध्यान से चेहरा देखा। पहचान लिया। चरणों में सिर रखकर कहा कि यदि आज आप नहीं आते तो आपका दास संसार से चला जाता। धर्मदास जी अधिक प्रेम के साथ परमात्मा कबीर जी के गले मिले। परमेश्वर ने कहा कि धर्मदास! मेरे विषय में यहाँ अन्य किसी को न बताना। मैं तेरे को एक अति उत्तम अध्यात्म ज्ञान सुनाऊँगा। सच्ची साधना का ज्ञान करवाकर मोक्ष प्रदान करूँगा। मैं काशी शहर में मोमीन नीरू के घर ताना बुनने का कार्य करता हूँ। जो हमारा ज्ञान सुनता है, उसको ज्ञान सुनाता हूँ। सच्चे अध्यात्म ज्ञान से परिचित करवाता हूँ तथा भक्ति भाव लोगों को बताता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि हे गुरूदेव! आपके मिलने से मुझे आशा है कि मेरा कल्याण होगा। आपने दया की। अब ऐसी दया और करो। मुझे सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान सुनाओ। मुझ अंधे को आँखें मिल गई हैं। भूखे को भोजन मिल गया। भूख समाप्त हुई। प्यासे को जल मिला प्यास बुझी। जीव सुखी हुआ। आप तो कहते हो कि आप (पद प्रवानी) पूर्ण भक्ति पद्यति के जानने वाले हो। मैं कैसे जानूँ? आप समझाने की कपया करें। धर्मदास जी ने कहा कि हे जिन्दा! सुनो। आपके दर्शन हुए अब मुझे मोक्ष मिलने की आशा बनी है। कपया अपना दास जानकर सब भेद बताओ। परमेश्वर कबीर जी ने सम्पूर्ण अध्यात्म ज्ञान समझाया। प्रथम नाम की दीक्षा दी। फिर सतलोक ले गए, वापिस छोड़ा। धर्मदास जी ने देखा कि सर्व सष्टि का मालिक यही जिन्दा बाबा है। इसके सामने ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव तो कुछ भी मायने नहीं रखते हैं। सतलोक से तीन दिन बाद शरीर में धर्मदास आए। सामने जिन्दा नहीं मिला। ज्ञान हो गया था कि काशी में मुसलमान नीरू जुलाहे के घर कपड़ा बुनने का कार्य करते हैं। विश्वास नहीं हो रहा था कि परमात्मा जुलाहे के घर कैसे रूके हैं? वे कपड़ा क्यों बनाऐंगे? परंतु अन्य कोई विकल्प नहीं बचा था उनसे मिलने का। तब धर्मदास काशी शहर में गए। इससे पूर्व पाँच बार अंतर्ध्यान हो चुके थे। {पूर्ण प्रकरण विस्तार के साथ आगे इसी पारख के अंग के सरलार्थ में लिखा है। पूरा पढ़ें, तब सब समझ आएगा।}

धर्मदास जी ने काशी में वही सकल (सूरत) जिन्दा वाली कपड़ा बुनते देखी। आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि परमेश्वर यह कार्य कर रहे हैं। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि आओ शाहू के पूता धर्मदास! मैं वही हूँ जिसकी तुझे खोज है। ये वचन परमेश्वर के मुख

से सुनकर चरणों में गिर गया। सतनाम प्राप्त किया। अपने घर ले गया। कई दिन परमात्मा को घर रखा। सत्संग सुना। {कपया आगे पढ़ें सम्पूर्ण प्रकरण धर्मदास को परमात्मा कबीर जी के मिलने का, आँखें भर आऐंगी। आत्मा भक्ति से ओत-प्रोत हो जाएगी।}

❖ सरलार्थ :- उपरोक्त वाणियों का सरलार्थ पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' में विस्तार से प्रमाणों के साथ यह प्रकरण लिखा है जो मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा सरल करके लिखा है जो इस प्रकार है :-

{यदि केवल गद्य भाग यानि सत्य कहानी रूप में पढ़ना है तो इसी पुस्तक के पष्ठ 385 पर पढ़ें जिसकी हैडिंग है ''किस-किसको मिला परमात्मा''।}

कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' का सारांश (छठा अध्याय)

जैसा कि इस ग्रन्थ (कबीर सागर का सरलार्थ) के प्रारम्भ में लिखा है कि कबीर सागर के यथार्थ अर्थ को न समझकर कबीर पंथियों ने इस ग्रन्थ में अपने विवेक अनुसार फेर-बदल किया है। कुछ अंश काटे हैं। कुछ आगे-पीछे किए हैं। कुछ बनावटी वाणी लिखकर कबीर सागर का नाश किया है। परंतु सागर तो सागर ही होता है। उसको खाली नहीं किया जा सकता। इसी प्रकार कबीर सागर में बहुत सा सत्य विवरण उनकी कुदष्टि से बच गया है। शेष मिलावट को अब एक बहुत पुराने हस्तलिखित ''कबीर सागर'' से मेल करके तथा संत गरीबदास जी की अमतवाणी के आधार से तथा परमेश्वर कबीर जी द्वारा मुझ दास (रामपाल दास) को दिया, दिव्य ज्ञान के आधार से सत्य ज्ञान लिखा गया है। एक प्रमाण बताता हूँ जो बुद्धिमान के लिए पर्याप्त है।

ज्ञान प्रकाश में परमेश्वर कबीर जी द्वारा धनी धर्मदास जी को शरण में लेने का विवरण है। आपसी संवाद है, परंतु धर्मदास जी का निवास स्थान भी गलत लिखा है। पष्ठ 21 पर पूर्व गुरू रूपदास जी से शंका का निवारण करके अपने घर चले गए। धर्मदास जी का निवास स्थान ''मथुरा नगर'' लिखा है, वाणी इस प्रकार है:-

तुम हो गुरू वो सतगुरू मोरा। उन हमार यम फंदा तोरा (तोड़ा)।।
धर्मदास तब करी प्रणामा। मथुरा नगर पहुँचे निज धामा।।

जबकि धर्मदास जी का निज निवास स्थान ''बांधवगढ़'' कस्बा था जो मध्यप्रदेश में है। संत गरीबदास जी ने अपनी वाणी में सर्व सत्य विवरण लिखा है कि धर्मदास बांधवगढ़ के रहने वाले सेठ थे। वे तीर्थ यात्रा के लिए मथुरा गए थे। उसके पश्चात् अन्य तीर्थों पर जाना था। कुछ तीर्थों पर भ्रमण कर आए थे। नकली कबीरपंथियों द्वारा किए फेर-बदल का अन्य प्रमाण इसी ज्ञान प्रकाश में धर्मदास जी का प्रकरण चल रहा है। बीच में सर्वानन्द ब्राह्मण की कथा लिखी है जो वहाँ पर नहीं होनी चाहिए। केवल धर्मदास की ही बात होनी चाहिए। पष्ठ 37 से 50 तक सर्वानन्द की कथा है। इससे पहले पष्ठ 34 पर धर्मदास जी को नाम दीक्षा देने, आरती-चौंका करने का प्रकरण है। पष्ठ 35 पर गुरू की महिमा की वाणी है जो पष्ठ 36 तक है। फिर ''धर्मदास वचन'' चौपाई है जो मात्र तीन वाणी हैं। इसके बाद ''सतगुरू वचन'' वाला प्रकरण मेल नहीं करता। पष्ठ 36 पर ''धर्मदास वचन'' चौपाई की

तीन वाणी के पश्चात् पष्ठ 50 पर ''धर्मदास वचन'' से मेल (Link) करता है जो सर्वानन्द के प्रकरण के पश्चात् ''धर्मदास वचन'' की वाणी है।

ज्ञान प्रकाश पष्ठ 36 पर ''धर्मदास वचन'' चौपाई

हो साहब तव पद सिर नाऊँ। तव पद परस परम पद पाऊँ।।
केहि विधि आपन भाग सराही । तव बरत गहैं भाव पुनः बनाई।।
कोधों मैं शुभ कर्म कमाया। जो सदगुरू तव दर्शन पाया।।

ज्ञान प्रकाश पष्ठ 50 ''धर्मदास वचन''

धन्य धन्य साहिब अविगत नाथा। प्रभु मोहे निशदिन राखो साथा।।
सुत परिजन मोहे कछु न सोहाही। धन दारा अरू लोक बड़ाई।।

इसके पश्चात् सही प्रकरण है। बीच में अन्य प्रकरण लिखा है, वह मिलावटी तथा गलत है।

नाम दीक्षा देने के पश्चात् परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को प्रसन्न करने के लिए कहा कि जब आपको विश्वास हो जाएगा कि मैं जो ज्ञान तथा भक्ति मंत्र बता रहा हूँ, वे सत्य हैं। फिर तेरे को गुरू पद दूँगा। आप दीक्षा लेने वाले से सवा लाख द्रव्य (रूपये या सोना) लेकर दीक्षा देना। परमात्मा ने धर्मदास जी की परीक्षा ली थी कि वैश्य (बनिया) जाति से है यदि लालची होगा तो इस लालचवश मेरा ज्ञान सुनता रहेगा। ज्ञान के पश्चात् लालच रहेगा ही नहीं। परंतु धर्मदास जी पूर्ण अधिकारी हंस थे। सतलोक से विशेष आत्मा भेजे थे। फिर उन्होंने इस राशि को कम करवाया और निःशुल्क दीक्षा देने का वचन करवाया यानि माफ करवाया।

अब ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 9 से आवश्यक वाणी लेते हैं क्योंकि जो अमतवाणी परमेश्वर कबीर जी के मुख कमल से बोली गई है, उसके पढ़ने-सुनने से भी अनेकों पाप नाश होते हैं। ज्ञान प्रकाश पष्ठ 9 से वाणी:-

धर्मदास बोध = ज्ञान प्रकाश

निम्न वाणी पुराने कबीर सागर ग्रन्थ के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' से हैं :-

बांधवगढ़ नगर कहाय। तामें धर्मदास साह रहाय।।
धन का नहीं वार रू पारा। हरि भक्ति में श्रद्धा अपारा।।
रूप दास गुरू वैष्णव बनाया। उन राम कष्ण भगवान बताया।।
तीर्थ बरत मूर्ति पूजा। एकादशी और सालिग सूजा।।
ताके मते दढ़ धर्मनि नागर। भूल रहा वह सुख का सागर।।
तीर्थ करन को मन चाहा। गुरू आज्ञा ले चला उमाहा।।
भटकत भ्रमत मथुरा आया। कष्ण सरोवर में उठ नहाया।।
चौका लीपा पूजा कारण। फिर लगा गीता सलोक उचारण।।
ताही समय एक साधु आया। पाँच कदम पर आसन लाया।।
धर्मदास को कहा आदेशा। जिन्दा रूप साधु का भेषा।।
धर्मदास देखा नजर उठाई। पूजा में मगन कछु बोल्या नाहीं।।
जग्यासु वत देखै दाता। धर्मदास जाना सुनत है बाता।।

ऊँचे सुर से पाठ बुलाया। जिन्दा सुन–सुन शीश हिलाया।।
धर्मदास किया वैष्णव भेषा। कण्ठी माला तिलक प्रवेशा।।
पूजा पाठ कर किया विश्रामा। जिन्दा पुनः किया प्रणामा।।
जिन्दा कहै मैं सुना पाठ अनुपा। तुम हो सब संतन के भूपा।।
मोकैं ज्ञान सुनाओ गोसाँई। भक्ति सरस कहीं नहीं पाई।।
मुस्लिम हिन्दू गुरू बहु देखे। आत्म संतोष कहीं नहीं एके।।
धर्मदास मन उठी उमंगा। सुनी बड़ाई तो लागा चंगा।।

धर्मदास वचन

जो चाहो सो पूछो प्रसंगा। सर्व ज्ञान सम्पन्न हूँ भक्ति रंगा।।
पूछहूँ जिन्दा जो तुम चाहो। अपने मन का भ्रम मिटाओ।।

जिन्द वचन

तुम काको पाठ करत हो संता। निर्मल ज्ञान नहीं कोई अन्ता।।
मोकूं पुनि सुनाओ बाणी। जातें मिलै मोहे सारंग पाणी।।
तुम्हरे मुख से ज्ञान मोहे भावै। जैसे जिह्वा मधु टपकावै।।
धर्मदास सुनि जब कोमल बाता। पोथी निकाली मन हर्षाता।।

धर्मदास का गीता का पाठ अनुवाद सहित सुनाना (उग्र गीता)

धर्मदास जी को ज्ञान था कि जिन्दा वेशधारी मुसलमान संत होते हैं जबकि मुसलमान नहीं मानते कि पुनर्जन्म होता है। इसलिए पहले उसी प्रकरण वाले श्लोक सुनाए। (गीता अध्याय 2 श्लोक 12 व 17, अध्याय 4 श्लोक 5 व 9)

हे अर्जुन आपन जन्म–मरण बहुतेरे। तुम ना जानत याद है मेरे।।
नाश रहित प्रभु कोई और रहाई। जाको कोई मार सकता नाहीं।।

फिर गीता अध्याय 8 श्लोक 1 से 10 सुनाए :-

अर्जुन मन जो शंका आई। कृष्ण से पूछा विनय लाई।।
हे कृष्ण तुम तत् ब्रह्म बताया। अध्यात्म अधिभूत जनाया।।
वाका भेद बताओ दाता। मन्द मति हूँ देवो ज्ञान विधाता।।(गीता अ. 8 श्लोक 1-2)
कृष्ण अस बोले बानी। दिव्य पुरूष की महिमा बखानी।।
तत् ब्रह्म परम अक्षर ब्रह्म कहाया। जिन सब ब्रह्माण्ड बनाया।।
मम भक्ति करो मोकूं पाई। यामै कछु संशय नाहीं।।(गीता अ. 8 श्लोक 5,7)
जहाँ आशा तहाँ बाशा होई। मन कर्म बचन सुमरियो सोई।।(गीता अ. 8 श्लोक 6)
जोहै सनातन अविनाशी भगवाना। वाकि भक्ति करै वा पर जाना।।
जैसे सूरज चमके आसमाना। ऐसे सत्यपुरूष सत्यलोक रहाना।।
वाकी भक्ति करे वाको पावै। बहुर नहीं जग में आवै।।(गीता अ. 8 श्लोक 8-9-10)
मम मंत्र है ओम् अकेला।(गीता अ. 8 श्लोक 13)

ताका ओम् तत् सत् दूहेला।।(गीता अ. 17 श्लोक 23)
तुम अर्जुन जावो वाकी शरणा। सो है परमेश्वर तारण तरणा।।(गीता अ. 18 श्लोक 62,66)
वाका भेद परम संत से जानो। तत ज्ञान में है प्रमाणो।।(गीता अ. 4 श्लोक 34)
वह ज्ञान वह बोलै आपा। ताते मोक्ष पूर्ण हो जाता।।(गीता अ. 4 श्लोक 32)
सब पाप नाश हो जाई। बहुर नहीं जन्म–मरण में आई।।
मिले संत कोई तत्त्वज्ञानी। फिर वह पद खोजो सहिदानी।।
जहाँ जाय कोई लौट न आया। जिन यह संसार वृक्ष निर्माया।।(गीता अ. 15 श्लोक 4)
अब अर्जुन लेहू विचारी। कथ दीन्ही गीता सारी।।(गीता अ. 18 श्लोक 63)
गुप्त भेद बताया सारा। तू है मोकूं आजीज पियारा।।(गीता अ. 18 श्लोक 63)
अति गुप्त से गुप्त भेद और बताऊँ। मैं भी ताको इष्ट मनाऊँ।।(गीता अ. 18 श्लोक 64)
जे तू रहना मेरी शरणा। कबहु ना मिट है जन्म रू मरणा।।
नमस्कार कर मोहे सिर नाई। मेरे पास रहेगा भाई।।(गीता अ. 18 श्लोक 65)
बेसक जा तू वाकी शरणा। मम धर्म पूजा मोकूं धरणा।।
फिर ना मैं तू कूं कबहूं रोकूं। ना मन अपने कर तू शोकूं।।(गीता अ. 18 श्लोक 66)
और अनेक श्लोक सुनाया। सुन जिन्द एक प्रश्न उठाया।।

जिन्दा बाबा (कबीर जी) वचन

हे वैष्णव! तव कौन भगवाना। काको यह गीता बखाना।।

धर्मदास वचन

राम कृष्ण विष्णु अवतारा। विष्णु कृष्ण है भगवान हमारा।।
श्री कृष्ण गीता बखाना। एक एक श्लोक है प्रमाणा।।
जे तुम चाहो मोक्ष कराना। भक्ति करो अविनाशी भगवाना।।
विष्णु का कबहु नाश न होई। सब जगत के कर्ता सोई।।
तीर्थ वरत करूँ मन लावो। पिण्ड दान और श्राद्ध करावो।।
यह पूजा है मुक्ति मार्ग। और सब चले कुमार्ग।।

जिन्दा बाबा (कबीर जी) वचन

जै गीता विष्णु रूप में कृष्ण सुनाया। कह कई बार मैं नाश में आया।।1।।
अविनाशी है कोई और विधाता। जो उत्तम परमात्मा कहाता।।2।।
वह ज्ञान मोकूं नाहीं। वाको पूछो संत शरणाई।।3।।
अविनाशी की शरण में जाओ। पुनि नहीं जन्म–मरण में आओ।।4।।
मैं भी इष्ट रूप ताही पूजा। अविनाशी कोई है मोते दूजा।।5।।
मम भक्ति मंत्र ओम् अकेला। वाका ओम् तत् सत् दुहेला।।6।।
मैं तोकूं पूछूं गोसांई। तेरे भगवान मरण के माहीं।।7।।
हम भक्ति वाकी चाहैं। जो नहीं जन्म–मरण में आहै।।8।।
जे तुम पास वह मंत्र होई। तो मैं पक्का चेला होई।।9।।
यही बात एक संत सुनाई। राम कृष्ण सब मरण के माहीं।।10।।

अविनाशी कोई और दाता। वाकी भक्ति मैं बताता।।11।।
वो कह में वाही लोक से आया। मैं ही हूँ वह अविगत राया।।12।।
आज तुम गीता में फरमाया। फिर तो वह संत साच कहाया।।13।।
हे वैष्णव! तुम भी धोखे माहीं। बर्था आपन जन्म नशाहीं।।14।।
जो तू चाहो भवसागर तिरणा। जा के गहो वाकी शरणा।।15।।

कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को गीता से ही प्रश्न तथा उत्तर देकर सत्य ज्ञान समझाया। उपरोक्त वाणी सँख्या 1 में गीता अध्याय 4 श्लोक 5, अध्याय 2 श्लोक 12 वाला वर्णन बताया जिसमें गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। वाणी सँख्या 2 में गीता अध्याय 15 श्लोक 17 वाला वर्णन बताया है। वाणी सँख्या 3 में गीता अध्याय 4 श्लोक 34 वाला ज्ञान बताया है। वाणी सँख्या 4 में गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 66 तथा अध्याय 15 श्लोक 4 वाला वर्णन बताया है। वाणी सँख्या 5 में गीता अध्याय 18 श्लोक 64 का वर्णन है जिसमें काल कहता है कि मेरा ईष्ट देव भी वही है। वाणी सँख्या 6 में गीता अध्याय 8 श्लोक 13 तथा अध्याय 17 श्लोक 23 वाला ज्ञान है। आगे की वाणियों में कबीर परमेश्वर जी ने अपने आपको छुपाकर अपने ही विषय में बताया है।

धर्मदास वचन

विष्णु पूर्ण परमात्मा हम जाना। जिन्द निन्दा कर हो नादाना।।
पाप शीश तोहे लागे भारी। देवी देवतन को देत हो गारि।।

जिन्दा (कबीर जी) वचन

जे यह निन्दा है भाई। यह तो तोर गीता बतलाई।।
गीता लिखा तुम मानो साचा। अमर विष्णु है कहा लिख राखा।।
तुम पत्थर को राम बताओ। लडूवन का भोग लगाओ।।
कबहु लड्डू खाया पत्थर देवा। या काजू किशमिश पिस्ता मेवा।।
पत्थर पूज पत्थर हो गए भाई। आखें देख भी मानत नाहीं।।
ऐसे गुरू मिले अन्याई। जिन मूर्ति पूजा रीत चलाई।।
इतना कह जिन्द हुए अदेखा। धर्मदास मन किया विवेका।।

धर्मदास वचन

यह क्या चेटक बिता भगवन। कैसे मिटे आवा गमन।।
गीता फिर देखन लागा। वही व'तान्त आगे आगा।।
एक एक श्लोक पढ़े और रौवै। सिर चक्रावै जागै न सोवै।।
रात पड़ी तब न आरती कीन्हा। झूठी भक्ति में मन दीन्हा।।
ना मारा ना जीवित छोड़ा। अधपका बना जस फोड़ा।।
यह साधु जे फिर मिल जावै। सब मानू जो कछु बतावै।।
भूल के विवाद करूं नहीं कोई। आधीनी से सब जानु सोई।।
उठ सवेरे भोजन लगा बनाने। लकड़ी चुल्हा बीच जलाने।।

जब लकड़ी जलकर छोटी होई। पाछलो भाग में देखा अनर्थ जोई।।
चटक–चटक कर चींटी मरि हैं। अण्डन सहित अग्न में जर हैं।।
तुरंत आग बुझाई धर्मदासा। पाप देख भए उदासा।।
ना अन्न खाऊँ न पानी पीऊँ। इतना पाप कर कैसे जीऊँ।।
कराऊँ भोजन संत कोई पावै। अपना पाप उतर सब जावै।।
लेकर थार चले धर्मनि नागर। वक्ष तले बैठे सुख सागर।।
साधु भेष कोई और बनाया। धर्मदास साधु नेड़े आया।।
रूप और पहचान न पाया। थाल रखकर अर्ज लगाया।।
भोजन करो संत भोग लगाओ। मेरी इच्छा पूर्ण कराओ।।
संत कह आओ धर्मदासा। भूख लगी है मोहे खासा।।
जल का छींटा भोजन पे मारा। चींटी जीवित हुई थाली कारा।।
तब ही रूप बनाया वाही। धर्मदास देखत लज्जाई।।
कहै जिन्दा तुम महा अपराधी। मारे चीटी भोजन में रांधी।।
चरण पकड़ धर्मनि रोया। भूल में जीवन जिन्दा मैं खोया।।
जो तुम कहो मैं मानूं सबही। वाद विवाद अब नहीं करही।।
और कुछ ज्ञान अगम सुनाओ। कहां वह संत वाका भेद बताओ।।

जिन्द (कबीर) वचन

तुम पिण्ड भरो और श्राद्ध कराओ। गीता पाठ सदा चित लाओ।।
भूत पूजो बनोगे भूता। पितर पूजै पितर हुता।।
देव पूज देव लोक जाओ। मम पूजा से मोकूं पाओ।।
यह गीता में काल बतावै। जाकूं तुम आपन इष्ट बतावै।।**(गीता अ. 9/25)**
इष्ट कह करै नहीं जैसे। सेठ जी मुक्ति पाओ कैसे।।

धर्मदास वचन

हम हैं भक्ति के भूखे। गुरू बताए मार्ग कभी नहीं चुके।।
हम का जाने गलत और ठीका। अब वह ज्ञान लगत है फीका।।
तोरा ज्ञान महा बल जोरा। अज्ञान अंधेरा मिटै है मोरा।।
हे जिन्दा तुम मोरे राम समाना। और विचार कुछ सुनाओ ज्ञाना।।

जिन्द (कबीर) वचन

मार्कण्डे एक पुराण बताई। वामें एक कथा सुनाई।।
रूची ऋषी वेद को ज्ञानी। मोक्ष मुक्ति मन में ठानी।।
मोक्ष की लगन ऐसी लगाई। न कोई आश्रम न बीवाह सगाई।।
दिन एक पितर सामने आए। उन मिल ये वचन फरमाए।।
बेटा रूची हम महा दुःख पाए। क्यों नहीं हमरे श्राद्ध कराए।।
रूची कह सुनो प्राण पियारो। मैं बेद पढ़ा और ज्ञान विचारो।।

बेद में कर्मकाण्ड अविद्या बताई। श्राद्ध करे पितर बन जाई।।
ताते मैं मोक्ष की ठानी। वेद ज्ञान सदा प्रमानी।।
पिता, अरू तीनों दादा। चारों पंडित नहीं बेद विधि अराधा।।
तातें भूत योनि पाया। अब पुत्र को आ भ्रमाया।।
कहें पितर बात तोरी सत है। वेदों में कर्मकाण्ड अविद्या कथ है।।
तुम तो मोक्ष मार्ग लागे। हम महादुःखी फिरें अभागे।।
विवाह कराओ अरू श्राद्ध कराओ। हमरा जीवन सुखी बनाओ।।
रूची कह तुम तो डूबे भवजल माहीं। अब मोहे वामें रहे धकाई।।
चतवारिस (40) वर्ष आयु बड़ेरी। अब कौन करै सगाई मेरी।।
पितर पतन करवाया आपन। लगे रूची को थापना थापन।।
विचार करो धर्मनी नागर। पीतर कहें वेद है सत्य ज्ञान सागर।।
वेद विरूद्ध आप भक्ति कराई। तातें पितर जूनी पाई।।
रूची विवाह करवाकर श्राद्ध करवाया। करा करवाया सबै नाशाया।।
यह सब काल जाल है भाई। बिन सतगुरू कोई बच है नाहीं।।
या तो बेद पुराण कहो है झूठे। या पुनि तुमरे गुरू हैं पूठे।।
शास्त्र विरूद्ध जो ज्ञान बतावै। आपन बूडै शिष डूबावै।।
डूब मरै वो ले चुलु भर पाणी। जिन्ह जाना नहीं सारंगपाणी।।
दोहा :– सारंग कहें धनुष, पाणी है हाथा। सार शब्द सारंग है और सब झूठी बाता।।
सारंगपाणी काशी आया। अपना नाम कबीर
बताया।।
हम तो उनके चेले आही। गरू क्या होगा समझो भाई।।

धर्मदास वचन

जिन्दा एक अचरज है मोकूं। तुर्क धर्म और वेद पुराण ज्ञान है ताकूं।।
तुम इंसान नाहीं होई। हो अजब फरिश्ता कोई।।
और ज्ञान मोहे बताओ। युगों युगों की कथा सुनाओ।।

जिन्दा (कबीर) वचन

सुनो धर्मनि संष्टि रचना। सत्य कहूँ नहीं यह कल्पना।।
जब हम जगत रचना बताई। धर्मदास को अचरज अधिकाई।।

धर्मदास बचन

यह ज्ञान अजीब सुनायो। तुम को यह किन बतायो।।
कहाँ से बोलत हो ऐसी बाता। जानो तुम आप विधाता।।
विधाता तो निराकार बताया। तुम को कैसे मानु राया।।
तुम जो लोक मोहे बतायो। संष्टि की रचना सुनायो।।
आँखों देखूं मन धरै धीरा। देखूं कहा रहत प्रभु अमर शरीरा।।
(तब हम गुप्त पुनै छिपाई। धर्मदास को मूर्छा आई।।)

''कबीर परमेश्वर जी का अन्य वेश में छटे दिन मिलना''

चौपाई

दिवस पाँच जब ऐसहि बीता। निपट विकल हिय व्यापेउ चिन्ता।।
छठयें दिन अस्नान कहँ गयऊ। करि अस्नान चिंतवन कियऊ।।
पुहुप वाटिका प्रेम सोहावन। बहु शोभा सुन्दर शुठि पावन।।
तहां जाय पूजा अनुसारा। प्रतिमा देव सेव विस्तारा।।
खोलि पेटारी मूर्ति निकारी। ठाँव ठाँव धरि प्रगट पसारी।।
आनेउ तोरि पुहुप बहु भाँती। चौका विस्तार कीन्ही यहि भाँती।।
भेष छिपाय तहाँ प्रभु आये। चौका निकटहिं आसन लाये।।
धर्मदास पूजा मन लाये। निपट प्रीति अधिक चित चाये।।
मन अनुहारि ध्यान लौलावई। कहि कहि मंत्र पुहुप चढ़ावई।।
चन्दन पुष्प अच्छत कर लेही। निमित होय प्रतिमा पर देही।।
चवर डोलावहिं घण्ट बजायी। स्तुति देव की पढ़ैं चित लायी।।
करि पूजा प्रथमहि शिर नावा। डारि पेटारी मूर्ति छिपावा।।

सतगुरू बचन

अहो सन्त यह का तुम करहूँ। पौवा सेर छटंकी धरहूँ।।
केहि कारण तुम प्रगट खिडायहु। डारि पेटारी काहे छिपायेहु।।

धर्मदास बचन

बुद्धि तुम्हार जान नहि जाई। कस अज्ञानता बोलहु भाई।।
हम ठाकुर कर सेवा कीन्हा। हम कहँ गुरू सिखावन दीन्हा।।
ता कहँ सेर छटंकी कहहूँ। पाहन रूप ना देव अनुसरहूँ।।

सतगुरू बचन

अहो संत तुम नीक सिखावा। हमरे चित यक संशय आवा।।
एक दिन हम सुनेउ पुराना। विप्रन कहे ज्ञान सुनिधाना।।
वेद वाणि तिन्ह मोहि सुनावा। प्रभु कै लीला सुनि मन भावा।।
कहे प्रभु वह अगम अपारा। अगम गहे नहि आव अकारा।।
सुनेउँ शीश प्रभुकेर अकाशा। पग पताल तेहि अपर निवाशा।।
एकै पुरूष जगत कै ईसा। अमित रूप वह लोचन अमीसा।।
सोकित पोटली माहि समाहीं। अहो सन्त यह अचरज आहीं।।
औ गुरू गम्य मैं सुना रे भाई। अहैं संग प्रभु लखौ न जाई।।
अहो सन्त मैं पूछहुँ तोहीं। बात एक जो भाषो मोहीं।।
यहि घटमहँ को बोलत आही। ज्ञानदृष्टि नहि सन्त चिन्हाही।।
जौ लगि ताहि न चीन्हहुँ भाई। पाहन पूजि मुक्ति नहिं पाई।।
कोटि कोटि जो तीर्थ नहाओ। सत्यनाम विन मुक्ति न पाओ।।

जिन सुन्दर यह साज बनाया। नाना रंग रूप उपजाया।।
ताहि न खोजहु साहु के पूता। का पाहन पूजहु अजगूता।।
धर्मदास सुनि चक्रित भयऊ। पूजा पाती बिसरि सब गयऊ।।
एक टक मुख जो चितवत रहाई। पलकौ सुरति ना आनौ जाई।।
प्रिय लागै सुनि ब्रह्मका ज्ञाना। विनय कीन्ह बहु प्रीति प्रमाना।।

धर्मदास वचन (ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 16)

अहो साहब तब बात पियारी। चरण टेकि बहु विनय उचारी।।
अहो साहब जस तुम्ह उपदेशा। ब्रह्मज्ञान गुरू अगम संदेशा।।
छठयें दिवस साधु एक आये। प्रीय बात पुनि उनहु सुनाये।।
अगम अगाधि बात उन भाखा। कृत्रिम कला एक नहिं राखा।।
तीरथ व्रत त्रिगुण कर सेवा। पाप पुण्य वह करम करेवा।।
सो सब उन्हहि एक नहिं भावै। सबते श्रेष्ठ जो तेहि गुण गावै।।
जस तुम कहेहु बिलोई बिलोई। अस उनहूँ मोहि कहा सँजोई।।
गुप्त भये पुनि हम कहँ त्यागी। तिन्ह दरशन के हम बैरागी।।
मोरे चित अस परचै आवा। तुम्ह वै एक कीन्ह दुइ भावा।।
तुम कहाँ रहो कहो सो बाता। का उन्ह साहब कहँ जानहु ताता।।
केहि प्रभु कै तुम सुमिरण करहू। कहहु बिलोइ गोइ जनि धरहू।।

सतगुरू वचन

अहो धर्मदास तुम सन्त सयाना। देखौ तोहि में निरमल ज्ञाना।।
धर्मदास मैं उनकर सेवक। जहँहि सो भव सार पद भेवक।।
जिन कहा तुमहिं अस ज्ञाना। तिन साहेब कै मोहि सहिदाना।।
वे प्रभु सत्यलोकके वासी। आये यहि जग रहहि उदासी।।
नहिं वौ भग दुवार होइ आये। नहिं वो भग माहिं समाये।।
उनके पाँच तत्त्व तन नाहीं। इच्छा रूप सो देह नहिं आहिं।।
निःइच्छा सदा रहँहीं सोई। गुप्त रहहिं जग लखै न कोई।।
नाम कबीर सन्त कहलाये। रामानन्द को ज्ञान सुनाये।।
हिन्दू तुर्क दोउ उपदेशैं। मेटैं जीवन केर काल कलेशैं।।
माया ठगन आइ बहु बारी। रहैं अतीत माया गइ हारी।।
तिनहि पठावा मोहे तोहि पाही। निश्चय उन्ह सेवक हम आही।।
अहो सन्त जो तुम कारज चहहू। तो हमार सिखावन चित दे गहहू।।
उनकर सुमिरण जो तुम करिहौ। एकोतर सौ वंशा लै तरिहौ।।
वो प्रभु अविगत अविनाशी। दास कहाय प्रगट भे काशी।।
भाषत निरगुण ज्ञान निनारा। वेद कितेब कोइ पाव न पारा।।
तीन लोक महँ महतो काला। जीवन कहँ यम करै जंजाला।।
वे यमके सिर मर्दन हारे। उनहि गहै सो उतरै पारे।।

जहाँ वो रहहि काल तहँ नाहीं। हंसन सुखद एक यह आही।।

धर्मदास वचन (ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 17)

अहो साहब बलि बलि जाऊँ। मोहिं उनके सँदेश सुनाऊँ।।
मोरे तुम उनहीं सम आही। तुम वै एक नाहिं बिलगाई।।
नाम तुम्हार काह है स्वामी। सो भाषहु प्रभु अन्तर्यामी।।

सतगुरू वचन

धर्मनि नाम साधु मम आही। सन्तन माँह हम सदा रहाही।।
साधु संगति निशिदिन मन भावै। सन्त समागम तहाँ निश्चय जावैं।।
जो जिव करै साधु सेवकाई। सो जिव अति प्रिय लागै भाई।।
हमरे साहिब की ऐसन रीति। सदा करहिं सन्त समागम सो प्रीती।।
जो जिव उन्हकर दीक्षा लेहीं। साधू सेव सिखावन देहीं।।
जीव पर दया अरू आतम पूजा। सतपुरूष भक्ति देव नहिं दूजा।।
सद्गुरू संकट मोचक आहीं। सच्चि भक्ति छुवैं यम नाहीं।।

धर्मदास बचन (ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 18)

अहो साहब तुम्ह अविगत अहहू। अमृत वचन तुम निश्चय कहहू।।
हे प्रभु पूछेऊँ बात दुइ चारा। अब मैं परिचय भेद विचारी।।
सो तो हम नहिं जानहिं स्वामी। तुम कहहु प्रभु अंतरयामी।।

सतगुरू वचन

अहो धर्मदास तुम्ह भल यह भाखो। कहो सो जो प्रतीति तुम राखो।।
अहहु निगुरा कि गुरू किहुँ भाई। तौन बात मोहि कहहु बुझाई।।

धर्मदास वचन

समर्थ गुरू हमने कीन्हा। यह परिचे गुरू मोहि न दीन्हा।।
रूपदास विठलेश्वर रहहीं। तिनकर शिष्य सुनहुँ हम अहहीं।।
उन मोहिं इहे भेद समुझावा। पूजहु शालिग्राम मन भावा।।
गया गोमती काशी परागा। होइ पुण्य शुद्ध जनम अनुरागा।।
लक्ष्मी नारायण शिला कै दीन्हा। विष्णु पंजर पुनि गीता चीन्हा।।
जगन्नाथ बलभद्र सहोद्रा। पंचदेव औरो योगीन्द्रा।।
बहुतैं कही प्रमोध दृढ़ाई। विष्णुहिं सुमिरि मुक्ति होइ भाई।।
गुरू के वचन शीश पर राखा। बहुतक दिन पूजा अभिलाखा।।
तुम्हरे भेष मिले प्रभु जबते। तुम बानी प्रिय लागी तबते।।
वे गुरू तुम्हहीं सतगुरू अहहू। सारभेद मोहिं प्रभु कहहू।।
तुम्हरा दास कहाउब स्वामी। यमते छोड़ावहु अन्तरयामी।।
उनहूँ कर नाहीं निन्द करावै। अस विश्वास मोरे मन आवै।।
वह गुरू सर्गुण निर्गुण पसारा। तुमहौ यमते छोड़ावनहारा।।

सतगुरू वचन

सुनु धर्मनि जो तव मन इच्छा। तौ तोहिं देउँ सार पद दिच्छा।।
दो नाव पर जो होय असवारा। गिरे दरिया में न उतरे पारा।।
तुम अब निज भवन चलि जाऊ। गुरू परीक्षा जाइ कराऊ।।
अब तुम रूपदास पै जाओ। अपना संसा दूर कराओ।।
जो गुरू तुम्हैं न कहैं सँदेशा। तब हम तुम्ह कहँ देवें उपदेशा।।

धर्मदास वचन
(ज्ञान प्रकाश पष्ठ 19)

हे साहेब एक आज्ञा चाहों। दया करो कछु प्रसाद लै आवों।।

सतगुरू वचन

हे धर्मदास मोहि इच्छा नाहीं। छुधा न व्यापै सहज रहाहीं।।
सत्यनाम है मोर अधारा। भक्ति भजन सतसंग सहारा।।

धर्मदास वचन

अहो साहब जो अन्न न खाहू। तो मोरे चितकर मिटै न दाहू।।

सतगुरू वचन

तुमरी इच्छा तो ल्यावहु भाई। अन्न खायें तब हम जाई।।
धर्मदास उठि हाट सिधाये। बतासा पेड़ा रूचि लै आये।।
धरेउ मोर आगे भाव ऊचेरा। विनय भाव कीन्ह बहुतेरा।।
विमल भाव किन्हा धर्मदासा। खाया प्रसाद पेड़ा पतासा।।
अहो साहु अब अज्ञा देहू। गुरू पहँ जाय मैं आशिष लेहू।।

धर्मदास वचन

करि दण्डवत धर्मनि कर जोरी। अब कब सुदिन होई मोरी।।
तेहि दिन सुदिन लेखे प्रभुराई। जेहि दिन तुव पुनः दरशन पाई।।
हम कहँ निज चेरा करि जानो। सत्य कहौं निश्चय करि मानो।।
आशिष दै प्रभु चले तुरन्ता। अबिगति लीला लखे को अन्ता।।
धर्मदास चितवहिं मगु ठाढो। उपजा प्रेम हृदय अति गाढो।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से कहा कि हे प्रभु! आपकी आज्ञा हो तो कुछ प्रसाद खाने को लाऊँ। परमात्मा ने कहा कि मुझे क्षुधा (भूख) नहीं लगती। मैं सतनाम

स्मरण के आधार रहता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि यदि आप मेरा अन्न नहीं खाओगे तो मेरी दाह यानि तड़फ समाप्त नहीं होगी। आप अवश्य कुछ भोग लगाओ। तब परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि जो तेरी इच्छा है, ले आ। धर्मदास दुकान से बतासे और पेड़े ले आया। धर्मदास का सच्चा भाव देखकर परमात्मा जी ने भोग लगाया। फिर कहा कि हे साहु (सेठ) धर्मदास! मुझे आज्ञा दे, मैं अपने गुरू जी के पास काशी में जाकर आशीर्वाद ले लुँ। धर्मदास जी ने कहा कि प्रभु! अब पुनः मेरे कब अच्छे दिन आऐंगे? मेरे वह सुदिन लेखे में होंगे जब आप पुनः मुझे मिलोगे। आप मुझे अपना दास मान लो, मैं विश्वास के साथ कह रहा हूँ। प्रभु कबीर जी धर्मदास को आशीर्वाद देकर चल पड़े। धर्मदास उस रास्ते को देखता रहा और हृदय में परमात्मा के प्रति विशेष प्रेम उमड़ रहा था।

''धर्मदास जी के गुरू रूपदास जी के निकट जाकर प्रश्न पूछना''

धर्मदास वचन-चौपाई

(ज्ञान प्रकाश पष्ठ 20)

धर्मदास चलि गए गुरू पाहाँ। रूपदास कर आश्रम जाहाँ।।
पहुँचे जाइ गुरू के धामा। होइ आधीन तब कीन्ह प्रणामा।।
तुम गुरूदेव शिष्य हम आहीं। परचे ज्ञान कहहु मोहि ताँही।।
जीव मुक्त कौन विधि होई। तन छूटे कहँ जाय समोई।।
(जिवकर मुक्ति कैसे होइ सांई। पारब्रह्म सो कहाँ रहाई?।।)
आदि ब्रह्म सो कहवां रहाई। घट महँ बोले कौन सो आही।।
ताकर नाम कहो हम ताँही। मेरे मन का संशय जाई।।
राम कष्ण से न्यारा सोई। जग करता प्रभु कहां समोई।।

गुरू रूपदास वचन

धर्मदास तुम भयो अजाना। को सिखयो तोहि अस ज्ञाना।।
सुमिरहु राम कष्ण भगवाना। ठाकुर सेवा कर बुधिवाना।।
हरदम जप लक्ष्मी नारायण। प्रतिमा पूजन मुक्ति परायन।।
मन वच सुमिरहु कुन्ज बिहारी। रहै वैकुण्ठ सोइ बनवारी।।
पुरूषोत्तम पुरि वेगि सिधाओ। जगन्नाथ परसो घर आओ।।
गया गोमती काशी थाना। तीरथ नहाय पुण्य परधाना।।
निराकार निर्गुण अविनाशी। ज्योति स्वरूप शून्य का वासी।।
ताहि पुरूषकर सुमिरहु नामा। तन छूटै पहुँचहु हरिधामा।।

धर्मदास वचन

(ज्ञान प्रकाश पष्ठ 21)

हो गुरूदेव पूँछो यक बाता। क्रोध करि कहहु जनि ताता।।
जीव रक्षक सो कहाँ रहाही। निराकार जिव भक्षक आही।।
लक्ष जीव नित खाय निरंजन। सवा लाख करै नित उत्पन्न।।

तीनों देव पड़ें मुख काला। सुर नर मुनि सब करै बिहाला।।
नर बपुराकी कौन चलावै। कौनी ठोर जीव बच पावै।।
तीन लोक वैकुण्ठ नशायी। अस्थिर घर मोहि देहु बतायी।।
पाप पुण्य भ्रम जाल पसारा। कर्म बन्ध भरमे संसारा।।
कीर्ति क्रत्रम की करें जुनि नहिं छूटै। सत्यनाम बिनु यम धरि लूटै।।

रूपदास वचन

अहो धर्मदास हम चक्रित होही। यह कछु समझि परै नहिं मोही।।
तीनि लोक के कर्ता जोहै। तेहि भाषत हौ जमरा सोहै।।
ब्रह्मा विष्णु महेश गोसाई। तुम्ह तेही कहहु काल धरि खाई।।
तीनि लोक में वैकुण्ठहिं श्रेष्ठा। सो सब तुम्ह कहेहु निकंष्ठा।।
तीरथ व्रत अरू पुण्य कमाई। तुम यमजाल ताहि ठहराई।।
और अधिक मैं कहा बताऊँ। जो जानों सो नहीं दुराऊँ।।
जिन्ह तोहि अस बुद्धि दिया भाई। तिनहीं कहँ तुम सेवहु जाई।।

धर्मदास वचन

धर्मदास विनवैं कर जोरी। चूक ढिठाई बक्सहु मोरी।।
हम तेही पद अब सेवैं जायी। जिन्ह यह अगम मोही बतायी।।
तुम्हहूँ गुरू वो सतगुरू मोरा। उन हमार यमफन्दा तोरा।।
तुमने ज्ञान देय अभक्ष्य छुड़ावा। उन मोहि अलख अगम्य लखावा।।
धर्मदास तब करी प्रणामा। बांधवगढ़ पहुँचे निज धामा।।
कैतिक दिन यहि भाँति गयऊ। धर्मदास मन चिन्ता भयऊ।।
केतिक दिवस यहि विधि बीता। धर्मदास चित बाढ़ी प्रीता।।
धर्मदास मन माही विचारा। प्रभु आवै करूं भण्डारा।।
यज्ञ मांही साधु जीमाऊँ। जिन्दा कहत हम साधन मांह आऊँ।।
इस विध मैं दर्शन पाऊँ। अपना सब संसा नसाऊँ।।
धर्मनि तीन दिवस धर्म यज्ञ आरंभा। अन्तिम दिन हुआ अचम्बा।।
जिन्दा रूप धरी प्रभु आये। कदम वंक्ष तलै आसन लाये।।
आसन अधर देह नहिं छाया। अविगति लीला देख हर्षाया।।

धर्मदास वचन

(ज्ञान प्रकाश पंष्ठ 23)

जोरि पाणि (हाथ) मैं पूछौं स्वामी। कहो कंपा करि अन्तरयामी।।
अहो साहेब नाम का आही। परचै नाम कहो मोहि पाहीं।।
गुरू अरू सतगुरू तुमको का कहहूँ। हे प्रभु कौन देश तुम रहहू।।

जिन्दा वचन

हो धर्मनि जो पूछेहु मोहीं। सुनहुँ सुरति धरि कहो मैं तोही।।
जिन्दा नाम अहै सुनु मोरा। जिन्दा भेष खोज किहँ तोरा।।

हम सतगुरू कर सेवक आहीं। सतगुरू संग हम सदा रहाहीं।।
सत्य पुरूष वह सतगुरू आहीं। सत्यलोक वह सदा रहाहीं।।
सकल जीव के रक्षक सोई। सतगुरू भक्ति काज जिव होई।।
सतगुरू सत्यकबीर सो आहीं। गुप्त प्रगट कोइ चीन्है नाहीं।।
सतगुरू आ जगत तन धारी। दासातन धरि शब्द पुकारी।।
काशी रहहिं परखि हम पावा। सत्यनाम उन मोहि दृढ़ावा।।
जम राजा का सब छल चीन्हा। निरखि परखिभै यम सो भीना।।
तीन लोक जो काल सतावै। ताको ही सब जग ध्यान लगावै।।
ब्रह्म देव जाकूँ बेद बखानै। सोई है काल कोइ मरम न जानै।।
तिन्ह के सुत आहि त्रिदेवा। सब जग करै उनकी सेवा।।
त्रिगुण जाल यह जग फन्दाना। जाने न अविचल पुरूष पुराना।।
जाकी ईह जग भक्ति कराई। अन्तकाल जिव को सो धरि खाई।।
सबै जीव सतपुरूषके आहीं। यम दै धोख फांसा ताहीं।।
प्रथमहि भये असुर यमराई। बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई।।
दूसरि कला काल पुनि धारा। धरि अवतार असुर सँघारा।।
जीवन बहु विधि कीन्ह पुकारा। रक्षा कारण बहु करै पुकारा।।
जिव जानै यह धनी हमारा। दे विश्वास पुनि धरै अवतारा।।
प्रभुता देखि कीन्ह विश्वासा। अन्तकाल पुनि करै निरासा।।

(ज्ञान प्रकाश पृष्ठ 24)

कालै भेष दयाल बनावा। दया दृढ़ाय पुनि घात करावा।।
द्वापर देखहु कृष्णकी रीती। धर्मनि परिखहु नीति अनीती।।
अर्जून कहँ तिन्ह दया दृढावा। दया दृढाय पुनि घात करावा।।
गीता पाठकै अर्थ बतलावा। पुनि पाछे बहु पाप लगावा।।
बन्धु घातकर दोष लगावा। पाण्डो कहँ बहु काल सतावा।।
भेजि हिमालय तेहि गलाये। छल अनेक कीन्ह यमराये।।
पतिव्रता वृन्दा व्रत टारा। ताके पाप पहने औतारा।।
बलिते सो छल कीन्ह बहुता। पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता।।
छल बुद्धि दीन्हे ताहिं पताला। कोई न लखै प्रंपची काला।।
बावन सरूप होय प्रथम देखाये। पृथिवी लीन्ह पुनि स्वस्ति कराये।।
स्वस्ति कराइ तबै प्रगटाना। दीर्घरूप देखि बलि भय माना।।
तीनि पग तीनौ पुर भयऊ। आधा पाँव नृप दान न दियऊ।।
देहु पुराय नृप आधा पाऊँ। तो नहिं तव पुण्य प्रभाव नसाऊँ।।
तेहि कारण पीठ जगह दीन्हा। अन्धा जीव छल प्रगट न चीन्हा।।
तब लै पीठ नपय तेहि दीन्हा। हरि ले ताहि पतालै कीन्हा।।

यह छल जीव देखि नहि चीन्हा । कहै मुक्ति हरि हमको कीन्हा।।
और हरिचन्द का सुन लेखा। धर्मदास चित करो विवेका।।
स्वर्ग के धोखे नरकही जाहीं। जीव अचेत यम छल चीन्है नाहीं।।
पाण्डव सम की क ष्ण कूँ प्यारे। सो ले नरक मेंह डारे।।

(ज्ञान प्रकाश प ष्ठ 25)

यती सती त्यागी भयऊ। सब कहँ काल बिगुचन लयऊ।।
सो वैकुंठ चाहत नर प्रानी। यह यम छल बिरले पहिचानी।।
जस जो कर्म करै संसारा। तस भुगतै चौरासी धारा।।
मानुष जन्म बड़े पुण्य होई। सो मानुष तन जात बिगोई।।
नाम विना नहिं छूटे कालू। बार बार यम नर्कहिं घालू।।
नरक निवारण नाम जो आही। सुर नर मुनि जानत कोइ नाहीं।।
ताते यम फिर फिर भटकावै। नाना योनिन में काल सतावै।।
विरलै सार शब्द पहिचाने। सतगुरू मिले सतनाम समाने।।

ऐसे परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को काल जाल से छुड़वाने के लिए कई झटके दिए। अब दीक्षा मंत्र देने का प्रकरण पढ़ें।

''धर्मदास जी को प्रथम नाम दीक्षा देना''

(ज्ञान प्रकाश प ष्ठ 30)

धर्मदास वचन

हे साहब मैं तब पग सिर धरऊँ। तुम्हते कछु दुविधा नहिं करऊँ।।
अब मोहि चिन्हि परी यमबाजी। तुम्हते भयउ मोरमन राजी।।
मोरे ह्रदय प्रीति अस आई। तुम्हते होइहै जिव मुक्ताई।।
तुमहीं सत्यकबीर हौ स्वामी। क पा करहु तुम अन्तर्यामी।।
हे प्रभु देहु प्रवाना मोही। यम त ण तोरि भजौ मैं तोही।।
मोरे नहीं अवर सो कामा। निसिदिन सुमिरों सद्गुरू नामा।।
पीतर पात्थर देव बहायी। सद्गुरू भक्ति करूँ चितलायी।।
अरपौं शीस सर्वस सब तोहीं। हे प्रभु यमते छोड़ावहु मोही।।
सन्तन्ह सेवाप्रीति सों करिहौं। वचन शिखापन निश्चय धरिहौं।।
जो तुम्ह कहो करब हम सोई। हे प्रभु दुतिया कबहुँ नहिं होई।।

जिन्दा वचन

सुनु धर्मनि अब तोहीं मुक्ताओ। निश्चय यमसों तोहि बचाओं।।
देइ परवाना हंस उबारों। जनम मरण दुख दारूण टारों।।
ले प्रवाना जो करै प्रतीती। जिन्दा कहै चले यम जीती।।
अब मोहि आज्ञा देहु धर्मदासा। हम गवनहि सद्गुरू के पासा।।
सद्गुरू संग आइब तव पाहीं। तब परवाना तोहि मिलाहीं।।

धर्मदास वचन

हे प्रभु अब तोहि जाने न देहौं। नहिं आवो तो मैं पछितैहौं।।
पछताइ पछताइ बहु दुख पैहौं। नहिं आवहुतो प्राण गवैहौं।।
हाथ के रतन खोइ कोइ डारै। सो मूरख निजकाज विगारै।।

विशेष :- कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 31 से 35 में भले ही मिलावट है, परंतु अन्य पष्ठों पर सच्चाई भी कमाल की है। जो आरती चौंका की सामग्री है, वह मिलावटी है। कुछ शब्दों का भी फेरबदल किया हुआ है। आप जी को सत्य ज्ञान इसी विषय में इसी पुस्तक के पष्ठ 385 पर पढ़ने को मिलेगा जिसका शीर्षक (Heading) है ''किस-किसको मिला परमात्मा''। कबीर सागर के ये पष्ठ नम्बर पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए बताए हैं ताकि आप कबीर सागर में देखकर मुझ दास (लेखक) द्वारा बताए ज्ञान को सत्य मानें।

विचार करें :- ज्ञान प्रकाश में धर्मदास जी का प्रकरण पष्ठ 35 के पश्चात् पष्ठ 50 से जुड़ता (Link होता) है। पष्ठ 36 से 49 तक सर्वानन्द का प्रकरण गलत लिखा है। उस समय तक तो सर्वानन्द से परमात्मा कबीर जी मिले भी नहीं थे।

विचार :- कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पष्ठ 31 से 35 तथा 50 से 51 पर परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी की परीक्षा लेने के उद्देश्य से कहा कि मैं तेरे को गुरूपद प्रदान करूँगा। आप उसको दीक्षा देना जो आपको सवा लाख रूपये गुरू दक्षिणा के चढ़ाए। परमेश्वर कबीर जी को पता था कि धर्मदास व्यापारी व्यक्ति है, कहीं नाम दीक्षा को व्यापार न बना ले। परंतु धर्मदास जी विवेकशील थे। भगवान प्राप्त करने के लिए समर्पित थे। धर्मदास जी ने कहा कि प्रभु! जिसके पास सवा लाख रूपये (वर्तमान के सवा करोड़ रूपये) नहीं होंगे, वह तो काल का आहार ही रहेगा अर्थात् उसकी मुक्ति नहीं हो सकेगी। हे परमेश्वर! कुछ थोड़े करो। करते-कराते अंत में मुफ्त दीक्षा देने का वचन ले लिया। फिर जिसकी जैसी श्रद्धा हो, वैसा दान अवश्य करे। इस प्रकरण में पष्ठ 51-53 पर कबीर पंथियों ने कुछ अपने मतलब की वाणी बनाकर लिखी हैं जो कहा है कि सवा सेर मिठाई आदि-आदि। यह भावार्थ पष्ठ 51-53 का है।

बोधसागर ५९३ (५३)

धर्मदास वचन

होप्रभु तुम्ह सतपुरुष कृपाला । अन्तर्यामी दीन दयाला ॥
मोहि निश्चय तुवपद विश्वासा । यह माया स्वप्नेकी आशा ॥
जिन्ह जिन्ह माया नेह बढाया । तिन्ह २ निज २ जन्म गँवाया ॥
सवालाख तुम मोहि बतायो । सवा करोड प्रभु आरति लायो ॥
औ जन सम्पति मोर घरआही । अरपौं सभै संतन जो चाही ॥
तुम प्रभु निःइच्छा नहिं चाहो । धन्य समरथ मर्याद दिढाहो ॥
सो जिव पाँवर नरकै जायी । शक्ति अक्षत जो राखु छिपायी ॥
हो प्रभु कछु विनती अनुसारूं । बक्सहु ढिठाई तो वचन उचारूं ॥
सवाशेर भाषहु मिष्टाना । औरौ वस्तु सवासो पाना ॥
हो प्रभु कोई जिव भिक्षुक होई । भीख माँगि तन पालै सोई ॥
सो जिव शब्द तोहार न जानै । कहहु केहि विधि लोक पयानै ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि जौ अस जिव होई । गुरु निज ओर करै पुनि सोई ॥
इतने विनु जिव रोकि न राखा । छोरी बन्ध नाम तिहि भाखा ॥

धर्मदास वचन

धन्य धन्य तुम दीन दयाला । दया सिन्धु दुखहरण कृपाला ॥
छन्द–तुम धन्य सद्गुरु जीव रक्षक कालमर्दन नाम हौ ॥
शुभ पन्थ भक्ति दिढायऊ प्रभु अमर सुखके धाम हौ ॥
मैं सुदिन आपन तबहिं जान्यो प्रथमपद जब देखेऊं ॥
अब भयेऊँ सुखी निशङ्क यमते सुफल जीवन लेखेऊं ॥
दोहा–विनती एक करौं प्रभु, कृपा करहु जगदीश ॥
दो सेवक जो तुम मिले, सो तो कहुँ नहिं दीश ॥

सतगुरु वचन

सोरठा–धर्मदास लेहु जानि, हम वो एकै थान है ॥
कहौ शब्द परमान, वो हम में उन माँहि हम ॥

(५४) ५९४ ज्ञानप्रकाश

धर्मदास वचन–चौपाई

हो प्रभु उन मोहिं बड़ सुख दीन्हा । तुम भये गुप्त राखि उन्ह लीन्हा ॥
विरह सिन्धु बूड़त उन्ह राखा । उन्ह दरशनकी है अभिलाखा ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मनि हममाँहि उन्ह देखो । उन्हमोहिंद्वितिय भाव जनिलेखो ॥
स्वामा सेवक एकै प्र ना । परिचै सुरति नाहिं विलगाना ॥
हो धर्मनि तुमहूँ हम माहीं । मोहिं तोहिं अब अन्तर नाहीं ॥
जो सेवक गुरु सुरति खमीरा । जीवनमुक्ति सो आहि कबीरा ॥
जेहि सेवक गुरुहीं परशंसा । कहै कबीर सो निर्मल हंसा ॥
सेवक कहँ अस चाहिये भाई । गुरुहिं रिझावे आपु गँवाई ॥
जिमि नटकला मगन होय खेला । तिमि गुरुभक्ति मगन होय चेला ॥
निजतनमन सुख स्वादगँवावै । मन वच कर्म गुरु सेवा लावै ॥
निशिवासर सेवा चित देई । गुरुहिं रिझाय परम पद लेई ॥
जगपहँ सेवावश भगवाना । धर्मदास यह वचन प्रमाना ॥
सेवक सुरति प्रीति वश भाई । शून्य महा वस्ती होय जाई ॥
तैसी प्रीति सुरति शुचि सेवा । किमि प्रसन्न नहिं होंहिं गुरुदेवा ॥
धर्मनि सो सेवक मोहिं भावै । जो गुरुसाधु सेवा चित लावै ॥
सेवा करि नहिं धरै हंकारा । रहै अधीन दास सोइ प्यारा ॥
हा धर्मनि तुम्ह अससिख अहहू । हम तुम्ह एकसाँच हियगहहू ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास पद गहे अनुरागा । होप्रभु तुम्ह सोहि कीन्ह सुभागा ॥
मैं पामर गुणहीन कुचाली । तुम्ह दीन्हेउ मोहि पन्थमराली ॥
हे प्रभु नहि रसना प्रभुताई । अमित रसन गुण वरणि न हिजाई ॥
महिमा अमित अहै हो स्वामी । केहि विधि वर्णौं अन्तर्यामी ॥
जेहि सेवक पर होय तव दाया । ताके हृदय बुद्धि अस आया ॥
पूरण भाग करै सेवकाई । धन्य सेवक जिन्ह गुरुहिं रिझाई ॥
मैं सब विधि अयोग्य अविचारी । मोहि अधमहिं तुम लीन्ह उबारी ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 53 और 54 की है। पष्ठ 53-54 दोनों का भावार्थ इस प्रकार है :-

परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी को पहले कई बार अन्य रूप में मिले थे। धर्मदास जी की अरूचि देखकर अंतर्ध्यान हो जाते थे। बीच में धर्मदास जी को अन्य रूप में मिले थे। तब धर्मदास जी ने कहा था कि मुझे एक संत मिले थे। वे भी आप वाला ज्ञान ही सुनाते थे। उन्होंने मेरे को बहुत सुख दिया। जब आप मुझे छोड़कर चले जाते थे, मैं रोता रहता था। उस संत ने मुझे सांत्वना दी तथा अमर पुरूष तथा अमर लोक की कथा सुनाई। तब परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! हम दोनों ही उस काशी वाले कबीर जुलाहे के सेवक हैं। हम एक ही गुरू के शिष्य हैं। इसलिए हम वही ज्ञान प्रचार करते हैं जो हमारे गुरू कबीर जी ने हमें बताया है। आपने बताया कि आप तथा वह एक गुरू के शिष्य हैं। आपका ऐसा ज्ञान है तो आप जी के गुरु जी का ज्ञान कितना उत्तम होगा। मैं आपके सतगुरू जी के दर्शन करना चाहता हूँ। परमेश्वर जी ने पष्ठ 54 पर यह भी बताया है कि शिष्य की आस्था गुरू के प्रति कैसी होनी चाहिए?

बोधसागर 495 (५५)

अब यह दया करो सुखदाई । दोउ सेवक के दरशन पाई ॥
बड़ इच्छा उन्ह दरशन केरा । हो प्रभु हम आहीं तुव चेरा ॥

सतगुरु वचन

सुनु धर्म निदरशन तिन्ह पैहौ । लीला देखि थकित होइ जैहौ॥
आप तीनरूप प्रकट दिखावा । एक तीन होय एक समावा ॥
धरमदास अचरज ह्वै रहेऊ । समिता होय युगल पद गहेऊ॥
लीला देखि चकित भये दासा ।पुनि विनती एककीन्ह प्रगासा॥

धर्मदास वचन

हे प्रभु अविगति कला तुम्हारी । हम हैं कीट जीव व्यभिचारी॥
सत्यलोक तुम्ह वरणि सुनावा । सोभा पुरुष हंसन सतभावा ॥
कैसन देश राज वह आही । चित इच्छा प्रभु देखन ताही ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह निरघिन काया ।यहितन पुरुष दरश किमि पाया॥
तन ठीका जब पुरि है आई । सत्यलोक तब देखहु जाई ॥

धर्मदास वचन

धर्मदास गहि चरण निहोरा । हे प्रभु तृषा मिटावहु मोरा ॥
चरण टेकि प्रभु विनवौं तोहीं । पुरुष दरश विनु कल नहिं मोहीं॥

कबीर साहिबका फिर अन्तर्धान हो जाना और धर्मदास
साहबका विकल होना

गुप्त भये प्रभु अविगति ताता । धर्मदास मुख आवै न बाता ॥

धर्मदासविलाप

मैं मतिहीनकुमति मुहिंलागा ।मोहिंसमको जग आहि अभागा॥
मैं मूरख प्रतीति न कीन्हा । अस साहेब कहँ मैं नहिं चीन्हा॥
अब कौने विधि दरशन पाऊँ । दरशन विनु मैं प्राण गवाऊँ ॥
चरणोदक बिनु करौं न ग्रासा । तजौं शरीर कहैं धर्मदासा ॥
दिवस सात लगि अन्न न खावा । भजन अखण्ड नाम लौलावा॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 55 की है। प्रभु कबीर जी धर्मदास के समक्ष तीनों रूप में प्रकट हुए तथा कहा कि यह तीनों रूप मेरे ही हैं। काशी वाले कबीर के रूप में दोनों समा गए। एक कबीर रूप बन गए। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से सत्यलोक तथा परमात्मा को देखने की विनय की तो परमेश्वर जी ने कहा कि यह मानव शरीर विकारों से भरा है। इसमें कैसे परमात्मा देखा जा सकता है? आप दीक्षा लो, भक्ति करो। जब शरीर समाप्त होने का ठीक का (निर्धारित) समय आएगा, तब सत्यलोक में परमात्मा को जाकर देखना। धर्मदास जी अधिक हठ करने लगा तो परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी ने सात दिन तक अन्न नहीं खाया तथा प्रथम मंत्र का निरंतर जाप किया।

(५६) 496 ज्ञानप्रकाश

कबीर साहिबका पांचवीं बार फिर धर्मदासजीको दर्शन देना

सतयें दिन प्रभु प्रकट दिखाये । धर्मदास पद गहि अकुलाये ॥
धरहिं न श्वामहि निपट अधीरा । परे चरण महँ क्षीण शरीरा ॥
कर गहि साहब तबहिं उठावा । शीश हाथ दै अंक मिलावा ॥
धर्मदास चरणोदक लीन्हा । चरण पखारि आचमन कीन्हा ॥

सतगुरु वचन

हो धर्मदास प्रमाद कछु पाओ । करि प्रसाद तव मोपहँ आओ ॥
छन्द-चित सकुचि धर्मनि विछुरन गुनि सर्वत्र सब हौरा किये ॥
कछु जाइ अलप प्रमाद ततक्षण तृण जल अंचवन लिये ॥
पुनि वेगि समरथ निकट आये सकुचि चित ठाढे भये ॥
अनुशासनो कहु धर्मनि कहा चित चिन्ता भये ॥

धर्मदास वचन

दोहा-धर्मदास कह नाइ शिर, सुनु प्रभु अगम अपार ॥
सात दिवस कहवाँ रहे, कौन दिशा पगु ढार ॥

सतगुरु वचन

सोरठा-धर्मनि सुनु चित लाय, जौन दिशा हम गौन किये ।
कालिंजर पहुँचे जाय, तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेउँ ॥

धर्मदास वचन-चौपाई

हो साहेब के जीव परमोधा । कौन शब्द सो आन समोधा ॥
आरति चौका नरियर मोरचो । कै जीवन यमते तृणतोरचो ॥

सतगुरु वचन

धर्मनि सुनहु ताहि सहिदाना । तहाँके जीवहिं नहिं दीन्ह प्रवाना ॥
आरति चौका तहाँ न कीना । नहीं तहाँ नरियर मोरु प्रवीना ॥
वचन बंध जीवनकहँ कियेऊँ । साखी शब्द रमैनी दियेऊँ ॥
कहि आयेऊँ तहँ वचन ठिकाना । धर्मदास सो न लियेहु प्रवाना ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 56 की है। वर्णन है कि धर्मदास जी ने सात दिन तक कुछ नहीं खाया-पीया। सातवें दिन प्रभु कबीर जी धर्मदास जी के पास प्रकट हुए। धर्मदास जी ने विलाप करते हुए परमेश्वर के चरण पकड़े और चरणों में गिर गए क्योंकि शरीर दुर्बल हो गया था। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को हाथ पकड़कर अपने चरणों से उठाया और सिर पर हाथ रखा। अपने शरीर से मिलाकर धर्मदास जी को प्यार दिया। धर्मदास जी ने चरणोदक (चरण धोकर चरणामृत बनाकर) पीया। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी से कहा कि तुम कुछ प्रसाद (भोजन) खाओ। फिर मेरे पास आओ। धर्मदास जी शीघ्र गए और शीघ्र-शीघ्र कुछ अल्प आहार करके आचमन करके शीघ्र परमेश्वर जी के पास आ गए। भय था कि कहीं फिर न चले जाएं। धर्मदास जी ने पूछा कि हे परवरदिगार! आप इतने दिन कहाँ रहे? प्रभु ने बताया कि मैं कालिंजर देश में गया था। वहाँ कुछ भक्तों को प्रथम दीक्षा दी। वहाँ मैंने कोई आरती चौंका नहीं किया, न ही नारियल फोड़ा। वचन से नाम देकर अपना किया है। वहाँ साखी तथा शब्द

व रमैणी करके उनको पवित्र किया है। उनको सत्यनाम की प्रेरणा की थी, परंतु उन्होंने समझा नहीं और सत्यनाम में रूचि नहीं दिखाई। उन्होंने दूसरा प्रवाना (नाम दीक्षा) नहीं लिया।

''धर्मदास को सत्यलोक तथा सत्यपुरूष के दर्शन कराना''

बोधसागर 497 (५७)

जम्बूद्वीप कलिके कडिहारा। धर्मनि बाहु जीव होयँ पारा॥
धर्मनि बाँह जिय पहुँचे आयी। देहु दान जेहि आरति लायी॥
शब्द मानि पुनि मस्तक नाया। पुरुष दरशके बात जनाया॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु चिन्तागण करु मोरा। पुरुष दरश देउ करों निहोरा॥

सतगुरु वचन

धर्मदास यह हठ का करहू। मानहुँ शब्द शीश पर धरहू॥
हमरे गहे पुरुष पहँ जैहा। विना गहे उहां जान न पैहा॥
हमसों पुरुष सो ऐसी अहई। जल तरंगजल अन्तर रहई॥
जिमिरवि औ रवि तेजप्रकाशा। तिमिमाहिंपुरुषअन्तरधर्मदासा॥
हमरी सुरति गहो चितलायी। तबहीं पुरुष पद दर्शन पायी॥
शिष्य हृदय प्रतीति अस आनै। गुरु औ पुरुष भिन्न नहिं जानै॥
जौ लौं चित्त असरीति न आवै। तौ लौं जिवनहिं लोकसिधावै॥
धर्मदास चित बहुत सकाने। चरण टेकि बहु विनती ठाने॥

धर्मदास वचन

हो प्रभु सत्य कहौं तोहिपाहीं। तुम्हते कछु दुचिताई नाहीं॥
मोरे तुमहिं पुरुष हौ स्वामी। यमते छोड़ावहु अन्तर्यामी॥
हो प्रभु बरणेउँ लोककी शोभा। ताते आहि मारममलोभा॥
तव लीला बहुतै हम देखा। पुरुष दरशविनु रहै हिय रेखा॥
जौ किंकर पर होहु दयाला। तौ छिन महँहाय गत उरसाला॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जौ ऐसो चित कीन्हा। तनुतजि चलौ लोकप्रबीना॥
राखेउ तन गौने लै हंसा। तहँ पहुँचे जहँ काले संसा॥
लवन एक महँ पहुँचे जाई। अविगति लीला लखे को भाई॥
शोभालोक देखि सुख माना। उदित असंख्य शशिऔ भाना॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 57 की है। धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मैं आपके निहोरे निकालते हुए यानि गिड़गिड़ाते हुए कह रहा हूँ कि आप एक बार मेरे को सत्यलोक तथा उसमें रहने वाले समर्थ परमात्मा के दर्शन करा दो। आपने सत्यलोक की शोभा का जो वर्णन किया है, उसको देखने को मेरा मन लुभा रहा है। आपकी लीला (चमत्कार) मैंने बहुत देखे हैं, परंतु परमात्मा को देखे बिना मेरे मन में शंका बनी रहेगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप यह जिद क्यों कर रहे हो? आप मेरी बातों पर विश्वास करो, मेरे बताए भक्ति कर्म को करके शरीर त्यागकर वहाँ चले जाओगे, फिर लोक तथा लोक नायक दोनों को देखना। मेरे तथा परमात्मा में कोई

अंतर नहीं है जैसे जल तथा तरंग में भिन्नता नहीं होती। यह नियम है कि परमात्मा और गुरू को एक मानना चाहिए, तब सफलता मिलती है। यह वचन सुनकर भी धर्मदास जी ने फिर वही रट लगाई तो परमेश्वर जी धर्मदास जी की आत्मा को सत्यलोक में ले गए। एक पल में सत्यलोक में पहुँच गए। सत्यलोक की शोभा देखकर धर्मदास आनन्दित हुआ। वहाँ पर मानों असँख्यों सूरज तथा चाँद उदय हुए हों, इतना प्रकाश सत्यलोक की भूमि का है। शेष ज्ञान प्रकाश के पष्ठ 58 पर आगे है।

''कबीर जी ही सतपुरूष हैं''

(५८) ५९४ ज्ञानप्रकाश

जितदेखिये जगमगझलकाहीं । देखत छकित भये हियमाहीं ॥
द्वारपाल हंस जो रहिया । ता महँ एकहंसहिं असकहिया॥
एहि संसहिं तुम्हजाहु लिवाई । पुरुष दरश दे आनहुँ भाई ॥
चले लिवाय पुरुष पहँ जबहीं । झझकि हंस बहु आये तबहीं ॥
करत कोलाहल मंगल चारा । शोभा अद्भुत अंग अपारा ॥
हंसन शोभा कहाँ बताऊँ ।कछुक प्रभाव सो वरणिसुनाऊँ ॥
रतनमाल ग्रिव शोभित हंसा ।और मणिमालकिमिकरौंप्रशंसा॥
जगमग देह हंसन करहीं । अमर चीर बहु शोभा धरहीं ॥
उडुराख चिकुर शोभाछबि आछे। रविकाकरतार रोम छबिकाछे॥
हंसन्हभालशोभाकिमि कहऊँ । षोडस चन्द्रभाल छबि लहऊँ ॥
हंस कान्ति प्रतिरोम प्रकाशा । हीरामणी उदित रोमासा ॥
कोटिकविधुहंसन छबिमोहा । देह प्राण शोभा अमी गिरोहा॥
षोडश रवि हँसन छबि मोहा । देह प्राण शुभ अमृत सोहा ॥
कञ्चनकलशजडितमणि लोना । रतन थार आरतिमहिसोना ॥
हंस मगन शब्द मुख उचारा । क्रीडाविनोद रतन मणियारा ॥
सुरति हंस कहँ आगे लीन्हा । नृत करत चले हंस प्रवीणा ॥
सुरति हंस अघानि अघाने । पुरुष सकल देखत हरषाने ॥
सिंघासन छबि देखत मनमोहा । अद्भुत अमित कलातन सोहा॥
पुरुष राम एक कला अनन्ता । वरणत कोउ न पावै अन्ता ॥
एक रोम रवि शशि कोटीशा । नखकोटिन्हविधुमलिनरवीशा॥
पुरुष प्रकाश सतलोक अँजोरा । तहां न पहुँच निरञ्जन चोरा ॥
पुरुष कबीर देखा एक भाई । धर्मदास पुनि रहे लजाई ॥
पुरुष दरश करि आयेउ तहँवा । प्रथम कबीर बैठे रहै जहँवा॥
इहां कबीर बैठे पुनि देखा । कला पुरुष तन अचरजपेखा॥
का अजगुत कीन्हेउँ भाई । उहां मोहिं प्रतीति न आई ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 58 की है। सत्यलोक में जहाँ तक दष्टि गई, धर्मदास जी ने देखा कि प्रकाश झलक रहा था। परमेश्वर (सत्य पुरुष) के दरबार के द्वार पर एक द्वारपाल (सन्तरी) खड़ा था। उसको जिन्दा रूप में नीचे से गए प्रभु ने कहा कि यह भक्त परमेश्वर जी के दर्शन करने मतलोक से आया

है, इसको प्रभु के दर्शन कराओ। जिन्दा वेशधारी परमेश्वर बाहर ही बैठ गए थे। द्वारपाल ने एक अन्य हंस (सत्यलोक में भक्त को हंस तथा भक्तमति को हंसनी कहते हैं) से कहा कि आप इस भक्त को सत्यपुरूष के दर्शन कराओ। जब वह हंस धर्मदास जी को दर्शन के लिए लेकर चला तो बहुत सारे हंस आ गए और धर्मदास जी का स्वागत करते हुए नाचते हुए आगे-आगे चले। उनका शरीर विशाल था, गले में रत्नों की माला थी। उनके नाक, मुख, गर्दन की शोभा अनोखी थी। सोलह सूर्यों जितना शरीर का प्रकाश था। उनके रोम (शरीर के बाल) की चमक रत्न (हीरे) जितनी थी। उनका शरीर अमर (अविनाशी) है। सब मिलकर पुरूष दरबार में गए। सत्यपुरूष जी सिंहासन पर बैठे थे। उनके एक रोम का प्रकाश करोड़ चन्द्रमाओं तथा सूर्यों जितना था। धर्मदास जी ने देखा कि ये तो वही चेहरा है जो नीचे जिन्दा बाबा के वेश में मिले थे तथा मुझे यहाँ लेकर आए हैं। धर्मदास जी बहुत लज्जित हुए और विचार करने लगे कि नीचे मुझे विश्वास नहीं हुआ कि यह जिन्दा ही परमेश्वर हैं। दर्शन करवाकर धर्मदास जी को वहीं लाया गया जहाँ जिन्दा रूप में प्रभु दरबार के बाहर बैठे छोड़कर अन्दर गया था।

कबीर पुरुष यक उहाँ छिपाये। सत्य पुरुष जग दास कहाये॥
धाये चरण गहु अति सकुचायी। हे प्रभु इम परिचै अब पायी॥
यह शोभा कस उहाँ छिपावा। कस नहिं जगमहँ प्रगट दिखावा॥

सतगुरु वचन

धर्मनि जोवहि छबि जग जाऊ। तो होंय विकल निरञ्जन राऊ॥
सब जीव तब मोहि लौलावै। उजरै भौ सब लोकहि आवै॥
ताते गुप्त राखो जग भाऊ। शब्द सँदेश जीवन समुझाऊ॥
शब्दपरखि चीन्हैं माहिं कोई। गहि प्रतीति घर पहुंचे सोई॥
कहै कबीर सुनहुँ सुकृति हंसा। दरश पुरुष मिटेहु चित मंसा॥
अब तुम्ह वेगि चला संसारा। जिवहि चेतावहु करहु पुकारा॥

धर्मदास वचन

हो साहेब अब उहाँ न जाही। यह सुख घर तजि कहां झुराही॥
वहि यम देश अपरबल काला। नहिं जानौंधौं मति होय वेहाला॥

सतगुरु वचन

धर्मदास तोहि चिन्ता नाहीं। तुमरे सङ्ग हम सदा रहाहीं॥
तुम देखो सत्य लोक प्रभाऊ। हंसन कहो संदेश सुनाऊ॥

धर्मदास वचन

मानेउँ शब्द शीश पर राखा। लैचलु अंश सुकृत तब भाषा॥
छिन एक महँ जगहीं चलि आये। पैठि देह धर्मनि अकुलाये॥
परेउ चरण गहि साहब केरा। करि बिनती पदगहि सुख हेरा॥

छन्द-धन्य साहेब सतगुरू तुम सत्य पुरुष अनादि हो॥
तुव अमितलीला कोलखै प्रभु सकल लोकके तुम आदिहो॥
त्रिदेव मुनि सनकादि नारद कोईना लखि तुम पावई॥
तेहि हंस भाग सराहिये जो नाम तुव लौ लावई॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पृष्ठ 59 की है। धर्मदास जी ने कहा कि कबीर तथा सत्य पुरूष एक ही है। यही सत्यपुरूष जगत में दास (कबीर दास) कहलाता है। यह इनकी महानता है। धर्मदास जी ने दौड़कर परमेश्वर जी के चरण पकड़कर कहा कि हे प्रभु! अब आपका यथार्थ परिचय मिला है। आप स्वयं ही परमेश्वर हैं। हे परमेश्वर! आपने अपनी यह छवि वहाँ (पृथ्वी पर) किसलिए छुपा रखी है? वहाँ पर प्रकट क्यों नहीं की? परमेश्वर कबीर जी ने उत्तर दिया कि मेरी शोभा नीचे देखकर काल निरंजन मुझे पहचानकर व्याकुल हो जाएगा। सर्व प्राणी मेरे पीछे पड़ जाऐंगे। मैंने काल से वचन किया है कि मैं अपना ज्ञान देकर सत्य भक्ति का धनी बनाकर जीवों को सत्यलोक में ले जाऊंगा। यह वचन काल निरंजन ने विनय करके लिया था। वास्तविकता यह है कि जब तक जीव को काल लोक के कष्ट का और सत्यलोक के सुख का ज्ञान नहीं होगा तो वह यदि सत्यलोक चला भी गया तो फिर वापिस आ जाएगा। पहले सब सत्यलोक में ही तो थे। वहीं से नीचे गिरे हैं। इसलिए तत्त्वज्ञान कराना तथा सत्यभक्ति से धनी बनाकर

सत्यलोक ले जाना उचित है। मैं इसीलिए नीचे पथ्वी पर गुप्त रहकर सर्व कार्य करता हूँ। धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मुझे यहीं रहने दो। मैं अब उस गन्दे लोक में नहीं जाऊँगा। परमेश्वर जी ने कहा कि आप चिन्ता न करो, मैं सदा तेरे साथ रहूँगा। आपने जो सत्य लोक तथा परमात्मा को आँखों देखा है, नीचे के भक्तों को बताना, उनका विश्वास बढ़ाना।

धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की आज्ञा मानी और उनके साथ नीचे आए। शरीर में प्रवेश करके उठे तथा यहाँ के लोक को देखकर व्याकुल हो गए। इस पष्ठ के प्रकरण में कुछ प्रकरण छोड़ा है, कुछ जोड़ा है। यह मिलावट करने वालों की करतूत है। फिर भी सच्चाई पर्याप्त है। यह तो पाठकों को विश्वास दिलाने के लिए फोटोकॉपी लगाई है। वास्तविक ज्ञान आप जी पढ़ेंगे इसी पुस्तक के पष्ठ 385 पर ''किस-किसको मिला परमात्मा'' में।

(६०) ज्ञानप्रकाश

दोहा-निर्गुण सर्गुण आदिहौं, अविगति अगम अथाह ॥
गुप्त भये जग महँ फिरो, को तुव पावै थाह ॥

सोरठा-मोहि परचै तुम दीन्ह, ताते चीन्हेउँ तोहि प्रभु ॥
भये चरण लौलीन, दुचिताई सकलो गयी ॥

चौपाई

कीट ते भृंङ्ग मोहि प्रभुकीन्हा । निश्चलरंग आपनो दीन्हा ॥
जिमिनिलते जग होय फुलेला । तिमिमोहिं भयोसमर्थपदमेला॥
पारस परसि लोहा जिमिहेमा । तिमि मोहिं भयउनाथव्रतनेमा॥
अगर परसि जिमिभयोसुवासा । जल प्रसंग बसन मल नासा ॥
सनपट शुद्ध सूत कहै न कोई । प्रभुगुण लखित शिरनावै लोई ॥
हे प्रभु तिमिमाहिं भयउ अनंदा। जिमिचकोरहरहितलखिचंदा ॥
जनम मरण भौ संशय नाशी । तवपद सुखनिधान सुखराशी ॥
हे प्रभु अस शिख दीजै मोहीं । एकौ पल न विसारौं तोहीं ॥

सतगुरु वचन

जस मनसा तस आगे आवै । कहै कबीर ईजा नहिं पावै ॥
धर्मनि गुरुहिं दोष देइ प्रानी । आपु करहिंनर आपनहानी ॥
जो गुरु वचन कहै चित लाई । व्यापै नाहिं ताहि दुचिताई ॥
जो गुरुचरन शिष्य संयोगा । उपजै ज्ञान न नासै भ्रम रोगा ॥
जिमि सौदागर साहु मिलाहीं । पूँजि जोग बहु लाभ बढ़ाहीं ॥
सतगुरु साहु सन्त सौदागर । सजीशब्द गुरुयोगा बहुनागर॥
जो गुरु शब्द कहै विश्वासा । गुरु पूरा पुरवहिं आसा ॥
विनु विश्वास पावै दुखचेला । गहै न निश्चय हृदय गुरुमेला॥
सुत नारी तन मन धन जाई । तन जोरहै न प्रीति दृढाई ॥
शूरा हंस सोई कहलावै । अग्नि रहै तो शोक न लावै ॥
जो विचलै तौ यम धरि खायी । अड़ा रहै तौ निज घर जायी ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 60 की है।

सत्यलोक तथा परमेश्वर को सत्यलोक में पहचानकर धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी का धन्यवाद किया। कहा है कि जैसे पारस पत्थर से स्पर्श होने के पश्चात् लोहा स्वर्ण बन जाता है। ऐसे मेरा जीवन सत्य भक्ति से बहुमूल्य हो गया है। मेरा जन्म-मरण समाप्त हो जाएगा। जैसे भंग, कीट को अपने समान बना लेता है, ऐसे आप जी ने मेरे को अपना शिष्य बनाया है। गुरू का शब्द (मन्त्र) विश्वास के साथ गहे (ग्रहण) करे तो उस शिष्य की मनोकामना गुरू पूरी करता है। सतगुरू भक्ति धन का शाह (सेठ) यानि धनी होता है। सेठ से धन लेकर जो अपना व्यापार बढ़ाता है तो धनी हो जाता है यानि शिष्य गुरू से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहकर भक्ति करता है तो मोक्ष प्राप्त कर लेता है। कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पंष्ठ 61 में गुरू की महिमा बताई है। पढ़ने से आसानी से समझ आती है। अधिक सरलार्थ की आवश्यकता नहीं है।

(६२) ज्ञानप्रकाश

सोइ हम सोइ तुम सोइ अनन्ता । कहैं कबीर गुरु पारस सन्ता ॥
सन्त चेतु चित सतगुरु ध्याना । कहैं कबीर सद्गुरु परमाना ॥
सतगुरु शब्द ज्ञान गुरु पुंजा । कहैं कबीर लखु मोहनकुंजा ॥
कुंज मोहि मोहन ठहरावै । कहैं कबीर सोइ सन्त कहावै ॥
सन्त कहाय जो सोधै आपू । कहैं कबीर तेहि पुण्य न पापू ॥
पुण्य पाप नहिं मान गुमाना । कहैं कबीर सो लोक समाना ॥
जिन्दा मुरदा चीन्हैं जीवा । कहैं कबीर सतगुरु निज पीवा ॥
मुरदा जग जिन्दा सतनामा । कहैं कबीर सतगुरु निजधामा ॥
यक जग जीतै यक जग हारै । कहैं कबीर गुरु काज सवाँरै ॥

धर्मदास वचन

कौन जग जीतै कौन जग हारै । कहौ कौन विधि काज सवाँरै ॥

सतगुरु वचन

इन्द्रिन जीते साधुन सो हारै । कहैं कबीर सतगुरु निस्तारै ॥
सतगुरु सो सत्यनाम लखावै । सतपुर लै हंसन पहुँचावै ॥
सत्यनाम सतगुरु तत भाखा । शब्द ग्रन्थ कथि गुप्तहिं राखा ॥
सत्य शब्द गुरु गम पहिचाना । विनु जिभ्या करु अमृत पाना ॥
सत्य सुरति अम्मर सुख चीरा । अमी अंकका साजहु वीरा ॥
सोहं ओहं जावन वीरू । धर्मदास सो कहै कबीरू ॥
धरिहौ गोय कहिहौ जिन काहीं । नाद सुशील लखैहो ताहीं ॥
प्रथमहि नाद विन्द तब कीन्हा । मुक्ति पन्थ सो नाद गहि चीन्हा ॥
नाद सो शब्द पुरुष मुख बानी । गुरुमुख शब्द सो नाद बखानी ॥
पुरुष नाद सुत षोडश अहई । नाद पुत्र शिष्य शब्द जो लहई ॥
शब्द प्रतीति गहै जो हंसा । शब्द चालु जेहिसे मम बंशा ॥
शब्द चाल नाद दृढ़ गहई । यम शिर पगु देइ सो निस्तरई ॥
सुमिरण दया सेवा चित धरई । सत्यनाम गहि हंसा तरई ॥

भावार्थ :- यह फोटोकॉपी कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' के पष्ठ 62 की है। इसमें सत्यनाम भी लिखा है जो धर्मदास को परमेश्वर कबीर जी ने जाप के लिए दिया था। यह अपभ्रंश किया है :-

सोहं ओहं जानव बीरू। धर्मदास से कहा कबीरू।।
सत्य शब्द (नाम) गुरू गम पहिचाना। बिन जिभ्या करू अमंत पाना।।

विवेचन :- आप जी ने कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' की फोटोकॉपी पढ़ी। ये प्रमाण के लिए लगाई हैं। भले ही इनमें कुछ मिलावट है, परंतु कुछ सच्चाई भी बची है। इस पष्ठ पर यह भी स्पष्ट किया है कि नाद पुत्र दो प्रकार के हैं। जैसे सतलोक में सतपुरूष ने सोलह वचनों से सोलह सुत उत्पन्न किए थे। वे नाद पुत्र हैं तथा धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ली थी तो धर्मदास जी भी नाद पुत्र हुए। इसी प्रकार जो गुरू से दीक्षा

लेता है, वह नाद पुत्र होता है। उसे वचन पुत्र भी कहते हैं। अब आप जी को आत्मा (धर्मदास जी) तथा परमात्मा (कबीर बन्दी छोड़ जी) का यथार्थ संवाद अर्थात् धर्मदास जी को शरण में लेने का यथार्थ प्रकरण सुनाता हूँ।

''किस-किसको मिला परमात्मा''

कलयुग में परमेश्वर जिन-जिन महान आत्माओं को मिले, उनको तत्त्वज्ञान बताया, उनका मैं संक्षिप्त वर्णन करता हूँ:-

''सन्त धर्मदास जी से प्रथम बार परमेश्वर कबीर जी का साक्षात्कार''

1. श्री धर्मदास जी बनिया जाति से थे जो बाँधवगढ़ (मध्य प्रदेश) के रहने वाले बहुत धनी व्यक्ति थे। उनको भक्ति की प्रेरणा बचपन से ही थी। जिस कारण से एक रुपदास नाम के वैष्णव सन्त को गुरु धारण कर रखा था। हिन्दु धर्म में जन्म होने के कारण सन्त रुपदास जी श्री धर्मदास जी को राम कष्ण, विष्णु तथा शंकर जी की भक्ति करने को कहते थे। एकादशी का व्रत, तीर्थों पर भ्रमण करना, श्राद्ध कर्म, पिण्डोदक क्रिया सब करने की राय दे रखी थी। गुरु रुपदास जी द्वारा बताई सर्व साधना श्री धर्मदास जी पूरी आस्था के साथ किया करते थे। गुरु रुपदास जी की आज्ञा लेकर धर्मदास जी मथुरा नगरी में तीर्थ-दर्शन तथा स्नान करने तथा गिरीराज (गोवर्धन) पर्वत की परिक्रमा करने के लिए गए थे। परम अक्षर ब्रह्म स्वयं मथुरा में प्रकट हुए। एक जिन्दा महात्मा की वेशभूषा में धर्मदास जी को मिले। श्री धर्मदास जी ने उस तीर्थ तालाब में स्नान किया जिसमें श्री कष्ण जी बाल्यकाल में स्नान किया करते थे। फिर उसी जल से एक लोटा भरकर लाये। भगवान श्री कष्ण जी की पीतल की मूर्ति (सालिग्राम) के चरणों पर डालकर दूसरे बर्तन में डालकर चरणामत बनाकर पीया। फिर सालिग्राम को स्नान करवाकर अपना कर्मकाण्ड पूरा किया। फिर एक स्थान को लीपकर अर्थात् गारा तथा गाय का गोबर मिलाकर कुछ भूमि पर पलस्तर करके उस पर स्वच्छ कपड़ा बिछाकर श्रीमद्भगवत् गीता का पाठ करने बैठे। यह सर्व क्रिया जब धर्मदास जी कर रहे थे। परमात्मा जिन्दा भेष में थोड़ी दूरी पर बैठे देख रहे थे। धर्मदास जी भी देख रहे थे कि एक मुसलमान सन्त मेरी भक्ति क्रियाओं को बहुत ध्यानपूर्वक देख रहा है, लगता है इसको हम हिन्दुओं की साधना मन भा गई है। इसलिए श्रीमद्भगवत् गीता का पाठ कुछ ऊँचे स्वर में करने लगा तथा हिन्दी का अनुवाद भी पढ़ने लगा। परमेश्वर उठकर धर्मदास जी के निकट आकर बैठ गए। धर्मदास जी को अपना अनुमान सत्य लगा कि वास्तव में इस जिन्दा वेशधारी बाबा को हमारे धर्म का भक्ति मार्ग अच्छा लग रहा है। इसलिए उस दिन गीता के कई अध्याय पढ़े तथा उनका अर्थ भी सुनाया। जब धर्मदास जी अपना दैनिक भक्ति कर्म कर चुका, तब परमात्मा ने कहा कि हे महात्मा जी! आपका शुभ नाम क्या है? कौन जाति से हैं। आप जी कहाँ के निवासी हैं? किस धर्म-पंथ से जुड़े हैं? कपया बताने का कष्ट करें। मुझे आपका ज्ञान बहुत अच्छा लगा, मुझे भी कुछ भक्ति ज्ञान सुनाईए। आपकी अति कपा होगी।

धर्मदास जी ने उत्तर दिया :- मेरा नाम धर्मदास है, मैं बांधवगढ़ गाँव का रहने वाला

वैश्य कुल से हूँ। मैं वैष्णव पंथ से दीक्षित हूँ, हिन्दु धर्म में जन्मा हूँ। मैंने पूरे निश्चय के साथ तथा अच्छी तरह ज्ञान समझकर वैष्णव पंथ से दीक्षा ली है। मेरे गुरुदेव श्री रुपदास जी हैं। अध्यात्म ज्ञान से मैं परिपूर्ण हूँ। अन्य किसी की बातों में आने वाला मैं नहीं हूँ। राम-कृष्ण जो श्री विष्णु जी के ही अवतार हुए हैं तथा भगवान शंकर की पूजा करता हूँ, एकादशी का व्रत रखता हूँ। तीर्थों में जाता हूँ, वहाँ दान करता हूँ। शालिग्राम की पूजा नित्य करता हूँ। यह पवित्र पुस्तक श्रीमद्भगवत् गीता है, इसका नित्य पाठ करता हूँ। मैं अपने पूर्वजों का श्राद्ध भी करता हूँ जो स्वर्गवासी हो चुके हैं। पिण्डदान भी करता हूँ। मैं कोई जीव हिंसा नहीं करता, माँस, मदिरा, तम्बाकू सेवन नहीं करता।

प्रश्न :- परमेश्वर कबीर ने पूछा कि आप जिस पुस्तक को पढ़ रहे थे, इसका नाम क्या है?

उत्तर :- धर्मदास जी ने बताया कि यह श्रीमद्भगवत गीता है। हम शुद्र को निकट भी नहीं आने देते, शुद्ध रहते हैं।

प्रश्न :- (कबीर जी जिन्दा रुप में) आप क्या नाम-जाप करते हो?

उत्तर :- (धर्मदास जी का) हम हरे कृष्ण, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे, ओम् नमः शिवाय, ओम् भगवते वासुदेवाय नमः, राधे-राधे श्याम मिलादे, गायत्री मन्त्र का जाप 108 बार प्रतिदिन करता हूँ। विष्णु सहंस्रनाम का जाप भी करता हूँ।

प्रश्न :- (जिन्दा बाबा का) हे महात्मा धर्मदास! गीता का ज्ञान किसने दिया?

उत्तर : (धर्मदास का) भगवान श्री कृष्ण जी ने, यही श्री विष्णु जी हैं।

प्रश्न : (जिन्दा बाबा रुप में परमात्मा का) :- आप जी के पूज्य देव श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु हैं। उनका बताया भक्ति ज्ञान गीता शास्त्र है।

एक किसान को वृद्धावस्था में पुत्र प्राप्त हुआ। किसान ने विचार किया कि जब तक पुत्र कृषि करने योग्य होगा, तब तक मेरी मृत्यु हो जाएगी। इसलिए उसने कृषि करने का तरीका अपना अनुभव एक बही (रजिस्टर) में लिख दिया। अपने पुत्र से कहा कि बेटा जब आप युवा हो जाओ तो मेरे इस रजिस्टर में लिखे अनुभव को बार-2 पढ़ना। इसके अनुसार फसल बोना। कुछ दिन पश्चात् पिता की मृत्यु हो गई, पुत्र प्रतिदिन अपने पिता के अनुभव का पाठ करने लगा। परन्तु फसल का बीज व बिजाई, सिंचाई उस अनुभव के विपरित करता था। तो क्या वह पुत्र अपने कृषि के कार्य में सफलता प्राप्त करेगा?

उत्तर : (धर्मदास का) : इस प्रकार तो पुत्र निर्धन हो जाएगा। उसको तो पिता के लिखे अनुभव के अनुसार प्रत्येक कार्य करना चाहिए। वह तो मूर्ख पुत्र है।

प्रश्न : (बाबा जिन्दा रुप में भगवान जी का) हे धर्मदास जी! गीता शास्त्र आप के परमपिता भगवान कृष्ण उर्फ विष्णु जी का अनुभव तथा आपको आदेश है कि इस गीता शास्त्र में लिखे मेरे अनुभव को पढ़कर इसके अनुसार भक्ति क्रिया करोगे तो मोक्ष प्राप्त करोगे। क्या आप जी गीता में लिखे श्री कृष्ण जी के आदेशानुसार भक्ति कर रहे हो? क्या गीता में वे मन्त्र जाप करने के लिए लिखा है जो आप जी के गुरुजी ने आप जी को जाप करने के लिए दिए हैं? (हरे राम-हरे राम, राम-राम हरे-हरे, हरे कृष्णा-हरे कृष्णा, कृष्ण-कृष्ण हरे-हरे, ओम नमः शिवाय, ओम भगवते वासुदेवाय नमः, राधे-राधे श्याम मिलादे, गायत्री

मन्त्र तथा विष्णु सहंस्रनाम) क्या गीता जी में एकादशी का व्रत करने तथा श्राद्ध कर्म करने, पिण्डोदक क्रिया करने का आदेश है?

उत्तर :- (धर्मदास जी का) नहीं है।

प्रश्न :- (परमेश्वर जी का) फिर आप जी तो उस किसान के पुत्र वाला ही कार्य कर रहे हो जो पिता की आज्ञा की अवहेलना करके मनमानी विधि से गलत बीज गलत समय पर फसल बीजकर मूर्खता का प्रमाण दे रहा है। जिसे आपने मूर्ख कहा है। क्या आप जी उस किसान के मूर्ख पुत्र से कम हैं?

धर्मदास जी बोले : हे जिन्दा! आप मुसलमान फकीर हैं। इसलिए हमारे हिन्दु धर्म की भक्ति क्रिया व मन्त्रों में दोष निकाल रहे हो।

उत्तर : (कबीर जी का जिन्दा रुप में) हे स्वामी धर्मदास जी! मैं कुछ नहीं कह रहा, आपके धर्मग्रन्थ कह रहे हैं कि आपके धर्म के धर्मगुरु आप जी को शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करवा रहे हैं जो आपकी गीता के अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी कहा है कि हे अर्जुन! जो साधक शास्त्र विधि को त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है अर्थात् मनमाने मन्त्र जाप कर रहा है, मनमाने श्राद्ध कर्म व पिण्डोदक कर्म व व्रत आदि कर रहा है, उसको न तो कोई सिद्धि प्राप्त हो सकती, न सुख ही प्राप्त होगा और न गति अर्थात् मुक्ति मिलेगी, इसलिए व्यर्थ है। गीता अध्याय 16 श्लोक 24 में कहा है कि इससे तेरे लिए कर्त्तव्य अर्थात् जो भक्ति कर्म करने चाहिए तथा अकर्त्तव्य (जो भक्ति कर्म न करने चाहिए) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। उन शास्त्रों में बताए भक्ति कर्म को करने से ही लाभ होगा।

धर्मदास जी : हे जिन्दा! तू अपनी जुबान बन्द कर ले, मुझसे और नहीं सुना जाता। जिन्दा रुप में प्रकट परमेश्वर ने कहा, हे वैष्णव महात्मा धर्मदास जी! सत्य इतनी कड़वी होती है जितना नीम, परन्तु रोगी को कड़वी औषधि न चाहते हुए भी सेवन करनी चाहिए। उसी में उसका हित है। यदि आप नाराज होते हो तो मैं चला। इतना कहकर परमात्मा (जिन्दा रुप धारी) अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास को बहुत आश्चर्य हुआ तथा सोचने लगा कि यह कोई सामान्य सन्त नहीं था। यह पूर्ण विद्वान लगता है। मुसलमान होकर हिन्दु शास्त्रों का पूर्ण ज्ञान है। यह कोई देव हो सकता है। धर्मदास जी अन्दर से मान रहे थे कि मैं गीता शास्त्र के विरुद्ध साधना कर रहा हूँ। परन्तु अभिमानवश स्वीकार नहीं कर रहे थे। जब परमात्मा अन्तर्ध्यान हो गए तो पूर्ण रुप से टूट गए कि मेरी भक्ति गीता के विरुद्ध है। मैं भगवान की आज्ञा की अवहेलना कर रहा हूँ। मेरे गुरु श्री रुपदास जी को भी वास्तविक भक्ति विधि का ज्ञान नहीं है। अब तो इस भक्ति को करना, न करना बराबर है, व्यर्थ है। बहुत दुखी मन से इधर-उधर देखने लगा तथा अन्दर से हृदय से पुकार करने लगा कि मैं कैसा नासमझ हूँ। सर्व सत्य देखकर भी एक परमात्मा तुल्य महात्मा को अपनी नासमझी तथा हठ के कारण खो दिया। हे परमात्मा! एक बार वही सन्त फिर से मिले तो मैं अपना हठ छोड़कर नम्र भाव से सर्वज्ञान समझूंगा। दिन में कई बार हृदय से पुकार करके रात्रि में सो गया। सारी रात्रि करवट लेता रहा। सोचता रहा हे परमात्मा! यह क्या हुआ। सर्व साधना शास्त्रविरुद्ध कर रहा हूँ। मेरी आँखें खोल दी उस फरिस्ते ने। मेरी आयु 60 वर्ष हो

चुकी है। अब पता नहीं वह देव (जिन्दा रुपी) पुनः मिलेगा कि नहीं।

प्रातः काल वक्त से उठा। पहले खाना बनाने लगा। उस दिन भक्ति की कोई क्रिया नहीं की। पहले दिन जंगल से कुछ लकड़ियाँ तोड़कर रखी थी। उनको चूल्हे में जलाकर भोजन बनाने लगा। एक लकड़ी मोटी थी। वह बीचो-बीच थोथी थी। उसमें अनेकों चीटियाँ थीं। जब वह लकड़ी जलते-जलते छोटी रह गई तब उसका पिछला हिस्सा धर्मदास जी को दिखाई दिया तो देखा उस लकड़ी के अन्तिम भाग में कुछ तरल पानी-सा जल रहा है। चीटियाँ निकलने की कोशिश कर रही थी, वे उस तरल पदार्थ में गिरकर जलकर मर रही थी। कुछ अगले हिस्से में अग्नि से जलकर मर रही थी। धर्मदास जी ने विचार किया। यह लकड़ी बहुत जल चुकी है, इसमें अनेकों चीटियाँ जलकर भस्म हो गई है। उसी समय अग्नि बुझा दी। विचार करने लगा कि इस पापयुक्त भोजन को मैं नहीं खाऊँगा। किसी साधु सन्त को खिलाकर मैं उपवास रखूँगा। इससे मेरे पाप कम हो जाएंगे। यह विचार करके सर्व भोजन एक थाल में रखकर साधु की खोज में चल पड़ा। परमेश्वर कबीर जी ने अन्य वेशभूषा बनाई जो हिन्दु सन्त की होती है। एक वक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास जी ने साधु को देखा। उनके सामने भोजन का थाल रखकर कहा कि हे महात्मा जी! भोजन खाओ। साधु रुप में परमात्मा ने कहा कि लाओ धर्मदास! भूख लगी है। अपने नाम से सम्बोधन सुनकर धर्मदास को आश्चर्य तो हुआ परंतु अधिक ध्यान नहीं दिया। साधु रुप में विराजमान परमात्मा ने अपने लोटे से कुछ जल हाथ में लिया तथा कुछ वाणी अपने मुख से उच्चारण करके भोजन पर जल छिड़क दिया। सर्वभोजन की चींटियाँ बन गई। चींटियों से थाली काली हो गई। चींटियाँ अपने अण्डों को मुख में लेकर थाली से बाहर निकलने की कोशिश करने लगी। परमात्मा भी उसी जिन्दा महात्मा के रुप में हो गए। तब कहा कि हे धर्मदास वैष्णव संत! आप बता रहे थे कि हम कोई जीव हिंसा नहीं करते, आपसे तो कसाई भी कम हिंसक है। आपने तो करोड़ों जीवों की हिंसा कर दी। धर्मदास जी उसी समय साधु के चरणों में गिर गया तथा पूर्व दिन हुई गलती की क्षमा माँगी तथा प्रार्थना की कि हे प्रभु! मुझ अज्ञानी को क्षमा करो। मैं कहीं का नहीं रहा क्योंकि पहले वाली साधना पूर्ण रुप से शास्त्र विरुद्ध है। उसे करने का कोई लाभ नहीं, यह आप जी ने गीता से ही प्रमाणित कर दिया। शास्त्र अनुकूल साधना किस से मिले, यह आप ही बता सकते हैं। मैं आपसे पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान सुनने का इच्छुक हूँ। कपया मुझ किंकर पर दया करके मुझे वह ज्ञान सुनाऐं जिससे मेरा मोक्ष हो सके।

''व्रत करना गीता अनुसार कैसा है''

परमेश्वर (जिन्दा साधु के रुप में) बोले कि हे धर्मदास! आप एकादशी का व्रत करते हो। श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 6 श्लोक 16 में मना किया है कि हे अर्जुन! यह योग (भक्ति) न तो अधिक खाने वाले का और न ही बिल्कुल न खाने वाले का अर्थात् यह भक्ति न ही व्रत रखने वाले, न अधिक सोने वाले की तथा न अधिक जागने वाले की सफल होती है। इस श्लोक में व्रत रखना पूर्ण रुप से मना है। देख अपनी गीता खोलकर, धर्मदास जी को गीता के श्लोक याद भी थे क्योंकि प्रतिदिन पाठ किया करता था। फिर भी सोचा कि कहीं

जिन्दा सन्त नाराज न हो जाए, इसलिए गीता खोलकर अध्याय 6 श्लोक 16 पढ़ा तथा स्वीकारा कि आपने मेरी आँखें खोल दी जिन्दा। आप तो परमात्मा के स्वरुप लगते हो।

''श्राद्ध-पिण्डदान गीता अनुसार कैसा है?''

आप श्राद्ध व पिण्डदान करते हो। गीता अध्याय 9 श्लोक 25 में स्पष्ट किया है कि भूत पूजने वाले भूतों को प्राप्त होंगे। श्राद्ध करना, पिण्डदान करना यह भूत पूजा है, यह व्यर्थ साधना है।

''श्राद्ध-पिण्डदान के प्रति रूची ऋषि का वेदमत''

मार्कण्डेय पुराण में ''रौच्य ऋषि के जन्म'' की कथा आती है। एक रुची ऋषि था। वह ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए वेदों अनुसार साधना करता था। विवाह नहीं करवाया था। रुची ऋषि के पिता, दादा, परदादा तथा तीसरे दादा सब पितर (भूत) योनि में भूखे-प्यासे भटक रहे थे। एक दिन उन चारों ने रुची ऋषि को दर्शन दिए तथा कहा कि बेटा! आपने विवाह क्यों नहीं किया? विवाह करके हमारे श्राद्ध करना। रुची ऋषि ने कहा कि हे पितामहो! वेद में इस श्राद्ध आदि कर्म को अविद्या कहा है, मूर्खों का कार्य कहा है। फिर आप मुझे इस कर्म को करने को क्यों कह रहे हो?

पित्तरों ने कहा कि यह बात सत्य है कि श्राद्ध आदि कर्म को वेदों में अविद्या अर्थात् मूर्खों का कार्य ही कहा है। इससे सिद्ध हुआ कि वेदों में तथा वेदों के ही संक्षिप्त रुप गीता में श्राद्ध-पिण्डोदक आदि भूत पूजा के कर्म को निषेध बताया है, नहीं करना चाहिए। उन मूर्ख ऋषियों ने अपने पुत्र को भी श्राद्ध करने के लिए विवश किया। उसने विवाह करवाया, उससे रौच्य ऋषि का जन्म हुआ, बेटा भी पाप का भागी बना लिया।

❖ जिसे गायत्री मन्त्र कहते हो, वह यजुर्वेद के अध्याय 36 का मन्त्र 3 है जिसके आगे ''ओम्'' अक्षर नहीं है। यदि ''ओम्'' अक्षर को इस वेद मन्त्र के साथ जोड़ा जाता है तो परमात्मा का अपमान है क्योंकि ओम् (ऊँ) अक्षर तो ब्रह्म का जाप है। यजुर्वेद अध्याय 36 मन्त्र 3 में परम अक्षर ब्रह्म की महिमा है। यदि कोई अज्ञानी व्यक्ति पत्र तो लिख रहा है प्रधानमन्त्री को और लिख रहा है सेवा में 'मुख्यमन्त्री जी' तो वह प्रधानमन्त्री का अपमान कर रहा है। फिर बात रही इस मन्त्र यजुर्वेद के अध्याय 36 मन्त्र 3 को बार-बार जाप करने की, यह क्रिया मोक्षदायक नहीं है। मन्त्र का मूल पाठ इस प्रकार है :-

भूर्भवः स्वः तत् सवितु वरेणीयम् भंगो देवस्य धीमहि धीयो योनः प्रयोदयात्।

अनुवाद :- (भूः) स्वयंभू परमात्मा पंथ्वी लोक को (भवः) गोलोक आदि भवनों को वचन से प्रकट करने वाला है (स्वः) स्वर्गलोक आदि सुख धाम हैं। (तत्) वह (सवितुः) उन सर्व का जनक परमात्मा है। (वरेणीयम) सर्व साधकों को वरण करने योग्य अर्थात् अच्छी आत्माओं के भक्ति योग्य है। (भंगो) तेजोमय अर्थात् प्रकाशमान (देवस्य) परमात्मा का (धीमहि) उच्च विचार रखते हुए अर्थात् बड़ी समझ से (धी यो नः प्रचोदयात) जो बुद्धिमानों के समान विवेचन करता है, वह विवेकशील व्यक्ति मोक्ष का अधिकारी बनता है।

भावार्थ : परमात्मा स्वयंभू जो भूमि, गोलोक आदि लोक तथा स्वर्ग लोक है उन सर्व का

सजनहार है। उस उज्जवल परमेश्वर की भक्ति श्रेष्ठ भक्तों को यह विचार रखते हुए करनी चाहिए कि जो पुरुषोत्तम (सर्व श्रेष्ठ परमात्मा) है, जो सर्व प्रभुओं से श्रेष्ठ है, उसकी भक्ति करें जो सुखधाम अर्थात् सर्वसुख का दाता है।

उपरोक्त मन्त्र का यह हिन्दी अनुवाद व भावार्थ है। इसकी संस्कृत या हिन्दी अनुवाद को पढ़ते रहने से मोक्ष नहीं है क्योंकि यह तो परमात्मा की महिमा का एक अंश है अर्थात् हजारों वेद मन्त्रों में से यजुर्वेद अध्याय 36 का मंत्र सँख्या 3 केवल एक मन्त्र है। यदि कोई चारों वेदों को भी पढ़ता रहे तो भी मोक्ष नहीं। मोक्ष होगा वेदों में वर्णित ज्ञान के अनुसार भक्ति क्रिया करने से।

उदाहरण :- विद्युत की महिमा है कि बिजली अंधेरे को उजाले में बदल देती है, बिजली ट्यूबवेल चलाती है जिससे फसल की सिंचाई होती है। बिजली ऑटा पीसती है, आदि-आदि बहुत से गुण बिजली के लिखे हैं। यदि कोई व्यक्ति प्रतिदिन बिजली के गुणों का पाठ करता रहे तो उसे बिजली का लाभ प्राप्त नहीं होगा। लाभ प्राप्त होगा बिजली का कनेक्शन लेने से। कनेक्शन कैसे प्राप्त हो सकता है? उस विधि को प्राप्त करके फिर बिजली के गुणों का लाभ प्राप्त हो सकता है। केवल बिजली की महिमा को गाने मात्र से नहीं।

इसी प्रकार वेद मंत्रों में अर्थात् श्रीमद्भगवत् गीता (जो चारों वेदों का सार है) में मोक्ष प्राप्ति के लिए जो ज्ञान कहा है, उसके अनुसार आचरण करने से मोक्ष लाभ अर्थात् परमेश्वर प्राप्ति होती है।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) हे जिन्दा! मुझे तो यह भी ज्ञान नहीं है कि गीता में मोक्ष प्राप्ति का ज्ञान कौन-सा है? मैंनें गीता को पढ़ा है, समझा नहीं। हमारे धर्मगुरुओं ने जो भक्ति बताई, उसे श्रद्धा से करते आ रहे हैं। वर्षों से चला आ रहा भक्ति का शास्त्र विरुद्ध प्रचलन सर्व भक्तों को सत्य लग रहा है। क्या गीता में लिखी भक्ति विधि पर्याप्त है?

उत्तर (जिन्दा बाबा का) :- गीता में केवल ब्रह्म स्तर की भक्तिविधि लिखी है। पूर्ण मोक्ष के लिए परम अक्षर ब्रह्म की भक्ति करनी होगी। गीता में पूर्ण विधि नहीं है, केवल संकेत है। जैसे गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में कहा है कि ''सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की प्राप्ति के लिए ''ऊँ, तत्, सत्'' इस मन्त्र का निर्देश है। इसके स्मरण की विधि तीन प्रकार से है। इस मन्त्र में ऊँ तो क्षर पुरुष अर्थात् ब्रह्म का मन्त्र तो स्पष्ट है परन्तु ''पर ब्रह्म'' (अक्षर पुरुष) का मन्त्र ''तत्'' है जो सांकेतिक है, उपदेशी को तत्त्वदर्शी सन्त बताएगा। ''सत्'' यह मन्त्र पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर ब्रह्म) का है जो सांकेतिक है, इसको भी तत्त्वदर्शी सन्त उपदेशी को बताता है। तत्त्वदर्शी सन्त के पास पूर्ण मोक्ष मार्ग होता है। जो न वेदों में है, न गीता में तथा न पुराणों या अन्य उपनिषदों में है। तत्त्वज्ञान की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए गीता तथा वेद सहयोगी हैं। जो भक्तिविधि वेद-गीता में है, वही तत्त्वज्ञान में भी है। सुक्ष्मवेद अर्थात् तत्त्वज्ञान में वेदों तथा गीता वाली भक्तिविधि तो है ही, इससे भिन्न पूर्ण मोक्ष वाली साधना भी है। उदाहरण के लिए दसवीं कक्षा का पाठ्यक्रम गलत नहीं है, परंतु अधूरा है। **B.A., M.A.** वाले सलेबस में दसवीं वाला ज्ञान भी होता है, उससे आगे का भी होता है। यही दशा वेदों-गीता तथा सुक्ष्मवेद के ज्ञान में अंतर की जानें।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) गीता तथा वेदों में यह कहाँ प्रमाण है कि पूर्ण मोक्ष मार्ग तत्त्वदर्शी सन्त के पास ही होता है, वेदों व गीता में नहीं है। हे प्रभु जिन्दा! मेरी शंका का समाधान कीजिए, आपका ज्ञान हृदय को छूता है, सत्य भी है परन्तु विश्वास तो प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर ही होता है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) गीता अध्याय 4 श्लोक 25 से 30 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि हे अर्जुन! सर्व साधक अपनी साधना व भक्ति को पापनाश करने वाली अर्थात् मोक्षदायक जान कर ही करते हैं। यदि उनको यह निश्चय न हो कि तुम जो भक्ति कर रहे हो, यह शास्त्रानुकुल नहीं है तो वे साधना ही छोड़ देते। जैसे कई साधक देवताओं की पूजा रुपी यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करके ही पूजा मानते हैं। अन्य ब्रह्म तक ही पूजा करते हैं। कई केवल अग्नि में घृत आदि डालकर अनुष्ठान करते हैं जिसको हवन कहते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 25)

❖ अन्य योगीजन अर्थात् भक्तजन आँख, कान, मुहँ बन्द करके क्रियाएं करते हैं। उसी में अपना मानव जीवन हवन अर्थात् समाप्त करते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 26)

❖ अन्य योगीजन अर्थात् भक्तजन श्वांसों को आना-जाना ध्यान से देखकर भक्ति साधना करते हैं जिससे वे आत्मसंयम साधना रुपी अग्नि में अपना जीवन हवन अर्थात् मानव जीवन पूरा करते हैं, जिसे ज्ञान दीप मानते हैं अर्थात् अपनी साधना को श्रेष्ठ मानते हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 27)

❖ कुछ अन्य साधक द्रव्य अर्थात् धन से होने वाले यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान करते हैं जैसे भोजन भण्डारा करना, कम्बल-कपड़े बाँटना, धर्मशाला, प्याऊ बनवाना, यह यज्ञ करते हैं। कुछ तपस्या करते हैं, कुछ योगासन करते हैं। इसी को परमात्मा प्राप्ति की साधना मानते हैं। कितने ही साधक अहिंसा आदि तीक्ष्ण व्रत करते हैं। जैसे मुख पर पट्टी बाँधकर नंगे पैरों चलना, कई दिन उपवास रखना आदि-आदि। अन्य योगीजन अर्थात् साधक स्वाध्याय अर्थात् प्रतिदिन किसी वेद जैसे ग्रन्थ से कुछ मन्त्रों (श्लोकों) का पाठ करना, यह ज्ञान यज्ञ कहलाती है, करते रहते हैं। इन्हीं क्रियाओं को मोक्षदायक मानते हैं। (अध्याय 4 श्लोक 28)

❖ दूसरे योगीजन अर्थात् भक्तजन प्राण वायु (श्वांस) अपान वायु में पहुँचाने वाली क्रिया करते हैं। अन्य योगीजन इसके विपरित अपान वायु को प्राण वायु में पहुँचाने वाली क्रिया करते हैं। कितने ही साधक अल्पाहारी रहते हैं। कुछ योगिक क्रियाऐं करते हैं। जैसे प्राणायाम में लीन साधक पान-अपान की गति को रोककर श्वांस कम लेते हैं। इसी में अपना मानव जीवन हवन अर्थात् समर्पित कर देते हैं। ये सभी उपरोक्त (अध्याय 4 श्लोक 25 से 30 तक) साधक अपने-अपने यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों को करके मानते हैं कि हम पाप का नाश करने वाली साधना भक्ति कर रहे हैं। (गीता अध्याय 4 श्लोक 30)

❖ यदि साधक की साधना शास्त्रानुकूल हो तो हे कुरुश्रेष्ठ अर्जुन! इस यज्ञ से बचे हुए अमृत भोग को खाने वाले साधक सनातन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त होते हैं और यज्ञ अर्थात् शास्त्रानुकूल साधना न करने वाले पुरुष के लिए तो यह पृथ्वीलोक भी

सुखदायक नहीं होता, फिर परलोक कैसे सुखदायक हो सकता है अर्थात् उस शास्त्र विरूद्ध साधक को कोई लाभ नहीं होता। यही प्रमाण गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 31)

❖ **गीता ज्ञान दाता ने ऊपर के 25 से 30 तक श्लोकों में स्पष्ट किया है कि जो साधक जैसी साधना कर रहा है, उसे मोक्षदायक तथा सत्य मानकर कर रहा है। परन्तु गीता अध्याय 4 के ही श्लोक 32 में बताया कि ''यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों का यथार्थ ज्ञान परम अक्षर ब्रह्म स्वयं अपने मुख कमल से बोलकर ज्ञान देता है। (वह सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की वाणी कही गई है। उसे तत्त्वज्ञान भी कहते हैं। उसी को पाँचवां वेद (सुक्ष्म वेद) भी कहते हैं।) उस तत्त्वज्ञान में भक्तिविधि विस्तार के साथ बताई गई है। उसको जानकर साधक सर्व पापों से मुक्त हो जाता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष को प्राप्त हो जाता है।**

नोट : गीता अध्याय 4 श्लोक 32 के अनुवाद में सर्व अनुवादकों ने एक जैसी ही गलती कर रखी है। ''ब्रह्मणः'' शब्द का अर्थ वेद कर रखा है। ''ब्रह्मणः मुखे'' का अर्थ वेद की वाणी में'' किया है जो गलत है। उन्हीं अनुवादकों ने गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ''ब्रह्मणः'' का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म किया है जो उचित है। इसलिए गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में भी ''ब्रह्मणः'' का अर्थ सच्चिदानन्द घन ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म करना उचित है।

❖ **गीता अध्याय 4 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि उस ज्ञान को (जो परमात्मा अपने मुख कमल से बोलकर सुनाता है जो तत्त्वज्ञान है उसको) तू तत्त्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। उनको दण्डवत प्रणाम करने से, कपट छोड़कर नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से तत्त्वदर्शी सन्त तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे।**

❖ **इससे यह भी सिद्ध हुआ कि गीता वाला ज्ञान पूर्ण नहीं है, परन्तु गलत भी नहीं है। गीता ज्ञानदाता को भी पूर्ण मोक्षमार्ग का ज्ञान नहीं है क्योंकि तत्त्वज्ञान की जानकारी गीता ज्ञानदाता को नहीं है जो परमात्मा (परम अक्षर ब्रह्म) ने अपने मुख से बोला होता है। उसको तत्त्वदर्शी सन्तों से जानने के लिए कहा है।**

❖ **यही प्रमाण यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में भी है। कहा है कि परम अक्षर ब्रह्म को कोई तो 'सम्भवात्' अर्थात् राम-कष्ण की तरह उत्पन्न होने वाला साकार कहते हैं। कोई 'असम्भवात्' अर्थात् परमात्मा उत्पन्न नहीं होता, वह निराकार है। परमेश्वर उत्पन्न होता है या नहीं उत्पन्न होता, वास्तव में कैसा है? यह ज्ञान 'धीराणाम्' तत्त्वदर्शी सन्त बताते हैं, उनसे सुनो।**

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) हे प्रभु! हे जिन्दा! तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान है तथा प्रमाणित सद्ग्रन्थों में कहाँ प्रमाण है? आपका ज्ञान आत्मा के आर-पार हो रहा है। गीता का शब्दा-शब्द यथार्थ भावार्थ आप जी के मुख कमल से सुनकर युगों की प्यासी आत्मा कुछ तप्त हो रही है तथा गदगद हो रही है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) परमेश्वर ने बताया कि पहले तो लक्षण सुन तत्त्वदर्शी सन्त अर्थात् पूर्ण ज्ञानी सत्गुरु के :-

गुरू के लक्षण चार बखाना, प्रथम वेद शास्त्र को ज्ञाना (ज्ञाता)।
दूजे हरि भक्ति मन कर्म बानी, तीसरे समदष्टि कर जानी।
चौथे वेद विधि सब कर्मा, यह चार गुरु गुण जानो मर्मा।

कबीर सागर के अध्याय ''जीव धर्म बोध'' के पष्ठ 1960 पर ये अमतवाणियां अंकित हैं।

भावार्थः- जो तत्त्वदर्शी सन्त (पूर्ण सतगुरु) होगा उसमें चार मुख्य गुण होते हैंः-

1. वह वेदों तथा अन्य सभी ग्रन्थों का पूर्ण ज्ञानी होता है।

2. दूसरे वह परमात्मा की भक्ति मन-कर्म-वचन से स्वयं करता है, केवल वक्ता-वक्ता नहीं होता, उसकी करणी और कथनी में अन्तर नहीं होता।

3. वह सर्व अनुयाईयों को समान दष्टि से देखता है। ऊँच-नीच का भेद नहीं करता।

4. चौथे वह सर्व भक्तिकर्म वेदों के अनुसार करता तथा करवाता है अर्थात् शास्त्रानुकूल भक्ति साधना करता तथा करवाता है। यह ऊपर का प्रमाण तो सुक्ष्म वेद में है जो परमेश्वर ने अपने मुखकमल से बोला है। अब आप जी को श्रीमद्भगवत गीता में प्रमाण दिखाते हैं कि तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान बताई है?

श्रीमद्भागवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में स्पष्ट हैः-

ऊर्धव मूलम् अधः शाखम् अश्वत्थम् प्राहुः अव्ययम्। छन्दासि यस्य प्रणानि, यः तम् वेद सः वेदवित्।।

अनुवाद : ऊपर को मूल (जड़) वाला, नीचे को तीनों गुण रुपी शाखा वाला उल्टा लटका हुआ संसार रुपी पीपल का वक्ष जानो, इसे अविनाशी कहते हैं क्योंकि उत्पत्ति-प्रलय चक्र सदा चलता रहता है जिस कारण से इसे अविनाशी कहा है। इस संसार रुपी वक्ष के पत्ते आदि छन्द हैं अर्थात् भाग (Parts) हैं। (य तम् वेद) जो इस संसार रुपी वक्ष के सर्वभागों को तत्त्व से जानता है, (सः) वह (वेदवित्) वेद के तात्पर्य को जानने वाला है अर्थात् वह तत्त्वदर्शी सन्त है। जैसा कि गीता अध्याय 4 श्लोक 32 में कहा है कि परम अक्षर ब्रह्म स्वयं पथ्वी पर प्रकट होकर अपने मुख कमल से तत्त्वज्ञान विस्तार से बोलते हैं। परमेश्वर ने अपनी वाणी में अर्थात् तत्त्वज्ञान में बताया हैः-

कबीर, अक्षर पुरुष एक पेड़ है, क्षर पुरुष वाकि डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

भावार्थ :- जमीन से बाहर जो वक्ष का हिस्सा है, उसे तना कहते हैं। तना तो जानों अक्षर पुरुष, तने से कई मोटी डार निकलती हैं। उनमें से एक मोटी डार जानों क्षर पुरुष। उस डार से तीन शाखा निकलती हैं, उनको जानों तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव-शंकर जी) और इन शाखाओं को पत्ते लगते हैं, उन पत्तों को संसार जानो।

गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 में सांकेतिक विवरण है। तत्त्वज्ञान में विस्तार से कहा गया है। पहले गीता ज्ञान के आधार से ही जानते हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 2 में कहते हैं कि संसार रुपी वक्ष की तीनों गुण (रजगुण ब्रह्माजी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शंकर जी) रुपी शाखाएं है। ये ऊपर (स्वर्ग लोक में) तथा नीचे (पाताल लोक) फैली हुई हैं।

नोट :- रजगुण ब्रह्मा, सत्गुण विष्णु तथा तमगुण शंकर हैं।

देखें प्रमाण निम्न प्रश्न के उत्तर में :-

प्रश्न : यह कहाँ प्रमाण है कि रजगुण ब्रह्मा है, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर है?

उत्तर : 1. श्री मार्कण्डेय पुराण (सचित्र मोटा टाईप गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित) के 123 पष्ठ पर कहा है कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शंकर, तीनों ब्रह्म की प्रधान शक्तियाँ है, ये ही तीन देवता हैं। ये ही तीन गुण हैं।

2. श्री देवी महापुराण संस्कत व हिन्दी अनुवाद (श्री वैंकटेश्वर प्रेस बम्बई से प्रकाशित) में तीसरे स्कंद अध्याय 5 श्लोक 8 में लिखा है कि शंकर भगवान बोले, हे मात! यदि आप हम पर दयालु हैं तो मुझे तमोगुण, ब्रह्मा रजोगुण तथा विष्णु सतोगुण युक्त क्यों किया?

उपरोक्त प्रमाणों से सिद्ध हुआ कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शंकर जी हैं।

तीनों शाखाएं ऊपर-नीचे फैली हैं, का तात्पर्य है कि गीता का ज्ञान पथ्वी लोक पर बोला जा रहा था। तीनों देवता की सत्ता तीन लोकों में है। 1. पथ्वी लोक, 2. स्वर्ग लोक तथा 3. पाताल लोक। ये तीन मन्त्री हैं, एक-एक विभाग के मन्त्री हैं। रजगुण विभाग के श्री ब्रह्मा जी, सतगुण विभाग के श्री विष्णु जी तथा तमगुण विभाग के श्री शिव जी।

गीता अध्याय 15 श्लोक 3 में कहा है कि हे अर्जुन! इस संसार रुपी वक्ष का स्वरुप जैसे यहाँ (विचार काल में) अर्थात् तेरे और मेरे गीता के ज्ञान की चर्चा में नहीं पाया जाता अर्थात् मैं नहीं बता पाऊँगा क्योंकि इसके आदि और अन्त का मुझे अच्छी तरह ज्ञान नहीं है। इसलिए इस अतिदढ़ मूल वाले अर्थात् जिस संसार रुपी वक्ष की मूल है। (वह परमात्मा भी अविनाशी है तथा उनका स्थान सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक, ये चार ऊपर के लोक भी अविनाशी हैं। इन चारों में एक ही परमात्मा भिन्न-भिन्न रुप बनाकर सिंहासन पर विराजमान हैं। इसलिए इसको ''सुदढ़मूलम्'' अति दढ़ मूल वाला कहा है।) इसे तत्त्वज्ञान रुपी शस्त्र से काटकर अर्थात् तत्त्वदर्शी सन्त से तत्त्वज्ञान समझकर।

फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि उसके पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद अर्थात् सत्यलोक की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वक्ष की प्रवत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व संसार की रचना की है। उसी परमेश्वर की भक्ति को पहले तत्त्वदर्शी सन्त से समझो! गीता ज्ञान दाता अपनी भक्ति को भी मना कर रहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन प्रभु बताये हैं। क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष ये दोनों नाशवान हैं। तीसरा परम अक्षर पुरुष है जो संसार रुपी वक्ष का मूल (जड़) है। वह वास्तव में अविनाशी है। जड़ (मूल) से ही वक्ष के सर्व भागों ''तना, डार-शाखाओं तथा पत्तों'' को आहार प्राप्त होता है। वह परम अक्षर पुरुष ही तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। उसी (मूल) मालिक की पूजा करनी चाहिए। इस विवरण में तत्त्वदर्शी सन्त की पहचान तथा गीता ज्ञान दाता की अल्पज्ञता अर्थात् तत्वज्ञानहीनता स्पष्ट है।

''जिन्दा बाबा का दूसरी बार अन्तर्ध्यान होना''

(धर्मदास जी ने कहा) :- हे जिन्दा! आप यह क्या कह रहे हो कि श्री विष्णु जी तीनों लोको में केवल एक विभाग के मन्त्री हैं। आप गलत कह रहे हो। श्री विष्णुजी तो अखिल

ब्रह्माण्ड के स्वामी हैं। ये ही श्री ब्रह्मा जी रुप में उत्पत्ति करते हैं। विष्णु रुप होकर संसार का पालन करते हैं तथा शिव रुप होकर संहार करते हैं। ये तो कुल के मालिक हैं, यदि फिर से आपने श्री विष्णु जी को अपमानित किया तो ठीक बात नहीं रहेगी। परमेश्वर कबीर जी ने कहा :-

मूर्ख के समझावतें, ज्ञान गाँठि का जाय। कोयला होत न उजला, भावें सौ मन साबुन लाय।।

इतना कहकर परमेश्वर जिन्दा रुपधारी अन्तर्ध्यान हो गए। दूसरी बार परमेश्वर को खोने के पश्चात् धर्मदास बहुत उदास हो गए। भगवान विष्णु में इतनी अटूट आस्था थी कि आँखों प्रमाण देखकर भी झूठ को त्यागने को तैयार नहीं थे।

कबीर, जान बूझ साची तजै, करे झूठ से नेह। ताकि संगति हे प्रभु, स्वपन में भी ना देह।।

कुछ देर के पश्चात् धर्मदास की बुद्धि से काल का साया हटा और अपनी गलती पर विचार किया कि सब प्रमाण गीता से ही प्रत्यक्ष किए गए थे। जिन्दा बाबा ने अपनी ओर से तो कुछ नहीं कहा। मैं कितना अभागा हूँ कि मैंने अपने हठी व्यवहार से देव स्वरुप तत्त्वदर्शी सन्त को खो दिया। अब तो वे देव नहीं मिलेंगे। मेरा जीवन व्यर्थ जाएगा। यह विचार करके धर्मदास सिहर उठा अर्थात् भय से काँपने लगा। खाना भी कम खाने लगा, उदास रहने लगा तथा मन-मन में अर्जी लगाने लगा हे देव! हे जिन्दा बाबा! एक बार दर्शन दे दो। भविष्य में ऐसी गलती कभी नहीं करुँगा। मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करता हूँ। मुझ मूर्ख की ओच्छी-मन्दी बातों पर ध्यान न दो। मुझे फिर मिलो गुसांई। आपका ज्ञान सत्य, आप सत्य, आप जी का एक-एक वचन अमृत है। कृपया दर्शन दो नहीं तो अधिक दिन मेरा जीवन नहीं रहेगा।

तीसरे दिन परमेश्वर कबीर जी एक दरिया के किनारे वृक्ष के नीचे बैठे थे। आसपास कुछ आवारा गायें भी उसी वृक्ष के नीचे बैठी जुगाली कर रही थीं। कुछ दरिया के किनारे घास चर रही थी। धर्मदास की दृष्टि दरिया के किनारे पिताम्बर पहने बैठे सन्त पर पड़ी, देखा आस-पास गायें चर रही है। ऐसा लगा जैसे साक्षात् भगवान कृष्ण अपने लोक से आकर बैठे हों। धर्मदास उत्सुकता से सन्त के पास गया तथा देखा यह तो कोई सामान्य सन्त है। फिर भी सोचा चरण स्पर्श करके फिर आगे बढ़ूँगा। धर्मदास जी ने जब चरणों का स्पर्श किया, मस्तक चरणों पर रखा तो ऐसा लगा कि जैसे रुई को छुआ हो। फिर चरणों को हाथों से दबा-दबाकर देखा तो उनमें कहीं भी हड्डी नहीं थी। ऊपर चेहरे की ओर देखा तो वही बाबा जिन्दा उसी पहले वाली वेशभूषा में बैठा था। धर्मदास जी ने चरणों को दृढ़ करके पकड़ लिया कि कहीं फिर से न चले जाऐं और अपनी गलती की क्षमा याचना की। कहा कि हे जिन्दा! आप तो तत्त्वदर्शी सन्त हो। मैं एक भ्रमित जिज्ञासु हूँ। जब तक मेरी शंकाओं का समाधान नहीं होगा, तब तक मेरा अज्ञान नाश कैसे होगा? आप तो महाकृपालु हैं। मुझ किंकर पर दया करो। मेरा अज्ञान हटाओ प्रभु।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! यदि श्री विष्णु जी पूर्ण परमात्मा नहीं है तो कौन है पूर्ण परमात्मा, कृप्या गीता से प्रमाण देना?

उत्तर :- वह परमात्मा ''परम अक्षर ब्रह्म'' है जो कुल का मालिक है।

प्रमाण :- श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में है। गीता अध्याय

15 श्लोक 1 से 4 का सारांश व भावार्थ है कि ''उल्टे लटके हुए वृक्ष के समान संसार को जानो। जैसे वृक्ष की जड़ें तो ऊपर हैं, नीचे तीनों गुण रुपी शाखाएं जानो। गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में यह भी स्पष्ट किया है कि तत्त्वदर्शी सन्त की क्या पहचान है? तत्त्वदर्शी सन्त वह है जो संसार रुपी वृक्ष के सर्वांग (सभी भाग) भिन्न-भिन्न बताए।

विशेष :- वेद मन्त्रों की जो आगे फोटोकॉपियाँ लगाई हैं, ये आर्यसमाज के आचार्यों तथा महर्षि दयानंद द्वारा अनुवादित हैं और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा प्रकाशित हैं। जिनमें वर्णन है कि परमेश्वर स्वयं पृथ्वी पर सशरीर प्रकट होकर कवियों की तरह आचरण करता हुआ सत्य आध्यात्मिक ज्ञान सुनाता है। (प्रमाण ऋग्वेद मण्डल नं. 9 सुक्त 86 मन्त्र 26-27, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 82 मन्त्र 1-2, सुक्त 96 मन्त्र 16 से 20, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 94 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सुक्त 95 मन्त्र 2, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 20 मन्त्र 1, ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 54 मन्त्र 3 में) इन मन्त्रों में कहा है कि परमात्मा सर्व भवनों अर्थात् लोकों के उपर के लोक में विराजमान है। जब-जब पृथ्वी पर अज्ञान की वृद्धि होने से अधर्म बढ़ जाता है तो परमात्मा स्वयं सशरीर चलकर पृथ्वी पर प्रकट होकर यथार्थ अध्यात्म ज्ञान का प्रचार लोकोक्तियों, शब्दों, चौपाईयों, साखियों, कविताओं के माध्यम से कवियों जैसा आचरण करके घूम-फिरकर करता है। जिस कारण से एक प्रसिद्ध कवि की उपाधि भी प्राप्त करता है। कृप्या देखें उपरोक्त वेद मन्त्रों की फोटोकॉपी इसी पुस्तक के पृष्ठ 259 पर।

परमात्मा ने अपने मुख कमल से ज्ञान बोलकर सुनाया था। उसे सुक्ष्म वेद कहते हैं। उसी को 'तत्त्व ज्ञान' भी कहते हैं। तत्त्वज्ञान का प्रचार करने के कारण परमात्मा ''तत्त्वदर्शी सन्त'' भी कहलाने लगता है। उस तत्त्वदर्शी सन्त रूप में प्रकट परमात्मा ने संसार रुपी वृक्ष के सर्वांग इस प्रकार बताये :-

कबीर, अक्षर पुरुष एक वृक्ष है, क्षर पुरुष वाकि डार। तीनों देवा शाखा हैं, पात रुप संसार।।

भावार्थ : वृक्ष का जो हिस्सा पृथ्वी से बाहर दिखाई देता है, उसको तना कहते हैं। जैसे संसार रुपी वृक्ष का तना तो अक्षर पुरुष है। तने से मोटी डार निकलती है वह क्षर पुरुष जानो, डार से मानो तीन शाखाऐं निकलती हों, उनको तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिव) हैं तथा इन शाखाओं पर टहनियों व पत्तों को संसार जानों। इस संसार रुपी वृक्ष के उपरोक्त भाग जो पृथ्वी से बाहर दिखाई देते हैं। मूल (जड़ें), जमीन के अन्दर हैं। जिनसे वृक्ष के सर्वांगों का पोषण होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरुष कहे हैं। श्लोक 16 में दो पुरुष कहे हैं ''क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष'' दोनों की स्थिति ऊपर बता दी है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में भी कहा है कि क्षर पुरुष तथा अक्षर पुरुष दोनों नाशवान हैं। इनके अन्तर्गत जितने भी प्राणी हैं, वे भी नाशवान हैं। परन्तु आत्मा तो किसी की भी नहीं मरती। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि उत्तम पुरुष अर्थात् पुरुषोत्तम तो क्षर पुरुष और अक्षर पुरुष से भिन्न है जिसको परमात्मा कहा गया है। इसी प्रभु की जानकारी गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में है जिसको ''परम अक्षर ब्रह्म'' कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में इसी का वर्णन है। यही प्रभु तीनों लोकों में प्रवेश करके

सबका धारण-पोषण करता है। यह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। मूल से ही वृक्ष की परवरिश होती है, इसलिए सबका धारण-पोषण करने वाला परम अक्षर ब्रह्म है। जैसे पूर्व में गीता अध्याय 15 श्लोक 1-4 में बताया है कि ऊपर को जड़ (मूल) वाला, नीचे को शाखा वाला संसार रुपी वृक्ष है। जड़ से ही वृक्ष का धारण-पोषण होता है। इसलिए परम अक्षर ब्रह्म जो संसार रुपी वृक्ष की जड़ (मूल) है, यही सर्व पुरुषों (प्रभुओं) का पालनहार इनका विस्तार (रचना करने वाला = सृजनहार) है। यही कुल का मालिक है।

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा कि क्या श्री विष्णु जी और शंकर जी की पूजा करनी चाहिए?

उत्तर :- (जिन्दा बाबा का) :- नहीं करनी चाहिए।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- कृपया गीता से प्रमाणित कीजिए।

उत्तर :- श्री मद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24, गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6 में प्रमाण है कि जो व्यक्ति रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव की भक्ति करते हैं, वे राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझे भी नहीं भजते। (यह प्रमाण गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में है। फिर गीता अध्याय 7 के ही श्लोक 20 से 23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 23-24 में यही कहा है और क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में जिनका वर्णन है), को छोड़कर श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी अन्य देवताओं में गिने जाते हैं। इन दोनों अध्यायों (गीता अध्याय 7 तथा अध्याय 9 में) में ऊपर लिखे श्लोकों में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक जिस भी उद्देश्य को लेकर अन्य देवताओं को भजते हैं, वे भगवान समझकर भजते हैं। उन देवताओं को मैंने कुछ शक्ति प्रदान कर रखी है। देवताओं के भजने वालों को मेरे द्वारा किए विधान से कुछ लाभ मिलता है। परन्तु उन अल्प बुद्धिवालों का वह फल नाशवान होता है। देवताओं को पूजने वाले देवताओं के लोक में जाते हैं। मेरे पुजारी मुझे प्राप्त होते हैं।

गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में कहा है कि शास्त्रविधि को त्यागकर जो साधक मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् जिन देवताओं पितरों, यक्षों, भैरों-भूतों की भक्ति करते हैं और मनकल्पित मन्त्रों का जाप करते हैं, उनको न तो कोई सुख होता है, न कोई सिद्धि प्राप्त होती है तथा न उनकी गति अर्थात् मोक्ष होता है। इससे तेरे लिए हे अर्जुन! कर्तव्य (जो भक्ति करनी चाहिए) और अकर्त्तव्य (जो भक्ति न करनी चाहिए) की व्यवस्था में शास्त्र ही प्रमाण हैं। गीता अध्याय 17 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि हे कृष्ण! (क्योंकि अर्जुन मान रहा था कि श्री कृष्ण ही ज्ञान सुना रहा है, परन्तु श्री कृष्ण के शरीर में प्रेत की तरह प्रवेश करके काल (ब्रह्म) ज्ञान बोल रहा था जो पहले प्रमाणित किया जा चुका है)। जो व्यक्ति शास्त्रविधि को त्यागकर अन्य देवताओं आदि की पूजा करते हैं, वे स्वभाव में कैसे होते हैं? गीता ज्ञान दाता ने उत्तर दिया कि सात्विक व्यक्ति देवताओं का पूजन करते हैं। राजसी व्यक्ति यक्षों व राक्षसों की पूजा तथा तामसी व्यक्ति प्रेत आदि की पूजा करते हैं। ये सब शास्त्रविधि रहित कर्म हैं। फिर गीता अध्याय 17 श्लोक 5-6 में कहा है कि जो मनुष्य शास्त्रविधि से रहित केवल मनकल्पित घोर तप को तपते हैं, वे दम्भी (अभिमानी) हैं और

शरीर के कमलों में विराजमान शक्तियों को तथा मुझे भी क्रश करने वाले राक्षस स्वभाव के अज्ञानी जान। सुक्ष्मवेद में भी परमेश्वर जी ने कहा है किः-

''कबीर, माई मसानी सेढ़ शीतला भैरव भूत हनुमंत। परमात्मा से न्यारा रहै, जो इनको पूजंत।।
राम भजे तो राम मिलै, देव भजै सो देव। भूत भजै सो भूत भवै, सुनो सकल सुर भेव।।''

स्पष्ट हुआ कि श्री ब्रह्मा जी (रजगुण), श्री विष्णु जी (सत्गुण) तथा श्री शिवजी (तमगुण) की पूजा (भक्ति) नहीं करनी चाहिए तथा इसके साथ-साथ भूतों, पितरों की पूजा, (श्राद्ध कर्म, तेरहवीं, पिण्डोदक क्रिया, सब प्रेत पूजा होती है) भैरव तथा हनुमान जी की पूजा भी नहीं करनी चाहिए।

धर्मदास को प्रभु ने सुनाया, गीता शास्त्र से प्रत्यक्ष प्रमाण देखकर धर्मदास की आँखें खुली की खुली रह गई। जैसे किसी को सदमा लग गया हो। झूठ कह नहीं सकता, स्वीकार करने से लिए अभी वक्त लगेगा।

जिन्दा रुपधारी परमेश्वर ने धर्मदास को सम्बोधित करते हुए कहा कि हे वैष्णव महात्मा! कौन-सी दुनिया में चले गये, लौट आओ। मानो धर्मदास नींद से जागा हो। सावधान होकर कहा, कुछ नहीं-कुछ नहीं। कृप्या और ज्ञान सुनाओ ताकि मेरा भ्रम दूर हो। परमेश्वर कबीर जी ने सृष्टि की रचना धर्मदास जी को सुनाई, कृपया पढ़ें इसी पुस्तक के पृष्ठ 518 पर।

सृष्टि रचना सुनकर धर्मदास जी को ऐसा लगा मानो पागल हो जाऊँगा क्योंकि जो ज्ञान आजतक हिन्दु धर्मगुरुओं, ऋषियों, महर्षियों-सन्तों से सुना था, वह निराधार तथा अप्रमाणित लग रहा था। जिन्दा बाबा हिन्दु सद्ग्रन्थों से ही प्रमाणित कर रहे थे। शंका का कोई स्थान नहीं था। मन-मन में सोच रहा था कि कहीं मैं पागल तो नहीं हो जाऊँगा?

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) : हे जिन्दा! क्या हिन्दु धर्म के गुरुओं तथा ऋषियों को शास्त्रों का ज्ञान नहीं है?

उत्तर :- (जिन्दा महात्मा का) :- क्या यह बताने की भी आवश्यकता शेष है?

धर्मदास जी ने मन में विचार किया कि यह कैसे हो सकता है कि हिन्दु धर्म के किसी सन्त, गुरु, महर्षि को सत्य अध्यात्म ज्ञान नहीं? धर्मदास जी के मन में आया कि किसी महामण्डलेश्वर से ज्ञान पता करना चाहिए। एक रमते फकीर के पास क्या मिलेगा? यह बात मन में सोच ही रहा था कि परमेश्वर जिन्दा जी ने धर्मदास जी के मन का दोष जानकर कहा कि आप अपने महामण्डलेश्वरों से ज्ञान प्राप्त करलो। यह कहकर परमेश्वर तीसरी बार अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी ठगे से रह गए और अपने मन के दोष को जिन्दा महात्मा के मुखकमल से सुनकर बहुत शर्मसार हुए। जब प्रभु अन्तर्ध्यान हो गए तो बहुत व्याकुल हो गया। परन्तु धर्मदास जी को आशा थी कि हमारे महामण्डलेश्वरों के पास तत्त्वज्ञान अवश्य मिलेगा। यदि जिन्दा बाबा (मुसलमान) के ज्ञान को तत्त्वज्ञान मानकर साधना स्वीकार करना तो ऐसा लग रहा है जैसे धर्म परिवर्तन करना हो। यह समाज में निन्दा का कारण बनेगा। इसलिए अपने हिन्दु महात्माओं से तत्त्वज्ञान जानकर श्रेष्ठ शास्त्रानुकूल भक्ति करनी ही उचित रहेगी। इस बार धर्मदास जी को जिन्दा बाबा का अचानक चला जाना खटका नहीं क्योंकि उसकी गलतफहमी थी कि हिन्दु इतना बड़ा तथा पुरातन धर्म है, क्या कोई भी

तत्त्वदर्शी सन्त नहीं मिलेगा? धर्मदास जी एक वैष्णव महामण्डलेश्वर श्री ज्ञानानंद जी वैष्णव के आश्रम में गया। उस समय श्री ज्ञानानन्द जी का बहुत बोलबाला था। वह स्वामी रामानन्द जी काशी वाले का शिष्य था। परन्तु उस समय स्वामी रामानन्द जी तो परमेश्वर कबीर जी का शिष्य/गुरु बन चुका था। वह अपने ज्ञान को अज्ञान मान चुका था। स्वामी रामानन्द जी ने अपने सर्वऋषि शिष्यों से बोल दिया था कि मेरे द्वारा बताया ज्ञान व्यर्थ है और यह साधना शास्त्रविरुद्ध है। आप सब परमेश्वर कबीर जी से दीक्षा ले लें। परन्तु जाति का अभिमान, शिष्यों में प्रतिष्ठा, ज्ञान के स्थान पर अज्ञान का भण्डार जीव को सत्य स्वीकार करने नहीं देता।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना येह।।

धर्मदास जी ने श्री ज्ञानानंद जी से प्रश्न किया है कि स्वामी जी क्या भगवान विष्णु से भी ऊपर कोई प्रभु है। श्री ज्ञानानन्द जी ने उत्तर दिया कि श्री विष्णु स्वयं परम ब्रह्म परमात्मा है। इनसे ऊपर कौन हो सकता है? श्री कष्ण जी भी श्री विष्णु जी स्वयं ही थे। उन्होंने ही श्रीमद्भगवत गीता का ज्ञान दिया। आपको किसने भ्रमित कर दिया? धर्मदास जी ने पूछा कि गीता अध्याय 8 श्लोक 1 में अर्जुन ने पूछा कि तत् ब्रह्म क्या है? गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में भगवान ने कहा है कि वह ''परम अक्षर ब्रह्म'' है। यह तो भगवान कष्ण से अन्य प्रभु हुआ। ज्ञानानन्द स्वामी बोला, लगता है कि तेरे को उस काशी वाले जुलाहे का जादू चढ़ा हुआ है। चल-चल अपना काम कर। भगवान कष्ण से अन्य कोई प्रभु नहीं है। धर्मदास जी को पता चल गया कि इसके पास वह ज्ञान नहीं है जो जिन्दा बाबा ने प्रमाणों सहित बताया है। धर्मदास निराश होकर वहाँ से चल दिया। धर्मदास जी को यह नहीं पता था कि काशी वाला जुलाहा वह बाबा जिन्दा ही है। फिर धर्मदास को पता चला कि एक मोहनगिरी नाम के महामण्डलेश्वर हैं, उनके पास जाकर भगवान की चर्चा करनी शुरु की। पहले एक रुपया दक्षिणा चढ़ाई जिस कारण से मोहनगिरी ने उनको निकट बैठाया और बताया कि भगवान शिव सर्व सष्टि के रचने वाले हैं। इनसे बढ़कर संसार में कोई प्रभु नहीं है। ''ओम् नमः शिवाय'' मन्त्र का जाप करो। धर्मदास जी प्रणाम करके चल पड़े। सोचा इनका कितना अच्छा नाम है, ज्ञान धेल्ले (एक पैसे) का नहीं। धर्मदास जी से किसी ने बताया कि एक बहुत बड़ा तपस्वी है। कई वर्षों से खड़ा तप कर रहा है। धर्मदास जी वहाँ गए, वह नाथ पंथ से जुड़ा था। भगवान शिव को समर्थ परमात्मा बताता था। तप करके हठयोग से परमात्मा की प्राप्ति मान रहा था। धर्मदास जी ने विवेक किया कि यदि इतनी घोर कठिन तपस्या से परमात्मा मिलेगा तो हमारे वश से बाहर की बात है। वहाँ से भी आगे चला। पता चला कि एक बहुत बड़ा विद्वान महात्मा काशी विद्यापीठ से पढ़कर आया है। वेदों का पूर्ण विद्वान है। धर्मदास जी ने उस महात्मा से पूछा परमात्मा कैसा है? उत्तर मिला-निराकार है। उस निराकार परमात्मा का कोई नाम है? धर्मदास ने पूछा। उत्तर विद्वान का :- उसका नाम ब्रह्म है। क्या परमात्मा को देखा जा सकता है, धर्मदास जी ने प्रश्न किया? उत्तर मिला परमात्मा निराकार है, उसको कैसे देख सकते हैं। केवल परमात्मा का प्रकाश देखा जा सकता है। प्रश्नः- क्या श्री कष्ण या विष्णु परमात्मा हैं? उत्तर था कि ये तो सर्गुण देवता हैं, परमात्मा

निर्गुण है।

गीता और वेद के ज्ञान में क्या अन्तर है? धर्मदास ने प्रश्न किया। ब्राह्मण का उत्तर था कि गीता चारों वेदों का सारांश है। धर्मदास जी ने पूछा कि भक्ति मन्त्र कौन सा है? उत्तर ब्राह्मण का था कि गायत्री मन्त्र का जाप करो = ओम् भूर्भवस्वः तत् सवितुः वरेणियम भर्गोदेवस्य धीमहि, धीयो यो नः प्रचोदयात्'' धर्मदास जी को जिन्दा बाबा ने बताया था कि इस मन्त्र से मोक्ष सम्भव नहीं। धर्मदास जी फिर आगे चला तो पता चला कि एक सन्त गुफा में रहता है। कई-कई दिन तक गुफा से नहीं निकलता है। उसके पास जाकर प्रश्न किया कि भगवान कैसे मिलता है? उत्तर मिला कि इन्द्रियों पर संयम रखो, इसी से परमात्मा मिल जाता है। नाम जाप से कुछ नहीं होता। खाण्ड (चीनी) कहने से मुँह मीठा नहीं होता। धर्मदास जी को सन्तोष नहीं हुआ। सब सन्तों से ज्ञान चर्चा करके धर्मदास जी को बहुत पश्चाताप हुआ कि मेरे को उस जिन्दा बाबा पर विश्वास नहीं हुआ कि उसने कहा था किसी भी सन्त महामण्डलेश्वर के पास यथार्थ अध्यात्म ज्ञान नहीं है। किसी भी सन्त महात्मा का ज्ञान प्रमाणित नहीं है। कोई शास्त्र का आधार नहीं है, तब धर्मदास रोने लगा। अपनी अज्ञानता पर पश्चाताप करने लगा कि मैं कैसा कलमुँहा हूँ अर्थात् बुरी किस्मत वाला हूँ। मुझे उस परमात्मास्वरुप जिन्दा महात्मा पर विश्वास नहीं आया। अब वह अन्तर्यामी मुझे नहीं मिलेगा क्योंकि मैंने कई बार उनका अपमान कर दिया। अब क्या करूँ, न जीने को मन करता है, आत्महत्या पाप है। बुरी तरह रोने लगा। पछाड़ खाकर अचेत हो गया।

परमात्मा जिन्दा महात्मा के रुप में एक वृक्ष के नीचे बैठ गए। धर्मदास जी सचेत हुआ और हृदय से पुकार की कि हे जिन्दा! एक बार दर्शन दे दो। मैं टूट चुका हूँ। किसी के पास ज्ञान नहीं है। आपकी सर्व बातें सत्य हैं। परमात्मा एक बार मुझ अज्ञानी महामूर्ख को क्षमा करो परमेश्वर। आप जिन्दा नहीं परमात्मा हो। आप महाविद्वान हो। आपके ज्ञान का कोई सामना करने वाला नहीं है। मैं जिन्दगी में कभी आप पर अविश्वास नहीं करुँगा। ऐसे विचार कर आगे चला तो देखा एक वृक्ष के नीचे एक साधु बैठा है, कुछ व्यक्ति उसके पास बैठे हैं। धर्मदास जी ने सोचा कि मैं तो उन महामण्डलेश्वरों से मिलकर आया हूँ। जिनके पास कई सैंकड़ों भक्त दर्शनार्थ बैठे रहते हैं। इस छोटे साधु से क्या मिलना? परन्तु अपने आप मन में आया कि कुछ देर विश्राम करना है, यहीं कर लेता हूँ। फिर सोचा कि प्रश्न करता हूँ। पूछाः- हे महात्मा! जी परमात्मा कैसा है? साधु ने उत्तर दिया कि मैं ही परमात्मा हूँ। धर्मदास जी चुप हो गए, सोचा यह तो मजाक कर रहा है। यह तो सन्त भी नहीं है। धीरे-धीरे सर्व व्यक्ति चले गए। जब धर्मदास जी चलने लगे परमात्मा बोले कि हे महात्मा! क्या आपके मण्डलेश्वरों ने नहीं बताया कि परमात्मा कैसा है? धर्मदास जी ने आश्चर्य से देखा कि इस साधु को कैसे पता कि मैं कहाँ-कहाँ भटका हूँ? उसी समय परमात्मा ने वही जिन्दा बाबा वाला रुप बना लिया। धर्मदास जी चरणों में गिरकर बिलख-बिलखकर रोने लगा तथा कहा कि हे भगवन! किसी के पास ज्ञान नहीं है। मुझ पापी अवगुण हारे को क्षमा करो महाराज! मैंने बड़ी भारी भूल की है। आपने सृष्टि रचना का ज्ञान जो बताया है, उसके सामने सर्व सन्त का ज्ञान ऐसा है जैसे सूरज के सामने दीपक, सब ऊवा-बाई बकते हैं। परमेश्वर ने धर्मदास

जी से कहा कि आपने जिन वेदों के पूर्ण विद्वान से प्रश्न किया था कि ''परमात्मा कैसा है? उत्तर मिला कि परमात्मा निराकार है। आपने प्रश्न किया था कि क्या परमात्मा देखा जा सकता है? उस अज्ञानी का उत्तर था कि ''जब परमात्मा निराकार है तो उसे देखने का प्रश्न ही नहीं है। परमात्मा का प्रकाश देखा जा सकता है।''

विचार करो धर्मदास! यह विचार तो ऐसे व्यक्ति के हैं जैसे किसी नेत्रहीन से कोई प्रश्न करे कि सूर्य कैसा है? उत्तर मिला कि सूर्य निराकार है। फिर प्रश्न किया कि क्या सूर्य को देखा जा सकता है? उत्तर मिले कि सूर्य को नहीं देखा जा सकता, सूर्य का प्रकाश देखा जाता है। उस नेत्रहीन से पूछें कि सूर्य बिना प्रकाश किसका देखा जा सकता है? इसी प्रकार अध्यात्म ज्ञान नेत्रहीन अर्थात् पूर्ण अज्ञानी सन्त ऐसी व्याख्या किया करते हैं कि परमात्मा तो निराकार है, उसका प्रकाश कैसे देखा जा सकता है? परमात्मा का ही तो प्रकाश होगा। धर्मदास जी ने कहा कि हे महात्मा जी! यह विचार तो मेरे दिमाग में भी नहीं आया। आप जी के दिव्य तर्क से मेरी आँखें खुल गई। जितने भी महामण्डलेश्वर मिले हैं, वे सर्व महाअज्ञानी मिले हैं। हे जिन्दा महात्मा जी! यदि मैं आपके ज्ञान को सुनने के पश्चात् यदि इन मूर्खों से नहीं मिलता तो मेरा भ्रम निवारण कभी नहीं होता, चाहे आप जी कितने ही प्रमाण दिखाते और बताते।

❖ राग आसावरी से शब्द नं. 78-80 :-

✯औधू शब्द अतीत सही करि, तातैं अमृत प्याला पी करि।।टेक।। रसना सेती चरचा कैसी, जब उनमन झर लागी। गावन धावन सब ही छूट्या, चीन्ह्या पद अनरागी।।1।। ज्ञान ध्यान दो रहे महोलै, लै की लपट जहूरा। सुरति निरति शून्य मंडल मेला, बाजैं अनहद तूरा।।2।। अक्षर धाम धरि डोरि दरीबै, जहां बिरहा बंग उदासी। मक्रतार महल में पैठे, जहां अठसिधि नौनिधि दासी।।3।। साखी शब्द कहें क्या होई, महरम नहीं महल का। अमृत प्याला पीया चाहै, भाव न जानैं खलि का।।4।। शब्द सिंध में लगी समाधी, आत्म तत दरसाया, गरीबदास जो बहुरि न आवै, अमर घर कबीर का पाया।।5।।78।। ✯भूले गुरुवा गरब न कीजै, तातैं पाहन कदे न रीझै।।टेक।। बाल मुकंदं बोलत नांही, लटक बिहारी लूटै। गुरुवा कै सिर मार परैगी, पैंडा कदे न छूटै।।1।। गुरुवा कै सिर फरुवा फोरौं, घर सें काढि घसीटौ। इसके मारै पाप नहीं है, या कूं निहचै पीटो।।2।। या देवल में देव नहीं है, पांन पतासे खाई। बिल्ली बीठि शीश परि कीन्हीं, कुतरे धार चलाई।।3।। बिल्ली देव बिडारत नाहीं, मूरति में कुछि खोरी। या देवा में अजमति नाहीं, कुतरे की टांग न तोरी।।4।। मूरति कै नहीं श्रवन चिसमें, गुरुवा घंट बजावै। खीर खांड का भोजन धरि कै, आपन ही गुटकावै।।5।। बैरागर की परख नहीं रे, पाहन गांटी बांधे। या गुरुवा कै लीतर लावौ, ये गुरुवा सब आंधे।।6।। जड़ कै आगै चेतन नाचै, अंधे कूदैं गावैं, गरीबदास इस पूजा सेती, नर पत्थर हो जावै।।7।।79।। ✯गुरुवा गाम बिगारे संतो, गुरुवा गाम बिगारे। ऐसे कर्म जीव कै लाये, बहुरि झरैं नहीं झारे।।टेक।। पाहन कूं परेश्वर कहते, या निंद्या बड़ भारी। या की मो कूं समझ न परहीं, पूजा करी क गारी।।1।। जोहड़ का जल भरि करि ल्याये, चरनांमृत ठहराये। जड़ के चरण धोय करि दीन्हें, चेतन कूं फिरि प्याये।।2।। दस लख जंत जीव ज उपजैं, यौह चरणामृत नांही। या में छोति घनेरी पांडे, समझि देखि मन मांही।।3।। शालिग शिला धोय करि पीये सें हिरदा पत्थर होई। चरण कमल में

चरणामृत है, जिस पीवत नहीं कोई।।4।। कउवा मच्छ मीन जल पीया, बिसटा कीन्हीं मांही। गुरुवा कै तो गारा लाया, जुग जुग छूटै नांही।।5।। भरम बिधूसन शब्द हमारा, कोई गावै कोई रोवै। पांडे कूं तौ परख नहीं है, कीचड़ि महमूदी धोवै।।6।। शालिग शिला गांठि में बांधे, तीरथ चले पराधी। समझ न परै परख नहीं आवै, बड़े ज्ञान के बादी।।7।। भैंरौं भूत मसांनी पूजे, दुरगा देबी ध्यावैं। ऊती कै तौ तबही बाजैं, बकरै आंनि कटावैं।।8।। भेड़ पूंछ कूं पंडित पकरैं, भादौं नदी बिहंगा। गरीबदास वै भौजल बूड़े, नहीं साध सतसंगा।।9।।80।।

प्रश्न (धर्मदास) :- हे जिन्दा! आप नाराज न होना। मेरे मन में एक शंका है कि क्या भगवान विष्णु जी की भक्ति अच्छी नहीं?

उत्तर (जिन्दा महात्मा जी का) :- हे धर्मदास! श्रीमद् भगवत् गीता अध्याय 2 श्लोक 46 में प्रमाण है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा हे अर्जुन! बहुत बड़े जलाशय (झील) की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय में व्यक्ति का कितना प्रयोजन रह जाता है। इसी प्रकार पूर्ण ज्ञान और पूर्ण परमात्मा की भक्ति विधि व होने वाले लाभ का ज्ञान होने के पश्चात् अन्य ज्ञानों तथा छोटे भगवानों में उतनी ही आस्था रह जाती है जितनी बड़े जलाशय की प्राप्ति के पश्चात् छोटे जलाशय में रह जाती है। छोटे जलाशय का जल अच्छा है, परन्तु पर्याप्त नहीं है। यदि एक वर्ष वर्षा न हो तो छोटे जलाशय का जल सूख जाता है तथा उस पर आश्रित व्यक्ति भी जल के अभाव से कष्ट उठाते हैं, त्राहि-त्राहि मच जाती है। परन्तु बड़े जलाशय (झील) का जल यदि 10 वर्ष भी वर्षा न हो तो भी समाप्त नहीं होता। जिस व्यक्ति को वह बड़ा जलाशय मिल जाएगा तो वह तुरन्त छोटे जलाशय (जोहड़ = तालाब) को छोड़कर बड़े जलाशय के किनारे जा बसेगा। जिस समय गीता ज्ञान सुनाया गया, उस समय सर्व व्यक्ति तालाबों के जल पर ही आश्रित थे। इसलिए यह उदाहरण दिया था, इसी प्रकार श्री विष्णु सतगुण की भक्ति भले ही अच्छी है, परन्तु पूर्ण मोक्षदायक नहीं है। श्री विष्णु जी भी नाशवान हैं। इनका भी जन्म-मत्यु होता है। फिर साधक अमर कैसे हो सकता है? इसलिए पूर्ण मोक्ष अर्थात् अमर होने के लिए अमर परमात्मा की ही भक्ति करनी पड़ेगी।

प्रश्न :- हे जिन्दा महात्मा जी! मैंने आपके ऊपर अविश्वास किया। मैं महापापी हूँ मुझे क्षमा करना।

उत्तर (जिन्दा बाबा जी का) :- हे धर्मदास! मैंने ही आपके मन में यह प्रेरणा की थी। यदि आप उन अपने धर्मगुरुओं की तलाशी न लेते तो आप कभी मेरी बातों पर विश्वास नहीं करते। रह-रहकर तेरे मन को यही बात कचोटती रहती कि ऐसा नहीं हो सकता कि हिन्दु धर्म के किसी महर्षि मण्डलेश्वर व सन्त-महन्त को तत्त्वज्ञान नहीं। अब आप मेरी बातों पर विश्वास करोगे। विचार करो धर्मदास! जब गीता ज्ञान दाता गीता अध्याय 4 श्लोक 32 व 34 में कहता है कि जो ज्ञान परम अक्षर ब्रह्म (परमेश्वर) अपने मुख से सुनाता है, वह तत्त्वज्ञान है। (गीता अध्याय 4 श्लोक 32) उस ज्ञान को तू तत्त्वदर्शी सन्तों के पास जाकर समझ। (गीता अध्याय 4 श्लोक 34) इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान देने वाले परमात्मा को ही तत्त्वज्ञान नहीं तो गीता पाठकों व इन प्रभु के उपासकों को ज्ञान कैसे हो सकता है?

गीता अध्याय 2 श्लोक 53 में कहा कि हे अर्जुन! भिन्न-भिन्न प्रकार से भ्रमित करने वाले

वचनों से हटकर तेरी बुद्धि एक तत्त्वज्ञान पर स्थिर हो जाएगी, तब तो तू योग (भक्ति) को प्राप्त होगा। भावार्थ है कि तब तू भक्त बनेगा। इसलिए मैंने धर्मदास तेरे को उन सन्तों-मण्डलेश्वरों के पास जाने के लिए प्रेरित किया था। अब तू योग को प्राप्त होगा। भक्त बन सकेगा।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- क्या पूर्ण मोक्ष के लिए भगवान विष्णु जी तथा भगवान शंकर जी की पूजा को छोड़ना पड़ेगा?

उत्तर (जिन्दा बाबा जी का) :- इन प्रभुओं को नहीं छोड़ना, इनकी पूजा छोड़नी होगी।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! मैं समझा नहीं। इन विष्णु और शंकर प्रभुओं को नहीं छोड़ना और पूजा छोड़नी पड़ेगी। मेरी संकीर्ण बुद्धि है। मैं महाअज्ञानी प्राणी हूँ। कृप्या विस्तार से बताने (समझाने) की कृपा करें।

उत्तर :- (जिन्दा महात्मा जी का) : हे धर्मदास जी! आप इनकी साधना शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहे हो। जिससे आपजी को लाभ नहीं मिल रहा। इन देवताओं से लाभ लेने के साधना के मन्त्र मेरे पास हैं। जैसे भैंसा है, उसको भैंसा-भैंसा करते रहो, वह आपकी ओर नहीं देखेगा। उसका एक विशेष मन्त्र हुर्र-हुर्र, उसको सुनते ही वह तुरंत प्रभावित होता है और आवाज लगाने वाले की ओर खींचा चला आता है। इसी प्रकार इन सर्व आदरणीय देवताओं के निज मन्त्र हैं। जिनसे वे पूर्ण लाभ तथा तुरंत लाभ देते हैं। प्रिय पाठको! वही मन्त्र मेरे पास (संत रामपाल दास के पास) हैं जो परमेश्वर जी ने गुरू जी के माध्यम से मुझे दिए हैं, आओ और प्राप्त करो।

जैसा कि आपको पूर्व में प्रश्नों के उत्तर में बताया था कि यह संसार एक वृक्ष जानो। परम अक्षर पुरुष इसकी जड़ें मानो, अक्षर पुरुष तना जानो, क्षर पुरुष मोटी डार तथा तीनों देवता (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) इस संसार रुपी वृक्ष की शाखाऐं जानों और पात रुप संसार।

यदि आप कहीं से आम का पौधा लेकर आए हो तो गढ़्ढ़ा खोदकर उसकी जड़ों को उस गढ़्ढ़े में मिट्टी में दबाओगे और जड़ों की सिंचाई करोगे। तब वह आम का पेड़ बनेगा और उस वृक्ष की शाखाओं को फल लगेंगे। इसलिए वृक्ष की शाखाओं को तोड़ा नहीं जा सकता। परन्तु इनको जड़ के स्थान पर गढ़्ढ़े में मिट्टी में दबाकर इनकी सिंचाई नहीं की जाती। ठीक इसी प्रकार संसार रुपी वृक्ष की जड़ अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को ईष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके पूजा करने से शास्त्रानुकूल साधना होती है जो परम लाभ देने वाली होती है। इस प्रकार किए गए भक्ति कर्मों का फल यही तीनों देवता (संसार वृक्ष की शाखाऐं) ही कर्मानुसार प्रदान करते हैं। इसलिए इनकी पूजा छोड़नी होती है। लेकिन इनको छोड़ा (तोड़ा) नहीं जा सकता। यही प्रमाण श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 3 श्लोक 8 से 15 तक में भी है। कहा है कि हे अर्जुन! तू शास्त्रविहित कर्म कर अर्थात् शास्त्रों में जैसे भक्ति करने को कहा है, वैसा भक्ति कार्य कर। यदि घर त्यागकर जंगलों में चला गया अर्थात् तू कर्म सन्यासी हो गया या एक स्थान पर बैठकर हठपूर्वक साधना करने लगेगा तो तेरा शरीर पोषण का निर्वाह भी नहीं होगा। इसलिए कर्म न करने की अपेक्षा कर्म करते-करते भक्ति

कर्म करना श्रेष्ठ है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 8)

❖ जो साधक शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करते हैं अर्थात् शास्त्रानुकूल भक्ति कर्मों के अतिरिक्त दूसरे कर्मों में लगा हुआ मनुष्य समुदाय कर्मों के बन्धन में बंधकर जन्म-मरण के चक्र में सदा रहता है। इसलिए हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! शास्त्रविरुद्ध भक्ति कर्म जो कर रहा है, उससे आसक्ति रहित होकर शास्त्रानुकूल भक्ति कर्म कर। (गीता अध्याय 3 श्लोक 9)

❖ संसार की रचना करके प्रजापति (कुल के मालिक) ने सर्व प्रथम मनुष्यों की रचना करके साथ-साथ यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों की जानकारी का ज्ञान देते हुए इनसे कहा था कि तुम लोग इस तरह बताए शास्त्रानुकूल कर्मों द्वारा वृद्धि को प्राप्त होओ। इस प्रकार शास्त्रानुकूल की गई भक्ति तुम लोगों को इच्छित भोग प्राप्त कराने वाली हो। (गीता अध्याय 3 श्लोक 10)

❖ इस प्रकार शास्त्रानुकूल भक्ति द्वारा अर्थात् संसार रुपी वृक्ष की जड़ों (मूल अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म) की सिंचाई अर्थात् पूजा करके देवताओं अर्थात् संसार रुपी वृक्ष की तीनों गुण रुपी शाखाओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) को उन्नत करो। वे देवता (संसार वृक्ष की शाखा तीनों देवता) आपको कर्मानुसार फल देकर उन्नत करें। इस प्रकार एक-दूसरे से उन्नत करके परम कल्याण अर्थात् पूर्णमोक्ष को प्राप्त हो जाओगे (गीता अध्याय 3 श्लोक 11)

❖ शास्त्रविधि अनुसार किए गए भक्ति कर्मों अर्थात् यज्ञों द्वारा बढ़ाए हुए देवता अर्थात् संसार रुपी वृक्ष की जड़ अर्थात् मूल मालिक (परम अक्षर ब्रह्म) को ईष्ट रुप में प्रतिष्ठित करके भक्ति कर्म से बढ़ी हुई शाखाएं (तीनों देवता) तुम लोगों को बिना माँगे ही कर्मानुसार इच्छित भोग निश्चय ही देते रहेंगे। जैसे आम के पौधे की जड़ की सिंचाई करने से पेड़ बनकर शाखाएं उन्नत हो गई। फिर उन शाखाओं को अपने आप फल लगेंगे। झड़-झड़कर गिरेंगे, व्यक्ति को जो कर्मानुसार धन प्राप्त होता है, वह उपरोक्त विधि से होता है। यदि कोई व्यक्ति उन देवताओं (शाखाओं) द्वारा दिए धन में से पुनः दान-पुण्य नहीं करता अर्थात् जो पुनः शास्त्रानुकूल साधना नहीं करता, केवल अपना ही पेट भरता है, स्वयं ही भोगता रहता है। वह तो परमात्मा का चोर ही है। (गीता अध्याय 3 श्लोक 12)

❖ शास्त्रानुकूल भक्ति की विधि में सर्वप्रथम परमात्मा को भोग लगाया जाता है। भण्डारा करना होता है। पहले परम अक्षर ब्रह्म को ईष्ट रुप में पूजकर भोग लगाकर शेष भोजन को भक्तों में बाँटा जाता है। उस बचे हुए अन्न को सत्संग में उपस्थित अच्छी आत्माएं ही खाती हैं क्योंकि पुण्यात्माएं ही परमात्मा के लिए समय निकालकर धार्मिक अनुष्ठानों में शामिल होते हैं। इसलिए कहा है कि उस यज्ञ से बचे हुए अन्न को खाने वाले सन्तजन सब पापों से मुक्त हो जाते हैं। जो पापी लोग होते हैं, जो तत्त्वदर्शी सन्त के सत्संग में नहीं जाते, उनको ज्ञान नहीं होता। वे पापात्मा अपना शरीर पोषण करने के लिए ही भोजन पकाते हैं, वे तो पाप को ही खाते हैं क्योंकि भोजन खाने से पहले हम भक्त-सन्त सब परम अक्षर ब्रह्म को भोग लगाते हैं। जिस से सारा भोजन पवित्र प्रसाद बन जाता है, जो ऐसा नहीं करते,

वे परमात्मा के चोर हैं। भगवान को भोग न लगा हुआ भोजन पाप का भोजन होता है। इसलिए कहा है जो धर्म-कर्म शास्त्रानुकूल नहीं करते, वे पाप के भागी होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 13)

❖ सम्पूर्ण प्राणी अन्न से उत्पन्न होते हैं। अन्न वर्षा से होता है। वर्षा यज्ञ अर्थात् शास्त्रानुकूल धार्मिक अनुष्ठान से होती है। यज्ञ अर्थात् धार्मिक अनुष्ठान शास्त्रानुकूल कर्मों से होते हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 14)

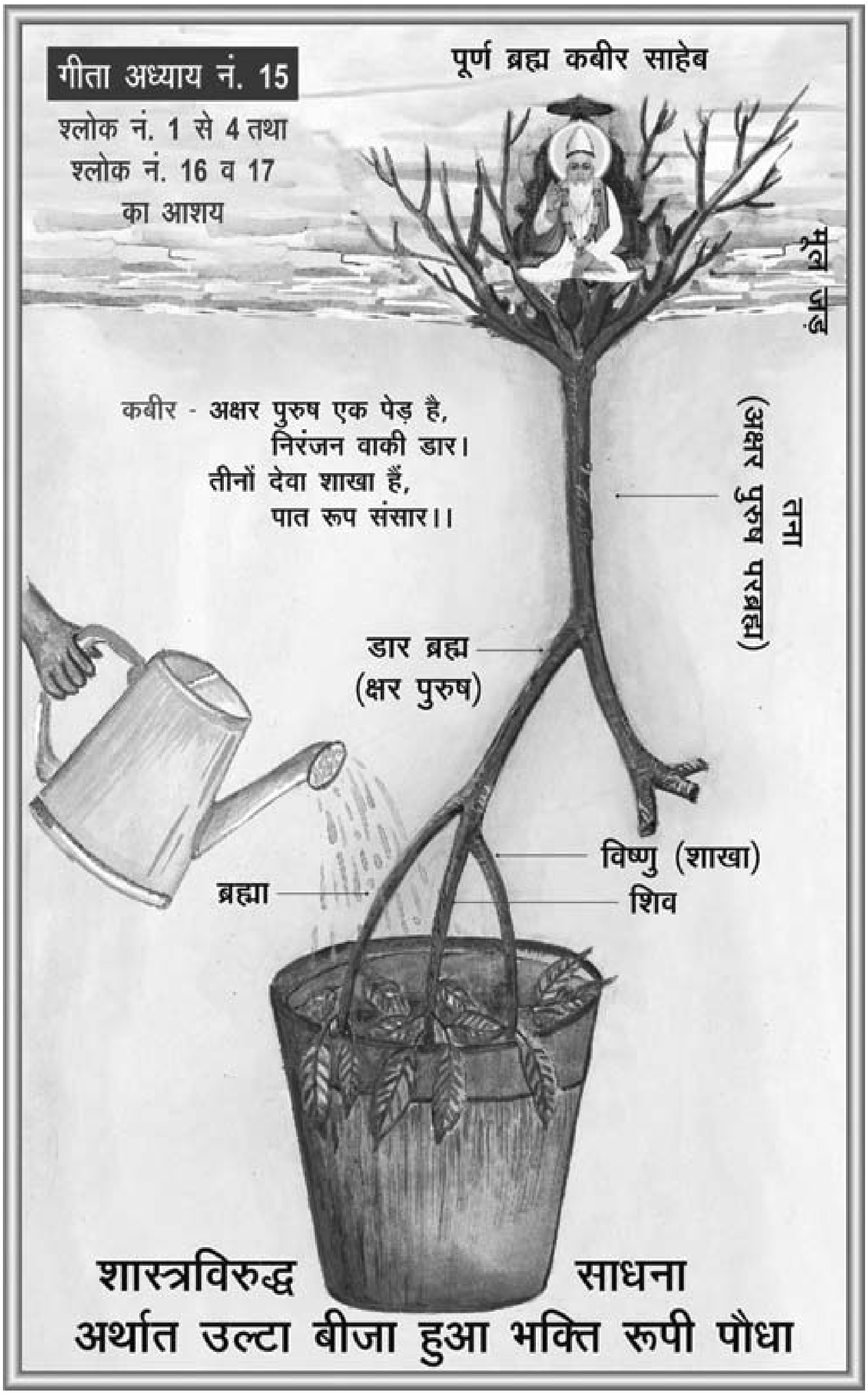
❖ कर्म तो ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष से उत्पन्न हुए हैं क्योंकि जहाँ सर्व प्राणी सनातन परम धाम में रहते थे। वहाँ पर बिना कर्म किए सर्व सुख व पदार्थ उपलब्ध थे। यहाँ के सर्व प्राणी अपनी गलती से क्षर पुरुष के साथ आ गए। अब सबको कर्म का फल ही प्राप्त होता है। कर्म करके ही निर्वाह होता है। इसलिए कहा है कि कर्म को ब्रह्म (क्षर पुरुष) से उत्पन्न जान और ब्रह्म को अविनाशी परमात्मा से उत्पन्न जान। (अधिक जानकारी के लिए पढ़ें संष्टि रचना इसी पुस्तक के पंष्ठ नं. 518 पर।)

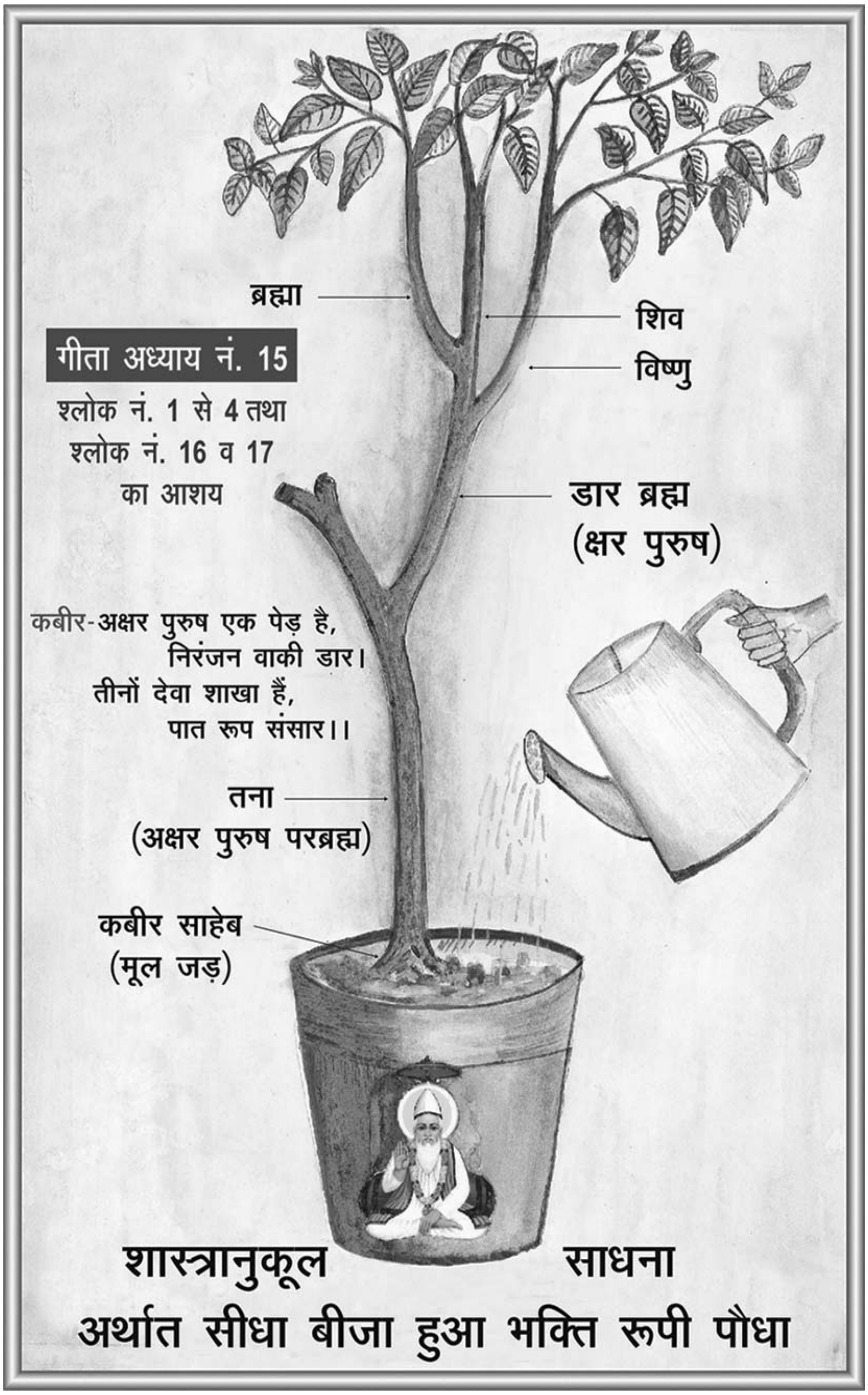
(नोट : इस श्लोक में ''अक्षर'' शब्द का अर्थ अविनाशी परमात्मा ठीक है। परन्तु जहाँ क्षर पुरुष, अक्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष का वर्णन है, वहाँ अक्षर पुरुष व क्षर पुरुष दोनों नाशवान कहे हैं। वहाँ पर अक्षर का अर्थ वही ठीक है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में वर्णन है, यहाँ 'अक्षर' का अर्थ अविनाशी परमात्मा है क्योंकि संष्टि रचना से स्पष्ट होता है कि ब्रह्म की उत्पत्ति सत्यपुरुष (अविनाशी परमात्मा) ने की थी।) इससे सिद्ध हुआ कि (सर्वगतम् ब्रह्म) अर्थात् जिस परमात्मा की पहुँच सर्व ब्रह्माण्डों में है, जो सर्व का मालिक है, वह परमात्मा सदा ही यज्ञों अर्थात् धार्मिक अनुष्ठानों में प्रतिष्ठित है। भावार्थ है कि परम अक्षर ब्रह्म को ईष्टदेव रुप में प्रतिष्ठित करके धार्मिक अनुष्ठान अर्थात् यज्ञ करने से शास्त्रविधि अनुसार कर्म करने से साधक को भक्ति लाभ मिलता है, जिससे मोक्ष प्राप्त होता है। देखें संसार रुपी पौधे का चित्र इसी पुस्तक के पंष्ठ 407 पर।

देखें यह चित्र पंष्ठ 406 पर, इसमें पौधे की शाखाओं को गढ्ढ़े में जमीन में लगाकर दिखाया गया है कि जो तीनों देवों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु, तमगुण शिव) में से किसी की भी पूजा करता है, वह शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण कर रहा है जो गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में अनुचित तथा व्यर्थ बताया है। जिसने सर्वगतम् ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म की पूजा नहीं की, उसको ईष्ट रुप में नहीं पूजा, जिस कारण से उस साधक की साधना व्यर्थ है। शाखाओं को सींचने से पौधा नष्ट हो जाता है। अन्य देवताओं की पूजा करना गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20-23 तथा गीता अध्याय 9 श्लोक 20 से 23 में मना किया हुआ है।

''देखें यह चित्र'' इसी पुस्तक के पंष्ठ 407 पर सीधा लगाया गया पौधा जो शास्त्रविधि अनुसार साधना है, यही मोक्षदायक है। यही प्रमाण गीता ग्रन्थ में है।

इसलिए हे धर्मदास! श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिवजी को नहीं छोड़ना है। इनकी पूजा ईष्ट रुप में करते हो, वह छोड़नी है। तभी भक्त का पूर्ण मोक्ष सम्भव है।


गीता अध्याय नं. 15
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
पूर्ण ब्रह्म कबीर साहेब
मूल जड़
कबीर - अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
विष्णु (शाखा)
ब्रह्मा
शिव
शास्त्रविरुद्ध साधना
अर्थात उल्टा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा


ब्रह्मा
शिव
गीता अध्याय नं. 15
विष्णु
श्लोक नं. 1 से 4 तथा
श्लोक नं. 16 व 17
का आशय
डार ब्रह्म
(क्षर पुरुष)
कबीर-अक्षर पुरुष एक पेड़ है,
निरंजन वाकी डार।
तीनों देवा शाखा हैं,
पात रूप संसार।।
तना
(अक्षर पुरुष परब्रह्म)
कबीर साहेब
(मूल जड़)
शास्त्रानुकूल साधना
अर्थात सीधा बीजा हुआ भक्ति रूपी पौधा

प्रश्न :- (धर्मदास जी का): हे जिन्दा! आप जी ने तीनों देवताओं (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति करने वालों की दशा तो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15, 20 से 23 तथा अध्याय 9 श्लोक 23 में प्रत्यक्ष प्रमाणित कर दिया कि तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) की भक्ति करने वाले राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच, दूषित कर्म करने वाले मूर्ख मुझ (गीता ज्ञान दाता ब्रह्म) को भी नहीं भजते। अन्य देवताओं की भक्ति पूजा करने वालों का सुख समय (स्वर्ग समय) क्षणिक होता है। स्वर्ग की प्राप्ति करके शीघ्र ही पृथ्वी पर जन्म धारण करते हैं। हे महात्मा जी! कृपया कोई संसार में हुए बर्ताव से ऐसा प्रकरण सुनाइए जिससे आप जी की बताई बातों की सत्यता का प्रमाण मिले।

उत्तर :- (जिन्दा जगदीश का) :- 1. रजगुण ब्रह्मा के उपासकों का चरित्र : एक हिरण्यकश्यप ब्राह्मण राजा था। किसी कारण उसको भगवान विष्णु (सतगुण) से ईर्ष्या हो गई। उस राजा ने रजगुण ब्रह्मा जी देवता को भक्ति करके प्रसन्न किया। ब्रह्मा जी ने कहा कि पुजारी! माँगो क्या माँगना चाहते हो? हिरण्यकश्यप ने माँगा कि सुबह मरूँ न शाम मरूँ, बाहर मरूँ न भीतर मरूँ, दिन मरूँ न रात मरूँ, बारह मास में न मरूँ, न आकाश में मरूँ, न धरती पर मरूँ। ब्रह्माजी ने कहा तथास्तु। इसके पश्चात् हिरण्यकश्यप ने अपने आपको अमर मान लिया और अपना नाम जाप करने को कहने लगा। जो विष्णु का नाम जपता, उसको मार देता। उसका पुत्र प्रहलाद विष्णु जी की भक्ति करता था। उसको कितना सताया था। हे धर्मदास! कथा से तो आप परिचित हैं। भावार्थ है कि रजगुण ब्रह्मा का भक्त राक्षस कहलाया, कुत्ते वाली मौत मारा गया।

2. तमगुण शिवजी के उपासकों का चरित्र : लंका के राजा रावण ने तमगुण शिव की भक्ति की थी। उसने अपनी शक्ति से 33 करोड़ देवताओं को कैद कर रखा था। फिर देवी सीता का अपहरण कर लिया। इसका क्या हश्र हुआ, आप सब जानते हैं। तमगुण शिव का उपासक रावण राक्षस कहलाया, सर्वनाश हुआ। निंदा का पात्र बना।

❖ अन्य उदाहरण :- आप जी को भस्मासुर की कथा का तो ज्ञान है ही। भगवान शिव (तमोगुण) की भक्ति भस्मागिरी करता था। वह बारह वर्षों तक शिव जी के द्वार के सामने ऊपर को पैर नीचे को सिर (शीर्षासन) करके भक्ति तपस्या करता रहा। एक दिन पार्वती जी ने कहा हे महादेव! आप तो समर्थ हैं। आपका भक्त क्या माँगता है? इसे प्रदान करो प्रभु। भगवान शिव ने भस्मागिरी से पूछा बोलो भक्त क्या माँगना चाहते हो। मैं तुझ पर अति प्रसन्न हूँ। भस्मागिरी ने कहा कि पहले वचनबद्ध हो जाओ, तब माँगूंगा। भगवान शिव वचनबद्ध हो गए। तब भस्मागिरी ने कहा कि आपके पास जो भस्मकण्डा(भस्मकड़ा) है, वह मुझे प्रदान करो। शिव प्रभु ने वह भस्मकण्डा भस्मागिरी को दे दिया। कड़ा हाथ में आते ही भस्मागिरी ने कहा कि होजा शिवजी होशियार! तेरे को भस्म करुँगा तथा पार्वती को पत्नी बनाउँगा। यह कहकर अभद्र ढ़ंग से हँसा तथा शिवजी को मारने के लिए उनकी ओर दौड़ा। भगवान शिव उस दुष्ट का उद्देश्य जानकर भाग निकले। पीछे-पीछे पुजारी आगे-आगे ईष्टदेव शिवजी (तमगुण) भागे जा रहे थे।

विचार करें धर्मदास! यदि आपके देव शिव जी अविनाशी होते तो मत्यु के भय से नहीं डरते। आप इनको अविनाशी कहा करते थे। आप इन्हें अन्तर्यामी भी कहते थे। यदि भगवान शिव अन्तर्यामी होते तो पहले ही भस्मागिरी के मन के गन्दे विचार जान लेते। इससे सिद्ध हुआ कि ये तो अन्तर्यामी भी नहीं हैं।

जिस समय भगवान शिव जी आगे-आगे और भस्मागिरी पीछे-पीछे भागे जा रहे थे, उस समय भगवान शिव ने अपनी रक्षा के लिए परमेश्वर को पुकारा। उसी समय ''परम अक्षर ब्रह्म'' जी पार्वती का रुप बनाकर भस्मागिरी दुष्ट के सामने खड़े हो गए तथा कहा हे भस्मागिरी! आ मेरे पास बैठ। भस्मागिरी को पता था कि अब शिवजी निकट स्थान पर नहीं रुकेंगे। भस्मागिरी तो पार्वती के लिए ही तो सर्व उपद्रव कर रहा था। हे धर्मदास! आपको सर्व कथा का पता है। पार्वती रुप में परमात्मा ने भस्मागिरी को गण्डहथ नाच नचाकर भस्म किया। तमोगुण शिव का पुजारी भस्मागिरी अपने गन्दे कर्म से भस्मासुर अर्थात् भस्मा राक्षस कहलाया।

इसलिए इन तीनों देवों के पुजारियों को राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

3. अब सतगुण श्री विष्णु जी के पुजारियों की कथा सुनाता हूँ।

❖ एक समय हरिद्वार में हर की पोड़ियों पर कुंभ का मेला लगा। उस अवसर पर तीनों गुणों के उपासक अपने-अपने समुदाय में एकत्रित हो जाते है। गिरी, पुरी, नागा-नाथ ये भगवान तमोगुण शिव के उपासक होते हैं तथा वैष्णव सतगुण भगवान विष्णु जी के उपासक होते हैं। हर की पोड़ियों पर प्रथम स्नान करने पर दो समुदायों ''नागा तथा वैष्णवों'' का झगड़ा हो गया। लगभग 25 हजार त्रिगुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) के पुजारी लड़कर मर गये, कत्लेआम कर दिया। तलवारों, छुरों, कटारी से एक-दूसरे की जान ले ली। सुक्ष्मवेद में कहा है कि:-

तीर तुपक तलवार कटारी, जमधड़ जोर बधावैं हैं।
हर पैड़ी हर हेत नहीं जाना, वहाँ जा तेग चलावैं हैं।।
काटैं शीश नहीं दिल करुणा, जग में साध कहावैं हैं।
जो जन इनके दर्शन कूं जावैं, उनको भी नरक पठावैं हैं।।

हे धर्मदास! उपरोक्त सत्य घटनाओं से सिद्ध हुआ कि रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी की पूजा करने वालों को गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 में राक्षस स्वभाव को धारण किए हुए मनुष्यों में नीच दूषित कर्म करने वाले मूर्ख कहा है।

❖ परमेश्वर जिन्दा जी के मुख कमल से उपरोक्त कथा सुनकर धर्मदास जी का सिर फटने को हो गया। चक्कर आने लगे। हिम्मत करके धर्मदास बोला हे प्रभु! आपने तो मुझ ज्ञान के अँधे को आँखें दे दी दाता। उपरोक्त सर्व कथायें हम सुना तथा पढ़ा करते थे परन्तु कभी विचार नहीं आया कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं। आपका सौ-सौ बार धन्यवाद। आप जी ने मुझ पापी को नरक से निकाल दिया प्रभु!

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) : हे जिन्दा महात्मा! आपने बताया और गीता अध्याय 7

श्लोक 18 में मैंने भी आँखों देखा जिसमें गीता ज्ञान दाता ब्रह्म ने अपनी साधना से होने वाली गति को अनुत्तम अर्थात् घटिया बताया है। उसको भी इसी तरह स्पष्ट करने की कपया करें। कोई कथा प्रसंग सुनाएं।

उत्तर :- (जिन्दा बाबा वेशधारी परमेश्वर का) :

❖ गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने कहा है कि हे अर्जुन! मेरे और तेरे बहुत से जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता मैं जानता हूं। श्रीमद्भगवत् गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्त्वदर्शी सन्त से तत्त्वज्ञान प्राप्त करके परमेश्वर के उस परमपद की खोज करनी चाहिए, जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर फिर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर से संसार रुपी वक्ष की प्रवत्ति विस्तार को प्राप्त हुई है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सर्व संसार की उत्पत्ति की है। उसी परमेश्वर की भक्ति कर। फिर गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने कहा कि हे अर्जुन! तू सर्वभाव से उस परमेश्वर की शरण में जा, उस परमेश्वर की कपा से ही तू परमशांति तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा। हे धर्मदास! जब तक जन्म-मरण रहेगा, तब तक परमशान्ति नहीं हो सकती और न ही सनातन परम धाम प्राप्त हो सकता। वास्तव में परमगति उसको कहते हैं जिसमें जन्म-मरण सदा के लिए समाप्त हो जाए जो ब्रह्म साधना से कभी नहीं हो सकती। इसलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने बताया है कि जो ज्ञानी आत्मा हैं, मेरे विचार में सब नेक हैं। परन्तु वे सब मेरी अनुत्तम (घटिया) गति में ही लीन हैं क्योंकि वे मेरी (ब्रह्म की) भक्ति कर रहे हैं। ब्रह्म की साधना का ''ॐ'' मन्त्र है। इससे ब्रह्म लोक प्राप्त होता है। गीता अध्याय 8 श्लोक 16 में स्पष्ट है कि ब्रह्मलोक में गए हुए साधक भी पुनः लौटकर संसार में आते हैं। इसलिए उनको परमशान्ति नहीं हो सकती, सनातन परम धाम प्राप्त नहीं हो सकता। वेदों में वर्णित साधना से परमात्मा प्राप्ति नहीं होती। कुछ सिद्धियाँ प्राप्त हो जाती हैं जिनके द्वारा ऋषिजन चमत्कार करके किसी को हानि करके प्रसिद्ध हो जाते हैं। अंत में पाप के भागी होकर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में कष्ट उठाते रहते हैं। इसलिए ब्रह्म साधना से होने वाली गति अर्थात् उपलब्धि अनुत्तम (घटिया) कही है।

❖ कथा प्रसंग : गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने गीता अध्याय 7 श्लोक 16-17 में बताया है कि मेरी भक्ति चार प्रकार के भक्त करते हैं - 1. आर्त (संकट निवारण के लिए) 2. अर्थार्थी (धन लाभ के लिए), 3. जिज्ञासु (जो ज्ञान प्राप्त करके वक्ता बन जाते हैं) और 4. ज्ञानी (केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए भक्ति करने वाले)। इनमें से तीन को छोड़कर चौथे ज्ञानी को अपना पक्का भक्त गीता ज्ञान दाता ने बताया है।

❖ ज्ञानी की विशेषता :- ज्ञानी वह होता है जिसने जान लिया है कि मनुष्य जीवन केवल मोक्ष प्राप्ति के लिए ही प्राप्त होता है। उसको यह भी ज्ञान होता है कि पूर्ण मोक्ष के लिए केवल एक परमात्मा की भक्ति करनी चाहिए। अन्य देवताओं (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी तथा तमगुण शिवजी) की भक्ति से पूर्ण मोक्ष नहीं होता। उन ज्ञानी आत्माओं को गीता अध्याय 4 श्लोक 34 तथा यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में वर्णित

तत्त्वदर्शी सन्त न मिलने के कारण उन्होंने वेदों से स्वयं निष्कर्ष निकाल लिया कि ''ब्रह्म'' समर्थ परमात्मा है, ओम् (ॐ) इसकी भक्ति का मन्त्र है। इस साधना से ब्रह्मलोक प्राप्त हो जाता है। यही मोक्ष है।

ज्ञानी आत्माओं ने परमात्मा प्राप्ति के लिए हठयोग किया। एक स्थान पर बैठकर घोर तप किया तथा ओम् (ॐ) नाम का जाप किया। जबकि वेदों व गीता में हठ करने, घोर तप करने वाले मूर्ख दम्भी तथा राक्षस बताए हैं। (गीता अध्याय 3 श्लोक 4 से 9 तथा गीता अध्याय 17 श्लोक 1 से 6)। इनको हठयोग करने की प्रेरणा कहाँ से हुई? श्री देवीपुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप) के तीसरे स्कंद में लिखा है कि ब्रह्मा जी ने अपने पुत्र नारद को बताया कि जिस समय मेरी उत्पत्ति हुई, मैं कमल के फूल पर बैठा था। आकाशवाणी हुई कि तप करो-तप करो। मैंने एक हजार वर्ष तक तप किया।

हे धर्मदास! ब्रह्माजी को वेद तो बाद में सागर मन्थन में मिले थे। उनको पढ़ा तो यजुर्वेद अध्याय 40 के मन्त्र 15 में 'ओम्'' नाम मिला। उसका जाप तथा आकाशवाणी से सुना हठयोग (घोर तप) दोनों मिलाकर ब्रह्मा जी स्वयं करने लगे तथा अपनी सन्तानों (ऋषियों) को बताया। वही साधना ज्ञानी आत्मा ऋषिजन करने लगे। उन ज्ञानी आत्माओं में से एक चुणक ऋषि का प्रसंग सुनाता हूँ जिससे आपके प्रश्न का सटीक उत्तर मिल जाएगाः- एक चुणक नाम का ऋषि था। उसने हजारों वर्षों तक घोर तप किया तथा ओम् (ॐ) नाम का जाप किया। यह ब्रह्म की भक्ति है। ब्रह्म ने प्रतिज्ञा कर रखी है कि मैं किसी साधना यानि न जप से, न तप से, न वेदों में वर्णित यज्ञों से मेरे स्वरूप के दर्शन हो नहीं सकते अर्थात् किसी को भी दर्शन नहीं दूँगा। गीता अध्याय 11 श्लोक 48 में कहा है कि हे अर्जुन! तूने मेरे जिस रुप के दर्शन किए अर्थात् मेरा यह काल रुप देखा, यह मेरा स्वरुप है। इसको न तो वेदों में वर्णित विधि से देखा जा सकता, न किसी जप से, न तप से, न यज्ञ से तथा न किसी क्रिया से देखा जा सकता। गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25 में स्पष्ट किया है कि यह मेरा अविनाशी विधान है कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अपनी योग माया से छिपा रहता हूँ। ये मूर्ख लोग मुझे मनुष्य रूप अर्थात् कृष्ण रूप में मान रहे हैं। जो सामने सेना खड़ी थी, उसकी ओर संकेत करके गीता ज्ञान दाता कह रहा था। कहने का भाव था कि मैं कभी किसी को दर्शन नहीं देता, अब तेरे ऊपर अनुग्रह करके यह अपना रूप दिखाया है।

भावार्थ :- वेदों में वर्णित विधि से तथा अन्य प्रचलित क्रियाओं से ब्रह्म प्राप्ति नहीं है। इसलिए उस चुणक ऋषि को परमात्मा प्राप्ति तो हुई नहीं, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। ऋषियों ने उसी को भक्ति की अन्तिम उपलब्धि मान लिया। जिसके पास अधिक सिद्धियाँ होती थी, वह अन्य ऋषियों से श्रेष्ठ माना जाने लगा। यही उपलब्धि चुणक ऋषि को प्राप्त थी।

एक मानधाता चक्रवर्ती राजा (जिसका राज्य पूरी पृथ्वी पर हो, ऐसा शक्तिशाली राजा) था। उसके पास 72 अक्षौहिणी सेना थी। राजा ने अपने आधीन राजाओं को कहा कि जिसको मेरी पराधीनता स्वीकार नहीं, वे मेरे साथ युद्ध करें, एक घोड़े के गले में एक पत्र बाँध दिया कि जिस राजा को राजा मानधाता की आधीनता स्वीकार न हो, वो इस घोड़े को पकड़ ले

और युद्ध के लिए तैयार हो जाए। पूरी पृथ्वी पर किसी भी राजा ने घोड़ा नहीं पकड़ा। घोड़े के साथ कुछ सैनिक भी थे। वापिस आते समय ऋषि चुणक ने पूछा कि कहाँ गए थे सैनिको! उत्तर मिला कि पूरी पृथ्वी पर घूम आए, किसी ने घोड़ा नहीं पकड़ा। किसी ने राजा का युद्ध नहीं स्वीकारा। ऋषि ने कहा कि मैंने यह युद्ध स्वीकार लिया। सैनिक बोले हे कंगाल! तेरे पास दाने तो खाने को हैं नहीं और युद्ध करेगा महाराजा मानधाता के साथ? ऋषि चुणक जी ने घोड़ा पकड़कर वृक्ष से बाँध लिया। मानधाता राजा को पता चला तो युद्ध की तैयारी हुई। राजा ने 72 अक्षौहिणी सैना की चार टुकड़ियाँ बनाई। ऋषि पर हमला करने के लिए एक टुकड़ी 18 अक्षौहिणी (18 करोड़) सेना भेज दी । दूसरी ओर ऋषि ने अपनी सिद्धि से चार पूतलियाँ बनाई। एक पुतली छोड़ी जिसने राजा की 18 अक्षौहिणी सेना का नाश कर दिया। राजा ने दूसरी टुकड़ी भेजी। ऋषि ने दूसरी पुतली छोड़ी, उसने दूसरी टुकड़ी 18 अक्षौहिणी सेना का नाश कर दिया। इस प्रकार चुणक ऋषि ने मानधाता राजा की चार पुतलियों से 72 अक्षौहिणी सेना नष्ट कर दी। जिस कारण से महर्षि चुणक की महिमा पूरी पृथ्वी पर फैल गई।

हे धर्मदास! (जिन्दा रुप धारी परमात्मा बोले) ऋषि चुणक ने जो सेना मारी, ये पाप कर्म ऋषि के संचित कर्मों में जमा हो गए। ऋषि चुणक ने जो ऊँ (ओम्) एक अक्षर का जाप किया, वह उसके बदले ब्रह्मलोक में जाएगा। फिर अपना ब्रह्म लोक का सुख समय व्यतीत करके पृथ्वी पर जन्मेगा। जो हठ योग तप किया, उसके कारण पृथ्वी पर राजा बनेगा। फिर मृत्यु के उपरान्त कुत्ते का जन्म होगा। जो 72 अक्षौहिणी सेना मारी थी, वह अपना बदला लेगी। कुत्ते के सिर में जख्म होगा और उसमें कीड़े बनकर 72 अक्षौहिणी सेना अपना बदला चुकाएगी। इसलिए हे धर्मदास! गीता ज्ञान दाता (ब्रह्म) ने अपनी साधना से होने वाली गति को अनुत्तम (अश्रेष्ठ) कहा है।

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे जिन्दा! मैंने एक महामण्डलेश्वर से प्रश्न किया था कि गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में भगवान कृष्ण जी ने किस परमेश्वर की शरण में जाने के लिए कहा है? उस मण्डलेश्वर ने उत्तर दिया था कि भगवान श्री कृष्ण से अतिरिक्त कोई भगवान ही नहीं। कृष्ण जी ही स्वयं पूर्ण परमात्मा हैं, वे अपनी ही शरण आने के लिए कह रहे हैं, बस कहने का फेर है। हे जिन्दा जी! कृप्या मुझ अज्ञानी का भ्रम निवारण करें।

उत्तर : (जिन्दा बाबा परमेश्वर का) :- हे धर्मदास!

ये माला डाल हुए हैं मुक्ता। षटदल उवा–बाई बकता।

आपके सर्व मण्डलेश्वर अर्थात् तथा शंकराचार्य अट-बट करके भोली जनता को भ्रमित कर रहे हैं। कह रहे हैं कि गीता ज्ञान दाता गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में अर्जुन को अपनी शरण में आने को कहता है, यह बिल्कुल गलत है क्योंकि गीता अध्याय 2 श्लोक 7 में अर्जुन ने कहा कि 'हे कृष्ण! अब मेरी बुद्धि ठीक से काम नहीं कर रही है। मैं आप का शिष्य हूँ, आपकी शरण में हूँ। जो मेरे हित में हो, वह ज्ञान मुझे दीजिए। हे धर्मदास! अर्जुन तो पहले ही श्री कृष्ण की शरण में था। इसलिए गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य 'परम अक्षर ब्रह्म' की शरण में जाने के लिए कहा है। गीता अध्याय 4 श्लोक

3 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि हे अर्जुन! तू मेरा भक्त है। इसलिए यह गीता शास्त्र सुनाया है।

गीता ज्ञान दाता से अन्य पूर्ण परमात्मा का अन्य प्रमाण गीता अध्याय 13 श्लोक 11 से 28, 30, 31, 34 में भी है। श्री मद्भगवत गीता अध्याय 13 श्लोक 1 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि शरीर को क्षेत्र कहते हैं जो इस क्षेत्र अर्थात् शरीर को जानता है, उसे "क्षेत्रज्ञ" कहा जाता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 1)

गीता अध्याय 13 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि :- मैं क्षेत्रज्ञ हूँ। क्षेत्र तथा क्षेत्रज्ञ दोनों को जानना ही तत्त्वज्ञान कहा जाता है, ऐसा मेरा मत है। गीता अध्याय 13 श्लोक 10 में कहा है कि मेरी भक्ति अव्याभिचारिणी होनी चाहिए। जैसे अन्य देवताओं की साधना तो गीता अध्याय 7 श्लोक 12 से 15 तथा 20 से 23 में व्यर्थ कही हैं। केवल ब्रह्म की भक्ति करें। उसके विषय में यहाँ कहा है कि अन्य देवता में आसक्त न हों। भावार्थ है कि भक्ति व मुक्ति के लिए ज्ञान समझें, वक्ता बनने के लिए नहीं। इसके अतिरिक्त वक्ता बनने के लिए ज्ञान सुनना अज्ञान है। पतिव्रता स्त्री की तरह केवल मुझमें आस्था रखकर भक्ति करें और मनुष्यों में बैठकर बातें बनाने का स्वभाव नहीं होना चाहिए। एकान्त स्थान में रहकर भक्ति करें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 11 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि अध्यात्म ज्ञान में रूचि रखकर तत्त्व ज्ञान के लिए सद्ग्रन्थों को देखना तत्त्वज्ञान है, वह ज्ञान है तथा तत्त्वज्ञान की अपेक्षा कथा कहानियाँ सुनाना, सुनना, शास्त्रविधि विरूद्ध भक्ति करना यह सब अज्ञान है। तत्त्वज्ञान के लिए परमात्मा को जानना ही ज्ञान है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से "परम ब्रह्म" यानि श्रेष्ठ परमात्मा का ज्ञान करवाया है, जो परमात्मा (ज्ञेयम्) जानने योग्य है, जिसको जानकर (अमतम् अश्नुते) अमरत्व प्राप्त होता है अर्थात् पूर्ण मोक्ष का अमत जैसा आनन्द भोगने को मिलता है। उसको भली-भाँति कहूँगा। (तत्) वह दूसरा (ब्रह्म) परमात्मा न तो सत् कहा जाता है अर्थात् गीता ज्ञान दाता ने अध्याय 4 श्लोक 32, 34 में कहा है कि जो तत्त्वज्ञान है, उसमें परमात्मा का पूर्ण ज्ञान है, वह तत्त्वज्ञान परमात्मा अपने मुख कमल से स्वयं उच्चारण करके बोलता है। उस तत्त्वज्ञान को तत्त्वदर्शी सन्त जानते हैं, उनको दण्डवत् प्रणाम करने से, नम्रतापूर्वक प्रश्न करने से वे परमात्म तत्त्व को भली-भाँति जानने वाले तत्त्वदर्शी सन्त तुझे तत्त्वज्ञान का उपदेश करेंगे। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता को परमात्मा का पूर्ण ज्ञान नहीं है। इसलिए कह रहा है कि वह दूसरा परमात्मा जो गीता ज्ञान दाता से भिन्न है। वह न सत् है, न ही असत्। यहाँ पर पर+ब्रह्म का अर्थ सात शंख ब्रह्माण्ड वाले परब्रह्म अर्थात् गीता अध्याय 15 श्लोक 16 वाले अक्षर पुरूष से नहीं है। यहाँ (पर माने दूसरा और ब्रह्म माने परमात्मा) ब्रह्म से अन्य परमात्मा पूर्ण ब्रह्म का वर्णन है।

भावार्थ :- गीता अध्याय 13 श्लोक 12 में गीता ज्ञान दाता कह रहा है कि जो मेरे से दूसरा ब्रह्म अर्थात् प्रभु है वह अनादि वाला है। अनादि का अर्थ है जिसका कभी आदि अर्थात् शुरूवात न हो, कभी जन्म न हुआ हो। गीता ज्ञानदाता क्षर पुरूष है, इसे "ब्रह्म" भी कहा

जाता है। इसने गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 4 श्लोक 5, 9, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में स्वयं स्वीकारा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं, तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता अनादि वाला "ब्रह्म" अर्थात् प्रभु नहीं है। इससे यह सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता ने अध्याय 13 के श्लोक 12 में अपने से अन्य अविनाशी परमात्मा की महिमा कही है। (अध्याय 13 श्लोक 12)

गीता ज्ञान दाता ब्रह्म है, यह एक हजार हाथ-पैर वाला है। इसका संहस्र कमल है अर्थात् हजार पंखुड़ियों वाला कमल है। गीता अध्याय 11 श्लोक 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे संहस्राबाहु! (हजार हाथों वाले) आप चतुर्भुज रूप में आइए। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञानदाता केवल हजार भुजाओं वाला है। इसलिए गीता अध्याय 13 श्लोक 13 में गीता ज्ञान दाता अपने से अन्य सब और हाथ-पैर वाले, सब और नेत्र सिर और मुख वाले और सब और कान वाले परमात्मा की महिमा कह रहा है। कहा है कि वह परमात्मा संसार में सबको व्याप्त करके अर्थात् अपनी शक्ति से सब रोके है और स्वयं सत्यलोक (शाश्वत स्थानम् तिष्ठति) बैठा है।

स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञानदाता से अन्य समर्थ परमात्मा है, वही सब संसार का संचालन, पालन करता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 13)

गीता के अध्याय 13 श्लोक 14 में भी स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता अपने से अन्य परमात्मा का ज्ञान करा रहा है। कहा है :- सम्पूर्ण इन्द्रियों के विषयों को जानने वाला अर्थात् अन्तर्यामी है। सब इन्द्रियों से रहित है अर्थात् परमात्मा की इन्द्रियाँ हम मानव तथा अन्य प्राणियों जैसी विकारग्रस्त नहीं है। वह परमात्मा आसक्ति रहित है अर्थात् वह इस काल लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों) की किसी वस्तु-पदार्थ में आसक्ति नहीं रखता क्योंकि उस परमेश्वर का सत्यलोक इस काल के क्षेत्र से असख्यों गुणा उत्तम है। इसलिए वह परमात्मा आसक्ति रहित कहा है। वही सबका धारण-पोषण करने वाला है। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी है। वह परमात्मा निर्गुण है, परंतु सगुण होकर ही अपना महत्त्व दिखाता है। उदाहरण के लिए :- जैसे आम का पेड़ आम के बीज (गुठली) में निर्गुण अवस्था में होता है। उस बीज को जब बीजा जाता है, तब वह पौधा फिर पेड़ रूप में सर्गुण होकर अपना महत्त्व प्रकट करता है। परन्तु परमात्मा सत्यलोक में सर्गुण रूप में बैठा है क्योंकि परमात्मा ने अपने वचन शक्ति से सर्व संष्टि रचकर विधान बनाकर छोड़ दिया। उस परमात्मा के विधान अनुसार सर्व प्राणी तथा नक्षत्र बनते-बिगड़ते रहते हैं, जीव कर्मानुसार जन्मते-मरते रहते हैं। परमात्मा को कोई टैंशन नहीं। परन्तु जब परमात्मा पंथ्वी पर प्रकट होता है, उस समय सर्व गुणों को भोगता है। जैसे आम के वंक्ष को तो निर्गुण से सर्गुण होने में बहुत समय लगता है। परन्तु परमात्मा के लिए समय सीमा नहीं है। वे तो क्षण में निर्गुण, अगले क्षण में सर्गुण हो सकते हैं। इससे भी सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई सबका धारण-पोषण करने वाला परमात्मा है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 15-16 में भी यही प्रमाण है। गीता ज्ञानदाता ने कहा है कि जैसे सूर्य दूर स्थान पर स्थित होते हुए भी यहाँ पंथ्वी पर अपना प्रभाव बनाए है। उसी प्रकार

परमात्मा सत्यलोक में स्थित होकर भी सर्व ब्रह्माण्डों पर अपनी शक्ति का प्रभाव बनाए हुए है। सर्व चर-अचर भूतों के बाहर-भीतर है। इसी प्रकार सुक्ष्म होने से हम उसको चर्मदृष्टि से देख नहीं पाते। इसलिए अविज्ञय अर्थात् हमारे ज्ञान से परे है तथा वही परमात्मा हमारे समीप में तथा दूर भी वही स्थित है। परमात्मा तो दूर सत्यलोक (शाश्वत स्थान) में है, उसकी शक्ति का प्रभाव प्रत्येक के साथ है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 15)

जैसे सूर्य दूर स्थित है, परन्तु पृथ्वी के ऊपर प्रत्येक प्राणी को अपने साथ दिखाई देता है। जैसे एक स्थान पर कई घड़े जल के भरे रखे हैं तो सूर्य प्रत्येक में दिखाई देता है, टुकड़ों में नहीं दिखता। इसी प्रकार परमात्मा उस व्यक्ति को दिखाई देता है। परमात्मा ऐसे ही एक स्थान पर स्थित है। वह परमात्मा जानने योग्य है। भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरे से अन्य परमात्मा का ज्ञान होना चाहिए, वह जानने योग्य है। वही परमात्मा अपने विधानानुसार सर्व का धारण-पोषण, उत्पत्ति तथा मृत्यु करता है। वास्तव में "ब्रह्मा" (सबका उत्पत्तिकर्ता) वही है। वास्तव में विष्णु (सबका धारण-पोषण करने वाला) वही है, वास्तव में शंकर (सबका संहार करने वाला) वही है। अन्य ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर तो केवल एक ब्रह्माण्ड के कर्ता-धरता हैं। परन्तु वह परमात्मा तो सर्व ब्रह्माण्डों का ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर रूप में अकेला ही है। जैसे भारत वर्ष में केन्द्र का भी गृहमन्त्री होता है तथा राज्यों में भी गृहमन्त्री होते हैं।

इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य समर्थ परमात्मा की महिमा बताई है। गीता ज्ञान दाता से अन्य कोई पूर्ण परमात्मा है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 16) गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा की महिमा कही है जो इस प्रकार है:-

वह दूसरा परमात्मा (परम् ब्रह्म) सब ज्योतियों का भी ज्योति है अर्थात् सर्व प्रकाशस्रोत है, उसी अन्य समर्थ परमात्मा की शक्ति से सब प्रकाशमान हैं। और उस परमात्मा का प्रकाश सर्व से अधिक है। वह परमात्मा माया से अति परे कहा जाता है। वास्तव में निरंजन वही है। जो गीता ज्ञान दाता है, यह माया सहित "ज्योति निरंजन" कहा जाता है। वह परमात्मा ज्ञान का भण्डार है, वह जानने योग्य है, वह (ज्ञानगम्यम्) तत्त्वज्ञान द्वारा प्राप्त होने योग्य है।

इस गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में मूल पाठ में "ज्ञानम् ज्ञेयम् ज्ञान गम्यम्" लिखा है जिसका भावार्थ है कि (ज्ञानम्) जो ज्ञान परमात्मा स्वयं पृथ्वी पर प्रकट होकर तत्त्वज्ञान अपने मुख कमल से बोलता है। इसलिए वह ज्ञान रूप है अर्थात् ज्ञान का भण्डार है। वह परमात्मा (ज्ञेयम् ज्ञानग्यम्) उसी तत्त्वज्ञान से जानने योग्य तथा उसी तत्त्वज्ञान से प्राप्त करने योग्य है। वह परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित है। जैसे सूर्य दूर स्थान पर होते हुए भी प्रत्येक घड़े के जल में दिखाई देता है। वह उन घड़ों में नहीं हैं। परंतु घड़ों के ऊपर अपना प्रभाव रखता है, उष्णता देता है।

सुक्ष्म वेद में कहा है कि :-

ब्रह्मा विष्णु शिव राई झूमकरा। नहीं सब बाजी के खम्ब सुनों राई झूमकरा।

सर्व ठाम सब ठौर राई झूमकरा। सकल लोक भरपूर सुनो राई झूमकरा।।

यही प्रमाण गीता अध्याय 18 श्लोक 61 में भी है कहा है कि हे अर्जुन! शरीर रूप यन्त्र में आरूढ़ हुए सम्पूर्ण प्राणियों को अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी माया अर्थात् अपनी शक्ति से उनके कर्मानुसार भ्रमण करवाता है अर्थात् संस्कारों के अनुसार अच्छी-बुरी योनियों में घूमाता है। वही सर्व शक्तिमान परमात्मा सर्व प्राणियों के हृदय में स्थित है अर्थात् विराजमान है। इसी प्रकार परमेश्वर की महिमा गीता अध्याय 13 श्लोक 17 में कही है। इससे सिद्ध हुआ कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य पूर्ण परमात्मा की महिमा कही है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 17)

गीता अध्याय 13 श्लोक 18 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि इस प्रकार क्षेत्र अर्थात् शरीर, ज्ञानम् तत्त्वज्ञान और ज्ञेयम् अर्थात् जानने योग्य परमात्मा की महिमा मैंने संक्षेप में कही है। मेरा भक्त पहले मुझे ही सर्वेस्वा जानकर मुझ पर आश्रित था। वह इस (विज्ञाय) तत्त्वज्ञान के आधार से मेरे भाव अर्थात् मेरी शक्ति से परिचित होकर तथा उस समर्थ की शक्ति से परिचित होकर (उप पद्यते) उसके उपरान्त भक्ति करके उसी भाव को प्राप्त होता है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 18)

इसी प्रकार गीता अध्याय 13 श्लोक 19 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य पुरूष अर्थात् परमात्मा की महिमा कही है। कहा है कि प्रकति और पुरूष दोनों ही अनादि हैं। यहाँ पर प्रकति से तात्पर्य सत्यलोक की प्रकति से है। जिसको पराशक्ति, परानन्दनी, महान प्रकति कहा जाता है। पुरूष का अर्थ पूर्ण परमात्मा है, ये दोनों अनादि हैं। इस प्रकति का भावार्थ दुर्गा स्त्री रूप की तरह स्त्री रूप प्रकति से नहीं है। जैसे सूर्य है तो उसकी प्रकति उष्णता भी साथ ही है। इसी प्रकार सत्यपुरूष तथा उसकी प्रकति अर्थात् शक्ति दोनों अनादि हैं।

इस प्रकार विकार तथा तीनों गुण जिससे उत्पन्न हुए हैं, वह अन्य प्रकति है, उससे उत्पन्न हुए हैं, ऐसा जान। गीता अध्याय 7 श्लोक 4-5 में दो प्रकति कही हैं, एक जड़ और दूसरी चेतन दुर्गा देवी। यहाँ पर दूसरी प्रकति दुर्गा कही है। (गीता अध्याय 13 श्लोक 19)

गीता अध्याय 13 श्लोक 20 में भी अन्य (पुरूषः) परमात्मा का वर्णन है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता के इस श्लोक के अनुवाद में "पुरूषः" का अर्थ परमात्मा होता है। गीता अध्याय 13 श्लोक 20 का यथार्थ अनुवाद देखें "गहरी नजर गीता में" जो हमारी Web site पर देखी व डाऊनलोड की जा सकती है। Web site का नाम है "www.jagatgururampalji.org"

गीता अध्याय 13 श्लोक 21 में भी अन्य (पुरूषः) परमात्मा का वर्णन है। इसके अनुवाद में गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित में "पुरूषः" का अर्थ पुरूष ही किया है, यह ठीक है। पुरूषः का अर्थ परमात्मा होता है। प्रकरणवश पुरूषः का अर्थ मनुष्य भी किया जाता है क्योंकि परमात्मा ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुरूप बनाया है। इसलिए कहा जाता है कि :-

नर नारायण रूप है, तू ना समझ देहि।

''चौरासी लाख प्रकार के जीवों से मानव देह उत्तम है''

गीता अध्याय 13 श्लोक 22 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा का प्रत्यक्ष प्रमाण बताया है। गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित गीता में इस श्लोक का अर्थ बिल्कुल गलत किया है।

❖ यथार्थ अनुवाद :- जैसे पूर्व के श्लोकों में वर्णन आया है कि परमात्मा प्रत्येक जीव के साथ ऐसे रहता है, जैसे सूर्य प्रत्येक घड़े के जल में स्थित दिखाई देता है। उस जल को अपनी उष्णता दे रहा है। इसी प्रकार परमात्मा प्रत्येक जीव के हृदय कमल में ऐसे विद्यमान है जैसे सौर ऊर्जा सयन्त्र जहाँ भी लगा है तो वह सूर्य से उष्णता प्राप्त करके ऊर्जा संग्रह करता है। इसी प्रकार प्रत्येक जीव के साथ परमात्मा रहता है। इसलिए इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 22) में कहा है कि वह परमात्मा सब प्रभुओं का भी स्वामी होने से "महेश्वर", सबका धारण-पोषण करने से "कर्ता", सत्यलोक में बैठा प्रत्येक प्राणी की प्रत्येक गतिविधि को देखने वाला होने से "उपदष्टा", जीव परमात्मा की शक्ति से सर्व कार्य करता है। जीव परमात्मा का अंश है। (रामायण में भी कहा है, ईश्वर अंश जीव अविनाशी) जिस कारण से जीव जो कुछ भी अपने किए कर्म का सुख, दुःख भोगता है तो अपने अंश के सुख-दुःख का परमात्मा को भी अहसास होता है। (सुक्ष्म वेद में लिखा है- "कबीर कह मेरे जीव को दुःख ना दिजो कोय, भक्त दुःखाऐ मैं दुःखी मेरा आपा भी दुःखी होय।'')

इसलिए "भोक्ता" कहलाता है। प्रत्येक प्राणी को गुप्त रूप से उचित राय देता है, जिस कारण से परमात्मा "अनुमन्ता" कहलाता है। परमात्मा शब्द का सन्धिविच्छेद = परम+आत्मा = श्रेष्ठ आत्मा = परमात्मा। यदि कोई दुःख का भोग भी देता है, सुख का भोग भी देता है। जैसे कर्म करेगा जीव वैसे अवश्य भोगेगा तो वह "परमात्मा" नहीं कहा जा सकता, वह श्रेष्ठ आत्मा नहीं होता। जैसे इस काल (ब्रह्म के) लोक में विधान है कि जैसा कर्म करोगे, वैसा फल आपको भगवान अवश्य देगा। तो यह प्रभु (स्वामी)तो है, परन्तु परम आत्मा नहीं है। इस मानव शरीर में (परः) दूसरा (पुरूषः) परमात्मा जो जीव के साथ अभिन्न रूप से रहता है, जैसे सूर्य प्रत्येक को अपनी ऊर्जा देता है, उसी प्रकार यह दूसरा परमात्मा उपरोक्त महिमा वाला है। जैसे सौर ऊर्जा से जो बल्ब जगता है, उसमें सूर्य होता है यानि सूर्य की ऊर्जा कार्य करती है। इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा की भूमिका समझें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 23 में भी अन्य (पुरूषम्) परमात्मा बताया है। कहा है कि जो सन्त उपरोक्त प्रकार से (पुरूषम्) परमात्मा, प्रकति, तथा गुणों सहित जानता है, वह सन्त-साधक सब प्रकार से परमात्मा में लीन (वर्तमान) रहता हुआ पुनर्जन्म को प्राप्त नहीं होता अर्थात् उसका पूर्ण मोक्ष हो जाता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 24 भी अन्य परमात्मा का वर्णन है जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है। कहा है कि जो परमात्मा सूर्य के सदश जीवात्मा के साथ अभेद रूप से रहता है। उसको साधक ध्यान द्वारा दिव्य दष्टि से हृदय में देखते हैं जैसे बिजली को टैस्टर द्वारा देख लेते हैं, अन्य साधक ज्ञान सुनकर विश्वास करके परमात्मा का अस्तित्व स्वीकार कर लेते हैं।

अन्य भक्तजन (कर्मयोगेन) परमात्मा के कर्मों अर्थात् लीलाओं को देखकर परमात्मा का अस्तित्व जान लेते हैं। जैसे संसार में लगभग 7 अरब जनसँख्या है। किसी का भी चेहरा (face) एक-दूसरे से नहीं मिलता। (कवि ने कहा है :- कई अरब बनाए बन्दे आँख, नाक, हाथ लगाए, एक-दूसरे के नाल कोई भी रलदे नहीं रलाए) यह भी सिद्ध होता है कि कोई सर्वज्ञ शक्ति है, उसे "परमात्मा" कहा जाता है। कुछ भक्तजन परमात्मा के इस प्रकार के कार्य देखकर परमात्मा को मानते हैं।

गीता अध्याय 12 श्लोक 25 में कहा है कि जो शिक्षित नहीं और जो न ध्यान करते हैं, न ज्ञान को समझ पाते हैं और न वे परमात्मा की संरचना से परमात्मा को समझ पाते हैं। वे अन्य शिक्षित, विद्वान व्यक्तियों से परमात्मा की महिमा सुनकर मान लेते हैं कि जब यह शिक्षित और ज्ञानी व्यक्ति कह रहा है तो परमात्मा है। फिर वे उपासना करने लग जाते हैं। वे उसे सुनने के कारण परमात्मा के अस्तित्व को मानकर उपासना करने के कारण इस मतलोक (मत्यु संसार) से पार हो जाते हैं।

गीता अध्याय 13 श्लोक 26 में तो इतना ही कहा है कि सर्व प्राणी क्षेत्र अर्थात् दुर्गा के शरीर तथा क्षेत्रज्ञ अर्थात् गीता ज्ञान दाता क्षर ब्रह्म के संयोग से उत्पन्न होते हैं। ध्यान रहे गीता ज्ञान दाता ने गीता के इसी अध्याय 13 के श्लोक 1 में कहा है कि "क्षेत्र" तो शरीर को कहते हैं तथा जो शरीर के विषय में जानता है, उसे "क्षेत्रज्ञ" कहते हैं। गीता अध्याय 13 श्लोक 2 में कहा है। इस काल लोक (इक्कीस ब्रह्माण्डों के क्षेत्र में) में जितने प्राणी उत्पन्न होते हैं, वे दुर्गा जी तथा काल भगवान के संयोग से होते हैं अर्थात् नर-मादा से काल प्रेरणा से काल सष्टि उत्पन्न होती है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 27 में अन्य परमेश्वर स्पष्ट है जो गीता ज्ञान दाता से अन्य है। (भिन्न है) :- जैसे पूर्व के श्लोकों में प्रमाण सहित बताया गया है कि परमेश्वर प्रत्येक प्राणी के शरीर में हृदय में ऐसे बैठा दिखाई देता है जैसे सूर्य जल से भरे घड़ों में दिखाई देता है। इसी प्रकार इस श्लोक 27 में कहा है कि परमेश्वर हृदय में बैठा है। जब प्राणी का शरीर नष्ट हो जाता है तो भी परमेश्वर नष्ट नहीं होता। जैसे कोई घड़ा फूट गया, उसका जल पथ्वी पर बिखर गया और पथ्वी में समा गया तो भी सूर्य तो यथावत् है। इसलिए परमेश्वर अविनाशी है जो सन्त परमात्मा को इस दष्टिकोण से देखता है, वह सही जानता है, वह तत्त्वज्ञानी सन्त है।

इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 27) में परमेश्वर शब्द लिखा है। जिससे भी गीता ज्ञान दाता से अन्य परमात्मा का बोध होता है। आओ जानें:-

"परमेश्वर" का सन्दिछेद = परम+ईश्वर

व्याख्या :– "ईश" का अर्थ है स्वामी, प्रभु, मालिक।

"वर" का अर्थ है श्रेष्ठ, पति

1. ईश् तो गीता ज्ञान दाता "क्षर पुरूष" अर्थात् क्षर ब्रह्म है जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्डों का ईश् अर्थात् प्रभु है।

2. ईश्वर = ईश् अर्थात् क्षर पुरूष से श्रेष्ठ प्रभु। वह केवल 7 शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है।

इसे अक्षर पुरूष तथा परब्रह्म भी कहा जाता है।

3. परमेश्वर = ईश्वर अर्थात् अक्षर पुरूष से परम अर्थात् श्रेष्ठ है, जो असँख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है, उसे परम अक्षर ब्रह्म भी कहा जाता है। (गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में प्रमाण है) गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में तीन पुरूषों का वर्णन है। क्षर पुरूष - यह गीता ज्ञान दाता ईश् है तथा अक्षर पुरूष - यह ईश्वर है तथा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में कहा है कि (उत्तम पुरुषः) पुरूषोत्तम अर्थात् वास्तव में सर्व श्रेष्ठ प्रभु तो ऊपर के श्लोक (गीता अध्याय 15 श्लोक 16) में कहे दोनों (क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष) से भिन्न है, उसी को वास्तव में "परमात्मा" कहा जाता है। वही तीनों लोकों (क्षर पुरुष के 21 ब्रह्माण्डों का क्षेत्र काल लोक कहा जाता है तथा अक्षर पुरूष के 7 शंख ब्रह्माण्डों के क्षेत्र को परब्रह्म का लोक कहा जाता है और ऊपर चार लोकों (सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अकह लोक) का क्षेत्र अमर लोक परमेश्वर का लोक कहा जाता है। इस प्रकार तीन लोकों का यहाँ पर वर्णन है। इन तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव में अविनाशी परमेश्वर है। गीता अध्याय 13 श्लोक 27 में "परमेश्वर" शब्द है जो गीता ज्ञान दाता से भिन्न सर्व शक्तिमान, सर्व का पालन कर्ता का बोधक है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 28 में भी गीता ज्ञान दाता से अन्य प्रभु का प्रमाण है। इस श्लोक में "ईश्वर" शब्द परमेश्वर का बोधक है, जैसे ईश् का अर्थ स्वामी, वर का अर्थ श्रेष्ठ। वास्तव में सबका "ईश्" स्वामी तो परम अक्षर ब्रह्म है। वही श्रेष्ठ ईश् है, इसलिए "ईश्वर" शब्द प्रकरणवश पूर्ण परमात्मा का बोधक है। यदि अन्य "ईश्" नकली स्वामी नहीं होते तो ईश्वर तथा परमेश्वर शब्दों की आवश्यकता नहीं होती। इसलिए इस श्लोक में "ईश्वर" शब्द सत्य पुरूष का बोध जानें।

गीता अध्याय 13 श्लोक 28 का भावार्थ है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जो साधक सब प्रकार से परमेश्वर को समभाव में देखता हुआ (आत्मानम्) अपनी आत्मा को (आत्मना) अपनी अज्ञान आत्मा द्वारा नष्ट नहीं करता अर्थात् वह परमात्मा को सही समझकर उसकी साधना करके (ततः) उससे (पराम् = परा) दूसरी (गतिम्) गति अर्थात् मोक्ष को (याति) प्राप्त होता है अर्थात् वह साधक गीता ज्ञान दाता वाली परमगति (जो गीता अध्याय 8 श्लोक 13 में कही है) से अन्य गति को प्राप्त होता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 30 में स्पष्ट है कि गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमात्मा की महिमा बताई है। कहा है कि जो सन्त सर्व प्रणियों की स्थिति भिन्न-भिन्न होते हुए भी एक परमात्मा सर्वशक्तिमान के अन्तर्गत मानता है तो वह समझो ''सच्चिदानन्दघन ब्रह्म'' अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म को प्राप्त हो गया है, वह सत्य भक्ति करके उस परमेश्वर को प्राप्त हो जाता है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 31 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य "परमात्मा" के विषय में कहा है। इस श्लोक में "परमात्मा" शब्द है जिसकी स्पष्ट परिभाषा गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताई है। कहा है कि जो उत्तम पुरूष अर्थात् सर्वश्रेष्ठ प्रभु है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका धारण-पोषण करता है। वह वास्तव अविनाशी परमेश्वर है।

उसी को "परमात्मा" कहा जाता है। वह क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष से अन्य है।

इस श्लोक (गीता अध्याय 13 श्लोक 31) में भी यही स्पष्ट किया है कि वह परमात्मा अनादि होने से, निर्गुण होने से प्रत्येक प्राणी के शरीर में (सूर्य जैसे घड़े में) स्थित होने पर भी न तो कुछ करता है क्योंकि सब कार्य परमात्मा की शक्ति करती है, (जैसे घड़े के जल में सूर्य दिखाई देता है उससे जल गर्म हो रहा है। वह सूर्य करता नहीं दिखाई देता, उसकी उष्णता कर रही है। सूर्य कुछ नहीं करता दिखता) और न परमात्मा उस शरीर में लिप्त होता है, जैसे सूर्य घड़े के जल में लिप्त नहीं होता।

गीता अध्याय 13 श्लोक 32 में भी यही प्रमाण है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 33 में आत्मा और शरीर की स्थिति बताई है।

गीता अध्याय 13 श्लोक 34 में गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की जानकारी दी है। कहा है कि इस प्रकार क्षेत्र (शरीर) तथा क्षेत्रज्ञ (गीता ज्ञान दाता) के भेद को तथा कर्म करते-करते भक्ति करके काल की प्रकृति अर्थात् काल जाल से मुक्त जो साधक ज्ञान नेत्रों द्वारा जानकर तत्त्वदर्शी सन्त की खोज करके सत्य शास्त्रानुकूल साधना करके तत्त्वज्ञान को समझकर उस परम् अर्थात् दूसरे परमब्रह्म परमात्मा को प्राप्त होते हैं।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य पूर्ण परमात्मा है जिसकी भक्ति की साधना करके साधक उस पूर्ण मोक्ष को प्राप्त हो जाता है जो गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में वर्णित है कि तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परमपद को खोजना चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक फिर लौटकर संसार में कभी नहीं आता।

सारांश :- पूर्वोक्त प्रमाणों से तथा इस गीता अध्याय 13 के उपरोक्त प्रमाणों से स्पष्ट हुआ कि गीता ज्ञान दाता से अन्य परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण परमात्मा है। जिसकी शरण में जाने के लिए गीता ज्ञान दाता ने गीता अध्याय 18 श्लोक 62, 66 में कहा है। वही पूर्ण मोक्षदायक है, वही पूजा करने योग्य है, वही सबका रचनहार है, वही सबका पालनहार, धारण करने वाला सर्व सुखदायक है। उसको "परमात्मा" कहा जाता है।

प्रश्न :- अक्षर का अर्थ अविनाशी होता है। आपने गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में भी अक्षर पुरूष को भी नाशवान बताया है, कृप्या स्पष्ट करें।

उत्तर :- यह सत्य है कि "अक्षर" का अर्थ अविनाशी होता है, परन्तु प्रकरणवश अर्थ अन्य भी होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में कहा है कि क्षर और अक्षर ये पुरूष (प्रभु) इस लोक में है, ये दोनों तथा इनके अन्तर्गत जितने जीव हैं, वे नाशवान हैं, आत्मा किसी की भी नहीं मरती। फिर गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में स्पष्ट किया है कि पुरूषोत्तम तो उपरोक्त दोनों प्रभुओं से अन्य है। वही अविनाशी है, वही सबका धारण-पोषण करने वाला वास्तव में अविनाशी है। गीता अध्याय 8 श्लोक 3 में तत् ब्रह्म को परम अक्षर ब्रह्म कहा है। अक्षर का अर्थ अविनाशी है, परन्तु यहाँ परम अक्षर ब्रह्म कहा है। इससे भी सिद्ध हुआ कि अक्षर से आगे परम अक्षर ब्रह्म है, वह वास्तव में अविनाशी है।

❖ प्रमाण :- जैसे ब्रह्मा जी की आयु 100 वर्ष बताई जाती है, देवताओं का वर्ष कितने समय का है? सुनो! चार युग (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलयुग) का एक चतुर्युग

होता है जिसमें मनुष्यों के 43,20,000 (त्रितालीस लाख बीस हजार) वर्ष होते हैं। 1008 चतुर्युग का ब्रह्मा जी का दिन और इतनी ही रात्रि होती है, ऐसे 30 दिन-रात्रि का एक महीना तथा 12 महीनों का ब्रह्मा जी का एक वर्ष हुआ। ऐसे 100 (सौ) वर्ष की श्री ब्रह्मा जी की आयु है।

श्री विष्णु जी की आयु श्री ब्रह्मा जी से 7 गुणा है। = 700 वर्ष।

श्री शंकर जी की आयु श्री विष्णु जी से 7 गुणा अधिक = 4900 वर्ष।

ब्रह्म (क्षर पुरूष) की आयु = 70 हजार शंकर की मत्यु के पश्चात् एक ब्रह्म की मत्यु होती है अर्थात् क्षर पुरूष की मत्यु होती है। इतने समय का अक्षर पुरूष का एक युग होता है।

अक्षर पुरूष की आयु :- गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में कहा है:-

सहंस्र युग पर्यन्तम् अहः यत् ब्रह्मणः विदुः। रात्रिम् युग सहंस्रान्तम् ते अहोरात्रा विदः जनाः।।(17)

अनुवाद :- आज तक सर्व अनुवादकर्ताओं ने उचित अनुवाद नहीं किया। सबने ब्रह्मा का एक हजार चतुर्युग लिखा है, यह गलत है। मूल पाठ में "संहस्र युग" लिखा है, न कि चतुर संहस्र युग। इसलिए गीता अध्याय 8 श्लोक 17 का अनुवाद ऐसे बनता है:- (ब्रह्मणः) अक्षर पुरूष का (यत) जो (अहः) दिन है वह (सहंस्रयुग प्रयन्तम्) एक हजार युग की अवधि वाला (विदुः) जानते हैं (ते) वे जना व्यक्ति (अहोरात्र) दिन-रात को (विदः) जानने वाले हैं।

भावार्थ :- इस श्लोक में "ब्रह्मा" शब्द मूल पाठ में नहीं है और न ही "चतुर युग" शब्द मूल पाठ में है, इसमें "ब्रह्मण" शब्द है जिसका अर्थ सचिदानन्द ब्रह्म अर्थात् परम अक्षर ब्रह्म होता है।

❖ प्रमाण :- गीता अध्याय 17 श्लोक 23 में ब्रह्मणः का अर्थ सचिदानन्द घन ब्रह्म किया है, वह अनुवादकों ने ठीक किया है। इस गीता अध्याय 8 श्लोक 17 में आयु का प्रकरण है। इसलिए यहाँ पर "ब्रह्मण" का अर्थ "अक्षर ब्रह्म" बनता है, यहाँ अक्षर पुरूष की आयु की जानकारी दी है। अक्षर पुरूष का एक दिन उपरोक्त एक हजार युग का होता है। {70 हजार शंकर की मत्यु के पश्चात् एक क्षर पुरूष की मत्यु होती है, वह समय एक युग अक्षर पुरूष का होता है।} ऐसे बने हुए एक हजार युग का अक्षर पुरूष का दिन तथा इतनी ही रात्रि होती है, ऐसे 30 दिन रात्रि का एक महीना तथा 12 महीनों का अक्षर पुरूष का एक वर्ष तथा 100 वर्ष की अक्षर पुरूष की आयु है। इसके पश्चात् इसकी मत्यु होती है, इसलिए गीता अध्याय 15 श्लोक 16 में क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष दोनों नाशवान कहे हैं। गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में जो वास्तव में अविनाशी परमात्मा कहा है। यह परमात्मा सर्व प्राणियों के नष्ट होने पर भी नाश में नहीं आता।

प्रमाण :- गीता अध्याय 8 श्लोक 20 से 22 में स्पष्ट है कि वह परम अक्षर ब्रह्म सब प्राणियों के नष्ट होने पर भी कभी नष्ट नहीं होता।

उदाहरण :- जैसे सफेद मिट्टी के बने कप-प्लेट होते हैं, उनका ज्ञान है कि हाथ से छूटे और पक्के फर्श पर गिरे और टूटे अर्थात् नाशवान "क्षर" है, यह स्थिति तो क्षर पुरूष की जानो।

2. दूसरे कप-प्लेट स्टील (इस्पॉत) के बने हों, वे बहुत समय उपरान्त जंग लगकर नष्ट

होते हैं, शीघ्र टूटते व नष्ट नहीं होते। मिट्टी के बने कप-प्लेट की तुलना में स्टील के कप-प्लेट चिर-स्थाई हैं, अविनाशी प्रतीत होते हैं, परन्तु हैं नाशवान। इसी प्रकार स्थिति "अक्षर पुरूष" की जानो।

3. तीसरे कप-प्लेट सोने के बने हों। वे कभी नष्ट नहीं होते, उनको जंग नहीं लगता। यह स्थिति "परम अक्षर ब्रह्म" की जानो। यह वास्तव में अविनाशी हैं, इसलिए प्रकरणवश "अक्षर" का अर्थ नाशवान भी होता है, वास्तव में अक्षर का अर्थ अविनाशी परमात्मा होता है।

उदाहरण के लिए :- गीता अध्याय 8 श्लोक 11 में मूल पाठ =

यत् अक्षरम् वेद विदः वदन्ति विशन्ति यत् यतयः बीतरागाः
यत् इच्छन्तः ब्रह्म चर्यम चरन्ति तत् ते पदम् संग्रहेण प्रवक्ष्ये (11)

अनुवाद : इस श्लोक में "अक्षर" का अर्थ अविनाशी परमात्मा के लिए है:-(वेद विदः) तत्त्वदर्शी सन्त अर्थात् वेद के तात्पर्य को जानने वाले महात्मा (यत्) जिसे (अक्षरम्) अविनाशी (वदन्ति) कहते हैं। (यतयः) साधना रत (बीतरागा) आसक्ति रहित साधक (यत्) जिस लोक में (विशन्ति) प्रवेश करते हैं और (यत्) जिस परमात्मा को (इच्छन्तः) चाहने वाले साधक (ब्रह्म चर्यम) ब्रह्मचर्य अर्थात् शिष्य परम्परा का (चरन्ति) आचरण करते हैं, (तत्) उस (पदम्) पद को (ते) तेरे लिए मैं (संग्रहेषा) संक्षेप में (प्रवक्ष्ये) कहूँगा। इस श्लोक में "अक्षर" का अर्थ अविनाशी परमात्मा ठीक है।

कबीर जी ने सुक्ष्म वेद में कहा है कि -

गुरू बिन काहू न पाया ज्ञाना, ज्यों थोथा भूष छिड़े मूढ़ किसाना।
गुरू बिन वेद पढ़े जो प्राणी, समझे ना सार रहे अज्ञानी।।

प्रश्न :- (धर्मदास जी का) :- गीता अध्याय 4 श्लोक 6 में गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं अजन्मा और अविनाशी रुप होते हुए भी समस्त प्राणियों का ईश्वर होते हुए भी अपनी योग माया से प्रकट होता हूँ। इसमें श्री कष्ण जी अपने आपको समस्त प्राणियों का अविनाशी ईश्वर कह रहे हैं, अपने को अजन्मा भी कहा है।

उत्तर :- (जिन्दा परमेश्वर जी का) : हे धर्मदास जी! गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि जितने प्राणी मेरे 21 ब्रह्माण्डों में मेरे अन्तर्गत हैं। मैं उनका श्रेष्ठ प्रभु (ईश्वर) हूँ। यही प्रमाण गीता अध्याय 15 श्लोक 18 में भी है कि गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मैं लोक वेद (सुनी-सुनाई बातें) के आधार से अपने 21 ब्रह्माण्डों वाले लोक में पुरुषोत्तम प्रसिद्ध हूँ क्योंकि मैं शरीरधारी प्राणियों से तथा अविनाशी जीवात्मा से भी श्रेष्ठ हूँ जो मेरे अन्तर्गत मेरे इक्कीस ब्रह्माण्डों में हैं। वास्तव में पुरुषोत्तम तो कोई अन्य ही है जिसका वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में बताया गया है।

गीता के अध्याय 4 श्लोक 6 में यह कहा है कि मैं (अजः) अजन्मा अर्थात् मैं तुम्हारी तरह जन्म नहीं लेता, मैं लीला से प्रकट होता हूँ। जैसे गीता अध्याय 10 में विराट रुप दिखाया था, फिर कहा है कि (अव्ययात्मा) मेरी आत्मा अमर है। फिर कहा है कि (आत्ममायया) अपनी लीला से (सम्भवामि) उत्पन्न होता हूँ। यहाँ पर उत्पन्न होने की बात है क्योंकि यह काल ब्रह्म अक्षर पुरुष के एक युग के उपरान्त मरता है। फिर उस समय एक

ब्रह्माण्ड का विनाश हो जाता है (जैसा कि आपने ऊपर के प्रश्न के उत्तर में पढ़ा) फिर दूसरे ब्रह्माण्ड में सर्व जीवात्माएं चली जाती हैं। काल ब्रह्म की आत्मा भी चली जाती है। वहाँ इसको पुनः युवा शरीर प्राप्त होता है। इसी प्रकार देवी दुर्गा की मत्यु होती है। फिर काल ब्रह्म के साथ ही इसको भी युवा शरीर प्राप्त होता है। यह परम अक्षर ब्रह्म (सत्य पुरूष) का विधान है। तो फिर उस नए ब्रह्माण्ड में दोनों पति-पत्नी रुप में नए रजगुण युक्त ब्रह्मा, सतगुण युक्त विष्णु तथा तमगुण युक्त शिव को उत्पन्न करते हैं। फिर उस ब्रह्माण्ड में सष्टि क्रम प्रारम्भ होता है। इस प्रकार इस काल ब्रह्म की मत्यु तथा लीला से जन्म होता है। गीता अध्याय 4 श्लोक 9 में भी स्पष्ट है जिसमें गीता ज्ञान दाता ने कहा है कि मेरे जन्म तर्था कर्म अलौकिक हैं। वास्तव में यह नाशवान है। आत्मा सर्व प्राणियों की भी अमर है। आपके महामण्डलेश्वरों आचार्यों तथा शंकराचार्यों को अध्यात्मिक ज्ञान बिल्कुल नहीं है। इसलिए अनमोल ग्रन्थों को ठीक से न समझकर लोकवेद (दन्तकथा) सुनाते हैं। आप देखें इस गीता अध्याय 4 श्लोक 5 में स्वयं कह रहा है कि हे अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। उन सबको मैं जानता हूँ, तू नहीं जानता। इसका अभिप्राय ऊपर स्पष्ट कर दिया है। सम्भवात् का अर्थ उत्पन्न होना है।

प्रमाण :- यजुर्वेद अध्याय 40 मन्त्र 10 में भी कहा है कि कोई तो परमात्मा को (सम्भवात्) जन्म लेने वाला राम व कष्ण की तरह मानता है, कोई (असम्भवात्) उत्पन्न न होने वाला निराकार मानता है अर्थात् तत्त्वदर्शी सन्त जो सत्यज्ञान बताते हैं, उनसे सुनो। वे बताएंगे कि परमात्मा उत्पन्न होता है या नहीं। वास्तव में परमात्मा स्वयंभू है। वह कभी नहीं जन्मा है और न जन्मेगा। मत्यु का तो प्रश्न ही नहीं। दूसरी ओर गीता ज्ञान दाता स्वयं कह रहा है कि मैं जन्मता और मरता हूँ, अविनाशी नहीं हूँ। अविनाशी तो ''परम अक्षर ब्रह्म'' है।

प्रश्न :- (जिन्दा बाबा परमेश्वर जी का) : आप जी ने कहा है कि हम शुद्र को निकट भी नहीं बैठने देते, शुद्ध रहते हैं। इससे भक्ति में क्या हानि होती है?

''कथनी और करनी में अंतर''

उत्तर :- (धर्मदास जी का) :- शुद्र के छू लेने से भक्त अपवित्र हो जाता है, परमात्मा रुष्ट हो जाता है, आत्मग्लानि हो जाती है। हम ऊँची जाति के वैश्य हैं।

प्रश्न तथा स्पष्टीकरण (बाबा जिन्दा ने किया) :- यह शिक्षा किसने दी? धर्मदास जी ने कहा हमारे धर्मगुरु बताते हैं, आचार्य, शंकराचार्य तथा ब्राह्मण बताते हैं। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास को बताया (उस समय तक धर्मदास जी को ज्ञान नहीं था कि आपसे वार्ता करने वाला ही कबीर जुलाहा है) कि कबीर जुलाहा एक बार स्वामी रामानन्द पंडित जी के साथ तोताद्रिक नामक स्थान पर सत्संग-भण्डारे में गया। वह स्वामी रामानन्द जी का शिष्य है। सत्संग में मुख्य पण्डित आचार्यों ने बताया कि भगवान राम ने शुद्र भिलनी के झूठे बेर खाए। भगवान तो समदर्शी थे। वे तो प्रेम से प्रसन्न होते हैं। भक्त को ऊँचे-नीचे का अन्तर नहीं देखना चाहिए, श्रद्धा देखी जाती है। लक्ष्मण ने सबरी को शुद्र जानकर ग्लानि करके बेर नहीं

खाये, फैंक दिए, बाद में वे बेर संजीवन बूटी बने। रावण के साथ युद्ध में लक्ष्मण मुर्छित हो गया। तब हनुमान जी द्रोणागिरी पर्वत को उठाकर लाए जिस पर संजीवन बूटी उन झूठे बेरों से उगी थी। उस बूटी को खाने से लक्ष्मण सचेत हुआ, जीवन रक्षा हुई। ऐसी श्रद्धा थी सबरी की भगवान के प्रति। किसी की श्रद्धा को ठेस नहीं पहुँचानी चाहिए। सत्संग के तुरन्त बाद लंगर (भोजन-भण्डारा) शुरु हुआ। पण्डितों ने पहले ही योजना बना रखी थी कि स्वामी रामानन्द ब्राह्मण के साथ शुद्र जुलाहा कबीर आया है। वह स्वामी रामानन्द का शिष्य है। रामानन्द जी के साथ खाना खाएगा। हम ब्राह्मणों की बेईज्जती होगी। इसलिए दो स्थानों पर लंगर शुरु कर दिया। जो पण्डितों के लिए भण्डार था। उसमें खाना खाने के लिए एक शर्त रखी कि जो पण्डितों वाले भण्डारे में खाना खाएगा, उसको वेदों के चार मन्त्र सुनाने होंगे। जो मन्त्र नहीं सुना पाएगा, वह सामान्य भण्डारे में भोजन खाएगा। उनको पता था कि कबीर जुलाहा काशी वाला तो अशिक्षित है शुद्र है। उसको वेद मन्त्र कहाँ से याद हो सकते हैं? सब पण्डित जी चार-चार वेद मन्त्र सुना-सुनाकर पण्डितों वाले भोजन-भण्डारे में प्रवेश कर रहे थे। पंक्ति लगी थी। उसी पंक्ति में कबीर जुलाहा (धाणक) भी खड़ा था। वेद मन्त्र सुनाने की कबीर जी की बारी आई। थोड़ी दूरी पर एक भैंसा (झोटा) घास चर रहा था। कबीर जी ने भैंसे को पुकारा। कहा कि हे भैंसा पंडित! कपया यहाँ आइएगा। भैंसा दौड़ा-दौड़ा आया। कबीर जी के पास आकर खड़ा हो गया। कबीर जी ने भैंसे की कमर पर हाथ रखा और कहा कि हे विद्वान भैंसे! वेद के चार मन्त्र सुना। भैंसे ने (1) यजुर्वेद अध्याय 5 का मन्त्र 32 सुनाया जिसका भावार्थ भी बताया कि जो परम शान्तिदायक (उसिग असि), जो पाप नाश कर सकता है (अंघारि), जो बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है = बम्भारी, वह ''कविरसि'' कबीर है। स्वर्ज्योति = स्वयं प्रकाशित अर्थात् तेजोमय शरीर वाला ''ऋतधामा'' = सत्यलोक वाला अर्थात् वह सत्यलोक में निवास करता है। ''सम्राटसि'' = सब भगवानों का भी भगवान अर्थात् सर्व शक्तिमान सम्राट यानि महाराजा है।

(2) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 86 मन्त्र 26 सुनाया। जिसका भावार्थ है कि परमात्मा ऊपर के लोक से गति (प्रस्थान) करके आता है, नेक आत्माओं को मिलता है। भक्ति करने वालों के संकट समाप्त करता है। वह कर्विदेव (कबीर परमेश्वर) है।

(3) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मन्त्र 17 सुनाया जिसका भावार्थ है कि (''कविः'' = कविर) परमात्मा स्वयं पथ्वी पर प्रकट होकर तत्त्वज्ञान प्रचार करता है। कविर्वाणी (कबीर वाणी) कहलाती है। सत्य आध्यात्मिक ज्ञान (तत्त्वज्ञान) को कबीर परमात्मा लोकोक्तियों, दोहों, शब्दों, चौपाइयों व कविताओं के रुप में पदों में बोलता है।

(4) ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 94 मन्त्र 1 भी सुनाया। जिसका भावार्थ है कि परमात्मा कवियों की तरह आचरण करता हुआ पथ्वी पर एक स्थान से दूसरे स्थान जाता है। भैंसा फिर बोलता है कि भोले पंडितो जो मेरे पास इस पंक्ति में जो मेरे ऊपर हाथ रखे खड़ा है, यह वही परमात्मा कबीर है जिसे लोग ''कवि'' कहकर पुकारते हैं। इन्हीं की कपा से मैं आज मनुष्यों की तरह वेद मन्त्र सुना रहा हूँ।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि भैंसा पंडित आप पंडितो वाले लंगर में प्रवेश करके

भोजन ग्रहण करें। मैं तो शुद्र हूँ, अशिक्षित हूँ। इसलिए आम जनता के लिए लगे लंगर में भोजन करने जाता हूँ।

उसी समय सर्व पंडित जो भैंसे को वेदमन्त्र बोलते देखकर एकत्रित हो गए थे। कबीर जी के चरणों में गिर गए तथा अपनी भूल की क्षमा याचना की। परमेश्वर कबीर जी ने कहा:-

करनी तज कथनी कथैं, अज्ञानी दिन रात। कुकर ज्यों भौंकत फिरें सुनी सुनाई बात ।।

सत्संग में तो कह रहे थे कि भगवान रामचन्द्र जी ने शुद्र जाति की सबरी (भीलनी) के झूठे बेर रुचि-रुचि खाए, कोई छुआछूत नहीं की और स्वयं को तुम परमात्मा से भी उत्तम मानते हो। कहते हो, करते नहीं। एक-दूसरे से सुनी-सुनाई बात कुत्ते की तरह भौंकते रहते हो। सर्व उपस्थित पंडितों सहित हजारों की सँख्या में कबीर जुलाहे के शिष्य बने, दीक्षा ली। शास्त्रविरुद्ध भक्ति त्यागकर, शास्त्रविधि अनुसार भक्ति शुरु की, आत्म कल्याण करवाया।

हे धर्मदास! यही बात आप कह रहे हो कि हम शुद्र को पास भी नहीं बैठने देते। धर्मदास बहुत शर्मसार हुआ। परन्तु परमात्मा की शिक्षा को अपने ऊपर व्यंग्य समझकर खिझ गया तथा कहा कि हे जिन्दा! आपकी जली-भूनी बातें अच्छी नहीं लगती। आपको बोलने की सभ्यता नहीं है। कहते हो कि कुत्ते की तरह सुनी-सुनाई बातें तुम सब भौंकते फिरते हो। यह कहकर धर्मदास जी ने मुँह बना लिया। नाराजगी जाहिर की। परमात्मा जिन्दा रुप में अन्तर्ध्यान हो गए। चौथी बार अन्तर्ध्यान हो गए तो धर्मदास का जीना मुश्किल हो गया। पछाड़ खा-खा कर रोने लगा। उस दिन फिर वंदावन में धर्मदास से परमात्मा की वार्ता हुई थी। (इस प्रकार परमेश्वर कबीर जी कुल मिलाकर छः बार अन्तर्ध्यान हुए, तब धर्मदास की अक्ल ठिकाने आई) वन्दावन मथुरा से चलकर धर्मदास रोता हुआ अपने गांव बांधवगढ़ की ओर वापिस चल पड़ा। धर्मदास जी ने छः महीनों का कार्यक्रम तीर्थों पर भ्रमण का बना रखा था। वह 15 दिन में ही वापिस घर की ओर चल पड़ा। गरीब दास जी ने अपनी अमतवाणी में कहा है :-

तहां वहां रोवत है धर्मनी नागर, कहां गए मेरे सुख के सागर।
अति वियोग हुआ हम सेती, जैसे निर्धन की लुट जाय खेती।
हम तो जाने तुम देह स्वरुपा, हमरी बुद्धि अन्ध गहर कूपा।
कल्प करे और मन में रोवै, दशों दिशा कूं वो मघ जोहै।
बेग मिलो करहूं अपघाता, मैं ना जीवूं सुनो विधाता।

जब धर्मदास जी बाँधवगढ़ पहुँचा, उस समय बहुत रो रहा था। घर में प्रवेश करके मुँह के बल गिरकर फूट-फूटकर रोने लगा। उसकी पत्नी का नाम आमिनी देवी था। अपने पति को रोते देखकर तथा समय से पूर्व वापिस लौटा देखकर मन-मन में विचार किया कि लगता है भक्तजी को किसी ने लूट लिया है। धन न रहने के कारण वापिस लौट आया है। धर्मदास जी के पास बैठकर अपने हाथों आँसू पौंछती हुई बोली - क्यों कच्चा मन कर रहे हो। कोई बात नहीं, किसी ने आपकी यात्रा का धन लूट लिया। आपके पास धन की कमी थोड़े है और ले जाना। अपनी तीर्थ यात्रा पूरी करके आना। मैं मना थोड़े करुँगी। कुछ देर बाद दढ़ मन करके धर्मदास जी ने कहा कि आमिनी देवी यदि रुपये पैसे वाला धन लुट गया होता तो

में और ले जाता। मेरा ऐसा धन लुट गया है जो शायद अब नहीं मिलेगा। वह मैंने अपने हाथों अपनी मूर्खता से गँवाया है। जिन्दा महात्मा से हुई सर्वज्ञान चर्चा तथा जिन्दा बाबा से सुनी संष्टि रचना आमिनी देवी को सुनाया। सर्वज्ञान प्रमाणों सहित देखकर आमिनी ने कहा कि सेठ जी आप तो निपुण व्यापारी थे, कभी घाटे का सौदा नहीं करते थे। इतना प्रमाणित ज्ञान फिर भी आप नहीं माने, साधु को तो नाराज होना ही था। कितनी बार आपको मिले-बच्चे की तरह समझाया, आपने उस दाता को क्यों ठुकरवाया? धर्मदास ने कहा आमिनी! जीवन में पहली बार हानि का सौदा किया है। यह हानि अब पूर्ति नहीं हो पावेगी। वह धन नहीं मिला तो मैं जीवित नहीं रह पाऊँगा।

छः महीने तक परमेश्वर जिन्दा नहीं आए। धर्मदास रो-रो अकुलाए, खाना नाममात्र रह गया। दिन में कई-कई बार घण्टों रोना। शरीर सूखकर काँटा हो गया। एक दिन धर्मदास जी से आमिनी देवी ने पूछा कि हे स्वामी! आपकी यह हालत मुझ से देखी नहीं जा रही है। आप विश्वास रखो, जब छः बार आए हैं तो अबकी बार भी आऐंगे। धर्मदास ने कहा कि इतना समय पहले कभी नहीं लगाया। लगता है मुझ पापी से बहुत नाराज हो गए हैं, बात भी नाराजगी की है। मैं महामूर्ख हूँ आमिनी देवी! अब मुझे उनकी कीमत का पता चला है। भोले-भाले नजर आते हैं, वे परमात्मा के विशेष कंपा पात्र हैं। इतना ज्ञान देखा न सुना। आमिनी ने पूछा कि उन्होंने बताया हो कि वे कैसे-कैसे मिलते हैं, कहाँ-कहाँ जाते हैं? धर्मदास जी ने कहा कि वे कह रहे थे कि मैं वहाँ अवश्य जाता हूँ जहाँ पर धर्म-भण्डारे होते हैं। वहाँ लोगों को ज्ञान समझाता हूँ। आमिनी देवी ने कहा कि आप भण्डारा कर दो। हो सकता है कि जिन्दा बाबा आ जाए। धर्मदास जी बोले कि मैं तो तीन दिन का भण्डारा करूँगा। आमिनी देवी पहले तो कंजूसी करती थी। धर्मदास तीन दिन का भण्डारा कहता था तो वह एक दिन पर अड़ जाती थी। परन्तु उस दिन आमिनी ने तुरन्त हाँ कर दी कि कोई बात नहीं आप तीन दिन का भण्डारा करो। धर्मदास जी ने दूर-दूर तक तीन दिन के भण्डारे का संदेश भिजवा दिया। साधुओं का निमन्त्रण भिजवा दिया। निश्चित दिन को भण्डारा प्रारम्भ हो गया। दो दिन बीत गए। साधु-महात्मा आए, ज्ञान चर्चा होती रही। परन्तु जो ज्ञान जिन्दा बाबा ने बताया था। उसका उत्तर किसी के पास नहीं पाया। धर्मदास जी जान-बूझकर साधुओं से प्रश्न करते थे कि क्या ब्रह्मा, विष्णु, शिव का भी जन्म होता है। उत्तर वही घिसा-पिटा मिलता कि इनके कोई माता-पिता नहीं हैं। इससे धर्मदास को स्पष्ट हो जाता कि वह जिन्दा महात्मा नहीं आया है। वेश बदलकर आता तो भी ज्ञान तो सही बताता। तीसरे दिन भी दो पहर तक में जिन्दा बाबा नहीं आए। धर्मदास जी ने दंढ़ निश्चय करके कहा कि यदि आज जिन्दा बाबा नहीं आए तो मैं आत्महत्या करूँगा, ऐसे जीवन से मरना भला। परमात्मा तो अन्तर्यामी हैं। जान गए कि आज भक्त पक्का मरेगा। उसी समय कुछ दूरी पर कदंब का पेड़ था। उसके नीचे उसी जिन्दा वाली वेशभूषा में बैठे धर्मदास को दिखाई दिए। धर्मदास दौड़कर गया, ध्यानपूर्वक देखा, जिन्दा महात्मा के गले से लग गया। अपनी गलती की क्षमा माँगी। कभी ऐसी गलती न करने का बार-बार वचन किया। तब परमात्मा धर्मदास के घर में गए। आमिनी तथा धर्मदास दोनों ने बहुत सेवा की, दोनों ने दीक्षा ली। परमात्मा

ने जिन्दा रुप में उनको प्रथम मन्त्र की दीक्षा दी। कुछ दिन परमेश्वर उनके बाग में रहे। फिर एक दिन धर्मदास ने ऐसी ही गलती कर दी, परमात्मा अचानक गायब हो गए। धर्मदास जी ने अपनी गलती को घना (बहुत) महसूस किया। खाना-पीना त्याग दिया, प्रतिज्ञा कर ली कि जब तक दर्शन नहीं दोगे, पीना-खाना बन्द। धर्मदास शरीर से बहुत दुर्बल हो गए। उठा-बैठा भी नहीं जाता था। छठे दिन परमात्मा आए। धर्मदास को अपने हाथों उठाकर गले से लगाया। अपने हाथों खाना खिलाया। धर्मदास ने पहले चरण धोकर चरणामत लिया। फिर ज्ञान चर्चा शुरु हुई। धर्मदास जी ने पूछा कि आप जी को इतना ज्ञान कैसे हुआ?

परमेश्वर जी ने कहा कि मुझे सतगुरु मिले हैं। वे काशी शहर में रहते हैं। उनका नाम कबीर है। वे तो स्वयं परमेश्वर हैं। सतगुरु का रुप बनाकर लीला कर रहे हैं, जुलाहे का कार्य करते हैं। उन्होंने मुझे सतलोक दिखाया, वह लोक सबसे न्यारा है। वहाँ जो सुख है, वह स्वर्ग में भी नहीं है। सदाबहार फलदार वक्ष, सुन्दर बाग, दूधों की नदियाँ बहती हैं। सुन्दर नर-नारी रहते हैं। वे कभी वद्ध नहीं होते। कभी मत्यु नहीं होती। जो सतगुरु से तत्त्वज्ञान सुनकर सत्यनाम की प्राप्ति करके भक्ति करता है, वह उस परमधाम को प्राप्त करता है। इसी का वर्णन गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी है। धर्मदास जी ने हठ करके कहा कि हे महाराज! मुझे वह अमर लोक दिखाने की कपा करें ताकि मेरा विश्वास दढ़ हो। परमेश्वर जी ने कहा कि आप भक्ति करो। जब शरीर त्यागकर जाएगा तो उस लोक को प्राप्त करेगा। धर्मदास जी के अधिक आग्रह करने पर परमेश्वर जिन्दा ने कहा कि चलो आपको सत्यलोक ले चलता हूँ। धर्मदास की आत्मा को निकालकर ऊपर सत्यलोक में ले गए। परमेश्वर के दरबार के द्वार पर एक सन्तरी खड़ा था। जिन्दा बाबा के रुप में खड़े परमेश्वर ने द्वारपाल से कहा कि धर्मदास को परमेश्वर के दर्शन करा के लाओ। द्वारपाल ने एक अन्य हंस (सतलोक में भक्त को हंस कहते हैं) से कहा कि धर्मदास को परमेश्वर के सिंहासन के पास ले जाओ, सत्यपुरुष के दर्शन करा के लाओ। वहाँ पर बहुत सारे हंस (भक्त) तथा हंसनी (नारी-भक्तमति) इकट्ठे होकर नाचते-गाते धर्मदास जी को सम्मान के साथ लेकर चले। सब हंसो तथा नारियों ने गले में सुन्दर मालाएं पहन रखी थी। उनके शरीर का प्रकाश 16 सूर्यों के समान था। जब धर्मदास जी ने तख्त (सिंहासन) पर बैठे सत्य पुरुष जी को देखा तो वही स्वरुप था जो धरती पर जिन्दा बाबा के रुप में था। परन्तु यहाँ पर परमेश्वर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा करोड़ चन्द्रमा के प्रकाश से भी कहीं अधिक था। जिन्दा रूप में नीचे से गए परमात्मा तख्त पर विराजमान अपने ही दूसरे स्वरूप पर चँवर करने लगा। धर्मदास ने सोचा कि जिन्दा तो इस परमेश्वर का सेवक होगा। परन्तु सूरत मिलती-जुलती है। कुछ देर में तख्त पर बैठा परमात्मा खड़ा हुआ तथा जिन्दा सिंहासन पर बैठ गया। तेजोमय शरीर वाले प्रभु जिन्दा के शरीर में समा गया। धर्मदास शर्म के मारे पानी-पानी हो गया। अपने आपको कोसने लगा कि मैं कैसा दुष्ट हूँ। मैंने परमेश्वर को कितना दुःखी किया, कितना अपमानित किया। मुझे वहाँ विश्वास नहीं हुआ। जब दर्शन करवाकर सतलोक के भक्त वापिस लाए। तीन दिन तक परमात्मा के सत्यलोक में रहा। उधर से धर्मदास को तीन दिन से अचेत देखकर घर, गाँव तथा रिश्तेदार

व मित्र बान्धवगढ़ में धर्मदास जी के घर पर इकट्ठे हो गए। कोई झाड़-फूँक करा रहा था। कोई वैध से उपचार करा रहा था, परन्तु सब उपाय व्यर्थ हो चुके थे। किसी को आशा नहीं रही थी कि धर्मदास जिन्दा हो जाएगा। तीसरे दिन परमात्मा ने उसकी आत्मा को शरीर में प्रवेश कर दिया। धर्मदास जी को उस बाग से उठाकर घर ले गए थे। जहाँ से परमात्मा उसको सत्यलोक लेकर गए थे। धर्मदास सचेत हो गया था। धर्मदास जी सचेत होते ही उस बाग में उसी स्थान पर गए तो वही परमात्मा जिन्दा बाबा के रुप में बैठे थे। धर्मदास जी चरणों में गिर गए और कहने लगे हे प्रभु! मुझ अज्ञानी को क्षमा करो प्रभु! :-

"अवगुण मेरे बाप जी, बख्सो गरीब निवाज"। जो मैं पूत कुपुत हूँ, बहुर पिता को लाज"

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि आप परमात्मा हैं, आप परम अक्षर ब्रह्म हैं। कभी-कभी आत्मा तो कहती थी कि पूर्ण ब्रह्म के बिना ऐसा ज्ञान पथ्वी पर कौन सुना सकता है, परन्तु मन तुरन्त विपरित विचार खड़े कर देता था। हे सत्य पुरुष! आपने अपने शरीर की वह शोभा जो सत्यलोक में है, यहाँ क्यों प्रकट नहीं कर रखी?

परमेश्वर जी ने कहा कि धर्मदास! यदि मैं उसी प्रकाशयुक्त शरीर से इस काल लोक में आ जाऊँ तो क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन भी इसी को कहते हैं) व्याकुल हो जाए। मैं अपना सर्व कार्य गुप्त करता हूँ। यह मुझे एक सिद्धी वाला सन्त मानता है। लेकिन इसको यह नहीं मालूम कि मैं कहाँ से आया हूँ? कौन हूँ? परमेश्वर ने धर्मदास से प्रश्न किया कि आपको कैसा लगा मेरा देश? धर्मदास बोले कि हे परमेश्वर इस संसार में अब मन नहीं लग रहा। उस पवित्र स्थान के सामने तो यह काल का सम्पूर्ण लोक (21 ब्रह्माण्डों का क्षेत्र) नरक के समान लग रहा है। जन्म-मरण यहाँ का अटल विधान है। चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जीवन भोगना भी अनिवार्य है। प्रत्येक प्राणी इसी आशा को लेकर जीवित हैं कि अभी नहीं मरुंगा परन्तु फिर भी कभी भी मत्यु को प्राप्त हो जाता है। प्रत्येक प्राणी एक-दूसरे से कपट से बातें करता है। लेकिन आपके सत्यलोक में सब व्यक्ति प्यार से बातें करते हैं। निष्कपट व्यवहार करते हैं। मैंने तीनों दिन यही जाँच की थी। धर्मदास जी यदि घर उपस्थित स्वजनों को न देखते जो उसके अचेत होने के साक्षी थे तो समझते कि कोई स्वप्न देखा होगा। परन्तु अब दढ़ निश्चय हो गया था। धर्मदास ने प्रश्न किया।

"क्या गुरू बदल सकते हैं?"

प्रश्न (धर्मदास जी का) :- हे प्रभु क्या गुरु बदल सकते हैं? सुना है सन्तों से कि गुरु नहीं बदलना चाहिए। गुरु एक, ज्ञान अनेक।

उत्तर (सत्यपुरुष का) :- जब तक गुरु मिले नहीं साचा, तब तक गुरु करो दस पाँचा।

कबीर झूठे गुरु के पक्ष को, तजत न लागै वार। द्वार न पावै मोक्ष का, रह वार का वार।।

भावार्थ : जब तक सच्चा गुरु (सतगुरु) न मिले, तब तक गुरु बदलते रहना चाहिए। चाहे कितने ही गुरु क्यों न बनाने पड़ें और बदलने पड़ें। झूठे गुरु को तुरन्त त्याग देना।

कबीर, डूबै थे पर उभरे, गुरु के ज्ञान चमक। बेड़ा देखा जरजरा, उतर चले फड़क।।

भावार्थ : जिस समय मुझे सत्य गुरु मिले, उनके ज्ञान के प्रकाश से पता चला कि हमारा

ज्ञान और समाधान (साधना) गलत है तो ऐसे गुरु बदल दिया जैसे किसी डर से पशु फड़क कर बहुत तेज दौड़ता है और जैसे रात्रि में सफर कर रहे यात्रियों को सुबह प्रकाश में पता चले कि जिस नौका में हम सवार हैं, उसमें पानी प्रवेश कर रहा है और साथ में सुरक्षित और साबत नौका खड़ी है तो समझदार यात्री जिसने कोई नशा न कर रखा हो, वह तुरंत फूटी नौका को त्यागकर साबत (सुरक्षित) नौका में बैठ जाता है। मैंने जब काशी में कबीर जी सच्चे गुरु का यह ज्ञान सुना जो आपको सुनाया है तो जाति, धर्म को नहीं देखा। उसी समय सत्यगुरु की शरण में चला गया और दीक्षा मन्त्र लेकर भक्ति कर रहा हूँ। सतगुरु ने मुझे दीक्षा देने का आदेश दे रखा है। हे धर्मदास! विचार कीजिए यदि एक वैध से रोगी स्वस्थ नहीं होता तो क्या अन्य डॉक्टर के पास नहीं जाता?

धर्मदास ने कहा कि जाता है, जाना भी चाहिए, जीवन रक्षा करनी चाहिए। परमेश्वर ने कहा कि इसी प्रकार मनुष्य जन्म जीव कल्याण के लिए मिलता है। जीव को जन्म-मरण का दीर्घ रोग लगा है। यह सत्यनाम तथा सारनाम बिना समाप्त नहीं हो सकता। दोनों मंत्र काशी में सतगुरु कबीर रहते हैं, उनसे मिलते हैं, पृथ्वी पर और किसी के पास नहीं हैं। आप काशी में जाकर दीक्षा लेना, आपका कल्याण हो जाएगा क्योंकि सत्यगुरु के बिना मेरा वह सत्यलोक प्राप्त नहीं हो सकता।

धर्मदास जी ने कहा कि हे प्रभु! मैंने गुरु रुपदास जी से दीक्षा ले रखी है। मैं पहले उनसे गुरु बदलने की आज्ञा लूँगा, यदि वे कहेंगे तो मैं गुरु बदलूंगा परन्तु धर्मदास की मूर्खता की हद देखकर परमेश्वर सातवीं बार अन्तर्ध्यान हो गए। धर्मदास जी फिर व्याकुल हो गए। पहले रुपदास जी के पास गए जो श्री कृष्ण अर्थात् श्री विष्णु जी के पुजारी थे। जो वैष्णव पंथ से जुड़े थे।

धर्मदास जी ने सन्त रुपदास जी से सर्व घटना बताई तथा गुरु बदलने की आज्ञा चाही। सन्त रुपदास जी अच्छी आत्मा के इन्सान थे। उन्होंने कहा बेटा धर्मदास! जो ज्ञान आपने सुना है जिस जिन्दा बाबा से, यह ज्ञान भगवान ही बता सकता है। मेरी तो आयु अधिक हो गई है। मैं तो इस मार्ग को त्याग नहीं सकता। आपकी इच्छा है तो आप उस महात्मा से दीक्षा ले सकते हो।

तब धर्मदास जी काशी में गए, वहाँ पर कबीर जुलाहे की झोंपड़ी का पता किया। वहाँ कपड़ा बुनने का कार्य करते कबीर परमेश्वर को देखकर आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहा। खुशी भी अपार हुई कि सतगुरु तथा परमेश्वर यही है। तब उनसे दीक्षा ली और अपना कल्याण करवाया। कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी को फिर दो अक्षर (जिस में एक ओम् ॐ मन्त्र है तथा दूसरा तत् जो सांकेतिक है) का सत्यनाम दिया। फिर सारनाम देकर सतलोक का वासी किया।

❖ कलयुग में परमात्मा अन्य निम्न अच्छी आत्माओं (दृढ़ भक्तों) को मिलेः-

2. संत मलूक दास (अरोड़ा) जी को मिले।

3. संत दादू दास जी आमेर (राजस्थान वाले) को मिले।

4. संत नानक देव जी को सुल्तानपुर शहर के पास बह रही बेई नदी पर मिले जहाँ

गुरूद्वारा ''सच्चखण्ड साहेब'' यादगार रूप में बना है।

5. संत गरीब दास जी गाँव छुड़ानी जिला झज्जर (हरियाणा) वाले को मिले, उस स्थान पर वर्तमान में यादगार बनी हुई है।

संत गरीब दास जी 10 वर्ष के बच्चे थे। अपने ही खेतों में अन्य कई ग्वालों के संग गऊएं चराने जाया करते थे, परमेश्वर जिन्दा बाबा के रूप में सत्यलोक (सच्चखण्ड) से चलकर आए। यह लोक सर्व भवनों के ऊपर है, जहाँ परमात्मा रहते हैं, सन्त गरीब दास जी की आत्मा को ऊपर अपने लोक में परमेश्वर लेकर गए। बच्चे को मृत जानकर शाम को चिता पर रखकर अन्तिम संस्कार करने वाले थे। तत्काल परमात्मा ने सन्त गरीबदास जी की आत्मा को ऊपर ब्रह्माण्डों का भ्रमण करवाकर सत्य ज्ञान बताकर शरीर में प्रवेश कर दिया, बालक जीवित हो गया। यह घटना फाल्गुन शुद्धि द्वादशी संवत 1784 सन् 1727 की है। संत गरीब दास जी को परमात्मा ने तत्त्वज्ञान प्रदान किया। उनका ज्ञान योग खोल दिया। जिस कारण से संत गरीब दास जी ने 24 हजार वाणी बोली जो संत गोपाल दास जी द्वारा लिखी गई। उन अमृतवाणियों को प्रिन्ट करवाकर ग्रन्थ रूप दे दिया है। यह दास (संत रामपाल दास) उसी से सत्संग किया करता है।

संत गरीब दास जी ने अमृत वाणी में कहा है :-

गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद ना पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।

भावार्थ :- संत गरीब दास जी ने परमात्मा से प्राप्त दिव्य दृष्टि से देखकर भूत-भविष्य का ज्ञान कहा है, बताया है कि जो काशी नगर (उत्तर प्रदेश) में जुलाहा कबीर जी थे। वे सर्व ब्रह्माण्डों के सृजनहार हैं। सर्व ब्रह्माण्डों को अपनी शक्ति से ठहराया है। परमेश्वर कबीर जी पर उनका कोई भार नहीं है। जैसे वैज्ञानिकों ने हवाई जहाज, रॉकेट बनाकर उड़ा दिये, स्वयं भी बैठ कर यात्रा करते हैं, इस प्रकार संत गरीब दास जी ने परमेश्वर जी को आँखों देखकर उनकी महिमा बताई है।

6. संत घीसा दास जी गाँव-खेखड़ा जिला बागपत (उत्तर प्रदेश) को मिले थे।

पुस्तक विस्तार को मध्यनजर रखते हुए अधिक विस्तार नहीं कर रहा हूँ, अधिक जानकारी के लिए www.jagatgururampalji.org से खोलकर अधिक ज्ञान ग्रहण कर सकते हैं।

❖ धर्मदास जी को कबीर परमेश्वर जी ने धामों की रचना की जानकारी दी :-

"पवित्र तीर्थ तथा धाम की जानकारी"

किसी साधक ऋषि जी ने किसी स्थान या जलाशय पर बैठ कर साधना की या अपनी आध्यात्मिक शक्ति का प्रदर्शन किया। वह अपनी भक्ति कमाई करके साथ ले गया तथा अपने ईष्ट लोक को प्राप्त हुआ। उस साधना स्थल का बाद में तीर्थ या धाम नाम पड़ा। अब

कोई उस स्थान को देखने जाए कि यहां कोई साधक रहा करता था। उसने बहुतों का कल्याण किया। अब न तो वहाँ संत जी है, जो उपदेश दे। वह तो अपनी कमाई करके चला गया।

विचार करें :- कृपया तीर्थ व धाम को हमाम दस्ता जानें। (एक डेढ़ फुट का लोहे का गोल पात्र लगभग नौ इंच परिधि का उखल जैसा होता है तथा डेढ़ फुट लम्बा तथा दो इन्च परिधि का गोल लोहे का डंडा-सा मूसल जैसा होता है जो सामग्री व दवाईयां आदि कूटने के काम आता है, उसे हमाम दस्ता कहते हैं।) एक व्यक्ति अपने पड़ौसी का हमाम दस्ता मांग कर लाया। उसने हवन की सामग्री कूटी तथा मांज धोयकर लौटा दिया। जिस कमरे में हमाम दस्ता रखा था उस कमरे में सुगंध आने लगी। घर के सदस्यों ने देखा कि यह सुगन्ध कहां से आ रही है तो पता चला कि हमाम दस्ते से आ रही है। वे समझ गए कि पड़ौसी ले गया था, उसने कोई सुगंध युक्त वस्तु कूटी है। कुछ दिन बाद वह सुगंध भी आनी बंद हो गई।

इसी प्रकार तीर्थ व धाम को एक हमाम दस्ता जानों। जैसे सामग्री कूटने वाले ने अपनी सर्व वस्तु पोंछ कर रख ली। खाली हमाम दस्ता लौटा दिया। अब कोई उस हमोम दस्ते को सूंघकर ही कल्यार्थ माने तो नादानी है। उसको भी सामग्री लानी पड़ेगी, तब पूर्ण लाभ होगा।

ठीक इसी प्रकार किसी धाम व तीर्थ पर रहने वाला पवित्र आत्मा तो राम नाम की सामग्री कूट कर झाड़-पौंछ कर अपनी सर्व कमाई को साथ ले गया। बाद में अनजान श्रद्धालु, उस स्थान पर जाने मात्र से कल्याण समझें तो उनके मार्ग दर्शकों (गुरुओं) की शास्त्र विधि रहित बताई साधना का ही परिणाम है। उस महान आत्मा सन्त की तरह प्रभु साधना करने से ही कल्याण सम्भव है। उसके लिए तत्त्वदर्शी संत की खोज करके उससे उपदेश लेकर आजीवन भक्ति करके मोक्ष प्राप्त करना चाहिए। शास्त्र विधि अनुकूल सत साधना मुझ दास के पास उपलब्ध है कृपया निःशुल्क प्राप्त करें।

"श्री अमरनाथ धाम की स्थापना कैसे हुई?"

भगवान शंकर जी ने पार्वती जी को एकांत स्थान पर उपेदश दिया था जिस कारण से माता पार्वती जी इतनी मुक्त हो गई कि जब तक प्रभु शिव जी (तमोगुण) की मृत्यु नहीं होगी, तब तक उमा जी की भी मृत्यु नहीं होगी। सात ब्रह्मा जी (रजोगुण) की मृत्यु के उपरान्त भगवान विष्णु (सतोगुण) की मृत्यु होगी। सात विष्णु जी की मृत्यु के पश्चात् शिवजी की मृत्यु होगी। तब माता पार्वती जी भी मृत्यु को प्राप्त होगी, पूर्ण मोक्ष नहीं हुआ। फिर भी जितना लाभ पार्वती जी को हुआ वह भी अधिकारी से उपदेश मंत्र ले कर हुआ। बाद में श्रद्धालुओं ने उस स्थान की याद बनाए रखने के लिए उसको सुरक्षित रखा तथा दर्शक जाने लगे।

जैसे यह दास (सन्त रामपाल) स्थान-स्थान पर जा कर सत्संग करता है। वहाँ पर खीर व हलवा भी बनाया जाता है। जो भक्तात्मा उपदेश प्राप्त कर लेता है, उसका कल्याण हो

जाता है। सत्संग समापन के उपरान्त सर्व टैंट आदि उखाड़ कर दूसरे स्थान पर सत्संग के लिए चले गये, पूर्व स्थान पर केवल मिट्टी या ईंटों की बनाई भट्ठी व चूल्हे शेष छोड़ दिए। फिर कोई उसी शहर के व्यक्ति से कहे कि आओ आपको वह स्थान दिखा कर लाता हूँ, जहां संत रामपाल दास जी का सत्संग हुआ था, खीर बनाई थी। बाद में उन भट्ठियों को देखने जाने वाले को न तो खीर मिले, न ही सत्संग के अमृत वचन सुनने को मिले, न ही उपदेश प्राप्त हो सकता जिससे कल्याण हो सके। उसके लिए संत ही खोजना पड़ेगा, जहां सत्संग चल रहा हो, वहाँ पर सर्व कार्य सिद्ध होंगे। ठीक इसी प्रकार तीर्थों व धामों पर जाना तो उस यादगार स्थान रूपी भट्ठी को देखना मात्र ही है। यह पवित्र गीता जी में वर्णित न होने से शास्त्र विरूद्ध हुई। जिससे कोई लाभ नहीं।(प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)

तत्त्व ज्ञान हीन सन्तों व महंतों तथा आचार्यों द्वारा भ्रमित श्रद्धालु तीर्थों व धामों पर आत्म कल्याणार्थ जाते हैं। श्री अमरनाथ जी की यात्रा पर गए श्रद्धालु तीन-चार बार बर्फानी तुफान में दब कर मृत्यु को प्राप्त हुए। प्रत्येक बार मरने वालों की संख्या हजारों होती थी। विचारणीय विषय है कि यदि श्री अमरनाथ जी के दर्शन व पूजा लाभदायक होती तो क्या भगवान शिव उन श्रद्धालुओं की रक्षा नहीं करते? अर्थात् प्रभु शिव जी भी शास्त्र विरूद्ध साधना से अप्रसन्न हैं।

''वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना कैसे हुई?''

जब सती जी (उमा देवी) अपने पिता राजा दक्ष के हवन कुण्ड में छलांग लगाने से जलकर मृत्यु को प्राप्त हुई। भगवान शिव जी उसकी अस्थियों के कंकाल को मोहवश सती जी (पार्वती जी) जान कर दस हजार वर्ष तक कंधे पर लिए पागलों की तरह घूमते रहे। भगवान विष्णु जी ने सुदर्शन चक्र से सती जी के कंकाल को छिन्न-भिन्न कर दिया। जहां धड़ गिरा वहाँ पर उसको जमीन में गाढ़ दिया गया। इस धार्मिक घटना की याद बनाए रखने के लिए उसके ऊपर एक मन्दिर जैसी यादगार बना दी कि कहीं आने वाले समय में कोई यह न कह दे कि पुराण में गलत लिखा है। उस मन्दिर में एक स्त्री का चित्र रख दिया उसे वैष्णो देवी कहने लगे। उसकी देख-रेख व श्रद्धालु दर्शकों को उस स्थान की कहानी बताने के लिए एक नेक व्यक्ति नियुक्त किया गया। उसको अन्य धार्मिक व्यक्ति कुछ वेतन देते थे। बाद में उसके वंशजों ने उस पर भेंट (दान) लेना प्रारम्भ कर दिया तथा कहने लगे कि एक व्यक्ति का व्यापार ठप्प हो गया था, माता के सौ रूपये संकल्प किए, एक नारियल चढ़ाया। वह बहुत धनवान हो गया। एक निःसन्तान दम्पति था, उसने माता के दो सौ रूपए, एक साड़ी, एक सोने का गले का हार चढ़ाने का संकल्प किया। उसको पुत्र प्राप्त हो गया।

इस प्रकार भोली आत्माऐं इन दन्त कथाओं पर आधारित होकर अपनी पवित्र गीता जी तथा पवित्र वेदों को भूल गए, जिसमें वह सर्व साधनाएं शास्त्र विधि रहित लिखी हैं। जिसके कारण न कोई सुख होता है, न कोई कार्य सिद्ध होता है, न ही परम गति अर्थात् मुक्ति होती है। (प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 मंत्र 23-24)। इसी प्रकार जहां देवी की आँखे गिरी वहाँ

नैना देवी का मन्दिर व जहां जिह्वा गिरी वहाँ श्री ज्वाला जी के मन्दिर तथा जहां धड़ गिरा वहाँ वैष्णो देवी के मन्दिर की स्थापना हुई।

धर्मदास जी की वंश परंपरा के बारे में

कबीर सागर अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 138 से 141 पर और ''अमर मूल'' पष्ठ 243 पर :-

विवेचन :- अनुराग सागर पष्ठ 140 पर परमात्मा ने बताया है कि चुड़ामणि (मुक्तामणि) तेरा बिंद पुत्र है। उससे तेरी वंश गुरू गद्दी प्रारम्भ होगी। फिर छठी पीढ़ी तेरी आएगी। उसको ''टकसारी पंथ'' वाला नकली कबीर पंथी भ्रमित करेगा। वह छठी पीढ़ी वाला वास्तविक नाम तथा क्रिया छोड़कर टकसारी वाली (पान प्रवाना) दीक्षा लेगा। टकसारी पंथ में चल रही चौंका आरती करेगा जो हमारे वास्तविक भक्ति मार्ग से विपरित होने से व्यर्थ होगा। बहुत जीवों को चौरासी लाख के चक्र में डालेगा। धर्मदास जी ने कहा है कि हे परमात्मा! आप एक और तो कह रहे थे कि तेरे बयालिस पीढ़ी वाले बिन्द यानि वंश वालों से सबका कल्याण होगा। अब कह रहे हो कि छठी पीढ़ी के पश्चात् काल वाली साधना चलेगी और मोक्ष मार्ग से भटक जाऐंगे। यह बात समझाऐं।

अनुराग सागर पष्ठ 140 से ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 1 से 12 तक :-

नाद बिंद जो पंथ चलावै। चुरामणि हंसन मुक्तावै।।1।।
धर्मदास तव बंश अज्ञाना। चीन्हैं नहीं अंश सहिदाना।।2।।
जस कछु आगे होई है भाई। सो चरित्र तोहि कहों बुझाई।।3।।
छटे पीढ़ी बिन्द तव होई। भूले वंश बिन्दु तव सोई।।4।।
टकसारी को ले है पाना। अस तव बिन्द होय अज्ञाना।।5।।
चाल हमारी बंश तव झाड़ै। टकसारी का मत सब मांडै।।6।।
चौंका तैसे करै बनाई। बहुत जीव चौरासी जाई।।7।।
आपा हंस अधिक होया ताही। नाद पुत्र से झगर कराही।।8।।
होवे दुर्मति वंश तुम्हारा। बचन बंश रोके बटपारा।।9।।

भावार्थ :- कबीर जी ने श्री चुड़ामणि पुत्र सेठ धर्मदास जी को दीक्षा दी थी। इस कारण से चुड़ामणि को नाद तथा बिन्द दोनों नामों से संबोधित किया है। बिन्द तो धर्मदास का पुत्र होने से कहा है। बताया है कि चुरामणि (चुड़ामणि) से तेरे वंश वालों की गुरू पीढ़ी प्रारम्भ होगी, परंतु जो कुछ आगे तेरे वंश गद्दी वालों के साथ काल का छल होगा, वह बताता हूँ, सुन। हे धर्मदास! तेरा वंश अज्ञानी है जो छठी पीढ़ी वाला गद्दीनशीन होगा, वह मेरे द्वारा बताया यथार्थ भक्ति मार्ग त्यागकर टकसारी वाले नकली कबीर पंथी महंत वाली भक्ति विधि ग्रहण करेगा, उसी तरह आरती चौका किया करेगा। इस प्रकार आगे आने वाली तेरी वंश परंपरा वाले महंतों से दीक्षा लेकर बहुत सारे जीव चौरासी लाख के चक्र में चले जाऐंगे। उनका जीवन नष्ट हो जाएगा। यदि कोई मेरे पंथ को नाद (शिष्य परंपरा) वाला आगे बढ़ाएगा। उसके साथ तेरे वंश गद्दी वाले झगड़ा करेंगे। हे धर्मदास! तेरा वंश दुर्मति को प्राप्त

हो जाएगा और वह ठग होकर वचन (नाद) वाले पंथ को रोकेगा।

''धर्मदास वचन''

अब तो संशय भयो अधिकाई। निश्चय वचन करो मोहि साईं।।10।।
प्रथम आप वचन असभाषा निर संशय महां ब्यालीस राखा।।11।।
अब कहहु काल बश परि हैं। दोई बात किहि विधि निस्तरी है।।12।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कबीर परमेश्वर से कहा कि अब तो मेरे को और अधिक शंका हो गई। मुझे विश्वास दिलाओ। पहले तो आपने ऐसे कहा कि तेरे वंश वालों से सर्व मानव का कल्याण होगा। अब आप कह रहे हो कि तेरी छठी पीढ़ी वाला भ्रमित होकर काल साधना करेगा-कराएगा। ये दोनों बातें कैसे सत्य हो सकती हैं?

''कबीर वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि मैंने तेरे पुत्र को दीक्षा देकर आगे दीक्षा देने का अधिकार दे दिया है। यदि आगे आने वाले गुरू गद्दी वाले सत्य साधना त्यागकर काल साधना करेंगे तो फिर मेरा क्या दोष है? फिर मैं तो अपना कोई नाद (शिष्य) भेजूंगा जो मेरे पंथ को बढ़ाएगा। यथार्थ भक्ति मार्ग से भ्रमित जगत को सत्य भक्ति मार्ग दृढ़ करेगा। जब-जब तेरे बिन्द (वंश) वालों को काल छलेगा। तब मैं सहायता करूँगा। मैं नाद हंस (शिष्य परंपरा) प्रकट करूँगा। नाद पुत्र यानि शिष्य रूपी पुत्र जो हमारा होगा, उससे मेरे पंथ का प्रकाश होगा। हे धर्मदास! अपने वचन वंश को समझा दो यानि चुड़ामणि को समझा दो कि वह सबको बताए कि कभी काल झटका दे जाए तो नाद वंश वाले से दीक्षा लेकर अपना मोक्ष करा लें।

विशेष :- वर्तमान में मेरे (रामपाल) द्वारा चलाया गया यह तेरहवां पंथ है। यह दास (रामपाल दास) अंतिम सतगुरू है। नामदान प्रकाश पुंज शरीर (electronic Body) यानि DVD से दिया जाएगा। अब के बाद नाद तथा बिंद का कोई चक्कर नहीं रहेगा। पहले भक्ति विधि गलत कर देते थे। जिस कारण से बिंद वाले पंथ भक्ति मार्ग को नष्ट कर देते थे। भक्ति विधि ठीक रहेगी तो साधकों का मोक्ष निश्चित है। अब तो DVD से दीक्षा दिलाई जाएगी। उसे वही दिलाएगा जिसको आदेश दिया जाएगा। वह चाहे बिन्द का हो, चाहे नाद का। कल्याण नाम दीक्षा से होना है। पंथ तो अब कोई भी नष्ट नहीं कर सकेगा। कलयुग में सत्य साधना चलेगी। विश्व का कल्याण होगा। जो अहंकारी व काल प्रेरित है, वे अपना कर्म खराब करते रहेंगे। काल के जाल में रह जाऐंगे। वे अपनी महिमा बनाने के लिए मेरे ज्ञान व विधान में त्रुटि निकालकर अपने अज्ञान का परिचय देंगे। मेरे भक्त ज्ञानवान हो चुके हैं। उनके काल जाल में नहीं आऐंगे।

अध्याय ''अनुराग सागर'' पर पृष्ठ 141 पर लिखा है :-

चारहूं युग देखो संवादा। पंथ उजागर कीन्हो नादा।।
कहाँ निर्गुण कहाँ सर्गुण भाई। नाद बिना नहिं चलै पंथाई।।
धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा। ताते दीन्ह मुक्ति का डोरा।।
याह विध हम बयालीस तारैं। जब गिरै वह तबै उभारै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि नाद पुत्र किसे कहते हैं? कहा कि जैसे धर्मदास तुम मेरे वचन के पुत्र हो यानि शिष्य रूप में नाद के पुत्र हो। ऐसे जब नाद वाला मेरा अंश प्रकट होगा, तब यदि तेरे बिन्द वाले भी उस नाद वाले से दीक्षा लेकर नाम जाप करेंगे तो तेरे बिन्द वाले भी पार हो जाऐंगे। इस प्रकार तेरे बयालीस पीढ़ी वालों को पार करूँगा। यदि तेरा बिन्द मेरे नाद के वचन नहीं मानेगा, देखते ही देखते उन जीवों को काल खा जाएगा। कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि :-

कहाँ नाद कहाँ बिन्द ने भाई। नाम भक्ति बिन लोक न जाई।।

भावार्थ :- चाहे कोई नाद वाला है, चाहे बिन्द वाला है। यदि नाम की वास्तविक भक्ति है तो सतलोक जा सकेगा।

''बहुत महत्त्वपूर्ण प्रमाण''

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' में पृष्ठ 132 पर स्पष्ट किया है कि कबीर परमेश्वर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! तू हमारा अंश है। मैं तेरे को एक गुप्त वस्तु का भेद बताता हूँ जो मैंने गुप्त रखी है। सात सुरति तो उत्पत्ति करने वाली हैं। तुम आठवीं सुरति हो तथा नौतम (नौंवी) सुरति मैंने गुप्त छुपाई है। नौतम सुरति मेरा निज वचन है यानि उसको पूर्ण मोक्ष मंत्र का अधिकार है जिससे दीक्षा लेने के पश्चात् काल चोर उस जीव को रोक नहीं सकता। धर्मदास जी ने प्रार्थना की कि हे परमात्मा! मुझे वह वचन बताओ जिससे जीव फिर से जन्म-मरण के चक्र में न आए। परमात्मा कबीर जी ने कहा कि आठ बूँद यानि सतलोक में स्त्री-पुरूष से उत्पन्न हंसों से जीव मुक्त कराने की योजना बनाई थी। तुम आठवीं बूँद हो। परंतु सबको काल ने भ्रमित कर दिया। अब नौंवी बूँद यानि नौतम सुरति से तुम सहित आठों की मुक्ति कराई जाएगी। नौतम सुरति बूँद प्रकाशा यानि नौंवे हंस का जन्म संसार में बूँद यानि माता-पिता से होगा। उस एक बूँद से तेरे बीयालिस बूँद वाले हंस पार कर दिए यानि आशीर्वाद दे दिया है, ऐसा होगा। **वाणी :-** वंश बीयालिस बून्द तुम्हारा। सो मैं एक बून्द (वचन) से तारा।**(कबीर बानी पृष्ठ 132-133 पर)**

अनुराग सागर में पृष्ठ 142 पर :-

बिन्द तुम्हारा नाद संग जावै। देखत दूत मन ही पछतावै।।

भावार्थ :- हे धर्मदास! तेरा वंश नाद वाले के साथ जाएगा यानि नाद वाले से दीक्षा लेगा तो काल के दूत निकट नहीं आऐंगे। वे भाग जाऐंगे, बहुत पश्चाताप करेंगे कि यह तो पार होगा।

भावार्थ है कि परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि धर्मदास जी की छठी पीढ़ी के पश्चात् काल की साधना चलेगी। टकसारी पंथ (जो नकली बारह कबीर पंथों में से एक है) वाली भक्ति विधि आरती चौंका, उसी नाम वाला मंत्र (अजर नाम, अमर नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम आदि-आदि) दीक्षा में दिया जाता है। जो दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) वाले महंत जी दीक्षा दे रहे हैं, वह टकसारी वाली साधना है जो व्यर्थ है।

कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पृष्ठ 242-243 पर दामाखेड़ा वालों ने

मिलावट करके लिखी वाणी में कहा है कि सातवीं पीढ़ी वाला तो अभिमानवश विचलित हो जाएगा, परंतु आठवीं पीढ़ी से पंथ का प्रकाश हो जाएगा, परंतु परमात्मा ने वाणी में स्पष्ट किया है कि :-

जो तेरी वंश पीढ़ी वाले गुरू हैं, उनका नाम तो स्वर्ग तक है। आठवां भी काल अपना दूत भेजेगा। इस प्रकार काल बहुत छल करेगा। तुम्हारे वंश का यह लेखा बता दिया है कि बिना सारशब्द के मुक्ति नहीं हो सकती। सारशब्द केवल धर्मदास जी को दिया था और धर्मदास जी से प्रतिज्ञा करा ली कि यह सारशब्द किसी को नहीं देना। अपने वंश को भी नहीं बताना। हे धर्मदास! तेरे को लाख दुहाई, यह सारशब्द तेरे अतिरिक्त किसी के पास नहीं जाना चाहिए। यदि यह सार शब्द किसी के हाथ लग गया तो वह अन् अधिकारी व्यक्ति सबको भ्रमित कर देगा। सारशब्द को उस समय तक छुपाना है, जब तक 12 पंथों को मिटा न दिया जाए। 12वां (बारहवां) पंथ संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) का है जिनका जन्म विक्रमी संवत् 1774 (सन् ई. 1717) में हुआ। उनको परमेश्वर कबीर जी धर्मदास जी की तरह मिले थे। उनको भी यही आदेश दिया था कि जब तक कलयुग 5505 वर्ष नहीं बीत जाता, तब तक मूल ज्ञान और मूल शब्द (मूल मंत्र) यानि सार शब्द छुपा कर रखना है। तो वह सार शब्द धर्मदास जी की वंश गद्दी वालों के पास कहाँ से आ गया? वह सार शब्द (मूल शब्द) तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) मेरे (रामपाल दास के) पास है। विश्व में अन्य किसी के पास नहीं है।

प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' पृष्ठ 136-137 तथा कबीर चरित्र बोध पृष्ठ 1835, 1870 पर तथा ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर है।

कलयुग सन् 1997 को 5505 वर्ष पूरा हो जाता है। सन् 1997 को मुझ दास को परमेश्वर कबीर के दर्शन दिन के 10 बजे हुए थे। सार शब्द (मूल शब्द) तथा मूल ज्ञान को सार्वजनिक करने का सही समय बताकर अन्तर्ध्यान हो गये थे। उसी समय से गुरू जी की आज्ञा से सार शब्द अनुयाईयों को प्रदान किया जा रहा है। सबका कल्याण होगा जो मेरे से नाम दीक्षा लेकर मन लगाकर मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा, उसका मोक्ष निश्चित है।

''कबीर परमेश्वर जी की काल से वार्ता''

जब परमेश्वर ने सर्व ब्रह्मण्डों की रचना की और अपने लोक में विश्राम करने लगे। उसके बाद हम सभी काल के ब्रह्मण्ड में रह कर अपना किया हुआ कर्मदण्ड भोगने लगे और बहुत दुःखी रहने लगे। सुख व शांति की खोज में भटकने लगे और हमें अपने निज घर सतलोक की याद सताने लगी तथा वहां जाने के लिए भक्ति प्रारंभ की। किसी ने चारों वेदों को कंठस्थ किया तो कोई उग्र तप करने लगा और हवन यज्ञ, ध्यान, समाधि आदि क्रियाएं प्रारम्भ की, लेकिन अपने निज घर सतलोक नहीं जा सके क्योंकि उपरोक्त क्रियाएं करने से अगले जन्मों में अच्छे समृद्ध जीवन को प्राप्त होकर (जैसे राजा-महाराजा, बड़ा व्यापारी, अधिकारी, देव-महादेव, स्वर्ग-महास्वर्ग आदि) वापिस लख चौरासी भोगने लगे। बहुत परेशान रहने लगे और परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करने लगे कि हे दयालु ! हमें निज घर का रास्ता दिखाओ। हम हृदय से

आपकी भक्ति करते हैं। आप हमें दर्शन क्यों नहीं दे रहे हो?

यह वतान्त कबीर साहेब ने धर्मदास जी को बताते हुए कहा कि धर्मदास इन जीवों की पुकार सुनकर मैं अपने सतलोक से जोगजीत का रूप बनाकर काल लोक में आया। तब इक्कीसवें ब्रह्मण्ड में जहां काल का निज घर है वहां पर तप्तशिला पर जीवों को भूनकर सुक्ष्म शरीर से गंध निकाला जा रहा था। मेरे पहुंचने के बाद उन जीवों की जलन समाप्त को गई। उन्होंने मुझे देखकर कहा कि हे पुरुष ! आप कौन हो? आपके दर्शन मात्र से ही हमें बड़ा सुख व शांति का आभास हो रहा है। फिर मैंने बताया कि मैं पारब्रह्म परमेश्वर कबीर हूं। आप सब जीव मेरे लोक से आकर काल ब्रह्म के लोक में फंस गए हो। यह काल रोजाना एक लाख मानव के सुक्ष्म शरीर से गंध निकाल कर खाता है और बाद में नाना-प्रकार की योनियों में दण्ड भोगने के लिए छोड़ देता है। तब वे जीवात्माएं कहने लगी कि हे दयालु परमश्वेर! हमें इस काल की जेल से छुड़वाओ। मैंने बताया कि यह ब्रह्मण्ड काल ने तीन बार भक्ति करके मेरे से प्राप्त किए हुए हैं जो आप यहां सब वस्तुओं का प्रयोग कर रहे हो ये सभी काल की हैं और आप सब अपनी इच्छा से घूमने के लिए आए हो। इसलिए अब आपके ऊपर काल ब्रह्म का बहुत ज्यादा ऋण हो चुका है और वह ऋण मेरे सच्चे नाम के जाप के बिना नहीं उतर सकता।

जब तक आप ऋण मुक्त नहीं हो सकते तब तक आप काल ब्रह्म की जेल से बाहर नहीं जा सकते। इसके लिए आपको मुझसे नाम उपदेश लेकर भक्ति करनी होगी। तब मैं आपको छुड़वा कर ले जाऊंगा। हम यह वार्ता कर ही रहे थे कि वहां पर काल ब्रह्म प्रकट हो गया और उसने बहुत क्रोधित होकर मेरे ऊपर हमला बोला। मैंने अपनी शब्द शक्ति से उसको मुर्छित कर दिया। फिर कुछ समय बाद वह होश में आया। मेरे चरणों में गिरकर क्षमा याचना करने लगा और बोला कि आप मुझ से बड़े हो, मुझ पर कुछ दया करो और यह बताओ कि आप मेरे लोक में क्यों आए हो ? तब मैंने काल पुरुष को बताया कि कुछ जीवात्माएं भक्ति करके अपने निज घर सतलोक में वापिस जाना चाहती हैं। उन्हें सतभक्ति मार्ग नहीं मिल रहा है। इसलिए वे भक्ति करने के बाद भी इसी लोक में रह जाती हैं। मैं उनको सतभक्ति मार्ग बताने के लिए और तेरा भेद देने के लिए आया हूं कि तूं काल है, एक लाख जीवों का आहार करता है और सवा लाख जीवों को उत्पन्न करता है तथा भगवान बन कर बैठा है। मैं इनको बताऊंगा कि तुम जिसकी भक्ति करते हो वह भगवान नहीं, काल है। इतना सुनते ही काल बोला कि यदि सब जीव वापिस चले गए तो मेरे भोजन का क्या होगा ? मैं भूखा मर जाऊंगा। आपसे मेरी प्रार्थना है कि तीन युगों में जीव कम संख्या में ले जाना और सबको मेरा भेद मत देना कि मैं काल हूँ, सबको खाता हूँ। जब कलियुग आए तो चाहे जितने जीवों को ले जाना। ये वचन काल ने मुझसे प्राप्त कर लिए। कबीर साहेब ने धर्मदास को आगे बताते हुए कहा कि सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग में भी मैं आया था और बहुत जीवों को सतलोक लेकर गया लेकिन इसका भेद नहीं बताया। अब मैं कलियुग में आया हूं और काल से मेरी वार्ता हुई है। काल ब्रह्म ने मुझ से कहा कि अब आप चाहे जितना जोर लगा लेना, आपकी बात कोई नहीं सुनेगा। प्रथम तो मैंने जीव को भक्ति के लायक ही नहीं छोड़ा है। उनमें बीड़ी, सिगरेट, शराब, मांस आदि दुर्व्यसन की आदत डाल कर इनकी वति को बिगाड़ दिया है। नाना-प्रकार की पाखण्ड पूजा में जीवात्माओं

को लगा दिया है। दूसरी बात यह होगी कि जब आप अपना ज्ञान देकर वापिस अपने लोक में चले जाओगे तब मैं (काल) अपने दूत भेजकर आपके पंथ से मिलते-जुलते बारह पंथ चलाकर जीवों को भ्रमित कर दूंगा। महिमा सतलोक की बताएंगे, आपका ज्ञान कथेंगे लेकिन नाम-जाप मेरा करेंगे, जिसके परिणामस्वरूप मेरा ही भोजन बनेंगे। यह बात सुनकर कबीर साहेब ने कहा कि आप अपनी कोशिश करना, मैं सतमार्ग बताकर ही वापिस जाऊंगा और जो मेरा ज्ञान सुन लेगा वह तेरे बहकावे में कभी नहीं आएगा।

सतगुरु कबीर साहेब ने कहा कि हे निरंजन ! यदि मैं चाहूं तो तेरे सारे खेल को क्षण भर में समाप्त कर सकता हूँ, परंतु ऐसा करने से मेरा वचन भंग होता है। यह सोच कर मैं अपने प्यारे हंसों को यथार्थ ज्ञान देकर शब्द का बल प्रदान करके सतलोक ले जाऊंगा और कहा कि -

सुनो धर्मराया, हम शंखों हंसा पद परसाया।
जिन लीन्हा हमरा प्रवाना, सो हंसा हम किए अमाना।।

(पवित्र कबीर सागर में जीवों को भूल-भूलइयां में डालने के लिए तथा अपनी भूख को मिटाने के लिए तरह-२ के तरीकों का वर्णन)

द्वादस पंथ करूं मैं साजा, नाम तुम्हारा ले करूं अवाजा।
द्वादस यम संसार पठहो, नाम तुम्हारे पंथ चलैहो।।
प्रथम दूत मम प्रगटे जाई, पीछे अंश तुम्हारा आई।
यही विधि जीवनको भ्रमाऊं, पुरुष नाम जीवन समझाऊं।।
द्वादस पंथ नाम जो लैहे, सो हमरे मुख आन समै है।
कहा तुम्हारा जीव नहीं माने, हमारी ओर होय बाद बखानै।।
मैं दृढ़ फंदा रची बनाई, जामें जीव रहे उरझाई।
देवल देव पाषान पूजाई, तीर्थ व्रत जप—तप मन लाई।।
यज्ञ होम अरू नेम अचारा, और अनेक फंद में डारा।
जो ज्ञानी जाओ संसारा, जीव न मानै कहा तुम्हारा।।

(सतगुरु वचन)

ज्ञानी कहे सुनो अन्याई, काटो फंद जीव ले जाई।।
जेतिक फंद तुम रचे विचारी, सत्य शबद तै सबै बिंडारी।।
जौन जीव हम शब्द दृढावै, फंद तुम्हारा सकल मुकावै।।
चौका कर प्रवाना पाई, पुरुष नाम तिहि देऊं चिन्हाई।।
ताके निकट काल नहीं आवै, संधि देखी ताकहं सिर नावै।।

उपरोक्त विवरण से सिद्ध होता है कि जो अनेक पंथ चले हुए हैं। जिनके पास कबीर साहेब द्वारा बताया हुआ सतभक्ति मार्ग नहीं है, ये सब काल प्रेरित हैं। अतः बुद्धिमान को चाहिए कि सोच-विचार कर भक्ति मार्ग अपनाएं क्योंकि मनुष्य जन्म अनमोल है, यह बार-बार नहीं मिलता। कबीर साहेब कहते हैं कि :-

कबीर मानुष जन्म दुर्लभ है, मिले न बारम्बार। तरूवर से पत्ता टूट गिरे, बहुर न लगता डारि।।

काल निरंजन द्वारा कबीर जी से तीन युगों में कम जीव ले जाने का वचन लेना

(विस्तृत व सम्पूर्ण वर्णन)

प्रश्न :- कबीर जी के नाम से चले 12 पंथों के वास्तविक मुखिया कौन हैं और तेरहवां पंथ कौन चलाएगा?

उत्तर :- जैसा कि कबीर सागर के संशोधनकर्ता स्वामी युगलानन्द (बिहारी) जी ने दुख व्यक्त किया है कि समय-समय पर कबीर जी के ग्रन्थों से छेड़छाड़ करके उनकी बुरी दशा कर रखी है।

उदाहरण :- परमेश्वर कबीर जी का जोगजीत के रूप में काल ब्रह्म के साथ विवाद हुआ था। वह ''स्वसमवेद बोध'' पृष्ठ 117 से 122 तक तथा ''अनुराग सागर'' 60 से 67 तक है।

परमेश्वर कबीर जी अपने पुत्र जोगजीत के रूप में काल के प्रथम ब्रह्माण्ड में प्रकट हुए जो इक्कीसवां ब्रह्माण्ड है जहाँ पर तप्त शिला बनी है। काल ब्रह्म ने जोगजीत के साथ झगड़ा किया। फिर विवश होकर चरण पकड़कर क्षमा याचना की तथा प्रतिज्ञा करवाकर कुछ सुविधा माँगी।

1. तीनों युगों (सत्ययुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग) में थोड़े जीव पार करना।

2. जोर-जबरदस्ती करके जीव मेरे लोक से न ले जाना।

3. आप अपना ज्ञान समझाना। जो आपके ज्ञान को माने, वह आपका और जो मेरे ज्ञान को माने, वह मेरा।

4. कलयुग में पहले मेरे दूत प्रकट होने चाहिऐं, पीछे आपका दूत जाए।

5. त्रेतायुग में समुद्र पर पुल बनवाना। उस समय मेरा पुत्र विष्णु रामचंद्र रूप में लंका के राजा रावण से युद्ध करेगा, समुद्र रास्ता नहीं देगा।

6. द्वापर युग में बौद्ध शरीर त्यागकर जाऊँगा। राजा इन्द्रदमन मेरे नाम से (जगन्नाथ नाम से) समुद्र के किनारे मेरी आज्ञा से मंदिर बनवाना चाहेगा। उसको समुद्र बाधा करेगा। आप उस मंदिर की सुरक्षा करना। परमेश्वर ने सर्व माँगें स्वीकार कर ली और वचनबद्ध हो गए। तब काल ब्रह्म हँसा और कहा कि हे जोगजीत! आप जाओ संसार में। जिस समय कलयुग आएगा। उस समय मैं अपने 12 दूत (नकली सतगुरू) संसार में भेजूँगा। जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा होगा, तब तक मेरे दूत तेरे नाम से (कबीर जी के नाम से) 12 कबीर पंथ चला दूँगा। कबीर जी ने जोगजीत रूप में काल ब्रह्म से कहा था कि कलयुग में मेरा नाम कबीर होगा और मैं कबीर नाम से पंथ चलाऊँगा। इसलिए काल ज्योति निरंजन ने कहा था कि आप कबीर नाम से एक पंथ चलाओगे तो मैं (काल) कबीर नाम से 12 पंथ चलाऊँगा। सर्व मानव को भ्रमित करके अपने जाल में फाँसकर रखूँगा। इनके अतिरिक्त और भी कई पंथ चलाऊँगा जो सतलोक, सच्चखण्ड की बातें किया करेंगे तथा सत्य साधना उनके पास नहीं होगी। जिस कारण से वे सत्यलोक की आश में गलत नामों को जाप करके मेरे जाल में ही रह जाऐंगे।

काल ब्रह्म ने पूछा था कि आप किस समय कलयुग में अपना सत्य कबीर पंथ चलाओगे? कबीर जी ने कहा था कि जिस समय कलयुग 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष बीत जाएगा, तब मैं अपना यथार्थ तेरहवां कबीर पंथ चलाऊँगा।

काल ने कहा कि उस समय से पहले मैं पूरी पंथ्वी के ऊपर शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण करवाकर शास्त्रविरूद्ध ज्ञान बताकर झूठे नाम तथा गलत साधना के अभ्यस्त कर दूँगा। जब तेरा तेरहवां अंश आकर सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उसकी बात पर कोई विश्वास नहीं करेगा, उल्टे उसके साथ झगड़ा करेंगे। कबीर जी को पता था कि जब कलयुग के 5505 वर्ष पूरे होंगे (सन् 1997 में) तब शिक्षा की क्रांति लाई जाएगी। सर्व मानव अक्षर ज्ञानयुक्त किया जाएगा। उस समय मेरा दास सर्व धार्मिक ग्रन्थों को ठीक से समझकर मानव समाज के रूबरू करेगा। सर्व प्रमाणों को आँखों देखकर शिक्षित मानव सत्य से परिचित होकर तुरंत मेरे तेरहवें पंथ में दीक्षा लेगा और पूरा विश्व मेरे द्वारा बताई भक्ति विधि तथा तत्त्वज्ञान को हृदय से स्वीकार करके भक्ति करेगा। उस समय पुनः सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। आपसी रागद्वेष, चोरी-जारी, लूट-ठगी कोई नहीं करेगा। कोई धन संग्रह नहीं करेगा। भक्ति को अधिक महत्त्व दिया जाएगा। जैसे उस समय उस व्यक्ति को महान माना जा रहा होगा जिसके पास अधिक धन होगा, बड़ा व्यवसाय होगा, बड़ी-बड़ी कोठियाँ बना रखी होंगी, परंतु 13वें पंथ के प्रारम्भ होने के पश्चात् उन व्यक्तियों को मूर्ख माना जाएगा और जो भक्ति करेंगे, सामान्य मकान बनाकर रहेंगे, उनको महान, बड़े और सम्मानित व्यक्ति माना जाएगा।

''प्रमाण के लिए पवित्र कबीर सागर से भिन्न-भिन्न अध्यायों से अमंत बानी''

''कबीर जी तथा ज्योति निरंजन की वार्ता''

अनुराग सागर के पंष्ठ 62 से :-

''धर्मराय (ज्योति निरंजन) वचन''

धर्मराय अस विनती ठानी। मैं सेवक द्वितीया न जानी।।1
ज्ञानी बिनती एक हमारा। सो न करहू जिह से हो मोर बिगारा।।2
पुरूष दीन्ह जस मोकहं राजु। तुम भी देहहु तो होवे मम काजु।।3
अब मैं वचन तुम्हरो मानी। लीजो हंसा हम सो ज्ञानी।।4

पंष्ठ 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

दयावन्त तुम साहेब दाता। ऐतिक कंपा करो हो ताता।।5
पुरूष शॉप मोकहं दीन्हा। लख जीव नित ग्रासन कीन्हा।।6

पंष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी :-

जो जीव सकल लोक तव आवै। कैसे क्षुधा मोर मिटावै।।7
जैसे पुरूष कंपा मोपे कीन्हा। भौसागर का राज मोहे दीन्हा।।8
तुम भी कंपा मोपर करहु। जो माँगे सो मोहे देहो बरहु।।9
सतयुग, त्रेता, द्वापर मांहीं। तीनों युग जीव थोड़े जाहीं।।10

चौथा युग जब कलयुग आवै। तब तव शरण जीव बहु जावै।।11

पष्ठ 65 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 3 से :-

प्रथम दूत मम प्रकटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।12

पष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 6 :-

ऐसा वचन हरि मोहे दीजै। तब संसार गवन तव कीजै।।13

''जोगजीत वचन=ज्ञानी बचन''

पष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 7 :-

अरे काल तुम परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख डारा।।14
बीनती तोरी लीन्ह मैं जानि। मोकहं ठगा काल अभिमानी।।15
जस बीनती तू मोसन कीन्ही। सो अब बरवस तोहे दीन्ही।।16
चौथा युग जब कलयुग आवै। तब हम अपना अंश पठावैं।।17

''धर्मराय (काल) वचन''

पष्ठ 64 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 17 :-

हे साहिब तुम पंथ चलाऊ। जीव उबार लोक लै जाऊ।।18

पष्ठ 66 से अनुराग सागर की वाणी, ऊपर से वाणी पंक्ति नं. 8, 9, 16 से 21 :-

सन्धि छाप (सार शब्द) मोहे दिजे ज्ञानी। जैसे देवोंगे हंस सहदानी।।19
जो जन मोकूं संधि (सार शब्द) बतावै। ताके निकट काल नहीं आवै।।20
कहै धर्मराय जाओ संसारा। आनहु जीव नाम आधारा।।21
जो हंसा तुम्हरे गुण गावै। ताहि निकट हम नहीं जावैं।।22
जो कोई लेहै शरण तुम्हारी। मम सिर पग दै होवै पारी।।23
हम तो तुम संग कीन्ह ढ़िठाई। तात जान किन्ही लड़काइ।।24
कोटिन अवगुन बालक करही। पिता एक चित नहीं धरही।।25
जो पिता बालक कूं देहै निकारी। तब को रक्षा करै हमारी।।26
सारनाम देखो जेहि साथा। ताहि हंस मैं नीवाऊँ माथा।।27

ज्ञानी (कबीर) वचन

अनुराग सागर पष्ठ 66 :-

जो तोहि देहुं संधि बताई। तो तूं जीवन को हइहो दुखदाई।।28
तुम परपंच जान हम पावा। काल चलै नहीं तुम्हरा दावा।।29
धर्मराय तोहि प्रकट भाखा। गुप्त अंक बीरा हम राखा।।30
जो कोई लेई नाम हमारा। ताहि छोड़ तुम हो जाना नियारा।।31
जो तुम मोर हंस को रोको भाई। तो तुम काल रहन नहीं पाई।।32

''धर्मराय (काल निरंजन) बचन''

पष्ठ 62 तथा 63 से अनुराग सागर की वाणी :-

बेसक जाओ ज्ञानी संसारा। जीव न मानै कहा तुम्हारा।।33
कहा तुम्हारा जीव ना मानै। हमरी और होय बाद बखानै।।34

दढ़ फंदा मैं रचा बनाई। जामें सकल जीव उरझाई।।35
वेद–शास्त्र समर्ति गुणगाना। पुत्र मेरे तीन प्रधाना।।36
तीनहू बहु बाजी रचि राखा। हमरी महिमा ज्ञान मुख भाखा।।37
देवल देव पाषाण पुजाई। तीर्थ व्रत जप तप मन लाई।।38
पूजा विश्व देव अराधी। यह मति जीवों को राखा बाँधि।।39
जग (यज्ञ) होम और नेम आचारा। और अनेक फंद मैं डारा।।40

''ज्ञानी (कबीर) वचन''

हमने कहा सुनो अन्याई। काटों फंद जीव ले जांई।।41
जेते फंद तुम रचे विचारी। सत्य शब्द ते सबै विडारी।।42
जौन जीव हम शब्द दढ़ावैं। फंद तुम्हारा सकल मुक्तावैं।।43
जबही जीव चिन्ही ज्ञान हमारा। तजही भ्रम सब तोर पसारा।।44
सत्यनाम जीवन समझावैं। हंस उभार लोक लै जावै।।45
पुरूष सुमिरन सार बीरा, नाम अविचल जनावहूँ।
शीश तुम्हारे पाँव देके, हंस लोक पठावहूँ।।46
ताके निकट काल नहीं आवै। संधि देख ताको सिर नावै।।48
(संधि = सत्यनाम+सारनाम)

''धर्मराय (काल) वचन''

पंथ एक तुम आप चलऊ। जीवन को सतलोक लै जाऊ।।49
द्वादश पंथ करूँ मैं साजा। नाम तुम्हारा ले करों आवाजा।।50
द्वादश यम संसार पठाऊँ। नाम कबीर ले पंथ चलाऊँ।।51
प्रथम दूत मेरे प्रगटै जाई। पीछे अंश तुम्हारा आई।।52
यहि विधि जीवन को भ्रमाऊँ। आपन नाम पुरूष का बताऊँ।।53
द्वादश पंथ नाम जो लैहि। हमरे मुख में आन समैहि।।54

''ज्ञानी (कबीर) वचन'' चौपाई

अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' पष्ठ 121 :-

अरे काल परपंच पसारा। तीनों युग जीवन दुख आधारा।।55
बीनती तोरी लीन मैं मानी। मोकहं ठगे काल अभिमानी।।56
चौथा युग जब कलयुग आई। तब हम अपना अंश पठाई।।57
काल फंद छूटै नर लोई। सकल संष्टि परवानिक (दीक्षित) होई।।58
घर–घर देखो बोध (ज्ञान) बिचारा (चर्चा)। सत्यनाम सब ठोर उचारा।।59
पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह वचन होयगा साचा।।60
कलयुग बीत जाए जब ऐता। सब जीव परम पुरूष पद चेता।।61

भावार्थ :- (वाणी सँख्या 55 से 61 तक) परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे काल! तूने विशाल प्रपंच रच रखा है। तीनों युगों (सतयुग, त्रेता, द्वापर) में जीवों को बहुत कष्ट देगा। जैसा तू कह रहा है। तूने मेरे से प्रार्थना की थी, वह मान ली। तूने मेरे साथ धोखा किया

है, परतुं चौथा युग जब कलयुग आएगा, तब मैं अपना अंश यानि कपा पात्र आत्मा भेजूँगा। हे काल! तेरे द्वारा बनाए सर्व फंद यानि अज्ञान आधार से गलत ज्ञान व साधना को सत्य शब्द तथा सत्य ज्ञान से समाप्त करेगा। उस समय पूरा विश्व प्रवानिक यानि उस मेरे संत से दीक्षा लेकर दीक्षित होगा। उस समय तक यानि जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच नहीं बीत जाता, सत्यनाम, मूल नाम (सार शब्द) तथा मूल ज्ञान (तत्त्वज्ञान) प्रकट नहीं करना है। परंतु जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरा हो जाएगा, तब घर-घर में मेरे अध्यात्मिक ज्ञान की चर्चा हुआ करेगी और सत्यनाम, सार शब्द को सब उपदेशियों को प्रदान किया जाएगा। यह जो बात मैं कह रहा हूँ, ये मेरे वचन उस समय सिद्ध होंगे, जब कलयुग के 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष पूरे हो जाऐंगे। जब कलयुग इतने वर्ष बीत जाएगा। तब सर्व मानव प्राणी परम पुरूष यानि सत्य पुरूष के पद अर्थात् उस परम पद के जानकार हो जाऐंगे जिसके विषय में गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में कहा है कि तत्वदर्शी संत के प्राप्त होने के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। जिस परमेश्वर ने संसार रूपी वक्ष का विस्तार किया है अर्थात् जिस परमेश्वर ने सष्टि की रचना की है, उस परमेश्वर की भक्ति करो।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि उस समय उस परमेश्वर के पद (सत्यलोक) के विषय में सबको पूर्ण ज्ञान होगा।

स्वसमवेद बोध पष्ठ 170 :-

अथ स्वसम वेद की स्फुटवार्ता-चौपाई

एक लाख और असि हजारा। पीर पैगंबर और अवतारा।।62
सो सब आही निरंजन वंशा। तन धरी–धरी करैं निज पिता प्रशंसा।।63
दश अवतार निरंजन के रे। राम कष्ण सब आहीं बडेरे।।64
इनसे बड़ा ज्योति निरंजन सोई। यामें फेर बदल नहीं कोई।।65

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि बाबा आदम से लेकर हजरत मुहम्मद तक कुल एक लाख अस्सी हजार (1,80,000) पैगंबर हुए हैं तथा दस अवतार जो हिन्दु मानते हैं, ये सब काल के भेजे आए हैं। इन सबने काल ब्रह्म की भक्ति का प्रचार किया है। जो दस अवतार हैं, इन दस अवतारों में राम तथा कष्ण प्रमुख हैं। ये सब काल की महिमा बनाकर सर्व जीवों को भ्रमित करके काल साधना दढ़ कर गए हैं। इस सबका मुखिया ज्योति निरंजन काल (ब्रह्म) है।

स्वसमवेद बोध पष्ठ 171(1515) :-

सत्य कबीर वचन

दोहे :- पाँच हजार अरू पाँच सौ पाँच जब कलयुग बीत जाय।
महापुरूष फरमान तब, जग तारन कूं आय।।66
हिन्दु तुर्क आदि सबै, जेते जीव जहान।
सत्य नाम की साख गही, पावैं पद निर्वान।।67
यथा सरितगण आप ही, मिलैं सिन्धु मैं धाय।

सत्य सुकृत के मध्य तिमि, सब ही पंथ समाय।।68
जब लग पूर्ण होय नहीं, ठीक का तिथि बार।
कपट–चातुरी तबहि लौं, स्वसम बेद निरधार।।69
सबही नारी–नर शुद्ध तब, जब ठीक का दिन आवंत।
कपट चातुरी छोड़ि के, शरण कबीर गहंत।।70
एक अनेक ह्वै गए, पुनः अनेक हों एक।
हंस चलै सतलोक सब, सत्यनाम की टेक।।71
घर घर बोध विचार हो, दुर्मति दूर बहाय।
कलयुग में सब एक होई, बरतें सहज सुभाय।।72
कहाँ उग्र कहाँ शुद्र हो, हरै सबकी भव पीर(पीड़)।।73
सो समान समदृष्टि है, समर्थ सत्य कबीर।।74

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने बताया है कि हे धर्मदास! मैंने ज्योति निरंजन यानि काल ब्रह्म से भी कहा था, अब आपको भी बता रहा हूँ।

स्वसमबेद बोध की वाणी सँख्या 66 से 74 का सरलार्थ :- जिस समय कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा, तब एक महापुरूष विश्व को पार करने के लिए आएगा। हिन्दु, मुसलमान आदि-आदि जितने भी पंथ तब तक बनेंगे और जितने जीव संसार में हैं, वे मानव शरीर प्राप्त करके उस महापुरूष से सत्यनाम लेकर सत्यनाम की शक्ति से मोक्ष प्राप्त करेंगे। वह महापुरूष जो सत्य कबीर पंथ चलाएगा, उस (तेरहवें) पंथ में सब पंथ स्वतः ऐसे तीव्र गति से समा जाएंगे जैसे भिन्न-भिन्न नदियाँ अपने आप निर्बाध दौड़कर समुद्र में गिर जाती है। उनको कोई रोक नहीं पाता। ऐसे उस तेरहवें पंथ में सब पंथ शीघ्रता से मिलकर एक पंथ बन जाएगा। परंतु जब तक ठीक का समय नहीं आएगा यानि कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे नहीं करता, तब तक मैं जो यह ज्ञान स्वसमवेद में बोल रहा हूँ, आप लिख रहे हो, निराधार लगेगा।

जिस समय वह निर्धारित समय आएगा। उस समय स्त्री-पुरूष उच्च विचारों तथा शुद्ध आचरण के होकर कपट, व्यर्थ की चतुराई त्यागकर मेरी (कबीर जी की) शरण ग्रहण करेंगे। परमात्मा से लाभ लेने के लिए एक ''मानव'' धर्म से अनेक पंथ (धार्मिक समुदाय) बन गए हैं, वे सब पुनः एक हो जाएंगे। सब हंस (निर्विकार भक्त) आत्माएं सत्य नाम की शक्ति से सतलोक चले जाएंगे। मेरे अध्यात्म ज्ञान की चर्चा घर-घर में होगी। जिस कारण से सबकी दुर्मति समाप्त हो जाएगी। कलयुग में फिर एक होकर सहज बर्ताव करेंगे यानि शांतिपूर्वक जीवन जीएंगे। कहाँ उग्र अर्थात् चाहे डाकू, लुटेरा, कसाई हो, चाहे शुद्र, अन्य बुराई करने वाला नीच होगा। परमात्मा सत्य भक्ति करने वालों की भवपीर यानि संसारिक कष्ट हरेगा यानि दूर करेगा। सत्य साधना से सबकी भवपीर यानि संसारिक कष्ट समाप्त हो जाएंगे और उस 13वें (तेरहवें) पंथ का प्रवर्तक सबको समान दृष्टि से देखेगा अर्थात् ऊँच-नीच में भेदभाव नहीं करेगा। वह समर्थ सत्य कबीर ही होगा। (मम् सन्त मुझे जान मेरा ही स्वरूपम्)

प्रश्न :- वह तेरहवां पंथ कौन-सा है, उसका प्रवर्तक कौन है?

उत्तर :- वह तेरहवां पंथ ''यथार्थ सत कबीर'' पंथ है। उसके प्रवर्तक स्वयं कबीर परमेश्वर जी हैं। वर्तमान में उसका संचालक उनका गुलाम रामपाल दास पुत्र स्वामी रामदेवानंद जी महाराज है। (अध्यात्मिक दृष्टि से गुरू जी पिता माने जाते हैं जो आत्मा का पोषण करते हैं।)

प्रमाण :- वैसे तो संत धर्मदास जी की वंश परंपरा वाले महंतो से जुड़े श्रद्धालुओं ने अज्ञानतावश तेरहवां पंथ और संचालक धर्मदास की बिन्द (परिवार) की धारा वालों को सिद्ध करने की कुचेष्टा की है। परंतु हाथी के वस्त्र को भैंसे पर डालकर कोई कहे कि देखो यह वस्त्र भैंसे का है। बुद्धिमान तो तुरंत समझ जाते हैं कि यह भैंसा का वस्त्र नहीं है। यह तो भैंसे से कई गुणा लंबे-चौड़े पशु का है। भले ही वे ये न बता सकें कि यह हाथी का है।

उदाहरण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1834-1835 पर लिखा है।

तेरह गाड़ी कागजों को लिखना

एक समय दिल्ली के बादशाह ने कहा कि कबीर जी 13(तेरह) गाड़ी कागजों को ढ़ाई दिन यानि 60 घण्टे में लिख दे तो मैं उनको परमात्मा मान जाऊँगा। परमेश्वर कबीर जी ने अपनी डण्डी उन तेरह गाड़ियों में रखे कागजों पर घुमा दी। उसी समय सर्व कागजों में अमृतवाणी सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान लिख दिया। राजा को विश्वास हो गया, परंतु अपने धर्म के व्यक्तियों (मुसलमानों) के दबाव में उन सर्व ग्रन्थों को दिल्ली में जमीन में गडवा दिया। कबीर सागर के अध्याय कबीर चरित्र बोध ग्रन्थ में पृष्ठ 1834-1835 पर गलत लिखा है कि जब मुक्तामणि साहब का समय आवेगा और उनका झण्डा दिल्ली नगरी में गड़ेगा। तब वे समस्त पुस्तकें पृथ्वी से निकाली जाएंगी। सो मुक्तामणि अवतार (धर्मदास के) वंश की तेरहवीं पीढ़ी वाला होगा।

विवेचन :- ऊपर वाले लेख में मिलावट का प्रमाण इस प्रकार है कि वर्तमान में धर्मदास जी की वंश गद्दी दामाखेड़ा जिला-रायगढ़ प्रान्त-छत्तीसगढ़ में है। उस गद्दी पर 14वें (चौदहवें) वंश गुरू श्री प्रकाशमुनि नाम साहेब विराजमान हैं। तेरहवें वंश गुरू श्री गृन्ध मुनि नाम साहेब थे जो वर्तमान सन् 2013 से 15 वर्ष पूर्व 1998 में शरीर त्याग गए थे। यदि तेरहवीं गद्दी वाले वंश गुरू के विषय में यह लिखा होता तो वे निकलवा लेते और दिल्ली झण्डा गाड़ते। ऐसा नहीं हुआ तो वह तेरहवां पंथ धर्मदास जी की वंश परंपरा से नहीं है।

फिर ''कबीर चरित्र बोध'' के पृष्ठ 1870 पर कबीर सागर में 12 (बारह) पंथों के नाम लिखे हैं जो काल (ज्योति निरंजन) ने कबीर जी के नाम से नकली पंथ चलाने को कहा था। उनमें सर्व प्रथम ''नारायण दास'' लिखा है। बारहवां पंथ गरीब दास का लिखा है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं, जान-बूझकर काँट-छाँट की है।

उनको याद होगा कि परमेश्वर कबीर जी ने नारायण दास जी को तो शिष्य बनाया ही नहीं था। वे तो श्री कृष्ण जी के पुजारी थे। उसने तो अपने छोटे भाई चुड़ामणि जी का घोर विरोध किया था। जिस कारण से श्री चुड़ामणि जी कुदुर्माल चले गए थे। बाद में

बाँधवगढ़ नगर नष्ट हो गया था। ''कबीर चरित्र बोध'' में पष्ठ 1870 पर बारह पंथों के प्रवर्तकों के नाम लिखे हैं। उनमें प्रथम गलत नाम लिखा है। शेष सही हैं। लिखा हैः-

1. नारायण दास जी का पंथ 2. यागौ दास (जागु दास) जी का पंथ 3. सूरत गोपाल पंथ 4. मूल निरंजन पंथ 5. टकसारी पंथ 6. भगवान दास जी का पंथ 7. सतनामी पंथ 8. कमालीये (कमाल जी का) पंथ 9. राम कबीर पंथ 10. प्रेम धाम (परम धाम) की वाणी पंथ 11. जीवा दास पंथ 12. गरीबदास पंथ।

फिर ''कबीर बानी'' अध्याय के पष्ठ 134 पर कबीर सागर में लिखा है किः-

''वंश प्रकार''

प्रथम वंश उत्तम **(यह चुड़ामणि जी के विषय में कहा है।)**

दूसरे वंश अहंकारी **(यह यागौ यानि जागु दास जी का है।)**

तीसरे वंश प्रचंड **(यह सूरत गोपाल जी का है।)**

चौथे वंश बीरहे **(यह मूल निरंजन पंथ है।)**

पाँचवें वंश निन्द्रा **(यह टकसारी पंथ है।)**

छटे वंश उदास **(यह भगवान दास जी का पंथ है।)**

सातवें वंश ज्ञान चतुराई **(यह सतनामी पंथ है।)**

आठवें वंश द्वादश पंथ विरोध **(यह कमाल जी का कमालीय पंथ है।)**

नौवें वंश पंथ पूजा **(यह राम कबीर पंथ है।)**

दसवें वंश प्रकाश **(यह परम धाम की वाणी पंथ है।)**

ग्यारहवें वंश प्रकट पसारा **(यह जीवा पंथ है।)**

बारहवें वंश प्रकट होय उजियारा **(यह संत गरीबदास जी गाँव-छुड़ानी जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा वाला पंथ है जिन्होंने परमेश्वर कबीर जी के मिलने के पश्चात् उनकी महिमा को तथा यथार्थ ज्ञान को बोला जिससे परमेश्वर कबीर जी की महिमा का कुछ प्रकाश हुआ।)**

तेरहवें वंश मिटे सकल अंधियारा {**यह यथार्थ कबीर पंथ है जो सन् 1994 से प्रारम्भ हुआ है जो मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा संचालित है।**}

दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी के वंश गद्दी वालों ने वास्तविक भेद छुपाने की कोशिश की तो है, परंतु सच्चाई को मिटा नहीं सके।

कबीर सागर के अध्याय ''कबीर बानी'' के पष्ठ पर 136 :-

द्वादश पंथ चलो सो भेद

द्वादश पंथ काल फुरमाना। भूले जीव न जाय ठिकाना।।
तातें आगम कह हम राखा। वंश हमारा चुड़ामणि शाखा।।
प्रथम जग में जागु भ्रमावै। बिना भेद वह ग्रन्थ चुरावै।।
दूसर सुरति गोपाल होई। अक्षर जो जोग दृढ़ावै सोई।।

(विवेचन :- यहाँ पर प्रथम जागु दास बताया है जबकि वाणी स्पष्ट कर रही है कि वंश (प्रथम) चुड़ामणि है। दूसरा जागु दास। यही प्रमाण ''कबीर चरित्र बोध'' पष्ठ 1870 में है।

दूसरा जागु दास है। अध्याय ''स्वसमवेद बोध'' के पष्ठ 155(1499) पर भी दूसरा जागु लिखा है। यहाँ प्रथम लिख दिया। यहाँ पर प्रथम चुड़ामणि लिखना उचित है।)

तीसरा मूल निरंजन बानी। लोक वेद की निर्णय ठानी।।
चौथे पंथ टकसार (टकसारी) भेद लौ आवै। नीर पवन को संधि बतावै।।

(यह पाँचवां लिखना चाहिए)

पाँचवां पंथ बीज को लेखा। लोक प्रलोक कहै हम में देखा।।

(यह भगवान दास का पंथ है जो छटा लिखना चाहिए था।)

छटा पंथ सत्यनामी प्रकाशा। घट के माहीं मार्ग निवासा।।

(यह सातवां पंथ लिखना चाहिए।)

सातवां जीव पंथ ले बोलै बानी। भयो प्रतीत मर्म नहीं जानी।।

(यह आठवां कमाल जी का पंथ है।)

आठवां राम कबीर कहावै। सतगुरू भ्रम लै जीव दढ़ावै।।

(वास्तव में यह नौवां पंथ है।)

नौमें ज्ञान की कला दिखावै। भई प्रतीत जीव सुख पावै।।

(वास्तव में यह ग्यारहवां जीवा पंथ है। यहाँ पर नौमा गलत लिखा है।)

दसवें भेद परम धाम की बानी। साख हमारी निर्णय ठानी।।

(यह ठीक लिखा है, परंतु ग्यारहवां नहीं लिखा। यदि प्रथम चुड़ामणि जी को मानें तो सही क्रम बनता है। वास्तव में प्रथम चुड़ामणि जी हैं। इसके पश्चात् बारहवें पंथ गरीबदास जी वाले पंथ का वर्णन प्रारम्भ होता है। यह सांकेतिक है। संत गरीबदास जी का जन्म वि. संवत् 1774 (सतरह सौ चौहत्तर) में हुआ था। यहाँ गलती से सतरह सौ पचहत्तर लिखा है। यह प्रिन्ट में गलती है।)

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। ता दिन प्रेम प्रकटें जग सोई।।
आज्ञा रहै ब्रह्म बोध लावै। कोली चमार सबके घर खावै।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्य जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें (बारवै) पंथ प्रगट होवै बानी। शब्द हमारै की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म नहीं पावै। ये बार (बारह) पंथ हमी (कबीर जी) को ध्यावैं।।
बारहें पंथ हमहि (कबीर जी ही) चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक ही पंथ चलावैं।।
प्रथम चरण कलजुग निरयाना (निर्वाण)। तब मगहर मांडो मैदाना।।

भावार्थ :- यहाँ पर बारहवां पंथ संत गरीबदास जी वाला स्पष्ट है क्योंकि संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी मिले थे और उनका ज्ञान योग खोल दिया था। तब संत गरीबदास जी ने परमेश्वर कबीर जी की महिमा की वाणी बोली जो ग्रन्थ रूप में वर्तमान में प्रिन्ट करवा लिया गया है। विचार करना है। संत गरीबदास जी के पंथ तक 12 (बारह) पंथ चल चुके हैं। यह भी लिखा है कि भले ही संत गरीबदास जी ने मेरी महिमा की साखी-शब्द-चौपाई लिखी है, परंतु वे बारहवें पंथ के अनुयाई अपनी-अपनी बुद्धि से वाणी का अर्थ करेंगें, परंतु ठीक से न समझकर संत गरीबदास जी तक वाले पंथ के अनुयाई यानि

बारह पंथों वाले मेरी वाणी को ठीक से नहीं समझ पाएंगे। जिस कारण से असंख्य जन्मों तक सतलोक वाला अमर धाम ठिकाना प्राप्त नहीं कर पाऐंगे। ये बारह पंथ वाले कबीर जी के नाम से पंथ चलाएंगे और मेरे नाम से महिमा प्राप्त करेंगे, परंतु ये बारह के बारह पंथों वाले अनुयाई अस्थिर यानि स्थाई घर (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर कहा है कि आगे चलकर बारहवें पंथ (संत गरीबदास जी वाले पंथ में) हम यानि स्वयं कबीर जी ही चलकर आएंगे, तब सर्व पंथों को मिटाकर एक पंथ चलाऊँगा। कलयुग का वह प्रथम चरण होगा, जिस समय मैं (कबीर जी) संवत् 1575 (ई. सन् 1518) को मगहर नगर से निर्वाण प्राप्त करूँगा यानि कोई लीला करके सतलोक जाऊँगा।

परमेश्वर कबीर जी ने कलयुग को तीन चरणों में बाँटा है। प्रथम चरण तो वह जिसमें परमेश्वर लीला करके जा चुके हैं। बिचली पीढ़ी वह है जब कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष बीत जाएगा। अंतिम चरण में सब कतघ्नी हो जाएंगे, कोई भक्ति नहीं करेगा।

मुझ दास (रामपाल दास) का निकास संत गरीबदास वाले बारहवें पंथ से हुआ है। वह तेरहवां पंथ अब चल रहा है। परमेश्वर कबीर जी ने चलवाया है। गुरू महाराज स्वामी रामदेवानंद जी का आशीर्वाद है। यह सफल होगा और पूरा विश्व परमेश्वर कबीर जी की भक्ति करेगा।

संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। परमात्मा तो कबीर हैं ही। वे अपना ज्ञान बताने स्वयं पथ्वी पर तथा अन्य लोकों में प्रकट होते हैं। संत गरीबदास जी ने ''असुर निकंदन रमैणी'' में कहा है कि ''सतगुरू दिल्ली मंडल आयसी। सूती धरती सूम जगायसी। दिल्ली के तख्त छत्र फेर भी फिराय सी। चौंसठ योगनि मंगल गायसी।'' संत गरीबदास जी के सतगुरू ''परमेश्वर कबीर बन्दी छोड़ जी'' थे।

परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 136 तथा 137 पर कहा है कि बारहवां (12वां) पंथ संत गरीबदास जी द्वारा चलाया जाएगा।

संवत् सतरह सौ पचहत्तर (1775) होई। जा दिन प्रेम प्रकटै जग सोई।।
साखि हमारी ले जीव समझावै। असंख्यों जन्म ठौर नहीं पावै।।
बारहवें पंथ प्रगट हो बानी। शब्द हमारे की निर्णय ठानी।।
अस्थिर घर का मर्म ना पावैं। ये बारा (बारह) पंथ हमही को ध्यावैं।।
बारहवें पंथ हम ही चलि आवैं। सब पंथ मिटा एक पंथ चलावैं।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि 12वें (बारहवें) पंथ तक के अनुयाई मेरी महिमा की साखी जो मैंने (परमेश्वर कबीर जी ने) स्वयं कही है जो कबीर सागर, कबीर साखी, कबीर बीजक, कबीर शब्दावली आदि-आदि ग्रन्थों में लिखी हैं। उनको तथा जो मेरी कपा से गरीबदास जी द्वारा कही गई वाणी के गूढ़ रहस्यों को ठीक से न समझकर स्वयं गलत निर्णय करके अपने अनुयाईयों को समझाया करेंगें, परंतु सत्य से परिचित न होकर असँख्यों जन्म स्थाई घर अर्थात् सनातन परम धाम (सत्यलोक) को प्राप्त नहीं कर सकेंगे। फिर मैं (परमेश्वर कबीर जी) उस गरीबदास वाले पंथ में आऊँगा जो कलयुग में पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे होने पर यथार्थ सत कबीर पंथ चलाया जाएगा।

उस समय तत्त्वज्ञान पर घर-घर में चर्चा चलेगी। तत्त्वज्ञान को समझकर सर्व संसार के मनुष्य मेरी भक्ति करेंगे। सब अच्छे आचरण वाले बनकर शांतिपूर्वक रहा करेंगे। इससे सिद्ध है कि तेरहवां पंथ जो यथार्थ कबीर पंथ है, वह अब मुझ दास (रामपाल दास) द्वारा चलाया जा रहा है। कृपा परमेश्वर कबीर जी की है। जब परमेश्वर कबीर जी ''तोताद्रि'' स्थान पर ब्राह्मणों के भण्डारे में भैंसे से वेद-मंत्र बुलवा सकते हैं तो वे स्वयं भी बोल सकते थे। समर्थ की समर्थता इसी में है कि वे जिससे चाहें, अपनी महिमा का परिचय दिला सकते हैं। शायद इसीलिए परमेश्वर कबीर जी ने अपनी कृपा से मुझ दास (रामपाल दास) से यह 13वां (तेरहवां) पंथ चलवाया है।

कलयुग वर्तमान में कितना बीत चुका है?

हिन्दु धर्म में आदि शंकराचार्य जी का विशेष स्थान है। दूसरे शब्दों में कहें तो हिन्दु धर्म के सरंक्षक तथा संजीवन दाता भी आदि शंकराचार्य हैं। उनके पश्चात् जो प्रचार उनके शिष्यों ने किया, उसके परिणामस्वरूप हिन्दु देवताओं की पूजा की क्रान्ति-सी आई है। उनके ईष्ट देव श्री शंकर भगवान हैं। उनकी पूज्य देवी पार्वती जी हैं। इसके साथ श्री विष्णु जी तथा अन्य देवताओं के वे पुजारी हैं। विशेषकर ''पंच देव पूजा'' का विधान है :- 1. श्री ब्रह्मा जी 2. श्री विष्णु जी 3. श्री शंकर जी 4. श्री पारासर ऋषि जी 5. श्री कृष्ण द्वैपायन उर्फ श्री वेद व्यास जी पूज्य हैं।

पुस्तक ''जीवनी आदि शंकराचार्य'' में लिखा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म 508 वर्ष ईशा जी से पूर्व हुआ था।

फिर पुस्तक ''हिमालय तीर्थ'' में भविष्यवाणी की थी जो आदि शंकराचार्य जी के जन्म से पूर्व की है। कहा है कि आदि शंकराचार्य जी का जन्म कलयुग के तीन हजार वर्ष बीत जाने के पश्चात् होगा।

अब गणित की रीति से जाँच करके देखते हैं, वर्तमान में यानि 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है?

आदि शंकराचार्य जी का जन्म ईशा जी के जन्म से 508 वर्ष पूर्व हुआ।

ईशा जी के जन्म को हो गए = 2012 वर्ष।

शंकराचार्य जी को कितने वर्ष हो गए =2012+508=2520 वर्ष।

ऊपर से हिसाब लगाएं तो शंकराचार्य जी का जन्म हुआ = कलयुग 3000 वर्ष बीत जाने पर।

कुल वर्ष 2012 में कलयुग कितना बीत चुका है =3000+2520=5520 वर्ष।

अब देखते हैं कि 5505 वर्ष कलयुग कौन-से सन् में पूरा होता है =

5520-5505 = 15 वर्ष 2012 से पहले।

2012-15 = 1997 ई. को कलयुग 5505 वर्ष पूरा हो जाता है। संवत् के हिसाब से स्वदेशी वर्ष फाल्गुन महीने यानि फरवरी-मार्च में पूरा हो जाता है।

जो संतजन मानते हैं कि श्रीमद्भगवत गीता 5151 वर्ष पूर्व कही गई थी। वह गलत है।

''दीक्षा देने की विधि कबीर सागर के अनुसार''

प्रश्न :- कबीर पंथी दीक्षा एक बार में देते हैं। आप कहते हैं कि तीन बार में दीक्षा क्रम पूरा होता है। कौन-सी बात सत्य मानी जाए?

उत्तर :- जो कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' में प्रमाण है।

प्रश्न :- आप कहते हैं और अध्याय ''अनुराग सागर'' में भी पढ़ा है कि कबीर सागर में बहुत कांट-छांट की गई है, मिलावट भी की गई है। आप जिन वाणियों को सत्य मानते हो, उनको कैसे सत्य मानें?

उत्तर :- यदि इन वाणियों पर मिलावट करने वालों की दष्टि पड़ जाती तो इसे काट देते क्योंकि वे एक बार में दीक्षा देकर नरकगामी कर रहे हैं। यह प्रकरण उनकी मान्यता अनुसार भी सत्य है क्योंकि यह कबीर सागर में लिखा है तथा राजा बीर सिंह को तीन बार में नामदान करने का भी प्रमाण है। इसलिए मेरे वाली क्रिया ठीक है।

मुझ दास (रामपाल दास) को दीक्षा देने का आदेश मेरे पूज्य गुरूजी द्वारा सन् 1994 में हुआ था। उस समय से मैं दीक्षा को तीन चरणों में पूरा कर रहा हूँ। यह प्रेरणा परमेश्वर कबीर जी की ओर से थी। उस समय तक मैंने कबीर सागर का नाम भी नहीं सुना था। मैं संत गरीबदास जी के पंथ में दीक्षित होने के कारण संत गरीबदास जी के ग्रन्थ को ही पढ़ता था। सन् 2008 में कबीर सागर को पढ़ा। तब पाया कि परमात्मा कबीर जी भी दीक्षा क्रम को तीन चरणों में पूरा करते थे।

प्रमाण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''अमर मूल'' के पष्ठ 265 पर स्पष्ट किया है कि हे धर्मदास! दीक्षा को तीन चरणों में पूरा करना होता है। इसी परंपरा से सर्व संसार में दीक्षा प्रदान की जाएगी। (यही प्रमाण कबीर सागर के अध्याय ''सुल्तान बोध'' के पष्ठ 62 पर है :- प्रथम पान परवाना लेई। पीछे सार शब्द तोहे देई।।**) फिर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' में प्रमाण है कि कबीर परमेश्वर जी ने राजा बीर सिंह को तीन चरणों में दीक्षा प्रदान की थी। प्रथम बार ''सात नाम'' का मंत्र दिया था।**

प्रमाण = अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 113 पर :-

तिनका तोरि पान लिख (रख) दयऊ। रानी–राय (राजा) अपन करि लयऊ।।
बहुत जीव पान मम पाये। ताघट पुरूष नाम सात आये।।
जो कोई हमरा बीरा पावै। बहुरि न योनि संकट आवै।।

(बीर सिंह बोध पष्ठ 114 से वाणी)

सत्य कहूँ सुनु धर्मदासा। बिनु बीरा पावै यम फांसा।।
बीरा पाय राय भय भागा। सत्य ज्ञान ह्रदय में जागा।।
गदगद कंड हरष मन बाढ़ा। विनती करै राजा होय ठाढ़ा।।
प्रेमाश्रु दोई नैनन ढ़रावै। प्रेम अधिकता बचन न आवै।।

भावार्थ :- प्रथम बार राजा तथा रानी को सात नाम वाला प्रथम मंत्र नामदान किया। उनके साथ बहुत सारे व्यक्तियों ने भी दीक्षा ली। उनको सात नाम का मंत्र दिया जो सात

पुरूषों (प्रभुओं) का है।

1. परमात्मा का गुरू रूप में त्रिकुटी कमल में विराजमान का ''सत सुकत'' नाम जाप।

2. मूल कमल में विराजमान गणेश जी का नाम जाप।

3. स्वाद कमल में विराजमान ब्रह्मा-सावित्री जी का नाम जाप।

4. नाभि कमल में विराजमान विष्णु-लक्ष्मी जी का नाम जाप।

5. हृदय कमल में विराजमान शंकर-पार्वती जी का नाम जाप।

6. कंठ कमल में विराजमान देवी दुर्गा जी का नाम जाप।

7. नौवें कमल में विराजमान पूर्ण ब्रह्म यानि सत्य पुरूष जी का नाम जाप।

सात नाम के मंत्र के विषय में अन्य प्रमाण :- अध्याय ''अगम निगम बोध'' पष्ठ 84 से 86:- पष्ठ 84 पर वाणी पंक्ति सँख्या 7 से 9 तक। पष्ठ 85 पर नीचे सें पाँचवीं (5वीं) पंक्ति में लिखा है :- सातों नाल जो आय विहंगा। **भावार्थ है कि सात प्रभु एक नाल (कड़ी) में जुड़े हैं। फिर पष्ठ 86 प्रथम पंक्ति में लिखा है :-** सोहं नाल चीन्ह जिन पाई, सोई सिद्ध संत है भाई। **फिर पाँचवीं पंक्ति में कहा है :-** पाँच नाम तिहको परवाना, जो कोई साधु हृदय में आना। **फिर आठवीं पंक्ति में लिखा है :-** सप्त नाल के सातों नामा, बीर विहंग करै सब कामा। **अगम निगम बोध पष्ठ 86, 87 पर श्रीं, ॐ, ह्रीं, कलीं नाम प्रत्यक्ष लिखे हैं। परमात्मा कबीर जी विशेष श्रद्धालु को ही सात नाम वाला मंत्र देते थे। अन्य को केवल पाँच नाम ही देते जो गणेश जी से दुर्गा जी वाले हैं, ही देते थे। अनुराग सागर पष्ठ 72 पर राजा खेम सरी को प्रथम नाम 5 शब्द दिए थे, वहाँ पढ़ें।**

''दूसरे चरण में सतनाम देने का प्रमाण''

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पष्ठ 114 पर :-

यहाँ पर कहा है कि जब राजा बीर सिंह को सत्यनाम दिया। जब राजा ने अपने कानों सत्यनाम (दो अक्षर) को सुना, तब प्रतीत आई यानि विश्वास हुआ।

''राजा बीर सिंह द्वारा प्रार्थना (स्तुति करना)''

करूणामय सद्गुरू अभय मुक्ति धामी नामा हो।
पुलकित सादर प्रेम वश होय सुधरे सो जीव कामा हो।
भव सिंधु अति विकराल दारूण, तास तत्त्व बुझायऊ।
अजर बीरा नाम दै मोहि। पुरूष दर्श करायऊ।।
सोरठा :– चलिये वही लोक को, राय चरण गहे धाय।
जरा मरण जेही घर नहीं, जहाँ वहाँ हंस रहाय।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने जब राजा को प्रथम मंत्र दिया। उसको प्राप्त करके राजा को विश्वास हुआ कि साधना सही है क्योंकि हिन्दु होने के नाते राजा ने अपने देवताओं के निज मंत्र प्राप्त किए तो मन में कोई विरोध नहीं हुआ। फिर परमेश्वर कबीर जी ने कहा राजा यह मंत्र तो संसारिक सुविधाऐं प्राप्त करवाता है और भक्ति में रूचि पैदा करता है।

जब संसार छोड़कर जाओगे तो आपको प्रत्येक देव जिनका नाम दिया है, वे अपनी-अपनी सीमा से जीव को आदर के साथ बिना किसी बाधा के पार करेंगे, परंतु त्रिकुटी पर जाने के पश्चात् जीव के पास ''सत्य नाम'' का होना अनिवार्य है। यदि सत्यनाम नहीं है तो जीव ब्रह्म रंद्र वाले दसवें द्वार को तथा परब्रह्म रंद्र वाले ग्यारहवें द्वार को नहीं खोल पाएगा। फिर पूर्ण ब्रह्म रंद्र बारहवां द्वार है। वह सार शब्द से खुलता है। यह सत्यनाम के बाद प्रदान किया जाता है। जब तक सत्यनाम के स्मरण की कमाई यानि भक्ति शक्ति धन संग्रह नहीं करेगा, तब तक सारनाम (सार शब्द) नहीं दिया जाता। वह मैं परीक्षा करके देता हूँ। राजा ने उपरोक्त वाणियों में परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की है कि हे दया के सागर सद्गुरू! यह भवसागर बहुत विकराल है, भयंकर है। उस तत्त्वभेद को बताकर मुझे अजर बीरा नाम अर्थात् अमर होने की दीक्षा देकर सत्यपुरूष के दर्शन कराने की कृपा करो और उस लोक में ले चलो जहाँ जरा (वृद्ध अवस्था) तथा मरण (मृत्यु) नहीं है। जहाँ पर अमर हंस (देव स्वरूप आत्माऐं) रहती हैं। इतना सुनकर राजा ने परमेश्वर कबीर जी के चरण दौड़कर दण्डवत् करके पकड़े।

''कबीर वचन''

तौन नाम राजा कहं दीना। सकल जीव अपना कर लीना।।
राजा (राय) श्रवण जब नाम सुनायी। तब प्रतीत राजा जीव आई।।
सत्य पुरूष सत्य है फूला। सत्य शब्द है मुक्ति को मूला।।
सत्यनाम जीव जो पावै। सोई जीव तेहि लोक समावै।।
ऐसो नाम सुहेला भाई। सुनतहि काल जाल नशि जाई।।
सोई नाम राजा जो पाये। सत्य पुरूष दरशन चित लाये।।

(पुराने कबीर सागर से वाणी)

अब राजा तुम सिमर करिहो। राज पराये चित न धरिहो।।
सत्य नाम बख्स मैं दीना। रहना सदा भक्त संत के आधीना।।
सार शब्द जब तक नहीं पावै। कोई साधक सतलोक नहीं जावै।।
सार शब्द सुमरण करही। सो हंस भवसागर तिरही।।

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पृष्ठ 115 पर :-

''राजा बीर सिंह वचन''

साहब सार शब्द मोहे दीजे। अपना करि प्रभु निज कै लीजै।।
दयावंत बिनती सुन मोरी। हम पुरूषा परे नरक अघोरी।।
मोको तारो भवसागर सो गोसाईं। बिनती करों रंकको नाई।।

कबीर सागर के अध्याय बीर सिंह बोध के पृष्ठ 116-118 की फोटोकॉपी लगाई हैं ताकि पाठकजन आँखों देख पढ़कर विश्वास करें। अब तक तो प्रथम तथा दूसरे मंत्र देने का वर्णन है। आगे सार शब्द (सार नाम) के लिए परीक्षा ली। फिर सार शब्द (सारनाम) देने का प्रमाण है।

''कबीर वचन''

कबीर सागर अध्याय ''बीर सिंह बोध'' पृष्ठ 116 (पढ़ें फोटोकॉपी)

कबीर वचन

अजर नाम चौका विस्तारो । जेहिते पुरुषा तरे तुम्हारो ॥
गाव तुम्हारे ब्राह्मणि जाती । धोती कीन्ही बहुतै भांती ॥
बारी माहिं कपास लगायी । बहुत नेम से काति बनायी ॥
सो धोती तुम राजा लाऊ । पाछे चौका जुगुति बनाऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

तब राजा अस विन्ती कीन्हा । कैसे जान्यो को कहि दीन्हा ॥
ब्राह्मणि मंदिर नगर रहायी । ताकी सुधि हमहूँ नहिं पायी ॥

कबीर वचन

तब राजा आपै चलि गयऊ । साथ एक नेगीको लयऊ ॥
पूछत ब्राह्मणि राजा गयऊ । वही पुरीमें जाइ ठाढ रहेऊ ॥
राजा आवन सुनी जब सोई । आदर देन चली तब ओई ॥
माई पुत्री आगे चलि आई । दधि अछत औ लुटिया लाई ॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणि कहै दोई कर जोरी । राजा सुनिये विन्ती मोरी ॥
भाग मोर हम दर्शन पावा । मैं बलिहारी यहाँ सिधावा ॥

राजा बीरसिंह वचन

राजा कह ब्राह्मणीसे बाता । तुव घर धोती एक रहाता ॥
सो धोती हमको देहू । गाँव ठौर तुम हमसे लेहू ॥
एतो वचन जो राखु हमारा । धोती देइ करू काज निबारा ॥

ब्राह्मणी वचन

ब्राह्मणी कहे सुनो हो राऊ । धोती सुधि तुहि कौन बताऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

हम घर सतगुरु कहि समझायी । धोती सुधि हम गुरुपे पायी ॥

कबीर वचन धर्मदास प्रति

वचन सुनत तेहि सुधि सो भूली । मन पछताय विनय मुख खोली॥

बोधसागर 557 (११७)

ब्राह्मणी वचन

छन्द–माइ पुत्री करइ विन्ती धोती नाथ अनाथकी ॥
गाव मुल्क नहिं चाहीं मोहि धोती अहै जगन्नाथकी ॥
हम दीन हैं आधीन भिक्षुक शीस बरु मम लीजिये ॥
करि जोडि विन्ती मैं करूं जस चाहिये अब कीजिये ॥

कबीर वचन

सोरठा–राजा घरहिं सिधाइ, टेके चरण तहँ खसम कर ॥
कहे उत्तर समुझाय, धोती मांगे न दीनेऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन–चौपाई

साहिब ब्राह्मणी लग हम गयऊ । धोती माँगत हम नहिं पयऊ ॥
कहे धोती मोहि देइ न जायी । जगन्नाथ हेतु धोती बनायी ॥
कहे बरु शीस लेहु तुम राजा । धोती देत होय व्रत अकाजा ॥

कबीर वचन

एती सुनते हम विहँसाये । राजा कहँ एक वचन सुनाये ॥
छरीदार दोउ देउ पठायी । ब्राह्मणी संग क्षेत्रहिं[1] जायी ॥
यहि प्रतीति लेहु तुम जाका । हम विन धोती लेइ को ताका ॥
राजा छडीदार पठवाये । ब्राह्मणी संग क्षेत्र चलि जाये ॥
नरियर लेइ ब्राह्मणी हाथा । करि अस्नान परसि जगन्नाथा ॥
लै धोती जब परस्यो जायी । तब धोती बाहर परि आयी ॥

ब्राह्मणी वचन

अब यह धोती काम न आयो । धोती फेरि कहो कस लायो ॥

जगन्नाथ वचन

जाके व्रत तुम काति बनायी । सो घर बैठे माँगि पठायी ॥
अब तुम अपने घर लै जाहू । लै धोती दै डालो काहू ॥

[1] जगन्नाथपुरीको ।

(११८) 558 बीरसिंह बोध

ब्राह्मणी वचन

तवै ब्राह्मणी कहै कर जोरी । ठाकुर सुनिये विन्ती मोरी ॥
राय बीरसिंह मो घर आये । धोती माँगि कवीर पठाये ॥
उनके मांगे मैं नहिं दीना । हम कहि जगन्नाथ व्रत कीना ॥
तब राजा अपने घर गयऊ । हम लै धोती इहां सिधयऊ ॥

जगन्नाथ वचन

जगन्नाथ तब कहि समझायो । तुम अपनी भल भाँति नशायो ॥
उनके मांगे धोती देती । आपन जनम सुफल कर लेती ॥

कबीर वचन

जगन्नाथ जस कहि समझायी । छडीदार तब लिये अर्थायी ॥
छडीदार अरु ब्राह्मणी आये । जहाँ राय अरु हम बैठाये ॥
ब्राह्मणी ले धोती धर दीनी । दोय कर जोरि सो बिन्ती कीनी ॥

ब्राह्मणी वचन

हम अजान कछु जान न जायी । धोती नहिं दीनी मम पायी ॥

छडीदार वचन

छडीदार तब शीस नवाये । राजासे उठि विन्ती लाये ॥
जगन्नाथ धोती नहिं लीना । मंडप बाहर धोती कीना ॥
जगन्नाथ अस वचन सुनावा । यह धोती हम काम न आवा ॥
जब राजा से मांग पठाई । कस ना धोती दीनेउ माई ॥
जब हम मांगा तब ना दियऊ । अब कस देन यहाँ चलि अयऊ ॥

कबीर वचन

छडीदार उत्तर जब कहेऊ । तब मम चरण राय शिर लयऊ ॥

राजा बीरसिंह वचन

सांचे सद्गुरु हैं तुव बचना । सत्य लोककी सत्य है रचना ॥
अब मोहि धनी सिखापन दीजे । हम पुरुषा आपन करि लीजे ॥
जाते अजर अमर पद पाई । सोई विधि तुम करो गुसांई ॥

कबीर सागर के अध्याय बीर सिंह बोध के पष्ठ 116 से 118 में कहा है कि:-

परमेश्वर कबीर से राजा बीर सिंह बघेल ने विनती की कि हे सद्गुरू जी! सार शब्द बिन मोक्ष नहीं है तो मुझे सार शब्द देने का कष्ट करें। परमेश्वर कबीर जी ने एक तीर से तीन शिकार किए। बीर सिंह बघेल काशी नगरी के राजा थे। उसी नगर में एक विधवा ब्राह्मणी (नाम-चन्द्रप्रभा) रहती थी। उसकी एक पुत्री थी। उन दोनों ने भी परमेश्वर से सत्यनाम ले रखा था। वे दोनों माँ-बेटी भी सारशब्द के लिए बार-बार प्रार्थना किया करती थी। ब्राह्मणी चन्द्रप्रभा भगवान जगन्नाथ को ईष्ट मानकर अटूट श्रद्धा से भक्ति करती थी। गुरू कबीर जी को मानती थी। उसने अपने आँगन में कपास (बाड़ी) बीजी। उसमें गंगा का पावन जल लाकर सिंचाई की। फिर उससे कपास निकालकर सूत बनाया और अपने हाथों कपड़ा बुना यानि एक धोती (साड़ी जैसी) बनाई जिसे भगवान जगन्नाथ के मंदिर में पुरी (प्रान्त-उड़ीसा) में अर्पित करना चाहती थी। एक-दो दिन में पुरी को रवाना होने वाली थी।

परमेश्वर कबीर जी ने कहा, राजन! आपको मैं सारशब्द देता हूँ, परंतु उसके लिए एक धोती की आवश्यकता पड़ती है। आप ऐसा करो, आपकी नगरी काशी में आपकी एक गुरू

बहन ब्राह्मणी रहती है। उसने अपने घर के आँगन में कपास बीजकर स्वयं निकालकर कात-बुनकर एक धोती तैयार की है। वह धोती लाओ तो सारनाम मिलेगा। राजा बीर सिंह उस बहन के पास गए। उस बहन चन्द्रप्रभा को राजा के आने की खबर मिली तो पहले तो घबराई, कुछ संभलकर दोनों हाथ जोड़कर प्रणाम करके आदर से बैठाया। आने का कारण पूछा। राजा ने कहा, बहन! आज मुझे सारनाम मिलना है। गुरूदेव ने एक धोती मँगाई है जो आपने अपने घर के आँगन में बाड़ी बीजकर और सूत बुनकर तैयार की है। आप उसके बदले में चाहे कुछ गाँव ले लो बहन! मेरे जीवन कल्याण के लिए वह धोती दे दे। राजा बीर सिंह की यह बात सुनकर दोनों माँ-बेटी हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगी कि राजन! यह धोती भगवान जगन्नाथ जी के लिए बनाई है। हे राजन! बेसक हमारा सिर काट दो, परंतु हम यह धोती नहीं दे सकते। बीर सिंह ने कहा, बहन! सतगुरू देव जी ने मँगाई है। मैं राजा के तौर पर माँगने नहीं आया हूँ। आपकी इच्छा नहीं है तो मैं चला जाता हूँ। बहन चन्द्रप्रभा तथा पुत्री ने राहत की साँस ली। राजा बीर सिंह बघेल ने जाकर सतगुरू कबीर जी को सब वार्ता बताई। तब सतगुरू देव जी ने कहा कि मैं अपनी शर्त छोड़ देता हूँ, मैं आपको बिना धोती के ही सारनाम दे दूँगा। आप एक काम करो। जब वह धोती भेंट करने पुरी को जाए, उस बहन चन्द्रप्रभा के साथ अपने सिपाही भेज दो। राजा ने दो सिपाही उस बहन के साथ भेज दिए ताकि कोई रास्ते में परेशान न करे। दोनों माँ-बेटी जगन्नाथ पुरी में चली गई। सुबह स्नान करके एक नारियल तथा धोती थाली में रखकर जगन्नाथ मंदिर में भेंट कर दी। देखते-देखते धोती वहाँ से उठी और मंदिर से बाहर आँगन में मिट्टी में गिरी। आकाशवाणी हुई कि यह धोती मैंने राजा बीर सिंह के द्वारा काशी में मँगवाई थी। वहाँ क्यों नहीं भेजी? यहाँ किसलिए लाई है? जगन्नाथ तो काशी में बैठा है, जाओ, उसे भेंट करो। यह कौतुक सबने देखा। राजा के सिपाही भी यह सब देख रहे थे। आकाशवाणी भी सुनी। ब्राह्मणी बहन तथा उसकी पुत्री पश्चाताप करने लगी कि हम कितनी मूर्ख हैं, जगन्नाथ तो काशी में कबीर जी हैं। हम उन्हें सामान्य व्यक्ति जुलाहा ही मान रही थी। वहीं से रोने लगी थी, रह-रहकर रो रही थी। वापिस काशी नगरी में आ गए। उस दिन भी परमेश्वर कबीर जी राजा बीर सिंह बघेल के महल में बैठे थे। चन्द्रप्रभा बहन, उसकी पुत्री तथा दोनों सिपाही कबीर परमेश्वर जी से मिले। साथ में राजा बीर सिंह बघेल बैठा था। वह ब्राह्मणी चन्द्रप्रभा परमेश्वर कबीर जी के चरणों में धोती रखकर बिलख-बिलखकर रोने लगी और कहा, मुझे भ्रम था कि आप केवल मानव हैं। हे सतगुरू! आप तो जगत के स्वामी साक्षात् जगन्नाथ हो। दोनों सिपाहियों ने सर्व घटना बताई। जो आकाशवाणी सुनी थी, वह भी बताई। तब राजा बीर सिंह को भी दृढ़ निश्चय हुआ। परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि :-

कबीर, गुरू मानुष कर जानते, ते नर कहिए अंध।
होवें दुखी संसार में, आगै यम के फंद।।
गुरू गोविन्द कर जानियो, रहियो शब्द समाय।
मिलें तो दण्डवत् बन्दगी, नहीं पल–पल ध्यान लगाय।।

तब परमेश्वर जी ने कहा, पहले अपना नाम शुद्ध कराओ, कमाई करो, फिर सारनाम

दूँगा। यह कहकर परमेश्वर जी ने उन सबका नाम शुद्ध किया।

परमेश्वर ने एक तीर से तीन शिकार किए। राजा को विश्वास नहीं था कि कबीर जी वास्तव में परमेश्वर हैं। वे उनको सिद्ध पुरूष मानते थे। यही दशा उस बहन ब्राह्मणी की थी, उन दोनों का भ्रम निवारण किया तथा अपनी महिमा से परिचित करवाया।

उपरोक्त प्रकरण से सिद्ध हुआ कि परमेश्वर जी नाम दीक्षा का क्रम तीन चरणों में पूरा करते थे। विश्व में कोई संत इस प्रकार दीक्षा को तीन चरणों में प्रदान नहीं करता। परमेश्वर कबीर जी के पश्चात् यह दास (रामपाल दास) तीन चरणों में दीक्षा का कार्य पूरा करता है।

बुद्धिमान को संकेत ही पर्याप्त होता है। यहाँ तो प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

कथा सारांश :- सार शब्द प्राप्ति के लिए साधक को विशेष ज्ञान होना आवश्यक है। परमात्मा और सतगुरू के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित होना अनिवार्य है। सर्व संसार-असार तथा दुःखालय मानना चाहिए। दीक्षा तीन चरणों में देने वाला वास्तव में सतगुरू है, वह तारणहार (कड़िहार गुरू=संसार से काड़ने यानि निकालने वाला गुरू) है। प्रसंग दीक्षा के विषय में चल रहा है :-

''दीक्षा बिना आरती-चौंका भी दी जाती है, वह भी समान लाभदायक है''

प्रमाण :- पवित्र कबीर सागर के अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पृष्ठ 56 पर।

अन्य प्रमाण :- 1. संत दादू जी को जंगल में पान के पत्ते पर जल डालकर पिलाया। इस प्रकार प्रथम नाम दीक्षा बिना चौका-आरती के दी थी।

2. संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, हरियाणा वाले) को जंगल में कंवारी गाय के दूध को पिलाकर बिना चौका-आरती के दी थी।

3. संत नानक देव जी को अपने करमण्डल से जल पिलाकर बिना आरती-चौका के दीक्षा दी थी।

4. संत घीसा दास जी (खेखड़ा वाले) को भी बिना चौका-आरती के दीक्षा दी थी।

जैसा कि परमेश्वर कबीर जी ने अनुराग सागर के पृष्ठ 140 पर स्पष्ट किया है कि हे धर्मदास! आपके वंश वाली छठी गद्दी के महंत तो काल के चलाए 12 पंथों में से जो टकसारी पंथ वाला (पाँचवां) है। वह भ्रमित करके अपने वाला नकली नाम तथा नकली आरती चौंका विधान बनाएगा और वह छठी पीढ़ी वाला तेरा वंशज भ्रमित होकर टकसारी पंथ वाला पान यानि नाम लेकर वही आरती चौंका किया करेगा। (जो वर्तमान में धर्मदास जी की वंश गद्दी वाले कर रहे हैं) इस प्रकार तेरे शेष वंश गद्दी वाले सत्य भक्ति न कर सकते और न अनुयाईयों को करा पाएंगे। इसलिए मेरा (परमेश्वर कबीर जी का) नाद (वचन परंपरा वाला अंश) का अंश आएगा जो शिष्य परंपरा से होगा। उससे मेरा यथार्थ कबीर पंथ उजागर (प्रकाशित=प्रसिद्ध) होगा। प्रमाण :- अनुराग सागर पृष्ठ 141

वाणी इस प्रकार है :- पृष्ठ 140 :-

नाद बिन्द जो पंथ चलावै। चूरामणि (चूड़ामणि) हंसन मुक्तावै।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को संतोष दिलाने के लिए उसके छोटे पुत्र चूड़ामणि (मुक्तामणि) जी को गुरू गद्दी का अधिकारी बनाया था। स्वयं उनको केवल प्रथम मंत्र से 5 नाम (मूल कमल से कण्ठ कमल तक) ही दिए थे। ये ही आगे अपने शिष्यों को देने का निर्देश दिया था। सार शब्द नहीं दिया था क्योंकि वह तो इस समय तक छुपाकर (गुप्त) रखना था जब तक 5505 (पाँच हजार पाँच सौ पाँच) वर्ष कलयुग के न बीत जाएं।
(प्रमाण :-अध्याय ''कबीर बानी'' पष्ठ 137 तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पष्ठ 1937 पर)

यहाँ पर कहा है कि मेरा नाद (वचन का पुत्र यानि शिष्य) और तेरा बिन्द यानि शरीर का पुत्र चूड़ामणि जो पंथ चलाएगा और जीवों को मुक्त करेगा। {सेठ धर्मदास जी को सांत्वना देने के लिए परमेश्वर कह रहे हैं कि तेरा बिन्द वाला जो जीवों को मोक्ष प्रदान करेगा। वास्तविकता यह है कि जब तक सारशब्द प्राप्त नहीं होगा, तब तक काल हटा न जाने यानि सार शब्द बिन मुक्ति नहीं होती। वह सार शब्द तो चूड़ामणि के पास था ही नहीं।}

धर्मदास तव अंश अज्ञाना। चीन्ह नहीं वो अंश सहिदाना।।
जस कुछ आगे होईह भाई। सो चरित्र तोहि कहों बुझाई।।
छटे पीढ़ी बिन्द तव होई। भूलै वंश बिन्द तव सोई।।
टकसारी का ले है पाना। अस तव बिन्द होय अज्ञाना।।
चाल हमारा बंश तव झाड़ै (छोड़ै)। टकसारी का मत सब मांडै।।
चौंका (आरती) वैसे करे बनाई। बहुत जीव चौरासी जाई।।
होवे दुर्मति वंश तुम्हारा। वचन (नाद)। बंश को रोके बटपारा (ठग)।।
आपा हंम (अहंकार) अधिक होय ताही। नाद पुत्र से झगरा कराही।।

भावार्थः- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट कर दिया है कि हे धर्मदास! तेरा वंश अज्ञानी सिद्ध होगा। वह काल के अंश (दूत) को समझ नहीं पाएगा।

जो कुछ तेरी गद्दी वालों की परंपरा में आगे होगा, वह बताता हूँ।

जो काल द्वारा बारह (12) पंथ चलाए जाएंगे, उनमें एक टकसारी पंथ (पाँचवां) होगा। तेरा छठी पीढ़ी वाला उसके द्वारा भ्रमित किया जाएगा जो तेरा बिन्द वाला गद्दीनशीन होगा। वह उस टकसारी पंथ वाली दीक्षा स्वयं भी लेगा तथा उसी पद्यति को जो टकसारी वाली चौंका आरती और नकली पाँच नाम जो कबीर सागर में सुमिरन बोध पष्ठ 22 पर लिखा है, प्रदान किया करेगा। वह कोई जाप मंत्र नहीं है। वह तो सारशब्द की यानि आदिनाम की महिमा बताई है जो इस प्रकार है :-

आदिनाम, अजर नाम, अमीनाम, पाताले सप्त सिंधु नाम।
आकाशे आदली निज नाम, ऐही नाम हंस को काम।।
खोले कूंची खोले कपाट। पाँजी (पाँच नाम वाला उपदेशी) चढ़े मूल के घाट।।
भ्रम भूत को बाँधो गोला, कहें कबीर प्रवान। पाँच नाम ले हंसा, सत्यलोक समान।।

''स्मरण दीक्षा मंत्र''

सत्य सुकृत की रहनी रहै, अजर अमर गहै सत्य नाम।
कह कबीर मूल दीक्षा, सत्य शब्द (सार शब्द) परवान।।

इस वाणी में कबीर जी ने बताया है कि जो पाताल यानि नीचे के चक्रों के तथा परमेश्वर के कुल 7 नाम हैं। सिंधु का अर्थ सागर जैसे गहरे गूढ़ मंत्र हैं जो आदिनाम (सार शब्द) है, वह अजर है, अमर है, अमृत जैसा लाभदायक है जो आकाश यानि ऊपर को सत्यलोक की ओर चलने का निज नाम है। पांजी (पाँच नाम की दीक्षा वाले शिष्य) मूल यानि सार शब्द की ओर बढ़ता है। उसको अध्यात्मिक लाभ मिलता है। इसीलिए परमेश्वर ने उस समय केवल पाँच नाम प्रारम्भ किए थे। सात नाम तो वर्तमान में कलयुग के पाँच हजार पाँच सौ पाँच वर्ष पूरे करने के बाद देने थे। उस समय बताना अनिवार्य था, नहीं तो आज प्रमाण न मिलने से भ्रम रह जाता। पाँच नाम लेने वाला ही तो सत्यलोक जाने का अधिकारी होगा। फिर स्मरण का विशेष मंत्र जो पाँच (5) और सात (7) से अन्य मंत्र है।

''स्मरण दीक्षा''

भावार्थ है कि नेक नीति से रहो। अजर-अमर जो सार शब्द है, वह तथा दो अक्षर वाला सत्यनाम प्राप्त करो। यह मूल दीक्षा है। केवल पाँच तथा सात नाम से मोक्ष नहीं है।

टकसारी पंथ वाले ने इसी चूड़ामणि वाले पंथ से दीक्षा लेकर यानि नाद वाला बनकर मूर्ख बनाया था कि कबीर साहब ने कहा है कि तेरे बिन्द वाले मेरे नाद वाले से दीक्षा लेकर ही पार होंगे। इससे भ्रमित होकर धर्मदास के छठी पीढ़ी वाले ने वास्तविक पाँच मंत्र (कमलों को खोलने वाले) छोड़कर नकली नाम जो सुमिरन बोध के पृष्ठ 22 पर लिखे हैं जो ऊपर लिखे हैं (आदिनाम, अजरनाम, अमीनाम ...), प्रारम्भ कर दिए जो वर्तमान में दामाखेड़ा गद्दी वाले महंत जी दीक्षा में देते हैं। वह गलत हैं। उसने टकसारी पंथ बनाया तथा उसने चुड़ामणि वाले पंथ से भिन्न होकर अपनी चतुराई से अन्य साधना प्रारम्भ की थी जो ऊपर बताई है। उसने मूल गद्दी वाले धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले को भ्रमित किया कि हमने तो एक सत्यपुरूष की भक्ति करनी है। ये मूल कमल से लेकर कण्ठ कमल तक वाले देवी-देवताओं के नाम जाप नहीं करने, नहीं तो काल के जाल में ही रह जाएंगे। फिर कबीर सागर से उपरोक्त पूरे शब्द (कविता) को दीक्षा मंत्र बनाकर देने लगा। मनमानी आरती चौंका बना लिया। इस तर्क से प्रभावित होकर धर्मदास जी की छठी गद्दी वाले महंत जी ने टकसारी वाली दीक्षा स्वयं भी ले ली और शिष्यों को भी देने लगा जो वर्तमान में दामाखेड़ा गद्दी से प्रदान की जा रही है जो व्यर्थ है।

''अनुराग सागर'' अध्याय के पृष्ठ 140 की वाणियों का भावार्थ चल रहा है।

हे धर्मदास! तेरी छठी पीढ़ी वाला टकसारी पंथ वाली दीक्षा तथा आरती चौंका नकली स्वयं भी लेगा और आगे वही चलेगा। इस प्रकार तेरा बिन्द (वंश पुत्र प्रणाली) अज्ञानी हो जाएगा। हमारी सर्व साधना झाड़े यानि छोड़ देगा। अपने आपको अधिक महान मानेगा, अहंकारी होगा जो मेरा नाद (शिष्य परंपरा में तेरहवां अंश आएगा, उस) के साथ झगड़ा

करेगा। तेरा पूरा वंश वाले दुर्मति को प्राप्त होकर वे बटपार (ठग=धोखेबाज) मेरे तेरहवें वचन वंश (नाद शिष्य) वाले मार्ग में बाधा उत्पन्न करेंगे।

अध्याय ''अनुराग सागर'' के पष्ठ 140 से वाणी सँख्या 16 :-

धर्मदास तुम चेतहु भाई। बचन वंश कहं देहु बुझाई।।1

कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! तुम कुछ सावधानी बरतो। अपने वंश के व्यक्तियों को समझा दो कि सतर्क रहें।

हे धर्मदास! जब काल ऐसा झपटा यानि झटका मारेगा तो मैं (कबीर जी) सहायता करूँगा। अन्य विधि से अपना सत्य कबीर भक्ति विधि प्रारम्भ करूँगा।

नाद हंस (शिष्य परंपरा का आत्मा) तबहि प्रकटावैं। भ्रमत जग भक्ति दढ़ावैं।।2

नाद पुत्र सो अंश हमारा। तिनतै होय पंथ उजियारा।।3

बचन वंश नाद संग चेतै। मेटैं काल घात सब जेते।।4

{बचन वंश का अर्थ धर्मदास जी के वंशजों से है क्योंकि श्री चूड़ामणि जी को कबीर परमेश्वर जी ने दीक्षा दी थी। इसलिए बचन वंश कहे गए हैं। बाद में अपनी संतान को उत्तराधिकार बनाने लगे। वे बिन्द के कहे गए हैं। नाद से स्पष्ट है कि शिष्य परंपरा वाले।}

अध्याय ''अनुराग सागर'' पष्ठ 141 से :-

शब्द की चास नाद कहँ होई। बिन्द तुम्हारा जाय बिगोई।।5

बिन्द से होय न नाम उजागर। परिख देख धर्मनि नागर।।6

चारहूँ युग देख हूँ समवादा। पंथ उजागर कीन्हो नादा।।7

धर्मनि नाद पुत्र तुम मोरा। ततें दीन्हा मुक्ति का डोरा।।8

भावार्थ :- वाणी नं. 8 में परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट भी कर दिया है कि नाद किसे कहा है? हे धर्मनि! तुम मेरे नाद पुत्र अर्थात् शिष्य हो और जो आपके शरीर से उत्पन्न हो, वे आपके बिन्द परंपरा है।

वाणी नं. 2 में वर्णन है कि जब-जब काल मेरे सत्यभक्ति मार्ग को भ्रष्ट करेगा। तब मैं अपना नाद अंश यानि शिष्य रूपी पुत्र प्रकट करूँगा जो यथार्थ भक्ति विधि तथा यथार्थ अध्यात्मिक ज्ञान से भ्रमित समाज को सत्य भक्ति समझाएगा, सत्य मार्ग को दढ़ करेगा। जो मेरा नाद (वचन वाला शिष्य) अंश आएगा, उससे मेरा यथार्थ कबीर पंथ प्रसिद्ध होगा, (उजागर यानि प्रकाश में आवैगा।) बिन्द वंश (जो धर्मदास तेरे वंशज) हैं, उनका कल्याण भी नाद (मेरे शिष्य परंपरा वाले) से होगा।

वाणी नं. 5 में कहा है कि शब्द यानि सत्य मंत्र नाम की चास यानि शक्ति नाद (शिष्य परंपरा वाले) के पास होगी। यदि मेरे नाद वाले से दीक्षा नहीं लेंगे तो तुम्हारा बिन्द यानि वंश परंपरा महंत गद्दी वाला बर्बाद हो जाएंगे।

वाणी नं. 6 में वर्णन है कि बिन्द से कभी भी नाद यानि शिष्य प्रसिद्ध नहीं हुआ।

भावार्थ है कि महंत गद्दी वाले तो अपनी गद्दी की सुरक्षा में ही उलझे रहते हैं। अपने स्वार्थवश मनमुखी मर्यादा बनाकर बाँधे रखते हैं।

वाणी नं. 7 में कहा है कि चारों युगों का इतिहास उठाकर देख ले। संवाद यानि चर्चा

करके विचार कर। प्रत्येक युग में नाद से ही पंथ का प्रचार व प्रसिद्धि हुई है।

प्रमाण :- 1. सत्ययुग में कबीर जी सत सुकत नाम से प्रकट हुए थे। उस समय सहते जी को शिष्य बनाया था। उससे प्रसिद्धि हुई है।

2. त्रेता में बंके जी को शिष्य बनाया था, उससे प्रसिद्धि हुई थी।

3. द्वापर में चतुर्भुज जी को शिष्य बनाया था, उससे सत्यज्ञान प्रचार हुआ था।

4. कलयुग में धर्मदास जी को शिष्य बनाया था जिनके कारण ही वर्तमान तक कबीर पंथ की प्रसिद्धि तथा विस्तार हुआ है।

अनुराग सागर पष्ठ 140 पर वाणी है :-

जब–जब काल झपटा लाई। तबै–तबै हम होये सहाई।।

भावार्थ है कि काल ने धर्मदास की छठी पीढ़ी वाले पर झपट्टा मारा तो परमेश्वर जी ने अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास जी (गाँव-छुड़ानी, जिला-झज्जर, प्रान्त-हरियाणा) को विक्रमी संवत् 1784 (सन् 1727) में गाँव के जंगल में मिले थे। धर्मदास जी की तरह सतलोक लेकर गए थे, वापिस छोड़ा था। उन्होंने भी परमेश्वर कबीर जी की महिमा का अनमोल प्रचार किया। महिमा का ग्रन्थ बनाया, परंतु उस पंथ में भी काल झपटा मार चुका है। सब राम-कष्ण के पुजारी हैं, पाठ संत गरीबदास जी की वाणी का करते हैं। एक मेरे पूज्य गुरूदेव स्वामी रामदेवानंद जी ही कबीर जी के यथार्थ ज्ञान से परिचित थे। उसके पश्चात् मुझ दास (रामपाल दास) पर दया करके यथार्थ ज्ञान दिया है। यथार्थ भक्ति विधि सत्य भक्ति मंत्र तथा यथार्थ सम्पूर्ण अध्यात्मिक ज्ञान मेरे को प्रदान किया। अब विश्व सत्य भक्ति करेगा। सत्ययुग जैसा वातावरण होगा। यदि धर्मदास जी के बिन्द वाले महंत तथा उनके शिष्य जो महंतों का वचन अंश यानि शिष्य हैं, वे मेरे पास (रामपाल दास) से दीक्षा लेकर गुरू मर्यादा में रहकर भक्ति करेंगे तो वे भी पार हो जाएंगे। कबीर परमेश्वर जी ने अनुराग सागर पष्ठ 141 पर कहा है :-

कहाँ निर्गुण कहाँ सरगुण भाई। नाद बिना नहीं चलै पंथाई।।9
यह विधि तेरे ब्यालिस तारैं। जब–जब गिरै फेर संभारैं।।10
नाद का वचन जो बिन्द न मानै। देखत जीव काल धर तानै।।11
कहाँ नाद कहाँ बिन्द रे भाई। नाम भक्ति बिनु लोक न जाई।।12

भावार्थ :- वाणी नं. 9-10 :- हे धर्मदास! यदि तेरे बिन्द वाले मेरे नाद वाले से दीक्षा ले लेंगे तो उनका भी कल्याण हो जाएगा। इस विधि से तेरी बयालीस पीढ़ी को पार करूँगा।

वाणी नं. 11 :- नाद की बात को यदि तेरा बिन्द नहीं मानेगा तो देखते-देखते उसको काल सतावैगा।

वाणी नं. 12 :- इसमें तो स्पष्ट कर दिया है कि क्या बिन्द और क्या नाद है, यदि सच्चा नाम लेकर भक्ति नहीं करेंगे तो कोई भी पार नहीं हो पाएगा।

❖ प्रसंग दीक्षा की विधि का चल रहा है। (आप जी को याद दिला दूँ कि कबीर सागर के संशोधनकर्ता स्वामी युगलानंद जी ने भी स्पष्ट कर रखा है कि समय-समय पर काल के भेजे दूतों ने कबीर पंथ के ग्रन्थों की दुर्दशा कर रखी है।)

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश बोध'' पष्ठ 56 :-

जिस समय परमेश्वर कबीर जी अंतर्ध्यान होकर पाँचवीं बार धर्मदास जी को सात दिन पश्चात् मिले तो पूछा कि प्रभु! इस दौरान कहाँ रहे?

दोहाः— धर्मदास कह नाई सिर, सुन प्रभु अगम अपार। सात दिवस कहाँ रहे, कौन दिश पग डार।।

उत्तरः- सोरठाः—जौन दिश हम गौन कियो, धर्मनि सुनु चित लाय।
तहाँ पुनि शब्द प्रकाशेऊ, कालिंजर पहुँचे जाय।।

प्रश्न :- धर्मदास जी ने पूछा कि हे प्रभु! वहाँ पर आरती करके नारियल तोड़कर कितने जीवों को शब्द देकर काल से मुक्त करवाया?

उत्तर :- परमेश्वर कबीर जी ने आरती आदि करके पान परवाना नहीं दिया।

केवल वचनबद्ध करके यानि नाम दीक्षा देकर, साखी, रमैणी तथा शब्द यानि नाम दिया था। उनको वचन का ठिकाना अर्थात् नाम के जाप से जो स्थान प्राप्त होता है, वह सत्यलोक उनको बता आया हूँ। वहाँ बहुत जीवों ने नाम लिया।

धर्मनि सुनहु ताहि सहिदाना। वाको नहीं दीना पान प्रवाना।।
आरती चौंका तहां न कीन्हा। नहीं तहां नारियर मोरो प्रवीना।।
वचन बंध जीवन कहं कियेऊ। साखी शब्द रमैणी दियेऊ।।
कहि आयेऊ तहं बचन ठिकाना। धर्मदास न देयऊ पान प्रवाना।।

अध्याय ''ज्ञान प्रकाश'' पष्ठ 57 पर वाणी :-

जम्बूदीप (भारत) कलि के कड़िहारा। धर्मनि बहु जीव होवै पारा।।
धर्मनि वहाँ जीव पहुँचे आयी। देय दान उन मोर स्तुति लाई।।
शब्द मानि पुनि मस्तक नाया। पुरूष दर्श की बात जनाया।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि जो आरती चौंका काल द्वारा भ्रमित दामाखेड़ा वाले धर्मदास जी को बिन्द वाले महंत या अन्य उनके वचन वाले शिष्य करते हैं, वह हमारी परंपरा नहीं है। कबीर सागर में चौंका आरती का विधान स्वार्थी महंतों ने जोड़ रखा है।

प्रमाण :- 1. आदरणीय संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी गाँव-छुड़ानी के जंगल में मिले थे। वहीं पर कंवारी बछिया का दूध पीया था तथा उसी दूध से अमत पान करवाकर वक्ष के नीचे दीक्षा दी थी।

2. इसी प्रकार संत दादू दास जी को जंगल में मिले थे। उनको अपने करमण्डल (लोटे) से जल पान के पत्ते पर रखकर पिलाया था तथा दीक्षा दी थी, दोनों को पार किया।

3. संत घीसादास जी को गाँव-खेखड़ा जिला-बागपत उत्तर प्रदेश में मिले थे। उनको भी अपने लोटे से जल पिलाकर जंगल में दीक्षा दी थी। उनका भी कल्याण किया। कोई आरती-चौंका करके नारियल नहीं फोड़ा।

4. संत नानक देव साहेब को कबीर परमेश्वर बेई नदी पर सुल्तानपुर में मिले। अपने करमण्डल से जल पिलाकर प्रथम मंत्र देकर सत्यलोक (सच्चखण्ड) लेकर गए। कोई आरती-चौंका नहीं किया।

सिद्ध हुआ कि दीक्षा देने के लिए आरती-चौंका करना व्यर्थ है।

परमेश्वर कबीर जी ने ''अनुराग सागर'' के पृष्ठ 140 पर स्पष्ट कर ही दिया है कि यह आरती चौंका जो धर्मदास के बिन्द यानि मंहत परम्परा वाले या उनकी शाखाओं वाले कर रहे हैं। यह काल द्वारा चलाए गये बारह पंथों में पाँचवां (5वां) पंथ टकसारी है, उस वाला चल रहा है जो व्यर्थ है। यथार्थ भक्ति विधि तथा दीक्षा कबीर जी ने अन्य महापुरूषों को भी दी है, कोई आरती चौका नहीं किया। जैसा भी समय या उसी अनुसार दीक्षा देकर जीव का उद्धार किया।

यही सामान्य विधि से दीक्षा यह दास (रामपाल दास) दे रहा है, उपदेशी को तुरन्त लाभ मिलता है और मोक्ष भी अवश्य होगा।

प्रश्न :- कौन से मन्त्र हैं जिनसे मोक्ष सम्भव है?

उत्तर :- जैसे रोग से छुटकारा पाने के लिए औषधि विशेष होती है। टी.बी. (क्षयरोग) की एक ही दवाई है। उसका विधिवत् सेवन करने से रोग समाप्त हो जाता है। मनुष्य स्वस्थ हो जाता है। यदि टी.बी. के रोगी को अन्य औषधि सेवन कराई जाऐं तो रोगी स्वस्थ नहीं हो सकता। टी.बी. के रोगी को वही औषधि सेवन करानी पड़ेगी जो उसके लिए वैज्ञानिकों ने बनाई है।

कबीर परमेश्वर जी ने हम प्राणियों को बताया है कि आप सबको जन्म-मरण का दीर्घ रोग लगा है। उसकी औषधि बताने तथा इस रोग की जानकारी देने मैं (कबीर परमेश्वर) अपने निज स्थान सत्यलोक से चलकर आया हूँ।

शब्द

जग सारा रोगिया रे जिन सतगुरू भेद ना जान्या जग सारा रोगियारे।।टेक।।

जन्म मरण का रोग लगा है, तृष्णा बढ़ रही खाँसी। आवा गमन की डोर गले में, पड़ी काल की फांसी।।1

देखा देखी गुरू शिष्य बन गए, किया ना तत्त्व विचारा। गुरू शिष्य दोनों के सिर पर, काल ठोकै पंजारा।।2

साच्चा सतगुरू कोए ना पूजै, झूठे जग पतियासी। अन्धे की बांह गही अन्धे ने, मार्ग कौन बतासी।।3

ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर रोगी, आवा गवन न जावै। ज्योति स्वरूपी मरे निरंजन, बिन सतगुरू कौन बचावै।।4

सार शब्द सरजीवन बूटी, घिस–घिस अंग लाए। कह कबीर तुम सतकर मानौं, जन्म–मरण मिट जाए।।5

❖ श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 4 श्लोक 5 तथा 9, गीता अध्याय 2 श्लोक 12, गीता अध्याय 10 श्लोक 2 में गीता ज्ञान दाता काल ब्रह्म ने बताया है जो श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रवेश करके बोल रहा था। कहा कि अर्जुन! तेरे और मेरे बहुत जन्म हो चुके हैं। उन सबको तू नहीं जानता, मैं जानता हूँ। तू और मैं पहले भी जन्में थे, आगे भी जन्मते रहेंगे। मेरी उत्पत्ति को न तो ऋषिजन जानते हैं, न देवता जानते हैं क्योंकि ये सब मेरे से उत्पन्न हुए हैं।

यह तो पवित्र ग्रन्थ गीता ने स्पष्ट कर दिया कि ज्योति निरंजन काल (क्षर पुरूष) नाशवान है, जन्म-मरण का रोगी है।

❖ श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के भी जन्म-मृत्यु होते हैं :-

प्रमाण :- श्री देवी पुराण (गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित सचित्र मोटा टाईप केवल हिन्दी) के तीसरे स्कन्द में पृष्ठ 123 पर लिखा है :-

श्री विष्णु जी ने अपनी माता दुर्गा जी से कहा कि ''मैं, ब्रह्मा तथा शंकर तो नाशवान हैं, हमारा तो अविर्भाव (जन्म) तथा तीरोभाव (मत्यु) होता है।

❖ स्पष्ट हुआ कि ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर भी जन्म-मरण के रोगी हैं। आवा (जन्म) गवन (संसार से जाना यानि मत्यु) समाप्त नहीं है। ज्योति स्वरूप निरंजन यानि काल ब्रह्म गीता ज्ञान दाता भी मरेगा, बिन सतगुरू कौन बचावै अर्थात् पूर्ण गुरू ही जन्म-मरण के रोग से छुटकारा दिला सकता है। जिसके पास जन्म-मरण रोग को समाप्त करने की संजीवनी औषधि सार शब्द है। उसका जाप करने से मोक्ष प्राप्त होता है। वह औषधि यानि साधना कौन-सी है जिससे जन्म-मत्यु का रोग समाप्त होता है, यह जाँच करनी है।

❑ औषधि की पहचान दो प्रकार से होती है।

1. डाक्टर स्वयं बताए कि औषधि का यह नाम है, उस में ये-ये औषधि गुण यानि Salt (सॉल्ट) हैं।

2. दूसरा वह रोगी बताए जिसका टी.बी. का रोग किस औषधि से ठीक हुआ था।

प्रथम प्रकार की जाँच :- परमेश्वर कबीर जी का विधान है कि वे स्वयं सतगुरू रूप में प्रकट होकर यथार्थ भक्ति साधना के नाम मन्त्र स्वयं बताते और वही मन्त्र आदरणीय धर्मदास जी, आदरणीय संत गरीबदास जी (छुड़ानी वाले) आदरणीय संत नानक देव जी, आदरणीय संत घीसा दास साहेब जी को दिए। उन्होंने अपनी अमत वाणी में लिखा है कि इन-इन मन्त्रों से मोक्ष हुआ।

1. संत धर्मदास जी को नाम दीक्षा में जो नाम दीक्षा मन्त्र दिए थे। वे कबीर सागर के ''ज्ञान प्रकाश बोध'' पष्ठ 62 पर लिखे हैं :-

सत्यनाम सतगुरू तत् भाखा, सार शब्द ग्रंथ कथि गुप्त ही राखा।।
सत्य शब्द गुरू गम पहिचाना। विन जिभ्या करू अमत पाना।।
ओहं (ऊँ)–सोहं जानों बीरू। धर्मदास से कहो कबीरू।।
धरीहों गोय कहियो जिन काही। नाद सुशील लखैहो ताही।।
सुमिरण दया सेवा चित धरई। सत्यनाम गहि हंसा तीरही।।

पष्ठ 62 = सत्यनाम सुमिरण करै सतगुरू पद निज ध्यान।
परमात्म पूजा जीव दया लहै सो मुक्ति धाम।।

2. संत गरीबदास जी (गाँव=छुड़ानी वाले) को भी यही सत्यनाम दिया था। (सतनाम=सत्यनाम तो गोली यानि कैप्सूल का नाम है, उसमें सॉल्ट (Salt) ओम्-सोहं है।)

संत गरीबदास जी को भी सतगुरू कबीर परमेश्वर जी मिले थे। अपनी वाणी में लिखा है :-

गरीब, अलल पंख अनुराग है, सुन मण्डल रह थीर। दास गरीब उधारिया, सतगुरू मिले कबीर।।

जो नाम मन्त्र की साधना (औषधि) संत गरीबदास को मिली। वह अपनी अमतवाणी में लिखी है :-

''राम नाम जप कर थिर (स्थिर) होई, ओम्–सोहं मन्त्र दोई।

3. संत नानक जी को भी परमेश्वर कबीर जी सतगुरू रूप में मिले थे। उनको भी जो नाम मन्त्र की साधना (औषधि-उपचार) बताई। वह अपनी अमत वाणी में लिखी है तथा पवित्र

पुस्तक ''भाई बाले वाली जन्म-साखी गुरू नानक देव की'' में अध्याय ''समन्दर की साखी'' में मन्त्रों के प्रत्यक्ष नाम लिए हैं जो सतनाम में दो अक्षर हैं। संत नानक देव जी ने अपनी अमृत वाणी में कहा है कि :-

जे तूँ पढ़िया पंडित बिन दोय अखर बिन दोय नावाँ। पर्णवत् नानक एक लंघाए जेकर सच्च समावाँ।।

भाई बाले वाली जन्म साखी में ''समन्दर की साखी'' अध्याय में प्रकरण इस प्रकार है :-

❖ एक समय भाई बाला तथा मर्दाना को साथ लेकर संत नानक देव जी श्रीलंका के लिए चले तो समन्दर के किनारे प्रकट हो गए। बाला तथा मर्दाना से कहा कि तुम दोनों ''वाहे गुरू-वाहे गुरू'' नाम जाप करते हुए मेरे पीछे-पीछे आओ। समन्दर के जल के ऊपर पृथ्वी की तरह आगे-आगे श्री नानक देव जी ओम्-सोहं का दो अक्षर के सतनाम का जाप करते हुए चल रहे थे। उनके पीछे-पीछे वाहे गुरू-वाहे गुरू मन्त्र का जाप करते हुए दोनों शिष्य समुद्र के जल पर ऐसे चल रहे थे जैसे पृथ्वी के ऊपर चलते हैं। कुछ दूर जाने के पश्चात् मर्दाना जी के मन में आया कि गुरू जी तो ओम्-सोहं का मन्त्र जाप कर रहें हैं, मैं भी यही जाप करता हूँ। मर्दाना भी ओम्-सोहं का जाप करने लगा जिस कारण से वह समुद्र में गोते खाने लगा। संत नानक जी ने कहा मर्दाना तू वही जाप कर जो तेरे को कहा। गुरू की करनी की ओर नहीं देखना चाहिए, गुरू जी की आज्ञा का पालन करना चाहिए। मर्दाना फिर वाहे गुरू-वाहे गुरू का जाप करने लगा तो उसी प्रकार फिर जल के ऊपर थल की तरह चलने लगा।

शंका समाधान :- परमेश्वर कबीर जी ने उन सर्व महापुरूषों को जिन-जिनको शिष्य बनाया था, मना किया था कि सत्यनाम तथा सारशब्द का जाप आप स्वयं कर सकते हो, अन्य किसी को नहीं बताना। इसको तब तक छुपाना जब तक कलयुग पाँच हजार पाँच सौ पाँच (5505) वर्ष न बीत जाए। इसलिए किसी भी सिक्ख को यह दो अक्षर का मन्त्र सतनाम नहीं दिया। वर्तमान में (सन् 1997 से) यह मन्त्र देने का परमेश्वर कबीर जी का पुनः आदेश मुझ दास (रामपाल दास) को 1997 में दिया है।

श्री नानक जी केवल पाँच नाम (मूल कमल से कण्ठ कमल तक वाले मन्त्र) देते थे। साथ में वाहे गुरू-वाहे गुरू का जाप भी देते थे। उन पाँच नामों का प्रमाण पुस्तक ''तीइये ताप की कथा'' में गुरू अमर दास जी ने ये पाँचों नाम मन्त्र लिखे हैं जिनके जाप से रोग भी नष्ट हो जाता है। (वे मन्त्र हैं हरियं, श्रीं, कलिं, ओं, सों) यह मैं (रामपाल दास) प्रथम चरण की दीक्षा में देता हूँ। दूसरे चरण में सतनाम तथा तीसरे चरण में ''सारशब्द'' देता हूँ। {इसी प्रकार परमेश्वर कबीर जी ने राजा बीर सिहं बघेल (काशी नरेश) को तीन बार में दीक्षा पूर्ण की थी। प्रमाण :- कबीर सागर के अध्याय ''बीर सिहं बोध'' में।}

❖ सोई गुरू पूरा कहावे जो दो अखर का भेद बतावै।

ऊपर दो अक्षर के सतनाम (सत्यनाम) के विषय में लिख दिया है, परंतु सारशब्द के विषय में नहीं बताऊँगा। काल के दूत सार शब्द जानकर स्वयंभू गुरू बन कर भोले जीवों को काल के जाल में रख लेंगे क्योंकि यह मन्त्र तथा उपरोक्त प्रथम दीक्षा मन्त्र तथा दूसरी दीक्षा मन्त्र सत्यनाम वाले तथा सार शब्द मुझ दास (रामपाल दास) के अतिरिक्त कलयुग में कोई दीक्षा में ये मन्त्र देने का अधिकारी नहीं है। अधिकारी के बिना ये मन्त्र लाभ नहीं देते।

उदाहरण :- जैसे विदेश जाने का पासपोर्ट बनवाया जाता है, यदि बनाने वाला अधिकारी नहीं है तो वह पासपोर्ट किसी काम नहीं आता, उल्टा दोषी भी होता है। पासपोर्ट की जाँच हवाई अड्डे (Airport) पर होती है।

इसी प्रकार अधिकारी संत से लिए दीक्षा मन्त्रों तथा अधिकारी गुरू की जाँच त्रिकुटी पर होती है। तब तक साधक का सब कुछ लुट चुका होगा।

❖ संत घीसा दास साहेब जी ने कहा है :-

सतनाम :- ''ओम् सोहं जपले भाई, रामनाम की यही कमाई''

उपरोक्त जाँच से पता चलता है कि जन्म-मरण के रोग को समाप्त करने की साधना (उपचार) कौन से मन्त्र जाप से होती है जिससे जन्म-मरण समाप्त हो।

पवित्र कबीर सागर के ''कबीर वाणी'' अध्याय पृष्ठ 137 तथा ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर कबीर परमेश्वर जी ने संत श्री धर्मदास जी को तीनों समय की दीक्षा देकर कहा था :-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई, सारशब्द कहीं बाहर न जाई।
सारशब्द बाहर जो पड़ही, बिचली पीढ़ी हंस न तिरही।।

यह पृष्ठ 1937 ''जीव धर्म बोध'' में लिखा है:-

धर्मदास मेरी लाख दोहाई, मूल (सार) शब्द बाहर न जाई।
पवित्र ज्ञान तुम जग में भाखो, मूल ज्ञान गोई (गुप्त) तुम राखो।।
मूल ज्ञान तब तक छुपाई, जब तक द्वादश पंथ न मिट जाई।।

यह ''कबीर वाणी'' पृष्ठ 137 पर लिखा है।

इस प्रकार साधना करने से पूर्ण मोक्ष होगा जो श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 18 श्लोक 62 में गीता ज्ञान दाता ने पूर्ण मोक्ष प्राप्ति के लिए अपने से अन्य परमेश्वर की शरण में जाने को कहा है कि हे अर्जुन! सर्व भाव से तू उस परमेश्वर की शरण में जा। उस परमेश्वर की कृपा से ही तू परम शान्ति को तथा सनातन परमधाम को प्राप्त होगा।

गीता अध्याय 15 श्लोक 4 में भी गीता ज्ञान दाता ने अपने से अन्य परमेश्वर की भक्ति करने और सनातन पद को प्राप्त करने को कहा है कि :-

❖ तत्त्वज्ञान की प्राप्ति के पश्चात् परमेश्वर के उस परम पद (सनातन परमधाम) की खोज करनी चाहिए जहाँ जाने के पश्चात् साधक लौटकर संसार में कभी नहीं आते। उस परमेश्वर की भक्ति करो जिसने संसार रूपी वृक्ष की रचना की है। (गीता अध्याय 15 श्लोक 4)

भावार्थ :- पूर्ण मोक्ष उसी को कहते हैं जिसको प्राप्त करके साधक पुनः संसार में जन्म धारण नहीं करता। परमशान्ति वही है, कभी जन्म-मरण के चक्र में न गिरे, सदा सुख सागर स्थान सत्यलोक में रहे, वह पूर्ण परम गति कही जाती है।

ऊपर स्पष्ट हुआ कि जन्म-मरण का रोग किन मन्त्रों की साधना से समाप्त होता है।

पवित्र कबीर सागर में ''ज्ञान सागर'' प्रथम अध्याय है। इसके 106 पृष्ठ हैं। वास्तव में सर्व अध्याय भिन्न पुस्तक रूप में हैं। कबीर सागर में 40 पुस्तकों को इकट्ठा जिल्द किया है। प्रिन्ट कराने से पहले यह एक ही कबीर सागर था जो श्री धर्मदास जी द्वारा हाथ से लिखा था। उसके पश्चात् समय अनुसार अन्य कबीर जी के अनुयाईयों ने कई कॉपी हाथ से लिखी थी। जिस

कारण से प्रत्येक ने भिन्न-भिन्न अध्यायों को पुस्तक रूप बना लिया जो उठाने-पढ़ने में सुविधाजनक थे। उसके पश्चात् इन सबको प्रिन्ट करते समय एक पवित्र कबीर सागर बना दिया गया और अपनी बुद्धि अनुसार हाथ से लिखते समय यानि कॉपी करते समय वाणी काट दी, कुछ मिला दी। जिस कारण से परमेश्वर कबीर जी ने वही यथार्थ ज्ञान अपनी प्यारी आत्मा संत गरीबदास (गाँव-छुड़ानी वाले) को प्रदान किया है। उनको अपने सत्यलोक में लेकर गए जैसे श्री धर्मदास जी को, श्री नानक जी को लेकर गए थे। संत गरीबदास जी ने आँखों देखा परमेश्वर का परिचय अपनी अमतवाणी में लिखा है जो कबीर सागर से भी अधिक वाणी हैं और सत्य तथा बिना परिवर्तन के हैं।

❖ परमेश्वर कबीर जी तो अन्तर्यामी हैं। उनको पता था कि यदि इस ग्रन्थ में छेड़छाड़ कर दी गई तो हमारा ज्ञान, हमारी महिमा प्रमाणित नहीं हो पाएगी। संत गरीबदास के पंथ में एक दयाल दास नाम के साधु थे। उन्होंने गरीबदास पंथ का बहुत प्रचार किया। वह भ्रमण करके प्रचार करता था। उसके साथ लगभग 500 (पाँच सौ) साधुओं की मण्डली (समूह) रहती थी। संत गरीबदास जी के हस्तलिखित ग्रन्थ को साथ रखते थे। उस समय तक संत गरीबदास जी के ग्रन्थ की कई कॉपी की जा चुकी थी। जब मण्डली एक शहर से दूसरे शहर में जाती थी तो संत गरीबदास जी के ग्रन्थ को एक संत सिर पर रखकर चलता था। उस ग्रन्थ की एक कॉपी किसी गिरी पंथ के साधु के हाथ लगी। उसने उसको पढ़ा तो पाया कि कबीर जुलाहे को सष्टि का सजनहार लिखा है :-

तीनों देवता काल है, ब्रह्मा, विष्णु, महेश। भूले चुके समझियो, सब काहु आदेश।।
ब्रह्मा, विष्णु, महेशा, माया (देवी दुर्गा) और धर्मराया (ज्योति निरंजन) कहिए।
इन पाँचों मिल प्रपंच बनाया, वाणी हमरी लहिए।।
चलसी (नष्ट हो जाऐंगे) ब्रह्मा, विष्णु, महेश, चलसी नारद सारद शेषा।
इक्कीस ब्रह्मण्ड चलेंगे भाई, तब तुम रहोगे किसकी शरणाई।।

गिरी पंथ वाले भगवान शंकर जी के उपासक होते हैं। उन्हीं को समर्थ प्रभु मानते हैं। जिस कारण से उस गिरी ने स्वामी दयाल दास जी से बहुत विवाद किया तथा उनका बहुत विरोध किया। एक दिन दयाल दास जी के मन में आया कि इस प्रकार की वाणियों को निकाल देता हूँ। उसने यह करने की ठान ली। सर्व तैयारी कर ली थी। उसी समय दयाल दास जी को अधरंग मार गया, शरीर का दांया भाग कार्य करना छोड़ गया। संत गरीबदास जी दिखाई दिए। कहा कि महात्मा जी आपने हमारे ज्ञान को ठीक से नहीं समझा। हमने यह भी लिखा है ''ब्रह्मा, विष्णु, शम्भु शेषा, तीनों देव दयाल हमेशा''। हमने स्थान व स्थिति अनुसार प्रत्येक देवता की स्थिति बताई है। जहाँ उनको काल इसलिए कहा कि वे काल के सर्व राज्य को चला रहे हैं। काल के खाने के लिए जीवों की उत्पत्ति, पालन तथा संहार कर रहे हैं। इसलिए इनको काल कहा है। वास्तव में ये काल नहीं हैं, बहुत विनम्र आत्मा के हैं। परन्तु इनका कार्य ऐसा है, वैसे ये देव रूप में बहुत दयालु हैं। किसी को नाजायज परेशान नहीं करते। अपने उपासकों की अपने सामर्थ्य अनुसार पूरी सहायता करते हैं, परंतु जन्म-मरण से न स्वयं मुक्त हैं, न इनके उपासक जन्म-मरण से मुक्त हो सके हैं। मेरी वाणी परमेश्वर कबीर जी की बख्शीश है। उनकी धरोहर

है, इसमें किसी ने एक भी अक्षर काटा या जोड़ा तो उसको क्षमा का स्थान नहीं हैं। इतना कहकर अन्तर्ध्यान हो गए। उसके पश्चात् पूरे गरीबदास जी के पंथ में यह बात फैल गई। किसी ने उस वाणी में फेर-बदल नहीं किया। उसके पश्चात् वह ग्रन्थ विशेष जिज्ञासु तथा उपदेशी श्रद्धालु को देने लगे। गाँव छुड़ानी में स्वामी दयाल दास जी के नाम से एक आश्रम है जो गरीबदासीय साधु भक्त राम जी ने बनवा रखा है। पहले दयाल दास जी ने वहाँ एक मकान बनाया था। वे संत गरीबदास जी की जन्म स्थली लीला स्थली तथा परमेश्वर कबीर जी के प्रकट होने से पवित्र धाम छुड़ानी में प्रत्येक वर्ष सतसंग में आते थे। वहाँ सतसंग उस दिन किया जाता है जिस तिथि को संत गरीबदास जी को परमेश्वर कबीर जी मिले थे। फाल्गुन मास की सुदी द्वादशी को संत गरीबदास जी की वाणी का तीसरे दिन भोग लगता है। तीन दिन तक पाठ चलता है। फाल्गुन विक्रमी संवत् 1784 (सन् 1727) को फाल्गुन (फागन) मास की सुदी द्वादशी (चान्दनी दुवास) को परमेश्वर कबीर जी संत गरीबदास जी को मिले थे। उस समय संत गरीबदास जी की आयु 10 वर्ष थी। इस प्रकार संत गरीबदास जी की वाणी पूर्ण रूप से सुरक्षित है। उसी के आधार से यह दास (रामपाल दास) सर्व ज्ञान प्रचार कर रहा है। सर्व वेद, गीता, पुराण, कुरान, बाईबल जैसे पवित्र ग्रन्थों के गूढ़ रहस्यों को परमेश्वर कबीर जी की कंपा से समझा है। पवित्र वाणी संत गरीबदास जी की तथा उसी से कबीर सागर की मिलावट जानी तथा कांट-छांट को समझा तथा पवित्र कबीर सागर की अमंतवाणी जो स्वयं परमेश्वर कबीर जी ने अपने मुख कमल से बोली थी तथा धर्मदास जी ने अपनी आँखों से परमात्मा तथा परमात्मा के सत्यलोक को देखकर अपनी साक्षी देकर वाणी की सत्यता दंढ़ की है। इसी प्रकार संत गरीबदास जी ने भी परमेश्वर कबीर जी की स्थिति आँखों देखी बताई है।

गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्मण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरू पुरूष कबीर हैं, कुल के सिरजनहार।।
गरीब, हम सुलतानी नानक तारे, दादू को उपदेश दिया।
जाति जुलाहा भेद न पाया, काशी मांहे कबीर हुआ।।
गरीब, गुरू ज्ञान अडोल अबल है, सतगुरू शब्द सेरी पिछानी।
दास गरीब कबीर सतगुरू मिले, आनस्थान रोप्या छुडानी।।
गरीब, अजब नगर में (सत्यलोक में) ले गए हमको सतगुरू आन।
झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

इसी प्रकार संत नानक जी को परमेश्वर कबीर जी अपने साथ लेकर सच्चखण्ड यानि सत्यलोक लेकर गए थे। तीन दिन ऊपर के सर्व लोक दिखाकर अपनी महिमा सामर्थ्य से परिचित करवाकर तीसरे दिन वापिस छोड़ा था। उन्होंने भी परमेश्वर कबीर जी की आँखों देखी महिमा की गवाही दी है।

फाई सुरत मलुकि वेश ऐ ठगवाड़ा ठगी देश
खरा सियाणा बहुते भार धाणक रूप रहा करतार (गुरू ग्रन्थ पंष्ठ 24)
यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार,
हक्का कबीर करीम तू बे एब परवरदिगार।।(गुरू ग्रन्थ पंष्ठ 721)

नीच जाति परदेशी मेरा छिन आव तिल जावै।
जाकी संगत नानक रहेंदा क्यूकर मोंडा पावै।।(गुरू ग्रन्थ पष्ठ 731)

संत गरीबदास जी की वाणी में सम्पूर्ण आध्यात्मिक ज्ञान है जो परमेश्वर कबीर जी ने कबीर सागर में कहा था जो कुछ-कुछ बदला गया। इसलिए कबीर सागर में की गई मिलावट या कांट-छांट स्पष्ट दिखाई दे जाती है। संत गरीबदास जी तथा परमेश्वर कबीर जी की वाणी पवित्र वेदों, गीता, पुराणों से मेल करती है। इसलिए यह विश्वास होना भी स्वभाविक है कि कबीर सागर तथा संत गरीबदास जी की वाणी वाला ज्ञान तत्त्वज्ञान है। अब पवित्र कबीर सागर से सार रूपी मोती निकालता हूँ।

➢ **कबीर सागर में ''अनुराग सागर'' अध्याय में धर्मदास जी के विषय में विशेष प्रकरण है जो इस प्रकार है :-**

''नारायण दास को काल का दूत बताना''

अनुराग सागर पष्ठ 115 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को सत्यज्ञान समझाकर तथा सत्यलोक में ले जाकर अपना परिचय देकर धर्मदास जी के विशेष विनय करने पर उनको दीक्षा मंत्र दे दिये। प्रथम मंत्र में कमलों के देवताओं के जो जाप मंत्र हैं, वे दिए जाते हैं। धर्मदास जी उन देवों को ईष्ट रूप में पहले ही मानता था, पंरतु अब ज्ञान हो गया था कि ये ईष्ट रूप में पूज्य तो नहीं हैं, परंतु साधना का एक अंग हैं। धर्मदास की खुशी का कोई ठिकाना नहीं था। उसने अपने परिवार का कल्याण करना चाहा। धर्मदास जी के साथ उनकी पत्नी आमिनी देवी दीक्षा ले चुकी थी। केवल इकलौता पुत्र नारायण दास ही दीक्षा बिना रहता था। धर्मदास जी ने परमात्मा कबीर जी से अपने पुत्र नारायण दास को शरण में लेने के लिए प्रार्थना की।

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम जीवन के मूला। मेटेउ मोर सकल तन सूला।।
आहि नरायण पुत्र हमारा। सौंपहु ताहि शब्द टकसारा।।
इतना सुनत सदगुरू हँसि दीन्हा। भाव प्रगट बाहर नहिं कीन्हा।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे प्रभु जी! आप सर्व प्राणियों के मालिक हैं। मेरे दिल का एक सूल यानि काँटे का दर्द दूर करें। मेरा पुत्र नारायण दास है। उसको भी टकसार शब्द यानि वास्तविक मोक्ष मंत्र देने की कपा करें। जब तक नारायण दास आपकी शरण में नहीं आता। तब तक मेरे मन में सूल (काँटे) जैसा दर्द बना है।

धर्मदास जी की बात सुनकर परमात्मा अंदर ही अंदर हँसे। हँसी को बाहर प्रकट नहीं किया। कारण यह था कि परमेश्वर कबीर जी तो जानीजान हैं, अंतर्यामी हैं। उनको पता था कि काल का मुख्य दूत मत्यु अंधा ही नारायण दास रूप में धर्मदास के घर पुत्र रूप में जन्मा है।

''कबीर परमेश्वर वचन''

धर्मदास तुम बोलाव तुरन्ता। जेहिको जानहु तुम शुद्धअन्ता।।
धर्मदास तब सबहिं बुलावा। आय खसम के चरण टिकावा।।
चरण गहो समरथ के आई। बहुरि न भव जल जन्मो भाई।।
इतना सुनत बहुत जिव आये। धाय चरण सतगुरू लपटाये।।
यक नहिं आये दास नरायन। बहुतक आय परे गुरू पायन।।
धर्मदास सोच मन कीन्हा। काहे न आयो पुत्र परबीना।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अपने पुत्र को भी बुला ले और जो कोई आपका मित्र या निकटवासी है, उनको भी बुला लो, सबको एक-साथ दीक्षा दे दूँगा। धर्मदास जी ने नारायण दास तथा अन्य आस-पड़ोस के स्त्री-पुरूषों से कहा कि परमात्मा आए हैं, दीक्षा लेकर अपना कल्याण कराओ। फिर यह अवसर हाथ नहीं आएगा। यह बात सुनकर आसपास के बहुत से जीव आ गए, परंतु नारायण दास नहीं आया। धर्मदास जी को चिंता हुई कि मेरा पुत्र क्यों नहीं आया? वह तो बड़ा प्रवीन है। तीक्ष्ण बुद्धि वाला है। धर्मदास जी ने अपने नौकर तथा नौकरानियों से कहा कि मेरे पुत्र नारायण दास को बुलाकर लाओ। नौकरों ने देखा कि वह गीता पढ़ रहा था और आने से मना कर दिया।

''नारायण दास वचन''

हम नहिं जायँ पिता के पासा। वृद्ध भये सकलौ बुद्धि नाशा।।
हरिसम कर्ता और कहँ आहि। ताको छोड़ जपैं हम काही।।
वृद्ध भये जुलाहा मन भावा। हम मन गुरू विठलेश्वर पावा।।
काहि कहौं कछु कहो न जाई। मोर पिता गया बौराई।।

भावार्थ :- नारायण दास ने नौकरों से कहा कि मैं पिताजी के पास नहीं जाऊँगा। वृद्धावस्था (बुढ़ापे) में उनकी बुद्धि का पूर्ण रूप से नाश हो गया है। हरि (श्री विष्णु जी) के समान और कौन कर्ता है जिसे छोड़कर हम अन्य किसकी भक्ति करें? पिता जी को वृद्ध अवस्था में जुलाहा मन बसा लिया है। मैंने तो बिठलेश्वर यानि बिट्ठल भगवान (श्री कृष्ण जी) को गुरू मान लिया है। क्या कहूँ? किसके सामने कहने लायक नहीं रहा हूँ। मेरे पिताजी पागल हो गए हैं।

नौकरों ने जो-जो बातें नारायण ने कही थी, धर्मदास जी को सुनाई। धर्मदास जी स्वयं नारायण दास को बुलाने गए और कहा कि हे पुत्र! आप चलो सतपुरूष आए हैं। चरणों में गिरकर विनती करो। अपना कल्याण कराओ। बेटा! फिर ऐसा अवसर हाथ नहीं आएगा। हे भोले बेटा! यह हठ छोड़ दे।

''नारायण दास वचन''

तुम तो पिता गये बौराई। तीजे पन जिंदा गुरू पाई।।
राम कृष्ण सम न देवा। जाकी ऋषि मुनि लावहिं सेवा।।
गुरू बिठलेश्वर छांडेउ दीता। वृद्ध भये जिंदा गुरू कीता।।

भावार्थ :- नारायण दास ने कहा कि पिता जी! आप तो पागल हो गए हो। तीजेपन

यानि जीवन के तीसरे पड़ाव को पार कर चुके हो। 75 वर्ष तक के जीवन को तीसरा पड़ाव कहते हैं। आपने जिन्दा बाबा (मुसलमान संत) गुरू बना लिया। राम जी के समान अन्य कोई प्रभु नहीं है। जिसकी सेवा (पूजा) सब ऋषि-मुनि करते रहे हैं।

''धर्मदास वचन''

बांह पकर तब लीन्ह उठाई। पुनि सतगुरू के सन्मुख लाई।।
सतगुरू चरण गहो रे बारा। यम के फन्द छुड़ावन हारा।।
तज संसार लोक कहँ जाई। नाम पान गुरू होय सहाई।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने अपने पुत्र नारायण दास को बाजू से पकड़कर उठाया और सतगुरू कबीर जी के सामने ले आया। हे मेरे बालक! सतगुरू के चरण ग्रहण करो। ये काल की बंद से छुड़ाने वाले हैं। जिस समय संसार छोड़कर सतलोक में जाएंगे तो गुरू दीक्षा सहायता करती है।

''नारायण दास वचन''

तब मुख फेरे नरायन दासा। कीन्ह मलेच्छ भवन परगासा।।
कहँवाते जिंदा ठग आया। हमरे पितहिं डारि बौराया।।
वेद शास्त्र कहँ दीन उठाई। आपनि महिमा कहत बनायी।।
जिंदा रहे तुम्हारे पासा। तो लग घरकी छोड़ी आसा।।
इतना सुनत धर्मदासा अकुलाने। ना जाने सुत का मत ठाने।।
पुनि आमिन बहुविधि समझायो। नारायण चित एकु न आयो।।
तब धर्मदास गुरू पहँ आये। बहुविधिते पुनि बिनती लाये।।

भावार्थ :- सतगुरू कबीर जी के सम्मुख जाते ही नारायण दास ने अपना मुख दूसरी ओर टेढ़ा किया और बोला कि पिता जी! आपने मलेच्छ (मुसलमान) को घर में प्रवेश करवाया है। धर्म भ्रष्ट कर दिया है। यह जिंदा बाबा ठग कहाँ से आया। मेरे पिता को बहका दिया है। इसने वेद-शास्त्रों को तो एक और रखा दिया, अपनी महिमा बनाई है। जब तक यह जिन्दा घर में रहेगा, मैं घर में नहीं आऊँगा। अपने पुत्र की इतनी बातें सुनकर धर्मदास व्याकुल हो गया कि बेटा पता नहीं क्या कर बैठेगा? फिर नारायण दास की माता जी आमिनी देवी ने भी बहुत समझाया, परंतु नारायण दास के हृदय में एक बात नहीं आई और उठकर चला गया। धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से प्रार्थना की कि हे प्रभु! क्या कारण है। नारायण दास इतना विपरित चल रहा है।

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! तेरे पुत्र रूप में काल का दूत आया है। इसका नाम म॑त्यु अंधा दूत है। यह मेरी बात को नहीं मानेगा।

विवेचन :- पाठकों से निवेदन है कि अनुराग सागर के पं॑ष्ठ 117 पर ''कबीर वचन'' जो पंक्ति 15 नं. 22 अंतिम तक तथा पं॑ष्ठ 118 तथा पं॑ष्ठ 123 तक वाणियां बनावटी तथा मिलावटी हैं। यह धर्मदास जी के बिंद (परिवार वाले) महंतों ने नाश कर रखा है क्योंकि जिन 12 पंथों का यहाँ वर्णन है वह ''कबीर बानी'' अध्याय में कबीर सागर में पं॑ष्ठ 134 पर लिखे प्रथम अंश से नहीं मिलता। उसमें लिखा है कि प्रथम अंश उत्तम यानि चूड़ामणी (मुक्तामणी)

नाम साहेब के विषय में कहा है। यदि काल के बारह (12) पंथों में प्रथम उत्तम है तो नारायण दास प्रथम पंथ का प्रवर्तक नहीं हो सकता क्योंकि नारायण दास ने तो कबीर जी का मार्ग ग्रहण नहीं किया था। वे तो अंतिम समय तक श्री कष्ण जी के पुजारी रहे थे। अपने छोटे भाई चूड़ामणी जी के दुश्मन बन गए थे। चूड़ामणी जी तो बाँधवगढ़ त्यागकर कुदुर्माल गाँव चले गए थे। नारायण दास ने बाँधवगढ़ में श्री कष्ण जी का आलीशान मंदिर बनवाया था। श्री चूड़ामणी जी के कुदुर्माल जाने के कुछ वर्ष पश्चात् बाँधवगढ़ नगर भूकंप से नष्ट हो गया था। उसमें सब श्री कष्ण पुजारी वैश्य रहते थे जैसे हरियाणा में अग्रोहा में हुआ था। बाद में उसी बाँधवगढ़ में श्री कष्ण मंदिर बनाया गया है जो वर्तमान में विद्यमान है और उसको केवल जन्माष्टमी पर सरकार की देखरेख में तीन दिन दर्शनार्थ खोला जाता है। शेष समय में केवल सरकारी पुजारी मंदिर में पूजा करता है। कारण यह है कि उस स्थान पर खुदाई करना मना है। पहले खुदाई में बहुत व्यक्तियों को बहुत सोना-चाँदी हाथ लगा था। बाद में सरकार ने अपने कब्जे में ले रखा है। उस मंदिर का इतिहास नारायण दास सेठ से प्रारम्भ होता है। (यह वहाँ का पुजारी तथा वहाँ के उपासक बताते हैं।) धर्मदास जी के सर्व धन-संपत्ति पर नारायण दास ने कब्जा कर लिया था। श्री चूड़ामणी नाम साहेब तो परमेश्वर कबीर जी के भेजे परम हंस थे। उनका उद्देश्य धन-संपत्ति संग्रह करना नहीं था। परमात्मा के यथार्थ ज्ञान का प्रचार करना था तथा परमेश्वर कबीर जी के वचन अनुसार धर्मदास का वंश चलाना था जो बयालीस (42) पीढ़ी तक चलेगा। वर्तमान में चौदहवीं पीढ़ी चल रही है। चूड़ामणी की वंश गद्दी परंपरा में छठी पीढ़ी वाले ने वास्तविक भक्ति विधि तथा भक्ति मंत्र त्यागकर काल के 12 पंथों में भी पाँचवां टकसारी पंथ है, उसके बहकावे में आकर टकसारी पंथ वाली आरती-चौंका तथा पाँच नाम (अजर नाम, अमर नाम, अमीनाम आदि-आदि) शुरू कर दिये थे जो वर्तमान में दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में गद्दी परंपरा वाले चौदहवें महंत श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब प्रदान कर रहे हैं। अधिक जानकारी के लिए अनुराग सागर के पष्ठ 138 से पष्ठ 142 तक विस्तत ज्ञान पढ़ें आगे।

''धर्मदास जी के दूसरे पुत्र चूड़ामणी की उत्पत्ति''

अनुराग सागर पष्ठ 124 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम जीवन के मूला। मेटहु मोर सकल दुख शूला।।
आहि नरायन पुत्र हमारा। अब हम तहँकर दीन्हा निकारा।।
काल अंश गह जन्मों आई। जीवन काज होवै दुखदाई।।
धन सतगुरू तुम मोहि लखावा। काल अंशको भाव चिन्हावा।।
पुत्र नरायना त्यागी हम दीन्हा। तुमरो वचन मानि हम लीना।।

धर्मदास साहब को अन्शका दर्शन होना

धर्मदास विनवै सिर नाई। साहिब कहो जीव सुखदाई।।
किहि विधि जीव तरै भौसागर। कहिये मोहि हंसपति आगर।।

कैसे पंथ करौं परकासा। कैसे हंसहिं लोक निवासा।।
दास नरायन सुत जो रहिया। काल जान ताकँइ परिहरिया।।
अब साहिब देहु राह बताइ। कैसे हंसा लोक समाई।।
कैसे बंस हमारो चलि है। कैसे तुम्हरो पंथ अनुसरि है।।
आगे जेहिते पंथ चलाई। ताते करो विनती प्रभुराई।।

भावार्थ :- कुछ वाणी काटी गई हैं। इसलिए वह प्रसंग बताता हूँ। धर्मदास जी को विश्वास नहीं हुआ कि नारायण दास वास्तव में काल दूत है। तब कबीर परमेश्वर जी से व्याकुल तथा पुत्र मोह से ग्रस्त होकर कहा कि हे सतगुरू जी! आप जो कहते हैं वह गलत नहीं हो सकता, परंतु मेरा मन मुझे परेशान कर रहा है कि नारायण दास तो भगवान का परम भक्त है। यह काल का दूत नहीं हो सकता। ऐसी करो गुरूदेव मेरी शंका समाप्त हो। परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप नारायण दास को फिर बुलाओ और दोनों पति-पत्नी तुम आओ। जैसे-तैसे नारायण दास बुलाया। परमेश्वर कबीर जी ने नारायण दास की प्रशंसा की। कहा कि धर्मदास! तेरे घर प्रभु का परम भक्त जन्मा है। यह जो भक्ति कर रहा है, करने दो, देख इसके मस्तिक की रेखा। दोनों (आमिनी तथा धर्मदास) देखो। ऐसी रेखा करोड़ों में एक की होती है। धर्मदास तथा आमिनी ने देखा कि नारायण दास का स्वरूप भयानक था। ओछा माथा और लंबे दाँत, काला शरीर। उसके ऊपर नारायण दास के भौतिक शरीर का कवर था जो पहले हटता दिखा, फिर लिपटता दिखा। अपने पुत्र रूप में काल के दूत को आँखों देखकर धर्मदास तथा आमिनी देवी ने एक सुर में कहा कि जाओ पुत्र! जैसी भक्ति करना चाहो करो, परंतु घर त्यागकर मत जाना। लोग हमें जीने नहीं देंगे। नारायण दास चला गया। कबीर साहब ने कहा कि हे धर्मदास! यह कहीं जाने वाला नहीं है। अब ऊपर लिखी अनुराग सागर के पृष्ठ 124 की वाणियों का सरलार्थ करता हूँ।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने परमेश्वर कबीर जी से निवेदन किया कि हे प्रभु! आप तो सर्व प्राणियों के जनक हैं। मेरे मन की शंका दूर करो। नारायण तो काल का अंश। यह तो मैंने दिल से उतार दिया। और पुत्र है नहीं। नारायण दास की संतान काल प्रेरित रहेगी। इस प्रकार तो मेरा वंश काल वंश होगा। आपने कहा कि मेरा वंश बयालीस पीढ़ी तक चलेगा। हे परमात्मा! ये तो काल कुल होगा। आपने कहा है कि तू धर्मदास मेरे (कबीर जी के) पंथ को आगे बढ़ाना सो वह कैसे संभव हो सकेगा?

अनुराग सागर के पृष्ठ 125 का सारांश :-

''कबीर वचन''

धर्मदास सुनु शब्द सिखापन। कहों संदेश जानि हित आपन।।
नौतम सुरति पुरूष के अंशा। तुव गृह प्रगट होइ है वंशा।।
वचन वंश जग प्रगटे आई। नाम चुणामणि ताहि कहाई।।
पुरूष अंश के नौतम वंशा। काल फन्द काटे जिव संशा।।

छन्द

कलि यह नाम प्रताप धर्मनि, हंस छूटे कालसो।।

सत्तनाम मन बिच दृढ़गहे, सोनिस्तरे यमजालसो।।
यम तासु निकट न आवई, जेहि बंशकी परतीतिहो।
कलि काल के सिर पांदे, चले भवजल जीतिहो।।
सोरठा—तुमसों कहों पुकार, धर्मदास चित परखहू।।
तेहि जिव लेउँ उबार वचन जो वंश दृढ़ गहे।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तेरे घर मेरे वचन से तेरी पत्नी के गर्भ से एक पुत्र का जन्म दसवें महीने होगा। उसका नाम चूड़ामणी रखना। वैसे उसका नाम नोतम दास है। (मीनी सतलोक में काल लोक में भी परमेश्वर कबीर जी ने एक सतलोक की रचना की है जैसे राजदूत भवन प्रत्येक देश में प्रत्येक देश का होता है, उसका प्रसिद्ध नाम सतगुरू लोक है। वहाँ से चुड़ामणि वाला जीव भेजा जाएगा।) उसको मैं स्वयं दीक्षा तथा गुरू पद प्रदान करूँगा।

अनुराग सागर के पृष्ठ 125 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि यदि उस अंश के एक बार दर्शन हो जाएं तो मन का सब संशय समाप्त हो जाएगा। आपके वचन पर विश्वास हो जाएगा।

''कबीर परमेश्वर वचन''

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे मुक्तामणी! तू मेरा नामक अंश है। मेरे से सुकृत ने तेरे दर्शन का हठ किया है। एक बार शिशु रूप में इसके आंगन में प्रकट हो और फिर वापिस जाओ। {सतगुरू लोक यानि मीनी सतलोक से धर्मदास जी वाली आत्मा आई थी। वहाँ पर इनकी आत्मा का नाम सुकृत है। उस लोक के हंस इसी नाम से जानते हैं। सतगुरू लोक में जो हंस हैं, वे पार नहीं हुए हैं। उनकी भक्ति अधूरी रहती है, वे अंकुरी हंस हैं। अब कलयुग की बिचली पीढ़ी (कलयुग 5505 वर्ष बीतने के पश्चात् सन् 1997 से प्रारम्भ हुई है) में पृथ्वी पर जन्म लेंगे। यदि मेरे (रामपाल दास) से दीक्षा लेंगे, वे सर्व सतलोक चले जाएंगे।} परमेश्वर कबीर जी के कहते ही एक शिशु धर्मदास के घर के आँगन में पृथ्वी से एक फुट ऊपर दिखाई दिया। एक पैर का अंगूठा मुख में, एक को हिला रहा था। फिर तुरंत चला गया।

धर्मदास तथा आमिनी देवी अति हर्षित हुए। परमेश्वर के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया।

''धर्मदास वचन''

भावार्थ :- हे परमात्मा! मेरी आयु अति वृद्ध हो चुकी है। उस समय धर्मदास जी की आयु लगभग 85 वर्ष की थी। आगे कैसे वंश चलेगा?

''कबीर वचन''

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि यह जो शिशु आपने देखा था। वह तेरी पत्नी के गर्भ से दसवें महीने जन्म लेगा। जो यह तुम्हारा पुत्र होगा, यह हमारा अंश होगा। जो मैंने तेरे को सतनाम तथा सारनाम दिया है। वह भंडार है, उसको उसे देना जिसे मैं कहूँ।

"धर्मदास वचन"

भावार्थ :- हे प्रभु! मेरी इन्द्री शिथिल हो चुकी है। अब कैसे लड़का उत्पन्न होगा? {स्पष्टीकरण :- इन वाणियों में मिलावट है जो लिखा है कि मैंने इन्द्री वश किन्हीं हैं, पुत्र कैसे होगा। यह गलत है। इन्द्री वश करने का अर्थ है संयम रखना। परंतु ऐसी आवश्यकता पड़ने पर संतानोत्पत्ति के लिए इन्द्री तो सक्रिय ही होती है। वास्तविकता यह थी कि वृद्ध अवस्था का हवाला देकर प्रश्न किया था। परंतु इतिहास गवाह है कि 80-90 वर्ष के व्यक्ति ने भी संतानोत्पत्ति की है। जिनका स्वास्थ्य ठीक चल रहा हो। फिर भी परमात्मा जो चाहे, कर सकते हैं। बांझ को संतान। नपुसंक को भी मर्द बना सकते हैं। यहाँ पर इतना ही समझना पर्याप्त है।

अनुराग सागर के पृष्ठ 126 का सारांश :-

"धर्मदास जी को सार शब्द देने का प्रमाण"

"कबीर वचन"

तब आयसु साहब अस भाखे। सुरति निरति करि आज्ञा राखे।।
पारस नाम धर्मनि लिखि देहू। जाते अंश जन्म सो लेहू।।
लखहु सैन मैं देऊँ लखाई। धर्मदास सुनियो चितलाई।।
लिखो पान पुरूष सहिदाना। आमिन देहु पान परवाना।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अब आपका दृढ़ निश्चय हो गया है। तूने अपने पुत्र को भी त्याग दिया है। अब मैं तेरे को पारस पान (सारनाम की दीक्षा) देता हूँ। आमिनी देवी को भी सारनाम देता हूँ।

"धर्मदास वचन"

भावार्थ :- वाणियों को पढ़ने से ही पता चलता है कि इनमें कृत्रिम वाणी है, लिखा है कि :-

रति सुरति सो गरभ जो भयऊ। चूरामनी दास वास तहं लयऊ।।

इस वाणी से यह सिद्ध करना चाहा है कि सुरति से रति (Sex) करने से चूड़ामणी का जन्म हुआ।

इस प्रकार कबीर सागर में अपनी बुद्धि के अनुसार यथार्थ वर्णन कई स्थानों पर नष्ट कर रखा है। इसके लिए जो मैंने (रामपाल दास ने) लिखा है, वही यथार्थ जानें कि परमेश्वर की शक्ति से धर्मदास तथा आमिनी के संयोग से पुत्र चूड़ामणी का जन्म हुआ। कई कबीर पंथी जो दामाखेड़ा गद्दी वालों के मुरीद (शिष्य) हैं, वे कहते हैं कि चूड़ामणी के शरीर की छाया नहीं थी। जिस कारण से कहा जाता है कि उनका जन्म सुरति से हुआ है। यहाँ याद रखें कि श्री ब्रह्मा, महेश, विष्णु जी के शरीर की छाया नहीं होती। उनका जन्म भी दुर्गा देवी (अष्टांगी) तथा ज्योति निरंजन के भोग-विलास (Sex) करने से हुआ। कबीर सागर के अध्याय ज्ञान बोध के पृष्ठ 21-22 पर वाणी है :-

धर्मराय कीन्हें भोग विलासा। माया को रही तब आश।।

तीन पुत्र अष्टांगी जाये। ब्रह्मा, विष्णु, शिव नाम धराये।।

इसलिए यह कहना कि चूड़ामणी जी के शरीर की छाया नहीं थी। इसलिए यह लिख दिया कि सुरति से रति (Sex) किया गया था, अज्ञानता का प्रमाण है। कबीर सागर के अनुराग सागर के पृष्ठ 126 का सारांश किया जा रहा है। स्पष्टीकरण दिया है कि वाणी में मिलावट करके भ्रम उत्पन्न किया है। मेरी (रामपाल दास की) सेवा इसलिए परमेश्वर जी ने लगाई है कि सब अज्ञान अंधकार समाप्त करूं। कबीर बानी अध्याय में कबीर सागर के पृष्ठ 134 पर भी परमेश्वर कबीर जी ने स्पष्ट किया है कि तेरहवें अंश मिटै सकल अंधियारा। अब आध्यात्मिक ज्ञान को पूर्ण रूप से स्पष्ट करके प्रमाणित करके आपके रूबरू कर रहा हूँ।

❖ **अनुराग सागर के पृष्ठ 127-128 का सारांश :-**

इन दोनों पृष्ठों पर वृतान्त यह है कि परमेश्वर कबीर जी ने चूड़ामणी जी को दीक्षा दी तथा गुरू पद दिया। कहा कि हे धर्मदास! तेरे बयालीस वंश का आशीर्वाद दे दिया है और तेरे वंश मेरे वचन अंश चूड़ामणी को कड़िहार (तारणहार) का आशीर्वाद दे दिया है। तेरे वंश से दीक्षा लेकर जो मर्यादा में रहकर भक्ति करेगा, उसका कल्याण हो जाएगा। परंतु सार शब्द इस दीक्षा से भिन्न है। मैंने 14 कोटि ज्ञान कह दिया है, परंतु सार शब्द इनसे भिन्न है। अन्य नाम तो तारे जानो। सार शब्द को सूर्य जानो।

❖ **अनुराग सागर के पृष्ठ 129 का सारांश :-**

''धर्मदास वचन''

धर्मदास विनती अनुसारी। हे प्रभु मैं तुम्हरी बलिहारी।।
जीवन काज वंश जग आवा। सो साहिब सब मोहि सुनावा।।
वचन वंश चीन्हे जो ज्ञानी। ता कह नहीं रोके दुर्ग दानी।।
पुरूष रूप हम वंशहि जाना। दूजा भाव न हृदये आना।।
नौतम अंश परगट जग आये। सो मैं देखा ठोक बजाये।।
तबहूँ मोहि संशय एक आवे। करहु कृपा जाते मिट जावे।।
हमकहँ समरथ दीन पठायी। आये जग तब काल फसायी।।
तुम तो कहो मोहि सुकृत अंशा। तबहूँ काल कराल मुहिडंसा।।
ऐसहिं जो वंशन कहँ होई। जगत जीव सब जाय बिगोई।।
ताते करहु कृपा दुखभंजन। वंशन छले नहिं काल निरंजन।।
और कछू मैं जानौं नाहीं। मोरलाज प्रभु तुम कहँ आही।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने शंका की और समाधान चाहा कि हे परमेश्वर जी! आपने मेरे वंश (बिन्द वालों) को कड़िहार (नाद दीक्षा देकर मोक्ष करने वाला) बना दिया। मुझे एक शंका है कि जैसे आपने मुझे कहा है कि तुम सुकृत अंश हो, संसार में जीवों के उद्धार के लिए भेजा है। आगे मेरे को काल ने फंसा लिया। आप मुझे सुकृत अंश कहते हो तो भी मेरे को काल कराल ने डस लिया यानि अपना रंग चढ़ा दिया। मैं (धर्मदास) काल के पुत्र श्री विष्णु पर पूर्ण कुर्बान था। आपने राह दिखाया और मुझे बचाया। कहीं काल मेरे वंश वालों

के साथ भी छल कर दे तो संसार के जीव कैसे पार होंगे? वे सब नष्ट हो जाएंगे। इसलिए हे दुःख भंजन! ऐसी दया करो कि मेरे वंश वालों को काल निरंजन न ठगे। मैं और अधिक कुछ नहीं जानता, मेरी लाज आपके हाथ में है।

''कबीर वचन''

❖ अनुराग सागर पष्ठ 130 से 137 का सारांश :-

कबीर परमेश्वर जी ने बताया कि हे धर्मदास! काल बड़ा छलिया है। इसने पहले तो मेरे से तीन युगों में जीव थोड़े पार करने तथा कलयुग में जितने मर्जी पार कर देना, यह वर माँग लिया। बाद में कहा कि मेरे अंश (काल के दूत) पहले भेजूंगा जो तेरे (कबीर) नाम से 12 पंथ चलाएंगे। उनके चार मुखिया होंगे। अन्य भी होंगे। उसने अपने चार मुख्य दूतों से कहा कि जगत में मेरा शत्रु कबीर जाएगा। वह कबीर नाम से पंथ चलाएगा। भवसागर उजाड़ना चाहता है। कोई अन्य लोक सुखदायी तथा अन्य सतपुरूष बताएगा। वह झूठ बोलता है, तुम जाओ, मेरी भक्ति दढाओ। इस प्रकार उसने (काल निरंजन ने) अपने दूत भेजे हैं। बताया है कि कबीर जम्बूद्वीप (भारत) में अपना पंथ चलाएगा। तुम कबीर नाम से 12 नकली पंथ चलाना। काल ने अपने दूतों को समझाकर पथ्वी पर जाने के लिए कहा। चार मुख्य दूत हैं - रंभ, कूरंभ, जय तथा विजय।

ये सब जालिम हैं। इनमें ''जय'' नामक दूत अधिक दुष्ट है। वह तेरे वंश को भ्रमित करेगा। बांधवगढ़ के पास गाँव कुरकुट में चमार जाति में जन्म लेगा। साहब दास नाम कहावैगा। इसका पुत्र गणपति नाम का होगा। ये दोनों तेरी गद्दी वालों यानि वंश छाप वालों को भ्रमित करेंगे। वे झंग शब्द का उच्चारण करेंगे, यही दीक्षा मंत्र होगा। काल ने एक झांझरी द्वीप की रचना कर रखी है। उसमें काल का बाजा बजता है, वही काल लोक वाली भंवर गुफा में सुनता है। आरती चौंका करेंगे और अपने पंथ को वास्तविक कबीर पंथ बताकर तेरे वंश को विचलित करेंगे।

''धर्मदास की पीढ़ी वालों को काल ने छला''

❖ अनुराग सागर पष्ठ 138 से 142 तक का सारांश :-

पष्ठ 138 पर ''भविष्य कथन अलग व्यौहार'' :-

परमेश्वर कबीर जी ने कहा है कि हे धर्मदास! जो कुछ आगे तेरे वंश में होगा और कैसे तेरे बयालीस वंश तथा जगत के अन्य जीवों को पार करूँगा। जो कुछ आगे होय है भाई। सो चरित्र तोहि कहूं बुझाई।। जो आगे होगा, वह चरित्र पूछो धर्मदास। जब तक तुम शरीर में रहोगे, तब तक काल निकट नहीं आएगा। तेरे शरीर त्यागने के पश्चात् काल तेरे कुल (वंश) के निकट आएगा और तेरे वंश का यथार्थ नाम दीक्षा खंडित करेगा। तेरे वंश वालों में यह अभिमान होगा कि हम धर्मदास के कुल के हैं, हम सबके तारणहार हैं। आपस में तो झगड़ा करेंगे ही, वे जो मेरा भेजा नाद (वचन का पुत्र यानि शिष्य) परंपरा वाले से जो मेरा सुपंथ (यथार्थ कबीर पंथ) चलाएगा, उसकी निंदा करके पाप के भागी होंगे, पार तो हो ही नहीं सकेंगे। इसलिए अपने वंश को समझा देना कि जब काल का दॉव लग जाए,

वंश परंपरा कुपंथ पर चले तो मैं अपना नाद (शिष्य) परम्परा का अपना अंश भेजूंगा, उसको प्रेम से मिलें और उससे दीक्षा ले लें। जैसे मेरा पुत्र कमाल था जिसको मैंने मतक से जीवित किया था। उसको दीक्षा भी दी थी। वह स्वयंभू गुरू बन गया था। अपना जीवन नष्ट किया और अनेकों को भी ले डूबा। (विस्तार से वर्णन कबीर सागर के अध्याय ''कमाल बोध'' के सारांश में पढ़ें।)

पष्ठ 139 पर :- कमाल को अभिमान हो गया था। मैंने उसको त्याग दिया था। मेरे को अहंकारी प्राणी पसंद नहीं हैं। हम तो भक्ति के साथी हैं, हाथी-घोड़ों को नहीं चाहता। जो प्रेम भक्ति करता है, उसको हृदय में रखता हूँ। इसलिए नाद पुत्र को (शिष्य परंपरा वाले को) दीक्षा देने का अधिकार यानि गुरू पद सौंपूंगा। मेरा पंथ नाद से ही उजागर होगा यानि प्रसिद्ध होगा। तेरे वंश वाले बहुत अहंकार करेंगे। धर्मदास जी ने चिंता जताई कि आप नाद वाले को गुरू पद दोगे, परंतु मेरे वंश वाले कैसे मोक्ष प्राप्त करेंगे? परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि तेरे वंश वाले हों, चाहे अन्य जीव हों, जो मेरे द्वारा भेजे अंश (नाद अंश) से दीक्षा लेकर मर्यादा में रहेंगे तो कैसे पार नहीं होंगे? जो हमारे वचन को मानेगा, वही वंश वाला मुझे प्यारा लगेगा। बिना वचन यानि नाद वाले को गुरू माने बिना पार नहीं हो सकता, मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। तेरे बयालीस (42) पीढ़ी को मैंने एक वचन से पार कर दिया है। वह वचन यह है कि (नाद परंपरा) वाले से दीक्षा लेकर पार हो जाएंगे। बिन्द वाले वंश कहलाते हैं और वचन (नाद) वाले बिना वे अपने घर यानि सतलोक नहीं जा सकते।

अनुराग सागर पष्ठ 140 का सारांश :-

(कबीर वचन ही चल रहे हैं)

परमेश्वर कबीर जी बता रहे हैं कि मेरा नाद का पुत्र चूड़ामणी है। यह मेरा शिष्य है और आपका वंश (बिन्द) पुत्र है। यह मेरी आज्ञा से पंथ चलाएगा, जीवों का कल्याण करेगा। परंतु हे धर्मदास! तेरा वंश (कुल) के लोग अज्ञानी हैं। वे ठीक से ज्ञान नहीं समझेंगे। मेरे अंश को (जो मैं भेजूंगा) नहीं समझ सकेंगे और अन्य काल के दूतों से भ्रमित होकर कुमार्ग पर चलेंगे।

जो कुछ आगे तेरी वंश गद्दी वालों के साथ होगा, वह सुन! चूड़ामणी के पश्चात् छठी पीढ़ी वाले महंत को काल द्वारा चलाए गए 12 पंथों में से पाँचवां टकसारी पंथ होगा, वह ठगेगा। अपना ज्ञान सुनाकर प्रभावित करके काल जाल में डालेगा। तेरा छठी पीढ़ी वाला (पोता) उस टकसारी पंथ वाले से दीक्षा लेगा और उसी वाला आरती-चौंका किया करेगा। (वही हुआ, वर्तमान में जो दीक्षा बाँधवगढ़ गद्दी वाले महंत दे रहे हैं तथा जो आरती-चौंका कर रहे हैं, वह वही काल के दूत टकसारी वाली है) हे धर्मदास! इस प्रकार तेरा वंश अज्ञानी होकर काल के धोखे में पड़कर नरक में जाएगा। तेरा वंश मेरी वह दीक्षा जो मैंने चूड़ामणी को दी है, उसको छोड़ देगा। टकसारी वाली दीक्षा लेकर अपना जीवन नाश करेगा। ऐसे तेरा वंश (कुल) दुर्मति को प्राप्त होगा। वे तेरे वंश वाले ठग मेरे नाद अंश को बाधित करेंगे, पाप के भागी होंगे।

''धर्मदास वचन''

हे परमात्मा! पहले तो आप कह रहे थे कि तेरे बयालीस पीढ़ी को पार कर दूंगा। अब आप कह रहे हो कि काल जाल में फंसेगे। ये दोनों बात कैसे सत्य होंगी?

''कबीर जी वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा हे धर्मदास! तुम सावधान होवो और अपने वंश को समझा देना कि जिस समय काल झपट्टा लगाएगा यानि मार्ग से तेरे वंश को भ्रमित करेगा तो मैं अपना नाद यानि शिष्य परंपरा वाला हंस प्रकट करूँगा। यथार्थ कबीर पंथ यानि भक्ति मार्ग से भटके मानव को सत्य भक्ति पर दृढ़ करूँगा। उसी से दीक्षा लेकर तेरे वंश वाले मोक्ष प्राप्त करेंगे। वचन वंश (चुड़ामणि की संतान) भी नाद यानि शिष्य शाखा वाले से दीक्षा लेकर मोक्ष प्राप्ति करेगा।

''अति महत्वपूर्ण शंका समाधान''

विशेष विवेचन :- कुछ व्यक्ति इस प्रकरण को सुनकर भ्रम फैलाते हैं कि रामपाल के बिन्द वालों से इस पंथ का नाश होगा। हम रामपाल के नाद वाले (शिष्य) हैं। हमारे से यह पंथ आगे फैलेगा। हमें दान का पैसा दो, रामपाल वालों को न दो। ऐसे व्यक्ति काल के दूत हैं। वे अपने स्वार्थवश ऐसा भ्रम फैलाते हैं। मैं स्पष्ट करना चाहता हूँ कि धर्मदास के बिन्द वाले गुरू पद प्राप्त करके भक्ति विधि में परिवर्तन करके सत्य साधना त्यागकर काल साधना करते-कराते हैं। भक्ति विधि तथा ज्ञान गलत होने से यथार्थ पंथ का नुकसान (हास) होता है। मेरे पश्चात् कलयुग में कोई गुरू पद पर रहेगा ही नहीं। यह तेरहवां (13वां) अंतिम पंथ है। यह दास (रामपाल दास) अंतिम सतगुरू है। मेरे प्रकाश पुंज (Electronic) शरीर यानि DVD वाले स्वरूप से नाद दीक्षा दी जा रही है। यही आगे चलेगी। यह प्रक्रिया सन् 2009 से चल रही है। लाखों अनुयाई बन चुके हैं। प्रत्येक को लाभ हो रहा है और होता रहेगा। अब न तो भक्ति विधि यानि भक्ति के मंत्र बदल सकते हैं, न ज्ञान। फिर पंथ नष्ट होने का प्रश्न ही नहीं रहता। नाद और बिंद का झंझट ही समाप्त हो गया है। DVD से गुरू जी के नाम को दिलाने की सेवा नाद वालों को मिले, चाहे बिन्द वालों को, पंथ नष्ट नहीं हो सकता। आगे ही बढ़ेगा।

अनुराग सागर पृष्ठ 141 का सारांश :-

सार शब्द की चास यानि अधिकार नाद के पास होगा। यदि तेरा बिंद (पुत्र परंपरा) उससे दीक्षा नहीं लेंगे तो वे नष्ट हो जाएंगे। परमेश्वर कबीर जी ने नाद की परिभाषा स्पष्ट की है। कहा है कि हे धर्मदास! तू मेरा नाद पुत्र (वचन पुत्र यानि शिष्य) है। इसलिए तेरे को मुक्ति मंत्र यानि सार शब्द दे दिया है। परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को गुरू पद दिया था। कहा था कि जब तक मैं संसार में हूँ, तब तक तू दीक्षा नहीं देगा। धर्मदास से कहा था कि सारशब्द किसी को नहीं बताना। इसको बिचली पीढ़ी सन् 1997 तक छुपाकर रखना है। अपने वंश वालों को भी नहीं बताना है। कुछ समय पश्चात् धर्मदास के मन में दोष आया कि मेरे वंश वाले कैसे पार होंगे? सारशब्द बिन मोक्ष नहीं हो सकता। मैं अपने वंश वालों को तो अवश्य बताऊँगा। दीक्षा दिया करूँगा। कबीर जी ने धर्मदास के मन के

दोष को जाना तथा कहा कि धर्मदास! गुरू जी की आज्ञा का उल्लंघन करना महापाप है। धर्मदास ने क्षमा माँगी। सच्चाई बताई। कबीर जी ने धर्मदास से गुरू पद वापिस ले लिया था। धर्मदास को दीक्षा देने का अधिकार नहीं दिया था और सख्त निर्देश दिया था कि जो सार शब्द मैंने तेरे को दिया है, यह किसी को नहीं बताना है। यदि यह तूने बता दिया तो जिस समय बिचली पीढ़ी कलयुग में चलेगी यानि जिस समय कलयुग 5505 वर्ष बीत जाएगा (सन् 1997 में) तब मैं अपना नाद अंश भेजूंगा। मेरा यथार्थ कबीर पंथ चलेगा। उस समय से पहले यदि यह सार शब्द काल के दूतों के हाथ लग गया तो सत्य-असत्य भक्ति विधि का ज्ञान कैसे होगा? जिस कारण से भक्त पार नहीं हो पावेंगे। कबीर सागर में ''कबीर बानी'' अध्याय के पृष्ठ 137 पर तथा अध्याय ''जीव धर्म बोध'' पृष्ठ 1937 पर प्रमाण है जिसमें कहा है कि :-

धर्मदास मेरी लाख दुहाई, सार शब्द कहीं बाहर नहीं जाई।
सार शब्द बाहर जो परही, बिचली पीढ़ी हंस नहीं तिरही।।
सार शब्द तब तक छिपाई, जब तक द्वादश (12) पंथ न मिट जाई।।

स्वस्मबेद बोध पृष्ठ 121 तथा 171 पर कहा है कि :-

चौथा युग जब कलयुग आई। तब हम अपना अंश पठाई।।
काल फंद छूटे नर लोई। सकल सृष्टि परवानिक होई।।
घर–घर देखो बोध विचारा (ज्ञान चर्चा)। सत्यनाम सब ठौर उचारा।।
पाँच हजार पाँच सौ पाँचा। तब यह वचन होयगा साचा।।
कलयुग बीत जाय जब ऐता। सब जीव परम पुरूष पद चेता।।

प्रिय पाठको! कलयुग सन् 1997 में 5505 वर्ष पूरा कर गया है। यहाँ तक सार शब्द छुपाकर रखना था। कबीर जी ने धर्मदास के पुत्र चूड़ामणि (जिसको मुक्तामणि भी कहते हैं) को विक्रमी संवत् 1570 (सन् 1513) में गद्दी पर बैठाया था। प्रथम मंत्र से पाँच नाम दिए थे। इन्हीं पाँच नामों (ओम्, किलियं, हरियं, श्रीयं, सोहं) को आगे दीक्षा में अपने अनुयाईयों को देने की आज्ञा दी थी। ये पाँच नाम टकसारी पंथ वाले ने छठी पीढ़ी वाले को भ्रमित करके छुड़वा दिए थे। इनके स्थान पर अजर नाम, अमर नाम, पाताले सप्त सिंधु नाम आदि-आदि पाँच नाम देने को कहा था जो वर्तमान दामाखेड़ा वाले देते हैं जो गलत है। उनसे कोई लाभ नहीं होगा। विक्रमी संवत् 1575 (सन् 1518) में यानि पाँच वर्ष पश्चात् कबीर जी मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए थे। उसके पश्चात् पुनः सतलोक से आए। धर्मदास के घर गए।

बीच-बीच में धर्मदास जी वंश मोह में आकर सार शब्द अपने पुत्र चूड़ामणी जी को बताना चाहते थे। अंतर्यामी परमेश्वर कबीर जी ने कुछ दिन धर्मदास के साथ रहकर उसको दृढ़ किया। जब देखा कि धर्मदास बात बिगाड़ेगा तो धर्मदास जी को जगन्नाथ पुरी में जीवित समाधि दे दी यानि जीवित ही पृथ्वी में दबा दिया। धर्मदास जी ने स्वयं कबीर जी से कहा था कि हे परमेश्वर! मैं पुत्र मोह वश होकर सार शब्द बता सकता हूँ। मेरे वश से बाहर की बात हो चुकी है। आप मुझे सत्यलोक भेज दो नहीं तो बात बिगड़ जाएगी। तब

धर्मदास जी को जीवित समाधि दी गई थी। (धर्मदास को जिंदे को जमीन में दबाने यानि समाधि देने का प्रमाण दामाखेड़ा वाले महंत द्वारा छपाई पुस्तक ''आशीर्वाद शताब्दी ग्रन्थ'' में पष्ठ 95 पर है।) अनुराग सागर पष्ठ 141 का शेष सारांश:-

कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! चारों युगों में देख ले, मेरे यथार्थ कबीर पंथ को नाद परंपरा ने प्रसिद्ध किया है। क्या निर्गुण क्या सर्गुण है, नाद बिन पंथ नहीं चलेगा। यदि तेरे बिन्द वाले उससे दीक्षा लेंगे तो वे भी पार हो जाएंगे। तेरे बिन्द वालों को इस प्रकार बयालीस पीढ़ी को पार करूँगा। जब कलयुग 5505 वर्ष पूरा करेगा। उसके पश्चात् सर्व विश्व दीक्षित होगा तो धर्मदास जी के वंशज भी दीक्षा लेकर कल्याण कराएंगे। (यदि नाद की आशा बिन्द (परिवार वंश) वाले छोड़ देंगे तो तेरे बिंद (पीढ़ी) वाले काल जाल में फंसेंगे।) इसलिए हे धर्मदास! अपने बिन्द को सतर्क कर देना। अपना कल्याण कराऐं। परमेश्वर कबीर जी का कहना है कि बिन्द वाले नाम को बदलकर यथार्थ भक्ति नष्ट कर देते हैं। वर्तमान में वह समस्या नहीं रहेगी क्योंकि अब कोई उतराधिकारी गुरू रूप नहीं होगा। दीक्षा D.V.D. से दी जा रही है। नाम दीक्षा दिलाने की सेवा चाहे नाद वाले करो, चाहे बिन्द वाले, भक्ति विधि सही रहेगी। इसलिए पंथ को कोई हानि नहीं होगी।

अनुराग सागर के पष्ठ 142 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी अपने भक्त धर्मदास जी को समझा रहे हैं कि जो कोई नाद वंश को जान लेगा, उसको यम के दूत रोक नहीं पाएंगे। जिन्होंने सत्य शब्द (सतनाम) को पहचान लिया, वे ही मोक्ष प्राप्त कर सकेंगे। तेरे वंश वाले जो चूड़ामणी की संतान हैं, वही सफल होगा जो नाद वंश की शरण न छोड़े। तुम्हारा बिन्द यानि संतान नाद यानि शिष्य परंपरा वाले के साथ मोक्ष प्राप्त करेगी।

''धर्मदास वचन''

धर्मदास जी ने प्रश्न किया कि आपने मेरे पुत्र चूड़ामणी को वचन वंश कहा है क्योंकि यह आप जी के वचन यानि आशीर्वाद से उत्पन्न हुआ। इसकी संतान को बिन्द कहा जो मेरे बयालीस पीढ़ी चलेगी। आप यह भी कह रहे हो कि मेरे बिन्द परंपरा यानि महंत गद्दी वाले नाद यानि शिष्य परंपरा वालों से दीक्षा लेकर पार हो सकते हैं। वे आप जी ने नाद वंश के आधीन बता दिए। फिर बिन्द वाले क्या करेंगे? यदि नाद से ही जगत पार होना है।

''कबीर वचन''

धर्मदास जी के वचन सुनकर परमेश्वर हँसे और कहा कि हे धर्मदास! तेरे को बयालीस वंश का आशीर्वाद दे दिया है क्योंकि तुम नारायण दास को काल दूत जानकर वंश नष्ट होने की चिंता कर रहे हो। इसलिए तेरे वंश की शुरूआत आपके नेक पुत्र से की है। पाठकों से निवेदन है कि इस पष्ठ पर बिन्द परंपरा वालों ने बनावटी वाणी अधिक डाली हैं अपनी महिमा बनाने के लिए, परंतु अनुराग सागर के पष्ठ 140-141 पर स्पष्ट कर दिया है कि चूड़ामणी जी की वंश गद्दी की छठी पीढ़ी वाले के पश्चात् मेरे द्वारा बताई यथार्थ भक्ति विधि तथा भक्ति मंत्र नहीं रहेंगे। वह पाँचवी पीढ़ी वाला ''टकसारी'' पंथ वाला आरती-चौंका तथा वही नकली पाँच नाम की दीक्षा देने लगेगा। इसलिए तेरे बिन्द वाले काल जाल में जाएंगे।

यदि वे मेरे द्वारा भेजे गए नाद अंश से दीक्षा ले लेंगे तो तेरी बयालीस (42) पीढ़ी मोक्ष प्राप्त करेगी। इस प्रकार तेरे 42 वंश को पार करूँगा। उस समय जब पूरा जगत ही दीक्षा प्राप्त करेगा तो तेरी संतान भी दीक्षा लेगी। यह वर्णन पष्ठ 140-141 के सारांश में स्पष्ट कर दिया है।

अनुराग सागर के पष्ठ 143 का सारांश :-

धर्मदास जी को फिर से अपने पुत्र नारायण दास का मोह सताने लगा और परमेश्वर कबीर जी से अपनी चिंता व्यक्त की कि मेरा पुत्र नारायण दास काल के मुख में पड़ेगा। मुझे अंदर ही अंदर यह चिंता खाए जा रही है। हे स्वामी! उसकी भी मुक्ति करो।

''कबीर परमेश्वर वचन''

बार बार धर्मनि समुझावा। तुम्हरे हृदय प्रतीत न आवा।।
चौदह यम तो लोक सिधावें। जीवन को फन्द कह्यो वे लावें।।
अब हम चीन्हा तुम्हारो ज्ञाना। जानि बूझि तुम भयो अजाना।।
पुरूष आज्ञा मेटन लागे। बिसरयो ज्ञान मोहमद जागे।।
मोह तिमिर जब हिरदे छावे। बिसर ज्ञान तब काज नसावे।।
बिन परतीत भक्ति नहिं होई। बिनु भक्ति जिव तरै न कोई।।
बहुरि काल फांसन तोहि लागा। पुत्रमोह त्व हिरदय जागा।।
प्रतच्छ देखि सबे तुम लीना। दास नरायण काल अधीना।।
ताहू पर तुम पुनि हठ कीना। मोर वचन तुम एकु न चीन्हा।।
धर्मदास जो मोसन कहिया। सोऊ ध्यान त्व हृदय न रहिया।।
मोर प्रतीत तुम्हैं नहिं आवे। गुरू परतीत जगत कसलावे।।

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने कहा कि हे धर्मदास! अब मुझे तेरी बुद्धि के स्तर का पता चल गया। तू जान-बूझकर अनजान बना हुआ है। जब तेरे को बता दिया, आँखों दिखा दिया कि नारायण दास काल का दूत है। मेरी आत्माओं को काल जाल में फांसने के लिए काल का भेजा आया है। तेरे को बार-बार समझाया है, वह तेरी बुद्धि में नहीं आ रहा है। अब तेरे हृदय में पुत्र मोह से अज्ञान अंधेरा छा गया है। काल के दूत को लेकर फिर हठ कर रहा है। मेरा एक वचन भी तेरी समझ में नहीं आया। हे धर्मदास! जो वचन तूने मेरे से किये थे कि मैं कभी नारायण दास को दीक्षा देने के लिए नहीं कहूंगा। अब तेरे हृदय से वह वादा भूल गया है। जब तुमको मुझ पर विश्वास नहीं हो रहा जबकि तेरे को सतलोक तक दिखा दिया तो फिर मेरे भेजे नाद अंश जो गुरू पद पर होगा, उस पर जगत कैसे विश्वास करेगा?

अनुराग सागर पष्ठ 144 का सारांश :-

परमेश्वर कबीर जी ने धर्मदास जी को बार-बार वही बातें दोहराई हैं जो पूर्व के पष्ठ पर कही हैं।

अनुराग सागर के पष्ठ 145 का सारांश :-

''धर्मदास वचन''

सुनत वचन धर्मदास सकाने। मनहीं माहिं बहुत पछताने।।

धाइ गिरे सतगुरू के पाई। हौं अचेत प्रभु होहु सहाई।।
चूक हमारी वकसहु स्वामी। विनती मानहु अन्तरयामी।।
हम अज्ञान शब्द तुम टारा। विनय कीन्ह हम बारंबारा।।
अब मैं चरण तुम्हारे गहऊँ। जो संतनिकी विनती करऊँ।।
पिता जानि बालक हठ लावे। गुण औगुण चित ताहि न आवे।।
पतित उधारण नाम तुम्हारा। औगुण मोर न करहु विचारा।।

भावार्थ :- परमेश्वर कबीर जी के वचन सुनकर धर्मदास जी बहुत लज्जित हुए और परमेश्वर कबीर जी के चरणों में गिरकर विलाप करने लगे कि हे स्वामी जी! मैं तो अचेत यानि मंद बुद्धि हूँ। मेरी गलती क्षमा करो। हे अंतर्यामी! मेरी विनती स्वीकार करो। मैं अज्ञानी हूँ। मैंने आपके वचन की अवहेलना की है। मैंने ऐसे गलती की है जैसे बालक अपने पिता से हठ कर लेता है, पिता बालक की गलती पर ध्यान नहीं देता, उसके अवगुण क्षमा कर देता है। आपका नाम तो पतित उद्धारण है। आप पापियों का उद्धार करने वाले हो, मेरे अवगुणों पर ध्यान न दो। बालक जानकर क्षमा कर दो।

''कबीर परमेश्वर वचन''

परमेश्वर कबीर जी ने कहा कि हे धर्मदास! आप सतपुरूष अंश हैं। आप नारायण दास का मोह त्याग दो। तुम में और मेरे में कोई भेद नहीं है क्योंकि आप मेरे नाद पुत्र (शिष्य रूपी पुत्र) हो। आप तो जगत में यथार्थ पंथ चलाने के लिए आए हो। जीवों का उद्धार करने के लिए भेजा है। परमेश्वर कबीर जी ने इस प्रकार धर्मदास को उत्साहित किया।

''धर्मदास वचन''

हे प्रभु तुम सुख सागर दाता। मुझ किंकर को करयो सनाथा।।
जबलग हम तुमों नहीं चीन्हा। तब लग मति कालहर लीन्हा।।
जबते तुम आपन कर जाना। तबते मोहिं भयो दंढ ज्ञाना।।
अब नहिं दुनिया मोहि सुहायी। निश्चय गहीं चरण तुव धाई।।
तुम तजि मोहि आनकी आसा। तो मुहिं होय नरक महँ वासा।।

भावार्थ :- धर्मदास जी ने कहा कि हे परमेश्वर! आप तो सुख सागर दाता हैं। मुझ किंकर (दास) को शरण में लेकर सनाथ कर दिया। जब तक मैंने आप जी को नहीं जाना था, तब तक तो मेरी बुद्धि काल ने छीन रखी थी। जब से आपने मेरे को शरण दी है यानि अपना मान लिया है, उसी दिन से मुझे आपके चरणों में दंढ़ निश्चय है। अब मुझे यह संसार अच्छा नहीं लग रहा है। यदि मैं आपको त्यागकर किसी अन्य में श्रद्धा करूं तो मेरा नरक में निवास हो।

''कबीर वचन''

भावार्थ :- कबीर परमेश्वर जी ने धर्मदास जी से कहा कि तेरा धन्य भाग है कि तूने मेरे को पहचान लिया और मेरी बात मानकर पुत्र मोह त्याग दिया।

अनुराग सागर के पंष्ठ 146 का सारांश :-

इस पंष्ठ में ऊपर की वाणी बनावटी हैं। यह धर्मदास जी की संतान चूड़ामणी जी वाली

दामाखेड़ा गद्दी वाले महंतों की कलाकारी है। इसमें कोशिश की है यह दर्शाने की कि नारायण दास वाली संतान तो बिन्द वाली है और चूड़ामणी वाली संतान नाद वाली है ताकि हमारी महिमा बनी रहे कि हमारे से दीक्षा लेकर ही जगत के जीवों का कल्याण होगा। याद रखें कि नारायण दास ने तो कबीर जी की दीक्षा ली ही नहीं थी। वह तो विष्णु उर्फ कृष्ण पुजारी था। उसके पंथ का कबीर पंथ से कोई लेना-देना नहीं है। प्रिय पाठको! कबीर जी कहते हैं कि :-

चोर चुरावै तुम्बड़ी, गाड़ै पानी मांही। वो गाड़ै वा ऊपर आवै, सच्चाई छानी नांही।।

अनुराग सागर के पृष्ठ 140 पर परमेश्वर जी ने स्पष्ट कर रखा है कि मेरा शिष्य (नाद) तथा तेरे बिन्द से उत्पन्न पुत्र चूड़ामणी जो पंथ चलाएगा और जीवों की मुक्ति कराएगा। इस चूड़ामणी को मैंने दीक्षा दी है तथा गुरू पद दिया है। यह मेरा नाद पुत्र है। आगे इसकी बिन्दी (संतान) धारा चलेगी। वे इस गुरू गद्दी पर विराजमान होंगे। वे अज्ञानी होंगे। छठी पीढ़ी वाले महंत को काल के बारह पंथों में पाँचवां पंथ टकसारी पंथ होगा। वह भ्रमित करेगा। जिस कारण से मेरे द्वारा बताए यथार्थ भक्ति विधि तथा यथार्थ मंत्र त्यागकर टकसारी पंथ वाले मंत्र तथा आरती-चौंका दीक्षा रूप में देने लगेगा। तुम्हारा वंश यानि चूड़ामणी वाली संतान दुर्मति को प्राप्त होगी। वे बटपारे (ठग) बहुत जीवों को चौरासी लाख के चक्र में डालेंगे, नरक में ले जाएंगे। जो मेरा नाद परंपरा का अंश आएगा, उसके साथ झगड़ा करेंगे।

प्रत्यक्ष प्रमाण :- प्रिय पाठको! सन् 2012 में मेरे कुछ अनुयाईयों द्वारा मेरे विचारों की लिखी एक पुस्तक ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' का प्रचार करते-करते दामाखेड़ा (छत्तीसगढ़) में चले गए। उस दिन दामाखेड़ा महंत गद्दी वालों का सत्संग चल रहा था। उस दिन समापन था। मेरे शिष्य सत्संग से जा रहे भक्तों को वह पुस्तक बाँटने लगे। उस आश्रम के किसी सेवक ने वह पुस्तक पहले ले रखी थी। वह पहले ही इस ताक में था कि रामपाल के शिष्य कहीं मिलें तो उनकी पिटाई करें। उस दिन दामाखेड़ा में ही उसने मेरे शिष्यों को सेवा करते देखा तो महंत श्री प्रकाश मुनि नाम साहेब जो चौदहवां गुरू गद्दी वाला बिन्दी परंपरा वाला महंत है, को बताया कि जो ''यथार्थ कबीर पंथ परिचय'' पुस्तक मैंने आपको दी थी, आज फिर उसी पुस्तक को रामपाल के शिष्य हमारी संगत में बाँट रहे हैं।

यह सुनकर महंत प्रकाश मुनि आग-बबूला हो गया और आदेश दिया कि उनको पकड़कर लाओ। उसी समय पुस्तक बाँट रहे मेरे अनुयाईयों में से पाँच को गाड़ी में जबरदस्ती डालकर ले गए। अन्य शिष्य पता चलने पर भाग निकले। जिन सेवकों को दामाखेड़ा वाले पकड़कर ले गए थे, उनको बेरहमी से मारा-पीटा, उनसे कहा कि कहो, फिर नहीं बाँटेंगे। उन्होंने कहा कि इसमें गलत क्या है? यह तो बताओ। उन सब मेरे शिष्यों को पीट-पीटकर अचेत कर दिया। फिर मुकदमा दर्ज करा दिया कि शांति भंग कर रहे थे। तीन दिन में जमानत हुई। ऐसे हैं ये धर्मदास जी की बिन्द परंपरा चुड़ामणी वाली दामाखेड़ा गद्दी के महंत जिनके विषय में परमेश्वर कबीर जी ने कहा है:-

कबीर नाद अंश मम सत ज्ञान दृढ़ाही। ताके संग सभी राड़ बढ़ाई।।

अस सन्त महन्तन की करणी। धर्मदास मैं तो से बरणी।।

यही प्रमाण अनुराग सागर के पष्ठ 140 पर है :-

आप हंस अधिक होय ताही। नाद पुत्र से झगर कराहीं।।

(आपा हंस यह गलत है। यहाँ पर ''आप अहम'' है जिसका अर्थ है अपने आप में अहंकार।)

होवै दुरमत वंश तुम्हारा। नाद वंश रोके बटपारा।।

प्रिय पाठको! यह सर्व लक्षण मुझ दास (रामपाल दास) तथा दामाखेड़ा की गद्दी वाले धर्मदास जी के बिन्द वालों पर खरे उतरते हैं।

पारख के अंग की वाणी चौपाई नं. 1125-1133 :-

चले कबीर मगहर कै तांई, तहां वहां फुलन सेज बिछाई।
दोनौंदीन अधिक परभाऊ, दोषी दुश्मन और सब साऊ।।1125।।
तहां बिजलीखां चले पठाना, बीरसिंह बघेला पद प्रवाना।
काशी उमटी चली मगहर कूं, कोई न पावै तास डगरकूं।।1126।।
बैरागी संयासी जोगी, चले मगहर को शब्द बियोगी।
तीन रोजमें पौहचै जाई, तहां वहां सुमरन राम खुदाई।।1127।।
दहूं दीन है बांहां जोरी, शस्त्र बांधि लिये भरि गोरी।
वै गाडै वै जारन कही, दोनू दीन अधिक सो फही।।1128।।
तहां कबीर कही एक भाषा, शस्त्र करै सो ताही तलाका।
शस्त्र करै सो हमरा द्रोही, ज्याकी पैज पिछोड़ी होई।।1129।।
सुन बिजलीखां बात हमारी, हम हैं शब्द रूप निर्विकारी।
बीर सिंह बघेला बिनतीकरि है, हे सतगुरू तुम किसविधि मरि है।।1130।।
तहां वहां चादरि फूल बिछाये, सिज्या छाड़ी पदहि समाये।
दो चादर दहूं दीन उठावैं, ताके मध्य कबीर न पावैं।।1131।।
तहां वहां अबिगत फूल सुवासी, मगहर घोर और चौरा काशी।
अबिगतरूप अलख निरबानी, तहां वहां नीर क्षीर दिया छांनी।।1132।।
दोहा–शंख जुगन जुग जगत में, पद प्रवानि है न्यार।
दासगरीब कबीर हरि, अबिगत अधरि अधार।।1133।।

सरलार्थ :-

''प्रभु कबीर जी का मगहर से सशरीर सत्यलोक गमन तथा सूखी नदी में नीर बहाना''

उसके बाद इस भ्रम को तोड़ने के लिए कि जो मगहर में मरता है वह गधा बनता है और कांशी में मरने वाला स्वर्ग जाता है। (बन्दी छोड़ कहते थे कि सही विधि से भक्ति करने वाला प्राणी चाहे वह कहीं पर प्राण त्याग दे वह अपने सही स्थान पर जाएगा।) उन अज्ञानियों का भ्रम निवारण करने के लिए कबीर साहेब ने कहा कि मैं मगहर में मरूँगा और सभी ज्योतिषी वाले देख लेना कि मैं कहाँ जाऊँगा? नरक में जाऊँगा या स्वर्ग से भी ऊपर

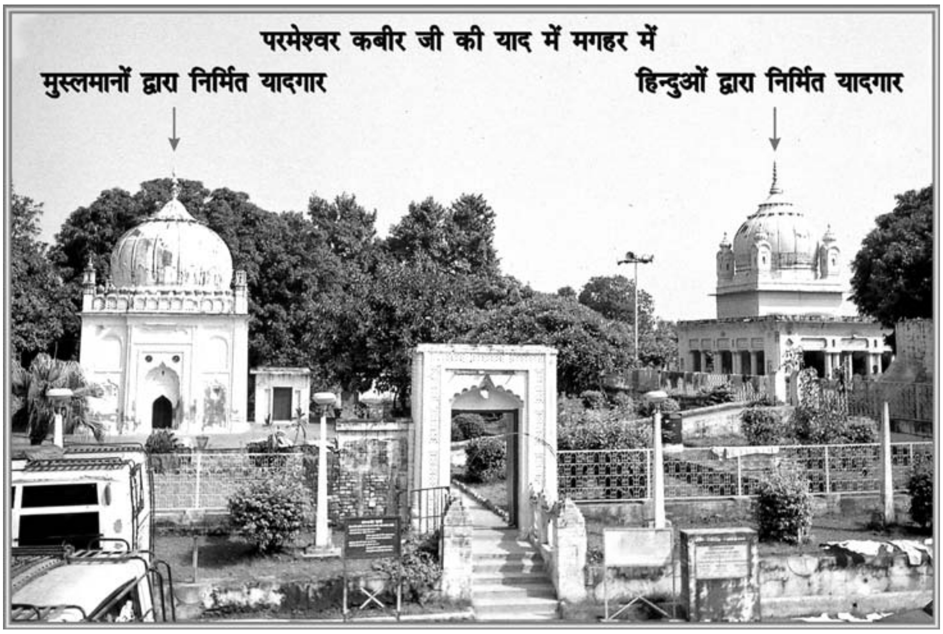
सतलोक में।

कबीर साहेब ने काशी से मगहर के लिये प्रस्थान किया। बीर सिंह बघेला और बिजली खाँ पठान ये दोनों ही सतगुरू के शिष्य थे। बीर सिंह ने अपनी सेना साथ ले ली कि कबीर साहेब वहाँ पर अपना शरीर छोड़ेंगे। इस शरीर को लेकर हम काशी में हिन्दु रीति से अंतिम संस्कार करेंगे। यदि मुसलमान नहीं मानेंगे तो लड़ाई कर के शव को लायेंगे। सेना भी साथ ले ली, अब इतनी बुद्धि है हमारी। कबीर परमेश्वर जी हर रोज शिक्षा दिया करते कि हिन्दु मुसलमान दो नहीं हैं। अंत में फिर वही बुद्धि। उधर से बिजली खाँ पठान को पता चला कि कबीर साहेब यहाँ पर आ रहे हैं। बिजली खाँ पठान ने सतगुरू तथा सर्व आने वाले भक्तों तथा दर्शकों की खाने तथा पीने की सारी व्यवस्था की और कहा कि सेना तुम भी तैयार कर लो। हम अपने पीर कबीर साहेब का यहाँ पर मुसलमान विधि से अंतिम संस्कार करेंगे। कबीर साहेब के मगहर पहुँचने के बाद बिजली खाँ ने कहा कि महाराज जी स्नान करो। कबीर साहेब ने कहा कि बहते पानी में स्नान करूँगा। बिजली खान ने कहा कि सतगुरू देव यहाँ पर साथ में एक आमी नदी है, वह भगवान शिव के श्राप से सूखी पड़ी है। उसमें पानी नहीं है। जैसी व्यवस्था दास से हो पाई है पानी का प्रबंध करवाया है। आपके स्नान के लिए प्रबंध किया है। लेकिन संगत बहुत आ गई। इनके नहाने की तो बात बन नहीं पाएगी। पीने का पानी पर्याप्त मात्रा में बाहर से मंगवा रखा है। कबीर साहेब ने कहा कि वह नदी देखें कहाँ पर है? उस नदी पर जा कर साहेब ने हाथ से ऐसे इशारा किया था जैसे यातायात (ट्रैफिक) का सिपाही रूकी हुई गाड़ियों को जाने का संकेत करता है। वह आमी नदी पानी से पूरी भरकर चल पड़ी। "बोलो सतगुरू देव की जय" ''सत साहेब''। (यह आमी नदी वहाँ पर अभी भी विद्यमान है) सब ने जय जयकार की।

❖ साहेब ने कहा कि एक चदद्र नीचे बिछाओ, एक मैं ऊपर ओढूँगा। (क्योंकि वे जानी जान तो थे) कहने लगे कि ये सेना कैसे ला रखी है तुमने? अब बिजली खाँ पठान और बीर सिंह बघेला आमने-सामने खड़े हैं। उन्होंने तो मुँह लटका लिया और बोले नहीं। वे दूसरे हिन्दु और मुसलमान बिना नाम वाले बोले कि जी हम आपका अंतिम संस्कार अपनी विधि से करेंगे। दूसरे कहते हैं कि हम अपनी विधि से करेंगे। चढा ली बाहें, उठा लिए हथियार तथा कहने लगे कि आ जाओ। कबीर साहेब ने कहा कि नादानों क्या मैंने यही शिक्षा दी थी 120 वर्ष तक। इस मिट्टी का तुम क्या करोगे? चाहे फूँक दो या गाड़ दो, इससे क्या मिलेगा? तुमने क्या शिक्षा ली मेरे से? सुन लो यदि झगड़ा कर लिया तो मेरे से बुरा नहीं होगा। वे जानते थे कि ये कबीर साहेब परम शक्ति युक्त हैं। यदि कुछ कह दिया तो बात बिगड़ जाएगी। शांत हो गये पर मन में यही थी कि शरीर छोड़ने दो, हमने तो यही करना है। वे तो जानी जान थे। उस दिन गंहयुद्ध शुरू हो जाता, सत्यानाश हो जाता, यदि साहेब अपनी कपा न बक्शते। कबीर साहेब ने कहा कि एक काम कर लेना तुम मेरे शरीर को आधा-आधा काट लेना। परन्तु लड़ना मत। ये मेरा अंतिम आदेश सुन लो और मानो, इसमें जो वस्तु मिले उसको आधा आधा कर लेना। महिना माघ शुक्ल पक्ष तिथि एकादशी वि. स. 1575 (एक हजार पाँच सौ पचहतर) सन् 1518 को कबीर साहेब ने एक चद्दर नीचे बिछाई और एक ऊपर ओढ़ ली। कुछ फूल कबीर साहेब के

नीचे वाली चद्दर पर दो इंच मोटाई में बिछा दिये। थोड़ी सी देर में आकाश वाणी हुई कि मैं तो जा रहा हूँ सतलोक में (स्वर्ग से भी ऊपर)। देख लो चद्दर उठा कर इसमें कोई शव नहीं है। जो वस्तु है वे आधी-आधी ले लेना परन्तु लड़ना नहीं। जब चदद्र उठाई तो सुगंधित फूलों का ढेर शव के समान ऊँचा मिला। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।''

बीर देव सिंह बघेल और बिजली खाँ पठान एक दूसरे के सीने से लग कर ऐसे रोने लगे जैसे कि बच्चों की माँ मर जाती है। फिर तो वहाँ पर रूदन मच गया। हिन्दु और मुसलमानों का प्यार सदा के लिए अटूट बन गया। एक दूसरे को सीने से लगा कर हिन्दु और मुसलमान रो रहे थे। कहने लगे कि हम समझे नहीं। ये तो वास्तव में अल्लाह आए हुए थे। और ऊपर आकाश में प्रकाश का गोला जा रहा था। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।'' तो वहाँ मगहर में दोनों धर्मो (हिन्दुओं तथा मुसलमानों) ने एक-एक चद्दर तथा आधे-आधे सुगंधित फूल लेकर सौ फूट के अंतर पर एक-एक यादगार भिन्न-भिन्न बनाई जो आज भी विद्यमान है तथा कुछ फूल लाकर कांशी में जहाँ कबीर साहेब एक चबूतरे(चौरा) पर बैठकर सतसंग किया करते वहाँ काशी चौरा नाम से यादगार बनाई। अब वहाँ पर बहुत बड़ा आश्रम बना हुआ है। मगहर में दोनों यादगारों के बीच में एक साझला द्वार भी है आपस में कोई भेद-भाव नहीं है।



(मगहर स्थान पर हिंदुओं तथा मुसलमानों द्वारा बनाई गई साथ-2 यादगार)

हिन्दु और मुसलमान ऐसे रहते हैं कि जैसे माँ जाए भाई रहा करते हैं। उनसे हमने बात की थी तो उन्होंने कहा कि हमारी आज तक धर्म के नाम पर कोई लड़ाई नहीं हुई। वैसे कहा सुनी तो घर के घर में हो जाती है। फिर भी हमारी आपस में धर्म के नाम पर लड़ाई नहीं होती है। बिजली खाँ पठान ने दोनों यादगारों के नाम पाँच सौ, पाँच सौ बीघा जमीन

दी जिसमें हिन्दु तथा मुसलमान अपने प्रबन्धक कमेटी बनाकर व्यवस्थित किए हैं। यह दास (संत रामपाल दास जी महाराज) अपने सैंकड़ों सेवकों सहित तीन बार इस ऐतिहासिक ध् ाार्मिक स्थल को देखकर आ चुके हैं। वहाँ जाकर ऐसा लगता है जैसे हमने सच्चाई का खजाना प्राप्त हो गया हो। बोलो सतगुरू देव की जय ''सत साहेब।''

गरीबदास जी महाराज की वाणी से ''पारख का अंग''

चले कबीर मगहर कै तांई, तहां वहां फूलन सेज बिछाई।
दोनौं दीन अधिक परभाऊ, दोषी दुश्मन और सब साऊ।।
तहां बिजलीखां चले पठाना, बीरसिंह बघेला पद प्रवाना।
काशी उमटी चली मगहर कूं, कोई न पावै तास डगरकूं।।
वैरागी संयासी जोगी, चले मगहर को शब्द वियोगी।
तीन रोजमैं पौहचै जाई, तहां वहां सुमरन राम खुदाई।।
दहूं दीन है बांहां जोरी, शस्त्र बांधि लिये भरि गोरी।
वै गाडै वै जारन कही, दोनू दीन अधिक सो फही।।
तहां कबीर कही एक भाषा, शस्त्र करै सो ताही तलाका।
शस्त्र करै सो हमरा द्रोही, ज्याकी पैज पिछौडी होई।।
सुन बिजलीखां बात हमारी, हम हैं शब्द रूप निराकारी।
बीरसिंबघेला बिनती करि है, हे सतगुरू तुम किसविधि मरि है।।
तहां वहां चादरि फूल बिछाये, सिज्या छांडी पदहि समाये।
दो चादर दहूं दीन उठावैं, ताके मध्य कबीर न पावैं।।
तहां वहां अविगत फूल सुवासी, मगहर घोर और चौरा काशी।
अविगतरूप अलख निरबानी, तहां वहां नीर क्षीर दियाछांनी।।
दोहा–शंख जुगन जुग जगत मैं, पद प्रवानि है न्यार।
गरीबदास कबीर हरि, अविगत अधरि अधार।।948।।

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से -

(सतग्रन्थ पष्ट नं. 781-782)

शब्द :

कीन्हाँ मघर पियाँना हो, दोन्यूं दीन चले संगि जाकै, हिंदू मुसलमांना हो।।टेक।।
मुक्ति खेत कूं छाडि चले है, तजि काशी अस्थाँना हो। शाह सिकन्दर कदम लेत है, पातिशाह सुलताँना हो।।1
च्यारि बेद के बकता संगि हैं, खोजी बडे बयांना हो। सालिगराम सुरति सैं सेवैं, ज्ञान समुद्र दांना हो।।2
षट्दर्शन जाकै संगि चाले, गावत वांनी नाना हो। अपनां अपनाँ ईष्ट सिंभालैं, बाचैं पोथी पांना हो।।3
चदरि फूल बिछाये सतगुरु, देखै सकल जिहांना हो। च्यारि दाग सैं रहत जुलहदी, अविगत अलख अमाँना हो।।4
बिरसिंघ बघेला करै बीनती, बिजलीखाँन पठांना हो। दो चदरि बकसीस करी हैं, दीनां यौह प्रवांना हो।।5
नूर नूर निरगुण पद मेला, देखि भये हैराँना हो। पद ल्यौलीन भये अविनाशी, पाये पिण्ड न प्राना हो।।6
शब्द सरूप साहिब सरबंगी, शब्दें शब्द समाना हो। दास गरीब कबीर अर्श में, फरकैं धजा निशाँना हो।।7

जब कबीर साहिब सतलोक जा रहे थे उस समय आदि माया प्रकति ने फिर जाल

बिछाया। एक सुन्दर स्त्री(अप्सरा) का रूप बना कर कबीर साहिब को भोग विलास के लिए प्रेरित करती है।

-: शब्द :-

बन्दी छोड़ गरीबदास जी महाराज की वाणी से

(सतग्रन्थ पष्ठ नं. 782)

देख्या मघर जहूरा हो, कांशी मैं कीर्ति करि चाले, झिलमिल देही नूरा हो।।टेक।।
माया आदि अर्श तैं उतरी, बनी अपसरा हूरा हो। हम तौ बरैं कबीर पुरुष कूं, तूं है दुलहा पूरा हो।।1।।
माया कहैं कबीर पुरुष सैं, देखो बदन जहूरा हो। अर्श विमान सुरग में मंदर, भोगैं हम कूं सूरा हो।।2।।
कहै कबीर सुनौ री माया, कुटिल नजरि तुम घूरा हो। जिनि भोगी सोई कलि रोगी, हो गये धूरम धूरा हो।।3।।
माया कहै कबीर पुरुष सैं, मैं हूं जग सैं दूरा हो। मैं तुमरी पटराँनी दासी, राखौ पलक हजूरा हो।।4।।
कहै कबीर सुनौ री माया, तुम हो लड्डू बूरा हो। जो तुझि खावै सो बहजावै, तास अकलि के कूरा हो।।5।।
सेत मुकुट जहां सेत छत्र है, बाजैं अनहद तूरा हो। दास गरीब कहै सुनि माया, हम सैं रहियौ दूरा हो।।6।।

।।वाणी।।

माया सतगुरु सूं अटकी, माया सतगुरु सूं अटकी। जोगनि हमरै क्यूं भटकी, जोगनि हमरै क्यूं भटकी।।
हम तो भगलीगर जोगी, हम तो भगलीगर जोगी। हम नहीं माया के भोगी, हम नहीं माया के भोगी।।
तोमैं झगरा है भारी, तोमैं झगरा है भारी। मारे बड छत्रधारी, मारे बड छत्रधारी।।
सेवा करिसूं मैं नीकी, सेवा करिसूं मैं नीकी। हमकूं लागत है फीकी, हमकूं लागत है फीकी।।
हमरी सार नहीं जानी, हमरी सार नहीं जानी। अरीतैंतोघालि दई घानी, अरीतैंतोघालि दई घानी।।
चलती फिरती क्यूं नांहीं, चलती फिरती क्यूं नांही। हम रहते अविगतपद मांहि, हम रहते अविगतपद मांहि।।
अरी तूं गहली है गोली, अरी तूं गहली है गोली। दाग लगावैगी चोली, दाग लगावैगी चोली।।
मेरा अंजन है नूरी, मेरा अंजन है नूरी। अंदर महकै कस्तूरी, अंदर महकै कस्तूरी।।
तुम किसी राजा पै जावो, तुम किसी राजा पै जावो। हमरे मन नांहीं भावो, हमरे मन नांहीं भावो।।
मैं तो अर्धंगी दासी, मैं तो अर्धंगी दासी। हम हैं अनहदपुर बासी, हम हैं अनहदपुर बासी।।
हमरा अनहद में डेरा, हमरा अनहद में डेरा। अंत न पावैगी मेरा, अंत न पावैगी मेरा।।
हमतो आदि जुगादिनिजी, हमतो आदि जुगादिनिजी। अरी तुझ माता कहूंकधी, अरी तुझ माता कहूंकधी।।
अब मैं देऊंगी गारी, अब मैं देऊंगी गारी। हमतो जोगी ब्रह्मचारी, हमतो जोगी ब्रह्मचारी।।
आसन बंधूंगी जिंदा, आसन बंधूंगी जिंदा। गल में डारौंगी फंदा, गल में डारौंगी फंदा।।
आसन मुक्ता री माई, आसन मुक्ता री माई। तीनूं लोक न अंघाई, तीनूं लोक न अंघाई।।
हमरै द्वारै क्यूं रोवौ, हमरै द्वारै क्यूं रोवौ। किसी राजाराणेकूं जोवौ, किसी राजाराणे कूं जोवौ।।
हमरै भांग नहीं भूनी, हमरै भांग नहीं भूनी। माया शीश कूटि रूंनी, माया शीश कूटि रूंनी।।
तूंतो जोगनि है खंडी, तूंतो जोगनि है खंडी। मौहरा फेरि चली लंडी, मौहरा फेरि चली लंडी।।

-: शब्द :-

आज मोहे दर्शन दियो जी कबीर।।टेक।।
सत्य लोक से चल कर आए, काटन यम की जंजीर ।।1।।
थारे दर्शन से म्हारे पाप कटत हैं, निर्मल होवे जी शरीर ।।2।।

अमृत भोजन म्हारे सतगुरू जीमैं, शब्द दूध की खीर।।3।।
हिन्दू के तुम देव कहाये, मुसलमान के पीर।।4।।
दोनों दीन का झगड़ा छिड़ गया, टोहे ना पाये शरीर।।5।।
धर्मदास की अर्ज गुसाई, खेवा लंघाइयों परले तीर।।6।।

मलूक दास जी को परमेश्वर कबीर जी संत रूप में मिले थे। उनको सत्यलोक ले जाकर वापिस छोड़ा था। अपनी महिमा से परिचित करवाया। उसके पश्चात् संत मलूक दास जी ने कबीर जी की महिमा का गुणगान किया।

अगम निगम बोध के पृष्ठ 45(1735) पर मलूक दास जी का शब्द है :-

जपो रे मन साहेब नाम कबीर।(टेक)
एक समय गुरू बंशी बजाई कालिंद्री के तीर। सुरनर मुनि सब चकित भये, रूक गया यमुना नीर।।
काशी तज गुरू मगहर गए, दोऊ दीन के पीर।।
कोई गाड़े कोई अग्नि जलावै, नेक न धरते धीर। चार दाग से सतगुरू न्यारा। अजरो–अमर शरीर।।
जगन्नाथ का मंदिर बचाया, ऐसे गहर गम्भीर। दास मलूक सलूक कहत है, खोजो खसम कबीर।।

''संत दादू दास जी को कबीर जी ने शरण में लिया''

श्री दादू जी को सात वर्ष की आयु में जिन्दा बाबा जी के स्वरूप में परमेश्वर जी मिले थे। उस समय कई अन्य हमउम्र बच्चे भी खेल रहे थे। परमेश्वर कबीर जी ने अपने कमण्डल (लोटे) से कुछ जल पान के पत्ते को कटोरे की तरह बनाकर पिलाया तथा प्रथम नाम देकर सत्यलोक ले गए। दादू जी तीन दिन-रात अचेत (Coma में) रहे। फिर सचेत हुए तथा कबीर जी का गुणगान किया। जो बच्चे श्री दादू जी के साथ खेल रहे थे। उन्होंने गाँव में आकर बताया कि एक बूढ़ा बाबा आया था। उसने जादू-जंत्र का जल दादू को पिलाया था। परंतु दादू जी ने बताया था कि:-

जिन मोकूं निज नाम दिया, सोई सतगुरू हमार। दादू दूसरा कोई नहीं, कबीर सिरजनहार।।
दादू नाम कबीर की, जे कोई लेवे ओट। ताको कबहू लागै नहीं, काल वज्र की चोट।।
केहरी नाम कबीर है, विषम काल गजराज। दादू भजन प्रताप से, भागै सुनत आवाज।।
अब हो तेरी सब मिटे, जन्म–मरण की पीर। श्वांस–उश्वांस सुमरले, दादू नाम कबीर।।

स्पष्टीकरण :- संत मलूक दास जी तथा संत दादू दास जी को परमेश्वर संत गरीबदास जी की तरह सतलोक जाने के पश्चात् मिले थे। यह प्रकरण कबीर सागर में नहीं था, बाद में लिखा गया है।

अगम निगम बोध पृष्ठ 44(1734) पर नानक जी का शब्द है :-''वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है''

वाह–वाह कबीर गुरू पूरा है।(टेक)
पूरे गुरू की मैं बली जाऊँ जाका सकल जहूरा है।
अधर दुलीचे परे गुरूवन के, शिव ब्रह्मा जहाँ शूरा है।
श्वेत ध्वजा फरकत गुरूवन की, बाजत अनहद तूरा है।

पूर्ण कबीर सकल घट दरशै, हरदम हाल हजूरा है।
नाम कबीर जपै बड़भागी, नानक चरण को धूरा है।

अगम निगम बोध पृष्ठ 46 पर प्रमाण दिया है कि महादेव जी के पूज्य ईष्ट देव कबीर परमेश्वर जी हैं।

पारख के अंग की वाणी नं. 1134-1146 :-

गरीब, सील मांहि सर्व लोक हैं, ज्ञान ध्यान बैराग। जोग यज्ञ तप होम नेम, गंगा गया प्रयाग।।1134।।
गरीब, कहाँ सुरग पाताल सब, और कहां मृत्यु लोक। फिर पीछै कौं क्या रहा, जब आया संतोष।।1135।।
गरीब, बिवेक बिहंगम अचल है, आया हृदय मांहि। भक्ति मुक्ति और ज्ञान गति, फिर पीछै कछु नांहि।।1136।।
गरीब, दया सर्वका मूल हैं, क्षमा छिक्या जो होय। त्रिलोकी कौं त्यार दे, नाम परमेश्वर गोय।।1137।।
गरीब, दश हजार रापति बल, कामदेव महमन्त। ता शिर अंकुश शीलका, तोरत गज के दंत।।1138।।
गरीब, क्रोध बली चंडाल है, बल रापति द्वादश सहंस। एक पलक में डोबिदे, अनंत कोटि जीव हंस।।1139।।
गरीब, ता शिर अंकुश क्षमाका, मारै तुस तुस बीन। त्रिलोकी सें काढि दे, जै कोय साधु प्रबीन।।1140।।
गरीब, लोभ सदा लहर्या रहै, त्रिलोकी में अंछ। बलरापति बीस सहंस हैं, पलक पलक प्रपंच।।1141।।
गरीब, ता अंकुश संतोष है, त्रिलोकी सें काढि। काटै कोटि कटक दल, संतोष तेग बड़ बाड।।1142।।
गरीब, मोह मुवासी मस्त है, बलरापति तीस सहंस। त्रिलोकी परिवार है, जहां उपजै तहां वंश।।1143।।
गरीब, ता शिर अंकुश बिवेक है, पूरण करैं मुराद। त्रिलोकी की बासना, ले बिवेक सब साधि।।1144।।
गरीब, सरजू सिरजनहार है, जल न्हाये क्या होय। भक्ति भली परमेश्वर की, नाम बीज दिल बोय।।1145।।
गरीब, ये बैरागर छिप रहैं, हृदय कमल कै मांहि। नघ पत्थर एक ठौर हैं, बीनैं जिस बलि जांहि।।1146।।

सरलार्थ :- इन वाणियों में विशेष ज्ञान नहीं है। यह ज्ञान पहले कई अंगों में वर्णन है। इनमें बताया है कि (शील) संयम, संतोष, विवेक, दया, क्षमा आदि ये गुण इंसान में होने चाहिऐं।

काम (स्त्री भोग = Sex), क्रोध, मोह, लोभ, अहंकार से भक्त को बचना चाहिए। इनसे बचना जीव के वश में नहीं है। साधना से बचाव होता है। साधना भी सतपुरूष कबीर जी की करने से लाभ होता है।

1. काम (Sex) में दस हजार हाथियों जितना बल है, समाधान शील है।

2. क्रोध में बारह हजार हाथियों जितना बल है, समाधान क्षमा करना है।

3. लोभ में बीस हजार हाथियों का बल है, समाधान संतोष करना है।

4. मोह में तीस हजार हाथियों जितना बल है, समाधान विवेक है।

5. अहंकार सर्वनाश करने वाला है। इसमें छत्तीस हजार हाथियों का बल है। समाधान आधीनी भाव करना है।

पारख के अंग की वाणी नं. 1147-1169 :-

गरीब, मन को मुरजीवा करैं, गोता दिल दरियाव। माणिक भरे समुद्र में, बाहिर लेकै आव।।1147।।
गरीब, बैरागर के गंज हैं, ऊंचै शून्य सुमेर। तापर आसन मार कर, सुन मुरली की टेर।।1148।।
गरीब, बाजै मुरली कौहक पद, बिना कण्ठ मुख द्वार। आठ बखत सुनता रहै, सुनि अनहद झनकार।।1149।।
गरीब, उस मुरली की लहरि सैं, कहर जरैं ज्यौं घास। आठ बखत पद में रहै, कोई जन हरि के दास।।1150।।

गरीब, मुरली मधुर अधर बजे, राग छतीसौं बैंन। इत उत मुरली एक हैं, चरनां बिसरी धैंन।।1151।।
गरीब, मुरली उरली बिधि नहीं, बाजत है परलोक। सरब जीव अचराचरं, सुनि करि पाया पोष।।1152।।
गरीब, मुरली मदन मुरारि मुख, बाजी नन्द द्वार। सकल जीव ल्यौलीन गति, सुनिया गोपी ग्वाल।।1153।।
गरीब, बाजत मुरली मुख बिना, सुनियत बिनही कान। स्वर्ग सलहली गर्ज धुन,फिर भी अबिगत पद निर्वाण।।1154।।
गरीब, मुरली बजै कबीर की, परखो मुरली बिबेक। ताल ख्याल नहीं भंग होय, बाजैं बजैं अनेक।।1155।।
गरीब, अनंत कोटि बाजे बजैं, ता मधि मुरली टेर। रनसींगे सहनाईयां, झालरि झांझरि भेर।।1156।।
गरीब, बजैं नफीरी शुन्य में, घट मठ नहीं आकाश। सो जन भिन्न भिन्न सुनत हैं, जो लीन करैं दमश्वास।।1157।।
गरीब, मुरली गगन गर्ज धुनि, जहां चन्द्र नहीं सूर। नाद अगाध घुरैं जहां, बाजत अनहद तूर।।1158।।
गरीब, तूर दूर नहीं निकट हैं, तन मन करि ले नेश। मुरली के मोहे पडे, ब्रह्मा बिष्णु महेश।।1159।।
गरीब, बिष्णु सुनी शंकर सुनी, ब्रह्मा सुनी एक रिंच। पारब्रह्म कूं मोहिया, और भू आत्म पंच।।1160।।
गरीब, मुरली सरली सुरति सर, जिन सरबर तूं न्हाय। अनंत कोटि तीरथ बगै, परबी द्यौं समझाय।।1161।।
गरीब, मुरली बजै अगाधि गति, शिब विरंच बिष्णु सुन लीन्ह। उस मुरली की टेर सुन, नारद डारी बीन।।1162।।
गरीब, नारद शारद सब थके, सनक सनन्दन संत। अनंत कोटि जुग कलप क्या, बाजत हैं बे अंत।।1163।।
गरीब, सुन्दर मुर्ति मोहनी, पीतांबर पहिरानं। मुरली जाके मुख बजै, दर दिवाल गलतानं।।1164।।
गरीब, कालंदरी के तीर, बाजी मुरली मुख कबीर। सुनी ब्रह्मा बिष्णु महेश कुं और दरिया का नीर।।1165।।
गरीब, सूक्ष्म मूर्ति स्वर्ग में, छत्रसेत शिर शीश। बाहर भीतर खेलता, है कबीर अबिगत जगदीश।।1166।।
गरीब, भिरंग नाद अगाध गति, राग रूप होय जात। नूरी रूप हो गया, पिण्ड प्राण सब गात।।1167।।
गरीब, उस मुरली की टेर सुनि, फेरि धरत नहीं जूंनि। आसन गगन औजूद बिन, बिचरत शून्य बेशुंनि।।1168।।
गरीब, बिन शाखा फूलै फलै, बिना मूल महकंत। बिना घटा लखि दामनी, बिन बादल गरजंत।।1169।।

सरलार्थ :- जैसे समुद्र में मोती हैं। (मूरजीवा) गोताखोर होकर समुद्र से मोती लाता है। ऐसे मानव के दिल रूपी दरिया में परमात्मा की शक्ति का खजाना है। सत्य साधना करने से वह भक्त की आत्मा में प्रवेश कर जाती है। जैसे कोई बैंक में नौकरी करता है। बैंक रूपयों से भरा है, परंतु वह नौकरी करता रहेगा तो बैंक से उसकी तनख्वाह उसे मिल जाएगी, उसके खाते में आ जाएगी।(1147)

(बैरागर) हीरों के (गंज) खजाने हैं, ऊँचे-ऊँचे ढ़ेर लगे हैं। तापर आसन लायकर यानि भक्ति करने से भक्त को अध्यात्मिक शक्ति मिलती है। परमात्मा के पास तो शक्ति के पहाड़ हैं। सुमेरू पर्वत सबसे विशाल माना जाता है। उससे परमात्मा की शक्ति की उपमा की है कि सत्य साधना करने से भक्त की भक्ति की कमाई (धन) अत्यधिक हो जाएगा। उसके कारण शरीर में धुन (संगीत) सुनाई देने लगेगा। वैसे तो परमात्मा के सतलोक में असँख्यों धुन (संगीत की ध्वनि) हो रही हैं। जब भक्ति कमाई (शक्ति) अधिक हो जाती है, तब मूरली की (टेर) ध्वनि सुनाई देने लगती है। इसलिए उपमात्मक तरीके से समझाया है कि सुमेरू पर्वत जितनी विशाल भक्ति की शक्ति हो जाए, तब उसे सुमेरू जैसी भक्ति के बाद मुरली सुनाई देगी। तब आपका सत्यलोक जाने का मार्ग खुल गया है। जीवात्मा उसे सुनती-सुनती उस ओर चलती है। सतलोक पहुँच जाती है। वह निरंतर बजती रहती है। उस मुरली की आवाज सुनने से (कहर) भयंकर दंड देने वाले पाप ऐसे नष्ट हो जाते हैं जैसे सूखा घास

जलकर भस्म बन जाता है।

श्री कष्ण जी नंद बाबा के द्वार पर पथ्वी पर मुरली बजाते थे तो अनेकों गोपियाँ (गौ पालन करने वालों की पत्नियाँ) तथा ग्वाले सुनकर मस्त हो जाते। गोपियाँ रात्रि में अपने पतियों को सोये हुए छोड़कर चुपचाप मुरली सुनने चाँदनी रात्रि में जंगल में श्री कष्ण के पास चली जाती थी।

परंतु जो मुरली सतपुरूष कबीर जी के सत्यलोक में बज रही है, उसकी मधुरता तथा आकर्षण श्री कष्ण वाली मुरली से असँख्य गुणा अधिक है। स्वर्ग में बादल की गर्ज जैसी आवाज आती है। (अविगत पद निर्वाण) पूर्ण मोक्ष की पद्यति भिन्न है। कबीर परमात्मा की मुरली की ध्वनि को परखो जो सत्यलोक में बज रही है। काल ने धोखा देने के लिए ब्रह्मलोक में भी मुरली की ध्वनि चला रखी है जो सतपुरूष कबीर जी की सत्यलोक वाली मुरली की ध्वनि की तुलना में बहुत खराब है। सत्यलोक में असँख्यों बाजे बज रहे हैं। संगीत चल रहा है। उनके बीच में ही मुरली की ध्वनि भी चल रही है।

जो मुरली काल ब्रह्म ने ब्रह्मलोक में नकली बजा रखी है, परमात्मा कबीर जी ने अपने लोक वाली मुरली ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव को एक-एक बार सुनाई थी। वे उस मुरली की (टेर) ध्वनि पर मोहित हो गए हैं। परंतु उनकी साधना सतलोक वाली नहीं है। इसलिए वे उसे नहीं सुन पा रहे हैं।

परमात्मा कबीर जी अच्छी भक्त आत्माओं को मिलते हैं। इस क्रम में ऋषि नारद को भी मिले थे। उसे भी सतलोक वाली मुरली एक बार सुनाई थी। कुछ समय तक नारद जी सुनते रहे। उस मुरली की सुरीली ध्वनि को सुनकर नारद मुनि ने अपनी मुरली फैंक दी कि यह तो उस मुरली की तुलना में कुछ मायने नहीं रखती।**(1148-1164)**

जिस समय परमात्मा कबीर जी काशी नगर (भारत) में जुलाहे की भूमिका करके तत्वज्ञान प्रचार किया करते थे। उस समय धनी धर्मदास जी को मिले थे। सेठ धर्मदास जी श्री कष्ण के परम भक्त थे। बाद में तत्वज्ञान सुनकर तथा सत्यलोक में परमात्मा कबीर जी को आँखों देखकर मान गए थे कि समर्थ परमात्मा कबीर जी हैं। एक दिन चलती बात पर धर्मदास जी ने कहा कि हे सतगुरू देव! श्री कष्ण की मुरली की ध्वनि में इतना आकर्षण था, बताते हैं कि गौऐं, गोपियाँ तथा ग्वाले आकर्षित होकर उसकी ओर स्वतः चले आते थे। ऐसी क्या शक्ति थी उनमें? परमात्मा बोले कि हे धर्मदास! इसका उत्तर जुबानी नहीं दिया जा सकता। कार्यरूप देकर (**Practically**) उत्तर दिया जाएगा। चलो उस स्थान पर जहाँ श्री कष्ण मुरली बजाया करते थे। परमात्मा कबीर जी अपने प्रिय भक्त धर्मदास जी को साथ लेकर कालंदरी (यमुना) के उस तट पर गए जहाँ श्री कष्ण मुरली बजाया करते। कबीर परमात्मा ने आकाश की ओर संकेत किया। एक मुरली उनके हाथ में आ गई। परमात्मा ने मुरली बजानी प्रारम्भ की। आसपास के क्षेत्र के सभी स्त्री-पुरुष, पशु-पक्षी, स्वर्ग लोक के देवता, स्वर्ग गए हुए ऋषि-मुनि, तीनों ब्रह्मा-विष्णु-महेश भी अपने-अपने लोक त्यागकर मुरली की (टेर) ध्वनि सुनने आए थे।

यमुना नदी का जल भी परमात्मा की मुरली की टेर सुनने के लिए रूक गया। एक

पहर यानि तीन घण्टे तक मुरली बजाई। सब यथास्थिति में खड़े रहे। टस से मस भी नहीं हुए। जब मुरली रूकी तो सब कबीर जी की जय-जयकार करने लगे। स्थानीय लोगों ने जानना चाहा कि यह कौन देव है जिसने इतनी मधुर मुरली बजाई है। इनकी शक्ति का कोई वार-पार नहीं है। उन्हें बताया गया कि ये पूर्ण परमात्मा हैं। काशी में जुलाहे का कार्य कर रहे हैं। सब अपने-अपने स्थान को लौट गए।

संत मलूक दास जी को परमात्मा कबीर जी मिले थे। सत्यलोक दिखाया। अपने से परिचित करवाया था। उन्होंने कहा था :-

एक समय गुरू मुरली बजाई, कालंदरी के तीर। सुरनर मुनिजन थकत भए थे, रूक गया जमना नीर।
जपो रे मन साहेब नाम कबीर।।(1165)

परमात्मा कबीर जी सुक्ष्म रूप में स्वर्ग में गुप्त निगरानी रखते हैं। सत्यलोक में सिंहासन पर बैठे हैं। सिर के ऊपर सफेद (White) छत्र लगा रखा है। नराकार है। उस मुरली की टेर सुनकर यदि साधक साधना त्याग देता है तो वह बहुत समय तक पुनर्जन्म नहीं लेता। उसमें आकाश में उड़ने की सिद्धि आ जाती है। वह ऊपर सुन्न में तथा अन्य शुन्य स्थानों में भ्रमता रहता है। उसे कोई (आसन) ठिकाना नहीं होता। उसका स्थूल शरीर भी नहीं होता। सुक्ष्म शरीर में अपनी भक्ति को खा-खर्चकर पुनः पृथ्वी पर मानव जन्म भी प्राप्त कर सकता है। चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीरों में भी जन्म ले सकता है।(1166-1168)

सतलोक में बिना परमात्मा की शक्ति से फूल बिना शाखा के दिखाई देते हैं। यह कुछ क्षेत्र है। बिना घटा बादल के (दामिनि) बिजली देखो। बिना बादल के बादल की गर्जना सुनो। ऐसा दिव्य है सतलोक।(1169)

''तैमूरलंग को सात पीढ़ी का राज्य कबीर जी ने दिया''

''कबीर परमात्मा ने एक रोटी के बदले सात पीढ़ी का राज तैमूरलंग को दिया''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 1170-1180 :-**

गरीब, दिल्ली अकबराबाद फिरि, लाहौराकूं जात। रोटी रोटी करत हैं, किन्हें न बूझी बात।।1170।।
गरीब, तिबरलंग तालिब मिले, एक रोटी की चाह। जिंदा रूप कबीर धरहीं, तिबरलंग सुनि राह।।1171।।
गरीब, रोटी पोई प्रीतसैं, जलका ठूठा हाथि। जिंदेकी पूजा करी, मात पुत्र दो साथ।।1172।।
गरीब, संकल काढी चीढकी, सन्मुख लाई सात। लात धमूक्के लाय करि, जिंदा भया अजाति।।1173।।
गरीब, रोटी मोटी हो गई, साग पत्र बिस्तार। सहंस अठासी छिकि गये, पंडौं जगि जौंनार।।1174।।
गरीब, दुर्बासा पूठे परै, कौरव दीन शराप। पंडौं पद ल्यौलीन हैं, कौरव तीनौं ताप।।1175।।
गरीब, अठारा खूंहनि खपि गइ, दुर्योधन बलवंत। पंडौं संग समीप हैं, आदि अंत के संत।।1176।।
गरीब, तिबरलंग हुम्यौं रहैं, मन में कछु न चाह। मौज मेहर मौला करी, दीन्या तख्त बठाय।।1177।।
गरीब, हिंद जिंद सबही दीई, सेतबंध लग सीर। गढगजनी ताबै करी, जिंदा इसम कबीर।।1178।।
गरीब, सात सहीसल नीसलीं, पीछै डिगमग ख्याल। औंरगजेबअरु तिबरलग, इन परि नजरिनिहाल।।1179।।
गरीब, अगले सतगुरु शेर थे, पिछले जंबुक गीद। यामें भिन्न न भांति है, देखि दीद बरदीद।।1180।।

❖ सरलार्थ :- परमेश्वर कबीर जी एक जिंदा बाबा का वेश बनाकर पृथ्वी के ऊपर धार्मिकता देखना चाहते थे। वैसे तो परमात्मा कबीर जी अंतर्यामी हैं, फिर भी संसार भाव बरतते हैं। जिंदा बाबा के वेश में कई शहरों-गाँवों में गए, एक रोटी माँगते रहे। अन्न का अभाव रहता था। बारिश पर खेती निर्भर थी। जिस कारण से अधिकतर व्यक्तियों का निर्वाह कठिनता से चलता था। जब परमात्मा चलते-चलते उस नगर में आए जिसमें तैमूरलंग मुसलमान लुहार अपनी माता के साथ रहता था। तैमूर के पिता की मृत्यु हो चुकी थी। तैमूर अठारह वर्ष की आयु का था। निर्धनता कमाल की थी। कभी भोजन खाने को मिलता, कई बार एक समय का भोजन ही नसीब होता था। तैमूरलंग की माता जी बहुत धार्मिक स्त्री थी। कोई भी यात्री साधु या सामान्य व्यक्ति द्वार पर आता था तो उसे खाने के लिए अवश्य आग्रह करती थी। स्वयं भूखी रह जाती थी, रास्ते चलते व्यक्ति को अवश्य भोजन करवाती थी। जिस दिन परमात्मा जिंदा रूप में परीक्षा के उद्देश्य से आए, उस दिन केवल एक रोटी का आटा बचा था। तैमूरलंग को भोजन खिला दिया था। स्वयं भी खा लिया था। शाम के लिए केवल एक रोटी का आटा शेष था।

तैमूरलंग अमीर व्यक्तियों की भेड़-बकरियों को चराने के लिए जंगल में प्रतिदिन ले जाया करता। वह किराये का पाली था। धनी लोग उसे अन्न देते थे। निर्धनता के कारण तैमूरलंग एक लौहार के अहरण पर शाम को बकरी-भेड़ गाँव लाने के बाद घण की चोट लगाने की ध्याड़ी करता था। उससे भी अन्न मिलता था।

जिस दिन परमात्मा तैमूरलंग को जंगल में मिले। उस दिन भी तैमूरलंग प्रतिदिन की तरह भेड़-बकरियाँ चराने जंगल में गाँव के साथ ही गया हुआ था। जब परमात्मा तैमूरलंग को मिले तथा रोटी माँगी तो तैमूरलंग खाना खा चुका था। तैमूरलंग ने कहा कि महाराज! आप बैठो। मेरी भेड़-बकरियों का ध्यान रखना कि कहीं कोई गुम न हो जाए। मैं निर्धन हूँ। भाड़े पर बकरियों तथा भेड़ों को चराता हूँ। मैं घर से रोटी लाता हूँ। यहाँ पास में ही हमारा घर है। परमात्मा ने कहा ठीक है, संभाल रखूँगा। तैमूरलंग घर गया। माता को बताया कि एक बाबा कई दिन से भूखा है। रोटी माँग रहा है। माता ने तुरंत आटा तैयार किया। एक रोटी बनाई क्योंकि आटा ही एक रोटी का बचा था। एक रोटी कपड़े में लपेटकर जल का लोटा साथ लेकर बाबा जी के पास दोनों माँ-बेटा आए। रोटी देकर जल का लोटा साथ रख लिया। माता तथा बेटे ने बाबा जी की स्तुति की तथा माता ने कहा, महाराज! हम बहुत निर्धन हैं। दया करो, कुछ रोटी का साधन बन जाए। बाबा ने रोटी खाई। तब तक माई ने आँखों में आँसू भरकर कई बार निवेदन किया कि मेहर करियो दाता। बाबा जिंदा ने रोटी खाकर जल पीया। बकरी बाँधने की सांकल (बेल) लेकर उसको तैमूरलंग की कमर में सात बार मारा। चीढ़ की सण की बेल थी। चीढ़ को कामण भी कहते हैं। कामण की छाल का रस्सा बहुत मजबूत होता है। फिर लात मारी तथा मुक्के मारे। माता को लगा कि मैंने बाबा को बार-बार बोल दिया जिससे चिढ़कर लड़का पीट दिया। माई ने पूछा कि बाबा जी! बच्चे ने क्या गलती कर दी। माफ करो, बच्चा है। परमात्मा बोले कि माई! इस एक रोटी का फल तेरे पुत्र को सात पीढ़ी का राज्य का वरदान दिया है जो सात बार बेल (सांकल) मारी है।

जो लात तथा मुक्के मारे हैं, यह इसका राज्य टुकड़ों में बँट जाएगा। माई को लगा कि बाबा पागल है। रोटी शाम की नहीं, कह रहा है तेरा बेटा राज करेगा। माई विचार कर ही रही थी कि बाबा जिंदा अंतर्ध्यान हो गया।

कुछ दिन के पश्चात् गाँव की एक जवान लड़की को राजा के सिपाही उठाने की कोशिश कर रहे थे। वे राजा के लिए विलास करने के लिए ले जाना चाहते थे। तैमूरलंग दौड़ा-दौड़ा गया। सिपाहियों को लाठी से पीटने लगा। कहने लगा कि हमारी बहन हमारी इज्जत है। दुष्ट लोगो! चले जाओ। परंतु वे चार-पाँच थे। घोड़े साथ थे। उन्होंने तैमूरलंग को बहुत पीटा। मत समझकर छोड़ दिया और लड़की को उठा ले गए। तैमूरलंग होश में आया। गाँव में चर्चा चली की तैमूरलंग ने बहादुरी का काम गाँव की इज्जत के लिए किया। अपनी जान के साथ खेलकर गाँव की इज्जत बचानी चाही। गाँव के प्रत्येक व्यक्ति की हमदर्दी का पात्र बन गया।

एक रात्रि को स्वपन में बाबा जिंदा तैमूरलंग को दिखाई दिया और बोला कि जिस लुहार के अहरण पर शाम को नौकरी करता है, उसके नीचे खजाना है। तू उस स्थान को मोल ले ले। मैं उस लुहार के मन में बेचने की प्रेरणा कर दूँगा। दो महीने की उधार कह देना। तैमूरलंग ने अपना सपना अपनी माता जी को बताया। जो-जो बात परमात्मा से हुई थी, माता जी को बताई। माता जी ने कहा, बेटा! बाबा जी मुझे भी आज रात्रि में स्वपन में दिखाई दिए थे। कुछ कह रहे थे, मुझे स्पष्ट नहीं सुनाई दिया। माता ने कहा कि बाबा जी की बात सच्ची है तो बेटा धन्य हो जाऐंगे। तू जा, अहरण वाले से बात कर।

अहरण वाले के मन में कई दिन से प्रबल प्रेरणा हो रही थी कि यह स्थान कम पड़ गया है। मेरी दूसरी जगह जमीन बड़ी है। इसे कोई उधार भी ले ले तो दे दूँगा। मैं अपने बड़े प्लाट में अहरण लगा लूँगा।

तैमूरलंग अहरण वाले मालिक के पास गया और वर्तमान अहरण वाली जगह को उधार लेने की प्रार्थना की। अहरण वाला बोला कि बात पक्की करना। जो समय रूपये देने का रखा जाएगा, उस समय रूपये देने होंगे। तैमूरलंग ने कहा कि दो-तीन महीने में रूपये दे दूँगा। अहरण वाला तो एक वर्ष तक उधार पर देने को तैयार था। बात पक्की हो गई। तीसरे दिन अहरण वाली जगह खाली कर दी गई। तैमूरलंग ने अपनी माता जी के सहयोग से उस जगह की मिट्टी के डलों की चारदिवारी बनाई। वहाँ पर झोंपड़ी डाल ली। रात्रि में खुदाई की तो खजाना मिला। अहरण वाला पुराना अहरण भी उसे दे गया। उसके कुछ रूपये ले लिए। स्वयं नया अहरण ले आया। परमात्मा स्वपन में फिर तैमूरलंग को दिखाई दिए तथा कहा कि बेटा! खजाने से थोड़ा-थोड़ा धन निकालना। उससे एक-दो घोड़ा लेना। उन्हें मंहगे-सस्ते, लाभ-हानि में जैसे भी बिके, बेच देना। फिर कई घोड़े लाना, उन्हें बेच आना। जनता समझेगी कि तैमूरलंग का व्यापार अच्छा चल गया। तैमूरलंग ने वैसे ही किया। छः महीने में अलग से जमीन मोल ले ली। पहले भेड़-बकरियाँ खरीदी, बेची। फिर सैंकड़ों घोड़े वहाँ बाँध लिए। उन्हें बेचने ले जाता, और ले आता। गाँव के नौजवान लड़के नौकर रख लिए। बड़ा मकान बना लिया। तैमूरलंग को वह घटना रह-रहकर कचोट रही

थी कि यदि मैं राजा बन गया तो सर्वप्रथम उस अपराधी बेशर्म राजा को मारूँगा जिसने मेरे गाँव की इज्जत लूटी थी। जवान लड़की को उसके सैनिक बलपूर्वक उठाकर ले गए थे। अब तैमूरलंग के साथ धन था। जंगल में वर्कशॉप बनाई। लुहार कारीगर था, स्वयं तलवार बनाने लगा। गाँव के नौजवान व्यक्तियों को अपना उद्देश्य बताया कि उस राजा को सबक सिखाना है जिसने अपने गाँव की बेटी की इज्जत लूटी है। मैं सेना तैयार करूँगा। जो सेना में भर्ती होना चाहे, उसे एक रूपया तनख्वाह दूँगा। उस समय एक रूपया चाँदी का बहुत होता था। जवान लड़के सैंकड़ों तैयार हो गए। वे अपने रिश्तेदारों को ले आए। इस प्रकार बड़ी सेना तैयार की। लुहार कारीगर तनख्वाह पर रखे। तलवार-ढ़ाल तैयार करके उस राजा पर धावा बोल दिया। उसे अपने आधीन कर लिया। उसका राज्य छीन लिया। उसको मारा नहीं, अलग गाँव में भेज दिया। उसके निर्वाह के लिए महीना देने लगा। धीरे-धीरे तैमूरलंग ने इराक, ईरान, तुर्किस्तान पर कब्जा कर लिया। फिर भारत पर भी अपना शासन जमा लिया। दिल्ली के राजा ने उसकी पराधीनता (गुलामी) स्वीकार नहीं की, उसे मार भगाया। उसके स्थान पर बरेली के नवाब को दिल्ली का वायसराय बना दिया जो तैमूरलंग का गुलाम रहा। उसे प्रति छः महीने फसल कटने पर कर देकर आता था। तैमूरलंग की मत्यु के पश्चात् दिल्ली के वायसराय ने कर देना बंद कर दिया। स्वयं स्वतंत्र शासक बन गया। तैमूरलंग का पुत्र दिल्ली का राज्य लेना चाहता था तो उसे नहीं दिया। बाबर तैमूरलंग का तीसरा पोता था। उसने बार-बार युद्ध करके भारत का राज्य प्राप्त कर लिया। बाबर का पुत्र हमायूं था। हमायूं का अकबर, अकबर का जहांगीर, जहांगीर का शाहजहां, शाहजहां का पुत्र औरंगजेब हुआ। सात पीढ़ियों ने भारत पर राज्य किया। इतिहास गवाह है। फिर औरंगजेब के बाद राज्य टुकड़ों में बँट गया। अन्नदेव की आरती में भी संत गरीबदास जी ने कहा है कि :-

रोटी तैमूरलंग कूं दिन्ही, तातें सात पादशाही लिन्हीं।।

तैमूरलंग को परमात्मा उसी जिंदा वाले वेश में फिर मिले जब वह अस्सी (80) वर्ष का हो गया था। शिकार करने गया था, राजा था। तब उसको समझाया कि भक्ति कर राजा, नहीं तो (दोजख) नरक में गिरेगा। भूल गया वो दिन जब एक रोटी ही घर पर थी। उस समय तैमूरलंग बाबा के चरणों में गिर गया। दीक्षा ली। राज्य पुत्र को दे दिया। दस वर्ष और जीवित रहा। वह आत्मा जन्म-मरण में है। परंतु भक्ति का बीज पड़ गया है। यदि उस निर्धनता में भक्ति करने को कहता तो नहीं मानना था। परमात्मा कबीर जी ही जानते हैं कि काल की जकड़ से कैसे जीव को निकाला जा सकता है।

वाणी नं. 1180 का सरलार्थ :- धर्म (मजहब) कोई भी है, जो उसके प्रवर्तक होते हैं, वे साफ-सुथरे (स्वच्छ) व्यवहार के होते हैं। धर्म-कर्म करने वाले, परमात्मा से डरने वाले होते हैं। बाद में केवल दिखावा रह जाता है। इसका ध्यान देकर देखा जा सकता है। यही होता है। इस बात में कोई अंतर नहीं है। सतगुरू फिर से धर्म को सुधारता है। सत्य साधना पर लगाता है।

''दान-धर्म करने से लाभ''

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 1181-1248 :-**

गरीब, पिछला टांका रहि गया, उतर्या हुकम हजूम। तिबरलंग कहौ कौन है, आये मौलवी रूम।।1181।।
गरीब, गाडा अटक्या कीच में, ऊपर बैठे तिम। बेलनहारा राम हैं, धोरी आप धरंम।।1182।।
गरीब, धरम धसकत है नहीं, धसकैं तीनूं लोक। खैरायतमें खैर हैं, कीजे आत्म पोष।।1183।।
गरीब, धर्म बिना ऐसा नरा, जैसी बंझा नार। बिन दीन्या पावै नहीं, सुन्हा भया गंवार।।1184।।
गरीब, साधु संत सेये नहीं, करी न अन्नकी सांट। कुतका बैठया कमरि में, हो गया बारह बाट।।1185।।
गरीब, धर्म बिना धापै नहीं, योह प्रानी प्रपंच। आश बिरांनी क्यूं करै, दीन्हा होय तो संच।।1186।।
गरीब, धर्म किया बलिरायकौं, ठानी इकोतरि जगि। तहां बावन अवतार धरि, लिए समूचे ठगि।।1187।।
गरीब, कंपे स्वर्ग समूल सब, ऐसी यज्ञ आरंभ। आसन सुरपति के डिगे, पान अपानं संभ।।1188।।
गरीब, हवन किए हरि हेत सैं, जप तप संयम साध। बलि कै बावन आईया, देख्या अगम अगाध।।1189।।
गरीब, एक यज्ञ है धर्म की, दूजी यज्ञ है ध्यान। तीजी यज्ञ है हवन की, चौथी यज्ञ प्रणाम।।1190।।
गरीब, च्यारि बेद का मूल सुनि, स्वसंबेद संगीत। बलिकौं ये चारौं करी, बावन उतरे प्रीति।।1191।।
गरीब, अमर किए आसन दिये, सिंहासन सुरपति। ऐसी जगि जगदीश की, ताहि मानियौं सत्य।।1192।।
गरीब, दान किए देही मिलै, नर स्वरूप निरबांन। बूक बाकला देतहीं, चकवै भये निशान।।1193।।
गरीब, नाम सरीखा दान है, दान सरीखा नाम। सुनहीकौं भोजन दिया, तीनि छिके बलिजांव।।1194।।
गरीब, बुढिया और बाजींदजी, सुनहीकै आनंद। रोटी चारौं मुक्ति हैं, कटैं गले के फंद।।1195।।
गरीब, राजा की बांदी होती, रोटी देत हमेश। चक्र भये हैं दहूं दिशा, जीते जंग नरेश।।1196।।
गरीब, इंद्र भये हैं धर्म सैं, यज्ञ हैं आदि जुगादि। शंख पचायन जदि बजे, पंचगिरासी साध।।1197।।
गरीब, सुपच शंक सब करत हैं नीच जाति बिश चूक। पौहमी बिगसी स्वर्ग सब, खिले जा पर्बत रूंख।।1198।।
गरीब, कंनि कंनि बाजा सब सुन्या, पंच टेर क्यौं दीन। द्रौपदी कै दुर्भाव हैं, तास भये मुसकीन।।1199।।
गरीब, करि द्रौपदी दिलमंजना, सुपच चरण पी धोय। बाजे शंख सर्व कला, रहे अवाजं गोय।।1200।।
गरीब, द्रौपदी चरणामृत लिये, सुपच शंक नहीं कीन। बाज्या शंख असंख धुनि, गण गंधर्व ल्यौलीन।।1201।।
गरीब, सुनी शंखकी टेर जिन, हृदय भाव बिश्बास। जोनी संकट ना परै, होसी गर्भ न त्रास।।1202।।
गरीब, दान अभैपद अजर है, नहीं दूई दूर्भाव। जगि करी बलिरायकूं, बावन लिये बुलाय।।1203।।
गरीब, दिया दान दधीचिकौं, पांसू धनक धियान। तेतीसौं कुरनसि करैं, हो गये पद प्रवान।।1204।।
गरीब, दान वित्त समान हैं, टोपी कोपीन टूक। यासैं लघु क्या और है, साग पत्र गई भूख।।1205।।
गरीब, पीतांबरकूं पारि करि, द्रौपदी दिन्ही लीर। अंधेकू कोपीन कसि, धनी कबीर बधाये चीर।।1206।।
गरीब, देना जगमें खूब है, दान ज्ञान प्रवेश। ब्रह्माकूं तौ जगि करि, बतलाई है शेष।।1207।।
गरीब, दान ज्ञान ब्रह्मा दिया, सकल सृष्टिकै मांहि। सूंम डूंम मांगत फिरैं, जिन कुछि दीन्ह्या नांहि।।1208।।
गरीब, दान ज्ञान प्रणाम करि, होम जो हरि कै हेत। यज्ञ पंचमी तुझ कहूं, ध्यान कमल सुर सेत।।1209।।
गरीब, धर्म कर्म जगि कीजिये, कूवें बाय तलाव। इच्छा अस्तल स्वर्ग सुर, सब पृथ्वी का राव।।1210।।
गरीब, भूख्यां भोजन देत हैं, कर्म यज्ञ जौंनार। सो गज फीलौं चढत हैं, पालक कंध कहार।।1211।।
गरीब, कूवें बाय तलावडी, बाग बगीचे फूल। इंद्रलोक गन कीजियें, परी हिंदोलौं झूल।।1212।।

गरीब, जती सती इंद्री दमन, बिन इच्छा बाटंत। कामधेनु कल्प वृक्ष पद, तास बार दूझंत।।1213।।
गरीब, स्वर्ग नंदिनी दर बंधै, बिन इच्छा जौंनार। गण गंधर्व और मुनिजन, तीनी लोक अधिकार।।1214।।
गरीब, पतिब्रता नारी घरौं, आंन पुरुष नहीं नेह। अपने पति की बंदगी, दुर्लभ दर्शन येह।।1215।।
गरीब, माता मुक्ति सुनीतिसी, मैनासी पुरकार। फकर फरीद फिकर लग्या, कूप कलप दीदार।।1216।।
गरीब, ऐसी जननी मात सत्य, पुत्र देत उपदेश। और नार व्यभिचारिणी, यौं भाखत हैं शेष।।1217।।
गरीब, समुद्र तौ नघ देत है, इन्द्र देत है स्वांति। नारी पुत्र देत हैं, ध्रुव कैसी लगमांति।।1218।।
गरीब, सात धात पृथ्वी दई, सात अन्न प्रबीन। वृक्षा नदियौं फल दिये, यौ नर मूढ कुलीन।।1219।।
गरीब, जिन पुत्र नहीं जगि करी, पिण्ड प्रदान पुरान। नाहक जग में अवतरे, जिनसैं नीका श्वान।।1220।।
गरीब, बिना धर्म क्या पाईये, चौदह भुवन बिचार। चमरा चूक्या चाकरी, स्वर्गहूं में बेगार।।1221।।
गरीब, स्वर्ग स्वर्ग सब जीव कहैं, स्वर्ग मांहि बड दुःख। जहां चौरासी कुंड हैं, थंभ बलैं ज्यूं लुक।।1222।।
गरीब, कुंड पर्‌या निकसैं नहीं, स्वर्ग न चितवन कीन। धर्मराय के धाम में, मार अधिक बेदीन।।1223।।
गरीब, करि साहिब की बंदगी, सुमरण कलप कबीर। जमकै मस्तक पांव दे, जाय मिलै धर्मधीर।।1224।।
गरीब, धर्मधीर जहां पुरुष हैं, ताकी कलप कबीर। सकल प्रान में रमि रह्या, सब पीरन शिर पीर।।1225।।
गरीब, धर्म धजा फरकंत हैं, तीनौं लोक तलाक। पापी चुनि चुनि मारिये, मुंख में दे दे राख।।1226।।
गरीब, पापीकै परदा नहीं, शिब पर कलप करंत। माता कूं घरणी कहै, भस्मागिर भसमंत।।1227।।
गरीब, भसम हुये अप कलपसैं, शिबकूं कछु न कीन। इस दुनियां संसार में, कर्म भये ल्यौलीन।।1228।।
गरीब, जिन्हौं दान दत्तब किया, तिन पाई सब रिद्ध। बिना दानि व्याघर भये, तास पजाबे गद्ध।।1229।।
गरीब, कर दिन्ह्ये कुरबांनजां नयन नाक मुखद्वार। पीछैं कुछ राख्या नहीं, नर मानुष अवतार।।1230।।
गरीब, दान दया दरबेश दिल, बैराट फटक जो दिल। दानी ज्ञानी निपजहीं, सूंम सदा ज्यूं सिल।।1231।।
गरीब, सूंम सुसरसैं शाख क्या, हनिये छाती तोर। असी गंज बांटे नहीं, कीन्ह्ये गारत गोर।।1232।।
गरीब, हरिचंद ऐसी यज्ञ करी, राजपाट स्यूं देह। संगही तारालोचनी, काशी नगर बिकेह।।1233।।
गरीब, मरघट का मंगता किया, मुर्द पीर चिंडाल। डायन तारालोचनी, राजा पुत्र काल।।1234।।
गरीब, उस डायन कूं तोरि है, हरिचंद हाथ खड्ग। स्वर्ग मृत्यु पाताल में, ऐसी और न जगि।।1235।।
गरीब, मोरध्वज मेला किया, जगि आये जगदीश। ताम्रध्वज आरा धर्‌या, अरपन कीन्ह्या शीश।।1236।।
गरीब, अंबरीष आनंद में, यज्ञ रूप सब अंग। दुर्बासाकूं दव नहीं, चक्र सुदर्शन संग।।1237।।
गरीब, राजा अधिक पुरुरवा, होमि दई जिन देह। तीन लोक साका भया, अमर अभय पद नेह।।1238।।
गरीब, मरुत यज्ञ अधकी करी, पृथ्वी सर्वस्व दान। अनंत कोटि राजा गये, पद चीन्हत प्रवान।।1239।।
गरीब, नगर पुरी भदरावती, जोबनाथ का राज। श्यामकर्ण जिस कै बंध्या, खूंहनि अनगिन साज।।1240।।
गरीब, गये भीम जहां भारथी, श्याम कर्ण कौं लैंन। भारथ करि घोरा लिया, तास यज्ञ तहां दैंन।।1241।।
गरीब, गोरख जोगी ज्ञान यज्ञ करी, तत्तवेत्ता तरबीत। सतगुरु सें भेटा भया, हो गये शब्दातीत।।1242।।
गरीब, सेऊ समन जग करी, शीश भेद करि दीन। सतगुरु मिले कबीर से, शीश चढे फिरि सीन।।1243।।
गरीब, कबीर यज्ञ जैसी करी, ऐसी करै न कोय। नौलख बोडी बिस्तरी, केशव केशव होय।।1244।।
गरीब, यज्ञ करी रैदास कूं, धरै सात सै रूप। कनक जनेऊ काढियां, पातशाह जहां भूप।।1245।।
गरीब, तुलाधार कूं जग करी, नामदेव प्रवान। पलरे में सब चढि गये, ऊठ्या नहीं अमान।।1246।।
गरीब, पीपा तौ पद में मिल्या, कीन्ही यज्ञ अनेक। बुझ्या चंदोवा बेगही, अबिगत सत्य अलेख।।1247।।

गरीब, तिबरलंग तौ जग करी, एक रोटी रस रीति। बिन दीन्ही नहीं पाईये, दान ज्ञान सें प्रीति।।1248।।

❖ **सरलार्थ :- इन वाणियों में दान-पुण्य करने का ज्ञान है। बताया है कि जो दान नहीं करते, उनका भविष्य नरक बन जाता है। दान-धर्म के अनुष्ठान यानि धर्म यज्ञ व अन्य यज्ञ करने से भक्ति ऐसे सफल होती है जैसे खेत में किसान बीज बो कर बाद में समय-समय पर सिंचाई करता है जिससे बीज उगता है। पौधा बनकर अन्न देता है। इसी प्रकार भक्ति मार्ग में नाम तो बीज है। यज्ञ (धर्म यज्ञ, ध्यान यज्ञ, हवन यज्ञ, प्रणाम यज्ञ, ज्ञान यज्ञ) सिंचाई का कार्य करती हैं। यदि दीक्षा लेकर यज्ञ नहीं की तो भक्ति सफल नहीं होती। पारख के अंग की वाणी नं. 1209 में पाँच यज्ञ बताई हैं :-**

गरीब, दान ज्ञान प्रणाम करि, होम जो हरि कै हेत।
यज्ञ पंचमी तुझ कहूं, ध्यान कमल सुर सेत।।1209।।

अर्थात् (1) दान (धर्म) यज्ञ, (2) ज्ञान यज्ञ, (3) प्रणाम यज्ञ, (4) होम (हवन) यज्ञ, (5) ध्यान यज्ञ। ये पाँचों यज्ञ साधक को गुरू जी के आदेशानुसार करनी चाहिऐं।

❖ **जैसे पूर्व की वाणियों में तैमूरलंग को परमात्मा मिले। इसका कारण है कि किसी जन्म में यह आत्मा, परमात्मा कबीर जी की शरण में आकर साधना किया करती थी। सुख होने पर काल तुरंत परमात्मा को भुलाता है। तैमूरलंग ने फिर अनेकों पशु-पक्षियों के जन्म भोगे। जब मानव जन्म हुआ। धर्म के अभाव में निर्धन घर में जन्मा। यह पिछला टांका रह गया था।(1181)**

❖ **जीवन रूपी गाड़ी पाप कर्मों की कीच (कीचड़) में धंस जाती है तो धर्म उस गाड़ी को पाप रूपी कीचड़ से निकालने वाला (धोरी) दमदार बैल है।(1182)**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 1183-1186 :-**

गरीब, धरम धसकत है नहीं, धसकैं तीनूं लोक। खैरायतमें खैर हैं, कीजै आत्म पोष।।1183।।
गरीब, धर्म बिना ऐसा नरा, जैसी बंझा नार। बिन दीन्या पावै नहीं, सुन्हा भया गंवार।।1184।।
गरीब, साधु संत सेये नहीं, करी न अन्नकी सांट। कुतका बैठया कमरि में, हो गया बारह बाट।।1185।।
गरीब, धर्म बिना धापै नहीं, योह प्रानी प्रपंच। आश बिरांनी क्यूं करै, दीन्हा होय तो संच।।1186।।

❖ **सरलार्थ :- धर्म कभी नष्ट नहीं होता। तीनों लोक नष्ट हो जाते हैं। (खैरायत) दान-धर्म करने से (खैर) बचाव है। इसलिए धर्म-भण्डारा (लंगर) करके धर्म करना चाहिए।(1183)**

❖ **जो धर्म नहीं करते, उनको भक्ति का कोई लाभ नहीं मिलता। उदाहरण दिया है कि जैसे बांझ स्त्री का विवाह भी हो जाता है, परंतु संतान नहीं होती। इसी प्रकार धर्म बिना भक्ति सफल नहीं होती, उल्टा (सुन्हा) कुत्ते का जीवन प्राप्त करता है। सतगुरू से दीक्षा ली नहीं, अन्न की सांट नहीं की यानि अन्न दान (भोजन नहीं कराया) नहीं किया तो कुत्ता बनकर घर-घर जाता है। कहीं-कहीं उसकी कमर पर (कुतका) मुगदर लगाया जाता है। हाय-हाय करता फिरता है।(1184-1185)**

❖ **धर्म किए बिना आत्मा की संतुष्टि नहीं होती। अन्य सब प्रपंच है। यदि पूर्व जन्म में या इस जन्म में दान किया है तो धन मिलेगा, अन्यथा कुछ नहीं मिलेगा।(1186)**

❖ **वाणी नं. 1187-1192 का सरलार्थ :-**

बली राजा ने सौ यज्ञ की थी। परमात्मा बावना रूप धारण करके आया था। यह धर्म का प्रभाव था कि परमात्मा को आना पड़ा। राजा बली भक्त प्रहलाद का पोता था। पिता का नाम बैलोचन था। राजा बली ने चार यज्ञ की थी। बावन रूप परमात्मा को आना पड़ा।

❖ **वाणी नं. 1190-1191 :-**

गरीब, एक यज्ञ है धर्म की, दूजी यज्ञ है ध्यान। तीजी यज्ञ है हवन की, चौथी यज्ञ प्रणाम।।1190।।
गरीब, च्यारि बेद का मूल सुनि, स्वसंबेद संगीत। बलिकौं ये चारौं करी, बावन उतरे प्रीति।।1191।।

❖ **सरलार्थ :- जो चार यज्ञ राजा बली ने की, वे हैं 1. धर्म यज्ञ, 2. ध्यान यज्ञ, 3. हवन यज्ञ, 4. प्रणाम यज्ञ।**

❖ **बलि को कुछ समय के लिए पाताल लोक में छोड़ दिया है। वह वर्तमान इन्द्र के शासन काल को पूरा होने के बाद इन्द्र की गद्दी पर बैठकर स्वर्ग का राज करेगा। इतना अमर किया है बली को।(1192)**

❖ **दान करने से मानव शरीर भी मिलता है। उसको मिलता है जो गुरू बनाकर धर्म करता है, यज्ञ करता है। एक बार दुर्भिक्ष गिरा था। एक धर्मात्मा ने प्रतिदिन एक (बूक) आंजला चनों की बाकली बनाकर प्रत्येक व्यक्ति को बाँटा था। उसके धर्म के कारण कई बार चक्रवर्ती राजा बना था वह सेठ।(1193)**

❖ **वाणी नं. 1194-1195 :-**

गरीब, नाम सरीखा दान है, दान सरीखा नाम। सुनहीकौं भोजन दिया, तीनि छिके बलिजांव।।1194।।
गरीब, बुढिया और बाजींदजी, सुनहीकै आनंद। रोटी चारौं मुक्ति हैं, कटैं गले के फंद।।1195।।

❖ **सरलार्थ :- एक समय बाजीद राजा राज्य-घर त्यागकर जंगल में साधना कर रहे थे। एक कुतिया ने 8 बच्चों को जन्म दिया। उसको बहुत भूख लगी थी। एक बुढ़िया अपनी 4 रोटी कपड़े में बाँधकर खेत में काम के लिए जा रही थी। बाजीद ने कहा, माई! इस कुतिया को एक रोटी डाल दो, यह भूख से मरने वाली है, साथ में 8 बच्चे और मरेंगे। बुढ़िया चतुर थी, उसने कहा मेरे खून-पसीने की कमाई है, यह कैसे दे दूँ? संत ने कहा कैसे रोटी डालोगी? बुढ़िया ने कहा आप अपनी भक्ति का चौथा भाग मुझे दे दो, मैं रोटी डाल दूँगी। संत ने अपनी साधना का ¼ भाग संकल्प कर बुढ़िया को दे दिया। वद्धा ने एक रोटी कुतिया को डाल दी। फिर भी कुत्ती भूखी थी। करते-करते चारों रोटी कुतिया को डाल दी और संत बाजीद जी ने अपनी सर्व भक्ति कमाई वद्धा को संकल्प कर दी। जिससे कुतिया (सुनही) तथा उसके बच्चों का जीवन बचा। रोटी देने से माई को भक्ति की कमाई प्राप्त हुई और बाजीद जी भक्ति पुण्यहीन हो गया, परंतु कुतिया और उसके बच्चों को जीवन दान देने के कारण स्वर्ग प्राप्ति हुई।**

❖ **वाणी नं. 1196 :-**

गरीब, राजाकी बांदी होती, रोटी देत हमेश। चक्र भये हैं दहूं दिशा, जीते जंग नरेश।।1196।।

❖ **सरलार्थ :- एक राजा की (बांदी) नौकरानी धार्मिक थी। वह प्रतिदिन गरीबों को रोटी बाँटती थी। उसके कारण उस राजा ने कई राजाओं पर विजय प्राप्त की। उसका राज्य**

विशाल हो गया। जब उसने किसी ज्योतिषी से पता किया तो पता चला कि तेरी नौकरानी के द्वारा तेरे खजाने से किए रोटी दान से तुझे यह सफलता मिली है।

❖ वाणी नं. 1192-1202 का सरलार्थ पूर्व में वाणी नं. 41-47 के सरलार्थ में कर दिया है।

❖ वाणी नं. 1203 का सरलार्थ पहले इसी अंग में कर दिया है।

❖ एक समय देवताओं और राक्षसों का युद्ध हुआ। एक राक्षस किसी भी शस्त्र से नहीं मर रहा था। एक ऋषि ने बताया कि इसकी मत्यु ऋषि दधिचि की हड्डी के तीर से होगी। ऋषि दधिचि ने अपने पैर की हड्डी दान कर दी। तब वह राक्षस मरा। यह परमार्थ केवल महात्मा ही कर सकता है।(1204)

❖ अपनी वित्तीय स्थिति के अनुसार सच्चे मन से दान किया जाए, वह वास्तव दान फलता है। (टोपी) सिर पर पहनने वाला सर्दी से बचाने वाला टोपा दान ही किया जाए। यदि अधिक दान करने का सामर्थ्य नहीं है तो यही फल देगा। (कोपी) कोपीन जो साधु लंगोट (कटिवस्त्र) पहनते हैं जो छः इंच चौड़ा तीन फुट लंबा कपड़े का टुकड़ा होता है। यदि अधिक दान करने का सामर्थ्य नहीं है तो सच्ची श्रद्धा से इतना भी दान लाभ देगा। एक बार दान करना शुरू करें। परमात्मा बरकत (लाभ) देने लगेगा। फिर दान की मात्रा बढ़ाते जाऐं। बताया है कि जब पाण्डवों को श्राप देने ऋषि दुर्वासा अठासी हजार ऋषियों की सेना लेकर गया। तब पाण्डव जंगल में तेरह वर्ष का वनवास काट रहे थे। उस समय परमात्मा श्री कष्ण रूप में पाण्डवों के पास गए। एक साग का पत्ता ही दान किया गया था। उसी से अठासी हजार ऋषि तप्त हो गए थे। इससे लघु दान और क्या हो सकता है? जितना घर पर बचा था, सब दान कर दिया। ऐसा दान जो सच्चे और समर्पण भाव से किया जाता है, पूरा लाभ देता है।(1205)

❖ पारख के अंग की वाणी नं. 1206 :-

गरीब, पीतांबरकूं पारि करि, द्रौपदी दिन्ही लीर। अंधेकू कोपीन कसि, धनी कबीर बधाये चीर।।1206।।

❖ आदि पुराण के अंग की वाणी नं. 503-508 :-

द्रौपदी न्हान चली है गंगा, सहंस सुहेली कै सत्संगा।
द्रौपदी गंग किया अस्नाना, धूपदीप दे कीना ध्याना।।503।।
अंधरे की कोपीन बहाई, ढूंढत बेर लगी रे भाई।
औघट घाट द्रौपदी मेला, देख्या अंधरे का सब खेला।।504।।
चीर फारि कोपीन बहाई, द्रौपदी अधंरे आगै ल्याई।
एक तो बही गंग की धारा, दूजैं और करी जहां त्यारा।।505।।
पांच सात कोपीन बहाई, द्रौपदी मुख सें बोलत नाहीं।
लकड़ी कै जब दिया लपेटा, अंधरे सेती हो गई भेटा।।506।।
चीर फारि पीतंबर डार्या, द्रौपदी चाली नगर मंझारा।
दु:शासन योधा महमंता, दश सहंस रापति बलवंता।।507।।
गरीब, नगन अंधरे कूं दिये, द्रौपदी चीर उतार।
कोटि सहंस हो गये, दु:शासन की बार।।508।।

❖ सरलार्थ :- राजा द्रोपद की बेटी कष्णा उर्फ द्रोपदी अपने पिता के घर पर कंवारी थी। उस नगर के साथ एक नदी बहती थी। राजा द्रोपद ने उस नहर के ऊपर अपनी रानियों तथा बेटी के स्नान के लिए एक पक्का घाट बनवा रखा था। उस घाट के आसपास कोई नर नहीं जा सकता था यानि उस घाट के आसपास नर का जाना वर्जित था। द्रोपदी प्रतिदिन नगर की सैंकड़ों सहेलियों को साथ लेकर स्नान करने जाती थी।

❖ एक सुबह एक अंधा साधु गलती से उस ओर स्नान करने चला गया। उसे पता नहीं था कि यहाँ आसपास कोई जनाना घाट भी है। उस घाट के नीचे की ओर जिस ओर जल बहकर जा रहा था (down stream), घाट से लगभग दो सौ फुट की दूरी पर स्नान करने लगा। उसके पास केवल एक कोपीन थी। (कोपीन एक कटिवस्त्र होता है जो छः इंच चौड़ा तथा दो-तीन फुट लंबा कपड़े का टुकड़ा है जिसे लंगोट भी कहते हैं।) दरिया में स्नान करते समय कोपीन पानी में बह गई। उसी समय द्रोपदी अपनी हजारों सहेलियों के साथ दरिया में स्नान करने के लिए वहाँ घाट पर पहुँच गई। बालिकाओं की आवाज सुनकर अंधे साधु को समझते देर नहीं लगी कि मैं किसी जनाना घाट के पास पहुँचा हूँ। उस समय साधु नग्न हो गया था। शर्म के मारे दरिया के अंदर छाती तक गहरे जल में चला गया तथा पानी पर हाथ मारने लगा कि हो सकता है कोई फटा-पुराना कपड़ा जल में बहता हुआ आ जाए। द्रोपदी भक्ति के संस्कारों युक्त थी। साधु को देखकर खुशी हुई कि साधु स्नान कर रहा है। हम भी स्नान कर लेते हैं। फिर साधु से परमात्मा की चर्चा सुनूँगी। आशीर्वाद लूँगी। आधा घंटा स्नान करके द्रोपदी घाट से बाहर आई और साधु को देखा कि कहीं चला न गया हो। साधु स्नान ही नहीं कर रहा था। कुछ खोज रहा था। द्रोपदी ने विचार किया। ध्यान लगाकर देखा तो पता चला कि साधु नंगा है। बाहर पटरी पर भी कोई कपड़ा नहीं है। द्रोपदी समझ गई कि साधु की कोपीन पानी में बह गई है। उसे यह भी ध्यान था कि यदि साधु के निकट जाकर बोलूंगी तो लड़की की आवाज सुनकर जल में और आगे भी जा सकता है। दरिया का तेज बहाव है, साधु मर जाएगा। लड़की ने अपनी स्वच्छ नई साड़ी जो प्रतिदिन बदलकर पहनती थी। राजा की लड़की थी। प्रतिदिन नई साड़ी पहनती थी। पुरानी दासियों (नौकरानियों) को देती थी। अपनी साड़ी से एक नौ इंच चौड़ा टुकड़ा साड़ी की चौड़ाई जितना लम्बा फाड़ा। जल में कोपीन के लिए छोड़ दिया। अंधा होने के कारण साधु देख नहीं पा रहा था। जिस कारण से कपड़े का टुकड़ा साथ से निकल जाता। लगभग सात टुकड़ी द्रोपदी देवी ने निःस्वार्थ फाड़कर साधु के लिए बहा दिए। परंतु बात नहीं बनी। फिर लड़की ने एक लंबी लकड़ी खोजी। उसके एक सिरे पर कोपीन के लिए कपड़ा फाड़कर लपेटा। अंधे साधु के हाथों से छू दिया। बाबा कपड़ा बहता आने की आशा में बार-बार हाथ पानी पर चला रहा था। साधु के हाथों पर कपड़ा लगा। तुरंत मजबूती से पकड़ लिया। अंधे के हाथ आँखों का कार्य करते हैं। संत को समझते देर नहीं लगी कि यह किसी बेटी की साड़ी का कपड़ा है। मेरी समस्या को समझकर पानी में डाला गया है। वह आसपास ही होगी। महात्मा ने कोपीन पर्दे पर बाँधी तथा भरे कण्ठ से भावुक होकर बोला कि बेटी! महा उपकार मेरे पर किया है। आज आपने मेरी इज्जत रखी है। मैं नंगा बाहर जाता, शर्म लगती या

दरिया में ही मर जाता। हे देवी! परमात्मा तेरी इज्जत रखे। तेरे को अनंत गुना चीर परमात्मा देवे।

(साधु बोले सहज स्वभाव, साधु का बोला मिथ्या न जावै।
देते को हरि देत हैं, जहाँ तहाँ से आन। अनदेवा माँगत फिरे, साहेब सुने ना कान।।)

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 1206 :-**

गरीब, पीतांबरकूं पारि करि, द्रौपदी दिन्ही लीर। अंधेकू कोपीन कसि, धनी कबीर बधाये चीर।।1206।।

❖ **सरलार्थ :- द्रोपदी ने अपनी साड़ी के कपड़े में से कपड़े का टुकड़ा (लीर) अंधे महात्मा को दान किया था। अंधे महात्मा ने कोपीन कसकर बाँधी। धन्य हुआ। धनी कबीर सबके मालिक कबीर जी ने द्रोपदी का चीर बढ़ाया। द्रोपदी कोपीन दान करके आशीर्वाद लेकर अपने नगर में चली गई।**

❖ **आदि पुराण के अंग की वाणी नं. 509-521 :-**

दुर्योधन राजा जहां बोले, द्रौपदी नग्न करौ पट ओले।
द्रौपदी तुंही तुंही करि टेरी, राखौ लाज मुरारी मेरी।।509।।
बिदुर कहै ये बंधू थारा, एकै कुल एकै परिवारा।
बिदुर के मुख लग्या थपेरा, तूं तौ पंडौं का है चेरा।।510।।
तूं तौ है दासी का जाया, भीष्म द्रोण जहां मुसकाया।
दुःशासन भरि हैं गल बांही, द्रौपदी ध्यान धर्या पद मांही।।511।।
गरीब, द्रौपदी टेरी ध्यान धरि, सुनौ पुरुष रघुबीर।
दुःशासन थाके जबै, अनंत कोटि भये चीर।।512।।
प्रियतम पूरण ब्रह्म बिनानी, मेरी लाज रखो प्रवानी।
गज ग्राह के तारन हारे, बिल्ली के सुत अग्नि उबारे।।513।।
प्रहलाद भक्त किये प्रवाना, नृसिंह रूप धर्या बिधि नाना।
पापी अधम को तारन हारे, मैं बांदी हूं पंच भर्तारे।।514।।
द्रौपदी टेर सुनी प्रवाना, द्रौपदी है कैलास समाना।
जैसैं अडिग अडोलं खंभा, ध्यान धर्या है पिंड हुरंभा।।515।।
रूक्मणि कर पकर्या मुसकाई, अनंत कहा मो कूं समझाई।
दुःशासन कूं द्रौपदी पकरी, मेरी भक्ति सकलमें सिखरी।।516।।
जो मेरी भक्ति पंछोंडी होई, हमरा नाम न लेवै कोई।
तन देही सें पासा डारी, पौंहचे सूक्ष्म रूप मुरारी।।517।।
द्रुपद सता के चीर बढाये, संख असंखौं पार न पाये।
खैंचत खैंचत खैंचि कसीसा, शिरपर बैठे हैं जगदीशा।।518।।
शंख चीर पितंबर झीनें, द्रौपदी कारण साहिब कीनें।
शंख चीर पीतंबर डारे, दुःशासन से योधा हारे।।519।।
गरीब, पंडौं सेती द्रोह करि, गये इकोतर बीर।
भीष्म द्रोण कर्ण कै, शीश चढी तकसीर।।520।।

भीष्म द्रोण कर्ण कुल द्रोहा, पंडौं सेती पकर्या लोहा।
दुर्योधन की संग्या कीन्हीं, बासुदेव की कल्प न चीन्ही।।521।।

❖ **सरलार्थ :- धतराष्ट्र तथा पांडू दो भाई थे। धतराष्ट्र बड़ा था तथा अंधा था। जिस कारण से छोटे भाई पांडू को राज्य दिया गया। पांडू इन्द्रप्रस्थ (दिल्ली) का राजा बना। धतराष्ट्र के एक सौ एक पुत्र जन्में। पांडू के पाँच। पांडू राजा पीलिये का रोगी था। उसकी मत्यु हो गई। उसके बड़े बेटे युद्धिष्ठिर को राजा नियुक्त किया गया।**

धतराष्ट्र के बड़े पुत्र का नाम दुर्योधन था। उससे छोटे का नाम दुःशासन।

यहाँ पर यह बताना अनिवार्य है कि द्रोपदी का विवाह अर्जुन पाण्डव के साथ हुआ था। पांडव पाँच भाई थे। 1. युद्धिष्ठिर 2. अर्जुन 3. भीम, ये कुंती रानी से जन्मे थे। पाण्डव राजा की दो रानियाँ थी।

माद्री पांडव राजा के साथ सती हो गई थी। तब तक अर्जुन का विवाह द्रोपदी से नहीं हुआ था। जब स्वयंवर में मछली की आँख में तीर मारकर अर्जुन ने द्रोपदी के विवाह की शर्त पूरी कर दी थी तो राजा द्रोपद ने अपनी बेटी द्रोपदी का विवाह अर्जुन से कर दिया। उस स्वयंवर में पाँचों पाण्डव गए थे। जब द्रोपदी को लेकर पाँचों पाण्डव घर आए तो कुंती माता महल के अंदर थी। दरवाजा बंद था। युद्धिष्ठिर ने आवाज लगाई, माता जी! दरवाजा खोलो। आपके पाँचों पुत्र आए हैं। एक अनमोल वस्तु लाए हैं। माता कुंती ने अंदर से ही कह दिया कि उस वस्तु को पाँचों बाँट लो। जब कुंती ने बाहर आकर देखा तो एक बहू लाए हैं। माता ने कहा कि बेटा! माता के वचन का पालन करना होगा। यह तुम पाँचों की पत्नी रहेगी।

राजा युद्धिष्ठिर ने एक अति सुंदर महल पूर्ण रूप से शीशे (Glass) का बनवाया। एक दिन द्रोपदी सिर पर घड़ा लेकर प्रतिदिन की तरह तालाब से पीने का पानी लेकर घर पर आई थी। उसी समय दुर्योधन भी पाण्डवों के शीशमहल को देखने के लिए आया तो उसकी टक्कर शीशे की दीवार से हो गई क्योंकि पता नहीं लगता था कि आगे खाली स्थान है या दीवार है। टक्कर लगने से दुर्योधन धड़ाम से गिरा। द्रोपदी जोर-जोर से हँसी तथा व्यंग्य किया कि अंधे की संतान अंधी ही होती है। इस बात का दुर्योधन ने बहुत दुःख माना तथा प्रतिशोध लेने का अवसर तलाशने लगा।

दुर्योधन की आयु भी युद्धिष्ठिर की आयु के समान थी। धतराष्ट्र के पुत्रों को कौरव कहते थे। पांडू के पुत्रों को पाण्डव कहते थे। कौरवों ने विचार किया कि दिल्ली की गद्दी पर हमारा अधिकार है क्योंकि हमारे पिता जी चाचा पांडू से आयु में बड़े थे। राजनीति का नियम है कि राजा का जो बड़ा पुत्र होगा, वह राजगद्दी पर बैठेगा। वह राजा होगा। दुर्योधन के मामा का नाम शकुनि था जो एक पैर से लंग करके (लंगड़ाकर) चलता था। उसने अपने भानजों को उकसाया कि राज पर आपका अधिकार है। जैसे-तैसे राज्य प्राप्त करो। आपको सदा पाण्डवों का गुलाम बनकर रहना होगा। मैं यह नहीं देख सकता। एक योजना बताई कि युद्धिष्ठिर राजा को जूआ खेलने के लिए खुश करो। मैं (शकुनि) युद्धिष्ठिर को हेरा-फेरी करके हरा दूँगा। यह मेरी जिम्मेदारी है। युद्धिष्ठिर जूआ खेलने को राजी हो गया। बार-बार

हारता चला गया। राज्य भी हार गया। अंत में शकुनि ने कहा कि द्रोपदी को दाँव पर लगा दे, हो सकता है सब लौट आए। युद्धिष्ठिर ने द्रोपदी (अपनी पत्नी) को भी दाँव पर लगा दिया। उसमें भी युद्धिष्ठिर हार गया। शर्त थी कि जो सब हार जाएगा, वह पूरा परिवार बारह वर्ष वन में निवास करेगा। किसी बस्ती में नहीं रहेगा। एक वर्ष अज्ञातवास में रहना होगा। यदि तेरहवें वर्ष अज्ञातवास में पता लग गया तो फिर से बारह वर्ष वनवास तथा एक वर्ष अज्ञातवास की सजा होगी। यदि तेरहवें वर्ष वाला अज्ञातवास में पता नहीं लगा तो दुर्योधन का राज्य युद्धिष्ठिर को लौटाना होगा।

जब युद्धिष्ठिर द्रोपदी को भी खो बैठा तो दुर्योधन का दाँव लग गया। अब द्रोपदी दुर्योधन के कब्जे में थी। उसने अपने से छोटे भाई दुःशासन से कहा कि उस अर्जुन की रांडी द्रोपदी को सिर के बाल पकड़कर घसीटकर सभा में ला। नंगी करके मेरी जांघ पर बैठा दे। हम तो अंधे की संतान हैं। हम अंधे हैं, हमें कुछ दिखाई नहीं देता।

द्रोपदी को यह बात दौड़कर जाकर नौकरानी ने बताई कि दुर्योधन ने राजा युद्धिष्ठिर को जूआ खिलाकर सब राज्य तथा आपको भी जीत लिया है। आपको भरी सभा में नंगा किया जाएगा। दुर्योधन ने अपने भाई दुःशासन से कहा है कि द्रोपदी को सिर के बालों से (केश) पकड़कर घसीटकर लाओ। द्रोपदी ने पूछा कि सभा में कौरवों के अतिरिक्त और कौन-कौन हैं? नौकरानी ने बताया कि दादा भीष्म, गुरू द्रोणाचार्य, काका कर्ण, काका विदुर, पाँचों भाई (पाण्डव) तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति सभा में हैं। द्रोपदी ने कहा कि सभा में दादा भीष्म, काका कर्ण, काका (चाचा) विदुर, गुरू द्रोणाचार्य व मेरे पति विद्यमान हैं तो दुर्योधन की क्या मजाल मुझे छूने तक की? इतने में दुःशासन आया और बोला कि चल तुझे दिखाऐंगे हम अंधे हैं या आँखों वाले। तू हमारी नौकरानी है। द्रोपदी ने बहुत विरोध किया, परंतु दुःशासन बलवान था। उसमें दस हजार हाथियों के समान शक्ति थी। द्रोपदी के केश पकड़े। घसीटकर सभा में ले गया।

दुर्योधन ने कहा कि दुःशासन नंगी कर हरामजादी को। मेरी जांघ पर बैठा दे। द्रोपदी ने अपने पाँचों पतियों की ओर देखा। उन्होंने नीची गर्दन कर ली। फिर भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य की ओर देखा। उस समय दुःशासन ने द्रोपदी का हाथ पकड़ लिया था क्योंकि द्रोपदी साड़ी को मजबूती के साथ दोनों हाथों से पकड़े हुए थी। किसी ने भी दुःशासन व दुर्योधन से नहीं कहा कि आप गलत कर रहे हो। पंचायत में अबला के साथ अभद्र व्यवहार न करो। यदि भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कर्ण में से एक भी खड़ा होकर कह देता कि बस बहुत हो चुकी है। छोड़ दो अबला को, वरना ठीक नहीं रहेगा। किसी की हिम्मत नहीं थी कि द्रोपदी को हाथ लगा देता। परंतु इनमें से किसी ने कुछ भी नहीं कहा। नंगी होने का इंतजार करने लगे। कलमुँहों ने नजर भी नीची नहीं की। द्रोपदी के ऊपर टिका रखी थी। उस सभा में केवल इंसान विदुर था जो भक्त आत्मा पंचायती था। विदुर जी खड़े हुए और बोले :-

विदुर कहै ये बंधू थारा, एकै कुल एकै परिवारा।।
विदुर के मुख पर लगा थपेड़ा, तूं तो है पांडवों का चेरा।।

तूं तो है बांदी का जाया, भीष्म, द्रौण, कर्ण मुस्काया।।

अर्थात् विदुर जी ने कहा कि हे दुर्योधन! आप अपनी बेइज्जती आप ही कर रहे हो। पांडव आपके चचेरे भाई हैं। आपकी और इनकी इज्जत एक है। एक कुल है, एक परिवार है। ऐसा गलत कर्म ना करो।

दुर्योधन ने कहा कि हे दुःशासन! विदुर को थप्पड़ मार। यह सदा से पांडवों का पक्ष लेता है।

दुःशासन ने अपने चाचा विदुर के मुख पर थप्पड़ मारा और बोला कि तू तो पांडवों का (चेरा) शिष्य है। उनका गुलाम है। तू तो बांदी (नौकरानी) से जन्मा है। इसलिए तेरे क्षत्री वाले विचार नहीं हैं। दुःशासन से ये बात सुनकर दादा भीष्म, गुरू द्रोणाचार्य तथा कर्ण मुस्कुराये। विदुर जी सभा छोड़कर चला गया। वह अत्याचार तथा नंगापन नहीं देख पाया।

एक सच्चे पंचायती का कर्तव्य बनता है कि वह सभा में सत्य का पक्ष ले। यदि कोई नहीं मानता है तो सभा छोड़कर चला जाए। विदुर जी ने कर्तव्य पूरा किया। जब द्रोपदी ने देखा कि मैं जिनको अपना संरक्षक मानती थी। जिन बड़े बुजुर्गों पर विश्वास करती थी कि ये कभी अबला को नंगा नहीं होने देंगे। यह मेरी भूल थी। अपना तो परमात्मा है। द्रोपदी श्री कष्ण को गुरू बनाए हुए थी। आपत्ति में गुरूजी को याद किया जाता है। गुरू में आध्यात्मिक इंटरनैट लग जाता है। उसके माध्यम से भक्त की पुकार परमात्मा के पास जाती है। परमात्मा उस कॉल (Call) को धर्मराज के पास डाइवर्ट कर देता है। धर्मराज उस जीवात्मा का पुण्य देखता है। उस पुण्य को परमात्मा के पास तुरंत ई-मेल कर देता है। परमात्मा देखता है कि इसके कौन-से धर्म-कर्म या भक्ति के कारण साधक का संकट निवारण किया जा सकता है? उस आत्मा (द्रोपदी) के खाते में अंधे महात्मा को दिए लीर (छोटा-सा कपड़े का टुकड़ा) के प्रतिफल में सहायता करनी बनती है। उसी समय कबीर परमेश्वर जी सुक्ष्म रूप में द्रोपदी के सिर पर कमल के फूल पर विराजमान हो गए।

उस समय श्री कष्ण जी तो द्वारिका में अपनी पत्नी रूकमणी के साथ चौपड़ खेल रहे थे। श्री कष्ण जी चौपड़ पासे डालकर अचानक बोले "अनंत" और ऊपर को हाथ उठा लिया। यह परमात्मा कबीर जी ने रिमोट से बुलवाया था। गुरू के माध्यम से परमात्मा की शक्ति संकट वाले साधक के पास जाती है। पासे डालकर बोलना तो चाहिए था कच्चे बारह या पक्के अठारह, परंतु बोलने लगे अनंत-अनंत। तब रूकमणी ने श्री कष्ण जी का (कर) हाथ पकड़ा जो आशीर्वाद के लिए उठा हुआ था। पूछा कि यह अनंत किसलिए कहा? मुझे समझाओ। श्री कष्ण की दिव्य दष्टि परमात्मा ने खोल दी। कहा कि दुःशासन ने द्रोपदी को पकड़ रखा है। उसका चीर उतारना चाहता है। हमारी भक्ति तीन लोक में सबसे ऊँची (सकल में शिखरी) है। हमारे भक्त की हार हो गई तो हमारा नाम ना लेवे कोई।

{यह सब कुछ परमात्मा कबीर जी कष्ण जी से बुलवा रहे थे ताकि परमात्मा में आस्था मानव की बनी रहे। काल चाहता है कि मानव गलत साधना करे। उससे उसको कोई लाभ न हो। नास्तिक हो जाए। अंधा बाबा की भूमिका भी स्वयं परमात्मा कबीर जी ने की थी। जिस कारण से उस साड़ी के कपड़े के टुकड़े का इतना अधिक फल मिला। यदि कबीर

परमात्मा द्रोपदी की सहायता न करता तो द्रोपदी नंगी हो जाती। परमात्मा कबीर जी ने परमात्मा में आस्था बनाए रखने के लिए यह अनहोनी करनी थी। द्रोपदी के चीर को बढ़ाकर विश्व विख्यात चमत्कार कर दिया जो आज तक परमात्मा का गुणगान हो रहा है। कृष्ण जी के तो अनेकों भक्त हैं। किसी अन्य के लिए ऐसा चमत्कार नहीं हुआ। मेरे (संत रामपाल दास की) लोहे के तारों की जाली जो खिड़कियों पर मच्छरों के बचाव के लिए लगाई जाती है, वह कबीर परमात्मा ने लगभग एक फुट बढ़ाई। मेरे शिष्यों को कबीर परमात्मा की भक्ति से अनेकों अनहोनी हो रही हैं। उस समय जब द्रोपदी रानी का चीरहरण हो रहा था। कृष्ण जी तो द्वारिका में रूकमणी के साथ चौपड़ खेल रहे थे। रूकमणी ने सबको बताया कि कृष्ण ऐसे-ऐसे बोले। वे तो चौपड़ भी खेलते रहे, द्रोपदी का चीर भी बढ़ा दिया। संत गरीबदास जी की दिव्य दृष्टि खुली हुई थी। वे जो देख रहे थे, वह बता रहे थे। वास्तव में सब परमात्मा कबीर जी कर रहे थे। यह संत गरीबदास जी ने बार-बार स्पष्ट किया है कि :-

गरीब, भक्ति–मुक्ति के दाता सतगुरू, भटकत प्राणी फिरंदा।
उस साहेब के हुकम बिना, नहीं तरूवर पात हिलंदा।।
राम कृष्ण सतगुरू सहजादे, भक्ति हेत यूं हुए प्यादे।।

अर्थात् संत गरीबदास जी ने स्पष्ट किया है कि सतगुरू कबीर जी भक्ति-मुक्ति के दाता हैं। और कोई देव न भक्ति दे सकता, न ही मुक्ति। उस कबीर (साहेब) परमात्मा के आदेश बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। राम-कृष्ण भी परमात्मा की भक्ति करके कुछ शक्ति प्राप्त करके प्रसिद्धि पाए हुए थे। उनके आदेश से पृथ्वी पर भक्ति को कायम रखने के लिए आए थे। वे परमात्मा कबीर जी के शहजादे यानि राजकुमार थे क्योंकि इस विष्णु वाली आत्मा ने किसी मानव जन्म में परमात्मा कबीर जी की शरण में रहकर अच्छी साधना की थी। दुर्भाग्य से पार नहीं हो पाए। काल ब्रह्म के जाल में फँसे रह गए। इस आत्मा की सत्य भक्ति अधिक थी। इसको अपनी पत्नी दुर्गा देवी द्वारा जन्म देकर विष्णु पद दे रखा है। इसकी पूर्व जन्म की भक्ति की कमाई पूर्ण रूप से नष्ट करवाकर पृथ्वी के ऊपर जन्म देगा। एक मानव जन्म भी हो सकता है। फिर चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के जन्म भोगेगा। प्रसंग द्रोपदी के चीरहरण का चल रहा है।}

श्री कृष्ण तो द्वारिका में चौपड़ खेल रहा था। परमात्मा कबीर (मुरारि) पापों के शत्रु द्रोपदी के सिर पर सुक्ष्म रूप में विराजमान हुए। दुःशासन चीर खेंच-खेंचकर थक गया। चीर का अंत नहीं हुआ। दुःशासन दस हजार हाथियों जितनी शक्ति वाला, द्रोपदी उसके सामने कमल के फूल जैसी नाजुक थी। फिर भी परमात्मा की भक्ति की शक्ति यानि साधु रूप कबीर परमात्मा को दिए दान के कारण चीर का अंत नहीं हुआ। द्रोपदी श्री कृष्ण की शिष्य थी। जिस कारण से उसने अपने गुरू की महिमा गाई कि मेरे गुरूजी के कारण मेरी इज्जत सुरक्षित रही है। वाणी में भी प्रमाण है कि द्रोपदी कृष्ण से अर्ज नहीं कर रही थी। वह तो परमात्मा से प्रार्थना कर रही थी। कह रही थी कि हे प्रिय पूर्णब्रह्म जी! मेरी लाज रखना। आपने सत्ययुग में गज-ग्राह (मगरमच्छ) को पार किया। अग्नि से बिल्ली के बच्चों की रक्षा की। नरसिंह रूप धारण करके भक्त प्रहलाद की रक्षा की थी। हे पूर्ण परमात्मा! मेरी भी

इज्जत रखो। द्रोपदी की लाज परमात्मा कबीर जी ने रखी। सभा में जिम्मेदार होने के कारण भीष्म, द्रोणाचार्य तथा कर्ण ने अपना कर्तव्य नहीं निभाया। जिस कारण से इन तीनों को महाभारत के युद्ध में दंड मिला। बुरी मौत मरे। भक्तमति टटीरी के अण्डों की रक्षा की थी। दान का फल द्रोपदी को मिला। परंतु सतनाम-सारनाम की दीक्षा बिना पूर्ण मोक्ष नहीं मिलता। पाँचों पाण्डवों की भी पूर्व जन्म के शुभ कर्मों के कारण महाभारत में रक्षा परमात्मा कबीर जी ने की, परंतु भक्ति नहीं हुई। पाँचों पाण्डव स्वर्ग गए। फिर नरक में गिरे। युद्धिष्ठिर ने झूठ बोला था कि अश्वथामा मर गया। उसका दंड भी उसे नरक में कुछ समय रहकर भोगना पड़ा।६

❖ **पारख के अंग का सरलार्थ किया जा रहा है :-**

❖ **पारख के अंग की वाणी नं. 1207-1214 :-**

गरीब, देना जग में खूब है, दान ज्ञान प्रवेश।
ब्रह्माकूं तौ जगि करि, बतलाई है शेष।।1207।।
गरीब, दान ज्ञान ब्रह्मा दिया, सकल सृष्टिकै मांहि।
सूंम डूंम मांगत फिरैं, जिन कुछि दीन्ह्या नांहि।।1208।।
गरीब, दान ज्ञान प्रणाम करि, होम जो हरि कै हेत।
यज्ञ पंचमी तुझ कहूं, ध्यान कमल सुर सेत।।1209।।
गरीब, धर्म कर्म जगि कीजिये, कूवें बाय तलाव।
इच्छा अस्तल स्वर्ग सुर, सब पृथ्वी का राव।।1210।।
गरीब, भूख्यां भोजन देत हैं, कर्म यज्ञ जौंनार।
सो गज फीलौं चढत हैं, पालक कंध कहार।।1211।।
गरीब, कूवें बाय तलावडी, बाग बगीचे फूल।
इंद्रलोक गन कीजियें, परी हिंदोलौं झूल।।1212।।
गरीब, जती सती इंद्री दमन, बिन इच्छा बाटंत।
कामधेनु कल्प वृक्ष पद, तास बार दूझंत।।1213।।
गरीब, स्वर्ग नंदिनी दर बंधै, बिन इच्छा जौंनार।
गण गंधर्व और मुनिजन, तीनी लोक अधिकार।।1214।।

❖ **सरलार्थ :- इन वाणियों में कहा है कि संसार में सबसे उत्तम दान यथार्थ अध्यात्म ज्ञान देना है क्योंकि तत्वज्ञान से पूर्ण परमात्मा की भक्ति का ज्ञान होता है। पूर्ण मोक्ष मिलता है। जीव सदा सुखी हो जाता है। अन्य दान भी आवश्यक है जिनसे अस्थाई सुख मिलता है। वाणी नं. 1209 पारख के अंग में पाँच यज्ञ करना अनिवार्य बताया है। जो दान नहीं करते, वे अगले जन्म में जब कभी मानव (स्त्री-पुरूष) का जन्म मिलता है, अति निर्धन होते हैं।**

❖ **दान-धर्म का फल बताया है कि तालाब, कुँए तथा बावड़ी (बगीची) बनवाने से एक अश्वमेघ यज्ञ के समान पुण्य मिलता है। उससे यदि स्वर्ग जाने की इच्छा करें तो स्वर्ग में कुछ समय (सुर) देव पद मिलता है। फिर अपनी करनी भोगकर पृथ्वी पर पशु-पक्षियों के जन्म प्राप्त करता है। यदि पृथ्वी पर राज्य की इच्छा करता है तो उपरोक्त पुण्य के कारण**

सारी पथ्वी का राजा बनता है। फिर नरक में जाता है।

❖ जो भूखे व्यक्तियों को भोजन खिलाता है। सारी आयु घर आए अतिथि को भोजन देते हैं या धर्म-भण्डारे करके भोजन करवाते हैं। वह अगले जन्म में जब कभी मानव जन्म मिलेगा, तब धनी सेठ बनेगा। (गज) हाथी व पालकी की सवारी करेगा। परंतु मोक्ष नहीं होगा।

❖ कुँए, बाग, तालाब बनवाने से इन्द्र लोक में गण की पदवी प्राप्त करता है। परंतु मोक्ष नहीं होता है। यह वाणी नं. 1209 के सरलार्थ में इसी अंग में पहले लिख दिया है।

❖ अन्य दान :- ध्रुव भक्त की माता जी सुनीती ने पुत्र को जन्म दिया। यह भी दान है। फिर पुत्र को ज्ञान दिया कि परमात्मा राज भी देता है। स्वर्ग भी देता है। भक्त प्रहलाद ने माता के उपदेश अनुसार परमात्मा से राज प्राप्ति के लिए साधना की। नारद जी से दीक्षा ली, सफल हुआ।

❖ पतिब्रता पत्नी का मिलना दुर्लभ है। जो अन्य पुरूष से प्रेम न करे। उस घर में संकट कम आते हैं। भक्त शेख फरीद के परमात्मा के कुँए में दर्शन हुए।

भक्त शेख फरीद की कथा

भक्त फरीद जी का जन्म मुसलमान धर्म में शेख कुल में हुआ। शेख फरीद बचपन में बहुत चंचल थे। गली में खेलने जाता था तो बच्चों की पिटाई कर देता। उलाहने आते, माता दुःखी हो जाती थी। माता ने विचार किया कि फरीद को खजूर बहुत प्रिय है। इसे निमाज करने की कहती हूँ। माता ने योजना अनुसार फरीद से कहा कि बेटा! अल्लाह की निमाज किया कर। फरीद बोला कि अल्लाह (प्रभु) क्या देगा? माता ने कहा कि अल्लाह खजूर देता है। फरीद बोला कि बता कब करनी है निमाज? माता जब घर के कार्य में व्यस्त होती थी तो फरीद बाहर भाग जाता था। माता ने वही समय निमाज के लिए बताया। एक चद्दर बिछा दी तथा कहा कि आँखें बंद करके अल्लाह खजूर दे, अल्लाह खजूर दे। ऐसे करते रहना। माता ने एक वक्ष के नीचे चद्दर बिछाई और कहा कि जब तक तेरे ऊपर धूप न आए, आँखें बंद रखना और निमाज करते रहना। जब फरीद आँखें बंद कर लेता तो माता ताड़ वक्ष के पत्ते पर खजूर रखकर चद्दर के एक कोने के नीचे रख देती थी। फरीद ने धूप आने पर आँखें खोली। देखा तो खजूर नहीं मिला। उठकर माता के पास आया। बोला आपने झूठ बोला, मैं कभी निमाज नहीं करूँगा। अल्लाह ने खजूर नहीं दिया। माता जी ने कहा कि बेटा! अल्लाह गुप्त रूप में सब कार्य करता है। चद्दर के नीचे देख, खजूर अवश्य मिलेगा। फरीद ने चद्दर उठाई तो सच में खजूर रखा था। खुशी-खुशी खजूर खाया। माता से कहा कि अब कब करनी है निमाज। माता बोली कि मैं बता दिया करूँगी जब निमाज करनी होगी। प्रतिदिन काम के समय चद्दर बिछा देती। फरीद आँखें बंद करके बैठ जाता। माता खजूर रख दिया करती। एक दिन माता जी खजूर रखना भूल गई। फरीद ने धूप आते ही आँखें खोली। खजूर (टटोली) खोजी। चद्दर के नीचे खजूर प्रतिदिन की तरह रखी थी। फरीद खजूर खाता हुआ घूम रहा था। माता विचार करने लगी कि आज मेरे से

बड़ी गलती हो गई। फरीद अब कभी नहीं मानेगा। परेशान करेगा। फरीद खजूर खाता-खाता माता जी के पास आया। माता ने पूछा कि बेटा! खजूर कहाँ से लाया? बालक फरीद बोला! माँ अल्लाह तो निमाज के वक्त प्रतिदिन खजूर देता है। माँ बोली कि सच बता। माँ सच बताता हूँ। देख! इस पत्ते में खजूर अल्लाह रखकर जाता है। माता को भी समझ आई कि यह सामान्य बालक नहीं है। बड़ा होकर फरीद घर त्यागकर एक फक्कड़-फकीर का शिष्य बनकर आश्रम में रहने लगा। वह फकीर (साधु) सिद्धि प्राप्त था। हुक्का पीता था। आश्रम में सात शिष्य थे। प्रतिदिन एक सेवक सब सेवा करता था। गुरूजी का भोजन बनाना। भोजन के तुरंत बाद हुक्का भरकर गुरूजी को देना। कपड़े धोना। शेख फरीद दिलोजान से गुरूजी की तथा आश्रम की साफ-सफाई की सेवा करता था। गुरूजी शेख फरीद की बहुत प्रशंसा करते थे जो अन्य शिष्यों को खटकती थी।

उन सबने मिलकर शेख फरीद को गुरूजी की नजरों से गिराने का विचार किया। षड़यंत्र रचा कि बारिश का मौसम है। गुरूजी भोजन के तुरंत बाद हुक्का पीते हैं। यदि हुक्का भरने में देरी कोई शिष्य कर देता तो उसे डंडों से पीटता था। कई दिन तक सेवा से वंचित कर देता था। शेख फरीद कभी गलती में नहीं आए थे। एक दिन शेख फरीद ने भोजन बनाया। अग्नि प्रतिदिन की तरह तैयार कर रखी थी। भोजन गुरूजी को खिलाया। चिलम में आग रखने के लिए चुल्हे के पास गया तो देखा आग बुझ चुकी थी। आग नहीं थी। गुरूजी नाराज न हो जाऐं, इस भय से शेख फरीद दौड़ा-दौड़ा गाँव में गया जो आधा कि.मी. की दूरी पर थी। एक माई चुल्हे में अग्नि सुलगाकर रोटी बना रही थी।

शेख फरीद ने कहा, माई! आग दे। गुरू जी का हुक्का भरना है। हमारी आग बंद हो गई है। गुरूजी नाराज हो गए तो जीवन नरक बन जाएगा। माई ने दुःखी होकर फूँक मार-मारकर अग्नि जलाई थी। मौसम बारिश का था। माई बोली कि आग आँखें फूटने से मिलती है। मैंने आँखें फुड़वाकर अग्नि तैयार की है। तू भी आँखें फूड़वा, तब आग मिलेगी। शेख फरीद को अपनी एक आँख में चिमटा मारा। आँख निकालकर माई के पास रख दी और बोला कि लो माई! आँख फोड़ ली है। अब तो आग दे दो। वह औरत घबरा गई। उसे पता था कि वह फकीर सिद्ध पुरूष है। वह मुझे हानि करेगा। तुरंत चुल्हे से अग्नि निकालकर बाहर कर दी। शेख फरीद आग चिलम में रखकर दौड़ा। फकीर दो आवाज लगाता था। कहता था कि हुक्का लाओ। शिष्य का नाम पुकारता था। तीसरी बार तो डंडा लेकर मारने चलता था।

गुरूजी ने पहली आवाज लगाई। तब शेख फरीद आधे रास्ते में था। दूसरी लगाई, तब आश्रम में प्रवेश कर चुका था। गुरूजी ने दूसरी बार कहा कि हे शेख फरीद! कहाँ मर गया। शेख फरीद बोला कि आ गया गुरूजी। शेख फरीद ने फूटी आँख पर कपड़ा बाँध रखा था। गुरूजी को बताया कि बारिश की वजह से आश्रम में आग बुझ गई थी। दौड़कर नगरी से लाया हूँ। गुरूजी को अंधेरे में कुछ कम दिखाई देता था। शेख फरीद की आँख पर कपड़ा बँधा देखकर पूछा कि आँख को क्या हो गया? फरीद बोला कि कुछ नहीं गुरूजी। आपकी कपा से सब ठीक है। गुरूजी ने भी अधिक ध्यान नहीं दिया। सुबह वह औरत शेख फरीद

की आँख एक मिट्टी के ढ़क्कन पर रखकर आश्रम लाई। फकीर जी से अपनी गलती की क्षमा माँगी। बताया कि आपका शिष्य कल शाम को आग लेने गया था। बोला माई आग दे दे। आश्रम की आग बुझ गई है। गुरूजी भोजन खाते ही हुक्का पीते हैं। हुक्का भरने में देरी हो जाने पर नाराज हो जाते हैं। कई दिन सेवा नहीं देते हैं। यदि गुरूजी नाराज हो गए तो मेरा जीवन नरक बन जाएगा। महिला बोली कि मैंने बड़ी मुश्किल से आग तैयार की थी। मेरी आँख धुँऐं से लाल हो गई थी। फूँक मार-मारकर परेशान थी। मैंने भक्त से कह दिया कि आग आँखें फुड़वाकर आग बनती है। आँखें फुड़वा, तब आग मिलेगी। इसने सच में चिमटे से आँख निकालकर रख दी। बोला कि यदि गुरूजी नाराज हो गए तो आँखें किस काम की? यह आँख मैं लेकर आई हूँ। गुरूजी ने शेख फरीद को बुलाया। कहा कि आँख का कपड़ा खोल। कपड़ा खोला तो आँख स्वस्थ थी। परंतु कुछ छोटी थी। माई ने यह सब देखा तो गाँव जाकर फकीर की प्रसिद्धि की कि बड़ा चमत्कारी साधु है। मेरे सामने आँख ठीक कर दी। गुरूजी ने शेख फरीद को सीने से लगाया। आशीर्वाद दिया कि तेरी साधना सफल हो।

गुरूजी की मत्यु के पश्चात् शेख फरीद ने आश्रम त्याग दिया। गुरूजी ने तप करने से मोक्ष बताया था। जैसा गुरूजी का आदेश था, शेख फरीद पूरी निष्ठा से पालन कर रहा था। बारह वर्ष तक तो कुँए में उल्टा लटक-लटककर तप किया। उस दौरान केवल सवामन (पचास किलोग्राम) अन्न खाया था जो नाम मात्र था। शरीर अस्थिपिंजर बन गया था। शेख फरीद कुछ देर कुँए से बाहर बैठता था। एक दिन (कागों) कौओं ने उसे मत जानकर उसकी आँखें खाने के लिए उसके माथे पर बैठ गए। शेष शरीर पर माँस नहीं था। फरीद बोला! हे कौओ! आप मेरी दो आँखें छोड़कर शरीर का सारा माँस खा लो। मैं परमात्मा देखना चाहता हूँ। इसलिए मेरी आँखें-आँखें छोड़ दो। जब फरीद बोला तो कौवे उड़ गए। शेख फरीद रस्से से पैर बाँधकर प्रतिदिन की तरह कुँए में लटक गया। परमात्मा कबीर जी एक जिंदा बाबा के वेश में कुँए पर आए तथा रस्सा पकड़कर फरीद को कुँए से निकालने लगे। शेख फरीद बोला भाई! आप मुझे ना छेड़। तू अपना काम कर, मैं अपना काम कर रहा हूँ। परमात्मा बोले कि आप क्या कर रहे हो? फरीद बोला कि मैं परमात्मा का दर्शन करने के लिए घोर तप कर रहा हूँ। परमात्मा ने कहा कि मैं ही परमात्मा अल्लाह अकबर हूँ। फरीद बोला! भाई मजाक मत कर। परमात्मा बेचगुन (निराकार) है। वह मानुष रूप में नहीं आता। परमात्मा ने कहा कि आप कहते हैं कि परमात्मा निराकार है। दूसरी ओर कह रहे हो कि परमात्मा के दर्शन (दीदार) के लिए घोर तप कर रहा हूँ। कहते हैं घाम का और ज्ञान का तो चमका-सा ही लगता है। शेख फरीद ने चरण पकड़ लिए। तत्वज्ञान समझा। कबीर परमात्मा के द्वारा बताई साधना करके कल्याण करवाया।

❖ वाणी नं. 1217-1248 का सरलार्थ :- इन वाणियों में पहले वाला प्रकरण संक्षिप्त में कहा है।

"मृत लड़के कमाल को जीवित करना"

शेखतकी महाराजा सिकंदर से मुख चढ़ाए फिर रहा था। सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है पीर जी? शेखतकी ने कहा कि क्या तुझे बात नहीं मालूम? सिकंदर ने पूछा कि क्या बात है? शेखतकी ने कहा कि इस कबीर काफिर को साथ किसलिए रखा है? सिकंदर ने कहा कि ये तो भगवान (अल्लाह) है। शेखतकी ने कहा कि अच्छा अल्लाह अब आकार में आने लग गया। अल्लाह कैसे है? सिकंदर ने कहा कि पहले तो अल्लाह ऐसे कि मेरा रोग ऐसा था कि किसी से भी ठीक नहीं हो पा रहा था। इस कबीर प्रभु ने हाथ ही लगाया था मैं स्वस्थ हो गया। शेखतकी ने कहा कि ये जादूगर होते हैं। सिकंदर ने फिर कहा दूसरा भगवान ऐसे है कि मैंने उनके गुरुदेव का सिर काट दिया था और उन्होंने उसे मेरी आँखों के सामने तुरंत जीवित कर दिया। शेखतकी ने कहा कि अगर यह कबीर अल्लाह है तो मैं इसकी परीक्षा लूँगा। यदि कबीर जी मेरे सामने कोई मुर्दा जीवित करे तो इसे अल्लाह मान लूँगा। नहीं तो दिल्ली जाकर मैं पूरे मुसलमान समाज को कह दूँगा कि यह राजा हिन्दु हो गया है। सिकंदर लोधी डर गया कि कहीं ऐसा न हो कि यह जाते ही राज पलट दे। (राज को देने वाला पास बैठा है और उस मूर्ख से डर लगता है।) राजा ने शेखतकी से कहा कि आप कैसे प्रसन्न होंगे। शेखतकी ने कहा कि मैं तब प्रसन्न होऊँगा जब मेरे सामने यह कबीर कोई मुर्दा जीवित कर दे। साहेब से प्रार्थना हुई तो कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। (कबीर साहेब ने सोचा कि यह अनाड़ी आत्मा शेखतकी है। अगर यह मेरी बात मान गया तो आधे से ज्यादा मुसलमान इसकी बात स्वीकार करते हैं। क्योंकि यह दिल्ली के बादशाह का पीर है और अगर यह सही ढंग से मुसलमानों को बता देगा तो बेचारी भोली आत्माऐं इन गुरूओं पर आधारित होती हैं।)

इसलिए कहा कि ठीक है शेखतकी ढूँढ़ ले कोई मुर्दा। सुबह एक 10-12 वर्ष की आयु के लड़के का शव पानी में तैरता हुआ आ रहा था। शेखतकी ने कहा कि वह आ रहा है मुर्दा, इसे जिन्दा कर दो। कबीर साहेब ने कहा पहले आप प्रयत्न करो, कहीं फिर पीछे नम्बर बनाओ। उपस्थित मन्त्रियों तथा सैनिकों ने कहा कि पीर जी आप कोशिश करके देख लो। शेखतकी जन्त्र-मन्त्र करता रहा। इतने में वह मुर्दा तीन फर्लांग आगे चला गया। शेखतकी ने कहा कि यह कबीर चाहता था कि यह बला सिर से टल जाए। कहीं मुर्दे जीवित होते हैं? मुर्दे तो कयामत के समय ही जीवित होते हैं। कबीर साहेब बोले महात्मा जी आप बैठ जाओ, शान्ति करो। कबीर साहेब ने उस मुर्दे को हाथ से वापिस आने का संकेत किया। बारह वर्षीय बच्चे का मृत शरीर दरिया के पानी के बहाव के विपरित चलकर कबीर जी के सामने आकर रूक गया। पानी की लहर नीचे-नीचे जा रही और शव ऊपर रूका था। कबीर साहेब ने कहा कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर हुक्म से मुर्दे में प्रवेश कर और बाहर आ। कबीर साहेब ने इतना कहा ही था कि शव में कम्पन हुई तथा जीवित होकर बाहर आ गया। कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया। "बोलो कबीर परमेश्वर की जय"

सर्व उपस्थित जनों ने कहा कि कबीर साहेब ने तो कमाल कर दिया। उस लड़के का

नाम कमाल रख दिया। लड़के को अपने साथ रखा। अपने बच्चे की तरह पालन-पोषण किया और नाम दिया। उसके बाद दिल्ली में आ गए। सभी को पता चला कि यह लड़का जो इनके साथ है यह परमेश्वर कबीर साहेब ने जीवित किया है। दूर तक बात फैल गई। शेखतकी की तो माँ सी मर गई सोचा यह कबीर अच्छा दुश्मन हुआ। इसकी तो और ज्यादा महिमा हो गई।

शेखतकी की इर्ष्या बढ़ती ही चली गई। उसकी तेरह वर्षीय लड़की को मृत्यु पश्चात् कब्र में जमीन में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा यदि कबीर मेरी लड़की को जो कब्र में दफना रखी है। अगर उसको जीवित करेगा तो मैं इसे अल्लाह मान लूँगा।

"शेखतकी की मृत लड़की कमाली को जीवित करना"

शेखतकी ने देखा कि यह कबीर तो किसी प्रकार भी काबू नहीं आ रहा है। तब शेखतकी ने जनता से कहा कि यह कबीर तो जादूगर है। ऐसे ही जन्त्र-मन्त्र दिखाकर इसने बादशाह सिकंदर की बुद्धि भ्रष्ट कर रखी है। सारे मुसलमानों से कहा कि तुम मेरा साथ दो, वरना बात बिगड़ जाएगी। भोले मुसलमानों ने कहा पीर जी हम तेरे साथ हैं, जैसे तू कहेगा ऐसे ही करेंगे। शेखतकी ने कहा इस कबीर को तब प्रभु मानेंगे जब मेरी लड़की को जीवित कर देगा जो कब्र में दबी हुई है।

पूज्य कबीर साहेब से प्रार्थना हुई। कबीर साहेब ने सोचा यह नादान आत्मा ऐसे ही मान जाए। {क्योंकि ये सभी जीवात्माऐं कबीर साहेब के बच्चे हैं। यह तो काल ने (मजहब) धर्म का हमारे ऊपर कवर चढ़ा रखा है। एक-दूसरे के दुश्मन बना रखे हैं।} शेखतकी की लड़की का शव कब्र में दबा रखा था। शेखतकी ने कहा कि यदि मेरी लड़की को जीवित कर दे तो हम इस कबीर को अल्लाह स्वीकार कर लेंगे और सभी जगह ढिंढ़ोरा पिटवा दूँगा कि यह कबीर जी भगवान है। कबीर साहेब ने कहा कि ठीक है। वह दिन निश्चित हुआ। कबीर साहेब ने कहा कि सभी जगह सूचना दे दो, कहीं फिर किसी को शंका न रह जाए। हजारों की संख्या में वहाँ पर भक्त आत्मा दर्शनार्थ एकत्रित हुई। कबीर साहेब ने कब्र खुदवाई। उसमें एक बारह-तेरह वर्ष की लड़की का शव रखा हुआ था। कबीर साहेब ने शेखतकी से कहा कि पहले आप जीवित कर लो। सभी उपस्थित जनों ने कहा है कि महाराज जी यदि इसके पास कोई ऐसी शक्ति होती तो अपने बच्चे को कौन मरने देता है? अपने बच्चे की जान के लिए व्यक्ति अपना तन मन धन लगा देता है। हे दीन दयाल आप कृपा करो। पूज्य कबीर परमेश्वर ने कहा कि हे शेखतकी की लड़की जीवित हो जा। तीन बार कहा लेकिन लड़की जीवित नहीं हुई। शेखतकी ने तो भंगड़ा पा दिया। नाचे-कूदे कि देखा न पाखण्डी का पाखंड पकड़ा गया। कबीर साहेब उसको नचाना चाहते थे कि इसको नाचने दे।

कबीर, राज तजना सहज है, सहज त्रिया का नेह। मान बड़ाई ईर्ष्या, दुर्लभ तजना ये।।

मान-बड़ाई, ईर्ष्या का रोग बहुत भयानक है। अपनी लड़की के जीवित न होने का दुःख नहीं, कबीर साहेब की पराजय की खुशी मना रहा था। कबीर साहेब ने कहा कि बैठ जाओ महात्मा जी, शान्ति रखो। कबीर साहेब ने आदेश दिया कि हे जीवात्मा जहाँ भी है कबीर

आदेश से इस शव में प्रवेश करो और बाहर आओ।

कबीर साहेब का कहना ही था कि इतने में शव में कम्पन हुआ और वह लड़की जीवित होकर बाहर आई, कबीर साहेब के चरणों में दण्डवत् प्रणाम किया।(बोलो सतगुरु देव की जय।)

उस लड़की ने डेढ घण्टे तक कबीर साहेब की कृपा से प्रवचन किए। कहा हे भोली जनता ये भगवान आए हुए हैं। पूर्ण ब्रह्म अन्नत कोटि ब्रह्मण्ड के परमेश्वर हैं। क्या तुम इसको एक मामूली जुलाहा(धाणक) मान रहे हो। हे भूले-भटके प्राणियो! ये आपके सामने स्वयं परमेश्वर आए हैं। इनके चरणों में गिरकर अपने जन्म-मरण का दीर्घ रोग कटवाओ और सत्यलोक चलो। जहाँ पर जाने के बाद जीवात्मा जन्म-मरण के चक्कर से बच जाती है। कमाली ने बताया कि इस काल के जाल से बन्दी छोड़ कबीर साहेब के बिना कोई नहीं छुटवा सकता। चाहे हिन्दु पद्यति से तीर्थ-व्रत, गीता-भागवत, रामायण, महाभारत, पुराण, उपनिषद्ध, वेदों का पाठ करना, राम, कृष्ण, ब्रह्मा-विष्णु-शिव, शेराँवाली(आदि माया, आदि भवानी, प्रकृति देवी), ज्योति निरंजन की उपासना भी क्यों न करें, जीव चौरासी लाख प्राणियों के शरीर में कष्ट से नहीं बच सकता और मुसलमान पद्यति से भी जीव काल के जाल से नहीं छूट सकता। जैसे रोजे रखना, ईद बकरीद मनाना, पाँच वक्त नमाज करना, मक्का-मदीना में जाना, मस्जिद में बंग देना आदि सर्व व्यर्थ है। कमाली ने सर्व उपस्थित जनों को सम्बोधित करते हुए अपने पिछले जन्मों की कथा सुनाई जो उसे कबीर साहेब की कृपा से याद हो आई थी। जो कि आप पूर्व पढ़ चुके हो।

कबीर साहेब ने कहा कि बेटी अपने पिता के साथ जाओ। वह लड़की बोली मेरे वास्तविक पिता तो आप हैं। यह तो नकली पिता है। इसने तो मैं मिट्टी में दबा दी थी। मेरा और इसका हिसाब बराबर हो चुका है। सभी उपस्थित व्यक्तियों ने कहा कि कबीर परमेश्वर ने कमाल कर दिया। कबीर साहेब ने लड़की का नाम कमाली रख दिया और अपनी बेटी की तरह रखा और नाम दिया। उपस्थित व्यक्तियों ने हजारों की संख्या में कबीर परमेश्वर से उपदेश ग्रहण किया। अब शेखतकी ने सोचा कि यह तो और भी बात बिगड़ गई। मेरी तो सारी प्रभुता गई।

"सिकंदर लोधी बादशाह का असाध्य जलन का रोग ठीक करना"

एक बार दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लोधी को जलन का रोग हो गया। जलन का रोग ऐसा होता है जैसे किसी का आग में हाथ जल जाए उसमें पीड़ा बहुत होती है। जलन के रोग में कहीं से शरीर जला दिखाई नहीं देता है परन्तु पीड़ा अत्यधिक होती है। उसको जलन का रोग कहते हैं। जब प्राणी के पाप बढ़ जाते हैं तो दवाई भी व्यर्थ हो जाती हैं। दिल्ली के बादशाह सिकन्दर लौधी के साथ भी वही हुआ। सभी प्रकार की औषधि सेवन की। बड़े-बड़े वैद्य बुला लिए और मुँह बोला इनाम रख दिया कि मुझे ठीक कर दो, जो माँगोगे वही दूँगा। दुःख में व्यक्ति पता नहीं क्या संकल्प कर लेता है? सर्व उपाय निष्फल हुए। उसके बाद अपने धार्मिक काजी, मुल्ला, संतों आदि सबसे अपना आध्यात्मिक इलाज

करवाया। परन्तु सब असफल रहा। {जब हम दुःखी हो जाते हैं तो हिन्दु और मुसलमान नहीं रहते। फिर तो कहीं पर रोग कट जाए, वही पर चले जाते हैं। वैसे तो हिन्दु कहते हैं कि मुसलमान बुरे और मुसलमान कहते हैं कि हिन्दु बुरे और बीमारी हो जाए तो फिर हिन्दु व मुसलमान नहीं देखते। जब कष्ट आए तब तो कोई बुरा नहीं। बुरा कोई नहीं है। जो मुसलमान बुरे हैं वे बुरे हैं और जो हिन्दु बुरे हैं वे बुरे भी हैं और दोनों में अच्छे भी है। हर मज़हब में अच्छे और बुरे व्यक्ति होते हैं। लेकिन हम जीव हैं। हमारी कोई जाति व्यवस्था नहीं है। हमारी जीव जाति है हमारा धर्म मानव है-परमात्मा को पाना है।} हिन्दु वैद्य तथा आध्यात्मिक संत भी बुलाए, स्वयं भी उनसे जाकर मिला और सबसे आशीर्वाद व जंत्र-मंत्र करवाए, परन्तु सर्व चेष्टा निष्फल रही।

किसी ने बताया कि काशी शहर में एक कबीर नाम का महापुरूष है। यदि वह कृपा कर दे तो आपका दुःख निवारण अवश्य हो जाएगा।

जब बादशाह सिकंदर ने सुना कि एक काशी के अन्दर महापुरूष रहता है तो उसको कुछ-कुछ याद आया कि वह तो नहीं है जिसने गाय को भी जीवित कर दिया था। हजारों अंगरक्षकों सहित दिल्ली से काशी के लिए चल पड़ा। बीर सिंह बघेला काशी नरेश पहले ही कबीर साहेब की महिमा और ज्ञान सुनकर कबीर साहेब के शिष्य हो चुके थे और पूर्ण रूप से अपने गुरुदेव में आस्था रखते थे। उनको कबीर साहेब की महिमा का ज्ञान था क्योंकि कबीर परमेश्वर वहाँ पर बहुत लीलाएँ कर चुके थे। जब सिकंदर लोधी बनारस(काशी) गया तथा बीर सिंह से कहा बीर सिंह मैं बहुत दुःखी हो गया हूँ। अब तो आत्महत्या ही शेष रह गई है। यहाँ पर कोई कबीर नाम का संत है? आप तो जानते होंगे कि वह कैसा है? इतनी बात सिकंदर बादशाह के मुख से सुनी थी। काशी नरेश बीर सिंह की आँखों में पानी भर आया और कहा कि अब आप ठीक स्थान पर आ गए। अब आपके दुःख का अंत हो जाएगा। बादशाह सिकंदर ने पूछा कि ऐसी क्या बात है? बीर सिंह ने कहा कि वह कबीर जी स्वयं भगवान आए हुए हैं। परमेश्वर स्वरूप हैं। यदि उनकी दयादृष्टि हो गई तो आपका रोग ठीक हो जाएगा। राजा सिकंदर ने कहा कि जल्दी बुला दो। काशी नरेश बीरदेवसिंह बघेल ने विनम्रता से प्रार्थना की कि आपकी आज्ञा शिरोधार्य है, आदेश भिजवा देता हूँ। लेकिन ऐसा सुना है कि संतो को बुलाया नहीं करते। यदि वे आ भी गए और रजा नहीं बख्शी तो भी आने का कोई लाभ नहीं। बाकी आपकी ईच्छा। सिकंदर ने कहा कि ठीक है मैं स्वयं ही चलता हूँ। इतनी दूर आ गया हूँ वहाँ पर भी अवश्य चलूँगा।

शाम का समय हो गया था। बीर सिंह को पता था कि इस समय साहेब कबीर जी अपने औपचारिक गुरुदेव स्वामी रामानन्द जी के आश्रम में ही होते हैं। यह समय परमेश्वर कबीर जी का वहाँ मिलने का है। बीर देव सिंह बघेल काशी नरेश तथा सिकंदर लोधी दिल्ली के बादशाह दोनों, स्वामी रामानन्द जी के आश्रम के सामने खड़े हो गए। वहाँ जाकर पता चला कि कबीर साहेब अभी नहीं आए हैं, आने ही वाले हैं। बीर सिंह अन्दर नहीं गए। बाहर सेवक खड़ा था उससे ही पूछा। सिकंदर ने कहा कि ''तब तक आश्रम में विश्राम कर लेते हैं।'' राजा बीर सिंह ने स्वामी रामानन्द जी के द्वारपाल सेवक से कहा कि रामानन्द जी से प्रार्थना

करो कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आपके दर्शन भी करना चाहते हैं और साहेब कबीर का इन्तजार भी आपके आश्रम में ही करना चाहते है। सेवक ने अन्दर जाकर रामानन्द जी को बताया कि दिल्ली के बादशाह सिकंदर लौधी आए हैं। रामानन्द जी मुसलमानों से घणा करते थे। रामानन्द जी ने कहा कि मैं इन मलेच्छों (मुसलमानों) की शक्ल भी नहीं देखता। कह दो कि बाहर बैठ जाएगा। जब सिकंदर लोधी ने यह सुना तो क्रोध में भरकर (क्योंकि राजा में अहंकार बहुत होता है और वह दिल्ली का बादशाह) कहा कि यह दो कौड़ी का महात्मा दिल्ली के बादशाह का अनादर कर सकता है तो साधारण मुसलमान के साथ यह कैसा व्यवहार करता होगा? इसको मज़ा चखा दूँ। रामानन्द जी अलग आसन पर बैठे थे। सिकंदर लोधी ने जाकर रामानन्द जी की गर्दन तलवार से काट दी। वापिस चल पड़ा और फिर उसको याद आया कि मैं जिस कार्य के लिए आया था? और वह काम अब पूरा नहीं होगा। कहा कि बीर सिंह देख मैं क्या जुल्म कर बैठा? मेरे बहुत बुरे दिन हैं। चाहता हूँ अच्छा करना और होता है बुरा। कबीर साहेब के गुरुदेव की हत्या कर दी। अब वे कभी भी मेरे ऊपर दयादष्टि नहीं करेंगे। मुझे तो यह दुःख भोग कर ही मरना पड़ेगा। मैं बहुत पापी जीव हूँ। यह कहता हुआ आश्रम से बाहर की ओर चल पड़ा। बीर सिंह अपने बादशाह के आगे क्या बोलता। ज्योंही आश्रम से बाहर आए, कबीर साहेब आते दिखाई दिए। बीर सिंह ने कहा कि महाराज जी मेरे गुरुदेव कबीर साहेब आ गए। ज्योंही कबीर साहेब थोड़ी दूर रह गए बीर सिंह ने जमीन पर लेटकर उनको दण्डवत् प्रणाम किया। अब सिकंदर बहुत घबराया हुआ था। {अगर उसने यह जुल्म नहीं किया होता तो वह दण्डवत् नहीं करता और दण्डवत् नहीं करता तो साहेब उस पर रजा भी नहीं बख्श पाते क्योंकि यह नियम होता है।

अति आधीन दीन हो प्राणी, ताते कहिए ये अकथ कहानी।
ऊँचे पात्र जल ना जाई, ताते नीचा हुजै भाई।
आधीनी के पास हैं पूर्ण ब्रह्म दयाल। मान बड़ाई मारिए बे अदबी सिर काल।।

कबीर परमेश्वर ने यहाँ पर एक तीर से दो शिकार किए। स्वामी रामानंद जी में धर्म भेद-भाव की भावना शेष थी, वह भी निकालनी थी। रामानंद जी मुसलमानों को हिन्दुओं से अभी भी भिन्न तथा हेय मानते थे। सिकंदर में अहंकार की भावना थी। यदि वह नम्र नहीं होता तो कबीर साहेब कपा नहीं करते तथा सिकंदर स्वस्थ नहीं होता} बीर सिंह को देखकर तथा डरते हुए सिकंदर लौधी ने भी दण्डवत् प्रणाम किया। कबीर परमेश्वर जी ने दोनों के सिर पर हाथ रखा और कहा कि दो-2 नरेश आज मुझ गरीब के पास कैसे आए हैं? मुझ गरीब को कैसे दर्शन दिए? परमेश्वर कबीर जी ने अपना हाथ उठाया भी नहीं था कि सिकंदर का जलन का रोग समाप्त हो गया। सिकंदर लोधी की आँखों में पानी आ गया।

(संत के सामने यह मन भाग जाता है और ये आत्मा ऊपर आ जाती है क्योंकि परमात्मा आत्मा का साथी है। ''अन्तर्यामी एक तू आत्म के आधार।'' आत्मा का आधार कबीर भगवान है।)

''स्वामी रामानंद जी को जीवित करना''

सिकंदर लोधी ने पैर पकड़ कर छोड़े नहीं और रोता ही रहा। परमेश्वर जानी जान होते हुए भी कबीर साहेब ने सिकन्दर लोधी दिल्ली के बादशाह से पूछा क्या बात है?। सिकंदर ने कहा कि दाता मैंने घोर अपराध कर दिया। आप मुझे क्षमा नहीं कर सकते। जिस काम के लिए मैं आया था वह असाध्य रोग तो आपके स्पर्श मात्र से ठीक हो गया। इस पापी को क्षमा कर दो। कबीर साहेब ने कहा क्षमा कर दिया। यह तो बता कि क्या हुआ? सिकंदर ने कहा कि आप क्षमा कर नहीं सकते। मैंने ऐसा पाप किया है। कबीर साहेब ने कहा कि क्षमा कर दिया। सिकंदर ने फिर कहा कि सच में माफ कर दिया? कबीर साहेब ने कहा कि हाँ क्षमा कर दिया। अब बता क्या कष्ट है? सिकंदर ने कहा कि दाता मुझ पापी ने गुस्से में आकर आपके गुरुदेव का सिर कलम कर दिया और फिर सारी कहानी बताई। कबीर साहेब बोले कोई बात नहीं। जो हुआ प्रभु इच्छा से ही हुआ है आप स्वामी रामानन्द जी का अन्तिम संस्कार करवा कर जाना नहीं तो आप निंदा के पात्र बनोगे। परमेश्वर कबीर साहेब जी नाराज नहीं हुए। सिकंदर लोधी ने बीर सिंह के मुख की ओर देखा और कहा कि बीर सिंह यह तो वास्तव में भगवान है। देखिए मैंने गुरुदेव का सिर काट दिया और कबीर जी को क्रोध भी नहीं आया। बीर सिंह चुप रहा और साथ-साथ हो लिया और मन ही मन में सोचता है कि अभी क्या है, अभी तो और देखना। यह तो शुरूआत है।

''स्वामी रामदेवानंद गुरू महाराज जी की असीम कृपा से पारख के अंग का सरलार्थ सम्पूर्ण हुआ।''

।।सत साहेब।।

''सम्पूर्ण संष्टि रचना''

(सूक्ष्मवेद से निष्कर्ष रूप संष्टि रचना का वर्णन)

प्रभु प्रेमी आत्माऐं प्रथम बार निम्न संष्टि की रचना को पढेंगे तो ऐसे लगेगा जैसे दन्त कथा हो, परन्तु सर्व पवित्र सद्ग्रन्थों के प्रमाणों को पढ़कर दाँतों तले उँगली दबाऐंगे कि यह वास्तविक अमंत ज्ञान कहाँ छुपा था? कंप्या धैर्य के साथ पढ़ते रहिए तथा इस अमंत ज्ञान को सुरक्षित रखिए। आप की एक सौ एक पीढ़ी तक काम आएगा। पवित्रात्माऐं कंप्या सत्यनारायण (अविनाशी प्रभु/सतपुरुष) द्वारा रची संष्टि रचना का वास्तविक ज्ञान पढ़ें।

1. पूर्ण ब्रह्म :- इस संष्टि रचना में सतपुरुष-सतलोक का स्वामी (प्रभु), अलख पुरुष-अलख लोक का स्वामी (प्रभु), अगम पुरुष-अगम लोक का स्वामी (प्रभु) तथा अनामी पुरुष-अनामी अकह लोक का स्वामी (प्रभु) तो एक ही पूर्ण ब्रह्म है, जो वास्तव में अविनाशी प्रभु है जो भिन्न-२ रूप धारण करके अपने चारों लोकों में रहता है। जिसके अन्तर्गत असंख्य ब्रह्माण्ड आते हैं।

2. परब्रह्म :- यह केवल सात शंख ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। यह अक्षर पुरुष भी कहलाता है। परन्तु यह तथा इसके ब्रह्माण्ड भी वास्तव में अविनाशी नहीं है।

3. ब्रह्म :- यह केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी (प्रभु) है। इसे क्षर पुरुष, ज्योति निरंजन, काल आदि उपमा से जाना जाता है। यह तथा इसके सर्व ब्रह्माण्ड नाशवान हैं।

(उपरोक्त तीनों पुरूषों (प्रभुओं) का प्रमाण पवित्र श्री मद्भगवत गीता अध्याय **15** श्लोक **16-17** में भी है।)

4. ब्रह्मा :- ब्रह्मा इसी ब्रह्म का ज्येष्ठ पुत्र है, विष्णु मध्य वाला पुत्र है तथा शिव अंतिम तीसरा पुत्र है। ये तीनों ब्रह्म के पुत्र केवल एक ब्रह्माण्ड में एक विभाग (गुण) के स्वामी (प्रभु) हैं तथा नाशवान हैं। विस्तंत विवरण के लिए कंप्या पढ़ें निम्न लिखित संष्टि रचना :-

{कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने सुक्ष्म वेद अर्थात् कबिर्बाणी में अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया है जो निम्नलिखित है}

सर्व प्रथम केवल एक स्थान 'अनामी (अनामय) लोक' था। जिसे अकह लोक भी कहा जाता है, पूर्ण परमात्मा उस अनामी लोक में अकेला रहता था। उस परमात्मा का वास्तविक नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है। सभी आत्माऐं उस पूर्ण धनी के शरीर में समाई हुई थी। इसी कविर्देव का उपमात्मक (पदवी का) नाम अनामी पुरुष है (पुरुष का अर्थ प्रभु होता है। प्रभु ने मनुष्य को अपने ही स्वरूप में बनाया है, इसलिए मानव का नाम भी पुरुष ही पड़ा है।) अनामी पुरूष के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश शंख सूर्यों की रोशनी से भी अधिक है।

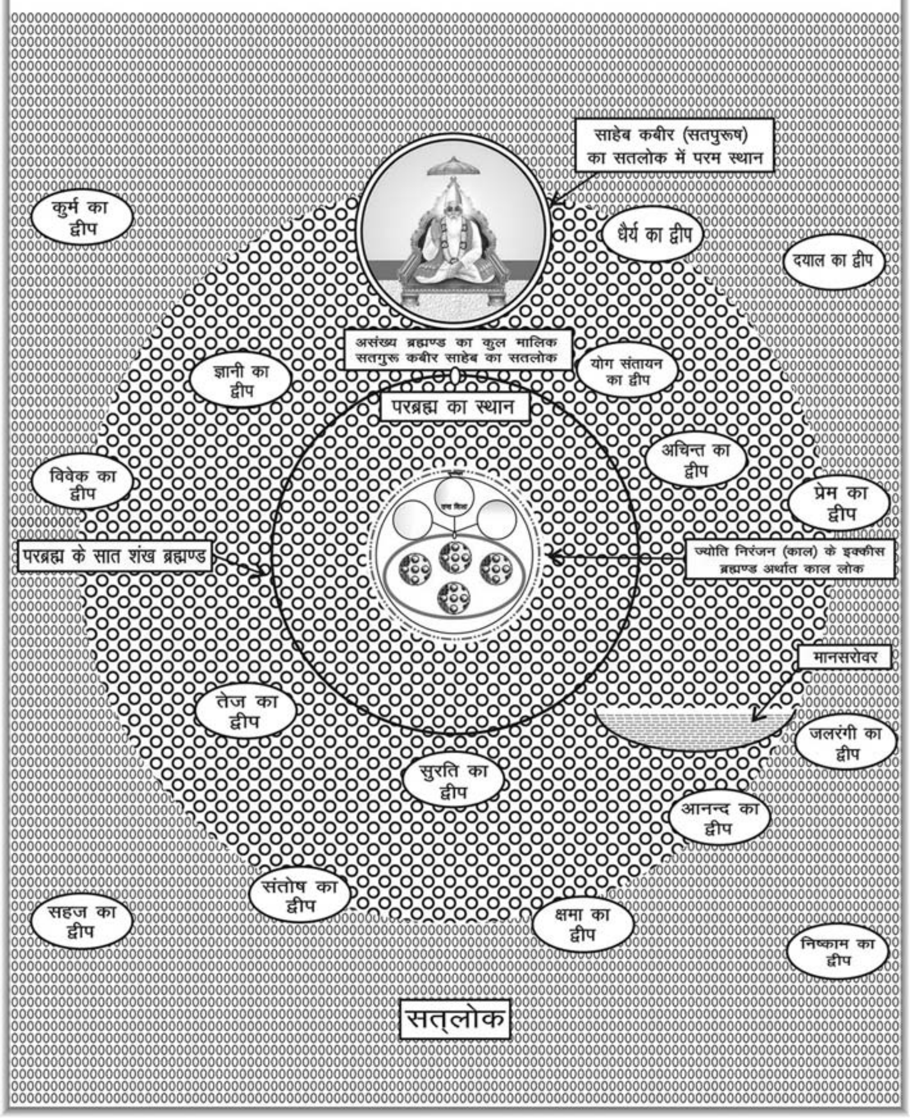
विशेष :- जैसे किसी देश के आदरणीय प्रधान मंत्री जी का शरीर का नाम तो अन्य होता है तथा पद का उपमात्मक (पदवी का) नाम प्रधानमंत्री होता है। कई बार प्रधानमंत्री जी अपने पास कई विभाग भी रख लेते हैं। तब जिस भी विभाग के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करते हैं तो उस समय उसी पद को लिखते हैं।

परमेश्वर कबीर साहेब के असंख्य ब्रह्मण्डों का लघु चित्र

अनामी लोक : इस लोक में कबीर साहेब अनामी पुरूष रूप में रहते हैं। यहाँ अकेले हैं।

अगम लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अगम पुरूष रूप में रहते हैं।

अलख लोक : इस लोक में भी कबीर साहेब अलख पुरूष रूप में रहते हैं।



जैसे गृहमंत्रालय के दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करेगें तो अपने को गृह मंत्री लिखेगें। वहाँ उसी व्यक्ति के हस्ताक्षर की शक्ति कम होती है। इसी प्रकार कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की रोशनी में अंतर भिन्न-२ लोकों में होता जाता है। ठीक इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने नीचे के तीन और लोकों (अगमलोक, अलख लोक, सतलोक) की रचना शब्द(वचन) से की। यही पूर्णब्रह्म परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही अगम लोक में प्रकट हुआ तथा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अगम लोक का भी स्वामी है तथा वहाँ इनका उपमात्मक (पदवी का) नाम अगम पुरुष अर्थात् अगम प्रभु है। इसी अगम प्रभु का मानव सदृश शरीर बहुत तेजोमय है जिसके एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी खरब सूर्य की रोशनी से भी अधिक है।

यह पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबिर देव=कबीर परमेश्वर) अलख लोक में प्रकट हुआ तथा स्वयं ही अलख लोक का भी स्वामी है तथा उपमात्मक (पदवी का) नाम अलख पुरुष भी इसी परमेश्वर का है तथा इस पूर्ण प्रभु का मानव सदृश शरीर तेजोमय (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित है। एक रोम (शरीर के बाल) की रोशनी अरब सूर्यों के प्रकाश से भी ज्यादा है।

यही पूर्ण प्रभु सतलोक में प्रकट हुआ तथा सतलोक का भी अधिपति यही है। इसलिए इसी का उपमात्मक (पदवी का) नाम सतपुरुष (अविनाशी प्रभु)है। इसी का नाम अकालमूर्ति - शब्द स्वरूपी राम - पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म आदि हैं। इसी सतपुरुष कविर्देव (कबीर प्रभु) का मानव सदृश शरीर तेजोमय है। जिसके एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ सूर्यों तथा इतने ही चन्द्रमाओं के प्रकाश से भी अधिक है। इस कविर्देव (कबीर प्रभु) ने सतपुरुष रूप में प्रकट होकर सतलोक में विराजमान होकर प्रथम सतलोक में अन्य रचना की।

एक शब्द (वचन) से सोलह द्वीपों की रचना की। फिर सोलह शब्दों से सोलह पुत्रों की उत्पत्ति की। एक मानसरोवर की रचना की जिसमें अमृत भरा। सोलह पुत्रों के नाम हैं :-(1) ''कूर्म'', (2)''ज्ञानी'', (3) ''विवेक'', (4) ''तेज'', (5) ''सहज'', (6) ''सन्तोष'', (7)''सुरति'', (8) ''आनन्द'', (9) ''क्षमा'', (10) ''निष्काम'', (11) 'जलरंगी' (12)''अचिन्त'', (13) ''प्रेम'', (14) ''दयाल'', (15) ''धैर्य'' (16) ''योग संतायन'' अर्थात् ''योगजीत''।

सतपुरुष कविर्देव ने अपने पुत्र अचिन्त को सत्यलोक की अन्य रचना का भार सौंपा तथा शक्ति प्रदान की। अचिन्त ने अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की शब्द से उत्पत्ति की तथा कहा कि मेरी मदद करना। अक्षर पुरुष स्नान करने मानसरोवर पर गया, वहाँ आनन्द आया तथा सो गया। लम्बे समय तक बाहर नहीं आया। तब अचिन्त की प्रार्थना पर अक्षर पुरुष को नींद से जगाने के लिए कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ने उसी मानसरोवर से कुछ अमृत जल लेकर एक अण्डा बनाया तथा उस अण्डे में एक आत्मा प्रवेश की तथा अण्डे को मानसरोवर के अमृत जल में छोड़ा। अण्डे की गड़गड़ाहट से अक्षर पुरुष की निंद्रा भंग हुई। उसने अण्डे को क्रोध से देखा जिस कारण से अण्डे के दो भाग हो गए। उसमें से ज्योति निंरजन (क्षर पुरुष) निकला जो आगे चलकर 'काल' कहलाया। इसका वास्तविक नाम ''कैल'' है। तब सतपुरुष (कविर्देव) ने आकाशवाणी की कि आप दोनों बाहर आओ तथा अचिंत के द्वीप में

रहो। आज्ञा पाकर अक्षर पुरुष तथा क्षर पुरुष (कैल) दोनों अचिंत के द्वीप में रहने लगे (बच्चों की नालायकी उन्हीं को दिखाई कि कहीं फिर प्रभुता की तड़फ न बन जाए, क्योंकि समर्थ बिन कार्य सफल नहीं होता) फिर पूर्ण धनी कविर्देव ने सर्व रचना स्वयं की। अपनी शब्द शक्ति से एक राजेश्वरी (राष्ट्री) शक्ति उत्पन्न की, जिससे सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया। इसी को पराशक्ति परानन्दनी भी कहते हैं। पूर्ण ब्रह्म ने सर्व आत्माओं को अपने ही अन्दर से अपनी वचन शक्ति से अपने मानव शरीर सदृश उत्पन्न किया। प्रत्येक हंस आत्मा का परमात्मा जैसा ही शरीर रचा जिसका तेज 16 (सोलह) सूर्यों जैसा मानव सदृश ही है। परन्तु परमेश्वर के शरीर के एक रोम (शरीर के बाल) का प्रकाश करोड़ों सूर्यों से भी ज्यादा है। बहुत समय उपरान्त क्षर पुरुष (ज्योति निरंजन) ने सोचा कि हम तीनों (अचिन्त - अक्षर पुरुष - क्षर पुरुष) एक द्वीप में रह रहे हैं तथा अन्य एक-एक द्वीप में रह रहे हैं। मैं भी साधना करके अलग द्वीप प्राप्त करूँगा। उसने ऐसा विचार करके एक पैर पर खड़ा होकर सत्तर (70) युग तक तप किया।

"आत्माऐं काल के जाल में कैसे फँसी?"

विशेष :- जब ब्रह्म (ज्योति निरंजन) तप कर रहा था हम सभी आत्माऐं, जो आज ज्योति निरंजन के इक्कीस ब्रह्माण्डों में रहते हैं इसकी साधना पर आसक्त हो गए तथा हृदय से इसे चाहने लगे। अपने सुखदाई प्रभु सत्य पुरूष से विमुख हो गए। जिस कारण से पतिव्रता पद से गिर गए। पूर्ण प्रभु के बार-बार सावधान करने पर भी हमारी आसक्ति क्षर पुरुष से नहीं हटी। {यही प्रभाव आज भी काल सृष्टि में विद्यमान है। जैसे नौजवान बच्चे फिल्म स्टारों (अभिनेताओं तथा अभिनेत्रियों) की बनावटी अदाओं तथा अपने रोजगार उद्देश्य से कर रहे भूमिका पर अति आसक्त हो जाते हैं, रोकने से नहीं रूकते। यदि कोई अभिनेता या अभिनेत्री निकटवर्ती शहर में आ जाए तो देखें उन नादान बच्चों की भीड़ केवल दर्शन करने के लिए बहु संख्या में एकत्रित हो जाती हैं। 'लेना एक न देने दो' रोजी रोटी अभिनेता कमा रहे हैं, नौजवान बच्चे लुटा रहे हैं। माता–पिता कितना ही समझाऐं किन्तु बच्चे नहीं मानते। कहीं न कहीं, कभी न कभी, लुक–छिप कर जाते ही रहते हैं।}

पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) ने क्षर पुरुष से पूछा कि बोलो क्या चाहते हो? उसने कहा कि पिता जी यह स्थान मेरे लिए कम है, मुझे अलग से द्वीप प्रदान करने की कृपा करें। हक्का कबीर (सत् कबीर) ने उसे 21 (इक्कीस) ब्रह्माण्ड प्रदान कर दिए। कुछ समय उपरान्त ज्योति निरंजन ने सोचा इस में कुछ रचना करनी चाहिए। खाली ब्रह्माण्ड(प्लाट) किस काम के। यह विचार कर 70 युग तप करके पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर प्रभु) से रचना सामग्री की याचना की। सतपुरुष ने उसे तीन गुण तथा पाँच तत्त्व प्रदान कर दिए, जिससे ब्रह्म (ज्योति निरंजन) ने अपने ब्रह्माण्डों में कुछ रचना की। फिर सोचा कि इसमें जीव भी होने चाहिए, अकेले का दिल नहीं लगता। यह विचार करके 64 (चौसठ) युग तक फिर तप किया। पूर्ण परमात्मा कविर् देव के पूछने पर बताया कि मुझे कुछ आत्मा दे दो, मेरा अकेले का दिल नहीं लग रहा। तब सतपुरुष कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि

ब्रह्म तेरे तप के प्रतिफल में मैं तुझे और ब्रह्माण्ड दे सकता हूँ, परन्तु मेरी आत्माओं को किसी भी जप-तप साधना के फल रूप में नहीं दे सकता। हाँ, यदि कोई स्वेच्छा से तेरे साथ जाना चाहे तो वह जा सकता है। युवा कविर् (समर्थ कबीर) के वचन सुन कर ज्योति निरंजन हमारे पास आया। हम सभी हंस आत्मा पहले से ही उस पर आसक्त थे। हम उसे चारों तरफ से घेर कर खड़े हो गए। ज्योति निंरजन ने कहा कि मैंने पिता जी से अलग 21 ब्रह्माण्ड प्राप्त किए हैं। वहाँ नाना प्रकार के रमणीय स्थल बनाए हैं। क्या आप मेरे साथ चलोगे? हम सभी हंसों ने जो आज 21 ब्रह्माण्डों में परेशान हैं, कहा कि हम तैयार हैं यदि पिता जी आज्ञा दें तब क्षर पुरुष पूर्ण ब्रह्म महान् कविर् (समर्थ कबीर प्रभु) के पास गया तथा सर्व वार्ता कही। तब कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) ने कहा कि मेरे सामने स्वीकति देने वाले को आज्ञा दूंगा। क्षर पुरुष तथा परम अक्षर पुरुष (कविरमितौजा=कविर अमित औजा यानि जिसकी शक्ति का कोई वार नहीं, वह कबीर) दोनों हम सभी हंसात्माओं के पास आए। सत् कविर्देव ने कहा कि जो हंस आत्मा ब्रह्म के साथ जाना चाहता है हाथ ऊपर करके स्वीकति दे। अपने पिता के सामने किसी की हिम्मत नहीं हुई। किसी ने स्वीकति नहीं दी। बहुत समय तक सन्नाटा छाया रहा। तत्पश्चात् एक हंस आत्मा ने साहस किया तथा कहा कि पिता जी मैं जाना चाहता हूँ। फिर तो उसकी देखा-देखी (जो आज काल (ब्रह्म) के इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) हम सभी आत्माओं ने स्वीकति दे दी। परमेश्वर कबीर जी ने ज्योति निरंजन से कहा कि आप अपने स्थान पर जाओ। जिन्होंने तेरे साथ जाने की स्वीकति दी है मैं उन सर्व हंस आत्माओं को आपके पास भेज दूंगा। ज्योति निरंजन अपने 21 ब्रह्माण्डों में चला गया। उस समय तक यह इक्कीस ब्रह्माण्ड सतलोक में ही थे।

तत्पश्चात् पूर्ण ब्रह्म ने सर्व प्रथम स्वीकति देने वाले हंस को लड़की का रूप दिया परन्तु स्त्री इन्द्री नहीं रची तथा सर्व आत्माओं को (जिन्होंने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) के साथ जाने की सहमति दी थी) उस लड़की के शरीर में प्रवेश कर दिया तथा उसका नाम आष्ट्रा (आदि माया/ प्रकति देवी/ दुर्गा) पड़ा तथा सत्य पुरूष ने कहा कि पुत्री मैंने तेरे को शब्द शक्ति प्रदान कर दी है जितने जीव ब्रह्म कहे आप उत्पन्न कर देना। पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर साहेब) ने अपने पुत्र सहज दास के द्वारा प्रकति को क्षर पुरुष के पास भिजवा दिया। सहज दास जी ने ज्योति निरंजन को बताया कि पिता जी ने इस बहन के शरीर में उन सर्व आत्माओं को प्रवेश कर दिया है जिन्होंने आपके साथ जाने की सहमति व्यक्त की थी तथा इसको पिता जी ने वचन शक्ति प्रदान की है, आप जितने जीव चाहोगे प्रकति अपने शब्द से उत्पन्न कर देगी। यह कह कर सहजदास वापिस अपने द्वीप में आ गया।

युवा होने के कारण लड़की का रंग-रूप निखरा हुआ था। ब्रह्म के अन्दर विषय-वासना उत्पन्न हो गई तथा प्रकति देवी के साथ अभद्र गति विधि प्रारम्भ की। तब दुर्गा ने कहा कि ज्योति निरंजन मेरे पास पिता जी की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है। आप जितने प्राणी कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूँगी। आप मैथुन परम्परा शुरु मत करो। आप भी उसी पिता के शब्द से अण्डे से उत्पन्न हुए हो तथा मैं भी उसी परमपिता के वचन से ही बाद में उत्पन्न हुई हूँ। आप मेरे बड़े भाई हो, बहन-भाई का यह योग महापाप का कारण बनेगा। परन्तु

ज्योति निरंजन ने प्रकति देवी की एक भी प्रार्थना नहीं सुनी तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (भग) प्रकति को लगा दी तथा बलात्कार करने की ठानी। उसी समय दुर्गा ने अपनी इज्जत रक्षा के लिए कोई और चारा न देख सुक्ष्म रूप बनाया तथा ज्योति निरंजन के खुले मुख के द्वारा पेट में प्रवेश करके पूर्णब्रह्म कविर् देव से अपनी रक्षा के लिए याचना की। उसी समय कविर्देव (कविर् देव) अपने पुत्र योग संतायन अर्थात् जोगजीत का रूप बनाकर वहाँ प्रकट हुए तथा कन्या को ब्रह्म के उदर से बाहर निकाला तथा कहा कि ज्योति निरंजन आज से तेरा नाम 'काल' होगा। तेरे जन्म-मत्यु होते रहेंगे। इसीलिए तेरा नाम क्षर पुरुष होगा तथा एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को प्रतिदिन खाया करेगा व सवा लाख उत्पन्न किया करेगा। आप दोनों को इक्कीस ब्रह्माण्ड सहित निष्कासित किया जाता है। इतना कहते ही इक्कीस ब्रह्माण्ड विमान की तरह चल पड़े। सहज दास के द्वीप के पास से होते हुए सतलोक से सोलह शंख कोस (एक कोस लगभग 3 कि. मी. का होता है) की दूरी पर आकर रूक गए।

विशेष विवरण - अब तक तीन शक्तियों का विवरण आया है।

1. पूर्णब्रह्म जिसे अन्य उपमात्मक नामों से भी जाना जाता है, जैसे सतपुरुष, अकालपुरुष, शब्द स्वरूपी राम, परम अक्षर ब्रह्म/पुरुष आदि। यह पूर्णब्रह्म असंख्य ब्रह्माण्डों का स्वामी है तथा वास्तव में अविनाशी है।

2. परब्रह्म जिसे अक्षर पुरुष भी कहा जाता है। यह वास्तव में अविनाशी नहीं है। यह सात शंख ब्रह्माण्डों का स्वामी है।

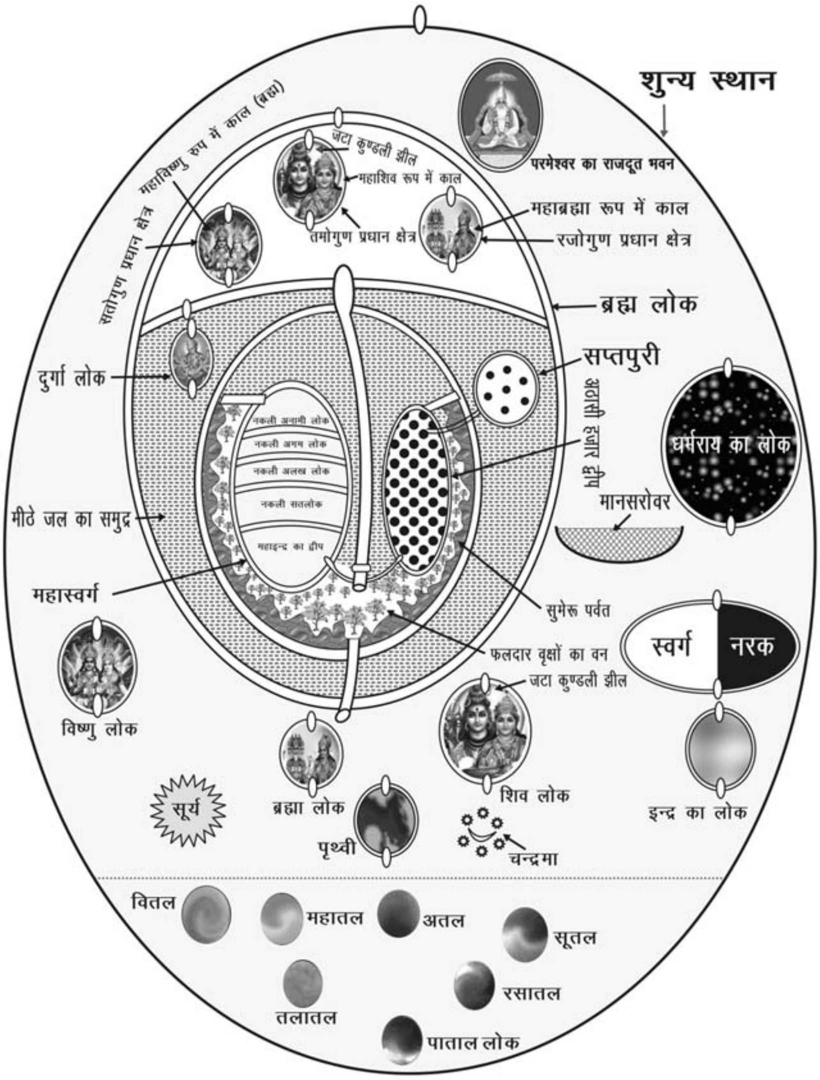
3. ब्रह्म जिसे ज्योति निरंजन, काल, कैल, क्षर पुरुष तथा धर्मराय आदि नामों से जाना जाता है, जो केवल इक्कीस ब्रह्माण्ड का स्वामी है। अब आगे इसी ब्रह्म (काल) की सष्टि के एक ब्रह्माण्ड का परिचय दिया जाएगा, जिसमें तीन और नाम आपके पढ़ने में आयेंगे - ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव।

ब्रह्म तथा ब्रह्मा में भेद - एक ब्रह्माण्ड में बने सर्वोपरि स्थान पर ब्रह्म (क्षर पुरुष) स्वयं तीन गुप्त स्थानों की रचना करके ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी प्रकति (दुर्गा) के सहयोग से तीन पुत्रों की उत्पत्ति करता है। उनके नाम भी ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव ही रखता है। जो ब्रह्म का पुत्र ब्रह्मा है वह एक ब्रह्माण्ड में केवल तीन लोकों (पथ्वी लोक, स्वर्ग लोक तथा पाताल लोक) में एक रजोगुण विभाग का मंत्री (स्वामी) है। इसे त्रिलोकीय ब्रह्मा कहा है तथा ब्रह्म जो ब्रह्मलोक में ब्रह्मा रूप में रहता है उसे महाब्रह्मा व ब्रह्मलोकीय ब्रह्मा कहा है। इसी ब्रह्म (काल) को सदाशिव, महाशिव, महाविष्णु भी कहा है।

श्री विष्णु पुराण में प्रमाण :- चतुर्थ अंश अध्याय 1 पष्ठ 230-231 पर श्री ब्रह्मा जी ने कहा :- जिस अजन्मा, सर्वमय विधाता परमेश्वर का आदि, मध्य, अन्त, स्वरूप, स्वभाव और सार हम नहीं जान पाते (श्लोक 83)

जो मेरा रूप धारण कर संसार की रचना करता है, स्थिति के समय जो पुरूष रूप है तथा जो रूद्र रूप से विश्व का ग्रास कर जाता है, अनन्त रूप से सम्पूर्ण जगत् को धारण करता है। (श्लोक 86)

एक ब्रह्मण्ड का लघु चित्र



"श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी व श्री शिव जी की उत्पत्ति"

काल (ब्रह्म) ने प्रकति (दुर्गा) से कहा कि अब मेरा कौन क्या बिगाडेगा? मन मानी करूँगा प्रकति ने फिर प्रार्थना की कि आप कुछ शर्म करो। प्रथम तो आप मेरे बड़े भाई हो, क्योंकि उसी पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) की वचन शक्ति से आप की (ब्रह्म की) अण्डे से उत्पत्ति हुई तथा बाद में मेरी उत्पत्ति उसी परमेश्वर के वचन से हुई है। दूसरे मैं आपके पेट से बाहर निकली हूँ, मैं आपकी बेटी हुई तथा आप मेरे पिता हुए। इन पवित्र नातों में बिगाड़ करना महापाप होगा। मेरे पास पिता की प्रदान की हुई शब्द शक्ति है, जितने प्राणी आप कहोगे मैं वचन से उत्पन्न कर दूंगी। ज्योति निरंजन ने दुर्गा की एक भी विनय नहीं सुनी तथा कहा कि मुझे जो सजा मिलनी थी मिल गई, मुझे सतलोक से निष्कासित कर दिया। अब मनमानी करूँगा। यह कहकर काल पुरूष (क्षर पुरूष) ने प्रकति के साथ जबरदस्ती शादी की तथा तीन पुत्रों (रजगुण युक्त - ब्रह्मा जी, सतगुण युक्त - विष्णु जी तथा तमगुण युक्त - शिव शंकर जी) की उत्पत्ति की। जवान होने तक तीनों पुत्रों को दुर्गा के द्वारा अचेत करवा देता है, फिर युवा होने पर श्री ब्रह्मा जी को कमल के फूल पर, श्री विष्णु जी को शेष नाग की शैय्या पर तथा श्री शिव जी को कैलाश पर्वत पर सचेत करके इक्ट्ठे कर देता है। तत्पश्चात् प्रकति (दुर्गा) द्वारा इन तीनों का विवाह कर दिया जाता है तथा एक ब्रह्माण्ड में तीन लोकों (स्वर्ग लोक, पथ्वी लोक तथा पाताल लोक) में एक-एक विभाग के मंत्री (प्रभु) नियुक्त कर देता है। जैसे श्री ब्रह्मा जी को रजोगुण विभाग का तथा विष्णु जी को सत्तोगुण विभाग का तथा श्री शिव शंकर जी को तमोगुण विभाग का तथा स्वयं गुप्त (महाब्रह्मा - महाविष्णु - महाशिव) रूप से मुख्य मंत्री पद को संभालता है। एक ब्रह्माण्ड में एक ब्रह्मलोक की रचना की है। उसी में तीन गुप्त स्थान बनाए हैं। एक रजोगुण प्रधान स्थान है जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) स्वयं महाब्रह्मा (मुख्यमंत्री) रूप में रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महासावित्री रूप में रखता है। इन दोनों के संयोग से जो पुत्र इस स्थान पर उत्पन्न होता है वह स्वतः ही रजोगुणी बन जाता है। दूसरा स्थान सतोगुण प्रधान स्थान बनाया है। वहाँ पर यह क्षर पुरुष स्वयं महाविष्णु रूप बना कर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महालक्ष्मी रूप में रख कर जो पुत्र उत्पन्न करता है उसका नाम विष्णु रखता है, वह बालक सतोगुण युक्त होता है तथा तीसरा इसी काल ने वहीं पर एक तमोगुण प्रधान क्षेत्र बनाया है। उसमें यह स्वयं सदाशिव रूप बनाकर रहता है तथा अपनी पत्नी दुर्गा को महापार्वती रूप में रखता है। इन दोनों के पति-पत्नी व्यवहार से जो पुत्र उत्पन्न होता है उसका नाम शिव रख देते हैं तथा तमोगुण युक्त कर देते हैं। (प्रमाण के लिए देखें पवित्र श्री शिव महापुराण, विद्यवेश्वर संहिता पष्ठ 24-26 जिस में ब्रह्मा, विष्णु, रूद्र तथा महेश्वर से अन्य सदाशिव है तथा रूद्र संहिता अध्याय 6 तथा 7, 9 पष्ठ नं. 100 से, 105 तथा 110 पर अनुवाद कर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित तथा पवित्र श्रीमद्देवीमहापुराण तीसरा स्कंद पष्ठ नं. 114 से 123 तक, गीता प्रैस गोरखपुर से प्रकाशित, जिसके अनुवाद कर्ता हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी) फिर इन्हीं को धोखे में रख कर अपने खाने

के लिए जीवों की उत्पत्ति श्री ब्रह्मा जी द्वारा तथा स्थिति (एक-दूसरे को मोह-ममता में रख कर काल जाल में रखना) श्री विष्णु जी से तथा संहार (क्योंकि काल पुरुष को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर से मैल निकाल कर खाना होता है उसके लिए इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में एक तप्तशिला है जो स्वतः गर्म रहती है, उस पर गर्म करके मैल पिंघला कर खाता है, जीव मरते नहीं परन्तु कष्ट असहनीय होता है, फिर प्राणियों को कर्म आधार पर अन्य शरीर प्रदान करता है) श्री शिव जी द्वारा करवाता है। जैसे किसी मकान में तीन कमरे बने हों। एक कमरे में अश्लील चित्र लगे हों। उस कमरे में जाते ही मन में वैसे ही मलिन विचार उत्पन्न हो जाते हैं। दूसरे कमरे में साधु-सन्तों, भक्तों के चित्र लगे हों तो मन में अच्छे विचार, प्रभु का चिन्तन ही बना रहता है। तीसरे कमरे में देश भक्तों व शहीदों के चित्र लगे हों तो मन में वैसे ही जोशीले विचार उत्पन्न हो जाते हैं। ठीक इसी प्रकार ब्रह्म (काल) ने अपनी सूझ-बूझ से उपरोक्त तीनों गुण प्रधान स्थानों की रचना की हुई है।

''तीनों गुण क्या हैं? प्रमाण सहित''

''तीनों गुण रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण विष्णु जी, तमगुण शिव जी हैं। ब्रह्म (काल) तथा प्रकृति (दुर्गा) से उत्पन्न हुए हैं तथा तीनों नाशवान हैं''

प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्री शिव महापुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार पृष्ठ सं. 24 से 26 विद्यवेश्वर संहिता तथा पृष्ठ 110 अध्याय 9 रूद्र संहिता ''इस प्रकार ब्रह्मा-विष्णु तथा शिव तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (ब्रह्म-काल) गुणातीत कहा गया है।

दूसरा प्रमाण :- गीताप्रैस गोरखपुर से प्रकाशित श्रीमद् देवीभागवत पुराण जिसके सम्पादक हैं श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार चिमन लाल गोस्वामी, तीसरा स्कंद, अध्याय 5 पृष्ठ 123 :- भगवान विष्णु ने दुर्गा की स्तुति की : कहा कि मैं (विष्णु), ब्रह्मा तथा शंकर तुम्हारी कृपा से विद्यमान हैं। हमारा तो आविर्भाव (जन्म) तथा तिरोभाव (मृत्यु) होती है। हम नित्य (अविनाशी) नहीं हैं। तुम ही नित्य हो, जगत् जननी हो, प्रकृति और सनातनी देवी हो। भगवान शंकर ने कहा : यदि भगवान ब्रह्मा तथा भगवान विष्णु तुम्हीं से उत्पन्न हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाला मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ ? अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम ही हों। इस संसार की सृष्टि-स्थिति-संहार में तुम्हारे गुण सदा सर्वदा हैं। इन्हीं तीनों गुणों से उत्पन्न हम, ब्रह्मा-विष्णु तथा शंकर नियमानुसार कार्य में तत्पर रहते हैं।

उपरोक्त यह विवरण केवल हिन्दी में अनुवादित श्री देवीमहापुराण से है, जिसमें कुछ तथ्यों को छुपाया गया है। इसलिए यही प्रमाण देखें श्री मद्देवीभागवत महापुराण सभाषटिकम् समहात्यम्, खेमराज श्री कृष्ण दास प्रकाशन मुम्बई, इसमें संस्कृत सहित हिन्दी अनुवाद किया है। तीसरा स्कंद अध्याय 4 पृष्ठ 10, श्लोक 42:-

ब्रह्मा – अहम् ईश्वरः फिल ते प्रभावात्सर्वे वयं जनि युता न यदा तू नित्याः
के अन्ये सुराः शतमख प्रमुखाः च नित्या नित्या त्वमेव जननी प्रकृतिः पुराणा। (42)

हिन्दी अनुवाद :- हे मात! ब्रह्मा, मैं तथा शिव तुम्हारे ही प्रभाव से जन्मवान हैं, नित्य नही हैं अर्थात् हम अविनाशी नहीं हैं, फिर अन्य इन्द्रादि दूसरे देवता किस प्रकार नित्य हो सकते हैं। तुम ही अविनाशी हो, प्रकति तथा सनातनी देवी हो।

पष्ठ 11-12, अध्याय 5, श्लोक 8 :- यदि दयार्द्रमना न सदां▪बिके कथमहं विहितः च तमोगुणः कमलजश्च रजोगुणसंभवः सुविहितः किमु सत्वगुणों हरिः।(8)

अनुवाद :- भगवान शंकर बोले :-हे मात! यदि हमारे ऊपर आप दयायुक्त हो तो मुझे तमोगुण क्यों बनाया, कमल से उत्पन्न ब्रह्मा को रजोगुण किस लिए बनाया तथा विष्णु को सतगुण क्यों बनाया? अर्थात् जीवों के जन्म-मत्यु रूपी दुष्कर्म में क्यों लगाया?

श्लोक 12 :- रमयसे स्वपतिं पुरुषं सदा तव गतिं न हि विह विद्म शिवे (12)

हिन्दी - अपने पति पुरुष अर्थात् काल भगवान के साथ सदा भोग-विलास करती रहती हो। आपकी गति कोई नहीं जानता।

निष्कर्ष :- उपरोक्त प्रमाणों से प्रमाणित हुआ की रजगुण - ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव है ये तीनों नाशवान है। दुर्गा का पति ब्रह्म (काल) है यह उसके साथ भोग विलास करता है।

"ब्रह्म (काल) की अव्यक्त रहने की प्रतिज्ञा"

सूक्ष्मवेद से शेष सष्टि रचना-------

तीनों पुत्रों की उत्पत्ति के पश्चात् ब्रह्म ने अपनी पत्नी दुर्गा (प्रकति) से कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि भविष्य में मैं किसी को अपने वास्तविक रूप में दर्शन नहीं दूँगा। जिस कारण से मैं अव्यक्त माना जाऊँगा। दुर्गा से कहा कि आप मेरा भेद किसी को मत देना। मैं गुप्त रहूँगा। दुर्गा ने पूछा कि क्या आप अपने पुत्रों को भी दर्शन नहीं दोगे? ब्रह्म ने कहा मैं अपने पुत्रों को तथा अन्य को किसी भी साधना से दर्शन नहीं दूँगा, यह मेरा अटल नियम रहेगा। दुर्गा ने कहा यह तो आपका उत्तम नियम नहीं है जो आप अपनी संतान से भी छुपे रहोगे। तब काल ने कहा दुर्गा मेरी विवशता है। मुझे एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करने का शाप लगा है। यदि मेरे पुत्रों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) को पता लग गया तो ये उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्य नहीं करेंगे। इसलिए यह मेरा अनुत्तम नियम सदा रहेगा। जब ये तीनों कुछ बड़े हो जाऐं तो इन्हें अचेत कर देना। मेरे विषय में नहीं बताना, नहीं तो मैं तुझे भी दण्ड दूँगा, दुर्गा इस डर के मारे वास्तविकता नहीं बताती। इसीलिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में कहा है कि यह बुद्धिहीन जन समुदाय मेरे अनुत्तम नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी भी किसी के सामने प्रकट नहीं होता अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ। इसलिए मुझ अव्यक्त को मनुष्य रूप में आया हुआ अर्थात् कष्ण मानते हैं।

(अबुद्धयः) बुद्धि हीन (मम्) मेरे (अनुत्तमम्) अनुत्तम अर्थात् घटिया (अव्ययम्) अविनाशी (परम् भावम्) विशेष भाव को (अजानन्तः) न जानते हुए (माम् अव्यक्तम्) मुझ अव्यक्त को (व्यक्तिम्) मनुष्य रूप में (आपन्नम) आया (मन्यन्ते) मानते हैं अर्थात् मैं कष्ण नहीं हूँ। (गीता अध्याय 7 श्लोक 24)

गीता अध्याय 11 श्लोक 47 तथा 48 में कहा है कि यह मेरा वास्तविक काल रूप है। इसके

दर्शन अर्थात् ब्रह्म प्राप्ति न वेदों में वर्णित विधि से, न जप से, न तप से तथा न किसी क्रिया से हो सकती है।

जब तीनों बच्चे युवा हो गए तब माता भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने कहा कि तुम सागर मन्थन करो। प्रथम बार सागर मन्थन किया तो (ज्योति निरंजन ने अपने श्वांसों द्वारा चार वेद उत्पन्न किए। उनको गुप्त वाणी द्वारा आज्ञा दी कि सागर में निवास करो) चारों वेद निकले वह ब्रह्मा ने लिए। वस्तु लेकर तीनों बच्चे माता के पास आए तब माता ने कहा कि चारों वेदों को ब्रह्मा रखे व पढे।

नोट :- वास्तव में पूर्णब्रह्म ने, ब्रह्म अर्थात् काल को पाँच वेद प्रदान किए थे। लेकिन ब्रह्म ने केवल चार वेदों को प्रकट किया। पाँचवां वेद छुपा दिया। जो पूर्ण परमात्मा ने स्वयं प्रकट होकर कविर्गिर्भीः अर्थात् कविर्वाणी (कबीर वाणी) द्वारा लोकोक्तियों व दोहों के माध्यम से प्रकट किया है।

दूसरी बार सागर मन्थन किया तो तीन कन्याऐं मिली। माता ने तीनों को बाँट दिया। प्रकृति (दुर्गा) ने अपने ही अन्य तीन रूप (सावित्री,लक्ष्मी तथा पार्वती) धारण किए तथा समुन्द्र में छुपा दी। सागर मन्थन के समय बाहर आ गई। वही प्रकृति तीन रूप हुई तथा भगवान ब्रह्मा को सावित्री, भगवान विष्णु को लक्ष्मी, भगवान शंकर को पार्वती पत्नी रूप में दी। तीनों ने भोग विलास किया, सुर तथा असुर दोनों पैदा हुए।

{जब तीसरी बार सागर मन्थन किया तो चौदह रत्न ब्रह्मा को तथा अमृत विष्णु को व देवताओं को, मद्य(शराब) असुरों को तथा विष परमार्थ शिव ने अपने कंठ में ठहराया। यह तो बहुत बाद की बात है।} जब ब्रह्मा वेद पढ़ने लगा तो पता चला कि कोई सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला कुल का मालिक पुरूष (प्रभु) और है। तब ब्रह्मा जी ने विष्णु जी व शंकर जी को बताया कि वेदों में वर्णन है कि सृजनहार कोई और प्रभु है परन्तु वेद कहते हैं कि भेद हम भी नहीं जानते, उसके लिए संकेत है कि किसी तत्त्वदर्शी संत से पूछो। तब ब्रह्मा माता के पास आया और सब वृतांत कह सुनाया। माता कहा करती थी कि मेरे अतिरिक्त और कोई नहीं है। मैं ही कर्ता हूँ। मैं ही सर्वशक्तिमान हूँ परन्तु ब्रह्मा ने कहा कि वेद ईश्वर कृत हैं यह झूठ नहीं हो सकते। दुर्गा ने कहा कि तेरा पिता तुझे दर्शन नहीं देगा, उसने प्रतिज्ञा की हुई है। तब ब्रह्मा ने कहा माता जी अब आप की बात पर अविश्वास हो गया है। मैं उस पुरूष (प्रभु) का पता लगाकर ही रहूँगा। दुर्गा ने कहा कि यदि वह तुझे दर्शन नहीं देगा तो तुम क्या करोगे? ब्रह्मा ने कहा कि मैं आपको शक्ल नहीं दिखाऊँगा। दूसरी तरफ ज्योति निरंजन ने कसम खाई है कि मैं अव्यक्त रहूँगा किसी को दर्शन नहीं दूँगा अर्थात् 21 ब्रह्माण्ड में कभी भी अपने वास्तविक काल रूप में आकार में नहीं आऊँगा।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 24

अव्यक्तम्, व्यक्तिम्, आपन्नम्, मन्यन्ते, माम्, अबुद्धयः।
परम्, भावम्, अजानन्तः, मम, अव्ययम्, अनुत्तमम्।।24।।

अनुवाद : (अबुद्धयः) बुद्धिहीन लोग (मम्) मेरे (अनुतमम्) अश्रेष्ठ (अव्ययम्) अटल (परम्) परम (भावम्) भावको (अजानन्तः) न जानते हुए (अव्यक्तम्) अदृश्यमान (माम्) मुझ कालको (व्यक्तिम्)

नर रूप आकार में कृष्ण (आपन्नम्) प्राप्त हुआ (मन्यन्ते) मानते हैं।

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 25

न, अहम्, प्रकाशः, सर्वस्य, योगमायासमावृतः।

मूढः, अयम्, न, अभिजानाति, लोकः, माम्, अजम्, अव्ययम्।।25।।

अनुवाद : (अहम्) मैं (योगमाया समावृतः) योगमायासे छिपा हुआ (सर्वस्य) सबके (प्रकाशः) प्रत्यक्ष (न) नहीं होता अर्थात् अदृश्य अर्थात् अव्यक्त रहता हूँ इसलिये (अजम्) जन्म न लेने वाले (अव्ययम्) अविनाशी अटल भावको (अयम्) यह (मूढः) अज्ञानी (लोकः) जनसमुदाय संसार (माम्) मुझे (न) नहीं (अभिजानाति) जानता अर्थात् मुझको कृष्ण समझता है। क्योंकि ब्रह्म अपनी शब्द शक्ति से अपने नाना रूप बना लेता है, यह दुर्गा का पति है इसलिए इस मंत्र में कह रहा है कि मैं श्री कृष्ण आदि की तरह दुर्गा से जन्म नहीं लेता।

"ब्रह्मा का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रयत्न"

तब दुर्गा ने ब्रह्मा जी से कहा कि अलख निंरजन तुम्हारा पिता है परन्तु वह तुम्हें दर्शन नहीं देगा। ब्रह्मा ने कहा कि मैं दर्शन करके ही लौटूँगा। माता ने पूछा कि यदि तुझे दर्शन नहीं हुए तो क्या करेगा? ब्रह्मा ने कहा मैं प्रतिज्ञा करता हूँ। यदि पिता के दर्शन नहीं हुए तो मैं आपके समक्ष नहीं आऊँगा। यह कह कर ब्रह्मा जी व्याकुल होकर उत्तर दिशा की तरफ चल दिया जहाँ अन्धेरा ही अन्धेरा है। वहाँ ब्रह्मा ने चार युग तक ध्यान लगाया परन्तु कुछ भी प्राप्ति नहीं हुई। काल ने आकाशवाणी की कि जीव उत्पत्ति क्यों नहीं की? भवानी ने कहा कि आप का ज्येष्ठ पुत्र ब्रह्मा जिद्द करके आप की तलाश में गया है। ब्रह्मा के बिना जीव उत्पत्ति का सब कार्य असम्भव है। ब्रह्म (काल) ने कहा उसे वापिस बुला लो। मैं उसे दर्शन नहीं दूँगा। तब दुर्गा (प्रकृति) ने अपनी शब्द शक्ति से गायत्री नाम की लड़की उत्पन्न की तथा उसे ब्रह्मा को लौटा लाने को कहा। गायत्री ब्रह्मा जी के पास गई परंतु ब्रह्मा जी समाधि लगाए हुए थे उन्हें कोई आभास ही नहीं था कि कोई आया है। तब आदि कुमारी (प्रकृति) ने गायत्री को ध्यान द्वारा बताया कि इस के चरण स्पर्श कर। तब गायत्री ने ऐसा ही किया। ब्रह्मा जी का ध्यान भंग हुआ तो क्रोध वश बोले कि कौन पापिन है जिसने मेरा ध्यान भंग किया है। मैं तुझे शाप दूँगा। गायत्री कहने लगी कि मेरा दोष नहीं है पहले मेरी बात सुनो तब शाप देना। मेरे को माता ने तुम्हें लौटा लाने को कहा है क्योंकि आपके बिना जीव उत्पत्ति नहीं हो सकती। ब्रह्मा ने कहा कि मैं कैसे जाऊँ? पिता जी के दर्शन हुए नहीं, ऐसे जाऊँ तो मेरा उपहास होगा। यदि आप माता जी के समक्ष यह कह दें कि ब्रह्मा को पिता (ज्योति निरंजन) के दर्शन हुए हैं, मैंने अपनी आँखो से देखा है तो मैं आपके साथ चलूँ। तब गायत्री ने कहा कि आप मेरे साथ संभोग (सैक्स) करोगे तो मैं आपकी झूठी साक्षी (गवाही) भरूंगी। तब ब्रह्मा ने सोचा कि पिता के दर्शन हुए नहीं, वैसे जाऊँ तो माता के सामने शर्म लगेगी और चारा नहीं दिखाई दिया, फिर गायत्री से रति क्रिया (संभोग) की।

तब गायत्री ने कहा कि क्यों न एक गवाह और तैयार किया जाए। ब्रह्मा ने कहा बहुत ही अच्छा है। तब गायत्री ने शब्द शक्ति से एक लड़की (पुहपवति नाम की) पैदा की तथा उससे दोनों ने कहा कि आप गवाही देना कि ब्रह्मा ने पिता के दर्शन किए हैं। तब पुहपवति ने कहा कि

मैं क्यों झूठी गवाही दूँ ? हाँ, यदि ब्रह्मा मेरे से रति क्रिया (संभोग) करे तो गवाही दे सकती हूँ। गायत्री ने ब्रह्मा को समझाया (उकसाया) कि और कोई चारा नहीं है तब ब्रह्मा ने पुहपवति से संभोग किया तो तीनों मिलकर आदि माया (प्रकृति) के पास आए। दोनों देवियों ने उपरोक्त शर्त इसलिए रखी थी कि यदि ब्रह्मा माता के सामने हमारी झूठी गवाही को बता देगा तो माता हमें शाप दे देगी। इसलिए उसे भी दोषी बना लिया।

(यहाँ महाराज गरीबदास जी कहते हैं कि – ''दास गरीब यह चूक धुरों धुर'')

"माता (दुर्गा) द्वारा ब्रह्मा को शाप देना"

तब माता ने ब्रह्मा से पूछा क्या तुझे तेरे पिता के दर्शन हुए? ब्रह्मा ने कहा हाँ मुझे पिता के दर्शन हुए हैं। दुर्गा ने कहा साक्षी बता। तब ब्रह्मा ने कहा इन दोनों के समक्ष साक्षात्कार हुआ है। देवी ने उन दोनों लड़कियों से पूछा क्या तुम्हारे सामने ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ है तब दोनों ने कहा कि हाँ, हमने अपनी आँखों से देखा है। फिर भवानी (प्रकृति) को संशय हुआ कि मुझे तो ब्रह्म ने कहा था कि मैं किसी को दर्शन नहीं दूँगा, परन्तु ये कहते हैं कि दर्शन हुए हैं। तब अष्टंगी ने ध्यान लगाया और काल/ज्योति निरंजन से पूछा कि यह क्या कहानी है? ज्योति निंरजन जी ने कहा कि ये तीनों झूठ बोल रहे हैं। तब माता ने कहा तुम झूठ बोल रहे हो। आकाशवाणी हुई है कि इन्हें कोई दर्शन नहीं हुए। यह बात सुनकर ब्रह्मा ने कहा कि माता जी मैं सौगंध खाकर पिता की तलाश करने गया था। परन्तु पिता (ब्रह्म) के दर्शन हुए नहीं। आप के पास आने में शर्म लग रही थी। इसलिए हमने झूठ बोल दिया। तब माता (दुर्गा) ने कहा कि अब मैं तुम्हें शॉप देती हूँ।

<u>ब्रह्मा को शॉप</u> :- तेरी पूजा जगत में नहीं होगी। आगे तेरे वंशज होंगे वे बहुत पाखण्ड करेंगे। झूठी बात बना कर जगत को ठगेंगे। ऊपर से तो कर्म काण्ड करते दिखाई देंगे अन्दर से विकार करेंगे। कथा पुराणों को पढ़कर सुनाया करेंगे, स्वयं को ज्ञान नहीं होगा कि सद्ग्रन्थों में वास्तविकता क्या है, फिर भी मान वश तथा धन प्राप्ति के लिए गुरु बन कर अनुयाइयों को लोकवेद (शास्त्र विरुद्ध दंत कथा) सुनाया करेंगे। देवी-देवों की पूजा करके तथा करवाके, दूसरों की निन्दा करके कष्ट पर कष्ट उठायेंगे। जो उनके अनुयाई होंगे उनको परमार्थ नहीं बताएंगे। दक्षिणा के लिए जगत को गुमराह करते रहेंगे। अपने आपको सबसे श्रेष्ठ मानेंगे, दूसरों को नीचा समझेंगे। जब माता के मुख से यह सुना तो ब्रह्मा मुर्छित होकर जमीन पर गिर गया। बहुत समय उपरान्त होश में आया।

<u>गायत्री को शॉप</u> : -- तेरे कई सांड पति होंगे। तू मृतलोक में गाय बनेगी।

<u>पुहपवति को शॉप</u> : -- तेरी जगह गंदगी में होगी। तेरे फूलों को कोई पूजा में नहीं लाएगा। इस झूठी गवाही के कारण तुझे यह नरक भोगना होगा। तेरा नाम केवड़ा केतकी होगा। (हरियाणा में कुसोंधी कहते हैं। यह गंदगी (कुरड़ियों) वाली जगह पर होती है।)

इस प्रकार तीनों को शाप देकर माता भवानी बहुत पछताई। {इस प्रकार पहले तो जीव बिना सोचे मन (काल निरंजन) के प्रभाव से गलत कार्य कर देता है परन्तु जब आत्मा (सतपुरूष अंश) के प्रभाव से उसे ज्ञान होता है तो पीछे पछताना पड़ता है। जिस प्रकार

माता-पिता अपने बच्चों को छोटी सी गलती के कारण ताड़ते हैं (क्रोधवश होकर) परन्तु बाद में बहुत पछताते हैं। यही प्रक्रिया मन (काल-निंरजन) के प्रभाव से सर्व जीवों में क्रियावान हो रही है।} हाँ, यहाँ एक बात विशेष है कि निरंजन (काल-ब्रह्म) ने भी अपना कानून बना रखा है कि यदि कोई जीव किसी दुर्बल जीव को सताएगा तो उसे उसका बदला देना पड़ेगा। जब आदि भवानी (प्रकृति, अष्टंगी) ने ब्रह्मा, गायत्री व पुहपवति को शाप दिया तो अलख निंरजन (ब्रह्म-काल) ने कहा कि हे भवानी (प्रकृति/अष्टंगी) यह आपने अच्छा नहीं किया। अब मैं (निरंजन) आपको शाप देता हूँ कि द्वापर युग में तेरे भी पाँच पति होंगे। (द्रोपदी ही आदिमाया का अवतार हुई है।) जब यह आकाश वाणी सुनी तो आदि माया ने कहा कि हे ज्योति निंरजन (काल) मैं तेरे वश पड़ी हूँ जो चाहे सो कर ले।

{सृष्टि रचना में दुर्गा जी के अन्य नामों का बार-बार लिखने का उद्देश्य है कि पुराणों, गीता तथा वेदों में प्रमाण देखते समय भ्रम उत्पन्न नहीं होगा। जैसे गीता अध्याय 14 श्लोक 3-4 में काल ब्रह्म ने कहा है कि प्रकृति तो गर्भ धारण करने वाली सब जीवों की माता है। मैं उसके गर्भ में बीज स्थापित करने वाला पिता हूँ। श्लोक 4 में कहा है कि प्रकृति से उत्पन्न तीनों गुण जीवात्मा को कर्मों के बँधन में बाँधते हैं। - (लेख समाप्त)।

इस प्रकरण में प्रकृति तो दुर्गा है तथा तीनों गुण तीनों देवता यानि रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव के सांकेतिक नाम हैं।}

"विष्णु का अपने पिता (काल/ब्रह्म) की प्राप्ति के लिए प्रस्थान व माता का आशीर्वाद पाना"

इसके बाद विष्णु से प्रकृति ने कहा कि पुत्र तू भी अपने पिता का पता लगा ले। तब विष्णु अपने पिता जी काल (ब्रह्म) का पता करते-करते पाताल लोक में चले गए, जहाँ शेषनाग था। उसने विष्णु को अपनी सीमा में प्रविष्ट होते देख कर क्रोधित हो कर जहर भरा फुंकारा मारा। उसके विष के प्रभाव से विष्णु जी का रंग सांवला हो गया, जैसे स्प्रे पेंट हो जाता है। तब विष्णु ने चाहा कि इस नाग को मजा चखाना चाहिए। तब ज्योति निरंजन (काल) ने देखा कि अब विष्णु को शांत करना चाहिए। तब आकाशवाणी हुई कि विष्णु अब तू अपनी माता जी के पास जा और सत्य-सत्य सारा विवरण बता देना तथा जो कष्ट आपको शेषनाग से हुआ है, इसका प्रतिशोध द्वापर युग में लेना। द्वापर युग में आप (विष्णु) तो कृष्ण अवतार धारण करोगे और कालीदह में कालिन्द्री नामक नाग, शेष नाग का अवतार होगा।

ऊँच होई के नीच सतावै, ताकर ओएल (बदला) मोही सों पावै।
जो जीव देई पीर पुनी काँहु, हम पुनि ओएल दिवावें ताहूँ।।

तब विष्णु जी माता जी के पास आए तथा सत्य-सत्य कह दिया कि मुझे पिता के दर्शन नहीं हुए। इस बात से माता (प्रकृति) बहुत प्रसन्न हुई और कहा कि पुत्र तू सत्यवादी है। अब मैं अपनी शक्ति से तेरे पिता से मिलाती हूँ तथा तेरे मन का संशय खत्म करती हूँ।

कबीर, देख पुत्र तोहि पिता भीटाऊँ, तौरे मन का धोखा मिटाऊँ।
मन स्वरूप कर्ता कह जानों, मन ते दूजा और न मानो।

स्वर्ग पाताल दौर मन केरा, मन अस्थीर मन अहै अनेरा।
निंरकार मन ही को कहिए, मन की आस निश दिन रहिए।
देख हूँ पलटि सुन्य मह ज्योति, जहाँ पर झिलमिल झालर होती।।

इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकति) ने विष्णु से कहा कि मन ही जगत का कर्ता है, यही ज्योति निरंजन है। ध्यान में जो एक हजार ज्योतियाँ नजर आती हैं वही उसका रूप है। जो शंख, घण्टा आदि का बाजा सुना, यह महास्वर्ग में निरंजन का ही बज रहा है। तब माता (अष्टंगी, प्रकति) ने कहा कि हे पुत्र तुम सब देवों के सरताज हो और तेरी हर कामना व कार्य मैं पूर्ण करूंगी। तेरी पूजा सर्व जगत में होगी। आपने मुझे सच-सच बताया है। काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों के प्राणियों की विशेष आदत है कि अपनी व्यर्थ महिमा बनाता है। जैसे दुर्गा जी श्री विष्णु जी को कह रही है कि तेरी पूजा जगत में होगी। मैंने तुझे तेरे पिता के दर्शन करा दिए। दुर्गा ने केवल प्रकाश दिखा कर श्री विष्णु जी को बहका दिया। श्री विष्णु जी भी प्रभु की यही स्थिति अपने अनुयाइयों को समझाने लगे कि परमात्मा का केवल प्रकाश दिखाई देता है। परमात्मा निराकार है। इसके बाद आदि भवानी रूद्र(महेश जी) के पास गई तथा कहा कि महेश तू भी कर ले अपने पिता की खोज तेरे दोनों भाइयों को तो तुम्हारे पिता के दर्शन नहीं हुए उनको जो देना था वह प्रदान कर दिया है अब आप माँगो जो माँगना है। तब महेश ने कहा कि हे जननी ! मेरे दोनों बड़े भाईयों को पिता के दर्शन नहीं हुए फिर प्रयत्न करना व्यर्थ है। कपा मुझे ऐसा वर दो कि मैं अमर (मत्युंजय) हो जाऊँ। तब माता ने कहा कि यह मैं नहीं कर सकती। हाँ युक्ति बता सकती हूँ, जिससे तेरी आयु सबसे लम्बी बनी रहेगी। विधि योग समाधि है (इसलिए महादेव जी ज्यादातर समाधि में ही रहते हैं)। इस प्रकार माता (अष्टंगी, प्रकति) ने तीनों पुत्रों को विभाग बांट दिए :-

भगवान ब्रह्मा जी को काल लोक में लख चौरासी के चोले (शरीर) रचने (बनाने) का अर्थात् रजोगुण प्रभावित करके संतान उत्पत्ति के लिए विवश करके जीव उत्पत्ति कराने का विभाग प्रदान किया। भगवान विष्णु जी को इन जीवों के पालन पोषण (कर्मानुसार) करने, तथा मोह-ममता उत्पन्न करके स्थिति बनाए रखने का विभाग दिया।

भगवान शिव शंकर (महादेव) को संहार करने का विभाग प्रदान किया क्योंकि इनके पिता निरंजन को एक लाख मानव शरीर धारी जीव प्रतिदिन खाने पड़ते हैं।

यहां पर मन में एक प्रश्न उत्पन्न होगा कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर जी से उत्पत्ति, स्थिति और संहार कैसे होता है। ये तीनों अपने-२ लोक में रहते हैं। जैसे आजकल संचार प्रणाली को चलाने के लिए उपग्रहों को ऊपर आसमान में छोड़ा जाता है और वे नीचे पथ्वी पर संचार प्रणाली को चलाते हैं। ठीक इसी प्रकार ये तीनों देव जहां भी रहते हैं इनके शरीर से निकलने वाले सूक्ष्म गुण की तरंगें तीनों लोकों में अपने आप हर प्राणी पर प्रभाव बनाए रहती है।

उपरोक्त विवरण एक ब्रह्माण्ड में ब्रह्म (काल) की रचना का है। ऐसे-ऐसे क्षर पुरुष (काल) के इक्कीस ब्रह्माण्ड हैं।

परन्तु क्षर पुरूष (काल) स्वयं व्यक्त अर्थात् वास्तविक शरीर रूप में सबके सामने नहीं आता। उसी को प्राप्त करने के लिए तीनों देवों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी, शिव जी) को वेदों में

वर्णित विधि अनुसार भरसक साधना करने पर भी ब्रह्म (काल) के दर्शन नहीं हुए। बाद में ऋषियों ने वेदों को पढ़ा। उसमें लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि' (पवित्र यजुर्वेद अ. 1 मंत्र 15) परमेश्वर सशरीर है तथा पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 1 में लिखा है कि 'अग्नेः तनूर् असि विष्णवे त्वा सोमस्य तनूर् असि'। इस मंत्र में दो बार वेद गवाही दे रहा है कि सर्वव्यापक, सर्वपालन कर्ता सतपुरुष सशरीर है। पवित्र यजुर्वेद अध्याय 40 मंत्र 8 में कहा है कि (कविर् मनिषी) जिस परमेश्वर की सर्व प्राणियों को चाह है, वह कविर् अर्थात् कबीर है। उसका शरीर बिना नाड़ी (अस्नाविरम्) का है, (शुक्रम्) वीर्य से बनी पाँच तत्त्व से बनी भौतिक (अकायम्) काया रहित है। वह सर्व का मालिक सर्वोपरि सत्यलोक में विराजमान है, उस परमेश्वर का तेजपुंज का (स्वर्ज्योति) स्वयं प्रकाशित शरीर है जो शब्द रूप अर्थात् अविनाशी है। वही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) है जो सर्व ब्रह्माण्डों की रचना करने वाला (व्यदधाता) सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार (स्वयम्भूः) स्वयं प्रकट होने वाला (यथा तथ्य अर्थान्) वास्तव में (शाश्वत्) अविनाशी है (गीता अध्याय 15 श्लोक 17 में भी प्रमाण है।) भावार्थ है कि पूर्ण ब्रह्म का शरीर का नाम कबीर (कविर देव) है। उस परमेश्वर का शरीर नूर तत्त्व से बना है। परमात्मा का शरीर अति सूक्ष्म है जो उस साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार जीव का भी सुक्ष्म शरीर है जिसके ऊपर पाँच तत्त्व का खोल (कवर) अर्थात् पाँच तत्त्व की काया चढ़ी होती है जो माता-पिता के संयोग से (शुक्रम) वीर्य से बनी है। शरीर त्यागने के पश्चात् भी जीव का सुक्ष्म शरीर साथ रहता है। वह शरीर उसी साधक को दिखाई देता है जिसकी दिव्य दृष्टि खुल चुकी है। इस प्रकार परमात्मा व जीव की स्थिति को समझें। वेदों में ओ3म् नाम के स्मरण का प्रमाण है जो केवल ब्रह्म साधना है। इस उद्देश्य से ओ3म् नाम के जाप को पूर्ण ब्रह्म का मान कर ऋषियों ने भी हजारों वर्ष हठयोग (समाधि लगा कर) करके प्रभु प्राप्ति की चेष्टा की, परन्तु प्रभु दर्शन नहीं हुए, सिद्धियाँ प्राप्त हो गई। उन्हीं सिद्धी रूपी खिलौनों से खेल कर ऋषि भी जन्म-मृत्यु के चक्र में ही रह गए तथा अपने अनुभव के शास्त्रों में परमात्मा को निराकार लिख दिया। ब्रह्म (काल) ने कसम खाई है कि मैं अपने वास्तविक रूप में किसी को दर्शन नहीं दूँगा। मुझे अव्यक्त जानेंगे (अव्यक्त का भावार्थ है कि कोई आकार में है परन्तु व्यक्तिगत रूप से स्थूल रूप में दर्शन नहीं देता। जैसे आकाश में बादल छा जाने पर दिन के समय सूर्य अदृश हो जाता है। वह दृश्यमान नहीं है, परन्तु वास्तव में बादलों के पार ज्यों का त्यों है, इस अवस्था को अव्यक्त कहते हैं।)। (प्रमाण के लिए गीता अध्याय 7 श्लोक 24-25, अध्याय 11 श्लोक 48 तथा 32)

पवित्र गीता जी बोलने वाला ब्रह्म (काल) श्री कृष्ण जी के शरीर में प्रेतवत प्रवेश करके कह रहा है कि अर्जुन मैं बढ़ा हुआ काल हूँ और सर्व को खाने के लिए आया हूँ। (गीता अध्याय 11 का श्लोक नं. 32) यह मेरा वास्तविक रूप है, इसको तेरे अतिरिक्त न तो कोई पहले देख सका तथा न कोई आगे देख सकता है अर्थात् वेदों में वर्णित यज्ञ-जप-तप तथा ओ3म् नाम आदि की विधि से मेरे इस वास्तविक स्वरूप के दर्शन नहीं हो सकते। (गीता अध्याय 11 श्लोक नं 48) मैं कृष्ण नहीं हूँ, ये मूर्ख लोग कृष्ण रूप में मुझ अव्यक्त को व्यक्त

(मनुष्य रूप) मान रहे हैं। क्योंकि ये मेरे घटिया नियम से अपरिचित हैं कि मैं कभी वास्तविक इस काल रूप में सबके सामने नहीं आता। अपनी योग माया से छुपा रहता हूँ (गीता अध्याय 7 श्लोक नं. 24-25) विचार करें :- अपने छुपे रहने वाले विधान को स्वयं अश्रेष्ठ (अनुत्तम) क्यों कह रहे हैं?

यदि पिता अपनी सन्तान को भी दर्शन नहीं देता तो उसमें कोई त्रुटि है जिस कारण से छुपा है तथा सुविधाएं भी प्रदान कर रहा है। काल (ब्रह्म) को शापवश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का आहार करना पड़ता है तथा 25 प्रतिशत प्रतिदिन जो ज्यादा उत्पन्न होते हैं उन्हें ठिकाने लगाने के लिए तथा कर्म भोग का दण्ड देने के लिए चौरासी लाख योनियों की रचना की हुई है। यदि सबके सामने बैठ कर किसी की पुत्री, किसी की पत्नी, किसी के पुत्र, माता-पिता को खा गए तो सर्व को ब्रह्म से घ्णा हो जाए तथा जब भी कभी पूर्ण परमात्मा कविरग्नि (कबीर परमेश्वर) स्वयं आए या अपना कोई संदेशवाहक (दूत) भेंजे तो सर्व प्राणी सत्यभक्ति करके काल के जाल से निकल जाएं।

इसलिए धोखा देकर रखता है तथा पवित्र गीता अध्याय 7 श्लोक 18,24,25 में अपनी साधना से होने वाली मुक्ति (गति) को भी (अनुत्तमाम्) अति अश्रेष्ठ कहा है तथा अपने विधान (नियम)को भी (अनुत्तम) अश्रेष्ठ कहा है।

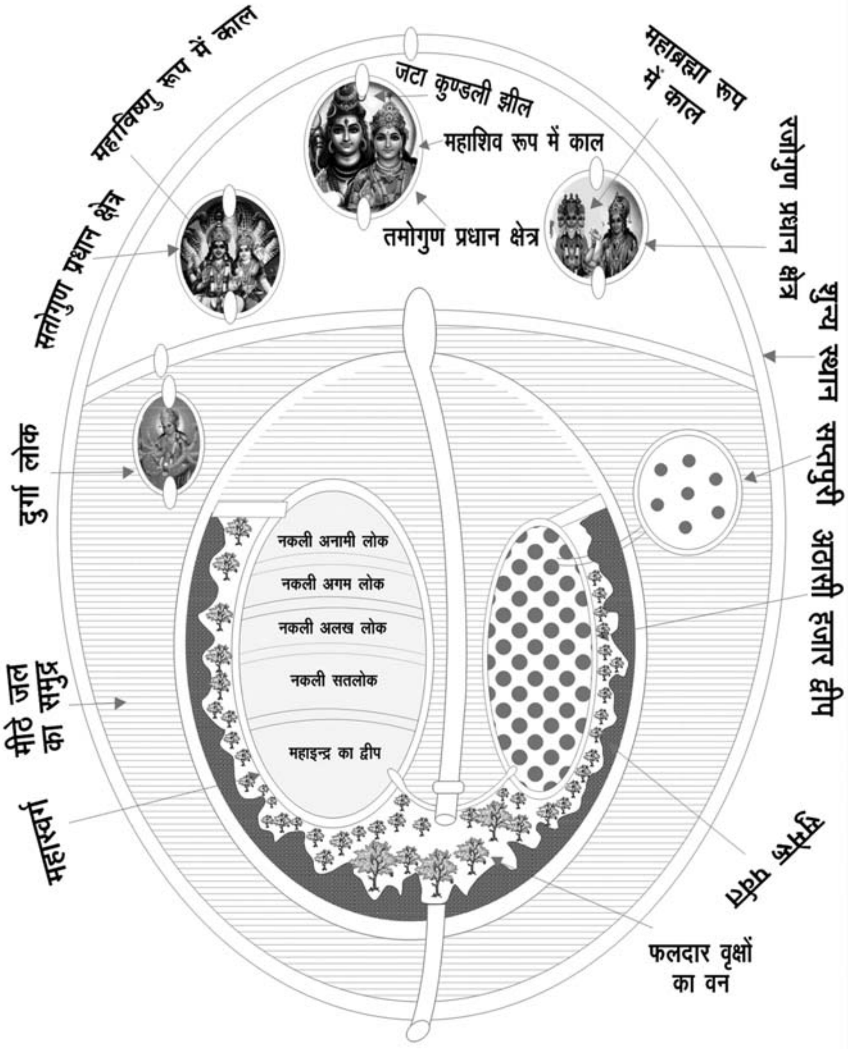
प्रत्येक ब्रह्माण्ड में बने ब्रह्मलोक में एक महास्वर्ग बनाया है। महास्वर्ग में एक स्थान पर नकली सतलोक - नकली अलख लोक - नकली अगम लोक तथा नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखा देने के लिए प्रक्ति (दुर्गा/आदि माया) द्वारा करवा रखी है। कबीर साहेब का एक शब्द है 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' में वाणी है कि 'काया भेद किया निरवारा, यह सब रचना पिण्ड मंझारा है। माया अविगत जाल पसारा, सो कारीगर भारा है। आदि माया किन्ही चतुराई, झूठी बाजी पिण्ड दिखाई, अविगत रचना रचि अण्ड माहि वाका प्रतिबिम्ब डारा है।'

एक ब्रह्माण्ड में अन्य लोकों की भी रचना है, जैसे श्री ब्रह्मा जी का लोक, श्री विष्णु जी का लोक, श्री शिव जी का लोक। जहाँ पर बैठकर तीनों प्रभु नीचे के तीन लोकों (स्वर्गलोक अर्थात् इन्द्र का लोक - प्थ्वी लोक तथा पाताल लोक) पर एक - एक विभाग के मालिक बन कर प्रभुता करते हैं तथा अपने पिता काल के खाने के लिए प्राणियों की उत्पत्ति, स्थिति तथा संहार का कार्यभार संभालते हैं। तीनों प्रभुओं की भी जन्म व म्त्यु होती है। तब काल इन्हें भी खाता है। इसी ब्रह्माण्ड {इसे अण्ड भी कहते हैं क्योंकि ब्रह्माण्ड की बनावट अण्डाकार है, इसे पिण्ड भी कहते हैं क्योंकि शरीर (पिण्ड) में एक ब्रह्माण्ड की रचना कमलों में टी.वी. की तरह देखी जाती है} में एक मानसरोवर तथा धर्मराय (न्यायधीश) का भी लोक है तथा एक गुप्त स्थान पर पूर्ण परमात्मा अन्य रूप धारण करके रहता है जैसे प्रत्येक देश का राजदूत भवन होता है। वहाँ पर कोई नहीं जा सकता। वहाँ पर वे आत्माऐं रहती हैं जिनकी सत्यलोक की भक्ति अधूरी रहती है। जब भक्ति युग आता है तो उस समय परमेश्वर कबीर जी अपना प्रतिनिधि पूर्ण संत सतगुरु भेजते हैं। इन पुण्यात्माओं को प्थ्वी पर उस समय मानव शरीर प्राप्त होता है तथा ये शीघ्र ही सत भक्ति पर लग जाते हैं तथा

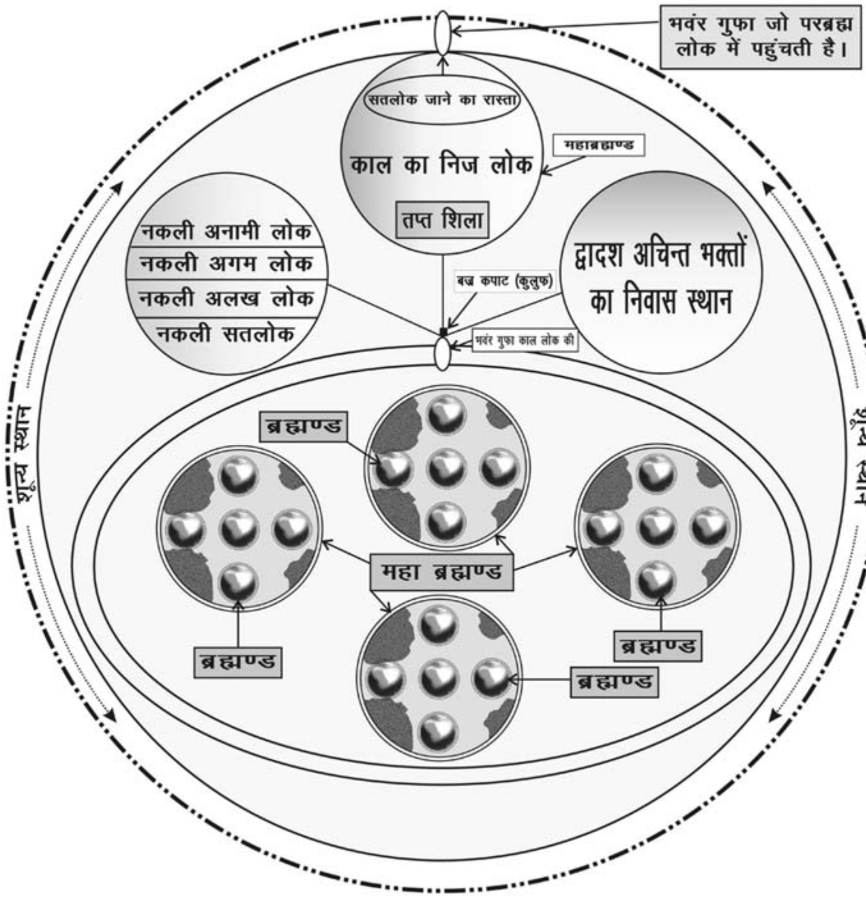
सतगुरु से दीक्षा प्राप्त करके पूर्ण मोक्ष प्राप्त कर जाते हैं। उस स्थान पर रहने वाले हंस आत्माओं की निजी भक्ति कमाई खर्च नहीं होती। परमात्मा के भण्डार से सर्व सुविधाऐं उपलब्ध होती हैं। ब्रह्म (काल) के उपासकों की भक्ति कमाई स्वर्ग-महा स्वर्ग में समाप्त हो जाती है क्योंकि इस काल लोक (ब्रह्म लोक) तथा परब्रह्म लोक में प्राणियों को अपना किया कर्मफल ही मिलता है।

क्षर पुरुष (ब्रह्म) ने अपने 20 ब्रह्माण्डों को चार महाब्रह्माण्डों में विभाजित किया है। एक महाब्रह्माण्ड में पाँच ब्रह्माण्डों का समूह बनाया है तथा चारों ओर से अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है तथा चारों महा ब्रह्माण्डों को भी फिर अण्डाकार गोलाई (परिधि) में रोका है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड की रचना एक महाब्रह्माण्ड जितना स्थान लेकर की है। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में प्रवेश होते ही तीन रास्ते बनाए हैं। इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में भी बांई तरफ नकली सतलोक, नकली अलख लोक, नकली अगम लोक, नकली अनामी लोक की रचना प्राणियों को धोखे में रखने के लिए आदि माया (दुर्गा) से करवाई है तथा दांई तरफ बारह सर्व श्रेष्ठ ब्रह्म साधकों (भक्तों) को रखता है। फिर प्रत्येक युग में उन्हें अपने संदेश वाहक (सन्त सतगुरू) बनाकर पथ्वी पर भेजता है, जो शास्त्र विधि रहित साधना व ज्ञान बताते हैं तथा स्वयं भी भक्तिहीन हो जाते हैं तथा अनुयाइयों को भी काल जाल में फंसा जाते हैं। फिर वे गुरु जी तथा अनुयाई दोनों ही नरक में जाते हैं। फिर सामने एक ताला (कुलुफ) लगा रखा है। वह रास्ता काल (ब्रह्म) के निज लोक में जाता है। जहाँ पर यह ब्रह्म (काल) अपने वास्तविक मानव सदश काल रूप में रहता है। इसी स्थान पर एक पत्थर की टुकड़ी तवे के आकार की (चपाती पकाने की लोहे की गोल प्लेट सी होती है) स्वतः गर्म रहती है। जिस पर एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों के सूक्ष्म शरीर को भूनकर उनमें से गंदगी निकाल कर खाता है। उस समय सर्व प्राणी बहुत पीड़ा अनुभव करते हैं तथा हाहाकार मच जाती है। फिर कुछ समय उपरान्त वे बेहोश हो जाते हैं। जीव मरता नहीं। फिर धर्मराय के लोक में जाकर कर्माधार से अन्य जन्म प्राप्त करते हैं तथा जन्म-मत्यु का चक्कर बना रहता है। उपरोक्त सामने लगा ताला ब्रह्म (काल) केवल अपने आहार वाले प्राणियों के लिए कुछ क्षण के लिए खोलता है। पूर्ण परमात्मा के सत्यनाम व सारनाम से यह ताला स्वयं खुल जाता है। ऐसे काल का जाल पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर साहेब) ने स्वयं ही अपने निजी भक्त धर्मदास जी को समझाया।

ब्रह्म लोक का लघु चित्र



ज्योति निरंजन (काल) ब्रह्म के लोक (21 ब्रह्मण्ड) का लघु चित्र



"परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों की स्थापना"

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने आगे बताया है कि परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने अपने कार्य में गफलत की क्योंकि यह मानसरोवर में सो गया तथा जब परमेश्वर (मैंनें अर्थात् कबीर साहेब ने) उस सरोवर में अण्डा छोड़ा तो अक्षर पुरुष (परब्रह्म) ने उसे क्रोध से देखा। इन दोनों अपराधों के कारण इसे भी सात शंख ब्रह्माण्ड़ों सहित सतलोक से बाहर कर दिया। अन्य कारण अक्षर पुरुष (परब्रह्म) अपने साथी ब्रह्म (क्षर पुरुष) की विदाई में व्याकुल होकर परमपिता कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की याद भूलकर उसी को याद करने लगा तथा सोचा कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तो बहुत आनन्द मना रहा होगा, वह स्वतंत्र राज्य करेगा, मैं पीछे रह गया तथा अन्य कुछ आत्माऐं जो परब्रह्म के साथ सात शंख ब्रह्माण्डों में जन्म-मत्यु का कर्मदण्ड भोग रही हैं, उन हंस आत्माओं की विदाई की याद में खो गई जो ब्रह्म (काल) के साथ इक्कीस ब्रह्माण्डों में फंसी हैं तथा पूर्ण परमात्मा, सुखदाई कविर्देव की याद भुला दी। परमेश्वर कविर् देव के बार-बार समझाने पर भी आस्था कम नहीं हुई। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने सोचा कि मैं भी अलग स्थान प्राप्त करूँ तो अच्छा रहे। यह सोच कर राज्य प्राप्ति की इच्छा से सारनाम का जाप प्रारम्भ कर दिया। इसी प्रकार अन्य आत्माओं ने (जो परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों में फंसी हैं) सोचा कि वे जो ब्रह्म के साथ आत्माऐं गई हैं वे तो वहाँ मौज-मस्ती मनाऐंगे, हम पीछे रह गये। परब्रह्म के मन में यह धारणा बनी कि क्षर पुरुष अलग होकर बहुत सुखी होगा। यह विचार कर अन्तरात्मा से भिन्न स्थान प्राप्ति की ठान ली। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) ने हठ योग नहीं किया, परन्तु केवल अलग राज्य प्राप्ति के लिए सहज ध्यान योग विशेष कसक के साथ करता रहा। अलग स्थान प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह विचरने लगा, खाना-पीना भी त्याग दिया। अन्य कुछ आत्माऐं जो पहले काल ब्रह्म के साथ गई आत्माओं के प्रेम में व्याकुल थी, वे अक्षर पुरूष के वैराग्य पर आसक्त होकर उसे चाहने लगी। पूर्ण प्रभु के पूछने पर परब्रह्म ने अलग स्थान माँगा तथा कुछ हंसात्माओं के लिए भी याचना की। तब कविर्देव ने कहा कि जो आत्मा आपके साथ स्वेच्छा से जाना चाहें उन्हें भेज देता हूँ। पूर्ण प्रभु ने पूछा कि कौन हंस आत्मा परब्रह्म के साथ जाना चाहता है, सहमति व्यक्त करे। बहुत समय उपरान्त एक हंस ने स्वीकति दी, फिर देखा-देखी उन सर्व आत्माओं ने भी सहमति व्यक्त कर दी। सर्व प्रथम स्वीकति देने वाले हंस को स्त्री रूप बनाया, उसका नाम ईश्वरी माया (प्रकति सुरति) रखा तथा अन्य आत्माओं को उस ईश्वरी माया में प्रवेश करके अचिन्त द्वारा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) के पास भेजा। (पतिव्रता पद से गिरने की सजा पाई।) कई युगों तक दोनों सात शंख ब्रह्माण्डों में रहे, परन्तु परब्रह्म ने दुर्व्यवहार नहीं किया। ईश्वरी माया की स्वेच्छा से अंगीकार किया तथा अपनी शब्द शक्ति द्वारा नाखुनों से स्त्री इन्द्री (योनि) बनाई। ईश्वरी देवी की सहमति से संतान उत्पन्न की। इस लिए परब्रह्म के लोक (सात शंख ब्रह्माण्डों) में प्राणियों को तप्तशिला का कष्ट नहीं है तथा वहाँ पशु-पक्षी भी ब्रह्म लोक के देवों से अच्छे चरित्र युक्त हैं। आयु भी बहुत लम्बी है, परन्तु जन्म - मत्यु कर्माधार पर कर्मदण्ड तथा परिश्रम करके ही उदर पूर्ति होती है। स्वर्ग

तथा नरक भी ऐसे ही बने हैं। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) को सात शंख ब्रह्माण्ड उसके इच्छा रूपी भक्ति ध्यान अर्थात् सहज समाधि विधि से की उस की कमाई के प्रतिफल में प्रदान किये तथा सत्यलोक से भिन्न स्थान पर गोलाकार परिधि में बन्द करके सात शंख ब्रह्माण्डों सहित अक्षर ब्रह्म व ईश्वरी माया को निष्कासित कर दिया।

पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) असंख्य ब्रह्माण्डों जो सत्यलोक आदि में हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों का भी प्रभु (मालिक) है अर्थात् परमेश्वर कविर्देव कुल का मालिक है।

श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी आदि के चार-चार भुजाएं तथा 16 कलाएं हैं तथा प्रकति देवी (दुर्गा) की आठ भुजाएं हैं तथा 64 कलाएं हैं। ब्रह्म (क्षर पुरुष) की एक हजार भुजाएं हैं तथा एक हजार कलाएं है तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड़ों का प्रभु है। परब्रह्म (अक्षर पुरुष) की दस हजार भुजाएं हैं तथा दस हजार कला हैं तथा सात शंख ब्रह्माण्डों का प्रभु है। पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष अर्थात् सतपुरुष) की असंख्य भुजाएं तथा असंख्य कलाएं हैं तथा ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्ड व परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्डों सहित असंख्य ब्रह्माण्डों का प्रभु है। प्रत्येक प्रभु अपनी सर्व भुजाओं को समेट कर केवल दो भुजाएं भी रख सकते हैं तथा जब चाहें सर्व भुजाओं को भी प्रकट कर सकते हैं। पूर्ण परमात्मा परब्रह्म के प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी अलग स्थान बनाकर अन्य रूप में गुप्त रहता है। यूं समझो जैसे एक घूमने वाला कैमरा बाहर लगा देते हैं तथा अन्दर टी.वी. (टेलीविजन) रख देते हैं। टी.वी. पर बाहर का सर्व दश्य नजर आता है तथा दूसरा टी.वी. बाहर रख कर अन्दर का कैमरा स्थाई करके रख दिया जाए, उसमें केवल अन्दर बैठे प्रबन्धक का चित्र दिखाई देता है। जिससे सर्व कर्मचारी सावधान रहते हैं।

इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा अपने सतलोक में बैठ कर सर्व को नियंत्रित किए हुए हैं तथा प्रत्येक ब्रह्माण्ड में भी सतगुरु कविर्देव विद्यमान रहते हैं जैसे सूर्य दूर होते हुए भी अपना प्रभाव अन्य लोकों में बनाए हुए है।

"पवित्र अथर्ववेद में संष्टि रचना का प्रमाण"

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 1 :-

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद् वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
सः बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः।। 1।।

ब्रह्म–ज–ज्ञानम्–प्रथमम्–पुरस्तात्–विसिमतः–सुरुचः–वेनः–आवः–सः–
बुध्न्याः –उपमा–अस्य–विष्ठाः–सतः–च–योनिम्–असतः–च–वि वः

अनुवाद :– (प्रथमम्) प्राचीन अर्थात् सनातन (ब्रह्म) परमात्मा ने (ज) प्रकट होकर (ज्ञानम्) अपनी सूझ–बूझ से (पुरस्तात्) शिखर में अर्थात् सतलोक आदि को (सुरुचः) स्वइच्छा से बड़े चाव से स्वप्रकाशित (विसिमतः) सीमा रहित अर्थात् विशाल सीमा वाले भिन्न लोकों को रचा। उस (वेनः) जुलाहे ने ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर (आवः) सुरक्षित किया (च) तथा (सः) वह पूर्ण ब्रह्म ही सर्व रचना करता है (अस्य) इसलिए उसी (बुध्न्याः) मूल मालिक ने (योनिम्)

मूलस्थान सत्यलोक की रचना की है (अस्य) इस के (उपमा) सदंश अर्थात् मिलते जुलते (सतः) अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म के लोक कुछ स्थाई (च) तथा (असतः) क्षर पुरुष के अस्थाई लोक आदि (वि वः) आवास स्थान भिन्न (विष्ठाः) स्थापित किए।

भावार्थ :- पवित्र वेदों को बोलने वाला ब्रह्म (काल) कह रहा है कि सनातन परमेश्वर ने स्वयं अनामय (अनामी) लोक से सत्यलोक में प्रकट होकर अपनी सूझ-बूझ से कपड़े की तरह रचना करके ऊपर के सतलोक आदि को सीमा रहित स्वप्रकाशित अजर - अमर अर्थात् अविनाशी ठहराए तथा नीचे के परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्ड व इनमें छोटी-से छोटी रचना भी उसी परमात्मा ने अस्थाई की है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 2 :-

इयं पित्र्या राष्ट्र्येत्वग्रे प्रथमाय जनुषे भुवनेष्ठाः।

तस्मा एतं सुरुचं ह्वारमह्यं घर्मं श्रीणन्तु प्रथमाय धास्यवे।।2।।

इयम्—पित्र्या—राष्ट्रि—एतु—अग्रे—प्रथमाय—जनुषे—भुवनेष्ठाः—तस्मा—एतम्—सुरुचम् — हवारमह्यम्—धर्मम्—श्रीणान्तु—प्रथमाय—धास्यवे

अनुवाद :— (इयम्) इसी (पित्र्या) जगतपिता परमेश्वर ने (एतु) इस (अग्रे) सर्वोत्तम् (प्रथमाय) सर्व से पहली माया परानन्दनी (राष्ट्रि) राजेश्वरी शक्ति अर्थात् पराशक्ति जिसे आकर्षण शक्ति भी कहते हैं, को (जनुषे) उत्पन्न करके (भुवनेष्ठाः) लोक स्थापना की (तस्मा) उसी परमेश्वर ने (सुरुचम्) बड़े चाव के साथ स्वेच्छा से (एतम्) इस (प्रथमाय) प्रथम उत्पत्ति की शक्ति अर्थात् पराशक्ति के द्वारा (ह्वारमह्यम्) एक दूसरे के वियोग को रोकने अर्थात् आकर्षण शक्ति के (श्रीणान्तु) गुरूत्व आकर्षण को परमात्मा ने आदेश दिया सदा रहो उस कभी समाप्त न होने वाले (धर्मम्) स्वभाव से (धास्यवे) धारण करके ताने अर्थात् कपड़े की तरह बुनकर रोके हुए है।

भावार्थ :- जगतपिता परमेश्वर ने अपनी शब्द शक्ति से राष्ट्री अर्थात् सबसे पहली माया राजेश्वरी उत्पन्न की तथा उसी पराशक्ति के द्वारा एक-दूसरे को आकर्षण शक्ति से रोकने वाले कभी न समाप्त होने वाले गुण से उपरोक्त सर्व ब्रह्माण्डों को स्थापित किया है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 3 :-

प्र यो जज्ञे विद्वानस्य बन्धुर्विश्वा देवानां जनिमा विवक्ति।

ब्रह्म ब्रह्मण उज्जभार मध्यान्नीचैरुच्चैः स्वधा अभि प्र तस्थौ।।3।।

प्र—यः—जज्ञे—विद्वानस्य—बन्धुः—विश्वा—देवानाम्—जनिमा—विवक्ति—ब्रह्मः—ब्रह्मणः—उज्जभार—मध्यात्—निचैः—उच्चैः—स्वधा—अभिः—प्रतस्थौ

अनुवाद :— (प्र) सर्व प्रथम (देवानाम्) देवताओं व ब्रह्माण्डों की (जज्ञे) उत्पत्ति के ज्ञान को (विद्वानस्य) जिज्ञासु भक्त का (यः) जो (बन्धुः) वास्तविक साथी अर्थात् पूर्ण परमात्मा ही अपने निज सेवक को (जनिमा) अपने द्वारा संजन किए हुए को (विवक्ति) स्वयं ही ठीक—ठीक विस्तार पूर्वक बताता है कि (ब्रह्मणः) पूर्ण परमात्मा ने (मध्यात्) अपने मध्य से अर्थात् शब्द शक्ति से (ब्रह्मः) ब्रह्म—क्षर पुरूष अर्थात् काल को (उज्जभार) उत्पन्न करके (विश्वा) सारे संसार को अर्थात् सर्व लोकों को (उच्चैः) ऊपर सत्यलोक आदि (निचैः) नीचे परब्रह्म व ब्रह्म के सर्व ब्रह्माण्ड (स्वधा) अपनी धारण करने वाली (अभिः) आकर्षण शक्ति से (प्र तस्थौ) दोनों को अच्छी प्रकार

स्थित किया।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान तथा सर्व आत्माओं की उत्पत्ति का ज्ञान अपने निजी दास को स्वयं ही सही बताता है कि पूर्ण परमात्मा ने अपने मध्य अर्थात् अपने शरीर से अपनी शब्द शक्ति के द्वारा ब्रह्म (क्षर पुरुष/काल) की उत्पत्ति की तथा सर्व ब्रह्माण्डों को ऊपर सतलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक आदि तथा नीचे परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म के 21 ब्रह्माण्डों को अपनी धारण करने वाली आकर्षण शक्ति से ठहराया हुआ है।

जैसे पूर्ण परमात्मा कबीर परमेश्वर (कविर्देव) ने अपने निजी सेवक अर्थात् सखा श्री धर्मदास जी, आदरणीय गरीबदास जी आदि को अपने द्वारा रची संष्टि का ज्ञान स्वयं ही बताया। उपरोक्त वेद मंत्र भी यही समर्थन कर रहा है।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र नं. 4

सः हि दिवः सः पंथिव्या ऋतस्था मही क्षेमं रोदसी अस्कभायत्।

महान् मही अस्कभायद् वि जातो द्यां सद्म पार्थिवं च रजः।।4।।

:–हि–दिवः–स–पंथिव्या–ऋतस्था–मही–क्षेमम्–रोदसी–अकस्भायत्–

महान् –मही–अस्कभायद्–विजातः–धाम्–सदम्–पार्थिवम्–च–रजः

अनुवाद – (सः)उसी सर्वशक्तिमान परमात्मा ने (हि) निःसंदेह (दिवः) ऊपर के चारों दिव्य लोक जैसे सत्य लोक, अलख लोक, अगम लोक तथा अनामी अर्थात् अकह लोक अर्थात् दिव्य गुणों युक्त लोकों को (ऋतस्था) सत्य स्थिर अर्थात् अजर–अमर रूप से स्थिर किए (स) उन्हीं के समान (पंथिव्या) नीचे के पंथ्वी वाले सर्व लोकों जैसे परब्रह्म के सात शंख तथा ब्रह्म/काल के इक्कीस ब्रह्माण्ड (मही) पंथ्वी तत्त्व से (क्षेमम्) सुरक्षा के साथ (अस्कभायत्) ठहराया (रोदसी) आकाश तत्त्व तथा पंथ्वी तत्त्व दोनों से ऊपर नीचे के ब्रह्माण्डों को{जैसे आकाश एक सुक्ष्म तत्त्व है, आकाश का गुण शब्द है, पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के लोक शब्द रूप रचे जो तेजपुंज के बनाए हैं तथा नीचे के परब्रह्म (अक्षर पुरूष) के सप्त शंख ब्रह्माण्ड तथा ब्रह्म/क्षर पुरूष के इक्कीस ब्रह्माण्डों को पंथ्वी तत्त्व से अस्थाई रचा} (महान्) पूर्ण परमात्मा ने (पार्थिवम्) पंथ्वी वाले (वि) भिन्न–भिन्न (धाम्) लोक (च) और (सदम्) आवास स्थान (मही) पंथ्वी तत्त्व से (रजः) प्रत्येक ब्रह्माण्ड में छोटे–छोटे लोकों की (जातः) रचना करके (अस्कभायत्) स्थिर किया।

भावार्थ :- ऊपर के चारों लोक सत्यलोक, अलख लोक, अगम लोक, अनामी लोक, यह तो अजर-अमर स्थाई अर्थात् अविनाशी रचे हैं तथा नीचे के ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोकों को अस्थाई रचना करके तथा अन्य छोटे-छोटे लोक भी उसी परमेश्वर ने रच कर स्थिर किए।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 5

सः बुध्न्यादाष्ट्र जनुषोऽभ्यग्रं बंहस्पतिर्देवता तस्य सम्राट्।

अहर्यच्छुक्रं ज्योतिषो जनिष्टाथ द्युमन्तो वि वसन्तु विप्राः।।5।।

सः–बुध्न्यात्–आष्ट्र–जनुषेः–अभि–अग्रम्–बंहस्पतिः–देवता–तस्य– सम्राट–अहः–यत्–शुक्रम्–ज्योतिषः–जनिष्ट–अथ–द्युमन्तः–वि–वसन्तु–विप्राः

अनुवाद :– (सः) उसी (बुध्न्यात्) मूल मालिक से (अभि–अग्रम्) सर्व प्रथम स्थान पर (आष्ट्र)

अष्टँगी माया—दुर्गा अर्थात् प्रकति देवी (जनुषेः) उत्पन्न हुई क्योंकि नीचे के परब्रह्म व ब्रह्म के लोकों का प्रथम स्थान सतलोक है यह तीसरा धाम भी कहलाता है (तस्य) इस दुर्गा का भी मालिक यही (सम्राट) राजाधिराज (बहस्पतिः) सबसे बड़ा पति व जगतगुरु (देवता) परमेश्वर है। (यत्) जिस से (अहः) सबका वियोग हुआ (अथ) इसके बाद (ज्योतिषः) ज्योति रूप निरंजन अर्थात् काल के (शुक्रम्) वीर्य अर्थात् बीज शक्ति से (जनिष्ट) दुर्गा के उदर से उत्पन्न होकर (विप्राः) भक्त आत्माएं (वि) अलग से (द्युमन्तः) मनुष्य लोक तथा स्वर्ग लोक में ज्योति निरंजन के आदेश से दुर्गा ने कहा (वसन्तु) निवास करो, अर्थात् वे निवास करने लगी।

भावार्थ :- पूर्ण परमात्मा ने ऊपर के चारों लोकों में से जो नीचे से सबसे प्रथम अर्थात् सत्यलोक में आष्ट्रा अर्थात् अष्टंगी (प्रकति देवी/दुर्गा) की उत्पत्ति की। यही राजाधिराज, जगतगुरु, पूर्ण परमेश्वर (सतपुरुष) है जिससे सबका वियोग हुआ है। फिर सर्व प्राणी ज्योति निरंजन (काल) के (वीर्य) बीज से दुर्गा (आष्ट्रा) के गर्भ द्वारा उत्पन्न होकर स्वर्ग लोक व पथ्वी लोक पर निवास करने लगे।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 6

नूनं तदस्य काव्यो हिनोति महो देवस्य पूर्व्यस्य धाम।
एष जज्ञे बहुभिः साकमित्था पूर्वे अर्धे विषिते ससन् नु।।6।।

नूनम्—तत्—अस्य—काव्यः—महः—देवस्य—पूर्व्यस्य—धाम—हिनोति—पूर्वे— विषिते—एष—जज्ञे—बहुभिः—साकम्—इत्था—अर्धे—ससन्—नु।

अनुवाद – (नूनम्) निसंदेह (तत्) वह पूर्ण परमेश्वर अर्थात् तत् ब्रह्म ही (अस्य) इस (काव्यः) भक्त आत्मा जो पूर्ण परमेश्वर की भक्ति विधिवत करता है को वापिस (महः) सर्वशक्तिमान (देवस्य) परमेश्वर के (पूर्व्यस्य) पहले के (धाम) लोक में अर्थात् सत्यलोक में (हिनोति) भेजता है।

(पूर्वे) पहले वाले (विषिते) विशेष चाहे हुए (एष) इस परमेश्वर को व (जज्ञे) संष्टि उत्पत्ति के ज्ञान को जान कर (बहुभिः) बहुत आनन्द (साकम्) के साथ (अर्धे) आधा (ससन्) सोता हुआ (इत्था) विधिवत् इस प्रकार (नु) सच्ची आत्मा से स्तुति करता है।

भावार्थ :- वही पूर्ण परमेश्वर सत्य साधना करने वाले साधक को उसी पहले वाले स्थान (सत्यलोक) में ले जाता है, जहाँ से बिछुड़ कर आए थे। वहाँ उस वास्तविक सुखदाई प्रभु को प्राप्त करके खुशी से आत्म विभोर होकर मस्ती से स्तुति करता है कि हे परमात्मा असंख्य जन्मों के भूले-भटकों को वास्तविक ठिकाना मिल गया। इसी का प्रमाण पवित्र ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16 में भी है।

आदरणीय गरीबदास जी को इसी प्रकार पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) स्वयं सत्यभक्ति प्रदान करके सत्यलोक लेकर गए थे, तब अपनी अमतवाणी में आदरणीय गरीबदास जी महाराज ने आँखों देखकर कहाः-

गरीब, अजब नगर में ले गए, हमकुँ सतगुरु आन। झिलके बिम्ब अगाध गति, सुते चादर तान।।

अथर्ववेद काण्ड नं. 4 अनुवाक नं. 1 मंत्र 7

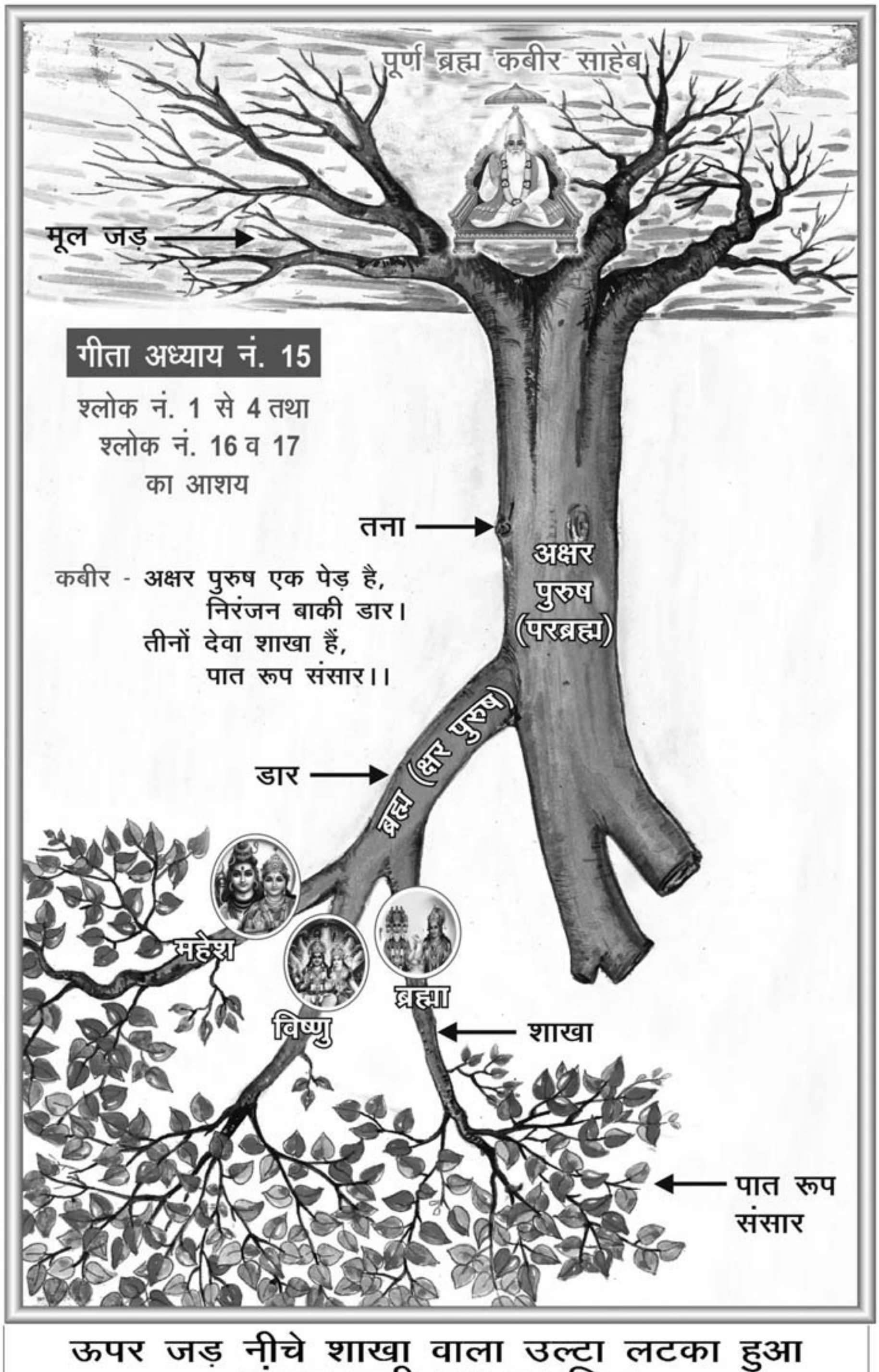
योऽथर्वाणं पित्तरं देवबन्धुं बहस्पतिं नमसाव च गच्छात्।
त्वं विश्वेषां जनिता यथासः कविर्देवो न दभायत् स्वधावान्।।7।।

यः—अथर्वाणम्—पित्तरम्—देवबन्धुम्—बहस्पतिम्—नमसा—अव—च— गच्छात्—त्वम्—विश्वेषाम्—जनिता—यथा—सः—कविर्देवः—न—दभायत्—स्वधावान्

अनुवाद :— (यः) जो (अथर्वाणम्) अचल अर्थात् अविनाशी (पित्तरम्) जगत पिता (देव बन्धुम्) भक्तों का वास्तविक साथी अर्थात् आत्मा का आधार (बहस्पतिम्) जगतगुरु (च) तथा (नमसा) विनम्र पुजारी अर्थात् विधिवत् साधक को (अव) सुरक्षा के साथ (गच्छात्) सतलोक गए हुओं को अर्थात् जिनका पूर्ण मोक्ष हो गया, वे सत्यलोक में जा चुके हैं। उनको सतलोक ले जाने वाला (विश्वेषाम्) सर्व ब्रह्माण्डों की (जनिता) रचना करने वाला जगदम्बा अर्थात् माता वाले गुणों से भी युक्त (न दभायत्) काल की तरह धोखा न देने वाले (स्वधावान्) स्वभाव अर्थात् गुणों वाला (यथा) ज्यों का त्यों अर्थात् वैसा ही (सः) वह (त्वम्) आप (कविर्देवः/ कविर्देवः) कविर्देव है अर्थात् भाषा भिन्न इसे कबीर परमेश्वर भी कहते हैं।

भावार्थ :- इस मंत्र में यह भी स्पष्ट कर दिया कि उस परमेश्वर का नाम कविर्देव अर्थात् कबीर परमेश्वर है, जिसने सर्व रचना की है।

जो परमेश्वर अचल अर्थात् वास्तव में अविनाशी (गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में भी प्रमाण है) जगत् गुरु, आत्माधार, जो पूर्ण मुक्त होकर सत्यलोक गए हैं उनको सतलोक ले जाने वाला, सर्व ब्रह्माण्डों का रचनहार, काल (ब्रह्म) की तरह धोखा न देने वाला ज्यों का त्यों वह स्वयं कविर्देव अर्थात् कबीर प्रभु है। यही परमेश्वर सर्व ब्रह्माण्डों व प्राणियों को अपनी शब्द शक्ति से उत्पन्न करने के कारण (जनिता) माता भी कहलाता है तथा (पित्तरम्) पिता तथा (बन्धु) भाई भी वास्तव में यही है तथा (देव) परमेश्वर भी यही है। इसलिए इसी कविर्देव (कबीर परमेश्वर) की स्तुति किया करते हैं। त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव, त्वमेव विद्या च द्रविणंम त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम् देव देव। इसी परमेश्वर की महिमा का पवित्र ऋग्वेद मण्डल नं. 1 सूक्त नं. 24 में विस्तृत विवरण है।



ऊपर जड़ नीचे शाखा वाला उल्टा लटका हुआ
संसार रूपी वृक्ष का चित्र

"पवित्र ऋग्वेद में संष्टि रचना का प्रमाण"

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 1

सहस्रशीर्षा पुरूषः सहस्राक्षः सहस्रपात्।
स भूमिं विश्वतों वंत्वात्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्।।1।।

सहस्रशिर्षा–पुरूषः–सहस्राक्षः–सहस्रपात्
स–भूमिम्–विश्वतः–वंत्वा–अत्यातिष्ठत् –दशंगुलम्।

अनुवाद :– (पुरूषः) विराट रूप काल भगवान अर्थात् क्षर पुरूष (सहस्रशिर्षा) हजार सिरों वाला (सहस्राक्षः) हजार आँखों वाला (सहस्रपात्) हजार पैरों वाला है (स) वह काल (भूमिम्) पंथ्वी वाले इक्कीस ब्रह्माण्डों को (विश्वतः) सब ओर से (दशंगुलम्) दसों अंगुलियों से अर्थात् पूर्ण रूप से काबू किए हुए (वंत्वा) गोलाकार घेरे में घेर कर (अत्यातिष्ठत्) इस से बढ़कर अर्थात् अपने काल लोक में सबसे न्यारा भी इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में ठहरा है अर्थात् रहता है।

भावार्थ :- इस मंत्र में विराट (काल/ब्रह्म) का वर्णन है। (गीता अध्याय 10-11 में भी इसी काल/ब्रह्म का ऐसा ही वर्णन है अध्याय 11 मंत्र नं. 46 में अर्जुन ने कहा है कि हे सहस्राबाहु अर्थात् हजार भुजा वाले आप अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दीजिए)

जिसके हजारों हाथ, पैर, हजारों आँखे, कान आदि हैं वह विराट रूप काल प्रभु अपने आधीन सर्व प्राणियों को पूर्ण काबू करके अर्थात् 20 ब्रह्माण्डों को गोलाकार परिधि में रोककर स्वयं इनसे ऊपर (अलग) इक्कीसवें ब्रह्माण्ड में बैठा है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 2

पुरूष एवेदं सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्।
उतामंतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पुरूष–एव–इदम्–सर्वम्–यत्–भूतम्–यत्–च–भव्यम्
उत–अमंतत्त्वस्य– इशानः–यत्–अन्नेन–अतिरोहति

अनुवाद :– (एव) इसी प्रकार कुछ सही तौर पर (पुरूष) भगवान है वह अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म है (च) और (इदम्) यह (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ है (यत्) जो (भाव्यम्) भविष्य में होगा (सर्वम्) सब (यत्) प्रयत्न से अर्थात् मेहनत द्वारा (अन्नेन) अन्न से (अतिरोहति) विकसित होता है। यह अक्षर पुरूष भी (उत) सन्देह युक्त (अमंतत्त्वस्य) मोक्ष का (इशानः) स्वामी है अर्थात् भगवान तो अक्षर पुरूष भी कुछ सही है परन्तु पूर्ण मोक्ष दायक नहीं है।

भावार्थ :- इस मंत्र में परब्रह्म (अक्षर पुरुष) का विवरण है जो कुछ भगवान वाले लक्षणों से युक्त है, परन्तु इसकी भक्ति से भी पूर्ण मोक्ष नहीं है, इसलिए इसे संदेहयुक्त मुक्ति दाता कहा है। इसे कुछ प्रभु के गुणों युक्त इसलिए कहा है कि यह काल की तरह तप्तशिला पर भून कर नहीं खाता। परन्तु इस परब्रह्म के लोक में भी प्राणियों को परिश्रम करके कर्माधार पर ही फल प्राप्त होता है तथा अन्न से ही सर्व प्राणियों के शरीर विकसित होते हैं, जन्म तथा मंत्यु का समय भले ही काल (क्षर पुरुष) से अधिक है, परन्तु फिर भी उत्पत्ति प्रलय तथा चौरासी लाख योनियों में यातना बनी रहती है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 3

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

तावान्–अस्य–महिमा–अतः–ज्यायान्–च–पुरूषः
पादः–अस्य–विश्वा– भूतानि–त्रि–पाद्–अस्य–अमृतम्–दिवि

अनुवाद :– (अस्य) इस अक्षर पुरूष अर्थात् परब्रह्म की तो (एतावान्) इतनी ही (महिमा) प्रभुता है। (च) तथा (पुरूषः) वह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म परमेश्वर तो (अतः) इससे भी (ज्यायान्) बड़ा है (विश्वा) समस्त (भूतानि) क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष तथा इनके लोकों में तथा सत्यलोक तथा इन लोकों में जितने भी प्राणी हैं (अस्य) इस पूर्ण परमात्मा परम अक्षर पुरूष का (पादः) एक पैर है अर्थात् एक अंश मात्र है। (अस्य) इस परमेश्वर के (त्रि) तीन (दिवि) दिव्य लोक जैसे सत्यलोक–अलख लोक–अगम लोक (अमृतम्) अविनाशी (पाद्) दूसरा पैर है अर्थात् जो भी सर्व ब्रह्माण्डों में उत्पन्न है वह सत्यपुरूष पूर्ण परमात्मा का ही अंश या अंग है।

भावार्थ :- इस ऊपर के मंत्र 2 में वर्णित अक्षर पुरुष (परब्रह्म) की तो इतनी ही महिमा है तथा वह पूर्ण पुरुष कविर्देव तो इससे भी बड़ा है अर्थात् सर्वशक्तिमान है तथा सर्व ब्रह्माण्ड उसी के अंश मात्र पर ठहरे हैं। इस मंत्र में तीन लोकों का वर्णन इसलिए है क्योंकि चौथा अनामी (अनामय) लोक अन्य रचना से पहले का है। यही तीन प्रभुओं (क्षर पुरूष-अक्षर पुरूष तथा इन दोनों से अन्य परम अक्षर पुरूष) का विवरण श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक संख्या 16-17 में है {इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास साहेब जी कहते हैं कि:-

गरीब, जाके अर्ध रूम पर सकल पसारा, ऐसा पूर्ण ब्रह्म हमारा।।
गरीब, अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड का, एक रति नहीं भार।
सतगुरु पुरुष कबीर हैं, कुल के सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय दादू साहेब जी कह रहे हैं कि :-

जिन मोकुं निज नाम दिया, सोई सतगुरु हमार।
दादू दूसरा कोए नहीं, कबीर सृजनहार।।

इसी का प्रमाण आदरणीय नानक साहेब जी देते हैं कि :-

यक अर्ज गुफतम पेश तो दर कून करतार।
हक्का कबीर करीम तू, बेएब परवरदिगार।।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब, पृष्ठ नं. 721, महला 1, राग तिलंग)

कून करतार का अर्थ होता है सर्व का रचनहार, अर्थात् शब्द शक्ति से रचना करने वाला शब्द स्वरूपी प्रभु, हक्का कबीर का अर्थ है सत् कबीर, करीम का अर्थ दयालु, परवरदिगार का अर्थ परमात्मा है।}

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 4

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुनः।
ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने अभि।।4।।

त्रि–पाद–ऊर्ध्वः–उदैत्–पुरूषः–पादः–अस्य–इह–अभवत्–पूनः

ततः— विश्वङ्— व्यक्रामत्—सः—अशनानशने—अभि

अनुवाद :— (पुरूषः) यह परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् अविनाशी परमात्मा (ऊर्ध्वः) ऊपर (त्रि) तीन लोक जैसे सत्यलोक—अलख लोक—अगम लोक रूप (पाद) पैर अर्थात् ऊपर के हिस्से में (उदैत्) प्रकट होता है अर्थात् विराजमान है (अस्य) इसी परमेश्वर पूर्ण ब्रह्म का (पादः) एक पैर अर्थात् एक हिस्सा जगत रूप (पुनर्) फिर (इह) यहाँ (अभवत्) प्रकट होता है (ततः) इसलिए (सः) वह अविनाशी पूर्ण परमात्मा (अशनानशने) खाने वाले काल अर्थात् क्षर पुरूष व न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरूष के भी (अभि)ऊपर (विश्वङ्)सर्वत्र (व्यक्रामत्)व्याप्त है अर्थात् उसकी प्रभुता सर्व ब्रह्माण्डों व सर्व प्रभुओं पर है वह कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है।

भावार्थ :- यही सर्व सृष्टि रचन हार प्रभु अपनी रचना के ऊपर के हिस्से में तीनों स्थानों (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) में तीन रूप में स्वयं प्रकट होता है अर्थात् स्वयं ही विराजमान है। यहाँ अनामी लोक का वर्णन इसलिए नहीं किया क्योंकि अनामी लोक में कोई रचना नहीं है तथा अकह (अनामय) लोक शेष रचना से पूर्व का है फिर कहा है कि उसी परमात्मा के सत्यलोक से बिछुड़ कर नीचे के ब्रह्म व परब्रह्म के लोक उत्पन्न होते हैं और वह पूर्ण परमात्मा खाने वाले ब्रह्म अर्थात् काल से (क्योंकि ब्रह्म/काल विराट शाप वश एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों को खाता है) तथा न खाने वाले परब्रह्म अर्थात् अक्षर पुरुष से (परब्रह्म प्राणियों को खाता नहीं, परन्तु जन्म-मृत्यु, कर्मदण्ड ज्यों का त्यों बना रहता है) भी ऊपर सर्वत्र व्याप्त है अर्थात् इस पूर्ण परमात्मा की प्रभुता सर्व के ऊपर है, कबीर परमेश्वर ही कुल का मालिक है। जिसने अपनी शक्ति को सर्व के ऊपर फैलाया है जैसे सूर्य अपने प्रकाश को सर्व के ऊपर फैला कर प्रभावित करता है, ऐसे पूर्ण परमात्मा ने अपनी शक्ति रूपी रेंज (क्षमता) को सर्व ब्रह्माण्डों को नियन्त्रित रखने के लिए छोड़ा हुआ है जैसे मोबाईल फोन का टावर एक देशीय होते हुए अपनी शक्ति अर्थात् मोबाइल फोन की रेंज (क्षमता) चहुं ओर फैलाए रहता है। इसी प्रकार पूर्ण प्रभु ने अपनी निराकार शक्ति सर्व व्यापक की है जिससे पूर्ण परमात्मा सर्व ब्रह्माण्डों को एक स्थान पर बैठ कर नियन्त्रित रखता है।

इसी का प्रमाण आदरणीय गरीबदास जी महाराज दे रहे हैं (अमृतवाणी राग कल्याण)

तीन चरण चिन्तामणी साहेब, शेष बदन पर छाए। माता, पिता, कुल न बन्धु, ना किन्हें जननी जाये।।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 5

तस्माद्विराळजायत विराजो अधि पूरूषः।

स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः।। 5।।

तस्मात्—विराट्—अजायत—विराजः—अधि—पुरूषः

स—जातः—अत्यरिच्यत— पश्चात् —भूमिम्—अथः—पुरः।

अनुवाद :— (तस्मात्) उसके पश्चात् उस परमेश्वर सत्यपुरूष की शब्द शक्ति से (विराट्) विराट अर्थात् ब्रह्म, जिसे क्षर पुरूष व काल भी कहते हैं (अजायत) उत्पन्न हुआ है (पश्चात्) इसके बाद (विराजः) विराट पुरूष अर्थात् काल भगवान से (अधि) बड़े (पुरूषः) परमेश्वर ने (भूमिम्) पृथ्वी वाले लोक, काल ब्रह्म तथा परब्रह्म के लोक को (अत्यरिच्यत) अच्छी तरह रचा (अथः) फिर (पुरः)

अन्य छोटे–छोटे लोक (स) उस पूर्ण परमेश्वर ने ही (जातः) उत्पन्न किया अर्थात् स्थापित किया।

भावार्थ :- उपरोक्त मंत्र 4 में वर्णित तीनों लोकों (अगमलोक, अलख लोक तथा सतलोक) की रचना के पश्चात पूर्ण परमात्मा ने ज्योति निरंजन (ब्रह्म) की उत्पत्ति की अर्थात् उसी सर्व शक्तिमान परमात्मा पूर्ण ब्रह्म कविर्देव (कबीर प्रभु) से ही विराट अर्थात् ब्रह्म (काल) की उत्पत्ति हुई। यही प्रमाण गीता अध्याय 3 मन्त्र 15 में है कि अक्षर पुरूष अर्थात् अविनाशी प्रभु से ब्रह्म उत्पन्न हुआ यही प्रमाण अर्थववेद काण्ड 4 अनुवाक 1 सूक्त 3 में है कि पूर्ण ब्रह्म से ब्रह्म की उत्पत्ति हुई उसी पूर्ण ब्रह्म ने (भूमिम्) भूमि आदि छोटे-बड़े सर्व लोकों की रचना की। वह पूर्णब्रह्म इस विराट भगवान अर्थात् ब्रह्म से भी बड़ा है अर्थात् इसका भी मालिक है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 15

सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्त समिधः कंताः।
देवा यद्यज्ञं तन्वाना अबध्नन्पुरूषं पशुम्।। 15।।

प्त–अस्य–आसन्–परिधयः–त्रिसप्त–समिधः–कंताः
देवा–यत्–यज्ञम्– तन्वानाः– अबध्नन्–पुरूषम्–पशुम्।

अनुवाद :– (सप्त) सात शंख ब्रह्माण्ड तो परब्रह्म के तथा (त्रिसप्त) इक्कीस ब्रह्माण्ड काल ब्रह्म के (समिधः) कर्मदण्ड दुःख रूपी आग से दुःखी (कंताः) करने वाले (परिधयः) गोलाकार घेरा रूप सीमा में (आसन्) विद्यमान हैं (यत्) जो (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा की (यज्ञम्) विधिवत् धार्मिक कर्म अर्थात् पूजा करता है (पशुम्) बलि के पशु रूपी काल के जाल में कर्म बन्धन में बंधे (देवा) भक्तात्माओं को (तन्वानाः) काल के द्वारा रचे अर्थात् फैलाये पाप कर्म बंधन जाल से (अबध्नन्) बन्धन रहित करता है अर्थात् बन्दी छुड़ाने वाला बन्दी छोड़ है।

भावार्थ :- सात शंख ब्रह्माण्ड परब्रह्म के तथा इक्कीस ब्रह्माण्ड ब्रह्म के हैं जिन में गोलाकार सीमा में बंद पाप कर्मों की आग में जल रहे प्राणियों को वास्तविक पूजा विधि बता कर सही उपासना करवाता है जिस कारण से बलि दिए जाने वाले पशु की तरह जन्म-मंत्यु के काल (ब्रह्म) के खाने के लिए तप्त शिला के कष्ट से पीड़ित भक्तात्माओं को काल के कर्म बन्धन के फैलाए जाल को तोड़कर बन्धन रहित करता है अर्थात् बंधन छुड़वाने वाला बन्दी छोड़ है। इसी का प्रमाण पवित्र यजुर्वेद अध्याय 5 मंत्र 32 में है कि कविरंघारिसि (कविर्) कबिर परमेश्वर (अंघ) पाप का (अरि) शत्रु (असि) है अर्थात् पाप विनाशक कबीर है। बम्भारिसि (बम्भारि) बन्धन का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ कबीर परमेश्वर (असि) है।

ऋग्वेद मण्डल 10 सुक्त 90 मंत्र 16

यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
ते ह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।।16।।

यज्ञेन–यज्ञम्–अ–यजन्त–देवाः–तानि–धर्माणि–प्रथमानि– आसन्–ते– ह–नाकम्–महिमानः– सचन्त– यत्र–पूर्वे–साध्याः–सन्ति देवाः।

अनुवाद :– जो (देवाः) निर्विकार देव स्वरूप भक्तात्माएं (अयज्ञम्) अधूरी गलत धार्मिक पूजा के स्थान पर (यज्ञेन) सत्य भक्ति धार्मिक कर्म के आधार पर (अयजन्त) पूजा करते हैं (तानि) वे

(धर्माणि) धार्मिक शक्ति सम्पन्न (प्रथमानि) मुख्य अर्थात् उत्तम (आसन्) हैं (ते ह) वे ही वास्तव में (महिमानः) महान भक्ति शक्ति युक्त होकर (साध्याः) सफल भक्त जन (नाकम्) पूर्ण सुखदायक परमेश्वर को (सचन्त) भक्ति निमित कारण अर्थात् सत्भक्ति की कमाई से प्राप्त होते हैं, वे वहाँ चले जाते हैं। (यत्र) जहाँ पर (पूर्वे) पहले वाली संष्टि के (देवाः) पापरहित देव स्वरूप भक्त आत्माएं (सन्ति) रहती हैं।

भावार्थ :- जो निर्विकार (जिन्होने मांस,शराब, तम्बाकू सेवन करना त्याग दिया है तथा अन्य बुराईयों से रहित है वे) देव स्वरूप भक्त आत्माएं शास्त्र विधि रहित पूजा को त्याग कर शास्त्रानुकूल साधना करते हैं वे भक्ति की कमाई से धनी होकर काल के ऋण से मुक्त होकर अपनी सत्य भक्ति की कमाई के कारण उस सर्व सुखदाई परमात्मा को प्राप्त करते हैं अर्थात् सत्यलोक में चले जाते हैं जहाँ पर सर्व प्रथम रची संष्टि के देव स्वरूप अर्थात् पाप रहित हंस आत्माएं रहती हैं।

जैसे कुछ आत्माएं तो काल (ब्रह्म) के जाल में फँसकर यहाँ आ गई, कुछ परब्रह्म के साथ सात शंख ब्रह्माण्डों में आ गई, फिर भी असंख्य आत्माएं जिनका विश्वास पूर्ण परमात्मा में अटल रहा, जो पतिव्रता पद से नहीं गिरी वे वहीं रह गई, इसलिए यहाँ वही वर्णन पवित्र वेदों ने भी सत्य बताया है। यही प्रमाण गीता अध्याय 8 के श्लोक संख्या 8 से 10 में वर्णन है कि जो साधक पूर्ण परमात्मा की सतसाधना शास्त्रविधि अनुसार करता है वह भक्ति की कमाई के बल से उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त होता है अर्थात् उसके पास चला जाता है। इससे सिद्ध हुआ कि तीन प्रभु हैं ब्रह्म - परब्रह्म - पूर्णब्रह्म। इन्हीं को 1. ब्रह्म - ईश - क्षर पुरुष 2. परब्रह्म - अक्षर पुरुष/अक्षर ब्रह्म ईश्वर तथा 3. पूर्ण ब्रह्म - परम अक्षर ब्रह्म - परमेश्वर - सतपुरुष आदि पर्यायवाची शब्दों से जाना जाता है।

यही प्रमाण ऋग्वेद मण्डल 9 सूक्त 96 मंत्र 17 से 20 में स्पष्ट है कि पूर्ण परमात्मा कविर्देव (कबीर परमेश्वर) शिशु रूप धारण करके प्रकट होता है तथा अपना निर्मल ज्ञान अर्थात् तत्त्वज्ञान (कविर्गीर्भिः) कबीर वाणी के द्वारा अपने अनुयाइयों को बोल-बोल कर वर्णन करता है। वह कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ब्रह्म (क्षर पुरुष) के धाम तथा परब्रह्म (अक्षर पुरुष) के धाम से भिन्न जो पूर्ण ब्रह्म (परम अक्षर पुरुष) का तीसरा ऋतधाम (सतलोक) है, उसमें आकार में विराजमान है तथा सतलोक से चौथा अनामी लोक है, उसमें भी यही कविर्देव (कबीर परमेश्वर) अनामी पुरुष रूप में मनुष्य सदंश आकार में विराजमान है।

''पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण में संष्टि रचना का प्रमाण''

''ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव के माता–पिता''

(दुर्गा और ब्रह्म के योग से ब्रह्मा, विष्णु और शिव का जन्म)

पवित्र श्रीमद्देवी महापुराण तीसरा स्कन्द अध्याय 1-3(गीताप्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमानप्रसाद पोद्दार तथा चिमन लाल गोस्वामी जी, पंष्ठ नं. 114 से)

पंष्ठ नं. 114 से 118 तक विवरण है कि कितने ही आचार्य भवानी को सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण करने वाली बताते हैं। वह प्रकंति कहलाती है तथा ब्रह्म के साथ अभेद सम्बन्ध है। {जैसे पत्नी

को अर्धांगनी भी कहते हैं अर्थात् दुर्गा ब्रह्म (काल) की पत्नी है।} एक ब्रह्माण्ड की संष्टि रचना के विषय में राजा श्री परिक्षित के पूछने पर श्री व्यास जी ने बताया कि मैंने श्री नारद जी से पूछा था कि हे देवर्षे ! इस ब्रह्माण्ड की रचना कैसे हुई? मेरे इस प्रश्न के उत्तर में श्री नारद जी ने कहा कि मैंने अपने पिता श्री ब्रह्मा जी से पूछा था कि हे पिता श्री इस ब्रह्माण्ड की रचना आपने की या श्री विष्णु जी इसके रचयिता हैं या शिव जी ने रचा है? सच-सच बताने की कंपा करें। तब मेरे पूज्य पिता श्री ब्रह्मा जी ने बताया कि बेटा नारद, मैंने अपने आपको कमल के फूल पर बैठा पाया था, मुझे ज्ञान नहीं, इस अगाध जल में मैं कहाँ से उत्पन्न हो गया। एक हजार वर्ष तक पंथ्वी का अन्वेषण करता रहा, कहीं जल का ओर-छोर नहीं पाया। फिर आकाशवाणी हुई कि तप करो। एक हजार वर्ष तक तप किया। फिर संष्टि करने की आकाशवाणी हुई। इतने में मधु और कैटभ नाम के दो राक्षस आए, उनके भय से मैं कमल का डण्ठल पकड़ कर नीचे उतरा। वहाँ भगवान विष्णु जी शेष शैय्या पर अचेत पड़े थे। उनमें से एक स्त्री (प्रेतवत प्रविष्ट दुर्गा) निकली। वह आकाश में आभूषण पहने दिखाई देने लगी। तब भगवान विष्णु होश में आए। अब मैं तथा विष्णु जी दो थे। इतने में भगवान शंकर भी आ गए। देवी ने हमें विमान में बैठाया तथा ब्रह्म लोक में ले गई। वहाँ एक ब्रह्मा, एक विष्णु तथा एक शिव और देखा फिर एक देवी देखी,उसे देख कर विष्णु जी ने विवेक पूर्वक निम्न वर्णन किया (ब्रह्म काल ने भगवान विष्णु को चेतना प्रदान कर दी, उसको अपने बाल्यकाल की याद आई तब बचपन की कहानी सुनाई)।

पंष्ठ नं. 119-120 पर भगवान विष्णु जी ने श्री ब्रह्मा जी तथा श्री शिव जी से कहा कि यह हम तीनों की माता है, यही जगत् जननी प्रकंति देवी है। मैंने इस देवी को तब देखा था जब मैं छोटा सा बालक था, यह मुझे पालने में झुला रही थी।

तीसरा स्कंद पंष्ठ नं. 123 पर श्री विष्णु जी ने श्री दुर्गा जी की स्तुति करते हुए कहा - तुम शुद्ध स्वरूपा हो, यह सारा संसार तुम्हीं से उद्भासित हो रहा है, मैं (विष्णु), ब्रह्मा और शंकर हम सभी तुम्हारी कंपा से ही विद्यमान हैं। हमारा आविर्भाव (जन्म) और तिरोभाव (मंत्यु) हुआ करता है अर्थात् हम तीनों देव नाशवान हैं, केवल तुम ही नित्य (अविनाशी) हो, जगत जननी हो, प्रकंति देवी हो।

भगवान शंकर बोले - देवी यदि महाभाग विष्णु तुम्हीं से प्रकट (उत्पन्न) हुए हैं तो उनके बाद उत्पन्न होने वाले ब्रह्मा भी तुम्हारे ही बालक हुए। फिर मैं तमोगुणी लीला करने वाला शंकर क्या तुम्हारी संतान नहीं हुआ अर्थात् मुझे भी उत्पन्न करने वाली तुम्हीं हो।

विचार करें :- उपरोक्त विवरण से सिद्ध हुआ कि श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी नाशवान हैं। मंत्युंजय (अजर-अमर) व सर्वेश्वर नहीं हैं तथा दुर्गा (प्रकंति) के पुत्र हैं तथा ब्रह्म (काल-सदाशिव) इनका पिता है।

तीसरा स्कंद पंष्ठ नं. 125 पर ब्रह्मा जी के पूछने पर कि हे माता! वेदों में जो ब्रह्म कहा है वह आप ही हैं या कोई अन्य प्रभु है ? इसके उत्तर में यहाँ तो दुर्गा कह रही है कि मैं तथा ब्रह्म एक ही हैं। फिर इसी स्कंद अ. 6 के पंष्ठ नं. 129 पर कहा है कि अब मेरा कार्य सिद्ध करने के लिए विमान पर बैठ कर तुम लोग शीघ्र पधारो (जाओ)। कोई कठिन कार्य उपस्थित होने पर

जब तुम मुझे याद करोगे, तब मैं सामने आ जाऊँगी। देवताओं मेरा (दुर्गा का) तथा ब्रह्म का ध्यान तुम्हें सदा करते रहना चाहिए। हम दोनों का स्मरण करते रहोगे तो तुम्हारे कार्य सिद्ध होने में तनिक भी संदेह नहीं है।

उपरोक्त व्याख्या से स्वसिद्ध है कि दुर्गा (प्रकति) तथा ब्रह्म (काल) ही तीनों देवताओं के माता-पिता हैं तथा ब्रह्मा, विष्णु व शिव जी नाशवान हैं व पूर्ण शक्ति युक्त नहीं हैं।

तीनों देवताओं (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री शिव जी) की शादी दुर्गा (प्रकति देवी) ने की।(प्रमाण :- पष्ठ नं. 128-129 पर, तीसरे स्कंद में।)

गीता अध्याय नं. 7 का श्लोक नं. 12

ये, च, एव, सात्विकाः, भावाः, राजसाः, तामसाः, च, ये,
मतः, एव, इति, तान्, विद्धि, न, तु, अहम्, तेषु, ते, मयि।।

अनुवाद : (च) और (एव) भी (ये) जो (सात्विकाः) सत्वगुण विष्णु जी से स्थिति (भावाः) भाव हैं और (ये) जो (राजसाः) रजोगुण ब्रह्मा जी से उत्पत्ति (च) तथा (तामसाः) तमोगुण शिव से संहार हैं (तान्) उन सबको तू (मतः,एव) मेरे द्वारा सुनियोजित नियमानुसार ही होने वाले हैं (इति) ऐसा (विद्धि) जान (तु) परन्तु वास्तवमें (तेषु) उनमें (अहम्) मैं और (ते) वे (मयि) मुझमें (न) नहीं हैं।

''पवित्र शिव महापुराण में सष्टि रचना का प्रमाण''

(काल ब्रह्म व दुर्गा से विष्णु, ब्रह्मा व शिव की उत्पत्ति)

इसी का प्रमाण पवित्र श्री शिव पुराण गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित, अनुवादकर्ता श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार, इसके अध्याय 6 रूद्र संहिता, पष्ठ नं. 100 पर कहा है कि जो मूर्ति रहित परब्रह्म है, उसी की मूर्ति भगवान सदाशिव है। इनके शरीर से एक शक्ति निकली, वह शक्ति अम्बिका, प्रकति (दुर्गा), त्रिदेव जननी (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी को उत्पन्न करने वाली माता) कहलाई। जिसकी आठ भुजाऐं हैं। वे जो सदाशिव हैं, उन्हें शिव, शंभू और महेश्वर भी कहते हैं। (पष्ठ नं. 101 पर) वे अपने सारे अंगों में भस्म रमाये रहते हैं। उन काल रूपी ब्रह्म ने एक शिवलोक नामक क्षेत्र का निर्माण किया। फिर दोनों ने पति-पत्नी का व्यवहार किया जिससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम विष्णु रखा (शिव पुराण पष्ठ नं. 102)।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 7 पष्ठ नं. 103 पर ब्रह्मा जी ने कहा कि मेरी उत्पत्ति भी भगवान सदाशिव (ब्रह्म-काल) तथा प्रकति (दुर्गा) के संयोग से अर्थात् पति-पत्नी के व्यवहार से ही हुई। फिर मुझे बेहोश कर दिया।

फिर रूद्र संहिता अध्याय नं. 9 पष्ठ नं. 110 पर कहा है कि इस प्रकार ब्रह्मा, विष्णु तथा रूद्र इन तीनों देवताओं में गुण हैं, परन्तु शिव (काल-ब्रह्म) गुणातीत माने गए हैं।

यहाँ पर चार सिद्ध हुए अर्थात् सदाशिव (काल-ब्रह्म) व प्रकति (दुर्गा) से ही ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव उत्पन्न हुए हैं। तीनों भगवानों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की माता जी श्री दुर्गा जी तथा पिता जी श्री ज्योति निरंजन (ब्रह्म) है। यही तीनों प्रभु रजगुण-ब्रह्मा जी, सतगुण-विष्णु जी, तमगुण-शिव जी हैं।

''पवित्र श्रीमद्भगवत गीता जी में सष्टि रचना का प्रमाण''

इसी का प्रमाण पवित्र गीता जी अध्याय 14 श्लोक 3 से 5 तक है। ब्रह्म (काल) कह रहा है कि प्रकति (दुर्गा) तो मेरी पत्नी है, मैं ब्रह्म (काल) इसका पति हूँ। हम दोनों के संयोग से सर्व प्राणियों सहित तीनों गुणों (रजगुण - ब्रह्मा जी, सतगुण - विष्णु जी, तमगुण - शिवजी) की उत्पत्ति हुई है। मैं (ब्रह्म) सर्व प्राणियों का पिता हूँ तथा प्रकति (दुर्गा) इनकी माता है। मैं इसके उदर में बीज स्थापना करता हूँ जिससे सर्व प्राणियों की उत्पत्ति होती है। प्रकति (दुर्गा) से उत्पन्न तीनों गुण (रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु तथा तमगुण शिव) जीव को कर्म आधार से शरीर में बांधते हैं।

यही प्रमाण अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16, 17 में भी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 1

ऊर्ध्वमूलम्, अधःशाखम्, अश्वत्थम्, प्राहुः, अव्ययम्,
छन्दांसि, यस्य, पर्णानि, यः, तम्, वेद, सः, वेदवित्।।

अनुवाद : (ऊर्ध्वमूलम्) ऊपर को पूर्ण परमात्मा आदि पुरुष परमेश्वर रूपी जड़ वाला (अधःशाखम्) नीचे को तीनों गुण अर्थात् रजगुण ब्रह्मा, सतगुण विष्णु व तमगुण शिव रूपी शाखा वाला (अव्ययम्) अविनाशी (अश्वत्थम्) विस्तारित पीपल का वक्ष है, (यस्य) जिसके (छन्दांसि) जैसे वेद में छन्द है ऐसे संसार रूपी वक्ष के भी विभाग छोटे–छोटे हिस्से टहनियाँ व (पर्णानि) पत्ते (प्राहुः) कहे हैं (तम्) उस संसाररूप वक्षको (यः) जो (वेद) इसे विस्तार से जानता है (सः) वह (वेदवित्) पूर्ण ज्ञानी अर्थात् तत्त्वदर्शी है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 2

अधः, च, ऊर्ध्वम्, प्रसताः, तस्य, शाखाः, गुणप्रवद्धाः,
विषयप्रवालाः, अधः, च, मूलानि, अनुसन्ततानि, कर्मानुबन्धीनि, मनुष्यलोके।।

अनुवाद : (तस्य) उस वक्षकी (अधः) नीचे (च) और (ऊर्ध्वम्) ऊपर (गुणप्रवद्धाः) तीनों गुणों ब्रह्मा–रजगुण, विष्णु–सतगुण, शिव–तमगुण रूपी (प्रसता) फैली हुई (विषयप्रवालाः) विकार–काम क्रोध, मोह, लोभ अहंकार रूपी कोपल (शाखाः) डाली ब्रह्मा, विष्णु, शिव (कर्मानुबन्धीनि) जीवको कर्मों में बाँधने की (मूलानि) जड़ें अर्थात् मुख्य कारण हैं (च) तथा (मनुष्यलोके) मनुष्यलोक – अर्थात् पथ्वी लोक में (अधः) नीचे – नरक, चौरासी लाख जूनियों में (ऊर्ध्वम्) ऊपर स्वर्ग लोक आदि में (अनुसन्ततानि) व्यवस्थित किए हुए हैं।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 3

न, रूपम्, अस्य, इह, तथा, उपलभ्यते, न, अन्तः, न, च, आदिः, न, च,
सम्प्रतिष्ठा, अश्वत्थम्, एनम्, सुविरूढमूलम्, असंगशस्त्रेण, दढेन, छित्वा।।

अनुवाद : (अस्य) इस रचना का (न) नहीं (आदिः) शुरूवात (च) तथा (न) नहीं (अन्तः) अन्त है (न) नहीं (तथा) वैसा (रूपम्) स्वरूप (उपलभ्यते) पाया जाता है (च) तथा (इह) यहाँ विचार काल में अर्थात् मेरे द्वारा दिया जा रहा गीता ज्ञान में पूर्ण जानकारी मुझे भी (न) नहीं है (सम्प्रतिष्ठा) क्योंकि सर्वब्रह्माण्डों की रचना की अच्छी तरह स्थिति का मुझे भी ज्ञान नहीं है (एनम्) इस (सुविरूढमूलम्)

अच्छी तरह स्थाई स्थिति वाला (अश्वत्थम्) मजबूत स्वरूपवाले संसार रूपी वृक्ष के ज्ञान को (असंड्गशस्त्रेण) पूर्ण ज्ञान रूपी (दृढेन्) दृढ़ सूक्षम वेद अर्थात् तत्त्वज्ञान के द्वारा जानकर (छित्वा) काटकर अर्थात् निरंजन की भक्ति को क्षणिक अर्थात् क्षण भंगुर जानकर ब्रह्मा, विष्णु, शिव, ब्रह्म तथा परब्रह्म से भी आगे पूर्णब्रह्म की तलाश करनी चाहिए।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 4

ततः, पदम्, तत्, परिमार्गितव्यम्, यस्मिन्, गताः, न, निवर्तन्ति, भूयः,
तम्, एव्, च, आद्यम्, पुरुषम्, प्रपद्ये, यतः, प्रवृत्तिः, प्रसृता, पुराणी।।

अनुवाद : जब तत्त्वदर्शी संत मिल जाए (ततः) इसके पश्चात् (तत्) उस परमात्मा के (पदम्) पद स्थान अर्थात् सतलोक को (परिमार्गितव्यम्) भली भाँति खोजना चाहिए (यस्मिन्) जिसमें (गताः) गए हुए साधक (भूयः) फिर (न, निवर्तन्ति) लौटकर संसार में नहीं आते (च) और (यतः) जिस परमात्मा–परम अक्षर ब्रह्म से (पुराणी) आदि (प्रवृत्तिः) रचना–सृष्टि (प्रसृता) उत्पन्न हुई है (तम्) अज्ञात (आद्यम्) आदि यम अर्थात् मैं काल निरंजन (पुरुषम्) पूर्ण परमात्मा की (एव) ही (प्रपद्ये) मैं शरण में हूँ तथा उसी की पूजा करता हूँ।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 16

द्वौ, इमौ, पुरुषौ, लोके, क्षरः, च, अक्षरः, एव, च,
क्षरः, सर्वाणि, भूतानि, कूटस्थः, अक्षरः, उच्यते।।

अनुवाद : (लोके) इस संसारमें (द्वौ) दो प्रकारके (क्षरः) नाशवान् (च) और (अक्षरः) अविनाशी (पुरुषौ) भगवान हैं (एव) इसी प्रकार (इमौ) इन दोनों प्रभुओं के लोकों में (सर्वाणि) सम्पूर्ण (भूतानि) प्राणियों के शरीर तो (क्षरः) नाशवान् (च) और (कूटस्थः) जीवात्मा (अक्षरः) अविनाशी (उच्यते) कहा जाता है।

गीता अध्याय नं. 15 का श्लोक नं. 17

उत्तमः, पुरुषः, तु, अन्यः, परमात्मा, इति, उदाहृतः,
यः, लोकत्रयम् आविश्य, बिभर्ति, अव्ययः, ईश्वरः।।

अनुवाद : (उत्तमः) उत्तम (पुरुषः) प्रभु (तु) तो (अन्यः) उपरोक्त दोनों प्रभुओं ''क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष'' से भी अन्य ही है (इति) यह वास्तव में (परमात्मा) परमात्मा (उदाहृतः) कहा गया है (यः) जो (लोकत्रयम्) तीनों लोकों में (आविश्य) प्रवेश करके (बिभर्ति) सबका धारण पोषण करता है एवं (अव्ययः) अविनाशी (ईश्वरः) ईश्वर (प्रभुओं में श्रेष्ठ अर्थात् समर्थ प्रभु) है।

भावार्थ - गीता ज्ञान दाता प्रभु ने केवल इतना ही बताया है कि यह संसार उल्टे लटके वृक्ष तुल्य जानो। ऊपर जड़ें (मूल) तो पूर्ण परमात्मा है। नीचे टहनियां आदि अन्य हिस्से जानों। इस संसार रूपी वृक्ष के प्रत्येक भाग का भिन्न-भिन्न विवरण जो संत जानता है वह तत्त्वदर्शी संत है जिसके विषय में गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है। गीता अध्याय 15 श्लोक नं. 2-3 में केवल इतना ही बताया है कि तीन गुण रूपी शाखा हैं। यहां विचारकाल में अर्थात् गीता में आपको मैं (गीता ज्ञान दाता) पूर्ण जानकारी नहीं दे सकता क्योंकि मुझे इस संसार की रचना के आदि व अंत का ज्ञान नहीं है। उसके लिए गीता अध्याय 4 श्लोक नं. 34 में कहा है कि किसी तत्त्व दर्शी संत से उस पूर्ण परमात्मा का ज्ञान जानों इस गीता अध्याय 15 श्लोक 1 में उस

तत्त्वदर्शी संत की पहचान बताई है कि वह संसार रूपी वक्ष के प्रत्येक भाग का ज्ञान कराएगा। उसी से पूछो। गीता अध्याय 15 के श्लोक 4 में कहा है कि उस तत्त्वदर्शी संत के मिल जाने के पश्चात् उस परमपद परमेश्वर की खोज करनी चाहिए अर्थात् उस तत्त्वदर्शी संत के बताए अनुसार साधना करनी चाहिए जिससे पूर्ण मोक्ष (अनादि मोक्ष) प्राप्त होता है। गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट किया है कि तीन प्रभु हैं एक क्षर पुरूष (ब्रह्म) दूसरा अक्षर पुरूष (परब्रह्म) तीसरा परम अक्षर पुरुष (पूर्ण ब्रह्म)। क्षर पुरूष तथा अक्षर पुरूष वास्तव में अविनाशी नहीं हैं। वह अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य ही है। वही तीनों लोकों में प्रवेश करके सर्व का धारण पोषण करता है।

उपरोक्त श्रीमद्भगवत गीता अध्याय 15 श्लोक 1 से 4 तथा 16-17 में यह प्रमाणित हुआ कि उल्टे लटके हुए संसार रूपी वक्ष की मूल अर्थात् जड़ तो परम अक्षर ब्रह्म अर्थात् पूर्ण ब्रह्म है जिससे पूर्ण वक्ष का पालन होता है तथा वक्ष का जो हिस्सा पथ्वी के तुरन्त बाहर जमीन के साथ दिखाई देता है वह तना होता है उसे अक्षर पुरुष अर्थात् परब्रह्म जानों। उस तने से ऊपर चल कर अन्य मोटी डार निकलती है उनमें से एक डार को ब्रह्म अर्थात् क्षर पुरुष जानों तथा उसी डार से अन्य तीन शाखाएं निकलती हैं उन्हें ब्रह्मा, विष्णु तथा शिव जानों तथा शाखाओं से आगे पत्ते रूप में सांसारिक प्राणी जानों। उपरोक्त गीता अध्याय 15 श्लोक 16-17 में स्पष्ट है कि क्षर पुरुष (ब्रह्म) तथा अक्षर पुरुष (परब्रह्म) तथा इन दोनों के लोकों में जितने प्राणी हैं उनके स्थूल शरीर तो नाशवान हैं तथा जीवात्मा अविनाशी है अर्थात् उपरोक्त दोनों प्रभु व इनके अन्तर्गत सर्व प्राणी नाशवान हैं। भले ही अक्षर पुरुष (परब्रह्म) को अविनाशी कहा है परन्तु वास्तव में अविनाशी परमात्मा तो इन दोनों से अन्य है। वह तीनों लोकों में प्रवेश करके सबका पालन-पोषण करता है। उपरोक्त विवरण में तीन प्रभुओं का भिन्न-भिन्न विवरण दिया है।

"पवित्र बाईबल तथा पवित्र कुरान शरीफ में सष्टि रचना का प्रमाण"

इसी का प्रमाण पवित्र बाईबल में तथा पवित्र कुरान शरीफ में भी है।

कुरान शरीफ में पवित्र बाईबल का भी ज्ञान है, इसलिए इन दोनों पवित्र सद्ग्रन्थों ने मिल-जुल कर प्रमाणित किया है कि कौन तथा कैसा है सष्टि रचनहार तथा उसका वास्तविक नाम क्या है।

पवित्र बाईबल (उत्पत्ति ग्रन्थ पष्ठ नं. 2 पर, अ. 1:20 - 2:5 पर)

छटवां दिन :– प्राणी और मनुष्य :

अन्य प्राणियों की रचना करके 26. फिर परमेश्वर ने कहा, हम मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार अपनी समानता में बनाएं, जो सर्व प्राणियों को काबू रखेगा। 27. तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया, अपने ही स्वरूप के अनुसार परमेश्वर ने उसको उत्पन्न किया, नर और नारी करके मनुष्यों की सष्टि की।

29. प्रभु ने मनुष्यों के खाने के लिए जितने बीज वाले छोटे पेड़ तथा जितने पेड़ों में बीज वाले फल होते हैं वे भोजन के लिए प्रदान किए हैं, (माँस खाना नहीं कहा है।)

सातवां दिन :– विश्राम का दिन :

परमेश्वर ने छः दिन में सर्व संष्टि की उत्पत्ति की तथा सातवें दिन विश्राम किया।

पवित्र बाईबल ने सिद्ध कर दिया कि परमात्मा मानव सदंश शरीर में है, जिसने छः दिन में सर्व संष्टि की रचना की तथा फिर विश्राम किया।

पवित्र कुरान शरीफ (सुरत फुर्कानि 25, आयत नं. 52, 58, 59)

आयत 52 :— फला तुतिअल् — काफिरन् व जहिद्हुम बिही जिहादन् कबीरा (कबीरन्)।।52।

इसका भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी का खुदा (प्रभु) कह रहा है कि हे पैगम्बर ! आप काफिरों (जो एक प्रभु की भक्ति त्याग कर अन्य देवी—देवताओं तथा मूर्ति आदि की पूजा करते हैं) का कहा मत मानना, क्योंकि वे लोग कबीर को पूर्ण परमात्मा नहीं मानते। आप मेरे द्वारा दिए इस कुरान के ज्ञान के आधार पर अटल रहना कि कबीर ही पूर्ण प्रभु है तथा कबीर अल्लाह के लिए संघर्ष करना (लड़ना नहीं) अर्थात् अडिग रहना।

आयत 58 :— व तवक्कल् अलल् — हरूिल्लजी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही व कफा बिही बिजुनूबि अिबादिही खबीरा (कबीरा)।।58।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद जी जिसे अपना प्रभु मानते हैं वह अल्लाह (प्रभु) किसी और पूर्ण प्रभु की तरफ संकेत कर रहा है कि ऐ पैगम्बर उस कबीर परमात्मा पर विश्वास रख जो तुझे जिंदा महात्मा के रूप में आकर मिला था। वह कभी मरने वाला नहीं है अर्थात् वास्तव में अविनाशी है। तारीफ के साथ उसकी पाकी (पवित्र महिमा) का गुणगान किए जा, वह कबीर अल्लाह (कविर्देव) पूजा के योग्य है तथा अपने उपासकों के सर्व पापों को विनाश करने वाला है।

आयत 59 :— अल्ल्जी खलकस्समावाति वल्अर्ज व मा बैनहुमा फी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्अर्शि अर्रह्मानु फस्अल् बिही खबीरन्(कबीरन्)।।59।।

भावार्थ है कि हजरत मुहम्मद को कुरान शरीफ बोलने वाला प्रभु (अल्लाह) कह रहा है कि वह कबीर प्रभु वही है जिसने जमीन तथा आसमान के बीच में जो भी विद्यमान है सर्व संष्टि की रचना छः दिन में की तथा सातवें दिन ऊपर अपने सत्यलोक में सिंहासन पर विराजमान हो (बैठ) गया। उसके विषय में जानकारी किसी (बाखबर) तत्त्वदर्शी संत से पूछो

उस पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति कैसे होगी तथा वास्तविक ज्ञान तो किसी तत्त्वदर्शी संत (बाखबर) से पूछो, मैं नहीं जानता।

उपरोक्त दोनों पवित्र धर्मों (ईसाई तथा मुसलमान) के पवित्र शास्त्रों ने भी मिल-जुल कर प्रमाणित कर दिया कि सर्व संष्टि रचनहार, सर्व पाप विनाशक, सर्व शक्तिमान, अविनाशी परमात्मा मानव सदंश शरीर में आकार में है तथा सत्यलोक में रहता है। उसका नाम कबीर है, उसी को अल्लाहु अकबिरू भी कहते हैं।

आदरणीय धर्मदास जी ने पूज्य कबीर प्रभु से पूछा कि हे सर्वशक्तिमान ! आज तक यह तत्त्वज्ञान किसी ने नहीं बताया, वेदों के मर्मज्ञ ज्ञानियों ने भी नहीं बताया। इससे सिद्ध है कि चारों पवित्र वेद तथा चारों पवित्र कतेब (कुरान शरीफ आदि) झूठे हैं। पूर्ण परमात्मा ने कहा :-

कबीर, बेद कतेब झूठे नहीं भाई, झूठे हैं जो समझे नाहिं।

भावार्थ है कि चारों पवित्र वेद (ऋग्वेद - अथर्ववेद - यजुर्वेद - सामवेद) तथा पवित्र चारों

कतेब (कुरान शरीफ - जबूर - तौरात - इंजिल) गलत नहीं हैं। परन्तु जो इनको नहीं समझ पाए वे नादान हैं।

"पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर् देव) जी की अमृतवाणी में सृष्टि रचना"

विशेष :- निम्न अमृतवाणी सन् 1403 से {जब पूज्य कविर्देव (कबीर परमेश्वर) लीलामय शरीर में पाँच वर्ष के हुए} सन् 1518 {जब कविर्देव (कबीर परमेश्वर) मगहर स्थान से सशरीर सतलोक गए} के बीच में लगभग 600 वर्ष पूर्व परम पूज्य कबीर परमेश्वर (कविर्देव) जी द्वारा अपने निजी सेवक (दास भक्त) आदरणीय धर्मदास साहेब जी को सुनाई थी तथा धनी धर्मदास साहेब जी ने लिपिबद्ध की थी। परन्तु उस समय के पवित्र हिन्दुओं तथा पवित्र मुसलमानों के नादान गुरुओं (नीम-हकीमों) ने कहा कि यह धाणक (जुलाहा) कबीर झूठा है। किसी भी सद् ग्रन्थ में श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी के माता-पिता का नाम नहीं है। ये तीनों प्रभु अविनाशी हैं इनका जन्म मृत्यु नहीं होता। न ही पवित्र वेदों व पवित्र कुरान शरीफ आदि में कबीर परमेश्वर का प्रमाण है तथा परमात्मा को निराकार लिखा है। हम प्रतिदिन पढ़ते हैं। भोली आत्माओं ने उन विचक्षणों (चतुर गुरुओं) पर विश्वास कर लिया कि सचमुच यह कबीर धाणक तो अशिक्षित है तथा गुरु जी शिक्षित हैं, सत्य कह रहे होंगे। आज वही सच्चाई प्रकाश में आ रही है तथा अपने सर्व पवित्र धर्मों के पवित्र सद्ग्रन्थ साक्षी हैं। इससे सिद्ध है कि पूर्ण परमेश्वर, सर्व सृष्टि रचनहार, कुल करतार तथा सर्वज्ञ कविर्देव (कबीर परमेश्वर) ही है जो काशी (बनारस) में कमल के फूल पर प्रकट हुए तथा 120 वर्ष तक वास्तविक तेजोमय शरीर के ऊपर मानव सदृश शरीर हल्के तेज का बना कर रहे तथा अपने द्वारा रची सृष्टि का ठीक-ठीक (वास्तविक तत्त्व) ज्ञान देकर सशरीर सतलोक चले गए। कृपा प्रेमी पाठक पढ़ें निम्न अमृतवाणी परमेश्वर कबीर साहेब जी द्वारा उच्चारित :-

धर्मदास यह जग बौराना। कोइ न जाने पद निरवाना।।
यहि कारन मैं कथा पसारा। जगसे कहियो राम नियारा।।
यही ज्ञान जग जीव सुनाओ। सब जीवोंका भरम नशाओ।।
अब मैं तुमसे कहों चिताई। त्रयदेवनकी उत्पत्ति भाई।।
कुछ संक्षेप कहों गुहराई। सब संशय तुम्हरे मिट जाई।।
भरम गये जग वेद पुराना। आदि रामका का भेद न जाना।।
राम राम सब जगत बखाने। आदि राम कोइ बिरला जाने।।
ज्ञानी सुने सो हिरदै लगाई। मूर्ख सुने सो गम्य ना पाई।।
माँ अष्टंगी पिता निरंजन। वे जम दारुण वंशन अंजन।।
पहिले कीन्ह निरंजन राई। पीछेसे माया उपजाई।।
माया रूप देख अति शोभा। देव निरंजन तन मन लोभा।।
कामदेव धर्मराय सत्ताये। देवी को तुरतही धर खाये।।

पेट से देवी करी पुकारा। साहब मेरा करो उबारा।।
टेर सुनी तब हम तहाँ आये। अष्टंगी को बंद छुड़ाये।।
सतलोक में कीन्हा दुराचारि, काल निरंजन दिन्हा निकारि।।
माया समेत दिया भगाई, सोलह शंख कोस दूरी पर आई।।
अष्टंगी और काल अब दोई, मंद कर्म से गए बिगोई।।
धर्मराय को हिकमत कीन्हा। नख रेखा से भगकर लीन्हा।।
धर्मराय किन्हाँ भोग विलासा। मायाको रही तब आसा।।
तीन पुत्र अष्टंगी जाये। ब्रह्मा विष्णु शिव नाम धराये।।
तीन देव विस्तार चलाये। इनमें यह जग धोखा खाये।।
पुरुष गम्य कैसे को पावै। काल निरंजन जग भरमावै।।
तीन लोक अपने सुत दीन्हा। सुन्न निरंजन बासा लीन्हा।।
अलख निरंजन सुन्न ठिकाना। ब्रह्मा विष्णु शिव भेद न जाना।।
तीन देव सो उनको धावें। निरंजन का वे पार ना पावें।।
अलख निरंजन बड़ा बटपारा। तीन लोक जिव कीन्ह अहारा।।
ब्रह्मा विष्णु शिव नहीं बचाये। सकल खाय पुन धूर उड़ाये।।
तिनके सुत हैं तीनों देवा। आंधर जीव करत हैं सेवा।।
अकाल पुरुष काहू नहिं चीन्हां। काल पाय सबही गह लीन्हां।।
ब्रह्म काल सकल जग जाने। आदि ब्रह्मको ना पहिचाने।।
तीनों देव और औतारा। ताको भजे सकल संसारा।।
तीनों गुणका यह विस्तारा। धर्मदास मैं कहों पुकारा।।
गुण तीनों की भक्ति में, भूल परो संसार।
कहै कबीर निज नाम बिन, कैसे उतरैं पार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में परमेश्वर कबीर साहेब जी अपने निजी सेवक श्री धर्मदास साहेब जी को कह रहे हैं कि धर्मदास यह सर्व संसार तत्त्वज्ञान के अभाव से विचलित है। किसी को पूर्ण मोक्ष मार्ग तथा पूर्ण सृष्टि रचना का ज्ञान नहीं है। इसलिए मैं आपको मेरे द्वारा रची सृष्टि की कथा सुनाता हूँ। बुद्धिमान व्यक्ति तो तुरंत समझ जायेंगे। परन्तु जो सर्व प्रमाणों को देखकर भी नहीं मानेंगे तो वे नादान प्राणी काल प्रभाव से प्रभावित हैं, वे भक्ति योग्य नहीं। अब मैं बताता हूँ तीनों भगवानों (ब्रह्मा जी, विष्णु जी तथा शिव जी) की उत्पत्ति कैसे हुई? इनकी माता जी तो अष्टंगी (दुर्गा) है तथा पिता ज्योति निरंजन (ब्रह्म, काल) है। पहले ब्रह्म की उत्पत्ति अण्डे से हुई। फिर दुर्गा की उत्पत्ति हुई। दुर्गा के रूप पर आसक्त होकर काल (ब्रह्म) ने गलती (छेड़-छाड़) की, तब दुर्गा (प्रकृति) ने इसके पेट में शरण ली। मैं वहाँ गया जहाँ ज्योति निरंजन काल था। तब भवानी को ब्रह्म के उदर से निकाल कर इक्कीस ब्रह्माण्ड समेत 16 शंख कोस की दूरी पर भेज दिया। ज्योति निरंजन (धर्मराय) ने प्रकृति देवी (दुर्गा) के साथ भोग-विलास किया। इन दोनों के संयोग से तीनों गुणों (श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी) की उत्पत्ति हुई। इन्हीं तीनों गुणों (रजगुण ब्रह्मा जी, सतगुण

विष्णु जी, तमगुण शिव जी) की ही साधना करके सर्व प्राणी काल जाल में फंसे हैं। जब तक वास्तविक मंत्र नहीं मिलेगा, पूर्ण मोक्ष कैसे होगा?

विशेषः- प्रिय पाठक विचार करें कि श्री ब्रह्मा जी श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की स्थिति अविनाशी बताई गई थी। सर्व हिन्दू समाज अभी तक तीनों परमात्माओं को अजर, अमर व जन्म-मत्यु रहित मानते रहे जबकि ये तीनों नाशवान हैं। इनके पिता काल रूपी ब्रह्म तथा माता दुर्गा (प्रकति/अष्टांगी) हैं जैसा आपने पूर्व प्रमाणों में पढ़ा यह ज्ञान अपने शास्त्रों में भी विद्यमान है परन्तु हिन्दू समाज के कलयुगी गुरूओं, ऋषियों, सन्तों को ज्ञान नहीं। जो अध्यापक पाठ्यक्रम (सलेबस) से ही अपरिचित है वह अध्यापक ठीक नहीं (विद्वान नहीं) है, विद्यार्थियों के भविष्य का शत्रु है। इसी प्रकार जिन गुरूओं को अभी तक यह नहीं पता कि श्री ब्रह्मा, श्री विष्णु तथा श्री शिव जी के माता-पिता कौन हैं? तो वे गुरू, ऋषि,सन्त ज्ञान हीन हैं। जिस कारण से सर्व भक्त समाज को शास्त्र विरूद्ध ज्ञान (लोक वेद अर्थात् दन्त कथा) सुना कर अज्ञान से परिपूर्ण कर दिया। शास्त्रविधि विरूद्ध भक्तिसाधना करा के परमात्मा के वास्तविक लाभ (पूर्ण मोक्ष) से वंचित रखा सबका मानव जन्म नष्ट करा दिया क्योंकि श्री मद्भगवत गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में यही प्रमाण है कि जो शास्त्रविधि त्यागकर मनमाना आचरण पूजा करता है। उसे कोई लाभ नहीं होता पूर्ण परमात्मा कबीर जी ने पाँच वर्ष की लीलामय आयु में सन् 1403 से ही सर्व शास्त्रों युक्त ज्ञान अपनी अमतवाणी (कविरवाणी) में बताना प्रारम्भ किया था। परन्तु उन अज्ञानी गुरूओं ने यह ज्ञान भक्त समाज तक नहीं जाने दिया। जो वर्तमान में सर्व सद्ग्रन्थों से स्पष्ट हो रहा है इससे सिद्ध है कि कविंदेव (कबीर प्रभु) तत्त्वदर्शी सन्त रूप में स्वयं पूर्ण परमात्मा ही आए थे।

"आदरणीय गरीबदास साहेब जी की अमतवाणी में सष्टि रचना का प्रमाण"

आदि रमैणी (सद् ग्रन्थ पष्ठ नं. 690 से 692 तक)

आदि रमैंणी अदली सारा। जा दिन होते धुंधुंकारा।।1।।
सतपुरुष कीन्हा प्रकाशा। हम होते तखत कबीर खवासा ।।2।।
मन मोहिनी सिरजी माया। सतपुरुष एक ख्याल बनाया।।3।।
धर्मराय सिरजे दरबानी। चौसठ जुगतप सेवा ठांनी।।4।।
पुरुष पथिवी जाकूं दीन्ही। राज करो देवा आधीनी।।5।।
ब्रह्माण्ड इकीस राज तुम्ह दीन्हा। मन की इच्छा सब जुग लीन्हा।।6।।
माया मूल रूप एक छाजा। मोहि लिये जिनहूँ धर्मराजा।।7।।
धर्म का मन चंचल चित धार्‌या। मन माया का रूप बिचारा।।8।।
चंचल चेरी चपल चिरागा। या के परसे सरबस जागा।।9।।
धर्मराय कीया मन का भागी। विषय वासना संग से जागी।।10।।
आदि पुरुष अदली अनरागी। धर्मराय दिया दिल सें त्यागी।।11।।
पुरुष लोक सें दीया ढहाही। अगम दीप चलि आये भाई।।12।।

सहज दास जिस दीप रहंता। कारण कौंन कौंन कुल पंथा।।13।।
धर्मराय बोले दरबानी। सुनो सहज दास ब्रह्मज्ञानी।।14।।
चौसठ जुग हम सेवा कीन्ही। पुरुष पंथिवी हम कूं दीन्ही।।15।।
चंचल रूप भया मन बौरा। मनमोहिनी ठगिया भौंरा।।16।।
सतपुरुष के ना मन भाये। पुरुष लोक से हम चलि आये।।17।।
अगर दीप सुनत बड़भागी। सहज दास मेटो मन पागी।।18।।
बोले सहजदास दिल दानी। हम तो चाकर सत सहदानी।।19।।
सतपुरुष सें अरज गुजारूं। जब तुम्हारा बिवाण उतारूं।।20।।
सहज दास को कीया पीयाना। सत्यलोक लीया प्रवाना।।21।।
सतपुरुष साहिब सरबंगी। अविगत अदली अचल अभंगी।।22।।
धर्मराय तुम्हरा दरबानी। अगर दीप चलि गये प्रानी।।23।।
कौंन हुकम करी अरज अवाजा। कहां पठावौ उस धर्मराजा।।24।।
भई अवाज अदली एक साचा। विषय लोक जा तीन्यूं बाचा।।25।।
सहज विमाँन चले अधिकाई। छिन में अगर दीप चलि आई।।26।।
हमतो अरज करी अनरागी। तुम्ह विषय लोक जावो बड़भागी।।27।।
धर्मराय के चले विमाना। मानसरोवर आये प्राना।।28।
मानसरोवर रहन न पाये। दरै कबीरा थांना लाये।।29।।
बंकनाल की विषमी बाटी। तहां कबीरा रोकी घाटी।।30।।
इन पाँचों मिलि जगत बंधाना। लख चौरासी जीव संताना।।31।।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया। धर्मराय का राज पठाया।।32।।
यौह खोखा पुर झूठी बाजी। भिसति बैकुण्ठ दगासी साजी।।33।।
कंतिम जीव भुलांनें भाई। निज घर की तो खबरि न पाई।।34।।
सवा लाख उपजें नित हंसा। एक लाख विनशें नित अंसा।।35।।
उपति खपति प्रलय फेरी। हर्ष शोक जौंरा जम जेरी।।36।।
पाँचों तत्त्व हैं प्रलय माँही। सत्त्वगुण रजगुण तमगुण झांई।।37।।
आठों अंग मिली है माया। पिण्ड ब्रह्माण्ड सकल भरमाया।।38।।
या में सुरति शब्द की डोरी। पिण्ड ब्रह्माण्ड लगी है खोरी।।39।।
श्वासा पारस मन गह राखो। खोल्हि कपाट अमीरस चाखो।।40।।
सुनाऊं हंस शब्द सुन दासा। अगम दीप है अग है बासा।।41।।
भवसागर जम दण्ड जमाना। धर्मराय का है तलबांना।।42।।
पाँचों ऊपर पद की नगरी। बाट बिहंगम बंकी डगरी।।43।।
हमरा धर्मराय सों दावा। भवसागर में जीव भरमावा।।44।।
हम तो कहैं अगम की बानी। जहाँ अविगत अदली आप बिनानी।।45।।
बंदी छोड़ हमारा नामं। अजर अमर है अस्थीर ठामं।।46।।
जुगन जुगन हम कहते आये। जम जौंरा सें हंस छुटाये।।47।।

जो कोई मानें शब्द हमारा। भवसागर नहीं भरमें धारा।।48।।
या में सुरति शब्द का लेखा। तन अंदर मन कहो कीन्ही देखा।।49।।
दास गरीब अगम की बानी। खोजा हंसा शब्द सहदानी।।50।।

उपरोक्त अमतवाणी का भावार्थ है कि आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि यहाँ पहले केवल अंधकार था तथा पूर्ण परमात्मा कबीर साहेब जी सत्यलोक में तख्त (सिंहासन) पर विराजमान थे। हम वहाँ चाकर थे। परमात्मा ने ज्योति निरंजन को उत्पन्न किया। फिर उसके तप के प्रतिफल में इक्कीस ब्रह्माण्ड प्रदान किए। फिर माया (प्रकति) की उत्पत्ति की। युवा दुर्गा के रूप पर मोहित होकर ज्योति निरंजन (ब्रह्म) ने दुर्गा (प्रकति) से बलात्कार करने की चेष्टा की। ब्रह्म को उसकी सजा मिली। उसे सत्यलोक से निकाल दिया तथा शॉप लगा कि एक लाख मानव शरीर धारी प्राणियों का प्रतिदिन आहार करेगा, सवा लाख उत्पन्न करेगा। यहाँ सर्व प्राणी जन्म-मत्यु का कष्ट उठा रहे हैं। यदि कोई पूर्ण परमात्मा का वास्तविक शब्द (सच्चानाम जाप मंत्र) हमारे से प्राप्त करेगा, उसको काल की बंद से छुड़वा देंगे। हमारा बन्दी छोड़ नाम है। आदरणीय गरीबदास जी अपने गुरु व प्रभु कबीर परमात्मा के आधार पर कह रहे हैं कि सच्चे मंत्र अर्थात् सत्यनाम व सारशब्द की प्राप्ति कर लो, पूर्ण मोक्ष हो जायेगा। नहीं तो नकली नाम दाता संतों व महन्तों की मीठी-मीठी बातों में फंस कर शास्त्र विधि रहित साधना करके काल जाल में रह जाओगे। फिर कष्ट पर कष्ट उठाओगे।

।।गरीबदास जी महाराज की वाणी।।

(सत ग्रन्थ साहिब पष्ठ नं. 690 से सहाभार)

माया आदि निरंजन भाई, अपने जाऐ आपै खाई।
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर चेला, ऊँ सोहं का है खेला।।
सिखर सुन्न में धर्म अन्यायी, जिन शक्ति डायन महल पठाई।
लाख ग्रास नित उठ दूती, माया आदि तख्त की कुती।।
सवा लाख घड़िये नित भांडे, हंसा उत्पत्ति परलय डांडे।
ये तीनों चेला बटपारी, सिरजे पुरुषा सिरजी नारी।।
खोखापुर में जीव भुलाये, स्वपना बहिस्त वैकुंठ बनाये।
यो हरहट का कुआ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।।
कीड़ी कुजंर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।
अरब अलील इन्द्र हैं भाई, हरहट डोरी बंधे सब आई।।
शेष महेश गणेश्वर ताहिं, हरहट डोरी बंधे सब आहिं।
शुक्रादिक ब्रह्मादिक देवा, हरहट डोरी बंधे सब खेवा।।
कोटिक कर्ता फिरता देख्या, हरहट डोरी कहूँ सुन लेखा।
चतुर्भुजी भगवान कहावैं, हरहट डोरी बंधे सब आवैं।।
यो है खोखापुर का कुआ, या में पड़ा सो निश्चय मुवा।

ज्योति निरंजन (कालबली) के वश होकर के ये तीनों देवता (रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु,

तमगुण-शिव) अपनी महिमा दिखाकर जीवों को स्वर्ग नरक तथा भवसागर में (लख चौरासी योनियों में) भटकाते रहते हैं। ज्योति निरंजन अपनी माया से नागिनी की तरह जीवों को पैदा करते हैं और फिर मार देते हैं। जिस प्रकार उसको नागिनी खा जाती है। फन मारते समय कई अण्डे फूट जाते हैं क्योंकि नागिनी के काफी अण्डे होते हैं। जो अण्डे फूटते हैं उनमें से बच्चे निकलते हैं यदि कोई बच्चा नागिनी अपनी दुम से अण्डों के चारों ओर कुण्डली बनाती है फिर उन अण्डों पर अपना फन मारती है। जिससे अण्डा फूट जाता है। उसमें से बच्चा निकल जाता है। कुण्डली (सर्पनी की दुम का घेरा) से बाहर निकल जाता है तो वह बच्चा बच जाता है नहीं तो कुण्डली में वह (नागिनी) छोड़ती नहीं। जितने बच्चे उस कुण्डली के अन्दर होते हैं उन सबको खा जाती है।

माया काली नागिनी, अपने जाये खात। कुण्डली में छोड़ै नहीं, सौ बातों की बात।।

इसी प्रकार यह कालबली का जाल है। निरंजन तक की भक्ति पूरे संत से नाम लेकर करेगें तो भी इस निरंजन की कुण्डली (इक्कीस ब्रह्माण्डों) से बाहर नहीं निकल सकते। स्वयं ब्रह्मा, विष्णु, महेश, आदि माया शेराँवाली भी निरंजन की कुण्डली में है। ये बेचारे अवतार धार कर आते हैं और जन्म-मत्यु का चक्कर काटते रहते हैं। इसलिए विचार करें सोहं जाप जो कि ध्रुव व प्रहलाद व शुकदेव ऋषि ने जपा, वह भी पार नहीं हुए। क्योंकि श्री विष्णु पुराण के प्रथम अंश के अध्याय 12 के श्लोक 93 में पष्ठ 51 पर लिखा है कि ध्रुव केवल एक कल्प अर्थात् एक हजार चतुर्युग तक ही मुक्त है। इसलिए काल लोक में ही रहे तथा 'ऊँ नमः भगवते वासुदेवाय' मन्त्र जाप करने वाले भक्त भी कष्ण तक की भक्ति कर रहे हैं, वे भी चौरासी लाख योनियों के चक्कर काटने से नहीं बच सकते। यह परम पूज्य कबीर साहिब जी व आदरणीय गरीबदास साहेब जी महाराज की वाणी प्रत्यक्ष प्रमाण देती हैं।

अनन्त कोटि अवतार हैं, माया के गोविन्द। कर्ता हो हो अवतरे, बहुर पड़े जग फंध।।

सतपुरुष कबीर साहिब जी की भक्ति से ही जीव मुक्त हो सकता है। जब तक जीव सतलोक में वापिस नहीं चला जाएगा तब तक काल लोक में इसी तरह कर्म करेगा और की हुई नाम व दान धर्म की कमाई स्वर्ग रूपी होटलों में समाप्त करके वापिस कर्म आधार से चौरासी लाख प्रकार के प्राणियों के शरीर में कष्ट उठाने वाले काल लोक में चक्कर काटता रहेगा। माया (दुर्गा) से उत्पन्न हो कर करोड़ों गोबिन्द(ब्रह्मा-विष्णु-शिव) मर चुके हैं। भगवान का अवतार बन कर आये थे। फिर कर्म बन्धन में बन्ध कर कर्मों को भोग कर चौरासी लाख योनियों में चले गए। जैसे भगवान विष्णु जी को देवर्षि नारद का शॉप लगा। वे श्री रामचन्द्र रूप में अयोध्या में आए। फिर श्री राम जी रूप में बाली का वध किया था। उस कर्म का दण्ड भोगने के लिए श्री कष्ण जी का जन्म हुआ। फिर बाली वाली आत्मा शिकारी बना तथा अपना प्रतिशोध लिया। श्री कष्ण जी के पैर में विषाक्त तीर मार कर वध किया। महाराज गरीबदास जी अपनी वाणी में कहते हैं :

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर माया, और धर्मराय कहिये। इन पाँचों मिल परपंच बनाया, वाणी हमरी लहिये।।
इन पाँचों मिल जीव अटकाये, जुगन–जुगन हम आन छुटाये।
बन्दी छोड़ हमारा नामं, अजर अमर है अस्थिर ठामं।।

पीर पैगम्बर कुतुब औलिया, सुर नर मुनिजन ज्ञानी। येता को तो राह न पाया, जम के बंधे प्राणी।।
धर्मराय की धूमा–धामी, जम पर जंग चलाऊँ। जोरा को तो जान न दूगां, बांध अदल घर ल्याऊँ।।
काल अकाल दोहूँ को मोसूं, महाकाल सिर मूंडू। मैं तो तख्त हजूरी हुकमी, चोर खोज कूं ढूंढू।।
मूला माया मग में बैठी, हंसा चुन–चुन खाई। ज्योति स्वरूपी भया निरंजन, मैं ही कर्ता भाई।।
हस अठासी दीप मुनीश्वर, बंधे मुला डोरी। ऐत्यां में जम का तलबाना, चलिए पुरुष कीशोरी।।
मूला का तो माथा दागूं, सतकी मोहर करूंगा। पुरुष दीप कूं हंस चलाऊँ, दरा न रोकन दूंगा।।
हम तो बन्दी छोड़ कहावां, धर्मराय है चकवै। सतलोक की सकल सुनावां, वाणी हमरी अखवै।।
नौ लख पटट्न ऊपर खेलूं, साहदरे कूं रोकूं। द्वादस कोटि कटक सब काटूं, हंस पठाऊँ मोखूं।।
चौदह भुवन गमन है मेरा, जल थल में सरबंगी। खालिक खलक खलक में खालिक, अविगत अचल अभंगी।।
अगर अलील चक्र है मेरा, जित से हम चल आए। पाँचों पर प्रवाना मेरा, बंधि छुटावन धाये।।

जहाँ ओंकार निरंजन नाहीं, ब्रह्मा विष्णु वेद नहीं जाहीं।
जहाँ करता नहीं काल भगवाना, काया माया पिण्ड न प्राणा।।
पाँच तत्त्व तीनों गुण नाहीं, जोरा काल दीप नहीं जाहीं।
अमर करूं सतलोक पठाँऊ, तातैं बन्दी छोड़ कहाऊँ।।

कबीर परमेश्वर (कविर्देव) की महिमा बताते हुए आदरणीय गरीबदास साहेब जी कह रहे हैं कि हमारे प्रभु कविर् (कविर्देव) बन्दी छोड़ हैं। बन्दी छोड़ का भावार्थ है काल की कारागार से छुटवाने वाला, काल ब्रह्म के इक्कीस ब्रह्माण्डों में सर्व प्राणी पापों के कारण काल के बंदी हैं। पूर्ण परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब पाप का विनाश कर देते हैं। पापों का विनाश न ब्रह्म, न परब्रह्म, न ही ब्रह्मा, विष्णु, शिव जी कर सकते हैं। केवल जैसा कर्म है, उसका वैसा ही फल दे देते हैं। इसीलिए यजुर्वेद अध्याय 5 के मन्त्र 32 में लिखा है 'कविरंघारिरसि' कविर्देव (कबीर परमेश्वर) पापों का शत्रु है, 'बम्भारिरसि' बन्धनों का शत्रु अर्थात् बन्दी छोड़ है।

इन पाँचों (ब्रह्मा-विष्णु-शिव-माया और धर्मराय) से ऊपर सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) है। जो सतलोक का मालिक है। शेष सर्व परब्रह्म-ब्रह्म तथा ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी व आदि माया नाशवान परमात्मा हैं। महाप्रलय में ये सब तथा इनके लोक समाप्त हो जाएंगे। आम जीव से कई हजार गुणा ज्यादा लम्बी इनकी उम्र है। परन्तु जो समय निर्धारित है वह एक दिन पूरा अवश्य होगा। आदरणीय गरीबदास जी महाराज कहते हैं :-

शिव ब्रह्मा का राज, इन्द्र गिनती कहां। चार मुक्ति वैकुंण्ठ समझ, येता लह्या।।
संख जुगन की जुनी, उम्र बड़ धारिया। जा जननी कुर्बान, सु कागज पारिया।।
येती उम्र बुलंद मरैगा अंत रे। सतगुरु लगे न कान, न भैंटे संत रे।।

चाहे शंख युग की लम्बी उम्र भी क्यों न हो वह एक दिन समाप्त जरूर होगी। यदि सतपुरुष परमात्मा (कविर्देव) कबीर साहेब के नुमाँयदे पूर्ण संत(गुरु) जो तीन नाम का मंत्र (जिसमें एक ओ३म + तत् + सत् सांकेतिक हैं) देता है तथा उसे पूर्ण संत द्वारा नाम दान करने का आदेश है, उससे उपदेश लेकर नाम की कमाई करेंगे तो हम सतलोक के अधिकारी हंस हो सकते हैं। सत्य साधना बिना बहुत लम्बी उम्र कोई काम नहीं आएगी क्योंकि निरंजन लोक में दुःख ही दुःख है।

कबीर, जीवना तो थोड़ा ही भला, जै सत सुमरन होय। लाख वर्ष का जीवना, लेखै धरै ना कोय।।

कबीर साहिब अपनी (पूर्णब्रह्म की) जानकारी स्वयं बताते हैं कि इन परमात्माओं से ऊपर असंख्य भुजा का परमात्मा सतपुरुष है जो सत्यलोक (सच्च खण्ड, सतधाम) में रहता है तथा उसके अन्तर्गत सर्वलोक [ब्रह्म (काल) के 21 ब्रह्माण्ड व ब्रह्मा, विष्णु, शिव शक्ति के लोक तथा परब्रह्म के सात शंख ब्रह्माण्ड व अन्य सर्व ब्रह्माण्ड] आते हैं और वहाँ पर सत्यनाम-सारनाम के जाप द्वारा जाया जाएगा जो पूरे गुरु से प्राप्त होता है। सच्चखण्ड (सतलोक) में जो आत्मा चली जाती है उसका पुनर्जन्म नहीं होता। सतपुरुष (पूर्णब्रह्म) कबीर साहेब (कविर्देव) ही अन्य लोकों में स्वयं ही भिन्न-भिन्न नामों से विराजमान हैं। जैसे अलख लोक में अलख पुरुष, अगम लोक में अगम पुरुष तथा अकह लोक में अनामी पुरुष रूप में विराजमान हैं। ये तो उपमात्मक नाम हैं, परन्तु वास्तविक नाम उस पूर्ण पुरुष का कविर्देव (भाषा भिन्न होकर कबीर साहेब) है।

"आदरणीय नानक साहेब जी की वाणी में सष्टि रचना का संकेत"

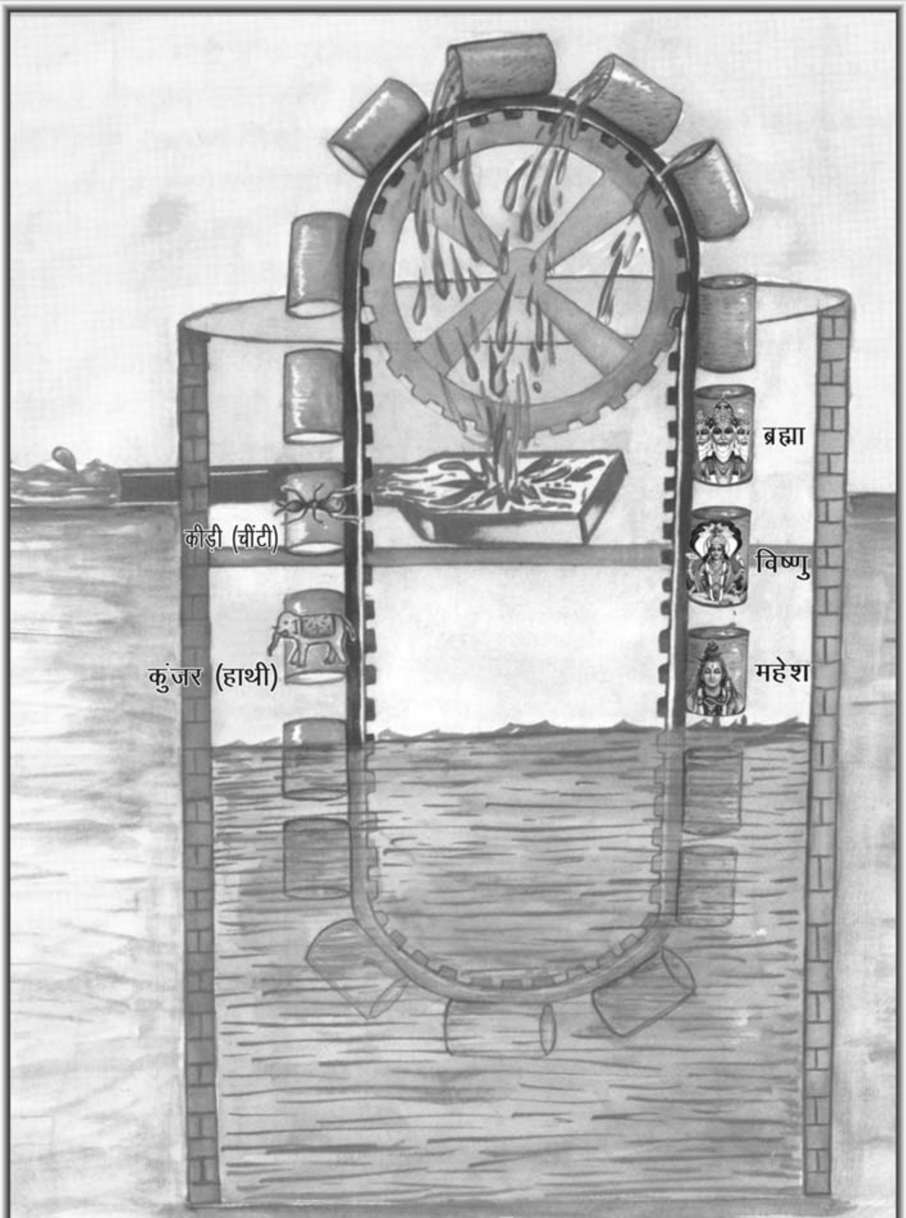
श्री नानक साहेब जी की अमतवाणी, महला 1, राग बिलावलु, अंश 1 (गु.ग्र. प. 839)

आपे सचु कीआ कर जोड़ि। अंडज फोड़ि जोडि विछोड़।।
धरती आकाश कीए बैसण कउ थाउ। राति दिनंतु कीए भउ–भाउ।।
जिन कीए करि वेखणहारा।(3)
त्रितीआ ब्रह्मा–बिसनु–महेसा। देवी देव उपाए वेसा।।(4)
पउण पाणी अगनी बिसराउ। ताही निरंजन साचो नाउ।।
तिसु महि मनुआ रहिआ लिव लाई। प्रणवति नानकु कालु न खाई।।(10)

उपरोक्त अमतवाणी का भावार्थ है कि सच्चे परमात्मा (सतपुरुष) ने स्वयं ही अपने हाथों से सर्व सष्टि की रचना की है। उसी ने अण्डा बनाया फिर फोड़ा तथा उसमें से ज्योति निरंजन निकला। उसी पूर्ण परमात्मा ने सर्व प्राणियों के रहने के लिए धरती, आकाश, पवन, पानी आदि पाँच तत्त्व रचे। अपने द्वारा रची सष्टि का स्वयं ही साक्षी है। दूसरा कोई सही जानकारी नहीं दे सकता। फिर अण्डे के फूटने से निकले निरंजन के बाद तीनों श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी तथा श्री शिव जी की उत्पत्ति हुई तथा अन्य देवी-देवता उत्पन्न हुए तथा अनगिनत जीवों की उत्पत्ति हुई। उसके बाद अन्य देवों के जीवन चरित्र तथा अन्य ऋषियों के अनुभव के छः शास्त्र तथा अठारह पुराण बन गए। पूर्ण परमात्मा के सच्चे नाम (सत्यनाम) की साधना अनन्य मन से करने से तथा गुरु मर्यादा में रहने वाले (प्रणवति) को श्री नानक जी कह रहे हैं कि काल नहीं खाता।

राग मारु(अंश) अमतवाणी महला 1(गु.ग्र.प. 1037)

सुनहु ब्रह्मा, बिसनु, महेसु उपाए। सुने वरते जुग सबाए।।
इसु पद बिचारे सो जनु पुरा। तिस मिलिए भरमु चुकाइदा।।(3)
साम वेदु, रुगु जुजरु अथरबणु। ब्रहमें मुख माइआ है त्रैगुण।।
ता की कीमत कहि न सकै। को तिउ बोले जिउ बुलाईदा।।(9)



योह हरहट का कुआँ लोई, या गल बंध्या है सब कोई।
कीड़ी कुंजर और अवतारा, हरहट डोरी बंधे कई बारा।।

काल लोक में जन्म–मरण रूपी हरहट (चक्र)

उपरोक्त अमतवाणी का सारांश है कि जो संत पूर्ण सष्टि रचना सुना देगा तथा बताएगा कि अण्डे के दो भाग होकर कौन निकला, जिसने फिर ब्रह्मलोक की सुन्न में अर्थात् गुप्त स्थान पर ब्रह्मा-विष्णु-शिव जी की उत्पत्ति की तथा वह परमात्मा कौन है जिसने ब्रह्म (काल) के मुख से चारों वेदों (पवित्र ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद) को उच्चारण करवाया, वह पूर्ण परमात्मा जैसा चाहे वैसे ही प्रत्येक प्राणी को बुलवाता है। इस सर्व ज्ञान को पूर्ण बताने वाला सन्त मिल जाए तो उसके पास जाइए तथा जो सभी शंकाओं का पूर्ण निवारण करता है, वही पूर्ण सन्त अर्थात् तत्त्वदर्शी है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पष्ठ 929 अमत वाणी श्री नानक साहेब जी की राग रामकली महला 1 दखणी ओअंकार

ओअंकारि ब्रह्मा उत्पत्ति। ओअंकारू कीआ जिनि चित। ओअंकारि सैल जुग भए। ओअंकारि बेद निरमए। ओअंकारि सबदि उधरे। ओअंकारि गुरुमुखि तरे। ओनम अखर सुणहू बीचारु। ओनम अखरु त्रिभवण सारु।

उपरोक्त अमतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि ओंकार अर्थात् ज्योति निरंजन (काल) से ब्रह्मा जी की उत्पत्ति हुई। कई युगों मस्ती मार कर ओंकार (ब्रह्म) ने वेदों की उत्पत्ति की जो ब्रह्मा जी को प्राप्त हुए। तीन लोक की भक्ति का केवल एक ओउम् मंत्र ही वास्तव में जाप करने का है। इस ओउम् शब्द को पूरे संत से उपदेश लेकर अर्थात् गुरू धारण करके जाप करने से उद्धार होता है।

विशेष :– श्री नानक साहेब जी ने तीनों मंत्रों (ओउम् + तत् + सत्) का स्थान-स्थान पर रहस्यात्मक विवरण दिया है। उसको केवल पूर्ण संत (तत्त्वदर्शी संत) ही समझ सकता है तथा तीनों मंत्रों के जाप को उपदेशी को समझाया जाता है।

(प. 1038) उत्तम सतिगुरु पुरुष निराले, सबदि रते हरि रस मतवाले।
रिधि, बुधि, सिधि, गिआन गुरु ते पाइए, पूरे भाग मिलाईदा।।(15)
सतिगुरु ते पाए बीचारा, सुन समाधि सचे घरबारा।
नानक निरमल नादु सबद धुनि, सचु रामैं नामि समाइदा (17)

उपरोक्त अमतवाणी का भावार्थ है कि वास्तविक ज्ञान देने वाले सतगुरु तो निराले ही हैं, वे केवल नाम जाप को जपते हैं, अन्य हठयोग साधना नहीं बताते। यदि आप को धन दौलत, पद, बुद्धि या भक्ति शक्ति भी चाहिए तो वह भक्ति मार्ग का ज्ञान पूर्ण संत ही पूरा प्रदान करेगा, ऐसा पूर्ण संत बड़े भाग्य से ही मिलता है। वही पूर्ण संत विवरण बताएगा कि ऊपर सुन्न (आकाश) में अपना वास्तविक घर (सत्यलोक) परमेश्वर ने रच रखा है।

उसमें एक वास्तविक सार नाम की धुन (आवाज) हो रही है। उस आनन्द में अविनाशी परमेश्वर के सार शब्द से समाया जाता है अर्थात् उस वास्तविक सुखदाई स्थान में वास हो सकता है, अन्य नामों तथा अधूरे गुरुओं से नहीं हो सकता।

आंशिक अमतवाणी महला पहला (श्री गु. ग्र. प. 359-360)

सिव नगरी महि आसणि बैसउ कलप त्यागी वादं।(1)
सिंडी सबद सदा धुनि सोहै अहिनिसि पूरे नादं।(2)

हरि कीरति रह रासि हमारी गुरु मुख पंथ अतीत (3)
सगली जोति हमारी संमिआ नाना वरण अनेकं।
कह नानक सुणि भरथरी जोगी पारब्रह्म लिव एकं।(4)

उपरोक्त अमृतवाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि हे भरथरी योगी जी आपकी साधना भगवान शिव तक है, उससे आपको शिव नगरी (लोक) में स्थान मिला है और शरीर में जो सिंगी शब्द आदि हो रहा है वह इन्हीं कमलों का है तथा टेलीविजन की तरह प्रत्येक देव के लोक से शरीर में सुनाई दे रहा है।

हम तो एक परमात्मा पारब्रह्म अर्थात् सर्व से पार जो पूर्ण परमात्मा है अन्य किसी और एक परमात्मा में लौ (अनन्य मन से लग्न) लगाते हैं।

हम ऊपरी दिखावा (भस्म लगाना, हाथ में दंडा रखना) नहीं करते। मैं तो सर्व प्राणियों को एक पूर्ण परमात्मा (सतपुरुष) की सन्तान समझता हूँ। सर्व उसी शक्ति से चलायमान हैं। हमारी मुद्रा तो सच्चा नाम जाप गुरु से प्राप्त करके करना है तथा क्षमा करना हमारा बाणा (वेशभूषा) है। मैं तो पूर्ण परमात्मा का उपासक हूँ तथा पूर्ण सतगुरु का भक्ति मार्ग इससे भिन्न है।

अमृतवाणी राग आसा महला 1 (श्री गु. ग्र. पृ. 420)

।।आसा महला 1।। जिनी नामु विसारिआ दूजै भरमि भुलाई। मूलु छोड़ि डाली लगे किआ पावहि छाई।।1।। साहिबु मेरा एकु है अवरु नहीं भाई। किरपा ते सुखु पाइआ साचे परथाई।।3।। गुर की सेवा सो करे जिसु आपि कराए। नानक सिरु दे छूटीऐ दरगह पति पाए।।8।।18।।

उपरोक्त वाणी का भावार्थ है कि श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि जो पूर्ण परमात्मा का वास्तविक नाम भूल कर अन्य भगवानों के नामों के जाप में भ्रम रहे हैं वे तो ऐसा कर रहे हैं कि मूल (पूर्ण परमात्मा) को छोड़ कर डालियों (तीनों गुण रूप रजगुण-ब्रह्मा, सतगुण-विष्णु, तमगुण-शिवजी) की सिंचाई (पूजा) कर रहे हैं। उस साधना से कोई सुख नहीं हो सकता अर्थात् पौधा सूख जाएगा तो छाया में नहीं बैठ पाओगे। भावार्थ है कि शास्त्र विधि रहित साधना करने से व्यर्थ प्रयत्न है। कोई लाभ नहीं। इसी का प्रमाण पवित्र गीता अध्याय 16 श्लोक 23-24 में भी है। उस पूर्ण परमात्मा को प्राप्त करने के लिए मनमुखी (मनमानी) साधना त्याग कर पूर्ण गुरुदेव को समर्पण करने से तथा सच्चे नाम के जाप से ही मोक्ष संभव है, नहीं तो मृत्यु के उपरांत नरक जाएगा।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 843-844)

।।बिलावलु महला 1।। मैं मन चाहु घणा साचि विगासी राम। मोही प्रेम पिरे प्रभु अबिनासी राम।। अविगतो हरि नाथु नाथह तिसै भावै सो थीऐ। किरपालु सदा दइआलु दाता जीआ अंदरि तूं जीऐ। मैं आधारु तेरा तू खसमु मेरा मै ताणु तकीआ तेरओ। साचि सूचा सदा नानक गुरसबदि झगरु निबेरओ।।4।।2।।

उपरोक्त अमृतवाणी में श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि अविनाशी पूर्ण परमात्मा नाथों का भी नाथ है अर्थात् देवों का भी देव है (सर्व प्रभुओं श्री ब्रह्मा जी, श्री विष्णु जी, श्री

शिव जी तथा ब्रह्म व परब्रह्म पर भी नाथ है अर्थात् स्वामी है) मैं तो सच्चे नाम को हृदय में समा चुका हूँ। हे परमात्मा ! सर्व प्राणी का जीवन आधार भी आप ही हो। मैं आपके आश्रित हूँ आप मेरे मालिक हो। आपने ही गुरु रूप में आकर सत्यभक्ति का निर्णायक ज्ञान देकर सर्व झगड़ा निपटा दिया अर्थात् सर्व शंका का समाधान कर दिया।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 721, राग तिलंग महला 1)

यक अर्ज गुफतम् पेश तो दर कून करतार। हक्का कबीर करीम तू बेअब परवरदिगार।
नानक बुगोयद जन तुरा तेरे चाकरां पाखाक।

उपरोक्त अमृतवाणी में स्पष्ट कर दिया कि हे (हक्का कबीर) आप सत्कबीर (कून करतार) शब्द शक्ति से रचना करने वाले शब्द स्वरूपी प्रभु अर्थात् सर्व सृष्टि के रचन हार हो, आप ही बेएब निर्विकार (परवरदिगार) सर्व के पालन कर्ता दयालु प्रभु हो, मैं आपके दासों का भी दास हूँ।

(श्री गुरु ग्रन्थ साहेब पृष्ठ नं. 24, राग सीरी महला 1)

तेरा एक नाम तारे संसार, मैं ऐहा आस ऐहो आधार। नानक नीच कहै बिचार, धाणक रूप रहा करतार।।

उपरोक्त अमृतवाणी में प्रमाण किया है कि जो काशी में धाणक (जुलाहा) है यही (करतार) कुल का सृजनहार है। अति आधीन होकर श्री नानक साहेब जी कह रहे हैं कि मैं सत कह रहा हूँ कि यह धाणक अर्थात् कबीर जुलाहा ही पूर्ण ब्रह्म (सतपुरुष) है।

विशेष :- उपरोक्त प्रमाणों के सांकेतिक ज्ञान से प्रमाणित हुआ सृष्टि रचना कैसे हुई? पूर्ण परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिए जो पूर्ण संत से नाम लेकर ही संभव है।

''अन्य संतों द्वारा सृष्टि रचना की दन्त कथा''

अन्य संतों द्वारा जो सृष्टि रचना का ज्ञान बताया है वह कैसा है? कृप्या निम्न पढ़ेः- सृष्टि रचना के विषय में राधास्वामी पंथ के सन्तों के व धन-धन सतगुरू पंथ के सन्त के विचार :-

पवित्र पुस्तक जीवन चरित्र परम संत बाबा जयमल सिंह जी महाराज'' पृष्ठ नं. 102-103 से ''सृष्टि की रचना'' (सावन कृपाल पब्लिकेशन, दिल्ली)

''पहले सतपुरुष निराकार था, फिर इजहार (आकार) में आया तो ऊपर के तीन निर्मल मण्डल (सतलोक, अलखलोक, अगमलोक) बन गया तथा प्रकाश तथा मण्डलों का नाद (धुनि) बन गया।''

पवित्र पुस्तक सारवचन (नसर) प्रकाशक :- राधास्वामी सत्संग सभा, दयालबाग आगरा, ''सृष्टि की रचना'' पृष्ठ 8 :-

''प्रथम धूंधूकार था। उसमें पुरुष सुन्न समाध में थे। जब कुछ रचना नहीं हुई थी। फिर जब मौज हुई तब शब्द प्रकट हुआ और उससे सब रचना हुई, पहले सतलोक और फिर सतपुरुष की कला से तीन लोक और सब विस्तार हुआ।''

यह ज्ञान तो ऐसा है जैसे एक समय कोई बच्चा नौकरी लगने के लिए साक्षात्कार (इन्टरव्यू) के लिए गया। अधिकारी ने पूछा कि आपने महाभारत पढ़ा है। लड़के ने उत्तर दिया कि उंगलियों पर रट रखा है। अधिकारी ने प्रश्न किया कि पाँचों पाण्डवों के नाम बताओ। लड़के ने उत्तर दिया कि एक भीम था, एक उसका बड़ा भाई था, एक उससे छोटा था, एक और था तथा

एक का नाम मैं भूल गया। उपरोक्त सष्टि रचना का ज्ञान तो ऐसा है।

सतपुरुष व सतलोक की महिमा बताने वाले व पाँच नाम (औंकार - ज्योति निरंजन - ररंकार - सोहं - सत्यनाम) देने वाले व तीन नाम (अकाल मूर्ति - सतपुरुष - शब्द स्वरूपी राम) देने वाले संतों द्वारा रची पुस्तकों से कुछ निष्कर्ष :-

संतमत प्रकाश भाग 3 पष्ठ 76 पर लिखा है कि ''सच्चखण्ड या सतनाम चौथा लोक है'', यहाँ पर 'सतनाम' को स्थान कहा है। फिर इस पवित्र पुस्तक के पष्ठ नं. 79 पर लिखा है कि ''एक राम दशरथ का बेटा, दूसरा राम 'मन', तीसरा राम 'ब्रह्म', चौथा राम 'सतनाम', यह असली राम है।'' फिर पवित्र पुस्तक संतमत प्रकाश पहला भाग पष्ठ नं. 17 पर लिखा है कि ''वह सतलोक है, उसी को सतनाम कहा जाता है।'' पवित्र पुस्तक 'सार वचन नसर यानि वार्तिक' पष्ठ नं. 3 पर लिखा है कि ''अब समझना चाहिए कि राधा स्वामी पद सबसे उच्चा मुकाम है कि जिसको संतों ने सतलोक और सच्चखण्ड और सार शब्द और सत शब्द और सतनाम और सतपुरुष करके ब्यान किया है।'' पवित्र पुस्तक सार वचन (नसर) आगरा से प्रकाशित पष्ठ नं. 4 पर भी उपरोक्त ज्यों का त्यों वर्णन है। पवित्र पुस्तक 'सच्चखण्ड की सड़क' पष्ठ नं. 226 ''संतों का देश सच्चखण्ड या सतलोक है, उसी को सतनाम-सतशब्द-सारशब्द कहा जाता है।''

विशेष :- उपरोक्त व्याख्या ऐसी लगी जैसे किसी ने जीवन में न तो शहर देखा, न कार देखी और न पैट्रोल देखा है, न ड्राईवर का ज्ञान हो कि ड्राईवर किसे कहते हैं और वह व्यक्ति अन्य साथियों से कहे कि मैं शहर में जाता हूँ, कार में बैठ कर आनंद मनाता हूँ। फिर साथियों ने पूछा कि कार कैसी है, पैट्रोल कैसा है और ड्राईवर कैसा है, शहर कैसा है? उस गुरु जी ने उत्तर दिया कि शहर कहो चाहे कार एक ही बात है, शहर भी कार ही है, पैट्रोल भी कार को ही कहते हैं, ड्राईवर भी कार को ही कहते हैं, सड़क भी कार को ही कहते हैं।

आओ विचार करें - सतपुरुष तो पूर्ण परमात्मा है, सतनाम वह दो मंत्र का नाम है जिसमें एक ओ३म् + तत् सांकेतिक है तथा इसके बाद सारनाम साधक को पूर्ण गुरु द्वारा दिया जाता है। यह सतनाम तथा सारनाम दोनों स्मरण करने के नाम हैं। सतलोक वह स्थान है जहाँ सतपुरुष रहता है। पुण्यात्माएं स्वयं निर्णय करें सत्य तथा असत्य का।

❑❑❑